वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

2462
क्रम संख्या (०४) 2(४४) जो
काल नं०
खण्ड

अर्हद् भगवते नमः।

निर्माणांक

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष १] १ नवम्बर सन १९२४ [संख्या १

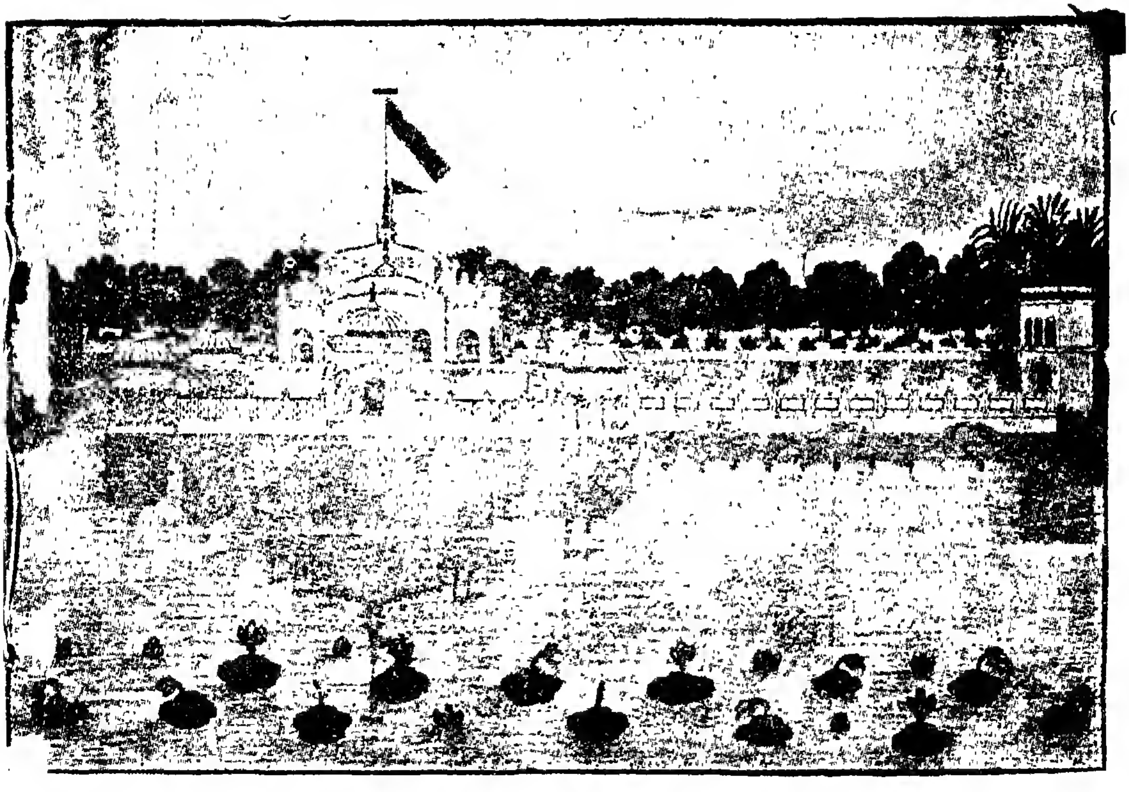

सम्पादक
जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादक
श्रीयुत कामताप्रसाद जी

प्रकाशक
वार्षिक मूल्य] श्री० राजेन्द्रकुमार जैन प्रेस बिजनौर [ढाई रुपये

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत।"

"श्रियं सुखं स्वास्थ्यमथो सुबुद्धिं, लाभं स्वकार्य्ये विजयं विभूतिम्।
नवं नवं संगमयत्प्रसंगं, हर्ष प्रकर्ष वितनोतु वर्षम्॥"

वर्ष २ } निर्वाणाङ्क { अंक १

वन्दे-वीरं

गीत

अलख निरंजन-अघमद भंजन-दुर्नय हंत, शिवतियकंत,
निर्भयधीरं वन्दे वीरं ॥१॥
दिव्य प्रभामय-अविचल, अक्षय-शक्ति अनंतः प्रतिभावंत,
गुण गंभीरं, वन्दे वीरं ॥२॥
जगदोद्धारक, सत्यप्रचारक-दुरित जयंत, जय जयवंत
भवनिधि तीरं, वन्दे वीरं ॥३॥

"वत्सल"

भगवान महावीर !

जैनियों के अन्तिम तीर्थङ्कर भगवान महावीर के जीवन के विषय में यद्यपि काफी प्रकाश पड़ गया है, मालूम हो गया है कि वह वैशाली के निकट अवस्थित कुण्ड ग्राम के नृप सिद्धार्थ के पुत्र थे। यह नृप नाथवंशीय काश्यप गोत्री क्षत्री थे, और बहुतायत से वज्जियन राज तंत्र संघ में सम्मिलित थे। इन्हीं के पुत्र राज कुमार महावीर गृहत्याग दिगंबर दीक्षा ग्रहण कर और घातियां कर्म्मों का नाश कर कैवल्यपति तीर्थङ्कर हुए थे। वस्तु के यथार्थ स्वरूप के अनुरूप में आपने धर्म का प्रचार करके वर्तमान के बिहार प्रान्त के अन्तर्गत उस समय अवस्थित राजा हस्तिपाल मल्लवंशीय की राजधानी पावापुरी से अनुपम आनन्दधाम मोक्ष को प्राप्त किया था। इस ही दिव्य अवसर के उपलक्ष में स्वर्ग लोक के देवों और भारतीय राजा एवं प्रजा ने दीपमालिका उत्सव मनाया था। तब ही से यह पुण्य दिवस पवित्र स्मृति में जातीय त्यौहार मनाया जा रहा है। यही कार्तिक कृष्णा अमावस्या का दिवस था जब भगवान महावीर ने मुक्ति-लक्ष्मी प्राप्त की थी। परन्तु दुःख है कि आज स्वयं उनके परम भक्त इस पवित्र दिवस आसुरी प्रवृत्तियों-जुआ आदि-में संलग्न हो पाप का संचय करते हैं अथवा विनाशक रौप्यसुवर्णमय लक्ष्मी की उपासना करते हैं। कितना उत्कृष्ट भाव इस पवित्र दिवस में हममें उद्भावित होना चाहिए, किन्तु अज्ञानता की कृपा से "मात्र प्रेममय वृत्ति" के स्थान पर 'स्वार्थ वासना' का संचार हृदयों में होता है ! कितना अधः पात है !! शोक का स्थान है !!!

अपनी प्रवृत्तियों को सुधारना अपने हाथ में है। मनुष्य स्वयं अपनी अवस्था का विधाता है। सुख दुःख उसकी मुट्ठी में हैं। इन बातों को वैज्ञानिक ढंग पर प्रभु वीर ने हमको बताया था और उनका यह सौम्य-साम्य-सान्त्वनादायक संदेश आज भी जैन शास्त्रों में स्वरक्षित है। परन्तु खेद और दुःख है, कि जैन समाज इस अपूर्व संदेश को संसार के निकट नहीं पहुंचने देती ! उस सर्व हितकारी संदेश का ज्ञान प्रत्येक देश के प्रत्येक प्राणी को कराना उसका कर्तव्य है। तब संसार की प्रगति सुख शांति के राजमार्ग पर हो सकेगी। 'सब जीवित प्राणियों में मेरे ही समान प्राण हैं और उनके जीवन स्वत्व भी मेरे ही सदृश हैं। अपनी स्वार्थान्धता में उनको नाश करने अथवा हड़प जाने का मुझको अधिकार नहीं है, क्योंकि स्वार्थ में मैं अपने आप को भूले हुए हूं इसलिए यथार्थ स्थिति को नहीं जानता' इस उत्तमभाव का अनुभव प्रत्येक विचक्षण बुद्धि को भगवान की पवित्र वाणी का अभ्यास करते ही हो जायगा। और फिर राष्ट्रों को 'स्वभाग्यनिर्णय' का सिद्धान्त हर जगह लागू करते देर न लगेगी। यह स्थिति की

यथार्थता को जान जांयगे। प्राणियों के दुःखों का मूल कारण मालूम कर लेंगे। इसलिए प्रत्येक स्वतन्त्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करने देने में कोई बाधक न होगा। धर्म के मूल भाव को जानते हुए फिर कहीं भी हिन्दू मुसलमानों के मध्य धर्म की ओट में से सिरफुड़ौव्वल के दृश्य देखने को नहीं आँयगे? भला यह कौन सी दृष्टि से धर्म का अंग कहा जा सका है? धर्म्म बाहिरी क्रिया काण्ड के पाखण्ड में नहीं है। वह तो प्रत्येक प्राणी प्रत्येक आत्मा का निजी स्वभाव है। ऐसी अवस्था में क्या शंख की ध्वनि से अथवा घंटों और बाजों के न होने से धर्म में बाधा आ सक्ती है? नहीं; यह तो केवल मानुषिक कमजोरियां हैं। मान-मत्सर, ईर्ष्या और द्वेष के खेल करतब हैं! भगवान महावीर के धर्म साधन समय तो उनके ऊपर घोरतम उपसर्ग हुआ था, परन्तु वह अपने धर्म से तनिक भी विचलित न हुए। बात यह थी कि वह आत्म-विजयी वीर थे। सांसारिक संसर्ग अपना प्रभाव उन पर डाल न सके। आज मनुष्य जाति को उन के दिव्य उदाहरण से 'त्याग' का पाठ सीखना चाहिए। और अपने धर्म को 'सत्य' के प्रकाश में आंखें खोल देखना चाहिए।

जोहो संसार का कल्याण इसही में है कि वह अपने 'धर्म, की यथार्थता को 'सत्य की कसौटी पर कसके उसके अनुसार अपना जीवन ढङ्ग बनावे। उस अवस्था में उसे अहिंसा, सत्य, शील, अस्तेय और नियमित तृष्णा रखने का अभ्यास अवश्य करना पड़ेगा। इन सुन्दर व्रतों का वैज्ञानिक वर्णन प्रभु वीर ने उत्तम रीति से समझाया था, उसी सन्देश को आज संसार के हाथोंतक पहुंचाना हमारा धर्म है। जैनियों को आज अपनी शक्ति के अनुसार इस पवित्र कार्य्य में सहायक होना चाहिये।

हां, तो भगवान महावीर के विषय में हमें यह जानने की और इच्छा होती है कि आज से कितने वर्ष पहिले भगवान ने मोक्षलाभ किया था? साधारण रूप में आजकल प्रचलित वीर निर्वाण संवत् तो इस घटनाको २४५८ वर्ष पहिले हुई व्यक्त करता है, परन्तु अब ऐसे भी प्रमाण मिले हैं जो इस तिथि को ठीक नहीं बतलाते। उनके मतानुसार भगवान का निर्वाण ईसा से ४६७ वर्ष पहिले हुआ था। वास्तव में एक इतने प्राचीन विषय का ठीक निर्णय करलेना एक अतिकठिन कार्य है, किन्तु उपलब्ध सामिग्री से जिस ओर विशेष प्रामाणिक प्रकाश पड़े उसे ही स्वीकार करना लाज़मी होगा। अतएव विद्वानोंको इस ओर विशेष रीति से प्रकाश डालना चाहिये। तो भी हम इतना अवश्य कहेंगे कि वे इस ओर तन मन न करते समय निम्न बातों को ध्यान में रक्खें।

यह प्रकट है कि भगवान महावीर के समकालीन एक अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति महात्मा बुद्ध हैं। म० बुद्ध ने भी घरबार छोड़ परमसुख की खोज में साधुमार्ग की शरण ली थी। और वह जैन मुनि भी रहे थे, यह बात जैन शास्त्रों के अतिरिक्त स्वयं बौद्ध ग्रंथ से प्रमाणित है जिस में म० बुद्ध ने कहा है* "मैं बालों और दाढ़ी को उखाड़ने वाला भी था, और शिर एवं मुख के बाल नोंचने की परीषह भी सहन कर चुका हूं।" यहां पर संकेत जैन मुनि की केशलुंचन क्रिया की ओर है। तिस पर डॉ॰

* See Dialagues of Gotama, quoted in K. J. Saunder's Gotama Buddha p. 15.

रामकृष्ण भण्डारकर ने भी इस ही बात की पुष्टि की है।* अस्तु बुद्ध देव ने घोर दुःख सहन किए और दुद्धर तपश्चरण किए, परन्तु तो भी उन को उस उत्कृष्ट ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई जिसके दर्शन उन्होंने शायद अपने जैन गुरू में किए थे। इस दशा में भी उनको उस ज्ञान के अस्तित्व में तो शङ्का नहीं हुई परन्तु वह उसकी प्राप्ति का कोई सहज मार्ग ढूंढने लगे और उस की प्राप्ति बोधि-वृक्ष के नीचे होने पर उन्हों ने अपने 'मध्यमार्ग" का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया। बुद्धदेव ने गृह-त्याग २६ वर्ष की अवस्था में किया था और वह "बुद्ध" ३६ वर्ष की अवस्थामें हुआ कहा जाता है। अर्थात् उसने अपनी ३६ वर्ष की अवस्था से अपने मत का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया था।

उधर बिशप बिगनडेट साहब का कथन है कि बुद्धदेव के जीवन की ५० से ७० वर्ष की घटनाओं का क़रीब २ एक पूरा अभाव है ("An almost complete blank.") इस अभाव का क्या कारण हो सक्ता है यह जानना आवश्यक है। इस लिए उस समय के धार्मिक संसार में ऐसी कोई प्रबल घटना हमको देखनी चाहिए कि जिस के कारण बुद्धदेव के धार्मिक-प्रचार के जीवन (५० से ७० वर्ष तक) के वर्णन का अभाव है। आधुनिक विद्वानों की दृष्टि उस समय के धार्मिक पुरुषों में बुद्धदेव के बाद भगवान महावीर पर ही पड़ती है और वह समकालीन भी थे। अतएव भगवान महावीर के ही जीवन का किसी अपूर्व घटना का प्रभाव बुद्धदेव के जीवन पर पड़ा होगा। तीर्थङ्कर के जीवन में केवलज्ञान (सर्वज्ञता) प्राप्त करने का ही एक ऐसा अवसर है जो अनुपम और अद्भुत प्रभाव शाली है। इस बात की पुष्टि प्राचीन से प्राचीन उपलब्ध जैन साहित्य से होती है। अतएव कहना होगा कि इस समय भगवान महावीर को सर्वज्ञता की प्राप्ति हुई होगी और उनका धर्म-प्रचार समवशरण सहित सर्वत्र हुआ होगा; जिस का ही प्रभाव म० बुद्ध पर पड़ा होगा क्योंकि जैन शास्त्रों का जो वैज्ञानिक वर्णन है कि तीर्थङ्कर के पुण्यप्रकृति के प्रभाव से ४०० कोसतक चहुं ओर दुर्भिक्ष आदि दूर हो जाते हैं और उनके समवशरणके दर्शन करते ही लोगों का मिथ्याज्ञान काफूर हो जाता है उससे जनता को अवश्य ही यथार्थता का ज्ञान हो गया होगा। यही कारण है कि पश्चात् में बौद्ध संघ में भेदभाव पड़ा था। वहां देवदत्त ने तपस्या की अधिकता और मांस भक्षण के त्यागपर ज़ोर दिया है*भला उस समय भगवान महावीर के अतिरिक्त और किसने अहिंसा और तपस्या की उचित आवश्यकता पर ज़ोर दिया है? अतएव मानना होगा कि भगवान महावीर के धर्मप्रचार का ही प्रभाव था जिस के कारण बुद्धदेव को अपने मत के प्रचार में बाधा उपस्थित हुई थी-यहांतक कि उसकी ५० से ७० वर्ष की जीवनी ही नहीं मिलती? और ७२ वर्ष की अवस्था में वह सामान्यरूप में राजगृह में आकर पूंछ कर एक कुम्हार के यहां रात्रि बिताते हैं। इस के अतिरिक्त बौद्ध ग्रन्थ का निम्न वर्णन भी इसही बात की पुष्टि करता है:—

* जै० हि० भाग ७ अंक ११ पृ० १।

* See K. J. Saunder's Gotama Buddh P. 72-73.

"पावा के चन्द नामक व्यक्ति ने मल्लदेश के सामगाम में स्थित आनन्द को महान् तीर्थङ्कर महावीर के शरीरान्त होने की ख़बर दी थी। आनंद ने इस घटना के महत्त्व को झट अनुभव कर लिया और कहा 'मित्रचन्द' यह समाचार 'तथागत के' समक्ष लाने के उपयुक्त है। अस्तु हमें उनके पास चलकर यह खबर देना चाहिये।' वे बुद्ध के पास दौड़े गए, जिन्होंने एक दीर्घ उपदेश दिया।" (पासादिक सुत्तन्त' See Dialogues of Buddha. pt. III. P. 112.)

इस वर्णन के शब्दों में एक हर्ष भाव झलक रहा है, और हर्ष तब ही होता है जब कोई बाधक वस्तु दूर हुई हो। इसलिए इससे भी साफ़ प्रकट है कि भगवान महावीर के धर्म प्रचार के कारण बुद्धदेव को अवश्य ही अपने मध्यमार्ग के प्रचार में शिथिलता सहन करना पड़ी थी, और वह शिथिलता भगवान महावीर के निर्वाणासीन होते ही दूर होगई क्योंकि मि० विमलचरण लॉ० एम० ए० बी० एल० उक्त वर्णन पर कहते हैं कि "उससे म० बुद्ध और उनके मुख्य शिष्य सारीपुत्त ने अपने धर्म का प्रचार करने का विशेष लाभ उठाया।" *

इस प्रकार यह प्रत्यक्ष है कि भगवान महावीर के धर्म प्रचार के कारण बुद्धदेव का प्रभाव इतना हीन हुआ कि उनके ५० से ७० वर्ष के जीवन का वर्णन नहीं मिलता! परन्तु साथ ही यह भी विचारणीय है कि भगवान महावीर का धर्म प्रचार होते साथ ही बौद्ध धर्म में हीनता उपस्थित नहीं हुई होगा। इस लिए यदि मानलें कि ५ वर्ष के भीतर भगवान की सर्वज्ञता का और धर्म संदेश का प्रभाव चहुं ओर व्याप्त होगया तो कहना होगा कि बुद्धदेव की ४५ वर्ष की अवस्था में भगवान महावीर को सर्वज्ञता प्राप्त हुई थी अर्थात् जब भगवान महावीर ४२ वर्ष के थे तब बुद्धदेव की अवस्था लगभग ४५ वर्ष की थी। बुद्धदेव ने भी कहीं इस बात को शायद स्पष्ट नहीं किया है कि वस्तुतः भगवान महावीर उनसे आयु में बड़े थे। अतएव भगवान के संबंध में विचार करते समय यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि जब भगवान महावीर का धर्मोपदेश हो रहा था तब बुद्ध की अवस्था ४०-५० के मध्य थी।

इसके अतिरिक्त बुद्धदेव के सम्बन्ध में हमको मालूम है कि:—

(१) बुद्ध जब २९ वर्ष की अवस्था में गृहत्याग राजगृह गए तो वहां राजा श्रेणिक था।

(२) बुद्ध की मृत्यु के ९ वा १० वर्ष पहिले देवदत्त ने जो संघ में भेद खड़ा किया था उस समय अजात शत्रु युवराज थे। शायद इस ही समय श्रेणिक ने अजात शत्रु के सुपुर्द राज्यभार किया था।

(३) बुद्ध की मृत्यु से ८ वर्ष पहिले अजात शत्रु ने अपने पिता को कैद किया था।

(४) तथा जब राजा चेटक ने मगध पर आक्रमण किया था, श्रेणिक का विवाह चेलना से हुआ था।

उधर श्रेणिक चरित्र से ज्ञात है कि जब श्रेणिक युवा हो चुके थे तब महाराज उपश्रेणिक ने उन को देशनिकाले का दण्ड दिया था। अर्थात् उस समय श्रेणिक की अवस्था कम से कम २५ वर्ष की

* See Kshatinga claus in Buddhist India p. 176.

अवश्य माननी पड़ेगी। श्रेणिक के चले जाने के कुछ समय पश्चात् उपश्रेणिक का देहान्त होगया और चलाती प्रजा पर अन्यायपूर्वक राज्य करने लगा। इससे चिढ़कर प्रजा ने श्रेणिक को बुला भेजा था। इस बीच में श्रेणिक बौद्ध धर्मानुयायी हो आए थे। इसलिए बुद्धदेव की २६ वर्ष की अवस्था में मिलते समय श्रेणिक का राजा होना जैन ग्रन्थ के इस वर्णन से ठीक नहीं बैठता। तो भी इससे प्रकट है कि श्रेणिक सिंहासनारूढ़ होते समय क़रीब ३०-३१ वर्ष के अवश्य होंगे, और उनका विवाह चेलना से उस समय हुआ जब राजा चेटक मगध पर आक्रमण किये हुए थे। इस के उपरान्त भगवान महावीर के समवशरण के राजगृह आने पर श्रेणिक जैन धर्मानुयायी हुआ था, और देवदत्त के बौद्ध संघ में मतभेद खड़ा करने के समय तक अजातशत्रु भी अपने पिता की भांति जैन धर्मानुयायी था, क्योंकि इसके पहिले उसका साक्षात् बुद्ध से नहीं हुआ था और उसे अबतक 'सर्व दुष्कृत्यों का समर्थक और पोषक' बौद्ध ग्रंथों में लिखा है। यह मतभेद बुद्ध की ७० या ७१ वर्ष की उमर में हुआ था। इसी समय अजातशत्रु ने श्रेणिक को कैद में डाला था जहाँ उनकी मृत्यु हो गई थी। कैद के डालने का कारण यही हो सकता है कि अजातशत्रु का हृदय अब बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हो गया था, और उसका पिता जैनधर्म रत था, यद्यपि जैन शास्त्रों में उसके पूर्व वैर कारण बताए हैं। इसलिए इस समय के पहिले ही श्रेणिक भगवान महावीर के समवशरण में हो आए होंगे। इस समय भगवान महावीर अवश्य विद्यमान होंगे और उनकी अवस्था करीब ६५ वर्ष की होगी यह अनुमान होता है। इन सब बातों पर विशेष रीति से ऐतिहासिक प्रकाश पड़ने की आवश्यकता है। तब ही यथार्थरूप में निर्णित स्वीकार की जा सकती हैं। वास्तव में जैन इतिहास पर अभी बहुत कुछ प्रकाश पड़ना बाकी है। उसही के अनुरूप में यहां किञ्चित् विचार किया गया है। जैन विद्वानों को इस विषय का अध्ययन करना चाहिए।

—उ० सं०

आह्वान

पधारो सत्वर ! दया निधान !

अनुपम अक्षय, पवित्र पुण्यमय यह शुभ दिवस महान।

स्वर्णाक्षर अंकित स्वजाति का उज्वल धवल निशान॥ १॥

आत्मवीर, सद्धर्म प्रणेता सन्मति गुण मणि खान।

हृदयनाथ! भगवान् वीर ने पाया था निर्वाण॥ २॥

किया अहा! निर्वाण महोत्सव शचीनाथ ने आज।

वह अनन्त स्मृति वितरण करती नव जीवन दान ॥ ३ ॥
किंतु आज वह दृश्य न अवगत नहीं वही सामान ।
क्या ? निर्वाण महोत्सव है यह अथवा विपति विधान ॥४॥
मानव हृद्यदीप अन्तर्गत धर्म-स्नेह अवसान ।
दिव्य ज्ञानमय विमल ज्योतिका भाम न अनुसन्धान ॥५॥
दुरितम मिथ्यातम फैला हा ! अन्त आत्म विज्ञान ।
सत्य सरल पथ विस्मृत है विभु ! करहु दयाकर दान ॥६॥
"वत्सल"

क्या भारत के पतन का कारण अहिंसा है

(ले० श्रीमान् चम्पतराय जी जैन बार, एट-लॉ)

आज कल के कुछ अजैन लेखकों ने इस बात का एक प्रकार का फैशन सा बना लिया है, कि समय बेसमय जहाँ कहीं अवसर मिले, जैनधर्म और बौद्धधर्म को भारतवर्ष के पतन का अपराधी ठहरावें, और इसका कारण वे लोग यह बताते हैं, कि इन मतों के अहिंसा धर्म के प्रचार ने ही भारतवासियों को कायर और संसार से विरक्त बना दिया था। जिसके कारण वह अन्य विदेशी कौमों के मुकाबले में खड़े नहीं रह सके।

कुछ लेखक तो ऐसे हैं कि जिनके लेखों की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु एक दो लेखक ऐसे भी हैं जिनके लेखों को संसार आदर की दृष्टि से देखता है। जैसे, लाला लाजपतराय। लाला लाजपतराय ने अपनी 'भारत का इतिहास' नामक पुस्तक में उपरोल्लिखित दोष जैनियों के माथे मढ़े हैं। मुझे नहीं मालूम कि लाला लाजपतराय ने इतिहास लिखने की योग्यता कब और कैसे प्राप्त की। लाला जी का साधारण जीवन निस्सन्देह देशभक्ति के लिये अर्पण हो चुका है, इसलिए मैं इस बात को मानने के लिए बाध्य हूं, कि वह कोई बात बदनियती से अपने मुख या कलम से नहीं निकाल सकते। रही यह बात कि भूल होना सो हर व्यक्ति से संभव है। तिस पर जहाँ तक परिचय है उससे मालूम है कि लाला जी दार्शनिक विचार में कुछ अधिक निपुणता को प्राप्त नहीं हैं। ऐसी दशा में प्रत्यक्ष ही है कि जैनधर्म के भूतकाल के महत्त्व का उनको

पता नहीं चलेगा। मालूम होता है कि मान्यवर लाला जी ने अहिंसाधर्म के स्वरूप को भी कुछ भले प्रकार नहीं समझ पाया है।

इतिहास का लिखना हर व्यक्ति के लिये संभव है, परन्तु उसमें कुशलता हर व्यक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। मानुषिक रुचियों, हार्दिक संस्कारों, व्यक्तिगत उमंगों आदि से पूरे तौर से जानकारी होने के बिना ही यदि कोई लेख लिखा जाये तो चाहे वह इतिहास हो, चाहे उपन्यास हो अथवा कोई और विषय हो, वह निर्दोष नहीं हो सकता। यही हाल लाला लाजपतराय जी के 'भारत के इतिहास' का है। यों तो इस समय में जब कि बहुत से भारत के इतिहास लिखे हुए मिलते हैं। किसी नवीन ऐतिहासिक ग्रन्थ का लिखना कोई कठिन बात नहीं है, किन्तु हर लेखक अपनी पुस्तक में अपने निजी विचारों को प्रकट करता है, और इन्हीं निजी विचारों के आधार पर लेख की कुशलता का अन्दाज़ा किया जाता है।

यदि निरपेक्ष दृष्टि से देखा जाय, तो जैन और बौद्ध दोनों ही मतों के माननेवाले बलिष्ठ राजा गत समय में हुए हैं। सम्राट् अशोक बौद्ध मतानुयायी था। जिस के समय में बौद्धमत का सितारा भारत वर्ष में बड़ी तेज़ी से चमक रहा था और जैन धर्म के राजा महाराजा तमाम भारतवर्ष में फैले हुए थे। स्वयं सम्राट् चन्द्रगुप्त जैन धर्म का मानने वाला था। इसने यवन* फ़ौज का मुक़ाबला किस वीरता से किया, इस बात को भारत का बच्चा २ जानता है। अन्त में यवन फ़ौज के सरदार 'सेल्यूकस' ने महाराजा चन्द्रगुप्त की प्रशंसा करते हुए अपनी बेटी उनको ब्याह दी। अन्य जैन राजा भी बड़े प्रतापी और वीर हुए हैं।

बौद्ध मत का पतन केवल इस कारण से नहीं हुआ कि उसके माननेवाले राजा भारतवर्ष में नहीं रहे, बल्कि इस कारण से हुआ कि लोगों ने अन्त में उसे अरुचिकर समझा। मालूम होता है, कि उसका प्रचार केवल राजा का धर्म होने के कारण ही तेज़ी से फैल गया था। दार्शनिक विचार की अपेक्षा बौद्धमत ने भारतवासियों के दिलों में कभी घर नहीं कर पाया था। इसलिये जब सम्राट् अशोक के पश्चात् बौद्ध राजाओं का राज्य छिन गया तो क़रीब उसी तेज़ी के साथ जिस तेज़ी के साथ वह फैला था, उसके अनुयाईयों की संख्या कम होनी शुरू हो गई। इस का मुख्य कारण वही है जो ऊपर कहा गया अर्थात् उसका दार्शनिक पहलू भारतवासियों को अरुचिकर हुआ।

जैन-मत के पतन का कारण बौद्धमत के पतन के कारण की भांति नहीं है। क्योंकि जैन सिद्धान्त भारत भूमि के लिये कभी अरुचिकर नहीं हुआ अजैन विद्वानों तक ने हमेशा जैन सिद्धान्त के नियमों की सराहना ही की है। अजैनों द्वारा कृत अत्याचार ही जैनियों की संख्या के कम होने का विशेष कारण है। अत्याचार के भय से मंद-उत्साह वाले बहुत से लोग जैन धर्म से पृथक् होने के लिये समय २ पर बाध्य हुए। जिस व्यक्ति ने गत समय के जैन स्मारकों को देखा है या उनका वर्णन किसी पुस्तक में पढ़ा है,

* 'यवन' शब्द से यहां लेखक का भाव शायद Greek लोगों से है।

—स० ई०

वीर

[illegible]

The Late

Shastra Visharada Jainacharya [illegible] Vijaya Dharma Suri

वह इस बात को बड़ी स्पष्टता के साथ जानता है, कि गत समय में जैन धर्म तमाम भारत वर्ष में फैला हुआ था। बिहार देश में महावीर भगवान उत्पन्न हुवे थे। उनके विहार करने के कारण उस देश का नाम विहार पड़ा था। वर्तमान समय का वर्द्धवान का ज़िला मालूम होता है कि भगवान महावीर के नाम पर ही वर्द्धमान कहलाया, कारण कि भगवान महावीर का नाम वर्द्धमान स्वामी भी था। बिहार देश के ज़िलों के 'गजट' ईयरो के पढ़ने से ज्ञात होता है कि, गत समय में यहाँ पर जैनियों का जो श्रावक कहलाते हैं बड़ा जोर रहा है, और अब भी बिहार देश के कुछ जिलों में प्राचीन जैनी पाये जाते हैं, जो कि अपने मत से बहुत कुछ नावाक़िफ़ हैं। यद्यपि यह पार्श्वनाथ भगवान को पूजते हैं और जैनियों की भांति ही इनके साधारण आचरण हैं। यह लोग अपने को अभी तक "श्राक" कहते हैं।

बहुतसी जगहों पर प्राचीन जैन प्रतिमायेंऔर मन्दिर टूटी फूटी दशा में मिलते हैं। यह सब इस बात के सूचक हैं कि इस प्रान्त में जैन मत का बहुत प्रचार रहा है। जैनमत के पतन का एक कारण यह भी है कि इस समय में लोग विशेष कर क्षुद्र-बुद्धि वाले ही होते हैं, जिन के लिए कई मतों में तो स्पष्ट रूप से धर्म शास्त्रों के पढ़ने की मनाई है। यह लोग न अपने और न पराये मत के समझनेकी योग्यता रखते हैं। जैनियों में भी बहुधा ऐसे लोग ही पैदा हुए हैं, जो अपने मत की महत्ता को दूसरों पर प्रकाश करने में असमर्थ रहे। इसके अतिरिक्त अजैनों के अत्याचार के कारण जैनी अपने धर्मको छुपाने पर बाध्य हुए। धीरे धीरे इन्हीं और ऐसे ही कारणों से जैनियों की संख्या कम होती गई। किन्तु अब भी जैनी भारत के तमाम भागोंमें पाये जाते हैं।

अहिंसा सिद्धान्त पतन का कारण नहीं हो सकता। जैनियों की संख्या में कमी अहिंसा सिद्धान्त के कारण से नहीं हुई, वरन् ऊपरोल्लिखित एवं अन्य सामाजिक कारणों, से ही हुई। बौद्धोंके लिये भी यह कहना कि उनका अहिंसा सिद्धान्त उनके या देशके पतन का कारण है बड़ी बेसमझी की बात है। बौद्धों की संख्या अब ५० करोड़ के लगभग है, जो अन्यमतों की संख्याओं की अपेक्षा सब से अधिक है। और अन्य देशों में बौद्धमत अबतक स्वतंत्रता के साथ प्रचलित है।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म में एक विशेष भेद है कि बौद्ध धर्म में भिक्षु और भिक्षुणी दो ही अंग संघ के हैं। जैन धर्म में चार अंग संघ के हैं (१) श्रावक (२) श्राविका (३) मुनि (४) अर्जिका। देखने मात्र में यह कोई बड़ा भेद नहीं है किन्तु दीर्घ दृष्टि वाले को बखूबी मालूम है, कि इसका फल क्या है।

धर्म, अर्थ काम; मोक्ष, चार प्रकार के पुरषार्थ होते हैं। इनमें से धर्म अर्थ, काम श्रावक के पुरुषार्थ हैं, साधु का केवल एक ही पुरषार्थ मोक्ष है। इस कारण साधु उस कर्तव्य को नहीं कर सकता है जिस को श्रावक करता है, और जो किसी अंश में उसके लिये करना आवश्यक भी होता है। गृहस्थ धर्म और साधुधर्म दोनों ठीक २ केवल उसी समय क़ायम रह सकते हैं, जब कि श्रावक अपने पुरषार्थों की नियमानुसार रक्षा करे। श्रावक के लिये अहिंसा धर्म अणुव्रत रूप में लिखा है,

साधु उस को महाव्रत रूपमें पालता है यदि श्रावक साधु की नक़ल करे और अहिंसा धर्म को महाव्रत रूप में पाले तो सिवाय गड़बड़ के और कुछ हासिल न होगा। श्रावक को उद्यम, रसोई, प्रारम्भ राजरक्षा,प्राणरक्षा,धनरक्षाआदि में हिंसा करनी ही पड़ती है। उस अपराधी(मुजरिम को)दण्ड भी देना होता है। इस लिये वह केवल एकेन्द्रिय से ऊपर के जीवों का ही संकल्पी हिंसा से अपने को बचाता है। सर्वथा हिंसा का त्याग न उस के है, न हो सकता है। जो कमी कि बौद्ध मत के संघ में श्रावक और श्राविका के अभाव से थी वह अन्य देशों में प्राकृतिक रूप से ही दूर हो गई क्यों कि उन देशों में भिक्षु और भिक्षुणियों पर ही सीमित न होकर बौद्धमत सर्व साधारण में फैल गया।

जैन धर्म में श्रावक और श्राविका संघ के आवश्यक अंग हैं, इसका कारण जैनधर्म में कोई त्रुटि गृहस्थ के पुरुषार्थों के सम्बन्ध में नहीं हो सकती है। अब रही यह बात, कि अहिंसा के पालन करने से मनुष्य राज्यपाट के अयोग्य व निर्बल हो जाते हैं, सो यह भी ठीक नहीं है। कुछ आदमियों का ख़याल है, कि मांस भक्षण से शरीर की पुष्टि होती है,और उसके न खाने से मानसिक और शारीरिक निर्बलता मनुष्य को आन घेरती है। जिसके कारण उसकी वीरता नष्ट होजाती है। यह विचार सर्वथा मिथ्या है। आधुनिक साईन्स ने इस बात को भले प्रकार प्रमाणित कर दिया है। कि भोज्य पदार्थों के भागों व अंशों के लिहाज़ से मक्खन और मेवे, खासकर बादाम, बहुत पुष्टिकारक हैं। इसके सिवा मक्खन (नोनी व घी) शरीर को नीरोग दशा में कर सकता है उससे आधा भी रोगी अवस्था में नहीं कर सकता। जिन अंग्रेज़ों ने मौका पाकर मांस भक्षण छोड़ दिया है, उनकी साक्षी बड़ी तादाद में मिलती हैं, और वह सब इस बात पर सहमत हैं कि मांस की अपेक्षा शाकाहार बहुत पुष्टिकारक *और बलप्रदायक है।

अतः यह बात सर्वथा मिथ्या है कि मांसभक्षण शारीरिक बल के लिये आवश्यक है। अब रही यह बात कि मांसभक्षण की आवश्यकता बुद्धिबल के लिए है, सो यह भी बिलकुल झूठी बात है, और एक ही दलील उसको मिथ्या साबित करने के लिये यथेष्ट है। देखिए, जितनी मांसभक्षी कौमें आजतक हुई हैं, जिनका इतिहास या धार्मिक ग्रंथों के द्वारा पता चलता है, और जितनी मांस भक्षी कौमें आज दुनियां में विद्यमान हैं, उनमें बड़े २ पण्डित व तर्कालंकार इत्यादि पदवियों के धारक लोग होगये हैं, और उन्होंने अपनी तर्क वितर्क की शक्ति के बड़े २ चमत्कार भी समय २ पर दिखाये हैं, परन्तु उनमें से एक मनुष्य ने भी सत्य दार्शनिक विचार में वास्तविक उच्च पद को प्राप्त नहीं किया। वास्तव में उपाध्याय की पदवी को

* जिन महानुभावों का यह विचार है कि मांसभक्षण से शारीरिक बल बढ़ता है, यदि वह इस बात पर विचार करेंगे कि साधारण मांसाहारी जातियों को महीने में कितनी बार और कितना मांस खाने को मिलता है, तो उनको स्पष्टतया विदित होजायगा कि शारीरिक पुष्टि के लिये मांसभक्षण की आवश्यकता नहीं है। जिन मनुष्यों को महीने में एक दो बार एक प्याला शोरवा व एक दो बोटी मांस की खाने को मिलती है, उनकी शारीरिक पुष्टि में किस कदर भाग अन्न का होगा यह बात हर शख्स स्वयं समझ सकता है।

वही महात्मा ग्रहण कर सकता है जिसके मनमें लक्ष्य (पॉईंट) पर दृढ़ता से कायम हो जाने की शक्ति है, अर्थात् जिसकी बुद्धि बलवान, शान्तिमय और दृढ़ विचार वाली है। जो बुद्धि विषय से दृढ़ता के साथ नहीं लड़ सकती, जो मन के विषय पर से हट जाता है, वह पूर्णरूप से दार्शनिक विचार में सफलता को प्राप्त नहीं हो सकता। मांस कषायों को उत्तेजित करता है, भेजे के ज्ञान तंतुओं को गंदा और मोटा कर देता है, जिसके कारण विचारशक्ति सूक्ष्म विषय से टकराकर कार्यहीन होजाती है। शाकाहार ज्ञान तन्तुओं को शुद्ध और हलका करता है। इस कारण शाकाहारी की बुद्धि निर्मल और शुद्ध होती है। शाकाहारी के मन में ही केवल इतनी शक्ति है कि वह जाकर विषय पर जाकर लड़ जाता है। यही कारण है कि माँस भक्षण करने वाले लोगों में एक भी सच्चा दार्शनिक आजतक उत्पन्न नहीं हुआ। और यही कारण है कि वह लोग न कभी अपने धर्म को समझ पाये और न किसी अन्य धर्म को। बल्कि सच तो यों है कि जितनी गड़बड़ी व भ्रम धर्म व दार्शनिक विचार के सम्बन्ध में पाई जाती है वह सब इन्हीं लोगों की नियम रहित तीव्र मानसिक कल्पनाओं का फल स्वरूप है।

अब भारतवर्ष के पतन के असली कारणों को भी हम दिखाना चाहते हैं। यह विदित है कि मुसलमानों के आक्रमण के समय में जैन राजा बहुत ही कम संख्या में थे। तमाम भारतवर्ष में हिन्दू राजा राज्य करते थे। उस समय के अधिकांश हिन्दू राजा माँसाहारी थे। इनकी पराजय का कारण जैनियों का अहिंसा धर्म किसी तरह नहीं हो सकता। यह न जैनी थे, न अहिंसा धर्म पर चलते थे और न माँस त्यागी ही थे। इनके पतन के कारण केवल (१) विपरीत क्षत्रिय धर्म (२) मिथ्या विश्वास ग्रह आदि का भय (३) अदूरदर्शीपन (४) और आपस की फूट थे।

शत्रु के आगमन की खबर सुनकर जो लोग मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में घर में बैठे रहेंगे, वह युद्धस्थल में जाकर क्या बचा लेंगे ? हिन्दुओं ने कभी युद्ध विधान में उन्नति नहीं की। उनकी समझ में कभी यह नहीं आया कि जो लोग धोखे व छल के युद्ध को बुरा नहीं समझते हैं। छापा मारने में जिनको पेतराज नहीं है, लड़ाई के समय जो गौओं को आगे करके उनकी आड़में लड़ते हैं; उनके साथ क्योंकर लड़ना चाहिये और किस प्रकार का बर्ताव करना चाहिये। यदि हिन्दुओं ने अपने बलिष्ठ शत्रुओं को पकड़कर मुक्त न कर दिया होता तो अनुमानतः भारतवर्ष आज स्वतन्त्र होता मुसलमानों के साथ अनुमानतः कभी एक लाख से अधिक सेना नहीं आई। भारतवर्ष की जन संख्या उस समय में २५ करोड़ से कम किसी हालत में न थी, और तिसपर भी एक एक राजपूत योद्धा दस २ शत्रुओं पर भारी था। मैदान में पीठ दिखाना कभी इन के ख़याल में भी नहीं आ सकता था। जिनकी माँ बहिनें और स्त्रियाँ सभी वीरांगनायें थीं उनकी पीठ देखनी शत्रु को कैसे नसीब होसकती थी। तिस पर भी केवल एक लाख की संख्या वाली मुसलमान सेना को रोकने वाला कोई भी न निकला।

होनहार बलवान होती है, यहाँ न कसूर हिन्दुओं की वीरता का है, न जैनियों के अहिंसा सिद्धान्त का, न बौद्धों के भिक्षु-भिक्षुणी-रूप संघ

का ही। कहा भी यही है कि "विनाशकाले विपरीत बुद्धि"। जब बुरा समय आता है और कोई खराब बात होने वाली होती है, तो मनुष्य की बुद्धि ख़राब हो जाती है, और फिर खराब बुद्धि वाले मनुष्यही पैदा होने लगते हैं, अर्थात् उन्हीं का अधिकार होजाता है। जितनी वीरता राजपूतों ने अपने कटते समय दिखाई यदि उसका दसवाँ भाग ही वह दिखाते। वरन् टाईमटेबिल (समय की पाबंदी) का ध्यान रखते और सेनाओं के एकत्रित करने का प्रयत्न करते तो कौन विदेशी सेना ऐसी थी जो भारत में आकर जीवित वापिस जा सकती थी। यदि राजाओं के दिलों में अभिमान ज़रा कम होता तो आपस की फूट का भारत के शत्रु कभी फायदा नहीं उठा सकते थे। जब अंग्रेजों का आक्रमण हुआ तो न मुसलमान, न राजपूत, न मरहठे, न सिक्ख और न पुरबिये ही शाकाहारी थे। थोड़े से जैनियों और कुछ शाकाहारी हिन्दुओं के अतिरिक्त समस्त देश मांसभक्षी था। तिसपर भी थोड़े से अंग्रेजों ने आकर इन तमाम मांस भक्षियों को जिनकी संख्या करोड़ों की थी अपना गुलाम बना लिया। तो फिर भला अहिंसा किस प्रकार भारत के पतन का कारण बताई जा सकती है? परन्तु खेद है! कि बुद्धिमान लोग पुस्तकें लिखने बैठ जाते हैं और सहज ही में इधर उधर आक्षेपों को बांटने लगते हैं।

जैन इपीग्रेफिया

(ले०—चेवेलियर डां० वी० शेषगिरि राउ एम० ए० पी० एच० डी०)

[गताङ्क से आगे]

(११)

जैनाचार्यों का विवरण

पूर्व प्रकाशित शिलालेखों से हमें उन जैन मुनियों और आचार्यों का पता चलता है कि जिन्हों ने आन्ध्र-कर्नाट देश में जैन धर्म का प्रचार किया था। वे केवल गृहस्थ और साधुजनों के ही नेता नहीं थे प्रत्युत उन राज्यवंशों के प्रमुख थे जिन की सत्ता में इन देशवासियों के अधिकार थे। इन नेताओं ने इन देशों के राज्य प्रबन्ध में कितना प्रभाव किसी रीति से अपने वीर-शिष्यों द्वारा फला

रक्खा था यह अगाड़ी के वर्णन से प्रगट होगा । यहां पर इन के संबन्ध में जो विवरण पूर्व प्रकाशित शिलालेखों से ज्ञात है वह याद रखना चाहिये:—

संख्या	गुरु मुनि	शिष्य मुनि	संघ	गण	विशेष विवरण
१	जिन भूषण भट्टारक ········	...		...	...
२	प्रभाचन्द्र भट्टारक ··········	...	मूल ···	...	...
३	भावसेन त्रैवीदिय चक्रवर्त्ती	...	मूल ··	सेन	वादीकेलिपसिंह
४	बालेन्दु मलधारी देव ········	...	मूल ···	देसी	...
५	चारु कीर्ति भट्टारक ········	चन्द्राङ्क भट्टारक	मूल ···	देसी	...
६	देवचन्द्र ········ ·········	...	मूल ···	देसीय	...
७	चन्द्रभूति ···················	...	मूल ···	...	...
८	चन्देन्द्र ···················	...	यापणीय	...	...
९	कनक कीर्ति देव ··········	...	...	...	...
१०	चन्द्रकीर्ति ················	...	...	...	...
११	भट्टारक जिनचन्द्र ·········	...	मूल ···	...	...
१२	पुष्पनन्दि मलधारी देव ····	देवनन्दि आचार्य	...	करू० कुन्द०	...
१३	त्रिभुवन कीर्ति राउल ·····	बालेन्दुमलधारीदेव	मूल ··	देसी कुन्द०	पुस्तक गच्छ
१४	सिंहनन्दि ············· ····	...	...	...	...
१५	पेर-भूतराक्षित ·············	च्यूल पेर	...	देसी का.क.	कुन्दकुन्दान्वय
१६	ललितकीर्ति भट्टा० देवमलधारी	...	...	...	...
१७	भवधर्म्म भट्टारक ··········	...	...	...	...
१८	इन्द्रकीर्ति ················	...	...	...	...
१९	विजय कीर्ति ·············	अर्ककीर्ति	...	...	...
२०	कलिंगाचार्य ················	विजय कर्ति	...	...	...
२१	अर्हनन्दि ···················	...	...	बलहारि	अड्डकाली गच्छ
२२	कलिभद्र आचार्य ···········	...	...	...	...
२३	भावनन्दि ·················	...	...	...	यवराजा के गुरु
२४	अनन्त वीर्यदेव ············	...	...	..	...
२५	अमर कीर्ति आचार्य ········	माघनन्दि ···········	मूल ··	बलात्कार	कुन्द०.सरस्वती

जैन कथा

(ले०-श्रीयुत हरिसत्य भट्टाचार्य बी० ए० बी० एल के बंगला लेख का अनुवाद)

(क्रमागत)

स्याद्वाद

पदार्थ अगण्य गुणोंका आश्रय है। पदार्थ में उन्हीं समस्त भिन्न २ गुणों का एकादि क्रमसे आरोप करनेका नाम स्याद्वाद नहीं है। एक एवं अद्वितीय गुण पदार्थ में आरोपित होने पर पदार्थ जो सात प्रकारसे निरूपित किया जाता है, उस सात प्रकार की विवेचनशैलीका नाम स्याद्वाद या सप्तभङ्गी न्याय है। उदाहरण के लिये अस्तित्व नामक गुण घट नामक पदार्थ में आरोपित होने पर निम्न लिखित सप्तवर्णना संभवित होती है।

(१) स्यादस्ति घटः—अर्थात् कथंचित रूप में घटहै। घट है इसका अर्थ क्या ? घट सर्वथा नित्य, सत्य, अनंत, अनादि अपरिवर्तनीय पदार्थ रूप से विद्यमान है यह अर्थ नहीं है। घट है इसका अर्थ यह कि घट अपने स्वद्रव्य (मृत्तिका निर्मित इत्यादि) स्वक्षेत्र (मान लीजिये कि पाटलिपुत्र नगर में), स्वकाल (मान लीजिये कि बसंतकाल में) और स्वभाव (घटरूप) से विद्यमान है। (२) स्यान्नास्ति घटः कथंचित् घट नहीं है। अर्थात् पर द्रव्य (सुवर्ण इत्यादि) परक्षेत्र (मान लीजिए कि गान्धार नगर में) परकाल (मान लीजिए कि शीत ऋतु में) परभाव (पट रूप) से घट नहीं है। (३) स्यादस्तिनास्तिच घटः- अर्थात् कथंचित् घट है और कथंचित घट नहीं है। स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र स्वकाल, स्वभाव से घट है और पर द्रव्य, परक्षेत्र, परकाल और परभाव से घट नहीं है। (४) स्यादवक्तव्य घटः अर्थात् कथंचित् घट अवक्तव्य है। यदि एक ही समय में घट है और घट नहीं है ऐसा विचारकिया जाय तो घट अवक्तव्य हो जाता है। दोनों बातें एक समय में एक साथ नहीं कही जा सकती, अतएव वहाँ अवक्तव्य अङ्ग उपस्थित होता है। तीसरे भङ्ग में जो घट को अस्तित्व और नास्तित्व दिया गया है, उसका अभिप्राय यह नहीं है कि जिस क्षण में घट अस्तित्ववान कहा है, उसी क्षण में नास्तित्व भी कहा है। (५) स्यादस्तिच अवक्तव्य घटः-अर्थात् कथंचित घट है और कथंचित् अवक्तव्य है। यह पांचमा भङ्ग प्रथम और चतुर्थ भङ्ग के मेलका फल है। (६) स्यान्नास्ति च अवक्तव्य घटः कथंचित घट नहीं और कथंचित अवक्तव्य है। यह भङ्ग दूसरे और चौथे भङ्ग के संकलन पर प्रतिष्ठित है। (७) स्यादस्ति च स्यान्नास्ति च अवक्तव्यः घटः-अर्थात् घट कथंचित है, कथंचित् नहीं और कथंचित् अवक्तव्य है। बहुत करके सप्तभङ्गी का सातवां भङ्ग तीसरा और चौथा भङ्ग मिलाकर संगठित किया गया है। जैन दार्शनिकों का कथन है कि वस्तुका सर्वाङ्गिक और पूर्ण विचार सप्तभङ्ग या स्याद्वाद पर प्रतिष्ठित है। एक २ भङ्ग से किये गये विचार में वस्तुकी प्रकृत पूर्णता नहीं है। ये प्रत्येक भङ्ग वस्तु का किसी अंशमें विवरण करते हैं वस्तु का सम्पूर्ण ज्ञान सातों भङ्गों के आश्रय से

होता है। अस्तित्वके विषयमें जिस प्रकार सप्तभङ्गात्मक विवरण किया है उसी प्रकार पदार्थ नित्य है या अनित्य? इस प्रश्नका उत्तर भी उपरोक्त सात भङ्गोंके द्वारा दिया जाता है। जैनमतमें स्याद्वादही पदार्थ निरूपणका एक मात्र उपाय है।

द्रव्यका स्वरूप—द्रव्य में उत्पत्ति है और विनाश भी ये सब जानते हैं। भारतवर्ष में बौद्ध और ग्रीस में Heralitus के शिष्यगणों के इसी निमित्त द्रव्य को अनित्य मानना स्थिर किया है। किन्तु प्रतीयमान उत्पत्ति विनाशादि परिवर्तन के मूल में ऐसा एक तत्त्व रहता जो सदैव अविकृत है जैसे कि कटक कुंडलादिके मूल में सुवर्ण। इसी लिये भारत वर्ष में वेदान्तवादी और ग्रीस में Parmenides के अनुगामियों ने परिवर्तन वाद उड़ा कर द्रव्य की नित्य सत्ता और अविकृति स्वीकार की है। स्याद्वाद वादी जैन गणोंने इन दोनों उभय मत को कथंचित् परिमाण में स्वीकार किया है और कथंचित् परिमाणमें परिहार किया है। इन के मत में सत्ता भी है और परिवर्तन भी है। इसी लिये ये अपने द्रव्य को उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त प्रतिपादन करते हैं। जैसे कि-(१) द्रव्य की उत्पत्ति है। (२) द्रव्यका विनाश है और द्रव्य में ऐसा एक तत्व है जिससे अनंत उत्पत्ति और विनाश रूप परिवर्तन के होते रहने में भी अविकृत, अपरिवर्तित और अटूट अवस्था रहती है।

द्रव्य, गुण, पर्याय—द्रव्य के विचार में गुण और पर्याय की बात भी उठती है। जैन गणों का द्रव्य बहुत कुछ Cartesian गण के Substance के तुल्य है। जो द्रव्यके साथ चिरकाल अविच्छेद अवस्थान करता है अर्थात् जिसके अभाव से द्रव्य द्रव्य ही नहीं रहता जैन उसे गुण कहते हैं। यही गुण Cartesian गणों का Attributes है। द्रव्य स्वभावतः अविकृत होने पर भी जो अनन्त परिवर्तन समूह में प्रकाश पाता है, उस का नाम पर्याय है। जैनी जिसे पर्याय कहते हैं, Cartesian गण उसे Mode कहते हैं। यह बात ध्यान में रखने योग्य है। जैन मत में पुद्गल धर्म, अधर्म आकाश और काल ये पांच अजीव द्रव्य एवं जीव ऐसे कुल छह द्रव्य हैं।

अवधिज्ञान

मति श्रुतादि पंचविध ज्ञान के भीतर मतिज्ञान और श्रुतिज्ञान का विवेचन किया जाता है। स्थूल इन्द्रियों का गोचरता के बाहिर जो समस्त रूप विशिष्ट द्रव्य है, उसकी असाधारण अनुभूति का नाम अवधि ज्ञान है। वर्तमान काल में Occultist जिसे Clairvoyance कहके निर्देश करते हैं उसे ही कुछ परिमाण में अवधि ज्ञान कह सकते हैं। अवधि ज्ञान तीन प्रकार का है-देशावधि परमावधि और सर्व विधि। देशावधि देश और काल से मर्यादित है, परमावधि असीम है और सर्व विधि के द्वारा विश्व के सम्पूर्ण रूपी द्रव्य का अनुभव होता है।

मन, पर्यय, ज्ञान—दूसरे की चित्तवृति के विषय का अनुभव होना मनः पर्यय ज्ञान है। Occultiest इसे Telepathy या Mindreading मन पर्यय ज्ञान भिन्न ही हैं। इस ज्ञान से आत्मा प्रत्यक्ष परमन गत पदार्थों को जानता है, कहते हैं। ऋजुमति और विपुलमति की सहायता से विश्व के समस्त चितवृत्तियों के विषय का सूक्ष्म आलोकन होता है।

केवल ज्ञान—चैतन्य विशिष्ट जीव के ज्ञान का यही चरम स्तर है। विश्व का सम्पूर्ण विषय केवल ज्ञान से आयत्त होता है। यही सर्वज्ञता है इसी को पश्चिमी थियासोफिस्टगण Omenisci-ence कहते हैं। केवल ज्ञान आत्मा से ही प्रगट होता है। यह इन्द्रिय और किसी भी विषय का मुखापेक्षी नहीं है। ज्ञानी मुक्त पुरुषार्थ है। केवल ज्ञान के प्रसंग में ही जैन दर्शन के सात तत्वों का केवल कथनउपस्थित हो जाता है। जैन दर्शन के सात तत्वों का नाम है-जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष।

जीव और अजीव—जैन दर्शन में जीव चेतनादि गुण विशिष्ट है। स्वभावतः शुद्ध जीव अनादि काल से अजीव तत्व के साथ मिला हुआ है। इस अजीव से जीव के स्वतन्त्र हो जाने का नाम ही मुक्ति है।

आश्रव—स्वभावतः शुद्ध जीव जब तक जीवातिरिक्त विषयोंमें अनुरागी या द्वेषयुक्त होता है तब तक जैन मतानुसार जीव तत्व में कर्म पुद्गल का आश्रव याने आगमन होता रहता है। आश्रव दो प्रकार का है-(१) शुभ और (२) अशुभ। शुभाश्रवसे जीव स्वर्गादि सुखों का अधिकारी होता है। अशुभाश्रव से जीव नारकीययातना को भोगता है। आश्रव कालमें जो सकल कर्म-पुद्गल जीव-तत्व में प्रवेश करता है, उसको प्रकृति आठ प्रकार की है। जैसे ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, मोहनीय, वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र और अंतराय। जो कर्म ज्ञान को आच्छादित कर देता है उस नाम ज्ञाना वरणीय कर्म। जिस कर्म के प्रभाव से जीव का स्वाभाविक दर्शन-गुण आच्छादित हो जाता है उसे दर्शना वरणीयकर्म कहते हैं। जो कर्म जीव के सम्यक्त्व और चारित्र गुण का घात करता है उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। इस कर्म के सद्भाव से ही जीव मिथ्यात्व और राग द्वेष और युक्त परिणति करता है। वेदनीय कर्म के फल से सुख दुःख रूप सामग्री प्राप्त होती है। आयु कर्मके फलसे जीव आयु प्राप्त करता है। नाम कर्मसे जीव गति शरीर प्रभृतिको प्राप्त होता है। गोत्र कर्म से उच्च और नीच गोत्र में जन्म लेता है। अन्तराय कर्म से दान, लाभ, भोगोपभोग और शक्ति में विघ्न उपस्थित होता है। इन्हीं आठ कर्मों के १४८ उपभेद और हैं।

बन्ध—उक्त कर्म पुद्गल के आश्रव से स्वभावतः मुक्त जीव बद्ध होता है। अर्जादान्तर्गत पौद्गलिक कर्म के साथ जीव का एकीभूत हो जाना ही बन्ध कहलाता है।

संवर—संसार में मोहित होने वाले जीवों में कर्म का आश्रव जिस प्रकार से रुक जाता है, उस प्रकार को संवर कहते हैं। संवर बद्ध जीव को मुक्ति का मार्ग बतला देता है। जैनमत में संवर की साधना सम्यक दर्शन सम्यक् ज्ञान और सम्यक चारित्र के अवलम्बन से होती है।

निर्जरा—कर्म्म के एक देश क्षय होने का नाम निर्जरा है। सविपाक और अविपाक रूप से निर्जरा दो प्रकार की है। निर्दिष्ट फल भोग के अन्त में कर्म का स्वभाविक क्षय उसे सविपाक निर्ज्जरा कहते हैं। एवं फल भोग के पूर्व ही ध्यान तपश्चरणादि द्वारा कर्म क्षय होने को अविपाक निर्ज्जरा कहते हैं।

मोक्ष—जीव के यावतीय कर्म क्षय होने पर

श्रीयुत ब्र० धरनेन्द्रदासजी रईस आरा।

जीव मोक्ष लाभ करता है। एवं स्वभाविक पूर्ण विकसित अवस्था को प्राप्त होता है। जैनधर्म में मोक्ष पथ के चौदह स्तर (गुणस्थान) हैं। उनके नाम–मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरत,सम्यक्‌त्व देशविरत, प्रमत्तविरत, अप्रमत्तविरत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तकरण, सूक्ष्मसांपराय, उपशान्तमोह, क्षीण-मोह, सयोग केवली और अयोग केवली। इन सब का विवेचन जैन शास्त्रों में देखना चाहिए।

मोक्ष मार्ग

जैनाचार्यों के मतानुसार सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यकचारित्र इन तीनों की एकता मोक्ष मार्ग है। ये तीनों जैन दर्शन में त्रिरत्न या रत्नत्रय नाम से विख्यात हैं।

सम्यकदर्शन– जीव अजीव प्रभृति पूर्वोक्त सात तत्वों में अविचलित विश्वास और आस्था रखना सम्यक दर्शन है।

सम्यकज्ञान— संशय, विपर्यय, अनध्य-वसाय नामक तीन समारोप या भ्रान्ति हैं। इनसे रहित ज्ञान ही सम्यकज्ञान है।

सम्यक चारित्र–राग-द्वेष विरहित पवित्रा-चरण का अनुष्ठान सम्यक चारित्र है*इस स्थान में यह निबन्ध पूर्ण किया जाता है। जैन कथन करने जायें तो और भी कई कथन करना आवश्यक है इसका कोई शुमार ही नहीं। जैन काव्य, जैन पुराण जैन साहित्य, जैन नीति ग्रन्थ, जैन ज्योतिष, जैन चिकित्सा शास्त्र, प्रभृति में कितनी कथायें, कितने सिद्धान्त, कितने ऐतिहासिक उपकरण हैं उसकी आलोचना के अतिरिक्त जनता के आगे रखने का दूसरा उपाय नहीं है। हमने जो जैनदर्शन की थोड़ी सी विवेचना की है यह बिलकुल सामान्य जैन तत्व विद्या का कंकाल मात्र है। प्रमाणाभास, वाद विचार, फल परीक्षा, प्रभृति जैन दर्शनके अनेक तथ्यभी इस निबन्ध में स्थानाभावसे नहीं दिए जा सके और न समयाभाव से उनकी आलोचना ही की गई। तथापि जो कुछ आलोचित हुआ है सुज्ञ-व्यक्ति इसी में अनेक तत्वों का अनुसन्धान पा सकते हैं, जिसमें वर्तमान कालीन विज्ञान के बहुत कुछ मूल सूत्र निहित हैं।

जैन विद्या भारतवर्ष की विद्या है। इस विद्या का पुनरुद्धार करना केवल जैनियों का ही नहीं वरन सम्पूर्ण भारतियों का एक मात्र कर्त्तव्य है। इस विद्या के प्रति बंगालियों का भी एक कर्त्तव्य है। भारतीय लुप्त सभ्यता के अनुसन्धान में बंगाली ही अग्रगामी हैं। बंगाल प्रान्त में ही बहुत पहले से जैनमूर्ति आविष्कृत हैं। बंगाल प्रान्त में 'सराक' नाम की अहिंसापरायण एकजाति का संधान पाया जाता है। हिन्दू समाज में अन्तर्निविष्ट होने पर भी वे प्राचीन जैन या श्रावकों के वंशधर हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

ऐसा अनुभव होता है कि जो बंगदेश में वर्द्ध-मान नगर है। वह चौबीसवें तीर्थङ्कर महावीर स्वामी का अन्यतम नाम वर्द्धमान की स्मृति को वहन कर रहा है। उक्त वीर स्वामी के नाम से ही बंगदेशीय वीरभूमि अबतक सुपरिचित है। बंगाल प्रान्त में एकाधिक तीर्थङ्कर मूर्ति व्यतीत प्राचीन

* आधुनिक शैली से यदि जैनधर्म के अनेकान्तिक और मोक्षमार्ग के रहस्य को अन्य दर्शनों की आलोचनात्मक दृष्टि से समझना हो तो अनुवादक की लिखी "अनेकांतमय तत्वविज्ञान" पुस्तक मंगावें।

जैन मन्दिर भी आविष्कृत हैं। बंगाल के निकटवर्ती मगध देश में ही अनेक तीर्थंकरों का आविर्भाव हुआ है। ऐसे क्षेत्र में सभ्यताभिमानी बंगदेशीय जन यदि जैन विद्या के पुनरुद्धार में यत्नवान न होवें, तो यह उसके लिये बड़े ही आक्षेप का विषय है, और भी एक बात यह है कि अहिंसा प्रभाव से भारतवर्ष का राजनैतिक उद्धार सम्पादन करना चाहिए, ऐसी महात्मा गांधी की घोषणा होते ही बंगदेश में ही सबसे पहले उक्त राजनैतिक अहिंसा तत्त्व हृदयङ्गम किया गया एवं कार्यरूप में परिणत हुआ ऐसा जान पड़ता है। परन्तु इस अहिंसा व्रत का मूल कहाँ है? वेद शासित धर्म्म में अहिंसा की प्रशंसा है, यह स्वीकार है। बौद्ध भी अहिंसा को अपने धर्मकी मूल भित्ति कहतेहैं। किन्तु भारतवर्षीय जैन संप्रदाय केवल अहिंसा धर्म का समादर करने में ही निरत नहीं रही। मन, वचन और काय से उन्होंने अनुष्ठान भी किया है यह बात जैन समाज के सूचीभेद्य अज्ञानअन्धकार के दिनों में भी स्वीकार करनी पड़ती है। जैन विद्या का समादर करने के लिये ही यह एक कारण बंगदेशीय विद्वानों के निकट उपस्थित किया जा रहा है।

नोट—यह निबन्ध मूल लेखक ने राधानगर साहित्य सम्मेलन की दर्शन शाखा में पढ़े जाने के लिये लिखा था। इससे ज्ञात होता है, कि बंग साहित्य सम्मेलन की दर्शन, विज्ञान इत्यादि भिन्न २ विषयों की अलग २ शाखायें हैं और उनके द्वारा अपने २ विषय के साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये अनेक उपाय अमल में लाये जाते हैं। हमारे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संचालकों को भी चाहिये कि वार्षिक सम्मेलन के साथ ही में साहित्य के भिन्न प्रमुख विषयों के अनुसार शाखाएँ नियोजित करके शाखाओं की बैठक एक एक दिन हुआ करें और शाखा सम्मेलन के सभापति उन २ विषय के पारदर्शी विद्वान नियुक्त किये जाया करें।

महिला-महिमा

महिलाओं के लिये स्वच्छ वायु की उपयोगिता

भारतीय नारीसमाज का जैसा हीन जीवन आज हो रहा है वैसा शायद ही पहिले कभी रहा हो। यही कारण है कि आज उनके जीवन उन्नत नहीं हैं, उनके शरीर सबल नहीं है, उन के मस्तिष्क परिपक्व व गंभीर नहीं हैं, उनके हृदय दृढ़ नहीं हैं; उनके ज्ञाननेत्र खुले नहीं हैं! दूसरे शब्दों में वह सब तरह से दीन हीन दशा में हैं! समयके फेर ने समाज के नियमों को ऐसा पलट दिया कि पुरुष का आधा अङ्ग समझा जाने वाला समाज आज, 'जीवन-ध्येय' से अनभिज्ञ हो गया। यह मानी हुई बात है कि शरीर ही सर्व धर्मों के साधने के लिए मूल कारण है। नीति भी इसी बात को चिल्ला २ कर कह रही है। और ठीक भी है कि जब शरीर ही स्वस्थ्य न होगा तो धर्म, अर्थ, काम,

मोक्ष साधनों का किस प्रकार साधन हो सकेगा। प्रत्यक्ष में भी प्रकट है कि आज जैन समाज की शारीरिक अवस्था बिलकुल ख़राब हो रही है वह अपनी रक्षा भी सामना पड़ने पर किसी आक्रमण-से नहीं कर सकी है प्रत्युत ऐसे अवसरों पर अपने धन और जन की हानी उठाती है 'अपनी प्यारी' बहू बेटियों" की बेइज़्ज़ती अपने आंखों देखती है! दुःख है कि वह अपने बच्चों को, अपने युवकों को व्यायाम कराना आवश्यक नहीं समझती। अपनी बहूबेटियों को स्वच्छ वायु सेवन और उचित व्यायाम को पाने का अवसर नहीं देती जिससे उन के शरीर हृष्ट पुष्ट हों, और वह तथा उन की संतान सर्व पुरुषार्थों का पूर्ण पालन कर सकें और वास्तविक जीवन बिता सकें। किन्तु दुःख है कि महिलाओं की शरीरोन्नति की ओर ध्यान देना हम पाप समझते हैं। उन्हें शीघ्रसे शीघ्र 'राक्षसी-बन्धन' में बांध घर की चहारदीवारी के भीतर पटक देते हैं। उस दिन से उन के लिये स्वच्छ हवा का पाना दूभर हो जाता है। इसलिए यदि वास्तव में हम अपनी महिलाओं के जीवनको 'मनुष्य जीवन' बनाना चाहते हैं तो हमें उनकी समुचित धार्मिक मानसिक एवं शारीरिक शिक्षा का प्रबन्ध रखना चाहिए और १५ वर्ष की अवस्था के पहिले कभी भी उनकी शादी न करनी चाहिये तथा १५ वर्ष से पहिले शादी कर देने में उन की शिक्षा दीक्षा और शारीरिक उन्नति भी नहीं हो पाती। और वह उन्नत जीवन व्यतीत नहीं कर सकीं। विवाह के उपरान्त भी उन को स्वच्छ वायु सेवन का प्रति दिवस अवसर देना चाहिए। अपने पतिदेव वा अन्य निकट सम्बन्धियों के साथ खुले मैदान, बगीचा आदि स्थानों में जाने में कोई हानि नहीं! सती सीता तो अपने पतिदेव के साथ बनबन फिरी थीं आजकल भी दक्षिण प्रान्त की हमारी बहिनें स्वच्छ वायु में विचरती हैं और वे हमारी उत्तर की बहिनों से कहीं विनयवान, शीलवान और बलवान हैं। स्वच्छवायु सेवन जिसप्रकार पुरुषों के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार महिलाओं के लिए भी है। इस लिए प्रत्येक पुरुष को अपनी पुत्री की शारीरिक उन्नति पर पूरा ध्यान देना चाहिए। जापानदेशकी स्त्रियों की विशेष हृष्टतापुष्टता का यही कारण है कि उनकी शिक्षा दीक्षा उचित रीति से होती है। उनका विवाह प्रौढ़ावस्था में होता है। और गृहस्थ जीवन में भी उन को स्वच्छ वायु सेवन के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं। जापानी स्त्रियों को छुटपन से ही बताया जाता है कि स्वच्छ हवा के बिना उनका जीवन रहना ही कठिन है। उन्हें हृदयङ्गम करा दिया जाता है कि जितनी ही स्वच्छ हवा होगी और जितनी ही वह अधिक होगी उतने ही स्वस्थ्य और सुखमय उनके जीवन होंगे! इसका फल यह है कि वहां वायु सेवन की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। वहां के घरों की खिड़कियों में शीशे के स्थान पर तेल में भिगोए हुए कागज़ लगाये जाते हैं। इनसे हवा रुकती नहींहै, परन्तु तो भी जापानी स्त्री पुरुष कभी भी जाड़ों के दिनों में भी—इन खिड़कियों को बन्द करके नहीं सोते है। जाड़ा लगने पर वे अधिक 'ओढ़ना' रख लेते हैं। परन्तु हमारे यहां इसके विपरीत भाव बच्चोंको सिखाए जाते हैं। डराया जाता है कि 'लल्लाको बाहर हवा में मत ले जाइयो-डर जायगा।' फलतः गन्दी हवा

में रह कर हमारे, हमारे बच्चों के और हमारी बहिनों के स्वास्थ्य खराब हो रहे हैं। जहां जापानी महिलाएं प्रातः उठकर बाहर जाकर स्वच्छ वायु का सेवन करतीं हैं, वहां हमारी बहिने ही नहीं प्रत्युत भाई भी अपने उस 'गन्दे पिंजड़े' में पड़े हुए करवटें बदला करते हैं जापानी महिलाओं का यह प्रातः वायु सेवन और फिर शुद्ध जल का स्नान उन के शरीरों में जीवन संचार करने के मूल कारण हैं। उनके घर के कोने २ में हवा पहुंचने का प्रबन्ध रक्खा गया है। और वे स्वच्छ हवा की खूब गहरी सांसें लेती हैं। इस के लाभ से उनके शरीर अत्यन्त हृष्टपुष्ट हैं। उन में क्षयरोग तो छू तक नहीं गया है। अतएव हम पुनः अपनी बहिनों और भाइयों से अनुरोध करेंगे कि स्वच्छ वायु सेवन के महत्व को समझें। और स्वयं, एवं अपने बच्चों और महिलाओं के लिये उस का पूरा प्रबन्ध रक्खें। इत्यलम्।

अन्योक्ति

(ले०—श्रीयुत् "नयन")

(१)

रख आशा पर दृष्टि सरलता–वश तू आया; कुछ दाने अवलोक सुधा से गया सताया।
हां, दाने हैं पड़े; किंतु वह जाल लगा है; कर ले अरे विचार, जगत में बहुत दगा है॥
अमृत और विष–योग से बना जगत को जान ले।
दाने यदि देखे कहीं, वहीं जाल अनुमान ले॥

(२)

ओले से भर रहा मूढ़ यह आँगन तेरा; पूजन—समय विसार बना ओलों का चेरा।
भ्रम ही गया सवार बीनता फिरता ओले; ओले किसके हुए बतादे मानव भोले॥
दिया नहीं खरचा नहीं, किया न पर उपकार है;
पानी बन बहता गया, ओला किस का यार है!

—माधुरी से

जैनधर्म की अहिंसा जगतप्रिय क्यों नहीं होती ?

यह सब जानते हैं कि अहिंसा जैन धर्म्म का एक नितान्त मुख्य और प्रसिद्ध सिद्धान्त है। जैनधर्म में कषायके वश होकर किसी भी जीवित प्राणी, चाहे वह मनुष्य हो अथवा पशु हो-दुःख देना अथवा मारडालना सब से बड़ा पाप है। इस लिये जैन लोग जहां तक उनसे हो सकता है हर प्रकारके जीवित प्राणीके प्राण लेने से परहेज़करते हैं। यहां तक कि वे बनस्पति की हिंसा को भी यथा शक्ति बचाते हैं। न वे मनबहलाव वा तमाशा के लिये किसी जीवित प्राणी को सताते हैं। न जिह्वा के स्वाद के, अथवा अपना पेट भरनेके लिये किसी की गर्दन पर छुरी चलाते हैं। न परमात्मा अथवा देवी देवता के लिये पशुओं की बलि चढ़ाते हैं। वास्तव में देखा जाय तो अहिंसा का सिद्धान्त संसार के सब जीवों को सुख का देने वाला एक अतिउत्तम सिद्धान्त है परन्तु आश्चर्य है कि संसार में उसका प्रचार समुचित रीति से नहींहो पाता, यद्यपि गतकाल में पशुओं का होम होताथा वह अब नहीं होता। परंतु जहां तक मेरा ख्याल है उन पशुओं की संख्या कि जो मांस आदि के लिये मारे जाते हैं पहिले से अति अधिक है। कहा जाता है कि इस ज़माने में अहिंसा का प्रचार अच्छा हो चला है। पश्चिमीय देशों में बहुतसी सभासमितियां इस प्रकार की स्थापित हो गई हैं कि जो मांस भक्षण का निषेध करती हैं। बहुतसे डाक्टरों ने तजुर्बा करके दिखला दिया है कि मांस अनाज व मेवा जात व दूध की बराबर ताक़त नहीं देता बल्कि उससे बहुतसी बीमारियां उत्पन्न होती हैं। परंतु मैं तो कहूंगा कि इस प्रकार की समितियां अभी बहुत कम हैं। इतने बड़े २ देशों में यदि दो चार समितियां अहिंसा प्रचार की हुई तो उन की कौन सत्ता है ? और हज़ारों डाक्टरों में से यदि किसी एक दो डाक्टरने मांस भक्षण को बुरा बतला दिया तो उसका क्या असर हो सक्ता है जब कि तमाम डाक्टर खुद मांस खाते हैं ? अपने भारतवर्ष में ही देख लीजिए कि कितने डाक्टर मांस भक्षण को बुरा बतलाते हैं ? मेरे ख्याल में यदि डाक्टरवैद्य और हकीम मांस को बुरा बतलाने लगें तो बहुत कुछ मांस भक्षण कम होकर अहिंसा का प्रचार होजाय। यद्यपि बहुतसे हिन्दू वैद्य व हकीम धार्मिक दृष्टि से अथवा रिवाज़के अनुसार मांस नहीं खाते किन्तु मांस भक्षण की बुराई उनके दिलमें घरकिए हुए नहीं होती। इसलिए यदि मांस खाने वाले रोगी उनके पास आते हैं तो उनको वे मांस खाने की सम्मति दे देते हैं !

मेरे ख्याल में पहिले की अपेक्षा मांस भक्षण बहुत अधिक बढ़ा हुआ है। हिन्दू जाति में अग्रवाल आदि कतिपय वैश्य जातियों और गौड़ ब्राह्मणों के सिवाय अधिकतर और सब जातियां मांस का व्यवहार करती हैं, और गङ्गा जमना के इस मध्य देश की दशा तो खैर अच्छी है, परन्तु पूर्व में बंगाल बिहार आदि में तो सिवाय जैनियों के कुछ २ और

सब लोग मांस खाते हैं। जैन लोग मांस भक्षण और हिंसा के खिलाफ़ उपदेश देते हैं। परन्तु सर्व-साधारणके दिल पर उनके उपदेश का कुछ अधिक असर नहीं होता! प्रत्युत कतिपय सज्जन तो जैन धर्म व जैन समाज को खिल्ली उड़ाने लगते हैं। कह बैठते हैं कि ऐसे उपदेशों ने ही भारतवर्ष का सत्यानाश किया है! इन लोगों ने जीवरक्षा-जीव दया की पुकार लगा लगाकर सारे देश को निर्जीव कर दिया इत्यादि, बेढंगी बातें करने लगते हैं। साधारण बुद्धिके मनुष्य ऐसा कहें तो कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु कितनेक ऊँची श्रेणी के लोग भी जैन अहिंसा को कायरता का कारण बतलाकर जैनधर्म पर आक्षेप कर डालते हैं। इस सब का क्या कारण है? मेरे ख्याल में तो इसका कारण यह ही है कि जैन समाज इन लोगों को अहिंसा का प्रभाव अमली रीतिसे नहीं दिखलाती। जैन समाज अपनी शरीर मज़बूत व अपने दिल को दिलेर बनाकर यह प्रमाणित नहीं करती कि अहिंसा का पालन करते हुए भी मनुष्य हृष्ट पुष्ट बलवान और वीर हो सकता है। बेशक हिंसा व गोश्तखोरी कभी अच्छी नहीं हो सकती और देश की कमज़ोरी हिंसा व मांस भक्षण से परहेज़ का फल कदापि नहीं है। परन्तु जब कि अधिकांश लोग धर्म के यथार्थतत्व व परमार्थ का कुछ ख्याल नहीं करते इसलिए उनके दिल पर ज़ुबानी दलीलों से समझाने का कुछ असर नहीं होता, बल्कि उन को तो अहिंसा के पालन करने व मांसभक्षण से परहेज करने वाला मनुष्य खुद शारीरिक शक्ति एवं वीरता में उत्तम होकर ही यह दिखला सकता है कि अहिंसा की पाबन्दी करने व मांस भक्षण न करने से मनुष्य कमज़ोर व कायर नहीं होसकता।

इसमें संशय नहीं कि साम्प्रत में जैनसमाज शारीरिक शक्ति व वीरता की अपेक्षा बहुत पीछे पड़ा हुआ है। वास्तव में देखा जाय तो इस समाज की आज कल ऐसी हालत है कि यदि यह लोग अन्य जातियों से कहीं अलग बसा दिए जांय तो यह स्वयं अपनी जान व माल की रक्षा तक न कर सकें। न यह सिपहगरी का काम कर सकते हैं—न अपनी शारीरिक शक्ति के द्वारा अपने आपको वैरियों के आक्रमण से बचा सकते हैं, न चोर डाकुओं से अपनी रक्षा कर सकते हैं, न भयानक पशुओं शेर, भेड़िये आदि से अपने को बचा सकते हैं। न इनको शस्त्र चलाना आता है, और शारीरिक कमज़ोरी के कारण हिम्मत और वीरता भी बहुत कम पाई जाती है। इनकी ऐसी हालत देखकर बहुधा अन्य लोग झट बिना सोचे समझे यह अंदाज़ा लगा लेते हैं कि चूंकि यह लोग अहिंसा पर अधिक ज़ोर देते हैं अहिंसा का पालन अतीव कट्टरता के साथ करते हैं—इसीलिए इनकी ऐसी दशा है।

बहुधा अन्यमत वाले जैन समाज की शारीरिक निर्बलता के कारण जाने बिना उस निर्बलता को अहिंसा की पाबन्दी का नतीज़ा समझ बैठते हैं। अस्तु, जब कि जैन समाज शारीरिक बल व शूर-वीरता में गिरा हुआ है तब जैन धर्म की अहिंसा जगत प्रिय नहीं होती। अहिंसा के सिद्धान्त का मौखिक वा लिखित उपदेश आप जितना चाहे दें, परन्तु उसका असर सर्व साधारण के हृदयों पर इतना हरगिज़ नहीं होगा जितना कि उस दशा में होगा जब कि आप खुद साक्षात ताकत के नमूना

बनकर यह दिखला दें कि अहिंसा पर अमल करने वाले शारीरिक बल में बढ़े चढ़े शूरवीर होते हैं। बात यह कि साधारण जनता धार्मिक सिद्धान्तों की क़द्र उन के मानने वालों की दशा से करती है। धार्मिक सिद्धान्त पुस्तकों में लिखे हुए कितनी ही उच्च कोटि के क्यों न हों ? यद्यपि बेशक विद्वज्जन जहां कहीं उनको पढ़ेंगे या सुनेंगे अवश्य उनका आदर एवं मान करेंगे। परन्तु यदि उन सिद्धान्त के मानने वालों की दशा खराब हुई और उनकी संख्या घटती जाती हो तो सर्व साधारण के हृदयों पर धार्मिकसिद्धान्त का प्रभाव नहीं पड़ता, वे शङ्का करने लगते हैं कि यह धार्मिक सिद्धान्त ही कुछ ऐसे होंगे जिनसे इनके मानने वालों की हालत खरब है। इसलिये यदि जैन समाज को यह इष्ट है कि जैन अहिंसा जगप्रिय हो, संसार में अहिंसा धर्म का प्रचार हो, तो उसको चाहिये कि जहां वह अहिंसा का प्रचार उपदेशकों,ट्रेक्टों आदि द्वारा करे उसके साथ २ ही अपना शारीरिक बल व शूरवीरता बाढ़ायें। और अपनी संख्या की घटती के कारणों को दूर करें जिससे संसारको यह प्रमाणित होजाय कि अहिंसा पर अमल करने वाले बलवान शूरवीर और जीवन शक्ति रखने वाले होते हैं। हिंसा व मांसभक्षण को दूर करने के लिये उपदेश व व्याख्यान ट्रैक्ट आदि लाभकारी हैं, परंतु सिवाय इनके अब ज़रूरत इस बात की है कि जैनसमाज अपने शरीरों को दृढ़ और मज़बूत, अपने दिलों को वीर बनाकर यह दिखलादे कि अहिंसा का पालन करते हुए भी शरीरबलिष्ट औरहृदय वीर होसका है जैनसमाज को असिकर्म (सिपहगरी) भी सीखना चाहिये। शस्त्रविद्या भी जाननी चाहिये, व्यायाम आदि में भी निपुण होना चाहिये और इन बातों में उन्नति करके संसार को साबित कर देना चाहिये कि मनुष्य अहिंसा को अपने मन में जगह देते हुए अपनी संतान,अपने भाई,अपनी जाति और अपने देश की अच्छी तरह रक्षा कर सका है, और जिन लोगों का यह ख्याल है कि जैनधर्म की अहिंसासे ही देश की अवनति हुई है उनका यह ख्याल नितांत मिथ्या है। जैन समाज को जैन पुराणों में अपने पुरातन पुरुषों की कथाओं का केवल सुनना ही काफ़ी नहीं है, प्रत्युत अपने जीवन को उनके नमूनों पर ढालना चाहिए। जब जैन पुराणों में हजारों उदाहरण जैन योद्धाओं के मौजूद हैं तो फिर शस्त्रविद्या से परहेज क्यों ? जब जैन पुराणों से यह प्रगट है कि जैनधर्म पर चलने वाले, अहिंसाधर्म के पालने वाले, मल्ल, युद्ध आदि नाना प्रकार के व्यायाम करते थे तो फिर अब व्यायाम आदि करने से हिचकिचाहट किस वास्ते ? खेद है कि आजकल अधिकतर जैन लोग व्यायाम और शस्त्रविद्या को बुरा समझते हैं नफ़रत की निगाह से देखते हैं। यहाँ मेरठ में एक जैनी साहब थे कि जो तन्दुरुस्ती की दुरुस्ती के लिए प्रातः को जङ्गल में टहलने को भी पाप बतलाया करते थे। इसही प्रकार के लचर विचार व अहिंसा सिद्धान्त को खींचतान कर एकान्त रूप से मानने का यह परिणाम है कि जैनसमाज कायर व डरपोक के नाम से पुकारी जाती है, और जैनधर्म पर देश की गिरावट का अभियोग लगाया जाता है।

इसके अतिरिक्त बहुत सी कुरीतियाँ जैसे बाल विवाह, वृद्ध विवाह, व्यर्थ व्यय आदि भी जैन

समाज की शारीरिक निर्बलता के कारण है। वृद्ध विवाह से संतति दिन प्रति दिन कमज़ोर होती जा रही है, और उसके कारण समाज में ब्रह्मचर्य्य का पालन नहीं होता। शारीरिक व मानसिक शक्ति व स्वास्थ्य के लिए ब्रह्मचर्य्य का पालन भी निहायत ज़रूरी है। इसलिए जैनसमाज को ब्रह्मचर्य्य पालन में बाधक कारणों को दूर कर देना चाहिए। शादी व गमी आदि के अवसरों का व्यर्थ व्यय भी संतान का पालन जैसा होना चाहिए वैसा नहीं होने देता। पुत्र पुत्रियों के विवाह के ख़र्च का फ़िक्र माता पिता के बल और स्वास्थ्य को खराब करता रहता है। कतिपय जैनी सज्जन मकानों आदि की सफ़ाई पर कम ध्यान देते हैं। हिंसा के ध्यान को दृष्टि में रखते हुए मकानों की नालियां आदि की सफाई काफ़ी तौर से नहीं करते। कतिपय दांतों को साफ़ नहीं करते। दांतों में न दाँतौन करते और न मंजन लगाते हैं, जिससे उनके दांत खराब होकर आँतभी खराब होजाती हैं और हमेशा बदहज़मी में संलग्न रहते हैं। यह हिंसा का विचार ठीक नहीं है। गंदगी रखने से तो और अधिक जीव उत्पन्न होकर अधिकतर हिंसा होती है। हिंसा के विचार को सीमा से अधिक खींच कर उसको एकान्त का जामा नहीं पहनाना चाहिए। अपनी गृहस्थावस्था अपनी हालत व ताक़त को देखते हुए और पाप पर पुण्य के पलड़े के झुकाव को देखते हुए प्रत्येक कार्य में प्रवृत्ति करनी चाहिए। खानपान में जैन समाज को कुछ अधिक तबदीली करने की आवश्यकता नहीं है। पानी छानकर पीना, प्रत्येक वस्तु को साफ़ करके व्यवहार में लाना, रात्रि को भोजन नहीं करना आदि शुद्धता की रीतियां जो जैनसमाज में प्रचलित हैं वह बहुत अच्छी व अति प्रशंसनीय हैं। हाँ, साग सब्जी के परहेज़ को जैन समाज किसी हद तक नामुनासिब तरीके पर खींचे हुए है। उसमें कुछ तबदीली की बेशक ज़रूरत है। बात यह है कि शाकसब्जी मेवाजात स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभकारी है। इनका काफ़ी व्यवहार न करने से एक बीमारी कि जिस का नाम 'इस्करवी' (Scurvy) है मनुष्य के शरीर में उत्पन्न होजाती है। परन्तु जैन समाज में कुछ यह रिवाज सा होगया है कि विविध वनस्पतियों का त्याग बिना उसका मतलब व भाव समझे छोटे बड़े सब से कराया जाता है। एक तरह से जैन समाज वनस्पति के त्याग में ऐसा प्रख्यात हो गया है कि वनस्पति का त्याग जैनधर्म का एक चिन्ह समझा जाने लगा है। किन्तु वास्तव में वनस्पति के त्याग से शारीरिक स्वास्थ्य व बल को अतीव हानि पहुंचती है। जहाँ तक मैं समझता हूं वनस्पति का त्याग जीव हिंसा के बचाव पर अवलम्बित है अर्थात् जीवहिंसा को बचाने के लिए ही वनस्पति का त्याग किया जाता है और वनस्पति के व्यवहार में स्थावर जीवों की हिंसा होती है। परन्तु जैन धर्म में गृहस्थी के लिए त्रसजीवों की हिंसा का बचाव ज़रूरी रक्खा गया है। स्थावर जीवों की हिंसा को भी अपनी हालत और ताकत की अपेक्षा जिस कदर हो सके बचाव है, परन्तु स्थावर हिंसा का बचाव गृहस्थी के लिये लाज़मी व ज़रूरी नहीं है। ऐसी दशा में वर्तमान में जो जैनसमाज ने वनस्पति के त्याग को हद से ज्यादह मुख्यता दे रक्खी है वह ठीक नहीं है। यहाँ पर कोई यह कदापि न समझे कि मैं वनस्पति आदिक

स्वर्गीय बाबू मुन्नालालजी संघचू कलकत्ता ।

जन्म—सं० १९०६
चैत्र कृष्णा १२ रविवार

मृत्यु—सं० १९८१
भाद्र शुक्ला १३ गुरुवार

है स्थावर जीवों की हिंसा के बचाव का निषेध कर रहा हूं। मैं हरगिज यह नहीं चाहता हूं कि जिस मनुष्य के परिणाम ऐसे बढ़ गए हैं कि वह स्थावर जीवों की हिंसा करना गवारा न कर सकता हो वह वनस्पति का त्याग न करे। वह वनस्पति का त्याग करे और जरूर करे। अथवा यदि किसी सज्जन के परिणाम किसी खास वनस्पति से विरक्त हो गए हैं वह उस वनस्पति का खाना अवश्य छोड़े। किंवा किसी वनस्पति व फल में त्रस जीवों की उत्पत्ति होती हो तो उसको भी जरूर ही त्याग देना चाहिए। मेरे कहने का भाव यह है कि बिना परिणामों के चढ़े और बिना परिणामों में विरक्ता आए जो जैन समाज में यह एक दस्तूर हो गया है कि सब से शाकसब्जी छुड़ाई जाती है, बालक बालिकाओं सबको बिना उनके त्याग का मतलब समझे शाकसब्जी का त्याग कराया जाता है, यह दस्तूर ठीक नहीं है। इससे उनके शरीर कमजोर पड़ जाते हैं और कषाय घटती नहीं कि जो जैन धर्म का वास्तविक उद्देश्य है। अस्तु जब कि जैनधर्म में गृहस्थी के लिए स्थावर जीवों की हिंसा का बचाव लाज़मी व ज़रूरी व मुख्य नहीं है तो फिर क्यों वनस्पति के त्याग को इस प्रकार सीमा से अधिक मुख्यता देकर जैन समाज की तन्दुरुस्ती व शारीरिक शक्ति को हानि पहुंचाई जाती है कि जिसको देख कर दुनिया के लोग अहिंसा धर्म की क़दर नहीं करते और कहने लगते हैं कि जैन धर्म की अहिंसा तो शाकसब्ज़ी व मेवा जात आदिको भी छुड़ाकर मनुष्य को बिलकुल कमज़ोर व बीमार बनाना चाहती है। और एक बात यह भी है कि आप शाकसब्ज़ी कन्दमूल मेवा जात दूध घी की उत्तमता व उत्कृष्टता ही दिखलाकर अन्य लोगों से मांस मछली अण्डे आदिका व्यवहार छुड़ा सके हैं। परन्तु जब आप वनस्पतिके त्याग का भी ज़ोर देते हैं तो फिर अन्य लोग किस तरह जैनधर्म की अहिंसा की ओर झुक सकें हैं! मेरे विचार में तो आजकल जो राजा व क्षत्री आदिक जैन धर्म में नहीं पाए जाते यह ज्यादह तर शाकसब्ज़ी-कन्दमूल आदिक के त्याग पर हद से ज्यादह ज़ोर देने का ही परिणाम है। अतएव जैन समाज को इन सब बातों पर ध्यान देकर के उपरोक्त एवं इनसे अच्छे अन्य उपायों को काममें लाना चाहिए कि जिससे उसके शारीरिक बल व शूरवीरतामें उन्नति हो कि जिसको देख कर जैन धर्म की अहिंसा जगत प्रिय और अहिंसा धर्म का लोक में प्रचार हो। इति।

—हीरालाल जैन

कांच की शीशियां

स्वदेशी ! **सस्ती !!** **बढ़िया !!!**

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार करा कर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड ब्रादर्स, महावीर भवन, बिजनौर

संयुक्त प्रान्त में जैन स्त्री पुरुषों की तुलनात्मक संख्या

(लेखक—श्रीयुत् हीरालाल जी जैन बी० ए०)

सन् १९२२ की मनुष्यगणना की रिपोर्ट का अवलोकन करते समय मुझे यह बात खटकी कि संयुक्त प्रान्त में जैनियों में स्त्रियों की संख्या बहुत कम है सम्भव है यही अवस्था और प्रान्तों की भी हो पर मैंने केवल यू० पी० की मनुष्य गणना की तालिकायें देखी हैं। कुछ जिलों के अंक मैंने नोट कर लिये थे। जैनियों में मनुष्य संख्या के ह्रास के विषय पर विचार करने के लिये 'परिषद्' की ओर से जो कमेटी नियुक्त हुई है उसका ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिये मैं वे अंक यहाँ प्रकाशित कर देता हूं।

जिला एटा

नाम स्थान	जैनपुरुष	जैन नारियां	टोटल
कास गंज	९३	७७	१७०

जिला झांसी

महरोनी	१९५५	१७४७	३७०२
ललितपुर	२३०७	२२१९	४५२६
गरोठा	१५९	१२६	२८५
मउ	३९८	३७५	७७३
झांसी	४०२	३८३	७८५

जिला इटावा

औरिया	२२	१६	३८
भरथाना	६८	३४	१०२
इटावा	७२०	६३५	१३५५

जिला देहरादून

चकराता	३२	८	४०
देहरा	१९१	१५५	३४६

सहारनपुर

नकुड़	४०६	३८२	७८८
रुड़की	२१७	२३५	४५२
देव बन्द	५६२	५१४	१०७६
सहारनपुर	८४५	७०६	१५५२

बुलन्दशहर

खुरजा	२४३	२३५	४७८
सिकन्दराबाद	२३२	१८४	४१६
बुलन्दशहर	७९	६६	१४५
अनूपशहर	१६	४४	६०

फर्रुखाबाद

अलीगढ़	१८	१०	२८
करीम गंज	४२	३३	७५

फर्रुखाबाद	६७	५२	११६
छिबामउ	६	३	६
कनौज	१२३	१३१	२५४

जिला हमीरपुर

महोबा	२२	२२	४४
राठ		३	३
कुलपाथर	५६	२८	८७

जिला बांदा

नरायण	१७	२१	३८
कमेसिन	१		१
बदौसा	४	८	१२
मउ	२४	२६	५०
कर्वी	१२	५	१७
बांदा	६१	६५	१८६

मथुरा

सादाबाद	१११	१६२	२७३
माट	१४	८६	१०३
छत	३८३	३२६	७१२
मथुरा	१५३	११४	२६७

मुजफ्फरनगर

बुढ़ाना	१६०१	१५३८	३४३६
जानसठ	६४२	८०३	१७४५
कैराना	८२४	७१४	१५३८
मुजफ्फरनगर	७४८	५७६	१३२४

राय बरेली

सलोन		७	७
राय बरेली	८	५	१३

ये अङ्क मैंने चुन के नहीं लिये। जितने स्थानों की मैंने रिपोर्ट देखी वे सभी के नोट कर लिये। मैं समझता हूं कि यही दशा अन्य जिलों की भी है। उपर्युक्त १२ जिलों में सब मिलाकर जैनियों में १४५१५ पुरुष और १२६१५ नारियां हैं। किसी भी समाज की अच्छी अवस्था के लिये उसमें पुरुष और स्त्रियों की संख्या लगभग बराबर ही होना चाहिये। पर जैन समाज की यह अवस्था बहुत भय पूर्ण है। सेन्सस रिपोर्ट में यह साधारण रूप से कहा गया है कि स्त्रियों की संख्या कम होने का हिन्दुस्तान में यह कारण है कि मा बाप लड़कियों की उतनी परवाह नहीं करते जितनी लड़कों की। और कहीं २ तो जान बूझ कर लड़कियों की जान खतरे में डाल दी जाती है और उनकी रक्षा का कोई उद्योग नहीं किया जाता। लड़कियों की मृत्यु से मां बाप को उतना शोक नहीं होता जितना लड़कों की मृत्यु से होता है। मेरे ध्यान में कन्या विक्रय की जो कुप्रथा हमारी समाज में जोर पकड़ रही है उसका मूल कारण यही है कि समाज में स्त्रियों की संख्या आवश्यकता से बहुत कम है। उपर्युक्त अंकों को स्त्री और पुरुषों की तुलनात्मक संख्या ६० प्रति सैकड़ा से भी कुछ कम आती है जिससे यह विदित हुआ कि प्रति सैकड़ा दश या बारह पुरुषों का विवाह होना ही असम्भव है। इसका जन संख्या पर भयंकर प्रभाव पड़े बिना कैसे रह सका है।

विशेष विचार के लिये मैं यह प्रश्न कमेटी के हाथ में देता हूं।

सम्पादकीय टिप्पणियां

जैनधर्म की उन्नति

भारतवर्षीय दि० जैन परिषद् ने अपना एक उद्देश्य यह बनाया है कि जैन धर्म की उन्नति की जावे। परिषद् को इस उद्देश्य की सफलता में दृढ़ प्रयत्न होना चाहिए।

कोई परिषद् हो या सभा हो उसका संचालन सभासदों के प्रयत्न पर निर्भर है। केवल प्रस्तावों के पास कर लेने से कभी कोई कार्य नहीं होता है कार्य होता है, कार्य करने वाले उत्साही भाईयों के प्रयत्न से।

हमको यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि जैन जाति में काम करने वाले बहुत कम हैं। काम वही कर सकता है जो दूसरों के सहारे को नहीं तकता हुआ अपने पैरों खड़ा होकर आप काम करने लगता है। मूल अमरोहा निवासी मास्टर बिहारी लाल जी अब बाराबंकी में हैं, अनेक जैन ग्रन्थों को देखकर एक बड़ा भारी जैन कोष ऐसा तैयार कर रहे हैं व उसे स्वयं प्रकाशित करा रहे हैं कि जिससे जैन धर्म के पारिभाषिक प्रायः सर्व ही शब्दों का अच्छा ज्ञान होजायगा। इसी तरह यदि जैन धर्म की उन्नतिकारक कार्यों को एक २ भाई बिना दूसरों का अवलम्बन ताके हुए करने लगें तो जैन धर्म की उन्नति के कार्य बिना पैसे के हो सकते हैं।

हमको इस बात का अफसोस है कि जिन २ महाशयों ने गत मुजफ्फरनगर के अधिवेशन में अपने अपने आधीन एक २ काम लिया था उनमें से कई बिलकुल ही मौनावलम्बी मालूम हो रहे हैं जैसे बाबू बलवीरसिंह जी बी० ए०। आपने बोर्डिङ्गों में धर्म शिक्षा की सम्हाल व उनमें जैन विद्वानों के व्याख्यान कराने का काम हाथ में लिया था। मालूम नहीं आपके द्वारा कहीं कुछ भी अमली कार्रवाई हुई या नहीं। प्यारे नवयुवकों! यदि आप सच्चे भाव से कुछ भी धर्म की सेवा कर सकते हैं तो आप एक २ भाई नीचे लिखे कामों में से एक २ काम हाथ में लेलें और उसको स्वयं कर डालें। यदि कोई द्रव्य की आवश्यकता हो तो, या तो अपने पास से लगावें या अपने किन्हीं मित्रों से लेकर काम करें। यह बहुत बुरी प्रथा है कि जब किसी परिषद् के महामन्त्री कुछ रुपये की मदद भेजें तब काम किया जावे। परिषद् के महामन्त्री अपील पर अपील कर रहे हैं, पैसा कोई भेजता नहीं। जब महामन्त्री जी से पूछा जाता है कि अमुक काम क्यों नहीं होता है तब उत्तर मिलता है कि पैसा नहीं है काम कैसे * होवे? इस तरह सभाओं के प्रस्ताव सब पड़े ही रह जाते हैं और वह परिश्रम जो साधारण जलसा करने के, विषय चुनने में व उनको स्वीकृत कराने में किया जाता है सब व्यर्थ ही रह जाता है। इसलिये प्यारे वीर

* यह जानकर और भी दुख है कि मुजफ्फरनगर में प्रदानित रकमों में से कतिपय अभी तक वसूल नहीं हुई हैं। दातारों को ध्यान देना चाहिए।

पत्र के पाठकों ! परिषद् के सभासदों व नवयुवक जैन वीरों ! यदि आप कुछ भी जैन धर्म की सेवा करना चाहते हैं तो बैरिष्टर चम्पतराय जी हरदोई का दृष्टान्त ग्रहण करें। जिन्होंने स्वयं अपने खर्च से बहुतसी तत्वज्ञान की पुस्तकें देशी तथा परदेशी पढ़ीं, उनका मनन किया और जैनधर्म के तत्वज्ञान को समझ कर उनसे मुकाबला करके जैन धर्म के तत्वों की उत्तमता बताते हुए ऐसी बढ़िया पुस्तकें अंग्रेज़ी में लिखीं और उनको अपने ही बहुत से द्रव्य से मुद्रित कराकर प्रकाशित कराया, देश परदेश के विद्वानों को भेंट की, कि जिनके पढ़ने से पढ़ने वाले के चित्त में यकायक जैन धर्म की उत्तमता जम जाती है।

तन,मन, धन, लगाकर जैन धर्म की सेवा का इससे बढ़िया और नमूना नहीं हो सकता है। इस दृष्टान्त को लेकर हमारे भाइयों को उचित है कि नीचे लिखे आवश्यक कामों में से एक एक काम एक २ भाई लेकर कुछ सच्ची धर्म की सेवा करें जैसी सेवा प्राचीन काल में स्वामी कुन्दकुन्द, उमास्वामी, पूज्यपाद, समंतभद्र, अकलंकदेव, नेमिचंद, आदिकों ने की थी, कर बतावें:—

( ) एक वर्ष में एक मास जिस जिले में भी जा सकते हों भ्रमण कर धर्मोपदेश करना।

(२) अंग्रेज़ी में पुरातत्व विभाग के जो पत्र निकलते हैं, भारत में या विदेश में उनको मंगाकर व पढ़कर उनमें से जिन २ बातों से जैन धर्म की प्राचीनता का व महत्व का झलकाव हो उनको समाचार पत्रों में व छोटी २ पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित करना।

(३) स्वदेश व परदेश में जो विज्ञान Science की खोजें होती हैं उनको उन वैज्ञानिक पत्रों के द्वारा पढ़कर उनको जैन सिद्धान्त से मुकाबला करके लेख व पुस्तिकाओं के द्वारा प्रकाश कराना।

(४) जैन दर्शन के नीचे लिखे विषयों पर भारतीय व पाश्चिमीय तत्वज्ञान के साथ मुकाबला करते हुए लेख व पुस्तिकायें लिखना।

(१) कर्म सिद्धान्त में कर्म कैसे बंधते हैं (२) कर्म कैसे फल देते हैं। (३) कर्मों का नाश कैसे किया जाता है (४) निश्चय नय व व्यवहार नय का क्या उपयोग है (५) आत्मा और परमात्मा। (६) जगत अनादि अनंत अकृत्रिम है (७) द्रव्य उत्पाद व्ययरूप परिणामी तथा नित्य है (८) जैनियों का मोक्ष तत्व (९) जैन और बौद्ध धर्म (१०) जैन और हिन्दू धर्म (११) जैन धर्म की अनादिता व प्राचीनता (१२) जैनियों के प्राचीन पुरुषों के शरीर की ऊँचाई वास्तविक वस्तु है (१३) जैन शास्त्रों में सूर्य चन्द्रमा के भ्रमण की चाल कैसे बताई है। (१४) जैन ज्योतिष से दिन रात कैसे सिद्ध होते हैं (१५) अनछने पानी में तथा मर्यादा रहित भोजन में अनेक त्रसजीवों के मरकर सड़ने से मांसाहार का दोष लगता है (१६) जैनियों में क्षत्रिय कर्म (१७) जैनियों में वैश्य कर्म (१८) जैनियों के संस्कार और उनका वैज्ञानिक असर (१९) पुद्गल के स्कंधों की निर्माण विधि (२०) पृथ्वी कायिकादि पांच स्थावर जीव और वर्तमान सायन्स (२१) जैनियों का साधुकर्म (२२) जैनियों का गार्हस्थ धर्म (२३) जैनियों में ध्यान व समाधि का स्वरूप (२४) जैनियों में गणित विद्या (२५) जैनियों में गान विद्या (२६) जैनियों के काव्य (२७) जैनियों के नाटक (२८) जैनियों का

दान व परोपकार इत्यादि अनेक विषयों पर अंग्रेज़ी हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, कनड़ी, तामील, तेलुगू भाषा में लेख व पुस्तिकायें होनी चाहियें।

(५)—जैन शिलालेखों को संग्रह करके उन का भाव दिखाते हुए व उससे इतिहास की बातों को व जैनधर्म के महत्त्व को बताते हुए पुस्तकें तय्यार करना-सारे भारत में जैनियों के हज़ारों शिलालेख अंग्रेज़ों की खोज के कारण अनेक पुस्तकों में भरे पड़े हैं, जैनियों को उनका हाल भी नहीं मालूम है।

(६) जैन मंदिरों में जो २ मूर्तियां हैं उन के लेखोंका संग्रह करना व उससे इतिहास प्रगटकरना जैसा कलकत्ते के दि० जैन मंदिरों की प्रतिमाओं के लेखों को संग्रह कर बाबू छोटे लाल जी ने एक पुस्तक प्रकाशित की थी–

हर एक नगर में क्या एक धर्म प्रेमी भी नव-युवक नहीं है जो अपने सब मंदिरों की प्रतिमाओं के लेखों की नक़ल करले, यह काम चार दिन की छुट्टी में भले प्रकार किया जा सकता है?

(७) जहां २ प्राचीन लिखित शास्त्र भंडार हैं उन की लिपि की प्रशस्तियों की नकल एकत्र करनी लेखकों ने व शास्त्र दान कर्ताओं ने उस समय के आचार्य, राजा, जैन गृहस्थों का वर्णनकर दिया है– दिल्ली, जयपुर, सागवाड़ा उदयपुर अजमेर, इन्दौर, उज्जैन, झालरापटन, ईडर, करमसद, सजोत्रा, बम्बई, आरा, शोलापुर, कोल्हापुर, मूडबद्री, आदि में बड़े २ भंडार है, हर एक नगर में जो २ लिपि प्रशस्तियां हों उन सब को संग्रह करने से एक बड़ा इतिहास तय्यार हो सकता है।

(८) जैन प्रसिद्ध पुरुषों व स्त्रियों की जीवनियों को जैन पुराणों से संग्रह कर के उन के जीवन की धार्मिक सामाजिक, व राजनैतिक रीतियों से मुकाबला करके दिखाते हुए पुस्तिकायें प्रकाश कराना।

(९) स्वयं जैन धर्म का मर्मी बनकर व पाश्चिमात्य धर्म व विज्ञान का ज्ञाता होकर पर देशों में जाकर जैन धर्म के व्याख्यान करना।

(१०) राजनैतिक विषयों पर बढ़िया लेख लिख कर जैन पत्रों में प्रगट कराना जिस से. जैन लोग राजकार्य्य में योगदेने में प्रेमी होजावें।

(११) जैन शास्त्रों में जो राजनीति है उसका वर्तमान से मुकाबला करके प्रगट करना।

(१२) जैनियों के धार्मिक सिद्धांत में बाधा न आवे तथा सर्वसाधारण के अनुकूल हों ऐसी पाठ्य पुस्तकें बालक व बालिकाओंके योग्य भिन्न२ हिन्दी उर्दू व इंग्रेज़ी गुजराती मराठी कनड़ी तामील में प्रगट करना इत्यादि अनेक Salid works ठोस काम हैं जिनको हर एक जैन धर्मी जो जैन धर्मकी सेवा में अपना समय व बल लगाना चाहता है बड़ी स्वतंत्रता से कर सक्ता है।

वीर के पाठकों को ध्यान कर के इस हमारे लेख पर विचार करना चाहिये और ख्याति लाभ पूजादि की चाहना नहीं करके केवल जिन धर्म की भक्तिवश कोई न कोई सेवा धर्म बजाना चाहिये। वास्तव में वह मनुष्य नहीं है जो हर दिन कुछ न कुछ समय व बल परोपकार में न लगावें।

परिषद् की सफलता के लिये हमारे परोपकारियोंको जो वे कार्य करें परिषद्के द्वारा उसको प्रकाश कराना चाहिये जिसमें संगठनशक्ति से काम

हो तथा जो भाई जिस विशेष काम को हाथ में लेवें उसकी सूचना परिषद् जैन जनता को मालूम करादें कि जिस में एकही काम में दो व्यक्ति अपनी शक्ति को न लगावें। परिषद् वर्तान्त में उन सब कामों की रिपोर्ट संग्रहित प्रकाशित करदे। बस परिषद् के इस उद्देश्य को कि जैन धर्म की उन्नति हो सफल करने का यही मार्ग समझ में आता है।

—संपादक

संसार दिग्दर्शन

जैन कुमार सभा आगरा—का ग्यारहवां वार्षिकोत्सव इस वर्ष विशेष धूमधाम से हुआ था। सभा ने पं० चन्द्रशेखर जी शास्त्री को काशी से बुलाकर धर्म प्रचार का बड़ा प्रशस्त प्रयत्न किया था। आप ने ११ दिन तक सभी मंडियों में धर्म के प्रभावशाली व्याख्यान दिए।

सभा का काम अब बड़े फोर्स से हो रहा है। नये निर्वाचन में भी उत्साही कार्यकर्ता चुने गये हैं, आशा है कि इस वर्ष सभा की काया पलट जावेगी। कई नवीन कार्यों में सभा ने हाथ डाला है। आशा है कि सफलता मिलेगी।

धर्मादे द्रव्य का सदुपयोग—सब भाई जानते हैं, और समाचार पत्रों द्वारा यह बात अच्छी तरह प्रगट की जा चुकी है कि इस समय जितना आवश्यक सवाल तीर्थों के रक्षण का हो रहा है उतना ही श्री मंदिरों के जीर्णोद्धार कराने और श्री प्रतिमाओं के अविनय को हटाने का हो रहा है। इस कार्य को कराने के लिये एक "मन्दिर जीर्णोद्धार फण्ड" इस पाये पर खोला गया है, कि भारतवर्ष भर में अपने जितने मन्दिर हैं, जिनकी दो हजार या दो हजार से ज्यादा आमदनी हो, उन प्रत्येक मन्दिरों के कोष से सौ २ दो २ सौ रुपये वार्षिक की सहायता इस फण्ड के लिये ली जाय। अतः समस्त मुख्य २ पंचायतियों मुखियों से सादर निवेदन है कि वे अपने मन्दिरों के कोष से सौ २ दो २ सौ की सहायता इस फंड में देने की शीघ्र स्वीकारता भेजें। उनकी इस उदारता की बड़ीभारी महिमा और धर्म की प्रभावना होवे के साथ २ मन्दिरों के कोष का उत्तमता के साथ सदुपयोग हो सकेगा।

जंबू स्वामी क्षेत्र—चौरासी मथुरा मन्दिर के सुप्रबन्धार्थ दो वर्ष हो चुके। उसकी एक कमेटी भी बनी है। मन्त्री सेठ गुलाबचन्द जी टूंग्या और औ० मैनेजर बाबू कन्हैयालाल (भूरजी वाले) हैं। क्षेत्र की कमेटी ने इन दो वर्षों में अपनी कई बैठकें की हैं, परन्तु क्षेत्र के प्रबन्ध के सम्बन्ध में स्थानीय पंचायत में बराबर विरोध चल रहा है। हमें अत्यन्त खेद के साथ लिखना पड़ता है कि जिस मथुरा पंचायत की कीर्ति स्व० सेठ राजा लक्ष्मण दास जी के समय में बहुत ही निर्मल थी, वह पंचायत इस तरह आज अपने पूज्य तीर्थक्षेत्र तक का प्रबन्ध करने को समर्थ नहीं है। हमारी राय में कार्यकर्ता बदल कर कार्य किया जाय और देखा जाय कि प्रबन्ध ठीक होता है या नहीं।

—चुन्नी लाल हेमचन्द जरीवाले बम्बई

देश

—लाला लाजपत राय ने स्वास्थ्य की खराबी के कारण पञ्जाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से इस्तीफा दे दिया।

—श्रीमती एनी बीसेण्ट स्वराज्य का मसविदा तैयार करने के लिये एक राउण्ड टेबिल कानफ्रेन्स करने वाली हैं। महात्मा गान्धी भी इस कानफ्रेंस के एक संयोजक होंगे।

—इलाहाबाद में पिछले हिन्दू मुसलमानों के झगड़े से लोगों में डर घुसा हुआ है। अब भी दिन को देर में दुकानें खोली जाती हैं और रात में जल्दी बन्द कर दी जाती हैं।

—इग्लैण्ड के स्वतंत्र मजदूर दलके मेम्बरों ने एक प्रस्ताव पास कर के म० गाँधी के पास संदेशा भेजा है। उसमें कहा है:-मजदूर दल भारत के स्वराज्य आन्दोलन को बड़ा दिल चस्पी के साथ देखता रहा है और हमारा दल तथा ब्रिटिश जनता का सब बड़ा समुदाय आपके उद्देश के प्रति सहानुभूति और आपकी नीति के प्रति प्रशंसा का भाव रखता है। ब्रिटिश सरकार द्वारा आपके और आप के सहकारियों के कैद किये जाने से हम लोग लज्जित हैं। इस के लिए हम सरकारी नीति की निन्दा करते हैं।"

—१३ वां शहीदी जत्था जो गुजरात और वजीराबाद आदि जिलों में है, जैतू जाने के पहिले ननकाना साहब जायगा।

—समाचार है कि मौ० महौम्मद अली ने म० गाँधी को जो गाय दी थी वह कसाई खाने, में मारी जाने के लिए ले जायी जा रही थी। मौलाना साहब ने वहाँ से लेकर महात्मा जी को वह गाय भेंट की है।

घर बैठे बम्बई

का सभी माल बहुत ही किफ़ायत भाव से वी० पी० द्वारा भेजा जाता है जैसे सूती' ऊनी, कोशा, रेशमीकपड़े व सिले कपड़े सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें ग्लास व चीनी का सामान देशी व अंग्रेज़ी दवाएं तेल अतर वार्निस व हर किस्म की घड़ियां। एक बार परीक्षा कर देखो।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाग़ के सब रोगों पर रामबाण

दिमाग़ की हर प्रकार की कमजोरी सिरदर्द चक्कर आना आँखों से धुंधलापन नज़र आना, बालों का बेसमय पकना आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है। बालों को लच्छेदार और मुलायम बनाता है। मूल्य १) रु० ३ शीशी का २॥) ६ शीशी ५।) रु० १२ शीशी १०) रु० व्यापारियों, एजेंटों को पत्र व्यवहार करना चाहिये।

पता:—मेसर्स शर्मा एण्ड कम्पनी कमीशन एजेण्ट बम्बई नं० १८

—दक्षिण भारत के मुस्लिम शिक्षा संघ ने मुसलमान लड़कियों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य कर देने का विचार किया है। इसके लिए वह मद्रास कारपोरेशन से अनुरोध करेगा।

—मान्टगोमरी के नज़दीक हरप्पा रोड में रेलवे दुर्घटना के कारण मुसाफिरों के जान-माल की भीषण क्षति हुई है।

—मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद ने कनकनारा, इलाहाबाद, जबलपुर आदि के मुसलमानों और हिन्दुओं के झगड़ों को सुनकर अपील प्रकाशित की है जिसमें आशा प्रकट की है कि जो हुआ, सो हुआ, अब आगे इस प्रकार के झगड़े कदापि न हों। उन्होंने नेताओं से कहा है कि वे जहाँ कहीं इस प्रकार के झगड़े बढ़ते हुए देखें, वहीं शान्ति करने की तुरन्त चेष्टा करें। ये झगड़े पंचायतों द्वारा तय कर लेने चाहिएँ।

—वर्मा में एक नये टैक्स की सृष्टि हुई है जो विवाहित पुरुष पर ५) और अविवाहित पर २॥) सालाना है। वर्मा के लोगों ने इसका न देना निश्चय कर लिया है।

—पं० मदन मोहन मालवीय कोहाट के हिन्दुओं की दशा का निरीक्षण करने गये हैं, वहाँ से लौटकर लाहौर में आप अकाली नेताओं के मुकदमे का निरीक्षण भी करेंगे।

—महात्मा जी का स्वास्थ्य अब धीरे २ सुधर रहा है। उन्हें अब बकरी का थोड़ा दूध और संतरे दिये जाते हैं। अब उनकी तबीयत इतनी अच्छी है कि आशा की जाती है कि दो तीन हफ्ते में वे कोहाट की यात्रा करने के योग्य होजायंगे।

—शिमला में सुधार जाँच कमेटी की बैठक फिर शुरू होगई। सर प्रवासचन्द्र मित्र और सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास की गवाहियाँ हुईं। दोनों दुरंगी शासन के खिलाफ हैं।

—वायकोम सत्याग्रह अभी पूर्ववत् जारी है। सत्याग्रहियों के मुकदमे में श्री० कुंजी कृष्ण पिल्ले ने कहा है कि सत्याग्रहियों को एक ओर पुलिस की मार पड़ती है और दूसरी ओर उच्च हिन्दुओं की।' २१ अक्टूबर को उन पर पत्थर फेंके गये। जार्ज जाजेफ सत्याग्रह आश्रम पहुंच गये हैं।

'यूनीक' सलेट

पेन्सिल, कलम, कागज किसी की आवश्यकता नहीं। न साफ ही करना पड़ता है, न कागज़ ही खर्च होता है। एक अद्भुत आविष्कार है।

मूल्य पाकेट साइज़	≈)	स्लेट मय पाकेट बुक ७२ पेज	≈)
„ आफिस साइज	≤)	„ „ „ „ बढ़िया	≤)
„ विद्यार्थी साइज़	।≈)	„ „ रजिस्टर साइज बुक १२० पेज	।≈)

व्यापारियों को कमीशन। नमूने के लिये ≤) के टिकट भेजें।

पताः-बालकृष्ण मोहता कम्पनी, ४१ क्षेत्रमित्र लेन, सलकिया (हावड़ा)

—इलाहाबाद के दंगे के सम्बन्ध में पुलिस ने अदालत में ६ मुकदमे दायर किये हैं। पहिले मुकदमे में ५६ मुसलमान अभियुक्त हैं, दूसरे में ६ मुसलमान, तीसरे में १५ मुसलमान, चौथे में ४ मुसलमान, पाँचवें में १० और छठे में कुछ हिन्दू।

—२१ अक्टूबर को पूना में मुसलमान महिलाओं की एक कान्फरेन्स हुई। इस में बेगम नफ़ीस दुलहन साहिब ने, सभानेत्री की हैसियत से कहा कि सामाजिक सुधारों की आवश्यका है, इसके लिये स्त्रियों को शिक्षित होना चाहिए। परदा के सम्बन्ध में आप ने कहा कि वह इस्लाम द्वारा हमारे साथ बंधा हुआ है, उसको छोड़ना अधर्म होगा।

—मुज़फ्फ़र नगर में ३० सितम्बर को राम लीला का जुलूस सदा की तरह निकाला गया। जब जुलूस गंदियन मस्जिद के पास होकर निकला तो कुछ मुसलमानो ने 'या अली' कह कर शोर मचाया, जिससे कुछ अशान्ति फैली परन्तु जुलूस शान्ति पूर्वक निकल गया। ५ अक्तूबर को जिला मजिस्ट्रेट मि० डारलिङ्ग ने कुछ हिन्दू नेताओं को तहसील में बुला भेजा। वहाँ पर इन्हें यह आर्डर सुनाया गया कि दशहरे के दिन रामलीला का जुलूस किसी भी मस्जिद के पास से होकर निकलने के समय में और, नमाज़ के वक्त में आध २ घण्टे का अन्तर रखा जाय। इस आज्ञा का हिन्दुओं ने विरोध किया। दशहरे के दिन हिन्दू नेताओं ने मजिस्ट्रेट के पास जाकर इस मामले को पेश किया। पर, ज़िला मजिस्ट्रेट अपने निश्चय पर पुनः विचार भी नहीं करना चाहता था। तब, रामलीला का उत्सव बन्द कर दिया गया। इस पर कोतवाली के सामने पुलिस और अहलकारों को खड़ा करके मजिस्ट्रेट ने नगर के प्रतिष्ठित सज्जनों को बुलाया। इन सज्जनों में कौंसिल के मेम्बर, म्युनिसिपेलिटी के चेयरमैन, तथा कितने ही रईस और वकील भी थे। इन सब को मजिस्ट्रेट ने खूब डांटा डपटा और उनसे कहा कि तुम्हारे आन्दोलन की मुझे कोई परवाह नहीं है, गवर्नमेण्ट मेरा पूरा साथ देगी। ये लोग दो घण्टे तक धूप में खड़े रखे गये थे, मजिस्ट्रेट कुर्सी ही पर बैठा रहा। इसके बाद शाँति की रक्षा के लिए उसने १५ सज्जनों को स्पेशल कानिस्टबिल बनाया। श्रीयुत सुमत प्रसाद ने स्पेशल कानिस्टबिल बनने से इन्कार कर दिया, इसलिए उन पर मुकदमा चलाया गया। इस नादिरशाही पर मुजफ्फरनगर में बड़ी सनसनी फैल रही है।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दी कीजिये ! कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !! अन्यथा पछताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलन व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतकिया। कौन ग्रन्थों पुस्तकें उन्हों ने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे ग्रन्थों का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २=) सजिल्द २॥) डाकखर्च ॥)

पता—चौधरी शिखरचन्द जैन फ़र्रुख़नगर (गुड़गाँव)

विदेश

—कुस्तुन्तुनियाँ में ३३०० ग्रीक्स पकड़े गये हैं। कहते हैं, वे जबर्दस्ती टर्की से निकाल कर ग्रीस भेज दिये जायेंगे। इस विषय पर राष्ट्र परिषद् की कौंसिल २७ अक्तूबर को विचार करेगी।

—मक्का के भूत पूर्व शाह हुसेन बसरा पहुंचे हैं। बसरा पर इराक के शाह फसल का शासन है। हुसेन शाह फेसल के बाप हैं। ईराक कौंसिल ने शाह फैसल को कहला भेजा है कि आप अपने बाप से कह दीजिए कि यदि वह बसरे में रहना चाहता है तो केवल एक साधारण आदमी की हैसियत से वहां रह सकेगा।

—चीन की गृह-कलह अभी समाप्त नहीं हुई। फेङ्ग-ग्यू-सेङ्ग नाम के ईसाई चीनी जनरलने राजधानी पेकिन पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया है। प्रजातंत्र के प्रेसिडेन्ट कहीं भाग या छिप गये हैं। फेङ्ग-ग्यू-सेङ्ग के पास इस समय अच्छे ४० हज़ार सैनिक हैं। उस ने कई मन्त्रियों को कैद भी कर लिया है और घोषणा की है कि चीन में शान्ति स्थापित करने के लिये चीन के नेताओं और सेनापतियों की एक कान्फ्रेन्स हो जाय। आशा की जाती है कि कान्फ्रेंन्स शीघ्र ही होगी।

—पार्लिमेंट के ६५० स्थानों के लिए कन्सर्वेटिव दल के ५३६, मज़दूरदल के ५२०, और लिबरल दल के ३५० उम्मेदवार खड़े हुए हैं।

—फ्रान्स के प्रसिद्ध ग्रन्थकार एनाटोला फ्रान्स का देहान्त हो गया। एनोटले इस समय के संसार प्रसिद्ध साहित्य सेवियों में से एक थे। अपनी साहित्यिक कृतियों पर १६२१ में उन्हें नोबल पुरस्कार मिला था परन्तु फिर पद्य से जी हट गया। गद्य लिखने लगे और ऐसा गद्य जिसकी श्रेष्ठता की धाक बड़े से बड़े साहित्य-सेवियों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार की। उनका देहान्त ८० वर्ष की अवस्था में हुआ।

—स्वतन्त्र हिन्दू राज्य कोचीन चाइना में फ्रांस के आधीन अनाम नाम के राज्य में बोरो पोरो नाम का एक छोटा सा पहाड़ी देश है। वहाँ के निवासी हिन्दू हैं और बिलकुल स्वतन्त्र हैं। कहते हैं, प्राचीन काल में वे बंगाल से आये थे। ब्राह्मण देउता (देवता) के नाम से पुकारे जाते हैं और जनेउ पहनते हैं। रहन सहन रीति रिवाज बंगालियों के से हैं। वहाँ राम और शिव के बहुत से मन्दिर हैं, पुरुष वीर और युद्धप्रिय होते हैं। स्त्रियाँ तक तीर व तलवार चलाना जानती हैं।

शीघ्र ही सूचित कीजिये

सर्व भाई अपने २ यहां के दिगम्बर जैन वकील वैरिष्टरों, की नामावली पूरे पते सहित शीघ्र भेजने का कष्ट लेवें। कमैटी को जानने की सख़्त ज़रूरत है। उत्साही सज्जन शीघ्र ही सूचित करेंगे।

चुन्नीलाल हेमचन्द्र जरीवाले, महामंत्री-तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग-बम्बई नं० ४

विषय-सूची

पृष्ठ सं॰

१ वन्दे वीरं (कविता)—श्रीयुत् कविवर "वत्सल" ... १
२ भगवान महावीर—उप सम्पादक ... २
३ आह्वान (कविता)—श्री॰ 'वत्सल' ... ६
४ क्या भारत के पतन का कारण अहिंसा है—श्रीयुत चम्पतराय जी जैन बार-एट-ला ... ७
५ जैन इपाग्रेफ़िया—चैवेलियर डा॰ बी॰ शेषगिरि राउ एम॰ ए॰ पी॰ एच॰ डी॰ ... १२
६ जैन कथा—श्रीयुत् गुलाबचन्द्र जी ... १४
७ महिला महिमा—उप सम्पादक ... १८
८ अन्योक्ति (कविता)—श्रीयुत् 'नयन' ... २०
९ जैन धर्म की अहिंसा जगतप्रिय क्यों नहीं होती—श्री॰ हीरालाल जैन बी॰ ए॰ ... २१
१० संयुक्त प्रान्त में जैन स्त्री पुरुषों की तुलनात्मक संख्या—प्रो॰ हीरालाल जैन ... २७
११ सम्पादकीय टिप्पणियां ... २९
१२ संसार दिग्दर्शन ... ३१

अमरीका और विलायत से एक बड़े डाक्टर की आमद

यह ख़बर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सुनी जायगी कि डाक्टर बख़तावरसिंह जैन, एम॰ डी॰ (अमरीका) एल-आर-सी-पी ऐन्ड एस (एडनबर्ग) एल-एफ-पी-एन्ड एस (ग्लासगो) जिन्होंने ५ साल अमरीका में, और २ साल इङ्गलैण्ड में तालीम पाई है और २ साल अमरीका और इङ्गलैण्ड के हस्पतालों में बतौर असिस्टेन्ट सरजन के काम किया है देहली में तशरीफ़ लाये हैं। जैन लोगों के लिये यह बड़ी खुशकिस्मती की बात है कि आपने हम लोगों की दरख्वास्त पर देहली में शफ़ाखाना खोला है आप बच्चों और औरतों के इलाज में खास महारत रखते हैं। तपेदिक, आतशक, सूज़ाक, दमा, हैज़ा, नामर्दी, कोढ़ और बवासीर (खूनी हो या बादी) का इलाज बज़रिये पिचकारी (Injection) और ज़ियाबेतस का इलाज बग़ैर अदवियात किया जाता है आपने एक खैराती हस्पताल खोला है जिसमें आपरेशन बवासीर आँख और दाँत मुर्दा के लिये मुफ़्त किये जाते हैं, और आपने एक लेडी नर्स को भी रक्खा हुआ है जिसकी ज़ेर निगरानी औरतों का इलाज होता है।

पता:—डाक्टर बख़तावरसिंह जैन
पहाड़ी धीरज, सदर बाज़ार, देहली

कांच की शीशियां।

हमारे यहाँ हर साइज़ की निम्नलिखित, शीशियां तय्यार रहती हैं और देश भर के शफ़ाख़ानों, दवाफ़रोशों और दुकानदारों को बड़ी होशियारी व सचाई के साथ रवाना की जाती हैं। हमारे यहा का माल अन्य कारख़ानों से अधिक वज़नी व साफ़ है। जिस की परीक्षा एक बार की ख़रीदारी से हो जायगी।

मूल्य अठपहलू हरे रंग की शीशियों का

जो शफ़ाख़ानों वगैरह में बहुतायत से इस्तैमाल की जाती हैं, इस प्रकार है:—

साइज़	कीमत फी ग्रूस (१४४ शीशी)	साइज़	कीमत फी ग्रूस (११४ शीशी)
¼ या ½ ड्राम	१≶)	२औंस	४)
१ ड्राम	१।)	३औंस	५।≤)
२ ड्राम	१।≶)	४औंस	७)
४ ड्राम	१।।।≶)	६औंस	१०)
१ औंस	२।।।)	८औंस	१३।।)

नियम--१०) से कमका माल रवाना नहीं किया जायगा। २५) से अधिक माल मँगाने वालों को १०) फीसदी कमीशन दिया जाता है। आर्डर के साथ आधी कीमत अवश्य आजाना चाहिये।

पता—आर. एस. जैन एण्ड ब्रादर्स, महावीर-भवन, बिजनौर।

"वीर" में विज्ञापन छपाने की दर

एक बार विज्ञापन छपवाने के लिये आजकल के रेट निम्न प्रकार हैं:—

पेज	साधारण पेज	कवर का दूसरा पेज	कवर का तीसरा पेज	कवर का चौथा पेज
एक	६)	८)	७)	१०)
आधा	३।।)	५)	४)	६)
पाव	२)	३)	२॥)	३।।)

एक बारसे अधिक छपवानेवालों को निम्न प्रकार कमी की जायगी:—

६—बार विज्ञापन छपाने वालों को ८ फीसदी कमी।

१२—बार " " " १६ " कमी।

२४—बार " " " २५ " कमी।

७—कोड़पत्र बटवाने के लिये पत्र व्यवहार कीजिये।

८—छः माह अर्थात् १२ दफे से कम कन्ट्रैक्ट करने वालों को कुल रुपया पेशगी भेजना चाहिये। आशा है, इस अवसर से विज्ञापनदाता अवश्य लाभ उठावेंगे। नहीं तो पछताना पड़ेगा।

विनीत—राजेन्द्र कुमार जैन, प्रकाशक—'वीर' बिजनौर।

श्रीः

केवल ३॥) रु० में सालभर तक हिन्दी का सब से बड़ा समाचारपत्र मिलेगा।

सामाजिक तथा समाचार-पत्र

'कैलास' मुरादाबाद

इसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के उत्तमोत्तम के लेख रहते हैं तथा गल्प, अद्भुत-समाचार, कवितायें, नवीन-नवीन संसार भर के समाचार और मनोरञ्जन का सामान भी खूब रहता है।

कैलास

की छपाई, कागज़, टाइप आदि सब सामान बढ़िया और नया होना है कारण प्रसिद्ध "हिमालय-प्रेस" भी इसी के अध्यक्ष का है।

इस वर्ष उपहार में

एक साल के ग्राहक बनने वालों को

सचित्र 'हिन्दी महाभारत' सजिल्द

बिलकुल मुफ्त

सब डाकखर्च ग्राहकों के पास घर बैठे पहुँचा दिया जायगा। पुस्तक और कागज़ के पृष्ठ करीब ३०० पृष्ठों का है। स्थान स्थान पर २४ रंगीन चित्र भी हैं। छपाई, कागज़ जिल्द सब बढ़िया है।

हर प्रकार की सुन्दर और सस्ती छपाई के लिए

हिमालय प्रेस मुरादाबाद

को लिखिये।

हमारे यहाँ सब तरह की छपाई का काम जैसे [illegible], हुण्डी, बिल्टी, [illegible], [illegible], किताबें, चेक-बुक, रसीद-बुक, चिट्ठी लिखने के कागज़, लेटर-पेपर, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड, [illegible], मासिक-पत्र, उत्तम उत्तम पुस्तकें, यानि छोटा बड़ा सब तरह का हिन्दी-उर्दू-अङ्गरेज़ी का उत्तमता तथा जल्दी और सस्ता समय पर छापकर दिया जाता है।

पता प्रबन्धकर्त्ता, हिमालय-प्रेस, मुरादाबाद।

[illegible] अमरदीशदत्त के दीपक [illegible] प्रेस बिजनौर में [illegible]

Regd N A 1271

श्रीवर्द्धमानाय नमः ।

परिषद अङ्क

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष २] १५ नवम्बर सन् १९२४ [संख्या २

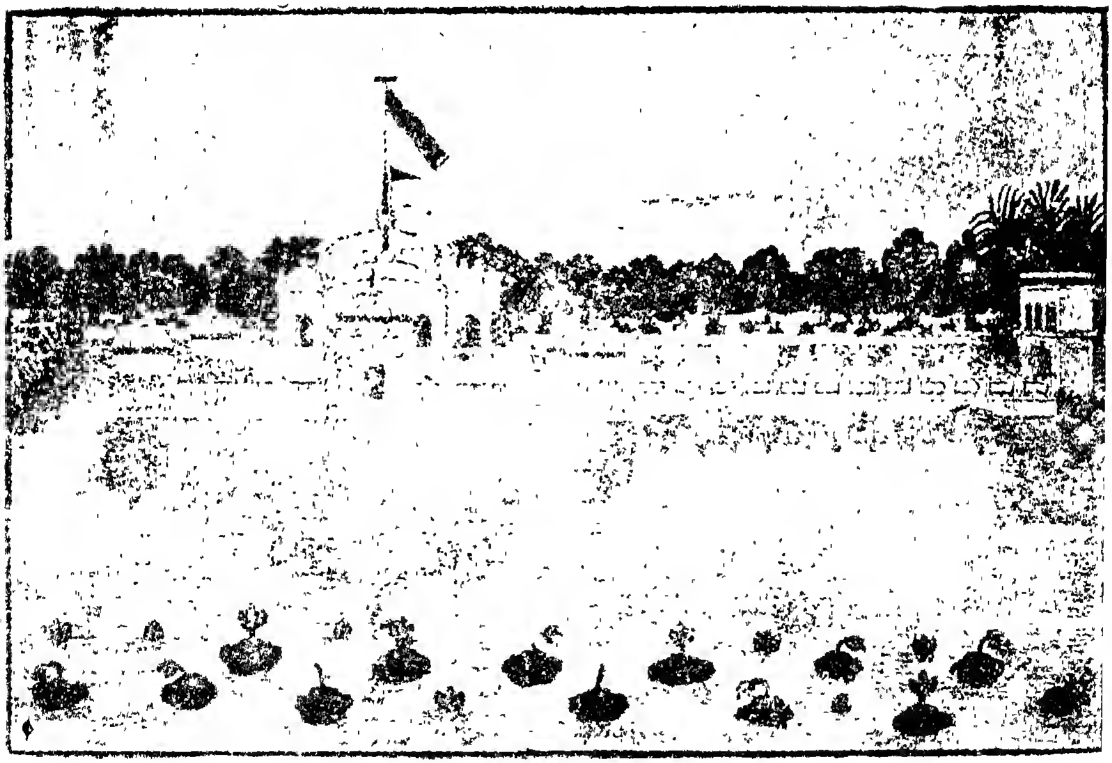

सम्पादक

जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी

उपसम्पादक —

श्रीयुत कामताप्रसादजी

प्रकाशक —

वार्षिक मूल्य] श्री० राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर [ढाई रुपये

ॐ

श्री वर्द्धमानाय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत।"

"भाइयों! ध्यान रक्खो कि "जब तक तुम शरीररूपी वस्त्र धारण किए हो तब तक तुम्हें मुक्त होने की आशा कैसे हो सक्ती है? जब तक कि तुम शरीररूपी कारागारमें बन्द हो तुम्हें मोक्ष कैसे प्राप्त हो सक्ता है?"

—पाइथेगोरस॥

वर्ष २ | बिजनौर, मार्गशिर कृष्णा ५ वीर सम्वत् २४५० | अङ्क २
१५ नवम्बर सन् २४

यशोधन

चतुर्दशपदी

जब तक उन्नत शीस पाप के नहीं कटेंगे।

अन्यायों के चरण राजपथ से न हटेंगे॥

पक्षपात के पक्ष नहीं जब तक निकलेंगे।

बन्धु बन्धु के दोष निरन्तर जब उगलेंगे॥

होगा पुनरुत्थान न तबतक मरना होगा।

जीवन भी सुखपूर्ण पाप सिर ढोना होगा॥

अपयश के अनिवार्य जाल में फँसना होगा।

मकड़ी का सा जाल बना तन कसना होगा॥

दुर्निवार इस पङ्क भरा में सड़ना होगा।

विष गंधमय कालकूटी में सड़ना होगा॥

यह सब निश्चितकरो जातिहित आत्मसमर्पण।
बनो जगत आदर्श लोक के निर्मल दर्पण॥
जो समय मरुस्थल मध्यपद अपने हैं जा छोड़ते।
वे ही इस काल करालमें धन्य!यशोधन जोड़ते॥

—भ्रान्त

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद्

नैमित्तिक अधिवेशन इटावा

ता० ५–६ नवम्बर सन् २४

इटावा में निमन्त्रित हुये मुताबिक परिषद् का नैमित्तिक अधिवेशन ता० ५ और ६ नवम्बरको सानन्द विशेष महत्व के साथ पूर्णहुआ। सभापति महोदय श्रीमान् बाबू अजितप्रसाद जी एम० ए० एल० एल० बी, रीडर दिल्ली यूनीवर्सिटी ता० ५ के प्रातःकाल मेलट्रेन से पधारे। आपका स्वागत विशेष समारोह के साथ स्टेसन से जुलूस और बैण्ड बाजे के साथ हुआ। बाहर से अम्बाला,आरा औरङ्गाबाद, हैदराबाद दक्षिण से सभ्यवृन्द पधारे थे। विशेष उल्लेखनीय बाबू चम्पतराय जी बैरिष्टर बाबू रतनलाल जी असहयोगी वकील,बाबू राजेन्द्र कुमार जी रईस बिजनौर, बाबू रूपचन्द जी रईस कानपुर, पं० कन्हैयालाल जी वैद्यराज, प्रो० लक्ष्मीचन्द्र एम० ए० एल० एल० बी० प्रयाग, सेठ कस्तूरसाह सेठ नवलसाह औरंगाबाद, पं० झम्मनलाल जी तर्कतीर्थ कलकत्ता, बाबू कामताप्रसाद अलीगंज, बा० शिवचरनलाल जसवन्तनगर, ला० फुलजारीलाल रईस करहल इत्यादि सज्जन थे। परिषद् का कार्य ता० ५ को दिन के २ बजे से प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण पूज्य ब्र० शीतलप्रसाद जी ने किया। पश्चात् स्वागत समिति के सभापति ला० रूपचन्द जी वैद्य ने जिन्होंने कि त्रिलोक्य विधान पूजन कराया था तथा परिषद् को निमंत्रित किया था, अपना छपा हुआ भाषण पढ़ा।

भाषण सभापति स्वागत समिति

श्रीमान् सभासद तथा उपस्थित बंधुगण और बहिनों

इस छोटे से और दूर देश इटावा नगर में आप महानुभावों ने अति परिश्रम करके धर्म और जात्युन्नति के भावों से प्रेरित होकर जो शुभागमन किया है उसके लिये हम हृदय से स्वागत करते हैं और कोटिशः धन्यवाद देते हैं।

वर्तमान में देश और जाति की अवनत दशा होने पर आप के स्वागत के विशेष साधन न होने से हम केवल वचन द्वारा ही आप सज्जनों का स्वागत करते हैं आशा है कि इस त्रुटि के कारण आपको जो असुविधायें हों उनके लिये आप कृपया क्षमा प्रदान करेंगे।

यह इटावा नगर जिसका शुद्ध नाम इष्टिकापथ है छोटासा होने पर भी अति प्राचीन और ऐतिहासिक नगर है यहां पर सं० १०१० वि० को विनय सागर मुनिका समाधि मरण हुआ और उनका समाधि स्थल यहां से एक मील दूरी पर यमुना तट पर बना हुआ है। जो कि नसियां जी (नसैनी दादी) के नाम से विख्यात है, दूसरे यहां से २ कोस की दूरी पर एक आसई नाम का प्राचीन खेड़ा है जहां पर यमुना के किनारे बहुतसी सुन्दर प्राचीन प्रतिमायें मिलती हैं। उन्हीं में से एक चौबीसी अति मनोज्ञ प्रतिमा हाल ही में यहां लाकर इसी मन्दिर में विराजमान की गई हैं। तीसरे जिस समय जैन धर्म पर आर्यसमाज आदि के चारों ओर से हमले हो रहे थे और जैन लोग अपने को जैन कहने में भी लज्जित होते थे उस समय इसी नगर में एक जैन तत्त्व प्रकाशिनी नाम की सभा स्थापित हुई जिसने स्थान२ पर दौरे कर लाखों ट्रेक्ट निकाल कर और व्याख्यान तथा भजनों द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया और जैन धर्म पर लगे हुये मिथ्या दोषों को दूर किया। अजमेर में शास्त्रार्थ करके और जगह २ शंका समाधान करके जैन धर्म का सिक्का जमा दिया।

इस नगर के जैन भाइयों के शुभोदय से जैन धर्म भूषण पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी का इस वर्ष चतुर्मास यहीं पर हुआ है। जिसके कारण इस नगर में जैन धर्म की जो प्रभावना हुई है वह अकथनीय है आपके ही उपदेश से यहां पर जैन विद्यालय जैन कन्याशाला प्राणि रक्षा सभा स्थापित हुई है और जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा का पुनरुद्धार हुआ है। यहां पर आप लोग जो धर्म प्रभावना के लिये एकत्रित हुये हैं यह भी आप ही के उपदेश के प्रभाव के कारण से है।

अब हम सब लोग जिस जैन धर्म की प्रभावना और जैन जाति के सुधार व उन्नति के लिये एकत्रित हुये हैं उस कार्य को तन मन धन से सफल बनावें।

हम लोगों की यही निरन्तर भावना है और रहेगी कि आप महानुभावों ने जिस कार्य में हाथ लगाया है वह श्री जिन देव की कृपा से शीघ्र ही सफल हो। किमधिकम्।

सभापति का चुनाव व भाषण

उपरान्त बाबू रतनलाल जी ने सभापति की याजना का प्रस्ताव उपस्थित किया। जिस का समर्थन बाबू चन्द्रसेन जी वैद्य, बाबू लक्ष्मीचंद्र जी, बाबू कामताप्रसाद जी, ला० बाबूराम जी चौधरी और पं० झम्मनलाल जी ने किया। इस पर बाबू अजितप्रसाद जी ने सर्व सम्मति के अनुरूप में सभापति का आसन "जैनधर्म की जय" के शब्द गुंजार में ग्रहण किया और अपना मौखिक भाषण प्रारम्भ किया। अपनी असमर्थता दर्शाते हुए समाज की शोचनीय दशा का उल्लेख किया। कहा-"अजब सकते की हालत है, न कुछ बोल सकते हैं, न जीते हैं न मरते हैं, यों ही हरदम सिसकते हैं।" ऐसी दशा में कार्य कैसे किया जाय? परन्तु हताश भी नहीं हुआ जा सकता। आत्मा का श्रद्धान है तो वहां हताशपना कहां? हताश होना तो पाप है। परन्तु उदासीनता जो आगई है वह चारों ओर की परिस्थिति का फल है। अतएव जिस परिस्थिति के कारण कार्य नहीं चलता उस को हटाना है। और वह सामुदायिकरूप में कार्य करने से हट सकती है। अकेले अलग २ कोई क्या कर सकता है? वस्तुतः कोई वस्तु अकेले कार्य नहीं कर सकती। परमाणु की शक्ति व्यक्ति रूप में नहीं किन्तु स्कन्धरूप में ही कार्य करती दिखाई देती है। इसलिए आज जो हमारे सामने दिक्कत है वह यही कि आज हम मिलकर कार्य करना नहीं चाहते। समाज २ और जाति २ में धड़े बाजी है। घर २ में, भाई भाई में नहीं बनती है। हिन्दुस्तान का अशुभ कर्म है कि मिलकर कार्य उसके निवासी नहीं करते। यही वजह जरूर हमारी उन्नति में बाधक है। मगर इसको दूर करना है। यह रोग बहुत बढ़ गया है। जैनियों में श्वेताम्बर दिगम्बरों का झगड़ा मिटता नहीं है। आपसी निबटारे की ध्वनि सुनाई नहीं देती। शिखर जी का मुकदमा फैसल हुआ। परन्तु उसकी अपील प्रिवी कौन्सिल में दायर है। उधर दूसरा मुकद्दमा ऐसा है कि उससे साफ जाहिर होता है कि वह झगड़ा निबटना नहीं, राजग्रही मुकद्दमे के सम्बन्ध में मुझे मेरे मित्रों ने लिखा है कि राजग्रही से उन के केशर के पत्थर श्वेताम्बरियों ने उखाड़ दिये। जिन पर D. J. K. (दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी) अक्षर हैं। इस प्रमाण को मिटाने का प्रयत्न चोरों की भांति किया गया। परन्तु वह प्रमाण हटाए न जा सकें इसके लिये दो फोटोग्राफर भेजे गए। परन्तु कामयाब नहीं होने दिया गया। श्वेताम्बरों का कहना है कि बिहार प्रान्त के तीर्थस्थान श्वे० के हैं दिगम्बरों के नहीं। दिगम्बर दूर से नमस्कारादि कर सकते हैं। इसी अनुरूप में वहां उन्होंने झगड़ा मचाया। परन्तु फौजदारी करना ठीक नहीं समझकर फोटोग्राफर वापस बुला लिये गये। अदालती कार्रवाई हुई। यह एक धर्मयुद्ध है। ऐसे धर्मयुद्ध यदि लड़ने ही हैं तो वाजबी तरीके पर लड़ने चाहियें। वे चाहे तीर्थ सम्बन्धी हों अथवा

अन्य प्रकार के, परन्तु सब में सचाई हो। जो कुछ सबूत हों उन्हें सचाई के साथ पेश कीजिए। धर्म युद्ध में मायाचारी पाप है। ऐसी लड़ाई सुगमता से हटने की नहीं। मनमें ऐसा घृणित विचारधारा लायें न लावें जिनसे हृदय कलुषित हो। अहिंसा के खिलाफ़ हम कुछ भी न करें। झूठे गवाह पेश न करें। Policy का व्यवहार न करके सत्य के साथ अपने स्वत्वों को बचावें। दूसरा नामुनासिब कार्य हमारा आपस में लड़ना भगड़ना, दलबन्दी अथवा धड़ेबाजी करना है। दो आदमी एक राय के नहीं हैं, फिर काम चले तो कैसे चले। इसलिए जरूरत है कि यह कार्य हम और आप मिलकर करें जो नीति बुरी है उसको कोई न करे। इसमें कष्ट अवश्य है, परन्तु इससे धर्म और समाज को हानि नहीं। हमें व्यक्तिगत भले होना चाहिए। यदि आप व्यक्तिगत असंद्व्यवहार नहीं करेंगे तो आपसी सब वादविवाद सचाई के साथ हो सकते हैं आपसी भगड़ों में धोखेबाजी नहीं होना चाहिए इस प्रकार अपने मन से दृढ़ प्रयत्न कीजिए। हम व्यक्ति अपेक्षा हरगिज हमेशा नहीं रहेंगे। संसार, समाज, धर्म हमेशा चले आयगे। हर आदमी के निर्मल चरित्र का प्रभाव सब पर पड़ेगा। उसका अक्स दूसरों में ज़रूर घर करेगा। अतएव आज यह कार्य नहीं कि केवल प्रस्तावादि ही पास किए जांय। आज तो नमूना बनकर दिखाना चाहिए। दिखावे का नुमाइशी काम बहुत हो चुका। अब ठोस कार्य करना चाहिए। अंग्रेज़ों की नकल करने से फ़ायदा नहीं। आज सारी दुनिया उसी तरह कर रही है। इसलिए उसके खिलाफ़ करना मुश्किल पड़ रहा है। लेकिन उसकी नकल करना ठीक नहीं। इस दिखावे की ज़रूरत नहीं। ज़रूरत ठोस काम की है। प्रत्येक व्यक्ति देखे कि मैंने स्वयं कितनी उन्नति की। कितने कषाय घटाए। कितनी सदाचार में उन्नति की। बस फिर ज्यादह कहने सुनने की ज़रूरत नहीं। हमारा अन्य गुरु भी नहीं, आत्मा ही हमारा गुरु है, अतः उसके अनुसार प्रायश्चित्त करते जाइए। तब ही हम उन्नति कर सकेंगे। काम के तकाज़े को देख कर अब यह बेहयाई है कि खड़े होकर कुछ कहा जाय। अब तो कार्य कीजिए। यदि अब भी खड़ा होकर कुछ कहा जाए तो समझिए हमें सिर्फ अपनी विद्वत्ता ज़ाहिर करना है, आपने फरमाया कि परिषद् का अधिवेशन इटावा में होना शुभ चिन्ह है। आजतक मुझे इटावा का वह महत्त्व और प्राचीनता मालूम नहीं थी जो ब्रा० स० के सभापति के भाषण से प्रकट हुई है। परन्तु यहीं पर १२ वर्ष पहिले का जल्सा मेरे नेत्रों के समक्ष है जब जैनियों के पण्डितों के गुरु स्या० वा० न्या० पं० गोपालदास जी बरैया का सिंहनाद होता था। और नकारा धर्म का बजता था। उस समय मुसलमान, आर्यसमाजी, और हिन्दू लोग धर्म की प्रभावना को हृदयङ्गम करते थे। मुसलमानों की भी अहिंसा का उपदेश सुनकर गरदन हिल जाती। बस प्रभावना तब ही है जब कि अन्य स्वीकार करें। प्रचार हो तो ऐसा हो। किसी एक व्यक्ति पर भार न डालना चाहिए। जैनधर्म के प्रचार के लिए पूज्य ब्र० जी ने प्रस्ताव के अनुरूप में पुस्तक बता दी। उन का तो यह दिन रात को कार्य ही है। भला एक आदमी सारे भारत के लिये क्या करेगा? आवश्यकता है कि विद्वान लोग ब्रह्मचारी

बनें, निःस्वार्थी बनें तब ही काम चले। दो आदमियों की सेवा एक नहीं कर सका। सब चाहते हैं कि मोक्ष मिले और संसार में नाम हो! परन्तु यह दोनों कार्य नहीं हो सके। हम चाहते हैं कि चक्रवर्तीपद ही मिलता चला जावे पर यह हो नहीं सका संसार तो भूलभुलैया है। परन्तु इस पर हमें विश्वास नहीं। यदि होता तो अभी कपड़े उतार कर उस से नाता तोड़ लेवे। आवश्यकता तो यह है कि प्रचारक इस क़ाबिल बन जावें कि उन के वाक्यों का प्रभाव पड़े।

फिर सभापति महोदय ने परिषद् का महत्व और आवश्यक्ता का दिग्दर्शन कराते हुए मुजफ़्फ़रनगर अधिवेशन के सभापति साहू जुगमंदरदास जी के ही उन वाक्यों को दुहरा दिया जो उन्हों ने परिषद् के विषय में कहे थे। सारांशतः यह कि महासभा में योग्य कार्यकर्ताओं का अभाव होते हुए समाज में ठोस कार्य करना असंभव हो गया था और जब यह अच्छी तरह समझ लिया गया कि यहाँ से ठोस कार्य नहीं हो सका तब ही परिषद्‌की स्थापना हो गई। स्थापना हो गई, परन्तु उसे सार्थक बनाना कार्यकर्ताओं पर निर्भर है किन्तु मुकाबिले के तौर पर नहीं। अलग स्थापित करने का नतीजा हमें जतला देना है। महासभा पुरानी है-उस की प्रतिष्ठा भी पुरानी है। परन्तु नवयुवक को हंसाई का डर हर वक्त है। वह अगाड़ी बढ़े तो उन पर भार अधिक है। महासभा की तरह के ही हमारे प्रस्ताव रहे तो कुछ बात न हुई। ऐसा काम उठाइये जो फैलाव का न हो, पर संगठित हो साहू जी ने सब ज़रूरतों को गिनाया है लेकिन बहुत से फैलाव से कुछ ज़रूरत नहीं। एक ऐसी चीज़ा जो सामुदायिक शक्ति को Centralised केन्द्रीभूत कर देती है। मुस्लिम यूनीवर्सिटी का उदाहरण सर्व समक्ष है। अतएव अपने 'जैनत्व' को जतलाने के लिए कालिज का होना आवश्यक है। दूसरे स्थान पर बोर्डिङ्ग हाऊसों द्वारा भी शक्ति समूहरूप में काम में लाई जा सकी है। इलाहाबाद में जैन बोर्डिंग्ग की वजह से ही जैनियों की खास कर इज़्ज़त हो गई। अजैनों ने यहाँ के काम की तारीफ़ की। दरअसल अजैन दुनियां में नाम करने के लिए मिलकर काम करने को ज़रूरत है। वहां सब मिल कर रहेंगे वहां जैन धर्म के तत्वों व चारित्र को जानेंगे-मानेंगे और उसका अमल करेंगे तब वह अपने को जैनी कहते नहीं शरमायेंगे? उनका चारित्र उज्वल होगा। तब उस से दूसरों पर प्रभाव पड़ेगा कि जैन कालिज में रहने का यह फल है। तब हमारे मध्य ग्रेजुयेट पंडित, ग्रेजुयेट ब्रह्मचारी होते देर न लगेगी।

सब से बड़ा और सबसे पहिला कार्य हमारे सामने Central College सेन्ट्रल कालिज की स्थापना का है। बहुत से विद्वान कार्य करने को तैयार हैं। उनके दिलोंमें उमंगें हैं परन्तु स्थान नहीं है। उस स्थान के स्थापना की आवश्यकता है।

आगे आपने अजैनों द्वारा किए जाने वाले आक्षेपों का हवाला दिया कि ला० लाजपतरायजी की असद्वाणी अभी भूली नहीं थी कि सुना जाता है कि मथुरा में होने वाले ऋषिस्मार्क सम्मेलन में आर्यसमाजी ऐसी योजना कर रहे हैं कि सत्यार्थ प्रकाश के उस अंश की लाखों प्रतियां वितरण करें जिसमें जैनधर्म का झूंठा खंडन है। इसका जवाब दिया जा सका है, क्योंकि जवाब देना सब को

आता है। परन्तु जरूरत है कि वह अपना जवाब ऐसा लिखा जावे जो दुनियाँ तारीफ़ करे। परन्तु ऐसा उत्तर लिखा जाय तो कैसे? खोज करने की सामिग्री भी तो एक जगह नहीं मिलती। फिर भला जिन्दगी थोड़ी, काम बहुत तिस पर शक्ति नहीं, समूह का अभाव! भाइयो, कार्यकर्ताओं को मदद दीजिए, जिससे कार्य हो सके। हतोत्साह न होना चाहिए, चाहे कितना ही शक्ति हीन हो।

नाम यूं परश्ती में बालातर हो गया।
जिस तरह पानी कुऐं की तह में तारा हो गया॥

सभापति के भाषण के पश्चात् श्रीयुत रतन लाल जी मन्त्री परिषद् ने तब तक की परिषद् की रिपोर्ट निम्न प्रकार पढ़कर सुनाई—

रिपोर्ट भा० दि० जैन परिषद्

भारत दिगम्बर जैन परिषद् की स्थापना गत वर्ष जगत विख्यात जैन महोत्सव देहली में हुई थी। यहाँ यह बताना आवश्यक मालूम होता है कि इस परिषद् की स्थापना की आवश्यकता ही क्यों पड़ी? यह सबको विदित ही है कि जैन समाज की दशा दिन पर अवनत होती जाती है संख्या की अपेक्षा उसका ह्रास बड़े वेग के साथ हो रहा है। जो जैनधर्म भारतवर्ष का राष्ट्रीय धर्म था आज अत्यन्त साधारण अवस्था को पहुंच गया है। जिस समाज में थोड़े दिन पहिले जागृति होती मालूम होता थी वह फिर निद्रा देवी की गोद में जापहुंचा और इसमें से जीवन शक्ति जाती रही। जिस भा० व० दि० जैन महासभा ने जैन समाज में स्फूर्ति उत्पन्न की थी वह स्वयं पारस्परिक द्वेष व अज्ञानता के कारण जर्जरित हो गई और उसके कितने ही कार्यकर्त्ता उससे पृथक होकर समाजसे उदास हो बैठे। ऐसी अवस्था में कुछ धर्म प्रेमियों ने साधारण जनता में दिग० जैन धर्म प्रचारार्थ व जैन समाज के उत्थानार्थ इस भा० दि० जैन परिषद् के अकुंर को भारत मही पर लगाया। इस अकुंर के सींचने व देख भाल का कार्य हमारे उपस्थित सभापति महोदय (बा० अजितप्रसाद जी) को दिया गया। पौधा लगा ही था कि चारों तरफ़ से ओलों की बौछार होने लगी। समय क़रीब ही था कि पौधा मुरझा जाता। सूर्य की धूप के समान कुछ देश व समाज हितैषी सहायता के लिये आ गये और परिषद का पौधा हरा होकर अपनी नन्हीं २ शाखाओं द्वारा जैन समाज में से अनुकूल रस को खींचता हुआ बढ़ने लगा।

गत महावीर भगवान के निर्वाणोत्सव पर इस परिषद् पर पौधे की शाखा 'वीर' पाक्षिक पत्र का प्रादुर्भाव हुआ। 'वीर' पत्र पूज्य जैन धर्म भूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी के सम्पादकत्व व उत्साही भाई कामताप्रसाद जी के उपसम्पादकत्व में सुन्दर २ ज्ञान वर्धक जैन समाज के पूर्व गौरव तथा आगामी पथ दर्शक से पूर्ण भाई राजेन्द्र कुमार के द्वारा अति सुन्दर व मनोहर रूप को धारण करके जैन समाज में

पुनः जीवन शक्ति का संचार करने लगा। और शीघ्र ही जैन समाज के सब दलों से बढ़ कर हो गया।

अप्रेल मास में इस परिषद् का प्रथम अधिवेशन मुजफ्फरनगर में सफलता पूर्वक हुआ। यद्यपि उक्त अधिवेशन में इस परिषद् के सभापति श्रीयुत चम्पतराय जी बैरिस्टर तथा पूर्व मन्त्री बा० अजितप्रसाद जी (जो इस अधिवेशन के सभापतित्व के आसन पर सुशोभित हैं) के अनुपस्थित होने से कमी दीखती थी परन्तु परिषद् के अन्य कार्यकर्त्ताओं को यह अनुभव करके उपर्युक्त दोनों परिषद् के महारथी पूज्य सम्मेद शिखर की रक्षा के हेतु रांची नगर में निस्वार्थ भाव से मुकद्दमें की पैरवी कर रहे हैं और उनका आना असम्भव है संतोष था।

परिषद् को गर्व है कि उसके दो महान कार्यकर्त्ता सम्मेद शिखर के मुकद्दमें को सफल कराने में समर्थ हुये और दि० जैनों के स्वत्वों की रक्षा की।

गत मुजफ्फरनगर अधिवेशन में परिषद् ने एक कुशल वैद्य के अन्वेषण से जैनसमाज के रोग की परीक्षा करके प्रस्तावों के रूप में बूटियों का सेवन करना जैनसमाज को बतलाया। उन प्रस्ताव रूपी बूटियों को प्रत्येक निरपेक्ष पुरुष ने पसन्द किया है और जैन समाज के रोगों की वास्तविक औषधि माना है परिषद् प्रस्ताव रूपी औषधि बतलाकर चुप नहीं रही किन्तु उन प्रस्तावों की औषधि को समाज के सेवन में परिणत करने का प्रयत्न करती रही जो निम्न लिखित प्रस्तावों व उसके कार्य से विदित होगा।

प्र० १-सर्व साधारण को जैन धर्म से परिचय कराने के लिये एक ऐसी पुस्तक तय्यार करी जावे जिसमें जैनधर्म की प्राचीनता व सिद्धांत संक्षेप में आजावें, और उस पुस्तक को भिन्न २ भाषा में प्रकाशित किया जाय। उक्त पुस्तक की तय्यारी का कार्य पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी के सुपुर्द किया। मुझे लिखते हुए हर्ष होता है कि पूज्यवर ब्रह्मचारी जी ने इसी इटावा नगर में अपने इसी चतुर्मास के अवसर पर ऐसी पुस्तक तय्यार कर ली है जो अन्य विद्वानों के देखलियेजाने पर प्रकाशित की जावेगी।

प्र० २-जैन समाज की संख्या का वेग के साथ ह्रास देखकर ह्रास का अनुसन्धान करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की है जो अपना कार्य कर रही है।

प्र० ३-जैन इतिहास की अत्यन्त आवश्यकता समझकर इतिहास विभाग स्थापित किया गया जिसका कार्य बा०हीरालाल जी M. A. तत्वान्वेषी (Research Scholer) कर रहे हैं और जिनके ऐतिहासिक लेख आपके दृष्टिगोचर 'वीर' पत्र में हुए होंगे। आशा की जाती है कि आप सामग्री के जुट जाने पर एक बढ़िया जैन इतिहास तय्यार करेंगे।

प्र० ४-दिग० श्वेता० के तीर्थ सम्बन्धी झगड़ों को जैन समाज के लिये अत्यन्त हानिकारक समझकर कुछ महाशयों के डिपुटेशन की नियुक्ति की कि वे इस महान कार्य को करें। इस कार्य को सम्पादन करने के लिये श्रीयुत् रतनलाल जी मन्त्री व श्रीयुत् नेमीशरण जी

सहमन्त्री व श्रीयुत् कीर्तिप्रसाद जी असहयोगी श्वेताम्बरी वकील का एक डिपुटेशन अहमदाबाद आकर महात्मा गांधी जी से तथा जैनसमाज के मान्य अन्य पुरुषों से मिला। यद्यपि इस कार्य में सफलता अभी तक नहीं हुई किन्तु प्रयत्न जारी है दिगम्बरों की तरह श्वेताम्बरी भाई भी एकता कराने के प्रयत्न कर रहे हैं।

प्र० ९-स्कूलों व जैन बोर्डिङ्गों में जैन धर्म पर व्याख्यान कराने के लिये एक बोर्डिङ्ग विभाग खोला गया है। इसका कार्य हाल में मन्त्री बा० बलवीरचन्द जी वकील ने प्रारम्भ किया है

प्र० ८-जैनधर्म प्रचारार्थ उपदेशक विभाग स्थापित किया गया है जिसकी ओर से प्रचारक घूमने की योजना की जा रही है।

इन प्रस्तावों के अतिरिक्त कई अन्य उपयोगी प्रस्ताव पास किये गये थे जैसे कि मारवाड़ी व देशी अग्रवालों में बेटी व्यवहार किया जावे। जैन समाज में से व्यर्थ-व्यय बाल वृद्ध विवाहादि बन्द किये जावें तथा जैन मन्दिरों में महान हिंसा के द्वारा उत्पन्न रेशम तथा चर्बी लगे हुए सूती मशीन के कपड़ों का प्रयोग न किया जाकर शुद्ध हाथ के बुने हुए कपड़े प्रयोग में लाये जावें तथा अत्यन्त आवश्यकता के बिना वेदी या बिम्ब प्रतिष्ठायें न की जावें यदि की जावें तो सादगी के साथ व्याख्यानादि का प्रबन्ध करा कर की जावें।

जैन धर्म का ज्ञान कराने के हेतु एक ट्रैक्ट आत्मधर्मसोपान सभासदों को वितीर्ण किया गया। परिषद् के कार्यकर्ता परिषद् की आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण तथा उत्साही सहायकों के अभाव के कारण ज्यादा तेज़ी से कार्य न कर सके। मुज़फ्फ़रनगर के अधिवेशन में बजट जो पास किया गया था उस कार्य के चलाने के लिए ६०००) की आमदनी की आवश्यकता थी वहां पर व बाद को केवल १६००) के करीब चन्दा हुआ जिसमें केवल १०००) के करीब ही वसूल हुआ है। इतनी छोटी सी रकम से उपर्युक्त कार्य व वीर संचालन किया गया, इस समय परिषद् के पास बिलकुल रुपया नहीं है। वीर में भी ग्राहकों की कमी के कारण घाटा है जो आपको परिषद् व वीर के निम्न प्रकार हिसाब से ज्ञात होगा।

हिसाब परिषद्

जनवरी १९२३ (स्थापना) से अक्टूबर १९२४ तक

१७७५) परिषद् दान खाते

२५१) राय सा० साहु जुगमन्दरदास नजीबाबाद
१०१) ला० महावीरप्रसाद राजेन्द्रकुमार बिजनौर
१०१) ला० हीरालाल रतनलाल वकील बिजनौर

८४४) बक़ाया दान परिषद्

२५१) ला० जुगमन्दरदास जी नजीबाबाद
१०१) ला० प्रियलाल पदमप्रसाद मुज़फ्फ़रनगर
१०१) ला० धूमसिंह बलबीरचन्द मुज़फ्फ़रनगर

१०१) बा० नेमीशरण जी M. L. C. बिजनौर
१०१) ला० प्रियलाल पद्म प्रसाद मुजफ्फरनगर
१०१) ला० घूमसिंह बलबीर चन्द "
१००) ला० चंडीप्रसाद जी रईस धामपुर
१००) बा०जंबूप्रसादजीरईस ननौता(सहारनपुर)
१००) बा० सुमेर चन्द जी वकील सहारनपुर
१२५) बा० नन्दकिशोर जी डिप्टी कलक्टर धनबाद (मानभूम)
१००) रा० ब० नान्दमलजी अजमेर
५१) ला० मोतीलाल जी हाथरस
५१) बा० गोर्धनदास जी रिटायर्ड डिप्टी Inspector सहारनपुर

१३८३)

३९२) रकम ५०) से कम

१७७५)

१८२) फीस सभासदी परिषद् के जमा
१८२) फीस ९१ सभासद २) के हिसाब से

१९५७)

५१) ला० नेमीशरण बिजनौर
२५) जैन कुमार सभा मेरठ मा० बा० उग्रसैन मास्टर किश्चियन स्कूल मेरठ
२५) ला० बारूमल पारसदास बलेड़ा जिला मुज़फ़्फ़रनगर

५५४)

१००) ला० चंडीप्रसाद जी धामपुर
१००) ला० जम्बूप्रसाद जी ननौता

७५४)

९०) बाबत वीर घाटे जो वीरके हिसाब में जमा हैं
१५) श्री कुन्दनलाल श्रीराम कलकत्ता
२५) से०फूलचन्द रामजीवनदास कलकत्ता
२५) ला० बरातीलाल लखनऊ
२५) ला० हरनरायण भागलपुर

८४४)

७३०) वीर खाते के नाम वीर को घाटा रहा
१७०॥≋)। दिगम्बर श्वेता० ऐक्यता में
१०८।≠)। खर्च वा
५०।≈)॥ डाक व्यय
५४॥≠) छपाई आदि मुतफर्रिक
३।≈)॥ स्टेशनरी
८।≠)॥ ट्रैक्ट विभाग
२) खजाञ्ची साहु जुगमन्दरदास
४) ला० ज्योतिप्रसाद जी देवबन्द
८९१) बकाया पास मंत्री बा० रतनलाल

१९५७)

हिसाब वीर वर्ष ३१ अक्तूबर सन् १९२४ तक

१२२९॥≋) ग्राहक फीस	१७२) वेतन क्लर्क
६७॥) विज्ञापन चार्जेज	५७३॥≋)॥ कागज वीर
३६) दान वीर	६३२॥≋)॥ छपाई वीर
७३०) परिषद् के जमा	८४॥~)।। कटाई बंधाई वीर
५०२) वीर घाटे फंड जमा	२९४≋) विशेषांक
	४५१।=)॥ पोस्टेज वीर
	२७।≠)।।। स्टेशनरी
	३८॥≠) खर्च मुतफ़र्रिक
२५७१≡)	२५७५≡)

स्वीकृत प्रस्ताव

५ नवम्बर को सायंकाल के ६ बजे विषय निर्धारिणी समिति की बैठक होकर निम्न लिखित प्रस्ताव निश्चय हुए जो परिषद् के अधिवेशन ५ व ६ नवम्बर की रात्रि की बैठकों में पास हुए।

प्र० १—जैन जाति की गिरती हुई दशा को देखकर यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि प्रत्येक स्थान की पंचायतें अपने यहां के रिवाजों का लिहाज़ रखते हुए एक कम खर्च दस्तूरुल अमल बना लेवें और अपने यहां बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्या विक्रय और अनमेल विवाह को रोकने के लिए नियम करें कि विवाह के समय कन्या की आयु १३ वर्ष से कम और लड़के की आयु १७ वर्ष से कम न हो और ४० वर्ष से ऊपर कोई पुरुष विवाह न करे। इस प्रस्ताव के विरुद्ध होने वाले विवाहों में कोई सज्जन सम्मिलित न हों।

प्र०—वैद्यराज कन्हैयालाल जी।
स०—वैद्य चन्द्रसैन जी।

प्र० २—परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैन मन्दिरों में केवल शुद्ध स्वदेशी वस्त्र ही प्रयोग में लाये जावें और जैनजनता से परिषद् प्रेरणा करती है कि वह भी शुद्ध स्वदेशी वस्त्र को ही व्यवहार में लावें।

प्र०—बा० रतनलाल
स०—ब्र० शीतलप्रसाद जी

[प्रस्तावक महोदय ने बतलाया कि रेशम के लिये कीड़े (रेशम के) पाले जाते हैं कीड़े के मुंह से तार निकलता है और उसके चारों ओर लिपट जाता है कीड़ा तारों के कोये (जो बड़े बेर की बराबर होता है) में बन्द हो जाता है। कोये को खौलते हुए पानी में डाल दिया जाता है कीड़ा अन्दर मर जाता है फिर रेशम का तार निकाल

किया जाता है। यदि इस तरह से कीड़े को न मारा जावे तो वह काटकर निकल आता है और रेशम कट जाता है। इस तरह रेशम महा हिंसा का कारण है।

मशीन के बने सूती कपड़े में चर्बी का प्रयोग होता है प्रस्तावक महोदय ने कहा कि मैंने स्वयं अहमदाबाद की जुबली मिल में देखा है कि चर्बी और सड़ी हुई मैदा की जिसमें भी कीड़े पड़ जाते हैं मान बनाई जाती है सूत को मज़बूत बनाने के लिये चर्बी की मान में सूत को भिगो देते हैं और चर्बी सूत के अन्दर पेवस्त हो जाती है चर्बी जानवरों को मार कर निकाली जाती है इस तरह से मशीन के बने हुए सूती कपड़ों के बनाने में बड़ी हिंसा होती है। अहिंसा धर्म पालक जैनियों को ऐसे वस्त्र काम में न लाकर सूती हाथ के बुने हुए वस्त्र यानी खद्दर प्रयोग में लाना चाहिए।]

प्र० ३-जैन समाज के शारीरिक बल के ह्रास को देखते हुए यह परिषद प्रस्ताव करती है कि प्रत्येक ग्राम और नगर में व्यायाम शालायें स्थापित की जावें और समाज के युवकों से अपने शारीरिक बल को बढ़ाने के लिए उन में सम्मिलित होने को प्रेरणा करती है।

पू० पं० बसन्तलाल

स० वैद्यराज कन्हैयालाल जी

प्र० ४-यह भा० दि० जैन परिषद् श्रीमान चम्पतराय जी बैरिस्टर, हरदोई, श्रीमान् बाबू अजित प्रसाद जी वकील और श्रीमान् ला० देवीसहाय जी रईस ने शिखिर जी केस में जो अपूर्व स्वार्थ त्याग से सेवा की है उसके लिए कोटिशः आभारी है और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है।

प्र० बा० रूपचन्द रईस कानपुर

स० बा० कामता प्रशाद जी अलीगंज

प्र० ५-औरंगाबाद (रियासत हैदराबाद) में उत्तरीय भारत से गए हुए दि० जैन अग्रवाल भाइयों के अब केवल ४० घर ही रह गए हैं सम्बन्ध न मिलने से उनको अपना अस्तित्व रखना दुःसाध्य है, अतएव यह परिषद् सर्व भारत के जैनी अग्रवालों से प्रेरणा करती है कि वह उनके साथ सम्बन्ध करके उनकी रक्षा करें।

पू० सेठ कस्तूर चन्द साह
औरङ्गाबाद (दक्षिण)

स० ला० भगवानदास जी
इटावा

[प्रस्तावक महोदयने बड़े करुणा जनक शब्दों में प्रस्ताव रक्खा और कहा कि मौहमद तुगलक के ज़माने में देहली से सात आठ सौ जैन अग्रवालों के घर दक्षिण दौलताबाद में जाकर बस गये दूर होने के कारण विवाह सम्बन्ध बन्द हो गये। एक मौहल्ला अग्रवालों के नामसे मशहूर है। यद्यपि अब वह मौहल्ला बर्बाद होगया है। काल की गति से अब केवल चालीस घर रह गये हैं यदि आप लोगों ने (उत्तरीय अग्रवालों ने) सम्बन्ध नहीं किया तो हम दक्षिण अग्रवालों का नाम भारतवर्ष से जाता रहेगा।]

नोट—दक्षिण अग्रवालों में कोई दोष नहीं है गोयल गर्ग आदि गोत्र हैं जैन धर्म के अस्तित्व के कायम देखने वालों का कर्तव्य है कि दक्षिण अग्रवालों की रक्षा करें।

प्र० ६-यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि कुछ काल से जो जो जातियाँ देश भेद से तथा कई अज्ञात कारणों से पृथक् २ हो रही हैं और बराबर सदाचार शीलादि से निर्दोष होते हुये भी विभक्त हैं वे परस्पर प्रेम बढ़ाकर रोटी बेटी व्यवहार करें।

प्रस्तावक बा० कामताप्रसाद जी
समर्थक पं० झूमन लाल जी

[पं० झूम्मन लाल जी ने प्रस्ताव के समर्थन करते हुये कहा कि बहुत सी जातियां कुछ ज्ञात अज्ञात कारणों से पृथक् २ हो गई हैं उन में रोटी बेटी व्यवहार प्रारम्भ होना चाहिये जैसे मालवा प्रान्तीय और एटा जिला के पद्मावती पुरवार एक हैं या बुढ़ेले कंपिला लवेचू और करहल आदि मध्य प्रान्तीय लंबेचू सब लंबेचू हैं तथा बुन्देलखण्ड और मथुरा के गोलालारे एक हैं। इसी तरह से बहुत सी जातियां हैं इन में रोटी बेटी व्यवहार करने में किसी प्रकार की हानि नहीं है)

प्र० ७-यह परिषद् सब जैन पञ्चायतों से अनुरोध करती है कि जैन इतिहास के हेतु सामग्री एकत्रित करने के लिये वह अपने २ यहाँ की प्रतिमाओं व यन्त्रों के लेखों की नकल करके परिषद् आफिस में भेजें।

प्रस्तावक सभापति।

प्र० ८-जैन समाज में हिन्दी की उच्च शिक्षा का अभाव देखते हुये यह परिषद् प्रस्ताव करती है। कि जैन विद्यार्थियों को विशेष रूप से हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परिक्षाओं में सम्मलित होना चाहिये। और जैन समाज के प्राचीन धुरंधर कविवरों की प्रतिभा शाली रचनाओं के महत्व को सर्व साधारण जनता में प्रगट करना चाहिये।

प्रस्तावक सभापति

प्र० ९-यह परिषद् श्री सम्मेद शिखिर जी सम्बन्धी पूजा केस की अपील जो इस समय प्रिवी कौंसिल में पेश है और जिसका प्रभाव दि० जैन के स्वत्वों पर पड़ता है उसका ध्यान रख कर यह परिषद् अपने सभापति श्रीमान् चम्पतराय जी बेरिस्टर से प्रेरणा करती है कि उपर्युक्त अपील की पैरवी के लिये स्वयं इङ्गलैंड को पधार कर उचित प्रबन्ध करें ताकि दि० जैनियों के हकूक की रक्षा पूर्णरूप से हो सके।

प्र०-जै० ब्र० श्री शीतलप्रसाद जी
स०-अमरचन्द जी जैन

प्र० १०-यह परिषद् देश की परिस्थिति देखकर यह उचित समझती है कि भारतवर्ष की भिन्न २ जातियों के एकता सम्मेलन (Peace arbitration Board) में जैनियों के प्रतिनिधि होना आवश्यक है। अतएव एकता सम्मेलन और उसके सभापति म० गांधी जी से अनुरोध करती है कि जैनियों का कम से कम एक प्रतिनिधि अवश्य रक्खें।

प्र०-कामताप्रसाद
स०-भगवानदास जी

इस प्रस्ताव की नकल और इस संबंध में पत्र व्यवहार म० गांधी से किया जावे।

प्र० ११-वर्धा से सेठ चिरंजी लाल जी बड़जात्या का निमंत्रण आया है कि परिषद् का द्वितीय

वार्षिक अधिवेशन वर्धा में माघ शुक्ला वीर सम्वत् २४५१ में कर लिया जावे यह परिषद् निमंत्रण को स्वीकार करती है।

प्रस्तावक बा० रतनलाल
समर्थक—राजेन्द्र कुमार

नियमावली

१ इस सभाका नाम भा०दि०जैन परिषद् होगा।

२ परिषद् का उद्देश्य दि० जैन धर्म प्रचार और जैन समाज की उन्नति करना है।

३ प्रत्येक दि०जैन धर्मानुयायी जिसकी आयु ११ वर्ष से कम न हो और जिसको परिषद् के उद्देश्य स्वीकृत हों नियमित फार्म भरने पर और कम से कम ।।) वार्षिक फीस देने पर परिषद् का सभासद हो सकेगा। गृहत्यागी महानुभावों से कोई फीस न ली जावेगी।

संगठन

भा० दि० जैन परिषद् के आधीन:—

अ-प्रान्तीय दि० जैन परिषद्।

आ-जिला ,, ,, ।

इ-स्थानीय ,, ,, क्रमवार रहेंगे। परिषद् के उद्देश्य के किसी अंग की पूर्ति करने वाली संस्थाएं भी इन परिषदों के आधीन हो सकेंगी।

इनका संगठन निम्न प्रकार होगा:—

स्थानीय दि० जैन परिषद्

अ-एक या अधिक ग्राम अथवा नगर के रहने वाले कम से कम पांच सभासद्, स्थानीय दि० जैन परिषद् स्थापित कर सकेंगे।

जिला दि० जैन परिषद्

आ—जिस जिले में कम से कम २५ सभासद होंगे वहां जिला परिषद् स्थापित हो सकेगा। उस जिले की समस्त स्थानीय परिषद् जिला परिषद् के आधीन होंगी।

प्रान्तीय दिगम्बर जैन परिषद

इ-जिस प्रान्त में कम से कम दो जिला परिषद् अथवा ५० सभासद विद्यमान होंगे। वहां प्रान्तीय परिषद् स्थापित हो सकेगी। उस प्रान्त के समस्त जिला परिषद् उस प्रान्तीय परिषद् के आधीन होंगे.

शासन

६-प्रत्येक परिषद् के कार्य को निर्धारित व संचालन करने के लिए निम्न लिखित प्रबन्धकारिणी समितियां होंगी।

(१) भा० दि० जैन परिषद् समिति के अधिक से अधिक ५१ और कमसे कम २१ सभासद होंगे

(२) प्रान्तीय दि० जैन परिषद् समिति के अधिक से अधिक ३५ और कमसेकम ११ सभासद होंगे।

(३ जिला दि० जैन परिषद् समिति में अधिक से अधिक २१ और कम से कम ५ सभासद् होंगे

(४) स्थानीय परिषद समिति में अधिक से अधिक ११ और कम से कम ३ सभासद होंगे, पदाधिकारी इसी संख्या में सम्मिलित समझे जावेंगे।

७-जो इस परिषद की किसी शाखा परिषद के फीस देकर सभासद होंगे वह अपनी से ऊपर वाली शाखा परिषदों के भी सभासद होंगे और वह शाखा परिषद् उस फीस को भा०दि० जैन परिषद् को भेज देगी।

८-प्रत्येक परिषद् में निम्नलिखित पदाधिकारी होंगे

(१) सभापति (आवश्यकतानुसार एक वा अधिक उपसभापति)

(२) मन्त्री (आवश्यकतानुसार एक वा अधिक सहमन्त्री)

(३) कोषाध्यक्ष (एक वा अधिक)

९-प्रत्येक परिषद् का रुपया व हिसाब उसकी समिति रक्खेगी और ऊपर वाली समिति उसका हिसाब परीक्षक (Auditor) द्वारा जांच करा लेगी।

१०-प्रत्येक परिषद् का कर्तव्य है कि वे भा० परिषद् के या उसकी समिति के स्वीकृत किये हुए प्रस्तावों को प्रयोग में लावें तथा अपने से ऊपर वाले परिषद् वा उसकी समिति के निर्णय को स्वीकार करें।

११-प्रत्येक परिषद् व उनकी समितियों के पदाधिकारियों का चुनाव प्रत्येक तीसरे वर्ष उस परिषद् द्वारा हुआ करेगा, और प्रत्येक समिति का चुनाव भी उस परिषद् द्वारा प्रति तीसरे वर्ष हुआ करेगा।

१२-समितियों की बैठक प्रत्यक्ष व परोक्ष दोनों प्रकार हो सकेगी। कोरम उस समिति के सदस्यों का पांचवां भाग होगा। यदि पांचवें भाग के कोरम की संख्या तीन से कम आवेगी तो कोरम तीन होगा।

१३-परिषद् व उनकी समितियों के सम्पूर्ण निश्चय बहुमत से हुआ करेंगे। समान पक्ष होने पर सभापति की दो सम्मति समझी जावेंगी।

१४-भारत परिषद् के किसी आवश्यक कार्य में व्यय बजट से अधिक २५०) तक सभापति और १००) तक मन्त्री कर सकेंगे। अधिक व्यय समिति की आज्ञा से होगा।

सभापति का निर्वाचन

१५-भा० दि० परिषद् का जिस प्रान्त में अधिवेशन होगा उस प्रान्त का स्वागत कारिणी समिति होगी। जिस ज़िले में प्रान्तीय परिषद् होगा उस ज़िले की स्वा० का० समिति होगी। इसी तरह से अन्य परिषदों की स्वा० का० समितियां होंगी।

१६-मन्त्री परिषद् का कर्तव्य होगा कि स्वागत कारिणी समिति से सभापति के लिये नाम मंगाले यदि वह उचित समझे तो और नाम बढ़ाकर उन नामों के लिए परिषद् की समिति से सम्मति लेले। बहु सम्मति से सभापति का निश्चय होगा यदि सभापति के लिये सम्मतियां बराबर होंगी तो स्वा० का० बहुमत से इस का निर्णय करेगी।

१७-परिषद् के अधिवेशन की विषय निर्धारिणी समिति में उस परिषद् के प्र० का० कमेटी के सर्व उपस्थित सदस्य और स्वा० का० के सभापति एवं मन्त्री होंगे। इनके अतिरिक्त स्वा० का० और प्रतिनिधिगणों में से भी सदस्य उस समय की उपस्थिति के अनुसार उचित संख्या में चुने जायंगे। उचित संख्या का निर्णय सभापति करेंगे।

१८-प्रत्येक प्रस्ताव विषय निर्धारिणी समिति में उपस्थित किया जावेगा। उसके पश्चात् अधिवेशन में रक्खा जावेगा।

१९-सर्व प्रस्ताव मन्त्री परिषद् के पास विषय निर्धारिणी समिति की बैठक से एक दिन

पहिले आने चाहियें। आवश्यक प्रस्ताव मंत्री तुरन्त भी ले सकेगा।

२०-भा० दि० जैन परिषद् का मुखपत्र "वीर" होगा जिसके सम्पादक व उपसम्पादक व प्रकाशक भी परिषद् समिति निश्चय करेगी।

२१-सभापति, उपसभापति, मन्त्रीगण कोषाध्यक्ष समिति के सदस्य समझे जावेंगे। भा०परिषद् समिति के सदस्य सम्पादक उपसम्पादक व प्रकाशक भी होंगे।

२२-निम्न लिखित अवस्था में किसी भी सदस्य का पृथक्करण होसकेगा—

[क] दो वर्ष तक चन्दा न देने से।

[ख] त्यागपत्र देने से।

[ग] मृत्यु होने से।

[घ] परिषद् का नियम भंग करने से।

नोट—नियम (घ) में निर्णय करने का अधिकार प्र० का० स० को होगा।

२३-कोषाध्यक्ष अपने पास १०००) तक रख सकेगा। अधिक होनेपर सभापतिकी सम्मति से विश्वास योग्य स्थान पर जमा कर देगा।

२४- परिषद् का वार्षिक अधिवेशन प्रतिवर्ष किसी उचित स्थान पर हुआकरेगा और आवश्यक्तानुसार नैमित्तिक अधिवेशन भी हो सकेगा। मंत्रीका कर्तव्य होगा कि वह अधिवेशन की सूचना कमसे कम १६ दिवस पूर्व सभासदोंको अवश्य दें।

२५-अधिवेशन में निम्नलि० सज्जनों को राय (वोट) देने का अधिकार प्राप्त होगाः—

(क) परिषद् के सभासद

(ख) भिन्न २ पञ्चायतों तथा स्थानीयसभाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधिगण जिन की सूचना कमसे कम तीन दिन पूर्व मंत्री स्वागतकारिणी समिति के पास आजानी चाहिये।

२६- वार्षिक अधिवेशन पर आगामी वर्ष के लिये व्यय का बजट पास हुआ करेगा।

२७- परिषद् का हिसाब जांच करने के लिये प्रबन्धकारिणी कमेटी हिसाब परीक्षक (आडीटर) नियुक्त किया करेगी।

२८- किसी आवश्यकता उपस्थित होने पर उपर्युक्त नियमों में परिवर्तन हो सकता है। किन्तु ऐसा परिवर्तन वार्षिक अधिवेशन पर ही हो सकेगा।

प्रस्तावक-मंत्री बा० रतनलाल

समर्थक-कामताप्रसाद जी

परिषद् को सहायता

इटावे में अपील करने पर निम्न लिखित परिषद् को सहायता प्राप्त हुईः-

*१०१) बा० धूमसिंह Sub Engineer इटावा

१५१) बा० शिवचरन लाल जसवन्तनगर वास्ते पुस्तक उपहार

१०१) ला० रूपचन्द जी रईस कानपुर वास्ते लेख जैन हिन्दी कवि

*५१) ला० लछमन दास जी इटावा

*५१) ला० चन्द्र सैन जी वैद्य इटावा

५१) ला० मुन्ना लाल भजबपुर

*५०) श्रीयुत चम्पतराय जी बैरिष्टर हरदोई

५१) ला० फुलजारी लाल जी रईस करहल

५१) ला० रूपचन्दजी वैद्य पूजा कारक इटावा

नोट *चिन्ह वाली रकम वसूल हो गई है

११) पं० बसन्त लाल जी
५) बा० बसन्तीलाल जी
२) बा० मुन्ना लाल जी
२) बा० मंगतराय समाता
२) बा० मेवा राम जी पांडे
५) सेठ दीपचन्द जी
२) सेठ झुन्नीलाल जी

६८७)

१६३) रकम ५० से कम

८५०)

परिषद् की ६ नवम्बर की कारवाई परिषद् के स्थायी सभापति श्रीयुत् चम्पतराय जी के सभापतित्व में हुई मंगलाचरण ब्र० शीतल प्रसाद जी ने किया वर्धा से सेठ चिरञ्जीलाल का तार परिषद् के निमन्त्रण का पढ़ा गया। अन्त में सर्व उपस्थित सज्जनों व महिलाओं को धन्यवाद देकर पूज्य ब्र० शीतल प्रसाद और पं० झूम्मन लाल जी ने शान्ति स्तवन का पाठ किया और सानन्द महोत्सव 'जैन धर्म की जय' के शब्द गुंजार के साथ पूर्ण हुआ।

सम्पादकीय टिप्पणियां

नूतन वर्ष

वीर के नवीन वर्ष का प्रथमाङ्क पाठकों के हाथों तक पहुंच चुका है। आशा है उसका उन्हों ने समुचित स्वागत किया होगा। और हमारी गत प्रार्थना को भी स्वीकार किया होगा। स्वयं ग्राहक बनाया होगा। उन्हीं के सहयोग से हम इस नूतन वर्ष में भी सफल हो सकेंगे। प्रभू वीर की पवित्र वाणी का प्रचार और महत्त्व प्रकट करने में कुछ उठा न रक्खेंगे। विश्वास है कि प्रभू वीर के प्रति सेवा और भक्ति भाव के अनुग्रह से भविष्य भी हमारा साथ देगा और हम अपने मान्य लेखकों और प्रिय सहायकों के सहयोग से सफल मनोरथ हो सकेंगे। अंत में भावना है कि यह वर्ष 'वीर'को और 'वीर' के हितैषियों को सुख कर हो। ॐ वन्दे वीरम्।

इटावा महोत्सव और परिषद् का नैमित्तिक अधिवेशन

इटावा के सभ्यों से सम्मिलित होने का सुअवसर भी जब तब प्राप्त होता है परन्तु कुछ गत महीनों से उन के निकट से जैन धर्म के सम्बन्धमें अनोखे ही शब्द सुनाई पड़ने लगे हैं। जिस व्यक्ति से जैन पने का ज़िकर आजाए तो ख्वामख्वाह वह एक प्रशंसा की लड़ी बांधदे। सो भी केवल धर्म की नहीं धर्मात्मा की भी! पाठको, इस धर्म प्रभाव का कारण और कुछ नहीं है, केवल आप के पूज्य संपादक ब्र० शीतलप्रसाद जी के वहाँ चातुर्मास करने का यह प्रत्यक्षफल है। इटावे की जैन जनता तो आज आप की सत्संगति से अवश्य ही "जैन" कहलाने की हकदार है। वहां गऊ-वत्स-वत प्रेम का साम्राज्य नज़र आता है। यही कारण है कि

धर्म कार्यों की विशेषता भी वहां पर जन्म ग्रहण कर रही है। वहां के प्रसिद्ध जैन वैद्य ला० रूपचंद्र जी ने इस हर्षोपलक्ष में त्रैलोक्य मंडल पूजन ता० ३ से ७ नवम्बर तक कराया था और परिषद् को भी निमंत्रित किया था!

इधर नवीन वर्ष का शुभागमन–उधर परिषद् का 'इष्टि-का पथ' (इटावा) में पहुंचना! इस से उत्कृष्ट और क्या शुभसंवाद हो सक्ता है। परिषद् इष्टि के पथ पर पहुंच गया यह शुभलक्षण है। कार्यकर्त्ताओं को उत्साहित करने में पूर्ण सहायक है। तिस पर 'अग्रगो' से उसका निमन्त्रित होना उनको कार्य करने के लिए विशेष आह्वान है। समाज कार्य करने वालों—निःस्वार्थ सेवियों की क़दर जानना है। उसके अगाड़ी कार्य भी बहुत हैं, परन्तु कार्य करने वाले इनेगिने हैं। जो हो परिषद् का नैमित्तिक अधिवेशन विशेष महत्त्व को लिए हुए पूर्ण हुआ है। प्रस्ताव जो पास हुए हैं वह सब आवश्यक और प्रभावशाली हैं। उनका कार्यरूप में परिणत करना अब हमारा कर्तव्य है। बिना सहयोग के सामुदायिक शक्ति के कार्य नहीं चलता है। परिषद् के मेम्बरों और कार्यकर्ताओं को उन का अमली प्रयोग शीघ्रतम करना चाहिए। जैन जाति में ऐसी बहुत सी छोटी २ सम्प्रदायें हैं कि यदि उनका विवाह क्षेत्र बढ़ा न दिया जाय तो वह शीघ्र ही नष्ट हो जावें। इसही भयंकर भय को लक्ष्य कर परिषद् ने इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया है। अब आवश्यकता है कि जाति हितैषी सज्जन इस प्रस्ताव को उन छोटी २ सम्प्रदायों तक पहुंचावें और उनका विवाह क्षेत्र बढ़ाने का प्रबन्ध करावें जिससे वह सार्थक होसकें। जैन हिन्दी साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने के लिये जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है सकी योजना होना भी आवश्यक है। प्रभावशाली प्राचीन जैन साहित्य किस प्रकार संसार से छिपा हुआ है उसको देखते हुए यह प्रस्ताव बड़े मार्के का है। तीर्थराज की रक्षा के लिए श्रीमान् चम्पतराय जी से विलायत जाने की प्रार्थना करना और उनका उसे स्वीकार करना एक अद्वितीय बात है। एकता सम्मेलन में जैन प्रतिनिधि की आवश्यकता प्रगट करना अपने राजनैतिक अधिकारों की रक्षा का परित्रायक है। इस सर्व अपेक्षा से परिषद् का यह अधिवेशन विशेष महत्त्वशाली था। उसकी सहायता भी जनता ने यथाशक्य अच्छी की है, परन्तु अब भी उसको अपने सब कार्यों को करने और प्रस्तावों को अमली जामा पहिनाने के लिए रुपयों की आवश्यकता है। समाज में ठोस कार्य करने को वह अवतीर्ण हुआ है। इस हेतु द्रव्य की प्राप्ति होना परमावश्यकीय है।

परिषद् के साथ ही जैन तत्त्व प्रकाशिनी सभा के उत्सव भी महत्वशाली रहे। जैन-अजैन सर्वत्र ज्ञान की महिमा का भान प्रगट होने लगा। इटावा में पहिले भी बड़े २ अधिवेशन हो चुके हैं, परन्तु जो प्रभाव इस अधिवेशन का रहा वह पहिले कभी नहीं देखा गया। अजैन विद्वान जैन दर्शन का महत्व परख गए। बाबू गुरू नारायण, इन्जिनीयर तो सदैव ही तत्त्वान्वेषण में तत्पर देखे गए। यह सब फल, सब पुण्य-प्रवृत्ति सत्संगति विशेष शुभोपयोग के संस्करण से हुई है। जैन धर्म भूषण ब्र० शीतल प्रसाद जी का वहां चातुर्मास होना धर्म की जड़ जमाना हुआ है। इस का प्रत्यक्ष प्रमाण तो उस

समय आंखों अगाड़ी था जिस समय आप वहां से ता० ८ की सांयकाल को हस्तिनापुर को प्रस्थानित हुए थे। जैन और अजैनों-ब्रह्मण और वैश्यों स्त्री और पुरुषों से जैन धर्मशाला खचाखच भरी पड़ी थी। सर्व के मुखाकृति एक अति पीड़ा जनक विदाई के चिन्ह प्रगट होते थे। सभों ने सब तरह से प्रगट शब्दों द्वारा ब्र० जी का आभार स्वीकार किया और उनकी विदाई पर दुःख प्रकट किया। उसी समय जो अभिनन्दनपत्र उन्होंने ब्रह्मचारी जी को समर्पित किया और उन्हें 'धर्म दिवाकर' की पदवी से विभूषित किया वह उन की हृदय भक्ति और कृतज्ञता का विज्ञापक है। तिसपर ब्र० जी की प्रस्थान का दृश्य तो इस का प्रत्यक्षसाक्षी था। स्त्री पुरुष आनन्दाश्रु बहा रहे थे। उसमें हृदय कृतज्ञता के आवेश में बैण्ड बाजे के साथ २ महाराज की गाड़ी में बैठाल कर पुरुष साथ साथ २ चल रहा था, धर्म दिवाकर जी"ब्र० जी"की जयके नारे बुलन्द थे। अगाड़ी स्वयं सेवकों ने स्वयं घोड़ा हटाकर गाड़ी खींचना प्रारंभ किया। सब लोग लगगए। अपूर्व वात्सल्य भक्ति का दृश्य था! बाबू गुरुनारायण सरीखे अजैन विद्वानों ने उस में हाथ बटाने अपना गौरव समझा इस से बढ़ कर और धर्म प्रभावना क्या हो सक्ती है? फिर प्लेटफारम पर जो दृश्य था वह भी अनोखा था। सारांशतः उस समय की हर बात ब्र० जी के प्रभाव को प्रकट कर रही थी। गाड़ी खड़ी दी परन्तु तो भी लोग न गए। आखिर को जाना ही पड़ा। उस नगर से वापिस हो लिए। वस्तुतः आज पूज्य ब्र० सदृश अनेकों धर्मवीरों की आवश्यक्ता है और यह आवश्यक्ता तबही पूर्ण हो सक्ती है जब सेन्ट्रल कालिज स्थापित हो सके जहां उच्च-वंशीय विशाल प्रखर बुद्धिके धारक जैनी विद्यार्थी अंग्रेजी के साथ २ धर्मज्ञान के पारगामी विद्वान बन सकें। इसीलिए ज़रूरत है कि परिषद् को सफल बनाया जाए और उसकी सहायता हर तरह से कीजावे। जैन धर्म की उन्नति के लिए निःस्वार्थ त्यागियों की आज परमावश्यक्ता है। तो भी पाठकों, और परिषद् के सभासदों, यदि आप को परिषद् में गर्व है तो परिषद् द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों को काम में लाइए। तब ही आपका और सब का कल्याण है। एवमस्तु॥

जैन तत्व प्रकाशनी सभा

उक्त सभा का अधिवेशन भी इटावे में श्री त्रैलोक्यविधान पूजन व रथयात्रा के अवसर पर हुआ था। ता० ४ को बाबू शिवचरण लाल जी के सभापतित्व में ब्र० शीतलप्रसाद जी, बाबू रतन लाल जी, बाबू कामता प्रसाद जी और बाबू राजेन्द्र कुमार जी के व्याख्यान हुए थे। ता० ५ की रात्री को पूज्य ब्र० जी का व्याख्यान "पुरुषार्थ" पर हुआ था। ता० ६ को श्रीमान् बैरिष्टर चम्पतराय जी के सभापतित्व में ब्र० जी का आत्मोन्नति पर व्याख्यान हुआ था। उसमें आपने हिन्दू संगठन के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किए थे। कहा था यदि चोटी वालों का इसे संगठन करना है तो जैनी सम्मिलित हो सक्ते हैं। यदि उससे भाव वेदों के मानने वालों के संगठन से है तो जैनी शामिल नहीं हो सक्ते। सभापति महोदय ने भी इसकी पुष्टी की थी। कहा था कि यह संगठन सामाजिक Social है। इस हेतु से

यदि इसका नाम भारतीय सभ्यता संगठन रक्खा जाता तो उत्तम था। आज इटावा के सर्व प्रमुख जैन अजैन पुरुष उपस्थित थे। जिला मजिस्ट्रेट मि०।मैकलिओड साहब और उन की मैम साहिबा भी पधारी थीं। सभापति ने अपना व्याख्यान तुलनात्मक धर्म Comparative Religion पर दिया था। जिसमें आपने पहिले जैन मतानुसार आत्मा की सिद्धि और उसमें ही सुख, ज्ञान, अमरपने आदि की सिद्धि की थी। इसको Metaphy Sical सैद्धान्तिक साक्षी से ही नहीं बल्कि म० बुद्ध के कथन से भी सिद्ध किया था कि मनुष्य स्वयं सर्वज्ञ हो सकता है। भगवान महावीर की सर्वज्ञता को बुद्ध ने स्वीकार किया था। आत्मा के अस्तित्वको Physiological Psychology ने भी प्रमाणित कर दिया है। Catholic psychology भी उसे स्वीकार करती है। और यह दोनों उसे Simple अखंड पदार्थ बतलाती हैं। अगाड़ी आप ने इन्हीं सिद्धान्तों को हिन्दुओं की आत्मरामायण से सिद्ध किया। आत्मा ही परमात्मा है यह ईसाइयों के Be ye therefore perfect even thy father is in Heaven और मुसलमानों के मैं अरब हूं बिगैर ऐन के यानी रब हूं" से सिद्ध है। परन्तु संसारी आत्मा में वह कषाय के कारण खोया हुआ है। वह नष्ट हुआ कि आत्मा जागा। यही कारण है कि तत्व वेत्ताओं ने कहा कि (Man know Thyself) उपरान्त आपने विविध धर्मों की विभिन्नता का कारण पिछला रिवाज बतलाया कि पहिले धार्मिक सिद्धान्त तसवीरों में Pictorial Language प्रगट किया। इस रूप में प्रगट करने का कारण यही था कि उस समय लोग प्राचीन बातों के खिलाफ कुछ नहीं सुनना चाहते थे। St.Paul ने साफ कहा कि यह Allegory आलंकार है। आपने हजारों ही ऐसे अलंकारों के पते लगाए हैं। उदाहरणार्थः— हिन्दुओं के राम = ज्ञान, दशरथ = मन काबू किया हुआ, कौशिल्या = निवृत्ति हैं। इस प्रकार आपने विशेष विद्वत्ता के साथ अन्य धर्मों में जैन धर्म के सिद्धान्त छुपे हुए प्रगट किए। जिसका प्रभाव जनता पर विशेष पड़ा। अन्त को सभा सानन्द पूर्ण हुई।

गताङ्क का चित्रपरिचय

श्रीमान् ब्र० धरणेन्द्रदास जी—आप आरा के रईसों में एक अग्रण्य रईस हैं। दि० जैन धर्मानुयायी अग्रवाल वंशज हैं। बचपन से ही आपका लालनपालन उसही रीति से हुआ था जिस रीति से हम जैन शास्त्रों में सुकुमाल कुमार के विषय में पढ़ते हैं। तो भी आपने हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा में बी० ए० तक योग्यता प्राप्त की। यह सब होते हुए भी आपने जो अपूर्व कार्य स्वार्थ त्याग इस काल में किया है कि वह हमें पुराण वर्णित राजा महाराजाओं के त्यागों का स्मरण दिला देता है। स्त्री और अन्य सम्बन्धी एवं अटूट धनराशि होते हुए आपने उनसे मोह तोड़ दिया है और ब्रह्मचर्य प्रतिज्ञा का पालन कर रहे हैं। मद्रास प्रान्त में श्रीमन् कुन्दकुन्दाचार्य के तपस्थान

पर आपने एक उदासीनाश्रम स्थापित किया है, और वहीं आप विद्यालय और एक पुस्तकालय स्वयं स्थापित करने की योजना कर रहे हैं। वस्तुतः जैन समाज के उद्धार के लिए आज ऐसे ही निःस्वार्थ सेवी गृहत्यागियों की आवश्यकता है। हमको आपसे जैन धर्म और जाति की प्रभावना के लिये बहुत सी आशायें हैं। विश्वास है कि हमारी इन आशाओं की पूर्ति शीघ्र होगी। और आप आत्मोन्नति से विशेष अग्रसर होंगे।

२ श्रीशास्त्रविशारद विजयधर्म सूरि जी—की मूर्ति से कौन नहीं परिचित है। आप श्वेताम्बर आम्नाय के साधुसंघ के आचार्य थे। देश-विदेश सर्वत्र आप सुविख्यात् हैं। आपके निःस्वार्थ पारमार्थिक कार्य अगण्य हैं। आपकी विद्वत्ता की धाक अजैन भारतीय विद्वानों पर ही नहीं किन्तु विदेशी विद्वानों तक पर पड़ी हुई थी। डा० सैलविन लेवी प्रभृति आपके दर्शनों को शिवपुरी पधारे थे। अजैन जनता में आपने जैनधर्म की विशेष प्रभावना की थी। समग्र भारत में पैदल घूमकर ग्राम २ आपने धर्म का उद्योत और अहिंसा का प्रचार किया था। आप श्वे० थे परन्तु दिगम्बर को भी सम्मान दृष्टि से देखते थे।

३ बाबू मुन्नालाल जी—लंबेचू मूल में इतिकांत ज़िला इटावा के रईस थे, जहां पर पहिले किसी २ काल में, कहते हैं कि एक साथ ५२ प्रतिष्ठायें हो चुकी हैं। व्यवसाय के कारण आप अपना पितृगृह त्याग कर कलकत्ते पधारे थे। और वहां पर उन्होंने जो उन्नति प्राप्त की थी वह उनके स्वावलम्बन की परिचायक है। आप विशेष धर्मरत विद्वान धनवान थे। नित्य प्रति अपना व्यवसाय करते, परन्तु साथ ही जो लोग आपके वैद्यक ज्ञान से लाभ उठाना चाहते उनके साथ वह फौरन चले जाते और स्वयं अपने पास से दवा देते। प्रति दिवस किसी शास्त्र की प्रतिलिपि में आप अवश्य संलग्न रहते थे। आपने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग भी विशेष धर्मरत करके किया है। इटावा में पक्की धर्मशाला और नवीन जैन मन्दिर आप की पवित्र स्मृति हमेशा दिलाते रहेंगे। परिषद् का अधिवेशन वहीं पर हुआ था।

घर बैठे बम्बई

का सभी माल बहुत ही किफ़ायत भाव से वी० पी० द्वारा भेजा जाता है जैसे सूती, ऊनी, कोशा, रेशमीकपड़े व सिले कपड़े सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें ग्लास व चीनी का सामान देशी व अंग्रेज़ी दवायें तेल अतर वार्निस व हर किस्म की घड़ियां। एक बार परीक्षा कर देखो।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाग़ के सब रोगों पर रामबाण

दिमाग़ की हर प्रकार की कमज़ोरी सिरदर्द चक्कर आना आंखों से धुंधलापन नज़र आना, बालों का बेसमय पकना आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है। बालों को लच्छेदार और मुलायम बनाता है। मूल्य १) रु० ३ शीशी का २॥) ६ शीशी ५।) रु० १२ शीशी १०) रु० व्यापारियों, एजेंटों को पत्र व्यवहार करना चाहिये। पता—मेसर्स शर्मा एण्ड कम्पनी कमीशन एजेंट बम्बई नं० १८

संसार दिग्दर्शन

समाज

—महासभा के अधिवेशन के लिये ता०२३, २४, २५ दिसम्बर निश्चित हो गई है। कांग्रेस के कारण इस समय अधिवेशन होने से किसी भाई को उपस्थित होने में बाधा नहीं होगी। अधिवेशन समाप्त होने पर आसानी से कांग्रेस में सम्मिलित हो सकेंगे।

—अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र रामनगर में सरस्वती भण्डार की आवश्यकता जानकर रतनपुर निवासी पं० बनारसीदास जी ने अनुमान ५००) के धर्मशास्त्र क्षेत्र सरस्वती भण्डार के लिये प्रदान किये हैं। अतः क्षेत्र कमेटी आपको धन्यवाद देती है।

—मन्त्री

—जैन महिलाश्रम की स्थायी प्रबन्ध कारिणी कमेटी की योजना होगई है। निम्न महानुभाव सदस्य स्वीकृत हुए हैं:—

ला०मीरीलाल जी	सभापति और कोषाध्यक्ष
डा० बख्तावरसिंह जी M. D.	मन्त्री
ब्र० शीतलप्रसाद जी	सदस्य
श्री० मुरारीलालजी जी अंबाला	,,
,, दीपचन्द जी मेरठ	,,
,, सोहनलाल जी	,,
,, मंगलसेन जी	,,
,, जैनेन्द्रकुमार जी	,,
संचालिका	

४ नवम्बर से उक्त कमेटी ने आश्रम का कार्य भार लिया है और इस प्रकार वह सामयिक समिति (Provisional Committee) समाप्त होती है जो पूर्व कमेटी के टूटने पर आरज़ी तौर पर बनाली गई थी। उक्त कमेटी को ५ और सदस्य बढ़ाने का अधिकार है।

निवेदक—मन्त्री

—उत्सव समाचार मिति अगहन बदी ५ रविवार ता० १६-११-२५ को श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नुनहाई आगरा में श्री १००८ श्री देवाधिदेव के कलशाभिषेक बड़े समारोह के साथ हुआ उसी अवसर पर श्री जैसवाल जैन सभा आगरा का जलसा भी हुआ। मन्दिर जी की छिजनि जो खराब है उस पर प्रस्ताव हुआ जिसका समर्थन कई भाइयों ने किया जिसके लिये चन्दा वगैरह उगाने को श्रीमान् पूज्यवर कन्हैयालाल ब्रह्मचारी जी नियत हुए उन्होंने यह कार्य २ साल तक करना सहर्ष स्वीकार किया वह धन्यवाद के पात्र हैं।

इस उत्सव पर जैसवाल सभा के स्वयं सेवकों का प्रबन्ध विशेष सराहनीय रहा। स्त्री पुरुषों की संख्या भी विशेष थी।

—आगरा जैन कुमार सभा के अंतर्गत वाचनालय में गत दो मास में १५०० व्यक्तियों ने लाभ लिया और पुस्तकालय से प्रायः १२५ पुस्तकें पढ़ने गई। सभा के सदस्यों ने रात्रि के समय

स्वाध्याय करना भी प्रारम्भ कर दिया है। प्रति दिन उपस्थिति बढ़ती जाती है। आशा है कि इस उपयोगी संस्था से यहाँ के बंधु विशेष लाभ उठाने की चेष्टा करेंगे पुस्तकालय में ग्रन्थों की कमी है पर आशा है कि धर्मात्मा सज्जन इस कमी को शीघ्र ही पूरी करने की कृपा करेंगे। वाचनालय और और पुस्तकालय में सब प्रकार की सुविधा है।

—हज़ारीलाल जैन बी० ए०
मन्त्री (शिक्षा विभाग)

स्वर्गवास श्रीमान् सज्जनोत्तम सेठ रिखबचन्द जी छावड़ा रेवासा निवासी (मालिक सुप्रसिद्ध फार्म सेठ रामलालजी स्वोलाल जी मु० कलकत्ता) का मिति कार्तिक बु० ८ मंगल बार को सिर्फ पाँच रोज़ ही बिमार रह कर स्वर्गवास हो गया आप बड़े ही शाँति स्वभावी और धैर्य्यवान पुरुष थे आपकी उम्र इस समय करीब ७७ ७८ वर्ष के लगभग थी। आपकी धर्म ध्यान से सर्वदा से ही अधिक रुचि थी अतएव श्री कृपालु परमात्मा से प्रार्थना है कि आप की आत्मा को शांति मिले तथा आप के कुटम्बियों से संवेदना प्रगट करते हैं कि वह धैर्य रक्खें।

—संवाद दाता

देश

—इन्दौर के 'नवीन भारत' पत्र का कहना है कि इन्दौर के महाराज होलकर के गद्दी छोड़ने की खबर ग़लत है।

—जावा में एक भयङ्कर भूकम्प आया। केदू ज़िले के कई गाँव नष्ट भ्रष्ट हो गये। एक गांव नदी में जा गिरा। कोई ३०० आदमियों की मृत्यु हो गई। बहुतों का अभी पता नहीं है।

—बम्बई में होने वाली नेताओं की कांफ्रेंस के सम्बन्ध में पं० मोतीलाल जी ने एक विज्ञप्ति निकाली है। इसमें उन्होंने लिखा है कि, कांफ्रेंस के पहिले जो लोग महात्मा जी से मिलना चाहते हों वे उनसे २० नवम्बर को ८ बजे से ११ बजे तक लबरनम रोड बम्बई में मिल सकेंगे। यदि आवश्यकता होगी तो व्यवस्थापक सभाओं के गैर सरकारी सदस्यों की एक अलग बैठक कान्फ्रेन्स के अन्दर ही हो जायगी। व्यक्तिशः निमन्त्रण देने में असमर्थ होने के कारण महात्मा जी ने मुझे समाचार पत्रों द्वारा सब को निमन्त्रित करने को कहा है।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दी कीजिये ! कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !! अन्यथा पछताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलन व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतकिया। कौन ग्रन्थ पुस्तकें उन्हों ने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे ग्रन्थों का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २=) सजिल्द २॥) डाकखर्च ॥)

पता—चौधरी शिखरचन्द जैन फ़र्रुख़नगर (गुड़गाँव)

विदेश

—मोरक्को स्पेन के स्वयंभू शासक जनरल प्राइमों दिरीवेरा एक बार, कुछ दिन हुए, मोरक्को वासियों के युद्ध में हार चुके थे। अब उन्होंने फिर से युद्ध ठाना है। वे मोरक्को वासी रिफ़ जाति को कुचल कर अपना शासन फिर से जमाना चाहते हैं। स्पेन संसार के साम्राज्य से तो हाथ धो बैठा, देखें उस के मोरक्को के साम्राज्य का क्या हाल होता है? स्पेन में जनरल रिवेरा के खिलाफ़ कुछ षड्यन्त्र भी रचे जारहे हैं।

मैक्सिको पार्लियामेण्ट में गोली अमेरिका के मैक्सिको नामक प्रान्त की जन सभा में वहस मुवाहसा होते हुए गोलियां चल गयीं। एक सदस्य ने दूसरे सदस्य को गोलियां दीं कि तीसरे सदस्य ने मंच पर खड़े होकर पहिले सदस्य से माफ़ी माँगने को कहा। इतने ही में इन सदस्यों के इतर मित्रों में लड़ाई होने लगी। खूब गोलियां चलीं दो सदस्य बहुत बुरी तरह से घायल हुए।

—अरबस्तान जरूसालेम की खबर है कि राजा अमीरअली मक्का पर चढ़े आ रहे हैं और वहाबी लोग अपनी रक्षा पर तुले हुए हैं। उन्होंने जद्दा और मक्का के बीच की भूमि को खाली कर दिया है।

—सन्धि दिवस गत सप्ताह ११ वीं नवम्बर को, सारी दुनियां के बड़े २ नगरों में सन्धि दिवस मनाया गया।

—मन्त्रि मण्डल इङ्गलैण्ड के मन्त्रि मण्डल का चुनाव होगया। मि० बाल्डविन प्रधान मन्त्रीत्व के पद को सुशोभित कर रहे हैं, मि० चैम्बरलेन वैदेशिक मन्त्री हैं, लार्ड बिरकेन हेड भारत सचिव और लार्ड विण्टरटन भारत के उपसचिव हैं।

—बेकारी इस समय विलायत में १२ लाख १३ हज़ार आदमी बेकारी के दफ़्तर में काम कर रहे हैं।

विषय--सूची

	पृष्ठ सं०
१ यशोध्वज (कविता)-"[illegible]"	३७
२ नैमित्तिक अधिवेश	३८
३ भाषण सभापति स्वागत समिति	३६
४ सभापति का चुनाव व भाषण	४०
५ रिपोर्ट भारत दिगम्बर जैन परिषद्	४३
६ हिसाब परिषद्	४५
७ स्वीकृत प्रस्ताव	४७
८ सम्पादकीय टिप्पणियां	५३
६ गताङ्क का चित्र परिचय	५६
१० संसार दिग्दर्शन	५८

भूल सुधार—गताङ्क के "जैन धर्म की अहिंसा जगत प्रिय क्यों नहीं होती?" शीर्षक लेख के लेखक बाबू ऋषभदास जी बी० ए० हैं। पृष्ठ ३ पर वीर सं० २४५८ के स्थान पर २४५० उपयुक्त है। पाठक संभाल कर पढ़ें।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त ने दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

हँसोड़

"हँसोड़" हँसाते हँसाते लोट पोट करदेने वाले चुटकुलों का संग्रह है मूल्य ॥) आठ आना

❀ भजन संग्रह ❀

भगवत् भक्ति के जिन भजनों को पढ़नेसे स्वर्गीय आनन्द प्राप्त होता है। [illegible] पूर्ण होजाते हैं। उन्हीं [illegible]जनों का बड़े परिश्रमसे संग्रह [illegible] है। मूल्य [illegible]

[illegible]ता-हिमालय डिपो मुरादाबाद.

विदूषक

विदूषक हँसाते हँसाते पेट में बलडाल देनेवाली कहानियों का संग्रह है मूल्य ॥)बारहआना

❀ ग़ज़ल संग्रह ❀

मशहूर [illegible] गवैयों की चोज़भरी हुई ग़ज़लें जिन को सुन कर हर समय उन्हीं का ख्याल रहता है गाना भी वही रहता है। उन्हीं सब छटी हुई ग़ज़लों का संग्रह है अद्वितीय है. मूल्य ॥)

पता-हिमालय डिपो. मुरादाबाद.

अन्तिम भारत सम्राट का इतिहास

पृथ्वीराज चौहान

[illegible] के [illegible] से [illegible], संयोगिता हरण, [illegible] की पराजय तथा भारत पर [illegible] के हमलों का [illegible], इसी ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक [illegible]। मूल्य सडाक केवल [illegible]

पता:-[illegible] [illegible]पो, मुरादाबाद यू० पी०

ऐतिहासिक-उपन्यास

अमरसिंह राठौर

[illegible] के [illegible] दरबार में जिसने [illegible] के बदले में [illegible] दरबारियों के सिर उतार लिये थे। उसीका चरित्र इसमें है। मूल्य डाकव्यय सह [illegible]॥)

महाराज यशवन्त सिंह

औरंगज़ेबसे हिन्दू धर्म की रक्षा करने वाले वीर का चरित्र है। मूल्य डाक व्यय सहित [illegible]॥) मात्र

पूरनमल भक्त

जिसके तमाशे को देखने के लिये बातकी बात में हजारों मनुष्योंकी भीड़ इकट्ठी हो जाती है उसी जितेन्द्रीय का [illegible] चरित्र पढ़ने योग्यहै। मू-सडाक [illegible]॥

[illegible]ता-हिमालय डिपो, मुरादाबाद.

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मेस्मेरिज़म--शिक्षक

इस के पाठकों द्वारा [illegible] सब [illegible] कामों को [illegible] मिन्टों में कर सकता है जैसे, चोरी गये द्रव्य का पता लगाना, पृथ्वीके गड़ेधन को जानजाना, मुकदमों के परिणाम को जानना, बिछोहसे दुःखित गृहसे पलायमान प्रिय प्यारे को विदित कर बुलाना, शेर बकरी को एक घाट पानी पिलाना, मैस्मेरिज़िम द्वारा प्राणी मात्र से इच्छानुसार कार्य्य कराना इसी से सिद्ध होता है। मूल्य डाक व्यय सहित [illegible]॥)

पता-हिमालय डिपो, मुरादाबाद,

श्री वर्द्धमानायनमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष २] 1 दिसम्बर, सन् १९२४ [संख्या ३

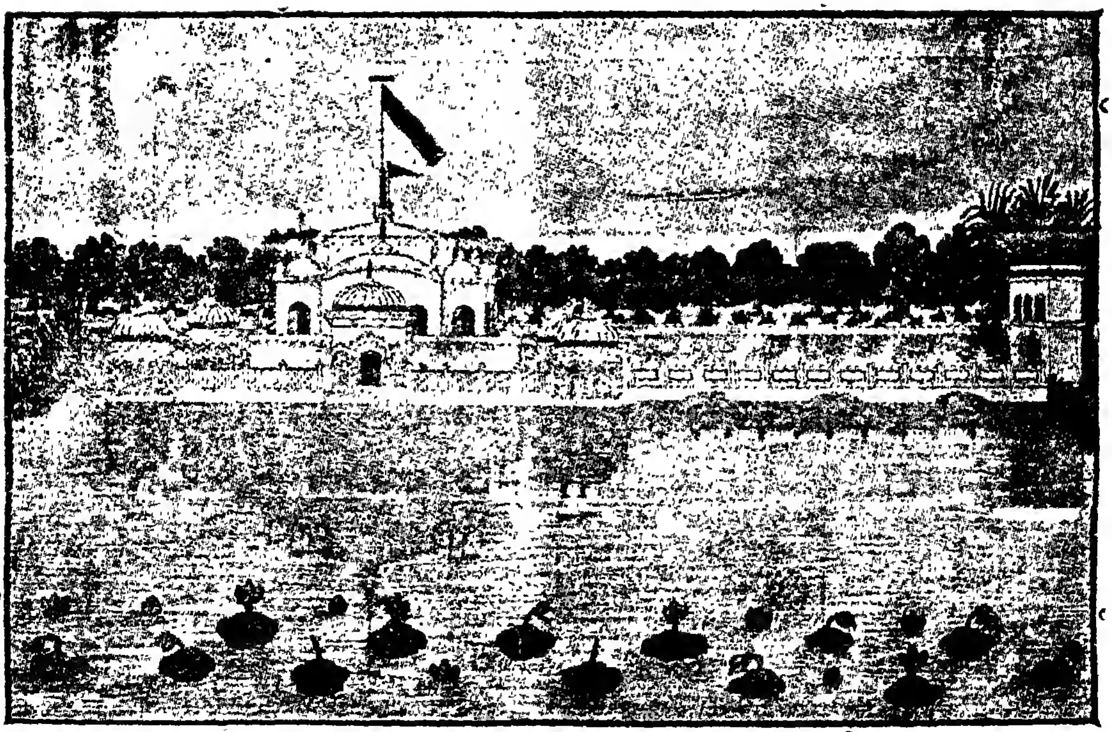

सम्पादकः—

जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादकः—

श्री कामताप्रसाद जी

प्रकाशक—

श्री० राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर।

वार्षिक मूल्य] [ढाई रुपये

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"तजल्ली हास्त हक़रा दर नक़ाबे ज़ाते इन्सानी।
शहूदे ग़ैब गर ख्वाही वजूब ईंआस्त इम्कानी॥"

अर्थात्—मनुष्य की सत्ता में समस्त पारमात्मिक गुण विद्यमान हैं। यदि तू उनका अनुभव करना चाहता है तो यहीं उनका अनुभव कर। काबे और बुतख़ाने क्यों जाता है?

—गाऊ वाणी

वर्ष २ | बिजनौर, मार्गशिर शुक्ला ५ वीर सम्वत् २४५० | १ दिसम्बर, सन् १९२४ | अङ्क ३

(द्वितीय वर्षाभिनन्दन)

स्वागत, आओ ? प्यारे वीर ?

कर्म क्षेत्र में बढ़ा अग्रसर, अड़ा रहा निश्चल निज प्रण पर।
शतशः आर्थिक संकट सहकर, बना रहा गंभीर॥ स्वागत०
शुभ स्वजाति संदेश सुनाकर, हृद तन्त्री के तार बजाकर।
नव उन्नति की ज्योति जगाकर, हुआ जयी रणधीर॥ स्वागत०
पुनः सत्य साहस रस भर कर, जात्योद्धारक जामा सजकर।
धर्म भावना संयुक्त प्रणकर, अचल मेरुवत धीर॥ स्वागत०
वीर-प्रभु उपदेश सुधाको, भारत अन्तर्गत वर्षा दो।
द्वेष दाह अघ अनल बुझादो, बनकर प्रिय प्रण वीर॥ स्वागत०

"वत्सल"

विनाश का प्रबल कारण और उपाय

(ले०—श्री० रामस्वरूप भारतीय सं० 'जैन मार्त्तण्ड')

हमारी जड़ में घुन लग चुका है। पत्तों और टहनियों की स्वच्छन्दता जातीय-जीवन के लिए यथेष्ट नहीं। मुख्यतः-'ज़र, जोरू, ज़मीन' विनाश के कारण गिने जाते हैं। ज़र और ज़मीन' हमारी समाज के अधः पतन के वर्त्तमान कारण नहीं हैं। परंच सारे संकट और झंझटों की जड़ हमारी बढ़ती हुई विलासिता और काम-लिप्सा है।

देवियाँ हमारे देश की मंगल स्वरूपा हैं। मातायें हमारी श्रद्धा-भाजन हैं। किन्तु पापियों की पाप-लिप्सा देवियों का देवित्व विनष्ट कर रही है। सभा सोसाइटियाँ, नित नवीन आन्दोलन, अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं किन्तु व्यभिचार की ज्वाला उत्तरोत्तर प्रबल वेग से प्रस्फुटित हो रही है। दुर्भाग्यवश हमारा, हमारे नेताओं का ध्यान भी उचितरूप में इस ओर नहीं जाता।

एक बच्चा, जो जैनकुल में उत्पन्न होता है, प्रारम्भ से ही जोखम के मार्ग में आता है। प्यारे माँ बाप उसे विविध वस्त्राभूषणों से अलंकृत करते रहते हैं। जन्म से ही बच्चे के स्वाभाविक और सजीव सौन्दर्य पर चटक मटकदार वस्त्रालंकारों को विशेषता दी जाती है। इस प्रकार उसके विकास-मार्ग में काँटे बखेरे जाते हैं। उसका शारीरिक और मुख्यतः नैतिक विकास सन्देहास्पद हो जाता है।

वह बड़ा हुआ और कुछ समझ बूझ होते ही चहुं ओर व्याप्त विषैले वातावरण में ग्रसित हो जाता है। भीरुता और डरपोकपन के प्रारम्भिक संस्कार इस अवस्था में दृढ़ बना दिए जाते हैं। गुरुकुलावस्था शानदार स्कूलों या महाविद्यालयों में व्यतीत होती है। और वहाँ—?

मस्तिष्क के विकास को स्वाभाविक उत्तेजना देने के स्थान पर उसे जीवित कोष ढालने का प्रयत्न होता है। गुरु-शिष्य कभी आडम्बर प्रियता के शिकार बनते हैं। जिह्वा आदि इन्द्रियों का संयम मात्र किसी २ पाठ में दृष्टिगत होजाता है। लज्जा के साथ यह भी कहना होगा कि दुर्भाग्यवश विद्यालयों और बोर्डिंगहाऊसों में भी व्यभिचार का प्राबल्य वृद्धि पर है। वहाँ वह पैशाचिक और पाशविक वासना अवस्थित है जो जाति के होनहार बालकों को-भावी जवाँमरदों को-ज़नाना बनाती है।

थोड़े से छात्र छात्रावस्था में ही विवाहित बन जाते हैं, वे विद्यालय से पृथक् होते ही भारतीय-शिक्षितों के एकमात्र आलम्बन भृत्यता की खोज में फिरते हैं। जो अविवाहित हैं वे पेट-पूजा की चिन्ता के साथ २ विवाह की चाह से भी दुखी रहते हैं।

विद्यालयों में जिन्हों ने अखण्ड ब्रह्मचर्य का चमत्कार नहीं देखा, जो बालों को सँभाल २ कर काढ़ने, तेल लगाने, फैशनेबुल रहने के आदी बन

चुके हैं, वे संसार में एकचित्त से स्थिर कैसे रहें ? मन दूषित और उपन्यास-साहित्य की ओर लपकता है। और उनका जीवन आडम्बर और व्यभिचार से कलंकित हो जाता है।

विवाह हो जाने पर, मोहांध होकर अपने आप को भूल जाते हैं। फिर अति से ऊब कर, शक्ति और उत्साह को खोकर कहते हैं:—

इश्क ने ग़ालिब निकम्मा कर दिया,
वरनै हम भी आदमी थे काम के।

फिर भी स्वभाव से विवश हैं। मूर्खता से, पुरुषों की अन्धता और गार्हास्थिकअत्याचार की चक्की से स्त्रियाँ अकाल-कवलित हो जाती हैं। स्वार्थी, नराधम मनुष्य दाहक्रिया से पूर्व ही नव-विवाह के विचारों में लग जाता है। बात यहाँ तक बढ़ती है कि जिसे जहाँ तक अवसर मिलता है। कन्याओं के स्वत्वों का अपहरण करता है। यहाँ तक कि साठ साठ वर्ष के बूढ़े कसाई, पागधारियों का मुँह मीठा कर, धन के मद से अबोध कन्यागायों को अपने खूँटे बाँध लेते हैं। मौन-भाषा में कन्या का डकराना, न तो निर्जीव पंचायतियों के ही कठोर कानों तक पहुंच पाता है, न इस घर अन्याय के प्रतीकार के लिए नवयुवा कहलाने वालों की भुजाएँ ही उठती हैं।

कन्या पर इससे अधिक निन्द्य अत्याचार और क्या होसकता है कि वह उसकी अबूझावस्था में एक ऐसे अनमेल वर के साथ बाँध दी जाय कि जिस विश्वासघाती के मस्तिष्क पर एक भोली अबला के आशा-दलन का टीका लगा हुआ है। स्पष्टशब्दों में, कन्या का विवाह योग्य कुँवारे वर के साथ ही होना अनिवार्य न करके समाज के पाशविक शक्तिधारी व्यभिचार का द्वार खोले हुए हैं। स्वार्थी और स्वार्थवश उनकी पीठ ठोकनेवाले धर्म की आड़ लेकर येन केन प्रकारेण इस अत्याचार का समर्थन करते हुए भी नहीं लजाते!

जब व्यभिचार की ज्वाला (इतनी आद्योपान्त संगठित) धधक रही हो तो सादगी और शुचिता का पता कैसे चले? विलासता और आडम्बर वृद्धि पर हैं।

पुरुषों की इस पौरुष-घातक प्रवृत्ति ने, स्त्रियों को कामसेवन और सन्तानोत्पत्ति की मशीन बना डाला है। वे अपनी भ्रष्ट रुचि के अनुसार, प्रदर्शनी में संग्रहित वस्तुओं की भाँति उन्हें सजा कर अपना मनोरंजन करते हैं और इसके लिए उनके देवोपम स्वाभाविक सौंदर्य को सदैव के लिए विलुप्त कर देते हैं! इस प्रतिकूल अवस्था में स्वास लेने का प्रभाव, मेले तमाशों में देखा जाता है-जिसके स्मरण से ही लज्जा से हमारा सिर झुक जाता है।

बात तो यह है, जो इस पाप का पलायन चाहते हैं, हृदय से बुरा समझ कर इसकी बुराई करते हैं, प्रस्ताव करते हैं, नेतृत्व निभाते हैं, निरंकुश मदन उन्हें भी पथ-भ्रष्ट कर देता है। इस प्रकार एक ओर तो समाज में सदाचार प्रचार का आन्दोलन उठता है, दूसरी ओर अनङ्गदेव अपने माया-बाणों से अभीष्ट मन्तव्य से हमें विलग रखने की चेष्टा करते हैं। यही संघर्ष हमारी उन्नति में अवरोधक है।

रोग गहरा है और गहराई तक बिना पहुंचे इस से छुटकारा न होगा। यदि नेताओं ने इस ओर ध्यान न दिया तो समाज की रक्षा के सब प्रयत्न निष्फल होंगे। सोच समझ कर हमें इस नाशक शत्रु के मर्मस्थल पर सीधा प्रहार करना होगा जिस

से सुधुल समाज बेदार होजाय। सोचिये, समझिये और 'वीर' द्वारा अपने विचार समाज के समक्ष रखिए।

इसके प्रतीकार के अनेक उपाय हो सकते हैं। उनमें से आवश्यक दो मैं प्रस्तुत करता हूं। समाज में क्रान्तिकारी, उत्तेजक और व्यापक आन्दोलन की आवश्यकता है। "मन्दिर और विवाह" के सुधारों पर समाजशक्ति केन्द्रीभूत हो सकती है। और इसका संगठन सुगम और व्यवहारिक प्रतिभासित होता है। इन विषयों पर बहुत कुछ लिखना है। समय मिला तो विस्तृत विवेचन किसी स्वतंत्र लेख द्वारा किया जायगा। यहाँ पर इतना ही कि-मन्दिरों में स्वदेशी-वस्तु प्रयोग अनिवार्य बनाने के लिए संगठन किये जायँ। वे संगठन स्थानीय कोषाध्यक्षों को हिसाब और मन्दिर के धन की सुव्यवस्था के लिए बाध्य करें। इस आन्दोलन से एक प्रभाव यह भी पड़ेगा कि साधारण जन शक्तिधारियों के सामने दृढ़ता से खड़ा होना सीख जायँगे जिससे पँचायतियों के संगठन और बल में आशातीत सुधार होगा।

विवाहों के सम्बन्ध में जो कुरीतियाँ हैं—उन के प्रतीकार का भी संगठित प्रयत्न वांछनीय है। वृद्धविवाह और कन्याविक्रय को बहिष्कार आन्दोलन और सत्याग्रह तक से रोकना होगा। जहाँ ४-६ सत्याग्रह सफलता से हुए कि इन कुरीतियों का काला मुँह ही समझिए। एक बात और—जो पुरुष अपना पुनर्विवाह करना चाहें कम से कम उन विवाहों में पंचान अमुक कन्या की अनुमति अवश्य ले लिया करें। उनकी सरल लज्जाशीलता के कारण उनकी गरदन पर छुरी चलाना अहिंसा-प्रेमियों के लिए लज्जास्पद है।

अन्त में, परिषद् के संचालकों का ध्यान हम इधर आकर्षित करते हैं। हमें विश्वास है कि परिषद् प्रस्ताव की प्रसविनी नहीं बन सकती-उसे काम करने की लगन है। क्या वह श्री मन्दिर सुधारकसमिति और सत्याग्रहसमिति की आयोजना करेगी?

कलिङ्ग में जैनधर्म

उत्तराय भारत से आए हुए इन साधु और वीर जातियों से चालित और प्रभावित आन्ध्र-कर्णाटक के इतिहास और सभ्यता का जैनकाल बौद्धकाल के अन्तर्गत वा बहुधाकर उससे पहिले ही प्रारम्भ होता है, जैसे कि इन शिलालेखों से प्रकट है। ऐसे ज्ञात जैन शिलालेखों में कलिङ्ग का खारवेल शिलालेख सब से प्राचीन है। इस शिलालेख की तिथि अवभी निश्चित नहीं है किन्तु उसका जैन रूप और उसमें के आन्ध्रप्रान्तीय जैनधर्म सम्बन्धी उल्लेखों की प्राचीनता सर्व संशय रहित है। खारवेल शिलालेख के भाव से कलिङ्गदेश में जैनधर्म की प्राचीनता बहुत ही पुरानी प्रमाणित होती है। कलिङ्ग

देश बहुधाकर आन्ध्रमण्डल इतना ही था। इस प्रकार जो कि आन्ध्र इतिहास और सभ्यता का "जैनकाल" कहलाना चाहिए वह इतिहास में बहुत ही प्राचीनकाल से प्रारम्भ होजाता है अर्थात् "बौद्धकाल" (सतवाहन) के अन्तर्गत बल्कि पहिले से रीतिरिवाजों की अपेक्षा जैन धार्मिक जीवन और विचारविकास अपेक्षा जैनपुराणविवरण (Mythology) इतना पौराणिक ब्राह्मणधर्म सदृश हैं कि जो जैनप्रभाव बौद्धकाल में चालित रहा वह कम से कम आन्ध्रदेश में ब्राह्मणधर्म में परिवर्तित होगया। सतवाहन काल के Amravati Martles जो गत शताब्दि में जांचे गए, उनमें यह भी अर्पित है, जैसे डा० बर्जेस सन् १८८८ई० में प्रकट करते हैं, (अ) "एक गोल किपराय पाषाण का ऊपरीभाग, जिसमें एक मूर्त्ति का सिर और आकार है। इसके घुँघरीले बाल हैं और सम्भवतः बौद्ध है।……… परन्तु बहुधाकर यह एक जैनमूर्त्ति का सिर है" और (ब) "एक पाषाण का बामभाग शायद जैन का है।" सन् १८६२ में मद्रास आर्केलाजिकल सर्वे विभाग के सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० री ने कृष्णा जिले में गुदीवाड़ा में एक सुन्दर जैनमूर्त्ति पाई थी और बेजवाड़ा में एक अति अद्भुत जैनस्तम्भ पाया था जिनमें चार मूर्त्तियाँ अङ्कित थीं। यह दोनों ही स्थान तेलुगू देश में उनके "बौद्धकाल" के प्रभाव कारण विशेष विख्यात हैं।

तेलुगू भाषाभाषी अपनी वर्णमाला प्रारम्भ करते समय यह मंत्र उच्चारण करते हैं "ॐ नमः सिद्धाय सिद्धम् नमः।" इस मन्त्र का अन्तिम भाग प्रत्यक्षतः बौद्धों का है। उनही के निकटवर्त्ती कलिङ्ग के उड़िया लोग, जहाँ तक ज्ञात है, "सिद्धिः अस्तु" का मन्त्र व्यवहृत करते हैं। यह मन्त्र एक जैनदानपत्र के अन्त में है।

तेलुगू देश के कलिङ्ग प्रदेशों का इतिहास (जिसकी अभी समुचित खोज नहीं हुई है) चेतीय-राजा खारवेल के समय से वहाँ जैनधर्म का राजकीय प्रभाव प्रकट करता है। "कलिङ्ग के कोल और खोण्ड लोगों को यह पुश्तैनी ख्याल है कि—उन्होंने वहाँ के पहिले के निवासियों को परास्त किया था, जो जैन और भूया कहलाते थे।" कलिङ्ग मालिया में भूज और जैन ग्रामों के विशेष उल्लेख हैं जो नाम से प्रकट हैं। यह "जैन" संभवतः "कदंब" हैं जिनका उन प्रदेश पर काफी राजकीय प्रभाव था जहां आज कोल और खोण्ड रहते हैं। साथ ही उन प्रान्तों में भी जहाँ से वह ऐतिहासिक कालों में पृथक् किए गए थे। (कलिङ्ग शिलालेखों में यह 'रुद्रपुत्र' कहलाए हैं) गंजम ज़िले के कुछ स्थानों के नाम कदंबों की सत्ता को प्रकट करते हैं। बम्बई प्रान्त के एक प्राचीन-कदम्ब दानपत्र में एक कदम्ब ग्राम का नाम "बृहत् परलूर" है। तेलगू में यह "पेड्ड परल पुरम्" होसकता है, जो गंजम ज़िले की एक ज़िमीन्दारी की गद्दी के उड़िया नाम "बोडो (परल)-किमेडी" के सदृश है।

—क्रमशः।

———o———

जैनियों में शिक्षा प्रचार

निम्न के कोष्टक से यह पता पाठकों को चल जायगा कि शिक्षागणना के अङ्क जैनियोंको केवल २६ प्रतिशत प्रगट करते हैं, अर्थात् जो केवल लिख और पढ़ सके हैं वह जैनियों में केवल १०० में २६ हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि समग्र जैनियों में ७५ प्रतिशत "अक्षरज्ञान" से भी शून्य रहें, जब कि उन्हें इस बात में गर्व है कि वे व्यापारिक दृष्टि से भारतीय जातियों में प्रमुख हैं! और भी दुखद कहानी यह है कि प्रारंभिक शिक्षा पाते हुए जैनियों में से केवल १२ प्रतिशत द्वितीयश्रेणी (Secandary education) का शिक्षा अर्थात् हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त करते जाते,हैं और इनमें से मुश्किल से दो प्रतिशत उच्चशिक्षा प्राप्त करने कालिजों में जाते हैं। यदि स्त्रीशिक्षा की ओर दृष्टिपात करें तो मालूम होता है कि सारी जैन स्त्री समाज में सिर्फ ४ प्रतिशत स्त्रियां शिक्षित हैं। दूसरे शब्दों में हमारी बहिनों में १०० पीछे ९६ अशिक्षित हैं। यह भी अति आश्चर्यजनक है कि गत वीस वर्ष में जैन छात्रों की संख्या करीब ५००० के घट गई है। ऐसी दशा में यदि कोई अमली काररवाई नहीं की जावेगी जिससे शिक्षा की वृद्धि हो तो वह समय भी दूर नहीं है जब जैनियों की भी गणना पिछड़ी हुई (Backward) जातियों में की जावे क्योंकि उनमें समुचित शिक्षा का अभाव होगा और उन की राजनैतिक क्षेत्र में भी कुछ पूछ नहीं होगी। मि० सर्वे ने यह बात अभी हाल ही में रिफार्म कमेटी के समक्ष गवाही देते हुए कही ही है। इस हेतु जैनियों के लिए यह एक जटिल विचारणीय प्रश्न है। अब जैनी रथयात्राओं और वेदी प्रतिष्ठाओं एवं जीवनवारों में हजारों रुपए प्रतिवर्ष खर्च करदेते हैं तब क्या शिक्षा प्रचार के कार्य में उन्हें उदासीन रहना चाहिए। समझ में नहीं आता कि जो जैनी एक इन्द्रिय जीव की रक्षा करने में कुछ बाकी उठा नहीं रखते हैं वे इस अज्ञान अन्धकार में पड़े हुए पंचेन्द्री सैनी जीवों की रक्षा करने से कैसे आँखें मींचें हुए हैं आगामी सन्तति की भलाई शिक्षाप्रचार ही पर अवलम्बित है।

प्रान्त	कुल जैन जनता	शिक्षित पुरुष	शिक्षित स्त्री	अंग्रेजी पढ़े जैनी
अजमेर-मारवाड़	१८४२२	७०७१	४६०	३१३
आसाम	३५०३	१७२४	७४	९१
बिलोचिस्तान	१७	६	१	१
बङ्गाल	१३३७६	७३१४	६६२	९३२
बिहार और उड़ीसा	४६१०	१५४८	२११	१३४
बम्बई	४८१६५०	१२९६७३	२५९२४	१२९२६

प्रान्त	कुल जैन जनता	शिक्षित पुरुष	शिक्षित स्त्री	अंग्रेज़ी पढ़े जैनी
बर्मा	११३५	४३६	७४	१११
मध्यप्रान्त और बरार	६६७६४	१६६५३	२२८६	१२८६
कुर्ग	२०२	११	२	
दिल्ली	४९६४८	१६४१	२६३	३२५
मद्रास	२५४६३	६६६७	८७७	३५६
उत्तरपश्चिमीय प्रान्त	३	३		३
पञ्जाब	४१३२१	७८६३	७६६	१०९३
संयुक्त प्रान्त	६८१११	१८६६३	२१०३	१४१७
बड़ौदा स्टेट	४३२२३	१६०३२	३६०७	६७६
मध्यभारत	४४४३१	११४५७	१२३२	५३६
कोचीन स्टेट	१०१	३३	३	३
ग्वालिर स्टेट	३८६०६	८२६३	८००	२०८
हैदराबाद स्टेट	१८५८४	३५४६	२६६	२३२
काश्मीर	५२६	१६१	२४	२७
राजपूताना एजेन्सी	२७६७२२	६७०५०	२६३७	१३१०
ट्रावनकोर स्टेट	३३	३	३	
मैसोर	२०७३२	४६०१	५४६	३०१
कुल बृटिश इन्डिया में	११७८५९६	३१२३१६	४३४६३	२२५५५७

—अंग्रेज़ी जैनगज़ट से।

महिला-महिमा

परदे की दशा

आज कल भारत की प्राचीन हिन्दू और जैन जातियों की स्त्रियों में परदे का रिवाज़ पाया जाता है। परन्तु यह रिवाज़ सिर्फ़ उत्तरीय भारत में ही है। पश्चिम और दक्षिण भारत में इस के दर्शन नहीं होते। इस का भाव यह नहीं है कि वहां की महिलाएं निर्लज्ज हैं और शीलवान नहीं हैं। प्रत्युत देखने में यह आया है कि जितनी मान-मर्यादा और शीलधर्म में पहुंच उन महिलाओं की

है उनमी इस ओर की परदा करनेवाली स्त्रियों की नहीं है। कारण यही है कि वहां परदा अवश्य नहीं है, परन्तु नेत्रों में लज्जा है—हृदयों में पवित्रता और शुभकामना है यही दशा भारत की प्राचीन नारियों की थी। हमारे शास्त्रों में कहीं भी परदे का नामभी सुनाई नहीं देता। उल्टे महिलाओं का धर्मसम्मेलनों आदि में प्रगट रूप में भाग लेने का ही ज़िकर मिलता है। इस लिये कहना होगा कि यह परदेकी रिवाज़ हमारे प्राचीन पुरुषों की नहीं है। वास्तव में यह रिवाज़ मुसलमानी बादशाहत के ज़माने में व्यभिचार की मात्रा के बढ़ने एवं अन्य अत्याचारों के होने के कारण प्रचलित हो गया था। अपने पड़ोसी का प्रभाव हमारे दैनिक जीवन पर पड़ता ही है। आज भी अंग्रेज़ों की सभ्यता का प्रभाव बहुत कुछहमारे दैनिक जीवन पर दिखाई देरहा है। इस हेतु कहना होगा कि समय की मांग सब कुछ करा लेती है। आज कल परदे के रिवाज़ में क्या सुधार होना चहिये यह विचारना आवश्यक है। उसका अन्त तो सहसा किया नहीं जासका। वह लुप्त तो तब ही होगा जब हमारी माताएं और बहिनें पूर्ण शिक्षिता हो जायँगी। अपने चहुं ओर एक तेजोमय प्रभा को फैलालेंगी तब ही वे अपनी दक्षिणी बहिनों की भांति संसार को मुख दिखला सकेंगी! परन्तु क्या परदे के होते हुए भी उसका पालन समुचित रीति से होता है? इस के उत्तर में कहना होगा कि देखा तो यह गया है कि हमारी माताएं और बहिनें अपने घर में तो घर के लोगों के सामने एक हाथ लम्बा घूंघट निकाले रहती हैं, परन्तु अन्य लोगों और नौकरों वगैरह के सामने निर्लज्जता पूर्वक निकलती बैठती हैं। मेले ठेलों में वह जिस प्रकार बाज़ार में मोल भाव करती हैं और सरे बाज़ार मुंह उघाड़े घूमती फिरती हैं उस समय वास्तव में वह परदा उनके मुख से हट कर हम पुरुषों की बुद्धि पर आकर पड़ जाता है। भला जो सगे सम्बन्धी आंख उठाकर भी अपनी बहू-बेटियों की ओर नहीं देख सकते उनका तो परदा किया जाता है। और बाज़ारू दूकानदारों (जिस में नीच प्रकृति के मनुष्य ही अधिक होते हैं)-के सामने वह परदा रफू होजाता है। अधिकांश में हमारी महिलाओं की यही शोचनीय दशा है। इस प्रकार कहना होगा कि परदे से वह वास्तविक लाभ नहीं होता जो होना चाहिये। अतएव परदे का वास्तविक उपयोग होने के लिए घर में से परदे की रिवाज को दूर कर देने का प्रस्ताव उत्तम है। यथार्थ में हमारी बहिनों को अपने हितू घरवालों से किसी प्रकार की बुराईका भय हो नहीं सक्ता है। परन्तु जिन का वे आज परदा नहीं करती हैं उन का उन गैर मनुष्यों का परदा उन को कम से कम उस समय तक अवश्य करना चाहिए जब तक वे अधिकांश में पूर्ण शिक्षिता न हो जावें। हाँ, बाज़ार से किसी वस्तु को खरीदने की उन्हें विशेष आवश्यक्ता ही हो तो अपने पति अथवा भाई के साथ जाकर खरीद लेवें। परन्तु स्वच्छन्दतापूर्वक अन्य पुरुषोंके मध्य निर्लज्ज हो घूमना उनके लिये शोभनीय नहीं है। बहिनों को विचारना चाहियेः—

इ० सं०

दौर-ए-आसमां

(गज़ल)

क़िससे वफ़ा करेगा क़िससे जफ़ा करेगा;
ये दौर-ए-आसमाँ है दम दे दग़ा करेगा ।
जो ख़ून-ए-ग़रीबों पर बैठे हैं बने शाह;
झटके में एक उनको दीनो गदा करेगा ॥
आहों में जिनकी कटती हैं आज रात दिन;
क़दमों में उनके हाज़िर सारे मज़ा करेगा ।
दो दिन की है यह हस्ती मग़रूर न होना;
वैसी जज़ा भरेगा जो जैसी सज़ा करेगा ॥
खुदी को मिटा खुद में जो महव बनेंगे;
भगवान आवा जाई से उनकी रज़ा करेगा ॥

—भारतीय

जाति पर वैज्ञानिक प्रकाश

(ले०-श्रीयुत रूपमदास जी बी० ए०)

हिन्दी जैनगजट के खास अङ्क में उपरोक्त शीर्षक का लेख श्रीयुत प० गौरीलाल जी शास्त्री का अति विद्वत्तापूर्ण प्रगट हुआ है । मुझ को उसके पढ़ने से बहुत लाभ हुआ । परन्तु उस को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्न मेरे हृदय में उपस्थित हुए हैं । कृपा करके पंडित जी अथवा अन्य विद्वान् इन मेरे प्रश्नों का समाधान करें—

(१) प० जी ने भोगभूमियों की बावत लिखा है कि "उस समय जाति व कुलरूप धर्म उनमें सत्ता-स्वरूप रहता है ।" सो क्या यह उस तरह सत्तास्वरूप रहता है जिस तरह सिद्धस्वधर्म संसारी आत्मा में सत्तास्वरूप रहता है ? या इसमें कुछ और विशेष है ? यदि विशेष है तो क्या विशेष है? और यदि कुछ विशेष नहीं है तो इसका तो यही अर्थ है कि कुल

जाति उन में नहीं होती। उदाहरण जो प० जी ने दिए हैं उनसे कुछ समझ में नहीं आता। आंख और अन्धेरे के उदाहरण में आँख बराबर काम करती है; अन्धेरे को देखती है। यद्यपि प्रकाश न होने के कारण और पदार्थ उसको नजर नहीं आते परन्तु आँख का काम बन्द नहीं होता। आंख काम बराबर करती रहती है। परन्तु भोगभूमि में जाति व कुलत्व धर्म कुछ भी काम नहीं करते। इसलिए यह उदाहरण ठीक नहीं बैठता। दूसरा सम्पतिकाल में सैनिकदल का उदाहरण दिया है वह ठीक नहीं बैठता। क्योंकि सम्पतिकाल में सेना भी बराबर काम करती है। यद्यपि शत्रु से नहीं लड़ती परन्तु शस्त्रविद्या का अभ्यास व अन्य व्यायाम बराबर करती रहती है। देश व नगर आदि का प्रबन्ध व रक्षा करती रहती है। परन्तु जाति और कुल का तो कोई काम भोगभूमि में नज़र नहीं आता! तीसरा उदाहरण दलाली करते हुए बैरिस्ट्री डिप्लोमा का दिया है। इसके कुछ अर्थ ही समझ में नहीं आते। दलाली से क्या मतलब है? वैसे बैरिष्ट्री डिप्लोमा हरवक्त काम देता रहता है।

(२) यदि भोगभूमि में जाति व कुलत्व धर्म सत्तारूप विद्यमान रहते हैं तो वर्णधर्म भी तो उन में सत्तारूप से विद्यमान रहता होगा? परन्तु कर्मभूमि में वर्ण तो श्री आदिनाथ भगवान् व उनके पुत्र भरत जी ने स्थापित किए हैं। जाति व कुल किसने स्थापित किए? यदि किसी कुलकरने स्थापित किए तो किस कुलकर ने और कौन कौन जाति व कुल स्थापित किए? कम से कम दश पांच के नामों का तो उल्लेख होना चाहिए।

(३) भोगभूमि में सत्तारूप से हरएक युगल की पृथक् २ कुल व जाति होती है या बहुत से युगलोंके समूह की एक कुल व जाति होती है। यदि प्रत्येक युगल की पृथक् २ कुल व जाति होती हैं तो कुल व जाति में भेद क्या रहा? और भोगभूमि में कितने कुल व जाति होती हैं? और यदि बहुत से युगलों के समूह की एक कुल व जाति होती है तो किस सदृशता से वह एक कुल व जाति होती है?

(४) प० जी ने लिखा है कि "जाति नामकर्म के पांच भेद-एकेन्द्री आदि जाति हैं और उनके ही भेद प्रभेद चौरासी लाख जाति हैं।" सो मूल पांच भेद एकेन्द्री आदि तो इन्द्रियों की अपेक्षा हैं। इस लिए उनके और भेद प्रभेद भी इन्द्रियों के काम ज्यादह ज्ञान की ही अपेक्षा से होने चाहियें। क्योंकि सामान्य के विशेषत्व में उस सामान्य की अपेक्षा बराबर क़ायम रहती है अर्थात् उस सामान्य में ही कुछ विशेषता हो जाने से विशेषों की उत्पत्ति होती है। जैसे पंचेन्द्री जाति के जो भेद प्रभेद होंगे वे पांचों इन्द्रियों के ज्ञान की कमीवेशी के लिहाज़ से ही होंगे न कि किसी और विशेषता से। इस लिए प्रश्न यह है कि मनुष्य की जो चौदह लाख जाति हैं अथवा वे जाति पांच इन्द्री व मन के ज्ञान की कमीवेशी की अपेक्षा से हैं या अग्रवाल-खंडेलवाल-चौहान-गौड़ आदि जाति जो लोक में प्रसिद्ध हैं यह ही वे चौदह लाख जाति हैं? क्योंकि यह जाति तो प्रत्यक्ष में और और ही कारणों से उत्पन्न हुई हैं जैसे कि अग्रवाल राजा उग्रसेन से उत्पन्न हुए, और आपने जो लिखा है कि "यह अग्रवाल, पद्मावती पुरवाल आदि जाति हैं यह अनादि काल से हैं।"

यह आपका लिखना कुछ समझ में नहीं आता।

क्योंकि इतिहास से यह प्रमाणित है कि अग्रवाल जाति एक व्यक्ति उग्रसेन से उत्पन्न हुई है, यह अनादि काल से किस तरह हो सकती है? हां, उग्रसेन भी किसी जाति के ज़रूर होंगे और जिस जाति के वे होंगे वह ज़रूर अग्रवाल जाति नहीं थी वरन् उग्रसेन की सन्तति का ही अग्रवाल नाम होने का कोई प्रयोजन न था! और जिस जाति के उग्रसेन थे उस जाति के भी बहुत से मनुष्य होंगे और यह तो प्रगट ही है कि उन बहुत से मनुष्यों की जाति और उग्रसेन से उत्पन्न हुई अग्रवाल जाति अब एक जाति नहीं है। अतएव इस तरह अग्रवाल जाति को अनादि किस तरह कहा जा सकता है? हां धारा प्रवाह की अपेक्षा यह तो कहा जा सकता है कि हर कर्म भूमि में कोई न कोई जाति होती है। परन्तु यह नहीं कह सकते कि वर्तमान में जो अग्रवाल आदि जातियां हैं यह ही अनादि से हैं। यह जाति तो हमेशा बदलती रहती हैं। कभी कोई जाति किसी बुजुर्ग के नाम से उत्पन्न हो जाती है। कोई किसी देश, ग्राम अथवा किसी अन्य कारण से क़ायम हो जाती हैं। इन अग्रवाल आदि जाति को अनादि मानना तो प्रत्यक्ष इतिहास के विरुद्ध पड़ता है। इसके अतिरिक्त प० जी स्वयं लिखते हैं कि "जाति भिन्न पदार्थ नहीं है-द्रव्यों की पर्याय ही हैं।" सो जैन सिद्धान्त के अनुसार पर्याय तो सदैव बदलती रहती है। इसलिए जाति भी हमेशा बदलती रहना चाहिए। और यदि किसी जैनशास्त्र में अग्रवाल, खंडेलवाल आदि जातियों को अनादि लिखा है तो कृपा करके पं० जी उसका हवाला लिखें।

(५) म्लेच्छ खण्डों में जाति होती है या नहीं? यदि होती हैं तो आर्य खंड की जाति और वहां की जाति एक हैं या भिन्न २ हैं? शास्त्रों में वहां की जातियों के कुछ नाम दिए हैं या नहीं?

(६) आपने लिखा है कि "जब चौथे काल का क़रीब एक लाख वर्ष रहा था तब कुलकलङ्क उत्पन्न हुए और पार्श्वनाथ स्वामी के बाद बुद्ध हुआ है।" सो पार्श्वनाथ स्वामी से पहिले कुछ कम एक लाख वर्ष के अन्तराल में कौन २ कुल कलंक उत्पन्न हुए?" किस शास्त्र में उनका हाल दिया हुआ है?

(७) क्या छठे काल में अग्रवाल, खंडेलवाल आदि जातियां कायम रहेंगी और लोग अपनी २ जाति में विवाह-सम्बन्ध करके जाति धर्म व कुलाचार कायम रक्खेंगे?

(८) क्या गोत्र कर्म के उदय से भी चरित्र होता है? यदि किसी ग्रन्थ में यह दिया हुआ है तो कृपा करके उस ग्रन्थ का नाम गाथा या श्लोक का पता लिखें।

(९) यदि कोई नीच गोत्र का मनुष्य अच्छा आचरण करने लगे तो क्या यह कहना ठीक होगा कि इसके अब नीच गोत्र कर्म का उदय नहीं रहा? उच्च गोत्र कर्म का उदय होगया? इसलिए उसको उच्च गोत्र का समझना चाहिए।

(१०) वर्ण व्यवस्था का रज वीर्य का सम्बन्ध है या नहीं? श्रीयुत् पं० नन्दनलालजी ने तो अपने एक लेख में क्षत्री, ब्राह्मण, वैश्य वर्ण के वीर्य के पृथक् २ गुण लिखकर वर्ण व्यवस्था का वीर्य से ही सम्बन्ध बतलाया था। क्या आप पं० जी की राय से सहमत हैं? जो आप वर्णव्यवस्था को मोक्षप्राप्ति के साधन स्वरूप बतलाते हैं।

(११) आपने लिखा है कि जाति वर्ण के भेद प्रभेद नहीं है। तो क्या एक जाति के कई वर्ण हो सकते हैं? और क्या यह जाति कई वर्णों में पाई जाती हैं? यदि कोई जाति ऐसी हो जो कई वर्णों में पाई जाती हो तो कृपा करके उन जातियों के नाम लिखिए।

(१२) क्या जैन धर्म में कोई लौकिक व्यवहार भी कहे गये हैं? यदि कहे गये हैं तो वे कौन २ से हैं! और उनमें क्या होता है?

(१३) आपने लिखा है कि "यह अन्य खंडेलवाल, अग्रवाल आदि जाति कुलकरों के समय से या अनादि से हैं।" यह किस ग्रन्थ में लिखा हुआ है कृपा करके श्लोक समेत लिखिए।

(१४) गुजरात प्रान्त में हुमड़ और मेवाड़ प्रान्त में नरसिंह पुरादस्से क्यों कहलाते हैं?

सब प्रश्नों का उत्तर यथार्थ शीघ्र देना चाहिए।

इतिशम्।

सम्पादकीय-टिप्पणियां

हिन्दी साहित्य और जैनी

अगाध जैन साहित्य पर एक साधारण दृष्टि डालने से यह सहज ही अनुमान में आ जाता है कि हिन्दी साहित्य में उसका भाग विशेष है और वह मूल्यमय है। हिन्दी के प्राचीन इतिहासका पता जैन साहित्य के अध्ययन से ही प्रकट हो सका है, क्यों कि हिन्दी की जन्मदात्री प्राकृत भाषा मानी गई है। और प्राकृत में जैनियों का साहित्य अपार है। इस के अतिरिक्त समय २ पर जैन कवियों ने जो अपनी नैसर्गिक प्रतिभाशाली कविता से हिन्दी साहित्य को समलंकृत किया है, वह भी किसी से छिपा नहीं है। कविवर बनारसीदास जी, भैया भगवतीदासजी, बाबू वृन्दावनदासजी प्रभृति कवि कुलरत्नों की अमूल्य रचनाऐं शान्ति और भक्ति रस की अपूर्व सामिग्री है। उनसे हिन्दीसाहित्यका महत्व बहुत कुछ बढ़ गया है। परन्तु हिन्दीसाहित्य के प्रारंभिक काल में इस तरह जैनियों के तत्सम्बन्धी उत्साह को देखते हुए आज उन का उस तरफ से उदासीनता को देखते असीम दुःख का सामना करना पड़ता है। इस विषय में यद्यपि हम जानते और मानते हैं कि हिन्दीग्रन्थ-प्रकाशन रूपमें उनका साहाय्य बहुत बढ़ा चढ़ा है। किन्तु यह उक्त त्रुटि की पूर्ति नहीं करता! आज कोई भी टोडरमल, कोई भी बनारसीदास, कोई भी वृन्दावन नहीं दीखता! इस उदासीनता को दूर करना और जैनियों में उनकी मातृभाषा के प्रति भक्तिभाव संचार करने का प्रयत्न प्रत्येक जैन सभा और विद्यालय को आवश्यक है। जैन विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षायें देने को उत्साहित करना प्रत्येक जैनसभा का लाज़मी फ़र्ज़ है। इस ही बात को लक्ष्यकर परिषद् ने अपने गत अधिवेशन में इसी आशय का एक प्रस्ताव किया है।

अब जैन हिन्दीसाहित्य सेवियों और कवियों का कर्तव्य होना चाहिये कि वे उसकी अमली पूर्ति करें। परिषद् का आगामी अधिवेशन वर्धा में माघमास में होवेगा। उत्तम हो यदि उस समय समग्र भारत के जैन साहित्य सेवी व कविगण एक त्रित हो एक "जैन हिन्दी समिति" की योजना करें और उसके द्वारा हरप्रकार हिन्दी जैन साहित्य की उन्नति करें। अभी हाल में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में जैनियों ने कुछ भाग नहीं लिया यह भी उन की इस ओर से उदासीनता का परिचायक है। ऐसी दशामें यदि जैनेतर संसार और स्वयं सम्मेलन प्राचीन जैन कवियों की प्रतिभावान सद्कृत्यों से अनभिज्ञ रहे और उससे उदासीनता रक्खें तो कोई आश्चर्य नहीं! यही हाल आज देखा जाता है। इस शोचनीय दशा को मेटने के लिए श्रीयुत नाथूराम जी प्रेमी, बाबू युगल किशोर जी, पं० दरबारीलाल जी साहित्यरत्न, बाबू कन्हैया लालजी करसला प्रभृति को कार्यक्षेत्र में आना चाहिए। और वर्धा अधिवेशन के समय जैन कवियों व लेखकों का सम्मेलन करना चाहिए। क्या अन्य सज्जन इस ओर अपने विचार प्रगट करेंगे।

—उ० सं०

२=जैनियों में शिक्षा प्रचार

अन्यत्र जो संख्यायें सरकारी रिपोर्ट से जैनियों में शिक्षा प्रचार की दी हैं, उन से हमारी समाज की शिक्षा सम्बन्धी हीन दशा प्रकट है। हमारे बहुत से सज्जनों को अभी तक सम्भवतः यही भ्रम होगा कि विविध जैन विद्यालयों के होते हुए जैनियों में शिक्षा प्रचार काफी रीति से हो रहा है। परन्तु शिक्षा गणना, अंक से यह सर्वथा मिथ्या प्रमाणित हो जाता है। १०० जैनियों में से आज केवल २६ जैनी लिख पढ़ सके हैं। यह कितने दुःख का बात है। सोभी उनमें कोई भी ऐसा प्रखर विद्वान नहीं दिखाई देता जो पूज्य स्व० टोडरमल जी की समानता कर सके अथवा लौकिक विद्या में अल्प संख्यक पारसी जाति के अनुसार प्रख्याति प्राप्त कर सके! यहां तक शोचनीय दशा है कि आज इतने जैन विद्यालयों के होते हुए भी जैन पाठशालाओं के लिये अध्यापक नहीं मिलते। इटावे का उदाहरण आँखों अगाड़ी है। वहाँ के भाइयों ने उत्साह कर विद्यालय स्थापित कर लिया परन्तु जैन पंण्डित की प्राप्ति उन को अभी तक नहीं हो पाई है। इससे साफ प्रकट है कि वर्तमान के जैन विद्यालयों से जितना शिक्षा प्रचार और उनसे लाभ जैनियों को होना चाहिए था उतना नहीं हुआ है। तिस पर यदि स्त्री शिक्षा की ओर दृष्टि डालें तो रहा सहा हृदय टूक २ हो जाता है। आज १०० जैन-स्त्रियों में से ९६ निरीह मूर्खा हैं। ऐसी दशा में वह स्वयं अपना आत्म-कल्याण कैसे कर सकीं हैं? और कैसे अपनी सन्तति को ऐसी ज्ञानवान बना सकीं हैं जो वह वास्तव में जैन धर्म रत हो सके? जैन धर्म प्रचार और जैन समाज की उन्नति का मूल मन्त्र बस यही एक है कि सबसे पहिले स्त्रियों में आवश्यक शिक्षा का प्रचार किया जाय। समझ में नहीं आता कि अक्षर ज्ञान के न होते हुए वे किस प्रकार श्रावक के षटावश्यकों का पालन कर सकीं हैं और अपने को श्राविका बतलाने की अधिकारी बन सकीं हैं! अतएव इस सब को देखते हुए यह

आवश्यक प्रतीत होता है कि इस अज्ञानान्धकार को मेटने के लिए जिसके कारण हमारी जाति के सर्वाङ्ग ठिठर गए हैं और उनकी कहीं भी कुछ पूंछ नहीं है, क्यकि गत प्रयत्नों के अतिरिक्त एक सामूहिक आयोजन किया जाय और उसके द्वारा समग्र भारत के जैनियों में शिक्षा प्रचार की योजना की जावे। वर्तमान में प्रथक २ जो विद्यालय खो रहे हैं उनसे समाज के धन के दुरुपयोग होने के साथ साथ वास्तविक लाभ भी नहीं होता। उनको पाठ्य क्रम भी एक दूसरे से इतना विभिन्न और वर्तमान जीवन आवश्यकाओं के इतना विपरीत है कि उन से न तो जैन धर्म की प्रभावना ही समुचित रीति से होती है और न जैन छात्रों के लौकिक जीवन उन्नत बनते हैं। दूसरे विचारणीय यह भी है कि जैन विद्यालयों में इस समय एक विद्यार्थी के पीछे कम से कम ३०) मासिक खर्च किए जाते हैं और उधर सरकारी कोष में टैक्स आदि रूप से जो धन जैनी देते हैं उस का उचित उपयोग वे सरकारी शिक्षा प्रचार के कार्य से नहीं लेते। इस प्रकार दोनों ओर से हानि उठानी पड़ती है। इस कारणवश ता यह उचित है कि जैन विद्यालयों का पठनक्रम इस ढंग का रक्खा जावे जिसमें जैन अजैन सब सम्मिलित हो सकें और उसी तरह वहाँ से शिक्षा प्राप्त कर सकें जिस प्रकार मिशनरी स्कूलों में से वे प्राप्त करते हैं। ऐसी अवस्था में धर्मशिक्षा भी दी जा सकेगी और छात्र अपने लौकिक जीवन की उन्नति हेतु आवश्यक व्यापारिक आदि ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। तथापि खर्च भी घट जावेगा क्योंकि छात्रों से उचित फीस भी ली जासकेगी और सरकार से भी सहायता प्राप्त की जा सकेगी। जैन छात्रों को अथवा अन्य छात्रों को उचित छात्र वृतियां देकर सहायता भी की जा सकेगी। इस हेतु छात्रालयमें सब पेड छात्रही रह सकेंगे जिससे छात्रालयमें भी कम खर्च पड़ेगा। इस प्रकार के क्रम से जो रुपया बचेगा उसके द्वारा अन्य स्थानों पर नए विद्यालय खुल सकेंगे। साथ ही जिन छात्रों को छात्रवृत्ति रूप में वर्तमान की भांति सहायता दी जावे उनसे कम से कम दो वर्ष तक किसी प्रकार की सामाजिक सेवावृत्ति मात्र भोजन-व्यय पर ली जावे। इससे कार्यकर्ताओं के अभाव की भी पूर्ति किन्हीं अंशों में होती रहेगी। परन्तु ऐसी व्यवस्था तब ही हो सक्ती है जब वर्तमान जैन शिक्षालयोंके लिए एक भारतव्यापक जैन शिक्षासमिति अथवा जैन विश्वविद्यालय स्थापित किया जावे। और उसी ही के आधीन सर्व प्रकार के जैनशिक्षालय रहें। उस की स्थापना से स्त्रीशिक्षा के प्रचार का भी उचित प्रबन्ध हो सकेगा। तथा उन स्त्री पुरुषों की शिक्षा के लिए जो अधिक वय प्राप्त हैं और अपने गार्हस्थिक उलझनों के कारण किसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सक्ते "घूमते हुए पुस्तकालयों" के ढंग पर व्यवस्था की जा सकेगी, जिससे वे अपनी आत्मोन्नति कर सकेंगे। बस यही एक उपाय है जिसके द्वारा जैन समाज में पूर्णरूप से शिक्षा का प्रचार किया जा सक्ता है। जब तक एक जैन विश्वविद्यालय स्थापित नहीं होगा और उसके आधीन जैन शिक्षालय नहीं रहेंगे तब तक न तो जैनधर्म का प्रचार होसकेगा और न जैन समाज की उन्नति। समाजहितैषियों और नेताओं तथा उन शिक्षा आश्रमों के अधिष्ठाताओं को इस ओर ध्यान देकर अज्ञानांधकार मेटना चाहिए।

—उ० सैं०

साहित्य समालोचना

भगवान महावीर

१-लेखक-अलीगंज ज़ि० एटा निवासी श्रीयुत् बाबू कामताप्रसाद जी जैन, उपसम्पादक 'वीर'

२-प्रकाशक-श्रीयुत् मूलचन्द्र किसनदास जी कापड़िया, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, सूरत

३-मूल्य-सजिल्द का १॥।) प्रकाशक से प्राप्त। पृष्ठ संख्या लगभग ३००, साइज़ २० × ३०, १६ पेजी

मेरी दृष्टि में अब तक जैन समाज में "श्री वीर भगवान" के जितने भी जीवन चरित्र लिखे गये हैं उन सर्व ही में यह चरित्र अपनी निम्न लिखित विशेषताओं के कारण अधिक उपयोगी, अधिक महत्वपूर्ण और अपने ढंग का सबसे पहिला ग्रन्थ है

१-आधुनिक शैली पर ऐतिहासिक ढंग से लिखा गया है।

२-जैन और अजैन सर्व ही के लिये समान उपयोगी है।

३-जैन धर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन ग्रन्थों के आधार पर वरन अनेक अजैन ग्रन्थों के प्राचीन लेखों और आज कल के सुप्रसिद्ध कई स्वदेशीय व विदेशीय अजैन विद्वानों की सुयोग्य सम्मतियों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध करता है।

४-श्री महावीर भगवान तथा अन्य तीर्थंकरों के वास्तविक व ऐतिहासिक व्यक्ति होने में जो वर्तमान समय किसी २ विद्वान को कुछ शंकायें हैं तथा जैन धर्म के सम्बन्ध में जो कई प्रकार की झूठी किम्वदन्तियां फैली हुई हैं उन्हें दृढ़ प्रमाणों द्वारा निर्मूल सिद्ध करता है।

५-अजैन विद्वानों को जैन साहित्यावलोकन के लिये उत्कंठित करना और जैनधर्म की वास्तविक प्रभावना फैलाने में बहुत कुछ सहायक है।

६-यह चरित्र न केवल वीर भगवान का ही अनुकरणीय पवित्र चरित्र हमारे सामने उपस्थित करता है, वरन इनसे पूर्व के सर्व तीर्थंकरों और पश्चात् के सुप्रसिद्ध आचार्यों आदि का भी संक्षिप्त रूप में दिग्दर्शन कराता है जिससे आगे को जैनधर्म का एक महत्व पूर्ण और सर्वाङ्ग सुन्दर बृहत् इतिहास तुलनात्मक प्रणाली पर लिखे जाने में बहुत कुछ सहायता मिल सकती है।

७-प्रकरण २१ में "क्षत्र चूड़ामणि-जीवन्धर" और पृ० ३१ में "भगवान का दिव्य उपदेश और निर्मल चारित्र" शीर्षक लेख सर्व साधारण के लिये बड़े उपयोगी और पठनीय हैं।

८. श्री वीर भगवान के पवित्र जीवन से जो उत्तम शिक्षाएँ मिलती हैं उनका सारांशरूप संग्रह भी इस ग्रंथ के अन्त में देदिया गया है। इत्यादि।

इस अद्वितीय चरित्र को लेखक महोदय ने यद्यपि बहुत कुछ सामग्री जुटाकर बड़े परिश्रम से लिखा जान पड़ता है तथापि इसमें कोई २ तो साम्प्रदायिक भेद से और कई एक सामग्री की कुछ कमी या अन्य कारणों कहीं २ तो दोष भी रह गए

हैं जो आशा है कि अगले संस्करण में भले प्रकार समझ और विचार कर यथा आवश्यक दूर कर दिये जायँगे। इनमें से कुछ उदाहरण मात्र निम्न लिखित हैं:—

(१) पृ० १२ पं० १३ पर श्री नेमनाथ का श्री पार्श्वनाथ से ८४००० वर्ष पूर्व होना।

त्रिलोकसार गाथा ८१० में तथा हरिवंशपुराण आदि गून्थों में ८३७५० वर्ष पूर्व है और श्री महावीर भगवान से लगभग ८४००० वर्ष पूर्व है, श्री पार्श्वनाथ भगवान से नहीं है। यद्यपि श्री नेमनाथ का श्री पार्श्वनाथ से भी ८४००० वर्ष पूर्व होना सर्वथा अशुद्ध नहीं है, क्योंकि जैनगून्थों में जो एक तीर्थङ्कर का दूसरे से अन्तराल दिया है वह प्रायः सर्वत्र मोक्ष से मोक्षान्तर है और श्री नेमनाथ की पूर्ण आयु लगभग १००० वर्ष की है। अतः उनका ८३७५० वर्ष का मोक्ष से मोक्षान्तर होने पर भी ८४००० वर्ष पूर्व होना (विद्यमान होना) भी यद्यपि ठीक है तथापि शास्त्र परिपाटी विरुद्ध होनेसे बिना साफ़ शब्दों में स्पष्ट किये पाठकों के लिये भ्रमोत्पादक अवश्य है।

(२) पृ० २३ पंक्ति ८ पर श्री कृष्ण को श्रीनेमनाथ का भतीजा लिखना।

हरिवंशपुराणादि जैन गून्थानुसार वह श्री नेमनाथ भगवान के चचेरे भाई थे।

(३) पृष्ठ २६ पंक्ति ११ पर श्री रामचन्द्र को श्री मुनिसुव्रत भगवान का समकालीन लिखना।

"समकालीन" के स्थान में "तीर्थकालमें" लिखना उचित होता। क्योंकि श्री पद्मपुराण, उत्तर पुराण तथा श्वेताम्बराचार्य श्री हेमचन्द्र रचित "जैन रामायण" आदि जैनगून्थों से पाया जाता है कि श्री रामचन्द्र का जन्म श्री मुनिसुव्रतनाथ के समय से बहुत सी पीढ़ियाँ सूर्यवंश की बीत जाने पर श्री मुनिसुव्रतनाथ और श्री नेमिनाथ के अन्तरालकाल ही श्रीमुनिसुव्रत भगवान का "तीर्थकाल है जो लगभग ५६०००० वर्ष पर्यन्त रहा। इसे "समकाल" नहीं कह सकते।

(४) पृष्ठ १३पंक्ति १३-१४ पर भागीरथ केवली का अभिषेक किया जाना।

श्री उत्तरपुराण प्रकरण ४८ श्लोक १३८-१४१ में श्रीभागीरथ मुनि के चरणों का उनकी छद्मस्थ अवस्था में क्षीरोदध के जल से इन्द्र द्वारा अभिषेक किया जाना लिखा है। मुनि दीक्षा के लिये पीछे छद्मस्थ अवस्था में भी चरणों के अतिरिक्त अन्य शरीराङ्गों का अभिषेक नहीं होता और कैवल्य पद प्राप्त किये पीछे चरणों का भी अभिषेक नहीं किया जाता।

(५) पृ० ७४ पंक्ति १८ पर श्री वीर भगवान के जन्म समय चौथे काल में ७४ वर्ष ४॥ मास शेष रहने लिखना।

श्री वीर भगवान की आयु ७१ वर्ष ६॥ मास की थी और उन के निर्वाण के समय चौथे काल में ३ वर्ष ८॥ मास शेष थे। अतः इन दोनों का काल परिमाण का जोड़ जो ७५ वर्ष ३ मास है इतना ही काल परिमाण उनके जन्म के समय चौथे काल में शेष था।

यहाँ यह भी ध्यान रहे कि कोई महानुभाव भूल से भगवान की वय पूरे ७२ वर्ष की मानकर उनके जन्म समय चौथे काल में ७५ वर्ष ८॥ मास शेष रहना जानते हैं। यह अशुद्ध है।

(६) पृष्ठ ६६ पंक्ति ४ पर श्री वीर भगवान का दीक्षा के समय ६ मास का तप या उपवास (षट्-मासोपवास) ग्रहण करना या ६ मास पीछे आहार लेना।

श्री उत्तरपुराण पर्व ७४ श्लोक ३०२, ३१८, ३१९ से प्रकट है कि दीक्षा के समय उन्होंने षष्ठोपवास (बेलाव्रत) अर्थात् केवल दो दिन के उपवास की प्रतिज्ञा ग्रहण की थी, यह मासोपवास की नहीं। दो दिन का व्रत पूरा होने पर अर्थात् प्रतिज्ञा से तीसरे दिन "कुलग्राम" में कूल नामक राजा के यहाँ आहार लिया।

नोट १—असग कविकृत "श्री महावीरचरित्र" सर्ग १७ श्लोक ११५ से तथा स्वर्गीय श्वेताम्बर मुनि श्री आत्माराम जी कृत "जैन तत्वादर्श" पृ० ३३ नं० १८, २१ में भी षष्ठोपवास या बेलाव्रत लेना ही लिखा है। श्री सकलकीर्तिदेव विरचित "श्री महावीरपुराण" अधि० १३, श्लोक २, ३ आदि से तथा स्व० श्वेताम्बर मुनि प० ज्ञानचन्द्र जी रचित "श्री वर्द्धमानपुराण पृ० २२, २३ से भी यही सिद्ध है कि श्री वीर भगवान् ने दीक्षा के समय ६ मास का तप या व्रत नहीं लिया। पर उन में शक्ति छः २ मास के उपवास ग्रहण करने की थी तथा एक बार छः मास का उपवास और कई बार छः मास से कम, कई २ मास का उपवास भी किया किन्तु दीक्षा के समय नहीं।

नोट २—यह ध्यान रहे कि षष्ठोपवास ६ दिन के उपवास को नहीं कहते किन्तु दो दिन का निर्जल उपवास और धारणा व पारणा (उपवास से पूर्व और पश्चात्) के दिन एकाशना करने को कहते हैं। अर्थात् ६ समय के आहार त्याग को कहते हैं। इसी प्रकार चतुर्थोपवास एक दिन के निर्जल व्रत को और अष्टोपवास तीन दिन के निर्जलव्रत (तेला) को कहते हैं।

नोट ३–पृ० ६६ पर ही लिखा है कि कूलपुर का पता नहीं कि यह कहाँ था। मेरी सम्मति में यह स्थान भगवान की जन्मपुरी कुण्डपुर (कुण्डग्राम) ही का या तो अपभ्रंश नाम या दूसरा नाम है अथवा 'कुण्डपुर' के निकट ही के किसी अन्य ग्राम का नाम हो सकता है। * क्योंकि जन्मपुरी के निकट के षंड (नागखंड) नामक वन में दीक्षा लेकर भगवान ने बेलाव्रत लिया था और इस व्रत के पूर्ण होते ही आहार ग्रहण किया। ऐसी अवस्था में कहीं दूर जाकर आहार लेने की संभावना नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त श्री जिनसेनाचार्य कृत हरिवंश पुराण सर्ग ६० श्लो० २४४ (कलकत्ते के छपे का पृ० ५६४ पंक्ति १५ पर) में आहार का स्थान "कुंडपुर" (जन्मपुरी) ही लिखा है, और उत्तरपुराण पर्व ७४ श्लोक ३१८ में कुलग्राम (कूलग्राम या कूल्यग्राम नहीं) लिखा है जिसका अर्थ शब्दार्थ लगाकर "कुल का या वंश का ग्राम" अर्थात् 'कुंड ग्राम' या 'कुंडपुर" भी हो सकता है जो हरिवंश पुराण के अनुकूल है। रही यह बात

* "भगवान महावीर" पुस्तक में कोल्लिय जाति के नृप की राजधानी हामगांम को कूलपुर बतलाया गया है और यह कुण्डग्राम या वैशाली के निकट भी था। अतएव वहीं के राजा कूलनृप ने भगवान को आहार दिया होगा। यदि हम कुण्डपुर आहार ग्राम मानलें तो फिर कूलनृप का ऐतिहासिक अनुसंधान जानना शेष रहजाता है। परन्तु कोल्लिय जाति के नृप कूलनृप और उनकी राजधानी ही कूलनगर व कूलपुर मानलें तो इन सबका समाधान होजाता है। —ब० स०।

कि कुंडग्राम में 'कूल' नामक राजा कैसे हो सकता है सो उत्तर पुराण में उसे कुंडग्राम का अधिपति या वासी नहीं लिखा। वरन् यह लिखा है कि "कूल नामा महिपालने कुलग्राम में आहार दिया" भगवान की दीक्षा के समय आये हुए अनेक महीपालों में से एक यह महीपाल भी होगा और भगवान के पारणे के दिन तक कुंडग्राम में ठहरा रहा होगा। ऐसी सम्भावना है।

(७) पृ० १०६ पंक्ति ४ पर भगवान का केवल ज्ञान प्राप्ति पीछे चतुर्मासा करने के लिए एक स्थान पर रहना।

चारण आदि ऋद्धिधारी मुनि (गणधरादि) और केवलियों को वर्षाऋतु में एक स्थान में रहने का कोई नियम नहीं है। क्योंकि उनके शरीर से जीवघात होने का भय नहीं है। ×

(८) पृ० २११ पर "वीर निर्वाण प्रति काल निर्णय" शीर्षक लेख में (१) श्री त्रिलोकसार की गाथा ८५०, (२) आर्यविद्या सुधाकर (३) सरस्वती गच्छ की पट्टावली की भूमिका (४) पट्टावली 'अ' की भूमिका की गाथा, यह चार प्रमाण देकर प्रचलित वीर निर्वाण सम्वत् को ही ठीक बताना।

इस लेख में श्री त्रिलोकसार की गाथा ८५० आदि ४ प्रमाण देकर जो प्रचलित सम्वत् के ठीक होने की पुष्टि की है वह ध्यान देकर विचारने से उन्हीं चारों प्रमाणों द्वारा अशुद्ध सिद्ध होती है।

× उत्तम हो इस विषय में लेखक मेरे उन प्रश्नों का उत्तर प्रदान करें जो जैनमित्र अङ्क १ में प्रगट हुए हैं। दि० शास्त्रों में तो तीर्थंकरों के चातुर्मास सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया है।

—उ० स०।

क्यों कि अन्तिम दो प्रमाणों से (सरस्वती गच्छ की पट्टावलियों से) तो खुले शब्दों में विक्रम का जन्म (न कि विक्रम सम्वत् का प्रारंभ) श्री वीर भगवान के निर्वाण काल से ४१० वर्ष पीछे हुआ। और विक्रम ने सम्वत् का प्रारंभ विक्रम के जन्म से किसी प्राचीन या अर्वाचीन विद्वान ने माना हो ऐसा किसी लेख में दृष्टि गोचर नहीं हुआ, किन्तु इस के विरुद्ध 'मदनकोष' 'भारत के प्राचीन राज वंश' आदि अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंसे यह मिलता है कि शक जाति के लोगों को जीतने की स्मृति में विक्रम यह सम्वत् चलाया और इसी लिये यह राजा "विक्रमादित्यशकारी" नाम से प्रसिद्ध हुआ। किन्हीं किन्हीं ऐतिहासिक लेखों से यह भी पता लगता है कि विक्रम सम्वत् का प्रारंभ विक्रमकी १८ वर्ष की वय में हुआ। अतः श्री वीर निर्वाण काल से विक्रम सम्वत् का प्रारंभ ४७० वर्ष + १८ वर्ष = ४८८ वर्ष पीछे हुआ उपरोक्त दोनों प्रमाणोंसे सिद्ध होता है * और पहिले दो प्रमाणों से (त्रिलो

* पुस्तक लेखक को उस समय तक मास्टर साहब के प्रमाणों का ज्ञान नहीं था। अब आपके प्रमाण भी प्रगट हैं और उधर जार्लचोर्पन्टियर सा० ने ई० सन्से ५६७ वर्ष पहिले वीर नि० मानना ठीक बतलाया है। इस लिए इस प्रश्नों पर पूर्ण विचार करने की आवश्यक्ता है। यद्यपि इन प्रमाणों को देखते हुए ई० सन् से ५४५ वर्ष पहिले वीरनिर्वाण मानना भी अत्युक्ति नहीं है। ऐसा ही मत डा० जैकोबी का भी प्रतीत होता है। उन्होंने "भगवान महावीर" की पहुँच में जो पत्र लिखा है उसमें लिखा है:—In the 32nd chaper you show that according to Digambara tradition, the Nirvana of Mahavira took place 470 before Vikrama, Now I found in a guravali

कसार की गाथा ८५०, व 'आर्य विद्या सुधाकर' के श्लोक से) भी यह प्रगट नहीं है कि विक्रम सम्वत् का प्रारंभ वीर निर्वाण काल से ४७० वर्ष पीछे हुआ किन्तु यह अर्थ निकलता है कि ४७० वर्ष पीछे विक्रम नामक राजा हुआ। जिस का आशय प्रथम के दोनों प्रमाणों से अविरुद्ध यही लेना युक्ति संगत है कि वीर निर्वाण से शकराजा का जन्म ६०५ वर्ष पीछे और विक्रम का जन्म ४७० व' पीछे हुआ। ऐसा अर्थ लेना उपरोक्त चारों प्रमाणों से अविरुद्ध हैं। अतः वीर निर्वाण काल विक्रम सम्वत् से ४८८ वर्ष पूर्व सिद्ध होता है। ४७० वर्ष पूर्व मानना पिछले दो प्रमाणों से सर्वथा विरुद्ध है और पहिले दो से भजनीय द्विधात्मक है।

भारत के प्राचीन राजवंश द्वितीय भाग के पृ० ३४ पंक्ति १७ से २१ तक के लेख से ज्ञात होता है कि बुद्ध का निर्वाणकाल अब तक सन् ई० से ४८७ (या ४८२) वर्ष पूर्व माना जाता था परन्तु

from Jaipur that Vikrama's birth occured 470 years after Mahavira's Nirvana सत्तरिचदुसदजुत्तो तिणकाला विक्कमो हवइ जम्मो. But the Vikrama era does not date from the जन्म of Vikrama, but from the राज्य of Vikrama, or from the 18th year after his birth. By his recokning the Nirvana should be placed 18 years earlier or 545. B C. अभी आप प्रमाण चाहते हैं। इस हेतु मास्टर साहब के उक्त प्रमाण भी आपके भेजदिए जायँगे। जो हो इससे साफ प्रकट है कि प्रचलित वीर निर्वाण सं० अशुद्ध है। मास्टर सा० की यह अन्वेषणा सराहनीय है। — व० स० ।

अब "खार वेल" के लेखानुसार सन् ई० से ५४६ (वि० सं० से ४८७) वर्ष पूर्व अनुमान किया जाता है और यही सम्वत् (५४३ या ५४४) सीलौन की पुस्तकों में भी माना गया है। अतः वीर निर्वाण काल विक्रम सं० से ४७० वर्ष पूर्व मानने से श्री महावीर निर्वाण काल बौद्ध निर्वाण से १७ वर्ष पीछे का सिद्ध होता है जो स्वयम् ग्रन्थ लेखक के लेख (पृष्ठ २१३ पंक्ति १७ व पृ० १७२ पं० ६, व पृ० २३१ पंक्ति १६ से २४ तक व पृ० २३२ पं० १ से चार तक) से विरुद्ध है,परन्तु वीर निर्वाण विक्रम से ४८८ वर्ष पूर्व मानना उसके भी विरुद्ध नहीं है।

इस के अतिरिक्त मेरे कई लेख "जैन मित्र" वर्ष २२ अंक ३३, और अहिंसा वर्ष १ अंक २०, आदि कई जैन समाचार पत्रों में तथा वृ० जैन शब्दार्णव कोष के पृ० ७ के फुट नोट में अन्य भी कई प्रमाण इस विषय में निकल चुके हैं जिन में श्रीयुत पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद व स्वर्गीय ब्रह्मचारी ज्ञानानन्द जी ने भी अपनी अपनी सम्मति इसी के अनुकूल प्रकट की है। अतः मेरे तुच्छ विचारानुकूल श्री वीर नि० काल विक्रम जन्म से ७४० वर्ष पूर्व और विक्रम सम्वत् के प्रारम्भ से ४८८ वर्ष ५ मास पूर्व मानना ही सर्व प्रकार ठीक और युक्ति युक्त है और इसलिये आजकल जो गत दीवाली के पश्चात् से वीर निर्वाण सं० २४५१ माना जाता है उसमें १६ वर्ष बढ़ाकर (क्योंकि प्रचलित वीर नि० सं० २४५१ विक्रम सम्वत् के प्रारम्भ काल से वीर निर्वाणकाल को ४६९ वर्ष ५ मास पूर्व मान कर चल रहा है जिसका अन्तर ४८८ वर्ष ५ मास के साथ १९ वर्ष ही है) उसके स्थान में २४७० मानना उचित है। ऐसा मानने . . . गो

एक मेरा विचार है किसी भी प्रामाणिक दिगम्बर या श्वेताम्बर जैन ग्रन्थों या पट्टावलियों आदि से विरोध आने का भी भय नहीं है।

इस प्रकार की इन कई प्रकार की साधारण भूलों के होते हुए भी, जिनका होजाना प्रत्येक अल्पज्ञ मनुष्य के लिये अनिवार्य है, पुस्तक की उपरोल्लिखित उपयोगिता पर दृष्टि डालते हुए बड़े हर्ष के साथ कहा जा सकता है कि श्रीयुत बा० कामता प्रसाद जी ने इस अमूल्य पुस्तक को लिखकर उपलब्ध जैन साहित्य की चिरवाञ्छनीय ऐतिहासिक आवश्यकता को बहुतांश पूर्ण कर सम्पूर्ण दिगम्बर जैनसमाज को आभारी बनाया है। आशा है कि हम वीर भगवान के ऐसे उपयोगी चरित्र को शीघ्र ही प्रत्येक जैनी भाई के घर में तथा जैन पाठशालाओं व पुस्तकालयों में पठन पाठन करते और पढ़े लिखे अपने अजैन मित्रों को दिखाते हुए तथा शीघ्र ही इसके द्वितीय संशोधित संस्करण को देखेंगे। इत्यलम्।

७ नवम्बर १९२४ ई०

बिहारीलाल जैन
(बुलन्दशहरी)
सी० टी०, असिस्टेंटमास्टर
ग० हाई स्कूल बाराबङ्की
(अवध)

स्वल्पार्घ ज्ञान रत्नमाला का द्वितीय रत्न

वृहत् जैन शब्दार्णव

(बड़े साइज़ के २०० पृष्ठ से अधिक छपकर तैयार होगए)

यह वही अनुपम और अपने ढंग का सब से पहिला और अपूर्व जैन महान कोष है जो चारों ही अनुयोगों के लगभग सर्व ही उपलब्ध जैन ग्रन्थों के अकारादि क्रम से लिखे गये शब्दों के अर्थ और व्याख्या आदि का एक बहुत बड़ा और महान संग्रह है, जिसकी तैयारी का कार्य लगभग २५ वर्ष से हो रहा है, जिसके सम्बन्ध में कई लेख "जैन मित्र" में कईबार निकल चुके हैं, जिसके प्रारम्भिक थोड़े से ही छपे पृष्ठों की संक्षिप्त पर उत्तम समालोचना गतवर्ष के जैनगज़ट में और जैनमित्र अंक ४८ में निकल चुकी है और जिसको शीघ्र से शीघ्र देखने के लिये और उस से लाभ उठाने के लिये हमारे बहुत से भ्रातृगण अति उत्कंठित हो रहे हैं तथा जिसे प्राप्त करने के लिये अनेक सज्जन महानुभाव तो बार २ पत्र लिखकर हमें थोड़े २ पृष्ठ ही जितने छपते जांय वही भेजते रहने के लिये बाधित कर रहे हैं। उसी महत्वपूर्ण अपूर्व कोष के बड़े साइज़ के २०० पृष्ठ से कुछ अधिक छपकर आज तय्यार हो गए हैं। अपने सज्जन भ्राताओं की उत्कण्ठा पूर्ण करने के लिये हमने दो दो सौ (२००, २००) पृष्ठ ही भेजने का विचार निश्चित कर लिया है और इसी मास नवम्बर की १० तारीख से वी० पी० द्वारा रवानगी का प्रबन्ध भी कर दिया है। हर २०० पृष्ठ का मूल्य सर्व साधारण के लिये २) और "स्वल्पार्घज्ञानरत्न माला" के स्थायी ग्राहकों के लिये १।) (पौना मूल्य) नियत किया गया है। जो महानुभाव इस माला के स्थायी ग्राहक बनने के लिये ॥=) या १।) प्रवेश शुल्क भेज कर ग्राहक श्रेणी नं० १ या २ में अपना नाम लिखा देते हैं वह इस के स्थायी ग्राहक माने जाते हैं। उपर्युक्त कोष के अतिरिक्त इस माला में इस का प्रथम रत्न कविवर वृन्दावन

जी कृत "पंचकल्याणक पाठ" कल्याणक क्रम से १२१ पूजाओं का अपूर्व संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है जो आज तक अन्य कहीं से भी प्रकाशित नहीं हुआ है। इसमें कविवर का संक्षिप्त जीवन चरित्र उन की जन्म कुण्डली और वंशवृक्ष भी हो मुख्य पंचकल्याणक तिथि: कोष्ठ तिथि क्रम से व तीर्थंकर क्रम से भी दिये गये है। सजिल्द का मूल्य केवल ॥≈)। है और माला के स्थायी ग्राहकों को ।≈)॥ में या किसी मन्दिर के लिये कोष के प्रथम २५० ग्राहकों को बिना मूल्य ही कोष के २०० पृष्ठों के वी० पी० के साथ भेज दिया जायगा। इस माला का तृतीय रत्न "अग्रवाल इतिहास" भी प्रकाशित हो चुका है जो जैन और अजैन, देशी और मारवाड़ी,…… इत्यादि सभी ही अग्रवंशियों का अब से लगभग सात सहस्र वर्ष पूर्व से आजतक का एक प्रामाणिक इतिहास। मूल्य केवल ६) है। माला के स्थायी ग्राहकों को लेखक महाशय के फोटोसहित केवल ४)। में दिया जायगा। यह प्रथम और तृतीय रत्न 'दिगम्बर जैन पुस्तकालय, सूरत से और "जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से" भी मिल सकते हैं।

अधिक रिआयत—जो महानुभाव ता० १५ दिसम्बर १९२४ तक अपना नाम माला की ग्राहक श्रेणी में लिखा देंगे, उनके लिये प्रथम बार के वी० पी० में सर्व डाक व्यय भी छोड़ दिया जावेगा। चाहें वे तीनों में से किसी एक या सब की यथा इच्छा अधिक अधिक प्रतियाँ भी मंगावें। ग्राहक श्रेणी नं० १ या २ में नाम लिखाने का प्रवेश फीस ॥=) या १) भी ग्राहकों की यथा इच्छा इसी वी० पी० में लगाया जा सकता है।

शान्ति चन्द्र जैन,
मैनेजर, "स्वलशार्व ज्ञान रत्नमाला कार्यालय,"
बाराबंकी (अवध)

नोट:—वस्तुतः मास्टर बिहारी लाल जी जैन धर्म की असीम सेवा कर रहे हैं। उन का यह कोष एक अद्वितीय कृति होगी। पाठकों को अवश्य ही मंगाना चाहिए। प्रत्येक मन्दिर में इसकी १ प्रति होना चाहिए। —उ० सं०

महिलाओं की प्रार्थना

(ले०—श्रीमती पंडिता चन्दाबाई जी)

सुधारो महिलागण को आन,
पतित उधारक भविजन तारक, श्रीजिन ज्ञान निधान।
दुखित दलित पतित त्रसित हम, विनय करें भगवान ॥ १ ॥
बाल वृद्ध अनमेल रुग्ण पति, क्लेशित करत महान।
मातृ भक्ति रस शून्य मही का, कैसे हो कल्याण ॥ २ ॥
तारण तरण अखिल दुखभंजन, भवसागर के यान।
सुधारो महिलागण की आन ॥

संसार दिग्दर्शन

समाज

वर्धा (सी० पी०) के प्रसिद्ध देशभक्त सेठ चिरंजी लाल जी जैन बडजात्या की पूजनीया मातुश्री जी ने अपने यहाँ वेदी निर्माण कराई है जिसकी प्रतिष्ठा माह सुदि ४-५ अर्थात २७ जनवरी को होगी। हर्ष का विषय है कि भा० दि० जैन परिषद् ने भी सेठ जी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। स्वागत कारिणी समिति का संगठन श्रीमान सेठ दौलतरामजी के अध्यक्षता में हो चुका है। परिषद् के वार्षिक अधिवेशन का धूमधाम के अतिरिक्त समाज के अन्य बड़े २ नेताओं के व्याख्यानों से भी अपूर्व आनन्द रहेगा। ब्रह्मचारी जी, बैरिष्टर साहब तथा महामंत्री श्री चैनसुखदास जी छावड़ा आदि २ के आने की पूर्ण सम्भावना है। यहां आने पर श्री मुक्तागिरी जी श्री राम टेक जी आदि तीर्थ क्षेत्रों के दर्शनों का बहुत अच्छा साधन रहेगा। अतः भाइयों को इस अवसर को हाथ से व्यर्थ न जाने देना चाहिये।

—मंत्री स्वा० समिति, वर्धा।

—श्री लंबेचू महासभा का द्वितीय अधिवेशन करहल में वहाँ के पंचकल्याणक महोत्सव के सुअवसर पर माघ शुक्ला में होना निश्चित हुवा है मिति अभी निश्चित नहीं हुई है। —महामन्त्री

—लंबेचू भाईयों से प्रार्थना है कि वे अपनी २ पंचायतों द्वारा निश्चित करके महामंत्रीको सूचित करें कि करहल में होने वाले महासभा के द्वितीय अधिवेशन का सभापति कौन बनाया जाय महामंत्री के पास इस प्रकार की सूचना अगहन के अन्ततक पहुंच जानी चाहिये। —महामंत्री

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दी कीजिये ! कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !! अन्यथा पछताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलन व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतकिया। कौन ग्रन्थ पुस्तकें उन्हों ने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे ग्रन्थों का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २=) सजिल्द २॥) डाकखर्च ॥)

पता—चौधरी शिखरचन्द जैन फर्रुखनगर (गुड़गाँव)

सूचना

श्रीयुत चेतन दास जी ने भा० दि० जैन परिषद् के उपदेशक विभाग मंत्रित्व से त्याग पत्र दे दिया है। इस लिये श्रीयुत चम्पतराय जी बैरिष्टर सभापति परिषद् ने श्रीयुत ज्योतप्रशाद जी जैनी सम्पादक 'जैन प्रदीप' देवबन्द (सहारनपुर) को मंत्री उपदेशक विभाग नियुक्त किया है, अतः उपदेशक विभाग के सम्बन्ध में मंत्री जी से पत्र व्यवहार किया जावे। रतनलाल मंत्री भा० दि० जैन परिषद्

—महिला सभा इटावे में त्रैलोक्य विधान उत्सव पर ता० ६ नवम्बर से ८ तक महिलाओं की उपदेशक सभा व शास्त्र सभायें हुईं। यहां जो मनुष्य बाहर से आये थे उनमें महिला अधिक थीं जहां देखो वहीं स्त्रियों के झुण्ड दिखाई पड़ते थे ये बहिनें ज्ञान की पिपासा से प्रति दिन भा० दि० जैन परिषद् के अधिवेशन में व आम सभाओं में भी आकर बैठती थीं इस दृश्य को देखकर मुक्त कण्ठ से यही ध्वनि निकलती है कि महिलाओं को ज्ञान प्राप्त करने की अत्यन्त अभिलाषा है परन्तु साधनों के अभाव से हमारी यह दुरवस्था हो रही है।

—इटावे में जैनधर्मभूषण पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी के उपदेश से एक कन्यापाठशाला स्थापित हुई है जिसमें भाग्यवश जैन अध्यापिका भी सुयोग्य मिल गई हैं।

यहां जैन महिलाओं ने जैनमहिला हितकारिणी सभा इसी अवसर पर स्थापित की है जिसका अधिवेशन प्रतिमास होगा। कितनी ही स्त्रियों ने स्वाध्याय करने, मिथ्यात्व त्यागने व पूजन करने के नियम लिए।

—उत्कर्ष श्री लंवेचू महासभा मुख्य सचित्र मासिक पत्र शीघ्र प्रकाशित होने वाला है, इसका प्रथमांक माह मास में निकल जायगा। इसका वार्षिक मूल्य लंवेचू भाइयों से १॥) और सर्व साधारण से २॥) वार्षिक है परन्तु माघ कृष्णा १५ तक बनने वाले ग्राहकों से १) व २) लिये जांयगे विज्ञापन दाताओं के लिये सब प्रकार का सुभीता है लेखादि भेजने व पत्र व्यवहार का पता—

ताराचन्द्र रपरिया महामन्त्री

बेलनगंज-आगरा

—जसवन्तनगर में श्रीमती पंडिता चंदाबाई जी का शुभागमन ता० १९-२० नवम्बर को हुआ था। तारीख २० को भी जैन मन्दिर में एक आम स्त्री सभा हुई थी। पंडिता जी का एक स्त्री उपयोगी व्याख्यान हुआ। कतिपय महिलाओं ने पूजनादि के नियम लिए। श्री वीरबाला विश्राम आरा के समाचार जान स्त्री समाज में विद्याप्राप्ति का उत्कंण्ठा है।

घर बैठे बम्बई

का सभी माल बहुत ही किफ़ायत भाव से वी० पी० द्वारा भेजा जाता है जैसे सूती, ऊनी, कोशा, रेशमीकपड़े व सिले कपड़े, सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें, ग्लास व चीनी का सामान देशी, व अंग्रेज़ी दवाएँ, तेल, अतर, वार्निश, व हर किस्म की घड़ियां। एक बार परीक्षा कर देखो।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाग़ की हर प्रकार की कमजोरी, सिरदर्द, चक्कर आना आँखों से, धुंधलापन नज़र आना, बालों का बेसमय पकना आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है। बालों को लच्छेदार और मुलायम बनाता है दिमाग़ के सब रोगों की रामबाण औषधि है। मूल्य १) रु० ३ शीशी का २॥) ६ शीशी ५।) रु० १२ शीशी १०) रु० व्यापारियों एजेंटों को पत्र व्यवहार करना चाहिये।

पता—मेसर्स शर्मा एण्ड कम्पनी कमीशन एजेण्ट बम्बई नं० १८

देश

—कोहाट के हिन्दू शासकों की मूर्खता और पक्षपात से, लुटे, पिटे और परेशान हुए। उन की करोड़ों का सम्पत्ति धूल में मिल गई, जब यह ज़िक्र उठता है कि हिन्दुओं की जो हानि हुई उसका तावान दीजिये, तो शासक कानों पर हाथ रखते हैं। यदि अंग्रेज शासक कोहाट या सरहदी प्रान्त में, हिन्दुओं की जान और माल की रक्षा नहीं कर सकते तो, क्यों नहीं वह इलाका काबुल के सुपुर्द कर देते? अमृतसर में रौलट बिल के आन्दोलन के समय एक अंग्रेज मेम के पीटने का तावान सरकारी खज़ाने से ५००००) दिया गया था। पंजाब हत्याकाण्ड का तावान अन्य लोगों को मिला है। तो इन बेचारों ने क्या कसूर किया है?

—समाचार है कि मद्रास सरकार ने ५७८ मोपला कैदियों को छोड़ना फिर मंजूर कर लिया है।

—लखनऊ में होने वाले नेशनल लिबरल फेडरेशन के ७ वे अधिवेशन के सभापति के लिये स्वागतकारिणी समिति ने पूना के डा० परान्जपे को चुना है।

—बम्बई कारपोरेशन में मि० वी० जे० पटेल। ने वाइसराय के आने पर सार्वजनिक जलसा करने का विरोध किया।

—अखिल भारतीय डांक कर्मचारियों की कान्फ्रेंस बम्बई में हुई। सभापति ने अपने भाषण में उचित वेतन के सिद्धान्तों पर ज़ोर दिया और कहा कि यह प्रत्येक कर्मचारी का कर्तव्य है कि वह अधिक स्वच्छ जल वायु का सेवन करे और अपने लड़कों को शिक्षा दें।

—म० गांधी ने बेलगांव कांग्रेस का सभापति होना स्वीकार कर लिया है। वे गो कान्फ्रेंस के भी सभापति होंगे। कांग्रेस २६ दिसम्बर से शुरु होगी।

—इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों को सैनिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दीजाया करेगी।

विदेश

—२७ तारीख को इङ्गलैण्ड में बहुत जबरदस्त तूफान आया है जानमाल का बहुत सा नुकसान हुआ है।

—देशभक्त लाला हरदयाल ने जो, इस समय स्विडेन में हैं कोहाट के हिन्दुओं के लिये एक पौंड का चन्दा भेजा है।

विषय-सूची

लेख	पृष्ठ सं०	लेख	पृष्ठ सं०
		६ दौर-ए-आसमां	६९
१ द्वितीय वर्षाभिनन्दन	६१	७ जाति पर वैज्ञानिक प्रकाश ...	६९
२. विनाश का प्रबल कारण और उपाय	६२	८ सम्पादकीय टिप्पणियां ...	७२
३ जैन इपीग्रेफ़िका (कलिंग में जैन धर्म)	६४	९ साहित्य समालोचना	७५
४ जैनियों में शिक्षा प्रचार	६६	१० महिलाओं की प्रार्थना	८१
५ अहिंसा महिमा	[illegible]	११ संसार दिग्दर्शन	८२

दरिद्रता, दुर्बलता और चिन्ता व रोगों का कारण
अधिक सन्तान का होना ही है।

सुखी-जीवन

इस में वैज्ञानिक रीति पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन २ कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा बिना कारण अज्ञानतावश हजारों स्त्रियाँ क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रह सकता है आदि २। जल्दी २ सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पोषण भी समुचितरूप से नहीं किया जा सकता। रोगी माता पिता से आजन्म रोगी दुर्बलेन्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दरिद्रता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दरिद्रता के शिकार हो रहे हैं। जैसे सन्तानहीनता दुःख है वैसे ही अधिक सन्तान भी नरक ही है। सुखी जीवन में यूरोप के विद्वानों के बनाए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई हैं जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भस्थिति रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन २ औषधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है, इसका आयुर्वेद और यूनानी द्वारा वर्णन किया है। लगभग चालीस चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य २॥) मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा, अपूर्व सुगन्धि का भंडार

हिमाद्रि तैल

शिर दर्द, दिमाग की कमजोरी, आँखों की कमजोरी, आँखों के सामने पढ़ते २ अन्धेरा होना, शिर चकराना, कम आयु में ही बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमाद्रि तैल—शीतलता और सुगन्धि का खजाना है।
हिमाद्रि तैल—वनस्पति से तैयार किया गया है।
हिमाद्रि तैल—विदेशी और विषैली वस्तुओं से रहित है।
हिमाद्रि तैल—शिर दर्द से हाहाकार करनेवालों को हँसाता है।
हिमाद्रि तैल—अधिक दिन लगाने से चश्मा लगाना भी छुटाता है।
हिमाद्रि तैल—ग्रीष्म शरद् ऋतु के लिये पृथक् २ औषधियों से बनाया जाता है।

एक बार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायँगे। यदि पसन्द न हो तो दाम वापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता—शङ्कर स्वदेशी स्टोर, बिजनौर (यू० पी०)

केवल २॥) रु० में

वीर

पाक्षिक पत्र

हिन्दी में उच्चकोटि का पत्र साल भर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरञ्जन का सामान भी खूब रहता है। छपाई, सफाई, कागज सब ही उत्तम रहता है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को एक दम नया ग्रन्थ।

'महावीर भगवान'

बिलकुल मुफ़्त मिलेगा।

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीनके बाद लिखी जा रही है। यह ग्रन्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनाएं अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्ष में

वीर का विशेषांक

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिन्दी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रक्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापन दाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा।

प्रकाशक—

राजेन्द्र कुमार जैनी—बिजनौर (यू० पी०)

श्रोत्रिय जगदीश दत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष २] १५ दिसम्बर, सन् १९२४ [संख्या ४

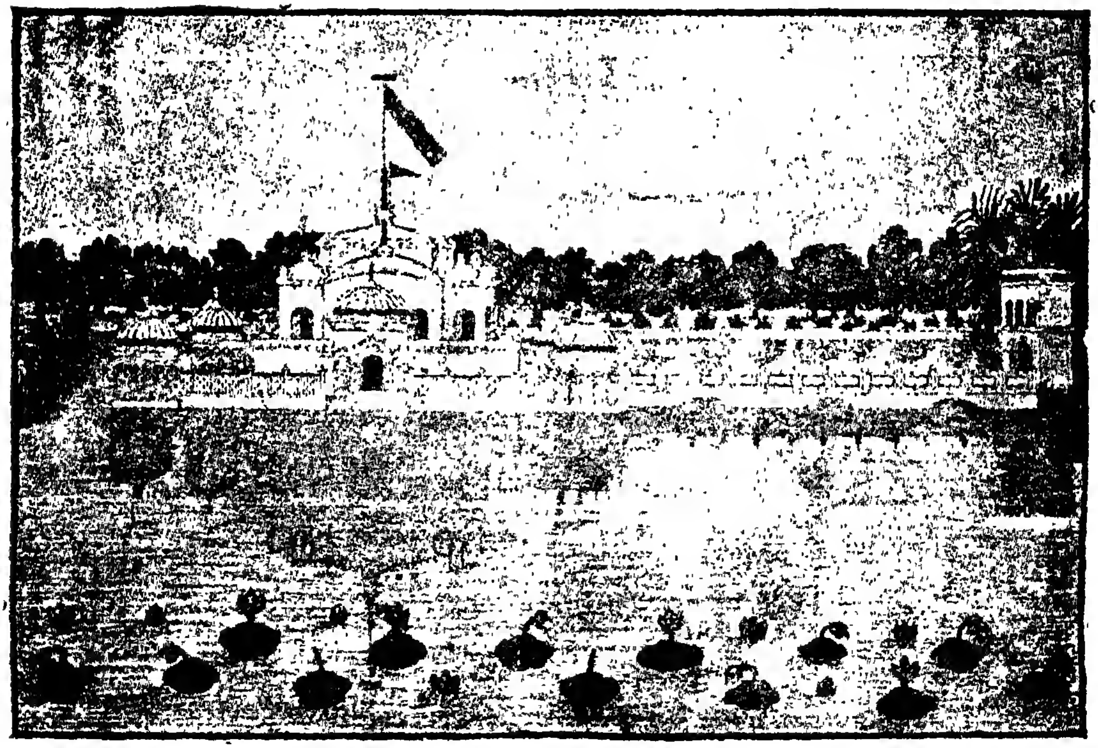

सम्पादक:—
जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादक:—
श्री कामताप्रसाद जी

प्रकाशक—
श्री० राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर।

वार्षिक मूल्य] [ढाई रुपये

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"सर्वज्ञ ! अज्ञाता की विष्लतिका बढ़ती । भारत तुम पर यह फैल फैल कर चढ़ती ॥
दमकती विद्याविनयादि गुणों की ज्योति । अवनति सब उच्चविषय की दिन २ होती ॥
सर्वेश ! यही है विनय हमारी तुम से । है छिपी नहीं कुछ बात जगत की तुम से ॥
करुणाकर ! करुणावरुणालय ! भारत में । महिमा-मरीचि छावे शुभ हो भारत में ॥"

—"भास्कर"

वर्ष २	}	बिजनौर, पौष कृष्णा ५ वीर सम्वत् २४५० १५ दिसम्बर, सन् १९२४	{	अङ्क ४

पथिक

पथिक धोखे में मत पड़ जाना,
पथ में तेरे जाल बिछा है भूल नहीं फँस जाना ।
इसकी आकृति देख देख कर तनिक न मन में फूल,
मुक्ता नहीं ओस कण हैं सुन्दरता में मत भूल । १
कठिन प्रयास न करना इसके हेतु व्यर्थ जावेगा,
केवल दिखलावट है इसमें मूढ़ न कुछ पावेगा । २
सद्विवेक, सज्ञान, सत्य मुक्ताफल उर में भरले,
मानव जीवन कनक तार में गून्थ सँगठित करले । ३
विश्वप्राणियों के हितार्थ न्योछावर कर वह माला,
सुदंरि शिववनिता के करसे पहिन भव्य वरमाला । ४

—"वसन्त"

ओम्

ओंकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥

महानुभावो ! ऐसा कौन अभागा पुरुष होगा जिस ने 'ओ३म्' शब्द न सुना हो, जिस के श्रवण मात्र से ही अनेक जीवात्मा अपने कल्याण मार्ग पर लग गये हैं। इस शब्द से अधिक गूढ़ अर्थवाची विश्वभर में और कोई अन्य शब्द नहीं है, इस को प्रायः सब ही मत मतान्तरों में सर्व श्रेष्ठ माना है। सब मंत्र, तंत्र, जंत्रो का सार इस ही में है क्योंकि यह सब में प्रथम ही प्रयोग में लाया जाता है। इस लिए ही यह मंत्रों का महामंत्र, जंत्रों का महाजंत्र और तंत्रों का महातंत्र है। वेदों की ऋचाओं का सब से प्रथम शब्द भी यही है, इस से यह भी सिद्ध होता है कि यह शब्द वेदों के निर्माण से भी पहले का है या यदि यों कहें कि यह अनादि है तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस शब्द के महत्व को कुछ २ अमेरिका यूरोपादि देशवासी विद्वान् समझने लगे हैं और मुक्तकण्ठ से इसका उच्चारण जनता के लिये बड़ा उपकारी बतलाते हैं, उन में से किसी २ ने तो इस शब्द का उच्चारण स्वास्थ्य दृष्टि से भी अत्यन्त लाभकारी बताया है। यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों का भी वाचक है यों तो सब ही इस को ईश्वर वाचक शब्द कहते हैं और ऐसा ही है भी, तथापि इन सब बातों को जानते हुए यह कहा जा सकता है कि संसार में बहुत ही थोड़े गिने चुने मनुष्य ऐसे होंगे जो इस शब्द का यथार्थ रूप समझते हों।

यही समझ कर मैंने इस शब्द को कुछ स्पष्ट रूप से जनता के उपकार के हेतु उसके सामने रखने का साहस किया है। यह मैं भली भांति जानता हूं कि उस शब्द की व्याख्या तथा महत्व-वर्णन में ग्रन्थ के ग्रंथ लिखे जा सकते हैं और लिखे हुए हैं, इस लिए इसका पूर्ण कथन तीन चार पृष्ठों में करना असम्भव ही प्रतीत होता है फिर भी मैं प्रत्येक भाव को स्पष्ट दिखलाने का जहां तक हो सकेगा भरसक प्रयत्न करूंगा।

ओम् संस्कृत भाषा का शब्द है जो संस्कृत वर्णमाला के पाँच अक्षरों से मिलकर बना है जिस में चार स्वर और एक व्यञ्जन है और वे अ, अ, आ, उ और म् हैं। व्याकरण नियमानुसार संस्कृत में अ + अ = 'आ' के होता है, आ और आ मिलकर 'आ' ही रहता है जिसमें उ मिलने से 'ओ' होजाता है बस ओ में म् मिलकर पूरा ओम् शब्द बनता है। इन पाँचों अक्षरों में कोई भी अक्षर निरर्थक नहीं है सब ही सार्थक हैं, और इन पाँचों के ही अर्थ समझने पर ओम् शब्द का महत्व पूर्णतया समझ में आजावेगा और तभी इसके उच्चारण का पूरा २ फल भी होगा, क्यों कि यह नियम है कि भली प्रकार बिना समझे हुए उत्तम से उत्तम कार्य्य का उस को समझ कर करने की अपेक्षा उसका अनन्तवाँ भाग भी फल नहीं होता।

यह पाँचों अक्षर पंच परमेष्टी के सब से पहिले अक्षर हैं। परमेष्ट (परमइष्ट सब से अधिक हितैषी) वही है जो प्राणी मात्र को दुःख से छुड़ा कर सुख-

मय बनावे। सुख के संसार में सब ही इच्छुक हैं कोई किसी बात में सुख मानता है कोई किसी में, किन्तु विचार कर देखने से प्रतीत होगा कि वास्तव में सब सांसारिक सुख दुःख रूप ही हैं और अंत में व्याकुलता उपजाने वाले हैं। बस यह सिद्ध हुआ कि जीव की व्याकुलता रहित अवस्था का नाम सुख है। व्याकुलता मोक्ष में नहीं है। जब जीवात्मा जन्म मरणादि समस्त दोषों से मुक्त होकर अपने सच्चिदानन्दस्वरूप में पूर्णतया मग्न हो जाता है उसी अवस्था का नाम 'मोक्ष' है। जो जीव को इस अवस्था के प्राप्त करने में सहकारी हो वही उसका परमइष्ट अर्थात् सब से अधिक भला करने वाला है। आगे यही दिखलाया जावेगा कि 'ओम्' शब्द का नित्यप्रति चिन्तवन ही हम को असली सुख और मोक्ष की ओर आकर्षित करता है और उनकी प्राप्ति का एक मात्र उपाय है।

'ओम्' शब्द में प्रथम अक्षर 'अ' अर्हन्त शब्द का वाचक है जिसका यह सबसे पहला अक्षर है। अर्हन्त जीवात्मा की उस अवस्था का नाम है जो इसको अपने सब शत्रुओं के निर्मूल नष्ट कर देने पर प्राप्त होती है, जैसा कि अरि + हन्त से साफ़ प्रकट है। संसार में वही किसी का दुश्मन कहलाता है जो उसकी इच्छित वस्तु के प्राप्त करने में बाधक हो, एक जीवात्मा का कोई अन्य जीवात्मा शत्रु नहीं है, यह सब परसंयोग से उसके मानसिक विचार होते हैं जो उसको ऐसा ध्यान करा देते हैं कि अमुक मेरा शत्रु है। सांसारिक व्यवहार में भी देख लीजियेगा कि यदि कोई मनुष्य यह ध्यान कर लेता है कि मेरा कोई दुश्मन नहीं है, तो उसका कोई दुश्मन रहता ही नहीं। महात्मा गान्धी इसके जीवित उदाहरण हैं। तात्पर्य यह है कि जीवात्मा अनादि से अपना वैरी आप ही बन रहा है।

यह दिखलाया जाचुका है कि प्रत्येक जीव सुख और शान्ति चाहता है और सब किसी न किसी रूप में इनहीं के मिलने का उपाय भी करते हैं, किन्तु जीव यथार्थ सुख और शान्ति को पहिचानता ही नहीं, वह इसकी खोज में कस्तूरी वाले मृग की भाँति इधर से उधर चक्कर खाता फिरता रहता है। असली सुख और शांति दूर नहीं है वह अपने आत्मा में ही है, आत्मा स्वयमेव ही सच्चिदानन्द रूप है। आकुलतारहित अवस्था को सुख कहा है। आकुलता अज्ञानतायें हैं। बस जीव के सब से विकट शत्रु वही हैं जो उसके ज्ञान दर्शनादि गुणों को प्रकट न होने दे, सो वह जीव के कर्म हैं।

कर्म वह सूक्ष्म पुद्गल परमाणु हैं जो जीव में कुछ कषायादि रूप विकार होने पर जीव की ओर आकर्षित होकर उससे चिपट जाते हैं और जो समय २ पर क्रम २ से अपना फल सांसारिक सुख दुःख रूप में देते रहते हैं। इस प्रकार से जीव माया के साथ चिपटे हुए कर्म आठ भिन्न २ सूरतें धारण कर लेते हैं:—१ ज्ञानावरणीय (ज्ञान का आवरण जो ज्ञान को प्रकट न होने दे) २. दर्शनावरणीय जो वस्तु के यथार्थ स्वरूप देखने में बाधक हो) ३. मोहनीय (जो सांसारिक माया में फँसाये रक्खे) ४. अन्तराय (जो आत्मा के वीर्य, दान, लाभ, भोग उपभोग में विघ्न डाले), ५ नाम कर्म का स्वभाव आत्मा को नाना प्रकार के शरीर अङ्गोपाङ्गादि देने का है, ६ गोत्र कर्म ऊँच या नीच गोत्र में उत्पन्न करता है ७ आयु कर्म का स्वभाव आत्मा को किसी

भी शरीर में नियमित समय तक अटकाने का है।
८. वेदनीय की प्रकृति आत्मा में सुख दुःख उत्पन्न करने की है।

यहां पर इतना ही दिखलाना बस है कि पहले चार कर्म घातिया अथवा जीव के स्वरूप को घात करने वाले हैं और अंत के चार अघातिया हैं अर्थात् वे जीव को अपना असली सुख व शान्ति अनुभव करने में कुछ बाधक नहीं होते। इस थोड़े से स्थान में इनका सविस्तर वर्णन करना नितान्त असम्भव है, अतएव अरिहन्त जीव की उस अवस्था का नाम है जब कि जीव अपने चार घातिया कर्मों को नष्ट करके अनन्त चतुष्टय (अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य, अनंत सुख) रूप ही होजाता है।

अर्हन्त अपने अनन्त ज्ञान द्वारा तो तीनों लोक (आकाश, मध्य, पाताल) और तीनों काल (भूत, भविष्यत, वर्तमान) की सब ही बातों को एक साथ जानते हैं। अनन्त दर्शन द्वारा उनको सामान्यरूप से देखते हैं। अनन्तवीर्य से उपरोक्त (जानने देखने की) शक्ति रखते हैं और अनन्त सुख द्वारा निराकुल परमानन्द का अनुभव करते हैं। अरहंत रागद्वेष आदि सब विकार भावों से रहित शान्त रस रूप होते हैं। वे भूख, प्यास, जन्म, मरण, बुढ़ापा आदि सर्व दोषों से मुक्त होजाते हैं। उन्हींके उपदेश से संसार में सत्य धर्म फैलता है। वे नाना प्रकार के विभव और अतिशय युक्त होते हैं, उनकी गणधर इन्द्रादिकदेव पूजा, उपासना करते हैं। ऐसे सर्व प्रकार पूजने योग्य श्रीअर्हन्त देव हैं उन को हम मन, वचन, काय से उन्हीं जैसा बनने की चेष्टा से नमस्कार करते हैं। इस प्रकार थोड़े से शब्दों में प्रथम 'अ' का अर्थ तथा स्वरूप दिखलाया।

दूसरा 'अ' अशरीरि शब्द का प्रथम अक्षर है। अशरीरत्व अथवा निराकारत्व जीव आत्मा का ही स्वरूप है। इसके लिये दूसरा शब्द सिद्ध भी है, अतएव यह 'अ' सिद्ध शब्द का वाचक है।

अरहन्त अवस्था के कुछ काल पीछे शेष चार अघातिया कर्मों का स्वयमेव ही नाश होने से जीव को उसकी सिद्ध अवस्था प्राप्त होती है। तब यह जीवात्मा अर्हन्त अवस्था के परमौदारिक शरीर को भी छोड़ ऊर्ध्वगमन स्वभाव से लोक के अग्रभाग विषै निराकुल आनन्दमय शोभित होता है। इस ही अवस्था का नाम ईश्वर में लीन होना, अथवा मुक्ति, मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करना है। बस इसको सिद्ध, शिव, ईश्वर, भगवान, परमात्मा, गाड खुदा आदि किसी नाम से पुकारिये सब एक ही बात है। इनके नित्यप्रति ध्यान से ही निज पर का ज्ञान होता है, एवं भव्य पुरुष इनकी उपासना करके स्वयमेव इन समान बनने का प्रयत्न किया करते हैं ऐसे सिद्ध भगवान को जो सर्वथा कृतकृत्य हैं और जो अपने ही आनन्द में सदैव लीन रहते हैं और रहेंगे हम अपनी सिद्धि के लिए नमस्कार करते हैं।

'आ' आचार्य 'उ' उपाध्याय और 'म्' मुनि के वाचक हैं और इनके प्रथम अक्षर हैं। यह भी सब जीवात्मा की ही अवस्थायें होती हैं, यह अवस्थायें उपरोक्त दोनों अवस्थाओं (अर्हत, सिद्ध) की सहकारी हैं, अथवा यों कहिये कि ये मुक्त होने की सीढ़ी के नीचे के डण्डे हैं।

जो जीवात्मा संसार से उदासीन होकर, सब परिग्रह को त्याग, मुनि धर्म अङ्गीकार कर अन्तरंग में तो अपने शुद्ध ज्ञानद्वारा अपने को शरीरादि बाह्य पदार्थों से भिन्न जानते हैं, अपने ज्ञानादिक स्वभावों

को ही अपना मानते हैं, अन्य वस्तुओं में ममता बुद्धि नहीं रखते। पर द्रव्यों को जानते सब हैं किन्तु उनको इष्ट अनिष्ट मानकर उनसे रागद्वेष नहीं करते। शरीर की अनेक अवस्थायें होती हैं। बाह्य नानाप्रकार के संयोग मिलते हैं परन्तु ये उनमें कुछ सुख दुःख नहीं मानते। अपने योग्य बाह्य क्रिया जैसी बनती हैं वैसे ही कर लेते हैं, खेंच तानकर कुछ नहीं करते, उदासीन हो निश्चल रहते हैं। इस अवस्था में तीव्र कषायों के न होने से हिंसादि रूप अशुभ भावों का तो अस्तित्व भी नहीं रहता। इस प्रकार जीव की अन्तरंग अवस्था होती है। बाह्य में ऐसे मुनि दिगम्बर सौम्य मुद्रा के धारक होते हैं। शरीर का संवारना आदि क्रियाओं से विरक्त है, वनखण्ड आदि एकान्त स्थानों में वास करते हैं। २८ मूलगुणों को अखण्डित पालते हैं, २२ परिषहों को सहते हैं, १२ प्रकार का तप करते हैं (यहाँ ये सब विशेषरूप से स्थानाभाव के कारण नहीं दिखलाये जा सकते)। कभी २ ध्यानमुद्रा धारण कर प्रतिमा समान निश्चल होजाते हैं, इसप्रकार के सर्वश्रेष्ठ मुनि होते हैं।

ऐसे मुनियों में कुछ ज्ञान तथा चारित्र की अधिकता से प्रधानपद को प्राप्त कर नायक (नेता, लीडर) होजाते हैं। वे विशेष कर तो स्वरूप आचरणमें ही मग्न रहतेहैं। कभी २ धर्मके लोभी अन्य जीवों को देख करुणा बुद्धि से उनको धर्म उपदेश देते हैं, जो दीक्षा लेने वालेहैं (गृहस्थियों से मुनि बनना चाहते हैं) उनको दीक्षा देते हैं। जो अपने दोष प्रकट करते हैं उनको प्रायश्चित्त विधिसे शुद्ध करते हैं। इस प्रकार आचरणों को शुद्ध करने वाले तथा कराने वाले आचार्य हैं, ऐसे महात्माओं को हम अपने आचरण शुद्धि के अर्थ नमस्कार करते हैं।

उपरोक्त प्रकार के मुनियों में ही कुछ ऐसे होते हैं जो सब शास्त्रों के मर्म को जानते हैं। ये भी एकाग्रचित्त होकर अपने ही स्वरूप का चिन्तवन किया करते हैं और जब वहां बहुत देर तक ध्यान नहीं जमता तो शास्त्रों को स्वयं पढ़ने लगते हैं अथवा कभी अन्य धर्म बुद्धियों को पढ़ाने लगते हैं। इसप्रकार भक्तों को अध्ययन कराने वाले उपाध्याय हैं तिनको हमारा साष्टाङ्ग नमस्कार होवे।

इन दोनों पदवीधारक मुनियों के अतिरिक्त सब साधारण मुनि कहलाते हैं जिनका स्वरूप ऊपर दिखलाया जाचुका है। ये अपने स्वभाव को साधते हैं, ऐसा प्रयत्न करते हैं जिससे इनका मन पर द्रव्यों में न फँसे, इसी के लिए तपश्चरण आदि क्रियायें करते हैं। ऐसे आत्मस्वभाव के साधक मुनि अथवा कहिये साधु हैं। इनको हम बारंबार नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार से संक्षेप में ओम् शब्द की व्याख्या हुई। अब इस शब्द का महत्व पाठकगण स्वयं अनुमान में ला सकते हैं कि जिसके उच्चारण से हमारे मस्तिष्क में जीवात्मा की इतनी दशायें चक्कर खाने लगें, जिससे हमको अपने सम्बन्धी इतना ज्ञान होजाय और केवल इनकी जानकारी ही नहीं किन्तु फिर हम अपने आपको भी ऐसा ही बनाने का प्रयत्न करते जायँ और एक दिन वह आये कि हम भी अपने सच्चिदानन्द स्वरूप में पूर्णतया मग्न होजायँ तो मैं नहीं समझता कि इससे बढ़कर महत्त्ववाला अथवा प्राणिमात्र के लिये लाभकारी संसार भर में कोई अन्य पदार्थ होसकता है, कदापि नहीं।

—मुख्त्यारसिंह, मेरठ।

असहयोग और जैनधर्म दो नहीं हैं

असहयोग की चर्चा आतेही हमने बहुतसे जैनी भाइयों को यह कहते सुना है कि असहयोग से जैनधर्म का कुछ लाभ होना तो पृथक् प्रत्युत हानि ही होगी। किन्तु उनका यह कहना केवल असहयोग और जैनधर्म के सिद्धान्तों सम्बन्धी अज्ञानता के कारण से ही है, हम नीचे दोनों के सिद्धान्तों की तुलना करते हैं पाठक उन से देखेंगे कि असहयोग और जैनधर्म के सिद्धान्तों का सब धर्मों से अधिक साम्य है।

असहयोग शब्द का अर्थ साथ न करना है। किन्तु इस साथ न करने का तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य संसार में जिस प्रकार अकेला आया और अकेला जावेगा उसी प्रकार अकेला रहाकरे और किसी का साथ न करे। क्योंकि शरीर की स्थिति के लिये आहार, जल, तथा वस्त्र की आवश्यकता पड़ती ही है, और जिन को आहार, जल, तथा वस्त्र की आवश्यकता है उनको इन वस्तुओं को उत्पन्न करने अथवा रखने वालों से सम्बन्ध करने की आवश्यकता पड़ती ही रहेगी। असहयोग देखने में तो राजनैतिक आन्दोलन है किन्तु वास्तव में यह विशुद्ध धार्मिक अथवा आध्यात्मिक आन्दोलन है भारत में राजनीति धर्म की अङ्ग हुआ करती है। अतएव असहयोग धर्म होते हुए भी आध्यात्मिक स्वतन्त्रता के साथ ही साथ राजनैतिक स्वतन्त्रता दिलाने का भी अमोघ अस्त्र है। राजनीति व्यक्ति को कभी अकेला रहने को नहीं कहती। उसका सदा उपदेश यही रहता है कि दूसरों के साथ इस प्रकार मिल जुल कर रहो जिससे देश का कल्याण हो। ऐसी अवस्था में असहयोग से यह अभिप्राय नहीं है कि पुरुष सबका सहयोग छोड़कर अकेला ही रहा करे, किन्तु इस का अभिप्राय बुराइयों अथवा बुराइयों को उत्पन्न करनेवालों का सहयोग छोड़ना है, हम भारतवासी इस समय स्वतन्त्रता के मार्ग में आगे बढ़ते हुए चले जा रहे हैं अस्तु जो कोई इस प्रशस्त उद्योग में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बाधा दे वही बुराई को उत्पन्न करने वाला है। हमारा कर्तव्य है कि असहयोगी (बुराई के छोड़ने वाले) होते हुए हम उसका संग छोड़ दें। क्योंकि ऐसा न हो कि उसके संग से हम में ऐसे भाव उत्पन्न हो जावें कि हम उस शुभ मार्ग को ही छोड़ दें। यहां यह बात ध्यान रखने योग्य है कि यद्यपि असहयोग बुराई उत्पन्न करने वालों का संग छोड़ने का आदेश करता है तथापि वह उन से द्वेष करने को आदेश नहीं देरहा। क्योंकि द्वेष स्वयं एक बुराई है। असहयोग उन लोगों से मध्यस्थभाव रखने का अनुरोध करता है।

अब तनिक असहयोग के इस सिद्धांत को जैन धर्म से मिलाप करके देखिये, जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के पूज्यग्रन्थ श्री तत्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्र सातवें अध्याय में श्री उमास्वामी महाराज ने कहा है--

मैत्री प्रमोद कारुण्यमाध्यस्थानि च सत्व-गुणाधिक्लिश्यमानाविनयेषु ॥ ११ ॥

इसी को श्रीअमिगति ने भगवान से वरदान रूप में मांगा है॥

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्
माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ
सदाममात्मा विदधातु देव ॥
समायिक पाठ ॥१॥

अर्थात् हे देव। मेरी आत्मा को ऐसी बना दीजिये कि मैं सदा ही संसार के सब जीवों में मैत्री भाव रक्खा करूँ, जो मुझ से गुणों में अधिक हैं उनको देखते ही मेरे चित्त में प्रमोद (हर्ष) भाव हो आया करे जो मुझ से विपरीत वृत्ति वाले हैं अर्थात् मेरे मार्गको बुरा समझने वाले अथवा उस में बाधा पहुंचाने वाले हैं उनके साथ मेरा माध्यस्थ भाव अर्थात् न राग न द्वेष रहे।

इस प्रकार आपने देखा होगा कि असहयोग की परिभाषा किस प्रकार जैनधर्म में ज्यों की त्यों मिल गई।

सारांश में तो इतना कह देने से ही असहयोग का तात्पर्य पूर्ण हो जाता है किन्तु 'बुराई को छोड़ो' यह कहना तो सरल है किन्तु लोगों को उस बुराई को पहचनवा कर उससे उन्हें छुड़ाना बहुत ही कठिन है।

महात्मा गांधी ने उस बुराई के दो भेद किये हैं। एक आभ्यन्तर दूसरी बाह्य। मन में हिंसा भाव रखना आभ्यन्तर बुराई है। और बुराई करने वालों के सब व्यवहार बाह्य बुराई है।

जैनधर्म में हिंसा जितना व्यापक शब्द है महात्मा गान्धी भी उनको उतना ही व्यापक मानते हैं। हिंसा कहने मात्र से ही संसार भर के असत्य भाषण, चोरी, परस्त्रीगमन, अत्यन्त लोभ करना सभी दोष आगये, जैसा कि श्री अमृतचंद्र आचार्य ने श्री पुरुषार्थसिद्ध्युपाय जी में कहा है—

आत्मपरिणामहिंसनहेतुत्वात्सर्वमेव हिंसैतत्।
अनृतवचनादिकेवलमुदाहृतं शिष्यबोधाय ॥४२

अर्थात् आत्मा के शुद्धोपयोग रूप परिणामों के घात होने के कारण होने से ये सब पाप हिंसा ही हैं। असत्य भाषण आदि भेद तो केवल शिष्यों को समझाने के लिये उदाहरण रूप से कहे जाते हैं।

एक पूर्ण असहयोगी का कर्तव्य है कि वह काय से हिंसाकार्य करना और वचन से हिंसा करने के लिये कहना तो प्रथक् हिंसा की बात को मन में भी स्थान न दे।

अब यहां हिंसा की परिभाषा भी कर देनी चाहिये जिस से प्रत्येक पुरुष यह निर्णय कर सके कि अमुक कार्य हिंसा जनक है अथवा नहीं।

श्री अमृतचंद्र आचार्य ने उसी पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में कहा है—

यत्खलु कषाययोगात् प्राणानां द्रव्यभावरूपाणाम्
व्यपरोपणस्य करणं सुनिश्चिता भवति सा हिंसा

अर्थ- कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) के योग से किसी आत्मा के द्रव्य प्राण (शरीर के अवयव) अथवा भाव प्राण (आत्मा के शुभ भाव) का घात करना हिंसा कहलाती है।

अर्थात् किसी को क्रोध दिलाना, लोभ दिलाना गाली देना, उसकी निन्दा करना, चुगली करना, उसको पीटना अथवा मारना आदि सभी कार्य हिंसा है।

यहाँ यह बात ध्यान रखने योग्य है कि योग्य आचरणवाले पुरुष के राग आदिक भावों के बिना केवल प्राण पीड़न से ही हिंसा नहीं होती। अर्थात् यदि कोई डाक्टर रोगी को बचाने की इच्छा से उसका आपरेशन करे और रोगी आपरेशन को न सम्भाल सकने के कारण मर जावे तो डॉक्टर उसकी हिंसा का भागी न होगा।

दो चार उदाहरणोंसे और भी स्पष्ट होजावेगा जिस पुरुष के परिणाम हिंसारूप हैं वह हिंसा का कोई कार्य न करने पर भी हिंसा के फल को भोगेगा। क्योंकि वह कम से कम अपने भाव प्राणों की तो हिंसा कर ही चुका, और जिसके शरीर से उपरोक्त डाक्टर के समान किसी कारण हिंसा होगई हो किन्तु उसके परिणाम आदि एक रहे वह हिंसा के पाप का भागी कभी न होगा।

जो पुरुष बाह्य हिंसा तो थोड़ी कर सका हो किन्तु उसके परिणाम अत्यन्त हिंसा भई हों वह तीव्र हिंसा कर्म के बन्ध का भागी होगा, और जो पुरुष परिणामों में हिंसा के अधिक भाव न रख कर बाह्य हिंसा अचानक बहुत कर गया हो वह मंद हिंसा कर्म के बन्ध का भागी होगा।

किसी जीवको मरते देखकर अन्य देखने वाले जो अच्छा कहते व प्रसन्न होते हैं वे सब ही हिंसा फल के भागी होते हैं। इसी से कहते हैं कि एक करता है और फल अनेक भोगते हैं, तथा इसी प्रकार संग्राम में हिंसा तो अनेक पुरुष करते हैं परन्तु उनको आज्ञा करने वाला राजा उन सब हिंसाओं के फल का भागी होता है अर्थात् अनेक करते हैं और फल एक भोगता है।

कोई जीव किसी जीव को बुरा करने का यत्न कर रहा हो परन्तु (जीव) के पुण्य से कदाचित् बुरे के स्थान में भला हो जावे तो बुराई करने वाला प्रत्येक अवस्था में बुराई के फल का भागी होगा। उपरोक्त डाक्टरके अनुसार कोई व्यक्ति बुराई करके भी भलाई के फल को पावेगा।

मन, वचन, तथा काय से की हुई हिंसा इस प्रकार की होती है। उसी को छोड़ने के लिये महात्मा गांधी तथा जैन धर्म दोनों का उपदेश है। हम को खेद है कि आजकल के जैनी लोग इस हिंसा को भूल गए हैं। और उनकी अहिंसा केवल छोटे छोटे कीड़े मकोड़ों की रक्षा करने और छान कर पानी पीने में ही परिमित रह गई है। आजकल के जैनी अहिंसा का पाठ रटते २ ऐसे कायर बन गये कि वह गत दङ्गों में मुसलमानों के आक्रमण होने पर अपनी माँ बहिनों को उनके हाथों में छोड़ अपने प्राण लेकर भागे, वह इस बात को बिलकुल भूल गये हैं कि जैनधर्म क्षत्रियों का धर्म है। उनको यह स्मरण नहीं है कि पूर्ण अहिंसक वही हो सकता है कि जो वीर है, उनको यह विस्मरण होगया कि शरणागत (कम से कम अपने घर की स्त्रियों) की रक्षा करना बड़ा भारी पाप है, वह अभयदान के महत्त्व को भूल गये हैं। आजकल के बहुत से जैनी बहते हुए रक्त को देखकर मूर्छित होने पर अपने को बड़ा भारी धार्मिक समझते हैं किन्तु उनकी यह भूल है, मूर्छित होने वाले दया से मूर्छित न होकर घृणा के आवेग को न सम्भाल सकने के कारण मूर्छित होते हैं। घृणा जैनशास्त्रों के अनुसार मोहनीय कर्म की एक प्रकृति जुगुप्सा के उदय से होती है और घृणा करने से जुगुप्सा प्रकृति का और भी बन्धन होजाता है। जुगुप्सा प्रकृति पाप

प्रकृति है, अतएव जैनियों को घृणा को जीतकर जुगुप्सा कर्म का बन्ध नहीं होने देना चाहिये। सम्य घृणा को जीते बिना सम्यक्त्व का निर्विचिकित्सा अङ्ग भी नहीं होता। अतएव घृणा करना भी हिंसा है।

यह आन्तर बुराई का वर्णन हुआ। जो व्यक्ति इस आन्तर बुराई को मन, वचन, काय से छोड़ देगा वह बाह्य बुराई को भी अवश्य छोड़ देगा। बाह्य बुराई का क्षेत्र महात्मा गांधी और जैन धर्म दोनों के अनुसार बड़ा व्यापक है। अतएव दोनों ने ही इनको क्रम से थोड़ी छुड़वाई है। अन्तर दोनों के केवल क्रम में ही है।

महात्मा जी अभी केवल ५ वस्तुओं को छुड़ाते हैं अर्थात् उनका बहिष्कार कराते हैं। विदेशीवस्त्र, सरकारी उपाधियां, सरकारी न्यायालय, सरकारी विद्यालय और कौन्सिल।

इन पाँचों बहिष्कारों में राजनैतिक कारण प्रधान है जिनकी चर्चा हम को इस स्थान पर नहीं करनी है। हम को यहाँ केवल यही देखना है कि जैन सिद्धान्त इन पंचबहिस्कारों में साधक हैं अथवा बाधक हैं।

जैन शास्त्रों में भी अन्य हिन्दू शास्त्रों के समान राजा का धर्म तन, मन, धनसे प्रजा पालन करना बतलाया है। जो राजा प्रजापालन नहीं करता उस को पापी तथा राज्य करने के अयोग्य बतलाया है। ऐसे राजाओं को गद्दी से उतारने के अनेक उदाहरण जैनशास्त्रों में मिलते हैं। वर्तमान भारत सरकार की भारत पर राज्य करने की जो नीति है वह किसी से छिपी नहीं है, अर्थात् यह सरकार बनिया सरकार है। भारत के धन से इग्लैंड वासियों का पेट भरना ही इस सरकार का मुख्य ध्येय है। इसको जहां इस ध्येय में बाधा की तनिक भी शंका हुई कि इसने जलयानवाला बाग जैसे अश्रुतपूर्व कार्य किये। अस्तु ऐसी प्रणाली को दूर करने के लिये राष्ट्र हमारे लिये जो कार्य निश्चित करे उसे पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है। यद्यपि सरकारी उपाधियों, सरकारी न्यायालयों, कौन्सिलों, सरकारी विद्यालयों और विदेशी वस्त्र में बहुत से राजनैतिक तथा नैतिक हानियां हैं तथापि हम को उन को ध्यान में न लेकर केवल राज्य सुधार अपना धर्म समझके इस का बहिष्कार करना चाहिये। विदेशी वस्त्रों में चर्बी लगाई जाती है जिसको छूना भी हमारे लिये बड़ा भारी पातक है।

अस्तु यह सिद्ध हो गया है कि असहयोग और जैन धर्म बिलकुल एक हैं। केवल त्याग के क्रम को भिन्न २ प्रकार से बतलाते हैं जिस में हमारी कोई हानि नहीं है।

आशा है कि जैनी भाई हमारे इस लिखने से लाभ उठावेंगे।

नोट—अन्य जैन पत्रों को भी इस लेख को प्रचारार्थ प्रकट करना चाहिए।

चन्द्रशेखर शास्त्री
काव्यसाहित्य तीर्थाचार्य
प्रोफेसर।

काग़ज़ी सुधारक

हो चुका बस आप से उद्धार रहने दीजिये ।
मात होगी बर्क़[१] यह रफ़्तार रहने दीजिये ॥
है कमर लचकी हुई, आँखें धँसी सूखा बदन ।
बस सुधारा हो चुका गुफ़्तार रहने दीजिये ॥
कौमी बरबादी को काफ़ी आपके शीरीं सख़ुन[२] ।
सरकार दलदल की छुरी तलवार रहने दीजिये ॥
बाद-ए-सबा आने न पाए गुलशन-ए-वीरानमें ।
बोलते उल्लू रहें बिसमार रहने दीजिये ॥
दिल लगाना कौम की उल्फ़तमें लोहे के चने ।
हैं यह कोरी झंझटें सरकार रहने दीजिये ॥
साहिबे दौलत हो इल्म ओ हुनर से मामूर हो ।
खेल खोजों दूसरा यह बार रहने दीजिये ॥
जोशे सादिक़ से जो कौमी[३] शमअ के परवाने हैं
उन साफ़गो[४] कम फ़हम[५] को बेज़ार रहने दीजिये ।

—"भारतीय"

---

१ बिजली २ मिष्ठवचन ३ जातीय दीप ÷
४ खरे वक्ता ५ कमसमझ

सुमन सञ्चय

(गल्प)

"यह विकसित कुसुम कृष्ण सा क्यों प्रतीत होता है" कहते २ मालिन ने भार निकट आकर उसे लता से प्रथक कर दिया और हाथ की टोकरी की शोभा बढ़ा दी। लताओं की शोभा कहां बिखर गई? उस को पुनः कैसे अतिथि बनाऊँ उसे कहां जा कर पाऊँ? प्रभो कुछ बोध दो, पुनः कुञ्ज में अनुपम जीवन रक्तसञ्चार हो आदि कहते २ मूर्छित होकर गिर पड़ी। टोकरी का अन्य सञ्चित सुमनपुञ्ज भी एक दशामें होगया। अभी मालिन पड़ी ही हुई है उसे कुछ बोध नहीं।

इस समय उपवनमें अलि गुञ्जार नहीं हो रहा है सब यथास्थान चले गये हैं-जन-पद रव ने भी विश्राम लिया। शुक-सारिकायें भी नहीं हैं जो मालिन को कुछ प्रति बोधित करें। सन्तापी सूर्य ने इस परिताप को अतिथि बना कर इस वाटिका में भेजा है। अतिथि का अनादर असह्य किसे न होगा। उस परिताप का भलिभांति सम्मान किया गया।

मालिन कुछ सचेत हुई थी। उसे मालूम पड़ा कि प्रियतम के चरणों की आहट है, सहसा उठ बैठी, प्रतीक्षा की किन्तु उन का पद-रव नहीं, था; लेट गई। निराशा-मद ने भी उसे बन्धन में फँसा दिया।

इसी अचेत अवस्था में बिजली की गति को पराजित करने की गति से आकर उस के प्राण नाथ ने कहा प्रिये! क्यों क्या हुआ? आज ऐसी

अचेत क्यों ? मैं जितने प्रेम से पूँछता हूं उस से कहीं अधिक निष्प्रेम के शर छोड़ कर मेरे हृदय मृग को निष्प्राण कर देने के यत्न करती हो !

मालिन सचेत सी हुई, उस ने कर-कोकनद्वय-धरा माली के हाथ को क्रोध से हटा दिया। इससे माली को और व्यथा भार सहना पड़ा। ज्यों २ सचेत होती जाती है त्यों २ कथा के पट्ट आने लगते हैं और माली के मृण के सुख साम्राज्य की आशा चेतती जाती है। मालिन की आँखें खुलीं कि मालीने प्रेमालिङ्गन किया और कहा प्रिये! तुमको मालूम नहीं कि मैं कितनी देरसे तुम्हारे पास बैठा हुआ हूं।

मालिन-प्रिय! मैंने तुम्हारी अनेक बार प्रतीक्षा की किन्तु तुम्हारे चरणों की आहट नहीं आई निराश हो गई और अचेत पड़ी रही।

माली-आज दीपकों का प्रकाश न होना मेरे चुपके से आने में प्रबल साधन है। मैं समझा न जाने इस में चोर घुँसे न हों! लता २ की ओट में देखता आया कि कोई हो तो मुझे डरा न दे वे।

मालिन-प्रकाश न सही किन्तु फिर भी इतनी दूर तक आ कैसे गये।

माली—तुम्हारा प्रेम-दीपक मेरे हाथ में था, अस्तु इससे क्या, मैं कैसे ही आया किन्तु तुम यह तो कहो कि आज दीपक क्यों नहीं जलाये? और ऐसी अभी तक बेसुध पड़ी रही-यदि आज स्वामी आते तो क्या कहते?

मालिन—कुछ तो तुम्हारी प्रतीक्षा?......... ।

माली—मेरी प्रतीक्षा आज इतनी जल्दी क्यों?

मालिन—मैं समझी कि अधिक रात्रि होगई—

माली—ऐसा क्यों? यही न? कि तुमने दीपक नहीं किया।

मालिन—(स्वगत) क्या कहूं? यदि कहूं कि फूलों को तोड़ने से उपवन की शोभा नष्ट होगई है इसको पुनः आह्वान-विसर्जन की उधेड़ बुन में रही तो ये सुनकर क्या कहेंगे! ऐसा समझ इनको कुछ न कहूँगी।

मालिन—अच्छा आपको क्या? आप तो सकुशल आपहुंचे।

माली—मुझे इसकी चिन्ता नहीं किन्तु सत्य का देखना है-मुझसे छिपाती हो। कहो इसमें रहस्य मधु भरा हुआ है?

मालिन—मैं सुमन-सञ्चय कर रही थी कि……

(अति लज्जा पराभूत होकर न कहना और माली का आग्रह).

माली—मुझसे छिपाकर किस कोने में रक्खोगी?

मालिन—क्या कहूँ आज सुमनसंचय करती थी। जब पुष्पावली टोकरी में निवास पागई तो मैंने पीछे देखा कि जिस उपवन में इतनी शोभा थी वह निष्प्रभ होगई! इसका कारण मैं हूं। बस फिर क्या था? मुझे परिताप ने सताया। सूर्य रश्मि-सैन्य ने मेरे हृदयमन्दिर में स्थान लिया इसी लिये सन्तप्त रही।

माली—(स्वगत) आज इतना सन्ताप! होगा। निस्सन्देह बात सच है। पुष्पहीन वाटिका में भय होजाना क्या असम्भव है? (प्रकट) इतना परिताप करना अनुचित था धूप छाया का खेल है। जो सूर्य प्रचण्ड करों से संसार को सन्तप्त करता है किन्तु प्रतिदिन उदित होता है। कमल प्रतिदिन मुरझाते और अरुण होते

हैं। पुनः पुष्पावलि होगी, उसे देख कर प्रसन्न होना और जल सिञ्चन का मधुफल देखना यह संसारचक्र है। विषाद परित्याग करो।

—'भूमर'

सम्पादकीय टिप्पणियां

१—वर्धा अधिवेशन सफल बनाइए

भा० दि० जैन परिषद् का आगामी वार्षिक अधिवेशन माघ मास में होना निश्चित हो ही गया है और यह जान कर पाठकों को हर्ष होगा कि वहां उसके लिए तैयारियां भी होना शुरू हो गई हैं। स्वागतसमिति का संगठन भी हो गया है। सारांशतः वर्धा के सज्जनवृन्द तो अपने कर्तव्य पालन में लग गए हैं। अब केवल परिषद् के मेंबरों और शुभचिन्तकों को अपने कर्तव्य की ओर दृष्टिपात करना आवश्यक है। उन्हें वह उपाय सर्व समक्ष में लाने चाहिए जिन से समाज का हित और धर्म की उन्नति होकर अधिवेशन सफल हो सके। यह तो प्रकट ही है कि परिषद् का जन्म मात्र ठोस कार्य करने के लिए हुआ है। केवल बातें बनाने अथवा ख्याति प्राप्त करने के लिए नहीं हुआ है। और न किसी भी संस्था महासभाओं अथवा अन्य-उनका विरोध करने से मतलब है। क्योंकि प्रतियोगिता में कभी भी कुछ सफलता प्राप्त नहीं होती। तिस पर जैनसभाओं के उद्देश्य एक ही हैं। फिर उन में आपसी प्रतिरोधका स्थान नहीं है। यदि कहीं प्रतिरोध दिखाई पड़े तो वह व्यक्तिगत मान कषाय के वश हो सका है। परन्तु हम कह सक्ते हैं कि परिषद् इन "बलाओं" से मुक्त है। उसके कार्यकर्त्ताओं को सच्चे दिल से निःस्वार्थ भाव से समाज और धर्म की सेवा यथाशक्य करनी है। इसी व्याख्या की पुष्टि में परिषद् की गत कार्य्यवाही मौजूद है। उसने जो कुछ थोड़ा बहुत कार्य किया है वह ठोस कार्य है। यद्यपि हम यह अवश्य कहेंगे कि जिस वेग से कार्य होना चाहिए था उस से नहीं हुआ है! परन्तु इसमें दोष कार्यकर्त्ताओं का नहीं है। दोष रुपए और कार्यकर्त्ताओं की कमी का है। इस समय यदि परिषद् को कतिपय और निःस्वार्थी सच्चे कार्यकर्त्ता मिल जावें तो हमें विश्वास है कि परिषद् शीघ्र ही अपने उद्देश्य की पूर्ति करले और उसे रुपए की कमी का भी सामना न करना पड़े।

अतएव वर्धा अधिवेशन में सब से बड़ा यदि कोई कार्य है तो यही कि सच्चे निःस्वार्थी कार्यकर्त्ता कार्य करने के लिए कर्म क्षेत्र में आवें। मध्यप्रान्त से हज़ारों की संख्या में जैनी परिषद् के मेम्बर बनें और अपने कर्तव्य का पालन करें। स्वा० समिति को उचित है कि वह परिषद् के कार्य को और उसके महत्व को मध्यप्रान्तीय भाइयों के कानों तक पहुंचा देवे। और अंग्रेजी विज्ञ नवयुवकों को धर्म व समाज की सेवा के लिए उत्सा-

हित करे। साथ ही इसी समय यदि हिन्दी जैन साहित्य के महत्व को सर्व साधारण में प्रकट करना अभीष्ट हो तो हिन्दी प्रेमी जैन विद्वानों को वहां पहुंच कर परिषद् के अन्तर्गत एक "जैन हिन्दी समिति" स्थापित कर जैन नवयुवकों को हिन्दी साहित्य की सेवा करने को उत्साहित करने के लिए कार्य करना चाहिए। हिन्दी प्रेमी जैन विद्वानों को इस पर ध्यान देना चाहिए। बल्कि अधिवेशन के साथ ही यदि हो सके तो जैनकवियों और लेखकों से कवितायें और लेख मंगाना चाहिए। उसके लिए समस्यायें और लेखों के लिए विषय प्रकट करना चाहिए। तथा पुरस्कार के लिए स्वर्णपदक और रजतपदक प्रदान करने का प्रबन्ध करना चाहिए। स्वा० समिति तथा मन्त्री महोदय को इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

२–जैनी और वर्त्तमान स्थिति

गत कुछ महीनों में भारत में क्या २ रङ्ग खिले वह राष्ट्रीय पत्रों के पाठकों से छिपे नहीं हैं। महात्मा जी का अपने असहयोग प्रोग्राम पर दृढ़ रहना और स्वराज्यवादी नेताओं का उनका विरोध करना महात्मा जी का कांग्रेस प्रोग्राम बन्धन शिथिल करना और स्वराज्यवादियों से समझौता करना–आर्यसमाजियों का शुद्धिसंग्राम मचाना और महात्मा जी के स्पष्ट वक्तव्य पर क्रुद्धमय ताण्डवनृत्य करना–शुद्धि के फलस्वरूप हिन्दू-मुस्लिम अनैक्यता का अंकुर फूटना और स्थान २ पर हिन्दू मुसल्मानों में सिरफुड़ौवल होना–जिस पर महात्मा जी का २१ दिन अनशन व्रत करना और सर्व समाजों के नेताओं का दिल्ली में एकत्रित हो झगड़े की जड़ मेटने के प्रयत्न करना–तिस पर भी जान बूझकर इलाहाबाद झगड़ा हो जाना हमें राजनीति के गोरखधन्धे के दांवपेंच दृष्टिगत कराते हैं। इधर विलायत में लेबरपार्टी का हारना, जिस पर हमारे कतिपय देशवासियों को (जो मृगतृष्णावत उन्हीं से भारत को सुखी होने के स्वप्न देखते हैं) भारत का भलाई का बहुत भरोसा था और कान्जर्वेटिव पार्टी का सत्ता प्राप्त करना 'सरकार' का बङ्गाल में 'तूफान' उठने का अंदेशा करना और इकबारगी गिरफ्तारियों से जनता में खलबली मचा देना इत्यादि राजकीय 'कर्तव्यों' को दिग्दर्शन है। परन्तु इस सब से भारत की क्या भलाई हुई यह समझ में नहीं आता। भारत की विविध समाजों से आपसी मनोमालिन्य की जड़ दूर हुई प्रगट नहीं होती और न कांग्रेस प्रोग्राम की पूर्त्ति होरही है। सच तो यों है कि सन् १९१९-२१ के भारत से आजका भारत बहुत पिछड़ा हुआ है। वह उन्नति के मार्ग से दूर है। म० गान्धी जी के उच्चसिद्धान्तों का प्रचार करने योग्य क्षेत्र ही तैयार नहीं होपाया है। यही कारण है कि वह असफल होरहा है और मतभिन्नता की जड़ में अनेकता के बीज उग रहे हैं। ऐसी डांवाडोल परिस्थिति में भारतोद्धार होना अशक्य है। जनता में ज्ञानप्रचार और नेताओं में नैतिकबल की वृद्धि होने पर ही कुछ भारत की भलाई होते दिखाई पड़ेगी। तब ही सहनशीलता के भाव सर्व हृदयों में उत्पन्न होंगे।

ऐसी डांवाडोल परिस्थिति में जैनियों की क्या दशा रही यह जानना कोई कठिन कार्य नहीं है। उनका 'बनियापन' इन सब बातों से उन्हें उदासीन

व्यक्त कर देगा। यही कारण है कि कहीं भी उनकी पूछ नहीं। एकतासम्मेलन स्थापित हुआ, सर्व जातियों के मेम्बर उसमें हुए परन्तु जैनियों का नाम नहीं! मानो जैनी भारत में रहते ही न हों! उनको परतन्त्रता के [illegible] में कुछ हानि ही न उठानी पड़ी हो! परंतु उस ही की पूछ इस जमाने में होगी जो अपने अधिकारों के लिये हर समय तुला रहेगा। उक्त सम्मेलन में जैनियों के कितने मेम्बर रहें इसके लिये अब म० गांधी से पत्रव्यवहार हो रहा है। वस्तुतः जबतक सर्वजातियों के मेम्बर नहीं होंगे और वह सच्चाई से झगड़े मेटने के प्रयत्न नहीं करेंगे तबतक राष्ट्रोन्नति होने में आशङ्का है। आज जैनियों की ओर से कौन उनकी स्थिति को सम्मेलन के समक्ष रक्खेगा? कौन बतलावेगा कि आज हिन्दू ही अपने प्राचीन साथियों के धार्मिक उत्सवों में बाधा डालते हैं? कौन कहेगा कि आर्यसमाजी आज अपनी मान्यपुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' में जैनियों के प्रति अयथार्थ वक्तव्य को प्रकट कर आपसी मनोमालिन्य बढ़ा रहे हैं? कौन जतलावेगा कि जैनियों को अपने विधर्मी पड़ोसियों से कितनी क्षति उठानी पड़ी है? इन सब बातों के लिए— जैनियों का मन्तव्य जानने के लिये एकता सम्मेलन में ही क्या बल्कि प्रत्येक संस्था में जैन मेम्बर का होना आवश्यक है यदि वस्तुतः भारतके हित के लिये वह स्थापित हो। जैनियों को अपने अधिकारों के लिये "दब्बूपन" छोड़ना चाहिये और उनकी रक्षा के लिये कटिबद्ध रहना चाहिये।

३—पत्र व्यवहार

हमें सासनी (अलीगढ़) के श्रीयुत् नेमीचन्द सरदार सिंह जी का एक पत्र मिला है। उसमें आप आर्यसमाजियों के 'ऋषिदयानन्द महोत्सव' के समय सत्यार्थप्रकाश की एक लाख प्रतियों के बांटने का उल्लेख करते हुए लिखते हैं:—

'इस अवसर पर यद्यपि (जैनधर्म के विषय में मिथ्या बातों का) खंडन छपाकर बांटना चाहिए लेकिन सत्यार्थप्रकाश से ही मिथ्या बातें निकलवाई जांय तो बारबार खंडन छपाने की कोई आवश्यकता न हो। पहिले भी अपनी तरफ से सत्यार्थप्रकाश के खंडन में 'दयानन्दछलकपटदर्पण' 'विमलविनोद' इत्यादि पुस्तकें निकल चुकी हैं। लेकिन उससे कुछ असर मालूम नहीं पड़ता। मेरी राय में विद्वानों को चाहिए दयानन्दशताब्दि मथुरा में होगी उस अवसर पर जाकर सत्यार्थप्रकाशमें जैनधर्म सम्बन्धी मिथ्या बातों को साबित करके निकलवा देनी चाहिए और जो न मानें तो अदालत के ज़रिये से निकलवादी जावें। मुझ को अफसोस होता है कि सत्यार्थप्रकाश को इतने वर्ष छपे हुए हो गये कि जिसमें तीर्थंकरों को चोरादि कहा है और अनेक मिथ्या बातें लिखी हैं, उनका खंडन तो बार बार छापने की कोशिश की जाती है परन्तु सत्यार्थप्रकाश से मिथ्याबातें तथा तीर्थंकरों को बुरा लिखना यह निकलवाने की कोई कोशिश नहीं की जाती।"

वास्तव में भाई साहब का लिखना ठीक है। इस समय जैन विद्वानों को अवश्य ही मथुरा में पहुंच कर जैनधर्म का महत्व प्रकट करना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश से मिथ्या बातें निकलवाने के लिए मंत्री महोदय को आर्यसमाज से उचित पत्र व्यवहार करना चाहिए। हमें विश्वास है, यदि आर्यसमाज को सत्य से प्रेम होगा तो अवश्य ही वह मिथ्या बातों को सत्यार्थप्रकाश में से निकाल देगा। वरन् उसको सार्वधर्म परिषद् स्थापित करना एक ढोंग मात्र समझा जायगा। उक्त परि-

पड़ में तीव धर्म पर बोलने के लिए भी विद्वानों को आमंत्रित किया गया है। विद्वानों को ध्यान देना चाहिए।

—उ० सं०

साहित्य-समालोचना

महिलासुधार—लेखक श्रीयुत साहित्यालङ्कार कन्नोमल एम० ए०, प्रकाशक—महावीर ग्रन्थ कार्यालय किनारी बाज़ार आगरा, मूल्य ।⁄) पृष्ठ ८३। यह पुस्तक हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्लेखक के विविध साहित्योपयोगी लेखों का संग्रह है। संग्रह उत्तम हुआ है। भारतीय महिलासमाज के उद्धार और सुधार के विषय में खासा सर्वहितकारी विवेचन किया गया है। प्रत्येक महिलाहितैषी और उन्नत्येच्छु को इस पुस्तक का पाठ कर अमली कार्य का श्रीगणेश करना चाहिये।

मोहिनी—लेखक श्रीयुत भैयालाल जैन, प्रकाशक उक्त कार्यालय, मूल्य ॥) पृष्ठ ८३। यह छोटा सा अनूठा शिक्षाप्रद उपन्यास एक पौराणिक कथानक का नयारूप है। इसका प्रथम संस्करण कुमार देवेन्द्रप्रसाद जी द्वारा प्रकट हुआ था। यह द्वितीय संस्करण भी सफाई, छपाई और भाव-भूषा में उसी के अनुरूप है। महिलाओं के साथ २ पुरुषों के लिए भी यह समान उपयोगी हैं।

स्वतन्त्र-वनिता-विलास—ले० मुन्शी पन्नालाल जी प्रेममुग्ध प्रकाशक उक्त कार्यालय, मूल्य ⁄)॥, पृष्ठ २३। इसमें विविध राग-रागनियों में वर्णित हिन्दू पुराणानुसार स्वर्णरम्भा की स्वेच्छाचारिता का अच्छा चरित्र खींचा गया है। लङ्का का वर्णन तो बहुत कुछ आजकल के किसी नगर की रचना के सदृश किया गया है। इस पुस्तक से उन लोगों को भी शिक्षा लेना चाहिए जो स्त्री को नितान्त हेय दृष्टि से देखते हैं और उनको भी जो महिलाओं को मेमों की भांति स्वच्छन्द देखना चाहते हैं।

मेरी भावना—श्रीयुत जुगलकिशोर जी के इस मनोहारी नित्यपाठ का आदर सर्वत्र समुचित है। महावीर प्रेस आगरा के अध्यक्ष ने इसकी १००० प्रतियां सदुपयोगार्थ भेंटरूप में प्रगट की है।

ग्यारहपन्ने—(उर्दू) प्रथमभाग लेखक व प्रकाशक ला० सीतलदास जैन बी० एम० पानीपत मू० ।⁄) इस १२६ पृष्ठ की पुस्तक में उर्दू की लच्छेदार भाषा में उपन्यास के ढंग पर आर्यसमाज के विविध सिद्धान्तों की अवैज्ञानिकता और उन के पालन से जो हानियां होतीं हैं उनका खासा दिग्दर्शन कराया है। उपन्यास प्रेमियों को इसे मंगाकर अवश्य पढ़ना चाहिए। साथ ही उत्तम हो यदि हमारे आर्यसमाजी भाई सत्यार्थप्रकाश का निष्पक्ष दृष्टि से पर्य्यालोचन कर उस में आवश्यक सुधार करलें।

सुखसागर भजनावली— जैन धर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसाद जी के अध्यात्मिक भजनों के संग्रह का यह द्वितीय संस्करण ब्र० जी के नग्नचित्र सहित श्री जैन साहित्यप्रसारक कार्यालय, हीराबाग गिरगांव, बम्बई ने प्रकट किया है। छपाई सफ़ाई उत्तम और मूल्य १) है। पाठकों को अवश्य ही इन अध्यात्मिक पदों का रसपान करना

चाहिए। कविवर दौलतरामजी के पश्चात् शायद यही एक 'भजनावली' ऐसी है जो आत्मा के निज रूपामृत का आस्वादन हमें कराती है।

जैनगज़ट—श्री भा० दि० जैन महासभा के साप्ताहिक मुखपत्र का विशेषांक समालोचनार्थ प्राप्त है। मुख पृष्ठ पर सम्यक्त्व महिमाप्रदर्शक सुन्दर चित्र है। इसके अतिरिक्त महासभा के अब तक के सभापति, मन्त्री, सम्पादक आदि के चित्र हैं। कतिपय चित्रों को छोड़कर बाकी सब चिथड़े हुए हैं। कुल लेख कवितायें लगभग ३३-३४ हैं। सम्पादकीय वक्तव्य में अवश्य ही स्पष्टता का अभाव है। जैनसंख्यावृद्धि को भी परम आवश्यक नहीं समझा गया है। बेशक वर्तमान युग में संख्यावृद्धि के साथ २ धर्माचार वृद्धि की भी आवश्यकता है, जिसकी आवाज़ संख्यावृद्धि के साथ उठाई ही गई है। अगाड़ी भा० दि० जैन परिषद् पर आक्रमण किया गया है। सम्पादक को अभी उसका समाजोन्नति में सहायक व बाधक होने का विश्वास नहीं है तिस पर भी आप उसके द्वारा सर्वनाश का स्वप्न ही देख रहे हैं। वस्तुतः जो वस्तुस्थिति की ओर से आँखें मींचे रहते हैं उनसे ऐसे पूर्वापर विरोधात्मक लेखों का लिखा जाना कोई अनोखा कार्य नहीं है। ऐसे ही सज्जन प्रकाशक की हैसियत से सम्पादन कार्य करते हुए भी उससे मुन्कर होते हैं! हम नहीं समझते ऐसी दशा में परिषद्-हितैषियों के साथ वे किसप्रकार मिलकर कार्य कर सकते हैं! समाज के प्रतिष्ठित नेता स्वयं महासभा के भूतपूर्व सभापति दानवीर सर स्वरूपचंद हुकुमचन्द नाइट इस को उसी तरह असम्भव समझते हैं जिस प्रकार अग्नि और घृत का मेल! खेद है इतना हमको हठतः समालोचक की दृष्टि से लिखना पड़ा है। लेखों में पदार्थ निर्णय की कुञ्जी, गृहस्थधर्म, क्या अहिंसा के उदर में कायरता है? शीर्षक पठनीय हैं। भगवान पार्श्वनाथ के जीवन पर मेरे लेख के नोट (पृ० १२६) पर सं० ने एक अनावश्यक नोट लिख मारा है। मेरा विचार उस नोट से यह नहीं है कि विवाहसम्बन्ध में पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण किया जाय। जो हो संपादकों को सत्य और स्पष्टता के आश्रित हो अपनी लेखनी का प्रयोगमात्र धर्म प्रभावना और ऐक्य बढ़ाने की दृष्टि से करना चाहिए। समाज से इस अङ्क के प्रकाशनार्थ ११५०) की सहायता मिली। उत्तम होता कि इस रकम से किसी प्राचीन ग्रन्थ का उद्धार किया जाता और वह ग्रन्थ पत्र के उपहार में दिया जाता। प्रस्तुत अंक पर उसका मूल्य लिखा नहीं है।

—बूटी दर्पण यह सचित्र वैद्यक मासिक पत्र अभी ही लाहौर से प्रकट होने लगा है। संपादक हैं, श्रीयुत सरस्वती प्रसाद त्रिपाठी वैद्य। पुस्तकाकार वा० मू० २)। ३-४ संयुक्त अंक हमारे हाथों में है। इस में अमलतास का पूर्ण विवरण हिस्टीरिया रोग का वर्णन,विष हिताहित, अनुभूत प्रयोग आदि उत्तम लेख हैं। लाहौर से आयुर्वेदके इस उत्तम पत्र की हम हृदय से उन्नति चाहते हैं।

इनके अतिरिक्त निम्न पुस्तकें और पत्र भी साभार स्वीकार किए जाते हैं—

(१) जैनमहिलाश्रम देहली का विवरण सन् १९२३-२४।

(२) रिपोर्ट श्री भदावर प्रान्तीय जैन विद्यालय सन् १९२३-२४।

(३) श्रीयुत मोतीलाल पहाड्या कुनाड़ी से सुहाग रक्षक विधान अर्थात् कन्याओं के लिए बूढ़ों के अंजर से बचने के सहज उपाय।

(४) क्या वेद सब विद्याओं तथा सचाइयों के भण्डार हैं ?

(५) The dark side of Hindustan and Vedicism.

(६) Cruelty to Hidu women.

(७) The Religion of Social Service.

(८) वैदिक धर्म का तारीक पहलू (उर्दू)

(९) हिन्दू स्त्रियों पर जुल्म

जीवदया सभा फीरोजपुर छावनी से प्राप्त।

(१०) रेशम निषेध

(११) गोरक्षा उपदेश

(१२) व्यसन निषेध

प० गौरीशंकर नथुराम बढ़वा, भावनगर से प्राप्त।

(१३) सुरेन्द्र वीणानाद

(१४) कमलकिशोर नाटक

आदि श्री सुरेन्द्रचन्द्र 'वीर' आगरा से प्राप्त।

(१५) मतवाला (साप्ताहिक पत्र) २३ शंकर घोष लाइन कलकत्ता।

(१६) गोलमाल (सा० पत्र) पटना।

(१७) भारतजीवन (सा० पत्र) बनारस

(१८) शक्ति (सा० पत्र) अलमोड़ा।

(१९) नारद (सा० पत्र) छपरा।

(२०) अहिंसाप्रचारक (सा० पत्र) अजमेर

(२१) विधवासहायक (मासिक) लाहौर।

(२२) जैनहोस्टल मैगज़ीन (त्रैमासिक)

(२३) पुरातत्त्व (त्रैमासिक) अहमदाबाद।

साहित्य-सुमनसंचय

सफलता का रहस्य।

अमेरिका के विख्यात करोड़पति मि० एक-फेलर की बाबत सुना गया है कि वह एक बार अपने मित्रों के साथ गेंदखेल रहा था। एक बार निशाना चूक गया। मन में खेदखिन्न हुआ। मित्रों को विदा किया और पचास बार निशाना लगाने का अभ्यास किया। यह ही वास्तव में इस लब्धप्रतिष्ठ धनी की सफलता का रहस्य है। जिस कार्य में मनुष्य को असफलता हो तो यह नहीं कि हिम्मत हार के उस कार्य को छोड़ दे। बल्कि उसे चाहिए कि बारम्बार प्रयत्न करके सफलता प्राप्त करे। इस धनी पुरुष को अपने कार-बार में अनेक बार असफलता का मुख देखना पड़ा। परन्तु उसने हिम्मत न हारी और अन्त में उस कार्य में सफलता प्राप्त करके ही छोड़ी। यह पुरुष संसार में सब से बड़ा धनी गिना जाता है। धर्म के विषय में सफलता का भी यही निर्णय है। कि मनुष्य लगातार प्रयत्न करे। उसमें वह गिरेगा,

असफल होना परन्तु फिर भी हिम्मत न हारे, कई बार पूजा पाठ आदि में दिल नहीं लगता परन्तु यदि मनुष्य बराबर प्रयत्न किए जाय तो अवश्य ही एक दिन वह सफल हो जाएगा।

—वि० स० से

महात्मा के महावाक्य

मेरे दिल में लड़ाई के भाव बिलकुल नहीं हैं मैं किसी से लड़ना नहीं चाहता पर चाहे स्वराजी चाहे नरमदलवाले लिबरल कोई भी दल के भाई हों उन सब से मैं प्रार्थना करता हूं कि वे मुझ "भिखारी की झोली में हाथ का कता अथवा सूत डाल दें" जो कुछ मेरे साथ हैं शेरदिली के साथ दिलचस्पी नहीं ले रहे। ऐसी हालत में हमीं मत दाता और हमीं प्रतिनिधि हैं। आज मुझे स्वराजी और मुसलमान दोनों ने हरा दिया इस लिये बेलगांव की कांग्रेस में मैं सब दलों की एकता का अभिलाषी हूं यदि उच्च श्रेणी और उच्च विचार वाले हिन्दू मुसलमान इस समय एक बैठक करके आपसी झगड़ों का निपटारा करके शान्ति स्थापना करने में जोर शोर से लग जायंगे तो फौरन वही हालत देश की फिर हो जायगी, यदि इस समय हिन्दू मुसलमान न चेतेंगे तो देश की खराबी निश्चित है। और हमें थोड़े दिनों के लिये स्वराज्य शब्द भूल जाना चाहिये और गुलामी को अपनाना चाहिये।

—समालोचक

वीर-वार्तालाप

गड़बड़ानन्द—अरे भई, 'वीर' में ऐसी कौनसी बातें निकालदीं जो वह भी 'धर्म' के हिमायती ठेकेदारों! द्वारा 'सिद्धान्त विरोधक' की कोटि में रक्खा गया? मुझे तो आश्चर्य है!

सत्याधीन—भई यह तो तुम्हीं जानो-वीर पढ़ते हो, कोई बात नज़र आई-तुम भी तो पंडित हो!

गड़०—हूं सही पर भाई मेरे विचक्षण नेत्र नहीं। मुझे तो आजतक 'वीर' में कोई भी ऐसी बात नहीं दिखाई दी जो सिद्धान्त के विरुद्ध हो। प्रत्येक लेख धर्म प्रभावक होता है।

सत्या०—तो फिर क्या? विशिष्ट 'मूर्ख-मंडली' उसे मिथ्या आवेश में चाहे किसी ही विशेषण से विभूषित करे। जो वस्तु की यथार्थ स्थिति से नेत्र मूंद अपने स्वार्थ साधन में संलग्न हो अंट-संट बकने लगें तो आश्चर्य भी क्या है?

—'सत्य-निधि'

कांच की शीशियां

स्वदेशी! सस्ती!! बढ़िया!!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड ब्रदर्स, महावीर भवन, बिजनौर

परिषद् अधिवेशन का सभापति कौन हो?

वर्षा के आगामी वार्षिकधिवेशन का सभापति एक ऐसा योग्य अनुभव प्राप्त विद्वान् और जैन धर्मप्रभावना में रत परोपकारी सज्जन होना चाहिए, जो जाति को मृत्यु के मुख में गिरती हुई समाज को अचूक औषधि का पान करा सके और परिषद् के उद्देश्यों को सफल कराने में सहायक होसके। समाज को अपने मनोनीत सज्जनों की नामावली प्रकट करना चाहिए तथा अपनी पंचायत की ओर से सम्मति भिजवाना चाहिए। अधिवेशन की सफलता योग्य सभापति पर निर्भर है। आंख फैलाते ही हमें समाज में चमकता हुआ रत्न, चारित्र की प्रकट मूर्त्ति और धर्म के सच्चे भक्त श्रीमान् चम्पतराय जी ही दृष्टि पड़ते हैं। उनकी समानता में हमें सहसा अन्य समाजहितैषी रत्न नज़र ही नहीं आते। परन्तु उन धर्म-रत्न निःस्वार्थी अपने प्यारे हितैषी को हम पहिले ही अपना सिरताज बना चुके हैं—वह हमारे स्थायी सभापति हैं। उन पर हमारा सारा आशा-भरोसा और पथप्रदर्शन अवलम्बित है। वह अवश्य ही अधिवेशन में उपस्थित हो हमें सच्चा कल्याणकारी मार्ग सुझायँगे। परन्तु नियमानुसार अधिवेशन के सभापति पद के लिए हमें अन्य दानवीर, परोपकारी विद्वान् जातिनेता को चुन लेना आवश्यक है अतएव हम विश्वास करते हैं कि समाज हमारे इस नोट पर ध्यान देकर अपना अभिमत इस ओर प्रकट करेगा तथा अन्य आवश्यक उपयोगी प्रस्ताव उपस्थित करेगा। हमारी क्षुद्र सम्मति में निम्न महानुभाव इस महत्वशाली पद के लिए अतीव उपयुक्त हैं:—

(१) सेठ ताराचन्द जी बम्बई (२) राज्यभूषण सेठ लालचन्द जी सेठी झालरापाटन (३) सेठ रतनचन्द्र जी बम्बई (४) रायबहादुर नांदमल जी अजमेर (५) बाबू निर्मलकुमार जी आरा (६) बाबू ऋषभदास जी मेरठ (७) बाबू कन्छेदी लाल जी दमोह।

—उ० सं०।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दी कीजिये ! कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !! अन्यथा पछताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलन व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतकिया। कौन ग्रन्थ पुस्तकें उन्होंने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे ग्रन्थों का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २=) सज़िल्द २॥) डाकखर्च ॥)

पता—चौधरी शिखरचन्द जैन फ़र्रुख़नगर (गुड़गाँव)

बिजनौर का शानदार सत्याग्रह

देवियों व पुरुषों की गिरफ्तारी व जुर्माने

बिजनौर नगर के पास दारानगर में गङ्गा के तट पर कार्तिक स्नान के अवसर पर प्रतिवर्ष मेला लगा करताहै और हिन्दू जनता एक लाख के लगभग संख्या में उपस्थित हुआ करती है। गत वर्ष नवम्बर १९२३ में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने इसका प्रबन्ध जातीयता के रूप में (National lines) किया था। पं० जवाहर लाल नेहरू ने प्रदर्शनी खोली और पं० रंगाअयर M. L.A. ने इनाम बांटे। ये बातें सर्कारी अफसरों को असह्य हुईं उन्होंने युक्तप्रान्त का सर्कार से एक चिट्ठी भिजवादी जिसके द्वारा मेले का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से लेलिया गया और ज़िला मजिस्ट्रेट यानी कलक्टर के सुपुर्द कर दिया गया उस चिट्ठी में बोर्ड की तरफ से लगाया हुआ टैक्स नाजायज़ बतलाया गया था। इस पर जिला कांग्रेस कमेटी के मन्त्री ने ज़िला मजिस्ट्रेट को लिखा कि आप किस कानून से टैक्स लगाना चाहते हैं मगर मजिस्ट्रेट उत्तर में कोई कानून नहीं बतला सके इस पर उन को लिख दिया गया कि बिना कानून मालूम किये जनता टैक्स न देगी।

९ नवम्बर को बा० नेमीशरण जी M. L. C. सहमन्त्री परिषद् मेले में बिना टैक्स दिये हुये गये श्रीमती शानवती पत्नी बा० विश्वामित्र वकील दो और देवियों के साथ शाम के ६ बजे मेले में पहुंची टैक्स नहीं दिया टैक्स वसूल करने वालों व पुलिस ने रोका मगर वे मेले में चली ही गईं और अपने डेरे में जा पहुंची। पुलिस ने आकर उन्हें उनके डेरे में रात के ११ बजे गिरफ्तार किया और मजिस्ट्रेट ने रात के १ बजे पांच २ रुपये तीनों देवियों पर जुर्माना कर दिया। इसकी खबर बिजनौर में १० नवम्बर की सुबह को फैलगई जनता में जोश भर आया। सुबह के ८॥ बजे श्रोत्रिय जगदीश दत्त व मौ० अलदुल लतीफ टैक्स न देने में गिरफ्तार हुये दस २ रुपये जुर्माना हुआ। १० बजे बाबू नेमीशरण जी की माता, बहिन, पत्नी व भाई टैक्स न देने पर गिरफ्तार हुये और पाँच २ रुपये जुर्माना करके छोड़दिये गये। १२ बजे तीन देवियां एक पुरुष और गिरफ्तार हुये मगर थोड़ी देर बाद बिना जुर्माना किये हुये ही छोड़ दिये गये। १ बजे श्रीयुत रतनलाल असहयोगी वकील मन्त्री परिषद् व ला० ठाकुरदास चेयरमैन डि० बोर्ड टैक्स न देने पर गिरफ्तार हुये और थोड़ी देर बाद छोड़ दिये गये। जनता में आन्दोलन को बढ़ते देखकर पुलिस ने गिरफ्तार करना छोड़ दिया और टैक्स न देने वालों का नाम नोट करने लगे।

पुलिस ने बाद को टैक्स न देने वाले ७ महाशयों पर जिनमें परिषद् के मन्त्री ला० रतन लाल भी हैं यह कह कर कि इनके ताँगे रुकने से भीड़

हो गई रास्ता रुक गया पुलिस ऐक्ट की दफे ३२ के मुकदमे चलाये हैं इनमें प्रत्येक पर दो २ सौ रुपये मजिस्ट्रेट ने जुर्माना कर दिया है। किसी सत्याग्रही ने अभी तक जुर्माना नहीं दिया है। इनके सम्बन्ध में बहुत से प्रश्न बा० नेमीशरण जी ने कौन्सिल में पूछे हैं। यह भी मालूम हुआ है कि युक्तप्रान्त की सर्कार ने कलक्टर से पूछा है कि आपने टैक्स किस कानून से लगाया है कलक्टर भी परेशान है देखिये इस सत्याग्रह का क्या फल निकलता है।

संसार दिग्दर्शन

समाज

सिवनी से महामन्त्री महासभा ता० ३० को तारद्वारा सूचितकरते हैं कि पं० नेमि सागर जी वर्णी आगामी महासभा के सभापति नियत हुए हैं व उन्हों ने स्वीकार भी कर लिया है।

जैन बद्री या श्रवणबेलगोलामें ५६ फुटऊँची एक पाषाण में रचित श्री गोम्मट स्वामीकी बृहद् मूर्ति का महा अभिषेक हुआ था। वह अवसर इस वर्ष फिर पुण्योदय से प्राप्त हुआ है। फाल्गुनसुदी ५ से चैत्रवदी ५ तक समारोह है। अन्त के कई दिन बहुत उत्सव होता है। १४ नवम्बर को स्तंभ मुहूर्त हो चुका व एक स्वागत सभा का निर्माण हो गया है। इस कार्य में ३००००) तीस सहस्र रुपये खर्च पड़ेंगे। यात्रियों के लिये ८०० घर बनाए जांयगे। महाराज मैसूर के बुलानेकी भी योजना होरही है। सर्व देश के यात्रियों को इस अवसर पर जैनबद्री मूलबद्री की यात्रा करके महान पुण्य सञ्चय करना चाहिये।

प्रगट होगा भा० दि० जैन खण्डेलवाल महासभा की प्रबन्धका के निश्चयानुसार सभा का मुखपत्र "खण्डेलवाल हितेच्छु" (जो कई महीनों से बन्द था) अब फिर अजमेर से सेठ मोहरीलाल जी बोहरा द्वारा सम्पादित होकर प्रगट होगा। लेख, कवितायें व संवाद भेजिये।

—भा० दि० जैनगोलापूर्व सभा सागरका पञ्चम षष्ठाधिवेशन आगामी मार्गसिर सुदी १२-१३-१४को सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिर (पन्ना)पर राज्यमान बा० खुशालचन्दजी पटोरया छिंदवाड़ानिवासी के सभापतित्वमें होनेका निश्चय होचुका है। स्वागत-समिति का संगठन हो चुका है, अतः इस अवसर पर सभी भाई पधारें, विद्वानों के उपदेश व सभा का जल्सा देखने के साथ २ क्षेत्र के दर्शन व वहां की पाठशाला के निरीक्षण का भी सौभाग्य प्राप्त होगा। यह क्षेत्र सागर से ३३ मील है।

—आर्य समाजी भाई फरवरी में अपने संस्थापक श्रीयुत दयानन्द सरस्वती की शताब्दिमें एक धार्मिक कान्फ्रेन्स मथुरा में करने वाले हैं उस

समय के सत्यार्थप्रकाश की एक लाख प्रतियें वितरण करेंगे। इसमें जैनमत का विपरीत खंडन है। कहने से वे इसको निकालेंगे नहीं तब जैनधर्म का कर्तव्य है कि उसका खंडन लिख कर उस की प्रतियां वहां वितरण करें तथा एक दो विद्वानों को वहां जाकर जैन धर्म पर व्याख्यान देना व जैन धर्म के सिद्धान्तों की रक्षा करनी चाहिए। श्रीमान् पं० माणिकचन्द जी न्यायाचार्य व पं० मक्खन लाल जी न्यायालंकार को महासभा की ओर से भेजना उचित है।

देश

—कांग्रेस के अवसर पर बेलगाँव में होने वाली परलोक विद्या कान्फ्रेन्स के सभापति अमृत बाज़ार पत्रिका' के श्री० पीयूषकान्ति घोष चुने गये हैं।

—खबर है कि "इण्डियेरोडराट" के भूतपूर्व सम्पादक मि० जार्ज जोज़फ ने मदुरा में फिर से वकालत करने का निश्चय किया है। मि० जार्ज-जोज़फ कट्टर अपरिवर्तनवादी दल के सदस्य हैं।

—मद्रासके किसी गाँव की सात वर्ष की एकलड़की रेलवे लाईन पार करते हुए मद्रास और सदर्न मरहठा रेलवे कम्पनी के एक इञ्जिनके धक्के,से बहुत घायल होगई थी। लड़कीकी.ओरसे रेलवे कम्पनी पर मुकद्मा चलाया गया और मद

THE JAINA GAZETTE.

(The Monthly Orgen of the All-India Jaina Association)

Edited By Rai Bahadur J. L. Jaini, M. A. M. R. A. S. Bar-at law Chief Justice. Indore, and Messrs. Ajit Prasada, M. A. L. L. B. Lucknow. and C. S. Mallinath Jaini Madras.

This is the only Journal and Newspaper in the Jain Community which is edited in English, and has a wide circulation in India, Europe, America, Africa and Australia.

It contains every month interesting and instructive articles on the History, Philosophy, Metaphysics and Ethics of the Jainas by learned scholars. Important news and critical comments on communal events and affairs are also published.

It is the Jaina Gazette that has created in the Eurpean and the American scholars and in the English educated non-Jainas an interest to study and understand Jainism.

The more Janism will be known in the world the lesser will be the misery of living beings and greater the virtue of those who help to propagate it.

It is therefore the religious duty of every Jaina to subscribe to the Jaina Gazette and help it in all possible ways.

Annual subscription is Rs. 3/ only.

Specimen copies will be sent free on application.

PLEASE APPLY TO—

The Manager "The Jain Gazette"
21, Parish Venkatachala Iyer Street,
MADRAS. G.T.

रास हाईकोर्ट ने लड़की को कम्पनी से ३५००) हर्जाना दिला दिया।

—श्रीमती एनीबीसेन्ट ने कांग्रेस के उद्देश्यों पर हस्ताक्षर कर दिये हैं और वे उसकी मेम्बर बन गई। श्री देवदास गाँधी उन्हें चरखा कातना सीखा रहे हैं।

—नाभा की जेलों में इस समय तक १०३ अकाली कैदी मर चुके। रावलपिण्डी की जेल में लगलग ५० अकाली कैदियों को निमोनिया हो गया है। कितना सुप्रबन्ध है।

—अमृतसर में 'नागरिक संघ' नाम से एक सभा स्थापित हुई है। यह म्यूनिसिपिलेटी के शासन की देख रेख करेगी।

—जैन पथ प्रदर्शक (आगरा) के सञ्चालक श्री पद्मसिंहजी जैन लिखते हैं कि जैन धर्म के प्रसिद्ध आचार्य श्री माधव मुनि का स्वर्गवास हो जाने से २६ नव० को स्थानक वासी जैन संघ का कुल काम बन्द रक्खा गया पूज्य मुनि की स्मृतिमें अनाथालय खोलने का विचार करके एक सभा की गई इस में चन्दे की अपील पर ७०००) के वचन मिले।

विदेश

—ब्रिटेन और जर्मनी में व्यापारिक संधि की शर्तें तय हो गई और दोनों देशों ने उन पर हस्ताक्षर कर किये।

—जावा में फिर भूकम्प के कारण मंगत जीलोरिया नामक नगर नष्ट हो गया और प्रायः ६० मनुष्य मर गये।

—पोलेराडमें कपड़े की मालों के ६० हज़ार मज़दूरों ने वेतन-वृद्धि न किये जाने के कारण हड़ताल कर दी है।

—फ्रान्स के कई विद्वानोंने एक इन्डिया कमेटी की स्थापना की है। इस कमेटी की !स्थापना की है। इस कमेटी का उद्देश्य है भारत की विद्याओं आदि का ज्ञान प्राप्त करना और भारतसे विद्या सम्बन्धी सम्बन्ध स्थापित करना।

घर बैठे बम्बई

का सभी माल बहुत ही किफ़ायत भाव से वी० पी० द्वारा भेजा जाता है जैसे सूती, ऊनी, कोशा, रेशमीकपड़े व सिले कपड़े, सोना, चांदी, पीतल, किराना, स्टेशनरी हर प्रकार की मशीनें, ग्लास व चीनी का सामान देशी, व अंग्रेज़ी दवाएँ, तेल, अतर, वार्निश, व हर किस्म की घड़ियां। एक बार परीक्षा कर देखो।

सुगंधित शुद्ध केशामृत तेल

दिमाग़ की हर प्रकार की कमजोरी, सिरदर्द, चक्कर आना आँखों से, धुंधलापन नज़र आना, बालों का बेसमय पकना आदि २ व्याधियों को जड़ से नाश करता है। बालों को लच्छेदार और मुलायम बनाता है दिमाग़ के सब रोगों की रामबाण औषधि है। मूल्य १) रु० ३ शीशी का २॥।) ६ शीशी ५।) रु० १२ शीशी १०) रु० व्यापारियों एजेंटों को पत्र व्यवहार करना चाहिये।

पता—मेसर्स [illegible] कम्पनी कमीशन एजेण्ट बम्बई नं० १८,

विषय–सूची

लेख	पृष्ठ सं०
१ पथिक (कविता) कविवर "वत्सल"	८५
२ ओम्–श्री० मुख्त्यारसिंह मेरठ	८६
३ जैनधर्म और असहयोग दो नहीं हैं–श्री० चन्द्रशेखर शास्त्री काव्यसाहित्य तीर्थाचार्य प्रोफेसर	९०
४ कागज़ी सुधारक (कविता)—कविवर "भारतीय"	९४
५ सुमन–संचय (गल्प) श्री० "भ्रमर"	९५
६ सम्पादकीय टिप्पणियां	९६
७ साहित्य समालोचना	९८
८ साहित्य सुमन संचय	१०१
९ वीर–वर्त्तालाप–श्री० "सत्यनिधि"	१०२
१० परिषद् अधिवेशन का सभापति कौन हो? –उप सम्पादक	१०३
११ बिजनौर का शानदार सत्याग्रह	१०४
१२ संसार दिग्दर्शन	१०५

अमरीका और विलायत से एक बड़े डाक्टर की आमद

यह खबर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सुनी जायगी कि डाक्टर बख़्तावर सिंह जैन, एम०डी० (अमरीका) एल–आर–सी–पी ऐन्ड एस (एडनबर्ग) एल–एफ–पी–एन्ड एस (ग्लासगो) जिन्होंने ५ साल अमरीका में, और २ साल इङ्गलैण्ड में तालीम पाई है और २ साल अमरीका और इङ्गलैण्ड के अस्पतालों में बतौर असिस्टेंट सरजन के काम किया है देहली में तशरीफ़ लाये हैं। जैन लोगों के लिये यह बड़ी खुशकिस्मती की बात है कि आपने हम लोगों की दरख्वास्त पर देहली में शफ़ाखाना खोला है आप बच्चों और औरतों के इलाज में खास महारत रखते हैं। तपेदिक, आतशक,सूज़ाक, दमा, हैज़ा, नामर्दी, कोढ़ और बवासीर (खूनी हो या बादी) का इलाज बज़रिये पिचकारी (Injection) और जियाबेतस का इलाज बग़ैर अदवियात किया जाता है आपने एक खैराती अस्पताल खोला है जिसमें आपरेशन बवासीर आँख और दांत गुर्दा के लिये मुफ्त किये जाते हैं, और आपने एक लेडी नर्स को भी रक्खा हुआ है जिसकी ज़ेर निगरानी औरतों का इलाज होता है।

पता:—डाक्टर बख़्तावरसिंह जैन
पहाड़ी धीरज, सदर बाज़ार, देहली

दरिद्रता, दुर्बलता और चिन्ता व रोगों का कारण अधिक सन्तान का होना ही है।

सुखी-जीवन

इस में वैज्ञानिक रीति पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन २ कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा बिना कारण अज्ञानतावश हज़ारों स्त्रियाँ क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रह सकता है आदि २। जल्दी २ सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पोषण भी समुचितरूप से नहीं किया जा सकता। रोगी माता पिता से आजन्म रोगी दुर्बलेन्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दरिद्रता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दरिद्रता के शिकार हो रहे हैं। जैसे सन्तानहीनता दुःख है वैसे ही अधिक सन्तान भी नरक ही है। सुखी जीवन में यूरोप के विद्वानों के बनाए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई है जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भस्थिति रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन २ औषधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है इसका आयुर्वेद और यूनानी द्वारा वर्णन किया है। लगभग चालीस चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य २॥) मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा, अपूर्व सुगन्धि का भंडार

हिमाद्रि तैल

शिर दर्द, दिमाग़ की कमज़ोरी, आँखों की कमज़ोरी, आँखों के सामने पढ़ते २ अन्धेरा होना, शिर चकराना, कम आयु में ही बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमाद्रि तैल—शीतलता और सुगन्धि का खजाना है।
हिमाद्रि तैल—वनस्पति से तैयार किया गया है।
हिमाद्रि तैल—विदेशी और विषैली वस्तुओं से रहित है।
हिमाद्रि तैल—शिर दर्द, से हाहाकार करनेवालों को हँसाता है।
हिमाद्रि तैल—अधिक दिन लगाने से चश्मा लगाना भी छुटाता है।
हिमाद्रि तैल—ग्रीष्म शरद् ऋतु के लिये पृथक् २ औषधियों से बनाया जाता है।

एक बार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायँगे। यदि पसन्द न हो तो दाम वापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता—शङ्कर स्वदेशी स्टोर, बिजनौर (यू० पी०)

Regd. No. A. 1271.

केवल २॥) रु० में

[illegible]ीर

[illegible]क पत्रः

हिन्दी में उच्चकोटिका सचित्र सामाजिक पत्र साल भर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कविताएँ, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरञ्जन का सामान भी खूब रहता है। कागज, छपाई, सफाई, सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को एक दम नया ग्रन्थ।

'महावीर भगवान'

बिलकुल मुफ़्त मिलेगा।

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीनके बाद लिखी जा रही है। यह ग्रन्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनाएँ अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्ष में

वीर का विशेषांक

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिन्दी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अंक देखने ही से ताल्लुक रक्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापन दाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा।

प्रकाशक—राजेन्द्र कुमार जैनी—बिजनौर (यू० पी०)

श्रोत्रिय जगदीश दत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

श्रीवर्द्धमानाय नमः।

वीर

श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष २] १ जनवरी सन् १९२५ [संख्या ५

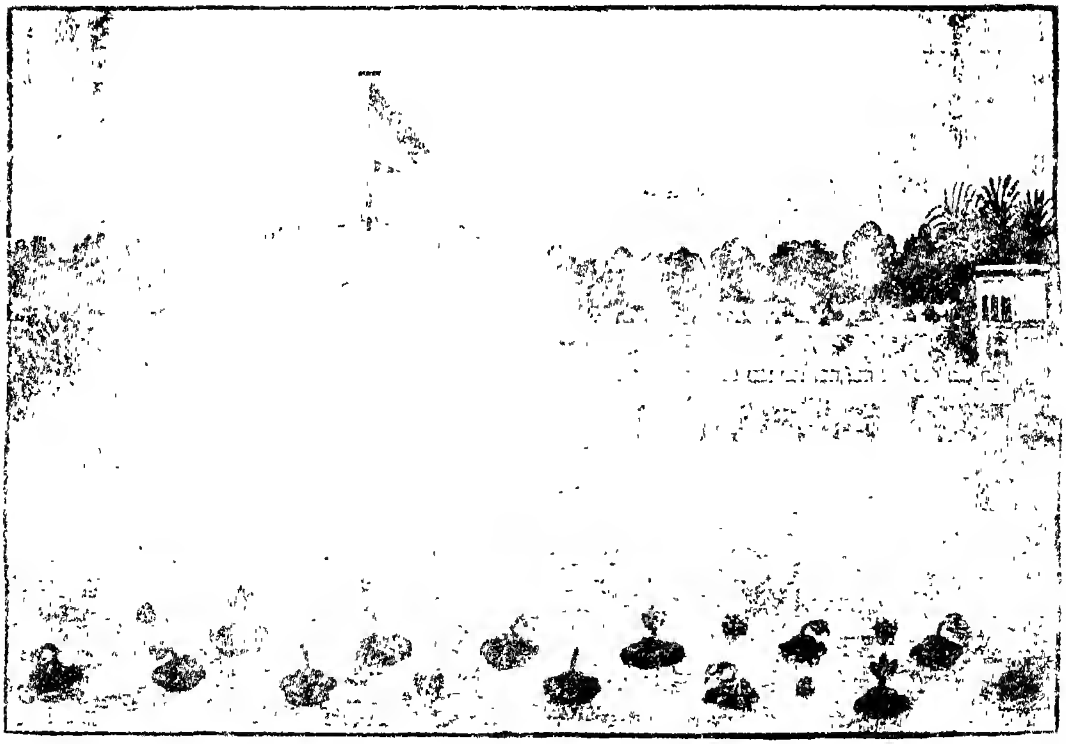

सम्पादकः — जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी

उपसम्पादकः — श्रीकामताप्रसादजी

प्रकाशक — श्री० राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर।

वार्षिक मूल्य] [ढाई रुपये

'वीर' का विशेषांक

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमने महावीर जयन्ति के उपलक्ष में रंग बिरंगे अनेक चित्रों से सुशोभित, अन्यान्य विषयों से विभूषित, एक मनोहर और अत्यन्त उपयोगी विशेषांक निकालने का निश्चय किया है। जिसमें श्रीयुत बा० चम्पतरायजी बैरिष्टर, बा० ऋषभदासजी वकील, बा० हीरालालजी एम. ए., गिरीशजी बी० ए० आदि बड़े बड़े जन-अजैन आधुनिक लेखकों के लेख व कविताएँ होंगी। यह अंक अपने ढंग का निराला ही होगा।

परन्तु 'वीर' की आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए यह तबही संभव है, जबकि हमारे ग्राहक गण व सच्चे धर्म-हितैषी अपनी चंचला लक्ष्मी से, तथा वीर की ग्राहक संख्या बढ़ाकर इसमें सहायता करें।

इस अमूल्य विशेषांक के लिए केवल २००) की सहायता दरकार है। यदि कुछ सज्जन दस-दस बीस-बीस रुपये इस धर्म कार्य में प्रदान कर पुण्योपार्जन करलें, तो यह विशेषांक वीर के ग्राहकों के समक्ष बिना मूल्य ही अर्पण किया जा सकता है।

इस कार्य में श्रीयुत बा० कामताप्रसादजी जैन अलीगंज निवासी ने दस रुपये हमारे पास भेजे हैं, जिसके लिए उनको 'वीर-मंडल' की ओर से कोटिशः धन्यवाद है। हमको पूर्ण आशा है कि इसी प्रकार हमारे अन्य साधर्मी जन भी इस कार्य में हाथ बटाकर यश और पुण्य दोनों का सञ्चय करेंगे और हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे।

विनीत--प्रकाशक।

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

जय वीयराय जग गुरु, होउ मर्मतु इप्प भावऊ भयवं।

भव निव्वेउ मगाणु, सारया इट्ठ फल सिद्धी ॥'

—सामयिक धारण गाथा।

वर्ष २	बिजनौर, पौष शुक्ला ७ वीर सम्वत् २४५१ १ जनवरी, सन् १९२५	अङ्क ५

श्री पार्श्वस्तवन

पास जी हो पास दरसण की बलि जाइयैः ॥ पास० ॥

मनरंगै गुण गाइयै ॥ पास० ॥ वाट घाट उद्यान मैं ॥ पास० ॥ नामै संकट उपसमै ॥ पास० ॥

उपसमै संकट विकट कष्टकः दुरित पाप निवारणोः।

आणन्द रङ्ग विनोद वारू अपै संपत्ति कारणो० ॥

जाग तौ जस सोभाग वहुलो संग भेटण आवए।

मृगमद अगर कपूर चंदन भली पूज रचावएः ॥ पा० ॥

अद्भुत मूरति प्रभु तणी० ॥पा०॥ वदनु ससी सोभा घणी० ॥पा०॥ वणत महाजुग अंषडी ॥पा०॥

जाणति पंक......ज तणी जैसी अंषडी जग सोहए।

नासिका उन्नत दंत पंकति रूप तृभवन मोहए ॥

श्री मुकुट रयणो जडित सुघटा कानि कुण्डल दीपए ॥

तिनि योति ज्योति उद्योत करि प्रभु कोटि ससि रवि दीपए ॥ पा० ॥

श्री अवंती राजएः ॥पास०॥ अहिवर लंछण छाजए० ॥पास०॥ देव सवै सिरताजए० ॥पास०॥

सीरताज साहिब प्रगट प्रतपो सकल गुण गुण सागरो०।

आससेन वामातणो नंदन श्री पार्श्वनाथ उजागरो ॥

देवाधिदेव तूलो.........कुरो स्वामी कृपा घणी।
श्री गुणसागर कर जोड़ि विनवै, पूरो आस्या मनितणी ॥ पा० ॥

(नोट—यह स्तवन जैनमन्दिर जसवन्तनगर के एक प्राचीन जीर्ण गुटके में लिपिबद्ध है। गुटके का लिपि समय विक्रम सं० १६२६ दिया हुआ है। इस हेतु यह कविता इस समय से प्राचीन होनी चाहिये। यहाँ पर वह ठीक उस ही रूप में उद्धृत की गई है जैसी कि वह लिपिबद्ध है। इससे हिन्दी भाषा के विकास इतिहास पर अवश्य प्रकाश पड़ सकता है। इस गुटके की अन्य रचनाओं का पूर्ण परिचय हम पाठकों को आगामी करायेंगे।) —उ० स०

जैन लॉ

(ले०—श्रीमान् चम्पतराय जी जैन बैरिष्टर)

(क्रमागत)

विभाग क्रिया

प्रथम ही पिता सिद्ध प्रतिमा की पूजन करे फिर मुख्य २ सज्जनों की साक्षी पूर्वक अपनी संपत्ति को अनिमाण के अनुसार विभाग कर उस पुत्र का भाग उसी को समर्पण (३७) करे।

यदि कुल को छोड़कर देश, कुल, स्त्री और समय की अपेक्षा से दायभाग करना चाहे तो कुल में एक ही शिष्य उस पद का अधिकारी (३८) होता है।

"ब्राह्मण के धनके भाग में विशेष कहते हैं"

पिता के मरने पर बड़े भाई आदिकों के हाथ आया जो द्रव्य उसमें विद्या पठन में संलग्न छोटे भाइयों का भी भाग (अधिकार) (४०) है।

विद्या रहित भाइयों को व्यापार से धन उपार्जित करना चाहिये और पिता के धन को छोड़कर बाकी द्रव्य में सब का समान भाग होना (४१) चाहिये।

जो निष्पुत्र ब्राह्मण का धन हो तो उसकी भोगता उसकी धर्मपत्नी होगी। यदि वह न हो तो उसकी जाति के जो ब्राह्मण हों उनकी साक्षी से दिया (४२) जावेगा।

यदि द्रव्य के भाग किये पश्चात् बड़ा भाई या और कोई भाई मर जावे और उसके पुत्र भी न हों तो उसका धन शेष भाई समान भाग करके लेवें परन्तु सपुत्र मरनेवाले के द्रव्य का स्वामी पुत्र ही होवेगा (४३)।

उस (अपुत्रा) मृतक भ्राता का धन क्रमशः भ्राता बन्धुजन ग्रहण (४४) करेंगे।

(३७) देखो त्रि० आचार अ० १२ श्लो० ६
(३८) " नी० वा० प्र० प्र० ११ सू० नि० पत्र १३५
(४०) " भ० सं० ६८
(४१) देखो भ० सं० ६६
(४२,४३) " इ० जि० सं० ४०
(४४) " " ४१

जो भ्रातृवर्ग में से कोई एक भ्राता यदि पंगु, बधिर, उन्मत्त, क्लीवरण, कुबड़ा, अन्धा, विषयी, मूर्ख, क्रोधी, गूँगा, रोमाकुल, माता पिता से वैर करनेवाला सप्त कुव्यसनी अभक्ष भोजी ऐसा पुत्र भाग नहीं (४५) पाता।

ज्येष्ठ भ्राता को उचित है कि उसके भोजन वस्त्र का निरन्तर यत्न करता रहे और यदि वह मन्त्र व औषधि से अच्छा होसके तो चङ्गा कराय उसका भाग उसको देवे। उसका भाग सदा काल रक्षित रख उसके आय से उसका पालन करता (४६) रहे।

या उसके पुत्र या पुत्री सर्व गुण शुद्ध हों तो उनको देना चाहिये। परन्तु निज धर्मयुत जो हों वही भाग के योग्य है, सर्वोपरि धर्म मुख्य (४७) है।

ब्राह्मण पतिद्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य की कन्याओं से उत्पन्न हुए पुत्रों का विभाग

पिता के जङ्गम तथा गोधनादिक और स्थावर द्रव्य में दश भाग करके ब्राह्मण से उत्पन्न हुए पुत्र को चार भाग, क्षत्रिय से उत्पन्न हुए को तीन भाग और वैश्य के पुत्र को दो भाग तथा अवशिष्ट एक भाग धर्मार्थ नियुक्त (१) करे।

शूद्रा स्त्री से उत्पन्न हुए पुत्र को भोजन वस्त्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिल सकता।

क्षत्रिय पिता से सवर्णा व वैश्य व शूद्र स्त्रियों से उत्पन्न हुए पुत्रों का भाग

क्षत्रिय पिता से उत्पन्न हुए पुत्र को पिता के द्रव्य का अर्द्धांश तथा वैश्यजा को चतुर्थांश और शूद्रा से उत्पन्न हुआ जो पुत्र है वह उसीका स्वामी हो सकता है जो अन्न वस्त्रादिक उसके पिता ने दिया है अधिक (३) नहीं।

क्षत्रिय पिता के पुत्र ३ और २ भाग के अधिकारी क्षत्रिय या वैश्य मातृपक्ष से (४) होंगे।

वैश्य पिता द्वारा सवर्णा तथा शूद्रा स्त्री से उत्पन्न पुत्रों का भाग

वैश्य से सवर्णा स्त्री द्वारा जो पुत्र उत्पन्न हुआ सर्व सम्पत्ति का अधिकारी हो सकता है। शूद्रा से उत्पन्न हुआ केवल भोजन वस्त्रका अधिकारी (५) है।

वैश्य पिता और माता से उत्पन्न दो भाग का और शूद्रा माता से उत्पन्न एक भाग का अधिकारी (६) है।

शूद्रा माता और शूद्रा स्त्री से उत्पन्न हुए पुत्रों का अधिकार

शूद्र पिता से शूद्रा स्त्री के उत्पन्न पुत्रों को एक दो तथा शत भी होवें समभाग का अधिकार (७) है।

(४५) देखो इ० जि० सं० ४१, ४२
(४६) " " ४३
(४७) " " ४४
(१) देखो भ० सं० २६-३१ इ० जि० सं० ३० आ० नी० १८, १६

(२) देखो आ० नी० ३६
(३) " " ४०, ४२, भ० सं० ३३
(४) " इ० जि० सं० ३१
(५) " भ० सं० ३४, आ० नी० ४१
(६) " इ० जि० सं० ३१
(७) " भ० सं० ३५ आ० नी० ४४

शूद्र पिता द्वारा शूद्रा दासी से जो पुत्र जन्मे (पिता के जीवन में) उसको पिता के धन का पिता की इच्छा से जो भाग मिले और पिता के मरने के बाद उसके संपूर्ण धनका आधाभाग मिले। ब्याही दासी के पुत्रों को और भाइयों के समान। यदि उसके और पुत्र पुत्री व दोहिता भी न होय तो पिता की संपूर्ण सम्पत्ति उक दासी पुत्र को ही मिलेगी (८)।

दासी पुत्रों के पालन पोषण का भार

गृह में जो दासी से उत्पन्न हुए पुत्र होवें तो उनका पालन छोटे भाई को पिता की मृत्यु पश्चात् करना चाहिये, अथवा सर्व भाई मिलकर अन्न,वस्त्र का प्रबन्ध करें। वे ऐसा प्रबन्ध करें जिसमें कि वह पिता की याद (१) रक्खें।

तीन वर्ण के पुरुषों के निकट रहती हुई शूद्रवर्णा स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न हो उस को पिता अपने जीवन काल में जो कुछ देवे उसका वह निश्चय मालिक (२) होगा।

एक पिता के पुत्रों में से यदि एक के भी पुत्र हो तो सब पुत्र वाले कहलायेंगे

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अथवा, शूद्र इन चारों ही वर्णों में एक पिता के उत्पन्न हुये पुत्रों में से यदि किसी एक के पुत्र होवे तो उस पुत्र से सर्व ही पुत्र पुत्रवाले समझे जाते हैं।

(८) देखो भा० नी० ४४
(१) " भ० सं० ११ भा० नी० ४१
(२) " भा० नी० ४२
(१) " भ० सं० ११, भा० नी० १००

[प्रश्नः-क्या इसका यह भाव है कि शेष अपुत्र भाई दत्तक नहीं ले सके हैं, एकत्रित रहते हुये वा जुदे २ होने पर भी।]

एक मनुष्य की बहुस्त्रियों में से किसी एक के पुत्र होने पर अधिकार

किसी पुरुष की बहु स्त्रियों में से किसी एक के पुत्र होवे तो वे सर्व ही स्त्रियाँ पुत्रवती समझनी (२) चाहियें।

उन स्त्रियों के मरने पर उन का धन वह पुत्र (जो एक स्त्री के उत्पन्न हुआ है) ही लेवे अर्थात् एक पुत्र के होने पर अवशिष्ट स्त्रियों को पुत्र नहीं लेना चाहिये किन्तु जो एक सौत के पुत्र हुआ है वह सर्व धन का स्वामी (३) है।

कन्या के विवाह का वचन देकर उससे प्रतिकूल होने पर कर्तव्य

जो कोई प्राणी अपनी कन्या किसी को वचन से देनी करके लोभ वश दूसरे पुरुष को देवे तो प्रथम पति के निवेदन पर राजा उस को दंड देकर वह फरियाद करने वाले प्रथम पति को खर्च के बदले द्रव्य दिलावे।

गृहस्थ धर्म को छोड़ कर द्रव्यवान् दीक्षा लेने वाले का कर्तव्य

जो गृहस्थाश्रम में अपने आप को कृतार्थ मान चुका है और गृहस्थाश्रमको छोड़ना चाहता है उसे

(२) देखो ,, १७, ,, ६८
(३) ,, ,, १८, ,, ६८
(१) ,, भा० नी० ११८

सिद्ध प्रतिमा का पूजन कर उस (प्रतिमा) के समक्ष नीचे लिखी विधि करनी चाहिये और उन की साक्षी पूर्वक अपने पुत्र को समस्त सम्पति दिखलाकर घर में ही रख देनी चाहिये और पुत्र से कहना चाहिये कि यह सम्पत्ति और घरबार सब हमारे कुल क्रम से चला आता है अब आगे हमारे बाद इन सब की रक्षा करना इन सब द्रव्य के तीन विभाग करना और उसे इस प्रकार खर्च करना। एक भाग तो धर्म कार्य में लगाना। एक भाग अपने घर के कामों में ख़र्च करना और तीसरे भाग को अपने भाईयों में समान भाग से बाँट लेना इस प्रकार सब धन के विभाग होजाने पर सब पुत्रों के सामने बड़े पुत्र से कहे कि तू सब से बड़ा पुत्र है इस लिये तू मेरी इस समस्त संतान को स्वीकार कर अर्थात् इन की रक्षाकर। मैंने तुझे विधिपूर्वक शास्त्रचरित्र क्रिया मन्त्रादि सब समर्पण किये हैं पढ़ाये हैं और दिये हैं इसलिये तू बिना किसी आलस के इस कुल की अम्नाय का पालन करना। गुरु और देवों की सदा पूजा करते रहना। इस प्रकार ज्येष्ठ पुत्र को शिक्षा देकर उस श्रावक को अपने मोह जन्य विकार सब छोड़ देने चाहियें। इस प्रकार दीक्षाग्रहण करने की इच्छा रखने वाले उस श्रावक को स्वयं अपना घर छोड़ देना चाहिये और अपने हृदय से काम और अर्थ और स्वार्थ को त्याग कर धर्म ध्यान करते हुये थोड़े दिन बिताने (१) चाहियें।

(१) त्रि० आचार अ० १२ श्लोक १३-१६, आदि पुराण

जैन इपीग्रेफिया

(ले०—चैवेलियर डा० बी० शेषागिरि राउ एम० ए० पी० एच० डी०)

[क्रमागत]

कलिङ्ग में जैनधर्म

मौद्गल्य गोत्रीय रेवीशर्मा के एक कदम्ब दानपत्र में एक "परलूर" का नामोल्लेख है। आजकल पुरातत्त्वानुवेषियों ने इसे धारवार ज़िले के अदूर नगर के उत्तर और पांच मील पर अवस्थित हरलपुर बतलाया है। प्राचीन और अर्वाचीन कनड़ी भाषा में 'प' 'ह' में बदल जाने के कारण हरलपुर परलपुर व परलपुरी होजाता है, जो परल किमेदी ज़मीन्दारी की गद्दी और गङ्गवंश की एक प्राचीन शाखा की राजगद्दी थी। गन्जम ज़िले में एक अन्य स्थान टेक्काली एक प्राचीन कदंब नगर टेकल के समान है। (यह नगर गङ्गवंश के अधिकार में आने के पहिले कदम्ब नगर अवश्य रहे होंगे।)

ब्रह्मक्षत्रियों की शाखारूप यह कदम्ब जैन थे और उनकी राजगद्दी पलसिक (आजकल की हल्सी) थी। इस ही पलसिक के सदृश एक नगर पलस नामक गन्जम ज़िले में है जो किसी समय कदम्बों की कलिङ्ग शाखा का प्रख्यात राज्यनगर रहा था। इन्हीं कदम्बों के अधिकारी कलिङ्गनगर का गङ्ग वंश हुआ था जिनकी उपाधि "त्रिकलिङ्गाधिपति"

थी। परन्तु हमें वनवासी या वैजयन्ती नामक एक नगरी में एक कदम्ब नरेश जो मृगेश कहलाते थे उनका निवास स्थान मिलता है। इस ही वनवासी या वैजयन्ती के सदृश हमें कलिङ्ग में एक स्थान जयन्तीपुर मिलता है और तेलुगू ब्राह्मणों का एक जयन्ती वंश ! कलिंग का जयन्तीपुर या तो कदम्ब (Collateral) शाखा का राज्यनगर है, जिस शाखा के राजा पश्चात् शैव या वैष्णव होगए थे। अथवा पलस के बाद जैन कदम्बों ने पौराणिक ब्राह्मणधर्म स्वीकार करने पर इसी को अपनी राजगद्दी बनाया होगा। जो हो कदम्बों का एक वंश अपने को मयूर-वर्म राज्य की संतति बतलाता हुआ कहता है कि उसको राज्याधिकार जयन्ती-मधुकेश्वर की कृपा से मिला था। (वनवासी अन्यप्रकार जयन्तीपुर कहलाता है) बनवासी में एक मधुकेश्वर का मंदिर है और वहां के एक ब्राह्मण पुरोहित का नाम मधुलिंग मिलता है। गन्जम ज़िलेका मधुलिङ्गम नामक ग्राम जो पारल किमेदी के ज़िमींदार का है उसे स्थलपुराण में जयन्तीपुर कहा गया है। मेरे गुरु रावसाहिब जी० वी० राममूर्ति पन्तलु गरु, बी० ए० ने कितने वर्ष हुए तब इस ही ग्राम को कलिङ्गनगर बतलाया था जिसका उल्लेख कलिङ्ग के पूर्वी गङ्गवंशीय राजाओंके ताम्रपत्रों और शिला-लेखों में आया है। इस स्थान पर एक मधुकेश्वर का मन्दिर है। परन्तु मधुकेश्वर गङ्गवंशीय राजा-ओंके आराध्यदेव नहीं थे वे महेन्द्र के गोकर्णेश्वर के अटल भक्त थे। इसलिए प्रत्यक्षतः यह मधुकेश्वर और जयंतीपुर कदंबवंश द्वारा निर्मित हुए थे जिनको गङ्गराज्य ने परास्त अवश्य किया होगा। मधुलिङ्ग अपने बिगड़े रूप 'मोहोलिङ्गो' के रूप में आज भी उस प्रदेश के उड़िया लोगों में व्यक्तिगत नामों में व्यवहृत होता मिलता है। गन्जम ज़िले के चिका-कोल के निकट अवस्थित श्रीकुरमम् नामक ग्राम में एक तेलुगू ब्राह्मणों का वंश जो 'जयन्ती' कह-लाते हैं बहुत दिनों पहिले आ बसा था। यह वा-स्तव में जयन्तीपुर (मुखलिङ्गम्) से आये होंगे जब वह कमम्ब वंश की राजगद्दी थी।

—क्रमशः।

आख़िरी हसरत।

कूच-ए-कूच बजा, बात सम्हाली न गई ।
दम में बेदम किए, आई फ़ना(१) टाली न गई ॥
रो रहीं हैफ़(२) जनाज़े पै, हसरतें दिल की ।
जीते जी हाय ! तमन्ना, भी निकाली न गई ॥
जो यगाने(३) थे बड़े, उनकी रुखाई देखो ।
बाद मरने के मेरे, ख़ाक भी डाली न गई ॥

---

१ मौत २ अफ़सोस ३ अपने

मुझ को मिट्टी में,मिलाने को आग बरपा की ।
और तहक़ीक़ की, कुछ चोट तो खाली न गई ॥
इस तमाशे में भुलाते हो, क्यों अपने को 'राम' ।
उम्र बरबाद हुई, ख़ाम ख़याली न गई ॥
—भारतीय

सम्पादकीय-टिप्पणियां

वीर भक्त और जमाने की मांग

वर्तमान विद्युतवेग से बहता चला जारहा है। वह अपना युगकालीन पर्य्यटन करीब २ पूर्ण ही कर चुका है। उसका अन्त निकट है। उसके पैर लड़खड़ा गये हैं। वह जर्जर कन्दरा-अज्ञात अनन्त अन्धकार की कन्दरा की कोर पर कपकपाते हुए खड़ा है। ज़रा ठोकर खाई कि अरर धम ! उधर भविष्य का सुखमय जगत्-आशामय उन्नत पथ-और 'वसुधैव कुटुम्बकम्" की आत्म-सभ्यता अभी भी भविष्य के ही गर्भ में है। परन्तु गर्भ में से ही उसके शुभलक्षण हमको दीख रहे हैं। संसार वर्तमान के ढङ्ग और वर्तमान की सभ्यता में उकता चला है। वह एक अब से उत्तम-आदर्श समय को ला रखने के प्रयत्नों में कुछ २ संलग्न है। परन्तु अभी अच्छी तरह नहीं ! पाप का घड़ा सब ओर और सब ठौर भरकर फूटा नहीं है। परन्तु वह फूटेगा और अवश्य फूटेगा। यही कारण है कि संसार के लोग एक दूसरे के मन्तव्यों और विचारों का आदर करने लगे हैं। परन्तु अभी साफ़ दिल से नहीं। बीसवीं शताब्दी की 'डिप्लोमसी'-चुडैल अभी वहां अपना अड्डा जमाए हुए है। जब वह वहां से हटेगी तब ही सुखपूर्ण-उन्नतपथ की ओर संसार पग बढ़ा सकेगा।

भारत में भी म० गान्धी के स्तुत्य सद्प्रयत्नों से वैसे ही वातावरण उत्पन्न करने का श्रीगणेश होचुका है, परन्तु नेताओं में चरित्रदृढ़ता, प्रणपरायणता और स्वच्छहृदयता की कमी अभी तक उसे फलने फूलने नहीं देती। जातियों में परस्पर एक दूसरे पर विश्वास और प्रेम न रखने का अभाव कोरे धर्मढोंग के नाम पर खून की नदियां बहवाता है और दुःखी प्रजा के दुःखभार को स्वयं बढ़वाता है। तिस पर हम जैन जाति पर दृष्टि डालते हैं तो आजकल का पैशाची प्रभाव उसे ही सबसे अधिक निगले हुए मिलता है। वैसे तो भारत की वर्तमान परिस्थिति ने भाई भाई और पिता-पुत्र को एक दूसरे का वैरी बना रक्खा है एक तरह यह व्यक्तिगत बात उपेक्षित भी हो सकती है परन्तु एक ही धर्म के माननेवालों की-एक ही आदर्श पुरुष की उपासना करनेवालों की आपसी लड़ाई कभी देखी

सुनी नहीं गई है। इस पर यदि विदेशी शासक भी आश्चर्य करें तो कोई आश्चर्य नहीं! आज के स्वार्थी बनानेवाले दरिद्रतापूर्ण अधर्ममय वातावरण ने बड़े बड़े दिग्गज विद्वानों और धीमानों के दिमागों को चकरा दिया है। धर्मभाव आज कहीं भी दिखाई नहीं देता! सचाई का कहीं पता नहीं चलता! यदि कुछ शेष है तो मान-मत्सर-ईर्ष्या-द्वेष! जिन के फलस्वरूप विषैले फल चहुं ओर उगरहे हैं। बड़े विद्वान् हैं तो वाक्पटुता में अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित कर वितण्डावाद खड़ा करदेंगे! और अपने से अधिक चरित्रवान्, विद्वान् और पूज्य पदधारी के प्रति अपशब्दों का व्यवहार करते नहीं हिचकिचायेंगे। धनवान हैं तो खुशामदी-मुँहलगों की चापलूसी में धर्म के झूठे नाम पर रुपया दे डालेंगे-फिर नहीं देखेंगे उन रुपयों का हुआ क्या? बस फिर एकमात्र अपनी विलासितापूर्ति में-सामाजिक नियम तोड़ने में लग जायंगे! यह अंधेर समाज को मुर्दा बना रहा है! आपसी प्रतिस्पृद्धा में शक्ति का नाश व्यर्थ हो रहा है! शरीर में घुन लगा है-उसका इलाज भी समझ में आता है-परन्तु अपने मान की आन में उसका विरोध करना ही लाज़मी होजाता है! सत्ता का लिप्सा-शासकपने की लालसा अपना ही प्राबल्य सर्वत्र देखना चाहती है। अंग्रेजी पढ़े लिखे सामाजिक कार्यों में पड़ें ही नहीं! सामाजिक कार्यों में केवल एकाङ्गप्रधान रहे यह हो नहीं सकता! सोती हुई समाज को जगाने, सबसे पहिले अंग्रेजी-संस्कृत-भिज्ञ ही आप थे। तिस पर ज़माना बदल गया! पाप का घड़ा करीब २ भर गया! फूटने की देरी है! सँभालिये और समय की मांग को देखिये! ज़माना कह रहा है गला फाड़ २ कर-'डिप्लोमसी का अन्त करदो-सचाई को अपनालो और भाई२ को गले लगालो।'

ज़माने की इस माँग पर ध्यान देना हमारे लिए लाज़मी है। जीवन रखना है तो उसकी पूर्ति कीजिए वरन् मृत्यु मुंह बाए सम्मुख है। साम्प्रदायिक भेद आपसी द्वेषाग्नि के कारण न होना चाहिए। तीर्थों के नाम पर शक्ति का दुरुपयोग करना दिगंम्बर और श्वेताम्बरों को नहीं शोभता, जब कि विधर्मी हमारे धर्म पर खुला आक्रमण कर रहे हैं। आक्रमक हैं ऐसे महोदय जिन के हाथों में भारत का भविष्य है। उदाहरण रूप में लाला लाजपतराय का कारगुज़ारी आँखों अगाड़ी है। हमारे धर्म के प्रति अन्याय किया-उस को विमोचन करने के लिए कहा गया तो ध्यान देना पाप समझा गया! तिसपर उन्हीं का वही मिथ्या इतिहास आज राष्ट्र की भावी सन्तति को पढ़ाया जायगा। अतएव इस तरह जैन धर्म के प्रति घृणा के बीज बोए जाने वाले हैं। उधर मालवीय जी के कार्य भी भुलाए नहीं जा सकते। हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापनासमय जैनियों को हज़ारों तरह के आश्वासन दिए परन्तु आज तक न वहाँ जैन मंदिर बना और न उच्च कोटि की जैन पुस्तकें ही कोर्स में रक्खी गईं! इस में उदासीनता जैनियों की भी है। रुपए देकर उसके सदुपयोग कराने की ओर उनका ध्यान ही नहीं है! कहिए ऐसी दशा में आपस में लड़ना हमारा कहाँ तक ठीक है? वह लड़ना नहीं है-अपने आप अपने पैरों कुल्हाड़ी मारना है! याद रखिये हमारी ऐसी निर्बल दशा में हमारी अवहेलना सब ठौर होगी। हमारे धर्म के विषय में मिथ्या बातें बतलाने वाले

सैकड़ों सत्यार्थ प्रकाश रहेंगे, हजारों हिन्दू सभायें रहेंगी। कोई भी सहायक नहीं होगा। हमारी असंगठित दशा के कारण ही राज्य, राष्ट्र और, नेता हमारी उपेक्षा करते हैं। जो हिन्दू महासभा सर्व आर्य जातियों को ऐक्यतासूत्र में लाने का दम भरती है वह ही जैनियों के प्रति हिन्दुओं द्वारा अत्याचार किए जाने पर शोक प्रकट करना अपनी शान के खिलाफ़ समझती है। किस को नहीं मालूम कि हिन्दूगण कभी २ किस प्रकार जैनरथ यात्राओं के निकलने में बाधा डालते हैं। किन्तु वास्तव में यह अत्याचार फर्याद करने से मिट नहीं सकते! इनका अन्त करने को हमें अपने पैरों खड़ा होना चाहिए। दिगंबर-श्वेताम्बर-और स्थानक वासियों को ऐक्यसूत्र में बंधकर इस समस्या को हल करना चाहिए। आपसी लड़ाई का काला मुंह करने में ही भलाई है। सोचिये समझिए!

स्वयं दिगम्बर जैन समाज में आज दलबन्दी की दलदल गहरी बन रही है। अवस्थाप्राप्त समाज आज उस के मध्य असाध्य अकाल कवलित हो रहा है! क्या इस पर भी हम को दया नहीं है? आपसी वाक्-बाण वर्षा क्या ऐसी दशा में भी बन्द नहीं की जा सकी? सच बात तो यूं है कि जब तक सचाई के साथ एक दूसरे पर विश्वास नहीं किया जायगा तबतक यह दलदल बनी ही रहेगी। हमारे धनी सेठ लोग जब तक केवल दर्शक ही बने रह कर अपना बड़प्पन रक्खेंगे तब तक समाज का कल्याण नहीं होगा। इस समय यही एक अंग ऐसा है जो हमारी उलझी सुलझन को सुलझा सका है। या फिर हमारा भरोसा-मरते वक्त खून के आंसू बहाती हुई दिगम्बर-धर्म-रूप माता की टकटकी हमारे नवयुवकों पर है। प्यारे नवयुवको! यदि सच्चे वीरभक्त हो तो सच्चाई से कार्य करने को मैदान में आजाइए। और मरती हुई माता की रक्षा कीजिए! नहीं तो कुलनाश का टीका अपने माथे पर लगवाइये! आइए! कर्तव्य की मांग को पूरी कीजिए! घोर विरोध का सामना कीजिए तो भी सत्यपथ से विचलित न होइए! परिषद का वर्षा अधिवेशन निकट है। उस के लिए योग्य सभापति चुनिये। और अपने कार्यक्रम को निश्चित कीजिये! गत इटावा अधिवेशन में परिषद् ने मरती हुई अल्पसंख्यक जातियों की रक्षा के लिए ऐसी जातियों को परस्पर रोटी बेटी संबंध खोल लेने की व्यवस्था दी है। अब आप का फ़र्ज़ है कि आप इसे कार्यरूप में परिणति करावें। और मरती हुई जाति को बचावें! अपनी रक्षा करें और अपना शीश उन्नत रक्खें।

वन्देवीरम्

—उ० सं०

कांच की शीशियां

स्वदेशी ! **सस्ती !!** **बढ़िया !!!**

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड ब्रादर्स, महावीर भवन, बिजनौर

नवयुवकों से निवेदन

प्यारे नवयुवकों! इस पवित्र जैन धर्म के उत्थान की डोर आप के हाथ में है। उठो! समय आपकी प्रतीक्षा करते करते आज स्वयं सन्मुख आकर पुकार रहा है,महावीर प्रभु के अनन्य भक्तो! उठो? अधिक विश्राम ले चुके! अब इस सुख शैय्या का परित्यागन कर दो, और कर्तव्य क्षेत्र में आवो यह समय तुम्हारे सुख स्वप्न देखने का नहीं है, किंतु धर्मक्षेत्र में अग्रसर बढ़ कर अपनी कर्तव्य शीलता और साहस की परीक्षा देने का है। वीर अकलंक की सदृश साहसी सैनिक की तरह, धर्म की पताका को दृढ़ता से सभ्य जगत के संमुख उच्चाकाश में फहराओ।

सच्चे अहिंसक बन कर, पूर्ण सत्यव्रती बन कर क्षमा और प्रेम के अमोघ शस्त्र धारण कर साहस का दृढ़ कवच पहिन कर, धर्मोत्थान हेतु जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध होजाओ। एक बार पुनः "वन्दे वीरम्" के दिव्य नाद से भारत वसुन्धरा को प्रतिध्वनित कर दो।

मित्रो! शरीर नश्वर है, लक्ष्मी चंचला है और मानव जन्म दुष्प्राय है, फिर भी क्या विचार रहे हो। अमूल्य समय अभी आप के हाथ में है, उठो खड़े हो जाओ। स्वजाति धर्मोत्थान हेतु कर्मक्षेत्र में उतर पड़ो, हिचको मत। स्वार्थ वासनायें त्यागनी पड़ेंगी, और सुख छोड़ना पड़ेगा। छोड़ दो, विस्मरण करदो तुम्हारे आत्मबल के घातक तुम्हारे उन्नति मार्ग के कंटक हैं इन्हें कुचल डालो।

"वत्सल"

महिला महिमा

एक महिला गवर्नर

अमेरिका के न्यूयार्क और केन्सस प्रान्त की गवर्नर श्रीमती फर्ग्युसन नामक एक महिला नियुक्त हुई है। श्रीमती फर्ग्यूसन संसार में सबसे प्रथम महिलाहैं जिनके हाथ में गवर्नरी जैसे बड़े पद को सौंपा गया है। वहाँ की स्त्रियाँ बड़े २ कार्य करती रहतीहैं,और उनमें सचमुच कार्य करने की शक्ति बहुत ही अधिक है, यही कारण हैं कि पश्चिम की दिन दिन उन्नति होती जारही है। देश की उन्नति में स्त्रियों का बहुत कुछ हाथ होता है, इसीलिये सभी उन्नत देशों में स्त्री शिक्षा पर बहुत ही अधिक ज़ोर दिया जाता है, और उन की शक्ति

और प्रतिमा को विकसित करने के लिये हर प्रकार का यत्न किया जाताहै परन्तु इस अभागे भारतवर्ष की स्त्रियाँ सिवा घरों में बन्द रहने के और कोई कार्य ही नहीं कर सकतीं बड़े २ कार्यों की तो बात ही क्या छोटे २ काम भी उन से सम्पन्न होते नहीं देखे जाते। यद्यपि हिन्दुस्थान की स्त्रियोंमें भी अब जागृति उत्पन्न होगई है परन्तु जैसी चाहिये वैसी उन्नति उन की अभी नहीं हो रहीहै। यद्यपि योरोप की स्त्रियों में अनेक दोष हैं, परन्तु गुण भी उन में बहुत से हैं, जिन को हमारी बहिनों को ग्रहण करना चाहिये। हमें पूरा २ विश्वास है कि हमारी बहिनें अब संसार में किसी से पीछे न रहेंगी और दुनिया को अपनी शक्ति और प्रतिमा से चकित कर देंगी।

हम अमेरिका की सरकार का धन्यवाद देते हैं और श्रीमती फर्ग्यूसन को इस उच्चपद की प्राप्ति के लिये बधाई देते हैं।

आर्य जगत से

पाक शास्त्र

हलुवा की तरकीब

अगर हलुवा बनानाहो तो एक पाव घी कड़ाही में छोड़ कर बादको एक पाव रवा भी उसी में छोड़ दो जब रवा पक कर लाल हो जावे तो एक पाव पानी में दो पाव शकर मिला कर कढ़ाही में छोड़ दो। धीरे २ करछी से चलाते रहो जब पक जावे तब उतार लो।

दूध का बूरा

जंगली अञ्जीर को दातौन की तरह पतली २ काट डालो और फिर १५ या २० की कूची सी बनालो मगर लकड़ी सूखने न पावे। २ सेर दूध को कढ़ाही में चढ़ा दो और उसी बनाई हुई कूची से चलाते रहो जब दूध का रवा खिल जाये तब उतार लो यही बूरा होगा।

आर्य जगत से

साहित्य-सुमनसंचय

विदेश में जैनधर्म

दिसम्बर मासके अंग्रेजी 'माडर्नरिव्यू' में जर्मन विद्वानों के विद्वत्परिषद् का विवरण देते हुए प्रसिद्ध विद्वान् डा० विन्टरनिज साहब लिखते हैं:-

"इस परिषद् में एक मनोरंजक निबन्ध मि० एच. वान ग्लैसनेप्प (H. Von Glasenapp) ने 'भारतीय धर्मों के इतिहास में जैनधर्म का स्थान और अन्य धर्मों से जैनधर्म का सम्बन्ध' विषयक पढ़ा था। यद्यपि जैन धर्म वेदविपरीत धर्म (Heterodox) है, क्योंकि वह वेदों की मान्यता और ब्राह्मणों के प्रभुत्व को अस्वीकार करता है और यद्यपि उसके सिद्धान्त हिन्दू दर्शनों के नितांत विभिन्न हैं तो भी उस पर हिन्दूधर्म का खासा प्रभाव पड़ा है। खास कर उसकी धार्मिक क्रियाओं और सामाजिक संस्थाओं पर दूसरी ओर जैनप्रभाव हिंदुओं की विविध शाखाओं को

मान्यताओं में विशेषरूप से मिलता है। ग्लेसनेप्प साहब ने यह भी बतलाया कि जैनधर्म और बौद्धधर्म में समान क्या २ है और उनमें आपसी विरोध किन बातों में—खासकर 'आत्म-तत्व' में कैसा है। इस्लाम और जैनधर्म का परस्पर प्रभाव एक दूसरे के शिल्प पर पड़ा है। आजकल जैनधर्म ने ईसाई धर्म के प्रभावानुरूप मिशनरी ढङ्ग से उपदेशकी का कार्य ग्रहण किया है। इस पर जो विवाद छिड़ गया तो उसमें वर्तमान लेखक (डा० विन्टरनिज) ने गतवर्ष अपने नेत्रों से देखे हुए स्व० आचार्य विजयधर्मसूरि के स्मारक में समारोहित प्रतिष्ठा विधानका विवरण सर्वसमक्ष उपस्थित किया, जिसमें कि सर्व सम्प्रदायों के हिंदुओं ने जो विशेष भाग लिया था। जिस सहानुभूति से ब्राह्मण और हिंदु साधुओं तथा शिवपुरी (ग्वालियर) की समग्र अजैन जनता ने स्व० जैनसाधु की पवित्र स्मृति मनाई थी वह उतनी ही अपूर्व थी जितनी कि जैन और हिंदु धार्मिक क्रियाओं (जैसे आरती) की समानता है। प्रो० श्रैडर (Prof. Schrader) ने कहा कि ऐसी सहानुभूति जैनियों और उन शैवों में नहीं थी, जो मांसाभिक्ष यज्ञ होमते थे।"

जैनधर्म के अतिरिक्त हिन्दुओं के महाभारत, बौद्धधर्म और उसके साहित्य आदि के सम्बन्ध में भी विशिष्ट विद्वानों ने अपने मूल्यमय विचार प्रकट किये थे। प्रो० श्रैडर ने संस्कृत पर द्राविड़ भाषा का प्रभाव पड़ा व्यक्त किया तथा भारत के संबन्ध में अंतिम निबन्ध द्वारा प्रो० एव्स ने भारतीय दर्शनों में केवल चार्वाक को नास्तिक प्रमाणित किया। उनकी दृष्टि में बौद्ध और सांख्य दर्शन नास्तिकता की गर्त में नहीं पटके जा सकते। जैनधर्म के संबंध में जो उपरोक्त बातें प्रकट की गई हैं वह महत्त्वपूर्ण और विचारणीय हैं। उपदेशकी का मिशनरी ढग प्राचीन जैनियों में उस समय तक अवश्य रहा था जिस समय तक जैनमुनियों की बाहुल्यता रही थी, क्योंकि जैनमुनि केवल वर्षाऋतु के चार मासों को छोड़ कर शेष के मासों में सर्वत्र विचरते और उपदेश देते रहते हैं। वस्तुतः जर्मनी के विद्वानों का तुलनात्मक शास्त्रीय अन्वेषणप्रेम सर्वथा सराहनीय और अनुकरणीय है। जैनियों में हमें कोई भी ऐसा विद्वान् दृष्टिगोचर नहीं होता जो इस प्रकार तुलनात्मक शास्त्रीय खोज में संलग्न हो। हां, यदि हम इस विषय में किञ्चित् गर्व कर सकते हैं तो अपने मान्य सभापति श्रीमान् चम्पतराय जी के ही सत्कृत्यों में कर सकते हैं। परन्तु इतने जैन विद्यालयों के वर्षों प्रयत्न करने के फलस्वरूप कोई भी ऐसा धुरंधर विद्वान् नहीं दीखता! इसका हमें खेद है अतएव आवश्यकता है कि अब विद्यालयों को सामयिक आवश्यकतानुसार विद्वान् उत्पन्न करने योग्य बना देना चाहिये। और यह तब ही हो सकेगा जब एक जैन विश्वविद्यालय स्थापित किया जा सके। जैनधर्म की वास्तविक प्रभावना प्रकट करने के लिये विद्वानों, श्रीमानों और जाति नेताओं को ध्यान देना चाहिये और इस कमी को मेट देना चाहिये जो आज दिखाई पड़ रही है कि "जैनियों में ऐसे विद्वानों का प्रायः अभाव ही है जिन को संसार विद्वान् कह सके।"

इस पत्र के इस ही अङ्क के एक प्राचीन भारतीय सभ्यता सम्बन्धी लेख में पंजाब के हरप्पा और सिंध के मोहिन-जो-डेरो नामक स्थानों से प्राप्त प्राचीन वस्तुओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह प्रमाणित किया गया है कि ईसा से ३००० वर्ष पहिले आजकल की दुनियां में क़रीब एक सी ही सभ्यता और धर्म थे, जो सम्भवतः द्राविड़ लोगों के समान थे।

भारतीय कपड़े का व्यापार कैसे नष्ट हुआ ?

'मारवाड़ी अग्रवाल' इस विषय पर लिखता है:-

"यह पूर्ण रूप से साबित किया जा सकता है कि भारतवर्ष के प्रारम्भ में अर्थात् आज से तीन हजार वर्ष पूर्व कातने और बुनने की कलों का प्रादुर्भाव हुआ था। सिकन्दर बादशाह के जमाने में विदेशियों ने भारतवासियों को अच्छे से अच्छे सूती कपड़ों को पहनते देखा था। और उनकी प्रशंसा भी की थी।.........डाक्टर टेलर ने सन् १८४६ में मलमल का एक थान २० गज लम्बा और सवा गज चौड़ा देखा था वह वजनमें ७ तोले का था! उन्हीं डाक्टर महाशय ने ऐसा बारीक सूत देखा था जो १३४९ गज लम्बा पर वजन में सिर्फ २२ ग्रेन का था। यह सूत आजकल के जमाने के ५२४ नम्बर सुत के बराबर का होता है। करीब २०० वर्ष पूर्व यानी सतरहवीं शताब्दि में ईस्ट इन्डिया और डच्च कम्पनियाँ लाखों रुपयों को कपड़ा हिन्दुस्थान से ले जाया करतीं थीं। और योरुप का बाजार हिन्दुस्तान के कपड़े से हरा भरा रहता था।.........उन्हें अपना स्वदेशी वस्त्र पसन्द नहीं होता था। इसलिए वहां के कारीगर बेकार होते जाते थे। अपना सत्यानाश और भारत का उन्नति होती देखकर अपनी सरकार के कानों तक पुकार पहुंचाई। सन् १७०० में इङ्गलैंड के तीसरे बादशाह सर विलियम ने काले कानून [Acts 11 and 12 of williom vii cop 10 (1700)] द्वारा भारतीय वस्त्र को अपने देश में जाने से रोक दिया। वहाँ की सरकार ने ऐसा हुक्म जारी कर दिया कि जो स्त्री पुरुष भारतीय वस्त्र बेचेंगे या व्यवहार करेंगे उन से २०० पाउण्ड यानी ३००० रुपये जुर्माना लिया जावेगा। इस तरह अन्यदेशों ने भी कानून बनाकर भारतीय वस्त्र का आना बन्द कर दिया।.........बाद में कोयले और पानी के संयोग से वाष्प द्वारा इञ्जिन चलने लगे और इन्हीं इञ्जिनों से करघे भी चलने लगे। बस फिर क्या था लंकाशायर का भाग्य चमक उठा।.........कल द्वारा बनाई हुई सस्ती वस्तु पर हिन्दुस्तान लट्टू हो गया। किसी जमाने में जिसका व्यापार उन्नति की शिखिर पर चढ़ा हुआ था, वह आज धूल में लोटने लगा!"

साहित्य समालोचना

तारदर्पण—लेखक व प्रकाशक रामस्वरूप जी बीसाऊ (जयपुर) पृष्ठ ६४ मूल्य ।),यह पुस्तक की चतुर्थावृत्ति है। पुस्तक का लोक प्रिय होने का कारण उस में व्यापारियों के मतलब की अधि-

कांश बातों का होना है। अंग्रेजी अभिज्ञ व्यापारियों के लिए पुस्तक उपयोगी है।

हनूमान चरित्र नौविल भूमिका—ले० व प्र० बाबू बिहारी लाल जी मास्टर बाराबंकी। पृष्ठ १२ मू० ≈)। इस छोटी सी पुस्तक में वानर वंश का संक्षिप्त वर्णन है। जो लोग हनूमान जी आदि वानरवंशियों को बानर (बन्दर) के सदृश समझते हैं उन्हें इस छोटी सी पुस्तक द्वारा अपने भ्रम को दूर कर लेना चाहिए। पुस्तक वानर वंशी राज्यों की विशलता का अवलोकन अच्छी तरह कराती है।

मिथ्यात नाशक नाटकभाग तीन(उर्दू)—लेखक पं० ऋषभदास जी प्रकाशक उक्त महोदय। मू० ॥=) प्रति। करीब २०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक में लेखक ने उर्दू भाषा भाषी जनता को विविध धर्मों के मन्तव्यों की औचित्यता का दिग्दर्शन नाटक के ढंग से कराया है। नाटक मनोरंजक है। जिस प्रकार आजकल सरकारी अदालतों में कार्रवाई मुकदमात मुकदमों का ढंग भी मालूम हो जाता है। पुस्तक प्रत्येक उर्दूदां को पढ़नी चाहिए।

चतुर्विंशति जिन पंचकल्याणक पाठ—कविवर वृन्दावन जी कृत। प्रकाशक उक्त महोदय पृष्ठ ८० मूल्य ॥=) यह कविवर वृन्दावन की मनोहरी कविता में जिनेन्द्र भगवान की १२१ पूजाओं का संग्रह है। छपाई सफ़ाई अच्छी है। इसका सम्पादन उत्तमता के साथ किया गया है। साथ में कविवर का संक्षिप्त जीवन और श्री तीर्थंकरों के शुभ कल्याणकों का क्रम से नक्षत्र सहित शुद्ध तिथि कोष्ट भी दे दिया है। अथच ललित जिनेन्द्रस्तुति भी दी है। कविवर की नैसर्गिक कविता कितनी प्रभावशाली है यह निम्न पद्य से ही अन्दाजी जा सकी है:—

"नर नारक आदिक जौनि विषै,
विषयातुर होय तहां उरझै है।
नहिं पावत है सुख रञ्च तऊ,
परपंच प्रपंचिन में मुरझै है॥
जिन नायक सों हित प्रीति बिना,
चित चिंतित आश कहाँ सुरझै है।
जिय दोखत क्यों न विचार हिये,
"कहुं ओस की बूंद से प्यास बुझै है"॥

इस पाठ का प्रचार जैन समाज में काफ़ी है। प्रत्येक पाठक को इसको मंगाकर जिनेन्द्र प्रभू की भक्ति से अपना हृदय रंजायमान करना चाहिये।

अग्रवाल इतिहास—लेखक व प्रकाशक उक्त महोदय। पृष्ठ २४। मूल्य ≤) । इस में अग्रवालों की उत्पत्ति और उनका आज तक का इतिहास अच्छी तरह दिया हुआ है। परन्तु लेखक ने अपने विवरण की पुष्टि में कोई आधार नहीं दिए हैं जो प्रमाणभूत समझे जाते तो भी अग्रवाल जाति का पूर्ण परिचय इससे प्राप्त है। पृष्ठ ६ पर मिश्र देश का राजा कुडरविन्दु जैन धर्मी बतलाया गया है। ऐतिहासिक पुस्तकों में प्रत्येक व्याख्या की पुष्टि में प्रमाण अवश्य होना चाहिए।

ज्ञानेन्दु— सं० ला० विश्वम्भर दास जैन। प्रकाशक ला० गुरुप्रसाद अग्रवाल, दिल्ली। मू० ।) इस में तीर्थंकर भगवान की स्तुति तथा स्वदेशी

विषयों पर भजन दिए हुए हैं। भक्तजन मंगाकर लाभ उठा सके हैं।

शान्ति— मासिकपत्र सहारनपुर शान्ति प्रेस से प्रकट होता है। सम्पादक श्रीयुत शीतल-प्रसाद विद्यार्थी हैं। बा० मूल्य १) है। हिन्दी साहित्य सेवा के उद्देश्य से 'शान्ति' कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हो अपने इष्टपथमें अग्रसर हैं। हम इस की उन्नति के इच्छुक हैं।

मारवाड़ी अग्रवाल— यह सचित्र सुन्दर मासिक पत्र अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल महासभा का मुखपत्र है। आकार डबलक्राउन। वार्षिक मू० ३)। सम्पादक श्री तुलसीराम जी सरावगी। इसका तृतीय वर्ष का १२ वाँ अंक हमारे समक्षहै। महत्व पूर्ण सामाजिक और व्यापारिक लेख तथा मनोहर कविताएं हैं। मारवाड़ी अग्रवाल व्यापार प्रधान जाति है उस ही को लक्ष्यकर इस में व्यापार संबंधी विशेष लेख रहते है। इस हेतु व्यापारियों के मतलब का भी यह पत्र है। इस अंक में १ रंगीन व ७-८ सादे चित्र हैं। हम सहयोगी की पूर्ण उन्नति में इच्छुक हैं।

व्यापार समाचार

—गेंहू की फसल सन् १९२३-२४ की समस्त भारत के गेहूं की फसल की अन्तिम रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि समस्त देश में ३११७८००० एकड़ भूमि में गेहूं की खेती की गई जिस में, उपज अन्दाज ९७५९००० टन हुई। गत वर्ष ९९८२००० टन गेहूं उत्पन्न हुआ। इस हिसाब से इस वर्ष २ प्रति सैकड़ा गेहूं कम उत्पन्न हुआ है सन् १९२४ के अप्रैल मई और जून के महीनों में गेहूं बाहर से ३००० टन आया और रफतनी हो गई १३६००० टन की।

—विदेशों में गेहूं सन् १९२४ की अमेरिका की फसल अन्दाज १९८२२०००टन होनेका अन्दाज किया जाताहै। गतवर्ष यहाँ २१०४७७०० मन गेहूं उत्पन्न हुए थे। कनाड़ा की सन् १९२४ की गेहूंकी फसल ७५५५००० टन अन्दाज की जातीहै। आस्ट्रेलिया की ३३७०००० टन होगी। इस में २० लाख टन माल विदेशी भेजा जासकेगा। अर्जेन्टायनकी यही फसल ६६१५००० टन की होगी। वहाँ रफ्तनी को तैयारमाल १७०३००० टन गतजून मास में था।

—जापान में नया टैक्स विलायत, अमेरिका, भारत आदि विदेशों से जापानमें जानेवाले विलायत की चीजों पर १०० पर्सेन्ट चुंगी बैठाई गई है। इससे विलायत में खलबल है।

—चान्दी का फ्रेट अभी हाल ही में लन्दन से भारत आने के लिए चान्दी का फ्रेट ¼ पर्सेन्ट

से घटाकर १॥ पर्सेन्ट कर दिया गया है। लन्दन होकर अमरिका से जो चाँदी आती है उसका फ्रेट भी एक पर्सेन्ट से घटाकर पौन पर्सेन्ट कर दिया गया है। मारवाड़ी अग्रवाल

जैन-साहित्य

जिसको अपने साहित्य से,
तनिक नहीं भी प्रेम है !
कब उसका इस संसार में,
हो सकता कुछ क्षेम है ?

वाचको ! जैनसाहित्य के महत्व पर अनेक बार अनेक विद्वानों ने सामयिक पत्रों में विवेचना की है, जिससे स्पष्ट है कि अन्य धर्मावलम्बियों के साहित्य की अपेक्षा जैनियों का उपलब्ध साहित्य भी कुछ कम और महत्त्वहीन नहीं है। आवश्यकता केवल उसको प्रकाश में लाने की है।

जैनसाहित्य-सेवियों की ओर दृष्टिपात करने से मालूम होता है कि वे पाण्डवों की संख्या के बराबर भी नहीं हैं। ऐसी दशा में हमारा साहित्याभ्युदय कैसे हो सकता है? इस समस्या का हल करने के लिये दो एक उपाय पाठकों की सेवा में उपस्थित किये जाते हैं:-

जैनसमाज २०, २५ वर्ष से कई हज़ार रुपया मासिक सहायता, भिन्न २ प्रान्तवासी विद्यालयों को दोनों हाथ देरहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब जैनियों के विद्वानों की संख्या तदगान्त तुल्य (नकारात्मक) थी वह आज उँगलियों पर गिनने लायक होगई है। न्यायतीर्थ और काव्यतीर्थों की संख्या ५० के भीतर ही दृष्टि आती है, संपूर्ण खण्डों में उत्तीर्ण शास्त्रियों की संख्या भी इनसे अधिक न होगी। पूर्ण आचार्य तो अभी कोई हैं ही नहीं। हाँ पूज्य प० गणेशप्रसाद जी वर्णी, प० माणिकचन्द्र जी ने न्यायाचार्य के ३, ४ खण्डों में अवश्य उत्तीर्णता प्राप्त की है। इन के अतिरिक्त ४, ५ अन्य सज्जनों ने भी २, १ आचार्य के खण्डों में उत्तीर्णता प्राप्त की है।

इधर जैन बोर्डिङ्गहाउस और दूसरे बोर्डिङ्ग और होस्टलों के B. A. M. A. आदि विद्यार्थियों ने कितनी संख्या कमाई है, यह हमारी गिनती में नहीं आसकी फिर भी २००, ३०० से ऊपर होगी।

इतनी संस्कृत और अंग्रेज़ी का प्रचार होने पर भी जैन साहित्य की यह दशा क्यों देखनेमें आतीहै। सच तो यह है कि:—

खुदा ने उस क़ौम की हालत नहीं बदली।
जिसे नहीं ख्याल अपनी हालत के बदलका॥

हम समझते हैं कि हमने अभी तक अपने गहन

साहित्य पर दृष्टि ही नहीं डाली। यदि इस के उत्थान के लिये हम सचेष्ट रहते तो हम अपने को आज से बहुत आगे पाते।

किन्तु हम समझते हैं कि अब बहुत शीघ्र ही जैन साहित्य अभ्युदय के शिखर पर होगा क्यों कि इस पर समाज ने अपना लक्ष्य देकर निम्न आशय के प्रस्ताव स्वीकृत किये हैं:—

स्याद्वाद विद्यालय की प्रबन्ध कारिणी कमेटी से २-५-२४ को स्वीकृतः—

(१) शास्त्री या तीर्थ परीक्षा में उत्तीर्ण उन छात्रों को जो निम्न परीक्षाओं के पास करने की प्रतिज्ञा करें:—

'क्वींस कालेज़ की न्याय, व्याकरण या साहित्य की पूर्ण आचार्य परीक्षा। वृत्ति १५)रु० से ५०)रु० मासिक तक योग्यता और स्थितिके अनुसार। इन छात्रों को साथ में अँग्रेज़ी साहित्य व धर्म विषय भी पढ़ कर परीक्षा में उत्तीर्ण होना आवश्यकहोगा।

(२) मेट्रुपट, द्वितीय भाषा संस्कृत रखने वाले इस विद्यालय में रह कर न्याय में प्रमेयकमलमार्तण्ड और गोम्मटसार आदि में उत्तीर्ण होने की प्रतिज्ञा करें। इन को भी १५,से ५०)रु० तक छात्र-वृत्ति मिलेगी। दूसरे 'भा० व० दि० जैन परिषद् ने गत ५-६ नवम्बर को निम्न लिखित प्रस्ताव का प्रसार किया है:—

"जैन विद्यार्थियों को विशेषरूप से हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं में सम्मिलित होना चाहिये और कविवरों को जैन समाज के धुरन्धर प्रतिभाशाली रचनाओं के महत्त्व को सर्व साधारण जनता में प्रकट करना चाहिये।"

हमारी समझ में प्रत्येक जैन पत्र के सम्पादक को इस का बड़ा भारी आन्दोलन करना चाहिये कि वर्तमान के समस्त विद्यालयोंमें 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की परीक्षायें भी तीर्थ शास्त्री और आचार्य परीक्षाओं के समान अत्यावश्यक हैं।

'जैन मित्र' के २५वें वर्ष के १५ वें अङ्क में जैन साहित्य प्रचार' के लिये लिखा था,इस पर हमारे माननीय पाठकों का बहुत कम ध्यान गया है।

हम जैन पत्र सम्पादकों विद्यालयों के कार्य कर्त्ताओं और समस्त विद्यार्थियों से नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि वे जैन साहित्य को अपना लक्ष्यविन्दु अवश्य बनावें।

'सम्मेलन' के परीक्षार्थियों को पृथक छात्र वृत्ति देकर उत्साहित करना चाहिये। प्रत्येक विद्यालय को 'सरस्वती' माधुरी' 'प्रभा' भारतमित्र' 'आज' 'कविकौमुदी आदि कम से कम २५, ५० साहित्य के सामयिक समाचार पत्र अवश्य मँगाने चाहियें और समाचार पत्रों का बाँचना विद्यार्थियों के लिये आवश्यक हो। ऐसा करने से ५० विद्यार्थियों में से २,४ विद्यार्थी भी एक विद्यालय में साहित्य की उच्चाकाक्षांओं से परिप्लवित होंगे तो भी शीघ्र इस में समयानुकूल उन्नति हमारे साहित्य की हो सकती है।

संसार की समरस्थली पर कोई भी समाज अपने साहित्य शस्त्र के बिना विजय प्राप्त नहीं कर सकता इस लिये जैन समाज में हिन्दी साहित्य समिति' की स्थापना परम आवश्यक है जिस के उद्देश्य 'जैन साहित्य' को सर्वाङ्ग सुन्दर एवं सुलभ तथा सर्वमाननीय बनाने के हों।

शेष फिर कभी—

—भुवनेन्द्र

भा० दि० जैन परिषद् और उसका द्वितीय वर्षाधिवेशन

यह वही परिषद् है कि जो अब से दो वर्ष पूर्व देहली में प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर स्थापित हुई थी, इसकी स्थापना का कारण था भा० दि० जैन महासभा के प्लेटफार्म पर जातीय शुभचिंतकों और धर्मप्रेमियों को कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त होना यह महासभा क्या थी-एक पिता के सब पुत्रों की ओर से एक मिला जुला फर्म जारी था, जिसमें सब पुत्र योग देते थे परन्तु दैवयोग से मत-भेद पैदा होगया अर्थात् कुछ हिस्सेदार तो काम की उन्नति चाहते थे और कुछ ज्यों का त्यों रखना चाहते थे। कुछ का विचार कागज़ की रक़मों का भुगतान करके व्यापारको बढ़ाने का था और कुछ का कागज़ की रकमों को कागज़ में ही लपेटे रखने का। इसलिये उन्नति के इच्छुक भागीदारों को बड़ी दूरदर्शिता, गम्भीरता और विवेकपरता से काम लेकर और पुराने फ़र्म से जुदा होकर एक दूसरा नया फ़र्म (भा० दि० जैन परिषद्) जारी करना पड़ा और उस पुराने फ़र्म को उन्नति के क्षेत्र से काली कोसों दूर रहने वाले संकुचित हृदयी भाइयों के हाथों में उन्हीं की करुणादृष्टि के भरोसे छोड़ना पड़ा। परन्तु शोक! कि इन भोले भाइयों ने इस नये फ़र्म का विरोध ऐसी बुरी और भद्दी रीति से करना प्रारंभ किया कि जिस भाँति एक जबानज़ोर और ईर्षालू कुंजड़ी दूसरों के पके और मीठे फलों की निन्दा करके अपने कच्चे और खट्टे झाड़ों के बेरों की प्रशंसा किया करती है और ग्राहकों को बहकाया करती है कि वहां न जाओ यहां आओ।

आजकल महासभा का मुखपत्र जैनगज़ट यही दुहाई देता हुआ दिखाई देरहा है, वह कहता है कि दि०जैनसमाज सिवाय जैनमहासभा के न तो किसी दूसरी सभा के प्रस्तावों को माने चाहे वे कितने ही लाभदायक क्यों न हों और न किसी दूसरी सभा को सहायता दे, चाहे वे सहायता की अधिकारी ही क्यों न हों। वाह वाह क्या ही निराला न्याय है और क्या बढ़िया समाज प्रेम है। इस परिषद् की बागडोर जातिनेता, समाज शुभचिन्तक, धर्मप्रेमी' तीर्थभक्त, जिनवाणी प्रचारक श्रीमान् बा० चम्पत राय जी बार-एटला-हरदोई के पवित्र हाथों में है (आप इसके स्थायी सभापति हैं) आपसे तमाम जैन समाज परिचित है। इस परिषद् के अबतक दो अधिवेशन (एक अप्रेल सन् २४ में वार्षिक मुज़फ़्फ़रनगर और दूसरा नवम्बर सन् १९२४ में नैमित्तिक इटावा) होचुके हैं अब तीसरा अधिवेशन दूसरे वार्षिकाधिवेशन के रूप में माघ शुक्ला ३-४-५ सं० १९८१ (ता० २७-२८-२९ जनवरी सन् १९२५) वर्धा C. P. में होना निश्चित हुआ है। यद्यपि दश महीने के भीतर तीन अधिवेशनों का होजाना बहुत ही ज्यादह है परन्तु समाज के उस सच्चे प्रेम को जो इस परिषद् के साथ दर्शाया जारहा है भले प्रकार सिद्ध कर रहा है और पूर्ण आशा की जाती है कि दूरदर्शी समाज इस परिषद् को अपनायगी

और लाभ उठायगी।

क्योंकि अधिवेशन का समय निकट आगया है इसलिये समाज की दुर्दशा का दर्द रखने वाले कर्म वीरों को अधिवेशन में सम्मिलित होकर समाजोत्थान के उपाय सोचने चाहिये और उन उपायों को काम में लाकर समाज का पूर्णरूप से हित करना चाहिये।

समाज का शुभचिन्तक-
ज्योतिप्रसाद जैन
सं० जैनप्रदीप, देवबन्द।

महिलोपयोगी विचारणीय प्रस्ताव

सारे संसार में यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि "जिनके जैसे बाप महतारी उनके वैसे लड़का" और भी कहा है "दीपो हि भक्ष्यते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते" अर्थात् दीपक अन्धकार का भक्षण करता है तो वही अन्धकार उसमें से निकलता है महानुभावो ! उसी क्रमानुसार आज हम प्रत्यक्ष देखतीं हैं कि हमारी तथा हमारे पुरुष समाज की अधोगति होरही है, यदि ऐसे ही विचार रहे तो दिन पर दिन पतित होते जायँगे, कारण समाज हमारे ऊपर बिलकुल ध्यान नहीं देती।

आज हमारी गवर्नमेन्ट जो यहाँ से समुद्र पार बसती है वह तो हमारे लिये स्कूल और कालिज खोले और उसमें नवीन पद्धति अनुसार हमें कला कौशल सिखावे तथा मोजे बनाना, चिकन निकालना, गुलूबन्द बुनना सिखावे साथ में अनुचित कार्य भी सिखावे जैसे सी० पी० की कन्या पाठशालाओं में रामलीला का होना। यद्यपि विलासिता के लिये यह एक अच्छा सुअवसर है किन्तु जितनी हमारी शोचनीय दशा है उतनी ही ऐसे कारणों से पतितावस्था और दुरावस्था हो रही है, इससे बन्धुवर्गो ! सचेत होजाओ। म्यूनिसिपिल स्कूल तुम्हारे हाथ में है और तुम काठ के पुतला बने देखते हो यह खेद की बात है. अस्तु।

अब मैं एक ऐसी घटना अपने पाठकों को सुनाना चाहती हूं जिससे समाज को चाहिये कि जो जो रिवाज समाज में दुखद है उन्हें निकालने की शीघ्र ही कोशिश करें जिससे सच्चा रास्ता मिल जाय। आज एक घटना दमोह निवासी सज्जनों के सामने उपस्थित है जो विचारणीय है। एक महाशय साहपुर के रहने वाले हैं आप विवाहित स्त्री से चार संतान भी उत्पन्न करचुके हैं तिस पर आपका कृत्य महिलासमाज के हितार्थ अति दुःखदाई हुआ है। आप साहपुर की एक स्त्री को उड़ा लेगये थे जो कि दर्जा ४ पास है और इस समय सारे संसार का चक्कर लगा कर फिर दमोह में रहते हैं इस श्रीमती के भी एक बालक है जो अभी ३ वर्ष का होगा। श्रीमती ने उनके साथ चलना पसंद करलिया था किन्तु श्रीमती का दर्जा पास होने पर भी हमारी समाज ने शास्त्र अध्ययन नहीं कराया था और गहने की स्वतन्त्रता का यहाँ सी० पी० में कहना दूर रहा सचमुच हथकड़ी और बेड़ियां के सिवाय अङ्ग प्रत्यङ्ग सीधे होना उतना कठिन है जितना

कठिन एक कट्टरे में बन्द होने पर हलन चलन होता है। बस इसी धन के लोभ ने और घरके अकेले पन ने तथा शिक्षा के अभाव ने और माता पिता के पति की परीक्षा न करने पर विवाह कर देने से यह कार्य्य हुआ है।

यद्यपि मैं पुनः कहूंगी कि हमारी उस बहिन का दोष कुछ भी नहीं है, कारण उपरोक्त जितने कारण हैं वह सब हमारी समाज की ढील पोल के कारण है और हमारी परदा रखने से एक साधारण अबला को दूषण लगाने का कारण बना देना यह तो महान मूर्खता है। जैसे दक्षिणी महिलाओं में इसका प्रचार है कि जो पति विहीना हैं उन्हें शिर ढकना और बाल न रखना उनके विधवापन का रक्षक है उसी प्रकार हमारे लिये शृङ्गार में सुनहरी गहने और पान खाना, परदे का रखना और शिर के केशों को संभालना ही। बस यह प्रार्थना है कि उपरोक्त घटना पर ध्यान रखकर परिषद् में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी कार्य में लाने योग्य ऐसा प्रस्ताव पास किया जावे जिससे हमारी बहिनों का दुःख दूर हो और समाज में जागृति हो इसका होना तब तक ही कठिन है जबतक समाज में कन्यायें न पढ़ेंगी और वह विदुषी माताओं के पद पर न पहुंचेंगी।

विनीता–
जानकीबाई

लेखकों को पुरष्कार

भा० दि० जैन परिषद् अधिवेशन के समय दो स्वर्णपदक उन सज्जनों को दिये जायँगे कि जिनका निम्न विषयों में से किसी एक पर लिखा हुआ लेख और समस्याओं में से किसी एक पर रची हुई कविता सर्वोत्तम प्रमाणित होगी। परीक्षार्थ एक कमेटी होगी। लेख व रचनायें ता० २० जनवरी तक निम्न पते पर आ जाना चाहिये। लेख कम से कम १५ पृष्ठों पर (फुलसकेप,साइज) हो और कविता में कम से कम ११ छन्द हों।

विषय

(१) जैन और जैनेतर कवियों का शान्ति और वैराग्य रस एवं उसकी महत्ता।

(२) हिन्दी का उत्पत्ति विकाश और उस में जैनियों का भाग।

(३) हिन्दी जैन साहित्य की विशेषतायें और उसको सर्व प्रिय बनाने के उपाय।

(४) कविता की श्रेष्ठता और जैन कवि।

(५) नैसर्गिक प्रेम-भक्ति और जैन धर्म।

समस्यायें

(१) बाँझ को पूत विना अँखियान कुहू निसि में ससि पूरन देख्यो।

(२) वीर जिनचन्द सों नेह करो नित।

(३) ध्येय हो विभु आदेश पुनीत।

(४) न हैं वे भीरु महा हैं वीर।

(५) जीवन सार है।

पता:—कामता प्रसाद जैन
उ० सं० वीर अलियगंज (एटा)

संसार दिग्दर्शन

समाज

—विचारणीय प्रस्ताव-जैन समाज में जिस की कन्या ४ थी क्लाश पास नहीं उस महाशय के लिये कुछ प्रायश्चित्त रक्खा जावे क्योंकि पढ़ाने का कार्य्य उनके माता पिता का ही है। पर माता पिता कन्याओं को घर का ईन्धन समझा करते हैं सो उसकी महत्वता कुछ उनके हृदय पर उपस्थित है।

—जानकी बाई

—श्रीमान् पूज्यवर जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसाद जी का दमोह में शुभागमन और दिगम्बर जैन कुटुम्ब सहायक फण्ड की स्थापना और करीब ४०००) हजार का चन्दा इकट्ठा होगया है, आशा है अब हमारे असहाय भाई अपना मनोरथ सफल कर मानव-जन्म सफल करेंगे। साथ में उन महानुभावों को भी कोटिशः धन्यवाद है कि जिन्हों ने अग्रसर होकर नामावली में अपना नाम लिखा कर इस शुभ संस्था की स्थापना की है!

५००) बाबू चन्नेलाल जी

५००) सेठ लालचन्द जी

२००) सेठ गुलाबचन्द जी

२५०) दुलीचन्द भइयालाल

बाकी फुटकर चन्दा हुआ है। उपरोक्त सभा के सभापति श्रीमान् लालचन्द जी हैं। सहायता देने वालों तथा लेने वालों से प्रार्थना है कि वह अपनी २ अर्जियां मन्त्री के नाम से भेजें।

—एक समाज सेवी-दमोह

—श्री जैन बाला विश्राम आरा के विद्यालय भवन का उद्घाटन ता० ११ दिसम्बर को बड़े समारोह के साथ हो गया।

प्रातःकाल ८ बजे से हवन पूजन विधान हुआ इस समय जैन व अजैन कितने ही उच्चपदाधिकारी गण्य मान्य लोग उपस्थित थे।

पूजन समाप्त होने पर मन्त्री महोदय श्रीमान् बाबू निर्मल कुमार जी ने रिपोर्ट व संस्था का उद्देश्य विधेय पढ़कर सुनाया तथा स्थानीय रईस चौधरी करामत हुसैन ने व चेयरमैन बाबू भगवती प्रसाद जी ने व अन्य कई महाशयों ने संस्था संचालकों को धन्यवाद दिया और हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की।

पश्चात् श्रीमान् बाबू निर्मल कुमार जी की ओर से उपस्थित सज्जनों को प्रीतिभोजन कराया गया इसी विद्यालय के एक विशाल कमरे में छात्राओं का बनाया हुआ सामान रक्खा गया था जिसको देख कर सब लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए।

फिर मध्यान्ह समय को सभा हुई और वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुई छात्राओं को व कर्मचारियों को पारितोषिक बांटा गया। विद्यालय के उद्घाटन से अब यहां बहुत जगह हो गई है जिस

महिलाओं को विद्यालाभ करना हो ,शीघ्र प्रार्थना पत्र भेज कर भरती हो जाना चाहिये । समर्थ असमर्थ दोनों तरह की छात्रायें ली जासकती हैं ।

—कृष्णा देवी, आरा

—शोकसमाचार—आज १५।१२।२४,को श्री आत्मानंद जैन सभा अम्बाला शहर के सभा सदों ने बंबई निवासी श्री मोतीलाल मूल जी की अकाल मृत्यु पर शोक प्रगट करने के लिये एक मीटिंग करके निम्न लिखित प्रस्ताव पास किया:— "श्री आत्मानंद जैन सभा अंबाला शहर अपनी आज की मीटिंग द्वारा बंबई,निवासी जैनकुलभूषण, दानवीर श्रीमान् मान्यवर सेठ मोती लाल मूल जी जे० पी० की अकाल मृत्यु पर अपना हार्दिक शोक प्रगट करती है और प्रार्थना करती है कि आप की आत्मा को शांति मिले एवं उन के परिवार से सहानुभूति प्रगट करती है ।

—शोक सभा गत ता० १०-११-२५ को रात्रि के ८ बजे कलकत्ता दिगम्बर जैन समाज की एक सभा श्री महावीर पुस्तकालय के भवन में सेठ हरी राम जी सरावगी के सभा पतित्व में स्वर्गीय सेठ दयाचन्द जी मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिये हुई थी जिसमें सेठ जी के जीवन चरित्र पर और उनके आदर्श कार्यों पर भाषण हुये और शोक प्रदर्शक एक प्रस्ताव सेठ जी के कुटुम्बीजनों के प्रति संवेदनार्थ भेजना निश्चय हुआ ।

—उदयपुर में महासभा के समय करीब ७०००) का चन्दा समाज से इसलिये वसूल किया था कि बाहर ग्रामों से गरीब विद्यार्थी बुला कर उन की हर प्रकार से सहायता करके विद्वान बनाया जाय। मगर इसकी पूर्ति ब्र० चांदमल जीने की। अब यह ७०००) रुपया सेठ भीमचन्द जी टोडर मल जी उदयपुर के यहां जमा है जिस का १८) मासिक ब्याज सेठ प्रो० मोती चन्द दि० जैन पाठशाला को देते हैं इस पाठशाला में माणकचन्द ट्रष्ट फंड से हर मास ५०) रुपया आता है फिर १८) मासिक इसमें क्यों दिया जाता है जब एक पाठशाला थी तब तो मय मकान भाड़े के ५०) रु० में अच्छी तरह कार्य चलता था लेकिन अब पार्श्वनाथ विद्यालय खुलने पर भी पाठशाला में घाटा बताया जाता है ।

कालूराम जैन। वीर' कलकत्ता ।

—कुन्थल गिरि ब्रह्मचर्याश्रम के वार्षिक मेले पर पूज्य ब्र० शीतल प्रसाद जी गये थे उनके परिश्रम करने पर यहाँ का ब्रह्मचर्याश्रम फिर यथा स्थित चालू हो गया है तथा ब्र० पार्श्वसागर जी फिर यहां ठहर कर काम करने लग गये हैं ।

—लाहौर में ता० २८ अक्तूबर को यहां की दिगम्बर जैन सभा का वार्षिक अधिवेशन मि० सुमेरचन्द बैरिष्टरके सभापतित्व में हुआ तब सर्व सम्मति से लाला रामानन्द जी बैंकर फीरोज़पुर शहर के असमय वियोग पर हार्दिक शोक प्रगट किया गया। और उनके कुटुम्बके साथ सहानुभूति प्रकट की गई। तथा इस प्रस्ताव की नकल उनके पुत्र लाला मनोहरलाल जी को भेजी गई उक्त ला० साहब बहुत ही विद्या प्रेमी व धर्म साधन में उत्साही थे उन के वियोग से पंजाब का एक मुखिया जैन समाज से उठ गया ।

—अहिंसा प्रेमी भाइयों को सूचित किया जाता है कि वह माँसाहारी, शिकारी, बलि, हिंसा करने वाली जनता में बांटने के लिये जीवदयासभा बेलन गंज आगरा के पते से, हिन्दी, अंग्रेज़ी बंगला, गुजराती आदि भाषाओं के ट्रैक्ट बिना मूल्य मंगा कर तकसीम करें।

—मंत्री

—आवश्यकता भा० दि० जैन परिषद् के उपदेशक विभाग में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी जानकार ज्ञानी, सुधारके इच्छुक, सदाचारी, अनुभवी दो उपदेशकों की आवश्यकता है। जो उपदेशक बनना चाहें उन्हें भी साथ घुमाकर उपदेशक बनायेंगे।

ज्योति प्रशाद जैन; मंत्री उपदेशक विभाग

—प्रेमभवन देवबंद

—व्यावर में खंडेलवाल सभा व प्रतिष्ठा-आगामी फाल्गुन वदी १३ से सुदी ५ तक होने वाली है जिसका ध्वजारोपण मुहूर्त मगसिर सुदी १० को हो गया है। प्रतिष्ठा समय दि० जैन खंडेलवाल महासभा का तृतीयाधिवेशन होगा। स्वागत कमेटी बन गई है तथा इस अवसर पर भा० दि० जैन महासभा को भी अपना नैमित्तिक अधिवेशन करने का निमंत्रण भेजा जा चुका है।

कांग्रेस समाचार

दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में बेलगांव के अन्दर राष्ट्रीय महासभा (Congress) तथा अन्य सभाओं के अधिवेशन हुये हैं और उन में आगामी वर्ष के लिये भारत की स्वाधीनता के युद्ध के कार्यक्रम का निर्णय किया गया है। इस वर्ष राष्ट्रीय महासभा के सभापति भारत हृदय के सम्राट महात्मा गांधी थे। महात्माजी के सभापतित्व का भाषण अति उत्तम था अन्य सभापतियों की अपेक्षा आकार में छोटा था भाषण सरल स्पष्ट व सत्यता से पूर्ण था भाषण में तीन बातों पर ज़ोर दिया गया था (१) चर्खा प्रत्येक मनुष्यको स्वयंकातन चाहिये। कांग्रेस सभापद् के लिये तो आवश्यक बना दिया गया है कि वह प्रत्येक मास २००० गज़ लम्बा कता हुआ सूत दे। (२) हिन्दु मुस्लिम एकता जिसके बिना स्वराज्य होना असम्भव है। (३) अछूतपने को दूर करना हिन्दू मत नहीं सिखलाता कि किसी मनुष्य को अछूत समझा जावे। आपने अपने भाषण में यह भी बतलाया कि स्वराज्य कैसा होना चाहिये।

दयानन्द छल कपट दर्पण

जल्दी कीजिये ! कुछ प्रतियाँ बाकी हैं !! अन्यथा पछताइये !!!

दयानन्द सरस्वती कौन थे। किस नगर, कुल, गोत्र में इन का जन्म हुआ। उनका चलना व्यवहार कैसा रहा। जीवन किस प्रकार व्यतीतकिया। कौन ग्रन्थ पुस्तकें उन्होंने रचीं। किसधर्म के विश्वासी थे। आदि अनेक बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। उनके रचे ग्रन्थों का खण्डन, मिथ्या दोषारोपणों का उत्तर बहुत उत्तम रीति से दिया गया है। मूल्य २=) सजिल्द २॥) डाकखर्च ॥)

पता—चौधरी शिखरचन्द जैन फर्रुखनगर (गुड़गांव)

—भूल सुधार तृतीयाङ्क के पृष्ठ ७८ पंक्ति ४ में ४१० की जगह ४७० पढ़ना चाहिये और पृष्ठ ७६ पंक्ति २१ में ७३० की जगह ४७० पढ़ना चाहिये।

विषय–सूची।

१ श्री पार्श्वस्तवन १०६
२ जैन ला ११०
३ जैन इपीग्रेफिया ११३
४ आखिरी हसरत ११४
५ सम्पादकीय टिप्पणियाँ ... ११५
६ नवयुवकों से निवेदन ११८
७ महिला–महिमा ११८
८ साहित्य–सुमनसंचय ११६
६ साहित्य–समालोचना १२१
१० व्यापार-समाचार १२३
११ जैन–साहित्य १२४
१२ भा० दि० जैन परिषद्‌ और उसका द्वितीय वर्षाधिवेशन १२६
१३ महिलोपयोगी विचारणीय प्रस्ताव १२७
१४ पुरस्कार १२८
१५ संसारदिग्दर्शन १२६
१६ कांग्रेस समाचार १३१

केवल दो रुपये में

(१) वीर के प्रथम वर्ष का फाइल–

इस वर्ष में साहित्य, काव्य, सिद्धान्त धर्म, समाज, इतिहास, राजनीति, आदि २ सब ही विषयों पर बड़े ही उच्च कोटि के और उपयोगी लेख प्रकट हुए हैं। प्रत्येक अंक में स्त्रीसमाज के हितकर लेख, सुन्दर गल्पें, विनोद की सामग्री तथा संसारभर के आश्चर्यकारी अद्भुत खोजें व समाचार भी दिये गये हैं। यह संग्रह स्त्री पुरुषों के लिये एक समान उपयोगी और समय २ पर स्वाध्याय करने योग्य है।

(२) वीर के प्रथम वर्ष का विशेषाङ्क–

श्री महावीर जयन्ती के उपलक्ष में करीब १०० पृष्ठों का रङ्गीन व सादे बहुत से सुन्दर चित्रों से सुसज्जित हिन्दी के धुरंधर कवि श्री 'नवरत्न' 'गिरीश' आदि की सुन्दर कविताओं से अलंकृत मि० चंपतराय बा० ऋषभदास आदि के सुपाठ्य लेखों से विभूषित है। देखने ही योग्य है।

(३) वीर के प्रथम वर्ष का उपहार ग्रन्थ "असहमत सङ्गम"–

इस ५५० पृष्ठों के अमूल्य विराट उपहार ग्रन्थ में जैनमत, वेदमत, यहूदियों का दीन, वेदान्त, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, योग, बौद्धमत, ईसाई, इस्लाम, शाक्त, राधास्वामी, कबीरपन्थ, दादूपन्थ, थियोसफी, चार्वाक-मत आदि संसार भर के सब ही प्रचलित धर्मों के भेद और विरुद्धता के मूल कारण बड़ी सरल व सुन्दर भाषा में लिखे गये हैं, इसके मूल लेखक हैं बा० चम्पतराय जी बैरिष्टर हरदोई।

आज ही २) मूल्य और ।।) पोस्ट खर्च

कुल २।।) मनीआर्डर द्वारा भेजकर सब मँगालीजिये। वी. पी. नहीं भेजा जायगा, पीछे पछताना पड़ेगा।

पता—'वीर कार्यालय' बिजनौर यू० पी०

दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में मुद्रित

दरिद्रता, दुर्बलता, चिन्ता और रोगों का कारण
अधिक सन्तान का होना ही है।

सुखी-जीवन

इस में वैज्ञानिक रीति पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन किन कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा बिना कारण अज्ञानतावश हज़ारों स्त्रियाँ क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रह सकता है आदि २। जल्दी जल्दी सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन-पोषण भी समुचित रूप से नहीं किया जा सकता। रोगी माता-पिता से आजन्म रोगी दुर्बलेन्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दरिद्रता की नित्य वृद्धि हो रही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या हो जाने से दरिद्रता के शिकार हो रहे हैं। जैसे संतान-हीनता दुःख है, वैसे ही अधिक संतान भी नरक ही है। सुखीजीवन में यूरोप के विद्वानों के बनाए ऐसे यंत्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई है। जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भस्थिति रोकी जा सकती है। और जब चाहे संतान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन किन औषधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है, इसका आयुर्वेद और यूनानी द्वारा वर्णन किया है। लगभग ४० चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य ॥।) पौने तीन रुपये मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा अपूर्व सुगन्धि का भण्डार

हिमाद्रि तैल

सिरदर्द, दिमाग़ की कमज़ोरी, आँखों की कमज़ोरी, आँखों के सामने पढ़ने २ अन्धेरा आना, शिर चकराना, कम आयु में ही बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमाद्रि तैल—शीतलता और सुगन्धि का ख़ज़ाना है।
हिमाद्रि तैल—वनस्पति से तैयार किया गया है।
हिमाद्रि तैल—विदेशी और विषैली वस्तुओं से रहित है।
हिमाद्रि तैल—शिर दर्द से हाहाकार करने वालों को हँसाता है।
हिमाद्रि तैल—अधिक दिन लगाने से चश्मा लगाना भी छुटाता है।
हिमाद्रि तैल—ग्रीष्म शरद् ऋतु के लिये पृथक २ औषधियों से बनाया जाता है।

एकबार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायँगे। यदि पसन्द न हो तो दाम वापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता—ठक्कुर स्वदेशी स्टोर, बिजनौर यू० पी०

एकदम नई चीज़ ! बिलकुल मुफ्त !! एक अमूल्य ग्रन्थ !!!

वीर के ग्राहकों को अपूर्व उपहार

सुन्दर "महावीर भगवान" सजिल्द

बिलकुल मुफ्त मिलेगा

जैन समाज में श्रीवीर भगवान के जितने भी जीवन चरित्र लिखे गये हैं, उन सब में **यह चरित्र अन्यान्य विशेषताओं के कारण अधिक उपयोगी है** तथा अधिक महत्वपूर्ण और अपने ढंग का सब से पहला ग्रंथ है।

इस ग्रंथ को बा० कामताप्रसादजी जैन उ० स० "वीर" ने बड़ा परिश्रम करके **आधुनिक शैली पर एतिहासिक ढंग से बड़ी ही रोचक भाषा में** अत्यन्त छान-बीन के बाद लिखा है।

इसमे **जैन धर्मकी अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता** को न केवल जैन ग्रंथों के प्राचीन लेखों वरन अजैन विद्वानों की सम्मतियों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध किया है। जिनको देखने ही अजैन विद्वानों को भी **जैन साहित्यावलोकनकी उत्कंठा** पैदा होजाती है

यह ग्रंथ **श्रीवीर भगवान् के शिक्षाप्रद पवित्र जीवन** का अवलोकन कराते हुए, उनके वास्तविक व ऐतिहासिक व्यक्ति होने में तथा जैन धर्म के विषय में फैली हुई अन्य झूँठी किवदंतियों को दृढ़ प्रमाणों द्वारा निर्मूल सिद्ध करता है।

प्रत्येक जैनीको यह ग्रंथ अवश्य पढ़ना चाहिये।

श्रीमान् बा० शिवचरणलालजी रईस जसवन्त नगर की कृपा से यह ग्रंथ इस वर्ष **वीर के ग्राहकों को मुफ्त** भेज दिया जायगा।

शीघ्र ग्राहक बनजाईये अन्यथा पछताना पड़ेगा।

क्यों कि ग्रंथ के बड़े व कीमती होने के कारण केवल उतनी ही प्रतियां छपाई जांयगी जितने ग्राहकों का वार्षिक मूल्य मार्च तक हमारे पास आजायगा। जिन महाशयों का वर्ष महावीर जयन्ति (अप्रैल १९२४) से आरम्भ हुआ है और आगामी मार्च सन १९२५ में समाप्त होजायगा उनको चाहिये कि वह भी आगामी वार्षिक मूल्य भेज कर रजिस्टरमें नाम दर्ज करालें। कृपा कर गफलत न करें।

हम विश्वास दिलाते हैं—

कि जो महाशय इस अमूल्य अवसर को खोदेंगे वह बहुत पछतावेंगे। ऐसे उत्तम और अनमोल ग्रंथ हर समय प्रकाशित नहीं हुआ करते हैं।

राजेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक--वीर बिजनौर।

केवल टाइटिल पेज हिमालय--प्रेस, मुरादाबाद मे छपा।

वर्ष २] १५ जनवरी सन् १९२५ [संख्या ६

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

सम्पादक :—
जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादक :—
श्री कामताप्रसाद जी

इस वर्ष के वीर के ग्राहकों को शुभ समाचार।

सुन्दर ! विराट उपहार सजिल्द ! !

'महावीर भगवान और उनका उपदेश'

बिलकुल मुफ्त मिलेगा।

इस वर्ष के ग्राहकों को यह अनुपम ग्रन्थ जिसमें श्री वीर भगवान की जीवनी उनके उपदेश के साथ २ जैन धर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन ग्रन्थों के प्राचीन लेखों वरन संसार के बड़े २ अजैन विद्वानों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। ग्रंथ बड़ी छान बीन के बाद सुन्दर भाषा में लिखा गया है। अपने ढंग की अमूल्य सानी है।

शीघ्र ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिये अन्यथा पछताना पड़ेगा।

—प्रकाशक

प्रकाशक-श्री० राजेन्द्र कुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०)

विषय-सूची ।

नं०	विषय	पृष्ठ	नं०	विषय	पृष्ठ
१	ओस की बूंद (कविता) ···	१३३	७	सम्पादकीय टिप्पणियां ···	१४५
२	जैन समाज में जन संख्या की कमी	१३४	८	मथुरा के अधिवेशन में ··· ···	
३	भले उद्देश्य (कविता) ···	१३८		परिषद् व जैनियों का कर्तव्य	१४७
४	जैन इपीग्रेफिया ··· ···	१३६	९	संसार की अद्भुत बातें ··· ···	१४६
५	समाज में सेन्ट्रल जैन कालेज ···	१४१	१०	साहित्य-समालोचना ··· ··	१५०
६	प्राचीन खोज प्रयास ··· ···	१४२	११	संसार दिग्दर्शन ··· ··	१५२

'वीर' का विशेषांक

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमने महावीर जयन्ति के उपलक्ष में रंग बिरंगे अनेक चित्रों से सुशोभित, अन्यान्य विषयों से विभूषित, एक मनोहर और अत्यन्त उपयोगी विशेषांक निकालने का निश्चय किया है। जिस में श्रीयुत बा० चम्पतराय जी बैरिष्टर, बा० ऋषभदासजी वकील, बा० हीरालालजी एम. ए. गिरीशजी बी० ए० आदि बड़े जैन-अजैन आधुनिक लेखकों के लेख व कविताएं होंगी। यह अंक अपने ढंग का निराला ही होगा।

परन्तु 'वीर' की आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए यह कार्य भी असंभव है। अब कि हमारे ग्राहकगण व सर्व धर्म प्रेमियों [illegible] संख्या बढ़ाकर इस में सहायता करें।

इस अमूल्य विशेषांक के लिए (केवल ५००) की सहायता दरकार है। यदि कुछ सज्जन दस दस पांच पांच रुपये इस धर्म कार्य में प्रदान कर पुण्योपार्जन करलें, तो यह विशेषांक वीर के ग्राहकों के समक्ष बिना मूल्य ही अर्पण किया जासकता है।

इस कार्य में श्रीयुत बा० कामताप्रसादजी जैन अलीगंज निवासी ने दस रुपये हमारे पास भेजे हैं जिसके लिए उन को 'वीर-मण्डल' की ओर से कोटिशः धन्यवाद है हमको पूर्ण आशा है कि इसी प्रकार हमारे अन्य साधर्मी जन भी इस कार्य में हाथ बटाकर यश और पुण्य दोनों का सञ्चय करेंगे और हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे।

विनीत- प्रकाशक ।

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"हा ! वेही शास्त्र-पर्ण प्रशिथिलित हुए और भी जीर्ण शीर्ण ।
होते हैं देखके हा ! ऋषि-मुनियों के चित्त चिन्ताविदीर्ण ॥
लाखों ही ग्रन्थ होते जिन मत के यों नित्य कीटादि भक्ष्य ।
क्या तू ने हा ! किया है निज मन से भी एतदुद्दिश्यलक्ष्य ?"

—"भास्कर"

वर्ष २ | बिजनौर, माघ कृष्णा ७ वीर सम्वत् २४५१ १५ जनवरी, सन् १९२५ | अङ्क ६

ओस की बूंद

ओस की बिंदु न इठला मन में ।
कंटक चारों ओर बिछे हैं तेरे इस जीवन में ॥
मुक्ता की आकृति के सदृश सुन्दर मोहक रूप ।
ललित कुसुम पर बैठ दिखाती आभा सुखद अनूप ॥ १ ॥
इस स्वरूपको देख अरी तू हृदय न किंचित फूल ।
नश्वर है संसार न इसकी माया में टुक भूल ॥ २ ॥
सहसा पवन वेग से हत् बुधि चाटेगी तू धूल ।
जिसके बल पर तू इतराती होगा जीवन शूल ॥ ३ ॥

—"वत्सल"

जैन समाज में जनसंख्या की कमी

[ले० श्रीयुत चेतनदास जी बी० ए०]

जैन समाज में जनसंख्या की कमी क्यों हो रही है इस पर आजकल बहुत विचार हो रहे हैं और इस सम्बन्ध में हाल में कई सज्जनों ने अपनी सम्मति वीर, जैनमित्र; जैनप्रदीप, जैन आफताब आदि जैनपत्रों में प्रकाशित की है। उन को पढ़ने से यह मालूम होता है कि इस कमी के कारण बहुधा (१) अनमेल विवाह (२) बालविवाह (स्वास्थ्य का ठीक न होना (४) ज्ञान की न्यूनता (५) व्यर्थ व्यय समझे जाते हैं।

ऊपर के देखने से जैनसमाज की कमी के यही कारण दीखते हैं। जैसा कि किसी रोगी को देखने से ऐसा मालूम होता है कि वह ज्वरपीड़ित है और हाथ या शरीर के किसी और अङ्ग के स्पर्श करने से इस बात की साक्षी मिल जाती है कि वास्तविक उसको ज्वर है। तब ज्वर की औषधि से बीमार का इलाज किया जाता है. फल यह होता कि 'बीमारी बढ़ती गई ज्यों २ दवा की' कारण कि वह ज्वर केवल इस बात का सूचक चिन्ह है कि वह दुखी है। जब तक यह पता न होगा कि यह दुःख फेफड़े के खराब होने के कारण है या फोड़ा निकलने वाला है या बदहजमी है, या चेचक निकलने वाली है या कोई और खराबी शरीर में है उस समय तक ज्वर के इलाज ने कोई काम न दिया शरीर में इनमें से किसी व्याधि का पता लगने पर उसको मेटने का उपाय किया गया तब कुछ शान्ति हुई, थोड़े दिन आराम रहा परन्तु थोड़े दिन पीछे दूसरा उत्पन्न होगया तब यह समझ में आता है कि शरीर में कोई ऐसे परमाणु इकट्ठे होगये कि जो इन व्याधियों को उत्पन्न कर रहे हैं। इन विष भरे हुए परमाणुओं को शरीर से निकालते ही शरीर पुष्ट होगया और सब व्याधियाँ जाती रहीं। बात यह थी कि इस शरीर में दुःख के मूल कारण यह व्याधियां नहीं थीं यह तो बाह्य चिन्ह हैं जो इस बात का पता देती हैं कि शरीर दुःखी है, परन्तु मूल कारण अन्तरंग होता है जिसका पता बहुत सोचने से लगता है। जो लोग कि बाह्य दुःखों का इलाज करते रहते हैं वह बारहों महीनों के रोगी होते हैं। जब तक कि अपने शरीर में से सड़ी हुई मात्रा को निकालने का उपाय नहीं करते-अच्छे नहीं होते जब इस सड़ी हुई मात्रा को निकाल कर शरीर पवित्र किया जाता है तब वास्तविक शांति होती है।

इसी प्रकार, यह जैन जाति शरीर दुःखी है और यह रीति रिवाज़ उसके लिये व्याधि है जो उसको नष्ट कर रही हैं परन्तु यह सब मेरी समझ में मूल व्याधि के सूचक हैं, बाह्य चिन्ह हैं। उनके रोकने से कुछ शान्ति सम्भव है परन्तु वास्तविक उपाय करने के लिए कुछ गहरा जाना पड़ेगा, जाति के प्रत्येक अङ्ग को देखना पड़ेगा, अभ्यन्तर रोग का पता लगाना होगा।

विचार कर देखिये कि यह अनमेल विवाह, बाल

की न्यूनता, व्यर्थ व्यय आदि क्या सारी ही हिन्दू जाति में नहीं होरहा है परन्तु सबको मालूम है कि कुल हिन्दू जाति में जनसंख्या की कमी नहीं होरही है। दूसरे यह देखने में आता है कि हजारों जैनी अजैन होते चले आते हैं सुना जाता है कि मथुरा में घाटी का मन्दिर अग्रवालों ने बनाया था उस समय वहाँ पर हजारों अग्रवाल जैनी थे अब एक दो रह गये हैं जैन धर्म का उपदेश न मिलने से और अन्य जाति के स्थानीय जैनियों से प्रेम न पाकर सबने जैनधर्म त्याग दिया। ऐसा ही मैंने पीलीभीत में सुना था हरप्रान्त में यही सुना जाता है इससे यह स्पष्ट है कि जैनियों में कमी का मूल कारण कुछ और ही है यह कमी उन कारणों से नहीं हुई जो बतलाई जाती हैं न अनमेल विवाह का असर है न व्यर्थ व्यय का और न किसी और बात का, किन्तु जैनधर्म के उपदेश का अभाव ही मूल कारण दीखता है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे आचार विचार जैन धर्म के अनुकूल बहुत ही कम हैं।

यह सर्व माननीय है कि इस धर्म के दश लक्षण हैं। यथार्थ में तो धर्म से आत्मा के स्वभाव से मतलब है परन्तु इस स्वभाव की प्राप्ति के लिये यह दस भाव प्राप्त करने की आवश्यकता है। गृहस्थों के लिये वे इस प्रकार माने जा सकते हैं।

(१) क्षमा भाव—सब से मित्रता और प्रेम का भाव रखना।

(२) मार्दव भाव:—कुल, जाति, धर्म, संपत्ति, रूप, बल, विद्या, तप आदि का घमण्ड न करना अर्थात् अभिमानी न होना, दूसरे को घृणा की दृष्टि से न देखना।

(३) आर्जव:—मायाचारी को छोड़कर सरल परिणाम रखना, दूसरे को न ठगना, न धोखा देना जो दिल में हो वही बर्ताव में हो, छल कपट माया चोरी पना न हो।

(४) सत्य:—झूठ को त्यागना और जैसी बात या जैसा वस्तु का स्वरूप किसी के हृदय में हो वैसा ही कहना, विषय वासना में फँस कर असत्य न बोलना, यथा सम्भव ऐसी बात में न पड़ना जिससे कि दूसरे को हानि पहुंचे।

(५) शौच:—इसका अर्थ पवित्रता है और यह दो प्रकार से हो सकती है आत्मिक और शारीरिक शारीरिक पवित्रता भी आत्मिक पवित्रता पर निर्भर है यदि चित्त मलीन नहीं है और मनुष्य लोभी नहीं है तो उसके शरीर में रोग का ही कम सम्भव है। मनुष्य का जैसा मन होता है उसके अनुसार वायु के साथ पौद्गलिक परमाणु शरीर में आकर स्थित होते हैं। शुद्ध मनवाले के साथ शुद्ध परमाणु स्वांस के साथ आते हैं और मलीन मन वाले के साथ मलीन परमाणु साथ में आते हैं, इस कारण शौच शब्द मनकी पवित्रता से सम्बन्ध रखता है। लोभ का न होना ही शौच है फिर भी शरीर को बाह्य मैल से रहित रखना गृहस्थ का धर्म है।

६ संयम:—मन विषय वासनाओं में न घूमता फिरे और धर्म के कार्यों में लगा रहे ऐसे विचार रखना संयम है।

७ तप:—तप वह कार्य्यक्रम है कि जिस से आत्माओं में जो पहिले कर्मों का मैल लगा है वह दूर हो सकता है। शुभ सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान आदि से शुद्धता होती चली आती है इस कारण इनको करना चाहिए।

८ त्याग:—जो धन न्याय मार्ग से कमाया

है उस में से जितना बचा सकता है इस काम के लिए बचावे कि परोपकार और धर्मकार्य में खर्च हो सके। बुरे विचार बुरे शब्द को हर प्रकार से त्याग करे।

९ आकिञ्चन्य:—यह न विचार करे कि जो धन धान्य आदि मेरे पास है मेरे ज्ञान से अधिक काम के हैं वास्तविक ज्ञान ही एक चीज है जो कोई छीन नहीं सकता इन पदार्थों में मोह न रखे।

१० ब्रह्मचर्य:—काम वासना जहां तक हो सके कम करे केवल एक अपनी विवाहित स्त्री से संबंध रखना चाहिए।

अब पाठक महाशय यह विचार करें कि यह जैनत्व के चिन्ह हम में से किन किन में है। जिस समय श्री महावीर भगवान और उन के पीछे आचार्य साधुओं द्वारा लोगों को जैनियों में यह चिन्ह दीख पड़े तो धड़ाधड़ जैन मतावलम्बी बनते चले गए और उनको जैन कहलाने में गौरव था क्योंकि दया भाव सच्चाई, सादगी पवित्र मन, परोपकारता आदि जैन कहलाने से उसमें मान ली जाती थीं और वह इस बात का यत्न करता था कि अपने बर्ताव से ऐसा न होने पावे कि जैन धर्म पर धब्बा आवे, उसको इस बात का अभिमान न था कि मैं कौन वर्ण और कौन जाति का हूं। उसे इस बात के सोचने का समय ही न था। वह तो सतत परिश्रम से अपने कर्तव्य को पालन करते हुए धन कमाने में लगा रहता था और उस धन को परोपकार तथा धर्म कार्य्य में लगा कर प्रसन्न रहता था। उस को अपने नाम को विस्तृत करने का विचार नहीं था अपने नाम की संस्था खोलना या अपने नाम का मन्दिर बनवाना यह इष्ट नहीं था, किन्तु जहां कहीं भी धर्म कार्य्य में धन की आवश्यकता होती थी वहां धन को लगाता था, वह यह जानता था कि धन मेरा नहीं है परोपकार के लिए मेरे पास आया है जिस को आवश्यकता हो मैं दूं।

जब ऐसा होता था जनता पर उसका प्रभाव पड़ता था वह देखते थे कि जैनी बड़े दयालु हैं और इन से हमको बड़ा लाभ होता है। यही धर्म अंगीकार करना चाहिए। इसमें धोका नहीं है, सौदा नगद है इस हाथ ले उस हाथ दे, ईश्वर कोई देने वाला है या नहीं देने वाला है इस झगड़े में उस को पड़ने की आवश्यकता नहीं थी। वे देखते थे कि परिश्रम का फल अवश्य अच्छा होता है परिश्रम करके कमाना चाहिये। और चित्त प्रसन्न होता था; जब वे उस कमाये हुए धन से पीड़ितों की रक्षा करते थे। उस समय इस बात का विचार नहीं था कि वह कौन मत मानने वाले हैं करुणात्मक दया सब पर होती थी। इस वर्ष हिन्दुस्तान में नदियों की बाढ़ने लोगों को कितना दुख पहुंचाया इन बाढ़ पीड़ित मनुष्यों को जैनियों ने कितनी सहायता दी पाठक स्वयं विचार करें। यदि हम आपस में क्षमा भाव करके तीर्थों के झगड़ों को छोड़ते और एक दूसरे से आपस के झगड़ों को मिटा कर तीर्थ भक्त सज्जन और धर्म प्रेमी धन बाढ़ पीड़ितों की सहायता करते तो जैन धर्म का यश फैलता और बड़ी भारी वास्तविक प्रतिष्ठा होती। जैन धर्म की प्रभावना होती। ऐसा न होने से बहुत से जैनी ही जैन धर्म को त्याग देंगे।

किसी का कहना है कि जैनियों की इन्हीं

सहन शीलता और सादे विचारों से हिन्दुस्तानको धक्का पहुंचा है यह उनका कहना असत्य है। हिन्दुस्तान को क्षति उस समय से हुई है जब से जैन धर्म का प्रचार कम हुआ है। लोगों में मान, कषाय, लोभ, झूठ का स्वभाव फैलाया गया। यह बतलाया गया कि ब्राह्मण बड़े हैं अन्य छोटी जाति हैं। ईश्वर पर भरोसा करो सब काम चल जायगा। इससे लोग पुरुषार्थ हीन हो गए और अपना समय धन कमाने और उस को परोपकार और धर्म में लगाने की जगह अपने द्रव्य को ढोंग की पूजा और सैकड़ों देवता और देवियों की उपासना में खर्च करने लगे और लोभ इतना बढ़ा कि बहुत से त्यौहारों में ज्ञान लक्ष्मी की पूजा की जगह द्रव्य लक्ष्मी की पूजा होने लगी द्रव्य को ज्ञान से बढ़ कर मानने लगे। लोभ, कषाय बढ़े, जिस के कारण अनैक्यता फैली। इस प्रकार हिन्दुस्तान की क्षति उन लोगोंसे हुई जिन्होंने छल कपट से मन्दिरों द्वारा लोगों को बहका कर धन इकट्ठा किया और उस धनसे ऐसी धोके की सजावट पैदा की जिससे उन के अनुयायियों का मन बाह्य पदार्थों की शोभा में लिप्त होने लगा और सज धज की क्रियाओं के करने वालों की प्रशंसा के सामान पैदा किये।। संयम, तप और त्याग के भाव को छुड़ा कर मोह के जाल में फंसा दिया। भिन्न धर्म अवलंबियों को कृपा की दृष्टि से न देखकर उन पर झूठे २ आक्षेप करके अनैक्यता को फैलाया और परस्पर विरोध की अग्नि को जला कर भड़काया यह बात जानते हुए भी कि दूसरे के शास्त्रों में किसी विषय पर जो लिखा है वह किसी अभिप्राय को लेकर लिखा है और वह उस अभिप्राय से ठीक है तो भी खंडन करने के लिए अर्थ का अनर्थ करने का यत्न किया। एक को दूसरे से खूब लड़ाया।

जैनियों ने भी औरों को देख २ कर ऐसे ही आचरण अपने यहाँ कर लिए सैकड़ों प्रकार के देवी देवताओं को पूजने लगे. एक ही वर्ण के अन्तर्गत अलग २ ऐसी सैकड़ों जातियाँ होगई कि एक दूसरे से कोई सम्बन्ध ही नहीं था। जैसे वे सज धज को पसंद करते थे वैसे ही हम लोग करने लगे। सादा रहना सादा खान रखना और परोपकार करना छोड़ दिया, जो रुपया जाति से इकट्ठा किया वह आपुस के झगड़ों में खर्च कर दिया या मन्दिरों की सज धज में लगाया और ऐसी प्रतिष्ठा कराई जहाँ खूब झगड़े हों और लोग हंसाई हो।

इस लिए मेरी समझ में जैन संख्या की कमी का कारण केवल एक ही है। वह है जैन धर्म के तत्व को भूल जाना, और उपाय एक ही हो सकता है और वह है शौच, तप, संयम, त्याग आदि धर्म के लक्षणों का स्वयं आदर्श बन कर जैन धर्म का प्रचार करना और लोभ के राज को मिटाना। जैन धर्म को जाति भेद इष्ट नहीं है जब तक उन की पुष्टि होती रहेगी अनमेल विवाह अवश्य होता रहेगा, माया के जाल में फंसे हुए मनुष्य, जैन धर्म से दूर, लोभी, कन्या का बेचना कैसे छोड़ देंगे, जब तक कामकी तीव्रता है बूढ़े अपना विवाह करने से नहीं रुक सकते। उन के विरुद्ध कितना उपदेश दिया जावे। नवयुवक अच्छे बलवान और सदाचारी उसी समय हो सकते हैं जब कि पैदा होने से पहिले गर्भ की अवस्था में ब्रह्मचर्य्य के विचार के परमाणु उन में पहुंचे।

सारांश यह है कि कमी को दूर करना इष्ट है

से जैनधर्म का प्रचार करो। जाति के भेद को छोड़ कर ऐक्यता के मार्ग पर चलो। प्रेम और मैत्रिभाव सर्वत्र बिना रुकावट फैला दो। सूर्य्य के प्रकाश की तरह अंधेरी से अंधेरी कोठरी में पहुंच जाय। सुख शान्ति की स्थापना के लिए त्याग भाव को सदैव मन में रक्खो प्राणियों को सुखी बनाना जैन धर्म का मूल अंग है, इस अपूर्व सुख का संदेशा केवल कहने मात्र न हो किन्तु अपने कर्तव्य से, कार्य्य से, विचार से, आचार से, धर्म से और कर्मसे प्रभाव डाला जाय। वर्तमान साम्प्रदायिक मोहान्धता को दूर करके मैत्रीभाव का अंकुर जमाया जावे। कोई परवार है, कोई गोलालारा है ओसवाल है खंडेलवाल है वासा है यह भेद भाव का विचार न कर के धर्म के मूल लक्षणों पर ध्यान रखते हुए परिश्रम और उद्यम के साथ तथा ईमानदारी से द्रव्य कमा कर उसका सदुपयोग करो साम्प्रदायिक और जातीय सब संस्थायें मिल कर एक संस्था का संगठन हो जिसके द्वारा सत्य का प्रकाश हो और प्रेम का डंका बजे तथा मैत्री-भाव विस्तृत हो। हमारी पवित्र आत्मा हमको सफलीभूत अवश्य करेगी।

भले उद्देश्य

(ले० श्री० राजधर जैन पचोरा निवासी)

जैसे जो हैं मनुज सबों के तदुद्देश्य हैं।
उन पदों की प्राप्ति सबों के सदुद्देश्य हैं॥
बहुतों को पर विदित नहीं निज शुभोद्देश्य हैं।
अतः पूर्ण नहिं कर सकते वे सदुद्देश्य हैं॥
इसी हेतु सब के यहां बतलाते उद्देश्य हैं।
जैसे जिस नर को भले करने को उद्देश्य हैं॥१॥

शिक्षा का मूलोद्देश्य है ज्ञानी बनना।
भिक्षा का उद्देश्य नहीं जठरोदर भरना॥
धनियों का उद्देश्य दान में तत्पर रहना।
जीवन का उद्देश्य सदाचारी बन रहना॥
निर्भय करना निबलको बल प्राप्तिउद्देश्य है।
अहितत्याग हित ग्रहण ही विद्वज्जन उद्देश्य है॥२

कानों का उद्देश्य वीर-वाणी नित सुनना।
मस्तक का उद्देश्य वीर विभुको नित नमना॥
नेत्रों का उद्देश्य वीर प्रभु दर्शन करना।
जिह्वा का उद्देश्य वीर गुण गाथा गाना॥
भाषाका उद्देश्य है सद्भाषण करना सदा।
करोद्देश्य सत्कार्य को करते रहना सर्वदा॥३॥

तीर्थाटन करना चरणों का शुभोद्देश्य है।
जीव मात्र पर दया धर्म का सदुद्देश्य है॥
सज्जन का उद्देश्य दोष पर गुण करना है।
वीरों का उद्देश्य विघ्न से नहिं डरना है॥
मनका तो उद्देश्य है तत्व मनन करना सदा।
नर तन का उद्देश्य है तपश्चरण करना मुदा ४

शिशुओं का उद्देश्य भली शिक्षा लेना है।
वृद्धों का उद्देश्य साधुदीक्षा लेना है॥
ब्राह्मण का उद्देश्य ब्रह्म विज्ञानी रहना।
क्षत्रिय का उद्देश्य स्वबल रक्षा करना॥
न्यायोचित वाणिज्य ही वैश्यों का उद्देश्य है।
धर्मोचित सेवा परम शूद्रों का उद्देश्य है॥५॥

राजा का उद्देश्य प्रजाका रक्षण करना।
सुख समाज नित उसे सुरक्षित सुखमय रखना॥
धर्मकार्य के लिये उन्हें स्वाधीन बनाना।
पाप कार्य के लिये दंड दे उन्हें दबाना॥
प्रजावर्ग का अद भला सुन्दर मूलो देश्य है।
शिरो धार्य करना भला जो नृपका आदेश है॥६

जैन-इपीग्रेफिया

(ले० चेवेलियर डा० शेषागिरि राउ० एम० ए० पी० एच० डी०)

(क्रमागत)

कदम्ब वंश का इतिहास

सरकारी पुरातत्वान्वेषी स्व० राउबहादुर वी० वेंकैया के समय तक कदंब वंश का उत्पत्ति इतिहास निश्चित नहीं हुआ था और शायद आज भी उसने उस समय से कुछ अधिक उन्नति नहीं की है, वेंकैया ने जयवर्मा के एक कदम्ब दानपत्र का उल्लेख किया है, जिसको डॉ० हल्टश ईसाकी दूसरी शताब्दि का अनुमान करते हैं। इस अनुमान के समर्थन में और भी कुछ नवीन सामिग्री उपलब्ध हुई है। अभी साल में जो सन् १९१४,१५ की पुरातत्व सम्बन्धी सरकारी वार्षिक रिपोर्ट मिली है। उसमें कुछ ऐसे शिलालेख दिये हुए हैं (पृष्ठ१२०-१२१) जो सतवाहनकाल के हैं और जिनमें हरीति शब्द मिलता है। इधर कदंबवंश ही एक ऐसा दक्षिण प्रान्तमें शासक वंश था जिसने सबसे पहिले यह विशेषण ग्रहण किया"था मानव्यस गोत्र,हरीति-पुत्र।„ हरीति एक बौद्धदेवी का नाम है और हरीति ही बौद्धनाम बौद्धों के आहुति अर्पण करने अपेक्षा है। अतः,जो कदम्बों ने 'हरीति पुत्र, की उपाधि ग्रहण की उससे प्रकट है कि किस प्रकार पश्चात् का बौद्ध धर्म जैन धर्म में परिणत हो गया (?) ऐसे मनुष्य जिन्होंने इस सभ्योचित उन्नति को ग्रहण किया था वह अवश्य सतवाहन के पतन के अन्तिम समय में अर्थात् ईसवी सन् की प्रारम्भिक शताब्दियों के होने चाहियें। और इस ही समय का कदम्ब जयवर्मा का उक्त दानपत्र है। इसके कुछ काल पश्चात् मैसूर के शिलालेख से हमें एक "विष्णु कुन्दि कदम्ब शतकर्णी" का नामोल्लेख मिलता है। Vide Carmichael Professorship Lectures on Indian History bey Prof. Bhandarkar)

यदि इस मान्यता से श्रीगणेश करें कि ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में एक प्राचीन जैन कदंब गण दक्षिणभारत में आगये थे, तो हम समझते हैं कि उनके प्रवास का मार्ग पूर्वी तट होकर कोशल और कलिंग से हुआ था इसके पर्याप्त प्रमाण मिल जायँगे। टेलर साहब की हस्तलिखित शास्त्रों की

सूची में (Catalague of Oriental MSS. Vol III P. 60) एक कनड़ शास्त्र का उल्लेख है जिसमें कदम्बवंशीय राजघराना मगध में राज्य करता बतलाया गया है । यदि यह कदंबगण मगध से प्रस्थानित होकर दक्षिण भारत में आना चाहे होंगे तो वह अवश्य ही कोशल और कलिंग में से गुज़रे होंगे उसी पुस्तक के पृष्ठ ७०३-५ में एक मराठी शास्त्र का उल्लेख है जिसमें एक उपरान्त के कदम्ब राजा मयूर वर्मा (दक्षिण कर्नाट शाखा के) का विवरण दिया हुआ है । इससे केवल इतना ही पता चलता है कि वह उत्तर भारत से आया था और वह उत्तर भारतीय सभ्यता एवं उसके पालकों का हिमायती था । इस प्रकार साहित्य में कदम्बों के एक उत्तराय भारतीय राजवंश के उत्तरभारत से मगध, कौशल, कलिंग और पूर्वी तट होकर आने का स्पष्ट वक्तव्य मिलता है ।

यदि यह प्रारम्भिक जैनगण कदम्बगण जैन थे जैसी कि मेरी सम्भावना है कि वह जैनी थे, तो वह उन २ स्थानों पर जहां होकर वह गुजरे और ठहरे थे अवश्य ही अपने कुछ चिन्ह पीछे छोड़ गए होंगे "शत्रुंजय माहात्म्य" एक मुख्य जैन ग्रन्थ है । वह ईसा की आठवीं शताब्दि के पश्चात् का नहीं है । इसलिये यह अपने रचनाकाल के समय प्रचलित जैनमान्यताओं की प्रामाणिक साक्षी माना जा सकता है । इसमें जिन पवित्र जैन गिरियों का उल्लेख है उनमें एक "कदंबगिरि" भी है । ब्रह्मक्षत्रियों की एक कदंब शाखा ने जिन्होंने कदंब अपनालिया था वह अवश्य ही जैन थे क्योंकि कदंबगिरि उनके निकट विशेष पूज्य थी । कदम्बों की ही मान्यता का अनुकरण करते हुए चालुक्य भी अपने दानपत्रों में कहते हैं कि उनके पुरुषाओं को राज्य की प्राप्ति चालुक्यगिरि के देवताओं के पूजन के फलरूप हुई थी । (Vide Nandamapudi grant E. Chalukya Raja Raja Narendra) चालुक्यों की यह मान्यता,जिन्होंने कदंब ढंग "मानव्यस गोत्र, हरीतिपुत्र" को अपनालिया था, प्रारम्भिक कदंबों के निकट 'कदंबगिरि' पूज्यवस्तु थी इसकी साक्षी है और साधारणतया उनके जैन होने का भी प्रमाण है । हम इस बात को मानने को तैयार हैं कि स्थानों के कदम्बगिरि या कदम्बसिंगी अथवा इस ही प्रकार के अन्य नाम इस बात के साक्षी हैं कि यह नाम पहिलेपहिल कदंबों द्वारा अथवा उनके राज्यकर्मचारियों द्वारा रक्खे गये होंगे । उनसे निकटतट में कदंबों के आगमन और उनकी सभ्यता का पता चलता है । ऐसे स्थानों के नाम गंजम और विजगापटम् के भागों में मिल सकते हैं जिनसे नया भाग "अजेन्सी डिवीजन" मद्रास प्रान्त के उत्तर-पूर्वीतट पर निर्मित हुआ है ।

[क्रमशः]

समाज में सेन्ट्रल जैन कालेज़ की आवश्यकता।

प्रिय बन्धुओं ! यह बात आप लोगों को बतलाने की नहीं कि इस जैन समाज में न तो लक्ष्मी की कमी है और न लक्ष्मी के लालों की, कमी है तो केवल इस बात की कि इस में उत्साही कार्यकर्त्तागण बहुत ही न्यून हैं और जो हैं भी वे पहले अपना स्वार्थ साधते हैं पीछे समाज की फ़िकर करते हैं। यदि हमारी समाज में श्रीमान् माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय सरीखे दो एक ही पुरुष पुंगव होते तो फिर हमारी समाज की ऐसी गिरी हुई दशा कभी भी नहीं होती इस में एक 'सेन्ट्रल जैन कालेज' की तो कहे कौन, सैकड़ों हाईस्कूल और कालेज खुले हुए नज़र आते, परन्तु समाज का सच्चा प्रेमी तथा उसकी लगन में मस्त रहने वाला मुझे एक भी व्यक्ति नज़र नहीं आता। हां, समाज में स्फूर्ति डालने वाला और मुर्दा दिलों को जिन्दा करने वाला यदि कोई था तो वह स्वर्गीय कुमार देवेन्द्र प्रसाद ही था जिसने अपना सारा काल इसी समाज सेवा में व्यतीत किया था। इसी समाज सेवा की धुनि में लगे रहने के कारण वे एफ० ए० क्लास से आगे न बढ़ सके। पहलेपहिल सेन्ट्रल जैन कालेज' के प्रस्ताव को कुमार देवेन्द्रप्रसाद जी, आरा वालों ने ही श्री स्याद्वाद पाठशाला काशी के वार्षिकोत्सव के समय सन् १९१३ ई० में उठाया था। बाद को भारत जैन महामण्डल ने भी इसका पूरा पूरा आन्दोलन किया। परन्तु स्वर्गीय कुमार देवेन्द्रप्रसादजी की मृत्यु पीछे उसने भी यह प्रस्ताव बेहाल हुआ छोड़ दिया। परन्तु मैं कहता हूं कि यह प्रस्ताव हेय नहीं। इसके लिए जितना भी आन्दोलन किया जाए, थोड़ा है। जब तक इस प्रस्तावके अनुसार कार्य न होजाए तब तक बराबर आन्दोलन करने की आवश्यकता है,कारण कि यह बड़ा ही समयोपयोगी प्रस्ताव है। इसके अनुसार कार्य होजाने से समाज का बहुत कुछ काम बन सकता है। इसके अभाव में हमारी जाति के नवयुवक दर दर मारे मारे फिरते हैं, कहीं भी ठिकाना नहीं पड़ता। आखिरकार जब खूब हैरान हो जाते हैं तो पीछे जिस चाहे उस स्कूल या कालेज में प्रवेश हो जाते हैं और उन को धार्मिक शिक्षायें ग्रहण करते हैं। यदि हमारी जाति में इस का प्रबन्ध हो जाय तो हमारे नवयुवकों के आचार विचार उच्चकोटि के हों और वे दूसरों को भी शुद्धाचरणी बनावें। यदि समाज इसके लिए पूरा पूरा प्रबन्ध कर दे तो अङ्गरेजी के पढ़े लिखे बालक संस्कृत तथा धर्मशास्त्रों का शिक्षा प्राप्त कर जैन धर्म का महत्त्व सारे संसार में फैला देवें। अस्तु।

अन्त में मेरी श्रीमान बाबू अजितप्रसाद जी

वकील लखनऊ तथा श्री० पूज्यवर धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी से यही प्रार्थना है कि आप महानुभाव इसकार्य के लिये कमर कसकर तैयार होजाइये। यह कार्य बहुत ही गुरुतर है और यह आप जैसे महारथियोंके बिना पूरा नहीं हो सकता है,समाजमें आपलोगों की बड़ीधाक तथा प्रतिष्ठा है आप लोगों के जरिये यह काम बड़ी ही आसानी के साथ अल्पकाल ही में पूरा होसकता है। आशा है कि उक्त श्रीमान मेरी इस तुच्छ प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे।

प्रार्थी—नाथूराम सिंघई जैन

नोट:—एक सेन्ट्रल जैन कालिज की आवश्यकता और महत्व सर्व प्रकट है। जैन समाज के कतिपय विद्वान उसके लिए अपना जीवन समर्पण करने को तैयार हैं। परन्तु आवश्यकता है कार्यक्षेत्र की ओर रुपए की। हमारे दानवीर धनवानों को ध्यान देना चाहिये। —उ० स०

प्राचीन खोज प्रवास

श्री भा० दि० जैन परिषद् ने प्राचीन लेखों के संग्रह करने का जो प्रस्ताव स्वीकृत किया है, उसी के अनुरूप में हम लोगों ने यथाशक्य आस पास के मन्दिरों आदि से लेखसंग्रह करने का निश्चय कर लिया था। इस ही निश्चय के रूप में अलीगंज, जसवन्तनगर, और इटावे के नवीन मन्दिर के लेखों का संग्रह भी किया गया है जो ऐतिहासिक विवेचना के साथ शायद शीघ्र ही पाठकों के हाथों तक पहुंचेगा। इन लेखों से यह अच्छी तरह पता चलता है कि किसी समय में इस ओर भदावर प्रान्त में जैनियों का प्राबल्य विशेष रूप में रहा था। चीनी यात्री फाहियान ने जो मथुरा से दक्षिण दिशा में एक जनपद का नामोल्लेख किया था और जहाँ पर अहिंसा की विशेषता और साधु संघ में विभिन्नता उसने देखी थी, संभव है वह यही स्थान रहा हो। इस ही भदावर प्रान्त में आज भी जैनों की संख्या बाहुल्यता से हैं, परन्तु अब सब अज्ञान में गुलित नाश को प्राप्त होते जा रहे हैं हमें इन भाइयों की रक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध करना चाहिये। असहाय सहायकफण्ड की स्थापना कर उसके द्वारा इन लोगों का उद्धार करना चाहिये। फिलहाल कम से कम उपदेशक भेजकर उनमें ज्ञान प्राप्त करने की उत्कण्ठा उत्पन्न कर देना आवश्यक है। तथा उस उत्कण्ठा के रूप में उन्हें ज्ञान संचय करने का सुभीता उपदेशक महाशय के साथ "घूमते-पुस्तकालय" (Moving Lifrary) की योजना करके जुटा देना परम लाभप्रद है। यह कार्य परिषद् द्वारा सुगमता पूर्वक हो सका है, परन्तु यह तब ही जब कोई धनवान परिषद् के कार्यों में आर्थिक सहायता प्रदान करने की हामी भरले। जो हो परिषद् और दानवीर धनवानों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

अपने उक्त निश्चय को विशेष रूप से कार्य में परिणत करने के लिये और भदावर प्रान्त में जैनियों के प्राचीन कीर्ति का विशेष अनुसन्धान पाने की आशा से हम और हमारे मित्र परिषद् के दो सदस्य, श्रीयुत बा० शिवचरणलाल जी और श्री बाबू अमर चन्द जी-इस प्राचीनता की खोज में प्रयास करने को इस प्रान्त में प्रवास कर गये। जमुना की गहरी कन्दरायें और मीलों बीहड़ बन मानों संसार की भयानकता बतलाता हुआ हमें कालिन्दी के कलकलनाद करते सलिल-धारा के पास खड़ा देखता अट्टहास करते प्रतीत हुआ! जमुना पार हुए! बटेश्वर कचौरा में दाखिल हुए! यहां पर जो दृश्य देखा वह तो संसार की नश्वरता का चोखा चित्र था। जमुना की गत दारुण बाढ़ ने कचौरे का वास्तव में कचूमर ही बना दिया था। पुख्ता आलीशान मकान जो कभी अपनी दृढ़ता और विशालता में ऐंठे खड़े थे-जो कभी भी झुकना उस समय स्वीकार न करते थे-वही आज धराशायी हुए अपनी मूढ़ता पर मानों पश्चाताप कर रहे थे। कहते हैं बादशाही जमाने में यह स्थान व्यापार प्रधान था। बासठ-बसने यहां पर चालू थे वहां चहुवाण वंशी राजाओं का राज्य था। सं० १६११ में नृप महेन्द्र सिंह राज्याधिकारी थे। यही गद्दी आजकल नौगांव में स्थानान्तरित हो गई है। इनका उजड़ा किला आज भी जमुनातट के प्रेरे झंझावायु के झकोरों से सांय २ शब्द करता मनुष्य की निष्ठुरता पर रोष प्रगट करता प्रतीत होता है। आज का बहुत कुछ उजड़ा कचौरा अपनी पूर्व की समृद्धशाली दशा का परिचायक है। यहां ३-४ घर गोलालारे और लमेचू जैनियों के हैं। एक प्राचीन पुख्ता विशाल जिन मन्दिर भी है। इसका मुख्यद्वार दर्शनीय है। यहाँ के मन्दिर की प्रतिमाओं और यंत्रों के लेखों की प्रतिलिपि ली। यहां संवत् १५७१ तक के यंत्रादि हैं! यहां से हम लोग अगाड़ी बढ़कर राजा की हाट होते हुए महाराज भदावर के राज्यस्थान नौगांव पहुंचे। राजकी हाट में महाराज भदावर का बागादि पुख्ता इमारतें बनी हुई हैं। और एक छोटा सा बाजार भी राज्य की ओर से व्यवस्था होने पर लग गया है। यहां जो बाहर से १-२ घर जैनियों के आए हैं उन्होंने ही अपने घर में एक प्राचीन प्रतिबिम्ब लाकर स्थापित करली है। वहीं लीकानुसार पूजा-पाठ करते रहते हैं। नौगांव तक पहुंचने में हमारा मार्गपर्यटन ठीक अंग्रेजी गणनांक के नौ की उल्टी शक्ल का होगया था। जमुना की कन्दराओं के कारण बड़े चक्कर से नौगांव पहुंचना होता है। परन्तु अब आशा की जाती है कि महाराज भदावर एक सीधी सड़क शीघ्र बनवावेंगे। हमने नौगांव के विषय में जो कल्पना की थी, ठीक उसके प्रतिकूल रूप में उसके दर्शन हुए। दोनों ओर खड़ी हुई ऊँची कन्दराओं के बीच में होकर नौगांव पहुंचा जाता है। राजमहल और राजकीय इमारतों को छोड़कर नौगांव बिलकुल एक मामूली गांव ही है। राजकीय इमारतों में राजा महेन्द्रपालसिंह का मन्दिर अच्छा बना है। वहां राजपुरुषों की मूर्तियां स्थापित बतलाई गईं। यहीं एक भाग में राजकीय हकीम रहते हैं। यहां से जमुना और जमुनातट का रमणीय दृश्य अपूर्व दृष्टिगत होता है यहां सिर्फ दो घर लमेचू जैनियों के हैं। इन्हीं में एक राजा के मोदी हैं।

उन्हीं के साथ श्री मन्दिर जी के दर्शन करने गये, वहां की दशा देखकर हमें हर्ष के स्थान पर शोक का अनुभव करना पड़ा। गांव के किनारे उजड़ेरूप में एक कच्चा घर है। उसही के भीतर एक छोटी सी कोठरी में त्रिलोकपति श्री तीर्थंकर भगवान् की धातु और पाषाण की १३ मूर्तियां विराजमान हैं। इनमें सं० १३८७ की एक मूर्ति प्राचीन है। यहीं हाथ भर से लेकर आध बिलस्त के परिमाण के १६ यन्त्र भी हैं। इनमें सं० १५२० के ६ यन्त्र विशेष दर्शनीय हैं। इनकी प्रतिष्ठा भ० विश्वभूषणदेव द्वारा हुई थी और इनकी स्थापना गोलारे श्री मल्ले ने कराई थी। इन पर जो तांबे के रङ्ग का रंगसाजी का प्लास्तर (Coating) है वह ठीक आज कल के (Enamelled Ceating) के सदृश है। खूबी यह है कि उनका रोज़ाना प्रक्षाल होते रहने पर भी वह तनिक भी घिष्ट्त नहीं हुआ है। यह देशी कारीगरी के खासे नमूने हैं। उन्हीं में एक श्री पार्श्वनाथ के यन्त्र में श्री पार्श्वनाथ भगवान् की और धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्तियां भी उकेरी हुई हैं। इसके पहिले हमारे देखने में यन्त्रों की मूर्तियां नहीं आई थीं। इन मूर्तियों और यन्त्रों की रक्षा समुचितरीति से हो इस कारण वहां के जैनी मुखिया पोद्दार महाशय ने अपने घर के निकट उनके लिये चैत्यालय बनाने का वचन दिया है। आशा है, उसकी वह पूर्ति शीघ्र करेंगे। हमको यह जानकर दुःख है कि इन धर्मवत्सल महोदय ने ज्यों त्यों कर मन्दिर बनवाने को मंदिर में ईंट भी एकत्रित की थीं, परंतु राज्य ने अपने कार्य में उन्हें ले लिया। वास्तव में राज्य द्वारा धर्मायतन की दशा समुन्नत न हो सके तो यह उसके लिये कदापि भी शोभनीक नहीं है। आशा है धर्मवत्सलता के अनुरूप में महाराज भदावर इस ओर ध्यान देंगे। जैनी भाइयों से ज्ञात हुआ कि कुछ वर्षों पहिले यहाँ जैनियों के २० घर थे। उनमें से कुछ तो व्यापार प्रसंग से बाहर चले गये और शेष अज्ञानता में पड़े २ काल की कुटिल गति से केवल दो ही रह गये। यह जैनियों के पतन का प्रत्यक्ष दृश्य है। इस ओर के सर्व भाई अब भी अज्ञानता के अन्धकार में पड़े हुए ज्यों त्यों कर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यहां के जैनियों की शिक्षा का नम्बर Census Report के नम्बर से बिलकुल बरअक्स मिलेगा। जाति नेताओं और दयालु भाइयों को इस करुणदशा पर दया लाना चाहिये। तथा नवीन जिन बिम्बों की स्थापना करने के पहिले इन प्राचीन बिम्बों के उद्धार और उनकी विनय के लिये यहां के जैनियों की रक्षा का प्रबन्ध करा अटूट पुण्यसंचय करना चाहिये। तथा अन्य सहृदयों को प्रस्तावानुरूप अपने यहाँ के लेखों का संग्रह शीघ्र ही भेजना चाहिये।

—उ० शां०।

कांच की शीशियां

स्वदेशी ! सस्ती !! बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड ब्रादर्स, महावीर भवन, बिजनौर

सम्पादकीय टिप्पणियां

जैन जाति की उन्नति और परिषद लक्ष्मीपात्रों की कृपा

प्रिय भाइयो ! जैसे अपने शरीर की रक्षामात्र सोचने से नहीं होती है किन्तु अच्छी तरह सोच विचार कर स्वास्थ्ययुक्त भोजन पान वस्त्रादि देने से होती है अथवा जैसे आत्मा की उन्नतिमात्र ज्ञान व श्रद्धान से नहीं होती किन्तु सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञानसे विशिष्टहोकर सम्यग्चारित्रकेअभ्यास से होती है वैसे जैन जाति व जैनधर्म की रक्षामात्र सोचने व प्रस्तावों के पास करने से नहीं होती है किन्तु अच्छी तरह सोचे हुए व निर्णय किये हुए प्रस्तावों के अनुसार आचरण करने व कराने से होती है।

प्रिय बन्धुओं ! भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का जन्म इसीलिये हुआ है किइसकी एक सङ्कुठित उत्तेजना के द्वारा इसके सभासद्, प्रतिनिधि व प्रायः स्त्रीपुरुष कार्यक्षेत्र में उतरकर साहस के साथ साधक कारणों का प्रचार और विरोधक कारणों का बहिष्कार करें तथा द्रव्यक्षेत्र काल को देखकर दि० जैन शास्त्रों के सैद्धान्तिक उद्देश्योंके अनुकूल जो २ साधक यथार्थ उद्देश्य की सिद्धि के लिये जान पड़े उनको निर्भय होकर कहें, समझावें, आप उन पर चलें तथा दूसरों को चलने का मार्ग बतावें।

हमारे ऋषियों के रचे हुए प्राचीन शास्त्रों में जो रहस्य भरा है व जो मनुष्यसमाज की उन्नति का मार्ग बताया है उसी को आधार मानकर बिना किसी भय के यदि परिषद् द्वारा उपायों की योजना की जायगी तो बिना किसी संदेह के जैन धर्म व जैन समाज की उन्नति होगी।

हरएक गृहस्थ को अपना नित्य का चारित्र श्री समन्तभद्राचार्य के कथनानुसार बनाना चाहिये। उन्हों ने श्रीरत्न कांड श्रावकाचार में गृहस्थ के आठ मूल गुण बताए हैं। येही एक साधारण व्यक्ति को राज्य व पंच के दंडों से बचाकर लोकमान्य बनाने वाले तथा चित्त को निराकुल व धर्मात्मा बनाने वाले गुण हैं।

मद्य मांस मधु त्यागैः सहाणु व्रत पंचकम्।
अष्टौमूल गुणा नाहु र्गृहिणां श्रमणोत्तमाः॥

अर्थात्—मदिरा, मांस व मधु न खाना तथा अहिंसा सत्य,आस्तेय, स्वस्त्री संतोष; परिग्रह प्रमाण इन पाँच अणुव्रतों का अभ्यास करना जो गृहस्थ नीति से व्यापार करेगा वह पैसे को नीति से खर्च भी करेगा। वह स्वयं अन्यायों से, व्यर्थ व्ययों से बचेगा। जो स्वयं कामसेवन में व परिग्रह में संतोष रखने का अभ्यास करेगा वह अपने पुत्र पुत्रियों को अवश्य शिक्षित करके नीति पर चलायगा तथा उनका जीवन संतोषपूर्ण हो ऐसा विवाहादि सम्बन्ध उनका करेगा। स्वयं ही बाल विवाहादि का विरोध होजायगा। प्रिय भाइयों! परिषद् द्वारा जैनधर्म का गौरव बढ़ाओ, अजैनों को ज्ञान का अमृत देकर प्रेम से उन को जैनी

बनाओ और उनके साथ आदर का व्यवहार करो उनके साथ साधर्मीपने का व्यवहार करो,जाति से कुरितियों के हटाने में स्वयं अग्रगामी हो। समाज में वीर पुत्र उत्पन्न हों इस लिये सम्बन्ध मिलाने का क्षेत्र प्राचीन काल के अनुसार विशाल बनाओ योग्य संतानों से ही समाजकी शोभा हो सक्ती है।

परिषद द्वारा जो प्रस्ताव निश्चत हों उन में बहुत से प्रस्ताव के प्रचार के लिए धन की आवश्यक्ता है, धन के लिये लोगों से चंदा करके एकत्र करना यह सहज उपदेश सब कोई जानते हैं-परंतु आवश्यक्ता यह है कि जैसे महामंत्री, पत्रसम्पादक आदि अपना तनमन देकर समाज सेवा करने पर तय्यार हैं उसी तरह कुछ लक्ष्मी पात्रों को स्वयं अपना धन परिषद् के प्रस्तावों के प्रचार में लगा देने का बलिदान करना चाहिये। यदि कम से कम एक भी धनवान इस बात पर तय्यार होजावें कि हम हजारदाहिजार प्रति वर्ष इस परिषद् द्वारा कार्यों के होने में खर्चा करेंगे तो सहज में तनमन लगाने वाले रुपयों की चिंता छोड़ कर केवलकार्य की चिन्ता में ही, अपनी शक्ति को लगावें—

हमारे धनवान भाइयों को स्वर्गवसित सेठ माणक चंद हीराचंद बम्बई का उदाहरण ग्रहण करना चाहिये। बम्बई दि० जैन प्रान्तिक सभा के प्रस्तावों के प्रचार में धनकी सहायता देनेवाले आप मुख्य लक्ष्मीपात्र थे आपके जीवन में तो आप धन से मदद दे सभा के कार्य चलाते ही थे परन्तु आपने आप के पीछे भी सभा के कार्यों में सदा धन की सहायता मिलती रहे ऐसी योजना कर दी, जिससे परीक्षालय का काम निर्विघ्न चल रहा है उपदेशक भी घूम रहे हैं' यद्यपि प्रान्तिक सभा के नाम से नहीं किन्तु कार्य वही हो रहा है जो प्रान्तिक सभा करती। जैनमित्र भी आपके व आपके कुटुम्बियोंकी छत्रछायामें बराबर समाजकी सेवा करता आरहा है। इसी तरह हमारी भावना है कि परिषदके प्रस्तावों के ऊपर भी किसी लक्ष्मीपात्र को लक्ष्मी का उपयोग बिनासंकोच करने का साहस दिखाना चाहिये। बिना धन के कोई उन्नति के काम नहीं हो सकते हैं।

यह जैन समाज हर तरह अवनति के गर्त में धंसी चली जा रही है यदि हमारे परोपकारी भाई उपकार का दृढ़ प्रयत्न न करेंगे तो अपने कर्तव्य से च्युत होकर जैसे आलस्यमें कोई अपना घर चोरों से लुटने दे वैसे हम अपनी जाति को अज्ञान,अनैक्य कुरीति, आदि लुटेरों से लुटने देंगे और इस मूर्खता के पाप के भागी होंगे।

—सम्पादक

जैनी और म० गांधी।

सर्वमान्य म० गांधी जी ने जो व्याख्यान गत कांग्रेस के सभापति की हैसियत से दिया था, वह वस्तुतः भारत की वर्तमान संकटापन्न दशा के पूर्ण अनुकूल था। आज मतभिन्नता के होते हुए भी आपसी ऐक्यता की कितनी आवश्यक्ता है वह उससे भलीभांति प्रकट है। वर्तमान बातें बनाने के लिये नहीं है प्रत्युत जी तोड़ कार्य करने के लिए है। इस ही को लक्ष्य कर म० जी ने कांग्रेस प्रतिनिधियों से परस्पर एक दूसरे पर विश्वास रखते हुए चर्खा-प्रचार और विदेशी बहिष्कार में जी जान से संलग्न हो जाने की प्रेरणा

की है। यथार्थ में आज भारतवासियों की आर्थिक दशा को उन्नत बनाने के लिये यह चर्खा अचूक प्रयोग है। हमारे जैनी भाइयों को भी भारतोद्धार के लिये कम से कम म० जी के इन वचनों की तो पूर्ति करना ही चाहिये। वैसे तो म० जी ने जैनियों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा है, परन्तु जो विचार उन्होंने अल्प संख्यक (Minoity) जातियों के सम्बन्ध में कहे थे, उनसे संभवतः हमारे कतिपय भाई जैनियों की सर्वांश प्रथक प्रतिनिधित्व की मांग को अनुचित समझें। परन्तु म० जी वर्तमान की अवस्था को देखते हुए उसको बुरा नहीं कहते। और वस्तुतः आज के भारत में परस्पर अविश्वास और स्वार्थ परता की दशा में अल्प संख्यक जातियों को अपने स्वत्वों की रक्षा के लिये प्रथक् प्रतिनिधित्व आवश्यक ही है। इस दशा का प्रत्यक्ष प्रमाण मुस्लिम, सिक्ख और पारसी प्रतिनिधियों का प्रथक निर्वाचित होना सर्व समक्ष है। ऐसी दशा में अपने स्वत्वों तथा अपने रीतिरिवाजों और सभ्यता की रक्षा के लिये आज जैनियों का सर्वत्र अपना प्रतिनिधि भेजने की आकांक्षा प्रकट करना सर्वथोचित है। बेलगाम में माननीय पं० मालवीय जी ने जो हिन्दू-महासभा की पुष्टि में विचार प्रकट किये वह भी इस आवश्यका को उपयुक्त प्रकट करते हैं। तिस पर स्वयं म० जी भी इस बात को भारत की भलाईके लिये उचित समझते हैं कि सर्व जातियों और सर्व विचारों के मनुष्य कांग्रेस में सम्मिलित हों। तो ऐसी दशा में हम महात्मा जी से सानुरोध प्रेरणा करेंगे कि वह कांग्रेस कमेटी और ऐक्यता सम्मेलन में जैन प्रतिनिधि रखनेकी योजना करें। आज जैनियों की अवस्था का और उनके मत को प्रकट करने वाला हमें उक्त संस्थाओं में कोई भी नहीं दीखता। अतएव विश्वास है कि म० जी हमारे इस कथन पर अवश्य ध्यान देंगे। वैसे यह माननीय है कि भारत राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रथकत्व का भेद उठ जाना चाहिये और इस अवस्था में जैनियों को अपने अलग अस्तित्व को प्रकट करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये। परन्तु जब तक मुस्लिम, सिक्ख और पारसियों का प्रतिनिधित्व अलग माननीय है तबतक जैनियों को उसके लिये रोकना एक तरह उनके अधिकारों की उपेक्षा करना है। वस्तुतः यह जैनियों के लिये घोर अपमान है और इस को मेटने के लिये उन्हें भरकस प्रयत्न करना चाहिये।

—का० प्र०

वार्धा के अधिवेशन में परिषद् व जैनियों का कर्तव्य

यह तो सब को विदित है ही कि परिषद् का जन्म देहली महोत्सव में उस समय हुआ था जब कि जैन समाज के कुछ हितैषी विद्वानों ने यह जान लिया था कि महासभा में वास्तविक काम करने

वालों के लिये स्थान नहीं है। और यदि वे जैन समाज को कालके मुख से बचाना चाहते हैं तो उन को महासभा से पृथक् होकर संघद्वारा जैनसमाजके उत्थान व जैनधर्म के प्रचार का कार्य करना चाहिये। इस उद्देश्य को अपने सामने रखकर परिषद् के कार्यकर्त्ताओं को आगामी वर्ष के लिये कार्यक्रम बनाना चाहिये। इसी भाव को लेकर लेखक अपने विचार समाज के समक्ष रखने को तत्पर हुआ है।

सब से बड़ा दोष जो इस जैनसमाज में फैला हुआ है वह परस्पर द्वेष व फूट है। १२ लाख संख्या वाली जैन समाज पहिले से ही दिगम्बर व श्वेताम्बर दो संप्रदायों में विभक्त थी और उनकी परस्पर मुकद्दमेबाज़ी से जो तीर्थ स्थानों के सम्बन्ध में हो रही है, विह्वल थी परन्तु इनमें से प्रत्येक सम्प्रदाय को उसके आन्तरिक झगड़ों ने बिलकुल ही कालेमुख करदिया दिगम्बर समाज को ही लीजिये इस में फूट का साम्राज्य दिखलाई देता है कुछ समाचार पत्र अपने कर्त्तव्य को भूलकर द्वेषोत्पादक लेख लिख कर समाज को उकसा रहे हैं जिससे समाज में द्वेष के भाव बढ़ रहे हैं और समाज वास्तविक कार्य की ओर से शिथिल होती जाती है इन पत्रों का एकता के लिये लिखना कैसे कार्यकारी होसकता है? क्या फूट रूपी अग्नि पर द्वेषोत्पादक लेखों के घृत डालने से फूट की आग बुझ सकती है?

अतएव परिषद् व जैनियों का कर्त्तव्य है कि वे इस फूट को समाज से दूर करनेका प्रयत्न करें। फूट प्रेम के द्वारा जीती जा सकती है Love conquers all 'प्रेमो जयति संसारः' अर्थात् प्रेम द्वारा संसार जीता जा सकता है। यह प्रेम शब्द अहिंसा को रूपान्तर है, जिसकी जैनधर्म में बड़ी मान्यता है अतः जैनियों को और परिषद् के कार्यकर्त्ताओं व हितैषियों को विशेषकर प्रेम के द्वारा फूटरूपी शत्रु का संहार कर देना चाहिये। उन्हें अपने या अपने मित्रों के ऊपर किये हुए कटाक्ष व आक्षेपों को साधुओं की भाँति सहन कर के उत्तर न देना चाहिये। यदि विचारों पर आक्षेप किया गया हो और उस से समाज में भ्रम फैलने का डर हो तो अपने शुद्ध विचार प्रकट कर देना चाहिये। यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि परिषद् का पत्र 'वीर' अबतक इससे मुक्त रहा है और आगामी भी इस दोष से मुक्त रहेगा।

समाज में कितनी ही सभायें कितने ही काल से कार्य करते दिखाई देती हैं परन्तु उन्नति कुछ भी दिखाई नहीं देती। समाज में इंद्रिय विलासिता शिथिलता कायरता, द्वेष तथा असत्य व्यवहार बढ़ते हुये दिखाई देते हैं तब कैसे जैन धर्म जो अहिंसा (प्रेम) सत्य संयम निर्भयता कार्य तत्परता का शिक्षक है और जिसके प्रवर्तक क्षत्रीकुल शिरोमणि तीर्थंकर हुये हैं कैसे उन्नति करता हुआ कहा जासकता है। तब प्रश्न उठताहै कि उन्नति क्यों नहीं होती? उत्तर स्पष्ट है कि अब तक सभाओं में व्याख्यानादि ही होते रहे परन्तु उन बातों को जो व्याख्यानों में कही जाती है स्वयं व्याख्यानदाता भी काम में नहीं लाते क्या उपदेशरूपी औषधि को बिना प्रयोग में लाये हुये दुर्व्यवस्थाका रोग दूर हो सकता है? क्या जैन धर्म के आचार्यों ने श्रद्धान (सम्यक्) के हो जाने पर ज्ञान के साथ २ चारित्र को आवश्यक नहीं बतलाया? अतः समाजमें अब कहने मात्र से काम नहीं चलेगा काम करने से चलेगा। आवश्यकता प्रतीत होती है कि वास्तविक

(ठोस) कार्य करने के लिये परिषद् की आधीनता में 'वीर संघ' स्थापित किया जावे। उस के सभासद् वे ही हो सकेंगे जो निम्न लिखित बातें करें।

१–जो जैन धर्म श्रद्धानी सप्तव्यसन त्यागी पंच अणुव्रत धारक अर्थात् व्रतप्रतिमा के धारक हों।

२–जो जैन धर्म फैलाने में अपना समय व आमदनी का शतांश देने को तय्यार हों।

३–जो कुरीतियों व व्यर्थ व्यय को स्वयं किसी दशा में भी न करें तथा इन को रोकने के लिये कटिबद्ध हों और आवश्यका पड़ने पर सत्याग्रह के लिये भी तय्यार हों।

४–छोटी २ जैन जातियों का वेग के साथ ह्रास देखकर उन जैन जातियों में जिन का खाना पीना विचार रहन सहन एकसा है रोटी बेटी व्यवहार प्रारम्भ करदें तथा करादें।

५–विद्यालयों में ऐसी शिक्षा का प्रबन्ध ऐसी रीति से करें कि वहां से विद्यार्थी विद्वान् ,उत्साही, जैनधर्म की सेवा के इच्छुक निकलें और उनमें अपना जीवन देने के लिये तैयार हों।

६–अपने ऊपर किये हुए आक्षेपों का उत्तर जब तक कि उनसे समाज में मिथ्या भ्रम फैलने का डर न हो न दें।

७–स्थान २ पर परिषद् की शाखायें स्थापित करके उसके प्रस्तावों को प्रयोग में लावें।

८–परिषद् के कार्यकर्त्ताओं के लिये आवश्यक हो कि वे वीरसंघ के भी सभासद् हों। यह अवश्य है कि ऐसे वीरसंघ के सभासद् थोड़े होंगे। थोड़े होने से कोई हानि नहीं क्यों कि ये सभासद् हृदय से काम करने वाले होंगे इनके व्यवहार से जैनधर्म टपकेगा–इनमें एक आकर्षणशक्ति होगी जो दूसरों को उच्च बनाने और अपने में सम्मिलित होने के लिये आकर्षण करेगी।

परिषद् को उपर्युक्त वीरसंघ स्थापित करने के अतिरिक्त उपदेशक विभाग के कार्य को अधिक बढ़ाना चाहिये—जब तक जैन धर्म के प्रचार का कार्य नहीं होगा तब तक जैनी वास्तव में जैन कहलाने योग्य न होंगे और न अजैन जनता में जैनधर्म फैल सकेगा। इस कार्य में अबतक दो बातें बाधक रहीं (१) धनाभाव (२) योग्य प्रचारकों की कमी परिषद् को उचित है कि उपर्युक्त कार्य के लिये एक अच्छी रकम जमा करलें जिसके द्वारा भारत या भारत के बाहर व्याख्यान पुस्तक आदि के द्वारा जैनधर्म फैलाया जा सके। तथा स्याद्वाद विद्यालय आदि को हाथ में लेकर ऐसे योग्य विद्वान् तैयार करे जो जैनधर्म के प्रचार का कार्य कर सकें।

जैनधर्म के गौरव को सर्व साधारण में स्थापित करने के लिये इतिहास विभाग को दृढ़ करना चाहिये। परिषद् के इस कार्य को उत्तमता से चलाने के लिये कमसे कम एक लाख रुपये के फंड की आवश्यकता है। जैनधर्म प्रभावनार्थ प्रतिवर्ष लाखों रुपया व्यय किया जाता है सबमें बड़ी प्रभावना जैनधर्म की उसी समय होवेगी जब उसकी प्राचीनता व उत्तमता का सिक्का इतिहास अनुसन्धान द्वारा सर्व साधारण पर जम जावेगा।

परिषद् ठोस काम करने के लिये स्थापित की गई है, प्रत्येक जैनी को जो जैनधर्म का बढ़ना व जैन समाज की उन्नति चाहता है परिषद् के अधिवेशन धार्वा में जो २७-२८-२९ जनवरी को होगा पधारना चाहिये। और आगामी वर्ष के कार्यों के

निर्णय में सहायता देनी चाहिये।

नोट—जैनियों को चाहिये कि स्थानीय सभा पंचायतों की ओर से वार्षा अधिवेशन के लिये प्रतिनिधि चुनकर सूचना देवें।

भवदीय—
रतनलाल बी. एस सी. एल. एल. बी.
मन्त्री—जैनपरिषद्, बिजनौर

साहित्य समालोचना

आत्मरामायण—(अंग्रेजी) श्री फर्शरानन्द हिन्दू संन्यासी प्रणीत और श्रीमान् चम्पतराय जी जैन हरदोई द्वारा अनुवादित व प्रकाशित। पृष्ठ ६७ मूल्य १॥) छपाई सफाई अतीव सुन्दर।

बाबू चम्पतराय जी ने अपने अपूर्व अथक शास्त्रीय परिशीलन द्वारा जो अद्भुत खोज की बातें अपनी विविध पुस्तकों में प्रकट की हैं वह अवश्य धार्मिक संसारमें एक नवयुग उपस्थित करनेवाली संदेश-सूचिका ही कही जा सकती हैं। आपने यह सप्रमाण सिद्ध कर दिया है कि प्राचीन धर्मों में एकाध को छोड़कर सब के शास्त्र अलंकृत भाषा में लिखे हुए हैं। इसलिये उनका शब्दार्थ लगाना उस के अर्थ का अनर्थ करना है। ईसाइयों की बाइबिल भी इस ही रूप में लिखी है और मुसलमानों का कुरानशरीफ भी, यह उन्हीं पुस्तकों के हवालों से प्रमाणित है। हिन्दुओं के वेदादि भी उस ही ढंग से लिखे हुए हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हिंदू आचार्य प्रणीत प्रस्तुत पुस्तक ही है। इसमें सम्पूर्ण रामायण की कथा को अलंकार की भाषा में लिखा हुआ प्रकट किया है। इसलिये उसका भावार्थ लगा कर प्रणेता ने उसे खासे आत्मसिद्धांत के वर्णन में परिणत कर दिया है। इसमें दशरथ राजा न होकर मन हैं-कौशल्या निवृत्ति-रामचंद्र ज्ञान हैं। इसी तरह सबका निरूपण किया गया है। इस के अपूर्व आत्मरस का आस्वादन पाठ करने से ही प्राप्त होता है। पाठकों को अवश्य पढ़ना चाहिये।

गऊवाणी—भी उक्त महानुभाव द्वारा प्रकट हुई है। लेखक हैं श्री ऋषभचरण जैन। पृष्ठ १२६ मूल्य १) छपाई सफाई अच्छी है।

इस पुस्तक में धर्म के नाम पर जो हिंसा हो रही है उस को लक्ष्य करके सब धर्मों का छानबीन की गई है। जिस प्रकार असहमतसङ्गम आदि पुस्तकों में अन्य धर्मों के भावार्थ प्रकट किये गये हैं उसी तरह इसमें भी उनके भावार्थ से अहिंसा की सिद्धि की गई है खूबी यह है कि प्रश्नोत्तररूप में इस सरलता से सैद्धान्तिक विवेचना कीगई है कि हर कोई सुगमता पूर्वक समझ सकता है और उसको हृदयंगम कर सकता है। प्रत्येक सहित्य प्रेमीको इसका पाठ एक बार अवश्य करना चाहिये। वस्तुतः ऐसी ही पुस्तकों के प्रचार से संसार में दुःखों का अन्त होसकता है। और परस्पर प्रेम भावनायें बढ़ सकती हैं। दातारों को ध्यान देना

चाहिये।

बृहद् जैन शब्दार्णव—रचयिता श्रीयुत बाबू विहारीलाल जी, प्रकाशक बाबू शान्तिचन्द्र जैन, बाराबंकी। छपाई सफाई अच्छी है। इस जैन कोष के २०८ पृष्ठ हमको समालोचनार्थ प्राप्त हुए हैं। वस्तुतः जैनसमाज में एक ऐसे कोष की अतीव आवश्यकता थी। इसकी पूर्ति इस प्रकार होते देखकर हमको परम हर्ष है। वस्तुतः केवल अपने ही बल पर इस तरह का एक महान् कोष को तैयार करने का कार्य उक्त बाबू जी के लिये प्रशंसनीय होने के साथ २ उनके साहित्यप्रेम का परिचायक है। निःस्वार्थसेवा का यह खासा नमूना है। कोष की तैयारी जिस विशद् और विशिष्ट रीति से होरही है उसको देखते हुए कहना होगा कि यह एक पूर्ण और प्रामाणिक ग्रन्थ जैन धर्म के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये होगा। २०८ पृष्ठों में 'अकार' ही चल रहा है और अभी बाकी है। प्रत्येक शब्द का पूर्ण विवेचन दिया गया है। परन्तु उत्तम हो कि शब्द किस भाषा का है और उसकी उत्पत्ति कहां से है इसके लिये संकेतांक अक्षरों में हवाला देदेना महत्त्वशाली रहेगा तथा किसी मत का आधारभूत प्रमाण भी यथास्थान दिया जाय इसकी आवश्यकता है। आशा है आगामी इनकी पूर्ति होजायगी। प्रत्येक पाठक को इस कोष को मँगाना चाहिये।

जैनसमाज सुधार लेखमाला—यह मँझोले आकार का मासिकपत्र अभी मद्रास से मुनि परमानन्द जैन के सम्पादकत्व में प्रकट होने लगा है। मद्रास प्रान्त से हिन्दी भाषा के इस सामाजिक सुधार के हिमायती पत्र का स्वागत करते हमें परम हर्ष का अनुभव हो रहा है। हम भावना करते हैं कि यह विशेष उन्नति प्राप्त कर समाज में आवश्यक सुधारों की सृष्टि कराने में सफलप्रयास हो। लेख समाजोपयोगी ओजस्विनी भाषा में हैं। वा० मू० २) है। पता-मगनमल कोचेटा, व्यवस्थापक न० १६६ बंगाली बाजार, सेंटथामसमाउन्ट-मद्रास

विशेषांक—अभी हाल में जैनपत्रसंसार में दो विशेषांक प्रगट हुए हैं। उनमें से एक तो इलाहाबाद जैन होस्टल से प्रगट होने वाली (अंग्रेजी-हिन्दी की) त्रैमासिक पत्रिका जैनहास्टल मेगजीन का यूनिवर्सिटी कन्वोकेशन अंक है। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी यह विशेष सज धज के साथ प्रगट हुआ है। सुन्दर मनोमोहक छपाई और श्वेत स्थूल—सचिक्कण कागज़ सहसा पढ़ने के लिये जी ललचा देता है। तिस पर भीतर दो रङ्गीन और १८ सादे चित्र उस उत्कंठा को द्विगुण कर देते हैं। चित्र सब ही लब्धप्रतिष्ठ पुरुषों और दर्शनीय स्थानों के हैं। लेखों का संग्रह भी उत्तम हुआ है यद्यपि जैनपत्र की दृष्टि से जैनधर्म संबन्धी लेखों की कमी खटकती है। अन्य विषय सम्बन्धी लेखों में जो बात जैनसिद्धान्त के विरुद्ध हो तो उस पर संपादकीय टिप्पणी देदेना आवश्यक है। ऐसी ही आवश्यकता की उपेक्षा इस अंक के लेख Earth and its evolu ion" शीर्षक में की गई है। यद्यपि वैसे इस अंग्रेजी भाग के सर्व ही लेख पठनीय हैं। हिन्दी में भी दो लेख और तीन चार कवितायें पठनीय हैं। कवितायें महत्त्वशाली और होनहार जैन कवियों की रचनायें हैं। इसप्रकार ६८ पृष्ठों का यह अंक सर्वथा ही पठनीय तथापि संग्रहणीय है हम अपने प्रिय मित्र प्रो० लक्ष्मीचन्द्र जी सम्पादक को

इस सफलता पर हृदय से बधाई देते हैं। प्रस्तुत अंक का पृथक् मूल्य १) है। वा० १॥) है। दूसरा विशेषांक जैनसाहित्य संसार के चिर परिचित एवं सूरत के "दिगम्बर जैन" का है। इसके जैन धर्म की प्रभावना में तल्लीन उत्साही संपादक सेठ मूलचन्द किसनदास जी कापड़िया जिस सुन्दरता से इसके विशेषांक करीब १२, १३ वर्षों से निकाल रहे हैं वह किसी से छिपा नहीं है। उसी तरह अब की भी श्री महावीर निर्वाणोपलक्ष्य में जो उन्हों ने २१२ पृष्ठों का सुन्दर सचित्र अंक प्रगट किया है वह उसके गत विशेषांको से छपाई सफाई में उत्तम प्रतीत होता है जिसके लिये हम संपादक महोदय को बधाई अवश्य ही देंगे। इसमें मुनियों, त्यागियों और जैन समाज के विद्वानों आदि के २६ चित्र इस अंक की शोभा बढ़ा रहे हैं। पृष्ठ लौटते ही म० गांधी जी का तिरंगा मनमोहक चित्र दर्शनीय है। यह सब चित्र चौखटे में जड़ कर टांगने से कमरे की शोभा को बढ़ा सकते हैं। लेख और कवितायें सब मिलकर ४१, शिक्षाप्रद पठनीय हैं। एक लेख अंग्रेजी का भी है शेष भाषा और गुजराती के हैं। इस अंक का मूल्य १) और वा० मू० २) है। पाठकों को अवश्य ही इन दोनों विशेषांकों के दर्शन करना चाहिये।

—उ० सं०।

संसार दिग्दर्शन

समाज

—वर्धा में भारत दिगम्बर जैन परिषद आज तार द्वारा मालूम हुआ है, कि 'ि वार्धा धिवेशन की तिथि २७-२८-२९ जनवरी ही रहेगी, प्रार्थना है कि भारतदिगम्बर जैन परिषद् के सदस्य गण अवश्य पधारकर वार्षिक अधिवेशन से लाभ उठायेंगे।

—मन्त्री परिषद्

—लखनऊ में रथोत्सव मेला, मिति माघ सुदी ५ को श्री देवाधिदेव ११ बजे दिन को श्री मन्दिर जी चौक चूड़ी वाली से रथ में विराजमान होकर बड़े समारोह के साथ चौक बाजार होते हुये अहियागंज पधारेंगे यहां के श्री मन्दिर जी से भी श्री देवाधिदेव रथ में विराजमान होंगे फिर रकाबगंज डालीगंज होकर जैन गंज में जैन बाग के विशाल सभामंडप में विराजमान होंगे वहां ४दिन पर्यन्त पूजन व भजन का अपूर्व उत्साह रहेगा पण्डितों के उत्तम २ व्याख्यानादि भी होंगे श्रीमान जैन धर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी तथा न्यायाचार्य पण्डित माणिक

चन्द जी व्याख्यान वाचस्पति पण्डित लक्ष्मीचन्द जी आदि सज्जनों के पधारने की भी आशा है इन्हीं दिवसों के अन्तर्गत श्री जैनधर्मप्रवर्द्धनी सभा लखनऊ व श्री अवध प्रान्तिक सभा के धार्मिक उत्सव भी होंगे जैन समाज की अच्छी संख्या में पधारने की आशा है ठहरने आदि का बहुत उत्तम प्रबंध किया गया है बाहर से पधारने वाले भाइयों को ४ दिन पहले से सूचना दे देना चाहिये।

-दर्शनाभिलाषी
बरातीलाल जैन; मन्त्री
जैन सभा (लखनऊ)

—श्री जैन कुमार सभा आगरा के शिक्षा विभाग का कार्य निरन्तर उन्नति पर है। धूलिया गंज की पाठशाला का निरीक्षण मंत्री शिक्षा विभाग और बा० प्रताप चन्द जी ने लिखा था। फल अत्यन्त सन्तोष जनक रहा। इस पाठशाला का कार्य बहुत ही नियमित और प्रशस्त है। आशा है कि अन्य पाठशालाएं भी बहुत शीघ्र उन्नति करेंगी। सभा के आधीन के अन्य कार्य भी बराबर हो रहे हैं कई विशेष कार्यों के लिये रुपये की नितान्त आवश्यकता है। आशा है कि प्रेमी पाठक द्रव्य सहायता भेजकर आभारी करेंगे।

—मन्त्री शिक्षा विभाग

—जैसवालजैन, जैसवाल जैन का ६-७ संयुक्त अङ्क श्री० बाबू हजारा लाल जी जैन, श्री महेन्द्र जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो गया। जिन लोगों के पास भूल से न पहुंचा हो वह आप मंगालें। १॥।) रु० भेज कर ग्राहक होने वालों को "जैन विधि से विवाह" नामक पुस्तक मुफ्त दी जावेंगी। —गेंदा लाल जैन

—सराहनीय प्रयत्न, हम लोगों की प्रार्थना पर ध्यान देकर जीवदया सभा आगरा के मंत्री श्रीमान पं० बाबूराम जी विजाशन देवी (देवास) की बारह हजार पशुओं की बलि हिंसा बन्द करने के लिये उज्जैन देवास सारंगपुर आदि स्थानों पर भ्रमण कर रहे हैं। प्रतिदिन हिन्दू जनता का डेपुटेशन महाराजसा के पास ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं आज के सारगर्भित तेजस्वी भाषण में आपने कहा कि मेरा जीवन निरपराध दीन प्राणियों को बेमौत मरने से बचाने के लिये हैं इन बलि हिंसाओं के बन्द करने के तीन मार्ग हैं १ राजाज्ञा (कानूनन) से बन्द करना। दूसरा, पंडों से मिलकर रजामन्दी से। तीसरा, जनसाधारण में अहिंसा का प्रचार कर हिंसा बन्द करना। यथाक्रम मैं तीनों मार्गोंका अवलंबन करूंगा। प्रभू आपकी मदद करें।

-रामशरन भोपाल

—पुरस्कारी निबंध जैन धर्म के ह्रास के कारण" और पूज्यवर पं० गोपाल दासजी बरैया और उनकी सेवायें शीर्षक निबंधों पर लेख लिखने की प्रार्थना पूर्व अंकों में प्रकाशित की गई थी, खेद है कि अभी तक उस ओर अच्छे लेखकों ने ध्यान न दिया पुरस्कार योग्य एक भी निबंध हमें अभी तक न मिला। अस्तु हमने दोनों लेखों की अवधि १ मास अधिक करदी है। आशा है इस बार प्रेमी सज्जन उत्तम २ लेख भेजने की आवश्य कृपा करेंगे सर्वोत्तम लेखकों को पाँच २ रुपये की पुस्तकें पुरस्कार में दी जावेंगी।

मंत्री—जैन कुमारसभा आगरा

———

शेडवाल में भारतवर्षीय दि० जै० महासभा

सभा में मारपीट—इस वर्ष शेडवाल में अनेक संस्कृत व अंग्रेजी के विद्वान व सेठ पधारे थे।

२३ दिसम्बर को रात्रि के समय अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। मङ्गलाचरण के पश्चात् स्वागत कारिणी समिति के अध्यक्ष श्रीयुत देव गौंडा वाब गौंडा पाटील शेडवाल ने अपना भाषण मराठी में पढ़ा। इसके पश्चात् श्रीमान पं० नेमीसागर जी वर्णी सभापति चुने गये और उन्होंने भाषण कनड़ी व हिन्दी में दिया रिपोर्ट महासभा को महामन्त्री जी ने पढ़कर सुनाई। फिर सबजक्ट कमेटी के चुनाव की बात प्रारम्भ हुई रात्रि के बारह बज जाने के कारण सभा का कार्य दूसरे दिन के लिए रक्खा गया।

मण्डप में पुलिस का पहरा था, प्रतिनिधि व सभासदों के टिकट द्वार पर लिये जाने के कारण देरहोगई और कार्य ३॥ बजे प्रारम्भ हुआ। ५१ नामों की सूची प०धन्नालाल जी ने सभा के सामने रक्खी। दूसरी सूची ५१ नामों की धावते महाशय ने रखी। बहुत देर तक विचार होने पर यह निश्चय हुआ कि प०धन्नालाल श्रीयुत वालचन्द कोठारी M L C. व श्रीयुत चौगले वकील सभापति व स्वागताध्यक्ष जो बहुमत से निश्चय कर देंगे वह सत्र को स्वीकार होगा। पाँचों महाशय विचारने के लिये अलग २ चले गये। सभा में क्षुल्लक पार्श्वसागर जी का व्याख्यान समाजोन्नति पर होता रहा। तीन मत (श्रीयुत कोठारी व चौगले व स्वागताध्यक्ष) एक तरफ और शेष दो मत दूसरी तरफ थे। बहुमत था कि बड़ी पार्टी के दो तिहाई और पण्डित पार्टी के एक तिहाई हों। प० धन्नामल जी का कहना था कि दोनों पार्टियों के बराबर २ हों। एक मत न हो सका-सभापति जी ने आकर सभा में कहदिया कि कुछ निश्चय नहीं होता, सभा रात्रि को ७ बजे होगी और स्वयं उठने लगे तब लोगों ने धावते आदि से पूछा कि आपकी ५ महाशयों की कमेटी में क्या हुआ। धावते सभापति की आज्ञा में बोलना चाहते थे। कुछ लोगों ने हुल्लड़ मचा दिया और धावते कोठारी आदि को मारना शुरू कर दिया। १०—१२ आदमियों के चोट आई। महामन्त्री जी ने ढँढोरा पिटवा दिया कि सभा कल ८ बजे होगी। दूसरे दिन भी मन्त्री जी ने कोई सभा नहीं की कितने ही प्रतिनिधि सभापति के पास गये। सभापति जी ने कह दिया कि मुझ से काम नहीं होता दूसरा सभापति करलो।

सभा मण्डप में २५ दिसम्बर की दुपहर को रत्नत्रय सभा का जलसा होने लगा था। इस लिये ४००-५०० प्रतिनिधियोंमे दूसरे स्थान पर महासभा का जल्सा सेठ ताराचन्द नवलचन्द के सभापतित्व में किया सारे नीचे लिखे आशय के ६ प्रस्ताव पास किये।

१-प्रस्ताव में श्री शांतिसागर जी महाराज के मुनिसंघ के आसन पर हर्ष प्रकट किया गया। २-सेठ दयाचन्द कलकत्ते वालों की मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया ३-ग्रन्थ मुद्रण के विरुद्ध महासभा के पहिले प्रस्तावों को रद्द किया गया। ४-प्रिवीकौंसिल में पूजा केस की पैरवी के लिये इङ्गलैंड जाने के लिये श्रीयुत चम्पतराय जी बैरिस्टर से प्रार्थना की गई। ५, ६ नवीन चुनाव

हुए जिसमें सेठ ताराचन्द नवलचन्दजी सभापति, श्रीयुत वालचन्द कोठारी महामन्त्री व बा० अजित प्रसाद जी वकील सम्पादक जैन गज़ट व अन्य ४८ उत्साही विद्वान व सेठ प्रबन्ध कारिणी के सभासद बनाये गये।

मालूम हुआ है कि पं० घन्नालाल जी की पार्टी उपर्युक्त कारवाई को उचित नहीं बताती। २५ दि० की शाम को सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस बेलगांव से आये। और महासभा का जलसा करना रोक दिया।

रत्नत्रय सभा में आचार्य शाँतिसागरजी का व्याख्यान घण्टा भर हुआ।

देश

—बङ्गाल कौन्सिल में सरकार की ओर से बंगाल आर्डिनेन्स बिल जिसमें सरकार बिना मुकदमा चलाये जेल में रख सकती है, कौन्सिल में पेश किया गया। गवर्नर साहब के अपील करने पर भी बिल को कौन्सिल ने बहुमत से अस्वीकार कर दिया।

—'मिलाप' का कहना है कि कोहाट के दङ्गे के सम्बन्ध में १२० मुसलमान और २२ हिन्दू गिरफ्तार किये गये हैं। कोहाट के जिन हिन्दुओं को पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया है, उन पर मुसलमानों की शर्तें स्वीकार कर लेने को दबाव डाला जा रहा है। पेशावर की कान्फ्रेंस में कोहाटी हिन्दू मुसलमान कुल शर्तों के साथ समझौता करने पर राज़ी हो गये थे। १८ दिसम्बर की शाम को सरकारी अफसरों ने तय हुई शर्तों को नामन्जूर कर १२ नई शर्तें पेश कीं और असिस्टेन्ट कमिश्नर ने हिन्दू प्रतिनिधियों से कहा कि तुम गान्धी आदि राजनैतिक आन्दोलन-कारियों की सलाह पर चल रहे हो, इस लिए जो चाहो सो कर सकते हो। इस पर भी सरकार ने समझौता तोड़ने का कसूर हिन्दुओं के उपर लादा है!

—लखनऊ के कैसरबाग़ में अखिल भारतीय सङ्गीत सम्मेलन ता० ६ जनवरी से १४ जनवरी तक होगा। कला-प्रदर्शिनी का उद्घाटन ता० ८ जनवरी १९२५ को होगा।

—हैदराबाद की हिंदू सभा ने एक प्रस्ताव पास कर कोहाट के शरणागत हिंदुओं के साहस पूर्वक मुसलमानों के समझौते की अन्यायपूर्ण और अपमानजनक शर्तों को अस्वीकार कर देने का समर्थन किया है।

—गत ता० २७ दिसम्बर को बम्बई में सर इब्राहीम रहीमतुल्ला के सभापतित्व में मुस्लिम शिक्षा-कान्फ्रेन्स का ३७वां वार्षिकोत्सव हुआ। उन्होंने अपने भाषण में मुसलमानों की आर्थिक स्थिति का ज़िक्र करते हुए स्त्री शिक्षा पर ज़ोर दिया।

—बेलगाँव में अखिल भारतवर्षीय सामाजिक कान्फरेन्स का अधिवेशन सर शङ्करन नायर के सभापतित्व में मनाया गया। सभापति ने अपने भाषण में महिलाओं और अछूतोद्धार की चर्चा करते हुए कौंसिल-चुनाव में उनके मताधिकार प्राप्त करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि महायुद्ध ने सब जगह क्रान्तिकारी विचार फैला दिये हैं। दलित दल समानता का दावा करने लगे हैं। जिस प्रकार टर्की के मुस्तफा कमालपाशा ने धार्मिक बन्धनों को दूर कर दिया, उसी प्रकार

भारत को भी शास्त्रीय तथा कोरान के आदेश बन्धनों को तोड़ देना चाहिए। अब्राह्मण और पद दलित जातियों ने अपनी ज़ञ्जीरों को तोड़ डालने का इरादा कर लिया है।

—बेलगाँव में अखिल भारतीय परलोक-विद्या सम्मेलन, श्री पीयूषकान्ति घोष के सभापतित्व में हुआ। उस में परलोक-विद्या के प्रचार का निश्चय किये जाने के अतिरिक्त सितम्बर १९२५ में होने वाले पेरिस के परलोक-विद्या-सम्मेलन के लिये भारत की ओर से श्री० वि० डी० ऋषि को प्रतिनिधि चुना गया।

—बेलगांव में अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन देशबन्धु दास के सभापतित्व में हुआ। देशबन्धु ने अपने भाषण में कहा कि हमारा ध्येय केवल शासन सम्बन्धी अधिकार ही प्राप्त कर लेने का नहीं, किंतु राष्ट्र-निर्माण करना है। उन का कहना है कि ज्ञानोपार्जन के लिए प्रत्येक गांव और कस्बे में पुस्तकालयों की स्थापना होनी चाहिए।

—बेलगांव में कर्नाटक आयुर्वेदिक कान्फ्रेन्स ने एक प्रस्ताव पास कर कांग्रेस से कहा है कि वह भिन्न भिन्न प्रांतों की कांग्रेस कमेटियों से आयुर्वेदिक और यूनानी औषधालयों की स्थापना करावे और प्रत्येक प्रांत में मुख्यतः एक बड़ा आयुर्वेदिक औषधालय खोला जावे। प्रस्ताव में कहा गया है कि कांग्रेस इस काम को अपने विधातक कार्यक्रम का एक अङ्ग बना ले।

—कनाडा से अकालियों का जो शहीदी जत्था आया था वह अमृतसर से जैतू के लिए रवाना हो गया।

—महात्मा गाँधी के आदेशानुसार पं० मोती लाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने नागपुर के हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों का निपटारा कराने की जिम्मेदारी ली थी। वे इस काम के करने के लिए ६ जनवरी १९२५ का नागपुर पहुंचेंगे।

—बम्बई सरकार ने कुप्रबन्ध और फजूल खर्चों और पारस्परिक कलह के कारण १ फरवरी से कोरला म्युनिसीपैलिटी को तोड़ दिया।

—बर्मा में दमन का जोर बढ़ता जाता है। ४ सभायें और गैर कानूनी करार दी गईं। और ११७ गावों में पुलिस बढ़ाई गई है।

—अमृतसर में सिक्ख कैदियों के परिवारों की सहायता के लिए एक फंड कायम किया गया है जिसमें ७० हजार रुपये साल की जरूरत पड़ेगी।

—'हमदर्द' का समाचार है कि बम्बई सरकार ने एक विज्ञप्ति निकाल कर सूचित किया है कि वह गुजरात विद्यापीठ की सनदों को स्वीकार करेगी।

विदेश

—स्पेन में कुछ राजनैतिक परिवर्तनों के होने की बड़ी चर्चा है। यह भी कहा जाता है कि स्पेन में प्रजातन्त्र राज्य कायम होजाय और स्पेन के इस समय के बादशाह किंग अल्फांसो प्रजातंत्र के अध्यक्ष बनाये जायँ।

—पायोनियर का समाचार है कि मंगोलिया में (जो अभी तक चीन की मातहती में था) बोल्शेविक ढंग का प्रजातन्त्र शासन स्थापित होगया। कहते हैं बोल्शेविक सेनाओं के बल पर ही शासन पद्धति की स्थापना हुई है।

दरिद्रता, दुर्बलता और चिन्ता व रोगों का कारण अधिक सन्तान का होना ही है।

सुखी-जीवन

इस में वैज्ञानिक रीति पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन २ कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा बिना कारण अज्ञानतावश हज़ारों स्त्रियां क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रह सकता है आदि २। जल्दी २ सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पोषण भी समुचितरूप से नहीं किया जा सकता। रोगी माता पिता से आजन्म रोगी दुर्बलेन्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दरिद्रता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दरिद्रता के शिकार हो रहे हैं। जैसे सन्तानहीनता दुःख है वैसे ही अधिक सन्तान भी नरक ही है। सुखी जीवन में यूरोप के विद्वानों के बनाए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई है जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भस्थिति रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन २ औषधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है इसका आयुर्वेद और यूनानी द्वारा वर्णन किया है। लगभग चालीस चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य २॥) मात्र है।

संसार के सब तैलों का राजा, अपूर्व सुगन्धि का भंडार

हिमाद्रि तैल

शिर दर्द, दिमाग की कमज़ोरी, आंखों की कमज़ोरी, आंखों के सामने पढ़ने २ अन्धेरा होना, शिर चकराना, कम आयु में ही बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमाद्रि तैल—शीतलता और सुगन्धि का खजाना है।

हिमाद्रि तैल—वनस्पति से तैयार किया गया है।

हिमाद्रि तैल—विदेशी और विषैली वस्तुओं से रहित है।

हिमाद्रि तैल—शिर दर्द से हाहाकार करनेवालों को हँसाता है।

हिमाद्रि तैल—अधिक दिन लगाने से चश्मा लगाना भी छुड़ाता है।

हिमाद्रि तैल—ग्रीष्म शरद् ऋतु के लिये पृथक् २ औषधियों से बनाया जाता है।

एक बार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायँगे। यदि पसन्द न हो तो दाम वापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता—शङ्कर स्वदेशी स्टोर, बिजनौर (यू० पी०)

Regd. No. A. 1871.

रेल से माल भेजने का कायदा

(सरल हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५००, विषयसूची के १८ पृष्ठ, मूल्य ३))

बढ़िया कागज़ पर ! बनारस की बढ़िया छपाई !!

मालगाड़ी से भेजे हुए माल आदि का नुकसान न होने पावे, या नुकसान होने पर रेलवे कम्पनी ही जिम्मेदार समझी जा सके यह बात व्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अच्छी तरह से साबित होगयी है। इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रेलवे कंपनियों के गुड्स बुकिंग के तमाम महत्व के कायदे, शर्तें, आदि जो कंपनियों के अलग २ अंगरेजी हैरिफों में होते हैं वे सब इस एक ही पुस्तक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जिम्मेदार हो सकेगी आदि बातों के तमाम हाईकोर्टों के बहुत ही महत्व के फैसले भी इसमें बताये हैं। विषयानुसार पुस्तक ६ हिस्सों में विभक्त है।

ट्रैफिक मैनेजर, ओ० आर० रेलवे, लखनऊ लिखते हैं—"हम यकीन से कहते हैं कि यह पुस्तक व्यापारियों को बहुत ही उपयोगी है।"

सुपरिटेन्डेन्ट (जनरल) बी० एन० रेलवे, कलकत्ता २५। ११। २४ को लिखते हैं—"जिन व्यापारियों को रेलवे से काम पड़ता है उनको इस पुस्तक से बहुत ही मदद मिलेगी।"

लक्ष्मीनारायण वंशीलाल जी मु० रोल (मारवाड़) २। १२। २४ के पत्र में लिखते हैं—"इस पुस्तक की कहाँ तक प्रशंसा करें। इसमें उपयोगिता के गुणों का भण्डार है। हमने आजतक व्यापारियों के फायदे की ऐसी सरल उपाय की पुस्तक नहीं देखी।"

श्री वेंकटेश्वर समाचार, बम्बई—"माल भेजने के सब नियम अंग्रेज़ी में होने के कारण अधिकांश व्यापारियों को गुड्सक्लर्क की बात पर ही निर्भर रहना पड़ता है और रेल से माल भेजने के कायदे ठीक २ न जानने के कारण ही व्यापारियों को नित्य रेलवे झगड़ों की झंझटें सहनी पड़ती हैं। ऐसी दशा में काले महाशय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक बड़े भारी अभाव को दूर करके व्यापारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्रायः डेढ़ पौने दो सौ विषयों का विवेचन किया है। व्यापारियों के बड़े काम की पुस्तक है।

आर्डर देते समय "वीर" का नाम अवश्य ही लिखिये।

तीन कापी एक साथ मंगाने से वी० पी० डाकखर्च माफ़

पता—

आर० एन० काले,

हाईकोर्ट वकील, उज्जैन (सी० आई०)

ओंकार अगरोवाल के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

परिषद अङ्क

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष] १ फरवरी सन् १९२५ [अंक

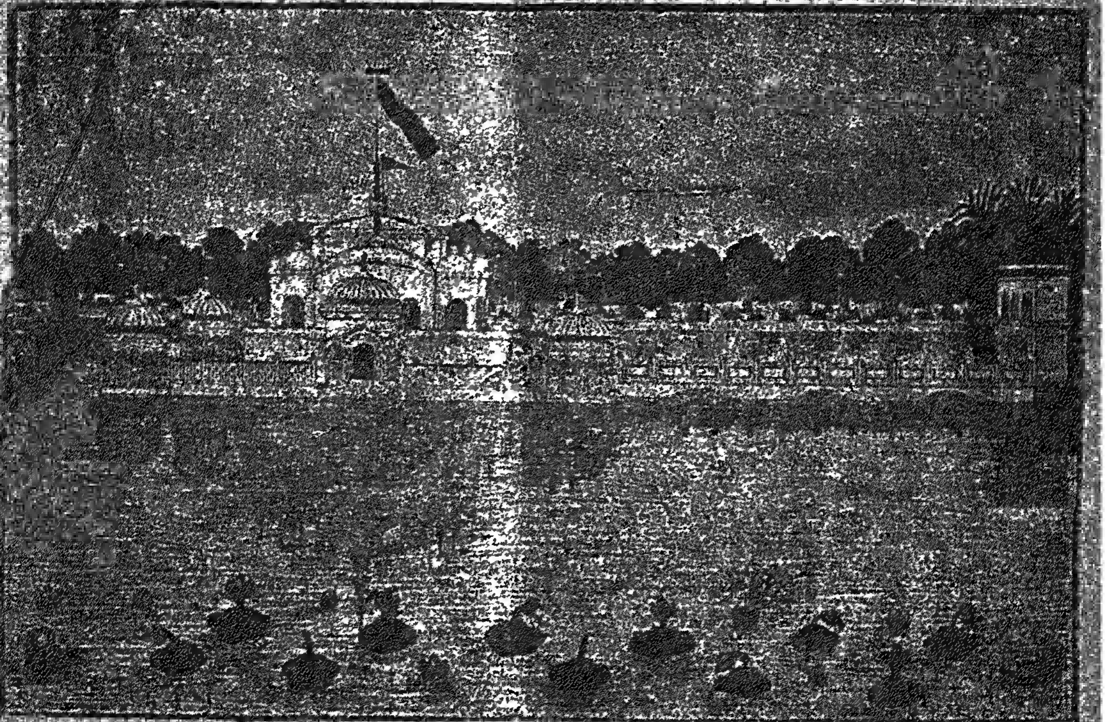

सम्पादक— उपसम्पादक—

जैनधर्मभूषण प० हि० ब्र० शीतलप्रसाद जी श्री कामताप्रसाद जी

प्रकाशक—

वार्षिक मूल्य] [डाक व्यय

श्री० राजेन्द्रकुमार जैन प्रेस, बिजनौर।

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्रः

वीर

'संसार मिथ्या अविश्वास में पड़ा हुआ है। उसके दुःख और पीड़ा अज्ञान के कारण ही है। परन्तु संसार को ज्ञान प्रकाश कौन देगा ? भूत काल में निःस्वार्थ त्याग एक धार्मिक क्रिया थी। खेद, अब इसके लिये वर्षों की प्रतीक्षा चाहिये। संसार के सर्वोच्च वीर महानपुरुष तब सब की भलाई के लिये अपना बलिदान करेंगे। संसार को चारित्र की आवश्यका है। साहसपूर्ण शब्दों और उससे भी अधिक साहसी कार्यों की आवश्यकता है। महान् आत्माओं ! जग जाओ, जग जाओ ? संसार दुःख से तप्त है। क्या तुम सो सकते हो!"

—"सुभाषित"

वर्ष २ | बिजनौर, माघ कृष्णा ७ वीर सम्वत् २४५१ १ फरवरी, सन् १९२५ | अङ्क ७

वीर सैनिक

धर्म ध्वजा दृढ़ कर कमलों में सत्य शस्त्र से देह सजा।
स्वार्थ त्याग का मन्त्र फूंक, विज्ञान दुन्दुभि मधुर बजा ॥
सत्यधर्म की वेदी ऊपर निज सार्वस्व न्योछावर कर ।
पीछे नहीं हटूंगा किंचित् दृढ़ संकल्प हृदय में धर ॥ १ ॥
चरन बढ़ा आगे साहस से प्रण पूर्ण निज करने को ।
अत्याचार, अमैत्र्य, दंभ, अभिमान, स्वार्थ मद मर्दन को ॥
विश्वप्रेम का, शांतिराज का शुभ संदेश सुनाने को ।
सोते हुए जातिवीरों को सहसा पुनः जगाने को ॥२॥

कर्मक्षेत्र में निर्भय हो सत्य-संग्राम मचाने को ।
सहनशीलता,आत्मशक्ति का जागृत चित्र दिखाने को ॥
दुरित प्रलोभन, आशाओं को त्याग बनकर स्वजाति सेवक ।
स्वागत आरहा ,सेवाहित तेरा समाज यह प्रिय सैनिक ॥३॥

—"वत्सल"

जैन जाति के अधःपतन के कारण तथा उसके उत्थान के उपाय

प्यारे जैनी भाईयों! उठो और मोह की नींदको त्यागदो, अब समय सोनेका नहीं। जिसने सोया उसीने खोया, देखो अन्य छोटी२ जातियां कैसी उन्नति करने में लगी हुई हैं' परन्तु तुम अपनी वही सदा की बेढंगी चाल से चल रहे हो यदि तुम इस उन्नतिशील संसार में सब की भाँति कार्य न करोगे तो पिस्सूकी भाँति मसलकर मारडाले जाओगे।फिर कोई भी तुम्हारा बचानेवाला न होगा। अतः यदि तुम अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते हो तो उठो और मुरदों की भाँति उदासीनता को छोड़ो। अब कोरी शान्ति से काम न चलेगा। जो जाति अन्य जातियों का सामना नहीं कर सकती वह शीघ्र ही मर जाती है। अतएव जो जीवित रहना है तो बल रखते हुए शान्ति पैदा करो। वही शान्ति श्रेयस्कर है जिससे जैन जाति की उन्नति तथा वृद्धि हो। अस्तु,

हमारी समाज के अधःपतन का मुख्य कारण लोगोंमें स्वार्थपरायणताहै। आजकल हमलोग इतने स्वार्थनिरत होगए हैं कि हमको अपने मतलब से मतलब। दूसरे चाहे मरें या जिएँ, उनकी ओर दृष्टि-पात भी नहीं करते। अपने स्वार्थ जैसे बच्चे की शादी, गजरथ, पूज्यप्रतिष्ठा, व गार्डन पार्टियाँ, बरामदा का बनवाना और वेदी लगवाना जिससे उनका नाम होता है, आदि में जी खोलकर रुपया पानी की भाँति लगा देते हैं पीछे उसकी संभाल करते हैं परन्तु जिस कामसे जातिसुधार हो जाति के दीन हीन दुखित अबाल वृद्ध पलें और समाज की वृद्धि करें, वहकार्य उन्हें श्रेयस्कर नहीं, उसमें वे एक फूटी कौड़ी भी चन्दा नहीं देते। यदिचन्दे के लिये उनके ऊपर अधिक दबाव डाला जाए तो झट कह उठते हैं कि बस; इसमें दबावका कोई काम नहीं जो इच्छा है सो देते हैं। ठीक है उनका कहना जब अन्तरङ्ग भाव ही उदारता के नहीं फिर बाह्य द्रव्य का क्या काम सब अपनी २ दाढ़ी की आग बुझाते हैं अब किसी अन्यकी तो कहे कौन जब अपने सगे कुटुम्बी भाई की फ़िकर नहीं तो।फिर दूसरे

की क्या होसकती है। अतः यदि समाजका सुधार हमारे जैनी भाइयों को अभीष्ट है तो इस स्वार्थांधताका कृष्णमुख करके सभी काम चल सकता है।

जैन समाजके बिगड़नेका दूसरा कारण लक्ष्मी में लिसता है। हम लोग आजकल इस देवी के इतने उपासक तथा अनन्यभक्त हो गए हैं जितने अन्य कोई भी नहीं। हम लोगों ने इसकी गुलामी इख़तियार करली है। इसीसे हमें इससे अधिक प्रेम है। यदि हम इसको दासी की भांति रखते तो अवश्य ही हम इसका उपयोग करते, परन्तु उल्टे ही हम उसके दास हैं, इसी से वह हम पर आधिपत्य जमाये हुए हैं। हमारा दिल उसके मोहजाल में ऐसा फँस गया है कि हम उसमें से एक कौड़ीभी परहित खर्च करना नहीं चाहते। दिन रात हमलोग उसी देवी का मन्त्र "हायलक्ष्मी, हायलक्ष्मी" जपा करते हैं और ऐसाही करते २ अपने प्राण गवां देते हैं परन्तु यह नहीं सोचते कि इतनी प्रचुर लक्ष्मी पाकर समाज की सेवा करें ताकि उसका फल भविष्य के लिए अच्छा मिले। हमारी समाज में लखपति तो कई एक हैं परन्तु करोड़पति भी कम नहीं। यदि ये लोग अकेले २ ही चाहें तो सबकुछ कर सकते हैं परन्तु वे तो लक्ष्मी के मद में मस्त हैं, इनके जान समाज कल डूबतीथी सो आजही डूब जाए परन्तु उनकी बलाय से। बस इसी उपेक्षा बुद्धि के कारण यह समाज गिर रही है, दुखी है। यदि लक्ष्मी के लाल अपनी लक्ष्मियों से मोह छोड़ कर समाज हित में उसे लगादें तो समाज सुधार आनन फानन हो सकता है।

जैन समाज के बिगड़ने का तीसरा कारण लोगों में अहंमन्यता है। जहां ज़रासा बोध हुआ या लक्ष्मी हुई बस, फिर पैर ज़मीन पर नहीं आस्मान पर होकर चलते हैं। बड़ी ऐंठ दिखाते हैं और बड़े रुआब के साथ बात चीत करते हैं। अपने साथियों इष्टमित्र और अपने समाज के लोगों से अपने को बड़ा समझते हैं और सब जगह अपनी ही चलाते हैं। जहां पर बन की मूंछ नीची हुई बस, वहीं पर लड़बंधी हुई। इसी प्रकार एक छोटे से ग्राम में जिसमें चार छह घर ही जैनियों के हैं, वहां पर दो लड़ें होजाती हैं। ये सब लक्षण समाज के बिगड़ने के ही हैं। समाज इस प्रकार नहीं बना, मिलकर कार्य करने से ही समाज का सुधार हो सकता है। अतः समाज के हितैषियों! यदि आप समाजसुधार चाहते हैं तो लोगों के हृदय से अलंकार पन निकालने की कोशिश कीजिए और 'सत्वेषुमैत्री' का मूलमंत्र फूंक दीजिए जब तक इस मंत्र के अनुसार कार्य न होगा तब तक समाज सुधार जरा टेढ़ी खीर है।

जैन समाज के बिगड़ने का चौथा कारण लोगों में आत्मिक बल की कमी का है। जब से हम लोग चारित्र भ्रष्ट होगए हैं तभी से हमारा आत्मिक बल हम से बिदा होगया। हम लोग उन श्री अकलंक निष्कलंक स्वामी की संतान होते हुए भी इतने कमज़ोर तथा बुज़दिले होगए हैं कि अब हमारे धर्म पर चाहे जो जितना भी आघात पहुंचाए हमें उसका कुछ भी ख्याल नहीं। ख्याल तो तभी होगा जब हममें बल बुद्धि पुरुषार्थ पराक्रम हो न, अब तो हम लोग गोबरगणेश की भांति हैं। इतने कमज़ोर और डरपोक होगए हैं कि हमारी आंखों सामने औरतों और हमारा सगा भाई भी पिट रहा हो तो भी हम उस मारने वाले का कुछ नहीं

... सकते। गम खाकर घर चले जाते हैं। बस, इस प्रकार दिन दहाड़े हम लोग पिटा करते हैं, हमारी बहू बेटियों पर अत्याचार किया जाता है, बच्चे उड़ाए जाते हैं परन्तु कोई कुछ कहने सुनने वाला नहीं। यदि हममें पूर्व पुरुषों की भांति पुरुषार्थ होता तो क्या हम अपनी आंखों सामने ऐसे दुष्कृत्य देख सकते थे, परंतु किया क्या जाय, दिल इतने कमज़ोर मुर्दा होगए हैं जिन में इन बातों का कभी भी ख्याल नहीं होता। दूसरी बात यह है कि हम लोग गुप चुप करें तो महापाप, परन्तु बाह्य में यदि कोई अपनी रक्षा के लिए किसी अस्त्र शस्त्र या लाठी ही का प्रयोग करें तो दूसरे भाई उसे रोकते हैं, मना करते हैं। और धर्म शास्त्रों की दुहाई देते हैं। बस इसी सीमा ने हमारी समाज का सत्यानाश कर डाला है। जब तक लोग अपनी अपने धर्म की रक्षा बल द्वारा नहीं करेंगे तब तक हमारा, हमारे धर्म का तथा हमारी समाज का अस्तित्व कायम रहना बड़ा कठिन क्या कष्ट साध्य है। अतः समाजसुधार के लिये आत्मिकबल पैदा करो।

जैन समाज के बिगड़ने का पांचवा कारण स्त्रियों का मूर्ख रखना है। जबतक स्त्रीवर्ग में विद्या का खूब प्रचार न किया जाएगा तब तक समाज रूपी गाड़ी का सुधरना कठिन है। ये स्त्रियां हमारी जन्मदात्री हैं। ये ही हमें बनाती हैं यदि ये शिक्षिता होंगी तो हम भी अच्छे होंगे हमारा शैशवकाल इन्हीं के सन्निकट खेलते २ बीतता है उस समय यदि ये मातायें हममें अच्छे संस्कार डालेंगी तो बड़े होने पर उनका परिपाक अच्छा होगा। दूसरी बात यह है कि यदि स्त्रियां पढ़ी लिखी होंगी तो गृहप्रबंध अच्छा करेंगी। गृह स्वामियों को उस समय गृहचिन्ता करने की अधिक आवश्यकता नहीं। उन्हें समाज सुधार के लिए बहुत अवकाश मिल सकता है। तीसरी बात यदि स्त्री पढ़ी लिखी होगी तो उसकी सलाह भी आपको मिल सकेगी। ये अर्द्धाङ्गिनियां हैं। प्रत्येक कार्य में इनकी सलाह सिखावन लेना अतीव आवश्यक है। नीति शास्त्र इसका प्रमाण हैं। अतः स्त्रीवर्ग, को शिक्षित बनाइये तभी जाति उन्नति शिखर पर पहुंच सकती है, अन्यथा नहीं।

जैन समाज के बिगड़ने का छटवाँ कारण आचरण की न्यूनता है। हम लोग आजकल इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि जिसका कोई पारावार नहीं। बिना पढ़े लिखे मूर्ख देहाती गांव वाले तो इतने नहीं बिगड़े जितने अधिक पढ़े लिखे पण्डित कहलाने वाले शहरी लोग, ये लोग न तो रात गिनते न दिन और न स्थान न समय का ही विचार पूर्ण है किन्तु जैसा तैसा भक्ष्याभक्ष्य खानेके लिए तैयार हो जाते हैं। बस यही हाल हमारी पण्डित समाज का है। ये लोग, मूर्ख लोगों को उपदेश तो बड़े लम्बे चौड़े झाड़ते हैं और हर प्रकार की आचरण की शुद्धता बताते हैं, परन्तु स्वयं आचरण भ्रष्ट होते हैं। कहते हैं पंडित जो कहे सो करें। जो वह करे सो न करें। बस, 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' इस प्रकारके लोग बहुत हैं। भला बताइये कि अब इनका उपदेश दूसरों को कैसे असर कर सकता है। उपदेशदाता जिन बातों का उपदेश दें पहिले वे सबगुण उसमें होना चाहिए तभी उसकी धाक मूर्ख मण्डली पर जम सकती है अन्यथा नहीं। अतः समाज के हितचिन्तकों, उठो

और समाज सुधार के लिए आचरण शुद्ध करो।

जैन समाज के बिगड़ने का सातवाँ कारण अपनी समाज के बालकों की उपेक्षा करना है। भाईयों, क्या आप लोग यह नहीं जानते कि आज कल जो बालक हैं एक दिन वृद्ध हो जाएंगे और फिर येही समाज के कर्णधार बनेंगे। अतः इनका पालन पोषण करना समाज का मुख्य कर्त्तव्य है। जिस समाज ने अपने बाल बच्चों की पूरी २ देख रेख न की वह समाज मिटे बिना नहीं रहा। अतः समाज के शिशुओं की रक्षा कीजिए। यदि आप लोग इनकी ओर दयादृष्टि से नहीं देखेंगे तो स्मरण रहे कि तुम्हारे पास दूसरी कौमें उन्हें अपनाने के लिए मुंह बाए खड़ी हैं। अतः उठिये और समाज के बालकों की रक्षा में तन मन धन लगाइए। इसी से समाज सुधार हो सकता है।

जैन समाज के बिगड़ने का आठवां कारण जाति बन्धन का ढीलापन है। जबतक सामाजिक पाश दृढ़ न होगी तब तक समाज का कार्य अच्छा नहीं हो सकता। इसी बन्धन के ढीलेपनके कारण समाज के लोग तीन तेरह हो गए हैं। सब अपनी २ डफली अपना २ राग आलापते हैं। कोई किसी की नहीं सुनता और न किसी को किसी का भय है। सब स्वतन्त्र हैं। जहाँ चाहे चले जाते हैं और जैसा चाहे कृत्य कर बैठते हैं। दूसरी बात यह है कि इसके कारण एक को दूसरे की हीर पीर नहीं परन्तु पृथकपने से सम्मिलित रहना अच्छा है स्मरण रहे कि यदि आप लोग अपना अस्तित्व इस संसार में चाहते हैं तो मिलकर कार्य करो वरना पृथक् २ मारे जाओगे कोई किसी को न

जैन समाजके बिगड़ने का नवमाँ कारण संघ-शक्ति का अभाव है। इसके कारण हमारी समाज महा त्रस्त है। मुसलमान समाज को देखिए कि जिस समय उसका झगड़ा किसी काफिर जातिसे हो जाता है तो सारे मुसलमान चाहे आपस में उन का विरोध ही भले क्यों न हो, परन्तु उस काफिर जाति को मारने में एक हो जाते हैं किन्तु ऐसा हाल हमारी जैन समाज का नहीं। दिगम्बर और श्वेताम्बर इस समाज के दो अङ्ग हैं परन्तु दोनों ही एक दूसरे के परम शत्रु हैं और एक दूसरे के मिटाने के लिए फिरते हैं। यदि ये दोनों फिर्के मिलकर कार्य करें तो विपुल सम्पत्ति की रक्षा हो और समाज का कार्य बने। अतः समाजके नेताओं आप आपसी लड़ाई छोड़ो और जाति का कुछ उद्धार करो। लड़ते २ तो बहुत समय बीत चुका है अब लड़ाई से बाज आओ। संघ में मिलकर रहो ताकि संसार की अन्य जातियां इस जाति की ओर आंख उठा कर न हेर सकें। बस, इसी में कल्याण है, मङ्गल है और सब का हित है।

अन्त में सब भाईयों से यही विनीत प्रार्थना करता हूं कि आप लोग इस लेख को बड़े ध्यान से पढ़िये और विचारिए कि जो कुछ मैंने इस लेख में लिखा है वह कहां तक ठीक है। यदि यह सर्वांग सुन्दर और अच्छा है। तो इसी के अनुसार कार्य करने में निरत हो जाइये। बस, इसी में कल्याण है यह लेख किसी द्वेषवश नहीं लिखा गया। किन्तु समाज हित की दृष्टि से लिखा गया है। इसकी भाषा के लिए हम सब से प्रार्थना चाहते हैं।

समाजका दास—
नथूराम सिंघई बी.ए

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

रत्नत्रयधर्म

प्यारे पाठकों ! हमारे तीर्थङ्करों ने इस संसार रूपी अगम्य समुद्रसे पार होनेके लिये रत्नत्रयधर्म रूपी तीर्थ बताया है। इस जहाज पर ही चढ़ कर उन्होंने स्वयं शिव द्वीप में अनेकों के साथ प्रयाण किया है। वास्तव में यह नौका परम अनुपम, दृढ़ व छिद्र रहित है। इस नौका पर जिस जिसने आरोहण किया है उस ने निश्चय शिव धाम पाया है। शिवधाम पानेके पूर्वही से इस नौकारोही को संसार समुद्र का दृश्य नाटकवत् बहुत सुहावना विचित्र व वैराग्यउत्पादक भासता है तथा मार्ग में स्वात्मानुभव की तान में मगनता के आनेसे जो अतीन्द्रिय आनन्दका स्वाद आता है उसका कथन मुख से हो नहीं सकता है, वास्तवमें इस नौकारोही को मार्गमें भी आनन्द है और आगे भी आनन्द है।

इस रत्नत्रयधर्म रूपी नौका को ग्रहण करना हर एक बुद्धिमान का कर्तव्य है। यही जैन धर्म है जो तरण तारण, दुःख निवारण और अनुपम सुख का कारण प्रसिद्ध है।

यह रत्नत्रय रूपी नौका असल में अपने ही आत्मा के पास, है सम्यग्दर्शन रत्न भी आत्मा का स्वभाव है तथा, सम्यग्ज्ञान भी आत्मा का स्वभाव है तथा सम्यग्चारित्र रत्न भी आत्मा का स्वभाव है। इन तीनों की एकता से यह नौका बनी है।

ज्ञानी आप में ही अपनी इस रत्नत्रयमयी नौका को पाकर आप ही उस पर आरूढ़ होकर आप ही गमन कर के आप ही शिवमहल में पहुंच जाता है और अपनी नौका को भी अपने महल में रक्षित करता है।

प्यारे पाठकों आप को इस नरतन को सफल करना है तो अपनी इस नौका को देखो और असत्य भ्रम में पहुंचाने वाली नौकाओं का आलम्बन छोड़ कर इसी की ही शरण ग्रहण करो।

जो परिषद्‌के सभासद प्रेमी, व वीरके वीरत्व के ग्राहक हैं उन का कर्तव्य है कि वे इस आत्म-ध्यान की नौका में चढ़ें अर्थात् नित्य कम से कम एक दफे भी पौन घंटे या आधघंटे को एकांत में बैठ कर सामायिक का अभ्यास करें। जैन शासन में निश्चयनय से इस अपनी आत्मा को आठ कर्म व शरीररहित परम वीतरागी, ज्ञाता, दृष्टा, आनन्दमयी, अमूर्तीक. सिद्ध भगवानके समान बताया है-इसी तरह निज आत्मा का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है-ऐसा ही संशय रहित जानना सम्यक् ज्ञान है तथा अपनी आत्मा के सिवाय और सबसे रागद्वेष छोड़कर सबसे वैरागी होकर अपने आत्मा के शुद्ध स्वभाव में तन्मय होजाना सम्यग्चारित्र है-इस ही तीन रतनमयी भाव को आत्मध्यान, सामायिक या जैनधर्म उपासना कहते हैं—

अपने ही शरीर में निर्मल जल के समान आत्मा को देखते हुए, मध्य में किसी भी परमेष्ठी वाचक मन्त्र का उच्चारण मन ही मन में करते हुए कभी २ गुणों पर विचार जमाते हुए आत्मध्यान या सामायिक का अभ्यास करना चाहिये, जो भाई एक सप्ताह भी अभ्यास करेंगे उनको सुखशान्ति प्राप्त होगी–वे जन्म भर फिर कभी इसको त्याग नहीं सकते हैं। यही मुख्य जैनधर्म की सेवा है–यही पापों को जलाने वाली अग्नि है–पुण्यकर्मों को लाने वाली अनुकूल वायु है तथा स्वात्मानंद भोग कराने को अमृतमयी रसायन है। इसी की सहायतार्थ नित्य श्री जिनेंद्र बिम्ब का दर्शन,पूजन, गुण स्तवन, शुद्ध खान पान, नियम व संयमसे इंद्रियों का वर्तन, ज्ञानियों की संगति, शास्त्रपठन व मनन तथा दान या परोपकार भी करते रहना चाहिये। आदर्श जैन बने बिना जैनपना शोभता नहीं न कुछ नाम मात्र से काम ही चल सक्ता है। अतएव प्यारे पाठकों स्वयं अमिल बनो तब दूसरोंसे भी अमल करा सकोगे।

भँवर में नैया

भगवान महावीर की दिव्यतीर्थ रूपी नैया समयसरिता में बहती २ जब २ भँवर में आकर फँसने को हुई तब तब उसके सुभट नाविकों ने अपने बाहुबलसे उसे उसमें फँसने नहीं दिया। श्री समन्तभद्राचार्य और श्रीमद् भट्टाकलङ्क ने अपने २ समय में उसकी रक्षा शैवों बौद्धों प्रभृतिसे की और उसे छिन्न भिन्न करने से बचाए रक्खा। बीच में भट्टारकोंने भी उसकी पतवार सुचारुरूप से अपने,करकमलों में ग्रहण की थी। फिर भी टोडरमल प्रभृति महारथियों ने उसके संरक्षण में अपने आपको अर्पण कर दिया। परन्तु आजही उस दिव्य नैया को बीच भँवरमें फंसा देखकर काटो तो खून नहीं रहता ? जो सुभट उस की रक्षा के दम भरते हैं। वह उसके पतवार को हाथ में लेने को बढ़ते ही आपस में लड़ मर रहे हैं। नैया भँवर में पड़ी रसातल की ओर बढ़ रही है। उसकी रक्षा करनेके कार्य में करोड़ों बाधायें आरही हैं। यह दशा विश्वास दिलाती है कि जो सुभट उसकी रक्षा करनेका साइन बोर्ड अपने मस्तक पर लगाये फिर रहे हैं उनके बुते का यह रोग नहीं है। वह तो मान घमण्ड के शिकार बन गए हैं। उन्हें भँवर में पड़ी नैया की ओर दृष्टिपात करने को समुचित अवसर ही प्राप्त नहीं है। वह मुश्किल से स्थिति पालक बन रहे हैं उन से प्रगतिशील हो भँवर से नैया को निकालने की आशा करना दुराशामात्र है। अबतो इस भयानक भंवर में से तीर्थ नैया को निकाल लाकर बीच धार में रखने के लिये प्रत्येक तीर्थभक्तको कटिबद्ध होजाना चाहिये। दूसरोंका मुंहताकने और उनके हाथ के कठपुतले बने रहनेसे रक्षा नहीं होसकेगी रक्षा होगी तो केवल प्रत्येक वीरतीर्थभक्त के अपने पैरों खड़े होकर और स्थितिको देखकर स्वयं अपनी बुद्धिसे काम लेकर कार्य करने से होगी। किसी भी भुलावे में आने की फिर सम्भावना ही नहीं होगी। आखें खोले हम शीघ्रही नैया के पतवार हाथमें लेलेंगे और संग्रहित शक्तिसे उसेपार निकाल लायेंगे। बस पाठकों ! यदिआपमें अपनेतीर्थङ्कर के प्रति भक्ति है तो उनके आदेशको स्वीकार करो और सावधानता पूर्वक धर्म की रक्षा में अग्रसर

हो जाओ, वरन् याद रक्खो नैया भंवर में है और रसातल में पहुंचते देर न लगेगी।

राष्ट्रीय भारत में भी इस समय ऐसी ही संकटापन्न दशा उपस्थित थी। परन्तु उसकी रक्षा में कटिबद्ध सुभट अग्र-नेता ने अपने सहनशील बहु बल से उस स्थिति की रक्षा कर ली! परन्तु आगामी दिगम्बर जैन समाज के सुभट उस की रक्षा के नामपर उसको रसातल की ओर बढ़ाने में अग्रसर हैं। अभी हाल में तीर्थरूपी नैया केहामी रक्षकों का सम्मेलन शेड़वाल में हुआ था, उसकी कार्यवाही पढ़कर विश्वास भी हैरान हो जाता है कि यह जैनतीर्थके नाविकों का जमघट था अथवा सामान्य मूर्खमल्लाहों का? वहांकेसमाचार हमारे देखने में अंग्रेजी के "Bombay Chronicle" पत्र में और जैनमित्र एवं जैन गजट में आये। जैनपत्रों के समाचारों में विरोध है, परन्तु अङ्गरेजीपत्र के समाचार और जैनमित्र के क़रीब २ मिलते हैं। जैन गज़ट से मालूम होता है कि वहां महासभा का अधिवेशन बिल्कुल हुआ ही नहीं! परन्तु यह उपरोक्त दो पत्रों की साक्षी से अप्रमाणित ठहरता है। और उस का पुलिस के कारनामों से सहानुभूति सी प्रगट करना हमें उसके कथन पर अविश्वास दिलाता है। पहिले किसी भी जैन सभा में पुलिस हथकड़ी लिये खड़ी नहीं देखी गई। यह समाज की रक्षा का दम भरने वाले लोगों की ही दूरदर्शिता का फल कहा जासका है। बहुमत की अवहेलना कहीं भी देखी नहीं गई है। अतएव ऐसी दशा में समाज हितैषी विद्वानों का अपने निश्चय पर डटे रह सब कुछ सहन करना सराहनीय है। इन्हीं सच्चे हितैषियोंने उपस्थित प्रतिनिधियों की अनुमति अनुसार महासभा का नियमानुसार पुनः चुनाव कर लिया है। परन्तु दुःख है कि उस के भूतपूर्व कार्यकर्ता अब भी अपने मान की शान में फंसे हुये तीर्थ रक्षा के शुभकार्य में बाधक बन रहे हैं। यह सर्वथा अनुचित है। यदि यही नीति कार्य में लाई गई तो कहना होगा, यह प्रणवीर महानुभाव महासभा को बिल्कुल छिन्न भिन्न करदेंगे। परन्तु हमें विश्वास है कि मौजूदा महामंत्री मि० कोठारी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटेंगे। और तीर्थरक्षा के लिये कर्मक्षेत्र में आयेंगे। समाज का भी कर्तव्य है कि वह उनके कार्यों में सहयोग दे और जैनत्व की रक्षा के लिये अपने बुद्धि बल से कार्य ले।

इस समय तीर्थ नैय्या को भंवर में से निकालने को बाह्य-आक्रमणों का सामना किये जाने की ओर सार्वजनिक क्षेत्र में जैनियों के प्रभुत्व प्राप्त करनेकी आवश्यका है। तथा अंतरंग दशा सुधारने को समाज के कुँआरे बालकों और महिलाओं की दशा पर ध्यान देने की आवश्यका है। इन विषयों पर पंचायतों को निष्पक्ष हो विचार करना परमावश्यक है समग्र जैनजातियोंमें जिन की दशा संकटापन्न है उन को तो परस्पर विवाह संबंध खोल लेना चाहिये। परिषद्के गत अधिवेशन में यह बात निश्चित हो चुकी है। अतएव आवश्यका है कि समाज का प्रत्येक अंग नैया को भंवर में से निकालने के लिये अपना भरसक प्रयत्न करे। सफलता अवश्य मिलेगी।

उ०—सं०

वीर का विशेषांक

श्री महावीर स्वामी के जन्म के आनंद के उपलक्ष में क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि एक विशेषांक के द्वारा उनके परम उपदेश का विशेष लाभ अपने पाठकों को देवें हमारे उपसम्पादक जी ने बड़े २ विद्वानों के लेख संग्रह करने का व उनको उन के भक्तों के कर कमलों में इस विशेषांक रूपी चपरासी द्वारा पहुंचाने का दृढ़ संकल्प किया है। ग्राहकों की कमी से आमद कम होने के कारण व परिषद में द्रव्य की प्रचुरता न होने से चपरासी के वेतन पूरा करने की कठिनता सामने आती है इस लिये पाठकों से २००) की याचना की जाती है। यदि चाहे तो एक ही उदार भाई इस रकम की स्वीकारता दे सकता है। तो भी हमारी सम्मति है जो ऐसा न संभव हो,तो हमारे प्रेमी ही दस दस बीस २ की मदद देकर इस काम को पूर्ण करादें। जिस से विशेषांकरूपी चपरासी खेलता कूदता हंसता फूलता आप की सेवा में श्री महावीर स्वामी के जन्म के समय उपस्थित होकर आपको मंगलगीत सुनावे। चपरासी की वेतन पूर्तिमें नीचे लिखे भाईयों ने उत्साह बढ़ाया है। और भाई भी अपना २ नाम पत्र द्वारा वीर दफ्तर बिजनौर में लिख भेजें। यही वीर भक्ति है।

१०) जैन ध० भू०, ध० दि०, ब्र० शीतलप्रसाद जी सं० वीर।

१०) बाबू कामता प्रसाद जी उप सं०

१०) बाबू रतन लाल जी मंत्री परिषद्

१०) राजेन्द्रकुमार जी प्रकाशक वीर

वृथा अभिमान त्यागो प्रेम का स्रोत बढ़ाओ

मास्टर चेतनदास बी० ए. ने जैन जाति की घटी के कारणों पर गत अंक में विचार किया है। आप ने सामाजिक कारणोंको कम महत्त्व दिया है परन्तु हमारी राय में जैन जाति की सामाजिक स्थिति ही बहुत निकृष्ट है। इसके सुधार से बहुत कुछ ह्रास बंद हो जावेगा अनमेल विवाहोंसे संतानें नहीं होतीं, यदि होतीं, निर्बल होतीं, जो शीघ्र मर जातीं और संतान को न पैदा करती हुई विधवाओं की सेना बढ़ती चली जाती, उधर पुरुष विधुर बड़ी आयु व संतान सहित होने पर भी काम वासना को न रोक कर कुमारी कन्याओं को विवाहते ही जाते, इधर बहुत से धन रहित युवान कुमारे ही जीवन बिताते। बस यही मूल कारण घटी का है। अब कोई जैनी जैन धर्म छोड़ कर सिवाय किसी भूले भटके के अजैनी नहीं होता है। सब धर्मों से यह धर्म उत्तम है इतना भाव जैनी मात्र के बच्चे २ में आगया है। इस सामाजिक स्थिति के सुधारनेका उपाय नीचे की भांति है।

(१) पुरुषों को कामवासना घटाना चाहिये संतान सहित होने पर दूसरा विवाह न करके संतोष व शील से रहना चाहिये।

(२) योग्य वरवधू का सम्बन्ध हो इस लिये कभी भी कन्या के बदले में पैसा लेने देने की बात न करनी चाहिये।

(३) योग्य वरवधू का सम्बन्ध हो इस लिये कन्या व पुत्र के चुनने का क्षेत्र विशाल करना चाहिये। शास्त्रों से तो प्रगट है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय

वैश्य तीनों वर्णों में परस्पर सम्बन्ध होते थे।

वर्तमान में आप इतना ही करें जो श्री जिनेन्द्र का प्रक्षाल पूजन कर सकें, मुनियों को दान देसकें, उन को आप उत्तम जाति वाला समझें और उन सबमें ही योग्य कन्या व पुत्र का सम्बन्ध ढूंढ़ के विवाहें, जिससे उनको उत्तम जोड़ी से उत्तम संतान जन्मे अग्रवाल, खंडेलवाल, परवार, हूमड़, पोड़वाल आदि सब जातियाँ इस ही प्रकार जिनेन्द्र भक्त हैं यदि ये सब परस्पर प्रस्ताव करके सम्बन्ध प्रारंभ करदें तो उत्तम सम्बन्ध होने लगे। तथा जिन छोटी २ जातियों को सम्बन्ध नहीं मिलते उन की भी कठिनाइयां मिटे व मरण से रक्षित रहें। ऐसा होने में शास्त्र कुछ भी बाधा नहीं देता है। यदि कोई बाधक है तो सम्यगदर्शन का विरोधी वृथा यह अभिमान कि हम अग्रवाल बड़े हैं और जातियाँ हमारी सी नहीं है। हम खंडेलवाल बड़े हैं और जातियां हमारी सी नहीं हैं, हम परवार बड़े हैं और जातियाँ हमारी सी नहीं है इत्यादि यह मद मिथ्या है।

इस मिथ्यात्वको त्याग करके जातियों को स्थापित रखते हुए भी परस्पर सम्बन्ध जारी करना योग्य सम्बन्ध के लिये हितकर है। प्राचीन काल में भी सूर्य्य, चंद्र, उग्र, नाथ वंश बने रहते थे तो भी सम्बन्ध होते थे।

यदि कोई अपराधी जाति च्युत हो तो उसको सर्व जातियां जाति च्युत मानें यह परस्पर प्रस्ताव होजाना चाहिये इस मद के त्याग से व प्रेम का क्षेत्र बढ़ाने से कन्या विक्रय के आशयको जलाने से, काम वासना को शमन कर शील संतोष पालने से, कन्याओं पर दयाभाव के साथ वर्तने से अवश्य बहुत कुछ जैन जाति का ह्रास घट जायगा!

प्यारे भाईयो! अच्छी तरह विचार करो। खाली जाति को मरते हुए देखकर शोक न करो, न हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहो! तुम विचारवान हो विचारो मार्ग निकालो और जाति का उत्थान करो।

--सं०

वार्धा में भा० दि० जैन परिषद्

का

द्वितीय अधिवेशन

ता० २७—२८—२९ जनवरी सन् २५

२७ जनवरी के प्रातःकाल श्रीयुत् चम्पतराय बैरिष्टर, श्रीयुत् रतनलाल वकील मंत्री परिषद्, सेठ ताराचन्द नवल चन्द जवेरी, सेठ मूलचन्द किसनदास कापड़िया व श्रीयुत बालचंद

कोठारी बी.ए.एम.एल.सी. वार्धास्टेशन पर पहुंचे। उनके स्वागत के लिये स्टेशन पर ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी, सेठ दौलत राम खजान्ची, सिंघई पन्ना लाल सेठ चिरन्जीलाल आदि प्रतिष्ठित जैन व देशभक्त त्यागमूर्ति सेठ जमनालाल बजाज आदि प्रतिष्ठित अजैन उपस्थित थे। वन्दे जिनवरम् की ध्वनि से स्वागत किया गया। और आगन्तुक महोदयों के गलेमें सुन्दर पुष्पमालायें पहनायी गईं। प्रतिष्ठित अतिथियों को मोटर में लेजाकर सेठ जमनालाल की राज्यप्रासाद तुल्य कोठीमें ठहराया गया। सायं-काल को श्रीयुत् सेठ जयकुमार देवीदासजी चवरे वकील सभापति द्वितीय वार्षिक अधिवेशन परिषद्, श्रीयुत् महाजन वकील पं० देवकीनन्द शास्त्री आदि प्रतिष्ठित जैनभाईयों सहित वार्धास्टेशनपर पहुंचे। उपर्युक्त सर्वजैन व अजैन प्रतिष्ठितपुरुष सभापति के स्वागत के लिये स्टेशनपर पधारे थे। सभापति महोदय को सेठ जमना लाल बजाज की कोठी पर ले आकर जलूस के साथ सभामण्डप में ले जाया गया। सभामण्डप श्रीमन्दिर जी के सामने सड़क पर कपड़े का सुन्दररूप से तय्यार किया गया था। मण्डप में स्थान २ पर महात्मा गांधी लोकमान्य तिलक आदिके चित्र लगे हुएथे। मण्डप में जलूस के पहुंचने पर भारतवर्षीय दि० जैन परि-षद् के द्वितीय अधिवेशन का कार्य ८ बजे रात्रि को प्रारम्भ हुआ।

अधिवेशन में उपर्युक्त जैन व अजैन प्रतिष्ठित महोदयों के अतिरिक्त श्रीयुत कस्तूर चन्द वकील जबलपुर आदि कई और प्रतिष्ठित महाशय पधारे थे।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके मंगलाचरण करने के पश्चात् स्वागतसमिति के अध्यक्ष सेठ दौलत राम जी ने अपना मुद्रित भाषण पढ़ा। सेठ चिरंजी लाल ने प्रस्ताव किया कि परिषद्के द्वितीय अधि-वेशन के सभापति श्रीयुत् सेठ जयकुमार देवीदास जी चवरे वकील बनाये जावें जिसका समर्थन पं० देवकी नन्दन, श्रीयुत् चम्पतराय बैरिष्टर, सिंघई पन्नालाल अमरावती, सेठ ताराचन्द नवलचन्द बम्बई, श्रीयुत रतनलाल वकील बिजनौर, श्रीयुत कस्तूर-चन्द वकील जबलपुर सेठ मूलचन्द किसनदास कापड़िया सूरत ने किया। जयध्वनि के साथ श्री जय कुमार देवीदास चवरे महोदयने सभापतिका आसन ग्रहण किया और ललित शब्दों में महत्वपूर्ण व्याख्यान उपस्थित महाशयों को दिया जो अन्यत्र मुद्रित है। रिपोर्ट गतवर्ष श्रीयुत रतनलाल परिषद् मन्त्री द्वारा पढ़ी जाकर विषय निर्धारिणी समिति का निर्वाचन हुआ।

विषयनिर्धारिणीसमिति में निम्नलिखित सज्जन थे-

१ श्रीयुत् सेठ जयकुमार देवीदासचवरे वकील सभापति अधिवेशन
२ श्रीयुत चम्पतराय जी बैरिष्टर
३ " ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी
४ " सेठ मूलचन्द किसनदास कापड़िया
५ " सेठ ताराचन्द नवलचंद जवेरी बम्बई
६ " रतनलाल जी वकील बिजनौर
७ " दौलतरामजी खजान्ची स्वागताध्यक्ष
८ " सूरजमल मन्त्री स्वागतकारिणी
९ " बालचन्द कोठारी एम. एल. सी. पूना
१० " सेठ चिरञ्जीलाल जी
११ " भैयालाल जी
१२ " सेठ रामा साहु जी

१३ " जिनदास नारायण चवरे अकोला
१४ " मोतीलाल पाटनी
१५ " सिंघई पन्नालाल अमरावती
१६ " यादवराव भावणे
१७ " मनोहर बापू जी महाजन वकील अकोला
१८ " देवकीनन्दन जी शास्त्री
१९ सेठ धन्नूशाह चवरे
२० बाबू अजितप्रसाद जी वकील लखनऊ
२१ पं० गोविन्दराम शास्त्री
२२ मास्टर मोतीराम पिठोबा फुसले कारञ्जा
२३ मा० छोटेलाल जी जबलपुर
२४ श्री० कस्तूरचन्द वकील जबलपुर
२५ श्री० मोती चन्द पारवार
२६ पं रामभाऊ जी
२७ श्रीयुत सीताराम विश्वनाथ आगरकर नागपुर
२८ सेठ हजारीमल जी छिंदवाड़ा
२९ मु० मोतीलाल होशङ्गाबाद
३० श्रीयुत वी० आर० कुकुटे
३१ श्रीयुत सुमेरचन्द दिवाकर

इनके अतिरिक्त सभापति महोदय को अधिकार दिया गया था कि दस नाम स्वयं बढ़ालें।

विषयनिर्धारिणी समिति की बैठक २७ जनवरी को सवा दश बजे से साढ़े ग्यारह बजे रात्रि को और २८ जनवरी को साढ़े आठ बजे से ग्यारह बजे सुबह को हुई, जिसमें १६ प्रस्ताव निश्चय हुए जो अधिवेशन में पास हुए हैं। श्रीयुत अजितप्रसाद जी वकील लखनऊ व महात्मा भगवानदीन जी भी २८ जनवरी को वार्धा में आपहुंचे थे। उन्हों ने भी परिषद् की कार्यवाही में भाग लिया।

२८ जनवरी को अधिवेशन के द्वितीय दिवस प्रथम ही मन्त्री परिषद् ने परिषद् के कार्य से सहानुभूति सूचक तार व पत्र पढ़े और बाद को प्रस्ताव दूसरे व तीसरे दिन सभा में रक्खे गये और पास हुए।

वार्धा में परिषद् के सौ के लगभग सभासद बने हैं यद्यपि परिषद् के कार्य के संचालन हेतु सभा में कोई अपील रुपये की नहीं की गई तो भी निम्न प्रकार सहायता प्राप्त हुई है।

१५१) श्रीयुत जयकुमार देवीदास चवरे वकील अकोला
२०१) सेठ ताराचन्द नवलचन्द जवेरी बम्बई
१०१) सिंघई वंशीलाल पन्नालाल अमरावती
१०१) सेठ चिरंजीलाल वार्धा
९) श्रीयुत् सीताराम विशम्भरनाथ अगरकर नागपुर

५६३)

निम्नलिखित महाशयों ने एक २ सहस्र ट्रैक्ट के प्रकाशन के व्यय को जो ५०) के लगभग होगा देने का वचन दिया है।

१ सिंघई पन्नालाल अमरावती
२ सेठ धन्नूशाह ओंकारशाह चवरे अकोला
३ सेठ मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत
४ सेठ सूरजमल बड़जात्या वार्धा
५ सिंघई चन्दूलाल खेमचन्द आरवी (वार्धा)
सेठ गोपाल नेमीचन्द आरवी (वार्धा)
६ सेठ घासीराम मांगीलाल बदनेरा ज़िला अमरावती, सेठ दामोदर मुकुंद सेठ रामकाराव

७ सेठ रामचन्द्रराव श्रावके नागपुर इतवारी
८ सेठ कपूरचन्द टेकचन्द सिवनी
९ सेठ भीमा बाईदोना रामासाह शिरपुर तालुका वासीन (अकोला)

स्वागताध्यक्षका भाषण

दोहा—मंगलमय मंगलकरण वीतराग विज्ञान।
नमों ताहिजातेभये, अरहंतादि महान ॥

आज मैं इस भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् के अधिवेशन के निमंत्रित अपने सर्व भाई बहिनों का स्वागत कारिणी सभा की ओर से सविनय स्वागत करता हूं ।

यह हमारा भाग्योदय है जो आप जैसे सज्जनों ने इस शीतऋतु में युक्तप्रान्त बम्बई आदि दूर देशों से पधारने का कष्ट उठा कर हम को अपनी उपस्थिति से कृतार्थ किया है ।

यह मध्यप्रान्त और बरार बहुत प्राचीन देश है। इसको शास्त्रों में विदर्भ देश लिखा है। यहां से थोड़ी दूर आर्वी से तीन कोस प्राचीन कौंडिण्यपुर है जहां श्री कृष्ण की पट्टरानी रुक्मणि जी ने जन्म प्राप्त किया था तथा यहीं श्री धर्मनाथ जी १५ वें तीर्थङ्करने राजकन्या को स्वयंवर में वरा था। ऐसा वर्णन श्रीधर्मशर्माभ्युदय काव्य में आता है। यहां से थोड़ी दूर भांदकमें जैनियोंके बहुत प्राचीन मन्दिर हैं। प्रान्त की दिगम्बर जैन समाज के उद्धार के लिये इस प्रान्त की दिगम्बर जैन सभा श्रीयुत् महाजन वकील के मन्त्रित्व में नमूनेदार काम कर रही है । तथा नागपुर प्रान्तीय खण्डेलवाल सभा का कार्य भी जाति भूषण माननीय श्रीयुत् चैनसुख छावड़ा आनरेरी मजिस्ट्रेट सिवनी द्वारा बहुत उत्तम हो रहा है। कारंजा में महावीर ब्रह्मचर्याश्रम एक नमूनेदार दर्शनीय संस्था है जिसका कार्य ब्रह्मचारी देवचन्द जी के अधिष्ठातापन में बहुत ही उत्तम चल रहा है। वर्धा में खण्डेलवाल, परवार, सैतवाल, पद्मावती परवार आदि दिगम्बर जैनियों के १०० घर हैं। संख्या ४०० है । यहाँ एक जैन पाठशाला तथा १ जैन बोर्डिङ्ग चल रहा है । वर्धा में माननीय सेठ जमनालाल जी के तन मन धन से कई शिक्षा संस्थायें चल रही हैं, तथा आपकी जैनों के साथ तो पूर्ण सहानुभूति रहती है। यहां एक दिगम्बर जैनमन्दिर है, उसी में नवीन वेदी श्रीयुत् सेठ चिरंजीलाल जी बड़जात्या की पूजनीया माता जी निर्माण कराकर प्रतिष्ठा करा रही हैं। इस निमित्त आप सब भाईयों से हमें मिलने का लाभ हुआ है । आप सर्व भाई विचारवान हैं। इससे दिगम्बर जैन धर्म व जैन जाति की उन्नति के लिये योग्य प्रस्ताव करके उनको अमल में लाने का पूर्ण पुरुषार्थ करेंगे ऐसी मैं आशा करता हूं। मैं अपनी सम्मति से एक दो ही बात की सूचना देता हूं ।

प्रथम तो यह है कि फूट के समान कोई नाशकारी नहीं है। और एकता के समान कोई गुणकारी नहीं है। इस लिये हम सब को एकता और

प्रेम के सूत्र में बंधकर कुछ काम करके बताना चाहिये। बहुधा सभाओं में फूट व आलस्य के कारण कुछ काम नहीं होता है। इससे सभाओंका प्रस्ताव गिर जाता है। दूसरी बात यह है कि हमको समाज में सदाचार व शुद्ध खान पान का प्रचार करना चाहिये। जहां पर यह नहीं है वहां धर्म व विवेक आत्मा में नहीं रह सकता है। मानव जीवन की सफलता आत्मा की उत्पत्ति तथा परोपकार से है। ये दोनों ही कार्य हम तब ही कर सकते हैं जब हम स्वयं व्यसनों से दूर, नीति पर चलने वाले, योग्य आचारवान व मादक पदार्थ आदि से रहित शुद्ध भोजन पान करते हों। मुझे यह देखकर बहुत खेद होता है कि हमारे लड़के बिना किसी ग्लानि के बीड़ी सिगरेट पीते हैं। जिससे सिवाय हानि के कुछ लाभ नहीं होता हैं। बिना किसी रोग की औषधि के चाय का पीना भी बहुत हानि कारक है। ये रोग का घर है। जो सादा और शुद्ध खान पान रखते हैं वे निरोगी रहते हुये धर्म की उन्नति कर सकते हैं।

तीसरी बात यह है कि समाज में बल की वृद्धि के लिये व्यायाम या कसरत के प्रचार की बहुत जरूरत है। हर एक पुरुष को बलवान व स्वास्थ्ययुक्त होना ही उसको जीवन भर पुरुषार्थी रख सकता है, बिना शारीरिक बल के धर्म व तप का साधन भी नहीं हो सकता है। इस लिये हर एक स्थान पर व्यायामशाला खोल कर अपने लड़कों को हर प्रकार का उपयोगी व्यायाम सिखाना चाहिये और २० वर्ष तक उनका लग्न न करके उनको ब्रह्मचर्य पालने की शिक्षा देनी चाहिये। बालिकाओं को भी घर का काम काज कराकर दृढ़ शरीर व विद्या देकर आदर्श गृहस्थ योग्य बनाना चाहिये। और उनका लग्न योग्य वर के साथ करना चाहिये। जिससे वीर संतान जन्मे और वे जन्म भर सुखी रहें।

चौथी बात यह है कि शिक्षा विना कोई उन्नति का भाव किसी के दिल में नहीं पैदा हो सकता अतएव कोई भी जैन बालक व बालिका अशिक्षित न रहे इसका पूर्ण उद्योग करना चाहिये।

पांचवी बात यह है कि बहुधा देखा जाता है कि पढ़े लिखे भाई श्रीजिनेन्द्र देव की पूजा जो गृहस्थ का नित्यकर्म है उस पर ध्यान कम देते हैं। मेरी राय में उन्हें स्वयं पूजा करके औरों के लिये नमूना पेश करना चाहिये।

मैं यह हृदय से चाहता हूं कि आप सब भाई प्रेम के साथ विचार करें। और स्वार्थ त्याग के भाव को जाग्रत करते हुए वेही प्रस्ताव स्वीकार करें जिनकी असली कार्यवाही आप करके बता सकते हैं। अन्त में आप के स्वागत का पुनः सन्मान करता हुआ मैं श्री जिनेंद्र देव को नमन करके बैठता हूं।

कांच की शीशियां

स्वदेशी ! सस्ती !! बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाजार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड ब्रादर्स, महावीर भवन, बिजनौर

सभापति का भाषण

मुझे आप लोगों ने सभापति परिषद् चुनकर जो सम्मान प्रदर्शित किया है उसके लिये मैं आपका बड़ा आभारी हूं। आजकल सभापति पद केवल सन्मान का नहीं रहा है किन्तु यह बड़ी जोखम का है। अतः श्री जिनदेव से प्रार्थना है कि उपर्युक्त कार्य में सफलता करें। आशा है आप लोग भी पूर्ण सहायता उक्त कार्य की सफलता में करेंगे। आप लोगों ने सभापति चुनते समय मेरा जो गुणगान गाया है, उन गुणों का शतांश भी मुझ में नहीं है किन्तु मैं उन गुणों का इच्छुक अवश्य हूं। भारत व० दि० जैन महासभा के भीतर पण्डितदल व नये दल के मतभेद ने उग्ररूप धारण कर लिया है और इससे जैन समाज को अधिक हानि होने की सम्भावना है। अतः दोनों दलों से निवेदन है कि फूट को दूर कर शान्ति स्थापन करें।

आजकल जैनियों की आर्थिक परिस्थिति ही केवल नहीं वरन् समस्त संसार की परिस्थिति बड़ी विकट होगई है अतः उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक है। इस बात पर विचार करने के लिये हमको पूज्य आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों पर ध्यान रखना होगा। धर्म पुरुषार्थ के उचितरूप में प्रयोग लाने में सब में बड़ी रुकावट बालविवाह है। बालक बालिकायें अपना धर्म भी समझने नहीं पातीं, जब कि विवाह करके गृहस्थ का उत्तरदायित्व उनके शिर पर लाद दिया जाता है। उचित व्यवस्था करने के लिये हमको बालविवाह बन्द कर देना चाहिये।

सब से प्रथम हमको पूज्य स्थानों पर ध्यान देना चाहिये। तीर्थों की उचित व्यवस्था तो कितनी ही होगई है और जो अभी होती रही है उसकी उचित व्यवस्था होजावेगी। इस सुव्यवस्था का सम्पूर्ण श्रेय स्वर्गीय दानवीर सेठ मानिकचन्द को है। देवमन्दिरों की सुव्यवस्था अभी तक नहीं हुई है। ये देवमन्दिर हमारी उन्नति के केन्द्रस्थान हैं इनके द्वारा जैनधर्म का प्रसार सर्वत्र होसकेगा। जहां मन्दिर विद्यमान नहीं होते वहां धर्म का लोप होजाता है, इन मन्दिरों से लाभ कैसे उठाया जा सकता है यह विचारणीय है—

१. आत्मकल्याणार्थ श्री जिनदेव के गुण व कृत्यों को ध्यान में रखने व उनके अनुसार चलने के लिये प्रतिदिन देवपूजा करनी चाहिये।

२. धर्म व आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिये और सदाचार से रहना व चलना चाहिये।

३. जहां २ मन्दिरों की आयदनी उनकी आवश्यकताओं से अधिक है उस अधिक आमदनी को निम्न लिखित कार्यों में लगाना चाहिये-

१ जिस २ स्थान के मन्दिर टूटे हों उनके जीर्णोद्धार में द्रव्य लगाना चाहिये।

२-जिन २ ग्रन्थों का प्रकाशन नहीं हुआ है

उनके प्रकाशन में व्यय किया जाय।

३-धर्म प्रचार के हेतु पुस्तक ट्रैक्टों के वितरण व प्रचारकों के रखने में व्यय किया जावे।

यदि उपर्युक्त प्रकार मन्दिरों के अधिक रुपये का व्यय किया जावे तो धर्म बड़ी सुगमता से फैल सकता है और ये मन्दिर धर्मप्रसार के मुख्य २ केन्द्र बन सकते हैं। जो २ बातें जैन मंदिरों के लिये लाभदायक है वे ही हिन्दुओं के लिए लाभदायक हो सकती हैं।

जब हम अपने सहधर्मियों की आर्थिक स्थिति पर दृष्टि डालते हैं तो ज्ञान होता है कि ग्रामों में बहुत ऐसे जैनी भाई हैं जिनको दोनों समय पेट भर भोजन नहीं मिलता और जब वे व्यवसाय के लिये बड़े २ नगरों में आते हैं तो उनको बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रहने के लिये मकान बड़े २ भाड़े (किराये) को मिलते हैं। व्यवसाय के लिये उन्हें कोई आर्थिक सहायता नहीं देता, अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम ग्रामों से आने वाले भाइयों को सहायता दें। थोड़े भाड़े पर मकान रहने को लिए दें। और बड़े २ नगरों में ऐसे बैंक स्थापित करदें कि उन बैंकों के मालदारों (Sharers) को मुनाफा चार आने मासिक व्याज की दर से मिल जावें, शेष मुनाफा जो बैंक को बचे उससे अपने निर्धन भाइयों को जो व्यवसाय के लिये नगरों में आवें उन्हें सहायता दें। मनुष्य को चाहिये कि वह मितव्ययी हो अपनी आमदनी का आधा भाग बचावे यदि आधा न बच सके तो चतुर्थांश अवश्य बचावे इसमें से कुछ दान करें और कुछ भविष्य में बड़ी आवश्यकताओं के लिये रक्खे।

काम पुरुषार्थ के अर्थ के सम्बन्ध में बहुत से भाईयों को भ्रम है। काम पुरुषार्थ का यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य भोग विलासों में रत रहे उसका अर्थ यह है कि मनुष्य में ऐसी शक्ति होवे कि वह अपनी इच्छा की पूर्ति कर सके। यदि शक्ति न होगी तो वह इच्छित वस्तु, को प्राप्त न कर सकेगा और उस की चिन्ता में दुखी रहेगा। शक्ति मनुष्य में ब्रह्मचर्य से ही हो सकती है इस लिये मनुष्य को ब्रह्मचर्य पालना चाहिये शरीर को स्वस्थ रखने के लिये शुद्धवायु सेवन और व्यायाम करना चाहिये। ब्रह्मचर्य शुद्ध वायु सेवन जैसे मनुष्य के लिये आवश्यक हैं वैसे ही स्त्रियों के लिये भी आवश्यक हैं। यदि स्त्रियां दुर्बल होंगी तो उनकी संतान और भी अधिक दुर्बल उत्पन्न होगी।

हमको सामाजिक त्रुटियां निकालदेनी चाहिये बालविवाह के कारण ही विधवा विवाह का प्रश्न उठता है यदि कन्या का विवाह पांच वर्ष की आयुमें कर दिया गया और वह यौवन अवस्थाको १५ वर्ष में पहुंचती है तो इस दस वर्ष के अंतराल में उसके विधवा होने की सम्भावना है। यदि १५ वर्ष की आयु में विवाह किया जावे तो इस दस वर्ष के भीतर विधवा होने की शङ्का जाती रहे। इसलिये बालविवाह बन्द कर देना चाहिये। इसी तरह वृद्ध विवाहादि अन्य त्रुटियों को भी निकाल देना चाहिये।

बहुत से भाई विशेष कर ग्रामों में शिक्षा की आवश्यकता नहीं समझते जहां बालक ८, ९ वर्षका हुआ अपने घरेलु कार्य में लगा लेते हैं जिससे उन की भविष्य उन्नति रुक जाती हैं इस लिये हम को

चाहिये कि ऐसे भाइयों के हृदयमें शिक्षा की आवश्यकता को अंकित करदें और उचित शिक्षा का प्रबन्ध करदें।

प्रस्ताव

१ यह परिषद् श्रीमान सेठ दयाचन्द जी कलकत्ता ला० रामानन्द जी फिरोजपुर, रायसाहब सेठ विजयचन्द जी बांसवाड़ (मेवाड़) की मृत्यु पर शोक तथा उनके बन्धुओं से सम्वेदना रखती है।

प्रस्तावक-सभापति

सर्वानुमति से पास

२ यह परिषद् मन्त्री द्वारा उपस्थित रिपोर्ट को पास करती है।

प्रस्तावक-श्रीयुत कस्तूरचंद जी वकील

समर्थक—महाजन वकील

३ श्रीमती महारानी ट्रावनकोर ने अपने राज्य में पशुबलि के निषेध की आज्ञा दे दी है अतः यह परिषद् श्री महारानी को इस दयामयी कार्य के लिये धन्यवाद देती है।

प्रस्तावक-सेठ बसंतलाल बांकीपुर

समर्थक-मास्टर छोटेलाल

४ श्रीयुत महाराजासाहब देवासने बीजासन देवा पर होने वाली पशुबलि को बन्द कर दिया है अतः यह परिषद् महाराजा साहब देवास को धन्यवाद देतीहै और इस दयामयी कार्यके लिये जीवदयाप्रचारिणी सभा आगरे को बधाई देती है।

प्रस्तावक-ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद

समर्थक-प० देवकीनन्दन

तीर्थों के सम्बन्ध में दिगम्बर श्वेताम्बर एकता के विषय में परिषद् के मन्त्री महोदय ने गत वर्ष के प्रस्ताव न० ६ की अमली कार्रवाही की रिपोर्ट पढ़ी उस पर यह परिषद् गतवर्षके उक्त प्रस्ताव की पुष्टि करती हुई पुनः प्रस्ताव करती है कि कमेटी अपने इस एकता के कार्य को निम्नलिखित महानुभावों से सहायता लेते हुए सफल बनावे।

महाराज इन्द्रविजय, आगरा

बा० कीर्तिप्रसाद वकील, मेरठ

बा० गिरनारीलाल, देहली

बा० मणिलाल जी बल्लभ जी कोठारी अहमदाबाद।

प्रस्तावक-चम्पतराय

समर्थक-अजितप्रसाद

६ श्रीयुत रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन बोलपुर में विश्वभारतीय विभाग के भीतर जैनधर्मकी शिक्षा दिलाना वहांके कार्यकर्त्ताओं ने स्वीकार किया है अतएव वर्त्तमान में वहाँ एक जैन विद्वान के नियुक्त करने की अत्यन्त आवश्यकता है। नीचे लिखे पांच महाशयों की एक कमेटी बनाई जाती है, जो १ मास के भीतर इसकी उचित व्यवस्था करे।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

सिंघई पन्नालाल, अमरावती

सेठ अम्बादास रामजी महाजन

बा० कस्तूरचन्द जी वकील, जबलपुर

बा० रतनलाल जी बिजनौर

७ यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैनधर्म प्रचार के हेतु उपदेशक विभाग के द्वारा जैनधर्म के महत्व को दर्शानेवाले ट्रेक्टों की कम से कम

१०,००० प्रतियां प्रसिद्ध २ विद्वानों से लिखा कर और भिन्न २ भाषाओं में प्रकाशित करा कर वितरण की जावें। इस का कार्य भार श्रीयुत कामताप्रसाद जी के सुपुर्द किया जावे।

प्रस्तावक-ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

समर्थक-पं० गोविन्दराम जी

८ श्रीयुत सीताराम विश्वनाथ अगरकर नागपुर ने एक वर्ष में एक मास और प० गोविन्दराम जी काव्यतीर्थ ने १५ दिन सर्वसाधारण जनता में जैनधर्म प्रचार करना स्वीकार किया है। यह परिषद् उनको धन्यवाद देती है और अन्य महानुभावों से भी उपर्युक्त कार्य करने की प्रेरणा करती है।

प्रस्तावक-बा० रतनलाल

समर्थक-सेठ ताराचंद

" ब्र० शीतलप्रसाद जी

९ पैंडत (मैनपुरी) में श्री महावीर स्वामी की मूर्ती के सामने जखैया बाबा के नामसे बलि होती है जिस से प्रतिमा जी की बड़ी अबिनय होरही है तथा जैन धर्मानुयाइयों के हृदय में आघात पहुंचता है। अतएव यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि बलिदान रोकने और प्रतिमा जी की अविनय हटाने के लिये जीवदया प्रचारिणी सभा से प्रेरणा की जावे।

१० यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि जैन सिद्धान्त के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा जैन बोर्डिंगोंमें व्याख्यानों के लिये इनके अधिकारियों से विशेष प्रबंध का प्रयास करे तथा उन विद्वानों से भी वहां व्याख्यान देने के लिये प्रेरणा करें जिस से कि बोर्डिंगों के उच्च शिक्षा प्राप्त छात्रों में धर्म ज्ञान के अध्ययन तथा स्वाध्याय के लिये प्रेम पल्लवित हो। इस कार्य में श्रीयुत कस्तूरचन्द जी वकील जबलपुर बा० बलबीरचन्द जी मंत्री बोर्डिंग व्याख्यान विभाग को सहायता दें।

प्रस्तावक—कापड़िया जी।

अनुमोदक—पं० देवकीनन्दन जी

११ इंगलिश हाईस्कूल तथा कालिज छात्रालयों में लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा को उत्तेजना देने के लिये यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि एक परीक्षा विभाग स्थापित किया जावे।

(क) इस में ४ कक्षा होंगी प्रत्येक कक्षा के सर्वोत्तम परीक्षोत्तीर्ण दो विद्यार्थियों को पारितोषिक दिये जावेंगे।

(ख) हाईस्कूलके विद्यार्थी इच्छानुसार हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में परीक्षा दे सकेंगे किन्तु कालिज के छात्रोंको अंग्रेज़ी में ही उत्तर देना होगा।

(ग) परीक्षा की पुस्तकें निम्न प्रकार होंगी।

कक्षा १ House Holder's Dharm रत्नकांड श्रावकाचार

" २ Practical Path या तत्त्वमाला

" ३ Dravya Sangrah द्रव्य संग्रह व तत्त्वार्थ सूत्र

" ४ पंचास्ति काय

प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द जी मंत्री परीक्षा विभाग बनाये जावें।

प्रस्तावक—बाबू कस्तूरचन्द

समर्थक—मिस्टर कोठारी

१२ यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि विदेशी और

मिल के कपड़ों में चर्बी तथा अपवित्र पदार्थों का उपयोग किया जाता है अतः यह परिषद् अपने पहिले प्रस्तावों को दुहराती है कि प्रत्येक मन्दिर तथा अन्य धार्मिक कार्यों में शुद्ध खादी का ही प्रयोग किया जावे। सर्व साधारण जनता से भी प्रार्थना करती है कि देश की आर्थिक दशा सुधारने तथा धर्म की रक्षा के लिये शुद्ध खादी का उपयोग स्वयं करें तथा उस के प्रचार में विशेष प्रयत्न करें।

प्रस्तावक—रतनलाल

अनुमोदक—ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद

१३ यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि बम्बई प्रान्तिक दि० जैन सभा और भा० दि० जैन महासभा इन दोनों के नान्दगांव और खंडवा के अधिवेशन पर जो जैनियों में मत भेद हुआ उसके उग्ररूप धारण करने से सामाजिक और धार्मिक कार्यों में हानि होने की अधिक संभावना है। जिस का परिषद् को अत्यन्त खेद है। अतः यह परिषद् अधिवेशन के सभापति श्रीमान् जयकुमार देवीदास चवरे से प्रार्थना करती है कि शांति स्थापन के लिये उद्योग करें।

प्रस्तावक—महाजन

समर्थक—पं० देवकीनन्दन

अनुमोदक—पं० राम भाऊ

१४ भा० दि० जैन परिषद् की प्रबन्ध कारिणी समिति के सदस्यों में निम्नलिखित महाशय बढ़ाये जावें।

१ बा० कस्तूरचन्द जी वकील जबलपुर

२ सेठ मनोहरबापूजी महाजन वकील आकोला

३ सिंघई हीरालाल जी बदनेरा (अमरावती)

४ सेठ चिरञ्जीलालजी वार्धा

५ सिंघई पन्नालाल जी अमरावती

६ सेठ यादवराव भायणे वार्धा

७ ला० रूपचन्द गार्गीय पानीपत

८ प्रो० लक्ष्मी चन्द जी मन्त्री परीक्षा विभाग

प्रस्तावक तथा समर्थक, सभापति

१५ स्थानीय परिषद् अपने सभासदों का चन्दा इकट्ठा करेगी। स्वयं ≈)॥ रक्खेगी, अन्य परिषदों में प्रत्येक का -)॥ भाग होगा। यदि तीन विद्यमान हों तो।) स्वयं रक्खेगी ≈) भाग अन्य परिषदों में प्रत्येक का होगा। यदि दो विद्यमान हों तो ।) रक्खेगी और ≈) भाग परिषद् को देगी और यदि इस प्रान्त में कोई परिषद् न होगी तो ॥) भा० परिषद् को देगी। शीस नीचेवाला परिषद् इकट्ठा करेगा और अपने से ऊपर वाले को अपना भाग रखकर शेष भाग देगा।

१६ आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित बजट पास किया जाता है।

आय	व्यय
१४००) वीर खाते	२५००) वीर खाते
१००) सभासद	५००) एकता विभाग
१५००)	१०००) प्रचार खाते
	५००) ट्रैक्ट खाते
	५००) इतिहास विभाग
	१००) प्रबन्ध खाते (स्टेशनरी क्लर्क आदि)
	६००) परीक्षा विभाग व बोर्डिङ्ग विभाग
	५००) पुस्तक तैयारी
	३००) फुटकर
	६४००

संसार दिग्दर्शन

वृहद्-पारितोषिक। समय चूक पछताना होगा। इस समय जैन समाज द्वेष, फूट और कलह का क्षेत्र बन रहा है, जहां एक ओर 'अहिंसा परमो धर्मः" का उच्चार होता है तो दूसरी तरफ डंडे बाजी चल रही है, जिस का धर्म दयामयी है, जो समाज शान्ति का आगार है उस में यह अशान्ति क्यों ? इतनी पतितावस्था क्यों ?

समाज में कई दल बन्दियां होकर धींगा धींगी मचाई जारही है और समाज को रसातल को पहुंचा रहे हैं, खेड्वाल में महासभा के अधिवेशन के अवसर पर पंडित दल और बाबूदल में समाज सुधार के बदले झगड़ा होकर मारपीट हो ही गई, दोनों दल किस बूते पर इतने उतारू हुए हैं और क्यों इतनी विषमता फैल रही है, यह हमारी समझ में बिल्कुल नहीं आता।

यह समाज हर समय नई २ सभायें और संस्थायें उत्पन्न कर रहा है तो भी वास्तविक सुधार अभी तक नहीं हो पाया, इसका मूल कारण क्या है ? यह अवश्य विचारणीय है।

अतएव हम चाहते हैं कि दिगम्बर जैन समाज का प्रत्येक विद्वान् और विचारशील व्यक्ति गंभीरता पूर्वक विचार करे तथा यह ढूंढ निकाले कि यह स्थिति क्योंकर हुई और अब उसका सुधार कैसे हो सकता है।

इसी हेतु को पूरा करने के लिये हम अनुरोध करते हैं कि दिगम्बर जैन समाज के विद्वद्गण (पण्डित, बाबू या अन्य कोई सज्जन) अपने स्वतन्त्र विचार का निर्भीकतापूर्ण निबन्ध लिखकर हमारे पास भेजदें, जिससे हमें यह मालूम हो सके कि हमारे समाज के नेताओं व विद्वानों का विचार क्या है ? विषमता कहां आती है तथा उसके दूर करने का उपाय क्या हो सकता है, सर्वश्रेष्ठ निबंध लेखक को ५०१) रु० तक का तथा द्वितीय को ३०१) रु० तथा तृतीय को १५१) रु० तक का पारितोषिक दिया जावेगा।

पारितोषिक का निर्णय निम्नलिखित कमेटी द्वारा होगा।

१. रायबहादुर दत्मानुदौला एस. एम. बापना सा० बी. ए. बी. एस सी., एल एल. बी.

२. रायबहादुर राज्यभूषण सर सेठ हुकमचन्द जी सा०।

३. रायबहादुर राज्यभूषण सेठ कल्याणमल जी सा०।

४. श्रीमान् वाणिज्यभूषण सेठ लालचन्द जी सेठी।

५. श्रीमान् लाला हजारीलाल जी जैन।

६. श्रीमान् जौहरीलाल जी मित्तल एम. ए. एल एल. बी.

७. श्रीमान् भंवरलाल जी सेठी

८. श्रीमान् गुलाबचन्द टोंग्या

९. श्रीमान् प० जीवनधर जी न्यायतीर्थ

१०. श्रीमान् बाबू सुखचन्द जी जैन बी. ए. हेड मास्टर, ति० जैन हाईस्कूल।

११. श्रीमान् साहित्यरत्न प० दरबारीलाल जी न्यायतीर्थ।

लेख भेजने की शर्तें:—

१. विषयः—निबन्ध में निम्न लिखित सम्पूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला जाना आवश्यक है (१) जैन समाज की वर्तमान दशा (२) महासभा के आज तक के रचनात्मक कार्यक्रम और उसमें कहां तक सफलता हुई उसका पूर्ण विवेचन (३) किन किन विषयों पर और क्यों लोगों में मतभेद है सत्य किस ओर है (सप्रमाण) (४) यह मतभेद किस प्रकार मिट सकता है (५) विधवाओं के प्रति (उनके चरित्र की दृष्टि से) समाज का कर्तव्य (६) असहायों की शिक्षा, भरण पोषण आदि के संबन्ध में समाज का उत्तरदायित्व (७) समाज की प्रचलित कुरीतियां (बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय) आदि व उनके सुधार के उपाय (८) नुकते के संबंध में (मरण सम्बधी रसोई) स्पष्ट विचार (९) फिजूलखर्ची—मध्यम श्रेणी के लोगों पर उस का क्या असर पड़ता है विवाह। नुकते आदि में किस प्रकार कम खर्च की व्यवस्था की जा सकती है (१०) चरित्र हीन भाई के संबंध में उन के कुटुम्बियों और समाज का कर्तव्य (११) प्रचलित संस्थाओं (छात्राश्रम विद्यालय आदि) से अभीतक वास्तविक लाभ क्यों नहीं हुआ? उन्हें पूर्ण उपयोगी और लाभदायक कैसे बनाया जा सकता है (१२) सच्चरित्र विधवाओं का आदर्श विधवाश्रम किस प्रकार का होना चाहिये (१३) समाज की सच्ची और वास्तविक उन्नति किस प्रकार हो सकती है।

२ लेख शुद्ध देवनागरी लिपि में फुल्सकेप साईज के कागज पर एक तरफ लिखा हुआ होना चाहिये, पृष्ठ संख्या ३ से अधिक न हो।

३ लेख हमारे पास ता० १५-२-१९२५ तक पहुंच जाना चाहिये,।

[राय बहादुर राज्य भूषण]
तिलोकचन्द कल्याणमल
इन्दौर

—मेरठ में श्री वीर पुस्तकालय की स्थापना, जैन कुमार सभा की ओर से गत ४ जनवरी सन् १९२५ रविवार को एक पुस्तकालय व पाठन भवन की "श्री वीर पुस्तकालय" के नाम से स्थापना कर दी गई हैं। रीडिंग रूम (पाठन भवन) में स्थानीय उदार सज्जनों की ओर से 'फ़ारवर्ड' 'लीडर' 'वन्देमातरम (उर्दू)' 'आज' (चार दैनिक), 'जैनगजट' 'जैनमित्र' 'नवजीवन' 'यंग-इन्डिया (अंग्रेजी)' (चार साप्ताहिक) व वीर' 'दिगम्बर जैन' 'जैन प्रदीप' 'जैन प्रचारक' 'जैन गजट (अंग्रेजी)' 'माधुरी' 'माडर्न रिवियू' आदि अन्य १३पत्रों का प्रबंध होगया है। पुस्तकें भी लगभग १२५ इकट्ठी हुई हैं परन्तु अन्य, पुस्तकों की अत्यन्त आवश्यकता है। सभा के पास फंड न होने से इसका प्रबंध करने में असमर्थ है। अतः समाज के सुप्रतिष्ठित विद्वानों व लेखकों तथा धनाढ्य सज्जनों से प्रार्थना है कि कृपया अपनी लिखी पुस्तकें प्रदान करें।

—उत्तमचन्द जैन, मंत्री।

—महासभा सम्बन्धी आवश्यक निवेदन समस्त दिगम्बर जैन बंधुओं और भारतवर्षीय दि० जैन महासभा से सम्बन्ध रखने वाले समस्त सज्जनों से सविनय साग्रह निवेदन है कि इस वर्ष शेडवाल (बेलगांव) में भा० दि० जैन महासभा के २९ वें अधिवेशन में प्रबन्धकारिणी कमेटी के

चुनाव में महामन्त्री श्री० सेठ चैनसुखदास जी छाबड़ा सिवनी के स्थान में श्री० बालचंद रामचंद जी कोठारी बी० ए० एम० एल० सी० (मैं) महासभा के महामन्त्री नियत किये गये हैं। इसलिये महासभा की सभासदी फीस भेजना, सहायता भेजना तथा महासभा सम्बन्धी अन्य किसी तरह की कार्रवाई (पत्रव्यवहार आदि) (Dealing) अब निम्न लिखित पते से ही करें, क्योंकि नवीन चुनाव होजाने से श्री० चैनसुखदास जी छाबड़ा को महासभा महामन्त्री की हैसियत से महासभा सम्बन्धी कुछ भी कार्रवाई करनेका अब अधिकार नहीं है और इनके किसी भी कृत्यसे अब महासभा बन्धनकारक नहीं होगी तथा महासभा के मुखपत्र जैनगजट के सम्पादक पं० रघुनाथदास जी सरनौ के स्थान में बा० अजितप्रसाद जी जैन एम० ए० एल० एल० बी० वकील, अजिताश्रम, लखनऊ नियुक्त किये गये हैं, इसलिये जैनगजट का मूल्य, विज्ञापन चार्ज व सहायता आदि भी निम्नलिखित पते पर ही भेजें, अर्थात् अब किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार भूतपूर्व महामंत्री व जैनगज़ट संपादक प्रकाशक से न कर निम्नलिखित पते पर ही करें।

बालचन्द रामचन्द कोठारी
महामन्त्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्
शुक्रवार पेठ-पूना।

—२८ जनवरी को भा० दि० जैन महासभा की नयी प्रबन्ध कारिणी ने निश्चय किया है कि पूर्व महामन्त्री आदि दफ्तर का चार्ज नहीं देते है अतः उनके विरुद्ध आवश्यक कानूनी कारर्वाई की जावे और आवश्यक अधिकार कानूनी कारवाई करनेके श्रीयुत् बालचन्द कोठारी जनरल सेक्रेटरी को दिये गये।

—दौलारी ग्राम जिला मुरादाबादके मंदिर का प्रबन्ध ठीक न था। जैन सेवक समिति रामपुरने उसका प्रबन्ध ठीक कर दिया है तथा कितने ही भाईयों ने दर्शन करने का नियम लिया है उक्त सेवक समिति का कार्य अनुकरणीय है।

हर्ष ! परम हर्ष !! महाहर्ष !!!

—बिजाशन (भैंसा कलाली) देवी (देवास स्टेट) में प्रतिवर्ष १५०० पशुओं की बलि होती थी। जीव दया प्रचारिणी सभा आगरे के प्रयत्न से देवास स्टेट ने **कानूनन बलि हिंसा को बन्द कर दिया** और १५ सहस्र पशुओं के प्राण की रक्षा की। जीवदया प्रचारिणी सभा और उस के मन्त्री पं० बाबूराम जी का प्रयत्न सराहनीय है।

—श्री १०८ कुण्डलपुर जी अतिशय क्षेत्र का मेला अपूर्व समारोह के साथ मिति माघ शुक्ला १४ दशी से फाल्गुन कृष्णा ५ वीं ता० ८ फरवरी से ता० १३ फरवरी सन् १९२५ तक होगा।

श्री महावीर उदासीन आश्रम का अधिवेशन होगा तथा अच्छे अच्छे त्यागी विद्वान पधारेंगे। राजनैतिक विचारों की सभायें तथा पंचायत द्वारा जातीय झगड़े तय किये जाएगे।

इसलिये आपमहानुभावों से सानुरोध निवेदन है कि इस अमूल्य अवसर को हाथ से न जाने देंगे सकुटुम्ब पधारने की कृपा करेंगे।

—धन्यवाद ता० १६ जनवरी को ला० घमंडी लाल मिठन लाल सरधने वालों के सुपुत्र चि० दीपचन्द जी का विवाहोत्सव था। बारात

कस्बा खेड़ा निवासी ला० जनकी दास के यहां गई थी। इस सुअवसर पर सामाजिक संस्थाओं को ३१५) दान दिया जिसमें ४) वीर को भी प्रदान किये जिसके लिये उनको कोटिशः धन्यवाद है-प्रकाशक

—कुरावली में प्रतिष्ठोत्सव। ज़िले मैनपुरी में कुरावली निवासी श्री० मिजाजीलाल जी ने निज द्वारा निर्मापित वेदी का प्रतिष्ठोत्सव श्री० प० चम्पाराम जी एवं प० विजयकुमार जी न्यायतीर्थ की व्यवस्था विधि में मिती माघ सुदी २-५ सं० १९८१ तक सानन्द कराई। इर्द गिर्द के जैनी भाई सम्मिलित हुए। रथयात्रा में भजन आदि का प्रबन्ध अच्छा रहा था। नित्यशास्त्रसभा होती थी। प्रतिष्ठाकारकों ने निम्नप्रकार दान दिया--११) जैन मन्दिर कुरावली, ११) मन्दिर कंपिल, २७) मंदिर २७ स्थान के, ४) स्याद्वाद विद्यालय, ४) सिद्धांत विद्यालय, ४) औषधालय कानपुर, ५) अनाथालय दिल्ली, ५) श्राविकाश्रम बम्बई, ५) बालाविश्राम आरा, ५) महासभा पूना, ५) परिषद् बिजनौर, ४) एजूकेशनल एसोसियेशन मैसूर, २) जैनसभा कुरावली, ५) बढ़ेल बालसभा, २) 'वीर'। कुल १०१) रुपये। कुरावली के मन्दिर को १ जोड़ी सोनेके कड़े, ३ छत्र सोने के, १ चँवर, वर्तन पूजा, चौकी चाँदी आदि दिये। महासभा के रुपये नये चुनाव के अनुसार पूना भेजे गये। २) वीर को प्राप्त हुए इसके लिये धन्यवाद।

—एक जैन ग्रेज्युएट ब्रह्मचारी हुए श्री आदि नाथ मन्दिर में ब्रह्मचर्य स्वामी से नागपुर निवासी श्रीयुत् पं० बालकृष्ण शहाकार बी० ए० ने ब्रह्मचारी दीक्षा ग्रहण की उसी दिन से आप ही रात को शास्त्र सभा में शास्त्र बांच कर सुनाते हैं। आपके शाँत परिणाम, तथा शास्त्र का विषय समझाने की शैली पर फलटण की जैन जनता अतीव मुग्ध होकर आप को हमेशा के लिए यहां पर ही ठहरने के लिए हृदय से आग्रह कर रही है और यह उम्मेद कर रही है कि जिस धर्म प्रचार का बीज श्री महति सागर स्वामी ने यहाँ पर बोया और बाल ब्रह्मचारी हीराचन्द अमोलिक ने जिसका वृक्ष तैयार किया उसको आप पुष्ट करके जनता को अच्छे फल दिखायेंगे। आप का नाम "ब्र० धर्म सागर" रक्खा गया है।

अमरीका और विलायत से एक बड़े जैन डाक्टर की आमद

यह खबर अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सुनी जायगी कि डाक्टर बख्तावरसिंह जैन, एम० डी० (अमरीका) एल-आर-सी-पी ऐन्ड एस (एडनबर्ग) एल-एफ-पी-एन्ड एस (ग्लासगो) देहली में तशरीफ लाये हैं। जैन लोगों के लिये यह बड़ी खुशी की बात है कि आपने हम लोगों की दरख्वास्त पर सदर बाज़ार देहली में शफाखाना खोला है आप तपेदिक, आतशक, सुज़ाक, दमा, हैज़ा, नामर्दी, कोढ़ और बवासीर (खूनी या बादी) का इलाज बज़रिये पिचकारी (Injection) और शक्य प्रमेह (ज़ियाबेतस) का इलाज बगैर अदवियात करते हैं आपने एक लेडी नर्स को रक्खा हुआ है जिसकी ज़ेर निगरानी औरतों का इलाज होता है।

पता—जग्गीमल जैन, सदर बाजार, देहली

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	वीर सैनिक (कविता) ...	१५७	४	बार्शी में भा० दि० जैन परिषद् ...	१६६
२	जैन जाति के अ० के का० तथा उपाय	१५८	५	संसार दिग्दर्शन ...	१७७
३	सम्पादकीय टिप्पणियाँ ...	१६२			

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चाँदी के फूल भाव १।) तोला   सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)
हर अदद कम व वैसी जितने तौल चाँदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

हौदा ५००) से २०००)	एरावत २५०) से ३०००)	#बंधनवार १००) से ५००)
अम्बारी १०००) से ३०००)	इन्द्र एक ७६) से १५००)	समोसरनकीरचना२५०)से१०००)
पालकी १०००) से १५००)	#सिंहासन १००) से २०००)	#×पञ्चमेरु ३०) से २००)
टेबुल ३००) से ५००)	#चवर एक ७) से २५)	#अष्टमंगलद्रव्य १००) से ५००)
हाथी का साज ५००) से १०००)	#मुकुट १०) से २०)	#अष्टप्रातिहार्य १५०) से २५०)
घोड़े का साज २००) से ५००)	#चौकी ४५) से ३००)	#सोलहस्वपने १००) से ५००)
#बल्लम ५००) से १००)	समोसरन १०००) से ३०००)	#×भामण्डल ३०) से १००)
#सौठा ५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका माड़ाल) १०) से ५००)	#कलश ५०) से ५००)
#छतरी डंडी ३०) से ५०)		तखत चांदी के २००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण ।		
गंधकुटी २५००) से ४०००)	तेरह द्वीपकी रचनाका माड़ला) ५००)से२०००)	बारहदरी २५००) से ५०००)
वेदी ८००) से ४०००)		#पूजनके बरतन २००) से ५००)

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में ३~) सैकड़ा को आढ़त लेते हैं। मजदूर कारीगरों की नकाशी कामको तोला और सादे काम की ~] तोला देते हैं। ×इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं। # ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।
(२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel. Address—"Singhai" Benares.

दरिद्रता, दुर्बलता और चिन्ता व रोगों का कारण
अधिक सन्तान का होना ही है।

सुखी-जीवन

इस में वैज्ञानिक रीति पर यह बतलाया गया है कि किस प्रकार गर्भ रहता है, किन २ कारणों से गर्भ नहीं रहता। तथा बिना कारण अज्ञानतावश हज़ारों स्त्रियाँ क्यों बन्ध्या मानली जाती हैं। किस प्रकार गर्भ रह सकता है आदि २। जल्दी २ सन्तान होने से जहाँ स्त्री का रूप लावण्य नष्ट होता है वहाँ सन्तान दुर्बल और रोगी होती है। अधिक सन्तान का पालन पोषण भी समुचितरूप से नहीं किया जा सकता। रोगी माता पिता से आजन्म रोगी दुर्बलेन्द्रिय और दुःखी सन्तानों से देश में दुःख और दरिद्रता की नित्य वृद्धि होरही है। स्वराज्य प्राप्त देश भी अधिक जनसंख्या होजाने से दरिद्रता के शिकार हो रहे हैं। जैसे सन्तान-हीनता दुःख है वैसे ही अधिक सन्तान भी नरक ही है। सुखी जीवन में यूरोप के विद्वानों के बताए ऐसे यन्त्रों का वर्णन व काम में लाने की विधि लिखी गई है जिनके द्वारा गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए भी गर्भस्थिति रोकी जा सकती है और जब चाहे सन्तान हो सकती है। गर्भ रोकने की औषधि तथा किन २ औषधियों द्वारा हानि की सम्भावना रहती है इसका आयुर्वेद और यूनानी द्वारा वर्णन किया है। लगभग चालीस चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य २॥) मात्र है।

संसार के सब तेलों का राजा, अपूर्व सुगन्धि का भंडार

हिमाद्रि तैल

शिर दर्द, दिमाग़ की कमज़ोरी, आँखों की कमज़ोरी, आँखों के सामने पड़ते २ अन्धेरा होना, शिर चकराना, कम आयु में ही बालों का गिरना या पकना आदि को दूर करता है और बालों को बढ़ाता है।

हिमाद्रि तैल— शीतलता और सुगन्धि का ख़ज़ाना है।
हिमाद्रि तैल—वनस्पति से तैयार किया गया है।
हिमाद्रि तैल—विदेशी और विषैली वस्तुओं से रहित है।
हिमाद्रि तैल—शिर दर्द से हाहाकार करनेवालों को हँसाता है।
हिमाद्रि तैल—अधिक दिन लगाने से चश्मा लगाना भी छुड़ाता है।
हिमाद्रि तैल—ग्रीष्म शरद् ऋतु के लिये पृथक् २ औषधियों से बनाया जाता है।

एक बार लगाने से हमें पूरी आशा है आप इसके गुणों पर मोहित होजायँगे। यदि पसन्द न हो तो दाम वापिस। मूल्य १) शीशी, एक दर्जन १०) रुपया।

पता—ठाकुर स्वदेशी स्टोर, बिजनौर (यू० पी०)

Regd. No. A 1271

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाक्षिकपत्रः

हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। कागज, छपाई, सफ़ाई सब ही उत्तम रहता, है। पत्र की नीति स्पष्ट निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को

एक दम नया ग्रन्थ

'महावीर भगवान'

बिलकुल मुफ्त मिलेगा

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीन के साथ लिखी जारही है। यह ग्रन्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रक्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक-राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

मालिक जगदीश प्र० के प्रेस बिजनौर में छपा।

वर्ष २] १५ फरवरी सन् १९२५ [संख्या ८

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

सम्पादकः—
जैनधर्मभूषण ध० दि० ब्र० शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादकः—
श्री कामताप्रसाद जी

इस वर्ष वीर के ग्राहकों को उपहार में

'महावीर भगवान और उनका उपदेश'

बिलकुल मुफ्त मिलेगा ।

इस अमूल्य उत्तम ग्रन्थ में श्री वीर भगवान की जीवनी उनके उपदेश के साथ साथ जैन धर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन ग्रन्थों के प्रमाणी लेखों वरन संसार के बड़े बड़े अजैन विद्वानों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। यह ग्रन्थ बड़ी छान बीन के बाद सुन्दर व सरल भाषा में लिखा गया है। अपने ढंग का निराला ही ग्रन्थ है।

शीघ्र ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिये अन्यथा पछताना पड़ेगा।

—प्रकाशक

प्रकाशक-श्री० राजेन्द्र कुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०)

'वीर' का विशेषांक

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमने महावीर जयन्ति के उपलक्ष में रंग बिरंगे अनेक चित्रों से शुशोभित, अन्यान्य विषयों में विभूषित, एक मनोहर और अत्युत्तम उपयोगी विशेषांक निकालने का निश्चय किया है। जिस में श्रीयुत बा० चम्पतराय जी बैरिष्टर बा० ऋषभदासजी वकील, बा० हीरालालजी एम ए. गिरीशजी बी०ए० आदि बड़े २ जैन-अजैन आधुनिक लेखकों के लेख व कवितायें होंगी। यह अंक अपने ढंग का एक ही होगा।

परन्तु 'वीर' की आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए यह तब ही संभव है। जब कि हमारे ग्राहकगण व सर्व धर्म-हितैषी अपनी चचला लक्ष्मी से, तथा वीर की ग्राहक संख्या बढ़ा कर इस में सहायता करें।

इस अमूल्य विशेषांक के लिये केवल २००) की सहायता दरकार है। यदि कुछ सज्जन दस दस बीस-बीस रुपये इस धर्म कार्य में प्रदान कर पुण्योपार्जन करलें, तो यह विशेषांक वीर के ग्राहकों के समक्ष बिना मूल्य ही अर्पण किया जासकता है। आशा है पाठक-गण इस प्रार्थना पर ध्यान देकर अनुगृहित करेंगे।

--विनीत-प्रकाशक।

"वीर" के नियम।

१-यह पत्र पाक्षिक है और प्रत्येक अंग्रेज़ी मास की १ ली व १५ वीं तारीख को प्रकाशित होता है।

२-वार्षिक मूल्य उपहार तथा विशेषांक सहित २॥) है।

३-वीर के चन्दे का वर्ष दीपमालिका (कार्तिक मास अथवा महावीर जयन्ती (चैत्र मास) से शुरु होता है। दरमियान में बनने वाले ग्राहकों को पिछले प्रकाशित अंक जब से वह ग्राहक बनना चाहें वी० पी० का रुपया आने पर फौरन भेज दिये जाते हैं।

४-इस पत्र में मुख्यतया धार्मिक सामाजिक, एवं साहित्या सम्बन्धी विविध विषयों के लेख प्रकाशित होंगे। परस्पर विद्वेषोत्पादक लेखों को स्थान नहीं दिया जायगा।

५-किसी लेख के प्रकाश करने न करने तथा घटाने बढ़ाने का अधिकार सम्पादक को होगा। यदि लेखक चाहेंगे तो उनके अप्रकटनीय लेख पोस्टेज़ मिलने पर वापिस कर दिये जायेंगे।

६-लेख और परिवर्तन के पत्र निम्न पते पर आने चाहियें:--

श्रीयुत् कामताप्रसाद जैन, उपसम्पादक 'वीर' जसवन्तनगर (इटावा)

७-पत्र का मूल्य तथा विज्ञापन और प्रबन्धकार्यसम्बन्धी पत्र--व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए

श्रीयुत् राजेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक "वीर" बिजनौर (यू० पी०)

८-परिषद् सम्बन्धी पत्र व्यवहार इस पते पर करें:—

श्रीयुत् रतनलाल जी जैन वकील, मंत्री 'भा० दि० जैन परिषद्,' बिजनौर

ॐ

श्री महावीराय नमः

“क्षमा वीरस्य भूषणम्”

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

“यह धरणी रणभूमि, यहाँ लड़ना ही होगा। यदि न लड़े? पददलित पड़े सड़ना ही होगा॥
जय चाहो यदि लगातार बढ़ना ही होगा। वह देखो उद्देश्य शिखिर चढ़ना ही होगा॥
बनो वीर संसार में कायरका क्या काम है। क्षणभर भी भूलो नहीं यह जीवन संग्राम है॥”

—“विद्यालंकार”

वर्ष २ | बिजनौर, फाल्गुन कृष्णा ७ वीर सम्वत् २४५१ १५ फरवरी, सन् १९२५ | अङ्क ८

* ऐक्य *

एक धरा का अन्न जगत में जो खाते हैं।
एक जलद का नीर जगत में जो पाते हैं॥
एक पवन के वेगमध्य जो जन रहते हैं।
एक अग्नि का तीव्र तपन जो नित सहते हैं॥
एक चन्द्र की रुचिर चाँदनी में हैं रहते।
एक सूर्य के असहताप को नित हैं सहते॥
हाथ पाँव मुंह नाक सभी हैं एक तरह के।
हैं सब साधन एक किन्तु हम क्यों हैं बहके?
हाय! आज फिर भेद हुवा क्यों व्योम धरासा!
जग व्यापक यह धर्म हुवा क्यों पड़ा मरा सा?
जब तक प्रेम प्रवाह न हृदयों में बह जावे।
तब तक उन्नति पन्थ हमारे नयन न आवे॥

हे कृपासिन्धु ! जगबन्धु ! अब कृपा कीजिये करुण हो।
हों ऐक्य सूत्र के बन्ध में, उन्नति रवि फिर अरुण हो॥

—भुवनेन्द्र

न हैं वे भीरु महा हैं वीर

(लेखक—साहित्यरत्न श्री दरबारीलाल जैन न्यायतीर्थ सम्पादक—"परवार बन्धु")

कवि जी को उक्त समस्या की पूर्ति पर परिषद् के वार्षिकाधिवेशन में स्वर्णपदक दिया है। कविता निम्न प्रकार है:—

(१)

दुखित होते जो लख पर पीर।
न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥ टेक॥
निर्बलों का करते हैं त्राण।
विश्वका करते हैं कल्याण॥
सत्य पर दे देते हैं प्राण।
त्यागका जीवित यहीप्रमाण॥
हाथ में है न यदपि शमशीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर"॥

(२)

जगत में दुख का पारावार।
देख कर होते दुखित अपार॥
ज्ञान का सुदृढ़ पोत तैयार।
स्वयं करते, हो बेड़ा पार॥
देख सकते न पराई पीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

(३)

जगत में होता है संग्राम।
और कोई न यहां है काम॥
सत्य तो होता है बदनाम।
स्वार्थसे उसका काम तमाम॥
देख यों पाप न धरते धीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥

(४)

रहे सिरपर विपदा या रोग।
या कि हो दुष्टों का संयोग॥
गालियां बरसावें वे लोग।
समझते निज पापोंका भोग॥
सहन करते होते न अधीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

(५)

स्वार्थमय है सारा संसार।
बिना कारण वैरी तैयार॥
अकारण ही उनको दें मार।
तदपि वे कभी न करें प्रहार॥
भले ही हो जर्जरित शरीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

(६)

नहीं हो चिथड़ा भी तन में।
विघ्न हो शतशत भोजनमें॥
भले ही रहना हो बन में।
न चिन्ता है कुछ भी मनमें॥
न चाहें चीर खीर प्राचीर।
न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥

(७)

शत्रुता पर न कभी है ध्यान।
शत्रुमित्रों को एक समान॥
मानकर, जगत बन्धुमय जान।
उठाते कभी न तीर कमान॥
पहिनते स्वयं हैं लोह जंजीर।
न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥

(८)

डरें जो कभी न मरने से।
जगत की विपदा हरने से॥
सत्य पथ बीच विचरने से।
डरें तो दुष्कृत करने से॥
पहिनते शमसंयम का चीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

(९)

जगत में फैला है विद्रोह।
इसी से छोड़ जगतका मोह॥
दूर कर झूठा ऊहापोह।
बनाली अन्तस्तल में खोह॥
वही है जिनकी शान्ति कुटीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

(१०)

देखने में लगते कंगाल।
गुणों से हैं पर मालामाल॥
प्रशंसाका भी जिन्हें न ख्याल।
बने हैं जो गुदड़ी के लाल॥
भीत हैं देख मदन का तीर।
न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥

(११)

हृदय में जिन के जरा न क्रोध।
सदा जगता रहता सद्बोध॥
न जिनकी उपकृति का परिबोध।
कर सके देव भी न पथरोध॥
बने हैं यद्यपि क्षीण शरीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर"

(१२)

देखकर विश्व व्यापि सन्ताप।
सदा सर्वत्र पाप की छाप।
सभी के अन्तस्तल में पाप।
निबल को खाजाना चुपचाप॥
नयन से सदा बहाते नीर।
"न हैं वे भीरु महा हैं वीर॥"

हृदय की परख

(गल्प)

(१)

सरसबाला ने जब प्रफुल्ल के हाथों में अपना एक और गहना ला रख दिया तो प्रफुल्ल की आंखें डबडबा आई और वह भरी हुई आवाज़ में कहने लगा:-'सरसी, ऐसे कैसे कब तक काम चलेगा?'

इसके उत्तर में सरसो ने ढाढस बंधाते हुए कहा-"आप इस बात की चिन्ता में अपने स्वास्थ्य को खराब न करें। सब कुछ सहा जायगा। शुभोदय से शुभदिन भी शीघ्र आवेंगे।"

प्रफुल्ल एक प्रतिष्ठित घराने के सुपुत्र हैं। वह अपने पिता के अकेले लाड़ले पुत्र थे। इस लिए लाड़ प्यार में प्रफुल्ल की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध नहीं किया गया। इन के पिता को ज़मीन्दारी की आमद से २००) रु० मासिक मिल जाते थे। और जीवन आनन्द प्रमोद में व्यतीत होता था। प्रफुल्ल भी अपने शिक्षा प्राप्तिके अमूल्य समय को यार दोस्तों की चौकड़ी में व्यर्थ व्यतीत किया करते थे। इतने ही में होश संभालते २ प्रफुल्ल का विवाह एक अबोध सुशीला सुंदर कन्या से कर दिया गया। बस फिर तो अधिकतर घर ही में रहने लगे, परन्तु यार दोस्त आदि का पिण्ड अब भी नहीं छोड़ते थे। इसलिए घर की बैठक में ही यार दोस्तों का जमघट रहता था। तो भी प्रफुल्ल 'पान' के ही बहाने से घर हो आया करते थे। सारांशतः यौवन काल के आने के पहिले ही से प्रफुल्ल उस के प्रमोद कानन में रंगरलियाँ करने लगे थे। सुखकाल जाते मालूम नहीं पड़ता। देखते २ प्रफुल्ल के माता पिता अपनी जीवन यात्रा पूरी कर स्वर्गलोक को प्रयाण कर गए। प्रफुल्ल भी अब पूर्व जैसा प्रफुल्ल वदन प्रफुल्ल नहीं है। उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यद्यपि एक पुत्ररत्न दम्पति का मन रंजायमान करता उनके घर का प्रकाश बन रहा है।

पिता के स्वर्गप्रयान करते ही प्रफुल्ल के खर्च बढ़ गए। यारदोस्त और हुक्कामों को गार्डनपार्टियां रोज़ दी जाने लगीं। फल यह हुआ कि धन प्राप्ति का एक मात्र स्रोत ज़मीन्दारी खिसकने लगी। कुछ दिनों तक २००) की मासिक आमदनी रही। फिर वही घटते घटते १०) मासिक रह गई। और फिर यह नौबत पहुंची कि प्रफुल्ल को अपनी पत्नी सरसबाला के गहने बेच २ उदर पूर्ति करनी पड़ी। परन्तु सुशीला सरसी तनिक भी अपनी स्वभाव प्राप्त दृढ़ता और पतिप्रेम तथा धर्म विश्वास से विचलित नहीं हुई।

प्रफुल्ल की इस शोचनीय दशा में भी वह प्रसन्नमुख रहती है और अपने पति को मानसिक दुःख यथाशक्य होने ही नहीं देती है। प्रफुल्ल अपनी इस शोचनीय दशा में भी अपने यार दोस्तों पर उसे प्रगट नहीं कर सके हैं। बड़े घराने के लड़के हैं।

प्रकट करें तो कैसे करें ! हिम्मत करते हैं परन्तु मुंह में शब्द ही नहीं आते ! अब भी बैठक में बराबर चाय पानी उड़ती है । प्रफुल्ल को यदि कभी झुंझलाहट भी आजाय तो सरसी उसे अपने मीठे २ वचनों से शान्त कर देती है । और झट गहना उतार कर हाथ पर रख देती है । तथा पति को विश्वास दिला देती है कि 'हमारे दिन जल्दी फिरेंगे' ।

(२)

दो मास व्यतीत होगए, परन्तु प्रफुल्ल की दशा न सुधरी ! न उसका बचपन का बिगड़ा स्वास्थ्य ही संभला ! और न किसी मित्र पर वह अपनी इस शोचनीय दशा को व्यक्त कर सका ! कई स्थानों पर किसी नौकरी की तलाश में वह गया भी, पर उस की हिम्मत नौकरी करने की न पड़ी ! लाड़चाव में पालापोशा गया और आमोद-प्रमोद में दिन व्यतीत किए-हाय, आज वह कैसे दूसरे की पराधीनता में रहे ! इसी सोच में वह घुल रहा है । उसे कोई उपाय नहीं सूझता !

आज भी वह अपनी पत्नी का एक मामूली गहना रख कर कहीं से १०) रु० लाया है । बैठक में उसे उसके पुराने मित्र विभूति बैठे दिखाई दिए। विभूति का मुख म्लान है और उन की दशा शोचनीय मालूम पड़ती है । यह मानो पहिले ही से कह रही है कि विभूति के विभूतिवाले हरे भरे दिन गए ! प्रफुल्ल ने बिछुड़े मित्र को पा प्रफुल्लता से पूछाः- , मित्र, बहुत दिनों में दर्शन दिए ! कहिए क्या हाल चाल हैं ! कुशल तो है ?"

विभूति- "बेशक मित्र मैं कार्यवश सेवा में हाजिर न हो सका । और जो दशा इस समय मेरी है वह दुःखभरी है। भैया, तीन महीने हुए तब मुझे पहिले स्थान से छुट्टी मिल गई । तब से बराबर किसी स्थान पर नियुक्त होने की खोज में भटक रहा हूं । परन्तु आजतक कहीं ठिकाना नहीं लगा है । इस बीच में परिवार के भरणपोषण और दवा दारू में जो कुछ बचाया था वह सब खर्च करडाला, अब घर में मुश्किल से दो रोज़ के लिए खाने को शेष है उधर सिर पर मकान का भाड़ा चढ़ रहा है । तथा बाज़ार के लोगों के मामूली कर्ज़ होरहे हैं । ऐसी अवस्था में भैय्या, यदि तुमने आज सहायता न की तो हमारा ठिकाना कहीं नहीं लगेगा ; छोटे २ बच्चों पर दयाकर भैय्या आज हमें १५) उधार दे दो तो काम चले ! फिर कहीं शायद नियुक्ति हो जायगी ! तब तक के लिए मेरी आबरू इन १५) मिलने से बच जायगी !

भैय्या, मैं पाँव………"

प्रफुल्ल आसमंजस में पड़े बुत सरीखे खड़ेथे । मित्र की दुःख पूर्ण गाथा में वह अपनी दशा भूल गए । जेब में से १०) रु० का नोट निकाल कर मित्र के हाथ पर रख दिया । परन्तु उस से भी उसकी संतुष्टि नहीं हुई । भीतर से सरसी ने बुलाकर प्रफुल्ल के हाथ में एक गहना और रख दिया । प्रफुल्ल ने रुपए लाकर मित्र को दिए और शेष अपने खर्च को रक्खे ।

(३)

शाम से सुबह और कृष्ण से शुक्ल पक्ष होते प्रफुल्ल रोज़ देखते, परन्तु अपने दिनों का फिरना वह और सरसी आशा भरे नेत्रों से ही देखते ! सरसी सदैव शुद्ध हृदय से अपने शुभ दिनों के लिए और पति के सुख के वास्ते भावना भाया

करती। आज मानों उसकी भावना फलवती हो गई है। प्रफुल्ल ने अखबार से मुंह उठा कर मुस्कराते हुए कहा:—

"सरसी! हमारे पुराने मित्र बैरिष्टर बोस साहबने अपनी ज़िमीदारी की संभाल के लिए एक कारिन्दे की माँग निकाली है और वेतन ५०) रु० मासिक लिखा है। मुझे विश्वास है यदि मैं उनसे कहूंगा तो वह मुझे नियुक्त करलेंगे। कहो, क्या कहती हो?"

सरसी—"बात तो ठीक है। मैं तो कहती ही थी कि हमारे दिन ज़रूर फिरेंगे और शुभदिन आयेंगे! देखिये वही हुआ न आज?"

प्रफुल्ल झट अपने पुराने मित्र के पास पहुंचे। खूब आवभगत हुई। परन्तु नियुक्ति की बात पर बैरिष्टर मित्र को विश्वास नहीं! वह हँसी ही समझते रहे! ज्यों त्यों कर विश्वास दिलाया। तिस पर उन्होंने गम्भीरता पूर्वक प्रफुल्ल की इच्छा को स्वीकार कर लिया!

प्रफुल्ल खुशी खुशी घर लौटे। आज बैठक में फिर विभूति बैठे मिले। शिष्टाचार की बातें हो चुकने पर विभूति ने आज फिर एक मांग पेशकरदी और वह यह थी कि प्रफुल्ल विभूति की सिफारिश बोस बाबू से कर दें जिससे वह उनको कारिन्दा नियुक्त करलें। इस पर प्रफुल्ल बड़े मर्माहत हुए और दुःखी हृदय हो उन्होंने अपनी शोचनीय दशा का वृत्तान्त कह सुनाया! पर विभूति को उस पर विश्वास न हुआ। हताश हो वह प्रस्थान कर गया!

(४)

दूसरे दिवस प्रफुल्ल अपने मित्र के बंगले पर अपना कार्य समझने पहुंचे! बरान्डा में पैर रखते ही भीतर से विभूति निकला! विभूति का मुख हल्दी जैसा पीला था! फिर क्या था, बिचारे को देख कर वह आंख बचा कर जाने लगा। परन्तु प्रफुल्ल ने उसे रोक लिया! फिर क्या था, बिचारे असहाय का दुखी हृदय तलमला गया। वह अपने दुःखा वेश में प्रफुल्ल पर दोषारोपण करने लगा। उसकी सर्द आहें खाली न गईं। उस के अन्तिम शब्द प्रफुल्ल भुला न सके! 'मैं नहीं जानता था, प्रफुल्ल! कि तुम मेरे मित्र होकर मेरे छोटे २ बच्चों पर भी तरस नहीं लाओगे और मेरा ही स्थान हड़प जाओगे" विभूति के यह शब्द उन के साथ में मंडरा रहे थे। विभूति अपने घर चला आया। प्रफुल्ल अपने मित्र के पास भीतर घुस गया!

(५)

सरसी अपने पतिदेव के लौटने की प्रतीक्षा में बैठी हुई थी। उत्सुकतासे उसके नेत्र द्वारकी ओर लगे हुए थे। पैरोंकी आहटपाते ही उसके नेत्र पतिदेव के मुख पर पड़े। वहां प्रसन्नता छिटकरही थी उसे विश्वास होगया कि पतिदेव का मनोरथ सिद्ध हुआ है। उसने नेत्रों से ही अपना हर्षभाव प्रकट किया? प्रफुल्ल ने पहिले ही विभूतिसे भेंट होनेका वृत्तान्त कह सुनाया। उसके सुनते ही सरसी का हृदय पिघल गया। उसका एकटक यही प्रश्न था कि विभूति के दुःखी हृदय को आपने कैसे सान्त्वना दी,? इसपर प्रफुल्ल ने अपने मित्रसे जो वार्तालाप हुई उसे कहा:—

मेरे मित्र ने मेरी इच्छा के अनुरूप सब कार्य बतलाना प्रारम्भ किया। मैं सब सुनतारहा। अन्त में मैंनेकहा कि आपका कार्य मैं सहर्ष करता परन्तु

मैं तो यह सब मात्र मनोविनोद के अर्थ परिहासरूप कर रहा था। अब आप यह पद मेरे मित्र विभूति को प्रदान कीजिए। इस पर मेरे मित्र ने बड़ा हर्ष प्रकट किया और विभूति को नियुक्त करनेका वचन दे दिया।

यह सुनते ही सरसी के नेत्रों में हर्ष के आंसू झलक आए और वह गद् गद् हो अपने पति के गुणों में अनुरक्त हो गई। अपने को धन्य समझती हुई विचारने लगी 'यदि भारत में आज पतिदेव सदृश अपने पड़ोसियों पर करुणा और अनुकम्पा करनेवाले स्वार्थत्यागी नररत्न सर्वत्र हों तो गरीब भारतवासियों के दुःखों का अन्त शीघ्र हो जावे। और वह सहयोग पूर्वक उन्नतपथ पर अग्रसर हो सकें। भगवन्! मेरी इस सद्भावना की शीघ्र पूर्ति हो।*

*बंगला का अनुवादित रूपान्तर।

कवि सुन्दर और उनकी रचना

हिन्दी जैन साहित्यको प्रकाश में लाने के लिए जैन समाज ने आजतक कोई भी संगठित ढंगसे प्रयत्न नहीं किए हैं। जिन प्रकाशकों ने व्यापारिक दृष्टिसे प्रख्यात कवियों की इनी गिनी रचनायें प्रकट की हैं,उन्होंने समयका प्रकाश देखपाया है। शेष अब भी जैन भण्डारों में विराजित अपनी प्रतिभाको बनाए हुएहैं अथवा मूषकों,आदिके खाद्य पदार्थ बन रही हैं। अतएव जैन साहित्यके उद्धार के लिए एक "हिन्दी जैन समिति" की स्थापना वाञ्छनीय है। विश्वास किया जाताहै कि परिषद् के वार्षाधिवेशन में इस आवश्यकता की पूर्ति हो गई होगी, और एक उत्साही कर्तव्यरत मन्त्री के आधीन यह समिति हिन्दी जैन साहित्योन्नति के कार्य विशदरूप से करेगी।

अभी हालमें जसवन्तनगर के एक संघई महाशय के शास्त्र संग्रह देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। इसमें मुझे एक गुटके में कवि सुन्दर नामक जैनकविकी कतिपय रचनायें देखनेको मिलीं इसमें खास विशेषता यह है कि वह स्वयं कवि के हाथ की लिखी हुई है। श्रीयुत् पं०नाथूरामजी प्रेमी ने अपनी "दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रन्थ" नामक पुस्तकके पृष्ठ ५५ पर एक सुन्दरदास नामक कविका उल्लेख कियाहै और उनकीदो रचनायें "सुन्दर सतसई" तथा 'सुन्दर विलास" बतलाई हैं। हम समझते हैं कि इन्हीं कवि की उक्त गुटके में रचनायें हैं। कवि ने कविताओं के नीचे सिर्फ इतना ही परिचय लिखा है: "लि० सुन्दर आशाढ़ वदि २ संम्वत् १६७८। मल्लपुर मध्ये। इससे कवि का समय और उनका स्थान कहीं बागड़ प्रान्त में प्रतीत होता है, क्योंकि यह गुटका वहीं के भ०गुणचन्द्र ने किसी अपने शिष्यके पढ़नार्थ दिया था। मल्लपुर भी उसी तरफ कहीं होना चाहिये। कवि की रचना निम्न प्रकार है:—

१—सिधिराग नट नारायण ?

दया विनि करणी सब विकार । भाइ अहिंसा मन वच क्रम करि तीन भुवन मैं सार ॥टेक॥
भ्रमत भ्रमत संसारिकष्टि नरकौ भव पायौं । लह्यौ सुगेह सुथान पुण्यवि ऊंचै कुलि आयौ ॥
मदन सरिस देही लही होत न रोग लगार । समझतु हैं चेते नहीं पणि षोवत जनम गंवार ॥
जलमै करि अस्नान समलि, तनु मैल उतारै । छापा तिलक बणाइ अवर गलमाला धारैं ॥
तीरथ बहु करतौ फिरैं गिणौ न रैणि सवार । करुणातैं परचौ नहीं तौ क्यौं पावै भवपार ॥
कहा धरै सिरि जटा कहा निति सीस मुंडाये । कहा धरै मुखि मौनि कहा तनु भस्म चढ़ाये ॥
पंच अगनि साधैं सदा धूम सहित बहु बार । क्रिया हेतु जाणौ नहीं तौ क्यौं सिवलहै गंवार ॥
प्रस्थर की करि नाव पारदधि उतर्यो चाहै । काग उडावण काजि मूढ़ चिंतामणि वाहैं ॥
वैसि छाह बादल तणी रचै धूम के धाम । करि क्रिपाण सेज्या रमै ते क्यौं पावै विसराम ॥
अगनि पुञ्ज मै पैसि कहत वसुधारय चीतौं । कनक मेर मुसि आणि गेहि गुपता करि राषौं ॥
बधत जीव संकै नहीं मन वंछित सुखसार । कूं दै सूर छिपावहि ते आह···लि मानतहार ॥
वालू तैं भरि घाणि तेलु काढण कौं पेलैं । गिर परि कवल उगाइ दन्व कौं जुवा खेलैं ॥
रोपि रूप कंचणि तणौं आव लैंण की हौंस । आपण हत जाणै नहीं ते देत दई को दोस ॥
सुपिनै संपतिपाइ बहुरि सो थिरकरि जाणे । उपवन सीचणकाजि कुम्भ काचौं भरि आणैं ॥
जीव दया पालैं नहीं चाहे सु सुख अपार । वावैं बीज बबूलकौं पणिसो क्यौं फलति अनार ॥
सायालै तटि नदी सैल सिदि रह्यौ उन्हालैं । वरखारिति तरु तलै अधिक तपु कीये निसालैं ॥
सहत परीसा बीसद्वैं छहरिति वारा मास । करतुकष्ट विरथासवै पाणिउपसम गुणनाहि तास ॥
सत्य वचन निति वंदै अलिय मुखि केद न भाषै । सम किततैं अति प्रीति पंच इंद्री दृढ़ राषै ॥
निति प्रति चितवैं आतमा करैं न जड़ की आस । तिनकौं कवि सुन्दर कहै मुकतिपुरी हाइवास ॥

इस कविता के शब्द संठन से हमें विश्वास हो जाता है कि कवि बागड़ प्रान्त का निवासी था। कविता की सरलता और उसमें लोकोक्तियों का समागम जिस चतुरता से इसमें किया गया है वह कवि की कविता का परिचायक है। मालूम पड़ता है उस समय बागड़प्रान्त के साधुओं में भी शिथिलता का प्रवेश हो गयाथा। उसही को लक्ष्य कर कवि अन्तिम से पहिले पद्य में ऐसे साधुओं पर कटाक्ष करता है। इस कविता के हिन्दी सा-साहित्य के विकाश क्रम पर प्रकाश पड़ता प्रतीत होता है। उस समय की लोकोक्तियां इस विषय में द्रष्टव्य हैं। उस समय से जैन कवियों में भक्ति मार्ग की बाहुल्यता घर करती गई थी, इस ही व्याख्या के पुष्टिकारक मानो कविके निम्न दो पद्य हैं। परन्तु इनमें जैन सिद्धान्त का ध्यान रक्खा गया है। उपरान्त के जैन कवियों की भाँति जैन

सिद्धान्त के अकर्तत्ववाद को समय की लहर के साथ नहीं भुलाया गया है । कवितायें इस प्रकार हैं:—

२. राग काफी ।

जीया मेरे छाडि विषय रस ज्यौं सुख पावे ।
सब ही विकार तजि जिण गुण गावें ।। टेक ।।
घरी घरी पल पल जिण गुण गावै ।
ताते चतुरगति बहुरि न आवे ।। रेजीया०।।१।।
जोमर निज आतम चितु लावै ।
सुन्दर कहत अचल पद पावै ।। रेजीया०।।२।।

इस में जैनसिद्धान्त के भक्ति वाद का किस प्रकार ढंग वर्णित किया है यह दर्शनीय है। हमें किसी से आकांक्षा-वाञ्छा प्रगट नहीं करना है । जिन भगवान की मूर्ति का सहारा लेकर आत्मा के स्वभाविक गुण में तन्मय हो जाना है । यही बात इस छोटे से मनोहर राग में भरी पड़ी है। दूसरा राग भी इस ही ढंग का यह है:—

३. राग धमालि ।

जा दिन ते प्रभु औतरे बरप दरबा अपार ।
नीर रहित जैसे कमलिनी जैसे गरभ मैं नेमिकुमार ।
चरणा चितु लावों जिणतणाजी जैसे पावों सुख अपार ।। चरण० ।। १ ।।
जनमभयौ श्री नेमि कौ मिलया अमर अपार ।
मेर शिषर परि कनक कलस भरि सबद करत जै जैकार।। चरण० ।। २ ।।
एम जाणि तपु आचरयौ दुख अनंत संसारि ।
पशुव देषि रथ फेरा जब जाइ चढ़या गिरनारि ।। चरण० ।। ३ ।।
रहित भये संसार थे प्रभु, हिरदै धरि करि ध्यान ।
ध्यान धरौ चिद्रूप थे जब उपनेंद्रै केवल ज्ञान ।। चरण० ।। ४ ।।
जहां रोग वियोग न संचरैं मन वंछित फल होइ ।
कर जोडे सुन्दर भणै स्वामी तुम सम अवर न कोइ ।। चरण० ।। ५ ।।

यहां भी आदर्श पुरुष परम पूज्य तीर्थंकर के शुद्धावस्था तक पहुंचने की क्रम व्यवस्था का वर्णन है और उसके गुण गान द्वारा मन को संसार से विरक्त थिर रक्खा गया है। यहां न किसी से प्रार्थना है और न वांछा है । निज ध्येय का ध्यान रक्खा गया है । इस मर्यादित भक्तिरस का रूप उपरान्त के जैन कवियों ने कितना विकृत किया है यह केवल इस एक पद से ही प्रगट है कि "प्रभु मेरी करनी न चितारो- मोहि अपनो जान उबारो ।" ओहो कवि की कविता उच्चभाव को लिए हुए सरल प्रतीत होती है । उत्तम हो इन के अन्य ग्रंथ कोई ग्रंथ प्रकाशक कहीं से प्राप्त कर प्रगट करे। इति शम् ।

—ऊ० स०

दश-दोहे

१—वैर विरोध जो ना करे, रहे कलह से दूर ।
वही पुरुष सँसार में, पण्डित हैं भर पूर ॥
२—अटल रहे जो धर्म्म पर, तजकर भी निज प्राण ।
नाश मान सँसार में, सफल जन्म तेही जान ॥
३—विष नहीं जगमें क्रोध सम, सुधा न दया समान ।
अरि नहीं अभिमान सम, उद्यम सम हित आन ॥
४—कपटाई सम भय नहीं, लालच सम दुःख खेद ।
सुख नहीं सत सँतोष सम, जान लेहु यह भेद ॥
५—तजें मित्र कृतघ्नी को, यत्न शक्ति मुनिपाप ।
रीते सरवर हँस तजें, क्रोधी बुद्धि निज आप ॥
६—लाभ न समकित लाभ सम, शुभ कारज सम धर्म्म ।
मोह समान बँधन नहीं, हिंसा सम दुष्कर्म्म ॥
७—शिष्य पुत्र सम जानिये, मुनी देव अनुसार ।
शत्रु समान धन हीन को, मूर्ख ही पशु विचार ॥
८—शान्त स्वभावी विनयशील, कहेजात विद्वान ।
शील हीन क्रोधी पुरुष, अपयश लहे महान ॥
६—जगत रूप दावाग्नि में, सन्तप्त हैं जोलोग ।
उनके हित हैं धर्म्म ही, एक शरण के योग ॥
१०—लिप्त मान सँसार में, जीवन क्षण भँगुर ।
ईश नाम पल मात्र को, करो न मनसे दूर ॥

—मिश्रीलाल जैन

कांच की शीशियां

स्वदेशी ! सस्ती !! बढ़िया !!!

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड ब्रादर्स, महावीर भवन, बिजनौर

महिला महिमा ।

१-महिलाओं का कर्तव्य ।

प्राचीन भारत में महिलाओं की कितनी उच्च और उत्तरदायित्वपूर्ण महत्व शाली दशा रह चुकी है, इसका अनुभव पाठकों को गत लेखों से अवश्य हुआ होगा। वस्तुतः जिस दिन महिलाओं की दशा शोचनीय अवस्था को प्राप्त हुई उसी दिन से भारत का पतन प्रारम्भ हुआ है। अतएव आज भारतोद्धारके लिये प्रत्येक जाति की महिलाओं की दशा सम्माननीय अवस्था को पहुंचाना हमारा परम धर्म है। आज महिलाओं में किस प्रकार समुचित शिक्षा प्रचार की आवश्यकता है, इस पर हमें ध्यान देना आवश्यक है। साथ ही महिलायें भी अपना कर्तव्य भुला नहीं सकतीं, परन्तु आवश्यकता है कि यह संदेश उनतक पहुंचाया जावे। महिलाओं के अशिक्षित होने से स्वयं पुरुष वर्ग को महान् कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आजकल भारत में महिला शिक्षकों के अभाव के कारण प्रारम्भिक शिक्षा के प्रचार में कितनी असुविधा अनुभव करने पड़ती है यह प्रत्यक्ष है। बालकों की प्रारंभिक देख रेख और शिक्षा जिस खूबी से महिलाएं प्रदान कर सकती हैं वह पुरुष के लिये सहज नहीं है। यह मानी हुई बात है कि जितनी सहन शीलता और संतोष की मात्रा महिलाओं में पाई जाती है उतनी पुरुषों में नहीं। तिस पर अन्य देशों के अनुभव से यह प्रमाणित है कि प्रारंभिक शिक्षा का प्रभाव विशेष फल दायक उस अवस्था में रहा है जब शिक्षकों में महिलाओं की संख्या अधिक रही है। परन्तु भारत में और खास कर जैन समाज में इस उद्देश्य की सिद्धि में परदे की प्रथा बाधक है। परदे को किस सीमा तक इस समय रखने की आवश्यकता है, यह बात हम अपने किसी गत लेख में बतला चुके हैं। कम से कम पूज्य विधवा बहिनों पर यह इस तरह लागू न होना चाहिये कि वह अपने जीवन कल्याण के लिये ज्ञान संचय करने को किसी शिक्षाश्रम में भी नहीं जा सकें। यदि हमारी यह पूज्य बहिनें ज्ञान संपन्न हो भारत के भावी सन्तति को ज्ञानदान दें तो हमें विश्वास है कि देशोद्धार होने में देर न लगे। और म०गांधी का संदेश प्रत्येक घर में कार्य रूप में परिणत होते दिखाई दे। प्रत्येक भारतीय गृह में चरखे की मधुर गुञ्जार भारत के भावी भविष्य के सलौने दृश्य की प्रतिभासक हो। क्या जाति हितैषी और देश प्रेमी इस ओर ध्यान देंगे ?

—उ० सं०

२-महिलाओं की विशेषता ।

विदेशों के विज्ञानवेत्ता प्रत्येक विषय की खोज जिस पूर्णता से करते हैं वह सर्व प्रकट है। उनके एक अनुभव से ज्ञात हुआ है कि महिलाओं की बोल चाल में कुछ ऐसे शब्द रहते हैं जो पुरुषों के वर्तालाप में नहीं मिलते हैं। दूसरा अनुभव प्रत्येक जाति (पुरुष स्त्री) के २५ विद्यार्थियों से १००

विविध शब्द लिखवा कर किया गया था। इस अनुभव का विवेचन करते प्रो० जैस्ट्रो कहते हैं कि महिलाविद्यार्थियों ने इनके लिखने में कम समय लिया था। उनमें विचार की मात्रा अधिक थी। उन्होंने जो शब्द लिखे उनमें २९.८ प्रतिशत पुरुष संज्ञावाची थे और २०.८ प्रतिशत स्त्री संज्ञावाची थे। प्रो० का निष्कर्ष है कि महिलाओं में भाषाज्ञान की मात्रा पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। वे पुरुषों से जल्दी सीख सकती हैं—जल्दी सुन सकती हैं और जल्दी उत्तर दे सकती हैं।

रिपोर्ट भा० दि० परिषद्

वार्षा अधिवेशन में स्वीकृत

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् की स्थापना ठीक दो वर्ष हुए भारत वर्ष की राजधानी देहली जैन महोत्सव पर हुई थी। यह परिषद् इस लिये स्थापन हुई है कि जैन नवयुवकों के हृदय में उत्साह उत्पन्न करे, कि उस जैन समाज की उन्नति में जिसमें उनका पालन पोषण हुआ है। उन्नति करें और दिगम्बर जैनधर्म का सर्व साधारण में प्रचार करें। उपर्युक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए परिषद् के कार्यकर्त्ता धैर्य पूर्वक कार्य कर रहे हैं। १५ मास हुए गत महावीर निर्वाणोत्सव पर परिषद् के मुख पत्र 'वीर' का प्रादुर्भाव हुआ। इस पत्र के जन्म लेते ही जैनधर्म दिवाकर जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी के सम्पादकत्व व श्रीयुत कामताप्रशाद के उपसम्पादकत्व में जैन समाज में जीवन शक्ति का प्रचार करना प्रारंभ किया। जैन समाज की अवनत दशा, संख्या ह्रास पर जैन समाज का ध्यान आकर्षण किया उस के साहित्य पर प्रकाश डाला और अपने को जैन समाज के रोग परस्पर कलह, द्वेषउत्पादक लेखों से रक्षित रक्खा।

यह परिषद् जैन जनता को कितना प्रिय होता जा रहा है। इस से पता लगता है कि दस मास में इस के तीन अधिवेशन हो गये। प्रथम अधिवेशन गत अप्रेल मास में मुजफ्फरनगर में हुआ। दूसरा नैमित्तिक अधिवेशन गत नवम्बर मास में इटावा में हुआ। परिषद् ने अपने प्रथम अधिवेशन में ही कुशल वैद्य की तरह जैन समाज की अवनत दशा रूपी रोग की परीक्षा करके कितनीही औषधियाँ प्रस्ताव रूप में जैन समाज को बतलाई, जिन को प्रयोग में लाने पर जैन समाज का उत्थान व जैन धर्म प्रचार निर्भर है। अजैन जनता में जैन धर्म फैलाने के लिए परिषद् ने जैन धर्म की प्राचीनता व सिद्धान्त को दर्शाने वाली एक ऐसी पुस्तक के तय्यार करने की योजना की कि जिस से अजैन पुरुषों को जैन धर्म का ज्ञान हो और वे पवित्र जैन धर्म को ग्रहण कर सकें। हर्षका विषय है कि ऐसी पुस्तक को पूज्य ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी ने करीब करीब तय्यार कर लिया है। और वह अनेक विद्वानों द्वारा संशोधित होकर भिन्न २ भाषाओं में प्रकाशित की जावेगी।

जैन समाज की संख्या के वेग के साथ ह्रास को देख कर परिषद्‌ने एक ऐसी कमेटी की योजना की है जो ह्रास के कारणों का अनुसंधान करे और अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करे। अभी तक उपर्युक्त कमेटी अपना कार्य समाप्त नहीं कर सकी है आशा है कि शीघ्र अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करेगी।

इस बात को ध्यान में रखकर कि जैन धर्म के गौरव व प्राचीनता को सर्व साधारण स्वीकार नहीं करते एक ऐतिहासिक विभाग स्थापित किया गया है। जो जैनधर्म की प्राचीनता सार्व भौमिकता ऐतिहासिक तौर पर सिद्ध करेगा और यह बतलावेगा कि इस धर्म के अनुयायी चंद्रगुप्त आदि अनेक सम्राट् राजा व महाराजा रहे हैं। और यह भारतका राष्ट्र धर्म रहा है। इस के मंत्री बाबू हीरालाल एम-ए० तत्वान्वेषी (Research Scholer) हैं आप ऐतिहासिक अनुसंधान कर रहे हैं। अधिक तेजी से कार्य धनाभाव के कारण न हो सका।

जैन धर्मानुयायियों को धर्म पर दृढ़ करने व अजैन जनता में जैन धर्म प्रचार करने के हेतु उपदेशक विभाग खोला गया है और इसके मंत्री ला० ज्योति प्रसाद प्रेमी हैं। इस का कार्य योग्य उपदेशक न मिलने व धनाभाव के कारण देर में प्रारम्भ हुआ है। उपदेशक रक्खे गये हैं जिन का दौरा शुरू होने वाला है।

तीर्थ सम्बन्धी दिगम्बर श्वेताम्बर झगड़ों में धन व पुरुषार्थ की महान हानि समझकर परिषद्‌ने परस्पर निवटारे का प्रस्ताव पास किया था प्रस्तावानुसार एक डिपुटेशन श्रीयुत् नेमीशरण M. L. C. सहमंत्री, श्रीयुत रतनलाल मंत्री, व बा० कीर्ति प्रसाद असहयोगी श्वेताम्बर वकील का महात्मा गाँधी के पास गया था इस कार्य में प्रयत्न किया गया। किन्तु अभीतक कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई।

इन के अतिरिक्त कई प्रस्ताव, शुद्ध स्वदेशी वस्त्र पहनने तथा रेशमी व मिलके बने कपड़े जिन के कारण हिंसा होती है, त्यागने तथा विवाहादि में कमव्यय करने आदि के लिए नियम (दस्तूरुल अमल) तय्यार करने, बालविवाह बन्द करने के लिए किये गये हैं। जिनके कारण जैन जनता का ध्यान आकर्षित हो रहा है। और उन पर अमली कार्रवाई होने लगी है।

इस बात को ध्यान में रखकर कि जैन समाज में कुछ जातियों की मनुष्य गणना बहुत थोड़ी रह गयी है। और उन में उचित वर कन्या नहीं मिलते जिसके कारण इन जातियों का ह्रास हो रहा है। परिषद्‌ ने देशी मारवाड़ी दक्षिणी जैन अग्रवालों में पारस्परिक विवाह करने तथा उन जातियों में जो किसी कारण से पृथक हो गयी हैं, पारस्परिक विवाह करने का प्रस्ताव पास किया है।

एकता बोर्ड (Unity Board) में किसी जैन को न पाकर प्रस्ताव किया था कि एक जैन भी रक्खा जावे जिसके सम्बन्ध में पत्र व्यवहार महात्मा गाँधी से हो रहा है।

बाबू बलवीर चन्द्र मंत्री बोर्डिङ्ग विभाग ने सुपरिन्टन्डेन्ट बोर्डिङ्ग हाउसों से तथा कई योग्य विद्वानों से पत्रव्यवहार किया है कि वे बोर्डिङ्गहाउसों में धर्म पर व्याख्यान दें।

श्रीयुत् चम्पत राय जी सभापति श्रीयुत्

अजित प्रशाद जी पूर्व मन्त्री परिषद् ने जो सेवा जैन समाज की निस्वार्थ भाव से कई मास रांची नगर में रह कर पूज्य श्री सम्मेदशिखर रक्षार्थ इन्जक्शन केस में की है वह जैन समाज से छिपी हुई नहीं है और राज गृही मुकद्दमे में श्रीयुत् अजित प्रसाद् जी कर रहे हैं तथा पूजा केस की प्रिवी कौंसिल में पैरवी करने के लिये श्रीयुत् वै० चम्पत राय जी उद्यम कर रहे हैं। इन दोनों परिषद् के महारथियों के निस्वार्थ सेवा पर जैन समाज को गर्व है।

श्रीयुत् कामता प्रसाद जी उपसम्पादक 'वीर' ने इस वर्ष भगवान महावीर नाम का अति उत्तम ग्रन्थ नवीन शैली पर तय्यार किया है और उसमें अनेक ऐतिहासिक प्रमाणों से जैन धर्म की प्राचीनता व गौरवता को सिद्ध किया है। जिसके पढ़ने से अजैन जनता भी जैन धर्म को बौद्ध आदि धर्म से प्राचीन मानने लगती है।

मुज़फ्फ़रनगर अधिवेशन पर परिषद् ने ६०००) रुपये व्यय का बजट पास किया था किन्तु परिषद् के पास कोई ध्रौव्य फंड तो था नहीं केवल १४००) रुपए के लग भग वसूल हुए हैं जो उपर्युक्त प्रस्तावों के कार्य रूप में परिणित करने के लिए काम में लाए गये। परिषद् के पास इस समय कोई रुपया नहीं है जैसा कि नीचे लिखे हिसाब से प्रगट होगा। धनाभाव व उचित कार्य कर्ताओं के बिना परिषद् अधिक तेजी से काम न कर सकी। अतएव जैन समाज से प्रार्थना है कि यदि वे परिषद् द्वारा जैन धर्म प्रचार व जैन समाज उत्थान देखना चाहते हैं तो इस की तन मन धन से सहायता करें। भारत वर्षीय परिषद् के आधीन प्रान्तीय, जिला परिषद् स्थापित करके इसके सभासद बनायें तथा भा० दि० जैन परिषद् के स्वीकृत प्रस्तावों के अनुसार कार्य करें। स्थान स्थान पर प्रचारक भेजें निज शक्ति अनुसार परिषद् को आर्थिक सहायता करें।

हिसाब परिषद

२४९१।=) दान परिषद्

२५१) रायसाहब साहू जुगमन्दर दास नजीबाबाद (बिजनौर)
१०१) ला० महावीरप्रसाद, राजेन्द्रकुमार बिजनौर
१०१) ला० हीरालाल रतनलाल बिजनौर
१०१) बा० नेमीशरण M. L. C. बिजनौर
१०१) ला० प्रियलाल परमप्रसाद मुजफ्फरनगर
१०१) लाला धूमसिंह बलबीरचन्द मुजफ्फरनगर

६०=) बकाया दान परिषद्

१५१) ला० जुगमन्दरदास जी नजीबाबाद मध्ये २५१)
१०१) ला० प्रियलाल परमप्रसाद मुजफ्फरन०
१०१) ला० धूमसिंह बलबीरचन्द
१००) ला० चन्डीप्रसाद जी धामपुर (बिजनौर)
१००) ला० जम्बूप्रसाद ननौता (सहारनपुर)
१०१) ला० रूपचन्द जैन रईस कानपुर
५१) ला० फुलजारी लाल रईस करहल (मैनपुरी)
५१) बा० नेमीशरण बिजनौर

१००) ला० चण्डीप्रसाद जी धामपुर (बिजनौर)
१००) ला० शम्भूप्रसाद जी रईस ननौता (सहारनपुर) वास्ते ट्रैक्ट।
१००) बा० सुमेरचन्दजी वकील सहारनपुर
१२५) बा० नन्दकिशोर जी डिप्टी कलक्टर धनबाद (मानभूम)
१००) रा० ब० बा० नान्दमल जी अजमेर
१०१) बा० धूमसिंह सबइन्जीनियर इटावा
१०१) ला० रूपचन्द जी रईस कानपुर वास्ते लेख हिन्दी कवि
५१) ला० मोतीलाल जी हाथरस
५१) बा० गोर्धनदास जी रिटायर्ड डिप्टी इन्सपेक्टर सहारनपुर
५१) ला० फुलजारीमल रईस बरहल (मैनपुरी)
५१) ला० लछमनदास जी इटावा
५१) ला० चंद्रसैन जी वैद्य इटावा
५१) ला० रूपचन्द जी वैद्य इटावा
५०) बा० चम्पतराय जी बेरिस्टर हरदोई
५०।≠) ला० मुन्नालाल अजबपुरा
२५) बा० कामताप्रसाद अलीगंज (एटा)
२५) जैनकुमार सभा मेरठ
२५) सेठ मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत
२१) ला० बारूमल पारसदास बसेड़ा (मुजफ्फरनगर)
२१) ला० सोहनलाल त्रिलोकचन्द देहली
२०) ला० ऋषभदास मित्रसैन तिस्सा (मुजफ्फरनगर)
२५) बा० चेतनदास जी हेडमास्टर मथुरा
२५) जैन कुमार सभा मेरठ मारफत बा० उग्रसैन मास्टर क्रिश्चियन स्कूल
२५) ला० बारूमल पारसदास बसेड़ा (मुजफ्फरनगर)
२१) ला० नरायनदास मैनपुरी
११) ला० गिरनारी किशोर मैनपुरी
५) ला० बसन्त लाल झांसी

८४३)

३५) बाबत वीर घाटे फण्ड
१५) श्रीकुन्दनलाल श्रीराम कलकत्ता
२५) सेठ फूलचन्द राम जीवनदास कलकत्ता
२५) ला० बराती लाल लखनऊ

६०८)

११७१।≠)॥ वीरखाते नाम
७३०) ३१ अक्टूबर सन् १६२४ तक
४४१।≠)॥ १ नवम्बर सन् १६२४ से २५ जनवरी सन् १६२५ तक
१७०॥≠)। दिगम्बर श्वेताम्बर एकता में
१७६॥≠)॥। खर्च खाते
८८॥) डाक व्यय
८०) छपाई आदि मुतफर्रिक
४≠)॥ स्टेशनरी
८।≈)॥ ट्रैक्ट विभाग
२) खजान्ची साहु जुगमन्दर दास
१०४) ला० ज्योती प्रसाद मन्त्री प्रचारक विभाग
१०६॥।≠) बाकी पास बा० रतनलाल मन्त्री परिषद्

२६४८।≠)

२५) जैन पंचान इटावा मध्ये ५०) के २५)
वीर जमा
२५) ला० गोकुलशाह औरंगाबाद (Deccan)
२१) ला० मोतीशाह कस्तूरचन्दशाह
औरंगाबाद
२१) ला० नरायनदास मैनपुरी
३१८) फुटकर २०) से कम
१८७) फीस सभासदी
२६४८।=)

हिसाब वीर वर्ष १

१ नवम्बर सन् १९२४ से ३१ अक्तूबर सन् १९२४ तक

१२२६॥=)	ग्राहक फीस	१७२)	वेतन क्लर्क
६७॥)	विज्ञापन चार्जेज	५७३॥≈)॥	कागज़ वीर
४६)	दान वीर	६३२॥=)॥	छपाई वीर
७३०)	परिषद् के जमा	८४। ।-)॥।	कटाई बंधाई वीर
५०२)	वीर घाटा फंड	२६४=)	विशेषांक
	२५७१=)	४५१।≈)॥	पोस्टेज वीर
		२७।=)॥।	स्टेशनरी
		३८॥=)	खर्च मुतफ़र्रिक
			२५७५=)

मृत्यु का आमन्त्रण

(१)

आमन्त्रण है जिसे मृत्यु का आचुका।
इस जीवन से पूर्ण शान्ति वह पा चुका॥
करनी होगी नहीं उसे अब चाकरी।
लगी हाथ है बड़े भाग्य से ठाकरी॥

(२)

तरस कुँवारों की न उसे झुलसावेगी।
विधवाओं की आह न फिर तरसावेगी॥
बुड्ढों के न विवाह कलेजा काटेंगे।
शिशुओं के अपहरण न धीरज डाटेंगे॥

(३)
आपस का विद्वेष न आँखों आवेगा।
'तू तू मैं मैं' का न हिलोरा ढावेगा ॥
स्वतन्त्रता के सूत्र नहीं सिर बाँधेंगे।
हिन्दू मुसलिम ऐक्य नहीं फिर बांधेंगे ॥

(४)
भय जीवन से भला मृत्यु-आमन्त्रण होगा।
जिस नर से धरा का न दुःख-अपकर्षण होगा ॥
निष्पुरुषार्थी भला कहां किसका करते हैं ?
खरे समय पर सदा कहीं खिसका करते हैं !

(५)
मरें, प्रभो!, तो मरें किन्तु बदनाम न होवें।
पर के शुभ आशीष-नीर से आनन धोवें ॥
ऐसे अवसर हमें स्वीकृत मृत्यु-आमन्त्रण।
समझेंगे शुभ हुआ, इस जीवन का यन्त्रण ॥

—भुवनेन्द्र

जैन इपीग्रेफिया

(ले०—चैवेलियर डा० बी० शेषागिरि राव एम० ए० पी० एच० डी०)

(क्रमागत)

गंजम ज़िले की परलकिमेदी अजेन्सी में कदम सिंगी' (कदम्बसिङ्गी) और 'मुनिसिन्गी" नामक स्थान हैं। अन्तिम नामोल्लेख से प्रगट है कि वह पर्वत जैनियों के निकट पूज्य था और वहीं कहीं निकट में जैन-मुनि-संघ विद्यमान था। साथ-ही स्थानों के इन नामों से धार्मिक सभ्यता का प्रभाव प्रकट है। अपने अन्तिम समय में कदम्बों ने इसई ताल्लुके के मैदानों में अपनी राजधानी वैजयन्तीपुर स्थापित की थी। इसी प्रकार इस ज़िले के अस्क ताल्लुके में एक गांव जयसिन्गा नामका है। शायद इसका यह नाम प्रारम्भिक (द्वितीय शताब्दि ईस्वी) कदम्बवंशीय राजा जयवर्मा के नामापेक्षा रक्खा गया होगा अथवा एक कोशल "जया दित्य" के नामापेक्षा जिसका ज़िकर आज कल के आंध्रक्षत्रियों की जनश्रुतियों में मिलता है। इधर विज़ागापटम् ज़िले के विस्सम्मकट्टक (विश्व-म्भर (देव) कटक) अजेन्सी में दो गांव "कद-म्बगुद" और "कदम्ब" नाम के हैं। "गुद" वहीं शब्द है जैसे "गूदेम" जिसकी उत्पत्ति द्राविड़ भाषा के धातु कुद=एकत्रित करने से है। इसलिये शब्द के अर्थ समूह के होते हैं। अब वह समूह चाहे कदम्ब वृक्षों का रहा हो अथवा कदम्बवंशी मनुष्यों का। इस स्थान के साथ एक 'मुनिसिन्गी' (मुनि-श्रृङ्ग) का होना इस बात का चिन्ह है कि यहां भी जैनियों के मणिगुण और क्षत्रियों का निवास उस ही तरह रहा था जिस तरह परलकिमेदी अजे-न्सी में रहा था। इस ही संबंध में साक्षीरूप में यह जानना भी मनोरंजक है कि इस ताल्लुके में स्थानों के नामों के अन्त में "भट्ट" शब्द लगा हुआ है, जो शायद उन विद्वानों के नामापेक्षा हो जो विशेष

प्रख्यात् और प्रभावशाली रहे हों। उदाहरणार्थ ऐसे नाम हैं:- कदचनाभिट्ट, कुद्भट, कुम्बाभट्ट लक्कभट्ट; पेद्भट्टगुद, सार्नभट्ट सुकुलभट्ट। यह भट्ट कौन थे (यह विशेष प्रख्यात् विद्वान्-संभवतः जैन होंगे) और उन्होंने उस समय की सभ्यता निर्माण करने में क्या कार्य किया था, इस का पता तब ही चल सक्ता है जब इस वनमय प्रान्त की खोज दृढ़ता के साथ की जावे। जैपुर अजेन्सी के जयपुर और जयनगरम् नगरों के नाम कदम्बवंश के उन राजाओं के नामों पर से रक्खे गये होंगे जो जयवर्म कहलाते थे। जयन्तीगिरि से पश्चात् के कदम्बों की बैजयन्ती की स्फूर्ति हो आती है जो प्राचीन वंश को नवीन से मिला देती है। जैपुर अजेन्सी में कदमगुद आठ स्थानों के नामों में व्यवहृत हुआ है। इससे यही धारणा होती है कि इस प्रान्त को एक कदम्बवंशी राजाओं का विशेष दीर्घ कालीन निवास रहा था। भट्ट के अन्त सहित नाम भी इस प्रान्त में बहुत हैं जैसे अमल भट्ट बन्नभट्टिगुद, भट्टिगुद, दलुभट्ट, मद्गुलिभट्ट। इस प्रान्त में अन्य स्थानों के नाम, इन नामों की अपेक्षा रक्खे गए हैं:- 'रानी' खुतु, प्रधानि, वाहन पति, पुजारी। इन से उन सभ्यांचित भावों की स्मृति होती है जिन को कदम्बगण लाये थे।

विजागापटम् ज़िले की कोरपट अजेन्सी 'कदम्बगुद' दो स्थानों का नाम मिलता है और केवल एक ग्राम 'बुसकभट्ट' नामका है। मलकनगिरि अजेन्सी में कदम्बगुद और उसके विकृत रूप तीन स्थानों में मिलते हैं। और जयन्तीगिरि एक स्थान पर। 'अमलभट्ट' 'कोसरभट्ट' नामके भी स्थान हैं। निम्न नामों के भी ग्राम मिलते हैं :- सन्यासी, पुजारी, पत्र, प्रगद् प्रधानि, मंत्री, नायक, दलपति, दण्डुसेन। इन से यहां की राज्यव्यवस्था कौटिल्य या किसी प्राचीन अर्थशास्त्र के ढंग की थी यह प्रकट होता है। यह बहुत प्रचलित और अर्थ पूर्ण स्थान-नाम "कदम्बगुद" नवरंगपुर अजेन्सी में भी मिलता है। यहां भट्ट नामान्त स्थान भी बहुत मिलते हैं जैसे अमलभट्ट, भट्टिकोट, दाईभट्ट, कोदुभट्ट, मोहभट्ट, मोबुलिभट्ट, पोसकभट्ट, पुलोभट्ट, सिन्दीभट्ट, सोरमुभट्ट। नागरिक जीवन की संस्थाओं के संकेतक नाम भी मिलते हैं जैसे तुरङ्गी, राजा, रानी, नायक, प्रधानि, मंत्री, अधिकारी, पुजारी, पण्डित।

विजागापटम् की रायगढ़ अजेन्सी में एक ग्राम 'कदम्बरिगुद' के नाम का है। यह नाम शायद उस राजा की अपेक्षा रक्खा गया होगा जिसने इस प्रान्त के कदम्बराजा को जीता होगा और इस शब्द को अपने नाम के साथ उसी तरह जोड़ लिया होगा जिस तरह आंध्र राजा ने शकराज्य को परास्त करके 'शकारि' की उपाधि ग्रहण की थी।

प्राचीन कलिङ्ग राज्यके यह गंजम और विजागापटम के अजेन्सी-प्रान्त आजकल लोगों द्वारा भेड़िए और चीते के स्थान अथवा उतने ही खूंखार मनुष्यों के निवासस्थान समझे जाते हैं। अपनी अज्ञता में आजकल यह अनुभव करना भी आज मुश्किल हो रहा है कि यहां किसी समय में विशेष सभ्य मनुष्यों का निवास, राज्यस्थानों का अस्तित्व, फलते फूलते नगरों का दृश्य, पंडित परिषद् और मुनिविहारों की विद्यमानता रह चुकी है। इन रण-थलों में इस प्रारंभिक सभ्यता के स्थापन में उन उत्तरीय और दक्षिणी लोगों के लिए जो

आकर आबाद हुए. इन ईसाकी प्रारम्भिक शताब्दियों के जैन कदम्बों का कुछ कम हाथ नहीं रहा होगा।

जे. एफ. फ्लीट साहब ने (in the Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society Vol. IX, No. XXVII) जो शिलालेख प्रगट किया है उससे संभवतः इसही जैन कदम्बवंश की एक पश्चिमीय दक्षिण शाखा का पता चलता है। वह कहते हैं: "वह उस समय के मालूम होते हैं जब दक्षिण के विशाल राजागण 'चालुक्य' उस प्रभावशाली सत्ता को प्राप्त नहीं थे जिसको उन्होंने पश्चात् में प्राप्त किया था। इत्यादि।" पश्चिमीय दक्षिण में पलाशिका उन की राजधानी थी और यह मानना भी असंगत न होगा कि गंजम ज़िले के पलाश स्थान को भी इन्हीं जैन कदम्बों की इस शाखा की किसी प्रतिशाखा ने स्थापित किया होगा। परन्तु एक प्रश्न निर्णय के लिये कठिन है कि इनमें से कलिङ्ग अथवा पश्चिमीय दक्षिण की शाखा प्राचीन है ?

—क्रमशः

संसार दिग्दर्शन

समाज

फरहल-महोत्सव—फरहल (ज़िला मैनपुरी) में श्रीमान् ला० फुलजारीलालजी जैन रईस व ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के पवित्र भावानुसार गत ता० १ से ७ फरवरी तक श्री पंचकल्याणक महोत्सव बड़े समारोहके साथ हुआ था। रथयात्राओं और जुलूसों के साथ २ धर्म प्रभावना के अन्य कार्य भी दर्शनीय थे। भीड़ करीब ६००० के थी। लाला जी की ओर से ठहराने का प्रबन्धादि उत्तम था। सुन्दर बाजार भी लगा हुआ था। पंचकल्याणक महोत्सव विधाने श्रीमान् पं० नरसिंह दासजी तथा पं० झम्मनलाल जी की देख रेख में सानन्द पूर्णताको प्राप्त हुआ था। श्रीमान् न्या०पं० माणिक्यचन्द्रजी के शास्त्रोपदेश का विशेष आनन्द रहता था। जाण मन्दिर इतना विशाल था कि एक ओर शास्त्र सभा और दूसरी ओर लम्बेचू सभा मज़े में एक रात्रि को होती रही थी। उसी रात्रि को वहीं श्री रामदेवीबाई के प्रयत्न से स्त्रियों की भी एक सभा हुई थी। सारांशतः महोत्सव विशेष प्रभावना के साथ पूर्ण हुआ था और लालाजी की शुभोद्देश्य सिद्धि भी हुई थी। इस लिये हम लाला जी को बधाई देते हैं। इसी अवसर पर श्री सं० प्रा० दि० जैन सभा का नैमित्तिक अधिवेशन श्रीमान् ब्रं० शीतलप्रसाद जी के सभापतित्व में हुआ था-जिस में कुल १३ प्रस्ताव इस प्रकार स्वीकृत हुये थे: (१) महाराज देवास को बलिहिंसा बंद करने पर धन्यवाद (२) सेठ दयाचन्द जी व देवी दास जी की मृत्युपर शोक (३) जैन जाति की विविध सम्प्रदायों में परस्पर समानता से प्रेम

पूर्वक बर्ताव करना (४) धौलपुर में रथयात्राओं जाने की ओर उचित कार्रवाई करना (५) प्राचीन तीर्थों और मंदिरों का उद्धार करना (६) जैनवैद्यक विद्यालय कानपुर में स्थापित करना (७) स्वदेशी वस्तु व्यवहार के लिये (८) चटेश्वरजी के उद्धार के लिये (६) स्त्रीशिक्षा हेतु ग्राम २ में विद्यालय खुलने की प्रेरणा (१०) साहित्य भंडारों की खोज करना (११) आगरा बोर्डिङ्ग की दशा सुधारना (१२) सभा की कार्रवाई "वीर" में प्रकट हो इस लिये सभा की ओर से एक कालम "वीर" में रखना (१३) और लाला ज्योतीप्रसाद जी को मंत्री उपदेशक विभाग नियत करना। प्रस्ताव सब ही समयोपयोगी हैं। परन्तु इनका महत्व जब ही है जब इन की अमली पूर्ति की जावे। गतवर्ष के प्रस्तावों की भाँति यह भी केवल दाखिल दफ्तर न रहे। इस बात का ध्यान मंत्री महोदय को रखना आवश्यकहै। उधर जब नियत समय पर मंत्री महोदय नहीं आये थे तब उस रोज श्री जैनतत्त्व प्रकाशिनी सभा की ओर से सभामँडप में आम व्याख्यान ब्र० शीतलप्रसाद जी तथा बाबू ज्योतिप्रसाद जी के हुये थे। पांडुक शिलापर अभिषेक समय भी स्त्री शिक्षा पर पं० फूलचंद, बाबू ज्योतिप्रसाद बाबू सूरजमल जी तथा ब्र० शीतलप्रसाद जी के व्याख्यान हुये थे। सं० प्रा० सभा के १०वें प्रस्ताव को पेश करते हुये व्या० पं० माणिक्यचन्द्र जी ने जैन धर्म पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया था। इस समय शहर के प्रतिष्ठित अजैन महाशय उपस्थित थे। इसी दरमियान में श्री लम्बेचू सभा का भी अधिवेशन काशीवासी श्रीयुत संघई कुंजीलालजी के सभापतित्व में हुआ था। इस में लम्बेचुओं के लिये एक खास दस्तूरुलअमल बन गया है, जिस पर प्रत्येक लम्बेचू को अमल करना चाहिये। जाति सभाओं का महत्त्व अपनी आन्तरिक दशा को सुधारने तथा जाति में जैनत्व भाव भरने में हैं, वरन् उन का अस्तित्व समूचे जैन समाजकी अपेक्षा हानिकर है। कार्यकर्त्ताओं को यह ध्यान रहे कि उन के सभासदों में साम्प्रदायिकता का भूत घर न कर जाये। आज यह साम्प्रदायिक भेद जैन समाज की हानि विशेष कर रहा है। प्रत्येक जाति का मनुष्य जैनी होते हुये भी उस की परवा नहीं करता और अपने लम्बेचूपने परवारपने आदि के घमंड में चूर हो धर्म और समाज का अहित करता है। इस लिये इस बात की ओर प्रत्येक जाति सभा को ध्यान देना आवश्यक है। श्री लम्बेचू सभाने अन्य बातों की ओर ध्यान देते हुये भी अपनी जातीय अवस्था की ओर ध्यान नहीं दिया इसका हम को दुःख है करहल लम्बेचुओं का केन्द्र हैं। परन्तु यहां की आन्तरिक दशा का जो परिचय हमको एक विश्वस्त सूत्र से लगा है उसको जानकर हम को विशेष दुःख है। कितनेही नौजवान वहां पर कुंआरे निठल्ले अनाचार का बाजार गरम करते सुने गये हैं। तथा विशेष संख्या में प्राप्त विधवाओं की भी दशा शोचनीय जानी गई है। यहाँ तक गनीमत थी क्योंकि यह दशा क़रीब २ हर जगह मिल सक्ती है परन्तु वज्र का पहाड़ तो यहां टूटताहै न यह यह जानते हैं कि जो समाज में यहां अग्रगण्य बनने का दम भरते हैं वहीं अनाचार का पोषण करते हैं। लम्बेचू समाज की भलाई के लिये इस दशा पर ध्यान देना परमावश्यकीय है। किस तरह यह घृणित शोच-

नीय दशा मिट सकी है, इस पर लम्बेचू सभा को विचार करना चाहिये था। उक्त नैतिक पतन का दृश्य कहते हैं कि जैन सेवा समिति कैम्प में ही घटित हुआ। जहाँ अमानुषिक कृत्य किये जाँय वहां क्यों दुःखों के बादल उमड़ें? भाइयो, दुःखों से छूटना है तो सत्य को गृहण करो अपनी संकटापन्न दशा की रक्षा करो! दूसरी ओर राष्ट्रीय सेवा समिति का पहरे व खोई हुई चीज़ों का पता लगाने का प्रबन्ध नितान्त सराहनीय था। सोने की खोई हुई चीजों का भी पता इन सच्चे सेवकों ने लगाया था। इस पुण्यमय अवसर पर भगवान के त्याग समय मेलाकारक उक्त लालाजी ने करीब १५००) का दान भी किया था तथा आपने कतिपय विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां भी दी हैं। जो सर्वथा अनुकरणीय हैं। हम लाला जी को इस शुभकार्य के लिये कोटिशः धन्यवाद देंगे। लाला जी के साथ २ आगन्तुकों ने भी यथाशक्ति दान किया था, जिस में ५००) ला० हीरालाल जी खड़गपुर के उल्लेखनीय हैं। यह रुपये १० संस्थाओं को भेज दिये होंगे, जिन में परिषद् भी था। अन्त में हमको सिर्फ एक प्रश्न का उत्तर लिखना कि क्या इस समय करहल में इस बिम्बप्रतिष्ठा की आवश्यका थी? क्या इस समय १७ नवीन बिम्बों की प्रतिष्ठा कराने की आवश्यका थी? इसका उत्तर हमारे मन्दिरों की दशा देती है जहां पूजा प्रक्षाल के लिये बारी बाँधनी पड़ती हैं। यह महान उत्तम कार्य है परन्तु जब प्रतिबिम्बों की विनय हम यथार्थ नहीं कर सके तब इस बात की आवश्यका है कि जाति में वह धार्मिक शिक्षा फैलाई जावे जिससे प्रत्येक जैनी का जीवन जैनत्व से रंग जावे। परन्तु यह हो तब ही सक्ता है जब हमारे पडितगण प्रतिष्ठाकारक महोदय अपने लोभ को सीमित करें और असलियत को देखें। इतिशम्

—उ० सं०

—मृत्यु समय दान बा० ऋषभदास जी वकील मेरठ की बहन श्रीमती चमेली बाई जी ने कि जिनका २५ दिसम्बर सन् २४ को स्वर्गवास हो गया मृत्यु समय निम्न प्रकार वृहद्दान दिया जिन में वीर को भी २०) रु० प्रदान किये हैं इसके लिये कोटिशः धन्यवाद है। ईश्वर से प्रार्थना है कि बाई की, पुण्यात्मा को आगामी सुख और शान्ति प्राप्त हो।

२५००) श्री जैन मन्दिर हस्तिनापुरी वास्ते बनाने कमरा धर्मशाला मकाना। व सहदरी धर्मशाला हस्तिनापुर।

१०००) श्री जैन मन्दिर पंचायती सदर बाजार मेरठ, बराय तामीर।

१०००) श्री जैन मन्दिर शहर मेरठ, वास्ते तामीर

१२५) श्री जैन मन्दिर ला० ईश्वरी प्रसाद सदर बाजार मेरठ।

१२५) श्री जैन मन्दिर तोपखाना बाजार मेरठ।

२५०) श्री जैन मन्दिर बड़ा गांव वास्ते मरम्मत

१०००) जैन बोर्डिङ्गहाऊस मेरठ वास्ते बनाने कमरा।

५००) जैन कन्या पाठशाला मेरठ स्थान जैन मन्दिर

५००) जैन पाठशाला लड़कों की ध्रुव्य फण्ड

१००) जैन कन्या पाठशाला सदर बाजार मेरठ

१००) ,, हाई स्कूल बड़ौत

१००) जैन हाईस्कूल देहली
१००) ,,.........पानीपत
१०) ,, अनाथ आश्रम देहली
५०) ,, ब्रह्मचर्य आश्रम जैपुर
५०) गोपाल सिद्धान्त भवन मोरेना
१०) स्याद्वाद पाठशाला काशी
१०) औषधालय बड़नगर
१०) प्राचीन श्रावकोद्धारिणी सभा कलकत्ता
१०) जैन प्रदीप-देवबन्द
१०) जैन प्रचारक मेरठ
१०) 'वीर' बिजनौर
१०) "जैनमित्र" सूरत
२०) अङ्गरेजी जैन गजट मदरास
६००) ट्रस्ट जो उन के नाम को छपेगा।
५०) धर्मार्थ औषधालय मेरठ
२५) वैश्य अनाथाश्रम मेरठ
२५) गौ शाला मेरठ

७८००)
२००) फुटकर
८०००)

देश

साहूकारा बिल—पंजाब-कौन्सिल में एक मुसलमान मेम्बर ने इस आशय का एक कानूनी मसविदा पेश किया है, कि वे सब अपना नाम रजिस्टर करावें और अपने लेन-देन का एक बाकायदा रजिस्टर रक्खें, जो किसी समय में भी देखा जा सके, और जो लोग ऐसा न करें उनका दावा अदालत में माना ही न जाय। इस साहूकारा बिल पर पंजाब में बहुत आन्दोलन हो रहा है। कितनी ही सभाएं हो चुकी हैं। हिन्दुओं का कहना है कि यह मुसलमानों की चाल है, इस प्रकार मुसलमान लोग हिन्दुओं के रोजगार पर कुठाराघात कर रहे हैं, रजिस्ट्री कराने और रजिस्टर रखने की प्रथा जब लग जायगी तब बहुत से साहूकार अपना काम छोड़ बैठेंगे, रुपये का लेन-देन करने वाली विधवा स्त्रियाँ कानूनी प्रहार के डर से अपने गुजारे की इस मद से हाथ धो बैठेंगी और इस प्रकार रुपये के लेन देन करने वालों को तो धक्का लगेगा ही, रुपये के मिलने के कारण व्यापार को भी हानि पहुंचेगी। इसी राय के प्रकट करने के लिए पंजाब में हिन्दुओं की बहुत सभाएं इस समय तक हो चुकी हैं। मुसलमानों की भी सभायें हुई हैं।

—**दक्षिण में हिन्दी प्रचार**— मदरास के हिन्दी प्रचार कार्यालय की प्रार्थना पर श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने हिन्दी प्रचार के लिए दक्षिण भारत में एक मास तक दौरा किया। प्रायः सभी प्रमुख स्थानों में गए। लगभग ६००) रु० चन्दे में इकट्ठा किया। बड़े २ नेताओं ने हिन्दी प्रचार को सहायता देनेका वचन दिया। श्रीनागरी और शारदा मठ के जगद्गुरु शंकराचार्यों ने वचन दिया कि अपनी छत्र छाया के अन्दर काम करने वाली पाठशालाओं में हिन्दी का प्रचार करेंगे। टण्डन जी ने चलते समय अपने सहायकों और सहयोगियों के उत्तम व्यवहार के लिए कृतज्ञता प्रकट की। आपने कहा कि महात्मा जी की अध्यक्षता में जबसे हिंदी का काम हुआ तब से दक्षिण भारत में हिन्दी का अच्छा प्रचार हुआ। हिन्दी की शिक्षा और खद्दर का काम साथ साथ करना चाहिए।

—क्रान्तिकारी परचा 'Revolutionary' नाम का क्रान्तिकारी परचा देश के सब बड़े बड़े नगरों में बंटा। ऐसे अवसर पर, जब कि सरकारी आदमी इस बात के सिद्ध करने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं कि इस देश में क्रान्तिकारियों का एक बड़ा भारी सुसंगठित दल है और वह अपने विरुद्ध गवाही देने या काम करने वालों को मार डालने तक के लिए तैयार है, इस परचे का बँटना कुछ लोगों के मनमें स्वाभाविक रीति से इस संदेह को उत्पन्न कर रहा है कि कहीं अपनी बात को अच्छी तरह से सिद्ध करने के लिए इस प्रकार के परचे कोई सरकारी आदमी या कुछ सरकारी आदमी मिल कर न बँट या बँटवा रहे हों। यह संदेह कुछ और कारणों से भी बढ़ता है। अभी तक तो क्रान्तिकारी बंगालही में थे, दूसरे प्रान्तों में कब पहुँच गये? क्रान्तिकारी लोग अंग्रेज़ी में पत्र नहीं निकालेंगे। उन्हें अपनी अंग्रेज़ी योग्यता के दिखाने की अपेक्षा लोगों को उभाड़ने की अधिक चिन्ता होगी। लोग अंग्रेज़ी नहीं जानते। वे देशी भाषाओं के परचों द्वारा ही उभाड़े जा सकते हैं। इसलिए, यह असम्भव नहीं कि इन परचों का निकालने वाला कोई ऐसा आदमी हो जिसका क्रान्ति से कोई भी संबंध न हो। पाश्चात्य देशों में, ऐसा हो चुका है। वहाँ बहुधा ऐसा हुआ है कि पराधीन देश के लोगों के भड़काने का काम शासकों के आदमियों ने उन में मिल कर किया और जब कुछ लोगों ने सिर उठाने का विचार किया, तब, उन्हें पकड़वा दिया। देश में, यदि, भयङ्कर क्रान्तिकारियों का कोई सुसंघटित दल है, तो हमारी प्रार्थना है कि सरकारी आदमी उसके होने का स्पष्ट प्रमाण दें। केवल उनके कहने और इधर-उधर की असम्बद्ध घटनाओं की ओर इशारा कर देने से लोग इसबात पर विश्वास करने के लिए कदापि तैयार न होंगे कि इस देश में क्रान्ति-कारियों का कोई ऐसा सु-संघटित दल मौजूद है जिस के आतङ्क से, लोगों को गवाही तक देने की हिम्मत नहीं पड़ सकती और जिसके दबाने के लिए आर्डिनेंस और असाधारण कानूनों के बिना काम नहीं चल सकता। यदि वायसराय महोदय और उन के संगी-साथी अपने भारी तरकश से प्रजा पर चलाने के लिये नये नये तीर निकालते हैं तो इस से, यह बात तो, सिद्ध हो सकती है कि वे बड़े तीरंदाज हैं, और साथ ही बहुत बलवान हैं, परन्तु यह सिद्ध नहीं होता कि उनका पक्ष न्याययुक्त है, और लोगों को उनका साथ देना चाहिए।

—प्रताप

—तेज को मालूम हुआ है कि सरकार की ओर से गुप्त रूप से यह विज्ञप्ति निकली है जिन सिखों ने अकाली आन्दोलन में भाग लिया या उसके प्रति सहानुभूति दिखाई है उन्हें फौजी विभाग में न लिया जाय और अन्य सरकारी महकमों में भी उन्हें क्लर्क का स्थान न दिया जाय। जो पहिले से हैं उन पर कड़ी निगरानी रहे।

—कलकत्ता में २ मुसलमान गिरफ्तार किये गये हैं। यह सोलह वर्ष के एक हिन्दू लड़के को भगाले गये थे और उसे जबर्दस्ती मुसलमान बनाया था। लड़के के पिता के पुलिस में इत्तिला करने पर ये गिरफ्तारियाँ हुईं।

विषय–सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	ऐक्य (कविता)	१८१	६	महिला महिमा	१९१
२	न थे हैं भीरु महा हैं वीर (कविता)	१८२	७	रिपोर्ट भा० दि० जैन० ...	१९२
३	हृदय को परख (गल्प)	१८४	८	मृत्यु का आमन्त्रण (कविता) ...	१९६
४	कवि सुन्दर और उनकी रचना	१८८	९	जैन इवींग्रे क्रिया	१९७
५	दश दोहे (कविता) ...	१९०	१०	संसार दिग्दर्शन	२००

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांदी के फूल भाव १।) तोला　　　　सोने के चड़े फूल भाव २।) तोला।

(सिर्फ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद काम व वैसी जितने तौल चाँदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

हौदा	५००) से २०००)	एरावत	२५०) से ३०००)	*गंधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र एक	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०)से१०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चवर एक	७) से २५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२००) से ५००)	*चोकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १००)	समोसरन	१०००) से ३०००)	* × भामण्डल	३०) से १००)
*सौठा	५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका माड़ाल)	१०) से ५००)	*कलशा	५०) से ५००)
*छतरी डंडी	३०) से ५०)			तख़्त चांदी के	२००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण ।					
गंधकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीपकी रचनाका माड़ला)	५००)से२०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
वेदी	८००) से ४०००)			*पूजनके बरतन	३००) से ५००)

यह काम वाजिब आड़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में १=) सैकड़ा को आड़त लेते हैं। मजदूर कारीगरों की नकाशी कामको तोला और सादे काम की ≈) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती है । * ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है ।

पता—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) सिंघाई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी ।

Tel. Address— 'Singhai" Benares,

रेल से माल भेजने का कायदा

(सरल हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५००, विषयसूची के १८ पृष्ठ, मूल्य ३))

बढ़िया काग़ज़ पर ! बनारस की बढ़िया छपाई !!

मालगाड़ी से भेजे हुए माल आदि का नुकसान न होने पावे, या नुकसान होने पर रेलवे कम्पनी ही जिम्मेदार समझी जा सके यह बात व्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अच्छी तरह से साबित होगयी है। इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रेलवे कंपनियों के गुड्स बुकिंग के तमाम महत्व के कायदे, शर्तें, आदि जो कंपनियों के अलग २ अंगरेज़ी टेरिफों में होते हैं वे सब इस एक ही पुस्तक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जिम्मेदार हो सकेगी आदि बातों के तमाम हाईकोर्टों के बहुत ही महत्व के फैसले भी इसमें बताये हैं। विषयानुसार पुस्तक ६ हिस्सों में विभक्त है।

ट्रैफ़िक मैनेजर, ओ० आर० रेलवे, लखनऊ लिखते हैं-"हम यक़ीन से कहते हैं कि यह पुस्तक व्यापारियों को बहुत ही उपयोगी है।"

सुपरिटेन्डेन्ट जनरल बी० एन० रेलवे, कलकत्ता २५। ११। २४ को लिखते हैं—"जिन व्यापारियों को रेलवे से काम पड़ता है उनको इस पुस्तक से बहुत ही मदद मिलेगी।"

लक्ष्मीनारायण वंशीलाल जी मु० रोल (मारवाड़) २। ११। २४ के पत्र में लिखते हैं-"इस पुस्तक की कहाँ तक प्रशंसा करें। इसमें उपयोगिता के गुणों का भण्डार है। हमने आजतक व्यापारियों के फ़ायदे की ऐसी सरल उपाय की पुस्तक नहीं देखी।"

श्री वेंकटेश्वर समाचार, बम्बई-"माल भेजने के सब नियम अंग्रेज़ी में होने के कारण अधिकांश व्यापारियों को गुड्सक्लर्क की बात पर ही निर्भर रहना पड़ता है और रेल से माल भेजने के कायदे ठीक २ न जानने के कारण ही व्यापारियों को नित्य रेलवे झगड़ों की झंझटें सहनी पड़ती हैं। ऐसी दशा में काले महाशय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक बड़े भारी अभाव को दूर करके व्यापारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्रायः डेढ़ पौने दो सौ विषयों का विवेचन किया है। व्यापारियों के बड़े काम की पुस्तक है।

आर्डर देते समय "वीर" का नाम अवश्य ही लिखिये।

तीन कापी एक साथ मंगाने से वी० पी० डाकखर्च माफ़

पता—

आर० एन० काले,

हाईकोर्ट वकील, उज्जैन (सी० आई०)

Regd. No. A. 1271.

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाक्षिकपत्रः

हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। कागज़, छपाई, सफाई सब ही उत्तम रहती, है। पत्र की नीति स्पष्ट निडर और समाज के प्रश्नों पर निस्पक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को

एक दम नया ग्रन्थ

'महावीर भगवान'

बिलकुल मुफ्त मिलेगा

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीन के साथ लिखी जारही है। यह ग्रन्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस तार्ज की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्ष में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रक्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक–राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

क्षत्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा.

वर्ष २ १ मार्च सन् १९२५ [संख्या ९

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

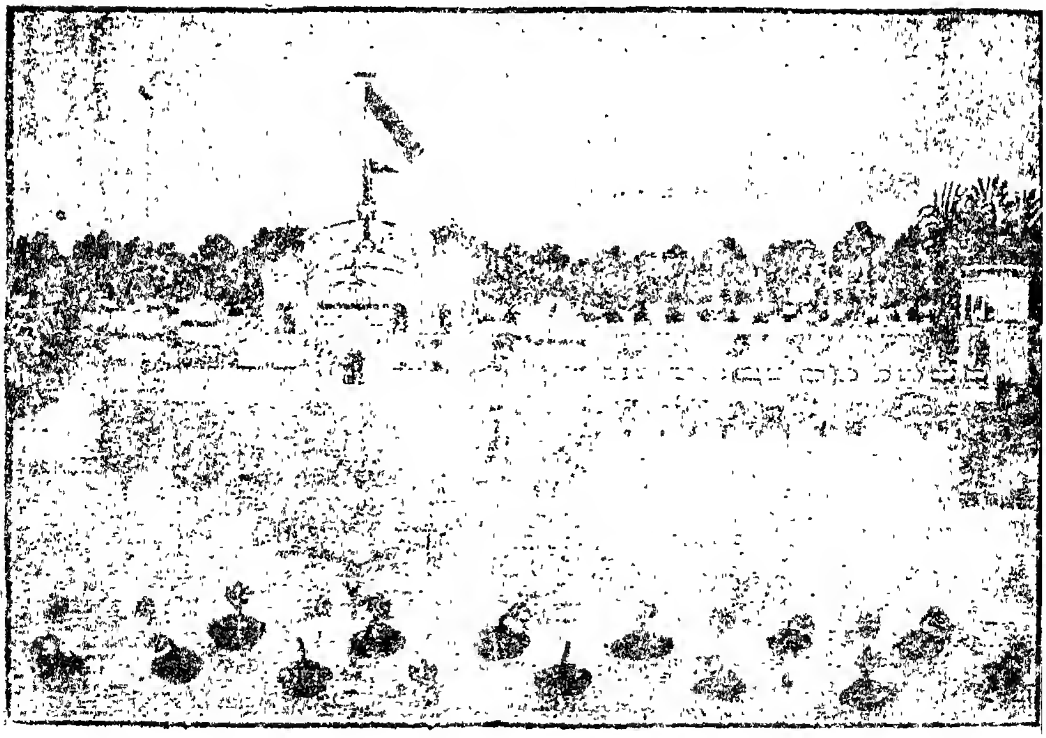

सम्पादक:—

जै० ध० भू०, ध० दि० ब्र० शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादक:—

श्री कामताप्रसाद जी

प्रकाशक—

वार्षिक मूल्य] राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०) [ढाई रुपये

इस वर्ष वीर के ग्राहकों को उपहार में

'महावीर भगवान और उनका उपदेश'

बिलकुल मुफ़्त मिलेगा ।

इस अमूल्य उत्तम ग्रन्थ में श्री वीर भगवान की जीवनी उनके उपदेश के साथ साथ जैन धर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन ग्रन्थों के प्रमाणों लेखों वरन संसार के बड़े बड़े अजैन विद्वानों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। यह ग्रन्थ बड़ी छान बीन के बाद सुन्दर व सरल भाषा में लिखा गया है। अपने ढंग का निराला ही ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त इसवर्ष में एक उपयोगी और अत्यन्त मनोहर चित्रों से सुसज्जित—

वीर का विशेषांक

भी प्रकाशित होगा। ये दोनों बहुमूल्य उपहार अप्रेल तक ग्राहक बन जाने वालों को बिलकुल मुफ्त मिलेंगे। विशेष कीमती होनेसे केवल आवश्यक प्रतियां ही छपवाई जायगी। अतः शीघ्र ही ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाईये अन्यथा पछताना पड़ेगा। —प्रकाशक

"वीर" के नियम।

१-यह पत्र पाक्षिक है और प्रत्येक अंग्रेज़ी मास की १ ली व १५ वीं तारीख को प्रकाशित होता है।

२-वार्षिक मूल्य उपहार तथा विशेषांक सहित २॥) है।

३-वीर के चन्दे का वर्ष दीपमालिका (कार्तिक मास) अथवा महावीर जयन्ती (चैत्र मास) से शुरू होता है। दरमियान में बनने वाले ग्राहकों को पिछले प्रकाशित अङ्क जब से वह ग्राहक बनना चाहें वी० पी० का रुपया आने पर फौरन भेज दिये जाते हैं।

४-इस पत्र में मुख्यतया धार्मिक, सामाजिक, एवं साहित्य सम्बन्धी विविध विषयों के लेख प्रकाशित होंगे। परस्पर विद्वेषोत्पादक लेखों को स्थान नहीं दिया जायगा।

५-किसी लेख के प्रकाश करने न करने तथा घटाने बढ़ाने का अधिकार सम्पादक को होगा। यदि लेखक चाहेंगे तो उनके अप्रकटनीय लेख पोस्टेज़ मिलने पर वापिस कर दिये जायेंगे।

६-लेख और परिवर्तन के पत्र निम्न पते पर आने चाहियें:-

श्रीयुत् कामताप्रसाद जैन, उपसम्पादक 'वीर' जसवन्तनगर (इटावा)

७-पत्र का मूल्य तथा विज्ञापन और प्रबन्धकार्यसम्बन्धी पत्रव्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए-

श्रीयुत् राजेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक "वीर", बिजनौर (यू० पी०)

८-परिषद् सम्बन्धी पत्र व्यवहार इस पते पर करें:—

श्रीयुत् रतनलाल जी जैन वकील मंत्री 'भा० दि० जैन परिषद्, बिजनौर

ॐ

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"हम जिसे अपना कर्तव्य मानते हैं उसके पालन में चाहे जितनी कठिनाइयाँ आती हों तो भी हमको निराश न होना चाहिये, क्योंकि यदि हम अपने सारे बल की परीक्षा करते हैं तो हमारी भाग्यदेवी अवश्य सहायता करती है । हमको अपनी शक्ति की परीक्षा का कोई अवसर तुच्छ न समझना चाहिये । प्रत्येक विषय की सम्पूर्णता पर लक्ष्य देने से ही हम अपनी वर्तमान स्थिति को यथासंभव उन्नत बना सकते हैं ।"

—वाउडलर ।

वर्ष २ | बिजनौर, फाल्गुन शुक्ला ७ वीर सम्वत् २४५१
 १ मार्च, सन् १९२५ | अङ्क ९

* स्वप्न *

हुआ ज्ञानरवि-उदय दिशामें लाली छाई । प्रकट जगत् के तन्त्र पड़े भूधर क्या खाई ।।
बुध मराल हैं खड़े शारदा गङ्गा के तट । खुले हुए हैं सभी आज स्वर्गों में के पट ।।
भरे अखाड़े हुए मान्य उपदेशक जन के । उमड़ पड़े खिल सकल सुमन उपवन क्या वन के ।।
नयतरङ्गिणी सोर्म्मि भुजा के पुष्कल बल से । हटा रही अन्याय-दुर्ग नभ से, भूतल से ।।
श्रीकान्ता के चरण चूम हैं रहे चराचर । पड़े हुए हैं गहन गर्त्त में सकल निशाचर ।।
मिटा स्वप्न-संसार रसातल में समाज है । अस्त हुआ विज्ञान-सूर्य व पिशाच-राज है ।।
धो बैठे कर सम्पत्ति से, गले मिले आपत्ति के ।
क्या भला स्वप्नसाम्राज्य से ? मिलें न सुख जो युक्ति के ।।

—भुवनेन्द्र

श्री अतिशय क्षेत्र देवगढ़ जी

उक्त तीर्थ ललितपुर से १९ मील और आखजौन से ७ मील की दूरी पर है। यह ग्राम बेतवा नदी के किनारे बसा हुआ है। पूर्वकाल में यहां पर जैनियों की गृह-संख्या बहुत थी परन्तु काल के प्रभाव से आजकल यहां पर सिवाय एक पुजारी के और कोई भी जैन नहीं पाया जाता। इसी ग्राम के सन्निकट एक ३०० फुट ऊँची पहाड़ी है जिस पर करनाली का किला बना हुआ है। अब भी उस के भग्नावशेष पाए जाते हैं। इस पर्वतराज देवगढ़ के ऊपर जैनियों के कई एक विशाल मंदिर पाए जाते हैं। उन मन्दिरों की सजावट और बनावट को देखकर एकबार फिर भारत की प्राचीन कारीगरी का दृश्य आंखों के सामने झूलने लगता है। मन्दिरों में जितनी भी प्रतिमायें विराजमान हैं, सब खंडित हैं। केवल एक खुला हुआ बरामदा है जिसके बीच एक चबूतरा है जिस पर अगणित खंडित प्रतिमाएँ विराजमान हैं। उनमें एक प्रतिमा ही पूजनीय है उसी के कारण पुजारी यहां पर पूजा के लिये नित्य प्रति आता है। एक मन्दिर में एक छोटा सा शिलालेख है जिसमें लिखा हुआ है कि सम्वत् १४९३ ई० में श्रीयुक्त सिंघाई नन्हेलाल जी ने इसे निर्माण किया था। बरामदे के सामने १६॥ फीट की दूरी पर स्थित एक छत्र है जिसके एक खम्भे पर एक शिलालेख है जिसको राजा भोजदेव ने निर्माण कराया था। यह शाक्य संवत् ७९ का पाया जाता है। पर्वतराज पर खड़े होकर चहुं ओर दृष्टिपात करने से जो आनन्द आता है वह वचनातीत है। इसके पश्चिम की ओर बेतवा नदी कलकल शब्द करती हुई अपने प्रीतम प्यारे से मिलने के लिये बही चली जाती है। इस पर्वत के पश्चिम की ओर दो घाटी हैं जिनका नाम नहरघाटी और राजघाटी है। इन्हीं घाटियों द्वारा सारी पहाड़ी का बरसाती पानी नदी में जाता है। ये घाटियां ठोस चट्टान में से बनाई गई हैं। गुप्तवंशीय किसी राजा की बनवाई हुई मालूम होती हैं। राजघाटी के किनारे एक छोटा सा आठ लाईन का शिलालेख होने से पता चलता है कि यह राजा वत्स का बनवाया हुआ है जोकि कीर्त्तिवर्मा चन्देल का वजीरआज़म था। इसी के नाम से किले का नाम कीर्तिगिरि दुर्ग रक्खा गया था–पहाड़ी के पश्चिम में एक गुफा है। जिसका नाम सिद्धगुफा है। उस तक पहुंचने के लिये पहाड़ी की चोटी से सीढ़ियां बनी हुई हैं। यह भी चट्टान में कुरेद कर बनाई गई हैं। पहाड़ी के पूरब की तलहटी में एक बावड़ी है जो सदैव मुँह से भरी रहती है। पानी न आने से अब उस में काई जमी रहती है।

पहाड़ी से उतर कर मैदान में एक डाक बङ्गला है जिसमें आफीसर लोग आकर ठहरते हैं उससे थोड़ी दूर उत्तर की ओर एक दशावतार या सागरमोर का मन्दिर है। जालौन के बुन्देला वीर धुरमङ्गदसिंह ने अपनी आयु के अन्तिम दिवस इसी

पावन ग्राम में व्यतीत किये थे। आप १७६४ ई० में मरे थे। आपके समय यह ग्राम बड़ा ही सुन्दर तथा मनोहर था-इसी वंशवाले ने दतिया का दुर्ग भी बनवाया था। अस्तु।

पहले इसके ऊपर किसी की भी दृष्टि नहीं थी, परन्तु जिस साल गवर्नमेण्ट ने अपना नोटिस इस पर कब्जा करने के लिये निकाला तो उसी साल ललितपुर के स्वर्गीय श्रीमान् सेठ मथुरादास जी टडैया का ध्यान उस ओर गया और आप उसको प्राप्त करने की कोशिश में लग गये। आज वह दिन है जब कि यह पावनक्षेत्र अपने हाथ में आया जाता है। अब समाज के श्रीमानों से मेरी यही प्रार्थना है कि आप लोग इस क्षेत्र के दर्शन एक बार२ अवश्य ही कर आइये। इसको देखकर आपका चित्त ऐसा प्रसन्न हो जायगा कि आप बार २ इसके दर्शनों के लिये लालायित रहेंगे।

मेरी उत्कट इच्छा तथा भावना है कि यदि एक बार यहाँ पर प्रति वर्ष मेला लगा करे तो यह क्षेत्र भी प्रसिद्ध होजाय और सारा काम बनजाय। अभी वहाँ कई एक बातों की कमी है। आशा है कि संयुक्त प्रान्तीय सभा के मन्त्री श्रीमान बाबू रूपचंद जी कानपुर जोकि इस क्षेत्रसम्बन्धी कमेटी के भी मन्त्री हैं, इस ओर ध्यान देंगे।

समाजसेवक—
नाथूराम सिंघई जैन

जैन जाति और सङ्गठन

जैन धर्मानुयाइयों के पतन का एक मात्र कारण उन में संगठन का अभाव है। संसार में जो २ जाति जब जब ह्रास को प्राप्त हुई जातीय संगठन या जातीय बंधन को छिन्न भिन्न कर डालने से हुई। रूस की संगठन शक्ति टूट जाने पर ज़ार गद्दी से उतार दिये गये। पश्चात् उस देश की जो दुर्व्यवस्था हुई वह सर्व विदित है। जर्मनी ने लड़ाई के समय संगठन शक्ति का सत्यानाश कर डाला फल यह हुआ कि बृटिश गवर्नमेन्ट से हार स्वीकार करनी पड़ी। भारतवर्ष भी अपने जातीय संगठन को छोड़ देने से आज परमुखापेक्षी हो रहा है। इसी प्रकार जैन जाति भी चिरकाल से संगठन शक्ति से मुख मोड़े हुए है और समस्त जातीय बन्धनों को ढीले किये हुए है। इस ही कारण आज साढ़े बारह लाख जैनी होते हुए भी वे कुछ इने गिने पारसियों के मुकाबिले में तुच्छ एवं न होने के तुल्य हैं। जिस जैनधर्म का साहित्य सर्वधर्मों के साहित्य से श्रेष्ठ और अचल है और जिसकी अन्य २ विद्वानों ने भी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। जिस जैन धर्म का विश्वव्यापी अहिंसाधर्म संसार के कोने कोने में फैल चुका है और जिस के अनुयाइयों ने दिग्विजई होकर एक समय समस्त संसार को जातीय संगठन से संगठित किया था, वही आज संगठन को इस प्रकार भूली हुई है जैसे स्वप्न की बात हो! संसार में जब किसी जाति देश, समुदाय या राष्ट्र ने उन्नति की है तो सिर्फ संगठन

शक्ति के निमित्त से। उन्नति शिखर पर चढ़ने के लिए पहिले संगठनरूपी सिड़ी की परमावश्यकता है, बिना प्रथम सिड़ी पर पद (चरण) रखे मनुष्य ऊपर नहीं चढ़ सकता।

राजा जब किसी पर चढ़ाई करता है तो प्रथम उसे उचित रीति से फौज़ का संगठन करना पड़ता है। वणिक जब व्यापार का उद्यम होता है तो प्रथम ही द्रव्य का यथासंभव संगठन कर लेता है। एक ब्राह्मण आचार्य्य, जब शिक्षारूपी कार्य-क्षेत्र में पदार्पण करता है तो प्रथम ही विद्या का संगठन अच्छी प्रकार कर लेता है। सारांश यह है कि उन्नताकांक्षी पुरुष कार्य्यारंभ से प्रथम ही भले प्रकार संगठन को कर लेता है और ध्येय तक पहुंच जाता है छोटे २ पदार्थ संगठन होने पर बड़े २ कार्य्यों को क्षणमात्र में कर डालते हैं जब कि उसी ओर एक शक्ति कुछ कर नहीं सकी। जिस बोझे को एक मनुष्य उठा नहीं सका उस ही बोझे को १० शक्तियां मिलकर सहज ही में उठा सकी हैं। ज्ञान ज्ञान को भी एकत्रित होने पर सहायता करता है। जैसे एक पुरुष की मस्तिष्कशक्ति किसी विषय को निर्धारित करने में रुकावट देती है परन्तु वही गम्भीर विषय कुछ चंद ज्ञान शक्तियां संगठित होकर सुचारुरूपमें हलकर डालती हैं अतएव जहां पर संगठन नहीं है वहां समाज, देश, राष्ट्र, आदि सर्व ही पतित एवं ह्रास को प्राप्त हो जाते है। वे देश, जाति, समाज आदि विद्या, ज्ञान, ऐश्वर्य्य, आर्थिक व नैतिक उन्नतिसे वंचित रहते हैं क्षीण शक्ति होकर परमुखापेक्षी हो जाते हैं। भारतवर्ष भी संगठन शक्तिको खोकर अपनी विद्या, ज्ञान शिल्पकारी, कृषि, वाणिज्य आदि से हाथ धो बैठा है। आज किसी वस्तु की आवश्यकता होने पर उस की पूर्ति विदेशी वस्तु से ही होती है, जैसे घड़ी, चश्मा, मोटर, रेल, वायुयान और छोटी से छोटी सुई तक, इन सब वस्तुओंके लिए विदेशियों का मुख देखना पड़ता है। आज विदेशी सज्जन हमको दियासलाई देना बन्द करदें तो अग्नि आदि त्यार करना भी हमारे लिए कठिन साध्य होजाय। अब इसी प्रकार अन्य भी बहुत सी चीजों का जोकि हमारे दैनिक कार्य्य में सहायता देती हैं भारतवर्ष में मिलना असम्भव ही है। इस सर्व अभाव व असुविधा का कारण एक मात्र संगठन का अभाव है। यदि देश में पूर्ववत् संगठन होता तो हमारी आवश्यक वस्तुओं का क्यों अभाव हो जाता– हम भारतवासी जन अपनी आवश्यकता पूर्त्ति की सामिग्री अच्छी और सस्ती समयानुसार सदैव त्यार कर लिया करते थे। यहां तक कि बहुत सी वस्तुएं विदेश भी भेजा करते थे जिन को विदेशी सज्जन देख २ कर चकित एवं विस्मित होते थे। आज हमारी संगठन शक्ति टूटफूट जाने पर हमारी समस्त कारीगरी नष्ट हो गयी। कुछ तो हम भूल-गए और कुछ रही सही थी वह सब विदेशी कारी-गर हम से हर प्रकार से छीन लेगए। आज हम हर तरह प्रत्येक प्रकार से निर्धन एवं उदरपूर्ति के लिए लाचारसे हो रहे हैं। यहां तक कि हम रो भी नहीं सकते! और रोवें तो कोई सुनने वाला नहीं। एक दूसरे को देख कर घृणा करता है। दूसरे हम में अपने भाई की बात सुनने की हृदयाकांक्षा नहीं है। ऐसे स्वार्थी कायर नीच प्रकृति के लोग इस समय परस्पर वैमनस्य बढ़ाने में उत्तेजना दे रहे हैं! फिर बताइए कि

उन्नति का सवाल किस प्रकार हल होसकता है आज यही अवस्था हमारी प्यारी जैन समाज की होरही है। जैन समाज ने तो सबसे ही बढ़ कर विडंबना रूप धारण किया है। यहां तो प्रेम, वात्सल्य, व करुणा भाव, नाममात्र एवं लिखने और बोलने के ही लिए रह गया है। एक जैनी दूसरे जैनी की विभूति व ऐश्वर्य्य देख कर हृदय को कलुषित करता है। वैमनस्य राजा का साम्राज्य, प्रति मनुष्य प्रति समुदाय और प्रति जाति में होरहा है। फूट ने घर घर डेरे डाल लिए हैं। एक पंडित दूसरे विद्वान को देखकर घुटा करता है। और दूसरे की प्रभुता को देखकर खेदित होता है एक व्यापारी दूसरे व्यापारी के चलते हुए व्यापार को देखकर कुढ़ता है यहां तक कि एक दूसरे की भलाई, सज्जनता, ऐश्वर्य्यता, देख नहीं सक्ता। यही कारण है कि आज हम जैनी भाई एक उत्तम सार्वभौमिक धर्म को रखते हुए भी दूसरों के विचारों में न कुछ के बराबर एवं घृणा के पात्र हैं। संसार में हमारी कदर नहीं, लोग हमको नास्तिक कह कर पुकारते हैं, संसार की तमाम छोटी २ जातियों में भी हमारी गणना नहीं होती, हम जातीय एवं धार्मिक नियमों को भी भलेप्रकार पालन नहीं करसके, कौंसिलों में भी हमारी पूंछ नहीं होती, प्रत्येक प्रकार से हम दबे व छुपे हुए हैं। यदि हमारा उचित रूप से संगठन होता तो हम आज जो पग २ पर पद-दलित होरहे हैं सो न होते और समस्त सभ्य समाज को पारसियों की तरह दिखादेते कि हम जैनी ऐसे हैं और हमारा जैन साहित्य ऐसा है। इस लिए प्यारे जैनी भाइयों अगर आप जैन धर्म व समाज की उन्नति के इच्छुक हैं तो अपने भावों से वे कुटिल भाव, वे प्रेम रहित विचार, वे धर्म रहित आचरण त्यागिए, और मैदान में आजाइए और एक ऐसा अपूर्व संगठन करिए जिसमें समस्त जैनी भाई खुले हृदय से प्रेममय होकर एक सूत्र में बंधें। जो भाई चिरकाल से अपने से कारणवश पृथक् होरहे हैं उन को भी यथोचित नियमानुसार संगठन में संगठित कीजिए और शक्ति बनाकर संसार के कार्य क्षेत्र में कुछ कर दिखाइए। अन्यथा उन्नति की वांछा करना आकाश कुसुमवत है।

समाज सेवक—
अमरचन्द जैन

बन्धु

बहुत हो चुका, अब भी चेतो, बीती उसे बीत जाने दो।
आता है सुन्दर भविष्य, अपनाओ, उसको आजाने दो॥ १॥
लड़ लड़ कर समाज की सेवा बहुत हो चुकी है अब मानो।
युवक समूह जग रहा, उसको कार्यक्षेत्र में आजाने दो॥ २॥
धर्म-प्रेमियों, धर्म-मार्ग में, क्यों अधर्म का जाल बिछा है?
छल छन्दों के छेद मिटा दो, कलह-काण्ड को मिट जाने दो॥ ३॥

भाई —भाई भाई हो आखिर, भूल न क्या अपनी भूलोगे ।
भैया, सुदिन कर रहा मैया, अब तो उसको हँस जाने दो ॥ ४ ॥
उसको कलपाने में क्या कल ही आता कुछ फलपाते हैं ।
द्वेष दूर सरसे सुख सुन्दर, वह फलदायक कल आने दो ॥ ५ ॥
उठो, बन्धुवर, गले मिलो, सद्भाव सूर्य्य का उदय हो चुका ।
द्वेष निशा भग रही, हृदय की प्रेम कली अब खिल जाने दो ॥ ६ ॥

—भारतीय ।

युवकों से दो शब्द

यदि आप चाहते हैं कि जैन जाति की नैया मँझधार में डूबने से बचे तो कार्यक्षेत्र में आइए। जो इस जाति के प्रति अपना दायित्व अब तक अनुभव नहीं कर सके उन्हें समझाने में समय खोना व्यर्थ है जिन के हृदय में उमंग है, वे अपना संगठन कर लें। और बिना आडम्बर, चुपचाप, काम में लग जांय।

क्या काम किये जांय ? वस्तुतः यह प्रश्न बड़ा आवश्यक है और विद्वान् इस के उत्तर में विशद विवेचना कर सकते हैं। पर आप यदि बातों के जमा खर्च से बचना चाहते हैं तो इस प्रश्न का उत्तर सीधे अपने जी से पूछिये। आप किस लिये काम करना चाहते हैं ?

अपने नाम के लिए ? तो लेख लिखिए, एक पक्ष पर आक्षेप कीजिए, और नहीं तो किसी पत्र के एडीटर बन जाइए। अर्थसिद्धि के लिए ? इस का भी सीधा मार्ग है। किसी संस्था में स्थान प्राप्त कर लीजिये, नाम का नाम, धर्म का काम और अर्थ-सिद्धि भी-सो भी इस अहसान के साथ जैसा कि हमारे गोरे प्रभु,नज़ाकत के साथ भारत वासियों पर ज़ाहिर किया करते हैं ! मनोरञ्जन के लिए ? तो बस सभा-सोसाइटियों की शरण लीजिये। यहां से अच्छा नाटक अन्यत्र देखने को न मिल सकेगा।

शायद, आप का उद्देश्य इतना पतित नहीं होगा ? आप समाज की सच्ची सेवा करने की शुभ भावना रखते हैं। अपने सदुद्योगरूपी सुधार सलिल से मन प्रायः जातीय गौरव वृक्ष में जीवन संचार करने की इच्छा रखते हैं। आप चाहते हैं कि जैन-वाटिका, फिर से,हरित पल्लवों से शोभनीय बने। क्या सचमुच आप ऐसा चाहते हैं ?

धृष्टता है, पर उसे क्षमा कीजिये। यदि आप प्यारी जैन जाति को मरणशैया से बचाना चाहते हैं तो आप को महारथानों की मिथ्या आशकाओं

को अपनाने का अभ्यास तो करना ही होगा। तब मेरी धृष्टता तो अकारण नहीं है। मैं फिर जानना चाहता हूं कि आप के हृदय में जैन-जाति की रक्षा के सद्भावों का प्रादुर्भाव किन हेतुओं के आधार पर हुआ है?

यदि आप का यह विचार है कि हम अन्य जाति वालों के देखते हुए बहुत पीछे हैं। हमारा साहित्य अज्ञान में, हमारा ऐतिहासिक महत्व अभी सर्व सम्मत प्रमाण नहीं हुआ है, हम शिक्षा धन और राजनैतिक वैभव में और लोगों से पीछे हैं तो आप अपने स्थान से ही जैन संगठन का काम प्रारम्भ कर दीजिये। शिक्षा प्रचार और और समाज सुधार की सुनिश्चित स्कीम काम में लाइए।

किन्तु एक बात का तो विचार कीजिये। वस्तुतः हमें 'जैन जाति" शब्द को व्यवहृत करने का अधिकार ही क्या है? हम विभिन्न जाति वासी जिस जैन धर्म की महिमा के कारण परस्पर जातियता का अनुभव करते हैं। क्या उस संसार निवारी धर्म के प्रति भी हमारे हृदय में उत्साह उठ रहा है? इस असार संसार की यंत्रणाओं के चंगुल से बचा कर अनन्त शान्ति का सुस्वाद देने वाले स्वधर्म के लिए भी क्या हम कुछ करना चाहते हैं।

यदि हमारे हृदय में, जैनधर्म की अटल श्रद्धा ने स्थान नहीं लिया है, यदि उस की सर्वोपयोगिता पर विमुग्ध हो उसके प्रचार के लिए हमारे हृदय आन्दोलित नहीं हो रहे तो हमारा जाति बाहरी है। इस में हमारा 'ऊपरीपन' बहुत कम है। यह [illegible] है कि भ्रमवश हम उसे अपना आन्तरिक भाव ही समझ बैठें किन्तु वास्तव में वह उस विचार धारा तथा का अस्थाई प्रभाव मात्र है जो समाचारपत्रों और नेताओं की धूंआधार वक्तृताओं ने हमारे चारों ओर फैला रखा है।

सावधान! जवानी के जोश में धोखा न खाइये!! इतने आगे न बढ़िये कि पीछे से इमारत गिरती ही जाय। आप जैन जाति का उद्धार करने चले हैं न? पहले अपने जैनत्व की पड़ताल कीजिये। क्या आप श्रावक हैं? दर्शन, न्याया-न्याय, अभक्ष्य त्याग, छना जल पान, रात्रिभोजन त्याग की प्रतिज्ञा क्या आप के है? घबराते क्यों हैं? None Sence कहने से काम नहीं चलेगा। क्या कम से कम पंच अणुव्रत के धारी आप हैं? श्रावक की कौन सी प्रतिमा के आप धारी हैं? अष्ट मूल गुण का धारण कर क्या उसका पालन कर रहे हैं?

नहीं-तो रहने दीजिये। उद्धार करने की चर्चा छोड़ दीजिये। पहले अपने उद्धार में लग जाइए। आत्म-संयम और इन्द्रिय निग्रह का अभ्यास कीजिये। प्रारम्भ में कुछ कठिनता होगी। पर प्रतिज्ञा कर लेने पर इस स्वाभाविक सुपथ पर आप स्वानन्द की झलक के स्वतः दर्शन पा जायँगे। फिर आपके प्रयत्नों का प्रभाव सात्विक होगा और जैनजाति का उद्धार अवश्यम्भावी।

संगठन होते हैं और चार दिन की चटक दिखाकर लुप्त प्राय हो जाते हैं। इससे 'युवक-संगठन' की शिफारिश करते हुए भी जी हिचकता है। मगर प्रयत्न करने में हानि ही क्या है जाति के भाग्य की अन्तिम परीक्षा भी हो जाने दीजिये। 'परिषद' के अन्तर्गत ऐसा संगठन कीजिये जिस

में वे ही बन्धु शामिल हो सकें जो—

१ जैनत्व का ज्वलन्त प्रभाव रखते हों।

२ अधिकार के बजाय कर्तव्य के अधिक प्रेमी हों।

३ अपनी आयु का निश्चित भाग स्वेच्छा से जातीय हित में व्यय करें।

४ पुकार पर, शारीरिक कष्ट सहन, परिश्रम व त्याग के लिए तैयार हों।

यदि ऐसे वीरों का संघ स्थापित हो जाय, तो निश्चय ही जैनजाति के सुदिन आते देर न लगेगी। कलह और अन्धकार के काले बादल वीर संघ की प्रथम हुंकार में विलीन हो जावेंगे और जैन गगन मंडल में प्रेम आशा तथा जातीयता के दमकते हुए नक्षत्र शोभायमान दृष्टि आवेंगे।

रूस का एक सिद्धान्त है "जो कुछ परिश्रम करे वही मत दे सके" कांग्रेस का 'चरखामताधिकार' प्रस्ताव भी उसकी प्रतिध्वनि स्वरूप ही है। इस में एक अत्यन्त महत्वास्पद तत्व विहित है। जो कुछ करता है उस का मत भी वज़नदार होता है और उसी के मतको कुछ महत्व मिलना चाहिये। जातियों के निर्माण और पुनः संजीवन जैसे कार्य में चंचला लक्ष्मी को प्रधानता देना जातीय जड़ पर कुठाराघात करना है, युवकों। को इस वक्तव्य पर विचार करना चाहिये। और करना चाहिये वाद-विवाद त्याग कर चुपचाप अपना कार्य।

न रोके नूर तो हम जाएं अर्श से ऊँचे;
हमारी राह से पत्थर ज़रा हटा देना।

—'वीर-सेवक'
रामस्वरूप भारतीय'

जैन धर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी का भाषण।

करहल बिम्बप्रतिष्ठोत्सव के समय श्री सं० प्रा० दि० जैन सभा के नैमित्तिक अधिवेशन के सभापति की हैसियत से पूज्य ब्र० जीने जो सारगर्भित व्याख्यान दिया था उसको उपयोगी जानकर हम पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं—आपने पहिले ही सभाकी सफलता के लिये सभासदों के सहयोग की आवश्यक्ता प्रगट की थी फिर आपने अपने विचारानुसार निम्नबातों पर प्रकाश डाला था। (सभा क्या है? वह कब से है? इस को आपने दर्शाया था और उदाहरण के रूप में तीर्थंकर भगवान का समवशरण पेश किया था। प्रणाली अकृत्रिम ही है। इन्द्रों की सभादि इसको साक्षी हैं। पहले तो भारत में राज्यशासन भी सभा के बल हो चुका है। जातिका उत्थान भी सभाद्वारा ही हो सका है। इस सभा का कर्तव्य है कि इस प्रान्त के जैनियों की उन्नति कैसे हो

और वह उपाय अमल में कैसे लाये जावें। प्रस्ताव कर लेना सुगम है परन्तु कार्य करना कठिन है। बिना स्वार्थत्यागियोंके कार्य हो नहीं सकता। इस लिये सभा की स्थापना जब हो जब कुछ स्वार्थ त्यागी तैयार होगये हों। निःस्वार्थभाव के अभाव में सभा की स्थापना फिजूल है। उदाहरण रूप लन्दन में सन् १८०० में स्थापित ईसाइयों की सभा है। उसके निःस्वार्थी कार्यकर्त्ताओं ने ईसाई धर्म का प्रचार दुनियां में कर दिया। १००, १५० वर्ष करोड़ों ग्रन्थ अपने धर्म के वितरण कर दिये। बस निःस्वार्थभाव से प्रेरित कार्यकर्त्ताओं द्वारा ही कार्य होता है। इस सभामें भी ऐसे एक कार्यकर्त्ता बाबू रूपचन्द जी हैं। आपने जो कार्य कोलारस और देवगढ़ के संबंधमें किये हैं वह सर्व प्रकट हैं। अब प्रश्न यह है कि इस सभा को क्या करना चाहिये? इस पर बड़ा भारी बोझा है उसको हलका करने को उसे निम्न बातों पर ध्यान देना चाहियेः—

(१) दि० जैनधर्म की रक्षा करे। धर्म के स्तंभ तीर्थक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र मन्दिर व १८ तीर्थंकरों की जन्मनगरी इस प्रांत में है। इन तमाम का प्रबन्ध सभा पर है। वहां पर इस समय प्रबन्ध सुचारुरूप में नहीं है। तीर्थक्षेत्र कमेटी की सम्मति से सभाको इस ओर कार्य करना चाहिये। प्रत्येक स्थान के मन्दिर की देखभाल रखना भी सभा का कार्य है। धर्मोन्नति हेतु उनकी व्यवस्था की इसे जांच करना चाहिये। यह जांच चाहे पञ्चायती द्वारा करे अथवा कानूनी रीति से। प्रत्येक मन्दिर में जमा करने को भंडार नहीं है। प्रबन्ध के सिवाय जो बचे उसे खर्चमें लाना लाज़मीहै। इस बचे हुए द्रव्य को चाहे जहां खर्च करो, यह आवश्यक नहीं है कि यह उस ही मन्दिर में हो। चाहे कहीं जीर्णोद्धार में तीर्थों की रक्षा में, ग्रन्थों के उद्धार में, पुस्तकालयों की स्थापना में, प्रत्येक कार्य में प्रत्येक भंडार का उपयोग होना चाहिये। सभा यदि जांच करे तो उसे सहायता की भी आवश्यकता न पड़े।

(२) शिक्षाप्रचार और विद्यालयों की रक्षा का भार सभा पर है। १६ वर्ष हुए बनारस में स्याद्वादविद्यालय स्थापित हुआ। अब वह आदर्शरूप विद्यालय हो जाय इसका प्रबन्ध हो। हाईस्कूल बड़ौत से और बोर्डिङ्गहाउसेस अलाहाबाद, आगरा और मेरठ में जैनछात्रों में धर्म का प्रचार कर रहे हैं। इनकी जांच करना सभा का कर्तव्य है। जीवदया प्र० सभा आगरा अच्छा कार्य कर रही है। उसे सुरक्षित करना चाहिये।

(३) इनके अतिरिक्त यह सभा धर्मोन्नति के लिये (अ) नगर, कस्बे, मुहल्ले जहां जैसी हो वहां यदि दर्शन का लाभ न हो तो मन्दिरों की स्थापना की व्यवस्था करे। (ब) नौ देवताओं में मन्दिर भी देवता है—सो जहां मन्दिर जीर्ण हो उसका वहां उद्धार करे (क) प्राचीन जैन पुरातत्व का उद्धार करे (ख) जैनियों की बस्ती अधिक परन्तु कोई कालेज नहीं है। कालेज कोई हउवा नहीं है। कालेज महाविद्यालय है। इसके प्रताप से जाति में जातीयता आती है। अलीगढ़ में मुसलमानों का कालिज इसका उदाहरण है। जैनियों की कोई संस्था नहीं है जहां लौकिक और धार्मिक शिक्षा साथ २ दी जासके। इसी से उन में जातीयता नहीं है धर्म के लिये मर मिटने का भाव उनमें नहीं आया। यह सभा सं० प्रान्त में एक कालिज खोले। उसके एक भाग में Oriental प्राच्य धार्मिक शिक्षा का

प्रवेश हो तथा दूसरे में लौकिक Scichel आदि की व्यवस्था हो। इनके लिये केवल १० लाख रुपये की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति शीघ्र हो सकती है। हर साल प्रतिष्ठायें होती हैं। एक बिम्बप्रतिष्ठा में एक लाख स्वाहा होना मामूली बात है। यदि एक वर्ष के लिये भी प्रतिष्ठायें रोक दी जावें तो एक ही वर्ष में कालिज स्थापित हो जावे। इसी कालेज के लिये मुरादाबाद के श्री मुकुन्दीलाल व चुन्नीलाल जी ने गांव २ चन्दे इकट्ठे किये। परन्तु दुःख है कि लापरवाही से उसकी पूर्ति अभी तक नहीं हुई। सं० प्रा० सभा को इस प्रान्त में जातीयता का झन्डा गाड़ देना चाहिये।

(४) ऐसा कोई पुस्तकालय जैनियों में नहीं है जिसमें जैनधर्म के सर्व ग्रन्थ मिलते हों। हमारे प्राचीन पुरुष पुस्तकालय का महत्त्व जानते थे। प्रत्येक मन्दिर में बड़े २ ग्रन्थभण्डार थे। इन गृन्थ भण्डारों में अधिकांश आक्रमणों की कृपा से नष्ट हो गये। बचे खुचों में आधे दीमक चाट गई। अब एक महत् पुस्तकालय किसी स्थान पर यह सभा स्थापन करे। वहां सर्व प्रकार के गृन्थ लिखे जा सकें। अलाहाबाद जैन बोर्डिङ्ग के अधिवेशन के समय डा० झा ने वहां ऐसे पुस्तकालय की आवश्यकता बतलाई थी। सभा चाहे तो वहां उसे स्थापित करे।

(५) कालिज के अन्तर्गत ज़िला स्कूल प्रवेशिका तक संस्कृत में मैट्रिक तक अंग्रेजी में शिक्षा देनेवाले स्थापित करे। इनका संबन्ध कालिज से रहे। इनके साथ छात्रालय भी हों। इनके अतिरिक्त स्थान २ पर प्राथमिक शालायें स्थापित करे। बालकों ही के लिये ही नहीं प्रत्युत बालिकाओं के लिये भी शिक्षालय स्थापित होना चाहिये। यदि एक स्त्री महाविद्यालय स्थापित हो तो उत्तम हो।

अभी तक तो विशेषकर धर्मोन्नति की ओर विचार प्रगट हुये हैं। अब समाजोन्नति के विषय में कहना उपयुक्त है। यह मानतीय है कि जो समाज लोकमान्य व राज्यमान्य हो उसकी दृढ़ता बढ़ती है। जैन समाज को भी ऐसा ही बनाना आवश्यक है। वास्तव में समाज बहुत से पुरुषों स्त्रियों के समुदाय का नाम है। अतएव समाजोन्नति के हेतु पहिला कर्तव्य प्रत्येक पुरुष स्त्री को अपनी उन्नति करना है। धर्म, अर्थ, काम पुरुषार्थ से उन्नति होती है। जो होना होगा सो होगा यह जैन सिद्धान्त नहीं कहता। पुरुषार्थ करो सिद्धि होगी। कर्म से ही सब कुछ होता तो पुरुषार्थ से मुक्ति न होती। अतएव आत्मधर्म का मनन करो पुरुषार्थ स्वतंत्र वस्तु है। कम के जाने से जो आत्म. बल प्रकट हो वह आत्माकी वस्तु होगी। वह हमारी है। और सच्चा पुरुषार्थ है। इसी पुरुषार्थ से धर्म, अर्थ,काम का सेवन करना चाहिये। धर्म पुरुषार्थ के सेवन से वह शक्तियाँ आजाती हैं जो अर्थ पुरुषार्थ को ला रखते हैं। परिणामों से ही पाप, पुण्य और मोक्ष है। इसलिये परिणामों को अशुभमार्ग से हटाकर शुभमार्ग में लगाना चाहिये। धर्म के हेतु षटावश्यक का पालन नित्य करना चाहिये। परन्तु यह मान के आवेश में नहीं और न पुण्यके भाव से करना चाहिये। यह मात्र परिणामों की निर्मलता के लिये करना चाहिये। धर्म के बाद अर्थ सिद्धि में उपयोग को लगाओ। अर्थ सिद्धि के षट् कर्म-असि, मसि, कृषि, शिल्पादि-बताये हैं। इन के द्वारा द्रव्य कमाना चाहिये। धर्म का आश्रय

कर के द्रव्य कमाना योग्य नहीं है। हिंसा झूठ चोरी और अतितृष्णा से बचकर द्रव्य का उपार्जन करो। दूसरे का गला काटकर भला न होगा न्याय से कमाओ, अन्याय से कमाओगे तो १० वर्ष रहेगा ११वें नष्ट होजायगा। न्याय परायण मज़दूर आनन्द में रहते हैं। बेईमान नर्क में पड़ते है। न्याय की सड़क से मार्ग की प्राप्ति होगी। जैनी गृहस्थ जुये का सट्टे का काम करते हैं। वस्तुतः वह पुरुषार्थहीन हैं। तीसरा काम पुरुषार्थ है। परन्तु काम पुरुषार्थ स्त्री भोगों में अंध होना नहीं है। पांचों इन्द्रियों के भोग मर्यादा पूर्वक सेवन करना उचित है। इससे जीवन भी प्रफुल्लित रहता है तथा वीर संतान उत्पन्न होती है। बस वीर संतान के योग्य होजाने पर अर्थ काम को उसके सुपुर्द कर धर्म पुरुषार्थ में लगना चाहिये। यही प्राचीन रिवाज़ हैं।

अब कुटुम्ब की ओर दृष्टि डालिये। स्त्री पुरुष, भाई बहिन आदि का मेल कुटुम्ब कहलाता है। वह कुटुम्ब नहीं कहा जासकता जहां मेल न हो। प्रेमपूर्वक बर्ताव व धर्म पूर्वक रक्षा के लिये संस्कारों के प्रचार की आवश्यकता है। संस्कार ५३ हैं। संस्कार का महत्व विशेष है उस ही की बदौलत मूर्ति को अरहंत मुद्रा से मुद्रित करदेते हैं। इसी तरह से बालक के स्वभावों को शुद्ध करना है। संस्कारित करने से ही संतान मनुष्य होती है। जन्म देने से मनुष्य नहीं होती। पत्थर शान पर चढ़ जाने से ही तेज़ होता है। संतान शिक्षा से ही उत्तम होती है। यदि संतान को जन्म दो तो उसे शिक्षा देना ठान लो। बालकों के साथ कन्याओं की रक्षा भी ठीक करो। कन्या यदि तीर्थंकर की माँ न होती तो तीर्थंकर कहां से आते ? वीर पुत्र की माँ का अनादर नाश का कारण है। पुत्री को भी वैसे योग्य बनाओ जैसे पुत्र को। बेशक कन्या तुम्हारे घर नहीं रहती। दूसरे के यहां चली जाती है, परन्तु दूसरे की कन्या भी तो तुम्हारे यहां आती है। इसलिये कन्याओं को पूर्ण दक्ष बनाओ। फिर लड़का लड़कियों का हित देखो। उनका विवाह तबकरो जब वह कमाने योग्य हो जाँय। वीर्य पक्का हो तब बीस वर्ष में विवाह करो। कन्याओं को तबतक शिक्षा दे योग्य गृहणी बनादो। प्रौढ़ावस्थामें यदि शादी हो तो गर्भस्थिति हो और योग्य संतान उत्पन्न हो। शादी उसके साथ हो, जिससे शादी हो-हरदिल शाद हो। काम शास्त्र में स्त्री पुरुष के लक्षण इसीलिये बतलाये हैं। अन्याय है अनमेल विवाह-लोभ में वृद्ध विवाह करना यह बड़ा पाप है। योग्य विवाह से दस महीने में गोद भरजा सकती है। फिर दैवी विप्लव में उस एक संतान से वह खुशखुर्रम रह सकती है। विधवा के यदि संतान न हो तो उस विधवा को वैराग्य के कपड़े पहिनाना चाहिये। ज्ञान के भूषण धारण करना चाहिये। खेद है कि जैनी उनके आभूषण पहिनाते हैं। उनके सामने कामभोग करते और चाहते हैं उन से शीलपने का व्यवहार। इसओर स्व० सेठ माणिकचन्द जी का अनुकरण करना चाहिये उन्होंने अपनी विधवा पुत्री श्री मगनबाई को ज्ञान संपन्न योग्य पंडिता स्वपरकल्याणी बनादिया। श्रीमती कुंकुबाई-ललिताबाई-चंदाबाई आदि के आदर्श आंखों अगाड़ी है। इन पूजनीय बहिनों का आदर करो। निरादर मत करो। विधवाओं से दासी कर्म मतलो। पढ़ने के लिये रहाना मत

बताओ। ऐसा कुटुम्ब स्वार्थी है। उन को आदर से देख कर कार्यकर्त्ता बना दो तो शिक्षा प्रचारादि कार्य सुगमता से हो कुटुम्ब में गृहस्थाचार्य होना चाहिये चौधरी जो मिलते हैं वह धनवानों का पक्ष लेते हैं गरीबों का निरादर करते हैं। इसलिये कुटुम्ब में एक गृहस्थाचार्य हो जो संतान को कार्य सौंपे स्वयं सादगी द्वारा परोपकार कार्य करें। जाति उत्थान पंचायती संगठन हो जिसको हर आदमी मानें। इस संगठन में पंच विद्वान एवं निष्पक्ष हों। यह पंच अपनी जतिम शिक्षा प्रचार करें। नियम बनावें कि अनपढ़ लड़का लड़की का विवाह नहीं होगा। व्यर्थ व्यय के निषेध के लिये दृढ़ कृतलअमल बनालें। धनवानों को यदि रुपये खर्च ने की हवस हो तो जब तक भारत अमरीका के समान न हो तबतक अन्य २४ दिनकी वाहवाही लूटने के प्रलोभक कार्यों में व्यर्थ रुपया खर्च न कर के समाजोन्नति के कार्यों में रुपये खर्च करें। मुकतेकी आवश्यकता नहीं। १३ दिन तक आहार दान न देने के हेतु यह रिवाज था। यह लाज़मी नहीं। इसी मुताबिक वृद्ध विवाह आदि बन्द करना चाहिये। जैनशास्त्र कहते हैं कि तीन वर्णों में परस्पर सम्बन्ध हो सका है। जो वर्ण मुनिदान दे सकता है उस से सम्बन्ध होसकता है। महाराज श्रेणिकने ब्राह्मण पुत्री का पाणिग्रहण किया था। तथा वैश्य पुत्र धन्यकुमार को महाराज श्रेणिक की पुत्री का विवाह हुआ था जब शास्त्रकार इस प्रकार साफ कह रहे हैं तब सब जैन जातियां परस्पर विवाह संबंध करना प्रारंभ करदें। इसके न होने के कारण बड़ा अनिष्ट हो रहा है। गंगेरवाल जाति में केवल २५ घर हैं। उस का किस प्रकार जीवन कायम रह सका है। वहां वर न मिलने के कारण अन्य आर्यसमाज आदि को अपनी पुत्री देने को लोग तैयार हो जाते हैं। हमने ऐसा विवाह रोका है। बस जैसे पहिले होता था, वैसा अब करो। जातियां न तोड़ी जावें। आपस में ठहराव हो जावें। दण्डित पुरुष को कोई स्थान न दे। इस विषय पर प्रत्येक पुरुष को विचार करना चाहिये। इसमें बड़ा फायदा है। विशद विवाह क्षेत्र होगा। तो योग्य सम्बन्ध होंगे और वीर संतान उत्पन्न होगी। आपस में प्रेम बढ़ेगा। आदि आपने बहुत से फायदे इस उपयोगी सुधार से बतलाये तथा अन्य कतिपय बातों की ओर सभा का लक्ष्य आकर्षित करते हुये आपने अपने उपयोगी भाषण को समाप्त किया। इतिशम्।

क्या व्यभिचार हमारे देश में बढ़ रहा है ?

[लेखक, डा० बख़्तावरसिंह जैन, एम० डी० सदर देहली]

अप्रैल का महीना और १९१८ का साल कि मैं अमेरिका के मशहूर मेडिकल कालिज की (Veneral Disease clinic) यानी इन्द्रिय-संबन्धी रोग की श्रेणियों में तालीम हासिल कर रहा था कि अचानक एक पास बैठे हुए अमरीकन विद्यार्थी ने कोहनी मारी और मुझसे पूँछा कि

"क्या इस बहुतायत से इन्द्रियसम्बन्धी यानी आतशक, सुजाक, नामर्दी, प्रमेह तुम्हारे मुल्क में भी होते हैं ?" मैं एकदम कह उठा "हरगिज़ नहीं" हमारे मुल्क में आचार की पवित्रता व शीलधर्म पर ज्यादा ज़ोर दिया गया है और हमारे युवकों के सामने हमेशा उच्च शील, संयम, ब्रह्मचर्य का आदर्श रहता है। इसलिये हमारा मुल्क इन आपदाओं से सुरक्षित है। यह सुनकर मेरे दोस्त को खामोश रहना पड़ा, और मैं भी अपने भारतवर्ष के ऊँचे आदर्श को बयान करके खुश हुआ। लेकिन वास्तविकता उस समय मालूम हुई, जब कि मुझे अपने देश में आना पड़ा और अपनी आंखों से भारतवर्ष की जिन्दगी के हर किस्म के पहलू को देखना पड़ा। यहां पर क्या देखता हूं कि क्या देहात में, क्या कस्बों में और क्या शहरों में आतशक, सुजाक और इसी प्रकार की अन्य व्यभिचार जन्य बीमारियां इसी कदर फैली हुई हैं जितनी कि और मुल्कों में। यहां की हालत किसी तरह से बेहतर नहीं।

क्या गांव के भोले भाले जाटों के लड़के और लड़कियां, क्या मन्दिर के पुजारी और भंडारी, क्या कालिजों के विद्यार्थी, क्या शहरों के प्रतिष्ठत कुल के पुरुष, यहां तक ऐसे रोग हर किस्म के विभाग और श्रेणी के लोगों में देखने में आते हैं। उदाहरण के लिये कुछ मोटे २ वाक़यात पेश करता हूं। १ नौजवान, १३ वर्ष का जाट का लड़का भोली भाली सूरत, पशु चराने वाला पाली परमात्मा की खुली हवा में रहने वाला, शुद्ध सादा भोजन खाने वाला—लेकिन उसकी गुदा सुजाक और आतशिक रोग से ग्रसित, आस पास का खाल और मांस बहुत उभरा और बढ़ा हुआ! किसको गुमान हो सकता है कि यह देहात का रहने वाला मासूम लड़का भी इस तरह इस घृणित व्यभिचार के रोग में फस सकता है। लेकिन मामला बिल्कुल साफ़ था। यहाँ पर फौजी सिपाहियों की मेहर्बानी है। यह देहात के फ़ौज़ी सिपाही जिन्होंने ईराक़, मेसोपोटामिया अरबिस्तान, तुर्किस्तान, मिश्र और बगदाद में जाकर इंग्लिस्तान की लड़ाईयां लड़ीं और वहां की औरतों को खराब किया, अब वह अपने देशमें आकर अपने शुद्ध गांव के, शुद्ध लड़के और लड़कियों को गैर मुल्कों के व्यभिचार और सभ्यता के रङ्ग में रँगने लगे और इनको इन रोगों का शिकार बना लिया।

२ यह शख्स एक जैन मन्दिर का पुजारी और भंडारी जिसकी तमाम इन्द्रियां आतशिक के घृणित सूक्ष्म जीवों ने घुन की तरह खाई हुई, और जो जैन मन्दिर के क्षेत्र में रहता हुआ, नर्क के दुःख भोग रहा था अपनी कैफियत यों बयान करने लगा। एक रात वह पेशाब करने उठा, हवा ठण्डी चल रही थी, अन्धेरे का समय था, उसकी इन्द्रिय के हवा लग गई! वाह खूब! हवा भी सिर्फ इस के ही लगने को बैठी थी। फिर भेद खुला कि वह रंडवेपन के एकाकी जीवन को न सह सका। पास के गांव की किसी औरत के प्रेम गर्त में फंस गया, और उसके फल-स्वरूप नर्क के दुःख भोगने लगा।

३ यह एक उच्च कुल के प्रतिष्ठित घराने का नवयुवक जिसकी हाल ही में शादी होचुकी थी, कि अकस्मात, उसे दौरे आने लगे। किसीने समझा कि शादी में कोई भूत या जिन्न या प्रेत की परछाईं पड़

गई है। बहुतेरा जंतर-मंतर किया, कुछ कारगर न हुआ। किसी ने मृगी रोग बतलाया और किसी ने हिस्टीरिया। किसी हकीम ने दिमाग़ को जिल्द में वरम समझा और किसी ने अंतड़ियों में। एक वैद्य जी महाराज कहने लगे कि रोग कठिन है, आठ रोज़ की दवाई करने के बाद बतऊँगा कि बीमारी क्या है? औरतें कहने लगीं, कि वैद्य जी इस की जिन्दगी का एक दम का भरोसा नहीं मिनटामिनट में इसको दौरे आते हैं, एञ्जिन की तरह दम का सांस चलता है, आठ दिन तक यह ज़िन्दा कैसे रह सकता है? मुझे भी उस को देखने का मौक़ा मिला देखते ही आसार मालूम देने लगे कि यहां न कोई भूत है और न प्रेत, इस पर तो व्यभिचार-देव का असर मालूम देता है ज़रा इसकी धोती तो उठाकर देखना चाहिये कि महाराज कामदेव ने क्या फूल खिला रक्खे हैं। वाक़ई सन्देह ठीक उतरा। एक घृणित आतशिक के ज़ख़्म का एक फूल इन्द्रिय के सिरे पर एक घूँघट पर और कई फोतों पर? बस फिर, क्या था चोर हाथ आगया! मर्ज़ मालूम हो गया। आतशिक के घृणित सूक्ष्म जीव दिमाग़ को झिल्ली पर खुजली मचा रहे हैं और इस लिये दौरे पर दौरे आ रहे हैं। किसको सन्देह हो सकता है कि यह नवयुवक लड़का जिसकी मुश्किल से १७-१८ वर्ष उम्र होगी, इस तरह व्यभिचार की अग्नि में पड़ कर और रोग ग्रहण कर के दौरे के चक्कर में आसकता है।

४ यह एक नौजवान कालिज का विद्यार्थी, आशा और उत्साह से भरा हुआ, शेक्सपियर और मिल्टन की किताबों का पढ़ने वाला, आकर शिकायत करने लगा कि उसे नींद नहीं आती, भूख कम लगती है, और कमज़ोर होता जाता है, दिमाग़ी काम नहीं कर सकता! मुझे बड़ी हैरानी हुई कि यह जवानी की उम्र और यह शिकायतें! फिर हालत पूँछने पर मालूम हुआ कि पेशाब लग कर आता है पीप के क़तरे भी आते हैं, और चलने फिरने में दिक़्क़त होती है। शादी हुए सिर्फ़ ५ महीने गुज़रे हैं लेकिन गौना नहीं हुआ, फिर यह पीब यह सूजन, यह जलन यह पेशाब का दर्द से आना क्यों? कहने लगा-कि एक रोज़ चूने की छत पर पेशाब कर दिया, धूप कड़ाके की थी, ज़मीन तपती थी ऐसी जगह करने से पेशाब लग कर आने लगा। एक वैद्य से ज़िक्र किया, वह कहने लगा, कि हाँ, ऐसा हो ही जाता है। वाह साहब! बहुत अच्छा कारण बतलाए! ज़रा अपनी पीप का मुआइना ख़ुर्दबीन से कराइये, तमाम भेद खुल जायेगा। ऐसा किया गया और सूज़ाक के तमाम भयानक जीव प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे। अब लाख बहाना किया करो, कोई कारगर नहीं हो सकता। आख़िर मानना पड़ा कि शादी के कुछ महीने बाद एक वैश्या से सम्बन्ध हो गया और उसके एक हफ़्ते बाद पीप आने लगा, और चलने फिरने से हताश हो गया।

५-एक मालदार ४०-५० साल का सेठ इन्द्रिय के घूँघट पर ज़ख़्म लगा लाया। कहने लगा कि पेशाब करने के बाद वह इन्द्रिय को पांव की जूती से पूँछ लिया करता था, इसलिये यह ज़ख़्म हो गया। वाह ख़ूब! इस हिसाब से तो हर एक मुसलमान जो ईंट के रोड़े से अस्तञ्जा करता है, की इन्द्रिय पर ज़ख़्म होना चाहिये। इसकी तो कोई और वजह बताओ। बहुत इन्कार करने लगा। अच्छा, अपने ख़ून का मुआइना कराना

चाहिये। खून की परीक्षा की गई और ४ दर्जे खराब निकला। अब क्या बहाना चल सकता है? आतशिक माद्दा इसमें भरा हुआ है।

बस पाठकों यह बात स्मरण रखना आवश्यक है कि जहाँ अन्य देशों में अपने रोगों का इलाज करने वाले डाक्टर से गुप्त नहीं रक्खा जाता, इस मुल्क में छिपाने की बहुत कोशिश की जाती है। इसलिये व्यभिचार जन्य रोगों की कमी या बहुलता का अनुमान करना कठिन होजाता है। हमारे देश में और हमारी समाज में, व्यभिचार बढ़ता जारहा है। इसके रोकने की समाज को कोशिश करनी चाहिये, ताकि महावीर स्वामी के नाम लेवा शुद्ध जीवन व्यतीत कर अपनी समाज की सेवा कर सकें और देश के लिये अभिमान की वस्तु हों।

पञ्जाब निवासी दिगम्बर जैनियों से आवश्यक निवेदन

पंजाब सरीखे सजीव प्रान्त में जब कि अन्य जातियां व समाजें दिन प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर चढ़ती जाती हैं तब जैन जाति व जैन समाज का घोर प्रमाद निद्रा में पड़े रहना किस पंजाब प्रान्तवासी सहृदय दिगम्बर जैन को नहीं खटकता। पंजाब प्रांतवासी दिगम्बर जैनोंको घोर निद्रा से सचेत करके उन्हें कर्म क्षेत्र में आरूढ करने के लिए ही गत अप्रेल मास में दि० जै० पं० प्रा० सभा की स्थापना पानीपत में हुई थी। इस संस्था का जन्म इसलिये हुआ था कि पंजाब प्रान्तमें जो नर नारी समाज धार्मिक ज्ञान से शून्य हैं उन्हें पवित्र जैन धर्म का उपदेश दिलावें बालक व बालिकाओं की लौकिक व धार्मिक शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करावें, नरनारी समाजमें फैली हुई बाल्य वृद्ध व अनमेल विवाह आदि कुरीतियों तथा विवाहादि माङ्गलिक कार्यों में सीमा से अधिक व्यय अर्थात् फिजूलखर्चियों (जो कि समाज को घुन के सदृश खोखला करती जारही हैं) का काला मुंह करके उनके स्थान में उपयोगी सुरीतियों का प्रचार करें तथा इस जाति की शारीरिक निर्बलता को दूर करने के लिये नर नारी समाज को उचित व्यायाम की ओर आकर्षित करें। गत नौ मास में इस सभा की ओर से ३० स्थानों में दौरा किया गया जिन में कई स्थान छोटे ग्राम व देहात के हैं कई पाठशालाओं यतीमखानों गौशालाओं, सभाओं लाइब्रेरियों तथा ब्रह्मचर्याश्रम भिवानी का निरीक्षण कियागया सभासद् बनाए गए उपदेशक फण्ड में ६३) की प्राप्ति हुई। हमारे पंजाब प्रांतवासी भाई यदि उपदेशक कोषमें उचित सहायता देते तो दो उपदेशक नियत करके वर्तमान

से ही त्रिगुण लाभ पहुंचाया जासकता था। हमारे भाइयोंको अन्य समाजोंकी सदृश अब प्रमाद निद्रा से जाग कर इस सभा की उन्नति के लिये कटि-बद्ध हो जाना चाहिए अब द्वितीय वार्षिक अधिवे-शन का समय निकट है पंजाब देश में जिन धर्म के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखनेवाली स्वाधर्मी पंचा-यतों को इसका अधिवेशन अपने यहां कराकर सच्ची जिन भक्ति का परिचय देना चाहिए यदि पंजाब के किसी स्थान में पूजा प्रतिष्ठा मेला या किसी सभा का वार्षिक अधिवेशन हो तो वहां के साधर्मी भाई हमें सूचनादें ताकि उस उत्सव के साथ ही इस सभा के वार्षिक अधिवेशन करानेका उद्योग किया जासके।

साहित्य-समालोचना

—श्री विमलनाथ पुराण प्रकाशक श्री जिन-वाणी प्रकाशक कार्यालय, पोष्ट बक्स नं० ६७४८, कलकत्ता। शास्त्राकार खुले पृष्ठ ३६६। मूल्य ३) मूलसंस्कृत सहित। बड़ा टायप सुन्दर छपाई।

जैनियों के १३वें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ के विमल चरित्र को प्रगट करने वाला यह सुंदर चरित्र है। मूल संस्कृत के कर्त्ता काष्ठासंघी भ० रत्नभूषण की आम्नाय के ब्र० कृष्ण दासजी हैं। संस्कृत-पद्यलालित्य का मिठास अवश्य ही आस्वा-दन करने योग्य है। भ० रत्नभूषण की गुरुपरंपरा ग्रंथकार ने इस प्रकार बतलाई है कि भ० रायसेना-चार्य थे। उन के शिष्य सोमकीर्ति-उनके विजय-सेन-उनके उदयसेन-उनके भुवनकीर्ति उनके शिष्य भ० रत्नभूषण थे। गुर्जरदेश के लोहाकार नगर के निवासी हर्ष नामक ब्राह्मण महानुभाव के उन की पत्नी वीरिका की कुक्षी से उत्पन्न उक्त ग्रंथकार थे। इन्होंने संभवतः जैन धर्ममें दीक्षित होते साथ ही इस बृहद विमलपुराण की रचना कल्पवल्ली नाम के नगर में सं० १६७४ में की थी। इसके उप-रान्तमें रचा गया इनका अन्य मुनिसुव्रतनाथपुराण नामक ग्रंथ है। प्रस्तावना में बतलाया गया है कि उस में सैद्धान्तिक विद्वत्ता की छटा बढ़ गई है जो हो ग्रंथकार ने इस ग्रंथ की रचना बड़े महत्व शाली ढंग से की है। अन्य पुराणों में देखा जाता है कि उसका भाग चरित्रनायक के पूर्वभावा-वली विवरण से ही परिपूर्ण होता है तब इस में यह बात नहीं है। इस में चरित्रनायक भगवान विमलनाथ के निर्मल चरित्र के साथ २ अन्य सम-कालीन महापुरुषों के चरित्रों तथा राजा श्रेणिक के पूर्ण वृत्तान्तों का भी समावेश किया गया है। इस कारण इस का महत्व बढ़ गया है। हिन्दी अनु-वाद भी पं० गजाधरलाल जी शास्त्री द्वारा सुंदर हुआ है। अतएव कहना होगा कि उक्त कार्यालय ने इस अपूर्व ग्रंथ को प्रकाशित कर हिन्दी भाषा-भाषी जैन जनता का विशेष उपकार किया है। परन्तु विशेष कारणों वश प्रेस व अन्य प्रकार की

त्रुटियों की भरमार अवश्य ही उपेक्षणीय नहीं है। धर्मशास्त्र विशेष छान बीन के साथ शुद्ध छपना चाहिये। तो भी इस नवीन पुराण की मनमोहक रचना का पाठ प्रत्येक पाठक को करना लाभप्रद है।

सब से पहिले ग्रंथकार ने सम्राट् श्रेणिक-बिम्बसार का विस्तृत वृत्तान्त दिया है। और बतला दिया है कि वह अपनी मनगढ़न्त रचना नहीं कर रहे हैं प्रत्युत पूर्वाचार्यों के कथनानुसार ही इस पवित्र शास्त्र का निरूपण कर रहे हैं। मगधदेश को घना बसा हुआ प्याऊ और वृक्षपंक्तियों से समलंकृत बतलाया गया है। तथा लिखा है कि उसकी राजधानी राजगृह नगर अति उत्कृष्ट और विशाल थी। वहां के मनुष्य परमधर्मात्मा और कौशलों के पारगामी थे। वहां की सुंदर महिलायें अत्यन्त शीलवती और दान पूजादि में लीन थीं। वहां का राजा उपश्रेणिक था। उस की पटरानी इंद्राणी थी। इन्ही से जायमान सम्राट् श्रेणिक थे। श्रेणिक के भाई ५०० थे। वहीं एक चंद्रपुर नगर का स्वामी राजा सोमशर्मा उपश्रेणिक के आज्ञाधीन नहीं था। उपश्रेणिक के बाध्य करने पर उसने मायावीपन से कार्य किया। वैसे ही भेंटमें एक मायावी घोड़ा भेजा, जिसपर चढ़ते ही उपश्रेणिक लापता हो गए। श्रेणिकादि पुत्र खोज करने पर हताश हो घर लौट आए। उधर उपश्रेणिक तैयच्छवास नामक भीलों की पल्ली के अधिपति यमदंड के यहां पहुंच गए। यमदण्ड के श्रावक की क्रियाओं का अभाव था, परन्तु उस की पुत्री तिलकवती ज्ञानवान थी। इस लिए राजा उपश्रेणिक वहां रहने लगे थे और अन्त में वह उस कन्या पर आसक्त हो गए तथा उसकी के पुत्र को राज्यपद देने का वचन देकर उस के साथ विवाह कर लिया! यहां पर यह विचारणीय है कि राजा यमदंड के यहां श्रावकाचार विपरीत होने पर भी श्रावक धर्मरत राजा उपश्रेणिक उस के अतिथि और अन्त में सम्बन्धी बने थे।

विवाहोपरान्त उपश्रेणिक तिलकवती सहित अपनी राजधानी में पहुंचे। 'अपने महाराज की फिर से प्राप्ति दुर्लभ जान नगर निवासियों को बड़ा आनन्द हुआ।' अतएव जबतक उपश्रेणिक लापता रहे थे और उनकी प्राप्ति में सब लोग हताश होगए थे तबतक उन के पुत्र श्रेणिक ही राज्याधिकारी रहे होंगे। यही कारण है कि म० बुद्धने गृहत्याग करके राजगृह नगर में श्रेणिक को राज्याधिकारी पाया था। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो उप-श्रेणिक के लौटने पर और तिलकवती के पुत्रोत्पन्न होने पर श्रेणिक के देश निकाले के दण्ड मिलने राजगृहत्याग करने पर उनको बौद्ध संघाराम नहीं मिल सकते थे। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति म० बुद्ध द्वारा ही हुई थी और बुद्ध ने गृहत्याग के ८-६ वर्ष उपरान्त उसकी नींव डाली थी यह प्रमाणित है। कुमारावस्था में राजगृह नगर त्याग कर श्रेणिक ने नन्दिग्राम में बौद्ध संघाराम देखा था और वहां बौद्ध सन्यासी के कहने से वह बौद्ध हो गए थे। नन्दि ग्राम संभवतः नालंद ही है जो राजगृह के निकट उत्तर दिशा में ७ मील की दूरी पर था और जहाँ बाद में बौद्धों का विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था। (See the Dialogues of the Buddha. F. N. I. Page 1.) यहां से एक इन्द्रदत्त नामक वैश्य के

साथ चलकर उसके नगर वेणातड़ाग में पहुंचे। सेठ इन्द्रदत्त की यौवनवती सुन्दरी कन्या नन्दश्री ने स्वयं कुमार श्रेणिक को बुला भेजा और उनके गुणों तथा रूप पर मुग्ध हो गई, जिस पर सेठ ने कुमार के साथ उसका विवाह कर दिया। कुमार वहीं आनन्द से रहने लगे थे और वहीं उनके ज्येष्ठ पुत्र अभयकुमार का जन्म हुआ था। इस नगर का राजा वसुपाल था। इतने में उधर उपश्रेणिक का देहान्त हो गया और तिलकवती का पुत्र चलाती राज्य दुष्टतापूर्वक करनेलगा, जिस से दुःखी होकर प्रजा ने कुमार श्रेणिक को बुला भेजा। और अपना राजा बना लिया। अभय कुमार अपनी माता के साथ सेठ इन्द्रदत्त के यहां रह गये। राज्य प्राप्ति के उपरान्त सम्राट श्रेणिक का विवाह विजयार्धपर्वत का दक्षिण श्रेणी में अवस्थित केरलानगरीके अधिपति विद्याधर मृगांक की पुत्री विलासवती से हुआ था। बौद्धों के तिब्बतीय दुल्व में इन्हीं का नामोल्लेख शायद 'वासवी' के नामसे कियागया है। मुनिराज सुमति ने पहिले ही से श्रेणिक को उस का पति होना बतला दिया था। मराल द्वीप का स्वामी राजा रत्नचूड़ भी उसपर आसक्त था, परन्तु वह जंबूकुमार नामक राजपुत्र द्वारा परास्त करदिया गया था। पश्चात् श्रेणिक ने नन्द श्री और कुमार अभय को बुलाभेजा और उसे युवराज पद प्रदान किया। अभय कुमार का उल्लेख बौद्ध ग्रंथों में भी है। इस समय राजा श्रेणिक परिवार सहित बौद्धानुयायी थे यह स्पष्ट लिखा हुआ है।

अगाड़ी सिंधुदेश में विशाला नगरी बतलाई गई है और वहां का राजा चेटक! परन्तु अन्य श्रोतों एवं बौद्धों के ग्रंथों से विदित होता है कि विशाला अथवा वैशाली विदेह देश में थी। इस राजा की पटरानी सुभद्रा से उत्पन्न सात सुन्दर पुत्रियां थीं। सबसे बड़ी प्रियदत्ता काविवाह नाथवंशीय राजा सिद्धार्थ के साथ हुआ था। इन्हीं का पवित्र कुक्षि से भगवान महावीर का जन्म हुआ था। दूसरी कन्या मृगावती का विवाह वत्सदेश के कौशांबीपुर के स्वामी महाराज पिनाक के साथ हुआ था। तीसरी कन्या वसुप्रभा का विवाह हेरकच्छपुर के स्वामी महाराज दशरथ के साथ हुआ था तथा चौथी कन्या प्रभावती कच्छदेश के रोरुकपुर के स्वामी राजा महानुदयी से विवाही गयी थीं। श्रेणिक चरित्र में कौशांबीके महाराज का नाम नाथ अथवा सार लिखा है। अन्यश्रोत से मालूम होता है कि वहां के राजा का नाम शतनीक था। इन विविध नामों का भेद समझ में नहीं आता। उधर श्रेणिक चरित्र में कच्छदेश के स्वामी का नाम महातुर लिखा है और उत्तर पुराण में उद्दायन लिखा है। इस भेद भिन्नता का निर्णय ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वशाली होगा। राजा चेटककी शेष ज्येष्ठा, चन्दना और चेलना नामक कन्यायें अभीतक अविवाहित थीं। चेलना की रूप राशि पर श्रेणिक मुग्ध हो गए थे। परन्तु राजा चेटक जैन धर्मानुयायी थे। इस कारण छल से उसे हरवा मगाया और अपनी पटरानी बना लिया। यहां भी चेलनी जैनधर्मरत रहती थी। अन्त में उस ही के प्रयत्नों से श्रेणिक जैन धर्मानुयायी हो गए थे। इसमें एक कथा द्वारा बतलाया गया है कि पहिले कौशांबी का राजा वसुपाल और उसकी रानी यशस्विनी थी। राजा

श्रेणिक ने जैन गुरुओं की परीक्षा भी ली थी। एक मुनि धर्मघोष नामक थे। इनके मनोगुप्ति नहीं थी। इसके न होने के कारण में जो कथा कही थी उससे ज्ञात होता है कि उस समय अर्थात् पार्श्वनाथ के तीर्थ काल के अन्त में कलिंगदेश के दंतपुर नगर के यही धर्मघोष स्वामी थे। दूसरे मुनि जिनपाल थे। इनने कायगुप्ति न होने के कारण में एक कथा कही थी। उससे विदित होता है कि भूमिभिलकपुर का स्वामी राजा प्रजापाल अथवा वसुपाल है। उसकी पटरानी धारिणी और उसकी पुत्री मृगांका थी। चण्डप्रद्योतन नाम के राजा ने उसे वसुपाल से मांगी परन्तु वसुपाल ने नहीं दी। इस पर संग्राम हुआ। राजा चंडप्रद्योतन को भ्यास गई कि विजय प्रजापाल की है। इसलिए उसे जैनी मान घर जाने लगा। प्रजापाल के पुछवाने पर कह दिया कि समस्त जैनी मेरे बन्धु हैं मैं उनके साथ युद्ध नहीं करता। इस पर वसुपाल ने अपनी कन्या उसे विवाह दी। राजा चन्डप्रद्योत कहां के राजा थे यह खोजने पर हमें विदित होता है कि वह अवन्ती के राजा थे और उज्जयनी उनकी राजधानी थी। (See Life & work of Buddhaghosha. P. 56) हमारे चण्डप्रद्योतन ही अवन्ती अधिपति थे यह बात बौद्ध ग्रन्थ की कथा से भी प्रमाणित है। "धम्मपद" की २१-२३ पद्यों की वृत्ति से विदित होता है कि कोशाम्बी और अवन्ती के राज्य आपस में सम्बन्धित थे। इस वृत्ति में एक बड़ी कथा में बतलाया गया है कि राजा चण्डप्रद्योतन की पुत्री वासुलदत्ता का संबन्ध किस प्रकार कोशाम्बी के राजा उदयन से हुआ था, जो राजा चण्ड प्रद्योतन से विशेष प्रख्यात् था। इसमें राजा चन्ड प्रद्योत की पुत्री का नाम वासुलदत्ता बतलाया है। बौद्ध ग्रंथों में नाम रखने की प्रथा का जो विवरण है उसको लक्ष्य कर लिखते हुए स्व० मि० ह्रीस डेविड्स लिखते हैं कि:-

"......Loss frepuently the reverse is the case, and a mother or father, whose child has become famous, is simply referred to as the mother, or father, of so and so. It is noteworthey that the name of the father is never used in this way, and the mother's name is never a personae name, but always taken either from the clan, or from the famiy to which she belonged."

इससे विदित होता है कि नाम माता वा पिता की अपेक्षा भी प्रख्यात् व्यक्तियों के रक्खे जाते थे। वसुपाल राजा की कन्या सुन्दरता में प्रख्यात् थी और वही राजा चन्ड प्रद्योत को विवाही गई थी। इस लिए उससे उत्पन्न पुत्री यदि अपनी माता के पिता के नाम अपेक्षा 'वासुलदत्ता' कहलावे तो अत्युक्ति नहीं है। तिसपर बहुत संभव है कि वसुपाल ने स्वयं राजी से चन्डप्रद्योत को अपनी कन्या दी थी। इससे वह वासुलदत्ता कहलाती होगी और उसकी पुत्री अपनी माता अपेक्षा उसी नाम से प्रख्यात् हुई थी यह प्रकट है। जो हो यह प्रत्यक्ष है कि राजा चन्डप्रद्योत पुराणवर्णित व्यक्ति हैं और वह जैन धर्मानुयायी थे। इस के अतिरिक्त जैनग्रंथ आराधना "कथाकोष" के तृतीय खंड की ६५ नं० की कथा से भी इस ही बात की पुष्टि होती है कि राजा चाण्डप्रद्योत उज्जैन के राजा जैन धर्मानुयायी थे। इस कथा में इनका संक्षिप्त नाम प्रद्योत ही

दिया हुआ है जो कि बौद्धों के पाली ग्रन्थों के पज्जोत (प्रद्योत) के समान ही है। पालीग्रंथों में चंडप्रद्योत को पज्जोत ही लिखा है। (See The Buddhist India p 4) उपरोल्लिखित कथा में राजा प्रद्योत का हाथी द्वारा दूर भटक जाने और बेट नगर में पहुंच कर जिनपाल नामक सेठ के यहाँ ठहरने तथा अंत में सेठपुत्री जिनदत्ता का इन पर अनुरक्त होने से विवाह करने का विवरण है। यहाँ भी पुत्री का नाम पिता अपेक्षा ही मालूम होता है। इससे राजा प्रद्योत के पुत्र वृषभसेन हुए जो पिता के साथ जिनदीक्षा लेगये। राज्यभार भतीजे के सुपुर्द हुआ था। इन वृषभसेन मुनि को कौशाम्बी के निकट पहाड़ी से एक बौद्ध संन्यासी कृत उपसर्ग सहन कर मोक्षलाभ हुआ था। तीसरे मुनिराज मणिमाली थे। उन्होंने जो कारण काय-गुप्ति न होने का बताया उससे विदित होता है कि एक मणिवत नाम का देश भी था। उसी मणि-मत के राजा यह मुनिराज थे। गुणमाला इनकी रानी थीं। उस समय एक 'कौलिक' नामी मंत्र-वादी साधु भी होते थे जो कि हड्डियों के भूषण से भूषित, भूतों का सेवक और नग्नरूप धारक होते थे। उज्जयनी में उस समय एक जिनदत्त नामक सेठ थे। उन्होंने इन मणिमाली मुनि की विशेष सुश्रूषा की थी। इसके पश्चात् श्रेणिक जैन धर्मके पूर्णश्रद्धानी होगए। राजा श्रेणिक की रानी चेलिनी से सात पुत्र उत्पन्न हुए थे (१) कुणिक-अजातशत्रु (२) वारिषेण (३) शिव (४) हल्लक (५) विहल्लक (६) जितशत्रु और (७) मेघ कुमार। इतने में भगवान महावीर का समवशरण राजगृह के निकट विपुलाचल पर्वत पर आया। जहां श्रेणिक अपने परिवार सहित गए। वहां अभयकुमार ने अपनी पूर्वभवावली पूछी थी। जिसके विवरण से विदित होता है कि उस समय भी ब्राह्मणों में वृक्षों की पूजा प्रचलित थी जिसके विषय में मि० रीस डेविड्स भी अपनी Buddhist India नामक पुस्तक में उल्लेख करते हैं। पश्चात् श्रेणिक के पूछने पर भगवान महावीर की दिव्य-ध्वनिसे भगवान विमलनाथ का निर्मल चरित्र का व्याख्यान होने लगा। वही क्रम मतानुसार प्राप्त कर ब्र० कृष्णदास जी ने इस पुराण में लेखबद्ध किया है। महा-राज श्रेणिक के समय के कतिपय नगरों व व्य-क्तियों का उल्लेख जो आया है उसको देकर हम अगाड़ी भगवान विमलनाथ के पवित्र चरित्र पर दृष्टि डालेंगे:—

(१) राजगृह में राजा श्रेणिक-वणिक सेठ सागरदत्त।

(२) अमरावती-मगध राज्यन्तर्गत। बल-भद्र कुटुम्बी भद्रा तद्पत्नी।

(३) सूरकांतदेश-सूरपुरनगर-राजामित्र (श्रेणिक का पूर्वभव का जीव) रानी भामिनी।

(४) आनन्दपुर-शिवशर्मा सेठ-तुंकारी पुत्री-धनदेवभाई-इस सेठ (श्रेष्टि वणिक) पुत्री का विवाह ब्राह्मण सोमशर्मा से हुआ था।

मुनि गुणसागर

(५) विशालापुरी के राजा की पारासर राजा से मित्रता थी।

(६) बनारस में किसी समय जितशत्रु राजा धनदत्त उसके राज्य वैद्य।

(७) हस्तिनागपुर में राजा विश्वसेन रानी भामिनी-पुत्र वसुदत्त।

(८) विजयार्ध की उत्तर श्रेणी में गगनप्रिय नगर-राजा वायुवेग विद्याधर ।

(९) विजयार्धश्रेणी का राजा बालक ।

उपरान्त भगवान विमलनाथ का दिव्य चरित्र है । धातु की खंड की पश्चिम दिशा में स्थितमेरु-पर्वत की पश्चिम दिशा में नदी के दक्षिण तट पर महापद्म देश के ठीक मध्यभाग में तीसरा खंड है। उसमें रम्यावती देश था । वहां के महापुर नगर के राजा पद्मसेन थे । उस पुरके प्रीतिंकर वन में सर्व गुप्त नामक केवली मुनि के आकर बतलाया था कि राजा पद्मसेन ही दो भव बाद विमलनाथ भगवान होंगे । जंबू द्वीप में भरतक्षेत्र के मध्य में कंपिलानगरी के राजा कृतवर्मा थे । उन की रानी जय श्यामा थी । उन्हीं के गर्भ में भगवान विमलनाथ का जीव साहस्रार स्वर्ग से चलकर जेठ कृष्ण-दशमी के दिन आया । माघ सुदि चौथ के दिन भगवान का आनन्दकारी जन्म हुआ । इस समय भगवान वासुपूज्य का तीस सागर प्रमाण तीर्थ-काल बीत चुका था एवं एक पल्योपम काल पर्यन्त धर्म का ध्वंस हो चुका था । भगवान विमलनाथ उपर्युक्त समय में राज्याधिकारी हुए और उन की पटरानी पद्मा थी । आप इक्ष्वाकुवंशी काश्यप गोत्री क्षत्री थे । दीर्घकाल तक राज्य करके उन्होंने माघसुदी ४ के दिन अनेक राजाओं सहित दीक्षा-ग्रहण की । वेला के पश्चात् नन्दनपुर के राजा विजय के यहां भगवान का प्रथम पारणा हुआ था सहेतुक नामक अपने दीक्षावन में भगवान् को माघ सुदी ६ को जंबू वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त किया था । आषाढ़ बदि ८ के दिन भगवान को मोक्षलाभ सम्मेद शिखिर से हुआ था । भगवान ने केवल ज्ञानावस्था में भारत एवं भारत के बाहर सर्वत्र धर्म प्रचार किया था ।

भगवान विमलनाथ के समय में अर्धचक्री नारायण स्वयंभू और धर्म नाम के बलभद्र हुए हैं जिन का वर्णन ग्रन्थकार ने मनोहर कविता में दिया है ' मुनिराज जयन्त और संजयन्त की कथा बड़ी ही मनोहारिणी है । ग्रन्थकार ने ······· मुनिराज जयंत और संजयंत की कथा से सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का बैर के आधार पर पूर्वभव का वर्णन कर इस बात का खास उपदेश दिया है कि किसी को विरोध नहीं रखना चाहिए। इस के सिवाय ग्रंथकार ने किस कर्म के उदय से क्या फल प्राप्त होता है इस का बड़ी ही सरलता से वर्णन किया है जिसको पढ़कर अज्ञानी और निंदित पुरुषोंकी प्रवृत्ति भी निंदित कार्योंसे विमुख हो जाती है । तथा मौनव्रत का आचार्य ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है ।" जिसका अभ्यास आज म० गांधी भी कर रहे हैं । विविध व्यक्तियों की पूर्व भवावली और कर्मों का फल बतलाने वाली विवरण ठीक वैसा ही है जैसा कि बौद्ध ग्रंथ Dialogues of the Buddha में बतलाया है कि आत्मा की नित्यता को प्रमाणित करने के लिए कतिपय साधु व्यक्तियों की पूर्व भवावली बतलाते हैं और उसका वर्णन क्रम भी दिया है । इस बौद्ध ग्रंथ में यहां पर उस समय में प्रचलित धर्मों का विवेचन किया गया है । अतएव कहना होगा कि पुराण विशेष महत्व शाली रोचक प्रतीत होता है उसमें हो कि प्रत्येक ग्रंथ अनुक्रमणिका और उस का तुलनात्मक संबंध प्रगट करने वाला परिशिष्ट

तथा उस विषय की अन्य पुस्तकोंकी सूची सहित प्रगट हुआ करे। ग्रंथ-प्रकाशकोंको इस ओर ध्यान देना चाहिए।

—उ० सं०

सम्पादकीय टिप्पणियां

कर्म सिद्धान्त पर निमन्त्रण

हम अपने विद्याप्रेमी तत्त्वखोजी भाइयों को निमन्त्रण देते हैं कि वे जैनदर्शन के कर्म सिद्धान्त को अच्छी तरह पढ़ें। उनको यह भेद मालूम होगा कि किस तरह एक आत्मा पापपुण्यमयी कर्म वर्गणाओं (परमाणुओं के समूहों) को अपने निकट आकर्षित करता है और उनसे अपना सूक्ष्म शरीर बनाता है। तथा वे कर्म वर्गणाएं किस तरह बँधने के पीछे अपना फल दिखला कर गिरती रहती हैं-यह भी ज्ञान इस विषय से हमको होगा कि किस तरह बहुत सी कर्मवर्गणाएं बँधी हुई होने पर भी बिना फल प्रकट किये स्वयं झड़ जाती हैं अथवा एक पुरुषार्थी आत्मा क्या उद्यम करे जिससे भविष्य में फल दिखलाने योग्य कर्म वर्गणाओं को अपने पास से दूर कर डाले व किस तरह सर्व सूक्ष्म कर्मवर्गणाओं से निवृत्ति पाकर मुक्त होजावे।

जगत में इस कर्म सिद्धान्त का विस्तारपूर्वक वर्णन न हिन्दुओं के शास्त्रों में मिलता है-न इसका कथन वेद पुराण स्मृति में है न किसी न्याय वैशेषिक आदि दर्शनों में किया गया है-बंध और मोक्ष इन दो अवस्थाओं का वर्णन तो भगवद्गीता आदि शास्त्रों में है। परन्तु बंध किसका किससे कैसे क्यों किस विधि से होता है, यह कथन अन्यत्र कहीं अबतक हमारे देखने में नहीं आया। जैनशास्त्रों में इसका संक्षेप कथन श्री उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र तथा उसकी सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक आदि वृत्तियों में है परन्तु विस्तार पूर्वक वर्णन श्रीगोम्मटसारकर्मकाण्ड में है व उससे भी विशेष धवलजयधवलादि में है जो कोई तत्त्व खोजी अच्छी तरह देखेंगे उनको इस कर्मसिद्धान्त का वैज्ञानिक वर्णन जैनशास्त्रों में मिलेगा। और यदि जैन विद्वान् इस विषय का प्रकाश वैज्ञानिक (Peintibic) जगत में करेंगे तो जगत के मानवों का बहुत बड़ा कल्याण होवेगा।

जिन वाणी में यह अपूर्व निधि दबी पड़ी हुई है इसको उद्धार कर प्रकाश में लाना परोपकारियों का कर्तव्य है जो केवल अंग्रेजी में ही इस विषय को देखना चाहें उनका कर्तव्य है कि कर्मसिद्धान्त की आभामात्र पाने के लिये मि० चम्पतराय कृत (Practical Toth) मि० जैनी कृत (Translati & Taltwath patna) पढ़ें। बिना कर्म सिद्धान्त के जाने हुए जैनदर्शन का मर्म बिलकुल नहीं मालूम हो सकता है।

जात्यभिमान का त्याग करो।

हम वर्त्तमान समय का जैनजाति को जब पिछले समय की जैन जाति से मुकाबला करते हैं तो बहुत ही अंतर पाते हैं। पिछले काल में परस्पर जातियों या वंशों में प्रेम, मेल तथा सम्बन्ध था। अब इनमें परस्पर न प्रेम है न सम्बन्ध है। अब हमारे जैन भाइयों में यह अभिमान आगया है कि हम अपनी जाति की अपेक्षा बड़े हैं तथा दूसरे अन्य जाति में लेने की अपेक्षा हमसे छोटे हैं।

एक ही दिगंबर जैन आम्नायके अनुसार अर्हंत देव की मूर्तिको, निर्ग्रंथ गुरुको तथा जिनवाणी को मानने वाले भाई बहिनों में भी ऊँच नीच की बुद्धि प्रवेशकर गई है। हम देख रहे हैं कि अग्रवाल, खंडेलवाल, जैसवाल, बघेरवाल पांडेवाल, पल्लीवाल, परवार हूमड़ आदि जाति के भाई एक ही देव शास्त्रगुरु के भक्त है तब फिर जिनेन्द्र के समान कोटि के भक्त होने की अपेक्षा इन सब में समानता है। इन सब के घरों में श्री निर्ग्रन्थ मुनि आहार ले सकते हैं। तब फिर कोई हेतु नहीं है जिससे यह स्थापित किया जावे कि अग्रवाल बड़े हैं व खंडेलवाल छोटे, या खडेलवाल बड़े और अग्रवाल छोटे। दुःख की बात यह है कि मुनि गुण तो इनके हाथ की स्पर्शित कच्ची रसोई खासकें और अगवालों खंडेलवालों के हाथ की व खडेलवाल अगवली के हाथ की कच्ची रसोई न खासकें। एक यही कारण है जिससे हरएक जाति जात्यभिमान में अन्धी हो दूसरी जाति को जो वास्तव में समान है तुच्छ देखती है—परस्पर अप्रेम होने का यही मुख्य कारण है, यद्यपि इनमें वर्त्तमान में कच्ची रसोई का खान पान शुरू होचला है जो पहले न था परंतु अभी तक विवाह सम्बन्ध नहीं शुरू हुआ है।

जैनसमाज को उचित है कि जात्यभिमान को सम्यक्त का घातक समझकर त्याग देवें और सब जातियों को समान कोटि का समझकर परस्पर व्यवहार करने का अवसर देवे।

व्यवहार का क्षेत्र विशाल होने से योग्य स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध होंगे तथा प्रेम की वृद्धि होगी—जैन जाति में वीर नर रत्नों की प्राप्ति होने लगेगी।

संसार दिग्दर्शन

—इनामी निबंध की सूचना। हमने जो दि० जैन समाजसुधार के लिये जैनमित्र अङ्क नं० ११ में ता० १५-२-२५ तक निबन्ध मँगाये थे, उस संबन्ध में कई सज्जनों के हमारे पास पत्र आए हैं कि ऐसे महत्वशाली निबन्ध के लिये समय बहुत थोड़ा है। यद्यपि कई विद्वनों के लेख हमारे पास पहुंच गये हैं तथापि हम यह चाहते हैं कि समाज का हर एक व्यक्ति अपना स्वतन्त्र मत इस विषय में प्रकट करे। अतएव हमने यह उचित समझा है कि इसका समय दो मास का और बढ़ाया जाय। प्रत्येक लेखक को चाहिये कि वे निराश न हों, खूब सोच विचार कर ता० ३०-४-२५ तक अपना निबन्ध अवश्यमेव भेज दें। यह पूर्ण विश्वास रक्खें, निर्णय में किसी प्रकार की गड़बड़ न होगी। प्रत्येक

महत्वपूर्ण लेख समाचार पत्रों में भी प्रकाशित कराया जावेगा। जो सज्जन इस भाव से न लिखते हों कि हमें हिन्दी भाषा ठीक २ नही आती है, उन्हें चाहिये कि वे अपने विचार और भाव अवश्य ही प्रगट करें। यदि वे चाहें तो भावों को कायम रखते हुए हम यहां पर भाषा सुधरवा लेंगे। इतनी बहुलियत मिलने पर भी जो कोई अपने विचार प्रगट न करेगा वह समाज का द्वेषी और अपने विचारों को छिपाकर समाज में विरोध उत्पन्न करनेवाला समझा जावेगा।

कोई इस बात को फैलाता है कि इनका निर्णय उचित रीति से न होगा। यह शंका हमें पहिले ही थी, अतएव हमने सब प्रकार निष्पक्ष लोगों को ही इस कमेटी में रक्खा है। इतने पर भी हम कुछ उत्तमोत्तम लेखों को समाचारपत्रों में प्रकाशित कर जनता का भी मत ग्रहण करेंगे। जो विद्वान हमारे पास लेख भेज चुके हैं, यदि वे उनमें कुछ परिवर्तन करना चाहते हों तो उन्हें वे वापिस भेजे जा सकते हैं। —रायबहादुर राज्यभूषण।

—अहिक्षेत्र—के धार्मिक मेले का विज्ञापन इस अङ्क के साथ बांटा गया है उसको पाठक ध्यान पूर्वक पढ़ें व इस मेले पर अहिक्षेत्र अवश्य पधारें।

—फ़िरोजाबाद (आगरा) में धार्मिक मेला चैत्र बदी ६ से १० तक बड़ी धूमधाम से होगा सब भाई पधारें। जयकुमार जैन-पानी का गांव।

—सालेम (मद्रास) में आदि द्राविड़ों और द्विजातियों का संगठन करके देव मन्दिरों आदि में जाने के अपने अधिकारों पर जोर दिया, इस पर मन मुटाव हुआ। १८ फरवरी को झगड़ा हो गया जिसमें तीन आदि द्राविड़ बहुत घायल हुए और उनका नेता मार डाला गया।

—श्री० रङ्गाऐयर ने बड़ी व्यवस्थापक सभा में एक इस आशय का प्रस्ताव पेश करने का नोटिस दिया है कि जितने भारतीय देशभक्त स्वतन्त्रता के लिए लड़ने के अपराध में विदेश में पड़े हैं उनके देश में आने में जो रुकावटें हैं वे सब हटाली जायँ।

—मोपला उपद्रव के कैदियों को अण्डमैन में बसाने का जो प्रबन्ध हो रहा है उसके सम्बन्ध में रायसाहब कुन्हीरमन नायर ने कहा कि १८४ मोपला वहां अपने परिवार के सहित बस गये हैं। ७५ अन्य मोपलों ने वहां रहने की स्वीकृति दी है। मद्रास सरकार उनकी शिक्षा आदि के लिए १० हजार रुपया देने वाली है।

—कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर पाश्चात्य देशों की यात्रा समाप्त करके १८ फरवरी को भारत आ गये।

—पं० जवाहरलाल जी नेहरू से म्युनिसिपैल्टिी की चेयरमैनी से इस्तीफा वापस ले लेने की जो प्रर्थना प्रयागबोर्ड ने की थी उसके उत्तर में पंडितजी ने कृतज्ञता प्रकट की और यह संदेश भेजा है कि मैं इस्तीफा वापस लेने में असमर्थ हूं।

—बर्मा प्रान्तीय सरकार ने निश्चय किया है कि वह सन् १९२५ की साम्राज्य प्रदर्शिनी में भाग न लेगी।

—भारत के वायसराय पद के लिए कौन चुना जायगा इस सम्बन्ध में कई अफवाहें उड़ चुकी और उनका खण्डन हो चुका। अब यह अफवाह है कि इस पद पर बम्बई के भूत पूर्व गवर्नर सर जार्ज लायड नियुक्त होंगे।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०
१	स्वप्न (पद्य)	२०५
२	श्री अतिशय क्षेत्र देवगढ़ जी ...	२०६
३	जैन जाति और संगठन	२०७
४	बन्धु (पद्य)	२०७
५	युवकों को दो शब्द	२०८
६	जैन धर्म भूषण ब्र० दि० ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी का भाषण	२१२
७	क्या व्यभिचार हमारे देश में बढ़ रहा है ?	२१६
८	पंजाब निवासी दि० जैनियों से ... आवश्यकता निवेदन	२१८
९	साहित्य समालोचना	२२०
१०	सम्पादकीय टिप्पणियां	२२६
११	संसार दिग्दर्शन	२२७

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांदी के फूल भाव १॥) तोला ☞ ☞ सोने के चढ़े फूल भाव २॥) तोला।

(सिर्फ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर अन्दर कम व बेसी जितने तौल चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

हौदा	५००) से २०००)	एरावत	२५०) से ३०००)	*बंधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से २०००)	इन्द्र एक	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०)से१०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेंबुल	३००) से ५००)	*चवर एक	७) से २५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से ३००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२००) से ५००)	*चौकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १००)	समोसरन	१०००) से ३०००)	*×भामण्डल	३०) से १००)
*सोंटा	५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका मांडला	१०) से ५००)	*कलशा	१०) से ५००)
*छतरी डंडी	३०) से ५०)	तेरह द्वीपकी रचनाका मांडला	५००)से२०००)	तखत चांदी के	२००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण ।				बारहदरी	२५००) से ५०००)
गंधकुटी	२५००) से ४०००)			*पूजनके बरतन	३००) से ५००)
वेदी	८००) से ४०००)				

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में २॥) सैकड़ा को आढ़त लेते हैं। मजदूर कारीगरों की नकाशी (कामकी) तोला और सादे काम की ॥) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं। * ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी ।

Tel. Address—'Singhai" Benares.

Regd. No. A. 1271.

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाक्षिकपत्रः

हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। काग़ज़, छपाई, सफाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निडर और समाज के प्रश्नों पर निरपक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को

बिल्कुल मुफ़्त

'महावीर भगवान'

और उनका उपदेश

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीन के साथ लिखी जारही है। यह ग्रन्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अङ्क देखने ही से तालुक रक्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक—राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

श्रोत्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

वर्ष २ १५ मार्च सन् १९२५ [संख्या १०

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

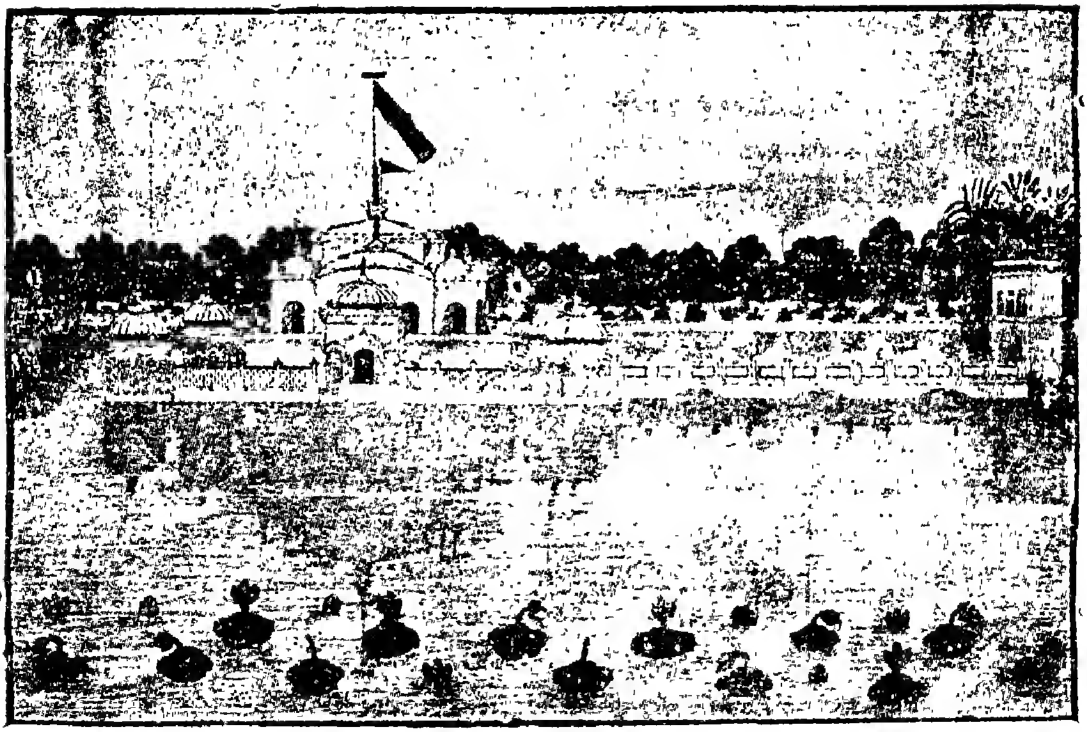

सम्पादकः—
जै० ध० भू०, ध० दि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

उपसम्पादकः—
श्री कामताप्रसाद जी

प्रकाशक—
राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०)

वार्षिक मूल्य] [ढाई रुपये

विषय—सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	मम-कामना (पद्य) ··· ···	२२६	७	कलियुगी कृष्ण (पद्य) ···	२४१
२	हमारी पूजा और प्रक्षाल ···	२३०	८	मच्छर (पद्य) ··· ···	२४२
३	जैन-ला ··· ··· ···	२३३	९	सम्पादकीय टिप्पणियां ··· ···	२४२
४	महिला महिमा ··· ···	२३५	१०	समाजोन्नति का एकमात्र उपाय क्रान्ति	२४५
५	महिला विनोद ··· ···	२३७	११	संसार दिग्दर्शन ··· ···	२४६
६	सूरजचोर (नाटक) ··· ···	२३८			

ग्राहकों को सूचना

वीर का विशेषांक— पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी महावीर जयन्तीके उपलक्ष में रंग बिरंगे अनेक चित्रों से सुशोभित अन्यान्य विषयों से विभूषित बड़ा मनोहर व अत्यन्त उपयोगी विशेषांक ग्राहकों की सेवा में भेंट किया जायगा। इस में समाज व देश के विद्वानों के अतिरिक्त अन्य देशों के प्रख्यात २ विद्वानों के कुछ लेख अंग्रेजी भाषा में भी रहेंगे। लगभग १०० पृष्ठ होंगे। वीर का आगामी अंक १ अप्रैल पर बंद रहकर यह विशेषांक ही ११ अप्रैल तक ग्राहकों की सेवा में पहुंचेगा। पाठक अधीर न हों।

वीर का उपहार—हम को पूर्ण आशा है कि उपहार ग्रंथ "महावीर भगवान और उनका उपदेश" विशेषांक के प्रकाशित होने तक "इंडियन प्रेस प्रयाग" से छपकर आजायगा। अतः ग्राहकों से प्रार्थना है कि शीघ्र ही उपहार के डाक महसूलके लिये ।=) के टिकट (अथवा छः आने मनीआर्डर द्वारा) और अपना ग्राहक नं० लिख कर शीघ्र भेजदें। जिससे उपहार के साथ ही विशेषांक भी रजिष्ट्री में भेजा जासके। इस में गफलत न होनी चाहिये।

वीर का वार्षिक मूल्य—जिन ग्राहकों का वर्ष आगामी महावीरजयंती पर अप्रैल मासमें समाप्त हो जायगा। उनकी सेवा में आगामी विशेषांक वी० पी० द्वारा भेजा जायगा। आशा है वह वी० पी० को स्वीकार करके अनुगृहीत करेंगे और समाज सेवा में हमारा हाथ बटावेंगे।

नोट—यदि उन ग्राहकों में से किसी के पास पिछले विशेषांक से अब तक के अंकों में से कोई अंक किसी प्रकार जाता रहा हो या न पहुंचा हो तो वह शीघ्र पत्र व ग्राहक नं० लिखकर बिना मूल्य प्राप्त कर सकते हैं और अपना फाइल पूरा कर सकते हैं।

नवीन ग्राहक—जो बनना चाहें उन को चाहिये कि शीघ्र २।।=) (ढाई रुपये वार्षिक मूल्य और छः आने उपहार का डाक महसूल) बजरिये मनिआर्डर भेजकर ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखालें अन्यथा पछताना पड़ेगा क्योंकि दोनों उपहार विशेष कीमती होने के कारण आवश्यक संख्या में ही छपवाये जायेंगे वी० पी० से पत्र मंगाने में ज्यादा खर्च और देरीके अतिरिक्त गड़बड़ भी अक्सर होजाती है।

—प्रकाशक

ॐ,

श्री महावीराय नमः

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

श्री भारत दिगम्बर जैन परिषद् का पाक्षिक मुख पत्र

वीर

"सच्चा विश्वप्रेमी वह हो सक्ता है जो दान करने के लिये धन संग्रह करने की अपेक्षा जीवों के दुःख मात्र को दूर करने के कारण भूत सद्गुणों का भंडार भरने में लवलीन रहे वही मनुष्य उन सद्गुणों से सब जीवों के हृदय में गुप्त रीति से दिव्य भंडार भरता है, उनको सुख शांति से पूर्ण करता है।"

—हार्वे।

वर्ष २ | बिजनौर, चैत्र कृष्णा ५ वीर सम्वत् २४५१ | १५ मार्च, सन् १९२५ | अङ्क १७

मम-कामना

जय जय जय श्री वीर जी, विनय दीजिये कान।
मंगल मय तव मूरती, बसे हृदय मम आन॥

हों हम सब विद्वान, वरदान विभु यह दीजे।
जैन समाजोन्नति का, मार्ग निष्कण्टक कीजे॥

हो आनन्द महान्, जाति हित में चित देवें।
जरा न राखें फूट, एकता अपना लेवें॥

—शिखरचन्द जैन।

हमारी पूजा और प्रक्षाल

शुभ भावना की वृद्धि हो जड़ अशुभ परिणति की कटे।
इन्द्रिय-विषय से वृत्ति चञ्चल चित्त की इक इक हटे॥
व्रत हवन जप तप पाठ पूजा इस लिए ही इष्ट हैं।
हो ख्याति, पूजा, लाभ इन से इष्ट तो सु निकृष्ट हैं॥"

—देशभक्त पं० अर्जुनलाल जी सेठी।

वास्तव में जैनधर्म का उद्देश्य भटके हुए जीवों को सच्चे मार्ग पर ला पापोंसे छुड़ा, मोक्षभवनमें पधराना है। इसकारण वह रागादिक भावों का निषेध कर वीतराग भाव की प्रधानता बतलाता है। वस्तुतः जैनियों का यह मुख्य कर्तव्य है कि वे अपने ग्रहस्थीपने में रहते हुए भी इस वीतरागमय परमोच्च पद प्राप्ति के उद्देश्य का ध्यान अवश्य रक्खें! यदि हम दूसरी तरह लोक दृष्टि से देखें तो भी हम को सब से पहिले धर्म का आराधन करना पड़ेगा, अर्थ और काम इसके पश्चात् के कर्तव्य होंगे। और धर्म के आराधन का फल होगा कि हम अपनी वर्तमान दशा में शुभ भावों के द्वारा ऊपर २ उठते जांय और उस अवस्था को पहुंच जांय कि जिस में उन से भी ममत्व छुट जाए और हम अपने यथार्थ उद्देश परमोच्च-परमात्म-पद को प्राप्त करलें।

इसी लिए आचार्योंने उद्देश्यकी सिद्धिके लिए गृहस्थों को छः आवश्यक कर्म बताए हैं जो उन को नित्य प्रति शक्त्यानुसार शुद्ध भाव से करते रहना चाहिये उनमें देव पूजा भी एक आवश्यक अंग है। इससे भी हमारा उद्देश्य इच्छाओंको वश करते हुए आत्मोन्नति से है। और यह मानी हुई बात है। कि संसार में प्रत्येक प्राणीका कोई न कोई आराध्य देव अवश्य ही होता है। चोर और डाकुओं जैसे पापात्माओं के भी देव हैं। वे भी पाप पंकज में फँसे रहते हुए भी अपने देव का स्मरण करते रहते हैं। वेश्यायें भी कुरबानी कर अपने देव के प्रति शुभभाव प्रकट करती हैं। और तो और सामान्य कुँजड़ी बोहिनी के वक्त पैसे से अपने तराजू देवता की पूजा कर लिया करती है। उसी प्रकार किसान हल की और योद्धा अपने शस्त्रादि की! इन सब बातों से यह तो प्रकट ही है कि प्रत्येक प्राणी के हृदय में अपने आराध्य देव के प्रति विनय भाव के अंश मौजूद हैं और वह उन की पूजा किसी रूप में अवश्य किया करता है।

जैनियों के आप्तदेव श्रीतीर्थङ्कर भगवान हैं। इस लिये जैनी उन्हीं की आराधना उन्हीं की पूजा करते हैं। क्यों कि हमारा उद्देश्य भी वही है जो श्री तीर्थङ्कर भगवान का था अर्थात् मोक्ष प्राप्ति परमोच्च-परमात्मा-पद पर पहुंच जाना। और श्री तीर्थङ्कर भगवान भी एक समय हम जैसी संसार में भटकती हुई आत्मा थीं। इस लिये

जिस मार्ग पर चलकर जिस रीति से उन्होंने उस उद्देश्य को प्राप्त किया और हमको रास्ता बतलाया, उसी का अनुसरण हमको करना चाहिए। जो मनुष्य हमको संसारके महाभयानक दुःखोंसे छुड़ा कर वास्तविक सुख को पाने का रास्ता बतलादे उस से बढ़कर हमारा उपकारी कौन हो सक्ता है? अतएव वही हमारा आराध्य देव है। उसी की पूजा, उसी की विनय हम को इष्ट है!

इन आप्त देव की पूजा, इस तरह पर एक तरह से आदर्श पूजा है, क्यों कि जैन धर्म में परमात्मा की पूजा से भाव उन परमात्मिक गुणों की पूजा से है, जिन को वह उपासक अपनी आत्मोन्नति कर प्रकट करना चाहता है, और जो उन महान आत्माओं की परमोत्कृष्ट रूप में विनय और भक्ति करने से ही होती है, जिन्हों ने उन परमात्मगुणों को प्राप्त कर लिया है। जैनी इन तीर्थङ्करों की पूजा कर के उन से किसी प्रकार की वांछा या याचना नहीं करते हैं। और न वे भगवान किसी प्रकार की वस्तु किसी को प्रदान ही करते हैं, क्यों कि वे राग द्वेष से रहित हैं। और न उन की इच्छा ही है कि कोई हमारी पूजा करे, बल्कि यह तो हमारे आत्मा के लिए परमोच्चशुभ प्रवृति-ईश्वरीय पूर्णता को प्राप्त कराने का मार्ग है इस लिए उन की पूजा हम स्वयं करते हैं। किसी उद्देश्यकी प्राप्ति उस ओर पूर्ण लक्ष्य लगाए बिदून और उन महान् आत्माओं के चरण चिन्हों में चले बिदून नहीं होती है जिन्होंने उसको प्राप्त किया है।

श्री तीर्थंकर भगवान की पवित्र विम्बों की नित्यप्रति पूजा और प्रक्षाल करने से हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती है। क्यों कि उससमय हमारा आत्मविश्वास दृढ़ होता जाता है जिस समय हम पूजा भक्ति के ध्यान में लवलीन हो अन्य सांसारिक रागों और कार्य्यों से चित्त को हटा लेते हैं। इससे हमारा दैनिक जीवन भी सत्य मार्ग को लिये हुए ही निकलता है। इसलिये जिस समय से एक श्रावक-पुजारी मन्दिर जी के भीतर कदम रखता है, उस समय से लेकर वहां से वापिस आने तक उसे पुण्य का सञ्चारन करना और धर्म के भाव को बढ़ाते रहना चाहिये। उसको अपने भाव समस्त सांसारिक झंझटों से शुद्ध रखने चाहिये। इसीलिये कहा भी गया है कि "परिणामों की उज्ज्वलता से सामान्य पूजन करनेवाला महापूजन करने वाले से भी अधिक शुभकर्मों का बन्ध कर सकता है और महापूजन करनेवाला उन्हीं परिणामों की मलिनता से सब किया हुआ भी खो बैठता है। परिणामों की उत्कृष्टता और निकृष्टता पर ही कृत्य का फल निर्भर है।" भगवान की परमसौम्य प्रतिबिम्बों से वीतरागमय परम शांतिभाव का भाव प्रकट होता है जो हमें पवित्र से पवित्र विचारों के लिये उत्साहित करता है और हमारे हृदयों में यथार्थ वैराग्यभाव का भाव फूँक देता है। और हमें ध्यान करने के लिये यथार्थ आसन का भी ज्ञान करा देता है। इस हेतु प्रत्येक जैनी को प्रथमतः ही यह उचित है कि वह परम श्रेयस्कर तीर्थङ्कर भगवान की पूजा किया करें। इससे सर्व प्रकार के सुखों की प्राप्ति स्वयं होती है। जैसे कि श्रीमन् कविवर बनारसीदास जी ने कहा हैः-

"लोपै दुरित हरै दुख संकट,
आपे रोगरहित नित देह।
पुण्यभण्डार भरै जस प्रगटै

मुकतिपन्थ सो करे सनेह ।।
ऐसे सुराग देय शोभा जग,
परभव पहुंचावत सुरगेह ।
कुगतिबन्ध दलमलहि बनारसि,
वीतराग पूजाफल येह ।।"

सांसारिक सुख भोगने का स्थान स्वर्ग और अलौकिक यथार्थ सुख भोगने का स्थान मोक्ष है । इन दोनों सुखों की प्राप्ति स्वयं ही इस पूजा करने के फल स्वरूप प्राप्त होती हैं ।

पूजा करने की विधि प्रत्येक जैनी को मालूम होती है और वह यथार्थ ग्रन्थों से भी जानी जा सकती है । इस प्रकार हम अपने पूजन और प्रक्षाल में यथार्थ उद्देश्य की प्राप्ति का भाव पाते हैं । राग और द्वेष से छूटने का एक सुगम उपाय अनुभव करते हैं एवं विवेक और शांति का रसास्वादन करने का एक भक्तिपूर्ण मार्ग हम उस में पाते हैं । हम जिन द्रव्यों से पूजा करते हैं, उन से भी हमारे पूजा करने के यथार्थ भाव और उद्देश्य की झलक झलक जाती है ।

"श्री जिनेन्द्र की पूजन अभिषेकपूर्वक आठ द्रव्य से की जाती है । ये आठ द्रव्य पूजक के परिणामों को सम्हालने के लिए और भक्ति भाव में जमाने के लिए बड़े भारी अवलम्बन हैं । वास्तव में इन आठ द्रव्यों के द्वारा पूजक आठ तरह की भावना करता है । इसलिए इन आठ द्रव्यों के चढ़ाने का प्रयोजन यह है:—

(१) जन्म जरामरण मेरे नाश हों इसलिये मैं आपको शुद्ध जल चढ़ाता हूं ।

(२) संसार की आताप दाह करती है इसकी शांति के लिए मैं चन्दन चढ़ाता हूं ।

(३) इन्द्रियों की इच्छाएं तृप्त नहीं होतीं हैं, इनकी शांति के लिए अक्षत चढ़ाता हूं ।

(४) कामवाण नाश के लिये पुष्प चढ़ाता हूं ।

(५) क्षुधारोग शांति के लिये नैवेद्य चढ़ाताहूं।

(६) मोहान्धकार नाश के लिये दीप चढ़ाता हूं ।

(७) आठ कर्म्मोंको जलानेके लिये धूप खेताहूं

(८) मोक्षफल प्राप्ति के लिए फल चढ़ाता हूं ।

इन आठ द्रव्यों में बहुत उपयोगी क्रम है । अन्त में मोक्षफल प्राप्त करना है । वह मोक्ष आठ कर्मों के नाश बिना नहीं हो सकता । मोह का नाश क्षुधा की बाधा शांत होने से होगा । क्षुधा की बाधा काम की व्यथा दूर करने से हटेगी । काम की व्यथा इन्द्रियों के वशीभूत होने से रुकेगी । इन्द्रियों की विजय चाह की दाह की शांति जन्म जरा मरण से वैराग्य होने से होगी । इस तरह इन आठ द्रव्यों में पूजक के भावों को उन्नत करने के लिए महान तत्व भरा हुआ है ।"

(जैन मित्र से)

इसलिए दृढ़ता पूर्वक पूजा के यथार्थ भाव को समझ कर प्रत्येक सज्जन को पूजा करनी चाहिए । और उस में अपने परिणामों की उज्वलता का ध्यान रखना चाहिए । इतिशम् ।

—कामता प्रसाद जैन ।

जैन-ला

(लेखक—श्री चम्पतराय जी बैरिस्टर जैन बार एट० ला०)

(क्रमागत)

"वारिसों का विधान"

वर्द्धमान नीतिमें निम्न-लिखित प्रकारसे वारिस कहे गये हैं कोई पुरुष मर जाय तो उस के धन के मालिक क्रमशः इस भांति होते हैं।

(१) प्रथम स्त्री

(२) फिर पुत्र

(३) इसके अभाव में भतीजा

(४) इसके अभाव में सात पीढ़ी तक का (सपिण्ड) गोत्रीय

(५) इन सब के अभाव में राजा उस धन को धर्म कार्य में लगा देवे (देखो श्लोक ११, १२)

जिस धन का कोई स्वामी निश्चित न हो उस को राजा तीन वर्षतक सुरक्षित रक्खे फिर उस समय तक भी कोई अधिकारी व स्वामी न होतो उस को वहीग्रहण करे। (देखो श्लोक५७) और।

इन्द्र नन्दि जिन संहिता में इस प्रकार कि:- जब किसी स्त्री का पति नष्ट होगया या मरगया हो या वातादि रोगसे बावला होगया तो तब क्षेत्र वस्तु धन धान्य संपूर्ण स्थावर जंगम की मालिक-

(१) ज्येष्ठभार्य्या होगी जो कुटुम्ब का पालन करेगी या

(२) फिर पुत्र

(३) इन के अभाव में मुख्य गोत्रीय अर्थात् भतीजा

(४) इन के अभाव में दोहिता।

(५) तिस के अभाव में सात पीढ़ी तक का गोत्रीय

(६) यदि उनका भी अभाव हो तो 'लघुभ्राता' इसका तात्पर्य यह है कि जब सात शाखा में कोई न मिले तो ऐसा प्राणी लेना जो छोटे भाई का नाता रखता हो और सात वर्ष से अधिक वय का हो वह अधिकारी बनाना चाहिये (देखो १६-१८) और फिर श्लोक ३५-३८ में दायाद वर्णन किये हैं।

(१) प्रथम धर्म पत्नी

(२) फिर सुपुत्र

(३) उस के अभाव में पिता का भ्राता

(४) उस के अभाव में भ्राता का पुत्र

(५) फिर सगोत्रीय

(६) तत्पश्चात पुत्री

(७) फिर पुत्री का पुत्र

(८) इन सब के अभाव में कोई स्वजातीय गोत्रीया बन्धु मृतक के धन का स्वामी लोकप्रमाण राज्य प्रमाण साक्षी से हो सका है

उक्त निश्चित दान में कलह न होगा ऐसा धर्माचार्य ने सदा के लिये निश्चय किया है क्यों कि राजा और पंचों की साक्षी के बिना जो मृतक के द्रव्य का स्वामी स्वतः होगा तो विवाद के समय वह अप्रमाण होगा और जो साक्षी द्वारा

विधि पूर्वक प्रमाण सहित होगा उसमें किसी प्रकार का झगड़ा न होगा। (देखो श्लोक ३५ ३८)

पूर्वोक्त दायभागका उत्तराधिकारी जिस प्रकार कहा गया है सब वर्णो को उसी क्रम से बनाना चाहिये।

(६) इन सब के अभाव में अपुत्र मृतक के धन का स्वामी राजा होगा परन्तु ब्राह्मणका धन राजा को अग्राह्य है वह धर्म कार्य में लगा देना चाहिये (देखो श्लो० ३६)

अर्हन्त नीति में:—

(१) स्त्री

(२) पुत्र

(३) पति के भाई का पुत्र

(४) सात पीढ़ी तक वंशज

(५) दोहिता

(६) चौदह पीढ़ी तक का वंशज-सगोत्री

यह एक दूसरे के अभाव में दायभागी उत्तरोत्तर होंगे (देखो श्लो० ७४

ऊपर लिखे प्राणियों के अभाव में दायभागी जाति वाले होंगे यदि उनका भी अभाव हो तो ऐसे धन को राजा धर्म कार्य्य में लगा सका है। (देखो श्लो० ७५)

"कौन अधिकारी नहीं"

जमाई, १ भाणजा, २ और सासू यह पर गोत्री होने के कारण दाय भाग के कदपि अधिकारी नहीं हैं। (देखो श्लो० ११८)

"जोडुआँ पुत्रों में ज्येष्ठता"

एक समय में दो या अधिक पुत्र उत्पन्न हों तो प्रथम निर्गत हुये पुत्र को ही ज्येष्ठता होती है और विभाग समय में आचार्यों ने उसी का प्राधान्य कहा है। (१)

यदि पूर्व में पुत्री उत्पन्न होवे और पीछे पुत्र तो वहाँ पुत्र को ही ज्येष्ठत्व है कन्या का विभाग में नहीं है। (२)

"केवल पुत्री के होने पर सम्पत्ति का अधिकार,,

आगे कहे हुए नियमों के अभाव में पुत्र के सदृश पुत्रिका मानी गई है और दाय भाग में तथा पिण्डदान में पुत्रों के समान दौहित्र। पुत्र और दौहित्र में कुछ भेद नहीं है। तथा माता के द्रव्य की भागिनी कन्या होती है चाहे वह विवाहिता हो अथवा अविवाहित और पुत्र रहित पिता के द्रव्य का अधिकारी दौहित्र होता है। उस आत्मस्वरूप पुत्री की उपस्थिति में दूसरा कोई धन का हरण कैसे कर सका है। (३)

जिस मनुष्य के केवल एक कन्या होय और कोई सन्तान न हो तो उसकी मृत्यु पश्चात उसके स्थावर जंगम दोनों प्रकार के धन की मालिक पुत्री और दोहिते होंगे (४)।

विना सन्तान के पति के मरने पर यदि उस की बधू पुत्री के स्नेह वश दत्तक पुत्र ग्रहण नहीं करे तो उसके मरने पर उसके जेठ देवरों के पुत्र उसके मालिक नहीं हो सक्ते किन्तु उसकी मुख्य पुत्री ही अधिकारिणी होगी। (५)

(१) देखो भ० सं० २०, आ० नी० १६
(२) ... ... २१, ... १०
(३) देखो भ० सं० २४, २६, आ० नी० ३२, ३"
(४) ,, ,, ११, २१, ,, ..
(५) ,, ,, ६४, ८६

परन्तु अर्हन्न नीति में इस प्रकार कहा है कि:- जो पुरुष संतान रहित मर जाय तो उस के द्रव्य का उसकी स्त्री मालिक होवे और वह स्त्री अपनी पुत्री के प्रेम वश किसी को दत्तक न बनावे और ज्येष्ठ देवर के पुत्र के अभाव में मृत्यु पावे तो उसका धन पुत्री को मिलेगा। उस कन्या के मरे पीछे उसका पति उसकी मृत्यु पश्चात उसके पुत्रादिक परन्तु उस में पित्र पक्ष के लोगों का कुछ अधिकार नहीं रहता है। (१)

— क्रमशः

महिला-महिमा

पतिभक्ति

पिता अपनी पुत्री से कहता है-"यदि तुम मेरे घर में रहना चाहती हो तो अपने शराबी, जुआरी, व्यभिचारी पति को छोड़ दो वरना मेरे दिल से, मेरी आँखों से, मेरे घर से सदैव के लिये दूर हो जाओ।" इस पर वह आदर्शपत्नी मन में विचार करते हुए पिता से यों कहती है:-आह! कैसी निष्ठुरता! कैसी विकट परीक्षा!

इक ओर धर्म, इक ओर प्रेम,
किसको लूँ अरु किसको छोड़ूँ।
यह पूज्य पिता यह प्राणपति
किसके दिलका नाता तोड़ूँ॥
यह पिता जन्म का दाता है,
अरु पती प्राण का दाता है।
इससे इस तन का नाता है,
अरु इस से मन का नाता है॥
इस ओर चलूँ, उस ओर चलूँ,
दो होने पर मैं किसकी हूं।
इसने जब मेरा हाथ इसे,
दे ,डाला तो मैं इसकी हूं॥
मैं इसका हूं, यह मेरा है,
गुणशून्य पती, गुरुइस्व पती।
पत्नी का सुख सौभाग्य पती,
साम्राज्य पती, सर्वस्व पती॥
पति मनमन्दिर का मोहन है,
अरु पत्नी राधा रानी है।
'शैदा' उपनिषद् का सार यही,
अरु यही शास्त्र की बानी है॥

—(महिला महत्व)

सास बहू के झगड़े का कारण

प्रेम के अभाव से आजकल प्रायः देखने में आता है कि सास ससुर के प्रति बहुओं की भक्ति बहुत शीघ्र ही कम होजाती है, जिस कारण घर २ सास बहुओं में ही नही वरन अन्य स्त्री पुरुषों में भी कलह बनी रहती है यहांतक कि पति-पत्नी में हार्दिक अथवा सच्चा प्रेम नहीं होने पाता है।

(१) „ आ० नी० १,६,११८

जिस समय कन्या विवाहिता हो अपने पतिदेव के घर में प्रवेश करती है तथा माता पिता के स्नेह से छूटी हुई नये कुटुम्बियों में मिलती है, उस समय उसका कर्तव्य है कि सास को अपनी माता तुल्य समझ कर तन मन से उनकी सेवा करे तथा क्रमशः गृहस्थी का भार अपने ऊपर लेकर सच्ची गृहलक्ष्मी बन अपने को योग्य गृहणी सिद्ध करे।

परन्तु अगर बहू अशिक्षित हो तो सासको भी उसे अपनी पुत्रीवत् समझ कर पूर्णरूप से उसे शिक्षित बनाने का प्रयत्न करना उचित है किन्तु नहीं बहुधा देखने में आता है कि बहुओं को शिक्षा देना अथवा प्यार के साथ समझाना तो दूर रहा वरन् वह हरएक तरह की जली कटी बातों से उसका दिल दुखाती रहती हैं। जिसका परिणाम यह होता है, कि बहुओं के मन में भी उनकी ओर से अश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है भविष्य में वह जो कुछ सेवा तथा अन्य कार्य करना चाहती थीं उससे सर्वथा उदासीन होजाती हैं और पद पद पर लांछना पाने से धृष्ठतापूर्ण उत्तर प्रत्युत्तर करने लगती हैं।

प्रथम तो हमारे समाज की स्त्रियां शिक्षित नहीं, यदि भाग्य से माता पिता के यहां कुछ उच्च शिक्षा पागई और उस उत्तम शिक्षा के प्रभाव से पतिभक्ति के आदर्श को समझने भी लगी तो उन्हें वह अवसर ही कहां मिलता है; जिसे कार्यतः प्रकट कर पति को सुख पहुंचा सके क्योंकि यदि कहीं सास ननंदों ने पतिदेव को पानी देते अथवा कुछ बोलते भी देख लिया तो मानो बड़ा अन्याय होगया उसी समय बेचारी पर नाना प्रकार की अप्रिय बातों की मूसलाधार वर्षा होने लगती है इसी कारण बस उनमें किसी न किसी प्रकार झगड़े का सूत्रपात आरम्भ होने लगता है। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि वह यह नहीं सोचतीं कि इसमें बुराई होगी अथवा भलाई। मेरा कहना यह नहीं है कि सब दोष सासों ही का है क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि "एक हाथ ताली नहीं बजती है" न सास बहू को पुत्री ही समझती है न बहू सास को माता ही, इसका मुख्य कारण केवल प्रेमका अभाव और अशिक्षा है क्योंकि उनमें से एक भी शिक्षित हो तो झगड़ा बन्द हो जावे।

प्राचीनकाल में स्त्रियों को पूर्णरूप से शिक्षा दी जाती थी और यही कारण था कि वे अपने सास पति तथा अन्य कुटुम्बियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं किन्तु वर्तमान समयमें स्त्रीशिक्षाका सर्वथा अभाव हो जाने के कारण स्त्रियों की यह दशा हो रही है।

इसलिए बहिनों से मेरा यह निवेदन है कि मेरे इस छोटे से लेखपर ध्यान दें, अपने गृह में सुख शान्ति की पवित्र धारा बहायें। मैं आशा करती हूं कि उपरोक्त कथन पर पाठिकायें विचार करेंगी और इस तुच्छ लेखसे भी अपनी बुद्धिमत्ता से कुछ न कुछ लाभ उठा ही लेंगी।

"महिला महत्व"

महिला विनोद

(ले० एक घर का मालूम—बी० ए०)

बस हद हो गयी-शीघ्रता की नाक कट गयी—वायर-लेस (बेतार के तार) की कम्पनियों ने अपना टाट उलट दिया क्योंकि समाज की कुछ प्रौढ़ायें अब इतनी जल्द इधर उधर से खबरें लाने लगी हैं कि अब (Telegraph) टेलीग्राफ को भी हार माननी पड़ती है। योरपवालों को उचित है कि स्पेशल कन्ट्रैक्ट करें क्योंकि सारा काम सुलभ और सुगमता से हो जाया करेगा।

*　*　*

लाख चेष्टा करो मगर कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी, चाहे सभा करो, गला फाड़कर व्याख्यान दो या मासिक पत्र निकालो मगर सब कुछ बेलअन। बुढ़ियां अब भी कहा करतीं हैं कि क्या हमें अपनी बहुरिया और बिटियां को पढ़ा लिखा कर "बालिष्टर" बनाना है। समझ की बलिहारी।—

*　*　*

कौन कहता है कि स्त्री के कोमल हाथ पकड़ने का अधिकार केवल पति को ही है, मेरी समझ में तो पति से बढ़कर अधिकार मुसल्ले चूड़ीवालों को है क्योंकि वे घंटों मुलायम हाथों को दबाकर चूड़ियां पहिनाते हैं।

*　*　*

पुरुष भी बड़े होशियार हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि यदि स्त्रियों को पढ़ाया लिखाया या शिक्षित बनाया तो बस पकाओ अपने हाथ से कच्ची पक्की, जहां औरतें पढ़ी नहीं शौकीनी के सरञ्जाम की फरमाइशें हुई नहीं, क्योंकि हर वक्त उनके हाथों में ह्वाइटवे लेडला कं० (Whiteaway Ladlaw & Co. का सूचीपत्र रहेगा।

*　*　*

विवाह में यदि सीठनें न हुए तो सारा गुड़ गोबर हो जाता है, मजा किरकिरा हो जाता है; सब रङ्ग फीका पड़ जाता है। अरे इसी मनोरञ्जन के लिये तो हमारे यहां सीठने की प्रथा को बड़े बूढ़े उठाते हैं! वाह! कोकिल कण्ठ से निकली हुई गालियां भी कैसी मनोहर होती हैं।

*　*　*

स्यापों में यदि औरतों की पञ्चायत न हो तो और कहां हो। क्या हमारी कुलदेवियां और बड़ी बूढ़ी क्लबों और सोसाइटियों में जाया करें अथवा पार्क में व्याख्यान झाड़ा करें, जिन्हें स्यापे की चालें बुरी लगती हैं वे निगोड़े अपने कानों में बेलन क्यों नहीं अड़ा लेते।

*　*　*

समाज में एक बात बड़ी ही अच्छी देखने में आती है हमारी कुल कामिनियां प्रायः बड़ी बूढ़ियों के साथ गङ्गा नहाने जाती हैं। पैदल जाती हैं पर चद्दर ओढ़ कर जाती हैं क्योंकि पर्दे के महत्व को वे खूब समझती हैं। लौटते समय गङ्गाकिनारे कुंजड़ों से सौदा भी खरीदती हैं, उस समय पर्दे की उन्हें ज़रा भी परवाह नहीं रहती। यदि अकस्मात् किसी जान पहिचान वालोंपर दृष्टि पड़ी तो हाथी की सूंड की तरह लम्बा घूंघट भी काढ़ लेती हैं।

धन्य है हमारी समाज, क्यों कि रखती है परदे की लाज।

अरे भाई! समाज के पुरुषों से तो वे कुजड़ेही अच्छे जो नयी नवेलियों के मुखमण्डल का दर्शन तो किया करते हैं।

—महिला महत्व

सूरजचोर

(नाटक)

(लेखक-बालचन्द्र सेठी लाडनूँ)

(स्थान—वसन्तसेना गणिका का वसन्तमहल)

(वसन्तसेना उदास मुँह किये पलङ्ग पर पड़ी २ अपने मन ही मन में कुछ गुनगुना रही है)

सूरजचोर-(स्वतः) यह क्या! आज प्राणप्यारी ऐसी उदास क्यों पड़ी है? क्या कारण है? (प्रगट) हृदयेश्वरी! आज क्यों ऐसा उदास मुँह किये पड़ी हो? क्या तबियत कुछ गड़बड़ है या और ही कुछ माजरा है?

वसन्तसेना-कुछ नहीं, मैं तुमसे कुछ नहीं कहूंगी।

सूरज-आह प्राणप्यारी! यह क्या हृदयवेधी शब्द कह रही हो। तुम्हारे ही प्रेम के कारण मैं सर्वस्व तुम्हें अर्पण कर चुका हूं। घर छोड़ा, कुटुम्ब छोड़ा, धर्म छोड़ा, सब कुछ छोड़ चुका हूं। छोड़ कर ही चुप न हुआ अब तुम्हारे प्रेम ही के कारण चोरी करने को उद्यत हुआ हूं!

वसन्त-तुम मेरी अभिलाषा पूर्ण नहीं कर सके हो।

सूरज-वाह, खूब कहा? भला इस सूरजचोर से ऐसा कौनसा काम बाकी है जो यह न कर सकता हो?

वसन्त-अच्छा तुम सब काम कर सके हो तो फिर मेरे लिये इस नगर के राजा की पटरानी के गले का चन्द्रहार अभी तक क्यों न ला सके? अब तो तुम मेरे हृदय का आलिङ्गन तब ही कर सकोगे जब इसे ला दोगे। बस रहने दीजिये—जाइये।

सूरज—(हँस कर) बस इसी लिए ही तीर तरकस चढ़ा हुआ था। तो कुछ भी नहीं। लो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि कल दिन तुम्हारे सुन्दर गले में चन्द्रहार पहिनाकर ही तुम्हारे साथ में आनन्द केलि करूँगा।

२

(समय अर्धरात्रि का)

(सूरजचोर ने नेत्रोंमें अंजन लगा करके आहिस्ते २ राजमहलमें प्रवेश किया और शयन करती हुई साम्राज्ञी के गले से चन्द्रहार निकाल कर चम्पत हुवा)

सूरज-(स्वतः) आज प्राणप्यारी के गले में

इस चन्द्रहार को पहिना करके ही सुख भोगूँगा ······ "रास्ते में चलते २ एक प्रहरी ने हार का चमत्कार देख कर चोर समझ करके पीछे से उस की गर्दन पकड़ ली।

प्रहरी-साला चोर, इस हार को हमारी आंखों में धूल झोंक कर कहां लिए जाता है ?

सूरज-हुजूर माई बाप, अपनी प्राण प्यारी की इच्छा पूर्ति हेतु सचमुच महाराणी के गले से चन्द्रहार लिए जाता हूं। सच कहता हूं। तुम्हारे पैर पकड़ता हूं। तुम यह लो एक हजार रुपया और ज्यादा चीं चपड़ मत करो। मुक्त करो।······

प्रहरी-चल तेरी प्राण प्यारी की ऐसी तैसी ! साला हमें घूंसखोर समझता है। हम नमक-हराम नौकर नहीं हैं। सरकार का आशा भरोसा हम ही पर है फिर भला हम नमकहराम नौकर के समान इस जगत में पातकी कैसे बन सकते हैं ?

"प्रहरीसाहब ने रुपये की झंकार में अपने उपदेशको भुला दिया। मुंह में पानी भर आया। मुक्त हुआ चोर अगाड़ी बढ़ा कि अभागा कोतवाल के पंजे में फंसा। हाथों में हथकड़ियां झूमने लगीं।"

३

(स्थान—न्यायालय)

(जनता की भीड़ और राजा जयपाल न्याय सिंहासन पर बैठे हुए हैं दीवान आदि कार्यकर्तागण अगलबगल में बैठे हुए हैं)

राजा-दीवान साहब ! कल रात को महाराणी के गले से जिस चोर ने हार चुराया है उसके मामले में ही मैं विचार करूंगा आप उस चोर को हाजिर करें।

दीवान-जो हुकुम सरकार का।

दीवान की आज्ञा से प्रहरी ने हथकड़ी पहने सूरज चोर को हाजिर किया।

दीवान-(सूरज चोर से) क्या तुम्हें इस चोरी के मामले में कुछ आपत्ति है ?

सूरज-नहीं हुजूर, मैं झूंठ नहीं बोल सकता हूं। और न मुझे कुछ आपत्ति है। मैंने ठीक महाराणी के गले से हार चुराया है।

दीवान-(सभ्यों की तरफ मुंह करके) देखो सभ्यगण ! यह चोर अपने आप ही अपना अपराध स्वीकार करता है। अब महाराजा साहिब इसे उचित दण्ड से दण्डित करें यही न्यायसंगत है।

राजा-इस चोर ने खास महाराणी के गले से हार चुराया है इसलिए इसके अपराध का उचित दण्ड प्राणदंड ही है।

सूरज चोर-(माथे पर हाथ धरके) मिला मिला पापों का प्रायश्चित्त मिल गया। मेरे वेश्यागमन और चोरी करने का कटु फल मिल गया। हा ! उस नरपिशाचनी के कारण मैंने कैसी यन्त्रणा भोगी परन्तु अन्त में सूली चढ़ना ही नसीब हुआ. अपने किये पापोंका फल पाचुका। भारतवासियों ! थूको, मेरे जैसे अधम वेश्यागामी चोर पर थूको। और ढूंढ २ कर ऐसे नराधमों को दंडित करके इस पावन मही को पवित्र बनाओ !

४

(स्थान—मैदान सूली)

(यमपाल सूरजचोर को पकड़े हुए हैं श्मसान में आकर सूली को खड़ी की और उस पर सूरजचोर को बैठा दिया)

सूरज चोर-हाय प्राण गये ! कोई पानी पिलाओ ! हा यह जिनदास सेठ जी आ रहे

इन्हें कहूं सेठ जी, हम मरते हुए को थोड़ा पानी तो पिला दीजिये।

जिनदास-(देखकर और खुशी होकर) पानी तो लाता हूं परन्तु इतने तुम एक मन्त्र जो मैंने एक मुनि के मुख से सुन कर आया हूं उसे याद करते रहो।

सूरज-अच्छा बताइये वह क्या मन्त्र है ?

जिनदास-"णमोअरहंताणं"

सूरज चोर-अच्छा मैं याद करता रहूंगा। आणो ताणो ताणो सेठ वचन प्रमाणों।

(सेठ का प्रस्थान और चोर के प्राणांत)

५

(स्थान श्री जिनालय)

"जिनालय के अन्दर सेठ जिनदास सामायिक कर रहे हैं। द्वार पर एक प्रहरी के रूप में देव भव को प्राप्त सूरजचोर बैठा हुआ है"

एक सिपाही-हटो जी प्रहरी, एक ओर हटो, हमें अन्दर से सेठ जी को लाने दो।

प्रहरी-क्यों क्या ऐसा अनुचित काम सेठ जी ने किया है।

सिपाही-सेठ जी, कल दिन सूरज चोर के साथ बात करते थे, इसलिए राज्य के दोषी हैं। उन्हें पकड़ने की राजाज्ञा है।

प्रहरी-क्या बात करने से ही दोषी होगए !

सिपाही-हाँ, बात करनेसे ही तो साबित होता है कि सूरजचोर से और इन से कुछ सम्बन्ध था।

प्रहरी-तो हम सेठ को नही पकड़ने देंगे।

सिपाही-चल हट।

प्रहरी-फू.........("सिपाही धराशायी हो गया।"

(बहुत सी सेनाओं का आना और प्रहरी की फूंक से सबका धराशायी होना और अन्त में स्वयं राजा का उपस्थित होना)

राजा-अज्ञात पुरुष, आप कौन हैं ? अपना सच्चा हाल हमें सुनाइये। यदि कुछ अन्याय हुआ हो तो प्रकट कीजिये।

प्रहरी-राजा मैं तो तुम्हें अब छोड़ भी नहीं सका। हाल क्या बताऊँ परन्तु यदि तुम जिनालयके अन्दर सेठ जिनदास हैं उन से क्षमाप्रार्थना करो तो सब हाल विदित हो।

राजा-(जिनालय के अन्दर सेठ जी के पास जाकर) सेठ जी हम से जो कुछ दोष हुआ है सो क्षमा करो।

सेठ-(आश्चर्य से) सरकार, मैं तो कुछ भी नहीं जानता...

सेठ-(बाहर आकर प्रहरीसे) हैं यह क्या ! आप कौन हैं ? (चारों तरफ लक्ष्य करके)यह महान हिंसा जिनालय के बाहर ! यह घोर हिंसा ! हा क्या मेरे कारण यह हिंसा ! महानुभाव, यह क्या माया है ?

प्रहरी-(सेठ के पैर पड़ते हुए) नाथ मैं सूरज चोर हूं। प्रभो, आपने मुझे मरते समय जो णमोकार मंत्र दिया था उस महामंत्र के प्रभाव से मैं स्वर्ग में ऋद्धिधारी देव हुआ हूं यह आपका ही पुण्य प्रताप है। मैं किस मुखसे आपका गुण वर्णन करूं। आप ही परम धर्मात्मा-परोपकारी-दया के निधान हैं। मैं आपको यह तुच्छ (रत्नों का पिटारा) भेंट

अर्पण करता हूं । इसे कृपा कर स्वीकार कीजिये

सेठजी—हे देव, मैंने कुछ उपकार नहीं किया। इस अपूर्व महामंत्र के प्रभाव से क्या सुख नहीं मिलते ? यह अनादि निधन महा मंत्र है । इसका जो अटल ध्यान धरता है वह अमर पद को भी प्राप्त करता है !

"क्या न सुख इस लोक में महामंत्र से होता नहीं ।
अरु क्या न सुख शिवलोकका इस मंत्र से मिलता नहीं।"

हे देव मेरा यही तुमसे कहना है कि इन सर्व मनुष्यों को सचेत करो ।

प्रहरी—(हाथमें जलका लोटा लिए सब पर छिड़कता है) लीजिए। यह सब सचेत होगए सर्वसैनिक—(आंख मलते हुए) हा ! यह क्या सूरज जोर देव होगए ! अहा यह सब जिनधर्म का ही प्रभाव

राजा—हे सेठजी और सुरराज मैं आजसे पवित्र जिनधर्म अंगीकार करता हूं।

सर्व सैनिकगण—हम भी आज से परम पवित्र जैन-धर्म अंगीकार करते हैं।

"सब मिलकर गाना गाते हैं—

जपहु नर मंत्र पंच नौकार ।
इन्द्र चंद्र नागेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र जपहिं जगसार ।
अशरण सरण सहाय स्वयंवर मुक्ति वधूटीहार ॥
भूत प्रेत बेताल व्याल भय भंजन तंत्रीसार ।
अनुपम मंगल मंत्र महातम विघ्न विनासनहार॥

यवनिकापतन ।

कलियुगी-कृष्ण

१

वृन्दावन वृन्दावन व्यर्थ ही मचाते तुम,
व्रज में दिखाते नहीं राधिका कन्हाई तो ।
'अपटूडेट' होते नहीं 'पापुलर' कैसे बनो,
एक बार गा के वही बार बार गाई तो ॥
कवियो! तुम्हारे श्याम आये यूनिवर्सिटी में,
ढंग है निराला रूप शोभा है बड़ाई तो ।
तज के पीताम्बर बने हैं सूट धारी अब,
देखो सब ओर वे ही पड़ते दिखाई तो ॥

२

श्याम अधरों से लगी बांसुरी मिलेगी नहीं,
अब तो निराली धुंआधार रेलगाड़ी है।
प्यारी गोपियों के हेतु पागल नहीं है वह,
लाड़ली मिसों में बना आज तो अनाड़ी है॥
नाड़ी बन्द की थी कंस पूतना की जिसने सो,
बन्द कर देता स्वीय गौरव की नाड़ी है ।
द्वारिका में जाकर छिपे थे युवराज कभी,
द्वारिका निराली अब 'वाइफ़,की साड़ी है॥

३

आज भी लगे हैं कृष्ण लोक-हित-साधन में
देखो सब ओर मेम्बरों की भरमार है।
भारत-उद्धार के लिए हैं अवतार लिए ॥

सब से बताते सरकार बदकार है।
स्वार्थ-त्याग कृष्णने कियाथा गोपियोंके त्याग।
आज भी निराले महात्याग का विचार है॥

डाकू घर लूटें, नारियों का अपमान करें।
बोलेंगे न नेतागण 'यूनिटी' का भार है।

———

मच्छर

(१)

मच्छर! तुम सी शक्ति कहां से लावें प्यारे।
नहीं हुये है सफल बहुत से यत्न विचारे॥
नीति जलधि में अगर तुम्हारे हाथ बढ़ावें।
किन्तु ज्ञान के थके मनुज हम पार न पावें॥

(२)

पहले गिरते चरण किसी के पीछे उसकी।
पीठ ठोक कर, बात सुनाते हो फिर रस की॥
इतने में है उसे तुम्हारी बात सुहाती।
उस के देखे छिद्र, तुम्हारी फूली छाती॥

(३)

एक साथ हम चरण एक ही चल सकते हैं।
किन्तु तुम्हारी चाल नहीं हम गिन सकते हैं॥
चलने की छह गुनी, ठहरने की तिगुनी है।
पद्संख्या पर शक्ति वचन मति की अगिनी है॥

(४)

हलके हो जब कभी स्वर्ग की सैर करोगे!
क्या हमपर उस समय कृपा कुछभी न धरोगे॥
चूस २ कर स्वर्ग, लौट कर हो अब आये!
क्या रख कर आदर्श हमें सुख देने धाये?

(५)

हम भारी हैं पड़े रहेंगे ही भूतल पर।
आप लीजिये सुख स्वर्गों का अवनीतल पर॥
मच्छर! अनंतगुणधाम! नाम कुछ कम न कमाया।
अब तुम्हें अनन्त प्रणाम, नींद से भला जगाया!

—'भुवनेन्द्र'

सम्पादकीय टिप्पणियां।

न्याय की मांग!

जैन समाज की वर्तमान अधोदशा को देखते हुए प्रत्येक जाति हितैषी के हृदय में विषम कटुता का उद्वेग फूट निकलता है। दिन पर दिन उसकी संख्या घट रही है। उसकी शारीरिक मानसिक और नैतिक शक्तियां हीनता को प्राप्त होती जा रही हैं। पद पद पर उसकी अवहेलना की जारही है। उसके स्वत्वों और अधिकारों पर खुला आक्रमण हो रहा है। और तो और उसके परम पूज्य श्री तीर्थंकर भगवान के प्रति भी लोग अपशब्दों का प्रयोग करने में नहीं झिझकते। परन्तु इतना दारुण अपमान होने पर भी आज के जैनियों के कानों पर जूंतक नहीं रेंगती! भला जो जाति अपने आदर्श पुरुषों की मर्यादा बनाये रखने में और उनके प्रति जनता की आदर दृष्टि बनाने में असमर्थ हो वह

किसप्रकार जीवित रह सकी है ? वह तो जीवित ही मर चुकी है। वस्तुतः आजकी जैन जाति की यही दशा है। यही कारण है कि वह अपने अन्त समय के श्वास पूरे करने जारही है। नहीं भला इस घोर अपमान के होते हुये-धर्म को लांछन लगाते हुए भी जैनी अपने जैनत्वको भुला ये रहते? क्षत्रियों के धर्म के उपासक आज इस प्रकार निस्तब्ध और निस्तेज हो जाते ? सच पूछिये आजके जैनी जैनत्व को भूले हुये हैं। वह नहीं जानते कि एक जैनी अन्यों के लिये आदर्श रूप होना चाहिये। उसके दैनिक जीवनमें सत्यता और निर्भीकता की झलक दरशना चाहिये। आपस में इस तरह की प्रीति होना चाहिये कि बाहरवाले देखकर दांतो तले अंगली दबा जांय। परन्तु आज बुद्धिबल को गंवार हुए-हीनता को प्राप्त हुये-परस्पर में छोटी २ बात पर लड़ने झगड़ने वाले-साम्प्रदायिकता के मदमें मदमाते किस प्रकार जैनधर्मी होने की हामी भरसकते हैं? और वह किसप्रकार उसकी रक्षा करसकते हैं? यही कारण है कि हमें न्याय की मांग वर्तमान परिस्थिति की कड़ी आलोचना करने को बाध्य करती है।

जैनसमाज पर दृष्टि डालते ही मोटे रूप में दिगम्बर-श्वेताम्बर प्रभेद हमारे सामने आता है। उनका आपस में तीर्थों के नाम पर रुपया बरबाद करना हमें संसार की नजरों से गिरारहा है। परिषद की अध्यक्षतामें बनी कमेटी इस शोचनीय नाशकारी दुर्दशाको मेटनेमें अग्रसर है। दोनों संप्रदायों के मुखियों का कर्तव्य है कि वह आपस में शीघ्र ही धर्म और जाति की भलाईके लिये समझौता करलें जैनधर्म किसी खास सम्प्रदाय या जाति के लिये ही सीमित नहीं इस बातका ध्यान प्रत्येक जैनी को रहना चाहिये। इसी हेतु जैन तीर्थायतन किसी की मौरूसी न होकर "देवदत्त" मिलकियत हैं, जिन पर उनके श्रद्धानी सबही का समान हक़ है।

अब जो दिगम्बर संप्रदाय पर दृष्टि डाली जाय तो उस से कहीं लज्जास्पद सर्व नाशकारी परिस्थिति इसमें हो। रही है दिगाम्बरी बीसपंथी आदि विभागों में पहिले ही विभाजित थे, परन्तु आजकल इन से बढ़े चढ़े नुमायशी प्रभेद उस में अनोखे हो रहे हैं। हमें उसमें दो श्रेणी के मनुष्य दिखाई पड़ रहे हैं। एक तो वह जो अब भी 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' के पक्षपाती लीक पीटने वाले और दूसरे समय की प्रगति से वाकिफ। प्रथम श्रेणी के मनुष्य संख्या में अधिक और ग्रामीण ही मिलेंगे और दूसरी श्रेणी के मनुष्य देहातों में कठिनता से मिलेंगे। तिस पर खूबी यह कि इन में भी दो भेद पड़े हुये हैं। संस्कृतभिज्ञ समाज के दान किये हुये रुपयों से चालित विद्यालयों में से आये हुये पंडितगण स्थितिपालक बन रहे हैं। उधर वर्तमान लौकिक विद्या से विभूषित स्वयं अपने पैरों जीवन प्रभात में आखड़े होने वाले स्थिति सुधारक जन निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करने को अगाड़ी आये हुये हैं। वर्तमान में जब अन्य जातियों की उन्नति होते वह चहुंओर देखते हैं तो यह वैसी उन्नत अपनी जाति को देखने की इच्छा से उस में वैध उपायों द्वारा कार्य करने को आते हैं। बस यहीं पर स्थिति पालकों से और इनसे मुठभेड़ हो जाती है। इन दोनों के अतिरिक्त एक तीसरा किन्हीं अंशों में दर्शक अथवा गुरुदल समाज के धनी सेठ गण हैं। इनमें विशेष

कर 'अरिस्टोक्रेसी (Aristocracy) की बू भरी हुई है, जिस को बनाये रखने के लिये वह लोग बहुधा पंडित महाशयों के विरोधी बनना नहीं चाहते। इसका एक और कारण यह है कि पंडित दल पुराने ढर्रे से ग्रामीण भोले दल को उकसाने और अपने पक्ष में लाने में सिद्धहस्त है, यद्यपि यथार्थ स्थिति का पता लगते जानेसे अब वह भी फीका होता जा रहा है। स्थितिपालक पंडित-दल के सुधारकदल से विरोधी होने का कारण मानवसत्ता की आकांक्षा और स्वार्थ का भूत है। जिस प्रणाली से सामाजिक विद्यालयों से पढ़कर पंडितगण निकलते हैं (जो वहां बहुधा ग्रामीण साधारण स्थिति के घरों से आते हैं) उन से उन्हें मान और सत्ता पानेकी लालसा प्राकृतिकरूप में आघेरती है और जीवन निर्वाह के लिये रुपये कमाने का सवाल अगाड़ी आखड़ा होता है। उन की शिक्षा ऐसी होती है कि वह सिवाय नौकरी के अन्य कार्यों के योग्य बहुत कम रहते हैं। तब भी फिर वह जाति ही की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं और इसकी विविध धार्मिक संस्थाओं में योग्य उससे अधिक वेतन में नियत हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त और भी उपाय समाज से धन प्राप्ति के प्रचलित दिखाई पड़ते हैं। धन प्राप्ति के साथ ही धार्मिक क्रियाओं से अधिक विज्ञ होने के कारण तथा पुरातन परिपाटीके अनुसार उन की मान्यता भी अधिक होजाती है जिससे वह असलियत को देखने में लाचार होजाते हैं। वे अपने स्वार्थ और पद की रक्षा के भय में सुधारक दल के विरोधी बन बैठते हैं और जो निन्दनीय उपाय सुधारकदल को परास्त करने में प्रयोजित करते हैं वह सर्वथा नीचता और दुष्टता के परिचायक हैं। सुधारक दल में इतनी कमताई अवश्य है कि वह धार्मिक ज्ञान में उन के टक्कर का नहीं है और उन के मस्तिष्क में कुछ जल्दीपन है। बस इस आपसी फूट अविश्वास के कारण द्वेष की अग्नि सुलगाई जाती है और मरती हुई समाज को और भी सताया जाता है। शेडवाल में जो समस्त जैनियों की सभा हुई थी उस में इस विरोधने जो अनिष्ट किया वह किसीसे छिपा नहीं है। उस पर समाज नेताओं को दुःख प्रदर्शित करना चाहिये था, परन्तु उपरोक्त कारणोंवश हो उल्टा ही रहा है।

समाज और धर्म की भलाई के लिये उत्तम तो यह है कि दोनों दल आपसी फूट अविश्वास को त्याग कर प्रेमपूर्वक कार्य करना सीखें। वरन् मनुता का गर्त दूर नहीं है। हम अपने उन नवयुवकों से जो सच्चा कार्य करना चाहते हों यही कहेंगे कि आप इन झगड़े में न पड़ें। यदि आपको सच्चा कार्य करना है तो परिषद् में आइये। परिषद् अपने अल्प जीवन में ही ठोस कार्य करने में अग्रसर है। बस आइये और कार्य कीजिये।

—उ० सं०

कांच की शीशियां

हर साइज़ व हर नमूने की पक्की शीशियां तैयार कराकर बाज़ार भाव से कम मूल्य पर रवाना की जाती हैं। आवश्यकताओं को लिखकर कीमतों को मालूम कीजिये।

आर० एस० जैन एण्ड० ब्रादर्स, महावीर भवन, बिजनौर।

समाजोन्नति का एकमात्र उपाय क्रान्ति

(लेखक-श्रीयुत् माई दयाल जैन विद्यार्थी)

जैन समाज गत तीस चालीस वर्षों से जिस तरह घट रही है उसे प्रायः समाज का बच्चा २ जानता है। हम सरकारी मनुष्य गणना के अनुसार, सत्तर अस्सी हजार प्रति दश वर्ष कम हो जाते हैं। और भय है कि हम यदि इस ही प्रकार घटते रहे तो एक डेढ़ सौ वर्ष में सर्वथा लोप हो जायेंगे। इतिहास में जैन समाज का नाम शेष रह जायगा। इतिहासज्ञों के सामने जैन धर्म केवल एक खोज का ही विषय बन जायगा और मन्दिर तीर्थ क्षेत्र आदि जिन पर कि आज हम बेशर्मी से लड़ते हैं, अविनय जनक अवस्था में होंगे। कितना भयानक दृश्य होगा। आंखों के आगे आते ही बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। आंखों से आंसू बह निकलते हैं। किन्तु ऐसे आदमी समाज में हैं कितने जो समाज की इस दशा से दुःखित हों! जिस समाज की घटोतरी को सुनकर देश शिरोमणि महात्मा गांधी को दुःख हुआ था, उस समाज में ऐसे कितने मर्द, स्त्री, नवयुवक और वृद्ध पुरुष हैं जिनके बदन में जातिजैन समाज की इस अवस्था के कारण खून का जोश दे रहा हो और समाजोन्नति के लिए सर्वस्व त्याग देने और जैन जाति के सामने बलि दे देने को लालायित हों। हमारे तो कानों पर जूँ भी नहीं चलती हम तो कुम्भकरणी नींद के मजे ले रहे हैं। हमारी अवस्था तो आराम से व्यतीत हो रही है हमें समाज और समाजोन्नति से क्या? ऐसे विचार बहुत से मनुष्यों के हैं। उनके लिए हम सहानुभूति के दो आंसू बहा देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते!

समाज में क्या २ दोष और कुरीतियां हैं उनका बताना मेरे लिए कठिन है सम्भव है कोई बड़ा ही नेता उन्हें गिना सके। मैं तो जैन समाज को सब तरफ से घुन लगी देखता हूं। और समाज को उस मनुष्य से तुलना करता हूं जो अपनी मृत्यु शैय्या पर सर्वांगोपांग रोगी पड़ा हो और अपनी मौत की घड़ी गिनता हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो। उसके स्वागत के लिए तय्यार हो और कुछ ही घड़ियों का महमान हो। हमारी समाज में एक नहीं सैकड़ों दोष और कुरीतियां हैं। आवे का आवा ही खराब है। यहां दिगम्बर और श्वेताम्बर के झगड़े, तीर्थों का युद्ध, पुराने विचार वालों की दलबंदियां, पंजाब में स्थानक वासियों में पत्रों और परम्परा पर साधुओं में झगड़े, बाल विवाह, वृद्धविवाह आदि कुरीतियाँ, समाज की सैकड़ों उपजातियों की हीन क्षीण दशा इत्यादि सैकड़ों खराबियां हैं। भला फिर किस २ का इलाज किया जाय और किस किस का सुधार किया जाए। कुछ समझ में नहीं आता। परन्तु हताश भी हुआ नहीं जाता। इसलिए अब हम पाठकों के ज्ञान के लिए मनुष्य गणना के अंक नीचे देते हैं। जिनके देखने से हमारी कमी और सामाजिक दशा का अनुमान किया जा सके।

सन् १९२१ ई० की रिपोर्ट

नं०	नाम प्रांत	१९११	१९२१	कमी या बढ़ोतरी
१	राजपूताना एजेन्सी	३,३२,३६७	२,७६,७२२	-५२,६७५
२	बम्बई प्रांत	४,८६,६५२	४८?,६५०	-८,३०२
३	युक्त प्रांत	७५,४२७	६८,१११	-७,३१६
४	मध्य भारत	८७,५७१	८३,३३७	-४,२३४
५	हैदराबाद एजन्सी	२१,०२६	१८५८४	-२,४४२
६	अजमेर मेवार	२०,३०२	१८,४२२	-१ ८८०
७	मद्रास	२६,९६५	२५,५६३	-१,४०२
८	पंजाब और देहली	४६.७७५	४६,०१८	-७१७
९	सी० पी० और बरार	७०,२५८	६९.७६३	-४९५
१०	रियासत बड़ोदा	४३,४६२	४३,२२३	-२३९
११	अन्य रियासत	३,४४३	२,०२०	-१४२३
१२	बंगाल	६,२०६	१३,३७६	+७,१७०
१३	मैसोर एजेन्सी	१७.६३०	२०,७३२	+३.१०२
१४	आसाम	२,३९८	३,५०३	+१.१०५
१५	बिहार और उडीसा	४,३४०	४,६१०	+२७०
	जोड़	१२,५८,१८२	११,९८,५९६	-५९,५८६

हम प्रति मनुष्य गणना प्रति शत किस संख्या से घटते हैं यह निम्न लिखित अंकों से सूचित होता है।

सन् १८९१ और १९०१ के बीच ५.८ %. (पौने छः प्रति शत से अधिक)

सन् १९०१ और १९११ के बीच ६.४ %. (साढ़े छः से कुछ कम)

सन् १९११ और १९२१ बीच ५.५७ %. (साढ़े पाँच प्रतिशत से अधिक)

(Indian Social Reformer 16 August 1924 with corrections)

यह तो समस्त भारत की बात हुई अब ज़रा एक प्रांत का हाल देखिए। यहां हम केवल पंजाब और देहली के प्रांत के सम्बन्ध में कुछ अंक देते हैं। पंजाब और देहली में १९११ सन् ई० में

नोट। यह अंक 'इण्डियन सोशयल रिफार्मर' १६ अगस्त १९२४ से लेकर यहां संशोधन कर दिए हैं।

चिन्ह (–) कमी को और चिन्ह (+) वृद्धि को सूचित करते हैं।

४६०१६ जैन थे और १९११ सन् ई० से ७५१ कम हो गए थे। और प्रति एक सहस्र आदमियों के पीछे ८५३ स्त्री हैं।

पंजाब और देहली की विधवा बहिनों की संख्या का दिग्दर्शन कर बूढ़े बाबाओं की करतूतों और सामाजिक अधःपतन का अन्दाजा कर लीजिए। १५ से १९ वर्ष की आयु की बधवाएं प्रति शत निम्न प्रकार हैं:—

जैन	हिन्दू	मुसलमान	सिक्ख
३१.२	३१.	२१.९	११.७
(सवा तीन प्र० श० से अधिक)	(तीन प्र० श०)	(तीन प्र० श० से कम)	(पौने दो प्र०श० से कम)

०-२९ वर्ष की विधवाएं प्रति सहस्र १९०१ और १९२१ में निम्न प्रकार थीः—

सन्	जैन	हिन्दू	मुसलमान
१९०१	५९	४७	३०
१९२१	७९	४९	२९

पंजाब और देहली में इस आयु की विधवाएं प्रति सहस्र स्त्रियां पीछे कितनी २ हैं यह भी देख लीजिएः-

आयु	संख्या	आयु	संख्या
५-९ वर्ष	२	२०-२९ वर्ष	१८७
१०-१४ वर्ष	७	४०-५९ वर्ष	५३०
१५-१९ वर्ष	४१	६० से ऊपर	८१५

महाशय गण! इन अंकों के ठीक मानने में किसी का सन्देह नहीं हो सकता। जो हाल पञ्जाब प्रांत का है वही हाल लगभग अन्य प्रांतों का होगा। यदि अब भी समाज अपनी आंखें न खोले और सामाजिक सुधारों के लिए कटिबद्ध न हो तो यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हमारे लिए आशा का कोई स्थान नहीं। समाज इस बुरी तरह से कम हो रही है किन्तु हमें अपने स्वार्था-न्धता से भी फुरसत नहीं यह शर्म की बात है।

नोट-पञ्जाब और देहली के सम्बन्ध के सब अंक मनुष्य गणना रिपोर्ट १९२१ (Census Report for 1921) से लिए गए हैं।

क्या आप ऐसी हालत में अपने आपको सुरक्षित समझते हैं। क्या हम यह मानलें कि जैन धर्म हमें ऐसे समय किसी भी प्रकार की व्यवस्था नहीं दे सकता। नहीं! नहीं! हम भूल करते हैं! वहां तो स्पष्ट लिखा है कि द्रव्य, क्षेत्र काल, के अनुसार कार्य करो और अपनी बुद्धि से काम लो तुम्हारी सब कठिनताएं दूर होंगी। जिन बातों पर हमारी दृष्टि पड़नी चाहिए और जो समस्याएं हैं वह नीचे दी जाती हैं।

१ नवयुवकों की मृत्यु--जितनी नवयुवकों की मृत्यु हमारी समाज में होती हैं उतनी शायद ही किसी समाज में होती हो। इस को रोकने के लिए शारीरिक दशाका सुधार और सदाचार के नियम का पालन होना चाहिए।

२ स्त्री समान की कमी और विधवाओंकी वृद्धिः—जैन समाज में मर्दों से स्त्री कम हैं। मर्द ४०,००० अधिक हैं। डेढ़ लाख विधवायें हैं। क्या क्या उपाय काम में लाए जाएं जिन से आगे विध-वाएं कम हों और स्त्री समाज मनुष्यों के बराबर हो जाय इस का सुधार कुरीति निवारण और अन्य धर्मावलम्बियों से विवाह करने से हो सकता है। यह विषय बड़े महत्व का है क्योंकि

संसार दिग्दर्शन

समाज

—पधारिये! श्री जीवदयाप्रचारिणी सभा का ५ वां वार्षिक अधिवेशन महावीर जी के मेले पर चैत सुदी १२-१३ और १४ को बड़ी तैयारी के साथ होगा। जिसमें पंडूत जिला मैनपुरी की श्री महावीर स्वामी की प्राचीन मनोज्ञ विशाल प्रतिबिंब जिसे लोग अलैय्या कह कर उसके सम्मुख व आस पास हजारों छोटे पशुओं की बलि हिंसा करते हैं उस हिंसा को सर्वथा बन्द करने और पूज्य प्रतिबिम्ब को दि० जैन समाज के अधिकार में दिलाने का खास तौर से विचार होगा सभापति के लिये भी प्रस्ताव ता० ६ मार्च को प्र० का० कमेटी में जातिशिरोमणी श्रीमान् दानवीर राज्य भूषण रा० ब० सेठ कल्याण मल जी इन्दौर का हो गया है।

हजार काम छोड़ कर अवश्य २ पधारें एक पंथ दो काज तीर्थयात्रा, भ्रातृमिलाप और महान अहिंसा के कार्य में भाग लेने का सुअवसर हाथ से न जाने दीजिये।

निवेदक-बाबूराम बजाज मन्त्री

—गोमट्टस्वामी मस्तकाभिषेक में अवश्य पधारिये। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि मैसूर सरकार मेले के लिये पानी, रोशनी, दवाखाना, सफाई महकमा, पुलिस आदि का पूरा पूरा इन्तजाम कर रही है। यात्रियों को ठहरने के लिये तम्बू (Tents) और झोंपड़ों (Sheds) का इन्तजाम कराया गया है। तम्बू (Tents) का भाड़ा १०) रुपये से १५) रु० तक मेले भर का व झोंपड़े (Sheds) का भाड़ा ७) रु० से १०) रु० तक मेले भर का है। समस्त आने वाले भाइयों को नीचे पते पर तम्बू झोंपड़े रिजर्व रखने की सूचना कर देनी चाहिये।

(१) एम० एल० वर्द्धमानैया।

मन्त्री पूजा कमेटी, मैसूर।

—वैष्णव जैन हुए मनावर में फाल्गुन बदी ११ को महावीर नामक एक अग्रवाल वैष्णव ने ज्ञान प्रदर्शक नाटक मण्डली भलवर (जिसके मैनेजर चांदमल जी गंधरप हैं) के जैन नाटक के उपदेश को सुनकर उसी समय जैन धर्म अङ्गीकार किया तथा नाटक समाज को २५) प्रदान किये। दूसरे दिन गाजे बाजे के साथ जैन मन्दिर गये वहां भी नाटक मंडली को ११) व भंडार में ५) दिये। इस उत्सव से यहां जैन धर्म की प्रभावना हुई।

—गैन्दालाल जैन।

—देहली में दान चिरंजीव जम्बूप्रसाद (पुत्र लाला नेमदास जैन अग्रवाल शिमले वाले) दत्तक लाला जानकीदास मनोहरलाल कागजी देहली ने ७५१) मिति फाल्गुन सुदी २ तारीख २३ फर्वरी सन् ९२५ में दान किये। जिन में से ५) वीर को भी प्रदान किये हैं जिनके लिये लाला जी को धन्यवाद है।

—प्रकाशक

—विवाह उत्सव पर दान श्रीमान् लाला मुन्शीराम सुमेरचन्द जैन अग्रवाल जगाधरी वालों ने अपने पुत्र चिरंजीव मोतीचन्द के शुभ विवाह के अवसर पर मिती फाल्गुन वदी १६ संवत १९८१ ता० १९-२-२५ को ३५७) रु० प्रदान किये हैं जिन में से ४) चार को भी दिये हैं जिस के लिये कोटिशः धन्यवाद। —प्रकाशक

देश

—१ मार्च को आलपार्टी-कान्फ्रेंस (सर्वदल-सम्मेलन) की सब कमेटी की बैठक, जो हिन्दू-मुस्लिम-प्रश्न पर एक योजना तैयार करने के लिये गत जनवरी के अन्तिम सप्ताह में बनाई गई थी, महात्मा गांधी के सभापतित्व में दिल्ली में हुई। उपस्थित नेताओं में अलीबन्धु, प० मोतीलाल नेहरू, नरसिंह चिन्तामणि केलकर तथा स्वामी श्रद्धानंद जी आदि १५ नेता थे। यह सबकमेटी: स्वराज्य होने पर व्यवस्थापक सभा, तथा अन्य निर्वाचित संस्थाओं के लिये सब जातियों तथा श्रेणियों के प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में एक योजना तैयार करने और योग्यता का ख्याल रखते हुए नौकरियों में न्यायोचित ढंग से विभिन्न जातियों के लोगों को जगह देने के सम्बन्ध में सिफारिश करने के लिये बनाई गई थी। सब कमेटी की बैठकें कई बार हुईं, किन्तु कुछ निर्णय नहीं हुआ। महात्मा गांधी ने कहा कि इस सन्देहजनक परिस्थिति में, किसी ऐसी स्कीम का बनाया जाना, जिसे संयुक्त स्कीम कहा जा सके, असम्भव है। अब सब कमेटी की बैठक अनिश्चित समय के लिये स्थगित की गई।

—लेजिस्लेटिव एसेंबली में अर्थसदस्य ने सन् १९२५-२६ का बजट पेश किया। अपने भाषण में उन्होंने १९२३ के मध्य से लेकर १९२५-२६ के आय-व्यय के आंकड़ों की विस्तृतरूप से व्याख्या की। बजट के अनुसार इस वर्ष १३३६८००००००) की आय और १३०५४००००००) का व्यय तथा ३ करोड़ २४ लाख रुपये की बचत होनी चाहिये।

विदेश

पारलियामेण्ट में, भारतवर्ष का ज़िक्र ३ मार्च को छिड़ा था। अंग्रेज़ों को बोल्शेविज़म का विचार बहुत परेशान करता है। वे कहते हैं, बोल-शेविक लोग अपना जादू मिस्र और भारतवर्ष पर चलाने का बहुत प्रयत्न कर रहे हैं, वहां अपना साहित्य खूब फैलाते हैं। यही बातें उस दिन पारलियामेंट में कही गई, और बंगाल आर्डिनेंस पर सन्तोष प्रगट किया गया। एक मेम्बर साहब ने फ़र्माया, हम भारतवर्ष पर शासन करना चाहते हैं, हमारा यह इरादा नहीं कि हम भारतवर्ष को छोड़ कर चले आयें। उनकी इस बात का किसी को दूसरे मेम्बर ने कोई खण्डन नहीं किया। यथार्थमें, बात खण्डन करने योग्य है भी नहीं। जो लोग कहते हैं कि अंग्रेज इस देश में इस देश के लोगोंके कल्याण के लिए हैं, वे गलत कहते हैं, और जो ऐसा समझते हैं। बिल्कुल ठीक बात यही है कि वे शासन करने के लिए यहाँ हैं, और जब तक बनेगा, तब तक वे इस देशके शासक बने रहना अपना कर्तव्य समझेंगे। बात बहुत सीधी है। दुःख है, कि इस सीधी बात तक को बहुत से लोग नहीं समझते, या समझने की इच्छा नहीं करते।

—जर्मनी ने सार्वभौमिक शान्ति स्थापित करने का एक नया प्रस्ताव विचारार्थ पेश किया है। इंग्लैण्ड, फ्रांस, बेलजियम और जर्मनी और यदि इटली चाहे तो जर्मनी पोलैण्ड और शैकोस्लोवेकिया के बीच में पंचायती सुलहनामें हो जायं। जर्मनी की नयी स्कीम का सारांश यही है। इस नये प्रस्ताव को कार्य में परिणत करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जर्मनी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो। मित्र राष्ट्रों की तरफ से कहा जाता है कि प्रथम इस प्रकार के समझौते के साथ साथ ही फ्रेंच, ब्रिटिश और बेलजियम सरकारों में एक स्वतंत्र सैनिक सन्धि होनी चाहिये। दूसरे जर्मनी को वर्सैलीज़ की सन्धि में किये गये वादों को पूरी तरह पालन करने का वचन देना चाहिये। और तीसरे पोलैण्ड और शैकोस्लेवेकिया की सीमा-निश्चित सन्धियों के विषय में पुनर्वार विचार होना चाहिये। इन लक्षणों से प्रकट है कि मित्र राष्ट्र अपने सैनिक प्रभुत्व को कम करना नहीं चाहते और साथ ही फ्रांस मध्य यूरोप की फौजी लीडरी को छोड़ना नहीं चाहता।

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चांदी के फूल भाव १) तोला ☞ ☜ सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद काम व वैसी जितने तोल चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*[illegible]	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र धज	७६) से १५००)	समोसरनकी रचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	१००) से ५००)	*चमर एक	७) से ६५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२००) से ५००)	*चौकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००)
*पलंग	५००) से १००)	समोसरन	१६००) से ३०००)	*×भामण्डल	३०) से १००)
*पीढ़ा	५०) से ७५)				
*छतरी डंडी	३०) से ५०)	अढाई द्वीपकी रचनाका मांडला	१०) से ५००)	*कलशा	५०) से ५००)
जैन मन्दिर के उपकरण।				तबल चाँदी के	२००) से १०००)
गंधकुटी	२५००) से ४०००)	मेरु द्वीपकी रचनाका मांडला	५००) से २०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
वेदी	८००) से ४०००)			*पूजनके बरतन	२००) से ५००)

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में २०) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। मजदूर कारीगरों की नक्काशी काम की ।) तोला और सादे काम की ≡) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं। * ये चीजें सोने की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस।

(२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel. Address—"Singhai" Benares.

रेल से माल भेजने का कायदा

(सरल हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५००, विषयसूची के १८ पृष्ठ, मूल्य ३))

बढ़िया कागज़ पर ! बनारस की बढ़िया छपाई !!

मालगाड़ी से भेजे हुए माल आदि का नुकसान न होने पावे, वा नुकसान होने पर रेलवे कम्पनी ही जिम्मेदार समझी जा सके यह बात व्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अच्छी तरह से साबित होगयी है। इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रेलवे कंपनियों के गुड्स बुकिंग के तमाम महत्व के कायदे, शर्तें, आदि जो कंपनियों के अलग २ अंगरेजी हरफों में होते हैं वे सब इस एक ही पुस्तक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जिम्मेदार हो सकेगी आदि बातों के तमाम हाईकोर्टों के बहुत ही महत्व के फैसले भी इसमें बताये हैं। विषयानुसार पुस्तक ६ हिस्सों में विभक्त है।

ट्रैफिक मैनेजर, ओ० आर० रेलवे, लखनऊ लिखते है-"हम यक़ीन से कहते हैं कि यह पुस्तक व्यापारियों को बहुत ही उपयोगी है।"

सुपरिंटेन्डेन्ट जनरल बी० एन० रेलवे, कलकत्ता २५ । ११ । २४ को लिखते हैं—"जिन व्यापारियों को रेलवे से काम पड़ता है उनको इस पुस्तक से बहुत ही मदद मिलेगी।"

लक्ष्मीनारायण वंशीलाल जी मु० रोल (मारवाड़) २ । ११ । २४ के पत्र में लिखते हैं-"इस पुस्तक की कहाँ तक प्रशंसा करें। इसमें उपयोगिता के गुणों का भण्डार है। हमने आजतक व्यापारियों के फ़ायदे की ऐसी सरल उपाय की पुस्तक नहीं देखी।"

श्री वेंकटेश्वर समाचार, बम्बई-"माल भेजने के सब नियम अंग्रेज़ी में होने के कारण अधिकांश व्यापारियों को गुड्सक्लर्क की बात पर ही निर्भर रहना पड़ता है और रेल से माल भेजने के कायदे ठीक २ न जानने के कारण ही व्यापारियों को नित्य रेलवे झगड़ों की झंझटें सहनी पड़ती है। ऐसी दशा में काले महाशय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक बड़े भारी अभाव को दूर करके व्यापारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के प्रायः डेढ़ पौने दो सौ विषयों का विवेचन किया है। व्यापारियों के बड़े काम की पुस्तक है।

आर्डर देते समय "वीर" का नाम अवश्य ही लिखिये।

तीन कापी एक साथ मँगाने से वी० पी० डाकखर्च माफ़

पता—

आर० एन० काले,

हाईकोर्ट वकील, उज्जैन (सी० आई०)

Regd. No. A. 1271.

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाक्षिकपत्रः

हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। काग़ज़, छपाई, सफ़ाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को

बिल्कुल मुफ़्त

'महावीर भगवान'

और उनका उपदेश

जिसमें महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैली पर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीन के साथ लिखी जारही है। यह ग्रन्थ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के

उपलक्ष्य में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरता के साथ निकलेगा। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषय भी रहेंगे। अभी से प्रयत्न किया जारहा है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रक्खेगा।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक—राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

श्रोत्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

वीर

वीर सम्वत् २४५१ ।

जैन हाईस्कूल, जैन संस्कृत धर्म-विद्यालय पानीपत (पंजाब)

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ।

जैन समाज में प्रत्येक प्रान्त में जैन धर्म के उत्थानार्थ पाठशाला, विद्यालय आदि विद्या संस्थाओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ रहा है। पानीपत की जैन जनता ने पंजाब प्रान्त में सब से पहले यह "जैन हाई स्कूल पानीपत" नाम की संस्था का जन्म सन् १९०६ में दिया था। जैन धर्म की शिक्षा के साथ २ अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, महाजनी आदि की लौकिक शिक्षा का यथायोग्य प्रबन्ध कर रक्खा है। इस समय संस्था में अनुमान ४०० जैन और अजैन छात्र विद्याभ्यास कर रहे हैं। इसके साथ ही बोर्डिंग हाउस भी है जिस में परदेशी छात्र १०० के अनुमान निवास करते हैं और जिसके लिये खास बिल्डिङ्ग की बहुत आवश्यकता है। इस संस्था का १५०००) रु० वार्षिक खर्च है [illegible] की कमी से स्कूल की बिल्डिङ्ग भी अभी तक अधूरी पड़ी है। इस पर उदार दानी महानुभावों को विशेष ध्यान देकर बिल्डिङ्ग को पूरा करवा देना चाहिये।

श्रीमान् पूज्य जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी की प्रेरणा से आज पानीपत की जैन जनता के उत्साह से ५ नवम्बर १९२३ को जैन संस्कृत धर्म विद्यालय का उद्घाटन हो गया है। धर्मशिक्षा परीक्षा के पठन के साथ-साथ लौकिक शिक्षा भी दी जाती है। परदेशी छात्रों को १०) रु० और स्थानीय छात्रों को ५) रु० मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है। धर्मोत्साही उदार महानुभावों से सविनय निवेदन है कि द्रव्य दान के अवसर पर मंदिरों, पाठशाला आदि की धार्मिक संस्थाओं की तरह उक्त दोनों संस्थाओं को भी विवाहादि शुभ कार्यों में यथा शक्ति द्रव्य की सहायता देकर इन संस्थाओं की दृढ़ नींव जमा दें क्योंकि विद्यादान ही सर्व दानों में श्रेष्ठ है। जैसा कि कहा है—

"अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम् ।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिर्यावज्जीवन्तु विद्यया ॥"

प्रार्थी—जयकुमार सिंह जैन।

मैनेजर,—जैन हाईस्कूल और संस्कृत धर्म विद्यालय, पानीपत।

सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक,
एवं साहित्य सम्बन्धी उच्चकोटि के लेखों से विभूषित
दिगम्बर जैन-समाज का एकमात्र पत्र :—

ऑन० सम्पादक

जैनधर्मभूषण, धर्मदिवाकर श्रीब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादक

श्रीयुत बा० कामताप्रसाद जी

ऑन० प्रकाशक

राजेन्द्रकुमार जैनी—बिजनौर (यू० पी०)

[illegible]

आभार !

"वीर" का प्रस्तुत विशेषांक प्रेमी पाठकों के कर कमलों में समर्पित करते हमें परम हर्ष का अनुभव होरहा है। गतविशेषांक से जो सफलता हमको इसमें यदि अधिक मिली है तो उसका सब कुछ श्रेय हमारे सहृदय सहायकों और माननीय लेखकों को प्राप्त है। उनही की आवश्यक सहायता के बल पर हमने यह प्रयत्न किया था और हमारे विश्वास के अनुरूप हम उसमें उसका ही आश्रय ले सफल प्रयास होते जारहे हैं। इस हर्षोपलक्ष में हमारा विनम्र हृदय उन्हें कोटिशः धन्यवाद समर्पण करने को उत्कण्ठित होता है। यदि सहृदय सहायकों और माननीय लेखकों की भाँति हमारे प्रेमी पाठक भी अपने प्यारे "वीर" की दशा सुधारने में अगाड़ी आवें तो हमें विश्वास है उसका शीघ्र ही 'कायापलट' होजावे! **प्रेमी पाठक यदि कम से कम दो-दो ग्राहक बढ़ादें** तो "वीर" के सम्मुख से आर्थिक कठिनाई का प्रश्न दूर होजावे और वह सुगमता पूर्वक अब से कहीं सुन्दर और मूल्यमय आकार प्रकार में प्रकट होने लगे। इस समय उसकी आर्थिक-अवस्था का ही ध्यान रखकर उसकी उन्नति में धीमी चाल से काम लिया जारहा है। प्रस्तुत विशेषांक के लिये हमें उस समय भी कतिपय अमूल्य लेख प्रकाशनार्थ प्राप्त हुये जब यह अङ्क प्रेस ही में था और हमारी प्रबल इच्छा थी कि हम उन्हें इस ही अङ्क में सम्मिलित करलें परन्तु वही आर्थिक-भूत हमारी इस इच्छा की पूर्ति में बाधक बन गया और हम इसके पृष्ठ बढ़ाने में असमर्थ रहे। जैन-कर्म-सिद्धान्त परिचायक एक उत्तम कविता तथा सुन्दर गल्पादि भी इसीकारण इसही अङ्क में प्रकट न हो सकीं इसका हमें अत्यन्त खेद है और प्रेषक महाशयों के निकट हम इस धृष्टता के लिये क्षमा प्रार्थी हैं। जिसप्रकार लेखक महाशय "वीर" पर कृपा करते हैं उसी प्रकार पाठकगणों को भी अपने 'वीर' को उन्नत बनाने पर ध्यान देना आवश्यक है। आशा है पाठकगण हमारे इस नम्र निवेदन पर ध्यान देंगे। हम विश्वास दिलाते हैं कि यदि वह दो दो ग्राहक बढ़ा देंगे तो उनका 'वीर' उनको अधिक प्रिय और रुचिकर होजावेगा। अन्त में हम अपने मान्य सहायकों और विद्वान् लेखकों को पुनः धन्यवाद की सुमनाञ्जली समर्पण करते हैं और विश्वास करते हैं कि वह 'वीर' पर अपनी सहृदयता बनाये रक्खेंगे।

—प्रकाशक

विशेषांक के लिये हमें निम्न प्रकार सहायता प्राप्त हुई है :-

५०) बा० निर्मलकुमार जैन आरा
१०) ला० सुगनचन्द जैन सादतगञ्ज, लखनऊ
१०) ला० रूपचन्द जैन गार्गीय पानीपत
१०) सिंघई नाथूराम जैन केवलारी
११) ला० फुलझारीलाल जी जैन रईस करहल (मैनपुरी)
१०) ला० चन्द्रसैन जैन वैद्य इटावा
१०) ला० लक्ष्मणदास जैन इटावा
१०) बा० चतरसैन जैन रजिस्ट्रार करहल
१०) ला० दौलतराम बनारसीदास जैन खाड़ी बावड़ी, देहली
१०) बा० धरनेन्द्रकुमारजी जैन रईस बनारस
१०) ला० कन्हैयालाल जैन वैद्य कानपुर
१०) ला० रूपचन्द जैन कानपुर
१०) दि० जैन सभापरिषद् अमरोहा
१०) ला० बसन्तलाल जैन इटावा
१०) हकीम बसन्तलाल जैन खरौवा (झांसी)
१०) ला० भगवानदास जैन इटावा
१०) ला० अमरचन्द जी जैन जसवन्तनगर
१०) बा० हीरालाल रतनलाल जैन सिरसागञ्ज (मैनपुरी)
१०) ला० तोताराम मधुवनदास जैन इटावा
१०) बा० रतनलाल जैन B. A., L L. B. बिजनौर
१०) बा० राजेन्द्रकुमार जी जैन रईस बिजनौर
१०) ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी
१०) बा० कामताप्रसाद जी जैन अलीगञ्ज
५) सेठ सोमाराम गम्भीरमल इन्दौर

२७६)

आप ही जैसे महानुभावों की कृपा का फल है कि जो १०० पृष्ठों के लगभग व अनेक चित्रों से सुशोभित करके हम 'वीर' का विशेषांक पाठकों के करकमलों में भेंट कर रहे हैं। हम को पूर्ण आशा है कि यदि इसीप्रकार हमारे प्रेमियों की 'वीर' पर कृपादृष्टि बनी रही तो अवश्य ही 'वीर' समाज-सेवा में अग्रसर होगा और श्रीवीर भगवान् के पवित्र उपदेश को संसार में फैलाकर जैनधर्म्म का झंडा फिर खड़ा कर देगा।

प्रकाशक 'वीर'

'वीर' पर सम्मतियाँ।

प्रेमी सज्जनो! 'वीर' के विषय में जो समाचार पत्रों व मुख्य२ व्यक्तियोंने अपनी सम्मतियाँ प्रकट की हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी नीचे दी जाती हैं जिनसे आपको 'वीर' की समाज सेवा, उपयोगिता और लोक प्रियता का ज्ञान होसकेगा। अधिक लिखना व्यर्थ है।

मि० हरिसत्य महाचार्य M. A. B. L. उप० स० "जिनवाणी' लिखते हैं:—

मैं "वीर" को बहुत उच्च दृष्टि से देखता हूँ......लेख बहुत लाभदायक और रोचक हैं। "वीर" का सञ्चालन बहुत उत्तमता व सुन्दरता के साथ किया जा रहा है।

नारद ता० २६ मई सन् २४ में लिखता है:—

"प्रत्येक अङ्क में त्रुटि के बदले नयी उन्नति के लक्षण दीख पड़ते है।......लेख और कवितायें सुपाठ्य और सुसम्पादित हैं। जो धर्म जिज्ञासु हैं और तत्सम्बन्धी बातों की छानबीन किया करते हैं। उनके लिए भी यह पत्र लाभदायक हो सकता है।"

श्रीमान् चम्पतराय जी जैन सभापति परिषद् लिखते हैं:—

"वीर की पूर्ण उन्नति होना अवश्यम्भावी है। मैं उसकी पूर्ण उन्नति देखना चाहता हूँ।"

'जैन महिलादर्श' लिखता है:—

"वीर के दो अङ्क प्राप्त हुए। लेख सुपाठ्य और शिक्षाप्रद हैं। महिला में स्त्रियों के लाभार्थ अच्छे अच्छे लेख रहते हैं। बहिनों को भी ग्राहिका होना चाहिए।"

मराठी भाषा का सुप्रख्यात पत्र 'बन्देजिनवरम्प्रगणिराजहंस' लिखता है:—

"विश्व विद्यालय की उच्च पदवियों से विभूषित विद्वान् लेखक 'वीर' का सहायता करते हैं। अब तक के लेख महत्व पूर्ण व पठनीय हैं।"

प० पन्नालाल जैन श्रीमहावीरदि०जैन पाठशाला अकलतरा से लिखते हैं:—

"वीर पत्र वास्तव में एक आदर्श पत्र है इसके लेख ठोस और बड़े शिक्षाप्रद होते हैं।"

ला० फन्नोमल जैन M. A. जज धौलपुर से लिखते हैं:—

"वीर अपने विषय का नितान्त उपयोगी सुलिखित पत्र है। इसमें मेरा लेख छपना मेरे लिए गौरव का विषय है।"

बा० शिवचरणलाल जी जैन रईस जसवन्तनगर लिखते हैं:—

"लेख व कवितायें सभी पठनीय हैं। हर महीने की दूसरी व १६ वीं ता० को 'वीर' के दर्शन हो जाते हैं। दूसरी के बाद १६ व १६ के बाद दूसरी तारीख की प्रतीक्षा रहती है।"

प्रेमियो! यदि वास्तव में आपको 'वीर' से प्रेम है और उसे एक आदर्श पत्र के रूप में आप देखना चाहते हैं तो उसकी हर तरह से सहायता कीजिए। स्वयं ग्राहक बनिये व अन्यों को बनाइये **यथा शक्य आर्थिक सहायता भी कीजिए।** बस यदि महावीर के उपदेश से और परमात्मा जिन 'वीर' से आपको प्रेम है तो 'वीर' को एक दम उन्नत बनाकर मुर्दा कौम में जान डालिए।

राजेन्द्रकुमार जैनी,

प्रकाशक 'वीर', बिजनौर (यू० पी०)

विषय-सूची ।

नं०	विषय		पृष्ठ
१	वीर शासन (कविता)	श्री० विजयकुमार न्यायतीर्थ	२५३
२	वीराह्वान	उ० सम्पादक	२५४
३	महावीरजन्म (कविता)	श्री० साहित्यशास्त्री, सतीशचंद्र गुप्त व्याकरणरत्न	२५५
४	जीवन हेतु संग्राम	श्री० ऋषभदास जैन	२५६
५	नहीं है भीरु महा है वीर (कविता)	श्री कुञ्जीलाल जैन काशी	२५९
६	जैन साहित्य की विशेषता	श्री हीरालाल जैन एम० ए० एल० बी०	२६१
७	हिन्दी प्राणप्रिय काव्य (कविता)	श्री प० गिरधर शर्म्मा जी नवरत्न, काव्यालङ्कार	२६९
८	जैनसिद्धान्त में सत्यज्ञान की कुञ्जी व उसका प्रचार—ब्र० शीतलप्रसाद जी		२७३
९	हिन्दू-सङ्गठन	श्री० चम्पतराय जैन बार-एट ला०	२७८
१०	मेरु-पर्वत	श्री० आर० आर० बोयडे वकील, इरंडोल	२८५
११	श्री कुन्दकुन्दाचार्य	श्री० कामताप्रसाद जी उ० स०	२९४
१२	प्रेम के पुजारी हैं (कविता)	श्री० विजयकुमार न्यायतीर्थ	२९८

Gold and Silver Medalist

GUARD YOUR PROPERTY AND BUY ALIGARH LOCKS.
MANUFACTURED BY

THE JAIN LOCK FACTORY ALIGARH, U. P.

Satisfaction Guaranteed best and cheepest, For price-list apply to :—
The Proprietor,
THE JAIN LOCK FACTORY.
ALIGARH CITY U. P.

Note :—Agents wanted every where.

अपने धन सम्पत्ति, और माल की हिफ़ाज़त के लिये—

जैन लोक फ़ैक्ट्री अलीगढ़

के बने हुए ताले ख़रीदो ।

सस्ते और मज़बूत होने की गारण्टी देते हैं । प्राइस लिस्ट नीचे लिखे पते से मुफ़्त मँगाइये ।
रोशनलाल जैन प्रोप्राइटर,
जैन लोक फैक्टरी,
अलीगढ़ सिटी, यू० पी०

नोट :—हरएक जगह एजेंटों की ज़रूरत है

१३	सम्पादक का कर्त्तव्य	श्री पूरणचंद्र नाहर एम० ए० आर० ए० एस०	२६
१४	क्या अन्य जातियों में विवाह सम्बन्ध जाति भेद को मिटाने वाला और जैन समाज को हानिकारक होगा ?	श्री० ऋषभदास जैन बी० ए०	३०३
१५	कबीर कविता		३०७
१६	महिला महिमा	१ कन्याओं का आदर्शजीवन मगनबाई	३०८
		२ महिलाओं की शिक्षा चन्दाबाई	३१०
१७	बालिका विलाप (कविता)		३१२
१८	सम्पादकीय टिप्पणियां	१ दि० जैनसमाज का निर्माण सम्पादक	३१३
		२ जातीय स्वास्थ्य । उ० स०	३१४

ज़िबयातीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज ।

हारवर्ड यूनिवर्सिटी, अमरीका, के योग्य वैद्य ज़िबयातीस जोस्लिन (Joslin) और एलन (Allen) साहबान के तरीक़े-इलाज जिसको तमाम विज्ञान-जगत् में प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है, के मुताबिक़ डा० बख्तावर सिंह जैन एम्० डी (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मरीज़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई ।

१—मुझे इस तरीक़े-इलाज से क़तई आराम होगया है । मैंने महाराजा साहब श्री नैपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर-प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीक़े के इलाज से बिल्कुल आराम होगया है ।

द० कर्नल विजय शमशेर जङ्ग-बहादुर:—Foreign Minister, Nepal. देहली ।

२—आप ने इस तरीक़े-इलाज से मेरे शकर-प्रमेह-रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया । मैं बड़ा मशकूर हूँ ।

शीतल प्रसाद राज वैद्य, चाँदनी चौक देहली ।

३—४साल से मुझे शकर-प्रमेह-रोग ने तङ्ग कर डाला था, लेकिन आपके तरीक़े इलाज से बिल्कुल ठीक होगया हूँ ।

जानकीप्रसाद जैन, मैनेजर फ़ोर मिल्स, मेरठ ।

४—मुझे यह तरीक़ा-इलाज बहुत मुफ़ीद साबित हुआ ।

मित्रसेन जैन, रईस कांदला ।

अग्नि संदीपन चूर्ण नमूना मुफ्त भेजा जाता है ।

यह चूर्ण यथा नाम तथा गुण वाला है । जठराग्नि दीप्त करता है भूख को बढ़ाता है वायु को शुद्ध करता है । अत्यन्त स्वादिष्ट है । सिर्फ =) का टिकट भेजकर नमूना मँगाइये और आजमाइये ।

पता—वैद्य भागीरथलाल बिजनौर (यू० पी०)

19 The Digambaras in gneral Sanskrit Literatur } (Professor Harman Jacobi) 317
20 The Main Object in Life (H. Warmr) 320
21 The Docleain of Kurma 322
२२ साहित्य समाचार ३३२
२३ चित्र परिचय ३३३
२४ संसार दिग्दर्शन

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चांदी के फूल भाव १) तोला सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ़ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर क़दर कम व जैसी जितने तौल चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत।

हौदा	५००) से २०००)	वेदी	८००) से ४०००)	※बंधनवार	१००) से ५००)
अम्मारी	१०००) से ३०००)	एरावत	२५०) से ३०००)	समोसरनकीरचना	२५०)से१०००)
पालकी	१०००) से १५००)	इन्द्र एक	७६) से १५००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	※सिंहासन	१००) से २०००)	※अष्टमङ्गलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	※चवर एक	७) से २५)	※अष्टप्रतिहार्य	१५०)से २५०)
घोड़े का साज	२००) से ५००)	※मुकट	१०) से २०)	※सोलहस्वप्ने	१००) से ५००)
※बल्लम	५००) से १०००)	※चौकी	४५) से ३००)	※×भौमण्डल	३०) से १००)
※सौटा	५०) से ७५)	समोसरन	१०००) से ३०००)	※कलशा	५०) से ५००)
※छतरी डंडी	३०) से ५०)	अढ़ाई द्वीप की रचना का मांडला	१०)से५००)	तख्त चांदी के	२००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण।		तेरह द्वीपकी रचनाका मांडला	५००)से२०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
गंधकुटी	२५००) से ४०००)			※पूजन के बरतन	२००) से ५००)

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में ३=) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। मजदूर कारीगरों की नकाश काम की।) तोला और सादे काम की =) तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीजें भी तैयार भी रहती हैं। ※ ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस।

(२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel. Address-"SINGHAI" BENARES.

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शहज़ादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको दिनरात मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग़ मुंह से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज हाथ पांव का फटना बग़ल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ कर चमड़े को नरम कर देती है। यह फूलों से बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। क़ीमत १ शीशी २।) रुपया, ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)।

पता:—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को आगरा।

निहायत मजबूत व सस्ती घड़ियाँ ।

प्रिय सज्जनो ! हमारे यहाँ हर किस्म की घड़ियां यानी जेबी, कलाई की, टेबल पर की तथा दीवार पर टांगने की ४) रुपये से लेकर बड़ी से बड़ी कीमत तक की हैं। हम घड़ी भेजने के पहिले उसकी मशीन व टाइम जांच करलेते हैं तब भेजते हैं जिससे ग्राहक को किसी किस्म की दिक्कत न उठानी पड़े। नापसन्द माल ३ दिन के अन्दर वापिस लेलेते हैं। मज़बूती और टाइम की सच्चाई के साथ ही साथ यह घड़ियां दूसरी कम्पनियों की घड़ियों से बहुत सस्ती हैं। शीघ्रही पत्र लिखिये। इस फहरिस्त के अलावा यदि आपको ऊंचे दाम की घड़ी की जरूरत हो तो वह किफायत भाव से उत्तम जांचकर भेज दी जायगी :

जेबी घड़ियां	रु० आ० पा०	गारण्टी
१-रेलवे रेगुलेटर	५—४—०	३ वर्ष
२-लीवरवाच	५—०—०	"
३-रासकोप सिस्टीम	५—२—०	"
४-न्यूफैशनवाच	८—०—०	"
५-एक लिप्सलवाच	१०—०—०	"
६-सुनहरी पाकेटवाच	८—०—०	"
७-चांदी की जेबीवाच	१२—०—०	"
८-आठदिन की चाबीकी	११—८—०	"
९-वेस्ट लीवर	३—८—०	२

कलाई की घड़ियाँ ।

१०-लीवर रिस्टवाच	११—०—०	३

जेबी घड़ियां	रु० आ० पा०	गारण्टी
११-अति सुन्दरवाच	८—०—०	३
१२-सिलेण्डर	५—८—०	"
१३-निकेल सिलेवर	६—८—०	"
१४-सोने की	२५—०—०	"
१५-सुनहरी चकनीकेसाथ	१२—०—०	४
१६-चांदी की १० ,,	१५—८—०	५
१७-सोनेकीलीवर मशीन	४०—०—०	"

टाइमपीस ३॥) ४॥) ५।॥)

अलार्म टाइमपीस ६॥) ८।) ११)

कलाक १८) २०) २५) ४०) ५०)

नोट—डाकखर्च ।≈) अलग पड़ेगा तीन या इससे ज़्यादा घड़ी मँगाने से अच्छी रियायत की जायगी। व्यापारियों को थोक बंद माल का भाव पत्र लिखकर पूछना चाहिए। इसके अलावा घड़ियों की चैनें चमड़े के पट्टे पीतल चांदी सोने व रोल्ड गोल्ड की हरकिस्म की चैनें घड़ी में लगाने के सब पुर्जे आदि २ बहुत किफायत भाव से मिलता है। एकबार अवश्य परीक्षा करो।

पता—मेसर्स शर्मा एण्ड कम्पनी वाच मर्चेन्ट्स बम्बई नं० १८

दिगम्बर जैन खंडेलवाल जाति का

पाक्षिक पत्र ।

॥ खंडेलवाल जैन हितेच्छु ॥

जाति की विधवाओं व अनाथों का हिमायती पैशाचिक कुप्रथाओं का कट्टर दुश्मन पंचायतियों का संगठन कराने में अग्रसर सामाजिक स्वास्थ्योपयोगी ऐतिहासिक औपन्यासिक लेखों तथा उत्तम कविताओं से परिपूर्ण प्रत्येक पक्ष की दशमी को शोलापुर से प्रकाशित होता है।

जिसका वार्षिक मूल्य केवल २) मात्र है। अवश्य ग्राहक बनिये।

बिलकुल मुफ्त ! **विराट ग्रन्थ** **बिलकुल मुफ्त !!**

लगभग ५५० पृष्ठों का सुन्दर अमूल्य ग्रन्थ

"असहमत संगम"

जिसमें जैनमत, वेदमत, यहूदियों का दीन, वेदान्त, सांख्य, वैशेषिक, योग, बौद्धमत, ईसाई, इस्लाम, शाक्त, राधास्वामी, कबीरपन्थ, दादूपन्थ, थियोसफी, चार्वाकमत आदि आदि सब ही संसार भर में प्रचलित धर्मों के भेद और विरुद्धता के मूल कारण बड़ी सरल व सुन्दर भाषा में बताये हैं। इसके मूल लेखक व दातार हैं बाबू चम्पतराय जी जैन बैरिस्टर हरदोई। पुस्तक के बारे में कुछ भी लिखना व्यर्थ है। सब ही बैरिस्टर साहब की ठोस रचनाओं से परिचित हैं। और प्रथमवर्ष में वीर के ग्राहकों को उपहार में भी दिया जाचुका है।

वीर के ग्राहकों को बिलकुल मुफ्त मिलेगा।
जो कि शीघ्र ही वीर के दो दो ग्राहक बनाकर और निम्न फार्म भरकर इस पते पर भेज देंगे।

"वीर कार्यालय बिजनौर"

तारीख ....

प्रकाशक "वीर" बिजनौर !

जयजिनेन्द्र। मैंने वीर के निम्न दो ग्राहक बनाये हैं। उनका ५) वार्षिक मूल्य बजरिये मनीआर्डर भेजता हूं। इसके उपलक्ष में "असहमत संगम" नामक विराट ग्रंथ रुपया पहुँचते ही मेरे पते पर बिना मूल्य भेज दीजिये।* और कृपया दोनों ग्राहकों को इस वर्ष का सचित्र महावीर जयन्ति अङ्क तथा महावीर भगवान् और उनका उपदेश नामक उपहार की पुस्तक शीघ्र भेजिये और साल भर तक बराबर "वीर" पाक्षिक पत्र भेजते रहिये। दोनों पते निम्न प्रकार हैं।

१—नाम

पता व पोस्ट

२—नाम

पता व पोस्ट

*यदि असहमत संगम रजिस्टरी द्वारा मँगाना हो तो ।=) पोस्टेज के लिये ज्यादह भेजने चाहिएँ अर्थात् ५।=) का मनीआर्डर आना चाहिए। अन्यथा आपकी जिम्मेदारी पर सादी बुकपोस्ट द्वारा भेजदिया जायगा।

मेरा ग्राहक नं०...... ...पता

इस वर्ष "वीर" के ग्राहकों को उपहार में

"महावीर भगवान् और उनका उपदेश"

बिलकुल मुफ़्त मिलेगा।

इस पचास पृष्ठों की सुन्दर पुस्तक में श्री वीर भगवान् की जीवनी और उनके उपदेश के साथ साथ जैन धर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन ग्रन्थों के प्राचीन लेखों वरन संसार के बड़े बड़े अजैन विद्वानों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। यह पुस्तक बड़ी उपयोगी और बहुमूल्य साबित होगी। इस उपहार के दातार श्रीमान् लाला शिवचरणलालजी रईस जसवन्त नगर के पूज्य पिता जी के सुन्दर चित्र भी इस पुस्तक के शुरू में अङ्कित है।

शीघ्र ही ग्राहकश्रेणी में नाम लिखाकर यह उपहार और 'वीर' का विशेषाङ्क प्राप्त कर लेना चाहिए। अन्यथा पुस्तकें न रहने पर पछताना पड़ेगा।

प्रकाशक—"वीर" बिजनौर (यू०पी०)

विज्ञापन के लिये स्थान खाली है

यदि आपको व्यापार बढ़ाना है तो वीर में अवश्य

अपना विज्ञापन छपवाइये।

भारतीय दिगम्बर जैन परिषद् ।

उद्देश्य–

दि० जैनधर्म का प्रचार और जैन-समाज की उन्नति ।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये योग्य व्यक्तियों की अध्यक्षता में निम्नप्रकार उल्लेखनीय कार्य किया जारहा है :—

उपदेशक विभाग—मन्त्री श्री ज्योतिःप्रसाद जी 'प्रेमी', स० "जैनप्रदीप", देवबन्द ।

इस समय दो योग्य प्रचारक जैन अजैन जनता में भ्रमण कररहे हैं और एक प्रचारक "जैन कलालों" में (नागपुर) जो अपने धर्म को अधिक काल से भूले हुवे हैं विशेष रूप से कार्य्य कर रहे हैं ।

ट्रैक्ट विभाग—बा० कामताप्रसाद जी अलीगञ्ज की अधीनता में हिन्दी, उर्दू, बङ्गला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में उत्तम व उपयोगी ट्रैक्ट व पुस्तकें तय्यार कराई जारही हैं ।

बोर्डिङ्ग व्याख्यान विभाग—मन्त्री बा० बलवीरचन्द्रजी B. A., LL. B. वकील मुजफ्फरनगर जैन बोर्डिङ्ग व स्कूलों में व्याख्यान का प्रबन्ध कर रहे हैं ।

परीक्षा विभाग—मन्त्री श्री प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द्रजी M.A.LL.B. इलाहाबाद जैन स्कूलों व छात्रालयों में धर्मशिक्षा की उत्तेजना और परीक्षा का प्रबन्ध करते हैं ।

इतिहास विभाग—मन्त्री बा० हीरालालजी M. A. LL. B अलाहाबाद । जैनधर्म की प्राचीनता, सार्वभौमिकता व गौरवता के इतिहास की सामग्री एकत्रित कर रहे हैं ।

छोटी समितियों के द्वारा "दि० श्वे० एकता", संख्या ह्रास के अनुसंधान आदि कई एक महत्वशाली कार्य्य किये जारहे हैं ।

'वीर' पाक्षिक-पत्र—पूज्यवर ब्र०शीतलप्रसाद जी के सम्पादकत्व में व बा०कामताप्रसाद जी के उपसम्पादकत्व में नियमरूप बिजनौर से प्रकाशित होता है ।

धर्मप्रेमियों से प्रार्थना

है कि परिषद् के सभासद् बनें(पुश्त पर फार्म छपा हुआ है)व शाखा सभायें स्थापित करके परिषद् के कार्य्य को सहायता पहुंचावें । और शक्ति अनुसार आर्थिक सहायता भी पहुंचावें ।

सभापति :—
चम्पतराय Bar-at-Law
हरदोई ।

मन्त्री :—
रतनलाल B. S. C. LL. B
बिजनौर ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् ।

स्थापित माघ शुक्ला १०,—२४४६ —२७-१-२३

सभापति-श्रीयुत चम्पतराय जैन,
बैरिस्टर-ऐट-ला,
हरदोई ।

मन्त्री-श्रीयुत रत्नलाल बी० एस० सी० एल० एल० बी० बिजनौर ।

उद्देश्य दिगम्बर जैन धर्म का प्रचार और जैनसमाज की उन्नति।

मैं उपर्युक्त परिषद् का सदस्य होना चाहता हूं। मैं इसके नियमों का पालन करूँगा तथा उसके उद्देश्यों को कार्यरूप में परिणत करने का भरसक प्रयत्न करूँगा और ।।) वार्षिक चन्दा देता रहूंगा। मैं दिगम्बर जैन धर्म का श्रद्धानी हूं। मेरी अवस्था १८ वर्ष से ऊपर है।

द०

तारीख

नाम उपाधि सहित

पिता का नाम

जाति उम्र व्यवसाय

स्थान पो० ज़ि०

स० सूची में स० पर नाम लिखा गया।

नोट—यह फार्म भर कर मन्त्री के पास भेज देना चाहिए।

वीर

महात्मा

A [illegible] Lakshmi Art Bombay 8

वर्ष २ | महावीर जयन्ती अङ्क | अङ्क ११-१२
वीर संवत २४६१

वीर शासन !

(लेखक श्री विजयकुमार ...)

सार्व सुन्दर सुखसागर वीर जिनवर शासनम् ।
शान्तिकारक शशि उजागर वीर जिन अनुशासनम् ॥ टेक ॥
जग प्रकाशक भ्रम विनाशक भव्य कुमुद सुधाननम् ।
तरन तारन जन उधारन जग जिहाज उबारनम् ॥ १ ॥
आर्त दूषण विगत दूषण नीति अनय नाशनम् ।
विश्वज्ञानी सुगुणखानी आत्मबोध विभासनम् ॥ २ ॥
वीतरागी दिव्यरागी दिव्यवाणी मोहनम् ।
दिव्यमूर्ति दिव्यस्फूर्ति दिव्यकीर्त्या शोभनम् ॥ ३ ॥
ऋद्धि सिद्धि समृद्धिदायक बुद्धिनायक श्रीधनम् ।
तारन तप तन ताप तापित तपन तशन घनाघनम् ॥४॥
तन सुमोहन मन सुमोहन मदन कानन दाहनम् ।
विश्वलोचन दुःखमोचन नीतिराज्य सुहावनम् ॥ ५ ॥
देश मण्डन मद विखण्डन भारतीय सुलालनम् ।
संसार रोगी के जगैया शान्ति के प्रतिपालनम् ॥ ६ ॥
है वही मारग बताया वीर जो जिन शासनम् ।
"वीर" भी कहता उसे जिन वीर के अनुशासनम् ॥ ७ ॥

वीराह्वान् !

घोर अन्धकार व्याप्त था। हाथ को हाथ नहीं दीखता था। पथचर पथ भ्रष्ट होरहे थे। कोई भटक कर गहरे गर्त की ओर सरपट दौड़ा चला जा रहा था। कोई आकुल-व्याकुल हो ज्यों का त्यों चित्रलेख बना हुआ था। तो कोई विकराल काले पर्वत के पाषाणों से अपना माथा टकरा रहे थे और कहीं चमकते जुगनू का झिलमिला प्रकाश पाया कि चट भगवत् उसकी ओर दौड़ पड़े। सारांश यह है कि उस अतुल अन्धकार में सब कोई प्रकाश के लिये लालायित हो रहे थे। परन्तु यह घोर अन्धकार पाठकों! रात्रि का अन्धकार नहीं था। वह रात्रि न थी जो इतनी भयावह हो रही थी, यह घोर अन्धकार आज से २५०० वर्ष पहले के भारतवर्ष के सामाजिक और धार्मिक वातावरण में व्याप्त था। लोग चोखे चङ्गे हुये भरे थे और अपने मानुषिक पुरुषार्थों की रक्षता में तल्लीन! उन्हें नौन तेल लकड़ी की फिकर नहीं थी। भौतिक शरीर के रक्षा का भूत सवार नहीं था। वे यदि किसी उद्योग में सम्बद्ध थे तो वह था आत्मस्वतन्त्रता प्राप्त करने का अटल आकांक्षित विश्वास! लोग थोथे क्रियाकाण्ड से ऊब गये थे, निरापराध पशुओं का रुधिर बहाने से घबड़ा गये थे, अपने २ मानुषिक अधिकारों के लिये सब ही कटिबद्ध थे। सब ही आपसी घृणा व विद्वेषोत्पादक भेदभाव को मेटने में संलग्न थे। इस हेतु जो क्षोभित हृदय अग्रसर हो कर्मक्षेत्र में आता था लोग उस ही के अनुयायी हो जाते थे। इस आत्म-स्वतन्त्रता के अहिंसामयी झंडा उड़ानेवालों में सबसे पहिले म० बुद्ध का नाम सभ्य संसार में विख्यात है। परन्तु सच्ची अहिंसा और वीरता की मूर्ति का जन्म कर्मक्षेत्र में जिस समय हुआ उस समय म० बुद्ध को भी कुछ वर्षों के लिये विराम लेना पड़ा। म० बुद्ध के जीवन के ५० से ७० वर्ष के अन्तराल का कोई विवरण ही उपलब्ध नहीं होता † और वह हो भी कैसे सकता था उस समय तो सर्वज्ञ भगवान महावीर का सदुपदेश चहुं ओर हो रहा था। जनता को साक्षात् सत्य का प्रकाश उन में मिल गया था। उनके स्याद्वाद न्याय सागर में गहरे गोते लगाकर वह इच्छित फल को प्राप्त कर चुकी थी, सप्तभंगी नय-निधि से अपने धार्मिक रिवाजों की पूर्ति पाचुकी थी। आपसी विद्वेष, घृणा और भेद सब लुप्त थे। अहिंसा, प्रेम, दया, अनुकम्पा का साम्राज्य था। आत्मज्ञान सहित तपश्चर्या का महत्व प्रत्येक को हृदयगम होचुका था। सब अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शील और अपरिग्रहरूपी सर्वसुखकारी पञ्चव्रतों का सेवन कर दुःखदाह को खो बैठते थे। भगवान महावीर का अव्याबाध सुख का सदेश चहुं ओर व्याप्त होगया था। पतित-पावन-पुण्यमयी वीर शासन का दिव्य झंडा सर्वत्र सर्व ठौर ऊँचा फहरा रहा था। परन्तु दुःख आज उसकी वह गुणगरिमा लुप्त है। और संसार में वही मानुषिक यंत्रणायें घर कर रही हैं। इनको मेटने के लिये वीर शासन के वीरभक्तों को तैयार होजाना चाहिये। वीरप्रभु के सुखसंदेशको घर २ में पहुंचा देना चाहिये। बस, कार्य करनेको कर्मक्षेत्रमें आइये। उसके लिये उपाय और साधन स्वयं आपको मिल जायेंगे। सच्चे वीर भक्त हो तो अनुकम्पा और दया को अपनाओ। त्याग का पवित्र पाठ भगवान के अनुपम आदर्श से ग्रहण करो। अपने पड़ोसियों और विदेशियों पर, सहयोगियों और विरोधियों पर, निज और पर सब पर सब ठौर प्रेम की सलिल धारा बहादो। और सच्चे ज्ञान से उनके हृदय रजायमान करदो। अन्यथा, अपने को वीर भगवान के भक्तवत्सल उपासक कहाने का झूठा हठ छोड़ दो।

— उ० सं०

† See Bigandet's Life & Legend of Gautama.

महावीर जन्म।

(लेखक-श्री० साहित्यशास्त्री, सतीशचन्द्र गुप्त व्याकरणरत्न)

चारित्र नायक ब्रह्मचारी ज्ञाननिधि गम्भीर हैं।
तोड़ दीं तप से जिन्हों ने कर्ममल जंजीर हैं॥
अतएव सब से प्रथम है हस्ताञ्जली श्री वीर को।
महावीर जन्म लिखूँ यहाँ कर जोड़ वीर सुधीर को॥ १॥

सुविदेह नामक देश भारतवर्ष में विख्यात है।
धन धान्य धर्मी ध्यानियों से और भी आख्यात है॥
मध्य इसके कुण्डपुर है नाम ग्राम सुहावना।
करते यहां श्रेष्ठी सुधर्मी जैन धर्म प्रभावना॥ २॥

सिद्धार्थ नृपवर हैं सुरक्षक कुण्डपुर के अधिपती।
सद्ज्ञानत्रय अरु नीतिधारी धर्मरक्षक सन्मती॥
प्रियकारिणी नामक प्रिया प्रियकारिणी उनकी सही।
तप सत्य संयम शील से करती पवित्र महा मही॥ ३॥

दिन एक शयनागार में प्रियकारिणी थीं सो रहीं।
छिटकी हुईं थीं चन्द्र किरणें कुछ अभी कम होरहीं॥
हां, होचुका था समय आधी रात्रि से ज्यादा अभी।
प्रियकारिणी ने स्वप्न षोड़श शुभ समय देखे तभी॥ ४॥

वृषभ, हस्ती, सिंह, लक्ष्मी न्हवन माला फूल की।
चन्द्र, सूरज कुम्भ दो दो मत्स्य रेखा अग्नि की॥
सागर सरोवर सिंह आसन स्वर्ग की शुभ पालिकी।
नागेन्द्र का भावन भवन ढेरी रतनमणि राशि की॥ ५॥

ये देखकर प्रातः उठीं कर नित्य कर्म सुशीघ्र ही।
पास प्रिय के जाय कर उन स्वप्न की कथना कही॥
सुन कर प्रभू ने स्वप्न सारे फल दिये बतला सभी।
तीर्थंकर महावीर का शुभ जन्म होगा ही सही॥ ६॥

प्रियकारिणी का हृदय प्रिय के शब्द सुन हर्षित हुआ।
आनन्द फूल बह उठे तन अङ्ग रोमाञ्चित हुआ॥

आषाढ़ शुक्ला छट बड़ी नक्षत्र भी शुभ था महा।
अच्युत से च्युत होकर प्रभू श्री गर्भ में आये अहा ॥ ७ ॥
धारण करे ज्यों कञ्ज सरसी राजहंस प्रधान को।
प्राची दिशा जिमि चन्द्र मण्डल ज्यों गिरा शुभ गान को ॥
रत्न डिबिया रत्न को कवि भारती शुभ अर्थ को।
गर्भ त्यों धारण किया ज्यों सीप मोती अर्थ को ॥ ८ ॥
देवियाँ आकर वहाँ सेवा सदा करती रहीं।
सुन्दर कथा प्रश्नादिकों से मातु मन हरती रहीं ॥
शुभ गान वाद्य सुनृत्य कृत्यादिक सभी होते रहे।
आनन्द मङ्गल में सदा नव मास थे बीते रहे ॥ ९ ॥
शुभकारिणी, शिवकारिणी, मनहारिणी, दुखहारिणी।
चैत्र शुक्ला की त्रयोदश थी बड़ी सुखकारिणी ॥
बस उसी तिथि में हुआ था जन्म श्री महावीर का।
श्री वर्द्धमान सुसन्मती का वीर का अतिवीर का ॥१०॥

जीवन हेतु संग्राम।

जीवन हेतु संग्राम (Struggle for life) पाश्चात्य भौतिक विज्ञान का एक प्रख्यात् सिद्धान्त है। प्रकृति (Nature) में देखा जाता है कि प्रत्येक जीवित प्राणी अपना जीवन स्थिर रखने के लिये बाह्य संसार की ओर दौड़ता है। स्वयं जीवित रहने के लिये बाहरी दुनियां से प्रत्येक प्रकार की तकरार और लड़ाई झगड़े करता है। अपने जीवन के लिये दूसरों को हानि पहुंचाने व मार डालने के लिये हर तरह तैयार रहता है। आकाश पृथ्वी और जल एवं थल जहां दृष्टि दौड़ाइये यह ही मरामार का दृश्य दृष्टि आता है। नदियों में बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खा जाती हैं-पृथ्वी पर कृमि व छोटे छोटे कीड़े मकोड़ों को पक्षी खा जाते हैं, छोटी चिड़ियों को कव्वे व चील हड़प कर जाते हैं-शेर, भेड़िये आदि अन्य पशुगण मनुष्य की ओर दौड़ते हैं। मनुष्य भी अनाज व सब्जी पर संतोष करके भेड़, बकरी, गाय, हिरण आदि को अपना भक्ष्य बनाना चाहता है। सारांशतः इस अस्थिर संसार में प्रत्येक जीवित प्राणी यह ही चाहता है कि मैं जीवित रहूं और मेरे जीवन के लिये कोई भी क्यों न कत्ल किया जाय, परन्तु मैं अवश्य जीवित रहूं। यद्यपि यह सब देखते और जानते हैं कि यहां सदा कोई जीवित नहीं रहता। सब एक न एक दिन अन्त को प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु इस सब के होते हुये भी संसारी जीव की बुद्धि पर सब अपने जीवन के साथ ऐसा प्रबल मोह हावी हो रहा है कि वह अपने जीवन को अपने चारों ओर बाह्य संसार में ही ढूंढता है और उस ढूंढ खोज में संहार करता और रुधिर प्रवाह बहाता है।

इस जीवन हेतु संग्राम (Struggle for life) को देखकर बुद्धि चक्कर में आती है। लोग इससे यह परिणाम निकालते हैं कि जब संसार में यह नियम देखा जाता है कि एक जीवित प्राणी दूसरे जीवित प्राणी को कत्ल करके स्थिर रहे तो फिर क्यों न कत्ल व खूनरेज़ी करें ? जब यह प्रकृति का नियम है कि बलवान निर्बल के आधार से जीवित रहे तो फिर क्यों हाथ बांध कर बैठें ? बेशक यह बात बिलकुल ठीक है कि प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर एक प्राकृत इच्छा इस बात की है कि वह अपने आप को कायम रक्खे। परन्तु प्रश्न यह है कि "अपना आपा" किसका नाम है ? आत्मा और पुद्गल के मिलने से जो एक मिश्रित रूप बना हुआ है, संसारी जीव इस ही को अपना आपा ख्याल करता है। इस को ही कायम रखने के लिये हज़ारों क़त्ल व खूनरेज़ी करता है किन्तु यह मिश्रित रूप न कभी स्थिर रहा और न हमेशा आगामी रहेगा। अब देखना यह है कि वास्तव में अपना आपा क्या वस्तु है ? असली सच्चा जीवन किस को कहते हैं ? संसारी जीव हृदय आकर्षित करने वाले राग सुनने, सुन्दर रंग देखने, अच्छी सुगंधि सूंघने, स्वादिष्ट पदार्थ चखने और नरम व चिकनी चीज़ छूने में ही असली सच्चा जीवन ख्याल करता है। हरिण राग के पीछे अपनी जान खोता है। पतङ्ग रंग की आरज़ू में अपने आप को जलाता है। भौंरा सुगंधि सूंघने के चक्कर में ही अपने प्राण गवाता है। मक्खी मधु के स्वाद के लिये ही अपनी जान खोती है। हाथी स्पर्श की लालसा में ही बन्धन में पड़ता है और कभी कभी गढ़े में ही अपने प्राणों से हाथ धो बैठता है। और मनुष्य इन पांचों के ही वश होकर हज़ारों प्रकार के दुःख उठाता है। यह उदाहरण इस प्रकार के हैं कि जिन में संसारी जीव पुद्गल में ही सच्चा जीवन मान कर अपनी जान देता है। और आत्मा व पुद्गल के मिलने से जो एक एक संयुक्त पर्याय अर्थात् दशा बनी हुई है उसको अपना आपा ख्याल करता है। जीवन हेतु संग्राम (Struggle for life) बेशक एक विश्वव्यापी सिद्धान्त है। संसारी आत्मायें चाहे कैसे ही अच्छी बुरी, ऊँची नीची दशा में हों अपने अस्तित्व के लिये अपने आपे के जो अर्थ वे उस अवस्था में समझे हुये होती हैं उस अर्थ के अनुसार ही इस सिद्धान्त पर सब अमल करती हैं। यह और बात है कि वह अपने आप के अर्थ मिथ्या समझी हुई हों, परन्तु उन अर्थों को सच्चा समझ कर सब ही इस सिद्धान्त की पाबन्दी करती हैं। परन्तु अपने आपे के मिथ्या अर्थ समझ कर जो इस सिद्धान्त पर व्यवहार करना है वह मिथ्या व्यवहार करना है और यथार्थ अर्थ समझ कर जो इस सिद्धान्त का व्यवहार है वह यथार्थ व्यवहार है। अस्तु जो ध्यान देने योग्य और देखने की बात है वह यही है कि "अपना आपा" अथवा "मैं" क्या वस्तु है ? क्या यह शरीर अपना आपा है ? अथवा शरीरसे अलग कोई वस्तु अपना आपा है? वास्तवमें शरीर अपना आपा नहीं है प्रत्युत शरीर के भीतर जो देखने जानने वाला आत्मा है वह सच्चा अपना आपा है। शरीर हमेशा स्थिर नहीं रहता। आत्मा अजर अमर है। हमेशा से है हमेशा तक रहेगी। आत्मा में देखने जानने की शक्ति है। शरीर में देखने जानने की शक्ति नहीं है जड़ है। एक शरीर हमेशा साथ नहीं रहता। नया नया शरीर आत्मा अपने भावों और कर्मों के अनुसार धारण करता रहता है। सच्चा "अपना आपा" अथवा "मैं" आत्मा ही है। जो व्यक्ति शरीर को अपना आपा मानते हैं वे गलती करते हैं। जब मनुष्य गौर करता है तो 'मैं हूं'। ये शब्द कदापि शरीर से लागू नहीं कर सकता। ये शब्द शरीर के भीतर जो देखने जाननेवाली शक्ति है उसही से लागू होते हैं। वह ही देखने जानने वाली शक्ति "सच्चा मैं" 'सच्चा अपना आपा' या सच्चा जीवन है'। उस ही का नाम आत्मा-जीव-रूह-सोल आदि विभिन्न भाषाओं में है। असली स्वभाव आत्मा का सारे संसार के तीनों कालों-भूत, भविष्यत्,

वर्तमान के सर्व पदार्थों के देखने जानने का है अर्थात् सर्वज्ञता और सर्वदर्शीपना आत्मा का असली निज़ी स्वभाव है। परन्तु यह असली स्वभाव पुद्गल (Matter) के मिलाप की वजह से बिगड़ा हुआ है। अर्थात् आत्मा का ज्ञान पुद्गल के मिलाप के कारण दबा हुआ और कम हो रहा है। ऐसी दशा में आत्मा अपने असली स्वभाव अर्थात् अपने आप को खोये हुये हैं। और ऐसी दशा में आत्मा पूरा आत्मा नहीं है। जब कि आत्मा सर्वज्ञ हो जाता है उस वक्त पूरा आत्मा अर्थात् परमात्मा हो जाता है। अतएव सर्वज्ञता ही आत्मा का सच्चा आपा या सच्चा जीवन है परन्तु एक अन्य पदार्थ अर्थात् पुद्गल उसको सच्ची ज़िन्दगी ज़ाहिर व क़ायम नहीं होने देता। दुनियाँ में आत्मा हज़ारहा तरह के प्रयास करता है। वास्तव में यह सब प्रयास-संग्राम सच्चे जीवन को प्राप्त और स्थिर करने के लिये है। यह सब प्रयास स्वभाविक हैं। यह सब इसलिये है कि आत्मा संसार में अपनी वर्तमान दशा में आराम, इत्मीनान और आनन्द नहीं पाता। आराम इत्मीनान और आनन्द स्वभाविक सच्चे जीवन में ही होता है। जिस जीवन दशा में पर पदार्थ का मेल अथवा पर की ताबेदारी है उसमें आकुलता व बेचैनी ही रहती है। आनन्द नसीब नहीं होता।

अतएव जीवन हेतु संग्राम(Struggle for life) एक प्राकृतिक सिद्धान्त और प्राकृतिक नियम हैं। परन्तु संसार में आत्मा की गलती केवल इतनी है कि वह यह नहीं समझता कि मेरा असली व सच्चा जीवन क्या वस्तु है ? और इसलिये वह उसके प्राप्त करने के उपाय भी गलत ही कार्य में लाता है। संसार में आत्मा अपना अस्तित्व पुद्गल में ही मानता है। अपने शरीर को ही "मैं" ख्याल करता है। यदि शरीर सुन्दर है तो अपने आप को सुन्दर समझता है। शरीर कुरूप है तो अपने आप को कुरूपी समझता है। शरीर बलवान है तो कहता है मैं बलवान हूं। शरीर क्षीण शक्ति है तो समझता है मैं निर्बल हूं। धन पास है तो कहता है मैं धनवान हूं। धन न होने की दशा में अपने निर्धनी होने की पुकार लगाता है। वास्तव में देखा जाय तो यह सब पौद्गलिक पदार्थ आत्मा से अलग हैं। भारतवर्ष के पुराने ऋषियों का उपदेश है कि आत्मा की सुन्दरता, बल, और सम्पत्ति सब उसका ज्ञान व दर्शन अर्थात् देखने व जानने की शक्ति है। उस ही में आत्मा को आनन्द नसीब हो सका है। और पौद्गलिक पदार्थों को अपना आपा मानकर उस की जुस्तजू में संग्राम-प्रयास करता रहता है, परन्तु शान्ति नहीं मिलती। अतएव यह सच्चा प्रयास संग्राम नहीं है। सच्चा प्रयास-संग्राम वही है कि जो सच्चा जीवन प्राप्त करने के लिये किया जाय। वर्तमान पर्याय अर्थात दशा को स्थिर रखने के लिये जो कत्ल व खूंरेज़ी की जाती है वह सच्चा जीवन हेतु संग्राम (Struggle for life) नहीं है। सच्चा जीवन हेतु संग्राम वह ही है कि जो सूक्ष्म पुद्गल को कि जिसने आत्मा की असली ख़ासियत व असली पवित्रता को मैला कर रक्खा है, आत्मा से अलग करने के लिये किया जाये। इस ही सूक्ष्म पुद्गल को जैनाचार्यों ने कर्म के नाम से विख्यात् किया है इस ही सूक्ष्म पुद्गल से आत्मा में नीचता व क्रोध व लोभ आदि उत्पन्न होते हैं कि जिस के कारण आत्मा अपने असली स्वभाव अर्थात् पूर्णज्ञान से गिरा हुआ है। बस जो लड़ाई और संग्राम नीचता-मूढ़ता-क्रोध लोभादि को परास्त करने व शरीर व इन्द्रियों व पुद्गल अर्थात् कर्म को नियंत्रित करने के लिये किये जाते हैं वह ही सच्चा जीवन हेतु संग्राम (Struggle for life) है। इस लिये जीवन हेतु संग्राम के सिद्धान्त पर अन्य जीवित प्राणियों का कत्ल व नाश करना अथवा पीड़ा पहुंचाने को उपर्युक्त ठहराना ठीक नहीं है। जीवन हेतु संग्राम का सिद्धान्त ज़रूर ठीक है परन्तु संसारी जीव अविद्या के कारण आत्मे अस्तित्व का सच्चा स्वरूप न समझ कर इस सिद्धान्त का गलत व्यवहार करते हैं। और

का यथार्थ अस्तित्व अन्य जीवों पर दया व अनुकम्पा करने एवं उनको उपकार करने से ही प्रगट एवं स्थिर होता है। दूसरों को मरमार करने से नहीं होता।

यह बात बेशक ठीक है कि भाव व कषाय व कर्म अर्थात् सूक्ष्म पुद्गल जिससे आत्मा बंधा हुआ है एकदम परास्त नहीं हो सकते। संसार में कोई संग्राम इससे अधिक कठिन व अधिक समय चाहने वाला नहीं है। यह संग्राम बाहिरी दुनियां से नहीं बल्कि भीतरी दुनियां से है। इसमें पुद्गल से सहायता लेनी पड़ती है। बिना शरीर की सहायता के आत्मा उन्नति नहीं कर सकती। शरीर की मदद के लिये शरीर को खिलाने पिलाने की जरूरत है। शरीर को बिना खुराक आदि दिये यह कार्य नहीं कर सकता। शरीर व इन्द्रियों को परास्त करने से मेरा यह भाव नहीं है कि खाना पीना आदि छोड़ कर अपने आप को हलाक कर दिया जाय। बल्कि खाना पीना एवं अन्य शारीरिक आवश्यकताओं को ऐसे बेज़रर (अहानिकर) ढंग से प्राप्त करना व व्यवहार में लाना चाहिये कि जिसमें दूसरे जीवित प्राणियों को कष्ट न हो। उन को जहां तक हो सके हानि न पहुंचे इसी का नाम अहिंसा की पाबन्दी करना है। जिस प्रकार आत्मा उन्नति करती जाती है उसी प्रकार पुद्गल व शरीर की कम ज़रूरत पड़ती जाती है। जिस समय आत्मा अतीव उत्कृष्ट पद पर पहुंच कर अपने असली स्वभाव को पूरा प्राप्त कर लेती है तो फिर पुद्गल से अलग हो जाती है। और पुद्गल की कुछ ज़रूरत नहीं रहती। उस समय आत्मा परमात्मा हो जाता है और फिर किसी संग्राम या इस्ट्रगल (Struggle) की आवश्यका नहीं रहती।

—ऋषभदास जैन।

नहीं है भीरु महा है वीर।

(श्री शङ्कतलक छन्द मात्रा १६)

कलिल भंजन दृढ़ साहस धीर। नहीं है भीरु महा है वीर ॥
दोष अष्टादश सहस्र निवार। शुद्ध व्रत ब्रह्मचर्य को धार ॥
राग दोषादि सकल परिहार। अहिंसा मन पर करि अधिकार ॥
रहे निश्चल ज्यों निर्मल नीर ॥ नहीं है० ॥

नेह तजि गृह, कुटुम्ब, गो, धन। धान्य, धन, वस्त्रादिक, भूषण ॥
दास, दासी, बरतन, वाहन। तजे बहिरङ्ग दसों साधन ॥
चतुर्दश अन्तर डारे चीर ॥ नहीं है० ॥

मद्यादिक सुरस्व तर्क इच्छा। महाव्रत श्रेष्ठ लई दीक्षा ॥
प्राप्त परिपूर्ण उच्च शिक्षा। करें हैं वे ही सत्व रक्षा ॥
पृथक् करि लिया नीर से क्षीर ॥ नहीं है० ॥

असन हित शुक्ल भव्य के द्वार । जात मग ईर्यासि मिति विचार ॥
दोष छियालीस टार इक बार । स्वल्प निज पाणि लेत आहार ॥
अजाची बनवासी गम्भीर ॥ नहीं है० ॥

ग्रीष्म गिर शीस ध्यान धारे । शीत सरिता आसन मारे ॥
मेह बरसत तरु तल ठाढ़े । गिनत नहिं घाम मेह जाड़े ॥
सहैं अति शीतल ठंड समीर ॥ नहीं है० ॥

यदपि ना धोवत दन्त न अंग । तदपि हैं हृदय शुद्ध शुभ रङ्ग ॥
विराजे कण्ठ स्याद सत भंग । रंगे हैं आत्मरंग सर्वङ्ग ॥
रंच ना रहे कभी दिलगीर ॥ नहीं है० ॥

तपे तप द्वादश शुद्ध चरित्र । धर्म दश सेवत सदा पवित्र ॥
कांच कंचन सम शत्रू मित्र । विचरते गुप्ति सहित सर्वत्र ॥
कर्म की काटत नित्य जंजीर ॥ नहीं है० ॥

न निज निन्दा सुनि होते क्रुद्ध । राग दोषनते रहे विरुद्ध ॥
सदा आत्मन ते हैं शुद्ध । करें नित कर्म शत्रु से युद्ध ॥
लिये कर स्याद्वाद समशीर ॥ नहीं है० ॥

करें नित पुनि क्रमण आसन । शयन भू पर कछु एकासन ॥
परीसः सहैं दुःख नाशन । मोह सेना पै करें शासन ॥
शहंशाह होके शाह फ़कीर ॥ नहीं है० ॥

विराजें दश लाक्षण सिर छत्र । क्षमा संतोष कवच के वस्त्र ॥
तपो बल ब्रह्मचर्य से अस्त्र । लिये दिग्विजय करें सर्वत्र ॥
ज्ञायक ज्ञायक केवल बलवीर ॥ नहीं है० ॥

साथ ले संवर का भाला । बन्ध का व्यूह तोड़ डाला ॥
निर्जरा जर्जर कर डाला । मोक्ष का खोल दिया ताला ॥
मिटादी कुन्जी की भव पीर ॥ नहीं है० ॥

—कुञ्जीलाल जैन, काशी ।

"तज्जारुल्मुल्क रायबहादुर श्रीमान् सेठ माणिकचंदजी सेठी,
झालरापाटन ।"

"(अ० भा० दि० जैन परिषद के भूतपूर्व सभापति ।)"

"Tajjar ul-Mulk, Rai Bahadur
Srimān Seth Mānik Chand ji Sethi, Jhalrapatan."

"(Ex-President of the All-India Dig. Jaina Parishada.)"

जैनसाहित्य की विशेषता।

(ले०–श्री हीरालाल जैन एम० ए० एल० एल० बी०)

जैन साहित्य की विशेषता बतलाने से प्रथम यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि साहित्य किसे कहते हैं व जैन साहित्य से क्या अभिप्राय है। साहित्य की परिभाषा देना बड़ा कठिन है। जिस प्रकार 'संज्ञा वस्तु के नाम को कहते हैं'। ऐसा कहकर संज्ञा की परिभाषा दी जा सकती है, उसी प्रकार साहित्य की कोई सरल परिभाषा नहीं दी जा सकती। अतः साहित्य का क्या क्षेत्र है व उसमें किन २ बातों का समावेश होता है, हमें यह जानने का प्रयत्न करना चाहिये। बाह्य जगत् के स्वरूप को देखने की शक्ति तो सभी नेत्रवान जीवोंमें है, पर उस स्वरूपको देखकर उस को अपने मनस्पटल पर अङ्कित कर लेने, उस पर विचार करने व तत्संबन्धी अपने विचारोंको दूसरों पर प्रकट करने की शक्ति केवल मनुष्य ही को प्राप्त है। इस शक्ति के अभाव के कारण ही पशु निज व पर के अनुभवोंसे कोई लाभ नहीं उठा सकते क्योंकि उन अनुभवों को स्थायी बनाने के कोई साधन उन्हें उपलब्ध नहीं हैं और इसलिये वे किसी प्रकार अपनी उन्नति करने में असमर्थ हैं। पर मनुष्य इसी शक्ति के प्रभाव से अपनी उत्तरोत्तर उन्नति कर सकता है, इसी कारण यह कहावत एक प्रकार से सत्य है कि–

> "We call our ancestors fools
> the wiser as we grow.
> Our wiser sons will call us so."

अर्थात् ज्यों २ हमारी बुद्धिमत्ता बढ़ती जाती है त्यों २ हम अपने पूर्वजों को मूर्ख कहने लगते हैं। हमसे अधिकतर बुद्धिमान् हमारी भावी सन्तान हमारे लिये भी ऐसा ही कहेगी'। यह इसी कारण सम्भव है कि मनुष्य में अपने अनुभवों को अपनी व अपनी सन्तान को स्थायी सम्पत्ति बनाने की शक्ति है। गहरे भूतकाल में निमग्न हमारे पूर्वजों ने न जाने कितने सोच विचार और परिश्रम से अग्नि द्वारा अन्न पका कर खाने, हल द्वारा जमीन जोत कर अन्न उत्पन्न करने, लकड़ी, ईंट, पत्थर आदि से मकान बनाकर रहने व प्रकृतिप्रदत्त रुई, कपास आदि से सुन्दर वस्त्र बनाकर पहनने जैसी सभ्य-क्रियाओं का आविष्कार किया होगा पर ये सब हमारे लिये अब बिलकुल साधारण होगई हैं, जिन के लिये हमें कोई विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ता। इसी प्रकार संसार की प्राकृतिक शक्तियों जैसे सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, वायु, व मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों जैसे, आत्मा, मन, बुद्धि, व मनुष्य के मानसिक विकारों जैसे क्रोध, मोह, ईर्ष्या, अहंकार व मनुष्य के बाह्य-आचरणों आदि के विषय में हमारे पूर्वजों ने जो कुछ सोचा, विचारा व अनुभव किया वह परम्परा से हमें सहज ही प्राप्त होता है। इन सब मानवीय अनुभवों और विचारों का प्रकटी-करण ही साहित्य कहलाता है। कोई कवि अपने विचारों को शब्द ध्वनि से प्रकट करता है कोई लिखकर, कोई चित्र द्वारा और कोई मूर्ति निर्माण व दस्तकारी खुदाई आदि द्वारा। विस्तृत रूप से यह सब साहित्य के अन्तर्गत है। इस दृष्टि से हम मनुष्य के सभी अनुभवों और विचारों के प्रकटीकरण को साहित्य कह सकते हैं। नाचना, रोना, हंसना, गाना आदि भी एक प्रकार का साहित्य है

क्योंकि ये सभी मानवीय हृदय के उद्गार हैं। एक सीधे साधे ग्राम-निवासी किसान का संध्या के समय आग तापते हुए अपने लड़कों को अपनी खेती के अनुभव सुनाना भी साहित्य है और शहर के रङ्ग-मञ्च पर खेले जाने वाले नाटक में भी साहित्य है। यह सब साहित्य का विस्तृतरूप है। इस साहित्य का अधिकांश अस्थायी है, और इस कारण साधारणतः वह साहित्य की गणना में नहीं लिया जाता। अधिकतर इस साहित्य के केवल उसी भाग को साहित्य का नाम दिया जाता है जो किसी प्रकार का स्थायीरूप धारण कर मनुष्य-समाज की स्थायी सम्पत्ति बन जाता है। भाषा व चित्रण साहित्य को स्थायी बनाने के मुख्य साधन हैं। यह कहना तो यथार्थ नहीं होगा कि इन दोनों साधनों में भाषा ही अधिक प्रभावशाली साधन है, क्योंकि मानवीय-हृदय की अनेक भावनाएं जिस खूबी, जिस कौशल और प्रभावशीलता के साथ चित्रकार जिस अपनी लेखनी के थोड़े से घुमाव से प्रकाशित कर सका है वह लेखक अपनी पुस्तक के हजार पृष्ठ लिख कर भी नहीं कर सकता। पर चित्रण का क्षेत्र संकुचित है; और वह हरएक व्यक्ति के लिये सुलभ भी नहीं है। इससे विपरीत भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण है। भाषा-द्वारा मनुष्य के सभी प्रकार के अनुभव व विचार प्रकट किये जा सकते हैं और वह सभी मनुष्यों को सुलभ हैं। इस कारण विशेष कर साहित्य का केवल वही अङ्ग साहित्य-पदवी से विभूषित किया जाता है, जो भाषा द्वारा पुस्तकारूढ़ होकर मानवसमाज की चिर-स्थायी सम्पत्ति बन जाता है।

इस पुस्त कारूढ़ साहित्य के उस भाग को जैन साहित्य की संज्ञा देते हैं जो जैन धर्मावलंबियों द्वारा समय २ पर उत्पन्न हुआ है।

हम ऊपर कह आये हैं कि साहित्य मनुष्य के अनुभवों और विचारों का प्रकटीकरण मात्र है। अनुभव और विचार मनुष्य की बाह्य परिस्थिति से उत्पन्न होते हैं। अतः साहित्य का समाज व देश के इतिहास से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी साहित्य का स्वरूप उसके समकालीन इतिहास को जाने बिना ठीक २ नहीं समझा जा सकता। जैन-साहित्य पर जैन-धर्म की छाप लगी हुई है। इसलिये उक्त साहित्य की विशेषता समझने के लिये जैन धर्म का थोड़ासा इतिहास जान लेना आवश्यक है। सच तो यह है कि भारतवर्ष के प्राचीनतम इतिहास में जब तक हम गहरे नहीं पैठेंगे, तब तक जैन साहित्य की पूरी २ विशेषता हमारी समझ में नहीं आसकती। क्योंकि जैन साहित्य के मूलाधार जो सिद्धान्त हैं वे पुस्तकारूढ़ होने के समय ही किसी व्यक्ति-विशेष के मस्तिष्क में उत्पन्न नहीं हुए। उनका सिलसिला बहुत पुराना है। कोई सिद्धान्त तबतक स्थायी साहित्य में स्थान नहीं पासकता जब तक कि वह समय की कसौटी पर कसा जाकर ठीक न उतर जाय। यह नियम प्राचीन काल के लिये अब से कई गुणा सत्य था क्योंकि प्राचीन-काल में लेखन कला का बहुत अधिक प्रचार न था, और धार्मिक सिद्धान्तों को लोग ग्रंथों की अपेक्षा गुरु के मुख से ही सीखना अच्छा समझते थे। उपलब्ध जैन-साहित्य जैन-धर्म की अपेक्षा बहुत अर्वाचीन है। पर तोभी उसमें जैनधर्म की प्राचीनता की आभा विद्यमान है। महावीर स्वामी ने जिस समय जैन धर्म का उप-

देश देना प्रारम्भ किया था, उस समय जैन धर्म कोई नया चलाया हुआ मत नहीं था। यह इतिहास-सिद्ध बात है। पर उस समय की सामाजिक और धार्मिक परिस्थिति ने उन सिद्धान्तों में नई रोशनी, नया तेज़, नई शक्ति ला दी थी। धार्मिक क्रियाओं में घोर हिंसा, मनुष्य के धार्मिक और सामाजिक अधिकारों में भारी विषमता से उद्विग्न जनता ने अहिंसा और धार्मिक-समानता के सिद्धान्तों को बड़े चाव से अपनाया। इन उच्च आदर्शों को लेकर ही जैन साहित्य की उत्पत्ति हुई थी। केवल ज्ञान सम्पन्नावस्था में महावीर स्वामी की दिव्य ध्वनि से उस समय में प्रचलित अनेक (ग्रंथों के अनुसार तीन सौ त्रेसठ) मतों का खण्डन होकर जिन दार्शनिक सिद्धान्तों व धार्मिक और सामाजिक नियमों का प्रतिपादन उसमें हुआ उन सब का समावेश उनके शिष्यों ने बारह श्रुताङ्गों में किया ये बारह श्रुताङ्ग जैन साहित्य की सब से प्राचीन कृतियां थीं। उन में जैन महर्षियों के सारे अनुभवों और विचारोंका निचोड़ था। इनकी रचना उस समय की प्रचलित भाषा अर्द्ध-मागधी में हुई थी जो उस समय के शिक्षित अशिक्षित सभाके लिये सुबोध थी। महावीर स्वामी की दिव्य ध्वनि सारी जनता को उपकारक थी। इस लिये संस्कृत को छोड़ इसी जीती जागती भाषा में उनके उपदेश की रचना करना ठीक समझा गया था। स्वयं उनका दिव्य उपदेश पशुओं तक को बुद्धिगम्य था। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि ये श्रुताङ्ग कभी पुस्तकारूढ़ नहीं हुए। गुरु-शिष्य परम्परा से इनका अध्ययन होता रहा। पर यह अध्ययन-प्रणाली थोड़े ही काल में देश की राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों में घोर परिवर्तनों के कारण शिथिल पड़ गई और श्रुतांगोंका लोप होने लगा। जबतक प्रमाणों के लिये सर्वज्ञ के ही वाक्य प्रस्तुत थे तबतक धर्म में कोई भारी मतभेद होने की सम्भावना न थी। पर श्रुतांगों के विच्छेद के साथ ही साथ समाज में मत भेद खड़े होगये। दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदायों के अलग होने का बड़ा भारी मूलकारण यह श्रुतांगों का विच्छेद ही जान पड़ता है। इस प्रकार इस साहित्य के लोप से एक धार्मिक और सामाजिक बखेड़ा खड़ा होगया जो आज दो हज़ार वर्षों से भी अधिक समय में तय नहीं हो सका। वेदों की रक्षा हुई। ईसाइयों ने बाइबिल को नष्ट नहीं होने दिया, मुसलमानों ने कुरान शरीफ़ सुरक्षित रक्खे, पर धन्य री जैन समाज! तूने अपने मर्यादा-पुरुष के वचनों को ऐसी सुगमता से नष्ट हो जाने दिये।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने पीछे श्रुतांगों के उद्धार का प्रयत्न किया। पर उन्होंने जो सामग्री प्रकाशित की वह दिगम्बर सम्प्रदाय को मान्य नहीं हुई। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के मतानुसार भी उन के सकलित किये हुए ग्यारह सूत्र, मूल श्रुताङ्गों के असली रूप नहीं हैं। तौभी इन ग्यारह अंगों का भारी मूल्य इस बात में है कि उनमें अर्द्ध मागधी भाषा के नमूने रक्षित हैं। यद्यपि ये श्रुताङ्ग विक्रम की छटवीं शताब्दि में रचे जाने के कारण अर्द्ध-मागधी भाषा का वही रूप प्रकट करते हैं जो छटवीं शताब्दि में खड़ा किया जा सकता था।

श्रुताङ्गों का लोप होगया पर उनके सिद्धान्तों का नहीं। बहुत शीघ्र जैन सिद्धान्तों को प्रतिपादन करने वाले नये स्वतंत्र ग्रंथों की उत्पत्ति हुई। इस

गूंथों की रचना में भी आचार्यों का यही लक्ष्य रहा कि वे जन-साधारण को उपयोगी हों। इस कारण से भी प्राकृत भाषा में ही रचे गये। विक्रम संवत् की पहली शताब्दि के लगभग देश में शौर-सेनी प्राकृत का प्रचार था। तत्कालीन आचार्य कुन्द कुन्द स्वामी ने अपने ग्रंथों की रचना इसी प्राकृतमें की और उनके पश्चात् होने वाले आचार्यों जैसे कार्तिकेय, वट्टकेर, नेमिचन्द्र आदि ने भी उन्हीं का अनुकरण किया। यही नहीं। विक्रम से पूर्व तीसरी शताब्दि में भद्रबाहु स्वामीके नायकत्व में जो दिगम्बर संघ कर्नाटक प्रान्त में आया था उसने धारे २ दक्षिण भारत में जैनधर्म का खूब प्रचार किया। इस धर्म प्रचार के लिये उन्होंने अनेक साधनों का अवलम्बन किया जिनमें भाषा-सम्बन्धी भी एक साधन था। हाल में ईसाई धर्म के प्रचारकों ने बाइबिल के अनुवाद के लिये सैकड़ों भाषाओं को पहलीबार ही लिपि-बद्ध किया है। प्राचीन जैन गुरुओं से यह साधन छुपा नहीं था। उन्होंने कर्नाटकी और तामिल भाषाओं में ग्रंथ लिखकर इन भाषाओं को साहित्यिक रूप दिया। विक्रम की तेरहवीं शताब्दि तक इन दोनों भाषाओं के साहित्य की बागडोर सर्वथा जैन लेखकों के हाथ में रही। विक्रम की छठवीं शताब्दि से लगाकर तेरहवीं शताब्दि तक जो न्याय व पौराणिक ग्रंथ रचे गये वे अधिकांश संस्कृत में हैं। इसका कारण यह है कि इस काल में जैन आचार्यों को धर्म रक्षा के लिये भिन्न २ स्थानों व राज सभाओं में ब्राह्मण और बौद्ध दार्शनिकों के साथ वाद-विवाद करना पड़ा था। समन्तभद्राचार्य ने पटना और काशीसे लगा कर काञ्ची तक व ढाका से मालवा और सिन्ध तक भ्रमण कर अनेक पर-मत-वादियों को परास्त किया था। इसी प्रकार अकलङ्कदेव, प्रभाचन्द्र, विद्यानन्द आदि आचार्यों के भी बौद्ध और हिन्दू नैयायिक से शास्त्रार्थों की कथाएं जैन साहित्य में पाई जाती हैं। इन देश व्यापी, शिक्षित समाज के सन्मुखहोने वाले शास्त्रार्थों के लिये जैनाचार्यों को संस्कृत भाषा का अवलम्बन लेना पड़ा, और उस में भी उन्होंने अपना अपूर्व पाण्डित्य प्रकट किया, जिस के प्रमाण-स्वरूप उनकी जैन-न्याय पर अनेक कृतियां विद्यमान हैं। इस का यह तात्पर्य नहीं है कि संस्कृत का अध्ययन जैनाचार्यों के लिये इस समय कोई नई बात थी। शाकटायन व्याकरण, और जैनेन्द्र व्याकरण संस्कृत जैनसाहित्य की उत्तम और प्राचीन सम्पत्ति हैं। विक्रम की पहली शताब्दि में उमास्वामि आचार्यने तत्त्वार्थाधिगम सूत्र की रचना संस्कृत सूत्रों में की, जिसमें उन्होंने ब्राह्मण सूत्र-कारों से कम पाण्डित्य प्रकट नहीं किया। जैनाचार्य यथावसर देश में प्रचलित सभी भाषाओं का उपयोग करते थे इतिहास से सिद्ध है कि विक्रम की चौथी शताब्दि में, गुप्त वंशी नरेशों के राजत्वकाल में संस्कृत भाषा का देश में कुछ अधिक प्रचार बढ़ा। हिन्दू पुराणों की रचना इसी काल में हुई। धर्म प्रचार में सदा कटिबद्ध और जागृत रहने वाले जैनाचार्यों ने भी संस्कृत की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर संस्कृत में ही अनेक जैन पुराणों की रचना कर डाली। इससे प्रथम जैन-पुराण प्राकृत भाषाओं में रचे जाते थे यह 'पउम चरिय' नामक पुराण से सिद्ध है जो सम्भवतः विक्रम की पहली

शताब्दि का रचा हुआ है। विक्रम की आठवीं शताब्दिके लगभग पश्चिम भारत में अपभ्रंश भाषा सुप्रचलित हुई। उस समय में जैनाचार्यों ने सैकड़ों ग्रंथ इसी भाषा में रचकर आधुनिक भाषाओं जैसे हिन्दी, गुजराती आदि की नीव डाली। क्योंकि यह भाषा अशिक्षित व कम शिक्षित व्यक्तियों में ही प्रचलित थी इस से इस भाषा में केवल पौराणिक, कथात्मक व थोड़े बहुत उपदेशात्मक ग्रंथ ही रचे गये। गहन-दर्शन-सिद्धान्तों को इस भाषा में रखने की आवश्यक्ता नहीं समझी गई। स्वयंम्भू चतुर्मुख, पुष्पदन्त, धवल, श्रीचन्द्र, धनपाल, पद्मकीर्त्ति, कनकामर, सिद्दसेन आदि इस भाषा के महा कवियों के बड़े २ पुराण व कथात्मक ग्रन्थ आज हमारे प्राचीन ग्रन्थ भण्डारों की शोभा बढ़ा रहे हैं। खेद है हम अब तक उनका और कुछ अधिक उपयोग नहीं कर सके। अपभ्रंश भाषा के पश्चात् ही हिन्दी गुजराती व राजस्थानी आदि आजकलकी भाषाओंका काल आया। इन भाषाओं के भी प्रारम्भिक ग्रंथ जैन साहित्य में ही विद्यमान हैं। रास ग्रंथ, जो बहुधा गुजराती भाषा के कहे जाते हैं यथार्थ गुजराती, हिन्दी व राजस्थानी भाषाओं की समान-सम्पति हैं। उनमें जितने गुजराती भाषा के लक्षण हैं उतने हिन्दी के भी हैं। हिन्दी भाषा के काल में बनारसीदास, भूधरदास, दौलतराम आदि ऊँचे दर्जे के कवि हुए हैं।

यहाँ दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्यों और ग्रन्थों का ही उल्लेख किया गया है। श्वेताम्बर सम्प्रदाय की विक्रम की छटवीं शताब्दि तक की सब से बड़ी साहित्यिक सफलता का नमूना उन के संकलित किये हुए ग्यारह श्रुताङ्ग हैं, जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इसके पश्चात उनका कार्यक्षेत्र पश्चिम भारत में ही संकुचित रहा और वहां वे विशेषतः ग्यारह अङ्गों पर भाष्य टीका चूर्णि आदि लिखने में दत्त-चित्त रहे। महावीर स्वामी के नाम से सम्बद्ध ग्यारह श्रुताङ्गों को पाकर उन्होंने कोई छः शताब्दि तक किसी विषय पर कोई स्वतंत्र भारी ग्रंथ लिखनेकी आवश्यक्ता नहीं समझा। विक्रम की बारहवीं और तेरहवीं शताब्दि में गुजरात के सोलंकी राजाओं को श्वेताम्बर आचार्यों ने जैन धर्मावलम्बी बनाया। यह काल वहाँ श्वेताम्बर जैन साहित्य के अतुल वैभव का था। दर्शन, न्याय, पुराण, व्याकरण व कोष के अधिकांश स्वतन्त्र ग्रंथ इसी समय लिखे गये। इस सम्प्रदाय के सब से बड़े आचार्य हेमचन्द्र इसी काल में हुए जिन्हों ने उपर्युक्त सभी विषयों पर स्वतन्त्र ग्रन्थ रच कर श्वेताम्बर साहित्य की भारी सेवा की। इनसे कुछ समय पहले होने वाले सिद्धर्षि आचार्य का नाम उल्लेखनीय हैं। उन्होंने उपमितिभव प्रपञ्च कथा नामक एक रूपक ग्रन्थ लिखा, जो संस्कृत साहित्य की अतुल सम्पत्ति है। इस काल में श्वेताम्बर लेखकों ने अपभ्रंश और विशेष कर रास (प्राचीन हिन्दी गुजराती) साहित्य की रचना में अच्छा भाग लिया।

यह जैन साहित्य के बाह्यरूप का निदर्शन हुआ। इसमें जैन साहित्य की यह विशेषता पाई गई कि वह किसी एक भाषा में सम्बद्ध नहीं रक्खा गया। जैनाचार्यों ने सदैव अपने सिद्धान्तों को शिक्षित व अशिक्षित, पण्डित व अज्ञानी सभी के कानों तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है और

इस हेतु उन्होंने जिस समय व जिस प्रान्त में जिस भाषा को सर्व-सुबोध पाई उस समय उन्होंने अपने साहित्यको उसी भाषा का जामा पहनाया। ब्राह्मण साहित्य भी एक भाषा में नहीं है। वेदों और पुराणों की भाषा में बड़ा अन्तर है पर यह अन्तर और किसी कारण नहीं केवल एक ही भाषा के भिन्न २ काल में भिन्न २ रूपों के कारण हैं। वेदों की भाषा ने ही हजारों वर्षों के जीवन के पश्चात् पुराणों की संस्कृत भाषा का रूप धारण किया है। बौद्धों ने भी अपने धर्म का प्रचार देश की प्रचलित भाषा में किया पर उनका साहित्य केवल पाली भाषा में ही रचा गया है। उसे संस्कृत के अतिरिक्त भारत की अन्य भाषाओं में प्रकट होने का अवसर नहीं मिला।

अब हम जैन-साहित्य की आभ्यन्तर विशेषता पर विचार करेंगे। स्थूल रूप से समस्त जैन साहित्य दो भागों में विभक्त किया जा सका है, एक धार्मिक और दूसरा लौकिक। लौकिक साहित्य से मेरा तात्पर्य उन गून्थों से है जो ऊपर से ही साम्प्रदायिकता व धार्मिक-पक्षपात को लिये हुए नहीं हैं। जैसे काव्य, कथा, व्याकरण, कोष आदि गून्थ। जैन साहित्य के ये दोनों ही भाग खूब पुष्ट हैं। यथार्थ में धार्मिक पक्षपात की दृष्टि से भी इन दोनों भागों में केवल अपेक्षा कृत ही अन्तर है सर्वथा भिन्नता नहीं है। जैनाचार्यों द्वारा रचित काव्यों व कथाओं पर तो जैन धर्म की छाप स्पष्ट ही है क्योंकि इनके नायक आदि जैन धर्मावलम्बी ही होते हैं, पर कोष आदि वैज्ञानिक गून्थ भी इससे रहित नहीं हैं क्योंकि ये भी विशेषकर जैन कवियों की कृतियों को लक्ष्य कर लिखे गये हैं। इन गून्थों के टीकाकारों ने उनकी साम्प्रदायिकता को और भी स्पष्ट कर दिया है, क्योंकि नियमों व रूपों के उदाहरण उन्होंने अधिकतर जैन गून्थों से लिये हैं। पर इस विभाग के कुछ गून्थ ऐसे भी हैं जिनमें लेखक अपनी साम्प्रदायिकता को बहुत कुछ छुपा गये हैं। उदाहरणार्थ, सोमदेव कृत 'नीतिवाक्यामृत' नामक अर्थ-शास्त्र विषयक गून्थ में ऐसी कोई बात नहीं है जिसके कारण हम उसे जल्दी से एक जैन धर्मी की कृति कह सकें। धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत दर्शन, आचार और पुराण विषयक गून्थ हैं। दर्शन गून्थों में मुख्यतः सात तत्त्वों की विवेचना की गई है। प्रथम तत्त्व जीव और दूसरे तत्त्व अजीव के पांच भेद, पुद्गल धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये छह द्रव्य हैं जिनसे सारी सृष्टि बनी हुई है। जीव का अजीव के साथ सम्बन्ध और इस सम्बन्धके कारण उसका संसार भूमण तथा इस सम्बन्ध के टूटने से उसका मोक्ष ये शेष पांच तत्त्वों के विषय हैं। जैन दर्शन में एकान्ताग्रह नहीं है। उसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि पदार्थों में अनेक गुण हैं। भिन्न भिन्न दृष्टि से विचार करने पर पदार्थों के भिन्न २ गुण व स्वरूप सिद्ध होते हैं। इन गून्थों में जिस वैज्ञानिक ढंग से जैन दर्शन की विवेचना की गई है वह वैज्ञानिक ढंग अन्य प्राचीन साहित्यों में कम देखने में आता है।

जैनियों का समस्त आचार अहिंसा के सिद्धांत पर निर्भर है। मुनियों व गृहस्थों के लिये जो नियम इन आचार-ग्रंथों में पाये जाते हैं उनका मूल उद्देश्य है जीवों की हिंसाको यथाशक्ति रोकना। जीवघात से बढ़ कर कोई पाप नहीं है। पर जैन आचार की

विशेषता यह है कि उसमें मनुष्य को उसकी अवस्था व सांसारिक स्थिति के अनुसार ही नियम पालने का उपदेश दिया गया है।

जैन पुराणों का विषय चौबीस तीर्थङ्कर, बारह चक्रवर्ती, नव बलभद्र, नव नारायण व नव प्रतिनारायण इन त्रेशठ पुरुषोत्तमों के चरित्रों का वर्णन करना है। रामचन्द्र अष्टम बलभद्र थे, इसलिये उनका चरित्र जैनियोंके विमलसूरिकृत 'पउमचरिय' व रविषेणाचार्य कृत पद्मपुराण में वर्णित है। कृष्ण नवमे नारायण थे इसलिये उनका व उनके साथ महाभारत युद्धका वर्णन जिनसेनकृत हरिवंशपुराण मे पाया जाता है। शेष पुराणों में सामान्यरूप से उपर्युक्त त्रेशठ पुरुषों ही के चरित्र वर्णन किये गये हैं। ये पुराण प्राकृत, संस्कृत व अपभ्रंश भाषाओं में भिन्न २ महाकवियों द्वारा रचे हुए पाये जाते हैं। ब्राह्मण-पुराणों से इनमें यह विशेषता है कि इनमें प्रायः सभी नायकों के अनेक पूर्वभवों का वर्णन भी दिया गया है। यह पूर्व भव-वर्णन की प्रथा जैनकथा साहित्य में भी कुछ अंश में पाई जाती है। यह पूर्वभव वर्णन जैनदर्शन के कर्म-सिद्धान्त व आत्मा के आवागमन विषयक मत को अच्छी तरह विशद कर देता है।

कला की जैन साहित्य में कमी नहीं है। यहां तक कि कला के जिस भाग की ओर जैन कवियों का झुकाव हुआ उसे उन्होंने उसकी चरम सीमा तक पहुंचाया है। पार्श्वाभ्युदय, पवनदूत, प्राणप्रिय काव्य, आदि समस्या पूर्ति के सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं। द्विसन्धान काव्य की समानता करने वाला राघव पाण्डवीय काव्य ब्राह्मण साहित्य में भी है, पर सप्त संधान और चतुर्विंशतिसंधान काव्य, जिनके एक एक श्लोक के क्रमशः सात और चौबीस अर्थ निकलते हैं, श्लेषालङ्कार के अनुपम और आश्चर्यकारी उदाहरण हैं। हेमचन्द्र का द्व्याश्रय काव्य भट्टि-काव्य से कुछ अधिक विशेषता रखता है। सिद्धर्षि का **उपमितिभव प्रपञ्च कथा** अपने ढंग का एक ही रूपक काव्य है, जिसकी तुलना केवल अंग्रेजी साहित्य में जान व नयन के पिलग्रिम्स प्रोग्रेस (Pilgrims Progress) से की जा सकती है। कवित्व शक्ति में जिन सेनाचार्य के काव्य कालिदास की कृतियों का भले प्रकार सामना करते हैं और सोमदेव आचार्य का गद्य बाण के गद्य से कुछ नीची श्रेणी का नहीं है।

जैन साहित्य में अनेक ग्रंथ ऐसे हैं जिनमें उनके रचयिताओं ने अपने धार्मिक पक्षपात को बिलकुल ही नहीं आने दिया है। तामिल भाषा का सब से प्राचीन और सबसे महत्व "पूर्ण काव्यकुरल" एक जैन कवि, सम्भवतः स्वयं स्वामी कुन्दकुन्दाचार्य को बनाया हुआ है। उसमें ऐसे उदारभावों का समावेश है कि आज भारतवर्ष का प्रायः प्रत्येक ही सम्प्रदाय उसे अपनी ही सम्पत्ति समझ रहा है। ठीक यही हाल नृप अमोघवर्ष कृत 'प्रश्नोत्तर रत्न माला' का है। इसे भी सभी सम्प्रदायों के लोग अपने २ साहित्य में स्थान देने के लिये लालायित हैं। नागचन्द्र कवि का 'पम्प रामायण' कनाड़ी भाषाका सर्वप्रिय काव्य है। भारतीय कथा-साहित्य की उत्पत्ति और रक्षा में जितना जैनियों का हाथ है उतना अन्य किसी का नहीं। संस्कृत भाषा के अद्वितीय रत्न 'पञ्चतन्त्र' की रक्षा एक जैनाचार्य पूर्णभद्र की पञ्चाख्यायिका द्वारा हुई है। वैताल

पंचविंशतिका सिंहासनद्वात्रिंशिका जैसे रोचक कथा-संग्रह जैनियों द्वारा ही हमारे काल तक आ सके हैं। यथार्थ में कथाओं द्वारा जन साधारण में धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार करने की सुप्रणाली जैसी प्रबल जैनियों में रही है वैसी भारत की अन्य सम्प्रदायों में नहीं रही। इसी से जैन साहित्य का कथाभाग बहुत पुष्ट है। हर्टल साहब का मत है कि इनमें की अनेक कथायें प्राचीनकाल में इस देश से चल कर धीरे २ भूमण्डल के अनेक भागों में फैल गई हैं। प्राचीन काल के उदार जैन कवियों ने अपनी साम्प्रदायिकता को साहित्य प्रेम से आगे नहीं रक्खा। दूसरों के साहित्यों में उन्होंने जो कृति विशेष उपयोगी व प्रशंसनीय देखी उसे हृदय से अपनाया। इस उदारता के फल स्वरूप कालिदास, भारवि, बाण आदि महाकवियों के काव्यों पर जैनाचार्यों की टीकायें पाई जाती हैं। मेघदूत के पदों की समस्यापूर्ति अनेक जैन-कवियों ने की है। जैन वैयाकरणों के व्याकरण प्रस्तुत रहने पर भी 'सारस्वत' व्याकरण पर कोई पांच भिन्न २ जैनलेखकों ने टीकायें लिखी हैं। बौद्धों का एक उत्तम न्यायग्रंथ धर्मबिन्दु एक जैनाचार्य मल्लवादी की टीका द्वारा ही भारत में सुरक्षित रह सका है। भासरज्ञ के न्याय सार पर जयसिंह सूरि की टीका बहुत उत्तम है। नरचन्द्रसूरि कृत 'कन्दलि टिप्पणी' अभय तिलक सूरि कृत 'न्यायालङ्कार' टिप्पणी शुभविजय सूरि कृत 'तर्कभाषा टिप्पणी' जैन विद्वानों द्वारा ब्राह्मण ग्रंथों के सत्कार किये जाने के थोड़े से उदाहरण हैं इस के विपरीत यह बात शोचनीय है कि जैनसाहित्य की ओर भारत की अन्य समाजों ने वही उदारता नहीं दिखाई। सिद्धर्षि के उपमितिभवप्रपञ्च कथा जैसे संस्कृत के अद्वितीय ग्रंथ के कभी किसी ब्राह्मण विद्वान द्वारा विशेष रूप से अपनाये जाने का कोई उदाहरण नहीं मिलता। पर सन्तोष इस बात का है कि अब देश की इस पुरानी साम्प्रदायिक संकीर्णता की छूत मिटती जा रही है।

सारांश यह है कि जैन साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण और व्यापक है। उसमें भारतवर्ष की प्रायः मुख्य २ सभी भाषाओं की उत्तम रचनायें हैं। यद्यपि यह साहित्य एक विशेष धर्म-सम्प्रदाय की ही अमूल्य और अक्षय सम्पत्ति है, तथापि उसमें उस लौकिक ज्ञान की कमी नहीं है जो किसीधर्म, जाति व देश की उपेक्षा न कर सम्पूर्ण मानव समाज को उपयोगी और रुचिकर सिद्ध हो सके। यही इस साहित्य की वास्तविक सार्वभौमिकता और लोक-प्रियता है। यह साहित्य छंद ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद,संगीत आदि कला और विज्ञान विषयक ग्रंथों से भी खाली नहीं है। इस छोटे से प्रबन्ध में उन सब ग्रंथों का उल्लेख मात्र करना भी असम्भव था। यहां पर हम केवल जैन साहित्य के धार्मिक और काव्य ग्रंथों का ही सूक्ष्म दिग्दर्शन करा सके हैं। इतना होने पर भी अभी जैन साहित्य का पूरा अन्त नहीं मिला है। प्राचीन शास्त्र भंडारों तथा मन्दिरों में अभी भी सहस्रों ऐसे ग्रंथ रक्षित हैं,जिनकी अन्तर्गतसामग्री का हमें इस समय तक कुछ भी पता नहीं है। जब हम इन अप्रकाशित ग्रंथों से अपने प्रकाशित साहित्य का मिलान करते हैं तो ज्ञात होता है कि जैन साहित्य का बहुत बड़ा भाग अभी अन्धकार में ही पड़ा है। केवल जैन समाज के लिये ही नहीं वरन् समस्त आर्य जाति के लिये वह दिन बड़े सौभाग्य और गौरव का होगा जब यह विविध-ज्ञान-पूर्ण और कला सम्पन्न साहित्य प्रकाशित होकर संसार के ज्ञान कोष में भारी वृद्धि करेगा। इति।

वीर

श्रीमान सिंघई कुंजीलालजी

(मालिक फर्म सिंघई मोतीचंद कुंजीलाल बनारस)

जैन जाति के महान कवि और नाट्यकार

(श्री लमेचू महासभा के सभापति)

Vanijya, Press Kashi

हिन्दी प्राणप्रिय काव्य

(श्री पं० गिरिधर शर्म्माजी नवरत्न, काव्यालङ्कार)

(१)

श्री उग्रसेन तनया (१) गिरिनार वासी,
श्री नेमिनाथ प्रिय (२) से कहने लगी यों।
"हे श्याम सुन्दर वियोग समुद्र बूडूं,
मेरे समान जन को अवलम्ब दीजै ॥"

(२)

बोलीं सखी वन दयार्द्र तभी उसे यों,
प्यारी विषाद कर ना, स्थिर चित्त हो तू।
तेरे लिये प्रथम तो हम ही चलाथी !,
देवाधि देव जिन से विनती करेंगी ॥

(३)

कामाग्रसार तज यों नव यौवना को,
चन्द्रानना रुचिर वेशवती प्रिया को।
बूढे मनुष्य सम यों अति उग्र, कौन,
चाहे युवा अपर संयम धारने को ॥

(४)

होवो प्रसन्न, गहलो मृगलोचना को,
स्वीकार शीघ्र कर लो इस विह्वला को।
है कौन जो इस नये वय में, वियोग,
पाथोधि(३)को निरसके निज बाहुओं से॥

(५)

मानो कहा नरमणे ! नहिं, रोक देगा,
ऐसा कठोर (४) करने, नृप उग्रसेन।
भूपाल है, वह बचा सब को रहा है,
क्या आयगा न अपने शिशु को बचाने ॥

(६)

सत्केलि(५) कोविद पिया प्रमदा जनों के,
होते अकृत्रिम (६) विभूषण चिह्न भावें।
शोभा वसन्त, वन की सब भांति है, सो,
है आम की सुरभि पूरित मञ्जरी से ॥

(७)

हो देह खूब जकड़ी भुज वल्लरी में,
होवें परस्पर सखे मुख चुम्बनादि।
यो सङ्ग हो; विलय होय वियोग दुःख,
सूर्यांशु से सकल ज्यों तम नाश होवे ॥

(८)

सौभाग्य का वह कभी दिन भी उगेगा,
पा के मिलाप हम यो श्रम आवरेंगे
हो वक्ष स्वेद कण संयुत हार (७) शोभी,
मुक्ताफल (८) द्युति लहे प्रिय बिन्दु बिन्दु

(९)

पीयूष हो नयन के प्रिय मित्र ही हो,
आश्चर्य क्या ! लख तुम्हें हिय मोद छावे,
पा मित्र(९)के उदय(१०)को अड़है तथापि,
होवे प्रफुल्लित सरोज सरोवरों में।

(१०)

क्या कान्ति से ! सुकुल से ! वय से ! गुणों से !
तेरे समान यह है, वर (११) तू सुबुद्धे !
पाता प्रमोद निज आश्रित दार को भी-।
जो आत्म तुल्य करता नर है सजा के ॥

(११)

गौरी, बड़ी रुचिर, नाजुक देह वाला,
है, छोड़ के कर रहा व्रत तू इसे क्या !।

१ राजिमती। २ पतिप्रिय। ३ समुद्र। ४ इस प्रकार बिन ब्याही नारी का परित्याग कर तापस बनते हुए। ५ काम कला चतुर। ६ स्वाभाविक। ७ मोतियों के हार से सुहावना। ८ मोती के दाने की छवि। ९ दोस्त–सूरज। १० तरक्की–उगना। ११ विवाह कर के।

सौभाग्य के अमृत को तज के बता तो,
पीना चहे जलधिका जल कौन खारा ? ॥

(१२)

आंखें कहीं हरिण में, मुख चन्द्रमा में,
त्यों तेज सूर्य बिच, चाल गजेन्द्र में है।
हैं व्यस्त(१)अस्त कुछ किन्तु समस्त है ना,
तेरे समान जग में पर रम्य कोई॥

(१३)

हे नाथ ! उत्तम नहीं अवला सताना,
देखो निशापति(२)सता दुखिया(३)स्त्रियोंको।
पावे वियोग निशिका कहला कलङ्की(४),
त्यों हो पड़े दिवस में द्युति हीन फीका॥

(१४)

क्या मैं कहूं निशि सभी रजनीश आ आ,
फैला स्वकीय कर(५)हा मुझको सताता! ।
हो कान्त दूर पर कामिनि कामियों को,
रोके यथेच्छ चलते तब कौन नाथ ? ॥

(१५)

आया विवाह करने मम साथ पूर्व,
मुक्ति प्रिया अब जची हिय बीच तेरे।
यों नाथ चंचल हुआ जब चित्त तेरा,
क्या मन्द रात्रि(६)तब निश्चल ही रहेगा?॥

(१६)

है सेज सुन्दर सजी, मणि मालिका है,
हैं पुष्प, हैं सकल साधन राग(७)रंगा।
एका किनी (८) किस तरा यदुवंश दीप !,
सोऊँ न हा निकट तू जग का(९)प्रकाशा॥

(१७)

फैला स्वकीय कर(१०)को सब ओर मेरे,
क्यों तू खिला न हिय पङ्कज को रहा है ?।
क्यों ना वियोग(११)तम को हरता विभो तू,
हो(१२)सूर्यसे अधिक भी महिमा निधान?॥

(१८)

जो दीखते वदन में परिताप देता,
आनन्द वे हृदय में भरता अनूठा।
तेरा प्रभा मुख अनन्य सुहावना है,
विश्व प्रकाशक, अपूर्व शशाङ्क बिम्ब ॥

(१९)

जो प्रार्थना सुन हरो विरह व्यथा को,
है क्या प्रयोजन वशीकरणादिकों से, ? ।
दावाग्नि कुम्भ जलसे यदि शान्त होवे,
है काम क्या जल भरे फिर बादलों से ? ॥

(२०)

हाँ, एक बार जिनने तुझ को विलोका,
संसारियां किस तरा पर में रमें वे ।
जो रत्न में सुरसिका मति आचरेगी,
सो काच में नहि पड़े, रवि बिम्ब के भी ॥

(२१)

तेरा अनेक भव (१३) का मुझ से सनेह,
तू ही सखे रमण है मम काम रूप ।
विद्याधर प्रवर हो, स्मर, या सुरेश,
कोई रमे न मन मैं पर जन्म में भी ॥

(२२)

ये व्यर्थ पूरब दिशा मुझ से विराज,
जैसा करें रमण ना दूसरी दिशायें॥

---

१ अलग अलग । २ चन्द्र–रात्रि रूपी स्त्री का पति । ३ विरहणी नारियों को । ४दुश्चरित्र कलङ्क वाला । ५ किरण हाथ । ६ सुमेरु ७ राग रंग के । ८अकेला । ९ जगतका प्रकाशक करने वाला सब को दिखलाने वाला । १० हाथ–किरण । ११ अन्धकार–दुःख । १२ होकर । १३ जन्म ।

संतापदायक मुझे शशि है उसे ही,
प्राची(१) विलोक सकलोदय(२) पै बढ़ाती ॥

(२३)

प्यारे बढ़ो स्वपुर (३) को, नरपाल होके,
मोसे विलास रच यौवन रंग माणो (४) ।
हो मुक्ति काम (५) यदि धर्म रखो वहीं पै,
कल्याण का सरस (६) अन्य न मार्ग ही है ॥

(२४)

संसार सार रमणा ऋषि भी बताते,
सो योग्य ये मिल रही तजना इसे क्यों ?।
रे छोड़ छोड़ जड़ता हठ, ज्यों तुझे ही-
ज्ञान स्वरूप शुचि निर्मल सन्त भाषे ॥

(२५)

तू प्राज्ञ, तू सुभग विधायक सत्य का है,
तू न्याय नीतिमय, तू गुणवान, दाता ।
मेरा मनोरथ बने (७) स्वय क्या करूँ मैं,
हे व्यक्त नाथ पुरुषोत्तम (८) भी तुम्हीं हैं ॥

(२६)

पी के समस्त (९) निधिके जल को अगस्त्य,
पा तृप्ति नेक(१०) अब पी सकता नहीं है ।
हाँ क्या करूँ ! विरह सागर डूबती हूँ !,
हे विश्वसागर विशोषि (११) ! नमूँ तुझे मैं ॥

(२७)

हैं धन्य वे युवतियाँ, जिनको दुपूरै में,
आती निशा समय में अथिनाथ निद्रा ।
धिक्कार हाय ! मुझको वह भी न आती,
जो देख मैं मुख (१२) सकूँ तब स्वप्न में तो ॥

(२८)

देखा विवाह छिन में यह हर्षकारी,
तेरा प्रभामय मनोरम आस्य (१३) मैंने ।
यो ही अदृश्य विधि ने करहा दिया है;
जैसे अदृष्ट घन में रवि-बिम्ब होवे ॥

(२९)

सिंहासनस्थित (१४) हुआ उनके जनों को,
तू ठीक मार्ग बतला कर उच्च होके ।
शोभा महा यदुललाम (१५) विभो लहेगा,
मानो सुमेरु शिर पै रवि बिम्ब सोहे ॥

(३०)

हे श्याम ! देह मम रम्य सुवर्णवर्णी (१६),
आश्लेष(१७)पा तब छटा द्विगुणावगी हो ।
मानो झुके सलिल(१८)पूरित अम्बु(१९)से ही,
तेरा सुमेरु गिरि का तट उच्च होवे ॥

(३१)

है व्याध(२०)पंचशर(२१)ताक लिया निशाना,
जाऊँ कहाँ ? किधर ? भीतमृगी, बचा तू ।
तेरा दया रस भरा नय (२२) लोक जाने,
जो तीन लोक परमेश्वरता बताता ॥

(३२)

हूँ बालिका तज उसी दयनीय(२३)को भी,
तूने, रखी पशुदया, मुझको (२४) सताई ।

१पूरब । २ पूर्णोदय-पूरी उन्नति । ३ द्वारिका । ४ उपभोग करो । ५ मुमुक्षु-मोक्ष की आकांक्षा वाला । ६ उत्तम-रसमय ७सिद्ध होवे । ८ पुरुषार्थियोंमें श्रेष्ठ-पराक्रमी-भगवान । ९ समुद्रोंके जल को । १० कुछ भी । ११ संसाररूपी समुद्रके शोषण करने वाले-सब प्रकार के समुद्रों के शोषण करनेवाले ।] १२मुख देख सकना समागम पाना । १३ मुख १४ राजसिंहासन । १५ यादव कुलालङ्कार । १६ सोने के से रङ्गवाली । १७ आलिङ्गन । १८ जलभरे । १९ बादल । २० शिकारी । २१ कामदेव-बाणोंवाला २२ कानून-निति शासन । २३ अत्यन्त दया करने योग्य । २४ मानवी को ।

मेरे—दयालु ! प्रिय को अब लौट(१)दे तू ,
आकाश में तव बजो यश का नगारा ॥

(३३)

मैं स्नान को तब गिरामृत निर्झरी (२) में,
आई किसी मदन (३) झालन की सताई ।
होती न क्यों तब महा रस वृष्टि प्यारे !
या रम्य क्यों न गिरती कुछ वाक्सुधा ही ॥

(३४)

हा ! काम के सरप ने मुझ को डँसा है ,
तेरा समागम सुधौषधि है उसे दे ।
ओ ना, मरी यह, निकाल नहीं सकूँगी,
मैं तो सुधाकर (४) सुशोभित शर्वरी भी ॥

(३५)

मेरे ललाट बिच दुर्लिपि जो लिखी है ,
हे प्राणनाथ ! विधि ने अपने करों से ।
है शक्त कौन मुझ को तज, लौट दे जो ,
मापा स्वभाव परिणाम मयाक्षरों को ॥

(३६)

जो देख सुन्दर सरोवर द्वारिका का,
तेरा रसज्ञ मन भी रति से रँगेगा ।
सब (५) प्रेयसी रति रचे उस ठौर देव,
अच्छे सफ़ेद शुभ पद्म बना रहे हैं ॥

(३७)

जैसी पुरी यदुपते ! तुझ से सुहाई,
वैसी नहीं अब लसे बहुराज (६) से भी ।
जैसा प्रकाश लसता निशि में शशी का ।
वैसा कहां चमकते ग्रह संघ का भी ॥

(३८)

कन्दर्प के विकट बाण लगे, डरी हूं,
हो आर्त—देव ! शरणे तव आगई हूं ।
हूं जानती-विमल कीर्ति न भीति पाते,
तेरे समाश्रित कहीं रिपु को विलोक ॥

(३९)

है सत्य बात पति मैं तुझ को करूँगी,
तेरे समान अथवा प्रिय ! मैं बनूँगी ।
हूं मैं अनन्य (७) मन श्याम(८)पदाद्रिवासी,
है कौन आक्रमण जो उस पे करेगा ! ॥

(४०)

प्यारे ! समुद्र विजयात्मज ! पालना है,
रूठा हुआ रमण भी दुखिया तिया को ।
तेरा वियोग विद्युताग्नि मुझे जलावे,
त्वन्नाम गान जल से वह भी शमेगा ॥

(४१)

कारी मनोज-अहि (९) की, जपते हुए भी,
त्वन्नाम, क्यों विगत चेतन हो रही हूं ।
होते सभी विष विहीन मनुष्य प्यारे !,
त्वन्नाम नाग दमनी जिसके हिये हो ॥

(४२)

होता हृदम्बुज प्रफुल्लित, छोड़ता है,
ग्लानी शरीर फलता मतिकल्प(१०) शाखी ।
होती विपत्ति सब दूर, वियोग दुःख,
होगा न नष्ट तब-सा ! तब गान गावे ॥

(४३)

कल्याण, कीर्ति, कमला विमलाशयित्व,
सौभाग्य, पुत्र, धन धान्य, मनोर्थ सिद्धि ।

१ आप के वियोग से दुख पाते हुए को संयोग का सुख दे । २ झड़-सोता । ३ काम ज्वाला । ४ चंद्र—सुधामयी रात्रि ५ अपनी बहुत ही देवाङ्गनाओं की रति में रचे हुए । ६ अनेक राजा । ७ अन्य में मन न रखने वाली । ८ आपके चरणरूपी अद्रि में रहने वाली दासी । ९ कामरूपी सर्प की काटी हुई—डंसी हुई । १० शाखा का कल्प वृक्ष ।

सारे अपूर्व फल वे जन भाग्य पाते,
त्वत्पाद पङ्कजवनाश्रित हो रहे जो ॥

(४४)

नेमी तभी अनुगता इमर विह्वला से,
बोले; न मोह कर सुन्दरि ! धर्म धार (१)
जिसके सदा स्मरण से जन शुद्ध हो हो,
संसार भाँति तजते शिवधाम पाते ॥

(४५)

तू धर्म आधार नितम्बिनि ! जीव जिससे-
होते प्रकाशमय, ज्यों बक हंस होते ॥
सम्पत्ति पूर्ण सुरराज समान होके—
होते मनुष्य मकरध्वज तुल्य रूपी ॥

(४६)

त्यों ही परत्र (२) अति रम्य विशाल अच्छे,
प्रासाद में बस विलास अपूर्व पाते ॥
कल्याण भाजन बने गज गामिनि, औ—
वे बन्ध हीन बन के जन सिद्धि पाते ॥

(४७)

है बन्धु बन्धन समान, अनर्थ अर्थ,
हा ! हा ! सभी विषय हैं विष से विमूढ़े !
यों सोच धर्म गहले, कर देर ना तू,
तेरा करें स्तवन त्यों मतिमान सारे ॥

(४८)

यों भर्तृवाक्य सुन वो मन बोध लाई,
दीक्षा गही तप किया, सुर सद्म पाई ।
या सिद्धि नेमि फिर सिद्ध हुए उन्हीं के-
श्रीमान तुङ्ग पद में विमला समाई ॥

---

१ धर्म के। २ परलोक में।

जैन सिद्धान्त में सत्यज्ञान की कुञ्जी व उसका प्रचार

(लेखक—जै० ध० भू०, ध० दि०, ब्र० शीतलप्रसाद जी)

जगत में पदार्थों का स्वरूप जो एक बुद्धिमान् के अनुभव में आएगा वह यथार्थ रूप से जैनसिद्धान्त में ही मिलता है। इसलिये ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं है कि जैन सिद्धान्त में सत्यज्ञान की कुञ्जी है। इसी बात के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

(१) वस्तु के नित्य अनित्य दोनों रूप एक समय में है, यही पदार्थ का स्वरूप है-इसी को Science विज्ञान ने भी माना है। इस विश्व में न तो कोई नूतन द्रव्य पैदा होता है न पुरातन द्रव्य का नाश होता है केवल अवस्थाएं बदला करती हैं। जब हम गेहूं से रोटी बनाते हैं रोटी में वे ही परमाणु व गुण हैं जो गेहूं में थे, परन्तु गेहूं की अवस्था बदल कर रोटी की अवस्था होगई है।

अवस्था का बदलना अनित्य स्वभाव है। वस्तु के वस्तुपने का और गुणों का हर एक अवस्था में बने रहना मित्य स्वभाव है। ये दोनों स्वभाव द्रव्य में हर एक समय पाए जाते हैं। इसी लिये हर एक द्रव्य मात्र नित्य ही नहीं है न मात्र अनित्य है किन्तु नित्यानित्यमयी उभय रूप है। इसी लिये विक्रम सम्वत ८१ में प्रसिद्ध हुए श्री उमास्वामी महाराज ने अपने तत्वार्थसूत्र में द्रव्य का लक्षण किया है-

"सद् द्रव्यलक्षणं॥२९॥ उत्पादव्ययध्रौव्य-युक्तं सत् ॥ ३० ॥ अ० ५ ॥

इसका भाव यह है कि द्रव्य वही है जो सदा से विद्यमान रहा करे तथा सदा रहने वाला वही है जिसमें हर समय उत्पत्ति, विनाश तथा स्थिरपना पाया जावे। भाव यह है कि पुरानी अवस्था का नाश, नूतन अवस्था का जन्म व द्रव्य के गुणों का व उस द्रव्य का मूल में बना रहना यह ध्रौव्य है। उत्पाद व्यय अनित्यपने को और ध्रौव्य नित्यपने को बोध कराने वाला है। सांख्य नैयायिक आदि द्रव्य को नित्य तथा बौद्ध द्रव्य को अनित्य ही मानते हैं, ऐसा वस्तु का स्वभाव नहीं है। वस्तु तो उभय रूप है। यही सत्य है जिस को जैन सिद्धान्त ही ने स्पष्टपने प्रगट किया है। हिन्दू लोगों में यह कहावत प्रसिद्ध है कि भगवान एकरूप होकर भी तीनरूप हैं, यही सृष्टि पैदा करने से ब्रह्मा है, सृष्टि को पालन करने से विष्णु है व सृष्टि का नाश करने से रुद्र है। यह बात बुद्धि में जमती नहीं। परन्तु जब जैन सिद्धान्त की कुञ्जी से इसको खोलते हैं तो झट समझ में आजाती है कि हां, एक आत्मा अपने स्वभाव से भगवान स्वरूप है। यह अपनी कर्म-बंधन की सृष्टि को आप पैदा करता है अर्थात् अपने भावों के अनुरूप स्वयं पाप या पुण्य जड़ (material) कर्म वर्गणाओं (molecules) को बांधता है तथा उस बंधी हुई सृष्टि की कुछ काल तक रक्षा करता है अर्थात् वे कर्म अपनी स्थिति के प्रमाण बंधे रहते हैं। फिर वही उनके फल को भोगते हुए उनको नाश करता है अथवा आत्मध्यानादि धर्म के साधनों से स्वयं ही उस सर्व कर्मबंधरूपी सृष्टि का नाश कर साक्षात् भगवान परमात्मा रूप होजाता है।

इसी सत्यज्ञान ने यह स्पष्ट सुझा दिया है कि यह जगत् (Universe) जो मात्र एक समुदाय द्रव्यों का है अनादि अनन्त है, जैसे द्रव्य सदा से विद्यमान हैं वैसे उनका समूहरूप यह जगत सदा से विद्यमान है। इसलिये जगत् नित्य है—अकृत्रिम है, क्योंकि नित्य पदार्थ का कोई करने वाला अनावश्यक है। क्योंकि द्रव्य हर क्षण में उत्पाद व्यय करते हैं—अवस्था बदलती हैं--इसलिये अनित्य है। तब उनका समुदाय रूप यह जगत् भी अवस्थाओं के परिवर्त्तन की अपेक्षा अनित्य है। इस सृष्टि का प्रलय व उत्पाद हर समय होता रहता है तो भी इसका कभी अभाव नहीं होता—यही सत्यज्ञान है।

(२) परमात्मा, ईश्वर परब्रह्म शुद्ध या कर्म बन्ध रहित आत्मा को कहते हैं जो पूर्ण ज्ञान, पूर्ण दर्शन, पूर्ण सुख, पूर्ण वीर्य, पूर्ण चारित्र आदि गुणों का समुदाय है जिसमें रागद्वेष, इच्छा, प्रयत्न, विकल्प, विकार, असंतोष, अकृतकृत्यपना, जन्म, मरण, खेद, क्षुधा, तृषा, शरीर सम्बन्ध आदि कोई दोष न हो। जो नित्य आत्मीक आनन्द का विलास कर रहा है। जो जगत के प्रपंच का मात्र ज्ञाता दृष्टा हो। उसका कर्त्ता हर्त्ता न हो। जैसा श्री अमृत चन्द्र आचार्य ने श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय ग्रन्थ में कहा है–

नित्यमपि निरुपलेपः
स्वरूप समवस्थितो निरुपघातः।
गगनमिव परमपुरुषः
परम पदे स्फुरति विशदतमः॥२२३॥
कृतकृत्यःपरमपदे परमात्मा
सकल विषय विषयात्मा।
परमानंद निमग्नो
ज्ञानमयो नन्दति सदैव॥२२४

भावार्थ—जो सदा ही कर्म लेप रहित है,स्वभाव में ठहरा हुआ है, किसी के द्वारा घात से रहित है, आकाश के समान अकेला है, ऐसा परमात्मा जो अत्यन्त स्वच्छ है अपने ही उत्कृष्ट पद में प्रकाशमान है। यह परमात्मा अपने परम पद में कृतकृत्य है, सर्व विषयों का जानने वाला है, परमानन्द में डूबे रहता है ज्ञानमई है व सदा ही प्रफुल्लित है।

ईश्वर का यह स्वभाव जैन सिद्धान्त बताता है। देखना यह है कि यदि ऐसे ईश्वर को सृष्टिका कर्ता, सृष्टि का शासक, या प्राणियों का न्याय करने वाला और उनको दुःख सुख का देने वाला माना जाये तो क्या क्या दोष आजायेंगे। एक विचारशील व्यक्ति समझ सक्ता है कि विना इच्छा के कोई चेतन पदार्थ किसी विकारी काम को नहीं कर सक्ता है। सृष्टि विकारमयी है इसको करते हुए इच्छावान, व अकृतकृत्य ईश्वर ठहर जाता है, शासक होते हुए विकल्पवान ठहर जाता है परमानन्द में हर समय निमग्न नहीं रह सक्ता है। दुःख सुख देते हुए रागद्वेषवान व प्रपंच ग्रसित ठहर जाता है वीतराग निर्विकल्प नहीं रह सक्ता है। इसी लिये जैन सिद्धान्त ईश्वर में कर्ता हर्ता व फलदाता पना नहीं कहता है। वह एक ऐसा पवित्र आत्मा पदार्थ है जिसमें क्षोभ या विकार हो ही नहीं सक्ता। वह मात्र एक आदर्श का नमूना है कि हम भी वैसा होने का पुरुषार्थ करके वैसे ही हो जायें। हमारी भक्ति करना उन से कुछ मांगना नहीं है न उनको प्रसन्न करना है। केवल हमारी भक्ति उनके पवित्र गुणों में प्रेम बढ़ाती है व हमें उत्साहित करती है कि हम भी वैसी ही निश्चलता आत्मध्यान में प्राप्त करें जिस से सर्व बंध से मुक्त हो हर तरह से परमात्मा के सदृश परमात्मा हो जावें तौ भी अपनी सत्ता को भिन्न २ बनाए रहें। इसीलिये जैन सिद्धान्त कहता है कि सर्व ही मुक्त आत्मा व परमात्मा हैं और वे अनन्त हैं। यही सत्य ज्ञान है। निश्चय से परमात्मा पना हर एक संसारी आत्मा में स्वभाव से विद्यमान है मात्र पाप पुण्य मई कर्मों के आवरण से उसी तरह अप्रगट है जैसे पानी की स्वच्छता मल के सम्बन्ध से अप्रगट रहती है। मल हटते ही जैसे पानी स्वच्छ होजाता है वैसे कर्म बन्ध हटते ही आत्मा परमात्मा हो जाता है। एक योगी जब एकान्त वास करता है जगत के प्रपञ्च छोड़ता है तब कुछ परमानन्द का लेश पाता है तब सदा ही परमानन्द में मग्न रहने वाले परमात्मा में रागद्वेषादि के प्रपंच का अवकाश कहां से हो सक्ता है।

(३) यद्यपि अन्य मतोंके शास्त्रोंमें यह कथन आता है कि आत्मा कर्मों को बांधता है व कर्म बंध का छूटना मुक्ति पाना है परन्तु कर्म क्या वस्तु है कैसे बंधते हैं कैसे फल देते हैं कैसे छूटते हैं इस का भेद किसी भी अजैन ग्रन्थ में अबतक नहीं पाया गया जैन सिद्धान्त में इस विषय को पद पद पर वर्णन किया है इसका सामान्य कथन तत्वार्थ सूत्रके आठवें अध्यायमें है जिस का थोड़ा विस्तार सर्वार्थसिद्धि तत्त्वार्थ राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक, में है परंतु बहुत विस्तार से कथन श्री गोम्मटसार कर्म्म कांड में है व उससे भी अधिक व सूक्ष्म श्री धवलादि ग्रंथों में है जो अभी तक अप्रगट हैं—इन सिद्धान्तों में बताया है कि जैसे बिजली के स्कंध (तैजस वर्गणाएं या Electric molecules) होते हैं व वे जगत व्यापी हैं वैसे कर्मों के स्कंध (कार्माण

वर्गणा या Karmic molecules, होते हैं व ये जगत व्यापी हैं।

जब कभी आत्माके भीतर हरकत पैदा होतीहै वे आत्मा के भीतर योग शक्ति attractive power के द्वारा आकृष्ट हो जाते हैं और जिस प्रकार की हरकत होती है उसी प्रकार से कम या अधिक प्रमाण में कर्म स्कंध आकर्षित होते हैं -तथा जिस आत्मा में जितना रागद्वेष या कषाय होता है उस ही प्रमाण में तीव्र या मंद फल देने की शक्ति को रखकर कम या अधिक काल के लिये आत्मा के साथ चिपट जाते हैं-या बंध जाते हैं ये ही कर्म स्कंध पकते रहकर अपना असर करते हुए झड़ते जाते हैं-बस यही सुख दुःख का भोगना है-जैसे स्थूल शरीर में हम हर समय पवन लेते, स्वयं पानी पीते स्वयं भोजन खाते-जो कुछ स्थूल शरीर में जाता वह उसी में लय होता हुआ आप ही रस रुधिर अस्थि रूप परिणमता हुआ शरीर के अंग उपांगों को पुष्टि देने रूपफल को प्रगट करता व आप ही उसका मल अनेक मार्गों से निकल जाता इस ही तरह सूक्ष्म शरीर में कर्मस्कंध स्वयं जीव के भावों के निमित्त से आते, बंधते, वे स्वयं फल प्रगट करते व वे स्वयं झड़ जाते हैं। कर्मके बंधने व उसका फल भोग करने में किसी तीसरे ईश्वर या उस के किसी कर्मचारी की आवश्यका नहीं है।

श्री पुरुषार्थ सि० में कहा है-

जीवकृतं परिणामं निमित्त
मात्रं प्रपद्य पुनरन्ये ।
स्वयमेव परिणमंतेऽत्र
पुद्गलाः कर्म भावेन ॥ ११
परिणममाणस्य चितश्चि-
दात्मकैः स्वयमपि स्वकैर्भावैः ।
भवतिहि निमित्त मात्रं
पौद्गलिकं कर्म तस्यापि ॥ १२

भावार्थ जीव के किये हुए भावों का निमित्त पाकर इस जगत में भरे अन्य कर्म पुद्गल Karmic matter स्वयं ही कर्म रूप से बंध जाते हैं और जब जीव में चैतन्यमई रागद्वेषरूप भाव होते हैं तब उन के लिये उसी के बांधे हुए पूर्व पुद्गल कर्म निमित्त हो जाते हैं।

मूल कर्मों के स्वभाव आठ हैं भेद १४८ हैं व असंख्यात हैं।

(१) ज्ञानावर्णीय कर्म-जो ज्ञान को ढकते

(२) दर्शनावर्णीय कर्म जो दर्शन को ढकते

(३) मोहनीय कर्म-जो श्रद्धा व चारित्र को बिगाड़ते

(४) अंतराय कर्म-जो आत्मवीर्य को ढकते

(५) वेदनीय कर्म जो सुख दुःख का सामान एकत्र करते

(६) आयुकर्म जो किसी शरीर में कैद रखते

(७) नाम कर्म जो शरीर की रचना बनाते

(८) गोत्र कर्म-जो ऊँच नीच वंश में जन्म कराते ।

यह ही मनोरंजक कथन कर्मबंध का जैन सिद्धांत ने बता दिया है-impurity अशुद्धता क्या है इस ज्ञान की कुँजी को खोलने वाला जैन सिद्धांत है।

(४) स्वावलम्बन के बिना उन्नति नहीं होती है-जैन सिद्धान्त कहता है कि जैसे तुमही अपने ही अशुद्ध भावों से पाप पुण्य कर्म बांध लेते हो वैसे तुमही अपने शुद्ध भावों से उन कर्मों को स्वयं दूर

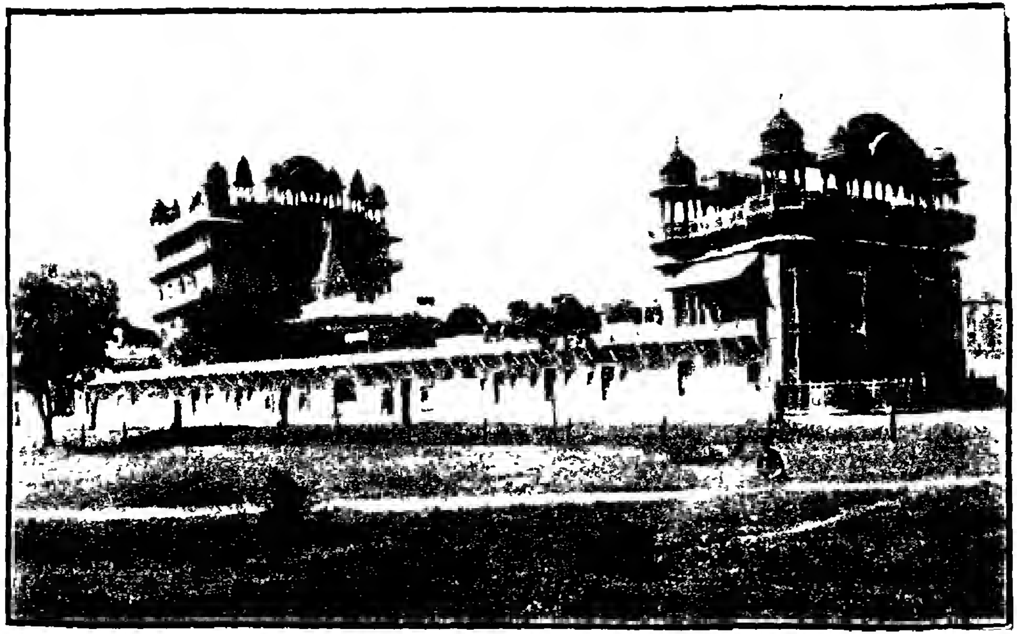

श्री जैन नसियाजी, अजमेर।

कर सकते हो, मुक्ति को कोई दे ले नहीं सकता है, जहाँ तक दूसरे की भक्ति है वहाँ तक रागभाव होने के कारण से कर्म का बंध है । जहाँ वैराग्य व आत्मज्ञान है तथा आत्मध्यान की अग्नि का यज्ञ है वहीं कर्मों का दहन है व आत्मा की निर्मलता है इसीलिये पुरु० में लिखा है-

विपरीताभिनिवेशं निरस्य
सम्यग्व्यवस्य निजतत्त्वम् ।
यत्तस्मादविचलनम् सएव
पुरुषार्थ सिद्ध्युपायोऽयं ॥१५

भावार्थ-जो विपरीत ज्ञानको हटाकर भले प्रकार अपने आत्मा के तत्त्व को समझ जाता है और फिर उसी में लय होकर हटना नहीं यही मोक्ष पुरुषार्थ का साधन कर लेना है । अपने ही उद्यम से मुक्ति होती है । जैन सिद्धान्त इसी बात को स्पष्टपने वर्णन करता है ।

(५) जैन सिद्धान्त ने ही अहिंसा का पूर्ण वर्णन किया है । वीतराग होना भाव अहिंसा है-- एकेन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय तक के जीवों का घात न करना द्रव्य अहिंसा है ।

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति इनमें जो सजीवपना है वही एकेन्द्रिय जीवपना है । अर्थात् सजीव दशा में ये स्पर्श इन्द्रिय के द्वारा जानते हैं व सुख दुःख का अनुभव करते हैं । ये भी रक्षा के पात्र हैं । पशु पक्षी क्षुद्रकीट तो रक्षा के योग्य हैं ही । इतना सूक्ष्म विवेचन करके इस अहिंसा के अमल कराने का मार्ग मुख्यता से परिग्रह रहित निर्ग्रन्थ पद बताया है जहां साधु नग्न रह कर सम्हाल कर चलता बैठता व आत्मध्यान में लवलीन रहता है गौणता से गृहस्थ पद को बताया है जहां पदवी के योग्य यथाशक्ति अहिंसा का पालन बताया है । निरर्थक संकल्पी हिंसा का त्याग बताकर क्षत्री, वैश्य, शूद्रादि के असि, मसि, कृषि वाणिज्य शिल्पादि आवश्यक कर्मों में जो प्रारंभी हिंसा होती है उसका यदि त्याग न हो सके तो उस में न्याय पूर्वक वर्तन बताया है । धर्म, शौक, मांसाहार, अतिथिसत्कार आदि के लिये पशु वध करना निरर्थक संकल्पी हिंसा है जिस को गृहस्थ को त्याग करना ही चाहिये । हिंसा के बचाव के लिये जल छान कर पीना, रात्रि को भोजन न करना, आदि बातों का जितना बलिष्ट वर्णन जैन सिद्धान्तमें है अन्यत्र नहीं है-पशु हिंसा न करनेका व मांसाहार न करनेका जितना विस्तृत व दृढ़ उपदेश जैन सिद्धांत में है वैसा हिन्दुओं के भी व बौद्धों के भी शास्त्रों में नहीं है ।

जैन गृहस्थ को बताया है कि वह न्यायसे व्यवहार करे, इसी लिये असत्य न बोले, चोरी न करे, परस्त्री न भोगे, अधिक तृष्णा न करे, गृहस्थको भी धर्म साधन का हेतु मानकर चले-आत्मानंद पर दृष्टि रक्खे, न्याय से जो राज्य या संपत्ति पावे तो भी उस में लिप्त न हो, उस से धर्म साधते हुए धर्म का नाश न करके उन का भोग करे ।

गृहस्थों को जो अपूर्व शिक्षा जैन सिद्धांत ने श्रावकाचारों में दी है वह राजा प्रजा को न्याय मार्गी दयावान, अध्यात्मप्रेमी बनाने वाली है । जैन सिद्धान्त के माहात्म्य अवर्णनीय हैं । उदाहरण मात्र कुछ दिखाकर हमारी यही भावना है कि जो जन्म से जैनी हैं वे इस सिद्धांत को पढ़ कर सच्चे जैनी जैन धर्म के आचरण करने वाले बनें तथा जो जैनी नहीं हैं वे ज्ञान प्राप्ति की भावना से

जैन सिद्धांत को पढ़ें और मनन करते हुए विचारें यदि महत्व प्रगट दीखे तो जैन मत को सहर्ष अंगीकार करें। जो अजैन जैनी होना चाहें उन के लिये जैन समाज को चाहिये कि एक जैन दीक्षा प्रदायिनी सभा Jain Conversion Comittee. स्थापित करें। यह सभा जैनी बनाकर उन का आचार व्यवहार पक्का देखकर वे जैसी आजीविका करते हों व उनका जैसा चाल चलन हो उसे ध्यान में लेकर उनका वर्ण स्थापित करें जिस क्षत्री; वैश्य, ब्राह्मण या शूद्र वर्ण में वे जा सकें हों उन में उनको भरती करलें फिर पहले के उपवर्ण के जैनियों के द्वारा उन नवीन वर्णधारी जैनियों के साथ समानताका व्यवहार हो अर्थात् वे सर्व खान पान बेटी व्यवहार सम्बन्ध पूजा पाठ जप तप साथ २ कर सकें ऐसा ही प्राचीन आचार्यों ने किया है।

परिषद् के कार्यकर्ताओं के लिये जैन धर्म के प्रचार का यही मार्ग है बिना कोई शंका या भय से इस मार्ग पर आरूढ़ हो परिषद् के कार्य कर्ताओं को उचित है कि लाखों भूले भटके हुए मानवों को तीर्थङ्करों का सच्चा मार्ग बताकर उनको शुद्धकर के अपने समान बनालें जब अजैन जैन धर्मी हो जिनेन्द्र भक्त होगया फिर उससे घृणा तुच्छभाव रखना जैन सिद्धान्त की आज्ञा के विरुद्ध वात्सल्य अंग का घात करना है।

हिन्दू संगठन।

(ले०—श्रीमान् चम्पतराय जैन बार-एट-ला)

इस समय हिन्दू संगठन का प्रश्न जनता के समक्ष अति वेग से उपस्थित है। मेरे ख्याल में ऐसे संगठनकी बड़ी आवश्यकता है। इससे लाभ की बहुत कुछ आशा हो सकती है। दुर्भाग्यवश इसके साथ दो एक बात ऐसी भी हैं जो संतोषजनक नहीं हैं और जिनसे अशान्ति फैलने की संभावना है।

एक बात तो यह है कि इसका नाम हिन्दू धर्म के आश्रय से हिन्दू संगठन रक्खा गया है, यद्यपि इस में सम्मिलित होने के लिये जैनों, बौद्धों और सिक्खों को भी निमंत्रित किया है। इससे मनुष्य के हृदय में प्रथम विचार यह उत्पन्न होता है कि इसमें सम्मिलित होना मानो अपनी धार्मिक स्वतंत्रताको खोना है। चुनांचे इस संगठनकी एक बैठक में कुछ महाशयों ने स्पष्ट शब्दों में मुझ से कह दिया कि जैनी तो हिन्दुओं की ही शाख हैं उनके प्रथक् संबोधित करने की कोई आवश्यका नहीं है। इस पर मुझे माननीय मालवीय जी की सेवा में एक पत्र भी लिखना पड़ा था। हम जैनियों का विश्वास इस उपरोक्त हिन्दू विश्वास के विपरीत है। हमारा विश्वास है कि हमारा धर्म अनादि और इसलिये सब से प्राचीन है। मैं बौद्ध सिक्खों की बाबत नहीं कह सकता कि वह अपने आप को इस हिन्दू शब्द में गर्भित मानते हैं या नहीं। परन्तु जैनी इस पोज़ीशन (पदवी) को

किसी दशा में स्वीकार करने के लिये प्रस्तुत नहीं हैं। यद्यपि हम जैनी हिन्दू संगठन से हार्दिक सहानुभूति रखते हैं। मुझे श्री धर्मदिवाकर पूज्य ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद द्वारा एक मर्तबा यह भी मालूम हुआ था कि इस हिन्दूसंगठन की एक बैठक में (कलकत्ते) एक तसवीर भी ऐसी बनाई या दिखाई गई थी कि जिसमें बहुदेवों के समूह में श्री पूज्य भगवान अर्हन्तदेव (भगवान महावीर) का चित्र भी दिखाया था परन्तु उन सब का अध्यक्ष विष्णु भगवान को नियत किया था। यह भी जैनों को स्वाहृत नहीं है। हमारे विचार में श्री अर्हन्त देवकी समता का कोई अन्य देव नहीं है। यदि हम श्रीअर्हन्त देव भगवान की प्रतिमा को अध्यक्षता के सिंहासन पर विराजमान कर हिन्दू देव प्रतिमाओं को उनके आधीन दिखायें तो सम्भव है कि हमारे हिन्दू भाई हम से सहमत न होंगे। अतः यहां वही मसला है कि:—

आंचः बर खुद मपसन्दी बर दीगरां हम मपसन्द्

अर्थात्–जो अपने लिये पसन्द नहीं करता है दूसरों के लिये भी पसन्द न कर।

यदि कोई कहे कि आओ इस बात का निर्णय करलें कि कौन सत्य है तो एकदम मित्रता और ऐक्यता के स्थान पर वाद-विवाद प्रारम्भ हो जायगा। हमारी हार्दिक भावना है कि हिन्दू संगठन सफल हो और हम उसको सफल बनाने में भाग लें। परन्तु हम अपने हिन्दू मित्रों से प्रार्थी हैं कि इस संगठन को केवल शोशल संगठन रक्खें धार्मिक संगठन का जामा न पहिनायें। धार्मिक कार्रवाई जो कुछ उनको करनी हो वह सब हिन्दू महासभा इत्यादि द्वारा ही करें। जैसे हम अपनी धार्मिक कार्रवाई या दिगंबर जैन परिषद् दिगम्बर जैन महासभा, श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेन्स इत्यादि के द्वारा करते हैं। शोशल संगठनमें हिन्दू, बौद्ध, सिक्खों का और हमारा साथ है। प्रत्येक धर्मोंकी धार्मिक सभायें पृथक् पृथक् हैं। इसी प्रकार से एक दूसरे की सहायता सम्भव है, नहीं तो हिन्दू संगठन केवल हिन्दू धर्म के अनुयाइयों का हो सकता है। इसी कारण से इस का नाम भी हिन्दू संगठन के बजाय प्राचीन भारतीय सभ्यता संगठन अथवा अन्य इसी आशय का होना चाहिये। स्वयं हिन्दुओं ने इसका नाम आर्यसंगठन रखना पसन्द न किया क्योंकि इससे उनको भय था कि कहीं यह आर्यसमाजियों का संगठन न समझा जाय।

वास्तव में यह बड़े हर्ष की बात है कि भारत वर्ष में अब ऐसे संगठनों के विचार पारस्परिक ऐक्यता के लिये उत्पन्न होने लगे हैं। मैं अपने हिंदू भाइयों को निश्चय दिलाता हूं कि हमारे लिये उनसे अधिक दूसरी कौम प्रिय नहीं हो सकती है। क्यों कि एक ऐसे प्राचीन समय से जिसका अनुमान साधारण समझ के लिए असम्भव सा होगा दोनों ही कौमें इसदेश में निवास करती आई हैं। सभ्यता जीवनचर्य्या बोलचाल, भाषा, त्यौहार और एक हदतक साधारण धार्मिक नियम सबएक ही रहे हैं। हिंदू और जैनोंमें परस्पर विवाह शादियां भी होती रही हैं। आपत्तिकाल में भी हमारा उनका साथ नहीं छूटा है। फिर हमारा उनसे और उनका हमसे बढ़कर कौन मित्र हो सकता है। यही नहीं वरन हम जैनों की तो हार्दिक इच्छा यही है कि भारतवर्ष की सब कौमें एक दूसरे से मिल कर ही रहा करें। क्या मुसलमान हमारे मित्र नहीं

हैं ? क्या ईसाई हमारे शत्रु हैं ? कदापि नहीं ! हम सब के मित्र बनना और सब को अपना मित्र बनाना चाहते हैं। परन्तु न हम किसी की स्वतन्त्रता का घात करना चाहते हैं और न इस बात को स्वीकार कर सके हैं कि कोई हमारी स्वतन्त्रता पर आघात करे । लेकिन मुझे खेदयुक्त कहना पड़ता है कि मुसलमान भाई कई दफा हाल में ही हमारे मन्दिरों का अपमान करने में नहीं रुके । जबतक मुसलमान लोग हिन्दू व जैन मन्दिरों व ठाकुरद्वारों का अपमान करने से घृणा नहीं करेंगे तबतक हिंदू, जैनों तथा मुसलमानों का हार्दिक मेल कैसे सम्भव है ! मेरे ख्याल में दिल्ली की मिलाप कान्फ्रेंस (Unity Conference) कदापि अपने मंतव्य में सफलीभूत नहीं हो सकेगी जबतक कि मुसलमानों के अगुवा अपनी कौम के गुण्डों व नीचों को, जो इस प्रकार के निन्दित कृत्यों में अपनी बहादुरी और अपने दीन का महत्व समझते हैं और लूट मार से लाभ उठाते है अपने वश में न कर लेंगे। केवल ज़बानी जमा खर्च से काम नहीं चलेगा। बातें तो हर शख्स हमेशा बना सका है लेकिन, बुद्धिमानों का कथन है कि एक दो अपराधों तक संशय रहता है कि आया घटना आकस्मिक तो नहीं है ? परन्तु तीसरे अपराध के पश्चात् फिर कोई काल की गुञ्जाइश नहीं रहती और फिर आदत साबित हो जाती है। मेरे ख्याल में जबतक यह नीच वृत्ति नहीं छूटती कि थोड़ी सी बात पर पूज्य स्थानों में घुस पड़ना और पूज्य वस्तुओं का अपमान कर डालना, उस समय तक अमन व आमान की आशा और स्वराज्य प्राप्ति के विचार निरर्थक हैं।

एक दिन मैं भी मिलाप कान्फ्रेंस में मौजूद था, यद्यपि मैं सब्जेक्ट कमेटी में न था। मेरे ख्याल में कोई भी जैनी सब्जेक्ट कमेटी में न था, अनुमानतः यह इसी कारण से था कि जैनी तो हिंदुओं में गर्भित हो हैं । हालांकि सिक्ख, पारसी व आर्यसमाजी के नुमाइन्दे सब्जेक्ट कमेटी में लिए गए थे। इन में से आर्यसमाजी तो जैनों की अपेक्षा कम हिंदू नहीं हो सकते हैं। और पारसियों व थ्युसोफ़िकल सोसाइटी के मेम्बरों की तादाद भी मनुष्य गणना के लिहाज से जैनों की अपेक्षा बहुत कम है। तब भी हमको अपने हिंदू मित्रों और कौम के नेताओं से इस प्रकार के चुनाव की बाबत शिकायत नहीं करनी चाहिये। वे स्वयं ही औरों के अन्यायों से पीड़ित हैं आप न्याययुक्त कैसे हो सकते हैं ? एक कष्टप्रद बात मुझे यहां और कहनी है और वह यह है कि इस मिलाप कान्फ्रेंस में एक कमेटी १५ आदमियों की बनी है जिस में जैनी एक भी नहीं है। इसके बारे में भी दिगम्बर जैन परिषद् ने एक प्रस्ताव भी इटावा के नैमित्तिक अधिवेशन में पास किया था जिसकी एक प्रति परिषद् के महामन्त्री जी ने "महात्मा जी" के पास भेजी थी। परन्तु महात्मा जी से अभी तक उसका उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। यदि इस बोर्ड में कोई जैनी न होगा तो जैनियों के मामले के संबन्ध में कौन सलाह, मशवरे में सहायता देगा और कौन इनके मामलों को पेश करेगा ?

कुछ हिंदू भाई तो श्रीअर्हन्त देवजी की प्रतिमा को देखना अनुचित समझते हैं । कोई कोई तो जैनियों की रथयात्रा निकलने के समय भी भगवान के रथ की ओर से अपना मुंह फेर लेते हैं ।

कोई अपनी दुकानें बन्द करके चले जाते हैं। दो वर्ष हुये ग्वालियर नरेश के राज्य में इसका घोर प्रयत्न किया गया कि जैनियों का रथ न निकले। जब उनका प्रयत्न निष्फल हुआ तो उन्होंने बलवा कर दिया। वहां के छोटे अधिकारियों ने भी हठ धर्मी से हिन्दुओं का ही पक्षपात किया और गोली तक चल गई। अन्ततः श्रीमान् महाराज महोदय ने उनको कठोर दण्ड भी न्याय युक्त दिये। परन्तु दंगा तो हो ही गया। इसी प्रकार से धौलपुर में झगड़ा फैला हुआ है। वहां के हिन्दू जैनियों का रथ नहीं निकलने देते हैं। अयोध्या में भी पंडों ने झगड़े फैला रक्खे हैं। भला ऐसी दशा जैनियों को ऐसे आरबिट्रेशन बोर्ड (Arbitration Board) से जिस में हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, इत्यादि तो हों परन्तु जैनी एक भी न हो, क्या आशा हो सकी है? मेरी समझ में नहीं आता कि उसमें जैनी नुमाइन्दों के सम्मिलित होने से क्या हानि होगी? सत्य है कि वर्तमान समय में वाहियात बात कहने या करने पर बड़े २ बुद्धिमान और नेता भी प्रस्तुत नहीं होते हैं।

तनिक इस बात पर भी ध्यान दीजिये कि हमारे हिन्दू मित्र श्री अर्हन्तदेव जी की प्रतिमा के क्यों विरोधी हैं? इसका कारण वे यह बतलाते हैं कि श्री जी नग्न दिगम्बरी स्वरूप धारण किये हुए हैं और नग्न अवस्था देखना बुरा मालूम होता है। परन्तु यह उनका कथन युक्तियुक्त नहीं है क्योंकि रथयात्रा में केवल वही प्रतिमायें निकाली जाती हैं जो पद्मासन अर्थात् बैठी हुई दशा में होती हैं। खड्गासन अर्थात् खड़ी हुई मूर्तियां रथयात्रा में नहीं निकाली जाती हैं। पद्मासन में विराजमान मूर्तियों की नग्न व ये नग्न दशा का बोध होना अति दुस्तर है। इससे स्पष्ट है कि केवल बहाना ही करना इष्ट है। फिर ऐसे दोषारोपण से क्या कोई अपना धर्म छोड़ सकता है? परन्तु अति आश्चर्य की बात तो इस सम्बन्ध में कहने को शेष है। हमारे हिन्दू भाई जो श्री वीतराग अर्हन्तदेव के दर्शन से इतना डरते हैं स्वयं अपने मन्दिरों में शिवलिङ्ग पूजते हैं। वह भी किस रूप में? जब वह स्त्रीलिङ्ग के मुख्य चिन्ह से संयुक्त हो? क्या केवल नग्न अवस्था का यहां कुछ मुकाबिला होसकता है? नहीं। इसके अतिरिक्त नग्न साधु हिन्दुओं में भी होते हैं। व कुंभ आदि जैसे मौकों पर प्रयागराज इत्यादि हिन्दु तीर्थों में समूह के समूह आते हैं। नग्नरूप से ही जनता में विचरते हैं। जगन्नाथपुरी में हिन्दुओं के विशाल मन्दिर पर चित्रों में स्पष्टरूप में मैथुन क्रिया करते हुए स्त्री पुरुष दिखाये गये हैं। कुछ स्थानों पर स्वयं नग्न दिगम्बर मूर्ति की पूजा हिन्दू मन्दिरों में होती है। दृष्टान्त के तौर पर मैनपुरी जिले के पैंडत ग्राम को लीजिये कि जहां श्री अर्हन्तदेव की मूर्ति जखैइया जी के नाम से पूजी जाती है। इसी प्रकार बिहार में कटक जिले के जजपुर ग्राम में अखण्डेश्वर महादेव के मन्दिर में और बंकूरा जिले के बहुलारा ग्राम में सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर में भी नग्न दिगम्बरी मूर्तियां पूजी जाती हैं। जिनके लिये अब हम अपने हिन्दू भाइयों से आशा करते हैं कि वह हमारी मूर्तियां हमको वापिस करदें।

जब ऐसी दशा स्वयं हिन्दू धर्म व व्यवहार की है तब फिर जैनों से उनके पूज्य तीर्थङ्करों की दिगम्बरी दशा की अपेक्षा से घृणा या वैरभाव का बर्ताव करना कितना अनुचित है। वास्तविकता

यह है कि नग्नदशा स्वयं घृणोत्पादक नहीं है। वह केवल उसी समय घृणा उत्पन्न करती है जब कि उसके द्वारा शीलभङ्ग करने का अभिप्राय प्रगट हो। देखो, योरुप और अमेरिका के बड़े २ मान्य घरों में स्त्री, पुरुषों की नग्न मूर्तियाँ और चित्र खुले तौर पर कमरों के सजाने में प्रयोगित होती हैं। उन कमरों में उन घरों की बहू बेटियाँ स्वयं बैठती हैं और प्रायः उन मूर्तियों और चित्रों का उल्लेख भी उनकी बात चीत में होता है। मैंने स्वयं अपनी आंख से एक शरीफ लड़की को लण्डन के अजायबघर में एक विशाल खड़ी नग्न मर्दानी मूर्ति का फ़ोटो अक्स हाथ से उतारते हुए देखा था। मूर्ति अनुमानतः किसी अन्य देश के देवता की थी और नग्न थी। प्राचीनकाल में नग्नमुद्रा साधु का चिन्ह था। देखिये, इञ्जील मुक़द्दस के प्राचीन भाग में, समाअल नामी नबी (पैग़म्बर) को नग्नमुद्रा में देखकर लोगों ने यह कहा कि क्या यह नबी हो गया है। (देखो इञ्जील के पुराने अहदनामा की १ समोऐल पुस्तक बाब १६ आयत २४) अरब में भी मोहम्मद से पहिले के लोग काबा की प्रदक्षिणा नग्न दशा में किया करते थे यद्यपि अब वे हाजी अर्थात् यात्री का जामा जो एक प्रकार का लम्बा कुरता सा होता है पहिन लेते हैं।

अतः यह विदित है कि नग्नावस्था पूज्यपन व साधुता का चिन्ह प्राचीन काल से दुनियां में चला आता है। इसलिये वैरभाव का बर्ताव जो जैनों के साथ किन्हीं किन्हीं स्थानों पर किया गया है वह सर्वथा अनुचित है। परन्तु मुझे इस बात के कहने में अति प्रसन्नता होती है कि इस प्रकार का वैरभाव बहुत थोड़े हिन्दू व्यक्तियों में पाया जाता है। अधिकांश में हिन्दू लोग शान्तचित्त और मध्यस्थ भाव रखते हैं। तिसपर भी किन्हीं २ अवसरों पर उन्हें अपने सहधर्मी भाइयों के कार्यों का स्वीकार करना ही पड़ता है।

खैर यह तो प्रसंगवश कहे गये इनके कहने से मेरा केवल यही अभिप्राय था कि हम लोग जो निरन्तर निजी अधिकारों को गवर्नमेंट से मांगते रहते हैं स्वयं अपने मित्रों ही के अधिकारों को स्वीकृत करने में कितने सुस्त व लापरवा होते हैं।

इस में सन्देह नहीं कि मिलाप कोन्फ्रेंस में जो बातें निश्चित हुई हैं वे क़रीब २ सभी लोगों को स्वीकृत होंगी। परन्तु उनमें कोई बात ऐसी नहीं है जिस के द्वारा किसी नियम उलङ्घन करने वाले को रोका जासके। यह विदित है कि केवल पवित्र इच्छाओं द्वारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। प्रश्न यह है कि गुंडे व बदमाशों को या ऐसे लोगों को जो गुंडे और बदमाश तो नहीं हैं परन्तु अन्य धर्मों का अपमान करनेमें वह अपनी व अपने धर्म की उन्नति मानते हैं, किस प्रकार सभ्यता का व्यवहार करने के लिये बाध्य किया जाय। पब्लिक ओपीनियन (जनता की आवाज़) अब तक बराबर निरर्थक रही है। यह प्राकृतिक बात है जहाँ एक क़ौम नहीं वरन् दो या अधिक मुख़ालिफ़ क़ौमें बसती हों वहां एक का विश्वास (अक़ीदा) दूसरे के विश्वास के विरुद्ध होगा? उदाहरण के तौर पर भोपाल का क़ानून देखिये जिसके अनुसार यदि कोई मुसलमान अपने धर्म को छोड़कर अन्य धर्म धारण करे तो वह मौत की सज़ा तक पासकता है। इस का यही अर्थ है कि:-

One mohomedan always mohamedan.

अर्थात् एक बार मुसलमान हुआ और सदा के लिये मुसलमान बना फिर भला शुद्धि जैसे विरोधी मसले से मुसलमान लोग कैसे सहमत होसकते हैं। यही दशा काफिर कुशी व उन के निकट) काफिरों के साथ बर्ताव करने की है। स्वयं मुसलमान लेखकों की पुस्तकें ऐसी ऐसी घटनाओं से भरी हुई हैं जो इस बात को प्रमाणित करती हैं कि मुसलमानों ने कभी उन लोगों के साथ जिनको वह काफिर समझते हैं शत्रुओं का सा बर्ताव करने को बुरा न समझा। अतः ऐसी दशा में भारतवर्ष में कोई सर्व सम्मितिमय पब्लिक ओपीनियन कैसे सम्भव है? मैं इस कारणवश इन बातों का वर्णन नहीं करता हूं कि मेरी नियत किसी प्रकार के जोश अथवा कटुता उत्पन्न करने की है। मेरा अभिप्राय केवल यही है कि आगामी कालमें अमन से रहने की कोई सच्ची युक्ति प्राप्त हो। मेरी राय में यदि इस बात पर अमल किया जाय कि जो कोई फरीक बिद्दत या झगड़े का कारण हो तो उसको तुरन्त उसी के सजाती व सहधर्मी इस बात पर बाध्य करें कि वह अपनी अनुचित क्रियाओं को सत्यता पूर्वक स्वीकार करे और यथा सम्भव अपने कृत्यों का दण्ड भोगे और हानि की भी समुचित पूर्ति करादी जाय। यदि मुकद्दमा कचहरी में पहुंचे तो वहां भी दोनों पक्षों की ओर से एक शब्द भी असत्यता का न आने पाये। मेरा ख्याल है कि यदि हम इन नीतियों पर कार्य करेंगे तो अवश्यमेव पारस्परिक प्रेम तथा मित्रता की नींव डालेंगे। नहीं तो वैमनस्य का मिटना कठिन कार्य है। मौखिक सन्धि जो कुकर्मियों के हृदयों को परिवर्तित नहीं कर सकती गुंडे के दिलों पर कभी काबू नहीं पासकेगी और न उन लोगों पर ही इसका कुछ प्रभाव पड़ेगा जो दूसरों के धर्मका अपमान करना ही अपना धर्म समझते हैं। यह याद रहे कि यहां रोमन कैथोलिक और प्रोटिस्टेन्ट लोगों की मिसाल ठीक नहीं आती है। क्यों कि प्रथम तो उनकी बिद्दतें गुंडों और बदमाशों के कृत्य न थे। दूसरे वह लोग कभी विपक्षी के धर्म का अपमान करने में अपनी धर्मपरायणता नहीं समझते थे।

वास्तव में दिल्ली की मिलाप कोन्फ्रेंस एक बहुत बड़ा स्टेप (क़दम) उचित सिम्त की ओर है। परन्तु जब तक इस प्रश्न का उत्तर यथोचित न दिया जायगा कि उसकी डिग्रियों का निफाज़ कैसे कराया जाय तबतक कुल की कुल कारवाई निरर्थक और बेसूद होगी। मेरे विचार से पारस्परिक मिलाप के मामले में शुद्धि के प्रचार से बहुत सहायता मिलेगी गो यह सम्भव है कि प्रारंभ में इस के कारण विरोधता की वायु कुछ दिनों तक किन्हीं २ स्थानों पर अधिक वेग से चलने लगे। आशा है कि देशहितैषी इन कतिपय अत्यावश्यक बातों पर ध्यान देंगे।

वीर

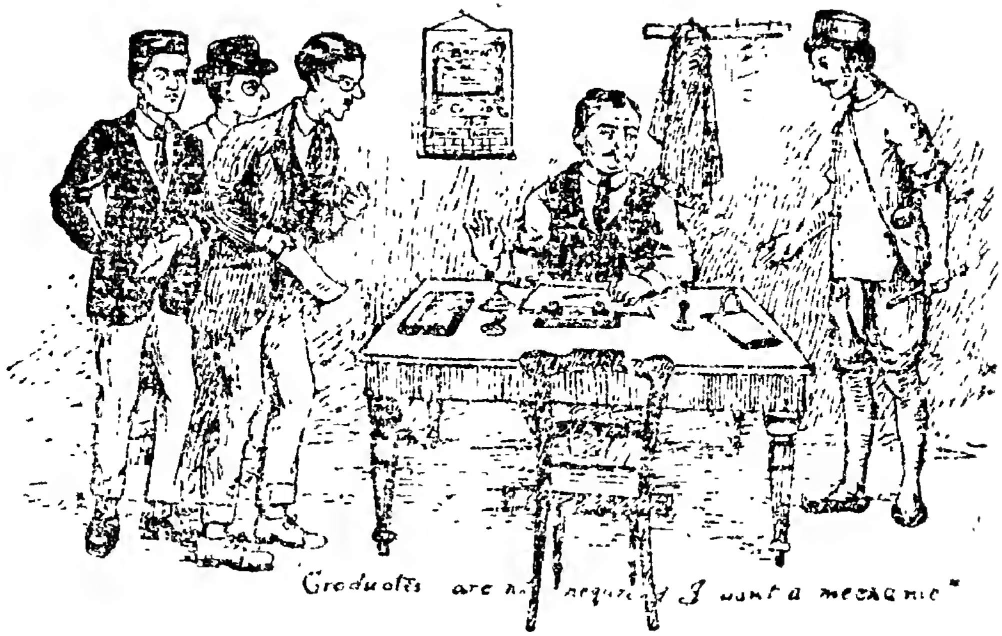

Graduates are n… required I want a mechanic

वाह नौकरी की कैसी है, खड़े देखिये बहुत उदास। हाथ हिला साहब ने फौरन, फेरा मुँह मिस्त्री की ओर।
डिप्लोमा दिखला कर बोले-'हम हैं बी.ए.एम.ए. पास'॥१॥ 'फ़ैशन की दरकार नहीं है' कहा 'चाहिये कर का ज़ोर'॥२॥

ठाठ हुआ फीका सब पल में, मिस्त्री ने ली बाज़ी छीन।
आज बहुत से इसी तरह हैं, हुए ग्रेजुएट तेरह तीन॥३॥

—(कैमडोसस मेगज़ीन की कृपा से प्राप्त)

मेरु-पर्वत

(लेखक—आर. आर. बोवड़े, वकील, परंडोल)

"श्री जंबू द्वीपमध्ये परिलसितमहा
धातकी खण्ड प्राची—।
पश्चाद्धामे च पूर्वापरपरिधिकस—
त्पुष्करार्धांतरीये ॥
प्रभामत्पंचमेरुष्वकुमिभभवने
भाम्रुगान् जैन बिम्बान्।
यामजमाह्वानमुख्यैर्विविभिरधुमा—
रत्नरूपान् विचित्रान् ॥"

—पूजा पाठ

जैनियों की दृष्टि में मेरु पर्वत अत्यन्त पूजनीय और महत्त्व शाली वस्तु है। भाद्रपद पर्व में मेरुव्रत विधान् के समय भाविक लोग परमादर से पंच मेरु की पूजा करते हैं और वहां पर विराजमान जिनबिंबों के भक्तिभाव पूर्वक जल गंधादिक का अर्घ अर्पण कर अपने कर्मों का क्षय करते हैं। परन्तु जिस मेरु पर्वत की अथवा वहां पर विराजमान् जिनबिम्बों की वे पूजा करते हैं उसके विषय में उनको यह धारणा पूर्णतया नहीं है कि वह पृथ्वी के किस कोने में है। हम को तो संशय है कि कितने जैनी इस प्रश्नका उत्तर देसकेंगे? अतएव पाठकों को मेरु पर्वत के विषय में परिचय कराने के हेतु इस लेख के लिखने का प्रयास किया जारहा है। इस में पहले वैदिकमतानुयायी लोगों ने जहां पर मेरु को स्थित माना है उस का वर्णन करके हम जैन शास्त्रानुसार उसके विषय में थोड़ी चर्चा करेंगे।

हिन्दुओं के मत्स्य पुराण ११६ अध्याय + के मध्य मेरु पर्वत के सम्बन्ध में लिखा है कि "सर्वेषामुत्तरे मेरुः"। इस से मेरु पर्वत सर्व देशों के उत्तर में होना प्रतिभाषित होता है। इसी हेतु उत्तर ध्रुव की ओर होने का अनुमान किया जाता है। भागवत स्कन्ध ५ अध्याय १६ में विवरण है कि:—

"इस मेरु पर्वत के मस्तकपर के मध्यभाग में ब्रह्मदेव की नगरी है। उसी ब्रह्मपुरी के निकट पूर्वादिक दिशाओं में इन्द्रादि आठ लोकपालों के आठ नगर उन लोगों के वर्ण प्रमाण हैं।"

महाभारत के वनपर्व अध्याय १६३ के मध्य मेरुपर्वत का वर्णन यूं दिया है।

एनं त्वहर हर्मेरुं सूर्या चंद्रमसौ ध्रुवम्।
प्रदक्षिण मुपावृत्य कुरुतः कुरु नंदन ॥३७॥
ज्योतींषिचाप्य शेषेण सर्वाण्य नघ सर्वतः।
परियांति महाराज गिरिराजं प्रदक्षिणं॥३८॥

इस श्लोक का भावार्थ इस प्रकार है कि प्रति दिवस सूर्य व चंद्र इस पर्वत की प्रदक्षिणा देतेहैं। उस ही के पास से फिरते हैं। उसी प्रमाण सर्व तारे ध्रुव अथवा निश्चल इस मेरुपर्वत की प्रदक्षिणा देते हैं।

अगाड़ी उस पर्वत के विषय में लिखा है कि "रात्रि होने पर वह मेरु पर्वत अपने अंग के तेज

+ इस लेखमे मराठी "विविध ज्ञान विस्तार" वर्ष ५२ वें में प्रकाशित स्व० मि० गोखले के एक लेख का किञ्चित उपयोग किया गया है।

से अँधकार को भेद सा देता है और दिवस जैसा प्रकाश अपने चहुं ओर फैला लेता है। उसके देखते वहां पर यह जानना कठिन हो जाता है कि यह रात्रि है अथवा दिन!" इस विवरण से पाठकगण सहज में समझ सके हैं कि मेरु पर्वत के अंग में प्रस्फुटित दिव्य वनस्पति को प्रभावान बतानेवाला यह प्रकाश ऑरोरा बोरी ऑलिस् (Aurora Borealis.) के सिवा और कुछ नहीं है। उत्तर ध्रुव की ओर से हिमप्रलयानंतर आकर आर्यगण मध्य एशिया खंड में वर्षों पहिले बस गये थे। तब महाभारत के लिखे जाने के समय वे उत्तरध्रुव की ओर अपने स्वर्गासीन पूर्वजों को नमते थे। वहीं पर उन्हों ने मेरुपर्वत के प्रकाश संबंध में तथा उत्तर ध्रुव में आकाशस्थ दृश्यों के संबंधमें जैसा का तैसा वर्णन लिखा है। इस विषय में स्व० लो० तिलक का वर्णन इस प्रकार है:—

"These quotations are quite sufficient to convince anyone that at the time when the great Epic (महाभारत) was composed, Indians writers had a tolerably accurate knowledge of the meteorological and astronomical characteristics of the North Pole(उत्तर ध्रुव) and this knowledge cannot be supposed to have been acquired by mere mathematical calculations. The reference to the lustre of the mountain is specially interesting in as much as, in all probability it is a description of the Aurora Borealis visible at the North Pole"

Arctic Home in the Vedas pag. 69-70.

उत्तर ध्रुव में हिमप्रलय जैसी शीत बढ़ जाने से वहां रहना दुष्कर होगया, तिस करके वहां से देवादिक सहित सर्वलोकगण दक्षिण की ओर चले गये और वहां उन्होंने नवीन मेरु की स्थापना की। भीष्मपर्व में इस बात की कि देवादिकों ने किस स्थान पर नवीन मेरु की स्थापना की थी सहज कल्पना की गई है। उस में लिखा है कि:—

"इस मेरु की चारों दिशाओंमें भद्राश्व, केतुमाल, जम्बूद्वीप व उत्तरकुरु यह चार द्वीप हैं। इस मेरु के पश्चिमपार्श्ववर्ती जंबूखण्ड में केतुमाल नामक घनी वस्तीवाला प्रदेश है। वहां के पुरुषों का वर्ण स्वर्णमय है तथा स्त्रियां रूप में केवल अप्सरा ही हैं। इस प्रदेश में एक अति विस्तीर्ण स्फटिकतुल्य शुभ्र जल कर पूर्ण तथा कांचनमय वालुकाकर युक्त अत्यन्त रमणीय बिंदु नामका सरोवर है। उस सरोवर में से वस्वोकसारा, नलिनी, सरस्वती, जम्बु, सीता, गङ्गा, सिन्धु ये समुद्र में मिलने वाली नदियां निकली हैं।" (भी० पर्व, अ० ६ वा)

उस ही पर्व के ७वें अध्याय में लिखा है कि:—

"जो मनुष्य ब्रह्मलोक से भ्रष्ट होते हैं वह यहाँ (माल्यवान् पवत) पर जन्म ग्रहण करते हैं। मेरु के उत्तरपार्श्व में तथा नील पर्वत के दक्षिण में सिद्धों का पवित्र निवेष उत्तरकुरु है। यहाँ पर मन्दपुण्य कर देवलोक से च्युत हुए मनुष्य लोग होते हैं।...... ...मेरु के पूर्ववर्ती प्रदेश की भद्राश्व संज्ञा है। इस प्रदेश के पुरुष शुभ्रवर्ण, तेजस्वी व बलाढ्य होते हैं।"

साथ ही उसके पांचवें अध्याय में इस प्रकार विवरण है:—

"मेरु के दक्षिण में सुदर्शनद्वीप है। इस का अपरनाम जम्बूद्वीप है और यह चक्राकार है इस में अनेक नदियां व जलप्रवाह तथा गगनचुम्बी पर्वत हैं। फलपुष्पकर भरे अनेक वृक्ष हैं। जो धनधान्यकर समृद्ध है। यहां अनेक आकृति के नगर तथा असंख्य रमणीय ग्राम हैं। इसके समीप गहन लवण समुद्र है।"

उधर श्रीमन्महाभारत में संजय ने धृतराष्ट्र को मेरुपर्वत का वर्णन बतलाते हुए कहा था कि:—

"हे धृतराष्ट्र! हम लोग जहां बसे हुए हैं वह भारतवर्ष है। उसके परे हैमवत है, हेमकूट की परली तरफ हरिवर्ष है। नीलपर्वत के दक्षिण तथा निषध के उत्तर में पूर्व पश्चिमी विस्तार लिये माल्यवान् नामक पर्वत है। उस माल्यवान् की उस ओर गन्धमादन है। इन दोनोंके मध्य में वर्तुलाकृति स्वर्णमय मेरुपर्वत है। वह तरुणसूर्य सदृश देदीप्यमान है। तथा धूमरहित अग्निप्रमाण प्रकाशमान् है। वह चौरासी हजार योजन ऊँचा है। उतना ही भूमध्यमें है। इस मेरुके चारों पार्श्वों में भद्राश्व, केतुमाल जंबूद्वीप व उत्तरकुरु यह चार द्वीप हैं। स्वस्थ ज्योती का नायक जो आदित्य सो मेरु का निकटवर्ती घेरा देता है। इसी प्रकार नक्षत्रों सहित चन्द्र व वायु उसकी प्रदक्षिणा देते हैं। यहीं पर ब्रह्मा, रुद्र व सुरेश्वर इन्द्र प्रचुरदक्षिणायुक्त अनेक यज्ञ करते हैं। तथा नारद, तुम्बरु, विश्वावसु, हाहा, हूहू आदि गन्धर्व यहाँ पर नाना प्रकार की स्तुति करके देवश्रेष्ठ को संतुष्ट करते हैं। मेरु के उत्तर में विशाल शिला समूहकर वेष्टित और सर्व ऋतुओं के पुष्पों से युक्त, दिव्य व रमणीय कर्णिकार वन है। इस वन में सर्वभूत निर्माण कर्त्ता पशुपति भगवान शङ्कर कर्णिकार पुष्पों की माला गलेमें डाले अपने दिव्य भूतगणों कर वेष्टित उमासह क्रीड़ा करते हैं। मेरु की पश्चिम दिशा में जम्बूखंड के मध्य केतुमाल नामक विशद वस्तीवाला प्रदेशहै। वहाँ आयुष्यमर्यादा दश हजार वर्ष हैं। तप्तस्वर्ण के समान वहां के लोगों का गोरपन है। वहां रोग-शोक न हो से सब सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। गंधमादन के शिखर पर गुह्यकाधिपति कुबेर राक्षसों व अप्सराओं सहित अपना कालयापन आनंद से करता है। इस गन्धमादन के आस पास अनेक विशाल नगर हैं। यहां आयु की दीर्घतम मर्यादा ग्यारह हज़ार वर्ष की है। यहां के मनुष्य विशेष बलाढ्य,तेजस्वी व सदा आनंदी होते हैं और स्त्रियां कमलकांति समान सर्वत्र नेत्रानन्दकारिणी हैं। नीलवर्ष के परे श्वेतवर्ष है। श्वेत की दूसरी ओर हैरण्यक है। तथा उससे परे नाना जनपदोंकर युक्त ऐरावत द्वीप है। हिमालय से अनुक्रमकर दक्षिण व उत्तर में भरत व ऐरावत धनुष्याकार हैं। व श्वेत, हिरण्यक, इला, हरी व हैमवत इन पांचके मध्य इला है। इन सातों में ही एक दूसरे से उत्तरोत्तर विस्तार, आयुर्मर्यादा, धर्म, अर्थ व काम बढ़ा चढ़ा है। हिमवान् पर्वत पर राक्षस रहते हैं। हेमकूट पर गुह्यक बसते हैं। निषध पर्वत पर सर्प व नाग रहते हैं। तथा वहां पर

गोकर्ण नामक तपोवन है। श्वेत पर्वत पर सर्व देव तथा अप्सरा बसते हैं। गन्धर्व सदा निषध पर रहते हैं और ब्रह्मर्षि नील पर्वत पर निवास करते हैं।

मेरु के उत्तर में तथा नील के दक्षिण में सिद्धों द्वारा निवेषित ऐसा उत्तरकुरु है। इस प्रदेश में वृक्ष मधुर फल देने वाले हैं जो नित्य नये फल फूल देते हैं। फूल सुगंधयुक्त तथा फल रसाल हैं। यहां एक प्रकार के वृक्ष सर्व इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। तथा दूसरे 'क्षीरी' नाम के कोई वृक्ष हैं। उनसे सदैव अमृततुल्य मधुर षड्रसयुक्त क्षीरस्रवन होता है और उनके फलों से वस्त्राभरण उत्पन्न होते हैं। वहां की सर्वभूमि हीरा, माणिक पद्मराग आदि रत्नों की है। उस पर सोने की बारीक वालुका फैली हुई है। उस पर चलना मानों नाव का पानी पर चलना है उसका स्पर्श सुखकर प्रतीत होता है। यहाँ के मनुष्य अपने मंदपुण्यकर देवलोक से जन्मते हैं। वे सर्व अति निर्मल व उच्चकुलों में जन्म लेते हैं। परन्तु स्त्री पुरुष युगल जन्मते हैं। वहां की स्त्रियां अप्सरा तुल्य होतीं हैं। यह लोग 'क्षीर' वृक्ष से प्राप्त दुग्ध से जीवन निर्वाह करते हैं। यह युगल स्त्री पुरुष एक साथ जन्मते तथा गुण, रूपादि परस्पर एक से होते हैं और वह समानरूप में बढ़ते हैं। सारांश, वे सर्व प्रकार परस्पर में अनुरूप हैं तथा उनका प्रेम भी चकवा चकवी सदृश है। यहाँ के लोग सर्वदा आनंद में रहते हैं। वे यह भी नहीं जानते कि दुःख क्या है? वे दश हजार दश सौ वर्ष जीवित रहते हैं।......यहां मनुष्यों के साथ तीक्ष्ण चोंच वाले 'भारुंड' पक्षी रहते हैं।

मेरु के पूर्वमें भद्राश्व नाम का प्रदेश है। वहाँ भद्रसाल नाम का एक वन है, जिसमें 'कालाम्र' नाम के एक विशाल सुलक्षण व सततफल पुष्पसंपन्न एक योजन ऊँचाई के सिद्धचारणों को सेवित महावृक्ष हैं। इस प्रदेश के मनुष्य शुभ्रवर्णी, तेजस्वी व बलाढ्य हैं और स्त्रियाँ कुमुदवर्णी की सुन्दर तथा दृष्टि को सुखकर हैं। उनका अंगस्पर्श चंद्रसमान शीतल व सुखावह है। यहां के लोगों की आयुमर्यादा दशसहस्र वर्ष है। वे कालाम्र वृक्ष के रस से कालयापन करते हैं।

(चिपलूणकर के मराठी महाभारत से)

उत्तर ध्रुव में अधिक ठण्ड पड़ने के कारण यहां से निकल कर लोग दक्षिण की ओर आये तो वे सैबीरिया को गये और बिंदु सरोवर के निकट केतु माल प्रदेश में बस गये। इस प्रदेश के पूर्व पार्श्व में उन्होंने मेरु पर्वत स्थापित किया। उस मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा देते जम्बूनदी उत्तरकुरु से निकलती है। (भीष्मपर्व अ० ७) "मेरु के दक्षिण में निषध पर्वत है उसपर नाग व सर्प रहते हैं।" (भी० अ० ६) सर्प तुरक समझना और उनका देश तुरक प्रांत। यह प्रांत मंचुरिया से खिंगण पर्वत तक विस्तरित है। खिंगण पर्वत ही नवीन मेरु है ऐसा अनुमान किया जाता है। मेरु के दक्षिण का सुदर्शनद्वीप किंवा जम्बूद्वीप कहा है इसकी खोज करना शेष है। खिंगण पर्वत के दक्षिण में चीन देश है। शायद उस ही का

नाम सुदर्शन द्वीप होगा। सुदर्शन द्वीप का वर्णन चीन देश के सिवा एशिया खंड के दूसरे कोण तक के किसी देशको समान लागू नहीं है। सुदर्शनद्वीप के अनुसार यह देश वर्तुलाकार है। यहां अनेक नदियां, जल प्रवाह, गगनचुंबी पर्वत व अनेक नगरादि हैं। और इसका नीचे का बहु भाग समुद्र से वेष्टित है।

मंचुरिया में मेरु पर्वत की स्थापना करने वाले मेरुपर्वत की व्यालकी बद्दल अर्थात् इन्द्रपदी-बद्दल (?) पीतवर्णी आर्य व देव यहां उत्तरकुरु से नवीन आने वाले गौरवर्णी हैं। इनमें देवों का पराभव हुआ। मंचुरिया के मेरु पर्वत को देखने दैत्यगुरु शुक्राचार्य गये थे। (भा० प० अ० ६) इसके अनुसार मंचुरिया में मेरु पर्वत है और उस के निकटवर्ती प्रदेश तिब्बत तक दैत्यों के प्रदेश हैं। और उन्होंने यहां पर नवीन स्वर्गों की स्थापना की थी यह प्रकट है। इन नवीन स्वर्गों की बाबत भागवत में निम्न प्रकार वर्णन है कि:—

"एशिया खंड के जो भाग वैष्णव धर्मी आर्यों द्वारा बसाये गये उनके उन्होंने नौभाग किये, जो 'वर्ष' कहलाये गये। इन नौ वर्षों के मध्य 'इलावर्त्त' नामक वर्ष सर्व के मध्य में है। उसके नाभिस्थान में स्थित कुलपर्वतों में श्रेष्ठ मेरु पर्वत है। (भा० स्कंध ५ अ० १६) सर्व वर्षों में 'भारतवर्ष' ही कर्मक्षेत्र है इतर आठ वर्षों में स्वर्गवासी लोगों के अवशिष्ट पुण्य फल भोगने के स्थान हैं, जिनको इस पृथ्वी पर स्वर्गस्थल कहते हैं। (स्कं० ५ अ० १७) इलावृत्त हिमालयके उत्तर में है।" (स्कं० ५ अ० १६)

तिब्बत ही हिमालय के उत्तर में है' इसलिये तिब्बत ही को वे इलावृत्त समझे होंगे यह सम्भवित होता है। तिब्बत को त्रिविष्टप भी कहते हैं।

यहां तक की विवेचना में हमें वैदिक मतानुसार मेरु पर्वत का पता लगता है कि वह पहिले तो उत्तर ध्रुव में था, परन्तु उपरान्त में चीन देश-की उत्तर दिशामें स्थित मंचुरिया के खिंगण पर्वत पर उसकी स्थापना हुई। फिर तिब्बत में वह गया यह स्पष्ट विदित होता है। अब हमें देखना है कि जैनशास्त्र इस मेरुपर्वत के विषय में क्या कहते हैं?

जीव' पुद्गल' धर्म' अधर्म' व काल यह पांच द्रव्य जहां नहीं हैं वहां अलोकाकाश है। और जहां इन पांच द्रव्यों का अस्तित्व है वहां लोकाकाश है। अलोकाकाश अनन्त व शाश्वत है अलोकाकाश में अधोलोक, मध्यलोक, ऊर्ध्वलोक' यह तीन लोकाकाश हैं। यह ईश्वरीय निर्मित नहीं है, स्वयंसिद्ध व अनादिकाल से है। मध्यलोक में जंबूद्वीप धातुकीद्वीप, पुष्करद्वीप, वारुणीवर द्वीप, क्षीरद्वीप, घृतवर द्वीप इक्षुद्वीप नन्दिश्वर द्वीप आदि असंख्यात द्वीप हैं। आज हमें इस लेख में केवल जंबूद्वीप का दिग्दर्शन करना है, इसलिए इतर द्वीपों से हमें कोई सम्बन्ध नही है। जैन शास्त्रानुसार जंबूद्वीप मध्यलोक के ठीक बीचो बीच में है। वह पूर्व पश्चिम एकलक्ष महायोजन* का है। चालीस कोटी मील लम्बा है। दक्षिणोत्तर इसका विस्तार ७ शठ मील है। इस जंबूद्वीपके ठेठ बीचमें मेरुपर्वत

* दो हजार कोस का एक महायोजन और चार कोस का एक लघुयोजन होता है।

है। उसकी चौड़ाई दश हजार योजन की है। उसके पूर्व पश्चिम में बाईस बाईस हजार योजन के दो भद्रशाल वन हैं। तिन के दोनो ओर तेईस तेईस हजार योजन के लंबे पूर्वविदेह व पश्चिमविदेह हैं। इस प्रकार जंबूद्वीप की पूर्व पश्चिमी लंबाई (१०००० + २२००० + २२००० + २३००० + २३०००) एक लक्ष योजन है। उसी प्रमाण दक्षिणोत्तर लम्बाई भी उतनी ही हम स्वीकार किये लेते हैं। दक्षिणोत्तर भाग के १९० भाग प्रमाण वहां से दक्षिण के भाग में 'भरत क्षेत्र' है* जो ५२६$\frac{६}{१९}$ योजन (इक्कीस लाख चार हज़ार मील) लम्बा है इस भरत क्षेत्र के ठीक मध्य में विजयार्धपर्वत (वैताढ्य पर्वत) * पूर्वपश्चिम लवणसमुद्रपर्यन्त फैला हुआ है। उससे भरतक्षेत्र–उत्तरभरतक्षेत्र व दक्षिण भरत क्षेत्र ऐसे दो भागों में विभाजित हो गया है। भरतक्षेत्र के उत्तर में हिमवान् पर्वत पूर्व पश्चिम लवणसमुद्रपर्यन्त विस्तरित है। वह १०० योजन ऊंचा तथा १०५२ योजन व १२ कला चौड़ा है। उस पर्वत पर "पद्म" नाम का एक सरोवर (कुंड) जिसमें से रोहितास्या, गंगा व सिंधु यह तीन नदियां निकली हैं। इनमें से रोहितास्या नदी उत्तराभिमुख हो हैमवत क्षेत्र में शब्दपातीवृत वैताढ्य पर्वत का अर्ध चक्कर देकर पश्चिमकी ओरसे लवण समुद्रमें मिलती है। पद्म सरोवर के पूर्व से निकल कर गंगा नदी दक्षिणाभिमुख हो वैताढ्य पर्वत के मध्य होकर भरत क्षेत्र में गई है और लवण समुद्र से मिली है। पश्चिम भाग से सिन्धु नदी निकलकर दक्षिणवाहिनी होकर वैताढ्य पर्वत में होती हुई भरतक्षेत्र को गई है। वहां से वह लवण समुद्र में मिली है। गंगा-सिन्धु इन दोनों नदियों और विजयार्ध पर्वत ने भरत क्षेत्रके छः भाग किये हैं। इन छः भागों में पांच भाग म्लेच्छ खण्ड हैं और छटवां केवल आर्य खण्ड हैं। उत्तर में विजयार्ध पर्वत का भाग, दक्षिण में लवण समुद्र, पूर्व में गंगा नदी व पश्चिम में सिन्धु नदी से सीमित भाग आर्य खण्ड (आर्यावर्त) नामक है। विजयार्धपर्वत पर नौ टोंकें हैं, जिन पर विद्याधरों के निवास हैं। भरत क्षेत्र के उत्तर में स्थित हिमवान् पर्वत के उत्तर में हैमवत् नामका क्षेत्र है जो २१०५ योजन ५ कला विस्तार का है। यहां पर जघन्य-भोग भूमि होने के कारण कल्पवृक्षादि सुखसामिग्री उपलब्ध है। उस हैमवत क्षेत्र के उत्तर में महाहिमवान् पर्वत २०० योजन ऊंचा व ४२१० योजन व १० कला लम्बा पूर्व पश्चिम विस्तरित है। वह स्वर्णमय है और उस पर आठ टोंकें हैं व एक महापद्म नामक सरोवर है। उस सरोवर के दक्षिणभाग से रोहिता नाम की नदी निकल कर हैमवत क्षेत्र में शब्द पाति करती हुई वृत्त वैताढ्य पर्वत का अर्धचक्र देकर पूर्व वाहिनी हो लवण समुद्र में मिली है। उसी सरोवर के उत्तर भाग से हरीकाँता नामक नदी निकलकर हरीक्षेत्र के गंधावति वृतवैताढ्य पर्वतकी अर्धप्रदक्षिणा देती हुई पश्चिमाभिमुख हो लवण समुद्र में मिली है। महाहिमवान् पर्वत के उत्तरमें स्थित हरिक्षेत्र का विस्तार ८४२१ योजन एक कला है। इस क्षेत्र में मध्यम भोग भूमि व कल्प-

*'भरतः षड्विंशपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य' ('भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशत भागः ।')
उमास्वामिकृत तत्वार्थ सूत्र अ० ३ सूत्र ३१

सू आदि हुए हैं।

हरिवर्ष क्षेत्र के उत्तर में निषध पर्वत है जो चार सौ योजन ऊंचा व १६८४२ योजन २ कला लम्बा है। इस पर ६ कूट व तिगिंछ नामक एक सरोवर है। उस सरोवर से हरी व सितोदा नामक नदियाँ निकली हैं। हरि नदि दक्षिण अंग से निकलकर हरिक्षेत्र में होती हुई गंधावति वृत वैताड्य पर्वत का अर्धचक्कर लगा कर पूर्व-वाहिनी लवण समुद्र में गिरी है। सीतोदा नदी उत्तर भाग से निकल कर देवकुरु नामक उत्तम भोग भूमि में बहती विद्युत्प्रभ गजदन्त पर्वत में भद्रशाल वन को गई है और वहां से सुदर्शनमध्य मेरु पर्वत की अर्ध प्रदक्षिणा देकर पश्चिमाभिमुख हो विदेहक्षेत्र को चली गई है, जहाँ से लवण समुद्र में गिरी है इस प्रकार मेरु के उत्तरभाग में ऐरावतक्षेत्र (कर्मभूमि पंच म्लेच्छखंड व एक आर्य खण्ड)ऐरावतक्षेत्र जघन्य भोगभूमि)रम्यकक्षेत्र (मध्यमभोगभूमि)उत्तर कुरुक्षेत्र (उत्तम भोगभूमि,यह चारक्षेत्र व शिखरी रुक्मी, नील, गँधमादन, गजदन्त, माल्यवन्त गजदन्त, यह पाँच पर्वत तथा भद्रसाल वन हैं। मेरु के पूर्व में स्थित भाग के मध्य पूर्व विदेह व पश्चिम भाग में पश्चिमविदेह है। निम्न चित्रण से पाठकों को जंबूद्वीप की रचना की सहज में कल्पना हो जावेगी।

१–मेरू के दक्षिण पार्श्व में स्थित क्षेत्र पर्वत आदि।

भरतक्षेत्र-कर्मभूमि; ५ म्लेच्छ व एक आर्य ऐसे ६ खंड।

हिमवान् कुलाचल पर्वत।
हेमवत् क्षेत्र-जघन्य भोग भूमि।
महाहिमवान्-कुलाचल पर्वत।
हरिक्षेत्र-मध्यम भोग भूमि।
निषध कुलाचल पर्वत।
विद्युत्प्रभ गजदन्त पर्वत।
सौमनस गजदन्त पर्वत।
देवकुरु क्षेत्र-उत्तम भोग भूमि।
भद्र शालि वन।

२. मेरु के उत्तरपार्श्व में स्थित क्षेत्र, पर्वत आदि:–

ऐरावतक्षेत्र-कर्मभूमि,५ म्लेच्छ व आर्यखंड
शिखरी पर्वत।
ऐरावत। क्षेत्र जघन्य भोग भूमि
रुक्मी कुलाचल पर्वत।
रम्यक क्षेत्र-मध्यम भोग भूमि।
नीलाकुल चल पर्वत।
गंध मादन गजदंत पर्वत।
माल्यवंत गजदंत पर्वत।
उत्तर कुरुक्षेत्र-उत्तम भोगभमि।
भद्रशाल वन।

३. मेरु के पूर्व पार्श्व के १६ विदेह क्षेत्र:-

१. कच्छ विदेह २. सुकच्छ विदेह ३. महाकच्छ विदेह ४. कच्छावर्त विदेह ५. आवर्त विदेह ६. मंगलावती विदेह ७. पुष्कर क्षेत्र ८. पुष्कलावर्त क्षेत्र ६;वच्छ क्षेत्र १०सुवच्छक्षेत्र११. महावच्छ क्षेत्र१२. वत्सावर्त क्षेत्र १३.रम्य विदेह क्षेत्र,१४;रम्यक क्षेत्र १५. रमणीक क्षेत्र १६. मंगलावती क्षेत्र।

४.मेरु के पश्चिम पार्श्व के १६ विदेहक्षेत्र:–

१. वप्रक्षेत्र २. सुवप्रक्षेत्र ३. महावप्रक्षेत्र ४ पद्मावती क्षेत्र ५. वलगुक्षेत्र ६. सुवलगु क्षेत्र ७. गंधलिक्षेत्र ८. गंधलावती क्षेत्र ९. पद्मक्षेत्र १०सुपद्मक्षेत्र ११. महापद्म क्षेत्र १२. पद्मावर्त क्षेत्र १३. शंक क्षेत्र १४. नलिन क्षेत्र १५. कुमुद क्षेत्र १६. नली क्षेत्र।

इस प्रमाण एक लक्ष महायोजन विस्तार के जम्बूद्वीप१ के मध्य दक्षिणपार्श्व में 'भरत क्षेत्र" है, जो धनुषाकार है और जिसकी लम्बाई लवण समुद्र से हिमवत पर्वत पर्यंत ५२६ योजन ६ कला* है अर्थात् इक्कीस लाख पाँच हजार दो सौ अठशठ मील तीन सौ पंद्रह गज व २८॥ इञ्च है। इस भरत क्षेत्र में गंगा सिन्धु इन दो नदियों व विजयार्ध पर्वत से छह भाग हो गये हैं, यह हम देख चुके है। इन में पाँच भागों में तो म्लेच्छ खण्ड हैं और छटवे में केवल आर्यखण्ड हैं, यह भी हम देख चुके हैं। जैन शास्त्रानुसार भरतक्षेत्र व आर्य खंड का नक्शा निम्न प्रकार हैः—

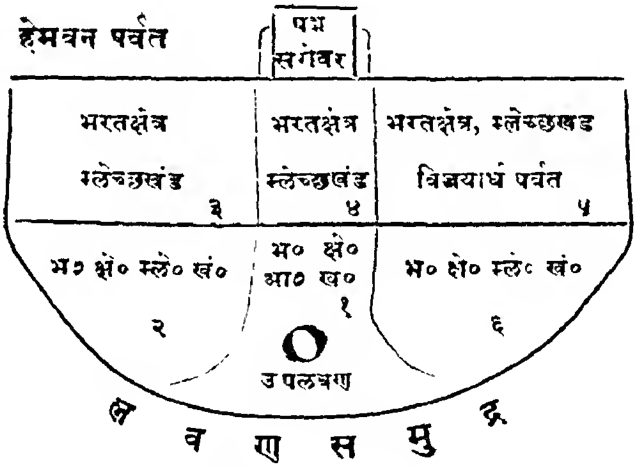

१. श्री मद्भागवत पंचम स्कंध में जम्बूद्वीप के आठ उपद्वीप दिये हैं:—

"जंबूद्वीपस्य च राजन्नुपद्वीपानष्टौ हैक उपदिशन्ति सगरात्मजै रश्वान्वेषण इमां महीं परितो निखनद्भि रुप कल्पितान् ॥ २६ ॥

तद्यथा स्वर्ण प्रस्थश्चन्द्र शुक्र आवर्तनो रमणको मंदरहरिण: पांचजन्य: सिंहलो लंकेति ॥ ३० ॥

—भा० स्कं० ५ अ० १६

वायुपुराण, भुवनविन्यास, अ० ४८ मध्य जंबूद्वीप के छह उपद्वीप बतलाये हैं और उन के नाम इस प्रकार लिखे हैं:—

(१) अंगद्वीप (२) यवद्वीप (३) मलयद्वीप (४) शंखद्वीप (५) कुशद्वीप (६) वराहद्वीप।

* भरत षट्विंशति पंचयोजन शत विस्तारः षट्चै कोन विंशति भागा योजनस्य।

—उमा स्वामिकृत तत्वार्थ व अ० ३ सू० २

पोन्नूरहिल जहां श्रीकुन्दकुन्दाचार्य तप करते थे और जहां अब श्रीकुन्दकुन्द आश्रम खुला है

इस नकशे के मुताबिक् वर्तमानकाल में भूगोल में वर्णित आर्यखंड जैन भूगोल का आर्यखंड नहीं है, यह सहज ही में अनुभवगम्य हो सकता है। सांप्रत हिन्दुस्तान देश को ही आर्यखंड (आर्यावर्त) समझते हैं, परन्तु यह भूल है। जैन शास्त्रों के आर्यखंड में युरुप, अफ्रिका, एशिया आदि ६ खण्ड द्वीप का समावेश हो जाता है। तथा इनके अतिरिक्त उस में और भी पृथ्वी गर्भित है जिसका पता अभी तक नहीं लगा है। नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती कृत "त्रिलोकसार" में आर्यखण्ड मध्य उपलवण समुद्र के आस पास खूब विस्तीर्ण व लोक संख्या से भरपूर ऐसे १७० नगर बतलाये हैं। यह सर्व निराले २ राजाओं के आधीन हैं। और उस उपलवण समुद्र में छोटे बड़े २७००० द्वीप, महाद्वीप हैं, ऐसा लिखा है। इस हेतु हमारी पृथ्वी पर विद्यमान सागर महासागर यह आर्यखण्ड के उपलवण के ही भाग होना चाहिये और उपलब्ध पृथ्वी (एशिया, यूरोप, अफ्रिका, अमेरिका, आदि) उसी उपलवण समुद्र में के कितने ही असंख्य द्वीपों में अथवा निकट वर्ती नगरों का ही एक भाग है, ऐसा प्रतीत होता है। आर्यखंड के बाकी के प्रदेश और भरतक्षेत्र के बाकी के पांच म्लेच्छ खंड प्रदेशों का पता अभी तक नहीं लगा है। जलमज्जन प्रकार से उनके विषय में कोई बात पक्की करना कठिन है। भूगर्भशास्त्रज्ञों का कथन है कि बहुत प्राचीन कालसे इस पृथ्वी पर जलमज्जन प्रकार अनेक बार हुये हैं। भारतीय महासागर पहिले एक प्राचीनकाल में एक महाद्वीप था जिसका विस्तार हिंदुस्थानके दक्षिण तटसे अफ्रिका के दक्षिण ओर अमेरिका पर्यन्त था। वह महाद्वीप कालांतर में महासागर में डूबगया। उस ही द्वीप में के पर्वतोंकी शिखिरें आज जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, मलयद्वीप, सिबेलिस, रॉड्रिग्स, चँगास, मॉरिशस, मादागास्कर, असेनरान् फाकलैंड आदि हैं। स्पेन के पश्चिम में स्थित अटलांटिक महासागर में का एटलिडोनस् नामक ऐलॅन्ड पहिले विशाल द्वीप था। कालान्तर में वह डूबगयी। यह भूगर्भशास्त्रज्ञों का मत है और आजकल जहाँ अझोर्स (Azores) द्वीप है वहां पहिले एक पर्वत की शिखिर थी। पृथ्वी के गर्भ में भरे हुये ज्वालाग्राही पदार्थों के स्फोट से नगरों के सागर और सागरों के नगर बन गये ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं। सारांशतः प्राचीन काल के जैन शास्त्रों में वर्णित पृथ्वी के स्वरूप में स्थित्यन्तर पड़गया हो तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं तथापि जैन भूगोल अर्वाचीन काल का नवीन न हो कर अत्यंत प्राचीन काल का है यह बात निर्विवाद सिद्ध है।

वैदिक मतानुयायी लोगों के आर्यखंड में मेरु पर्वत पहिले कहा स्थित था यह बात इस लेख के पूर्व भाग से प्रगट है। परन्तु जैन शास्त्रानुसार उसका स्थान आर्य खंड में न होकर उसके उत्तर और अति अंतर से है। यह अंतर ठीक अठानवे लक्ष चौबीस हज़ार कोसका है। उस पर्वत के नितंब पर भद्रशाल बन है। उस बनसे पांडुक बन पर्यन्त मेरु की ऊँचाई ६६ हजार योजन है। फिर उस पांडुक बन से मेरु की शिखिर ४० योजन पर्यन्त इन्द्र नील मणि की है। प्रारंभ में वह १२ योजन विस्तार का है। फिर कमती होते २ उपर टोंक पर वह ४ योजन है। उस शिखिर से केवल एक बाल के अन्तर प

सौधर्म इन्द्र का सभास्थान (इन्द्रक विमान) ४५ लाख योजन का है।

मेरु पर स्थित भद्रशाल वन से ५०० योजन की ऊंचाई पर मेरु के चारों पार्श्वों पर चार नंदन वन हैं और वहां से ६२॥ हजार योजन की ऊंचाई पर्यन्त सौमनस नामक वन है, उस से ३६ हजार योजन ऊंचाई पर्यन्त मेरु के चारों ओर चार पांडुक वन हैं। इनमें चार पांडुक शिला अर्ध चन्द्राकृति की हैं। इन पांडुक शिलाओं पर भरत, ऐरावत, पूर्व-पश्चिम विदेहों के तीर्थंकरों का * जन्माभिषेक होता है।

जम्बूद्वीप दक्षिणोत्तर व पूर्व पश्चिम एक एक लक्ष योजन का है। उसके लवण समुद्र का विस्तार ४ लाख योजन का है, जिसके दूसरी ओर ८ लाख योजन लंबा धातकी खंड है उस धातकी खंड के कालोदधी समुद्र का विस्तार १६ लाख योजन का है। कालोदधि समुद्र के सन्मुख १६ लाख योजन विस्तार का पुष्करार्ध द्वीप है। यहां तक ढाई द्वीप के ४५ लाख योजन होते हैं। जंबूद्वीप, धातकी खंड द्वीप, व अर्धपुष्करद्वीप (पुष्करार्ध द्वीप) इनको अढ़ाई द्वीप कहते हैं। इस अढ़ाई द्वीप तक ही मनुष्य को गम्य है। उसके उपरान्त मनुष्यों का निवास नहीं है। इसलिये वहां मनुष्य पहुंच ही नहीं सकता है। अढ़ाई द्वीप के हद पर मानुषोत्तर पर्वत है। जिस पर ४ अकृत्रिम जिन मंदिर हैं। वहां की वंदना देवगण करने आते हैं। विद्याधर भी वहां नहीं पहुंच सके। वे दूर से वंदना करते हैं। फिर भला मनुष्य की क्या बात है! इस अढ़ाई द्वीप में पंच मेरु पर्वत हैं। भाद्रपद पर्व में इन्हीं पर की जिनबिम्बों की पूजा करते हैं। इति।

* श्री जिन सेन कृत आदि पुराण के पर्व १३ में पांडुक शिला का वर्णन दिया है।

श्री कुन्दकुन्दाचार्य

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं॥

जैन मंदिरों में प्रति दिवस व सभाओं के प्रारंभ में जो मंगलाचरण किया जाता है उसही में उक्त श्लोक भी सम्मिलित है। इस में भगवान महावीर और उन के गणधर गौतम इन्द्रभूति के साथ श्री कुन्दकुन्दाचार्य का भी स्मरण किया गया है। इस ही से पाठकगण इन आचार्य की महत्ता और प्रतिष्टा का अनुमान कर सके हैं। वस्तुतः दिगम्बर जैन सम्प्रदाय में आप की मान्यता अति विशद है, यद्यपि श्वेताम्बर सम्प्रदाय में भी आप मान्य हैं। दिगम्बराम्नाय के प्रत्येक मुनिवंश आप से ही अपने वंश की उत्पत्ति मानने में गर्व करता है। दक्षिण भारत में कितनेक शिलालेख जैन मुनियों के संबन्ध में मिले हैं वह "कुन्दकुन्दान्वय" से प्रारंभ होते हैं। उपदेशरत्नमाला के कर्ता सकलभूषण जी अपने विषय में कहते हैं:-'श्री कुन्दकुन्दगुरुपट्टपरमपर्य्यायम्' 'उपासकाध्ययनम्' के रचयिता वसुनन्दी आचार्य भी इसी प्रकार कहते हैं कि 'श्री कुन्दकुन्द सन्तानम्।' और 'आराधना कथाकोष' के प्रतिपादक ब्र० नेमिदत्त भी लिखते हैं

कि 'श्री कुन्दकुन्दाख्य मुनीन्द्रवंश' इन के अतिरिक्त जैन ग्रन्थों में ऐसे ही उल्लेख बहुतायत से उपलब्ध हैं। इन सब बातोंसे यह जाना जासकता है कि श्री कुन्दकुन्दाचार्य जी को जैन मुनियों के मध्य कितना उच्च स्थान प्राप्त है। यथार्थमें इस वस्तुस्थता को प्रगट करने के लिए उनका संबोधन 'मुनीन्द्र' और 'मुनिचक्रवर्ति' सदृश विशेषणों से हुआ है। किन्तु दुःख है कि इन महान् आचार्य के संबन्ध में भी विशेष भ्रममात्र सामान्य जनता के मध्य ही नहीं, प्रत्युत विद्वानोंके मध्य घर किए हुए हैं। खेद है कि आज तक जैन इतिहास अंधकार में व्याप्त है जिसके कि कारण जन साधारण में भ्रमात्मक प्रतिवाद प्रचलित हो रहे हैं। इस का निराकरण करना आवश्यक जान कर ही अब कुछ कुछ जैन समाज इस ओर ध्यान देने लगी है। यही हर्ष की बात है। इन्हीं कुन्दकुन्दाचार्य के विषय में हम हिन्दीविश्वकोष भाग पंचम पृष्ठ ६८-६६ में पढ़ते हैं कि:—

"(वह) एक विख्यात् जैन ग्रन्थकार (हैं)। उन्होंने प्राकृतभाषा में षट्प्राभृत, प्रवचनसार, समयसार, रयणसार, द्वादशानुप्रेक्षा प्रभृतिग्रन्थ प्रणयन किये हैं। अभिनवपम्प, बालचन्द्र, श्रुतसागर प्रभृति जैन पण्डितों ने उक्तग्रन्थ से किसी २ की टीका संस्कृत भाषा में रचना की है। अभिनवपम्प ने षट्प्राभृत वा प्राभृतसार की टीका के प्रारम्भ में लिखा कि कुन्दकुन्दाचार्य का अपरनाम पद्मनन्दी था फिर श्रुतसागर ने इसी ग्रन्थ की 'मोक्षप्राभृत नाम्नी' टीका के शेष में पद्मनन्दी और कुन्दकुन्दाचार्य उभय को भिन्न व्यक्ति बताया है— "इति श्री पद्मनन्दी कुन्दकुन्दाचार्यैलाचार्य-वक्रग्रीवा-चार्यनामपञ्चकविराजितेन चतुरङ्गुल-कासगमर्धिना।"*अभिनवपम्प के मत में यह शिवकुमार महाराज के गुरु थे। कोई कोई उक्त शिव कुमार महाराज को ही दक्षिणापथ के कदम्बराज शिवमृगेन्द्रवर्मा समझता है। हेमचन्द्र रचित प्राकृत व्याकरण की १५१८ ई० को लिखी एक हस्तलिपि के शेष पर संस्कृत भाषा में कुन्दकुन्दाचार्य की वंशावली है। उस के पाठ से समझ पड़ता है कि 'कुन्दकुन्द मूलसङ्घ सरस्वतीगच्छ और बलात्कारगण के अन्तर्भूत थे। उनके पट्ट पर भट्टारक श्री पद्मनन्दि देव, फिर देवेन्द्रकीर्तिदेव, फिर विद्यानन्दिदेव और फिर मल्लिभूषण देव हुए। मल्लिभूषण के शिष्य का अमरकीर्ति और उनके शिष्य का नाम मेवाड़ जातीय श्रेष्ठ लाडन था।" दक्षिण महाराष्ट्र के सांगली राज्यांतर्गत तेरदाल ग्राम

---

* त्रिभुवनतिलक के गाम्बदित्तो नामक देवालय के स्तम्भ पर उक्त पांचों शब्द कुन्दकुन्दाचार्य के नामान्तर की भांति वर्णित हुये हैं—

श्रीमूलसङ्घेऽजनि नन्दिसङ्घस्तस्मिन्बलात्कारगणोऽतिरम्यः।
तत्रापि सारस्वतनाम्नि गच्छे स्वच्छाशयोऽभूदिह पद्मनन्दी॥
आचार्यः कुन्दकुन्दाख्यो वक्रग्रीवो महामतिः।
एलाचार्यो गृध्रपिच्छ इति तन्नामपञ्चधा॥ ४॥"
(E. Hultzsch. South Indian Inscr:, Vol. I. p 158.)

नोट—इसी श्लोक से श्रुतसागर की बात आपत्ति विरोधित हो जाती है। अन्य विद्वानों का भी यही मत है कि पांचों नाम कुन्दकुन्दाचार्य के अंगही ... हुए हैं

—सं० सं०

में ११०४ शक को एक खोदित शिलाफलक आविष्कृत हुआ था। उस में लिखा है—'स्वस्ति श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्यन्वयद्-श्रीमूलसंघद-देशीय-गणदपोस्तकगच्छद—श्री कोल्लापुरद निम्ब देव सामन्तमाहिसिद्—श्रीरूपनारायण देवर।' वीरनंदी ने आचारसार की टीका में कहा है कि १०७६ शक को वह (?) और मेघचन्द्र के पुत्र विद्यमान रहे। मेघचन्द्र का कनाड़ी भाषा में लिखित समाधिशतक पढ़ने से समझते हैं कि कुन्दकुन्दाचार्य अभिनवपम्प के सम सामयिक थे। फिर ११०४ शक को उनके वंशोत्तर सामन्त निम्बदेव का भी नाम मिलता है। उक्त प्रमाण द्वारा अनुमान करते हैं कि वह ई० एकादश शताब्द को विद्यमान थे। श्वेताम्बर और दिगम्बर उभय दल कुन्दकुन्दाचार्य का बड़ा सम्मान करते और उनका बहुविध धर्मोपदेश सादर ग्रहण करते हैं। श्वेताम्बर जैनों के मत में उपयुक्त धर्माचरण करने से स्त्री भी निर्वाण वा मोक्ष पा सक्ती है। किन्तु दिगम्बर उसको स्वीकार नहीं करते। कुन्दकुन्दाचार्य ने भी 'प्रवचनसार' में बताया है—'चिंतेचिन्ता मायातमहातासि न निव्वाण।' 'हृदय में माया चिन्ता रहने से स्त्री को निर्वाण नहीं मिलता' उक्त वचन से समझ सक्ते हैं कि कुन्दकुन्द अपने आप भी दिगम्बर रहे। उन का समयसार पढ़ने से समझ पड़ता है जिस देश में उन्होंने वास किया वहां उनके रहने समय जनधर्म विशेष प्रबल पड़ा न था, अधिकांश लोगोंमें विष्णु की पूजाका प्रचार रहा।"

उपरोक्त वर्णन से पाठकों को निम्न बातों का परिचय प्राप्त होता है कि (१) कुन्दकुन्दाचार्य एक विख्यात जैन ग्रंथकार थे और उन्होंने संस्कृत एवं प्राकृत भाषा में कितने ग्रन्थ लिखे थे, (२) वह पद्मनन्दी नामक आचार्य से भिन्न व्यक्ति थे, (३) संभवतः वह ईसा की ११वीं शताब्दि में रहे थे (४) और उनके धर्मोपदेश को श्वेतांबर-दिगंबर समान रूप में मानते हैं, यद्यपि वह स्वयं दिगम्बर प्रतीत होते हैं। विश्वकोष की इन बातों में से हमें प्रथम के विषय में कुछ नहीं कहना है। वह सर्वमान्य और सर्वविदित है। शेष की बातें अवश्य ही अटपटी सी विदित होती हैं। इनमें उसकी दूसरी और तीसरी बातों में तो कुछ भी तथ्य प्रतीत नहीं होता। क्योंकि इस विषय में जो प्रमाण दिये गए हैं वह पर्याप्त नहीं हैं। उस ही के उक्त वर्णन से उसकी दूसरी बात बाधित है। पद्मनन्दि भिन्न व्यक्ति थे, इस बात के समर्थकमात्र दो लिखित ग्रंथ हैं परन्तु इसके विपरीत एक शिला लेख और एक ग्रंथ भी वहीं उपलब्ध है जो शायद उक्त ग्रन्थों से प्राचीन प्रतिभाषित होते हैं, यद्यपि कोष में इसका खुलासा नहीं है। इसलिये निर्णयात्मकरूप में हम यह नहीं स्वीकार कर सकते कि कुंदकुंदाचार्य और पद्मनंदी भिन्न व्यक्ति थे। प्रत्युत उनका एक व्यक्ति होना ही विशेष संभाव्य है। तीसरी बात इससे भी अटपटी है। वह उन जैनाचार्य को जिनका कि स्मरण ठीक भगवान महावीर के गणधर के उपरान्त प्रति दिवस मन्दिरों में होता है, ईसा की ११वीं शताब्दि का बतलाता है। यहां भी उसके प्रमाण निर्णयात्मक नहीं हैं। मेघचन्द्र के मूलवाक्य को वहां उपलब्ध नहीं किया गया है। इससे कहा नहीं जा

सकता कि यह कथन कहाँ तक मूल के अनुसार है कि कुन्दकुन्दाचार्य अभिनव पम्प के समकालीन थे। यदि उसका यह कथन यथातथ्य मान भी लिया जाय तो दूसरी ओर डा० हार्नल प्राचीन पट्टावलियों से कुंदकुन्दाचार्य का समय ईसा की प्रथम शताब्दि का प्रमाणित करते हैं, जैसे कि पाठक आगे देखेंगे। फिर शक ११०४ के शिलालेख का जो प्रमाण दिया गया है वह भी भ्रममूलक है। श्री कुन्दकुन्दान्वय के व्यक्ति आज भी दिगम्बर समाज में विद्यमान हैं। 'श्रीमत्कुन्दकुन्दाचार्यन्वयद् आदि' से सामन्त निम्बदेव को उनका ठीक वंशोद्भव कोई पौत्रादि समझना उपयुक्त है। यथार्थ में कुंदकुदान्वयद् आदि से तो भाव मात्र यही है कि कुंदकुन्द की परम्परा में (of the line of Kundakunda) अतएव कुन्दकुन्दाचार्य का समय ११ वीं शताब्दि नहीं माना जा सकता। जैन मान्यता के अनुसार वह ईसवी सन् के प्रारम्भ में हुए व्यक्त होते हैं। और वह मात्र प्राकृतभाषा के ही कवि नहीं थे, प्रत्युत तामिलभाषा में भी उन्होंने 'कुरुल' सदृश महान ग्रंथों की रचना की थी, जैसे कि प्रो० एम. एस. रामास्वामी ऐंगर, एम. ए. व्यक्त करते हैं कि "जैन ग्रन्थ 'नीलकेसी' का टीकाकार कुरुल को 'इम्मोत्' संज्ञा (अर्थात् अपना मूलग्रन्थ–Our own Bible) से विभूषित करता है। इससे प्रगट है कि जैनियों को इस बात का विश्वास था कि वल्लुवर (कुरुल के कर्त्ता) जैन थे। कथानक के अनुसार एलाचार्य नामक जैन साधु कुरल के कर्त्ता थे। यह एलाचार्य कितनेक के मतानुसार महान् जैनमुनि श्री कुन्दकुन्द के अतिरिक्त और कोई नहीं है, जिन्होंने जैन धर्मका प्रचार तामिल देशमें ईसा की प्रथम शताब्दि में किया था।" (See the Studies in the South Indian Jainism. pt. 1. p. 42-43) इस से साफ प्रकट है कि 'कुरल' के कर्त्ता भी श्री कुन्दकुन्द जी थे यह ग्रन्थ ईसा की प्रथम शताब्दि में संकलित किया गया गया था, यह बात अगाड़ी प्रो० चक्रवर्ती के लेखांश से प्रमाणित होती है। अतएव इस प्रकार भी श्री कुन्दकुंदाचार्य का समय ईसा की प्रथम शताब्दि ही प्रगट होता है। जिस पर डा० बी० शेषागिरि राव एम. ए. पी. एच. डी. आदि इस विषय में लिखते हुए लिखते हैं कि "तेलुगू साहित्य और भाषा में पर्याप्त साक्षी इस बात की पुष्टि में प्राप्त है कि जिस प्राकृत भाषा में कुन्दकुंद ने इस (पंचास्तिकायसार) ग्रन्थ वा अन्य को रचा है वही वा उसके सदृश भाषा आंध्रकलिंग देश के अधिवासियों में उस समय अच्छी तरह समझी हो नहीं जाती थी, प्रत्युत दैनिक बोलचाल में व्यवहृत होती थी जिस समय का विवरण रामतीर्थम् की मुद्रायें (Clay Seals) और अमरावती के शिलालेख करते हैं, यह समय ईसा की प्रथम या द्वितीय शताब्दि के प्रारम्भिक वर्ष हो सकते हैं।" * अतएव श्री कुंदकुन्दाचार्य का समय ईसा की ११ वीं शताब्दि नहीं मानी जा सकती। शेष में विश्वकोष की चौथी बात यथार्थता को लिये हुए प्रकट करती है कि कुन्दकुन्दाचार्य के समय तक श्वेताम्बर–दिगम्बरों का पूर्ण पृथकत्व नहीं हुआ था, यद्यपि श्वेताम्बर–दिगम्बर प्रतिभेद की उत्पत्ति इससे पूर्व श्रुतकेवली भद्रबाहु के समय में ही हो चुकी थी। यह भी संभाव्य है कि श्री कुन्दकुंद के अन्तिम जीवनकाल में पूर्ण पृथकत्व दोनों संप्रदायों में हो

* Jain Gazette, vol. XVIII, p 91.

गया हो, क्योंकि श्री दर्शनसार में इसका समय विक्रम सं० १३१ दिया है। श्री कुंदकुन्द के प्रारम्भिक जीवन में यह प्रतिभेद गौण होता प्रतिभाषित होता है क्योंकि यदि ऐसा न होता तो श्वेताम्बर लोग कुन्दकुंदाचार्य के धर्मोपदेश को स्वीकार नहीं करते। अतएव विश्वकोष की इस बात से भी कुंदकुंदाचार्य का स्वयं उसके द्वारा निर्णितकाल अयुक्त प्रमाणित होता है। इस प्रकार हिंदी विश्वकोष में श्री कुंदकुन्दाचार्य के विषय में जो वर्णन है, वह भ्रमात्मक प्रगट होता है। वस्तुतः एक आदर्शग्रंथ में इसप्रकार का वर्णन हिन्दीसाहित्य का गौरव वर्धक नहीं है। अतएव क्या हम आशा करें कि हिन्दी विश्वकोष के मान्य सम्पादक महोदय इस विषय में पुनः विचार करके भ्रमात्मक बातों का यथार्थ स्पष्टीकरण करेंगे?

यहाँ तक के वर्णन से पाठकों को श्री कुंदकुन्दाचार्य के जीवन सम्बन्ध में विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ होगा। इसलिए उनके जीवन के सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि से यथार्थ परिचय प्राप्त कराने के लिये हम पाठकों के समक्ष दक्षिण भारत के प्रख्यात् जैन विद्वान् प्रो० ए. चक्रवर्ती, एम. ए. आदि का तद्विषयक लेखांश † आगामी उपस्थित करेंगे। उस से विशेष परिचय प्राप्त होगा।

—कामताप्रसाद जैन, उ० सं०।

† Jain Gazette, vol. XVIII. pg. 4-16.

प्रेम के पुजारी हैं!

शिव रति रागी पै विरागी तन नागी हो, रमत सुख सेजतुपै आतम अटारी हैं।
रूप है अनूप शिव नगर के भूप सुखरस के हैं कूप निज भाव के भिकारी हैं॥
प्रेम में गरक-पर-प्रेम तें फरक अनुभूति तें सुलक सुखचन्द के चकोरी हैं।
द्वेष को न आने मोह मान को न माने राग रोष को न ठाने सांचे 'प्रेम के पुजारी हैं'॥

—विजयकुमार न्यायतीर्थ।

सम्पादक का कर्त्तव्य

(ले०—श्रीयुत पूरणचन्द नाहर एम०ए०,एम०आर०ए०एस०)

आज कल जिस ओर दृष्टिपात करते हैं उधर ही साधारण पत्र, मासिक पत्रिकाओं और छोटे बड़े प्रकाशित ग्रन्थों का बहुधा प्रचार देखने में आता है। दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि सर्व प्रकार के सामयिक साहित्यपत्र भारत के प्रायः सब ही प्रान्तों से प्रकाशित हो रहे हैं। अजैन सामयिक और स्थाई साहित्य की तो गणना होनी कठिन है; परन्तु प्राकृत संस्कृत गुजराती हिंदी आदि भाषाओं में प्रकाशित जैन ग्रन्थों और साहित्य पत्रों की संख्या भी प्रति दिन बढ़ती ही चली जारही है। किन्तु यह अनुभव सिद्ध है कि थोड़ा सा सुश्रृङ्खलित कार्य बहुत से शृङ्खला विहीन और सत्रुटि कार्य से कहीं अच्छा होता है। कभी २ तो यथावत् न किये हुए काम

का होना उस के न होने के ही समान हो जाता है। जैसे किसी पुस्तक का अशुद्ध और नष्ट भ्रष्ट संस्करण विद्वानों की दृष्टि में बहुत ही शोचनीय होता है। विशेष साहित्य के ग्रन्थों के सम्पादन के लिये बड़े शक्तिशाली हाथों और व्युत्पन्न मस्तिष्क की आवश्यकता है। मैं सम्पादन के कार्यको दो भागों में लेता हूं। (१) ग्रन्थ सम्पादन (२) सामयिक पत्र सम्पादन।

प्रथम सर्व प्रकार के साहित्य प्रचार के कार्य में प्राचीन साहित्य का सम्पादनकार्य विशेष कठिन है। प्राचीन साहित्य के प्रचार के लिये सम्पादक को सर्व प्रथम उस की भाषा पर ध्यान देना होगा जब तक मूल ग्रन्थकर्त्ता का विचार अविकल रूप से सर्व साधारण में न प्रचारित हो तब तक उस ग्रन्थ का सच्चा प्रचार हुआ ऐसा समझना नहीं चाहिये। और यह तब ही हो सकता है कि जब सम्पादक मूल ग्रन्थकार के आशय को ठीक समझ कर अपने काम में हाथ दे। यह हम लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि प्रचलित भाषा पांच २ या दस २ या सौ सौ कोसों पर कुछ न कुछ बदली हुई प्रतीत होती है। और हम जितने अधिक दूर जायेंगे उतना ही हमें प्रत्यक्ष और परोक्ष अन्तर मिलेगा। यहां तक की दो तीन सौ कोस पर जाकर इतना अन्तर हो जाता है कि परस्पर की भाषा समझने में भी कठिनाइयां पड़ती हैं। देखिये यदि कोई काश्मीर से पांच २ या दस २ कोस प्रति दिन चलता हुआ बंगाल पहुंचेगा तो उसे बंग भाषा सीखे बिना ही समझ में आती जायगी। और यदि विश्राम करता हुआ जावे तो उसे क्रमागत अन्तर प्रतीत नहीं होगा। संयुक्त प्रान्त की भाषा पंजाब व बिहार से समता रखती है, बिहार की भाषा में बंगला रंग चढ़ने लगता है, मिथिला होते हुए बंगाल पहुंचने तक वही पंजाबी बंगला हो जाती है। अथवा यदि बंगाल से पंजाब जांय तो वही बंगला भाषा क्रमशः पंजाब पहुंचने तक पंजाबी बनी हुई मिलेगी।

जो सज्जन किसी भाषा के प्राचीन साहित्यके मर्मज्ञ होना चाहते हैं उन्हें आवश्यक है कि प्रथम उसी भाषा के वर्त्तमान रूप से यथेष्ट परिचित होकर क्रमशः पीछेको चलें, जैसे कि हमें हेमचन्द्राचार्यके प्राकृत व्याकरण का पूरा ज्ञान हो तो पहिले वर्तमान समयके कुछ प्राकृत व्याकरण ग्रन्थ देखकर क्रम से आगे के ग्रन्थ पढ़ते चले जांय। और उन के समय के पीछे के जहां तक ग्रन्थ मिलते जांय, इसी प्रकार बढ़ते हुए वहां तक देखे जांय, तो उन के व्याकरण के मर्म जानने में बहुत कम कठिनाई होगी। अस्तु इस रीति से ज्ञान प्राप्त कर लेने पर ही हम अपनी टीका टिप्पणी द्वारा यथावत् मूल ग्रन्थकर्त्ता के मनोभावों को शुद्ध रूप से विद्वानों के समक्ष रखने को समर्थ हो सके हैं। यदि एक बार ही छलांग मार कर प्राचीन साहित्य सम्पादन करने बैठेंगे तो हमें अगणित ठोकरें खानी पड़ेंगी और हम भरोसे के साथ न कर सकेंगे कि हमारा अर्थ निस्सन्देह ग्रन्थकार के भाव का यथावत द्योतक है। अतएव ग्रन्थसम्पादनकार्य के लिये भाषा का ज्ञान अत्यावश्यक है। इसी ज्ञान से सम्पादकों को लेखों की भूलें, सुलेखों के अक्षरों की मरोड़ें और उनकी व्यक्तिगत अभिरुचि और भावों का सौन्दर्य सम्पूर्ण रूप से प्रतीत

हो जायगा । और यही भावना ज्ञानरूपी कवच धारण करके सर्व प्रकार की कठिनाईयों से युद्ध करते हुए हम सम्पादन रूप कठोर कार्य क्षेत्र में अग्रसर होते चले जायगे ।

दूसरा ग्रन्थ निर्वाचन कार्य भी कठिन है । कौन से ग्रन्थ का जीर्णोद्धार का प्रचार पहिले होना आवश्यक है, वह ग्रन्थ किस विषय का है और कितना पुराना है, उस के सम्पादन कार्य में कौन समर्थ हैं कि जिन्हें वह सौंपा जाय इत्यादि बातें इस विषय में विचारणीय हैं । हमारे विचार से दार्शनिक वा वैज्ञानिक ग्रन्थों की रक्षा सर्वोपरि है । परन्तु ये हर किसी के हाथों से न्याय पाने वाले विषय नहीं हैं । अतएव इस विषय में यदि इन बातों पर ध्यान नहीं दिया गया तो इस कार्य में लगाई हुई शक्ति और अर्थ व्यर्थ ही जायगा ।

प्राचीन जैन साहित्य के निर्वाचन पर ही उन का सम्पादन कार्य सर्वथा निर्भर है। आजकल इस कार्य में किसी प्रकार का नियम, किसी भाँति की शृङ्खला, कोई विषय विभाग का विचार पूर्ण रूप से नहीं किया जाता है । कहां तक कहें कुछ है ही नहीं ! हमें आज तक पूरा पता नहीं कि हमारे घर में कितने व्याकरण हैं, कितने कोष हैं, और उनमें से किन्हें पहिले सम्पादन करना उचित है ? पुस्तकों के निर्वाचन सम्पादन वा प्रकाशन में कुछ न कुछ उद्देश, सिद्धान्त कोई निश्चित अभीष्ट अवश्य होना चाहिये । परन्तु वह हमारे यहां कुछ भी नहीं । एक पुस्तक का एक अंश अथवा भाग छपा है तो दूसरे की कुछ भी खबर नहीं ली गई । इसी प्रकार से समय का विचार या विषय का विभाग सम्पादकों को या तो हुआ ही नहीं या उन्होंने उसे कार्य में परिणत करना व्यर्थ समझा ।

जिस समय देश में मुद्रायन्त्र न थे पुस्तकों के लिखवाने वा प्रकाश करने में बड़ी कठिनाइयां होतीं थीं, पर जब से छापे की प्रथा भारत में प्रारम्भ हुई हमारी बहुत कठिनाइयां दूर हो गईं । परन्तु दुःख है कि अपने जैन भ्राताओं ने छापे का उतना लाभ नही उठाया कि जितना अन्य हिन्दू भ्राताओं ने उससे उठाया है । हम मुद्रायन्त्र का इतिहास देखते हैं तो आज सवा सौ वर्ष से भारत में छापने का काम चल रहा है । सब से पहिले ईस्वी सन् १७९२ में बङ्गाल में बंगले टाइप में संस्कृत पुस्तक, छापी गई थी । जैन धर्म की सब से पहिली छपी पुस्तक, जो मेरे देखने में आई है, वह ई० सन् १८६८ में मुद्रित हुई थी । परन्तु अनेकबार हमारी अनुदारता और अन्ध विश्वास हमें संसार के साथ समुन्नत होने में सहस्र बाधाएँ डालता है । कितनेक महाशय ग्रन्थों के छापने के ही विरोधी हैं कितने ही लिखित पुस्तकों की भूलों के संशोधन के शत्रु हैं यहां तक कि बहुतों को शब्द अलग २ काट कर लिखने और ठहरने के चिन्हों और विरामों के देने का भी विरोध है ! समय परिवर्तन शील है । हमें संसार के साथ चलना ही नहीं है किन्तु हमें अपने धार्मिक ग्रन्थ साहित्य भंडार और अपने प्राचीन गौरव को सुरक्षित रखना है । इन महत कार्यों के लिये हमें महत उद्योग करना होगा । हमारा कार्पण्य, हमारी अन्धपरम्परा, हमारा हठ काम न देंगे । इस का अन्तिम फल यह होगा कि संसार प्रकाश में रहे और जैन अन्धेरे गर्त्त में ही पड़े पड़े देखा करें ।

वीर

श्रीयुत लक्ष्मीचन्दजी जैन, एम० ए०, एल० एल० बी०,
प्रोफेसर म्योर सेन्ट्रल कालिज, इलाहाबाद।

हिमालय प्रेस, मुरादाबाद।

कोई ग्रन्थ क्यों न हो उसका गौरव उसके कर्त्ता के हाथ से निकलने पर जो था उतना ही नहीं बल्कि उससे कई गुना अधिक बनाये रखने के लिये हमें आवश्यक है कि हम उन्हें सुपात्र उत्तराधिकारी की भांति अच्छी प्रकार समालोचना और उपयुक्त टीका टिप्पणी के साथ बड़ी सावधानी से प्रकाशित करें। कई प्रकार के मोटे पतले अक्षरों का और आवश्यकतानुसार लाल पीले रंगों से संकेतों का व्यवहार जो बहुत प्राचीन काल से चला आता है, यह नियम भी सम्पादकों को पूरा ध्यान में रखना चाहिये । इसके अतिरिक्त ग्रन्थ को सुबोध और सर्वप्रिय समय बचाने वाला करने के लिये प्रकाशित करने के समय ग्रन्थ की आवश्यकीय सूचियां दाखिल करनी भी सम्पादक का प्रधान कर्त्तव्य है । यदि पुस्तक शुद्ध ही नहीं हुई पूरी छान बीन जांच पड़ताल के साथ छापी ही न गई तो दूसरी चीज बातों पर कौन ध्यान देता है ।

यह अधिक समय की बात नहीं है कि मुर्शिदाबाद निवासी स्वर्गीय रायबहादुर धनपतसिंह जी ने बहुतसा द्रव्य व्यय करके श्वे॰ जैन सिद्धान्त ग्रन्थों को सम्पादित कराकर प्रकाशित किया था। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि वे पुस्तकें अशुद्धियों के कारण विद्वानों में यथेष्ट सम्मानित नहीं हुईं । इनके प्रकाशित ग्रन्थों पर श्रद्धेय डाक्टर हार्नेल साहब लिखते हैं:—

"As an edition it is worthless,deing made with no regard whatsoever to textualar grammatical correctness,both in its Sanskrit and Prakrit portions." (Upesak-dasa--Bibliotheca Indica Series. Intro , page XI,Calcutta 1890.)

तात्पर्य यह है कि इन ग्रन्थों के सम्पादन कार्य को आपने बिलकुल रद्दी बतलाया । परन्तु यह दुःख की बात है कि धन लगाया जाय और फल उलटी बदनामी मिले । यह केवल थोड़ी सी असावधानी का ही फल होता है । अतएव उपर्युक्त विषयों पर ध्यान रखकर सम्पादन कार्य सदा धैर्य के साथ करना चाहिये । बङ्गाल की प्रसिद्ध एशियाटिक सोसाइटी से उक्त डाक्टर हार्नले ने भी उपासक दशा नामक जैनश्वेताम्बर आगम का सानुवाद संस्करण प्रकाशित किया है । आज तक भारतवर्ष से प्रकाशित कोई भी जैन ग्रन्थ इसके मुकाबले में नहीं छपा है। सम्पूर्ण आवश्यकीय टीका टिप्पणियों और सूचियों के साथ ऐसा शुद्ध संस्करण एक आदर्श स्थल है। हाल में अमरिका के "Harvard Oriental Series" में हार्टेल साहबने पूर्णचन्द्र मणिकृत पचतंत्रका एक संस्करण सम्पादित किया है । आपने इस कार्य में लगभग ६० हस्तलिखित पुस्तकों को बड़े कष्ट से दूर दूर से एकत्रित करके मूल को मिलाया है और एक २ अक्षरों को देखा है । कितने ही पाठान्तरों और कथाओं के हेर फेर पर सतर्क वादानुवाद किया है । भूलों का परिशोधन और उपयुक्त प्रस्तावना और परिशिष्टों द्वारा ग्रन्थ को विभूषित करना आप का ही काम है । इतने आन्तरिक गुण होने पर भी बाह्यरूप पर कम ध्यान नहीं दिया गया है मैंने आजतक इतना सुन्दर संस्करण किसी भी देशी पुस्तक का नहीं देखा। अतएव मैं विश्वास करता हूं कि सम्पादन कार्य इस ही उपर्युक्त प्रकार के आदर्श पर होने से चाहे वे ग्रन्थ प्राचीन हों वा नवीन हों—समस्त संसार में सुयोग्य सम्पादन के बल से निस्सन्देह समा-

दर्शित होंगे। अशुद्ध पुस्तकों से बहुधा विद्या के स्थान पर अविद्या ही फैलती है।

पाठकगण यह न समझें कि मैं केवल अपने ग्रन्थ सम्पादन कार्यों की त्रुटियाँ लिख रहा हूं। नहीं प्रत्युत मुझे आजतक यहां के प्रकाशित अमूल्य ग्रन्थों के अच्छे २ संस्करणों का बराबर स्मरण है। अपने जैन श्वेताम्बर सिद्धान्त ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य में बम्बई की श्री आगमोदय समिति तथा रायचंद्र जैन शास्त्रमाला सूरत की श्री देवचंद लाल भाई जैन पुस्तकोद्धार संस्था, बनारस की श्री यशोविजय जैन ग्रंथमाला भावनगर की श्री जैनधर्म प्रसारक सभा, जामनगर के पं० श्रीमान् हीरालाल हंसराज ने जो २ ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं वे अवश्य प्रशंसनीय हैं।। हमारे अच्छे २ दिगम्बर जैन सिद्धान्त ग्रन्थों का इन वर्षों में जैन सिद्धान्त भवन आरा से, बम्बई की माणिक्यचंद जैनग्रन्थ माला और जैन ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, तथा कलकत्ता की जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था से एवं सूरत के दि० जैन पुस्तकालय तथा लाहौर के स्व० ज्ञानचंद जी द्वारा प्रकाशित हुआ है। साहित्य प्रेमी श्रीमान् बड़ोदा नरेश की तरफ से गायकवाड़ ओरियंटल सिरीज़ में भी कई जैन ग्रन्थों का अनुपम संस्करण छप चुका है और छप रहा है। बम्बई संस्कृत सिरीज़ में भी कई प्राकृत संस्कृत जैन ग्रन्थों का अच्छा सम्पादन हुआ है। इन के सिवाय इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटाली नार्वे आदि स्थानों में अजैन विद्वानों ने जो कुछ मूल, अनुवाद टीका टिप्पणियों के साथ ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं उन के लिये समस्त जैन समाज आभारी है।

शेष में दूसरा विषय सामयिक पत्रों के सम्पादन का कार्य है। यह भी काम बहुत कठिन है। आजकल सम्पादक उसे कहते हैं कि जो महाशय प्रबन्ध लिखें, प्रूफ पढ़ें और पत्र पत्रिका छपवावें। परन्तु यह धारणा भी भ्रमपूर्ण समझना चाहिये। इस कार्य के सम्पादक का प्रधान कर्त्तव्य उचित विषयों का चुनना, उन पर लिखे लेखों को पसन्द करना उन्हें उचित स्थान देना और निष्पक्षपात के साथ पूर्णरूप से सम्पादन का कार्य करना है। यदि सम्पादक स्वयं लिखें तो कोई अपराध नहीं है, परन्तु यह सम्भव नहीं है कि आप औरों के ही लेखों को पढ़ कर उन के गुण दोषों को देखें और सम्पादन के प्रत्येक काम को स्वयं देख रेख करें और स्वयं ही लिखते रहें। परन्तु आवश्यकानुसार उन्हें अपनी लेखनी से भी काम लेना चाहिये तो भी मुख्यतः विषयों का सुधार पत्रों के संपादक का प्रधान कार्य होना चाहिये।

पत्रों के संपादन में साहस और धैर्य के साथ धन, समय और शक्ति की भी आवश्यकता है। और इन सबों का सद्व्यय सर्वथा वांछनीय है। मेरे विचार से निम्न लिखित कई बातों पर ध्यान रखने से पत्र सपादन कार्यों में सहायता मिलेगी:—

(१) पत्र पत्रिका की भाषा जितनी सुबोध होगी उतनी ही अधिक पढ़ी जायगी। कठिन भाषा के पत्रों को केवल विद्वान् ही पढ़ते हैं।

(२) पत्र पत्रिकायें ऐसी प्रकाशित होनी चाहियें कि जिन्हें देखकर चित्त प्रसन्न हो। उन में कागज़ आदि भी ऐसे दिये जायँ कि वह कुछ समय अवश्य ठहरें।

(३) उनके मूल्य पर भी ध्यान रखना चाहिये।

साम्पत्तिक सिद्धान्त के अनुसार थोड़े नफे से अधिक माल बेचना, बहुत लाभ से थोड़ा माल बेचने से अधिक लाभदायक होता है । जहाँ तक बने लागत से दूना ही दाम रक्खा जाय तो ठीक है। यदि कम करना संभव हो तो और भी अच्छी बात है।

(४) पत्र पत्रिका प्रकाशित होने पर उन का सर्वत्र प्रचार होना चाहिये। इस कार्य में देशान्तरों में अधिक अर्थ व्यय करते हैं।

(५) प्रकाशित विषयों पर स्वतन्त्र आलोचना आमन्त्रित करना चाहिये। इससे वे विषय निर्दोष होते जाते हैं और उनकी त्रुटियें भी ज्ञात होती जाती हैं। कहना बाहुल्य है कि समालोचना से पुस्तक की बिक्री भी बढ़ती है।

अंग्रेजी में सम्पादन कार्य के विषय पर कई ग्रन्थ हैं परन्तु यहाँ इस विषय की चर्चा कम रहने के कारण अपने भारतवासी सम्पादन कार्य में अधिक अग्रसर नहीं हो सके हैं। वर्तमान समय में इस विषय की आवश्यकता प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस कारण आशा है कि सम्पादन कार्य के गुरुत्व पर उचित ध्यान रखने से इस देश में भी सम्पादक लोग सफलता प्राप्त करेंगे और सर्वत्र प्रशंसापात्र होवेंगे।

क्या अन्य जातियों में विवाह-संबन्ध जातिभेद को मिटाने वाला और जैनसमाज को हानिकारक होगा ?

(लेखक—श्रीयुत् ऋषभदास जी जैन बी० ए०)

प्रिय सज्जनो! जैनसमाज में कुछ काल से अपनी अन्य जातियों में विवाह संबंध करने की चर्चा चल रही है। जिन लोगों का विचार इस प्रकार के विवाह के अनुकूल है उनका कहना है कि जैनसमाज की संख्या घटती जा रही है और कुछ जातियों की संख्या घटते २ बहुत ही कम रह गई है। सुना है ऐसी जातियां भी हैं जिनकी संख्या कम होते २ वर्तमान में १०० या उससे कम की रह गई है कि जिससे उनको अपनी जाति में विवाह संबंध के लिये क्षेत्र नहीं है। और यदि उनका विवाह-संबंध अन्य जातियों में न हुआ तो थोड़े ही दिनों में उन जातियों का नामोनिशान दुनियां से मिट जायगा। जिससे जैनसमाज की संख्या और अधिक कम होजायगी। इसलिये यदि हमको उन जातियों को काल के गाल से बचाना है तो उनको अन्य जातियों में विवाह संबंध करने देना चाहिये। इस तरह अन्य जातियों में विवाह संबंध जारी करने से बहुत सी जैनजातियां मृत्युसे बच जायंगी। और जैन समाज की संख्या घटने से रुकेगी। दूसरे बहुत सी जैन जातियों में नवयुवक बिन विवाहे मौजूद हैं, जिनका विवाह उनकी जाति की संख्या कम होने के कारण अथवा बहुत से गोत्र व सांके आदि बचाने की वजह से नहीं हो सकता और ऐसे

आयुपर्यन्त कुँवारे रहने से अक्सर बदचलन होकर अपनी ज़िन्दगी खराब कर लेते हैं और समाजमें व्यभिचार फैलताहै और इनके अतिरिक्त सन्तान रहित मरजाने से समाज की संख्या भी नहीं बढ़ने पाती। इसलिये यदि अन्य जातियों में इनका विवाह संबंध होने लगे तो इनका जीवन व समाज व्यभिचार से बचे और इनके सन्तान उत्पन्न होकर समाज की संख्या में भी बढ़वारी हो। तीसरे विवाह संबन्ध का बहुत छोटा क्षेत्र शारीरिक उन्नति में भी हानिकारक होता है। विवाहसम्बन्ध का क्षेत्र विशाल होने से सन्तान बलवान उत्पन्न होगी और समाज की शारीरिक दशा सुधरेगी। चौथे जैन समाज की भिन्न २ जातियों में रोटी-बेटी का व्यवहार खुलने से आपस में ऐक्य और सहानुभूति भी अधिक होगी। अब एक जाति अपने को दूसरी जाति से बिलकुल अलग समझती है और कभी कभी तो एक दूसरेको नफरत की निगाह से देखती है। एक जाति पर कुछ आपत्ति आती है तो दूसरी जाति उसकी आपत्तिमें सम्मिलित होकर उसके दूर करनेका कुछ प्रयत्न नहीं करती। वे समझती हैं कि हम तो इन से अलग हैं। हमारी जाति तो इस आफत से बची हुई है। हम क्यों फिजूल झंझट में पड़ें। परन्तु जब आपस में बेटी रोटी होने लगेगी तो ऐक्यता और सहानुभूति के भाव अधिक निरत जावेंगे। इस विषय में कतिपय महाशय कह दिया करते हैं कि ऐक्यता-अनैक्यता से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं। क्या एक जाति के मनुष्यों में या रिश्तेदारों में अनैक्यता नहीं होती है? बेशक होती है। परन्तु बात यह है कि सामान्य नियम हुआ करता है और उस नियम में विशेष हालतें भी होती हैं। जो एक जाति के मनुष्यों की अथवा रिश्तेदारों की अनैक्यता विशेष हालत के उदाहरण हैं। यदि किसी खास कारण से एक जाति के मनुष्यों में अथवा रिश्तेदारों में अनैक्यता होजाती है तो उससे यह सामान्य नियम कदापि नष्ट नहीं होसकता कि जिन लोगों में परस्पर विवाह-शादी-रोटी बेटी होगी उनमें प्राकृतिकरीत्या एक दूसरे से अधिक प्रेम व सहानुभूति होगी। और वे प्राकृतिक रूप में एक दूसरे के दुःखदर्द में अधिक शरीक होंगे और दुश्मन से सामना करने के लिये एक हो जावेंगे। अस्तु जैनसमाज की विविध जातियों में परस्पर रोटी बेटी का व्यवहार होने से ज़रूर जैन समाज में ऐक्य और सहानुभूति बढ़ेगी।

अब दूसरे पक्ष के लोग कि जिनकी राय अन्य जातियों में विवाह संबंध करने के विरुद्ध है वे कहते हैं कि इससे जाति भेद मिट जायगा। जाति-पाँति उड़ जायगी। इसी हेतु हिन्दी जैन गज़ट के खास अङ्क में भी एक लेखक महाशय इस से पहिले हानि यह ही बतलाते हैं कि "अपने को कौन किस जाति का कहेगा।" जिसका मतलब यह ही है कि अन्य जातियों में विवाह संबंध से जाति भेद मिट जायगा। इस विचार के कतिपय सज्जन तो अतीव कठोर और अशिष्ट शब्दों का (जैसे कुछ ऐसे शब्द कि यह लोग धर्मभ्रष्ट हो गये हैं और समाज को भी धर्म से भ्रष्ट करना चाहते हैं और हम धर्म की रक्षा के लिये सब कुछ लिखते हैं इत्यादि।) प्रयोग करके और जाति भेद लोप हो जाने का भय दिखलाकर आन्दोलन करते हैं। परन्तु मेरी सम्मति में पहिले विचार के लोग न स्वयं धर्म भ्रष्ट हुये हैं और न समाज को धर्म

ध्वंस करना चाहते हैं प्रत्युत वह भी समाज के कुछ फायदे को ही लक्ष्य करके ऐसा कहते हैं। यदि उनके उस विचार का उत्तर देना है तो मुलाइमियत, प्रेम और सभ्यता के ही शब्दों में देना चाहिये। इसके खिलाफ़ करने से समाज में अनैक्यता व कलह अधिक बढ़ती है और आपकी बात जो प्रेम व मुलाइमियत के शब्दों में कही हुई शायद कुछ समझ में आ जाती उनकी समझ में नहीं आती। उधर आपकी बात का भी महत्व कम हो जाता है। और अब देखना यह है कि इन महाशयों का यह कहना कि अन्य जातियों में विवाह संबंध से जाति भेद का लोप हो जायगा ठीक है अथवा नहीं। मेरी राय में इनका यह कहना ठीक नहीं है। अन्य जातियों में विवाह सम्बन्ध से जाति भेद नहीं मिटेगा। और इसके समझने के लिये ज़रा इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है कि विवाह संबन्ध अपने गोत्र में नहीं होता अन्य गोत्र में होता है तो क्या अन्य गोत्र में विवाह संबन्ध से गोत्र भेद मिट गया ? अस्तु जब कि अन्य गोत्र में विवाह संबन्ध होने से गोत्र भेद नहीं मिटता तो अन्य जातियों में विवाह संबन्ध होने से जाति भेद क्यों मिट जायगा ? अब यदि गोयल गोत्र का लड़का है और गर्ग गोत्र की लड़की है तो उनका विवाह संबन्ध होने से उस संबन्ध से उत्पन्न सन्तान का गोत्र गोयल ही रहता है और इस तरह गोत्र भेद का लोप नहीं होता। तो फिर इसी तरह अन्य जाति विवाह सम्बन्ध होने की दशा में यदि खंडेलवाल जाति का लड़का है और अग्रवाल जाति की लड़की है तो उस संबन्ध से उत्पन्न सन्तान की जाति खंडेलवाल ही क्यों नहीं रहेगी ? इस तरह अन्यजाति विवाह संबन्ध से समझ में नहीं आता कि जाति भेद किस तरह उड़ जायगा। अस्तु अन्य जाति सम्बन्ध से जाति भेद का लोप मानना, मेरी राय में, केवल एक मिथ्या भ्रम है। और इससे स्वयं भय करना अथवा दूसरों को इस का भय दिखलाना बिलकुल वृथा है। वास्तवमें जिस प्रकार अन्य गोत्र में विवाह संबंध करने से गोत्रभेद बराबर कायम रहता है उसी तरह अन्य जाति में विवाह संबन्ध से जातिभेद बराबर कायम रहेगा। इससे जातिभेद कदापि नहीं उठ सकता। इसके अतिरिक्त प्रथमानुयोग के ग्रन्थोंसे मालूम होता है कि पहिले ज़माने में तीनों उच्चवर्णों में* विवाह संबंध हो जाता था, परन्तु इस संबन्ध से उस ज़माने में वर्ण व्यवस्था का लोप नहीं हुआ। तो फिर समझ में नहीं आता कि अब किसी एक वर्ण की उपजातियों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होने से जातिव्यवस्था क्यों लोप हो जायगी ?

हिन्दी जैनगज़ट विशेषाङ्क के पृष्ठ ७५ पर जो अन्य जाति सम्बन्ध की हानियां दी हुई हैं उन पर भी मैं कुछ लिखना आवश्यक समझता हूं।

*श्री आदि पुराण में तो चारों वर्णों को अपने और अपने से इतर वर्ण में विवाह संबंध करने का विधान है। इस ही अनुरूप प्रमाणिक जैन दाय-भाग ग्रन्थों में भी आचार्यों ने सवर्णी और इतरवर्णीय पत्नी से उत्पन्न संतानके स्वत्व पृथक् पृथक् दिये हैं। कथानकों में भी ऐसे उदाहरण मिल सकते हैं। इस कारण परस्पर जैन जातियों का विवाह कानून शास्त्र विरुद्ध नहीं है।

—स० स०

पहिले नम्बर की हानि तो जातिभेद का लोप होना बतलाया जाता है। इसका जवाब तो ऊपर आ चुका कि इससे जातिभेद का लोप नहीं हो सका। दूसरे से पांचवें नंबर तक की हानियाँ जो बतलाईं गई हैं उनमें लेखक महाशयने पहिले ही से इस बात को मान लिया है कि वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय कुरीतियाँ बराबर जारी रहेंगी ? यह कभी बन्द नहीं होंगी। नहीं मालूम इन कुरीतियों की ओर ऐसी मुलाइमियत की दृष्टि क्यों रक्खी जाती है ? और क्यों यह ख्याल किया जाता है कि यह हमेशा जारी रहेंगी ? यदि एक सुधार जारी किया जाता है तो क्या उसके यह अर्थ हैं कि पहिले से जो कुरीतियां फैली हुईं हैं उन को बन्द नहीं किया जायगा ? और वह बन्द नहीं होंगी ? उनको तो पहिले बन्द करना चाहिये। और अपने दिल में यह पुख्ता इरादा और पक्का विश्वास कर लेना चाहिये कि उनको बन्द किया जायगा और वे ज़रूर बन्द होंगी। मेरे ख्याल में तो अब तक जो यह कुरीतियां एक अच्छी संतोषजनक हद तक बन्द नहीं हुई हैं उसका कारण यह ही है कि लोग दिल से इन कुरीतियों को बुरा नहीं समझते। इनको पाप नहीं ख्याल करते। सभायें इनके रोकने के प्रस्ताव ज़रूर पास करती हैं परन्तु केवल ख़ाना पूरी की तौर पर। वे यह समझती हैं कि शिक्षित लोग इन कुरीतियों को बुरा ख्याल करते हैं इसलिये शिक्षित सरकिल में सभा की अच्छी नामवरी क़ायम रखने के लिये इस विषय के प्रस्ताव ही—चाहे वे कैसे ही ढीले व मुलायम शब्दों में हों पास कर देने चाहियें। और स्थानीय पंचायतें, चौधरी चौकड़ायत व पुराने विचार के महानुभाव तो इन कुरीतियों को बिल-कुल बुरा नहीं समझते। वे तो ऐसी शादियों में दिल खोल कर शरीक होते हैं। मेरे ख्याल में जो यह कुरीतियाँ उस समय तक बन्द नहीं होंगी जब तक हम इन कुरीतियों को विधवाविवाह के समान ही बुरा नहीं समझेंगे। क्योंकि वास्तव में यह कुरी-तियां ही विधवाविवाह की जन्मदाता और प्रचा-रक हैं, अब केवल विधवाविवाह की चर्चा करने वालों को बुरा कहने व उनके खिलाफ आन्दोलन करने से काम नहीं चलेगा। यदि हमको विधवा विवाह का प्रचलित न होना इष्ट है तो जिस दृष्टि से हम विधवाविवाह को देखते हैं उस ही दृष्टि से हमको इन कुरीतियोंको देखना चाहिये। बिरा-दरी से पृथक् करना व मंदिर जी में देवदर्शन बन्द करना आदि जो दंड हम विधवाविवाह करनेवालों के लिये तजवीज़ करते हैं वह ही दण्ड हमको वृद्ध विवाह व कन्याविक्रय करनेवालों के लिये भी तज-वीज़ करना चाहियें। यद्यपि मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि धर्म का द्वार पापी से पापी के लिये भी बन्द नहीं होना चाहिये। परन्तु यदि इस व्यभि-चार को संभालने से विधवाविवाह के मूलकारण वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, कन्याविक्रय समाज से दूर होकर समाज की हालत सुधर जाय तो कुछ मुज़ायका नहीं। व्यवहार धर्म के पालन कराने में कभी उच्च आदर्श से कुछ नीचे भी आना पड़ता है। और अब ज़रूरत इस बात की है कि त्यागी व पंडित महाशय जिस प्रकार हरी, रस आदिका त्याग कराते हैं उसी तरह वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, कन्याविक्रय करने, ऐसी शादियों में

शरीक होने, ऐसी शादी करनेवालों की मदद व उनके साथ सहयोग करने का त्याग करायें और महासभा आदि को ज़रा तकड़े बनकर कड़े व मुनासिब शब्दों में वृद्धविवाह, कन्याविक्रय के ख़िलाफ़ प्रस्ताव पास करना चाहिये और अपने उपदेशकों को हिदायत करनी चाहिये कि वे इस बात को अपना लक्ष्य बनालें कि जहां जावें वहां की पंचायत, वहां के चौधरी चौकड़ायत और वहां की जनता के दिलों पर वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय आदि को विधवाविवाह के समान ही महान पाप होने का नक्श जमादें। मेरे ख़याल में उपर्युक्त प्रयत्न से यह कुरीतियां दूर हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त यह समझ में नहीं आता कि जो हानि इन कुरीतियों से अब पहुंच रही है, अन्य जाति विवाह संबन्ध होने से इससे अधिक और हानि क्यों पहुंचेगी? प्रत्युत मेरे विचार में तो उस हानि में किसी क़दर कमी होजायगी। क्योंकि अब कतिपय महाशय अपनी जाति में योग्य वर न मिलने के कारण भी अधिक उमर के वर के साथ अपना लड़की विवाह देते हैं। परन्तु जब अन्य जाति सम्बन्ध से विवाह का क्षेत्र बढ़ जायगा तो योग्य वर मिल जाने का और अधिक अवसर होजायगा। और इन कुरीतियों के बन्द हो जाने की दशा में तो अन्य जाति सम्बन्ध से वे हानियां जो हिन्दी जैन गजट के लेखक ने अपने लेख में नं० २ से नं० ५ तक दी हैं किसी तरह नहीं पहुंच सकतीं। अतएव अन्य जाति सम्बन्ध से न जातिभेद लोप हो सकता है और न उससे जैनसमाज को कुछ हानि पहुंच सकती है।

कबीर

अररररर भैया मोर कबीर।

संघ बना संघी पद पाया, हा! उन हीं के पूत।
ईर्षा, फूट, द्रोह, फैलावें, बन कर यम के दूत॥
सवाये ड्यौढ़े बन कर फूल रहे॥ १॥

पैसा पाकर हो मदमाते, मन में बने महेन्द्र।
रथ पर चढ़ें फूल से फूलें, तजें ज्ञान का केन्द्र॥
लोक परलोक बिगाड़ें हाथों से॥ २॥

व्यय में लाख बनाई जिनने, हुए वही वे लाल।
बन्धु देख कर नाक सिकोड़े, होवें जलकर राख॥
यही क्या जैन धर्म के लक्षण हैं?॥ ३॥

वस्त्र विदेशी बेंच बेंच कर, करती पर हित काज।
चरित उदार दिखाती जग को, सारी जैन समाज॥
तिजोड़ी भरें लबालब मस्त रहें॥ ४॥

मन्दिर जी में जावें नियम से, बांचें ग्रन्थ पुरान।
औट बहीखाता शूली पर, टांगें दीन किसान॥
सदा हँस हँस कर खाते किया करें॥५॥

जैन धर्म का झण्डा लेकर, आगम के अनुकूल।
इसी ओट में चोट करें, जो बाबू दल प्रतिकूल॥
धर्म-अवतार, समझलो पंडित हैं॥ ६॥

दया दया मुंह से चिल्लावें, मन में छुपी कटार।
छान छान कर पानी पीवें, पाप करें भरमार॥
यही क्या शिव पद पावेंगे?॥ ७॥

भर भर थैली शादी करते, गिनें न एक दलील।
ये बूढ़े कन्या पर टूटें, ज्यों आमिष पर चील॥
भले रहें ये उपकारी बुड्ढे॥ ८॥

(परवार बन्धु)

१–कन्याओं का आदर्श जीवन

इस अर्वाचीन भारत की ललनाओं की हीन दशा को देख उनकी उन्नति का उपाय सोचने से उनके सुधार के अनेक कारण दिखाई पड़ते हैं। उन्हीं अनेकों में से कन्याओं का आदर्शरूप होना भी उत्कर्षिता का कारण मानना पड़ता है। इसकारण इस मुख्य विषय को दो शब्दों में समाज के सामने उपस्थित (प्रकट) करना कुछ अनुचित न होगा।

"कन्या शब्द का अर्थ संस्कृत में उत्पत्ति है" अर्थात् जिस बालिका का आज तक पाणिग्रहण (विवाह) धर्म, पंच और अग्नि की साक्षी से किसी पुरुष ने न किया हो जिसका कोई आत्मरक्षक और शरीररक्षक मालिक न बना हो, उसको कन्या, कुमारी, बाला आदि नाम से सम्बोधना प्रचलित है?

शास्त्रों में कन्याकाल सोलह वर्ष तक माना गया है, जब तक वह प्रौढ़, यौवनकाल सम्मुख न हो, तबतक उनको कौमार ही समझना चाहिये। आजकल कुछ विषमकाल के कारण, तथा अन्य धर्मावलम्बी, ब्राह्मणों के कथनानुसार लोग ९ या १० वर्ष में कन्या काल की पूर्णता मानते हैं अथवा काल या ऋतु प्राप्त होजाने से माता पिता को नर्कगामी होना पड़ता है "ऐसी किम्वदन्तियों से" भोले भाले लोग व्याकुल हो उठते हैं और शिशु काल ही में कन्याओं को गृहणी बना देते हैं। यह आदर्श विवाह कदापि नहीं कहा जा सकता है। आदर्श तो वही विवाह कहा जा सकता है जो पूर्व प्रथानुसार किया जावे। अर्थात् प्राचीनकाल में धर्मज्ञानी, कला कौशल निपुण सदाचारी माता पिता अपनी कन्याओं को अनेक कला कौशलों में प्रवीण बना देने पश्चात् विवाह करते थे।

देखिये राजा प्रियदत्त अपनी पुत्री अनन्तमती को चौक पूरने में, राजा केकय अपनी पुत्री केकयी को धुरी धारण करने में, राजा अकंपन अपनी पुत्री सुलोचना को पुरुष परीक्षा में, राजा जनक ने अपनी पुत्री जानकी (सीता) को भोजन बनाने में कैसी कुशल बनाया था, जो कि जंगल के अनेक प्रकार के कष्टों को सहते हुये भी उत्तम भोजन बना कर मुनियों को अहार दान देने में प्रतिक्षण तत्पर रहती थीं। इसी प्रकार प्राचीन काल

Bérum Le. A. A. I. D., Bh'adshahu Author of Aroraöl Bun Hrdanan Chandra Novel, &c. and Translator of Chânakya Niti Darpan, Bharthari and Jain Vairagya Shatakas, &c.

[illegible]

की अनेकों कन्याओं में अनेकों प्रकार के असाधारण गुण पाये जाते थे। यदि वे कन्यायें प्रौढ़ न होने पातीं, तो कहाँ से अच्छे अच्छे गुणों की भंडार बनतीं। अन्य धर्मों में भी लीलावती, सत्यवती, अनुसूया, दमयन्ती इत्यादि का दृष्टान्त उपस्थित है। इस प्रकार कन्याओं को विदुषी, पतिव्रता, शिष्टाचारी, धर्मप्रेमी बनना, कुटुम्बी जनों मुख्यकर माता पिता के आधीन है। पुत्र पुत्रियों की शिक्षा माता के गर्भ में आते ही प्रारम्भ हो जाती है। इसलिये गर्भवती माता को चाहिये कि वह अपने मन, वचन, शरीर, को शुभ कामों में लगावें। मन को शुभ विचारों तथा शास्त्रों के अवलोकन में स्थिर करें, कषायों को मन्द कर सर्वदा प्रफुल्ल वदन रहें।

वचन-से भी निन्दनीय, क्रोधभरे, गाली-गलोज, भण्ड वचन कभी न निकालें। शरीर उत्तम भोजनों, उत्तम फलों से सर्वदा हरा, भरा, रक्खें। अनर्थ कामों से रोकें अर्थात् पूजन, सङ्गीत, उद्योग, तीर्थभ्रमण, आदि में लगावें। क्यों कि माता के कार्यकारण का असर बालक बालिका के शरीर मन, आत्मा, वचन पर अवश्य पड़ता है। जैसे नेपोलियन की माता गर्भावस्थामें युद्ध करने में तत्पर अपने पति की सहयोगी थी, जिस का संस्कार गर्भ स्थित बालक नेपोलियन पर पड़ा। ऐसे बहुत से उदाहरण पाये जाते हैं।

आजकल हमारी जैन जाति ही क्या कोई भी समाज कन्याओं का जीवन आदर्श बनाना नहीं चाहती है। आदर्श जीवन बनाना तो दूर रहा माता पिता तो उनको निरोग रख जीवित रखना भी बोझ समझते हैं। बहुत से घरों में तो कन्यायें रोग ग्रसित होने पर बिना औषधि के काल की प्राप्त हो जाती हैं। ठंडी, गर्मी से कन्याओं की रक्षा भली भांति नहीं की जाती। खाने को सूखी रूखी रोटियाँ देदी जाती हैं और लोग कहा करते हैं "कि यह तो पराये घर जायगी" ऐसे कहने वाले लोगों को धिक्कार! धिक्कार!! महाधिक्कार!!! संसार ही पुत्र, पुत्रियों से बना है। यदि संसार में आदर्श कन्यायें न उत्पन्न हुई होतीं तो आदर्श बालक शूरवीर, धर्मात्मा, चक्रवर्ती, तीर्थङ्कर, कहां से उत्पन्न होते?

आज सब प्राणियों की कैसी उलटी समझ हो रही है। कन्याओं की शिक्षा का कोई भी प्रबन्ध नहीं हो रहा है। जब तक कन्याओं के जीवन सुधार के वास्ते हमारे विद्वान् लोग, सेठ, साहूकार, राजा, महाराजा ध्यान न देंगे अपने हृदय से खोटे मोह न त्यागेंगे, तब तक समाज की गिरी हुई दशा उत्थान न पायेगी।

प्रिय मातृगण! जब तक आप हमारे उत्थान की ओर ध्यान आकर्षित कर बड़े २ कन्या विद्यालय, कन्या कालेज, और कन्याशालायें प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक प्रान्तमें न खुलवायेंगे तब तक समाज की गिरी दशा कदापि कदापि नहीं सुधर सकती है। विचार कीजिये कि यदि आप ही हमारी सहायता न करेंगी तो दूसरा कौन अवलम्बन दे समाज का उत्थान कर सकता है। जिस वंश में, जिस जाति में, जिस धर्म में, जिस देश में हम आप पैदा हुये हैं जन्म लिये हैं, उसके बिगाड़, सुधार की जिम्मेदारी बहुत करके हमारे और आप के ही ऊपर है।

शोक के साथ लिखना पड़ता है कि आजकल

विद्यालय, कालेज खुलवाना तो दूर ही रहा जो कन्याशालायें और आश्रम, खुल चुके हैं उनमें भी उचित संख्या नहीं दिखाई दे रही है। इन शालाओं आश्रमों का उद्देश्य विधवाओं तथा अनाथ बालिकाओं के सुधार से मुख्यतः सम्बन्ध रखता है। जब खुले हुये आश्रमों की ऐसी दशा हो रही है। तो आगे आश्रम किस आशा पर खोले जावें।

प्रत्येक माता पिता अपना मुख्यधर्म बालिकाओं को विद्यालय तथा आश्रममें भेजना समझें। अपनी कन्याओं को बिना किसी रोक टोक के विद्यालय तथा आश्रम में भेज दिया करें पांच वर्ष वहां रख कर देखें उनकी चाल व्यवहार, जीवन-सुधार में कितना अन्तर पड़ जाता है। कितना क्या? ज़मीन आसमान, का अन्तर पड़ जावेगा। इस प्रकार यदि हमारी जैन समाज उद्योग करे और किसी किसी प्रान्त में विद्यालय स्थापित कर दे तो थोड़े ही काल में उस का फल सन्मुख ही दिखाई देने लगे। अर्थात् दस वर्ष के भीतर २ उस प्रान्त का जीवन धार्मिक और लौकिक दोनों प्रकारसे बहुत कुछ सुधरा हुआ दिखाई पड़ने लगे। वर्तमान समय में ध्यान देकर देखने से ज्ञात होता है कि बहुत से स्थानों में कन्याशालाओं की शिक्षा पाई हुई कन्याओं का कार्य (गृहस्थाश्रम) प्रशंसा पात्र हो रहा है। जब ५ घंटे का फल इतना होता है तो क्या २४ घंटे उत्तम शिक्षिका के साथ रहने से श्लाघनीय न होगा ? अवश्य होगा। अवश्य होगा।

अन्त में अन्तिम प्रार्थना यही है कि जहां तक हो सके, माता पिता जिस भांति अपने पुत्र के जीवन सुधार और सुख के लिये प्रबन्ध करते, पढ़ाते हैं, लिखाते हैं, उसी भांति अपनी प्यारी पुत्रियों के जीवन सुधार का भी प्रबन्ध करें। उन को पढ़ने-लिखने के लिये आश्रमों तथा कन्या शालाओं में भेजें।

—मथनबाई

२-महिलाओं की शिक्षा

महिलाओं को महत्वशालिनी बनाना चाहिये यह आवाज़ प्रायः सारे भारतवर्ष में गूंज रही है। परन्तु शिक्षा की पद्धति कैसी और कहां तक होनी चाहिये-यह विषय अभी तक विवाद ग्रस्त ही है। कोई मनुष्य स्त्रियों को पढ़ा लिखाकर उन्नत करना चाहता है तो कोई घर के काम काज में चतुर बनाकर प्रसन्न होता है।

इस प्रकार जितने रुचिवाले मनुष्य हैं उतनेही प्रकार की स्त्रीशिक्षा भी देश में हो रही है, अर्थात् महिलायें पिता और पति के हाथ का खिलौना बन गई हैं उन्हें जैसा अलङ्कार पसन्द आता है उसीसे अलंकृत कर देते हैं। बड़े घरानों में व सारे घरों में कहीं भी पुत्रियों व पुत्रवधुओं की शिक्षा का कोई कैंडा नहीं है, जिसकी बुद्धि जिधर जग-जाती है उधर ही वह ढुलक जाती है।

जब कि पुत्रों के लिये किसी के यहां शिक्षालय तो किसी के यहां पण्डिताई का नियम अत्यावश्यक समझा जाता है, और इसके लिये माता पिता जी-जान से प्रयत्न भी करते हैं परन्तु जबतक प्रत्येक समाज में, प्रत्येक कुटुम्ब में व प्रत्येक घर में स्त्री शिक्षा की कोई नियत व्यवस्था स्थिर न होगी तब तक समाज का कल्याण होना असम्भव है।

बड़ी बड़ी जातियों में व बड़े बड़े घरों में जिस प्रकार कन्याओं के लिए दहेज का बन्धन होता है

कि इस गहने वर इतना कपड़ा, इतना रुपया हो तब ही विवाह हो सकता है बिना इन चीजों के सगाई भी नहीं हो सकती, उसी प्रकार शिक्षा का बन्धन भी होना चाहिये कि इस २ कुटुम्ब की कन्यायें इन २ बातों में शिक्षिता हों और तब विवाह किया जाय। शिक्षा के भीतर मान मर्यादा का प्रश्न शामिल होगा तब ही लोग पुत्रियों को योग्य बनाने में परिश्रम व धनव्यय करेंगे अन्यथा इस समय तो राज घरानों तक की कोरी मूर्खा कन्यायें सुसराल धकेल दी जाती हैं। और जितना रुपया उनके तेल उपटने लगाने में खर्च किया जाता है उतना रुपया भी उनकी शिक्षा में नहीं लगाया जाता।

यह भी निश्चय होना चाहिये कि पुत्रियों के लिये पढ़ना कहां तक आवश्यक है। और शिल्प, पाकविधि सीना, गाना बजाना, इत्यादि बातें कहां तक सिखानी चाहियें। क्योंकि इस समय कितने ही विद्वानों का मत है कि स्त्रियों को अधिक पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है उनकी विद्या उपयोग में नहीं आती, इसलिये केवल सामान्य लिखना पढ़ना सिखाकर उनको घर के कामकाज में लगा देना चाहिये, तथा कुछ लोगों का विचार है कि स्त्रियों में भी पाण्डित्य का विकाश होना चाहिये, अस्तु जो हो इस विषय को खूब स्पष्ट कर देना चाहिये।

मेरे विचार से तो जो बुद्धिमती बालिकायें हैं और जिनको पढ़ने की सुविधा है उनको उच्च विद्या अवश्य ही पढ़ानी चाहिये, क्योंकि प्रत्येक शिक्षा का मूल कारण विद्या है विद्यावती होकर अन्य कामों का भूल जायगी ऐसी शङ्का करना भ्रममात्र है वरन् विद्या में परिपक्व होने पर गृह कार्यों का अनुभव बहुत जल्दी हो जाता है।

विदुषी स्त्रियां अपनी गृहस्थी को बड़ी सुन्दरता से चलाती हैं व अपने बच्चों को सद्गुणी बनाती हैं। जब कि अनपढ़ स्त्रियां वर्षों सास ननदों के नीचे काम सीखने पर भी गृहस्थी को बिगाड़ बैठती हैं। यह बात कईबार देखी गई है कि सीना पिरोना रसोई करना सभी काम पढ़ी स्त्रियां सफ़ाई से करती हैं।

धार्मिकतत्व भी उन्हीं की समझ में अच्छी तरह आ सकते हैं।

पूर्वकालमें भी भारतीय नारियां परम पण्डिता होती थीं, इसका प्रमाण ऐतिहासिक घटनाओं से प्रत्यक्ष है। जिन सीता जी को भारत का बच्चा २ जानता है वे कैसी विदुषी थीं, यह निम्न लिखित श्लोक से स्पष्ट होता है।

एक समय रावण ने बैठाने में सीता जी को बहुत फुसलाया, डराया और फिर यह श्लोक कहा—इसके तीन चरण वह कह चुका था कि चौथा सीता जी ने कह दिया जिस से श्लोक का ठीक उल्टा अर्थ हो गया।

रावण कहता है-

भविता रम्भोरु त्रिदशवदन ग्लानिरधुना ।
स रामो मे स्थाता न युधि पुरतो लक्ष्मणसखः
इयं यास्यत्युच्चैर्विपदमधुना वानर चमूः ।

सीता जी—

लघिष्ठेदं षष्ठाक्षरपर विलोपात्पठ पुनः ॥

भावार्थ-रावण कहता है कि हे सीते अब रामचन्द्र की हार होगी, वह मेरे सामने न ठहर सकेंगे और यह बन्दरों की सेना घोर विपद में पड़ेगी, तब सीता जी कहती हैं कि अपने, ...

श्लोक में से सातवाँ अक्षर हटाकर बोल, अर्थात् त्रि, न, वि इन तीन अक्षरों को निकाल दें तब रावण की हार और रामचन्द्र का युद्ध में ठहरना, बन्दरों की सेना का जीतना अर्थ हो जायगा।

बस इसी प्रकार मुंह तोड़ जवाब देकर वे सदा पापी रावण को नीचा दिखा देती थीं और अपने शील धर्म की रक्षा करती थीं।

इसीसे सिद्ध होता है कि पाण्डित्य हर समय में काम आता है।

—चन्द्रावती

बालिका विलाप

सुनते अभी हैं, जन्म कन्या का हुआ है गेह में।
एक हाथ सिरपर सोचते, उठती जलन है देह में॥
जब बाप के जी में खुशी होती न इस संवाद से।
तब क्यों नहीं पछतायेंगे, फिर बन्धु वर्ग विषाद से॥ १॥
अब कुछ न दी जाती हमें शिक्षा सनातन धर्म की।
अब क्या कमी हैं जानतीं, बात हम शुभकर्म की॥
अब लौं न सीखेंगी गृहोचितकार्य्य-कौशल सत्कला।
तबलौं सुघर गृहणी कहा सकतीं कहो कैसे भला॥ २॥
विद्या बिना मां बाप को, मन में न हम कुछ मानतीं।
होकर सयानी भी न हम, पति भक्ति करना जानतीं॥
निज बाल बच्चों को हिफाजत ठीकसे करती न हम।
हो रहेंगे मूर्ख वे इस बात से डरती न हम॥ ३॥
मतिहीन हमको जानकर, उपहास करते हैं सभी।
सब मूर्ख कहकर डाटते, हम बोलतीं कुछ जब कभी॥
इस मूर्खताके हेतु हम, आदर न पाती हैं कहीं।
पति जानकर हमको अशिक्षित प्रेम दिखलाते नहीं॥ ४॥
इस देश में देखो, घनेरे पुत्र अंग्रेजी पढ़े।
जो फैशनेबुल ही चले हैं, जोर से सिर को मढ़े॥
वे मूर्ख माता की, हृदय से भक्ति करते हैं नहीं।
तो भी सुता की मूर्खता मां बाप हरते हैं नहीं॥ ५॥
हे नाथ! आप अनाथ रक्षक, दीन जनके बन्धु हैं।
तब क्यों हमारी सुधि न लेते शील करुणासिन्धु हैं।
अब कीजिये हमपर दया मत बैठिये मुंह मोड़कर।
हम बालिकाएं आप से करतीं विनय कर जोड़कर॥ ६॥

(महिला महत्व)

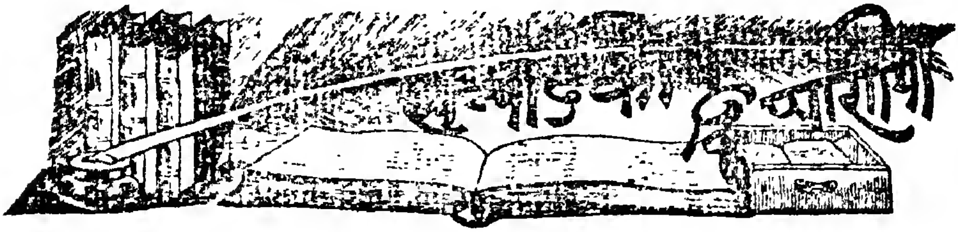

१–दि० जैन समाज का निर्माण।

वास्तव में मनुष्यों के समुदाय को समाज कहते हैं। विद्वान मनुष्यों की समाज विद्वान समाज होती है। मूर्खों की समाज मूर्ख समाज होती है। वास्तव में मनुष्य वही है जिस में शरीर, वचन, मन तथा आत्मा की उन्नति करने की शिक्षा प्राप्त हो गई है अर्थात् वही मनुष्य है जिस का शरीर दृढ़ पुष्ट वीर्य्यवान, वचन सत्य, गंभीर, प्रमाणिक, मन विचारशील, अनुभवी और शांत तथा आत्मा ज्ञान, वैराग्य और सच्चे सुख के स्वाद से सुगंधित हो। ऐसे मनुष्यों की समाज ही वास्तविक मानव समाज है। सैकड़ों वर्षों की अशिक्षा और अनियमित स्थिति से वर्तमान जैन समाज सत्वहीन, निरुत्साही, अविचारी, असत्यवादी, कायर, आत्मज्ञान शून्य होगई है। इस समाज में मनुष्यता ही नहीं रही है। न इसमें वीरत्व है, न विवेक है, न परोपकार है, न धर्मोत्साह है।

ऐसी दशा में समाज का निर्माण एक बड़ा ही कठिनकार्य्य है।

योग्य मनुष्यों के निर्माण के लिये जैन समाज को योग्य पुत्र पुत्रियों का जन्म प्राप्त कर उन को शिक्षा द्वारा योग्य मनुष्य बनाना है।

योग्य संतानों के लिये उचित यह है कि प्रौढ़ आयु के पुरुषों का प्रौढ़ आयु की युवती कन्याओं के साथ सम्बन्ध किया जावे जिससे वीर शरीर संतान पैदा हो।

क्यों कि जैनसमाज छोटी २ बहुत सी जातियों में विभाजित है इससे एक ही जाति में योग्य संबन्ध होना कठिन बात है अतएव प्राचीन समय की रीति के अनुसार परस्पर जातियों में सम्बन्ध का प्रस्ताव हो जाना चाहिये तब योग्य पुत्र के लिये योग्य कन्या का चुनाव शारीरिक व सामुद्रिक आदि नियमों के अनुसार कराना चाहिये। अग्रवाल, खंडेलवाल आदि जातियां परस्पर सम्बन्ध करें इस में कोई बाधा शास्त्रानुसार आती नहीं है तथा इस का रिवाज श्रीमहावीर स्वामीके समयमें तो था ही उसके पीछे भी बहुत काल तक रहा है। ऐसा एक नीचे दिये हुए ऐतिहासिक प्रमाण से पाठकों को विदित होगा।

रायबहादुर पण्डित गौरीशंकर हरिचंद ओझा अजमेर ने सिरोही राज्य का इतिहास हिन्दी भाषा में लिख कर सन् १९११ में मुद्रित कराया है। उस में आबू दिलवाड़ाके मन्दिरोंका जहां वर्णन दियाहै वहां लिखा है कि श्री वस्तुपाल तेजपाल के द्वारा बनवाए हुए श्रीनेमिनाथजी के मन्दिरमें दो आलेहैं जिनको देवराणी जिठाणीके आले कहते हैं। प्र...

जो शिलालेख इन आलों में दिया हुआ है उससे विदित होता है कि इन आलों को तेजपाल ने अपनी द्वितीय स्त्री सुहड़ादेवी के कल्याण के निमित्त बनवाया था। यह सुहड़ा देवी अर्थात् पाडवाडन के मोढ़ जाति के महाजन ठाकुर आल्हण के पुत्र ठाकुर आसा की पुत्री थी। तथा वस्तुपाल तेजपाल अणहिलवाड़ पाटनके पोड़वाड़ जाति के महाजन अश्वराज के पुत्र थे।

लेख की नकल यह है।

ॐ संवत् १२९७ वर्षे वैशाख सुदी १४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय चंड प्रचण्ड प्रसाद महं (अर्हत) श्री सोमान्वये महं श्री आसराज सुत महं श्री तेजःपालेन श्री मत्पत्तन वास्तव्य मोढ़ ज्ञातीय ठ० आल्हण सुत ठ० आस सुतायाः टकुराज्ञी संतोषाकुक्षि संभूताया महं श्री तेजः पाल द्वितीय भार्या महं श्री सुहड़ा देव्याः श्रेयोर्थं "(आगे का भाग टूट गया है, इस लेख से स्पष्ट प्रगट है कि पोड़वाड़ जाति को लेख में प्राग्वाट जाति कहा है उसके पुत्र तेजपाल का मोढ़ जाति की पुत्री सुहड़ा के साथ सम्बन्ध हुआ था।

तेहरवीं शताब्दि में जब उपजातियों में सम्बन्ध होते थे तब इस समय जारी करने में कोई बाधा नहीं है। प्रौढ़ सम्बन्ध से उत्पन्न संतानोंको योग्य शिक्षा देकर वीर पुरुष व स्त्री बनानाचाहिये बस इन सब वीर स्त्री पुरुषों की जो समाज बनेगी वही वास्तव में श्री महावीर भगवान के पथ पर चलने वाली दिगम्बर जैन समाज होगी।

परिषद् का कर्तव्य है कि ऐसी समाज के निर्माण का निर्भीक शास्त्रोक्त प्रयत्न करे।

— संपादक

२ जातीय स्वास्थ्य।

आज हमारे जातीय स्वास्थ्य की कितनी शोचनीय दशा हो रही है यह नवयुवकों की टेढ़ी कमर और पीले चहरों से भली भाँति अन्दाजा आ सकी है। जब पुरुषों का यह हाल है तब महिलाओं के विषय में कहा ही क्या जा सकता है? नन्हीं सी उमरमें वे वधू बना दी जाती हैं। उनके शारीरिक अवयव पूर्ण परिपक्व भी नहीं होपाते कि वह बहुधा गर्भ धारण कर अकाल काल कवलित हो जाती हैं। आजके भारत में सर्वत्र यही मर्मस्पर्शी दशा दिखाई पड़रही है। अन्य देशों की समानता में यहां के स्वास्थ्य की दशा सब देशों से गिरीहुई दशा में है। औसतन् यहां के प्रति मनुष्य की उमर केवल २५ वर्ष की है। इस अपर्याप्त वय में ही उनको धर्म अर्थ काम का साधन करना है और पराधीनता के जंजाल से छूटना है। किन्तु इन सब बातों की सफलता होना वर्तमान दशा में समझना केवल एक बच्चों का खिलवाड़ ही है। वर्तमान में सबसे बड़ी आवश्यका हमारे सामने यही है कि हम अपने शरीरों को हृष्टपुष्ट बनावें। स्वास्थ्य का उत्तम रखने की योजना करें। विना स्वास्थ्य शरीर के किसी भी कार्य की सिद्धि हम कदापि नहीं कर सकेंगे। इधर यदि हम जैनियों की ओर दृष्टि डालें तो मेरे ख्याल में उनके जीवन का औसत मुश्किल से ही २५ वर्ष का बैठेगा। शहरों की गंदी हवा में ही विशेष कर रह कर तथा अनाचार वर्धक कामवासनाओं के आधीन होकर समाज की शारीरिक अवस्था अतीव भयंकर रूप धारण करे हुए है। इसको मेटने के लिये हम सब को मिलकर कार्य करना चाहिये। आपसी मतभेद अथवा साम्प्रदायिकता

के विद्वेष को इस में न घसीट लाना चाहिये । भारत की भलाई के लिये राजा प्रजा, हिन्दू-मुसलमान और अन्य सब ही जातियों को जातीय स्वास्थ्य के सम्भाल के लिये उपयोगी उपायों को कार्य में लाने के लिये तैयार हो जाना आवश्यक है । इंगलैंण्ड की काउन्टी आफ लन्डन का नमूना हमारे समक्ष उपस्थित है । वहां की सन् १९२३ की स्वास्थ्य संबन्धी रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि सन् १८४० में जो उमर वहां के निवासियों की थी वह आज दूनी से भी ज्यादह हो गई है वहां की जनता ने स्वास्थ्य में जो यह आशातीत उन्नति प्राप्त की है इसमें इस काल में हुई वहां की स्वास्थ्य संबन्धी खोजों, सफाई की आवश्यकता परिचायक नियमों आदि के अतिरिक्त वहां की राष्ट्रीय, जातीय और आर्थिक परिस्थितियां भी कारणभूत हैं । इतने पर भी इंगलैंड में जातीय स्वास्थ्य पर बराबर विचार हो रहा है । यह मानी हुई बात है कि प्रत्येक देश की दशा का पूर्ण परिचय उसके ग्रामीण भाईयों से ही लग सकता है । भारत के ग्रामीण भाइयों की कितनी शोचनीय दशा है यह मात्र इस ही से अन्दाज़ी जा सकती है कि उनको भरपेट खाने को भी नहीं मिलता ! उधर इंगलैंड में इन्हीं की कोटि के मज़दूर लोगों के लिये कितने सुभीते प्राप्त हैं यह सहज में जाने जा सके हैं । इंगलैन्ड में यहां से लोगों को आमदनी अधिक होती है इसलिये उनका खान पान और वस्त्रादि भारतवासियों से कहीं अच्छे हैं । जिस स्वच्छता को वह अपने निकट सुगमता से फैला सके हैं उसको एक भारतवासी अपनी इस दरिद्रावस्था में कदापि नहीं रख सकता । वहां के एक मज़दूर को जो सुभीते और स्वत्व प्राप्त हैं वह यहां के एक रईस को भी नसीब नहीं हैं । यदि मज़दूर अपाहिज हो गया है तो उसके लिये Infirmary मौजूद हैं जहां उसकी सेवा सुश्रूषा होती । मज़दूरों की स्त्रियों की भी पूर्ण देख भाल रहती है । स्वास्थ्य खराब होते ही वह अस्पतालों में पहुंचाई जाती हैं जहां उनका इलाज अच्छी तरह किया जाता है । वहां इस बात का विश्वास हो गया है कि माता के स्वस्थ रहे बिना बालक कभी स्वस्थ नहीं रहेगा । इस ही बात को लक्ष्य कर वहां माताओं की देखभाल गर्भावस्था से ही राष्ट्र की ओर से होती है । बालक और बालिकाओं को वहां शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य है । हां, यदि डाक्टर सर्टिफिकट दें तो भले ही वह पाठशाला से छुट्टी पा सकें, वरन् उसे वहां पहुंचना लाज़मी है । इसका फल यह है कि प्रौढ़ अवस्था के शिक्षित दम्पति से उत्पन्न सन्तान विशेष पटु बलवान और तीक्ष्ण बुद्धि जन्मती है । अतएव इन्हीं बातों की ओर लक्ष्य देकर जैन जाति को अपनी शारीरिक दशा सुधारने के प्रयत्न करना चाहिये । तथा भारत के हित के लिये उसके सा[illegible] अन्य जातियों को भी इस ओर ध्यान देकर स्वा[illegible] स्थ्यवर्धक उपायों में अ[illegible] आवश्यक है सरकार को भी [illegible] निश्चित रूप से इस ओर [illegible] के ज़माने में किञ्चित [illegible] बोझा हलका नहीं हो जाता भारत की दशा [illegible] नीय है यह इस के लिये भी शास्त्रीक नहीं ।

—पू० स०

Dear Readers,

If we care to turn our eyes towards the teachings of our Tirthankaras of old, we come to learn that the best and foremost duty of man is to have equanimity towards all living beings-सा सत्त्वेषु हि समता सर्वाचरणानां परमाचरणम्। Really what noble and sublime humane ideas are to be found in this short but valuable precept We convene today various Leagues and meetings for this self same cause and propose and decide in many ways the means to bring about a peaceful future. But all these efforts turn out to be fruitless and the usual warfare of turmoil and pain goes on at its full swing To find out its cause we shall not have to seek far off. At the time when the last Lord of the Jainas-the great Apostle of Ahinsa—Sri Mahavira Bhagwan—adorned our Sacred Land, the conditions were not more different than they are at present. He proclaimed the message of Peace and Truth all around and people adhering to it sunk in their differences and learnt the reverence for life. The cause of failure at present lies in forsaking the teachings of forefathers and in consequence cruelty has become the mark of modern civilisation—'Slaughter-houses, bird-shooting, horse-flogging, rash—driving, Can these be without their reaction upon character ? Hence to proclaim the message of Peace and Harmony around is the vital need of the time. The sad world needs to cry voices-in East and West-to utter again the same ancient truth of equanimity between man and man and the beast and rest as well. Yes, the beast as well because we are taught by our all-profound Fathers of yore:—

"Children of man, you and the animals form but one family and brotherhood. For in you all is the onelife. And to wilfully harm but one single creature is to harm yourself and hurt the great Family of Life. Renounce your greeds of Killing. And build ye a new culture, a new civilisation Build them upon Ahinsa. For Ahinsa means not mere harmlessness, not mere compassion, Ahinsa is REVERENCE FOR LIFE, and there is no religion higher than Reverence"

So comprehensing the necessity of raising the voice, we have ventured to reach the suffering society around with the same message of Truth and Peace on the sacred eve of the birthday of the great Apostle of Ahinsa—Lord Mahavira. Really in this sacred undertaking we are most thankful to our kind well-wishers and learned contributors, whose valuable help have made us able enough to bring out this special Mahavira Jayanti number of 'Vira' Our only hope in the end is ; may the voices uttering the above ancient truth be heard all over the surface of world. AMEN.

"Worshipped by Indras and the gods,
Be-jewelled with ear-rings, necklace
and crown,
May the Tirthankaras bestow
Peace eternal all round.
Born of noble families
They gave light unto the world,
Their lotus feet are adored
By legions of gods celestial."

Sub-Editor.

वीर

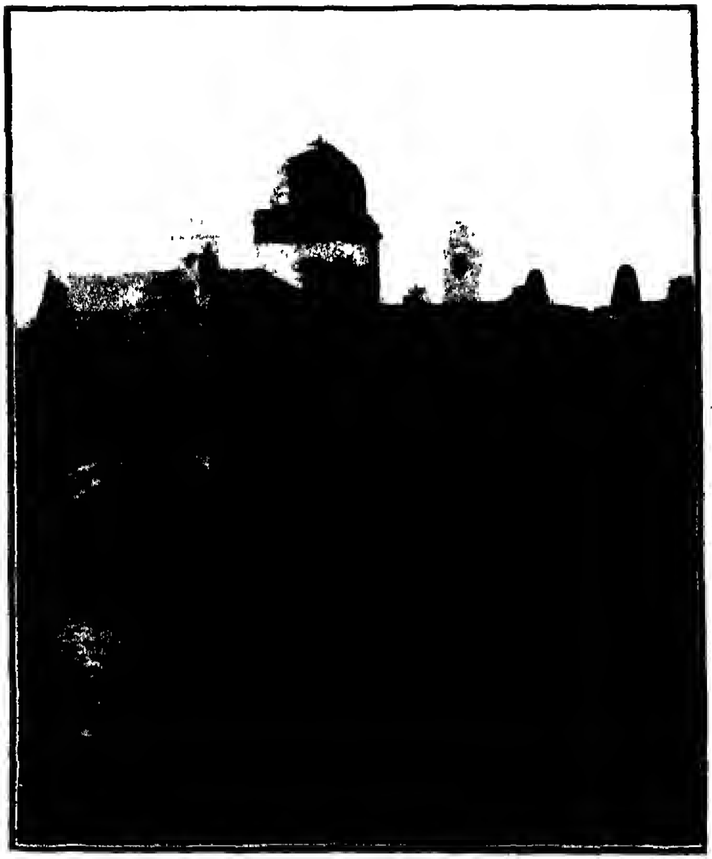

श्री जैननशियाँ (जमुनातट), इटावा ।

(श्री दि० मुनि विनयसागरजी का समाधि-स्थान ।)

हिमालय प्रेस, मुरादाबाद ।

THE DIGAMBARAS IN General Sanskrit Literature.

(BY PROFESSOR HERMANN JACOBI)

The Jainas are not frequently mentioned in older Sanskrit Literature by brahmanical writers, and it is a curious fact that the earliest of those who notice them designate them as *naked* monks showing thereby that they were acquainted with the Digambaras only. In the Vishnu Purana 3d book ; 18th chapter, a legend is told how Mayamoha persuaded a party of Asuras to give up the Veda and to follow a *dharma* different from it ; following his advice they became Arhatas, of which term a fanciful explanation is given. This Mayamoha is described in v 2 as दिगम्बरो मुण्डो बर्हि पत्रधरः ; and the creed he taught the Asuras, in v10 as दिग्वाससामयं धर्मः. The age of the Vishnu Purana is uncertain; but thus much may safely maintained that the passage in question is later than the fourth century A.D; for in the sequel Buddhism is explained in a similar way as introduced by Mayamoha, now in guise of a Buddhist bhikshu, and the Buddhist doctrines are described as the Vijnanavada, which was established by Asanga and Vasubandha in the 4th or 5th century A. D.—Further Sankara who lived 780-812 A.D., in his commentary on the Vedanta Sutras (II 2, 33--36) discourses the Jaina philosophy आर्हतमत (36) and calls them जैन (36); but in commenting on sutra 33 he designates them as विवसन and on sutra 36 as विसिच, both words being synonyms or peripharastic expressions of दिगम्बर. Apparently Sankara as well as the author of the passage from the Vishnu purana just referred to considered all Jaina monks to go naked, and did not know other Jainas but Digambaras. (Amara gives दिगम्बर as synonym of नग्न and अवासस:, and does not mention it as an appellation of one branch of the Jaina church). — Lastly it may be mentioned that Dandin, who was a contemporary of Sankara, introduces, in the second *ucchvasa* of the Dasakumara carita, a Jaina monk (क्षपणक) who according to his description was a Digambara.

Now the question arises why these authors regarded the Digambaras as the sole representatives of Jainism which it should be noted they cordially hated It may be said with regard to Dandin, that being a native of South India where the overwhelming majority of the Jainas were Digambaras, he naturally would describe a Jaina monk as a naked one. The same cause might be alledged in the case of Sankara since he too hailed from the South; but as he is said, probably with good

reason, to have travelled over a great part of India, he would have had ample occasion to correct an one-sided view about the Jainas obtaining in the country of his birth. At any rate it cannot be contended that the author of the Vishnu purana was a Southern, and it may be remarked in this connexion that the scene of the legend cited above is laid on the bank of the Narmada. Therefore the preference given to the Digambaras by the brahmanical writers named in the preceding part cannot have been caused by their South Indian origin; it seemes to have been a generally accepted opinion.

The Digambaras will, of course be inclined to contend that their section of the Jaina church was the original one and, therefore, was naturally regarded as truly representing Jainism. But the Svetambaras proffer the same claim to priority. It is, however, needless to enter here into this question; all that is required in the present case is to prove by independent evidence that the Svetambaras were in existence many centuries before the period we are concerned with. Now the Kalpasutra of the Svetambaras contains a detailed list of Sthaviras from Bhadrabahu, their 6th Sthavira, down to Vajrasena, the 14th Sthavira, all of whom except Bhadrabahu are not acknowledged by the Digambaras. The correctness of this list is partly borne out by inscriptions dating from the 2nd and 3rd century A. D. found at Mathura, as was first shown by Dr. Buhler; for they mention some teachers belonging to *ganas* and *sakhas* which according to the Kalpa sutra took rise from disciples of Suhastin, the 8th Sthavira. Consequently the early existence of the Svetambaras is attested by epigraphical testimony at least as old as that which the Digambaras can claim for themselves. Therefore an argument based on the greater antiquity of the Digambaras fails to explain the literary facts stated in the beginning of this paper.

The question at issue can, in my opinion, be satisfactorily answered by reference to the special character of the literature of the Digambaras. They had, from an early period, made use of Sanskrit as their principal literary language, and for that reason their books could be conveniently consulted by brahmans as a source of information on Jaina doctrines. In this respect the literature of the Svetambaras was of a different character. They have preserved a canonical literature in Prakrit, the *angas*, *upangas*, etc. works which the Digambaras maintain to have been lost in an early age; and the literary activity of the Svetambaras was mainly directed towards explaining these sacred books. They produced a vast litera-

ture of commentaries on the Siddhanta, called Niryuktis, Curnis, and Bhasyas, all of them written in Prakrit up to the eighth century A. D., when Haribhadra introduced Sanskrit also in this department of their literature. The difuse and desultory character of the Siddhanta as well as the language in which it and the commentaries on it were embodied, would have rendered it almost impossible for any brahmanical writer to derive from it an accurate knowledge of the principles of Jainism, even if he had gained access to those sacred texts. It may, therefore, be imagined that brahmans should have had recourse to Digambara works which presented the required information in a more systematic form and in the language to which they were accustomed. The Svetambaras, it is true, possess now a very great number of Sanskrit books on all subjects connected with their creed, but they are comparatively late works; the first Svetambara author of Sanskrit works which have come down to us, was Siddhasena Divakara who must be assigned to the 7th century A. D. since he was acquainted with the logics of the Buddhist philosopher Dharmakirti.

There is, however, one Sanskrit prakarana, which goes back to a much earlier time, the Tattvartha-dhigama Sutra by Umasvati; but it is not quite certain that he was a Svetambara, since the Digambaras, who call him Umasvamin, also claim him as one of their own sect. In what way, however, this controverted point may ultimately be decided, thus much is certain that the Svetambaras possess only one ancient commentary on the Tattvrthadhigama Sutra, a short Bhasya ascribed to Umasvati himself; next in time comes an unfinished tika by Haribhadra, who, as already noted, flourished in the eighth century A. D. But in Digambara Literature the Tattvarthadhigama Sutra plays an incomparably more important part, and may, indeed, be regarded almost as its very foundation; one of their oldest authors wrote an enormous commentary on it, the Gandhahasti-bhasya, of which the introduction only has been preserved, and many more writers composed treatises based on that work. By such means it was easy for outsiders to gather information about Jaina doctrines from Digambara Literature, and for that reason, I assume, they mistook the Digambaras for the only authoritative interpreters and sole representatives of Jainism.

[Note:—We are much pleased to note here that the learned Professor has rightly placed a new thesis about the Swetambaras, which was requiring consideration

from a time. Indeed the only mention of the naked Jain monks in the Brahminical literature will not stand for the latter origin of the Swetambaras, when we see the Digambara Shastras speaking themselves about the dissension in the Jain Church to have occured in the time of Chandragupta Maurya. But considering the question raised in the paper, we would, note that not only Brahminical authors have referred to Jain Munis as naked ones, but also the Buddhist authors have done likewise. Even in the work of Arya Sura, who flourished probably in 4th century A.D. we find a similar reference. (See the Gatakmala, S B. B. Vol. I p. 145. "The story of jar"). And in the "*Dialogues of Buddha*" we find within its "Kassapa-sinanada Sutta" the list of practices for a certain kind of recluses. The one of them really coincides with that of Digambar muni. In it, too, the practice of nakedness is put at the very beginning. Besides the nakedness for a recluse was regarded of much importance even by the Ajivakas and the earlier brahmanical shastras. We find in Vedas tribute paid to naked recluses such as Rishabha, Nemi, Suparswa; whom some scholars regard as Jain Tirthankaras. The legend of Shukacharya, the Digambara, on whose arrival at the court of Parikshit all the many thousand Rishis including his father and grand-father get up, can be cited, too, in support, along with the fact that a few Gods of Hindu pantheon (e. g. Shiva, Dattatrya) are regarded Digambara by them.

These references to the naked Jain munis take us in the much interior period than referred to in the paper.

Hence we would feel obliged if the *learned Professor or some other scholar* will kindly throw more light on the point: "An argument based on the greater antiquity of the Digambaras fails to explain the literary facts stated in the beginning of this paper".

S. Editor]

The Main Object in Life.

(By Mr. H. Warner.)

In Volume I of the third edition of his "Principles of Sociology", page 591, Mr. Herbert Spencer, in dealing with the evolution of domestic relations says:- "Of every species it is undeniable that individuals which die must be replaced by new individuals, or the species as a whole must die....Regarding the continued life of the species as in every case the end to which all other ends are secondary (for if the species disappears all other ends disappear), let us look at the several modes there are of achieving this end". And then he goes on to discuss promiscuity, polyandry, polygyny and monogamy.

This book of Mr. Spencer's is most interesting, instructive, and also amusing, and in the eight hundred odd pages of which it consists there is very little that one can very well disagree with; but part of that little is I think in the statement above quoted that the continued life of the species is the end to which all other ends are secondary. Without being able at first to see where this statement is wrong, if wrong, one feels that it is wrong, though Mr. Spencer's parenthetical remark is of course true, and seems to make his statement conclusive, for if the species disappears there will be no individuals who can have ends or aims. In order that there may be ends there must be individuals, so that to have individuals appears to be the first end or aim in order that other ends may come into existence.

In the case of the human species, if the continued life of this particular species is the end to which all other human ends are secondary, then it means that the first business of man is the propagation of his species; and this is felt to be untrue. Whatever may be said about man making this his first object in life, it is quite certain that in the animal world this is never an object in life: no animal makes this an object in life, much less a first object. To speak of an end being achieved is to imply the existence of some living being who shall make ends for himself: inanimate objects do not have aims, do not work to a purpose of their own. So the question naturally arises, whose is this end to which all others are secondary? Those who believe in a Creator might say that it is His first end to see that the life of every species is continued. But such a view would seem to be contradicted by the fact that the individuals having been created do not continue to live but die. Did the individuals not die, the species would continue. Nature cannot be said to have an end or aim, because nature in this sense is not a living being; the same of evolution; evolution cannot be said to achieve this end to which all others are secondary, because evolution is a process, and processes do not have aims.

Where, then, is the mistake? The mistake, if mistake there is, seems to be in Mr. Spencer's using the word end to express an idea which is undoubtedly true; it is simply the unlucky way in which he has expressed an undoubtedly true idea. If the individuals of any species die, as they do, and are not replaced by new individuals, then of course there will not be any individuals left to have aims and objects in life. Therefore all aims and objects in life are secondary to the existence of

individuals, secondary to the continued life of the species; this event must first of all come about. But this event is an event which takes place without it being the end or purpose of any living being; so if Mr. Spencer had simply said that this event must first be brought about before there can be any other ends in society, as an introduction to his exposition of the several modes there are of bringing it about, there would not have been any disagreement with what he said. So now whereas we could only at first feel disagreement without being able to see why, we can now see as well as feel that Mr. Spencer's statement does not quite hit the mark.

One might here raise the question, if the continuance of the species to which a living being happens to belong is not his chief business, then what is the chief business of a living being? On the theory of an uncreate and indestructible soul in every living being, it becomes impossible for the individual to cease to exist: he must necessarily exist in some condition or other, and the continuance of his existence is not an event which has to be brought about, it is already there, so that he need not busy himself with keeping himself alive. What then should he busy himself with? Obviously what he should do is to get himself into a desirable condition; or putting it another way round, he should make it his chief business in life to get himself out of undesirable conditions. Perhaps it might be said that this is the end to which all other ends of living beings are or should be secondary or instrumental. Different people will have different ideas as to what is the most desirable condition in which to live, but according to the Jain teachers it is moksha.

—:o:—

The Doctrine of Karma in the Jaina Philosophy

The doctrine of karma consists in the theory that a certain, determined *effect* is unavoidably connected with one's *action*. This doctrine of karma has distinguished the Indian philosophical systems from the rationalistic thoughts of other countries of all times. Different from each other as they are, all the systems of Indian philosophy agree in admitting the inexorableness of karma. The Purva-Mimansa, for instance, differs from the Uttara-Mimansa in not developing the theory of Para-Brahman. The Sankhya and the Yoga again differ from the Vedanta in admitting the plurality of Souls. The Nyaya and the Vaiseshika systems are antagonistic to the Sankhya and the

Yoga theories, in as much as the former invest the Soul with some Gunas or attributes. The Jaina philosophy again criticises the Nyaya and the Vaiseshika doctrine and maintains that the attributes of the Soul pertain to and inhere in the very nature of the Soul and that it is the Soul which manifests itself in and through its attributes and varied modes. Lastly, the Buddhistic philosophy denies the very existence of a permanent reality, called the Soul. But although varying from each other in this way, all the philosophical systems of India agree in admitting the doctrine of karma,—the doctrine, namely, that

"What a man soweth, that shall he also reap." It may perhaps be said that the "Doctrine of Grace" and the "Doctrine of Vicarious Atonement", as held by the Muhammadans and the Christians, were unknown in ancient India. Right knowledge, Right Faith and Right Conduct oppose the effects of previous actions and prevent the growth of new karma and the consequent series of further existences,—this is the Indian view. It was never denied that the acts already done must have some effects. The law of karma was conceived to be inexorable,—so much so that in the sacred books of India, descriptions are met with, of liberated (Mukta or Kevali) Beings who are still shut up within the prison-house of body for some time, in order that they may experience the fruits of their previous deeds. Sihlana Misra, a poet belonging to the orthodox school in ancient India, sings.—

आकाशमुत्पततु गच्छतु वा दिगन्तम्,
अम्भोनिधिं विशतु तिष्ठतु वा यथेष्टम् ।
जन्मान्तरार्जित शुभाशुभ-कृन्नराणाम् ,
छायेव न त्यजति कर्मफलानुबन्धि ॥ १ ॥

शान्तिशतकम् ८२

"Soar above the sky, go to the end of the directions, dive deep into the sea, or stay wherever you please; the effects of the good and the bad actions which you did in your previous births will never leave you but follow you like a shadow."

The Lord Buddha also has declared:—

न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्झे,
न पब्बतानं विवरं पविस्स ।
न विज्जती सो जगति पदेसो,
जम्मटिट्ठो मुंचेय्य पापकम्मा ॥

धम्मपाद ९—१२

"Neither in the sky, nor in the depths of the sea, nor in the caves of the mountains, there is any place in the universe, staying where one can avoid the effects of his bad deeds."

The Jaina philosopher, Amitagati says:—

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा,
फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटम् ,
स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥

आत्मकृतानुविधाति १०

"A Being enjoys the good or the bad effects of karma which he himself did previously; if it were possible for a Being to experience the fruits of acts done by another person,—well, one's own actions are then fruitless."

In the present essay, the nature of this inexorable karma and its relationship with its effect (Karma-Phala), will be briefly discussed. In other words,—what is karma? How is it connected with the Phala?—This is the subject-matter of this short essay.

The Purva-Mimansa elaborately discusses the various rituals; its main contention, however, is that the Vedic rites and sacrifices lead one to heaven. The Purva-Mimansa does not directly discuss the nature of karma. It will not serve any useful purpose of ours, to enter here into the scholastic disquisitions of the Purva-Mimansa. All the efforts of the Vedanta are directed towards the determination of the nature of Brahman,

"—The One and the Secondless"

and it has little time to discuss the nature of karma. The same thing may be said of the Sankhya and the Yoga. The aphorisms of the Vaiseshika philosophy do not apparently indicate the exact nature of karma. All these philosophical systems seem to have taken for granted,—not to have logically examined,—the doctrines that karma is indissolubly connected with its effect and the present state of a Being is due to his past karma or actions.

In the Nyaya philosophy, however, some attempts are made to determine the nature of karma. The law of karma, again, may be said to be the basal principle of the Buddhistic philosophy. Elaborate discourses about the nature and classifications of karma are found in the Jaina philosophical books. In the present essay, the theories of the Nyaya, the Bauddha and the Jaina schools will be indicated accordingly.

The problem of the connection of karma with its Phala had occurred to the author of the Nyaya philosophy. He knew that a person is the doer of his acts. He could not deny also that an act is connected with a certain effect of its own. But it did not also escape his notice that a person's act often appears as fruitless. Hence arose a reasonable doubt in Gautama's mind, whether a person's act is by itself capable of producing its effect. To explain the apparent disconnection of an act from its effect—which is a matter of frequent experience—he introduced another element in the nexus of

श्रीयुत् लाला फुलजारीलालजी रईस, करहल (मैनपुरी) ।

हिमालय प्रेस मुरादाबाद ।

karma and karma-phala. He says :—

> ईश्वरः कारणं पुरुष कर्माफल्य दर्शनात् ।
> न पुरुष कर्माभावे फलानिष्पत्तेः तत् कारित-
> त्वादहेतुः ॥

> "In the matter of the production of the Effect, God is the cause ; for, a person's act is often found to be fruitless. It may be contended that since Phala or fruit is impossible without the Karma or act. Karma itself is to be supposed as the cause (of the Phala); but the contention is not sound. The Phala is dependent on God for its emergence or coming into explicit existence ; and hence Karma can not be said to be the (only) cause of the Phala."

According to Gautama's theory of Karma, the Karma-Phala is certainly dependent on Karma ; but, then, Karma is not the only cause of the Phala. He contends that if Phala were dependent on Karma alone, every act would have been found to be attended with its fruit. Karma is no doubt a condition of the Karma-Phala but the emergence of the Karma-Phala is not dependent on Karma. A person's act is often found to be unattended with its fruit What does it show ? It shows that there is God who determines the Karma-Phala. In this connection, the philosophers of the Nyaya school introduce the example of the Seed and the Plant. It must be admitted that without the Seed there cannot be the Plant,—just as without the Karma, there cannot be the Phala. But, then, the actual growth of the Plant requires not only the Seed, but Water, Air, Light etc. ; in the same way, the Karma-Phala is dependent on God, for its actual emergence.

It is implied in the Nyaya theory that although above and beyond the Karma, God connects the Karma with its Phala. Some philosophers, however, may refuse to agree that God can thus act from without. According to the older Nyaya, the doctrine of Karma proves the existence of God ; but it may be doubted if the Neo-Nyaya school fully believes in the competency of the Karma-theory for proving the existence of God. Without admitting a God who joins the Karma with the Phala from without, one may, on the contrary, maintain that the Phala is completely dependent on the Karma or. in other words, that the Karma itself produces its own effect. At any rate, this is the theory of the Buddhist school.

Buddihistic philosophy agrees with the other Indian systems in holding that the course of Samsara (series of mundane existences) is due to Karma But karma, as understood by the Buddhists, is some what different from Gautama's Karma. To understand what the

Buddhists mean by Karma, it is necessary first to know what they mean by Samsara. Samsara, according to them, is a continuous flow,—beginningless, endless and unsubstantial. Buddha is reported to have said :—

"Ajnana (ignorance) begets Samskara (tendency); this leads to vijnana (apprehension); from it emerge Nama (name) and Bhautika Deha (material body); from them come the Shat-Kshetra (six spheres or centres); these generate Indriya (the senses) and Vishaya (the objects) ; from the contact of the Senses and their Objects, there arisesVedana (affection); Vedana leads to Trishna (longing to get), this to Upadana (appropriation), this to Bhaba (being), this to Janma (birth), this to Vardhakya (old age), Marana (death), Dukkha (pain) Anusochana (remorse), Yatna (misery), Udvega (anxiety) and Nairasya (despair). Thus flourishes the kingdom of Pain."

Such is the nature of the Samsara-flow, according to the Buddhistic thinkers,—Ajanana to Samskara, Samskara to Vijnana, Vijnana to Nama and Deha, thence to Shat-kshetra, thence to Indriya and Vishaya, thence to Vedana, Vedana to Trishna, Trishna to Upadana, Upadana to Bhaba, Bhaba to Janma, Janma to Marana etc. ! We may avoid the technical terms and briefly say that the Buddhists look upon the Samsara as an unbroken and eternal cognitive series or Continuum (Vijnana-Pravaha).

The Buddhist conception of Karma is clearly intelligible from the above Buddhist theory that Samsara, as described above, is dependent on Karma. Karma, according to the Buddhist is not merely an ethical or moral act, done by a person ; it is a Law universal ! This doctrine of Karma is *practically the same as the Buddhist* doctrine of causality (Karya-Karana Bhava). All the phenomena, things and substances of the world are ruled by this cosmic Law. The Samsara is based on it and guided by it.

As regards the production of Phala or effect, the Buddhist theory is that Karma is supremely independent and has got nothing to do with any foreign principles e. g. God etc. Karma itself produces its own effect. A person, for example, steals ; the effect is, that he becomes a thief. According to the doctrine of the Nyaya philosophy, it is God who intervenes and connects the Karma i. e. the act of stealing with the Phala i. e., the person's becoming a thief. The Buddhists maintain that 'the act of stealing' itself leads to the stealer's 'becoming a thief.' The Buddhist thinkers point out that the act of stealing is a Vijnana i. e., a wave or point of consciousness. This Vijnana or cognitive wave loses itself in the

Vijnana-Pravaha or unbroken flow of cognitive continuum. What remains in the next moment is the Samskara or the persisting mark, a peculiar tendency (of the act of stealing) This Samskara, again, generates the Vijnana or apprehension of the next moment,-which is nothing other than 'the person's becoming a theif'. It is thus proved that 'the act of stealing',—which is the Vijnana of the first moment,—generates 'the person's becoming a thief',—which is the Vijnana or cognitive state of the next moment.

The substance of the Buddhist theory is that Karma is not merely the ethical act of a person. The cosmic flow of phenomena is dependent on it. The second contention of the Buddhistic thinkers is that with regard to the production of Phala, karma is thoroughly independent requiring no interventions of foreign principles e. g. God etc.

Apparently there is no difference between the Jaina and the Buddhist theories, so far as the nature and the operation of Karma are concerned. The Jainas also contend that Karma is not simply an act of a person ; its operation extends throughout the universe and the flow of Samsara also depends on it. As regards the Phala also, the Jaina theory is that Karma is thoroughly self-determined and not dependent on God in any way. The Jainas maintain that from the apparent fruitlessness of Karma, it is not right to conclude the existence of a God. The Phala of a Karma is irresistible. The effect of an act may take time to be explicit but the Karma can never be fruitless. It is no doubt a matter of common experience that a sinful man is prosperous and that an honest man suffers untold miseries. But this does not prove that Karma is ever fruitless. A famous Jaina thinker has said :—

या हिंसावतोपि समृद्धिः अर्हत् पूजावतोपि दारिद्राप्तिः सा क्रमेण प्रागुपात्तस्य पापानुबन्धिनः पुण्यस्य पुण्यानुबन्धिनः पापस्य च फलम् । तत् क्रियोपात्तंतु कर्मजन्मान्तरे फलिष्यतीति नात्र नियत कार्यकारणभावे व्यभिचारः ॥

"The prosperity of a vicious man and the misery of a man devoted to the worship of the Arhat are respectively but the effects of good deeds and bad deeds done previously. The vice and the virtue of their present lives will have their effects in their next lives. In this way, the Law of causality is not infringed."

It is thus that according to the Jaina theory, the Phala of the Karma is irresistible. Karma itself produces its own effect. It is accordingly needless to state that God who is to determine the effects of Karma has no place in the Jaina system.

The above similarity, between the Jaina and the Buddhist theories with regard to the nature and the operation of the Karma, is, however, in words only. There is a fundamental difference between the two views. According to the Buddhists, Karma is an unsubstantial Law; according to the Jainas, it is the cause of the bondage of an unemancipated soul. Karma, to the Jaina thinkers, is a real, concrete substance,—different in nature from the psychical. Owing to the inflow of this Karma substance, the essentially free and pure soul has been in bondage from the beginningless time. Karma is not simply the ethical act of a person; it is neither an unsubstantial Law, as according to the Buddhist thinkers. It is a real substance, material in nature,-essentially free like the soul and opposed to it. Karma in the Jaina philosophy is a concrete substance to a great extent similar to what is understood by Matter in the West. It is essentially different from the soul. When Karma is attached to the soul, it becomes the cause of its bondage; when it separates, the soul becomes free. Kundakundacharya has said :—

जीवा पुग्गलकाया अण्णोण्णा गाढगहण परिबद्धा । काले विजुज्जमाणा सुहदुक् दिंति भुञ्जन्ति ।

६७ पञ्चास्तिकाय समयसार.

"The Soul and the Karma-Matter permeate each other, through and through. At the proper time, they separate; up till that, owing to their *information*, pleasure and pain are generated and experienced."

Elaborate discourses on Karma are met with in the Jaina metaphysical books. The Jaina philosophers adduce arguments to show that Karma is material in nature. They show also how the non-psychical Karma is joined to the conscious psychical principle. They maintain that the universe is filled with very minute karma-substance, called the *karma-vargana* and with conscious souls. Souls and the karma substances are thus contiguous to each other. Although in its essence, a soul is pure, free and intelligent, owing to its proximity to karma, it becomes tinged with attachment (Raga) and envy (Dvesha) and the Karma-vargana also is likewise modified in such a way that it becomes capable of entering into the soul (the soul, modified by *Raga* and *Dvesha*). The result is that the soul gets Bondage *(Bandha)*. The Jaina thinkers compare the soul in its purity to clear water and karma, to mud and urge that the *Samsari Jiva* or the soul in bondage is like turbid or muddy water. As soon as the dirt of karma is removed from the unemancipated soul, it attains its natural state of purity, freedom and enlightenment,-just as

वीर — २

श्रीयुत ब्रह्मचारी धर्मसागरजी ।

हिमालय प्रेस, मुरादाबाद ।

turbid water is found in its transparent condition, as soon as the mud is removed from it.

The karma substance is divided into eight kinds by the thinkers of the Jaina school. First—*Jnanavaraniya* or knowledge-covering Karma; it suppresses the power of cognition. Second-*Darsanavaraniya* or Sensation-covering Karma; it obscures the power of sensation i. e. the power of apprehending a thing, as an undetermined whole. Third-*Mohaniya* or Deluding Karma; it undoes the right faith and right conduct of a soul. Fourth-*Antaraya* or Opposed Karma; it hampers the free functioning of the soul. Fifth—*Vedaniya* or Affective Karma; owing to it, the soul gets pleasure or pain. Sixth—*Nama* or State-determining Karma; this determines whether a soul is to incarnate as a god, a man or a lower animal, what sort of a body it is to have etc. etc. *Seventh Gotra* or Family-determining karma; this brings the soul into a high or a low family. Eighth—*Ayus* or Age-determining karma; it determines the span of a soul's particular life. The Jnanavaraniya again is further subdivided into five, the Darsanavaraniya into nine, the Mohaniya into twenty-eight, the Antaraya into five, the Vedania into two, the Nama into ninety-three, the Gotra into two and the Ayus into four modes. The eight kinds of the karma-substance are thus divided into one hundred and forty eight sub-classes. According to the Jaina theory, every state or condition of a soul is due to the inflow of a peculiar kind of karma-substance; even the very bones of an animal's body are determined by a karma, called the *Asthi-karma*. The detailed description of these one hundred and forty-eight modes of karma will be found in Jaina philosophical treatises and is not attempted here for brevity's sake.

The eight primary modes of karma,—the Jnanavaraniya etc.—are broadly classified into two,—the *Ghatiya* and the *Aghatiya*. The Jnanavaraniya, the Darsanavaraniya, the Mohaniya and the Antaraya come under the Ghatiya karma and the Vedaniya, the Nama, the Ayus and the Gotra are the Aghatiya karma.

The inflow of karma causes the bondage of the soul. Hence the '*Prakriti*' or nature etc. of Bondage is determined by the nature etc. of karma. The '*Sthiti*' or duration of Bondage also is dependent on the duration of a karma; the Jaina philosophers in their books have determined the period of which a particular karma may remain attached to the soul. The '*Anubhava*' or '*Anubhaga*', i. e. the intensity of Bandha is due to the intensity or otherwise of the power of a karma to produce its effect,

The quantity of the karma-matter informing every part of the soul determines the '*Pradesa*' or part of the soul, held in bondage. A detailed discussion of these is also not attempted here.

The Jaina theory is that karma is a non-psychical material substance, opposed to the soul. How it comes in contact with the soul has been described above. It must, however, be always remembered that neither is the soul the direct cause of the modifications in the karma-substance nor is the karma, the direct cause of the modifications in the soul. Kundakundacharya has said :—

कुर्व्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स।
णहि पोग्गल कम्माणं इदि जिण वयणम् मुणे यव्वम्॥
कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणम्।
६१—६२ पञ्चास्तिकाय

"The soul operates on and in its own nature and causes its own *Bhava* or state. The theory of the Jaina is that it is not the (direct) cause of the modifications in the karma-matter."

"The karma also is the cause of its own state or modification, working in and through its own nature."

The relationship between the Jiva and the karma will be clearly understood from what Nemi Chandra has said,—

पुग्गल कम्मादीणं कत्ता ववहारदोदु णिच्छ-यदो चेदण कम्माणादासुद्धणया सुद्ध भावाणम्।

द्रव्य संग्रह ८

"From the practical or empirical stand-point (*Vyavahara*) the soul is the cause of karma-modifications. From the imperfectly outological stand-point (*Asuddha nischaya-naya*), the soul is the cause of its own conscious dispositions (e.g. attachment, envy etc.) According to the purely Metaphysical view (*Suddha nischaya naya*), it is the cause of its own pure, essential states."

Infinite Knowledge, Infinite Joy etc. are the essential attributes of the soul. According to Suddha-Naya, the soul is the possessor,—the '*karta*'—of these attributes. Hence from the purely outological standpoint, the soul may be said to be unrelated to the karma-substance.

The dispositions e. g. attachment, envy etc. arise in the soul in its impure state.

भावनिमित्तोबन्धो भावोरदि रागद्वेष मो ह-जुदो पञ्चास्तिकाय समयसार।

"Bondage is due to Bhava (disposition)—and the Bhava which is the cause of Bondage is attended with Lust (*Rati*), Attachment (*Raga*), Repulsion (*Dvesha*) and stupifaction (*Moha*)"

The *Bhava-Pratyayas* i.e. the psychical dispositions of Attachment, envy etc. give rise to wrong Belief (*Mithya Darsana*), Unrestraint (*Avirati*) Reck-

lessness (*Pramada*), Improper Emotions (*Kashaya*) and connection (*Yoga*). These five are called the five *Bhava-karmas* i. e. subjective karmas as distinguished from *Dravya-karma* which is material karma itself. According to Asuddha-Nischaya-Naya or partially outological views, the soul is the cause of the above four 'Bhava-Pratyayas' and the five 'Bhava-karmas'. Hence from this stand-point also, the soul cannot be said to be the cause of the modifications in the karma-matter.

Although according to the Suddha-Nischaya and the Asuddha-Nischaya, the soul is not the cause of the karma-modifications, it is so, according to view-point, called the Vyavahara-Naya. When the Bhava-karmas e. g. Wrong Belief etc. arise in the soul, its condition becomes such that the flow of the Dravya-karma or karma-matter into the soul can no longer be resisted and the soul gets Bondage thereby and goes on experiencing plasures and pains as effects of the inflow of karma-matter.

It will be manifest from what is stated above that even if we leave out of account the Suddha-Nischaya view, the soul cannot be said to be the cause of the karma-modifications from the stand-point of the Asuddha-Nischaya. The soul is characterised by consciousness ; hence it cannot be the 'material cause' (*Upadana-karana*) of karma. The inflow of karma-vargana is due to Bhava-karma ; and hence the soul can not be said to be the direct 'attendant cause' (*nimitta-karana*) of the inflow. According to the Nischaya Naya, the soul is the cause of i. e. possessed of its own pure, essential states (attributes etc.) alone. The Bhava pratyayas and the Bhava karmas, however, make the condition of the soul such that the karma-matter, modified in a similar manner, flows into it without any hindrance. Although the soul is directly neither the *upadana-karana* nor the *nimitta-karana* of the karma-vargana becoming modified in such a way that it can freely enter into the soul, indirect causation may doubtless be attributed to it ; and for this reason, from the Vyavahara or empirical stand point, the Jiva is said to be the cause of (the modifications in) the karma-matter.

The above is but a synopsis of the Jaina doctrine of karma. According to the Nyaya theory, karma is simply an ethical act of a morally disposed man. Gautama admitted the existence of a God who joins the phala to the karma,—as he often found a person's act to be apparently fruitless. The Buddhists contended that karma is not simply the ethical act of a man ; it is, according to them, a great Cosmic Law, the Law of Causality, the basic princi-

ple of the Samsara. The karma itself produces the phala through the Samskara; there is no determining God according to the Buddhistic philosophers. The Jainas also look upon karma as a cosmic principle. They also maintain that the karma produces the phala without the interference of God. For various reasons, the phala may take time to be explicit but it is sure to come about. According to the Jainas, karma is not simply the act of a person, nor is it an unsubstantial Law. It is Material in nature. The soul which is essentially pure though in bondage from the beginningless time, goes on having bondage after bondage, owing to the inflow of karma. According to the Nischaya Naya, the soul is the cause of its own states e.g. Raga, Dvesha etc., it is neither the material nor the attendant cause of the karma modifications. As, however, the rise of the states, e.g. Raga etc. makes it possible for karma to enter into the soul, the Soul is regarded as the cause of the karma-modifications from the empirical standpoint. Karma is primarily divided into two classes, Ghatiya and Aghatiya. It is of eight modes viz., Jnanavaraniya, Darsanavaraniya etc. and is of one hundred and forty-eight sorts viz., Srutavaraniya, Charitra Mahaniya etc.

When the karmas are absolutely eradicated, the Jiva becomes established in its own pure essence i.e., attains final Emancipation (Moksha).

साहित्यसमालोचना।

वृहद् जैन शब्दार्णव।

लेखक व प्रकाशक बाबू बिहारीलालजी बाराबंकी।

इस बहुमूल्य पुस्तक का पहिला भाग प्रकाशित हुआ है और उसको मैंने पढ़ा है। वास्तव में यह अपने ढंग का निराला कोष होगा जो सब बातों में परिपूर्ण (comprehensive and exhaustive) होगा। कम से कम इस के विद्वान् लेखक की नियत तो यही है कि इसको जैन इन्साइक्लोपेडिया (विश्व कोष Jaina Encyclopaedia) बनाया जावे लेखक की हिम्मत, विशद उत्साह परिश्रम, खोज और खूबी की प्रशंसा करना वृथा है। स्वयं इस शब्दार्णव के पृष्ठ उनकी प्रशंसा पूर्णतया कर रहे हैं। मैंने दो एक विषयों को परीक्षा की दृष्टि से देखा और लेख को गुडमलक तथा पेचीदगी से रहित पाया। उनमें मुझको दिखावे के पाण्डित्य की नहीं प्रत्युत वास्तविक पाण्डित्य ही की झलक नज़र आई। यह कोष बाबू बिहारीलालजी की उमर भर की मेहनत है। यूं तो उन्होंने छोटे मोटे बहुत से ट्रेक्ट लिखे हैं परन्तु प्रस्तुत कृति अपने ढंग में अपूर्व है।

चम्पतराय जैन

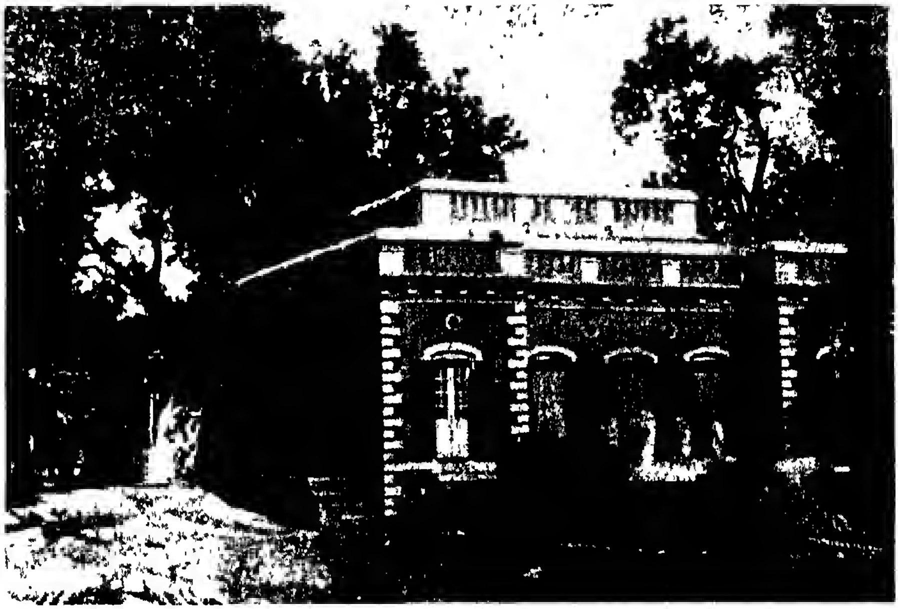

श्री जैन बाला-विश्राम (छात्रावास), आरा ।

हिमालय प्रेस, मुरादाबाद ।

चित्र-परिचय।

महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी।

भुवनविख्यात अहिंसा के परम पोषक, भारत के कर्णधार को कौन नहीं जानता है ? जैनियों को आपके विषय में यह जानकर हर्ष होगा कि आप के सिद्धान्त बहुत करके जैन तत्त्वों के अनुसार होते हैं। तिसपर जिससमय आप विलायत पढ़ने के लिये जाने लगे थे उस समय अपनी माता के आग्रह से इन्होंने एक श्वे० मुनिके निकट श्रावक के पंचव्रत ग्रहण किये थे जिनके अनुरूप में ही आज आपका पवित्र जीवन है। आपके प्रति सच्ची विनय तो केवल आपकी अभिलाषा-पूर्ति में है। आपकी उत्कट इच्छा है कि प्रत्येक भारतीय घर में स्वदेशी का प्रचार और चर्खेका मधुर गुंजार हो। जैनियों को अहिंसा धर्मके नाते इन दोनों बातोंकी पूर्ति करना आवश्यक है।

—•—

रायबहादुर श्रीमान् सेठ मानिकचन्दजी।

आप का जन्म संवत १९०५ के माघ्ना मास में तेरस मंगलवार को झालरापाटन के बहुत पुराने और प्रतिष्ठावान घराने में हुआ। आप के स्वर्गीय पिता श्रीमान सेठ बालचन्दजी सेठी बड़े धर्मात्मा, दीनप्रतिपालक और व्यापारकला-निष्णात थे। उनकी सनर्थ धर्मपत्नीसे आप प्रथम संतान हैं। आपके दो भाई श्री सेठ लालचन्दजी सेठी वाणिज्यभूषण और श्री सेठ नेमीचन्दजी सेठी हैं। श्रीलालचन्दजी सेठी के पुत्र बा० विमलचन्दजी सेठी और पुत्रियाँ राजकु० री बाई तथा मनोरामा बाई हैं। आपके बड़े भ्राता स्वर्गीय श्रीदीपचन्दजी के पुत्र श्रीभँवरलालजी सेठी हैं, जिनके ३ छोटे २ बच्चे प्यार की अनोखी वस्तु हैं। आप की दो बहिनें स्वर्गवासिनी हो चुकी हैं।

आप की मातेश्वरी एक लाख रुपयों का दान करके वैशाख सं० १९८० में स्वर्गवासिनी हुई हैं। जिस समय माताजी की बीमारी का तार आपके पास इन्दौर पहुँचा, उस समय आप बहुत बीमार थे उठने बैठने की भी शक्ति कम थी। यहाँ तक कि आप का आपरेशन होने वाला था और डाक्टरोंकी चलने फिरनेके लिये सख्त मनाई थी। लेकिन डाक्टरों के मना करने पर भी आप माता की बीमारी का तार पाते ही फौरन वहाँ से चल पड़े और माता की सेवा में आगये। यहाँ आकर आपने जननी की सेवा शुश्रूषा में रात दिन एक कर दिया। इस प्रकार आप का मातृप्रेम परम प्रशंसनीय है।

आप की शिक्षा बंबई में आप के निकट के सम्बन्धी तथा बंबई दुकान के मुनीम स्वर्गीय लछमणलालजी पांड्या की देखरेख में ७ वर्ष तक हुई है। आप की अंगरेजी शिक्षा के लिये खास तौर पर योग्य मास्टर रक्खे गये थे। जिस से आप की अंगरेजी की योग्यता बहुत ही अच्छी होगई है। इस समय आप को व्यापारसम्बन्धी कामों का बड़ा अच्छा अनुभव है।

इसके सिवा आपको हिन्दी, गुजराती भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान है। उर्दू भी आप थोड़ी जानते हैं। लिखने पढ़ने का आप को बेहद शौक है। मातृभाषा हिन्दी से आपका बड़ा अनुराग है। इन भाषाओंकी पुस्तकोंका आपके पास बड़ा अच्छा संग्रह है। जो पुस्तक नई प्रकाशित होती है वह सब के प्रथम आप के पास आजाती है। कई ग्रंथ-मालाओं, पत्रों और पुस्तकों के आप स्थायी ग्राहक हैं। सब पुस्तकें आप के पास आती हैं। जैसे आप पुस्तकें मँगाते हैं वैसे ही पढ़ते भी हैं। विद्या का आप को अच्छा व्यसन है।

आप के खानदान में शुरू से ही खूब दानधर्म होता आया है, आपने भी इसमें अच्छा भाग

लिया है। अपने भाइयों से आपका ख़ास तौर पर स्नेह है। सामाजिक कार्यों में आप बराबर भाग लिया करते हैं। श्री भा० दि० जैन परिषद के सर्व प्रथम सभापति आप ही थे। आप का स्वभाव बड़ा खरा और साफ़ है। सामाजिक विचार बड़े उदार हैं। ख़ाली विचार ही नहीं, पर आप उन्हें कार्य-रूप में परिणत करते हैं। विलायत जाने का आप का विचार महतों से था, सो आप विलायत गये ही। खंडेलवाल जाति में इन्हीं की यह पहली विलायत यात्रा है। पर आप स्वतंत्र विचार रखते हुए भी, किसी सामाजिक कार्य में अपनी राय अलग होते हुए भी उनके होने में कोई आपत्ति नहीं समझते हैं। आपने जैन धर्म पर आप की बड़ी बड़ी श्रद्धा है। आप अपने अच्छे बर्ताव और मिलनसारी से बड़े २ राजा महाराजाओं पर प्रभाव डाल लेते हैं। सभी आपका बड़ा आदर सम्मान करते हैं। आप में मिलनसारी का गुण बड़ा अच्छा है। सचाई को आप खूब पसन्द करते हैं।

समाज से आप सदा भयभीत रहते हैं। स्वधर्म पर आप की बड़ी श्रद्धा है। आप व्रत उपवास प्रायः किया ही करते हैं। पूजापाठ आपके नित्यनेम हैं। आपके विचार बड़े विशद हैं। जाति के उत्थान के आप प्रयासी हैं। आप को भ्रमण का बड़ा शौक है। समय २ पर भारत के प्रायः सभी नगरों में आप भ्रमण कर चुके हैं। आजकल आप विलायत यात्रा में हैं। वहां भी आपको स्वधर्म का ध्यान है। 'वीर' के पाठकोंको हम अपना वहां का अनुभवरूपी अंक में भेंट करना चाहतेथे। परन्तु आनेमें अधिक समय लगनेके कारण उनको आगामी अंककी प्रतीक्षा करनी होगी। अपने स्वधर्म और आचार विचार की रक्षा करते हुए ही आपने यह यात्रा की है। वहाँ भी आप बड़े नियम से रहते हैं। यहाँ से ब्राह्मण आदि नौकर आप अपने साथ लेगये हैं। आटा दाल, शाक भाजी, नमक मिर्च आदि कुल चीज यहाँ से आप के पास विलायत जाती हैं। और उन्हीं को आप काम में लेते हैं। हरचीज यहाँ से बराबर जाती रहती है। इस प्रकार वहाँ भी आप अपने धर्म का अच्छा पालन कर रहे हैं।

आप रायबहादुर की पदवी से विभूषित हैं। ग्वालियर राज्य से "ताजुल मुल्क" हैं, वहाँ की लेजिस्लेटिव कौंसिल के आप मेम्बर हैं और महाराज के ख़ास ए० डी० सी० भी। झालावाड़ राज्य से आप के पाँव में सोना है और "श्री" का खिताब है, तथा वहीं से आप "वाणिज्य भूषण" हैं। रायल एशियाटिक सोसाइटी के फ़ेलो हैं। भगवान से प्रार्थना है कि आप शीघ्रही सकुशल स्वदेश को लौटें और आपके उन्नत विचारों द्वारा जाति में नवजीवन का संचार हो।

इस बार आप का यह संक्षिप्त परिचय ही दिया जारहा है। यदि होसका तो फिर कभी आप का पूर्ण जीवनचरित्र "वीर" के किसी अंक में प्रकाशित होगा।

—※—

संघई कुञ्जीलाल जी।

बनारस के चांदी आदि सामान के "जैन कार्यालय" नामक फर्म के आप प्रोप्राइटर हैं। आप का जन्म लमेचू जाति में आषाढ़ बदी ? सं० १०३१ को हटा में हुआ था। १८ वर्ष तक आप वहीं रहे पश्चात् बनारस में आकर बनारसी जरी के मालका व्यापार करने लगे, जिस में इस समय आपने विशेष उन्नति प्राप्त की है। आपको बचपन से ही नाटक लिखने या कविता करने से प्रेम था। उसी के फलस्वरूप आप को साहित्य सेवा और नाट्य-संचालन आदि पर विविध सर्वसाधारण संस्थाओं और स्थानों से १८ पदक (Medals) प्राप्त हो चुके हैं। आपने क़रीब ११ नाटक लिखे हैं। जिनमें सूरदास, वीरेन्द्र वीर, धर्मजय, सुविध

प्रकाश, मनोवती आदि उल्लेखनीय हैं। इन के अतिरिक्त 'कुंजविलास' नामक भजनाकी ४ पुस्तकें आप ही द्वारा प्रणीत हैं। वर्तमान कालीन जैन भजनों में आप के भजन विशेष सारपूर्ण होते हुए भी ललित हैं। आप को केवल साहित्य से ही प्रेम नहीं है प्रत्युत प्रत्येक ललित कला से आप सहानुभूति रखते हैं। पेन्टिंग, कारपेन्टरी, टेलरिंग, ड्राइंग आदि विषयों में आप निपुण हैं। और उन्हें विशेष कर लोगों को बतलाया करते हैं। १६ वर्षकी अवस्थामें आपने एक नवीन हारमोनियम बनाया था, साथ ही आपको जातीय कार्यों से भी सहानुभूति है। उनमें यथाशक्य आप भाग लेते रहते हैं। अभी हाल में लम्बेचू जातीय सभा का अधिवेशन आप के सभापतित्व में सफलता से हो गया था। आप का चारित्र व्यवहार इतना उदार है कि आप के छै भाई, माता पिता, पुत्र पुत्रियां भतीजे भतीजियां आदि इकट्ठे रहते हुए बड़े प्रेम और आनन्द से कालयापन कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि आप इसही प्रकार समृद्ध दशामें विशेष काल तक रहते हुये जैनोत्थान के कार्यों में और भी विशेष भाग लेवेंगे।

—०—

श्री नशियां जी।

अजमेर के सुप्रसिद्ध जैन सेठ रायबहादुर टीकमचंद जी जैनसमाज में सुप्रसिद्ध हैं। आपही के पूर्वजों ने यह नशियां नामक विशाल दर्शनीय मंदिर बनवाया था, जिसका कार्य आज भी चालू है। भारत में इस काल में जो इमारतें बनी हैं उनमें यह अपने ढंग की सर्वोत्कृष्ट प्रमाणित होगी। आज कल के जैनशिल्प का यह अद्वितीय नमूना ही समझना चाहिये।

—०—

श्री पोनूर हिल।

जिन भगवद्तुल्य आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी का विवरण पाठक अन्यत्र पढ़ रहे हैं, उन्हीं प्रातःस्मरणीय जैनाचार्य ने जिस पवित्र स्थान पर तपश्चरण और आत्ममनन किया था वह यही है। जैनबद्री की यात्रा करते समय यहां के दर्शन अवश्य करना चाहिये। यहीं पर अब आरा के जैन रईस बाबू धरणेन्द्र प्रसादजी ने "कुन्दकुन्दाश्रम" नामक एक उदासीन भवन स्थापित किया है, जहां पर रहने का उनका स्वयं विचार है। इस आश्रम से हमें जैनधर्मोन्नति की विशेष आशा है।

—०—

श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी जैन।

इलाहाबाद सुमेरचंद दि० जैन बोर्डिंग हाउसके चमकते हुए रत्न हैं। आपने वहीं रहकर स्वयं होस्टल को परम उन्नति की है और इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में विशेष मान्यता प्राप्त की है। आजकल आप वहीं पर अर्थशास्त्र के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हैं। जैन होस्टलों में प्रयाग होस्टल को आदर्शरूप बनाने में आप के सत्कार्य कभी भी नहीं भुलाये जासकेंगे। अंग्रेजीविज्ञ जैनों में आप द्वारा विशेष जागृति और जैनत्व का प्रचार होगा, इसका हमें पूर्ण विश्वास है। "जैन होस्टल मैगज़ीन" द्वारा जाति और धर्मोन्नति के आप विशेष बीज बोरहे हैं। अब आप का एक साथ ही होस्टल के वारडनशिप का कार्य करना, मैगज़ीन का सुचारु सम्पादन करना, यूनीवर्सिटी होस्टल बोर्ड में आनरेरी कर्तव्य पालन करना और अपने प्रोफेसर पद की पूर्ति करना आपके उत्कट सेवाभाव का ही मिष्ट फल है। हमारी भावना है कि आपके शुभ सेवाभाव और भी वृद्धि को प्राप्त हों, जिससे जैन समाज को आप में पूर्ण गर्व हो।

—०—

श्रीयुत बाबू बिहारीलाल जी।

आपका जन्म बुलन्दशहर में

मीत्तलगोत्रीय अग्रवाल जैन श्री ला० देवीदास जी के यहां वि०सं० १९२३ श्रावणशुक्ला १४ को हुआ था। बुलन्दशहर में ही आपने इन्ट्रेन्स तक अंग्रेजी की शिक्षा पाई थी। फिर वहीं आप हाईस्कूल में ८ वर्ष तक असिस्टेन्ट मास्टर रहे थे। पश्चात् अमरोहे को आपका ट्रान्सफर हुआ और वहां करीब १५ वर्ष रह कर बाराबंकी को आप भेज दिये गये, वहां आप ७-८ वर्ष से हैं। आप को सरकारी सरविस में ३० वर्ष से अधिक होगये हैं। इसलिये आप रिटायर होने वाले हैं। आप हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं का पूर्ण ज्ञान रखते हैं। जैन धर्मावलम्बी होने पर भी आप न केवल जैन ग्रन्थों ही के अच्छे मर्मज्ञ और अभ्यासी हैं किन्तु वैदिक, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम आदि अनेक धर्म और गणित, ज्योतिष, वैद्यक-सम्बन्धी सहस्रों ग्रन्थों को निज व्यय से मँगाकर उनका यथाशक्ति ज्ञान प्राप्त करते रहे हैं। इससमय आप का क़रीब ६ हजार ग्रन्थों का संग्रह है। आपका साहित्यिक ज्ञान विशेष बढ़ा चढ़ा है। आपने सबसे पहिले उर्दू भाषा में ग्रन्थ लिखने का प्रयास सं० १९४५ में और हिन्दी में सं० १९८६ में प्रारम्भ किया था। तबसे आप ने उर्दू भाषा में २८ ग्रन्थ स्वयं लिखे और अनुवादित किये हैं तथा हिन्दी भाषा में भी २४ ग्रन्थ आप द्वारा प्रणीत हुये हैं। स्थानाभाव के कारण यहां पर उनका नामोल्लेख करना कठिन है। उनके विषय में उनके सुपुत्र बाबू शांतिचन्द्रजी से दर्याफ़्त करना चाहिये। आपने एक उर्दू मासिक पत्र का कुछ कालतक सम्पादन भी किया था। हिन्दी ग्रन्थों में विशेष उल्लेखनीय आप का "बृहत् जैनशब्दार्णव" जो बड़े साइज़ के १०-१२ सहस्र पृष्ठों में पूर्ण होगा और "बृहत् विश्वचरितार्णव" है। आप केवल हिन्दी उर्दू के लेखक या कवि ही नहीं हैं ज्योतिष, वैद्यक, रमल, यंत्र, तंत्र, गणित आदि के ज्ञाता हैं। आपने ग्रन्थावलोकन और लेखन कार्य नित्यप्रति अधिक समय तक भले प्रकार कर सकने की योग्यता प्राप्त करने के लिये २०-२१ वर्ष की वय से ही रसनेन्द्रिय को वश में रख कर थोड़ा और सात्विक भोजन करने का अभ्यास किया और २४ वर्ष की वय से पूर्व अपना विवाह संस्कार भी नहीं कराया। इसही संयम-अभ्यास के बल आप इस ४५ वर्ष की अवस्था में भी विशेष परिश्रम मज़े में करते हैं। कोष को लिखने के समय से अपनी सात्विक वृत्ति बढ़ाने हेतु आप सवा वर्ष से अधिक तक केवल सेर-सवा सेर गोदुग्ध या कुछ फलों पर ही निर्वाह करते रहे अब भी आप अल्प आहारी हैं। अंग्रेज़ी-शिक्षितों ही नहीं प्रत्युत समग्र समाज में आप सदृश संयमी शिक्षित पुरुष कठिनता से ही मिलेंगे। हमारी आन्तरिक भावना है कि आप उत्तरोत्तर आत्मोन्नति कर समाज सेवा में विशेष अग्रसर हों। अमरोहा आदि जैन सभाओं के आप सभापति भी थे।

—•—

व्यंग-चित्र

में पाठकों को वर्तमान कालकी शिक्षापद्धति के कटुक फल के दर्शन कराये गये हैं। साम्प्रत कर्मप्रधान समय है। कुशल कार्य करने वाले-शिल्पी-कारीगर ही चहुँ ओर दरकार हैं। कोरे मग़ज़ पच्ची करने वाले विलासिता के प्रतिमूर्ति नवशिक्षितों की आवश्यकता नहीं है। यही इस चित्र का भाव है। जैनियों में इस समय शिक्षा-प्रणाली किस बेढंगे ढंग पर है यह इस के उन पवित्र-रूपी फलों से भली प्रकार जानी जासकती है जो उसको नमस्कार करके कहीं समाज में ही अपनी आजीविका का आश्रय ढूंढते हैं। सरकारी शिक्षा-प्रणाली जिस प्रकार क्लर्क-प्रसविनी है उस ही प्रकार जैन-शिक्षा-पद्धति भी अध्यापक उत्पन्न

वीर

श्रीयुत् जयकुमार देवीदास चवरे वकील, अकोला।

सभापति—भा० दि० जैन परिषद् (द्वितीय अधिवेशन), वार्धा।

हिमालय प्रेस मुरादाबाद।

करने वाली बन रही है। यहां और वहां के फलों में अन्तर नहीं। दोनों स्थान के फल दासता के बल पर पकने का साहस करते हैं। किन्तु फेर इतना ही है कि पहिले फलों का तो अजीर्ण सभ्य संसार को होचुका है और दूसरों का होने ही वाला है। अतः धर्म और समाज की भलाई के लिये जैनशिक्षालयों का शिक्षाक्रम एक दम बदल देना चाहिये, जिस से स्वावलम्बी धर्मनिष्ठ धुरंधर विद्वान् उत्पन्न हों!

श्री जैन नशियां जी (जमुना तट) इटावा।

यह प्राचीन स्थान अभी हाल में प्रकट हुआ है। गत चातुर्मास में श्रीमान् जैनधर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्र० शीतलप्रसाद जी ने इस स्थान को ढूंढ निकाला था। यहां पर एक मठ तथा तीन स्तूप ईंटों के बने हुये हैं। यद्यपि पहले से ही इटावे के जैनी यहां पर अपनी संतान की मुण्डन क्रियादि किया करते थे परन्तु उनको यह नहीं मालूम था कि यह एक जैन मुनि का समाधिस्थान है। बीच की छोटी सी गुमटी में श्रीविनयसागर निर्ग्रन्थ मुनिमहाराज के चरणचिन्ह विराजमान हैं और उन पर एक लेख अंकित है। पास ही में उनके शिष्यों के समाधिस्थान तथा चरणचिन्ह हैं। यह प्राचीन स्थान बड़ा मनोज्ञ-ध्यान के लिये उत्तम है। इटावे के जैनी अब इसका उद्धार कर रहे हैं। उत्तम हो यदि यहां पर एक उदासीनाश्रम और वृहद्जैन अन्वेषण के लिये (Jain Research) एक पुस्तकालय स्थापित किया जाय। इटावे के जैनियों को ध्यान देना चाहिए।

—•—

श्रीमान् ला० फूलजारीलालजी

करहल निवासी जैनकुलोद्भव का जन्म कार्तिक शुक्ला ५ सं० १९१६ को अलीगंज (एटा) में ला० सोनेलालजी के गृहमें हुआ था। आपकी ४ वर्ष की अवस्था थी कि जब ही आपको ला० शिखिरप्रसाद जी रईस व ज़मींदार करहल ने गोद ले लिया। परन्तु उसी वर्ष ला० शिखिरप्रसाद का देहान्त होगया और दत्तक पुत्र का पालन पोषण उन की पत्नी ने बड़े प्रेम से किया। दिहुली के ला० छदामीलाल के यहां आप का विवाह हुआ। १६ वर्ष की अवस्था में आपने हिंदी, उर्दू तथा फारसी में अच्छी योग्यता प्राप्त करली। कानून का अध्ययन भी किया परन्तु वकालत की परीक्षा न दी। संस्कृत व अंग्रजी का भी किञ्चित् परिचय प्राप्त किया। आपकी रुचि प्रारम्भ से ही धर्म की ओर विशेष रही है। १६-१७ वर्ष की अवस्था से ही आप कौटुम्बिक व्यवस्था तथा ज़मींदारी का प्रबन्ध कर रहे हैं। तीनों पुरुषार्थों का पालन समुचित रीति से कर रहे हैं। आपने भी निज संतति न होने के कारण अपने साले के लड़के ला० मिठाईलाल को गोद लिया है, जिनकी शिक्षा-दीक्षा तथा विवाह-लग्न भी विशेष पटुता के साथ पूर्ण हुये हैं। धर्मप्रवृत्ति के अनुरूप आपने विविध प्रकार से करीब ४६०००) रु० दानभी किया है। अभी हाल में श्री बिम्ब प्रतिष्ठा भी करा कर आपने महत् पुण्योपार्जन किया है। असमर्थ विद्यार्थियों को आप छात्रवृत्तियां देते रहते हैं। सरकारी कार्यों में भी आप विशेष सहायता देते रहते हैं और आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। मैनपुरी में भी एक धर्मशाला आपने बनवाई है। १००) साल नफे की ज़मींदारी आपने विद्या प्रचार के लिये निज पत्नी के स्मरणार्थ अलग निकाल रक्खा है। आपका उदार, धर्मपूर्ण चरित्र अनुकरणीय है। "वीर" के प्रति आप के सद्भाव हैं। भावना है आप दीर्घकाल तक धर्मसेवन करते हुये जाति के उद्धार हेतु उपकार कार्य करें।

—•—

श्रीमान् पूज्य ब्रह्म० धर्मसागरजी

गृहस्थावस्था में श्रीयुत बालकृष्ण अडकोजी शाहकर के नाम से प्रख्यात थे। आपका जन्म सन् १८८० में वर्धा जिलान्तर्गत सोनेगांव में हुआ था। आपने सन् १९२० में नागपुर के हिसलप कॉलिज से बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की। परीक्षा में फिलॉसफी और संस्कृत ही आपके मुख्य विषय थे। फिर आपने तीन वर्ष मुरेना जैन सिद्धान्त विद्यालय में जैन दर्शन का अध्ययन किया है। वहां आप अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षक और सुपरिन्टेन्डेंट का भी कार्य कर चुके हैं। छुटपन से ही आपकी प्रवृत्ति धार्मिक थी और इच्छा थी कि कब मैं एक सन्यासी बनूं। छात्रावस्था से ही आप इस त्याग अवस्था की तैयारियां कर रहे थे। मात्र देरी थी धार्मिक और लौकिक ज्ञान में पूर्णता प्राप्त करने की और तब त्याग मार्ग में प्रविष्ट होना इष्ट था। वह समय गत १८ जनवरी को फलटण जिला सतारा (बम्बई प्रांत) में आप को प्राप्त होगया। वहां अपने दीक्षागुरु स्वस्ति श्री अनन्त स्वामी से आपने ब्रह्मचर्यावस्था की दीक्षा ग्रहण की। आप का दीक्षानाम "धर्मसागर" भी ज्योतिष गणित के अनुसार रक्खा गया है। यह विषय हर्ष और गौरव का है कि सर्व प्रथम दि० जैनियों में आप ही एक ग्रेज्युएट ब्रह्मचारी हैं। हमारी हार्दिक भावना है कि आप आत्मोन्नति करते हुये विशेष कालतक जैन धर्म का प्रचार जैन-अजैन और देश-विदेश में करते रहें।

—०—

श्रीजैनबाला विश्राम-भवन।

आरा के स्व० बाबू देवकुमार जी का प्रसिद्ध अग्रवाल कुल धर्मकार्य में विशेष प्रख्यात रहा है। आज भी उस कुल के रत्न रूप बाबू निर्मल कुमार जी उस का प्रकाश पूर्ववत् प्रकट कर रहे हैं। उस ही कुल से जैन समाज को एक परम विदुषी की प्राप्ति हुई है। श्रीमती पण्डिता चन्दाबाई जी से आज जैन-महिला-संसार भली भांति परिचित है। आपही ने सत्प्रयत्नों द्वारा आरा में जैन महिलाओं में शिक्षा प्रचार हेतु तथा विधवा बहिनों के जीवन सुधारार्थ एक "जैन बाला विश्राम" स्थापित कर रक्खा है। उस के अल्प जीवन काल में ही जो लाभ उत्तर-प्रांतीय जैन महिलाओं का हुआ है वह सर्व प्रकट है। यह एक आदर्श विद्यालय और छात्रागृह है। यहां से शिक्षा प्राप्त कर के कन्या अपने साथ एक अपूर्व प्रकाश रखती है और जिस गृह में पहुंचती है उसको प्रकाशमान कर देती है। यहां का प्रबन्ध सर्वथा उत्कृष्ट है। बहिनों को यहां आकर इस से लाभ उठाना चाहिये। उत्तर प्रांत की प्रत्येक विधवा-बहिन को तो ज़रूर ही इस विश्राम में पहुंच कर आत्मकल्याण करना चाहिये। हमारी भावना है कि इस विश्राम की विशद्र उन्नति हो। यहां के नवीन भवन का ही चित्र हम प्रकट करना चाहते थे परन्तु समय पर ब्लाक न बन सकने के कारण हम पुराना ही चित्र प्रकट करते हैं।

(क्रमशः)

—०—

संसार दिग्दर्शन

भा० दि० जैन परिषद्

की ओर से श्री प० भँवरलालजी राजपूताने में और श्री प० प्रेमचन्द्रजी पंचरत्न सी० पी में दौरा करने के लिये गये हैं। जहां उपदेशक महोदय जायँ वहां के जैनी भाइयों को इनके व्याख्यान कराने चाहियें और परिषद् के सभासद् बनकर और सहायता पहुंचा कर परिषद् को अपनाना चाहिये।

ज्योतिप्रसाद जैन मन्त्री उपदेशक विभाग
भा० दि० जैन परिषद्

गोमटस्वामी महामस्तकाभिषेक मेला।

ता० १५-३—२५ को श्रीमान् महाराजा कृष्णराज बहादुर मैसुर अपने दो मामों सहित पहाड़ पर पधारे थे व अपनी तरफ से अभिषेक कराया था तब बंदोबस्त बहुत अच्छा था। आज करीब ३०००० आदमी अभिषेक देख सके जिनमें करीब चार पांच हजार विंध्यगिरि पर थे और शेष सब ने चंद्रगिरि पहाड़ पर इधर उधर बैठकर दूर से अभिषेक देखा था। महाराजाने अभिषेकके लिये ५०००) प्रदान किये थे। बादने श्री गोमटस्वामी की प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया तथा द्रव्य से पूजन की थी व कुछ रुपये प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेंट किये थे व भट्टारकजी को नमस्कार भी किया था। सुबह ९ बजे से दोपहरको १ बजे तक इस प्रथम अभिषेक का कार्य अतीव आनंद व धर्म प्रभावनाके साथ हुआ था। इस अभिषेक में जल, दूध, दही, केला, पुष्प, नारियल का चुरमा, घृत, चंदन, सर्वौषधि, केशर, इक्षुरस, लाल चन्दन, बादाम, खारक, गुड़, शक्कर, खसखस, फूल, चनेकीदाल आदिका अभिषेक उपाध्यायों द्वारा मचानसे हुआ था।

दौरा रिपोर्ट।

१५ मार्च से २०. मार्च १९२५ तक प० प्रेमचंद्र पंचरत्न उपदेशक भा० दि० जैन परिषद् ने जबलपुर (सी० पी० मध्यप्रदेश) जिला अन्तर्गत रीठी बड़गांव रैपुरा, गंज, कछवार, सिहुँडी और बाकल ग्रामों में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् की ओर से भ्रमण किया। प्रत्येक स्थान पर शास्त्र व जातीय सभायें कीं। जैनियों को दर्शन व स्वाध्याय करने की प्रेरणा की तथा कितने ही महाशयों ने प्रतिज्ञा भी लीं। कई स्थानों के भाइयोंने श्री मंदिर जी में शुद्ध खादी के वस्त्र ही प्रयोग में लाने की तथा विवाहादि के अवसर पर अश्लील गाना व व आतिशबाजी व वेश्या नृत्य देखना बन्द करने की प्रतिज्ञा लीं। प्रत्येक स्थान पर परिषद् के सभासद् व वीर के ग्राहक बने।

गंज व सिहुँडी स्थानों पर साधारण सभायें हुईं जिनमें बहुत से अजैन भाई भी सम्मिलित हुए थे। अहिंसा धर्म पर व्याख्यान हुये। उपस्थित भाइयों ने प्रत्येक स्थान पर प्रतिज्ञा की कि हम देवी पर बकरा आदि बलि नहीं चढ़ावेंगे। सिहुड़ी स्थान पर प्रचारक महाशय के दौरा रजिस्टर में अपनी प्रतिज्ञा के हस्ताक्षर भी मुख्य २ भाइयोंने कर दिये।

रीठी स्थान पर एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की गई जिसके लिये सिंघई लक्ष्मन लाल व सिं लम्बूलालजीने अपनी धार्मिक व नीति की पुस्तकें प्रदान कीं। आप दोनों महाशय तत्व चर्चा व स्वाध्याय के प्रेमी हैं।

रेंपुरा में पूजा प्रक्षाल का प्रवन्ध ठीक नहीं है और तीन मंदिरों में से एक मन्दिर बहुत ही जीर्ण अवस्था में है। रैंपुरा के भाइयों को विशेष कर सिंघई प्यारेलालजी को पूर्ण ध्यान देना चाहिये तथा रीठी के भाइयों को एक पाठशाला जो बंद होगई है जारी कर देनी चाहिये।

—०—

हीरा बाग जैन धर्म शाला बंबई

के मन्त्री सूचित करते हैं कि गत माह मार्च में ९७७ दि० जैनी, २० श्वेताम्बर जैनी ४८० हिन्दू सब १२८५ यात्रियों ने धर्म शाला में ठहर कर लाभ उठाया।

—०—

पद्मावती पुरवाल

भाइयों की सेवा में खास तौर से निवेदन किया जाता है कि वे अपनी जातिके धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक झगड़ों का निर्णय श्री भारत वर्षीय दि० जैन परिषद के द्वारा ही कराया करें। इसमें आपके धन धर्म और समय की बचत के अतिरिक्त जाति के अपमान से भी बचना होगा।

फीरोजाबाद के अधिवेशन पर ता० १९—२० मार्च को जैन जातिभूषण लाला भगवानदासजी आदि जाति के प्रधान पुरुषों के विशेष आग्रह से मैंने परिषद् की सेवा (महामंत्री होना) स्वीकार की थी आशा है आप लोग इसका अच्छी तरह निर्वाह करावेंगे।

भूतपूर्व कार्यकर्ताओं के दूर देश रहने से परिषद् जातिकी सेवा नहीं करसकी थी किन्तु आगे ऐसा नहीं होगा। परिषद् की सेवा स्वीकार करते ही भाइयों ने जो मामले परिषद् में निर्णय होने के लिये भेजकर परिषद् का गौरव बढ़ाया है उसके लिये आपके आभारी है।

निवेदक बाबूराम बज़ाज़ महामन्त्री
भा० दि० जैन परिषद् जीवदया आफ़िस आगरा।

श्री भा० दि० जैन पद्मावती परिषद्

का अधिवेशन फीरोजाबाद के मेले पर ता० १९—२० मार्च को जैन जातिभूषण लाला भगवानदासजी बड़ नगर के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ होगया। ६००० हजार पद्मावती पुरवाल भाई एकत्रित हुये थे। प्रबन्धकारिणी और कार्यकर्ताओं का नवीन चुनाव होगया है। समस्त जाति ने श्रीमान प० बाबूरामजी (मंत्री जीवदया सभा आगरा) को परिषद् का महामंत्री बनाया है। आपके इस पदको स्वीकार करते ही उडेसर के कई भाइयों ने दीवानी अदालत से मुकदमे उठा कर परिषद् से निर्णय कराने को महामंत्री के नाम स्टाम्प (इकरार नामा) लिख दिया है। परिषद् के न्यायालय से ही अधिकतर जातीय और व्यवहारिक मामले निर्णय किये जावेंगे परिषद् संबन्धी समाचार पत्र व्यवहार कार्य जीवदया सभा दफ्तर के साथ परिषद् के दफ्तर के पते पर पत्र भेजने चाहियें।

निवेदक—हज़ारीलाल बी० ए०
महा० महामंत्री परिषद्

—०—

एलक पन्नालाल जाहीराबाग औषधालय

से १०७ दि० जैन ५३ श्वे० जैन ५१२ हिन्दू कुल ७५२ नवीन रोगियों ने लाभ लिया। पुराने रोगियों की संख्या ३३२४ थी।

—०— मंत्री

बाल रक्षा सप्तरत्न बक्स ।

बहुधा देखने सुनने में आता है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक रोग मसार पसली स्वास खाँसी लहक दस्त सूकिया ज्वर नेत्र पीड़ा गलगण्ड आदि में फँसकर मरजाते हैं और ठग लोग उनके माता पिता को भूतादिक की बाधा झपटा नजर बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता हमने इसके लिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शान्ति होते हैं जो ४० वर्ष से धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें मू० १।) डा० ख० ।=) कुल १॥=)

मिलने का पता—ज्योतिष रत्नभवन फर्रुखनगर (पञ्जाब)

जरूरत है—

वास्ते जैन बोर्डिङ्ग हाउस मेरठ के एक ऐसे सुपरिन्टेण्डेन्ट की जो अँग्रेज़ी तथा हिन्दी जानते हों जैनी हों, धर्म से वाक़फ़ियत रखते हों, तजुर्बेकार व उत्साही हों। तनख्वाह हस्ब लियाक़त दीजायेगी। उनको खुद रात को भी बोर्डिंगहाउस में रहना होगा। अभी बोर्डिंग-हाउस के मकान में गृहस्थ के वास्ते जगह नहीं है। दरख्वास्त में उम्र योग्यता व कम से कम वेतन जिसपर वह रह सकते हों लिखकर २५ अप्रेल तक मन्त्री के पास नीचे लिखे पते पर भेजनी चाहिये।

ऋषभदास बी० ए० वकील, मन्त्री जैनबोर्डिङ्गहाउस, मेरठ।

केवल डेढ़ रुपया में दो सौ पृष्ठों से परिपूर्ण !

सुन्दर और सचित्र "जैन होस्टल मैगज़ीन"

त्रैमासिक पत्रिका।

यह विविध विषय विभूषित पत्रिका वर्ष में तीन बार सितम्बर नवम्बर और फरवरी में जैन होस्टल प्रयाग से प्रकाशित होती है इस के नवम्बर के विशेषांक में ही दो दर्जन रङ्गीन और सादे चित्र रहते हैं हिन्दी और अंग्रेज़ी के धुरन्धर विद्वानों के लेख और मनोहर कवितायें इसमें रहती हैं पत्र संसार के सभी प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। इसके सम्पादक हैं श्रीयुत लक्ष्मीचन्द्र जैन एम० ए० एल एल० बी० (प्रयाग विश्वविद्यालय) आप ऐसी सुन्दर सस्ती और मनोहारिणी पत्रिका के ग्राहक हुए बिना कदापि न रहेंगे। आज ही ॥) के टिकट भेजकर नमूना मँगा लीजिये और परीक्षा कीजिये

विज्ञापनदाताओं के लिए भी यह पत्रिका सर्वोपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि यह पत्रिका प्रायः सभी धनाढ्य जन विद्वान प्रोफेसर छात्रगण तथा देश विदेश के बड़े बड़े विद्वानों के हाथों में पहुँचती है। पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य केवल १॥)। अकेले विशेषांक का मूल्य १)।

शीघ्र ही ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखाइये।

पत्र व्यवहार करने का पता :—व्यवस्थापक जैन होस्टल मैगज़ीन

जैन होस्टल—प्रयाग।

छापा रहा है !! हाथोंहाथ बिक रहा है ! शीघ्र खरीदिये !!!

अनेकानेक विद्वानों, जैन और जैनेतर पत्र पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित भारतवर्ष में विद्या प्रेमी बड़ौदा राज्य में इनाम तथा लायब्रेरी के लिए मन्जूर किया हुआ मूल, भावार्थ, विवेचन सहित "कर्त्तव्यकौमुदी" नामक ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद

पृष्ठ ५५० मूल्य १॥।) सजिल्द २)

कुछ सम्मतियाँ यहाँ दर्ज करते हैं।

(१) हिन्दी की सर्व श्रेष्ठ मासिक पत्रिका "सरस्वती"–भाग २४ अङ्क २७६ में लिखा है कि मूल पुस्तक यद्यपि एक जैन पण्डित की लिखी हुई है तथापि सब धर्मों और सम्प्रदायों के अनुयायियों के पढ़ने लायक है। विवेचना खूब विशद है। पुस्तक के अद्वितीय होने में सन्देह नहीं।

(२) "प्रभा"–कानपुर अप्रैल सन् १९२३ के अङ्क में लिखती है—पुस्तक में प्रचलित लोकाचारों की दृष्टि से स्त्री पुरुषों के सामाजिक कर्त्तव्यों की विशद विवेचना की गई है। अपने विषय की बड़ी अच्छी पुस्तक है अनुवाद अच्छा हुआ है।

(३) हिन्दी केसरी–इस में मनुष्य के सामाजिक और धार्मिक कर्त्तव्यों की व्याख्या की गई है और उन पर धार्मिक तथा नैतिक दृष्टि से अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक अधिक उपयोगी है।

(४) दैनिक आज–काशी ता० ९-११-२२ पुस्तक में कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का उपदेश इस मनोरञ्जक और प्रभावोत्पादक प्रकार से दिया गया है कि पाठकों पर उसका बहुत ही अच्छा असर पड़ता है विद्यार्थियों तथा गृहस्थ स्त्री पुरुषों को किस प्रकार के आचरण से लाभ है और सदाचार की कैसी महिमा है एवं व्यसन तथा दुराचार से लोगों की कैसी अधोगति होती है, यह इस ग्रन्थ में दिखलाया है। सामाजिक कुप्रथाओं से होने वाली बुराइयों का भी दिग्दर्शन कराया गया है।

(५) कान्फ्रेन्स प्रकाश–इस पुस्तक का यथार्थ गुण तो हमारी समझ में कितनी भी प्रतिभाशाली लेखकों की समालोचना से मालूम नहीं हो सकते, जैसे कि चन्द्रमा की अथवा कमल की आह्लादकता प्रकाशकता चित्र से अथवा वर्णन से ज्ञात नहीं होती किन्तु प्रत्यक्ष देखने से ही मालूम पड़ती है वैसे ही "कर्त्तव्य कौमुदी" का भी आनन्द प्रत्येक शिक्षित मनुष्य को अपनी नज़र से देखकर मालूम करना चाहिए।

(६) जैसवाल जैन–आगरा प्रथम खण्ड में कर्त्तव्य किसे कहते हैं, यह दिखाया है और गृहस्थ के कर्त्तव्य कर्मों का विवेचन किया है। द्वितीयखण्डमें मानव सन्तति शास्त्र, तथा आचार विचार के सम्बन्ध में वर्णन है। तीसरे खण्ड में स्त्रियों के कर्त्तव्य दिखाये हैं। इस प्रकार अनेकों आवश्यक बातों का समावेश होगया है। गृहस्थों के लिए यह पुस्तक बड़ी ही उपयोगी सिद्ध होगी विषय की विवेचना और पृष्ठ संख्या की अधिकता के आगे पुस्तक का मूल्य १॥।) नहीं के समान है।

(७) अग्रवाल बन्धु आगरा–इसके अनुसार बर्ताव करने से मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है। पुस्तक सभी लोगों के पढ़ने योग्य तथा उपयोगी है पाठशाला की पाठ्य

पुस्तकों में ऐसी पुस्तकों की अत्यन्त आवश्यकता है। इससे विद्यार्थियों को चरित्र-गठन तथा कर्त्तव्य-पालन करने में अधिक सहायता मिलेगी।

(८) वैश्य मुरादाबाद—यह नीति विषय का बड़ा अच्छा ग्रन्थ है। इसमें वर्त्तमान काल में प्रत्येक स्त्री, पुरुष वा बालक, वृद्ध युवा आदि का प्रत्येक अवस्था में क्या कर्त्तव्य होना चाहिए। अर्थात् क्या उसे करना चाहिए क्या न करना चाहिए, इस विषय का इसमें बड़े विशद रूप से पृथक् २ विषयों में विवेचन किया गया है। इसको पढ़कर प्रत्येक मनुष्य अपना चरित्र उज्ज्वल बना सकता है। इसमें विद्यार्थियों को जो उपदेश दिये गये हैं वे अमूल्य हैं। विद्यार्थियों व बालकों को सदाचार की शिक्षा देने के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी है। इसके द्वारा गृहस्थ लोग गृहस्थ-धर्म के कर्त्तव्य को सहज में जान सकते हैं। हमारी माताएँ, कन्याएँ और विधवा बहिनें भी इसे पढ़कर अपना उपकार साधन कर सकती हैं। पुस्तक प्रत्येक घर में पढ़ी जाने योग्य है। अनुवाद की सरल भाषा और सुपाठ्य है।

(९) जैन धर्म भूषण—धर्मदिवाकर ब्र०प्र० शीतलप्रसादजी जैन मित्र कार्तिक १४ सं० ७६ में लिखते हैं:— इसमें ३ खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में गृहस्थ का सामान्य कर्त्तव्य, उत्साह की प्रशंसा, आलस्य की निन्दा, क्रोध निराकरण, प्रतिज्ञा पालन के लाभ। दूसरे खण्ड में योग्य माता, शिशु पालन, योग्य शिक्षा, शिक्षक, ब्रह्मचर्य, बाल लग्न, निषेध, आरोग्य महिमा, सात व्यसन के दोष। तीसरे खण्ड में उत्तम स्त्री कर्त्तव्य, उत्तम मित्र धर्म, प्रेम का आदर्श, कन्या विक्रय निषेध, उद्योग, नीति, सत्य इत्यादि उपयोगी विषयों पर बहुत उपयोगी सार गर्भित निष्पक्षपात कथन है। स्थान २ पर संस्कृत के श्लोक हैं यह पुस्तक नवयुवकों के लिये व विद्यार्थियों के लिये बड़े ही काम की है। एक साधारण मनुष्य के जीवन को आदर्श बनाने में सहकारी है। हर एक हिन्दी भाषा के जानकार को भी पढ़ना चाहिए मूल्य भी बहुत कम है।

(१०) दिगम्बर जैन—चैत्र स० ६६ के अङ्क में लिखता है:—इसमें नीति धर्म, व्यवहार, व्यायाम, चिकित्सा, रीति रस्म, आदि मनुष्य जीवन के अनेक कर्त्तव्यों पर इतना प्रकाश डाला गया है कि इसका नाम "कर्त्तव्य कौमुदी" सार्थक ही है। इस ग्रंथ को मनन पूर्वक पढ़ने से हर एक मनुष्य कर्त्तव्यशील बन सकता है; हर एक हिन्दी प्रेमी जैन अजैन सर्व को यह ग्रंथ पढ़ना चाहिए!

सस्ती और उपयोगी पुस्तकें।

(१) श्रावक धर्म दर्पण—पृष्ठ ४५० मू० ॥) १२ का ५) सजिल्द ॥-)। (२) नारीधर्म निरूपण—पृष्ठ ६४ मू० -)॥ १२ का १) (३) जैन धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मतियाँ-पृष्ठ ६४ मू० -) १०० का ६) (४) सुदर्शन सेठ चरित्र—पृष्ठ ४० मू० = ११ का १।) (५) जम्बू स्वामी चरित्र—पृष्ठ ६० मू० ।=)॥ १२का ४) (६) जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली-पृष्ठ १२० मू० ।≡) ५ का २) (७) हितोपदेश रत्नावली—मू० =) ६ का १) (८) जैन दर्शन जैन धर्म—पृष्ठ १६ मू०)॥ १०० का २॥) (मि० हर्बर्ट वारन लन्दन रचित) (९) नित्य नियम नित्य समरण—पृष्ठ ३२ मू०)॥। १०० का ४) (१०) उपदेश रत्नकोश पृष्ठ ५० मू० =)॥ २५ का ३॥)

मोतीलाल रांका मैनेजर जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय ब्यावर (राजपूताना)

लूट "दिल्ली में लूट" लीजिये

ये रुपये कमाने के विज्ञापन नहीं हैं।

मुफ्त 'नवरत्न' मुफ्त

राम तिथिपत्र, परोपकार महिमा, धर्म परिचय, अनाथरक्षा, उचित सेवा, रतनज्योति, नेत्र महोषधि, समयाष्टचक्र और यंत्रशिक्षा मुफ़्त ख़र्च के लिये =) का टिकट अवश्य भेजें।

पता—रतनालय अरब सराय न० ४ देहली।

क्या इस मूल्य में ये घड़ियाँ और ऐसा इनाम मिलते सुना है--

अल्प मूल्य आला मशीन।

मुफ़्त "अव्वल घड़ियों" पर भी "डब्बल इनाम" मुफ्त

घी ३) गास्कोप ४) रेल्वे ५) पेटेन्ट ६) जर्मनी ७) अमरीकन ८) सामाहिक ९) सर्विस १०) रिस्ट घुड़दौड़ ५॥) मैडेना ६॥, चांदी ७॥) बेस्ट ८॥) मोहन यन्त्र ९॥) घंटाघर १०॥) प्रत्येक कारच्यान, सैकिन्ड कांटा या बिजली सहित का ॥) प्रति रुपया अधिक सब एक साथ लेने से क्लाक और दर्जन पर १ इनाम में मुफ़्त। ख़र्च अलग।

पता—ब्रजराज वाच को० जङ्गपुरा देहली न० ४।

मुफ्त 'रतन ज्योति' युक्त नेत्र महोषधि मुफ्त

मूल्य धर्मार्थ लगभग १० तोले औषधि का २) अनाथ निर्धनों को मुफ़्त निराश रोगियों को रोग गये पीछे दूना मूल्य धर्मार्थ देने की प्रतिज्ञा पर मुफ़्त धनी। मुफ़्त मंगाने वालों को ईश्वर शपथ ख़र्च डाक के लगभग ॥।=) सब से लिये जायँगे।

पता—ब्रज सेवकाश्रम भोगल न० ४ देहली।

विद्वत्ता के इच्छुक छात्रों को शुभअवसर।

श्रीस्याद्वाद महाविद्यालय काशी में—

(१) दो ऐसे शास्त्री या तीर्थ परीक्षोत्तीर्ण छात्रों की आवश्यकता है जो क्वींस कालेज काशी की न्याय व्याकरण या साहित्य की पूर्ण आचार्य परीक्षा पास करने की प्रतिज्ञा करें। इन छात्रों को साथ में अँग्रेज़ी साहित्य व धर्मविषय भी पढ़ना होगा।

(२) दो ऐसे ग्रेजुएट या अण्डर ग्रेजुएट द्वितीय भाषा संस्कृत रखनेवाले छात्रों की आवश्यकता है जो इस विद्यालय में रहकर न्याय में श्रीप्रमेयकमलमार्त्तण्ड, अष्टसहस्री और धर्मविषय में श्रीसर्वार्थसिद्धि, गोम्मटसार व पञ्चाध्यायी में उत्तीर्ण होने की प्रतिज्ञा करें।

उपर्युक्त छात्रोंके निर्वाहार्थ विशेष छात्रवृत्ति योग्यता व उनकी स्थिति के अनुसार दीजायगी।

प्रवेशेच्छुक छात्र विशेष विवरण इस विद्यालय के सुपरिन्टेन्डेन्ट से दर्याफ़्त कर सकते हैं।

सुमतिलाल-मन्त्री।

केवल विज्ञापन फार्म १ सरस्वती प्रेस, मुरादाबाद में मुद्रित।

रेलसे माल भेजने का कायदा।

(सरल हिन्दी भाषा, पृष्ठ लगभग ५०० विषय सूची के १८ पृष्ठ मूल्य ३))

बढ़िया कागज पर ! बनारस की बढ़िया छपाई।

माल-गाड़ी से भेजे हुए माल आदि का नुकसान न होने पावे, व नुकसान होने पर रेलवे कम्पनी ही जुम्मेदार समझी जा सके। यह बात व्यापारियों को बताने के लिये यह पुस्तक अब अच्छी तरह से [illegible] हो गयी है, इस तरह की यही केवल एक पुस्तक है। तमाम रेलवे कम्पनियों के गुड्स बुकिंग के तमाम [illegible] के कायदे, शर्तें आदि जो कम्पनियों के अलग अलग अंग्रेज़ी फ़ार्मों में होते हैं, वे सब [illegible] एक ही पुस्तक में बताये हैं। माल का नुकसान होने पर रेलवे कब जुम्मेदार हो सकेगी, आदि [illegible] के तमाम [illegible] के बहुत ही महत्व के फ़ैसले भी इस में बताये हैं। विषयानुसार पुस्तक के [illegible] में विभाग है।

[illegible] मैनेजर, [illegible] रेलवे लखनऊ लिखते हैं—"हम यक़ीनसे कहते हैं कि यह पुस्तक व्यापारियों को बहुत ही उपयोगी है।"

सुपरिन्टेंडेंट [illegible]—ई० एस० रेलवे, कलकत्ता [illegible] को लिखते हैं—"जिन व्यापारियों को [illegible] में काम पड़ता है। उनको इस पुस्तक से बहुत ही मदद मिलेगी।"

[illegible] बंसीलाल जी मु० [illegible] ([illegible]) [illegible] के पत्र में लिखते हैं—"इस पुस्तक की कहां तक प्रशंसा करें, इसमें उपयोगिता के गुणों का [illegible] है। इससे आज तक व्यापारियों के [illegible] की ऐसी सरल उपाय की पुस्तक नहीं देखी।"

श्री वेंकटेश्वर समाचार बम्बई—"माल भेजने के सब नियम अंग्रेज़ी में होने के कारण अधिकांश व्यापारियों को गुड्स क्लर्क की बात पर ही निर्भर रहना पड़ता है, और रेल से माल भेजने के कायदे ठीक ठीक न जानने के कारण ही व्यापारियों को नित्य रेलवे कम्पनी की [illegible] करनी पड़ती है। ऐसी दशा में काले महाशय ने इस पुस्तक को प्रकाशित करके एक बड़े भारी [illegible] को दूर करके व्यापारियों को बहुत सुभीता कर दिया है। इसमें माल भेजने के सम्बन्ध के छोटे, [illegible] सभी विषयों का विवेचन किया है, व्यापारियों के बड़े काम की पुस्तक है।"

आर्डर देते समय "[illegible]" का नाम अवश्य ही लिखिये। [illegible] मंगाने से वी० पी० डाक खर्च माफ़।

पता—एस० एन० काले,

हाईकोर्ट वकील उज्जैन (सी० आई०)

वेयल हार्डिंज़ प्रेस हिमालय प्रेस, मुरादाबाद में छपा।

Regd. No. A. 1271.

पाक्षिकपत्र

हिन्दी में उच्च कोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हरप्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबंधी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरञ्जन का सामान भी खूब रहता है। कागज़ छपाई, सफ़ाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पक्ष रहती है।

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को
बिलकुल मुफ्त
सुन्दर! सजिल्द!!

और उनका उपदेश

इस ग्रंथ में महावीर भगवान की जीवनी आधुनिक शैलीपर बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान-बीन के साथ लिखी गई है। यह ग्रंथ जैन अजैन सब ही के लिये उपयोगी साबित होगा। हिन्दी-संसार व जैन समाज में इस मार्के की रचनायें अब तक बहुत ही कम निकल पाई हैं।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के
उपलक्ष्य में —
उपयोगी! मासिक!

दिया गया है:—

इसकी महत्वता, उपयोगिता, सुन्दरता देखने से स्वयं ही ज्ञात होजायगी। इस वर्ष जर्मनी आदि दूर देशान्तरों के प्रसिद्ध लेखकों के कुछ लेख अंग्रेज़ी भाषा में भी हैं। अधिक लिखना व्यर्थ है। शीघ्र ही २) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये अन्यथा पछताना पड़ेगा। क्योंकि उपहार ग्रंथ व विशेषांक बहुत थोड़े बाकी बचे हैं।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

प्रकाशक—राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

वर्ष २] १ मई सन् १९२५ [संख्या १३

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

ऑन० सम्पादकः—
जैनधर्मभूषण, धर्मदिवाकर, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादकः—
श्री कामताप्रसाद जी

आवश्यक प्रार्थना ।

जो महाशय नवम्बर सन १९२५ (निर्वाण अङ्क) से पहले ग्राहक बन चुके थे, यानी जिनका वर्ष "महावीर जयन्ती" से आरम्भ होता था उनको तथा कुछ अन्य समाज प्रेमियों को गत 'वीर' का सुन्दर सचित्र विशेषांक लगभग १०० पृष्ठों का ~~उपहार "महावीर भगवान और उनका उपदेश"~~ सहित वी० पी० द्वारा भेजा गया है । केवल २॥) में ही 'वीर' का सुन्दर सचित्र "निर्वाणांक" के अतिरिक्त प्रतिपक्ष "वीर" नये २ समाचारों तथा उत्तमोत्तम लेखों से सुसज्जित होकर आप की सेवा में उपस्थित होता रहेगा । हमको पूर्ण आशा है कि 'वीर' प्रेमी वी० पी० छुड़ाकर आगामी वर्ष में ग्राहक बने रहेंगे और समाज सेवा का परिचय देकर हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे तथा इस पुण्य कार्य में हमारा हाथ बटावेंगे । यदि वी० पी० छुड़ाने में किसी प्रकार का सन्देह हो तो डिपाजिट में रख अपना ग्राहक नं० लिखकर पत्र व्यवहार कर लीजिये ।

—प्रकाशक

ऑन० प्रकाशक—
राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०)

'वीर' पर सम्मतियां।

प्रेमी सज्जनो! 'वीर' के विषय में जो समाचार पत्रों व मुख्य २ व्यक्तियों ने अपनी सम्मतियां प्रकट की हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी नीचे दी जाती हैं जिनसे आपको 'वीर' की समाज सेवा, उपयोगिता और लोकप्रियता का ज्ञान हो सकेगा। अधिक लिखना व्यर्थ है।

मि० हरिसत्य भट्टाचार्य M. A. B. L सम्पा० स० 'जिनवाणी' लिखते हैं:—

मैं "वीर" को बहुत उच्च दृष्टि से देखता हूं ....लेख बहुत लाभदायक और रोचक हैं। "वीर" का सञ्चालन बहुत उत्तमता व सुन्दरता के साथ किया जा रहा है।

नारद ता० २६ मई सन् २४ में लिखता है:—

"प्रत्येक अङ्क में त्रुटि के बदले उन्नति के लक्षण दीख पड़ते हैं।........ लेख और कवितायें सुपाठ्य और सुसम्पादित हैं। जो धर्मजिज्ञासु हैं और तत्सम्बन्धी बातों की छानबीन किया करते हैं। उनके लिए भी यह पत्र लाभदायक हो सकता है।"

श्रीमान् चम्पतराय जी जैन सभापति परिषद लिखते हैं:—

"वीर" की पूर्ण उन्नति होना अवश्यम्भावी है। मैं उसकी पूर्ण उन्नति देखना चाहता हूं।"

'जैन महिलादर्श' लिखता है:—

"वीर के दो अङ्क प्राप्त हुए। लेख सुपाठ्य और शिक्षाप्रद है। महिला में स्त्रियों के लाभार्थ अच्छे अच्छे लेख रहते हैं। बहिनों को भी ग्राहिका होना चाहिए।"

मराठी भाषा का सुप्रख्यात पत्र 'वन्दे जिनवरम् श्रीमिरानहंम' लिखता है:—

विश्वविद्यालय की उच्च पदवियों से विभूषित विद्वान् लेखक 'वीर' का सहाय करते हैं। अब तक के लेख महत्व पूर्ण व पठनीय हैं।"

पं० पन्नालाल जैन श्री महावीर दि० जैन पाठशाला अफ़जलगढ़ से लिखते हैं:—

"वीर पत्र वास्तव में एक आदर्श पत्र है इसके लेख ठोस और शिक्षाप्रद होते हैं।"

ला० कस्तूरमल जैन M. A. जज धौलपुर लिखते हैं:—

'वीर अपने विषय का नितान्त उपयोगी सुलिखित पत्र है। इसमें मेरा लेख छपना मेरे लिए गौरव का विषय है।"

बा० शिवचरणलाल जी जैन रईस जसवन्तनगर लिखते हैं:—

"लेख व कविताएँ सभी पठनीय हैं। हर महीने की दूसरी व १६ वीं ता० को 'वीर' के दर्शन हो जाते हैं। दूसरी के बाद १६ व १६ के बाद दूसरी तारीख की प्रतीक्षा रहती है।"

प्रेमियो! यदि वास्तव में आपको वीर' से प्रेम है और उसे एक आदर्श पत्र के रूप में आप देखना चाहते हैं तो उसकी हर तरह से सहायता कीजिए, स्वयं ग्राहक बनिये व अन्यों को बनाइये **यथा-शक्य आर्थिक सहायता भी कीजिए।** बस यदि महावीर के उपदेश से और परमात्मा जिन वीर' से आपका प्रेम है तो 'वीर' को एक दम उन्नत बनाकर मुर्दा कौम में जान डालिए।

राजेन्द्रकुमार जैनी,
प्रकाशक 'वीर', बिजनौर (यू० पी०)

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ | बिजनौर, वैशाख शुक्ला ८ वीर सम्वत् २४५१ | अङ्क १२
१ मई, सन् १९२५

वीरस्तवन-पञ्चक

(लेखक-श्रीयुत फुलझारीलाल ट्रेन्ड शास्त्री)

(१)

धीरों में है वीर शिरोमणि काम वीर योधा बलवान।
जिसने कुसुम बाण से जीते हरि हर ब्रह्मा देव महान॥
साधारण जन की क्या गिनती जिसके संमुख बीच महान।
उस का भी जयकर कहलाये प्रभु तुम महावीर भगवान॥

(२)

चैत्र शुक्ल तेरसि के शुभ दिन जनमे प्रभू ज्ञान त्रयवान।
वर्ष आठवीं में तुम धारे पांच अणुव्रत गुण के खान॥
मात पिता परिवार प्रजा को वचन सुधा का देके दान।
सुखी किये जगवासी तुम ने ज्ञान भानु से हरि अज्ञान॥

(३)

तीस वर्ष के हुये प्रभू जब तब तुम लीना दीक्षाधार।
परिजन के ममत्व को तजकर राज्यादिक भी करि परिहार॥

ब्यालिस तक छद्मस्थ रहे तुम चार घातिया करि संहार।
समवसरन लक्ष्मी के पति बनि भीव किये भवदधि से पार॥

(४)

सात तत्त्व पंचास्तिकाय षट् द्रव्य तथा गृहि यति आचार।
इनका सम्यक् वरणन करिके शिव मारग दरशाया सार॥
चार ज्ञान के धारक गौतम द्वादशांग कीना विस्तार।
भवि जीवों का भ्रम तम हरकर कीना बहु आतम उद्धार॥

(५)

कार्तिक कृष्ण अमावस शुभ दिन पावापुर उद्यान मंझार।
अष्ट कर्म चकचूर प्रभू तुम परनी शिवकान्ता सुखकार॥
तुम को जो मन वच काया से पूजे भक्ति भाव उरधार।
'पुष्पलाल' वह भी तुम सम बनि हरि करि कर्म गिरे भवपार॥

श्री कुन्दकुन्दाचार्य

(मूल लेखक-प्रो० ए० चक्रवर्ती एम० ए० आई० ई० एस०)

गताङ्क में श्री कुन्दकुन्दाचार्य के संबंध में कचित् प्रकाश पड़ चुका है। परन्तु प्रो० चक्रवर्ती के निम्न वर्णन से उनका विशेष परिचय प्राप्त होगा। प्रो० चक्रवर्ती ने पहिले ही कुन्दकुन्दाचार्य जी का जीवनकाल निश्चित कर लेना आवश्यक समझा है जिस के विषय में गताङ्क में पाठक मान प्राप्त कर चुके हैं। और वह इसके लिये प्रमाणभूत वस्तु दिगम्बर और श्वेताम्बर पट्टावलियों को लेते हैं। और बतलाते हैं कि भगवान महावीर के उपरान्त उनकी शिष्य परम्परा + निम्नप्रकार रही:—

१. केवली···	गौतम इन्द्र भूति ·····	१२ वर्ष
	सुधर्माचार्य ···········	१२ "
	जम्बूस्वामी ···· ·····	३८ "
२. श्रुतकेवली···	विष्णुकुमार·· ····	···१४ "

+ Indian Antiquary Vols XX & XXI The several Pattavalis examined by R. Hoernle.

१. दशपूर्वी···
नन्द मित्र ··············१६ वर्ष
अपराजित ··············२२ ”
गोवर्धन ··············१९ ”
भद्रबाहु प्रथम ··············२९ ”
विशाखाचार्य ··············१० ”
प्रोष्ठिल ··············१५ ”
नक्षत्र ··············१७ ”
नागसेन ··············१८ ”
जयसेन ··············२१ ”
सिद्धार्थ ··············१७ ”
धृतिसेन ··············१८ ”
विजय ··············१३ ”
बुद्धिलिङ्ग ··············२० ”
देव प्रथम ··············१४ ”
धर्मसेन ··············१४ ”

४· ग्यारह अंगी नक्षत्र··············१८ वर्ष
जयपालक··············२० ”
पाण्डव··············३९ ”
ध्रुवसेन··············१४ ”
कंस··············३२ ”
कुल ··१२३ वर्ष

५· शेष अल्पांगी · सुभद्र ··············६ वर्ष
यशोभद्र ··············१८ ”

भद्रबाहु द्वितीय

सुभद्राचार्य के आचार्यपद पर आसीन होने के दो वर्ष उपरान्त विक्रम का जन्म हुआ और विक्रम के राज्य के चतुर्थ वर्ष भद्रबाहु द्वितीय आचार्यपद पर नियुक्त हुए। इन के उपरान्त की शिष्य परम्परा निम्न कोष्ठक में बतलाई गई है:—

प्रो० हार्नल के अनुसार दिगम्बर पट्टावलियों के आधार पर निश्चित कुन्दकुन्द वंशपरम्परा :

नम्बर शुमार	नाम	आचार्य पद का नियुक्त समय		गृहस्थ			मुनि			आचार्य			विरह दिवस	जोड़			विशेष विवरण
		संवत्	ईस्वी सन्	वर्ष	मास	दिवस	वर्ष	मास	दिवस	वर्ष	मास	दिवस		वर्ष	मास	दिवस	
१	भद्रबाहु द्वि०	४ चै शु १४	ईस्वी पूर्व ५३	२४			३०	···		२२	१०	२७	३	७६	११	··	यह जाति के ब्राह्मण थे।
२	गुप्तिगुप्त	२६ फा शु १४	३१	२२			३४			९	६	२५	५	६५	७	··	यह जाति के पवार थे।
३	माघनन्दि प्र०	३६ आ सु १४	२१	२०			४४	··		४	४	२६	४	६८	५		यह जाति के शाह थे।
४	जिनचन्द्र प्र०	४० का.सु.१४	१७	२४	९		३२	३		८	६	६	३	६५	८	९	
५	कुन्दकुन्द	४९ पौ ब. ८	८	११			३३			५१	१०	१०	५	९५	१०	१५	इनके ५ उपनाम (नाम) थे क्रमानुसार पद्मनन्दि, [illegible] गृद्धपिच्छ [illegible] आचार्य।

यदि उपरोक्त ईसा से पूर्व ८ वीं वर्ष कुन्दकुन्दाचार्य के आचार्य पद पर आसन होने की माना जाय तो उनकी जन्म तिथि ईसासे पूर्व अनुमानतः ५२ वीं वर्ष की होती है। क्योंकि अपने जीवन की ४४ वीं वर्ष वह आचार्य पद पर नियुक्त हुए थे।

अब यह जानना है कि उनका जन्मस्थान कहां था और उनका जन्म किन अवस्थाओं में हुआ था? जन्मस्थान के विषयमें प्रकट प्रकाश प्राप्त नहीं है। इस विषय में भी मात्र कथानकों–मौखिक वा लिखित–का आधार उपलब्ध है। अतएव देखना यह है कि इन से कुछ फलदायक विवरण प्राप्त है या नहीं। पुण्यास्रव कथाकोष में श्री कुन्दकुन्दाचार्य का जीवन शास्त्रदानके लिए आदर्शरूप प्रगट किया गया है। उसका वर्णन इस प्रकार है:- भरतखण्ड के दक्षिण देश में पिडथनाडु नामक प्रान्त था। इस प्रान्त के कुरुमरई नगर में एक करमुण्ड नामक धनी वैश्य रहता था। उस की पत्नी श्रीमती थी। उस की गउओं का पालक एक ग्वाला था। उस का नाम मथिवरन था। एक दिन जब वह गउओं को पास के एक वन में लिए जारहा था तो उसने अचम्भे में देखा कि समग्र वन के पेड़ वनाग्नि से भस्म हो गए हैं। मात्र कुछ बीच में बचरहे हैं। और वह खूब हरेभरे पत्तों से लदे हुए हैं। यह देख आश्चर्यान्वित हो वह उस स्थान को देखने के लिए गया। वहां उसने एक महामुनि का निवास स्थान था और एक सन्दूक भी जिसमें जैनागम ग्रन्थ हुए थे। वह बेचारा अनपढ़ तो था ही पर-तन स्थानमें आगम ग्रन्थ रखने के लिए वह पूर्वक घर पर ले आया। अपने मालिक पवित्र स्थान पर उन्हें रख कर वह प्रतिदिवस उनकी पूजा करने लगा। कुछ काल उपरान्त उनके घर एक मुनि का आगमन हुआ, धनी वैश्य ने बड़ी विनय से उन को आहार कराया। तब ही उक्त ग्वाले ने भी उन ऋषि को वह आगम ग्रन्थ भेंट कर दिए। इन शुभकृत्यों से ऋषि अति प्रसन्न हुए और उन दोनों को उन्हों ने आशीर्वाद दिया। धनी वैश्य के कोई सन्तान नहीं थी सो उस के ज्ञानवान पुत्र हो और वह पुत्र ग्वाला ही अपने मालिक की उचित सेवा करने के लिए उन के पुत्र हो। यह हर्षप्रद घटना घटित हुई और जो पुत्र उत्पन्न हुआ वह एक विख्यात सिद्धान्ताचार्य और मुनिन्द्र हुआ। यही श्री कुन्दकुन्द थे।

इस कथानक में अगाड़ी उनके पवित्र विहार का वर्णन है। तथापि पूर्व विदेह के श्री सीमंधर स्वामी के समोशरण में उन का सर्वोत्कृष्ट मनुष्यरूप उल्लेख, इस बात की परीक्षार्थ दो चारण मुनियों के आगमन. समाधिमग्न होने के कारण उनकी अविनय हुई समझना, चारणमुनियों का खेदखिन्न हृदय लौटना, घटना का प्रगट करना, चारणमुनियों और श्री कुन्दकुन्द का मिलाप, और उन के साथ श्री कुन्दकुन्द का समोशरण में जाना इत्यादि बातों का पूर्ण विवरण है। उपरांत पूर्वजन्म के शास्त्रदान फल स्वरूप उनका विशद ज्ञानी होना और आचार्य रूप में उन्नत जीवन व्यतीत करने का उल्लेख है।

'दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत' से प्रकाशित एक कुन्दकुन्दाचार्य चरित्र में भी इन का जीवन चरित्र वर्णित है। इसके अनुसार कुन्दकुन्दस्वामी का जन्मस्थान मालव देश में है। उनके माता पिता के नाम कुन्द श्रेष्टि और कुन्दलता व्यक्त किए हैं।

और लिखा है कि युवक कुन्दकुन्द जैनाचार्य के सुपुर्द शिक्षाप्राप्त करने हेतु कर दिए गए। बचपनसे ही इनने साधुवृत्तिसे प्रेम प्रदर्शित किया। इसलिए इन्हें दीक्षा दीगई। और यह संघ में सम्मिलित हो गए। शेष वर्णन उपरोक्त के अनुसार है।

यह दोनों ही वर्णन काल्पनिक प्रतीत होते हैं। अन्तिम तो उपरान्त काल की गढ़न्त प्रतीत होती है क्योंकि उस में कुन्दकुन्द के नाम अपेक्षा ही उनके माता पिता के नाम मान लिए गए हैं। पहिली कथानक में जो स्थान दिए हैं उन को जानना कठिन है। इन कथाओं से जो निश्चयनीय बात प्राप्त होती है वह यही है कि वे दक्षिण देश में अवतीर्ण हुए थे। अतएव इन दोनों कथाओं की उपेक्षा करके किसी तथ्यपूर्ण प्रमाण की खोज करना आवश्यक है। यह बात मानना लाज़मी है कि श्री कुन्दकुन्द द्राविड़ संघ के थे। इस सम्बन्धमें मि० गिरनाट का वर्णन प्रमाणीक है। (See P 42 Introduction, Repertoire Epigraphie Jaina)

श्री कुन्दकुन्द द्राविड़ देश के थे, इस बात की पुष्टि में अन्यत्र प्रमाण पाने के लिए एक अप्रकाशित 'मंत्र लक्षण' सम्बन्धी लिखित ग्रन्थ का निम्न श्लोक अति मूल्यमय हैः-

"दक्षिण देश मलये हेम ग्रामे मुनिर महात्मासित,
एलाचार्यो नाम्ना द्राविड़गणाधीशो धीमान्।"

यह ग्रन्थ एलाचार्य की एक शिष्या के लिए लिखा गया था, जो ब्रह्मराक्षस से ग्रसित थी। यह ग्रसित शिष्या अवश्य ही शास्त्रों में पारङ्गत थी, परन्तु हेमग्राम (जिस में एलाचार्य रहते थे) के निकट अवस्थित नीलगिरि की शिखिर पर पहुंच कर वह वहां कभी हंसती कभी रोती और बुरी तरह चिल्लाती इत्यादि कुत्सित क्रिया करती थी। कहा जाता है कि एलाचार्य ने ही उसे ज्वलामालिनी मन्त्र द्वारा स्वस्थ किया था। उपरोक्त श्लोक में वर्णित स्थान भी सहज में जाने जा सके हैं।

मद्रास प्रान्त के उत्तर और दक्षिण अर्काट ज़िलों का ही नाम मलयदेश है। इन्हीं ज़िलों में 'पूर्वी घाट' नामक पर्वतमाला फैली हुई है। कल्लकुरिची, तिरुवन्नमलई और वन्डेवाश नामक ताल्लुक ही संभवतः इस मलयदेश की मध्यभू थी। हेमग्राम, जो कि पोन्नूर का संस्कृत रूपान्तर है, वान्डेवाश के निकट ही एक ग्राम है। इसी ग्राम के निकट एक छोटी सी पहाड़ी नीलगिरि नाम की है। इस ही पहाड़ी की शिखिर पर आज भी एलाचार्य के चरण चिन्ह विराजमान हैं, जिन्हों ने यहीं पर तपश्चरण किया था। अब भी यात्रीगण वर्ष में एक बार चरणचिन्हों की पूजा करनेके निमित्त एकत्रित होते हैं। इसके अतिरिक्त श्लोक में एलाचार्य 'द्राविड़गणाधीश' बतलाए गए हैं। और यह अच्छी तरह प्रकट हो है कि कुन्दकुन्दाचार्य का ही दूसरा नाम एलाचार्य है।

अब यही एलाचार्य जैन मान्यता के अनुसार तामिल साहित्य के महान् ग्रन्थ 'थिरुक्कुरल'के रचयिता हैं। यह ग्रन्थ तामिल भाषा के प्राचीन 'वेन्ब' छन्द में रचा हुआ है। जैन मान्यता के अनुरूप में यह ग्रंथ एलाचार्य ने रचकर अपने शिष्य 'थिरुवल्लुवर' को दिया था, जिन्होंने उसे मदुरा संघ में प्रचलित किया। यह वर्णन नितात अयुक्त नहीं है। क्यों कि 'थिरुक्कुरल' के रचयिता के सम्बन्ध में अन्य अजैन मान्यता ठीक इस का रूपान्तर ही प्रतीत होती है। हिन्दू मान्यता 'थिरुवल्लुवर' को ही उस

का रचयिता प्रकट करती है। उनका धर्म शैव बतलाया गया है और जाति 'वल्लुव'। और उन का जन्मस्थान थिरुमैलई या मैलापुरी अर्थात् वर्तमान में मद्रास का दक्षिणी भाग मैलापुर बतलाया है। उसके मतानुसार यह ग्रन्थ एलालसिंह की संरक्षिता में रचा गया था। जो थिरुवल्लुवर के साहित्यिक संरक्षक थे। हिन्दू मान्यता का एलाल सिंह मात्र एलाचार्य का एक रूपान्तर हो सकता है। थिरुवल्लुवर का उल्लेख दोनों में है। एक में रचयिता के रूप में और दूसरे में संघ के समक्ष परिचित कराने वाले के रूप में। तामिलग्रन्थ 'तिरुनुत्तनथर्था' के अनुसार मैलापुरी में एक प्रख्यात जनमन्दिर थी नेमनाथ स्वामी का था और यह स्थान जैन सभ्यता का केन्द्र था यह बात दक्षिणभारत के साहित्य और शिलालेखीय व्याख्याओं से प्रमाणित है। यद्यपि उक्तग्रन्थ 'कुरल' का सब ही—शैव, बौद्ध, और जैन—अपनाते हैं और उस के रचयिता के यथार्थ धर्म का भी ठीक परिचय प्राप्त नहीं है, तथापि उस ग्रन्थ का निष्पक्ष रूप में अध्ययन करने से और उन खास शब्दों पर ध्यान देने से जिन का व्यवहार उस के छन्दों में किया गया है एवं उस में वर्णित सिद्धान्तों और धर्मोपदेश की ओर विशेष लक्ष्य देने से यह साफ प्रकट हो जाता है कि इस ग्रन्थ का आधारभूत 'अहिंसा' का नैतिक सिद्धान्त है जो जैन धर्म की नींव है उसका सर्व व्यापारों में कृषि को ही सर्वोत्तम बताना वेल्लालों विषयक मान्यता से सम्बन्ध रखता है, जिससे स्पष्ट है कि दक्षिण भारत के जमीन्दार काश्तकारों में यह वेल्लाल लोग प्रत्यक्षतः उस देश के सर्व प्रथम जैन धर्मानुयायी हैं।

कुरल के एलाचार्य और एलाचार्य अथवा कुन्दकुन्द को एक व्यक्ति मानने से उक्त तामिल ग्रन्थ ईसा की प्रथम शताब्दि का प्रगट होगा। और यह नितान्त असंभव नहीं है। डा० पोप उसे ८ वीं शताब्दि से भी उपरान्त का बतलाते हैं, किन्तु उन की इस मान्यता की पुष्टि में पर्याप्त ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। वह अपने निजी मनोनुकूल विश्वास के आधार कहते हैं कि ऐसा समुन्नत नैतिक शिक्षापूर्ण ग्रन्थ मात्र द्राविड़ सभ्यता के बल पर नहीं रचा जा सकता, प्रत्युत इस की रचना में ईसाई धर्म का प्रभाव अवश्य पड़ा होगा, जो वहां प्रारम्भ के ईसाई पादरियों द्वारा लाया गया था। किन्तु जिन नैतिक शिक्षाओं और सिद्धान्तों का उपदेश इस ग्रन्थ में दिया हुआ है वही करीब २ तामिल साहित्य में फैला हुआ मिलेगा और खास कर उन ग्रन्थों में जिन को कि जैनियों ने रचा होगा, जैसे नलदियार' 'अरनेरीचरम' 'पजमोजी' 'एलाथि' इत्यादि। वस्तुतः जो तामिल साहित्य से भिज्ञ होगा वह कुरल की रचना को विशुद्ध द्राविड़ विकास की मानने में आनाकानी नहीं करेगा, जो विदेशी सभ्यता से नितान्त अनभिज्ञ रहा हो। अतएव यह विश्वास योग्य है कि कुरल के कर्ता एलाचार्य और प्राभृतत्रय के रचयिता कुन्दकुन्द एक ही व्यक्ति थे और वह ईसा की प्रथम शताब्दि के प्रारम्भ में हुए थे।

कुरल के एलाचार्य और कुन्दकुन्दाचार्य को एक व्यक्ति मानने से एक अन्य ऐतिहासिक व्याख्या उपस्थित होती है। यह प्रमाणित है कि 'शीलप्पदीकरम' और 'मणिमेखलइ' नामक तामिल ग्रन्थों से कुरल प्राचीन है। प्रथम ग्रन्थ ईसा के चेर महाराज 'सेन गुत्तुवन सेरन' के लघुभ्राता 'इलन्गोवदिगल' द्वारा लिखा गया था। और दूसरा ग्रन्थ, जो प्रथम ग्रन्थ की कथा का शेष भाग है, 'इलन्गोवदि' के समकालीन और मित्र कुलवनिकन

सम्बनार' द्वारा रचित है। इसी मंदिर (शीलप्प-दीकरम) की प्रतिष्ठा में सिंहल के गजबाहु प्रथम विद्यमान थे। महावंश के अनुसार उन का राज्य संभवतः ११३ ई० हुआ प्रकट होता है। अतएव कुरळ इस से प्राचीन होना चाहिए। इस से एला-चार्य अथवा कुन्दकुन्दाचार्य के पूर्व प्रमाणित समय की पुष्टि होती है।

इन सब कथानक और साहित्य संबंधी व्या-ख्याओं से यह भी प्रकट होता है कि कुन्दकुन्दा-चार्य द्राविड़ देश के थे। और वह द्राविड संघ के नायक थे, एवं एक भाषा से अधिक में पारङ्गत थे। 'द्राविड संघ' में जो 'द्राविड' शब्द व्यव-हृत है उस का कोई खास संबंध दक्षिण भारत के उन जैनों से अवश्य ही प्रकट होता है, जो प्राचीन तामिल साहित्य में 'वेल्लाल' संज्ञा से उल्लिखित है और जो पूर्ण रूप से 'कोल्लमृतम्' में अर्थात् 'अहिंसा धर्म' के पालक थे। साथ ही इस की पुष्टि इस ओर प्रचलित 'द्राविड-ब्राह्मण' शब्द से भी होती है, जो 'गौड़-ब्राह्मणों' की समानता में नितान्त निरामिष भोजी हैं। यह अच्छी तरह मानी हुई बात है कि दक्षिण भारत के ब्राह्मण यद्यपि यज्ञ में पशु होमते हैं परन्तु अपने दैनिक जीवन में जो पूर्ण शाकाहारी रहते हैं वह मात्र दक्षिण भारत में पूर्व प्रचलित जैन सभ्यता के अशांश को पैत्रिकसम्पत्ति रूप में प्राप्त करने के कारण है।

दक्षिण भारत के प्राचीन राजवंश चेर चोल और पांड्य थे। दक्षिण भारत के सम्बन्ध में यह पूर्णरूप से स्वीकृत मत है कि पांड्य जैनधर्मानुयायी और जैन धर्म के संरक्षक थे। उन्हों ने अपने चित्र धर्म को ईसा की ७वीं शताब्दि में अप्पार और सम्बन्दर के शैव धर्म का पुनरुद्धार करने पर त्याग किया था। यह भी कि चेर जैनी थे 'शील-प्पदीकरम' नामक एक अन्य तामिल साहित्य ग्रन्थ से प्रमाणित है, जिसका रचयिता एक जैन विद्वान् था जो तब के चेर राजा (जो सिंहल के गजबाहु के समकालीन थे) के लघुभ्राता थे। चोल भी जैन संरक्षक कहलाने के अधिकारी हैं। यद्यपि अन्त में उनका सम्बन्ध शैव धर्म से होगया था। यह तीनों ही राज्य संभवतः सम्राट् अशोक के समय में भी ज्ञात थे। तीनों ही राज्यों में राज्य भाषा भी संभवतः तामिल थी। अतएव क्या यह माना जासकता है कि श्री कुन्दकुन्द भी इन्हीं तीनों राज्यों में से किसी एक में रहे थे ? उपरोक्त विवरण इस बातको मानने में सहायक है, परन्तु मार्ग में एक रोड़ा अवश्य ही आ पड़ता है।

श्री कुन्दकुन्द के ग्रन्थ प्राकृत भाषा के हैं। जिस पर 'प्राभृतत्रय' पञ्चास्तिकाय, प्रवचनसार और समयसार—के टीकाकार बतलाते हैं कि यह ग्रन्थ कुंदकुन्दाचार्य ने अपने राज्य शिष्य शिवकुमार महा-राज के लिये लिखे थे। यह शिवकुमार महाराज कौन थे और इन्होंने कहां राज्य किया था इस बात में टीकाकार मौन हैं। इसलिए मात्र अनुमान से मानना पड़ेगा कि यह शिवकुमार महाराज अवश्य ही जैन थे और इनके राज्य की भाषा प्राकृत थी। साथ ही वह कहीं दक्षिण देश में थे क्योंकि श्री कुन्द-कुन्द उनके धर्माचार्य थे। यह नाम तीनों ही वंशों—चेर, चोल और पांड्य की वंशावलीमें नही मिलता है, इसके अतिरिक्त यह भी विदित नहीं है कि इनवंशों के किसी राजा के राज्य की भाषा प्राकृत रही हो।

इस विषय में अब कुछ अधिक लिखने के पहिले मि० के० बी० पाठक की व्याख्या का निराकरण करना आवश्यक है। (The Indian Antiquary, Vol. XIV, 1885 page 15.) में वह लिखते हैं कि कुन्दकुन्द प्रख्यात ग्रंथकर्त्ताओं में एक थे। इनके रचित ग्रंथ प्राभृतसार, समयसार, रयणसार और द्वादशानुप्रेक्षा बताए जाते हैं। यह सब जैन प्राकृत में लिखे हुए हैं। अभिनव पम्प से पहिले रहे हुए* टीकाकार बालचन्द्र प्राभृतसार की वृत्ति में कहते हैं कि कुन्दकुन्दाचार्य पद्मनन्दी के नाम से भी विख्यात् थे और वह शिवकुमार महाराज के गुरु थे। मैं (मि० पाठक) इन महाराज को प्राचीन कदंबवंशीय श्री विजय शिवमृगेश महाराज ही बतलाऊंगा। क्योंकि इन के समय में जैनी निग्रन्थ और श्वेतपटों में विभक्त होगए थे और श्री कुन्दकुन्द अपने प्रवचनसार में श्वेतपटों पर आक्रमण करते हैं। जहां वह कहते हैं कि स्त्रियों को वस्त्रधारण करना इसलिये आवश्यक है कि वह निर्वाण को प्राप्त नहीं हो सकतीं:—"लिंगं चित्थीणं हवदि सुह्मं... तेसिं ण णिव्वाणम्।" दूसरी खास बात इन के ग्रन्थों से यह प्रगट होती है कि इन के समय में जैनधर्म का प्रचार इस ओर दिग दिगान्तरों में नहीं हुआ था और इस ओर के मनुष्य विष्णु की पूजा करते थे। जैसे कि समयसार के निम्न श्लोक से प्रगट है।—

"लोग समणाणमेवं सिद्धन्तं पडिण दिस्सदि विसेसो। लोगस्स कुणदि विण्हु समणाणं अप्पओ कुणदि ॥"

अर्थात्—"लोगों के मत से यदि कोई विष्णु देवादि गति सम्बन्धी जीवों को करता है। तथा श्रमण व मुनियों के मत से यदि कोई आत्मा छः प्रकार कायों को करता है। ऐसा मानने पर लोगों के और मुनियों के मत में कोई फर्क नहीं दीखता।" इन कारणों वश और जैन पट्टावलियों में जो स्थान उनको प्राप्त है उसके अनुसार तथापि इसलिये भी कि इनके ग्रंथ धारवार और मैसूर के जैनविद्वानों द्वारा इतने प्राचीन समझे जाते हैं कि वह अब मिलते भी नहीं, मैं (मि० पाठक) मानता हूं कि कुंदकुंदाचार्य प्राचीन कदम्ब महाराज शिवमृगेश के समकालीन थे।"

मि० के० बी० पाठक ने जो कारण दिए हैं वह ठीक हैं। कुन्दकुन्द श्वेताम्बर प्रतिभेद से उपरान्त के हैं क्योंकि वह भद्रबाहु प्रथम के समय हुआ माना जाता है और संभवतः श्रीकुन्दकुन्द के समय में जन साधारण वैष्णव धर्म की वेदान्तिक मान्यता का पालन करते थे। परन्तु इस पर भी इन व्याख्यानों से यह प्रमाणित नहीं होता कि शिवकुमार महाराज ही कदम्ब राजा शिवमृगेश वर्मा थे। "मैसूर और कुर्ग" नामक पुस्तक में (पृष्ट २१)

*यहां पर अभिनव पम्प से पूर्व के टीकाकार बालचन्द्र ने भी श्री कुन्दकुन्द और पद्मनन्दी को एक ही व्यक्ति बतलाया है। अतएव हिंदी विश्वकोष भाग ४ पृष्ठ ६६—६६ में इन्हें भिन्न व्यक्ति बतलाने की ओर संकेत किया है, वह इस से बाधित होता है। वस्तुतः श्री कुन्दकुन्द के ही वक्राचार्य आदि ४ उपनाम थे। उ० सं०

× अवश्य ही श्री कुन्दकुन्दाचार्य के पूर्व ही श्री श्रुतकेवली भद्रबाहु आचार्य के समय में श्वेताम्बर—दिगम्बर मतभेद खड़ा हो गया था और उसकी जड़ वहीं से पड़ गई थी, परंतु इनका पूर्ण पृथकत्व ईसा की प्रथम शताब्दि में ही हुआ था। यथा —

"छत्तीसे वरिससये विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स। सोरट्ठे वलहीए उप्पण्णो सेवडो संघो ॥ ११ ॥" दर्शनसार

मि० लुईस राइस कहते हैं कि "मैसूर के पश्चिम भाग पर कदम्बों ने ईसा की तीसरी से छठी शताब्दि तक राज्य किया था।" फिर यह ज्ञात नहीं कि अथवा कदम्ब प्राकृत भाषा से परिचित थे? इन बातों का ध्यान रखते हुए श्री कुन्दकुन्द के शिष्य शिवकुमार महाराज को अन्यत्र देखना होगा।

कांचीपुरम् पल्लव राज्यवंश की राजधानी थी। पल्लवों ने 'थोन्डमण्डलम्' पर और तेलगू देश के कृष्णा नदी के तटतक की भूमि पर राज्य किया था। थोन्डमण्डलम अथवा थोण्डैन्डु उस देश का नाम था, जिस में दोनों पेन्नारों का बीच का प्रदेश सम्मिलित था अर्थात् दक्षिण अर्काट में दक्षिण पेन्नार और नेल्लौर में उत्तर पेन्नार। तथापि घाटों के पूर्वीय भाग का भी जिस में समावेश था। यह देश कितनेक 'नदुओं' में विभक्त था और 'नदु' कितनेक 'कोट्टमों' में विभाजित थे। यह देश विद्वानों का था। कितनेक प्रख्यात द्राविड़ विद्वान् जैसे कुरल का कर्ता, महान् तामिल कवीश्वरी अवई, नलवेन्ब का रचयिता प्रिय पुहलेन्दी इत्यादि थोण्डैमण्डलम में ही अवतीर्ण हुए थे। थोण्डैन्डु की राजधानी काञ्चीपुरम इस कारण अवश्य ही दक्षिण में विद्या का एक केन्द्र रहा होगा। देश के विविध प्रान्तों से आकर्षण होकर ही वहां अध्ययनार्थ [illegible] वहां पल्लव राज्य [illegible] मार्शी [illegible] पक्षों में से एक [illegible] निमित्त [illegible] ध्यान [illegible] की प्रतिज्ञा कर [illegible] थी कि जिस [illegible] ब्राह्मण भी

शस्त्र ग्रहण कर के एक राज्यवंश को स्थापितकर सका है। इसी के फलरूप कदम्बवंश का अस्तित्व हुआ। इस प्रकार पल्लव राजधानी कोन्चीपुरम् की सत्कीर्ति ईसा की द्वितीय शताब्दि में चहुंदिश व्याप्त अवश्य हो गई थी। कोन्चीपुरम के राजा लोग जब विद्या प्रेमी थे तब यह आवश्यक है कि उन्हों ने धार्मिक शास्त्रार्थों-जैन, हिन्दू, बौद्ध को भी उत्तेजना दी हो। इन शास्त्रार्थों में सम्मिलित होने के कारण उनके निजी धर्म पर भी अवश्य प्रभाव पड़ा होगा। ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में एक दूसरे के धर्म का खण्डन करना विशेष प्रचलित था। विविध धर्मों के महान आचार्य देश प्रदेश में राजा और प्रजा को निज धर्मानुयायी बनाने भ्रमण करते थे। इस विषय में जैन इतिहास से ज्ञात होता है कि समंतभद्र स्वामी कान्चीपुरम गए थे। वहां उन्होंने शिवकोटी महाराज को जैन धर्मानुयायी बनाया था। पश्चात् यही राजा समन्तभद्र के शिष्य और उत्तराधिकारी हुए थे। इस के उपरान्त करीब दर्वी शताब्दि में अकलङ्क भी आए थे और उनमे बौद्धों को शास्त्रार्थ में पराजय कर के बौद्ध राजा हिमशीतल को जैन धर्मानुयायी बनाया था। इस लिए यह अयुक्त नहीं है कि ईसा की प्रथम शताब्दि में कांचीपुरम के पल्लव राजा [illegible] जैन धर्म संरक्षक थे अथवा स्वयं जैनी थे।

[illegible] शिलालेखीय प्रमाणों से यह [illegible] कि उन का राज्य भाषा प्राकृत था। [illegible] के नाम से जो 'विख्यात' है [illegible] भारत के इतिहास के लेखक [illegible] अन्तिम [illegible] [illegible] भाषा एक

पैसी प्राकृत है जो साहित्यपाली के सदृश विदित होती है,परंतु इस में कितनेक विशेषताएँ और भेद भी हैं। डा० बुहलर (Epi. Indica. Vol. I. p. 2) कहते हैं कि वह जैन और महाराष्ट्री से बनिस्बत पाली और प्राचीन लेखोंके अधिक सादृश्यता रखती है। यह दानपत्र कोन्जीपुरम् के पल्लवनृप शिवस्कन्दवर्मा द्वारा प्रणयित है। विशेष इस में यह अधिकता है कि यह मथुरा के जैन शिलालेखों से विशेष समानता रखती है। इस दानपत्र और मथुरा के लेख में जो पहिले 'सिद्धम्' शब्द है वह इन के जैनत्व का प्रमाणिक संकेत है। सब से महत्वपूर्ण तो शिवस्कन्द शब्द है जो शिवकुमार का रूपान्तर है। इस में संशय नहीं कि यही नाम आन्ध्रवंश में भी मिलता है। मि० डुबरायल दोनों वंशों में परस्पर सम्बन्ध प्रकट करते हैं। वह कहते हैं कि पल्लव वंश के शिवस्कन्द वर्मा (युवमहाराज) शिवस्कन्द सतकर्णी के पौत्र हैं और उन का नाम भी उनके पितामह के अनुसार है। परन्तु इस से यहां कुछ प्रयोजन नहीं है। यहां तो मात्र यही देखना है कि पल्लववंश में एक राजा शिवस्कन्द और शिवकुमार महाराज नाम के भी थे। एक दूसरे दानपत्र में वह युवराजरूप में उल्लिखित हैं। यह नाम अद्भुतरीति में कुमार महाराज के सदृश है। इसलिए यह बिलकुल संभव है कि यही कोंजीपुरम् के राजा शिवस्कन्द अथवा इनके कोई पूर्वज श्री कुन्दकुन्द के समकालीन और शिष्य थे। यह मान्यता श्री कुंदकुंद के संबन्ध में विदित अन्य बातों से भी सहमत होती है। कुन्दकुंद अथवा एलाचार्य अवश्य ही थोण्डैमण्डलम् में हुए थे और सोही द्राविड़संघ की गद्दी पाटलीपुत्र भी थोण्डैमण्डलम् का एक नगर था।

इस सम्बन्ध में यह मानना मिथ्या है कि पल्लव राज्यवंश विदेश-ईरानी-थे। प्रो० साहब इन का निराकरण सप्रमाण रूप में करते हैं। फिर बतलाते है कि क्या यह संभव नहीं है कि थोन्डैमण्डलम् के अधिवासियों और मौर्यों के उत्तराधिकारी आन्ध्रों या आन्ध्रभृत्यों में कोई निकट संबन्ध हो? तामिल में शब्द 'थोन्डु' के अर्थ 'सेवा' के हैं। 'थोण्डर' के अर्थ सेवक के होंगे। इसलिए यह संस्कृत 'आन्ध्रभृत्य' का तामिल रूपान्तर माना जा सकता है। इस लिए पल्लव अथवा थोण्डर उन आन्ध्रों की ही एक शाखा थी जो दक्षिण में बस गए थे और उस भूमि को आन्ध्रस व्याह संबन्ध से अथवा निज अधिकाररूप प्राप्त की थी। पल्लव के सदृश ही आन्ध्रभृत्य भी उन्नतशील सभ्य थे यह विशेष युक्ति संगत और प्रमाणित की जा सकती है।

पल्लवों के विषय में उल्लेखमात्र श्री कुन्दकुन्द के जीवन का विशेष परिचय प्राप्त करने के लिए करना पड़ा है। इस प्रकार यह युक्तिसंगत है कि श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने 'प्राभृतत्रय' एक शिवकुमार महाराज के लिए लिखे थे, जो सम्भवतः पल्लवश के राजा शिव स्कन्द वर्मा थे।

प्रो० चक्रवर्ती के उक्त विवेचन से श्री कुंदकुंदाचार्य के स्वयं और उनके शिष्य शिवकुमार महाराज के विषय में ऐतिहासिक परिचय प्राप्त हो जाता है। परन्तु एक अन्य विद्वान् डा० बी० शेषागिरि राउ एम० ए० इत्यादि (Jain Gazette Vol. XVIII p. 90) इस मान्यता से सहमत नहीं है। वह युक्त प्रमाणों से कलिंगदेश के एक आन्ध्र कदंब वंशीय राजा शिवांक को श्री कुन्दकुन्द के शिष्य शिवकुमार महाराज बतलाते हैं। परन्तु इनके विषय

में कुछ भी ऐतिहासिक प्रकाश प्राप्त नहीं है। मात्र इन के दो लेख डा० साहब को मिले हैं, जिन से इन के विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त नहीं होता। अतएव जब तक और अधिक प्रकाश इनके जीवन पर नहीं पड़े तबतक प्रो० साहब की मान्यता उचित जंचती है।

जो हो इस समग्र वर्णन से यह प्रमाणित है कि जैन कथाओंका वर्णन यथार्थ है। उसमें वर्णित शिव कुमार महाराज एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे। चाहे वे पल्लववंशीय शिवस्कन्द हों अथवा आन्ध्र-कदम्ब वंशीय शिवांक। साथ ही कुन्दकुन्दाचार्य के सम्बंध में वास्तविक ज्ञान भी हमको प्राप्त होजाता है। वह दिगम्बराम्नाय के एक महान् आचार्य थे और दक्षिण देश में ईसा की प्रथम शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में अवतीर्ण हो उन्होंने इस पुण्यमयी भारतमही को पवित्र किया था। उन्होंने अपने ग्रंथ एक राजा के लिए आज से संभवतः १८५० वर्ष पहिले लिखे थे। दिगम्बर सम्प्रदाय में उनके तात्विक ग्रंथ सर्व प्राचीन हैं यही कारण है कि उनकी प्रतिष्ठा जैन समाज में इतनी बढ़ी चढ़ी है। इतिशम्।

भँवर में नैय्या

जाति की नैय्या है मँझधार।
लगादो इसे बंधुओ पार ॥

द्वेष, दुराग्रह, दलबंदी का आया है तूफान।
उमड़े घोर विपत्ति के बादल, हुई बुद्धि हैरान ॥
टूटता भ्रातृ प्रेम का तार।
लगा दो इसे बंधुओ पार ॥

मध्य सुधारकवृन्द, खींचते- इसको अपनी ओर।
और सभ्य पंडितसमाज लेता स्वओर झकझोर ॥
जर्जरित हुए युगल पतवार।
लगा दो इसे बंधुओ पार ॥

आपस में लड़ बंधु कर रहे हैं, स्वशक्ति का ह्रास।
किंचित् बढ़ती नहीं अग्रसर होना व्यर्थ प्रयास ॥
हुए प्रभुता मद में मतवार।
लगा दो इसे बंधुओ पार ॥

प्रेमरज्जु बाँध होहु संगठित, इस काल के युग वीर।
संयुक्त बल नरशक्ति बढ़ाकर, इसे लगादो तीर॥
बोल दो जैन धर्म जयकार।
लगादो इसे बंधुओ पार॥
—'वत्सल'

दिगम्बर जैन समाज में अनैक्य क्यों?

पाठकों को विदित है कि आज कल दि० जैन समाज में धर्म सीमा का अनैक्य फैला हुआ है। यों तो अनैक्य दीर्घ काल से चला आ रहा है परन्तु अब इस अनैक्य ने अतीव भयानक रूप धारण किया है। कोई किसी को धर्मद्रोही, धर्मभ्रष्ट, धर्मशून्य बतलाते हैं। कोई किसी को प्राचीन रीति में समय की आवश्यकतानुसार साधारण परिवर्तन उपस्थित करने पर नास्तिक के नाम से पुकारता है। कोई किसी को स्वार्थी, धर्म का ठेकेदार, धर्म के नाम की दुहाई देनेवाला, धर्म की ओट में माल मारने वाला, प्रकट करता है। आज कल अधिकतर जैन समाचार पत्र भी इसी प्रकार की गाली गलौज से भरे मिलते हैं। सभा के अधिवेशनों में मार पीट की नौबत आजाती है। सारांशतः आजकल इस समाज में अनैक्य का खूब दौर दौरा है। यह अनैक्य क्यों है? और यह अनैक्य क्यों नहीं मिटता? यह ऐसे प्रश्न हैं कि जिन पर प्रत्येक जैनी को विचार करने की आवश्यकता है। मेरे विचार में इस अनैक्य के कारण पुराने व नये विचारों की मुठभेड़ है। चूंकि इस दि० जैन समाज में पुराने विचार अधिकतर प० महाशयों के हैं और नये विचार अधिकतर अंग्रेजी शिक्षित महाशयों के हैं। इसलिये इस समाज में दो पार्टी—पंडित दल व बाबू दल के नाम से नियत हो गई हैं। इन दोनों दलों का अनैक्य दूर नहीं होता, दिन ब दिन बढ़ता चला जाता है। यह अनैक्य क्यों दूर नहीं होता इस बात के जानने की आवश्यकता है। हाल में इन पंडित महाशयों की ओर से यह बात प्रगट की गई है कि इस अनैक्य के दूर न होने का कारण यह है कि हमारे और विपक्षी दल के मध्य केवल मतभेद ही नहीं है, प्रत्युत उद्देश्य भेद है। और उद्देश्य भेद ऐसी वस्तु है कि जब तक वह दूर न हो अनैक्य दूर नहीं होसकता। अब देखना यह है कि अथवा वास्तव में इन दलों के मध्य उद्देश्य भेद है या नहीं। क्या यथार्थ में पंडित महोदयों का उद्देश्य कुछ और है और अंग्रेजी शिक्षित महोदयों का कुछ और। मेरे विचार में ऐसा कदापि नहीं है और

पंडित व बाबू महोदय बया, मेरी राय में तो दोनों मात्र का उद्देश्य धर्म प्रचार व समाज सुधार है। पंडित महोदय भी यही चाहते हैं कि संसार में जैन धर्म का प्रचार हो और जैन समाज की बिगड़ी हुई दशा अच्छी हो। अंगरेजी विज्ञ महोदयों की भी यही हार्दिक इच्छा है कि संसार में जैनधर्म का डंका बजे और जैन समाज की अधोदशा सुधर जावे। अतएव इन दोनों दलों के उद्देश्य में भेद बतलाना केवल एक भ्रम है। यह तो सम्भव है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के उपाय दोनों दल के व्यक्ति अलग अलग समझते हों। पंडित महोदय इस उद्देश्य की पूर्ति होना किसी एक उपाय से समझते हों। और बाबू महोदय इस उद्देश्य की सफलता किसी अन्य मार्ग द्वारा विचारते हों। यही मत भेद कहलाता है। उद्देश्य भेद इसका नाम नहीं है। उदाहरण के तौर पर लीजिये। धर्म प्रचार एक उद्देश्य है, इस की सिद्धि के विभिन्न उपाय व नियम हो सकते हैं। किसी दल का विचार हो कि हाथ के लिखे हुये ग्रन्थों से धर्म का काफी प्रचार हो सका है। दूसरे दल की राय हो कि इस जमाने में केवल हाथ के लिखे ग्रन्थों से धर्म का प्रचार नहीं हो सका, प्रत्युत धर्म का प्रचार आजकल एक अच्छे बड़े मैदान पर करने के लिये शास्त्रों के छपने की बड़ी आवश्यकता है। बस यही मतभेद कहलायगा। उद्देश्यभेद नहीं है। उद्देश्य दोनों का एक ही अर्थात् धर्म प्रचार है। और इस मतभेद के कारण समाज में अनैक्य नहीं होना चाहिये। एक दल को दूसरे का दुश्मन नहीं बन जाना चाहिये। न एक दल को दूसरे के लिये सभ्यता के विरुद्ध शब्दों को व्यवहार में लाना चाहिये। प्रत्युत शांति के साथ बैठकर स्थिरचित्त विचार करना चाहिये और बहुमत से जो कुछ निर्णय हो उस पर अमल करना चाहिये। मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि इस जमाने में धर्म का प्रचार बिना छापे की सहायता के नहीं हो सका। और मैं ख्याल करता हूं कि अधिकतर लोगों की चाहे वे पंडित हों अथवा अंग्रेजी विज्ञ यह ही राय है। चुनांचे इस समय पंडित महाशय ही शास्त्रों के उल्थे कर कर के प्रकाशित करा रहे हैं। फिर नहीं मालूम गत चार मास के भीतर ही पंडित महोदयों की राय शास्त्र छपने के विरुद्ध क्यों हो गई है! बड़े तमाशे की बात है कि एक ओर तो पंडित महोदय जैन समाज की संख्या की कमी का इलाज धर्म का प्रचार बतला रहे हैं–कहते हैं कि समाज की संख्या को बढ़ाने के लिये धर्म का प्रचार खूब जोर के साथ करना चाहिये–परन्तु दूसरी ओर धर्म प्रचार का सब से बड़ा जो उपाय शास्त्रों को प्रकाशित कराना है उसमें रोड़ा अटकाते हैं। क्या पंडित महोदय यह नहीं समझते हैं कि संसार में जो बौद्ध धर्म, ईसाईधर्म आदि का इस प्रकार अधिक प्रचार हो रहा है उसकी वजह यह ही है कि उनके धर्म ग्रन्थ हजारों व लाखों की संख्या में छपे हुये मौजूद हैं। और वे लोग अपनी धार्मिक पुस्तकों को विविध भाषाओं में अनुवादित कराकर प्रकाशित कर रहे हैं। और श्रीमान् स्वर्गीय पंडित गोपालदास जी खुद व अबतक उनकी शिष्य व मित्र मण्डली शास्त्र छपने की पूरी समर्थक थी। परन्तु अब जो पं० गोपाल दास जी की शिष्य व मित्र मण्डली की राय शास्त्र छपने के

-विभक्त हुई है इस का क्या कारण है ? इसका कारण सिवाय दलबन्दी के पक्ष के और कुछ मालूम नहीं होता । और इसका भाव यह है कि यह लोग अपनी पार्टी को मज़बूत करने की गर्ज़ से किसी मुख्य व्यक्ति की हमदर्दी व खुशनूदी मिज़ाज प्राप्त करने के लिये कोई उपाय भी चाहे वह उपाय उनकी असली राय और तरीके अमल के विरुद्ध ही क्यों न हो अख्तियार कर सकते हैं । परन्तु यह क्रिया इन पंडित महोदयों को शोभनीक नहीं है । इनको तो समाजहित की तरफ ख्याल करना चाहिये । दिगम्बर जैन गज़ट में दोनों दलों के मध्य उद्देश्य भेद बतलाकर निम्न की तीन बातों का दोषारोपण अंग्रेज़ी शिक्षित महोदयों पर लगाया गया है । (१) विधवाविवाह (२) जातिभेद का लोप (३) छूत छात का लोप । अब विचार योग्य यह है कि उनका यह दोषारोपण कहां तक उपयुक्त है ।

विधवा विवाह — जहां तक मैं देखता हूं आज कल दि० जैन समाज में कोई आन्दोलन विधवा विवाह के प्रचार का नहीं हो रहा है । न कोई व्यक्ति विधवाविवाह जारी करने की कोशिश कर रहा है । और मेरे ख्याल में तो इस दि० जैन समाज में तो शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो कि जो विधवाविवाह को ऊंचा अथवा अच्छी प्रथा ख्याल करता हो । हां बालविवाह-वृद्धविवाह-अनमेलविवाह-कन्याविक्रय आदि कुरीतियों की वजह से जो विधवाओं की उत्पत्ति बढ़ जाती और अधोदशा दृष्टि आती है उसको देखकर कतिपय सज्जनों का विचार मजबूरन कभी २ विधवाविवाह की ओर चला जाता है । सो इस का इलाज इन सज्जनों को गाली गलौज से याद करना नहीं है । प्रत्युत इसका इलाज है बालविवाह-वृद्धविवाह अनमेलविवाह-कन्याविक्रय आदि को बन्द करना । यदि यह कुरीतियां बन्द हो जायगी तो फिर किसी को विधवाविवाह की ओर ख्याल दौड़ाने या उसका जिकर करने का अवसर ही नहीं रहेगा । मैं स्वयं विधवाविवाह का विरोधी हूं । इसको एक अतीव नीच व हानिकर प्रथा समझता हूं और इस के खंडन में एक छोटासा ट्रैक्ट भी लिख चुका हूं । परंतु यदि कोई व्यक्ति बालविवाह वृद्ध विवाह-अनमेलविवाह-कन्याविक्रय आदि कुरीतियों से विधवाओं की बढ़ती हुई संख्या और समाज द्वारा इन कुरीतियों का बहिष्कार न होते देखकर तथा विधवाओं की अधम दुःखद दशा और उनके आधार से घोर पाप होते देख कर नेक नियती से इन त्रुटियों को मेटने के लिये विधवा विवाह का जिक्र करे तो मैं उस व्यक्ति को धर्मद्रोही कहना, उसका दुश्मन होना, उसको गालियां देकर समाज में द्वेष फैलाना उसके साथ दमन नीति का व्यवहार करना पसन्द नहीं करूंगा । क्योंकि मैं जानता हूं कि इस प्रकार के व्यवहार से उसके विचार नहीं बदल सकते । बल्कि उसके विचार तो जिन कारणों से उसके हृदय में विधवाविवाह का ख्याल आया है उन कारणों को दूर करने और मुलायमियत व प्रेम के साथ यथोचित तर्कणाओं से उसके विचारों को बाधित करने से ही बदल सकते हैं । कुछ काल से कतिपय पण्डितगण विधवाविवाह का हथियार हाथ में लेकर पूज्य ब्र० शीतलप्रसाद जी के बुरी तरह से पीछे पड़े हैं । कहते हैं कि यह विधवाविवाह चाहते हैं । विधवाविवाह का प्रचार करते हैं । ब्र० जी कहते हैं कि मैंने विधवाविवाह मण्डन का न कभी

कोई लेख लिखा और न किसी दूसरे का लिखा हुआ 'जैनमित्र' में छापा। परन्तु यह लोग उनके इस कहने को नहीं मानते और कहते हैं कि चूंकि ब्र० जी कभी विधवाविवाह खंडन का लेख नहीं छपाते इसलिये वे जरूर विधवाविवाह के पक्षपाती हैं। वाह! क्या बढ़िया न्याय है! यदि कोई व्यक्ति "ईश्वर जगत् कर्त्ता है" इस सिद्धान्त के खण्डन में लेख नहीं लिख सकता तो कह दिया जाय कि वह इस सिद्धान्त का पक्षपाती है! अभी हाल में इटावा में ब्र० जी के विरुद्ध प्रस्ताव पंडितों ने पास कराया है कि वे एक मास के भीतर विधवाविवाह का खंडन प्रकट करदें वरन उनके नामके साथ 'ब्रह्मचारी' शब्द कदापि रक्खा न जाय! सुना है कि दि० जैन समाज की सैतवाल आदि कई जातियों में विधवाविवाह होता है। फिर इसकी वजह नहीं मालूम होती कि विधवाविवाह खंडन न लिखने पर ब्र० शीतलप्रसाद जी का ब्र० पद छीनने के लिये तो प्रस्ताव पास कराया परन्तु इन जातियों के विरुद्ध विधवा-विवाह बन्द करने के अभिप्राय से कोई प्रस्ताव पास नहीं कराया। क्या यह अनोखी बात नहीं है और इसका कारण ब्र० जी से व्यक्तिगत द्वेष न समझा जाय तो क्या समझा जाय? इस के अतिरिक्त क्या हम यह कहकर कि अमुक व्यक्ति विधवाविवाह का पक्षपाती है-इसलिये वह धर्मभ्रष्ट व धर्मशून्य है उसका बायकाट करो, उसके नाम के साथ अमुक पदवी सूचक शब्द मत लगाओ विधवा विवाह को रोक सकते हैं? हरगिज़ नहीं रोक सकते! दबाव अथवा दमननीति कभी सफल नहीं होती। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जहां कहीं किसी बात के दबाने के लिये दमन अथवा जबरदस्ती का मार्ग स्वीकार किया गया उससे वह बात दबी नहीं है बल्कि उससे उत्तेजना हुई है। अतएव विधवा विवाह रोकने का उचित उपाय यही है कि जिन कारणों से लोगों का ख्याल विधवाविवाह की ओर जाता है उन कारणों को दूर किया जाय। अब बालविवाह वृद्धविवाह अनमेलविवाह कन्याविक्रय आदि कुरीतियों की ओर मुलायमियत व लापरवाही की दृष्टि रखने से काम नहीं चलेगा। अब तो आप को अपने हृदय में यह पक्का विश्वास धारण कर लेना चाहिये कि यह कुरीतियां जरूर जैन समाज में घुन की तरह लगी हुई हैं उसकी संख्या को घटा रही हैं और इनके रोकने से जरूर जैन संख्या में वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार का विश्वास करके इन कुरीतियों की जड़ उखाड़ने में हमें लग जाना चाहिये। यदि आप ऐसा कर सकेंगे तो विधवा विवाह जैसी नीच प्रथा जरूर रुकी रहेगी। वरन केवल दूसरों पर दोषारोपण कर उनकी निन्दा करने से कोई फायदा नहीं! इससे तो समाज में द्वेष व अनैक्य फैलता और समाज की शक्ति घटती है और कोई फल नहीं निकलता। अतएव विधवा विवाह का दोषारोपण दूसरों पर लगाना यथार्थ नहीं है।

जातिभेद का लोप दूसरा दोषारोपण जो कतिपय नवशिक्षित बंधुओं पर लगाया जाता है वह यह है कि यह लोग जातिभेद का लोप करना चाहते हैं। परन्तु यह बात भी मिथ्या है। जातिभेद को उड़ाना कोई नहीं चाहता। और न उस तजवीज से जो कतिपय सज्जन उपस्थित कर रहे हैं जातिभेद उड़ सकता है। और वह तजवीज यह है कि जैन समाज के वैश्यवर्ण में जो खंडेलवाल, अग्र

वाल आदि जातियां हैं उनमें परस्पर विवाह संबंध होने लगे। बात यह है कि जैनसमाज की संख्या घटती जारही है और कुछ जातियों की संख्या घटते घटते बहुत ही कम रहगई है। सुना है ऐसी जातियां भी हैं कि जिनकी संख्या कम होते २ इससमय सौसे भी कम रहगई है कि जिससे उनका अपनी जाति में विवाह संबंध के लिये क्षेत्र नहीं रहा। और यदि उनका विवाह संबन्ध दूसरी जातियों में न हुआ तो थोड़े ही दिनमें उन जातियों का नाम दुनियां से मिट जायगा जिससे जैनसमाजकी संख्या और अधिक कम हो जायगी। अतएव इन जातियों को काल के गालसे बचाने के लिये उपजातियों में विवाह संबन्धकी सिफ़ारश की जाती है कि जिस को कतिपय पंडितगण धर्म व आगम विरुद्ध व जातिभेद को उड़ाने वाला बतलाते हैं। और इस तजवीज के पेश करने वालों पर धर्म द्रोही, भ्रष्ट आदि नामों की बौछार करते हैं। परन्तु जैनग्रन्थों में विवाह संबंध विभिन्न वर्णों में पाया जाता है। चुनांचे भगवान् महावीर के समय में ही राजा श्रेणिक ने इन्द्रदत्त सेठ की कन्यासे विवाह किया। और इस ही संबंध से अभय कुमार नामका मोक्ष गामी पुत्र उत्पन्न हुआ। जिससे प्रगट है कि उस ज़माने में इस प्रकारके विवाह अनुचित और नीचे प्रकार का नहीं समझा जाता था, वरन् उस से मोक्षगामी सन्तान उत्पन्न नहीं हो सक्ती थी। अत एव जब जैन धर्म के अनुसार अन्य वर्ण का विवाह संबंध धर्म व आगम विरुद्ध नहीं है तो फिर एक ही वर्ण की उपजातियों के विवाह संबंध धर्म व आगम विरुद्ध किस तरह हो सकता है। हमारे ख्याल में तो बहुतर हो यदि वह पंडितगण दूसरों को धर्मद्रोही, धर्म भ्रष्ट कहने के बजाय अभय कुमार के माता पिता के विवाह संबंध को ही मिथ्या प्रमाणित करें। और न उपजातियों में परस्पर विवाह संबंध से जाति भेद उड़ सका है। क्यों कि प्रथम तो जब कि प्राचीन कालमें विभिन्न वर्णों में परस्पर विवाह संबन्ध होने से वर्ण भेद नहीं मिटता तो अब एक ही वर्ण की उपजातियों में विवाह सम्बन्ध से जाति भेद किस तरह मिट जायगा? दूसरे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि विवाह संबन्ध एक गोत्र में नहीं होते हैं और भिन्न गोत्रों की शादी से गोत्रभेद नहीं उड़ता तो फिर भिन्न जातियों की शादी से जातिभेद क्यों उड़ जायगा? जिस तरह गोयलगोत्र के लड़के व गर्ग गोत्र की लड़की की शादी से सन्तान का गोयल गोत्र स्थापित होता है उसी तरह खंडेलवाल लड़के व अग्रवाल लड़की की शादी से सन्तान की खंडेलवाल जाति कायम रहेगी। अतएव यह कहना कि इस प्रकार के विवाहसंबन्ध से जातिभेद का लोप हो जायगा, मिथ्या है। इसलिये पंडित महोदयों को यह बात खूब हृदयङ्गम कर लेना चाहिये कि कतिपय नूतन विचार वाले अथवा अंग्रेजी विज्ञ जो जैन समाज की कतिपय मरती हुई जातियों को मौत के पञ्जे से बचाने, जैनसमाज की घटती को रोकने जैनसमाज की सन्तति व शरीर को हृष्टपुष्ट बनाने और जैन समाज में परस्पर मेल मिलाप व हमदर्दी बढ़ाने के लिये उपजातियों में परस्पर विवाहसंबन्ध करने की तजवीज उपस्थित कर रहे हैं उससे उन का उद्देश्य कोई काम धर्म व आगम विरुद्ध करने अथवा जातिभेद को उड़ाने का नहीं है और न इससे वास्तव में जातिभेद उड़ ही सकता है।

छूतछात का लोप—तीसरा दोषारोपण पंडितगण इन सज्जनों पर यह करते हैं कि यह लोग छूतछात को उड़ाना भंगी चमारोंके साथ खानपान प्रारंभ करना चाहते हैं। मेरे ख्याल में यह दोषारोपण ठीक नहीं है। दिगम्बर जैन समाज में कोई व्यक्ति यह नहीं कहता कि भंगी चमारों के साथ खान पान प्रारंभ कर दिया जाय। केवल उन के साथ हद से ज्यादा खिंची हुई नफरत व द्वेष के बर्ताव का निषेध किया जाता है। वास्तव में छूत छात का सम्बन्ध खान पान की शुद्धता से है। जो व्यक्ति मैला उठाता हो,या गलीच रहता हो या जिसका खान पान मांसादिक अशुद्ध पदार्थोंका हो या जिसके कर्म बहुत नीच हों उसका स्पर्श की हुई वस्तु को खाने से खाने वाले के दिल में एक प्रकार की आकुलता उत्पन्न होती है कि जिससे वह अपने धर्मका साधन ठीक तौरसे नहीं कर सक्ता। अतएव हृदय में आकुलता को आनेसे रोकने के लिये यह छूत छात का नियम रक्खा गया है। परन्तु इसनियम को इस प्रकार सीमासे अधिक खींचना ठीक नहीं है कि दूसरे की शायासे, दूसरे के एक सड़क पर अपने बराबर चलने से धर्म भ्रष्ट होना ख्याल किया जाय,अथवा यदि कोई भंगी या चमार का बच्चा किसी गड्ढे या नालेमें गिरता हो,तो हम अपनी उच्च जातिके अभिमान में उसको पकड़ कर गिरने से बचाना अपनी शान के खिलाफ समझें। अथवा अपनी उच्चजाति होने के कारण उनको शिक्षा देना उनसे मांस मदिरादि भक्षण, दुष्कर्म छुड़ाने के लिये धर्मउपदेश देना पसंद न करें। उनकी आत्मिक उन्नति में सहायता देने से परहेज करें इत्यादि। अतएव इस समाज में कतिपय नवीन विचार वाले या अंगरेजी शिक्षित महोदय छूतछात को इस सीमातक व इस अर्थमें ही हटाने को कहते हैं। खान पान आदि एक करने को नहीं कहते। यद्यपि बेलगांव के अधिवेशन में साफ यह प्रकट किया जा चुका है कि इस प्रस्ताव से यह मतलब कदापि नहीं है कि भंगी चमारों के साथ खानपान अथवा बेटीव्यवहार प्रारंभ किया जाय। परंतु फिर भी कतिपय पंडितगण यह कहे चले जाते हैं कि यह लोग भंगी चमारों के साथ खान पान प्रारंभ करना चाहते हैं। भंगी चमारों को मन्दिरों में ले जाना चाहते। जहां तक मेरा ख्याल है मन्दिर में कोई लेजाना नहीं चाहते हैं। परन्तु पहिले जमाने में इस भाव से कि यह लोग भगवान की मूर्ति का दर्शन कर सकें मंदिर के शिखर पर बाहर की ओर मूर्तियां हुआ करती थी। खेद है कि वह यद्यपि अब बन्द करदी गई है। उसको फिर प्रारंभ करदेना चाहिये।

दूसरे यह नियम आजकल इस भारतवर्ष में राज्यनैतिक रूपको भी लिये हुये हैं। कहा जाता है कि सात करोड़ मनुष्योंके साथ अछूतपने का ऐसा नामुनासिब व्यवहार किया जाता है कि जिससे वे अपने को समग्र जाति से बिलकुल पृथक समझते हैं; परन्तु जबतक समस्त जाति में संगठन न हो और न हमदर्दी हो भारत को स्वतन्त्रता मिलना अतीव दुष्कर है। इस लिए इस संबन्ध का आन्दोलन जोर शोर के साथ सारे देशमें फैला हुआ है। अब विचारणीय विषय यह है कि जैन समाज को इस आन्दोलन के प्रति अपनी दृष्टि कैसी रखना चाहिये ? क्या जैन समाज को पूर्णरूप से इस आन्दोलन का विरोध करना मुनासिब है ? क्या

वह विरोध करने में सफल हो सकती है और विरोध करने की अवस्था में उस की क्या दशा होने की सम्भावना है? मेरी राय में जैनसमाज के लिये इस देश व्यापी आन्दोलन का पूर्णतया विरोध करना दूरन्देशी के खिलाफ व सख्त गलती है। जब प्रथम ही अछूत जातियों से जिस रीति से व जिस हद तक नफ़रत व अप्रेम का बर्ताव किया जाता है। यह जैनधर्म के निश्चय मार्ग के नितान्त विरुद्ध है। दूसरे जैन समाज की संख्या बहुत कम है और दिन व दिन कम होती जा रही है। तिस पर जैन समाज में न संगठन है, न पैसा, शारीरिक व मानसिक बल है कि जिस से यह किसी देशव्यापी आन्दोलन का सफलता पूर्वक विरोध कर सके। अतएव यदि जैन समाज इस देशव्यापी आन्दोलनका विरोध करेगी तो सफलता को दूर किनार फल यह होगा कि जैन समाज का दुनियां में हास्य और जैनधर्म की अप्रभावना होगी। और उस की संख्या अधिक वेग के साथ घटने लगेगी। तथापि संभव है कि इसका अस्तित्व ही संकट में आजाय। और भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त होने के उपरान्त यदि कुछ जैनसमाज शेष रही तो उस की दशा क्या होगी यह ख्याल की जा सकती है। उस समय उसकी दशा वही होगी कि जो एक विपक्षी की हुआ करती है। और उस के पुरुस्कार वही मिलेंगे जो एक विरोधीको मिला करते हैं। अतएव इन सब बातों का ध्यान कर के जैन समाज के लिये यह ही बुद्धिमत्ता और दीर्घ दर्शिता है कि वह अपने खान पान के व्यावहारिक शुद्धता को स्थिर रखते हुए इस देशव्यापी आन्दोलन में मुख्यकर जब कि यह जैन धर्म के उदार निश्चय मार्ग के विरुद्ध नहीं है कुछ सहायक ही हो, उस का विरोध न करें।

अतएव उपर्युल्लिखित कारणोंके वश कतिपय पंडितगण जो किन्हीं नवीन विचार वाले अथवा अंग्रेजी विज्ञ महोदयों पर विधवा विवाह जारी करने, जातभेद व छूत छात उड़ाने का दोषारोपण करके उनको धर्म भ्रष्ट आदि नामोंसे पुकारते हैं यह ठीक नहीं है। और यह देख कर कतिपय नवीन विचार वाले अथवा अंग्रेजी विज्ञ महोदय जो इन पण्डित महाशयोंको स्वर्गी, धर्म का ठेकेदार आदि कहते हैं यह भी ठीक नहीं है।* ऐसी बातों से समाज में अनैक्य फैल कर समाज की शक्ति घटती है। पंडित महोदयों को द्रव्य क्षेत्र कालके अनुसार

* हम विद्वान लेखक के स्पष्ट विवेचन के लिये विशेष आभारी हैं। दोनों पक्ष के मुखियों को इस ओर ध्यान देना चाहिये। वस्तुतः आपसी ऐंचातानी में सामाजिक शक्ति का ह्रास हो रहा है। इसी बात को लक्ष्य कर के परिषद् ने श्रीयुत बर्वे महोदय को आपसी निबटेरा कराने के लिये नियुक्त किया था। परन्तु उनके एवं अन्य प्रतिष्ठित समाज नेताओं के प्रयत्न सुलह कराने के लिये केवल कतिपय पंडितों की धींगा धींगी के कारण अभी तक असफल रहे हैं। बेशक सर्व श्रेष्ठ मार्ग यही है कि विपक्षियों का कथन भुलादिया जाय किन्तु बाबू दल को अपयुक्त शब्दों और उनके कुछ कृत्यों का भंडा फोड़ करने में समय नष्ट नहीं करना चाहिये पाप का घड़ा स्वयं भरकर फूट जायगा। परन्तु भोली जनता भ्रममें पड़जाती है। इसलिए हम इनको मजबूरन इस ओर ध्यान देना पड़ता है। फिर भी हम यही कहेंगे कि इस झगड़े में शक्ति को लगाना दुरुपयोग करना है, इसका भाग्य में मिटना ही अच्छा है। इस पारस्परिक झगड़ोंके के लिए परिषद पार्टी को मजबूर करदेना चाहिये। वह सब

कुछ सुधार को धर्म व आगम विरुद्ध नहीं समझना चाहिये। जैसे आजकल दि० जैनसमाज में प्रत्येकवर्ष आठ दस लाख रुपया पूजा प्रतिष्ठाओं में खर्च हो जाता है। हजारों, लाखों रुपये काठके हाथी घोड़ों, दीवारों को सोने से ढकने और लड्डू व दावतों में खर्च हो जाते हैं। परन्तु इसको सब समझदार स्वीकार करते हैं कि आज कल इन कार्रवाईयों से कुछ अधिक जैन धर्म की प्रभावना, जैनधर्म व समाजको उन्नति नहीं होती। इन कार्यों को देख कर दुनियां बस यहही कह कर कि जैनी बहुत धनी हैं चुपहोजाती है। जैन धर्म की विशेषता व जैन सिद्धान्त की छाप उनके दिलों पर नहीं बैठता। आजकल जरूरत इस बातकी है कि अधिकतर रुपया शिक्षा प्रचार तथा जैन धर्म के सिद्धान्त के प्रचारमें खर्च किया जाय। जैन ग्रंथों के सरल एवं विविध भाषाओं में अनुवाद करा २ कर सहस्रों की संख्या में प्रकट करना चाहिये। जैन तत्त्वों का प्रसार संसार में ट्रैक्ट आदि द्वारा किया जाय। उच्चकोटि की जैन संस्थायें स्थापित की जाय कि जहां से परमोच्च धार्मिक एवं लौकिक शिक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी निकलें और पूजा प्रतिष्ठाओं के जलूसों में भी खर्च कम करा। समझ समझ

ही होसकता है कि सब व्ययदश के शान्ति इच्छुक निष्पक्ष व्यक्ति और महासभा के पुराने कर्णधार इस ओर कुछ समय व्यय करके वास्तविक स्थिति का पता लगावें। अभी तक इस ओर प्रयत्न दक्षिण के कतिपय महोदयों एवं सेठों (श्री चवरे वकील) ने किये हैं, परन्तु शेष प्रान्त वाले तमाशा देख रहे हैं। यह ठीक नहीं। सब को मिलकर इन झगड़े का यथोचित अन्त कराना चाहिये।

—व० सं०

को कम करके जैन सुभाषितों (Mottos) की रौनक बाजार में दिखाई जाय। और पूजा प्रतिष्ठाओं के बाजारों में फैशन, सराफा, ऐश आरामके समान की दुकानों की बजाय नैतिक व आत्मिक उन्नति और देशोन्नति में सहायक पुस्तकों आदि की दुकाने लगवाई जांय। परन्तु खेद यह है कि यदि कोई व्यक्ति उपरोक्त कारणों और उद्देश्योंवश कुछ काठ के हाथी घोड़ों के विरुद्ध लिखदेता है तो कतिपय पंडित गण उसको नास्तिक के नामसे पुकारते हैं। फिर बतलाइये काम चले तो कैसे चले। और समाजसे अनैक्य दूर होतो किस तरह से दूर हो? मैं इस बात को मानने के लिये तैयार हूं कि नवीन विचारवालों या अंग्रेजीपढ़ों में से अधिकांश धर्मज्ञान से अजानकार हैं। इसलिये संभव है कि किसी समय कोई व्यक्ति कुछ धर्म के विरुद्ध भी कह बैठें। परन्तु इसमें कसूर किसका है। मेरी रायमें यह कसूर समाज का ही है कि उसने अंग्रेजी शिक्षण के साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध नहीं किया है। कोई मार्ग ऐसा न सिरजा कि जिससे स्कूलों व कालिजों में पढ़ने वाले जैनी विद्यार्थी अपने धर्म की शिक्षा ग्रहण कर सकें। स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्द जी ने बोर्डिङ्गहाउसेज़ का मार्ग सिरजा। परन्तु बड़ी कठिनाई यह है कि कतिपय पंडितगण जैन बोर्डिङ्ग हाउसों और स्कूलों की निंदा करते हैं। उनमें दान देने को पाप बतलाते हैं। यदि उनमें कोई त्रुटि है तो उसको प्रेमपूर्वक दूर करानी चाहिये न कि उन का विरोध करना। हाल में मैंने किसी पंडितसाहब का लिखा हुआ किसी पत्र में पढ़ा था कि बोर्डिङ्ग हाउसेज में तो धार्मिक शिक्षा केवल एक वर्ष में कुछ घंटे (शायद २॥ घंटे लिखा था) कठिनता से ही

जाती है। परन्तु मैं तो जैन बोर्डिङ्गहाउस मेरठ के अनुभव से इसको नहीं मान सकता। यद्यपि इस बोर्डिङ्गहाउस में फंड न होने के कारण धर्माध्यापक का प्रबन्ध नहीं है परन्तु तो भी यहां शास्त्रसभा, पूजन, धार्मिक व्याख्यान आदि के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा औसतन् करीब एक मास में आठ दिवस के दी जाती रही है। और जैन बालबोध ४ भाग, छैढाले, द्रव्यसंग्रह, जैनसिद्धान्तप्रवेशिका पढ़ाये जाकर लिखित पर्चों द्वारा परीक्षायें होती रही हैं। इसके अतिरिक्त सांप्रत यह तो असंभव है कि जैनी लड़के अंग्रेजी न पढ़ें। अंग्रेजी पढ़ना तो जमाने की आवश्यकताओं की अपेक्षा आवश्यक एवं लाज़मी है। बस अब आप यह पसन्द करते हैं कि यह अंग्रेजी पढ़ २ कर अपने धर्म को छोड़ते जायं या यह पसन्द करते हैं कि जैनी बने रहें। पहिली बात कोई पसन्द नहीं करेगा। अतएव जब दूसरी बात इष्ट व समाजहित की है तो ज़रूरी है कि इनके लिये धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय। और जैन बोर्डिङ्गहाउसेज की बुराई न करके यदि उनमें कोई त्रुटि वास्तव में है तो उसको प्रेमपूर्वक दूर कराया जाय।

अब मैं अन्त में नवीन विचार वाले व अंग्रेजी शिक्षित महोदयों से भी यह ज़रूर कहूंगा कि वे कृपा कर के कतिपय पंडित साहिबों को स्वार्थी धर्मका ठेके दार-आदि लिखना छोड़ दें। सहन शीलता स्वीकार करें। यदि पंडितगण आपको धर्मद्रोही धर्म भ्रष्ट आदि कहते हैं तो कहने दीजिये। कुछ परवा न कीजिये। कहां तक कहेंगे। एक दिन अवश्य समझेंगे। फलतः इस दिगम्बर जैन समाज से अनैक्य एवं कलह दूर होकर अवश्य सुख व शान्ति का राज्य होगा। ऐसी मेरी हार्दिक भावना है।

समाज में शान्ति का अभिलाषी—

ऋषभदास जैन बी० ए०

हिन्दी जैन गजट से प्रश्न

हिन्दी जैनगज़ट अङ्क २६ ता० ६ अप्रैल १९२५ में "वर्ण और जाति दोनों भिन्न हैं" शीर्षक लेख पढ़ने पर मेरे हृदय में निम्न प्रश्न उत्पन्न हुये हैं। कृपा कर के लेखक महाशय अथवा अन्य विद्वान उत्तर दें:—

(१) क्या कोई एक जाति भिन्न २ वर्णों में पाई जाती है? यदि पाई जाती है तो वह कौनसी जाति है?

(२) क्या अग्रवाल, खंडेलवाल, ओसवाल, पद्मावतीपुरवाल आदि जातियां क्षत्री अथवा ब्राह्मण वर्णों में भी पाई जाती हैं? यदि पाई जाती हैं तो वे कहां आबाद हैं?

(३) एक जाति के भिन्न २ वर्णवालों में विवाह संबंध हो सकता है? ऐसा उल्लेख किस जैन शास्त्र में है? और उदाहरण भी दीजिये कि किस एक जाति के (उस जाति का नाम लिखिये) दो वर्णों के मनुष्यों में विवाह संबंध हुआ?

उत्तराभिलाषीः-

ऋषभदास जैन, वकील मेरठ।

समाज सेवक कैसे मिलें ?

जैन समाज की ओर गंभीर दृष्टि पात करने से हमें विदित होता है कि समाजोत्थान के कार्य करने के लिये जितने कार्यकर्त्ताओं की आवश्यक्ता है उतने प्राप्त नहीं होते ! तिस पर जो कुछ प्राप्त हैं उनसे समाज सेवा का उतना कार्य नहीं होता जितना कि होना चाहिये ! इस में कारण यही है कि ऐसे कार्यकर्ता सामाजिक कार्य करने के लिये पूर्ण स्वतन्त्र नहीं हैं। वे अपनी जान में भरसक प्रयत्न आत्मोत्थान के लिये करते हैं और उन की सराहनीय निःस्वार्थ सेवा से कभी २ मधुर फल भी प्राप्त होते है। परन्तु उनको अपने गार्हस्थिक जीवन सबंधी अन्य आवश्यक्ता की भी पूर्ति करनी पड़ती है। इस हेतु वे इच्छा होते हुये भी अपनी सारी शक्ति समाज के लिये समर्पित नहीं कर सके और यह प्रसिद्ध ही है कि मनुष्य दो कार्य एक साथ नहीं कर सक्ता ! भगवत् का भजन और शैतान की सेवा एक साथ नहीं हो सकी। यही कारण है कि समाज अबतक उस उन्नत अवस्थाको नहीं पहुंचा जिस को कि उसके पड़ोसी पहुंच चुके हैं ! यहां तक कि उस का एक भारत व्यापी संगठन नहीं हो पाया है, जिस के कारण कोई भी संस्था ऐसी नहीं है जो समस्त जैनियों की भारतवर्षीय संस्था कहलानेका वास्तविक हक रखती हो। ऐसी अवस्थामें समाजसेवकों की पूर्ति के लिये यह आवश्यक है कि जैन शिक्षालयों से निकलने वाले नवयुवकोंसे इस ओर अनिवार्यरूप से सहायता ली जावे। जैन समाज के गतजीवन के पन्ने उलटने से हमें ज्ञात होता है कि समाजने इन विद्यालयों की स्थापना समाज सेवकों को उत्पन्न करने के लिये ही की थी ! इस पर स्वयं उन विद्यार्थियों को ध्यान देना चाहिये जो समाज की सहायता से विद्याध्ययन करते हैं। उससे उऋण होने के लिए यह आवश्यक है कि वह इस बात के लिये प्रसन्नतः तैयार हो जावें कि अमुक समय तक हम अवैतनिक रूप में समाज का कार्य करेंगे जिस तरह हम विद्यालय में फ्री-पेड पढ़ते और रहते थे। सब विद्यालयों के प्रबन्धकों का कर्तव्य होना चाहिये कि वह ऐसे छात्रों से पहिले ही प्रमाण-पत्र लिखवालें कि एक अथवा दो वर्ष तक वह समाज की सेवा अवैतनिक रूप में करेंगे। इसके अतिरिक्त एक "सेवक संघ" की स्थापना की जावे, जिसमें निःस्वार्थ समाज सेवी सम्मिलित हों और वे नवयुवक हों जो अल्प वेतन (जीवन-निर्वाह हेतु) लेकर समाज के लिये तैयार हों। ऐसा करने से उन लोगों के समक्ष

गृहस्थी के भरण पोषण का प्रश्न हल्का हो जायेगा और वे अधिक स्वतंत्रता-पूर्वक समाज सेवा का कार्य कर सकेंगे। ऐसे ही संघके इन स्वयं सेवकों द्वारा एक भारतव्यापी संगठन सुगमता पूर्वक हो सकेगा, जिसके बिना समाजोत्थान होना नितान्त अशक्य है। समाज हितैषी सेठों और नेताओं को ध्यान देना चाहिये।

जिन वाणी के प्रति सच्ची विनय।

आजकल जिस प्रकार जैन समाज अन्य बातों में लोक पीटना ही अपना गौरव समझती है उस ही प्रकार पवित्र जिनमुखोद्भूत सर्वहितकारिणी वाणी की विनय मात्र रूढ़िवत् अर्घ अर्चन में ही पूरित ख़याल करती है अथवा शास्त्रों को अलमारियों में बन्द रखकर ही उसका महत्व प्रकट होता अनुभव करती है। यह अवश्य ही एक सच्चे जिन वाणी भक्त के लिये दुःखद स्थिति है। हां, इतना अवश्य है कि कतिपय जिनभक्तों के अविकल श्रम से समाज में से वह अन्धविश्वास और मूढ़ता कम हो गयी है और लोग जिनवाणी के दिव्य गौरव को सर्वत्र व्याप्त करने के लिये कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण भी हो चुके हैं, परन्तु अब भी रूढ़ि के अन्धभक्तों की कृपा से उस ओर वह संगठित प्रयास नहीं हुआ है जिससे उसका वास्तविक महत्व उचित रीति से प्रगट होता! कतिपय लोगों के दिलों में अब भी मुद्रित शास्त्रों के प्रति कटुभाव हैं! यहां तक कि उनको लिखित शास्त्रों से कम महत्व का समझते हैं। परन्तु इसमें मुख्य कारण उन लोगों का असली धर्मज्ञान से नावाकफ़ियत ही कहा जा सकता है! उनकी दृष्टि बाह्य-वेष पर ही अटकी हुई है। अभ्यन्तर की ओर उनका दृष्टि पात ही नहीं होता! वरन् लिखित और मुद्रित दोनों ही शास्त्र हमारे लिये समान हितकारी हैं। दुःख तो उन विद्वानों और धीमानों की विचक्षण बुद्धि पर होता है जो इस उन्नतशील ज़माने में भी १६ वीं शताब्दि के राग अलापते हैं! इस समय ज़रूरत है कि एक संगठित रूप से जिनवाणी उद्धार का कार्य किया जाय उसके स्थान में मुद्रित-ग्रन्थों का विरोध करना कहां की बुद्धिमत्ता है? फिर ज़रा अपने पुरातन पुरुषों के कृत्यों पर भी तो दृष्टि डालिये! हमको मालूम है कि पहिले द्वादशांग वाणी गुरुशिष्य परंपरा से मौखिक रूप में रक्षित थी। जब ऋषिगण की स्मरणशक्ति क्षीण होने लगी तब उन्होंने उसके प्रति सच्चे विनयभाव रखकर उसको लिपिबद्ध कर लिया! इस समय लेखन सामिग्री ताड़ और भोज पत्र थे। उपरान्त जब काग़ज़ की बाहुल्यता हुई तब उन्होंने उस पर लिखना प्रारम्भ कर दिया। यही नहीं समयानुसार उन्होंने उसकी भाषा भी बदली थी। अर्ध-मागधी में संस्कृत भी हुई और फिर अपभ्रंश, कनड़ी, तामिल आदि रूप भी उसके हुये थे। इस से प्रत्यक्ष प्रकट है कि हमारे पूर्वाचार्य समयानुकूल साधनों द्वारा हमेशा जिनवाणी का प्रचार करते रहे हैं। भारत में काग़ज़ फटे पुराने चिथड़ों आदि मलिन पदार्थों से बनता था यह भी प्रकट है जैसा कि आज भी उसका निर्माण अन्य वस्तुओं के साथ उन से भी होता है। ऐसी अवस्था में यदि पूर्वाचार्य यही ख़याल कर लेते कि शास्त्रों को लिपिबद्ध कर देंगे तो उनकी अविनय होने का डर रहेगा और फिर काग़ज़ मलिन पदार्थ है इसलिये शास्त्रों को काग़ज़ स्याही का रूप देकर रक्षित

जाता उपयुक्त नहीं ! तो फिर आज कहाँ से हमको इस शाश्वत वाणी के दर्शन होते ? इसलिये प्रत्येक जैनी का यह कर्तव्य निर्णीत हो जाता है कि वह लिखित और मुद्रित शास्त्रों को समान दृष्टि से देखें । तथा दोनों के ही प्रचार में सहायक हों । जिनवाणी उद्धार के लिये आवश्यक है कि एक "सेन्ट्रल जैन प्रेस और पब्लिशिंग हाउस" स्थापित किया जाय ! उसके द्वारा प्रत्येक भाषा में जैन ग्रन्थ विशेष विद्वानों की देख रेख में प्रकट हों । तथा लेखन कला को जीवित रखने के लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक स्थान के शास्त्र भंडारों की खोज कराई जावे और वहाँ जो अलभ्य-उत्कृष्ट ग्रन्थ हों उनकी प्रतिलिपि करा कर एक मुख्य स्थान पर "वृहद् जैन पुस्तकालय" स्थापित कर विराजमान कराए जावें । वास्तविक कार्य करने का तो यही उपाय है और सच्ची विनय इस ही में है । वरन् उसके प्रचार कार्य में बाधा डालना अविनय करना ही है । पत्र सम्पादकों और विद्वानों को ध्यान देना चाहिये ।

—उ० सं०

संसार दिग्दर्शन

श्री अहिच्छत्र का मेला व पाठशाला

श्री अहिच्छत्र तीर्थक्षेत्र का वार्षिक मेला आनन्द पूर्वक समाप्त होगया इस वर्ष जनसंख्या ६०० थी । श्रीमान् पूज्य ऐलक पन्नालाल जी महाराज, बाबा भगीरथदास जी वर्णी, श्री० चम्पतराय जी बैरिस्टर, प० बनारसीदास सहारनपुर, प० रघुनाथदास सरनऊ, प० जिनेश्वरदास तिलहर, कैलाशचन्द नहटौर व प० हरदेवदत्त जी शर्मा अमरोहा, सेठ शोभाराम जी भिवानी, बा० मुन्नीलाल आदि महाशय पधारे थे विद्वत् मण्डली के पधारने से अच्छी प्रभावना रही । श्री पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला के धर्म को भूले हुए रामनगर निवासियों में पुनः धर्म के प्रचारार्थ स्थापित हुई है । पाठशाला में २५ विद्यार्थी हैं । ४ जैन खंडेलवाल और २१ अन्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हैं सबको धार्मिक व लौकिक शिक्षा दी जाती है । पाठशाला में प० विष्णुदत्त जी धार्मिक व हिन्दी के शिक्षक हैं और एक मास्टर उर्दू पढ़ाता है । पाठशाला में ६ विद्यार्थियों को भोजन की सहायता भी दी जाती है । पाठशाला का मासिक व्यय ८०) रु० है । पाठशाला के मन्त्री श्री० रतनलाल जी बी० एम० सी० वकील (मन्त्री भा० दि० जैन परिषद्) बिजनौर हैं पाठशाला की परीक्षा ली गई । फल बहुत ही अच्छा रहा । ६००) छः सौ के लगभग चन्दा पाठशाला के लिये होगया, जिसमें श्रीमान् ला० ननूमल जी

रईस दिल्ली वालों ने पाठशाला के ४ विद्यार्थियों को भोजनव्यय जो ३०) मासिक के लगभग होगा एक वर्ष तक देने का वचन दिया। आशा है यदि पाठशाला का कार्य इसी प्रकार चालू रहा तो रामनगर ग्रामवासी एक जैन हो जायेंगे। समाज और विशेषकर दातारों से प्रार्थना है कि वे समय २ पर पाठशाला का निरीक्षण करते रहें और सहायता करते रहें।

नेमीचन्द जैन उपमंत्री अतिशय तीर्थ
मुरादाबाद

—'जैन सेवक संघ' ने निश्चय किया है कि वह जैन समाज में वर्णान्तर्गत जातियों में पारस्परिक विवाह सम्बन्ध प्रचलित करे इसके प्रबंध की सुगमता के लिये उन सब मात पिताओं से, जिनके यहां विवाह योग्य पुत्र या पुत्री हों और जो इस प्रकार के सम्बन्ध से सहमत हों, निवेदन करना चाहता है कि वे अपने सेवकों के संघ से सहायता लें और उससे पत्र व्यवहार प्रारंभ करदें। विवाह योग्य वर कन्या के विषय में योग्यता, वय गोत्र आदि पूर्ण विवरण लिखने की कृपा करें जिससे वह संघ उचित सहायता कर सके।

मंत्री—जैनसेवक संघ
पहाड़ी धीरज देहली

—महावीरजी के सेवा कार्य श्री जैन कुमार सभा आगरा इस वर्ष महावीर जयन्ती उत्सव के लिये अतिशय क्षेत्र महावीर जी में अपने अनेक सभासदों को लेकर पहुंची थी, वहां मन्दिर जी में और बाहर सेवा के अनेक कार्य बड़ी मुस्तैदी से किए। कई खोई हुई चीजें उन के मालिकों को दीं। कुछ चीजों के मालिक का पता न लगने पर भंडार में जमा की गई। रियासत के नाज़िम साहब ने सभा की सेवा को सहर्ष स्वीकार किया और उसे सहायता दी। इस कार्य के अध्यक्ष सभा के उत्साही कार्यकर्त्ता बाबू लाल जी गोयल आदि थे।

—मंत्री

—जैन महिला आश्रम देहली, आश्रम में इस वक्त १२ लड़कियों से ६ महीने में १८ लड़कियां हो गई हैं। लड़कियां ज्यादातर जिला मैनपुरी के इलाके से आई हैं। जिन में २ विधवाएं हैं और शेष कुआंरी। और लड़कियां आने की भी उम्मीद है।

इस वार्षिक परीक्षा में १८ लड़कियों में से १७ लड़कियां बैठीं। जिन में से १४ पास हुईं और ३ फ़ेल।

आश्रम का काम खासा अच्छा चल रहा है। रुपया अभी तक पहिली कमेटी के अधिकारियों से नहीं मिला है। जिसकी वजह से आश्रम का मकान अभी तक तयार नहीं हो सका और आश्रम को ६०) माहवार किराए का ज़ेरबार होना पड़ रहा है।

निवेदक—बख्तावरसिंह जैन एम० डी० मन्त्री

—श्री जैन कुमार सभा आगरा की तरफ से इस वर्ष श्री महावीर जयन्ती उत्सव अतिशय क्षेत्र महावीर जी में श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी के सभापतित्व में बड़ी शान शौकत व अपूर्व सफलता के साथ मनाया गया। अनेक प्रतिष्ठित विद्वान श्रीमान उपस्थित थे। अनेक महत्वशाली व्याख्यान हुये। जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। समाज के लिए उपयोगी ४ प्रस्ताव भी पास हुये उपस्थिति लगभग ५००-६०० की थी।

—मंत्री

—श्री ऐलक पन्नालाल जी महाराज का केशलोंच बिलसी ज़िला बदायूं में जेठ बदी ५ तक होने वाला है निश्चित मिती की आगामी सूचना दी जायेगी। धर्मप्रेमियों को पधार कर अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

—कानपुर का मुसलमान पत्र 'अलफरीद' बड़ी भयंकर खबर सुनाता है। वह कहता है कि कोंच (जालौन-ज़िला) में पहिली अप्रैल को पुलिस के हेड मुहर्रिर सैयदहुसेन की ६ वर्ष की कन्या लापता हो गई। तलाश करने पर, ईसाइयों के कब्रिस्तान के पास उसकी लाश मिली जिस पर चाकू के घाव थे, सीना चाक करके दिल निकाल लिया गया था। जिस्म पर तमाम जेवर मौजूद था, और एक कागज़ बाजू पर बंधा हुआ था, जिसमें उर्दू और हिन्दी में लिखा हुआ था कि अब मुसलमानों के बच्चों पर ऐसा ही जुल्म किया जायगा जैसा कि पहिले हुआ करता था, यानी हर साल मुसलमानों के बच्चों का दिल नवदुर्गा पर चढ़ाया जायगा। यह समाचार इतना भयंकर है कि हम उसके सचाई पर एक दम विश्वास नहीं कर सकते।

—'रियासत' को एक बड़े देशी राज्य के विश्वस्त सम्वाददाता से समाचार मिला है कि वहां इकबाल बेगम' नाम की एक वेश्या पर, जो साधारण में राजबाई के नाम से प्रसिद्ध है, महाराजा साहब मुग्ध हैं। कई लाख रुपये अब तक इसके रूप पर भेंट चढ़ चुके है। बीच में इस वेश्या के राज्य से चले जाने पर राजा साहब ने पहिले आदमी भेज कर उसको बुलाना चाहा परन्तु जब वह न आई तो स्वयं गुप्त रूप से उसकी सेवा में उपस्थित हुए। सुनते है उसने अपने रूप की कीमत ४० लाख रुपया बतलाया। १० लाख उसी समय दे दिये गये और १५ लाख का प्रबन्ध हो रहा है एक वर्ष के बाद २५ लाख और देने होंगे।

—श्रीमान् निज़ाम ने हाल में एक फरमान निकाला है जिसमें उन्होंने प्रजा के सामने अपनी स्थिति को बड़ी नम्रता के साथ प्रकट करते हुए कहा है कि एक शासक के आवश्यकीय सम्मान और पद गौरव को छोड़ कर मेरी हैसियत एक साधारण 'सिविलसर्वेंट" के बराबर है। निज़ाम के मुंह से यह विनयपूर्ण सच्चा आत्म परिचय और जन सम्मानात्मक सौजन्यता प्रशंसनीय है।

—११ अप्रैल की रात्रि को गढ़वाल में भयंकर तूफान आया। बहुत से मकान नष्ट होगए।

—२३ अप्रैल को फ्रान्स की राजधानी पेरिस में बोल्शेविक क्रान्तिकारियों ने 'पेट्रियाटिक यूथ" नामक संस्था के तीन सदस्यों की हत्या कर डाली और आठको घायल किया। उसी दिन रात्रि को लगभग ५० बोल्शेविकों के एक दल ने पार्लमेंट के एक सदस्य तथा उनके मित्रों पर अकस्मात् हमला किया।

—डरबन (दक्षिण अफ्रीका) के निकट फ्रेट स्टेट सिकोलिव, स्प्रिंग फील्ड तथा अमगेनी आदि स्थानों में गत मार्च में लगातार दो सप्ताह तक बड़ी भयकर वर्षा हुई जिससे वहां के निवासियों का विशेष कर गरीब किसानों का सर्वनाश हो गया। इन स्थानों में प्रवासी भारतीयों की भी बड़ी शोचनीय दशा हुई है। फसल और अनाज का नामो निशान तक नहीं रहा। खेतों पर नदी की तेज धार बह रही है। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है नौकरी पेशावालों को नावों पर चढ़कर जाना पड़ता है। प्रवासी भारतीयों के कई खेतों को जिनमें फूल गोभी और पियाज़ आदि सब्जी लगी हुई थीं, बिलकुल सफाया हो गया।

परिषद् समाचार

भारतवर्षीय दि० जैनपरिषद् की प्रबन्धकारिणी समिति ने निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वांशरूप से सर्व सम्मति द्वारा पास किया है। आशा है कि प० बाबूराम जी उक्त प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणित कर देंगे:—

पैंडत ज़िला मैनपुरी में श्री महावीर स्वामी के प्रतिबिम्ब (जिसे लोग जखैया कहते हैं) के सम्मुख व आस पास बलि के नाम से घोर हिंसा होती है जो जैनधर्म के सर्वथा विरुद्ध है और जिस से प्रतिबिम्ब की महान अविनय होती है अतः यह भा० दि० जैन परिषद् कमेटी प्रस्ताव करती है कि-

(१) प्रतिबिम्ब के सन्मुख हिंसा बन्द कराई जावे तथा प्रतिबिम्ब को अपने अधिकार में ले लेने का प्रयत्न किया जावे।

(२) श्रीयुत प० बाबूराम जी आगरा निवासी से प्रेरणा की जावे कि उपर्युक्त कार्य के सम्पादन के लिये पूर्ण प्रयत्न परिषद् की ओर से करें।

रतनलाल
मन्त्री—परिषद्

सच्ची प्रभावना

अपने धर्म को भूली हुई जैन कलाल जाति में पुनः धर्म प्रचार नागपुर व उस के समीपवर्ती ग्रामों में जैन कलार नामा जाति है जो पहिले जैन धर्मानुयायी थी परन्तु काल के दोष से अपने धर्म को भूल गई है। इस जाति के दो विभाग है पहिले विभाग ने स्वामी शंकराचार्य के उपदेश से हिन्दू धर्म को अंगीकार कर लिया है और दूसरा विभाग हिलमिल विश्वास है न जैन ही है और न अजैन ही। नागपुर नगर में इस जाति की संख्या एक सहस्त्र है समीपवर्ती ग्रामों में भी यह जाति कई सहस्र संख्या में है। भारतवर्षीय दिग० जैन परिषद् की ओर से पं० प्रभाचन्द्र प्रचारक व पं० सीताराम विश्नाथ नागर कर इस जैन कलार जाति में कार्य कर रहे हैं। इस जाति की एक सभा है उस के मंत्रियों ने परिषद् के प्रचारकों को सहायता देने का वचन दिया है। इस जाति में मांस मदिरा का प्रचार है पूर्व काल में यह जाति क्षत्रिय जाति थी। दस बारह कुटुम्बों के मांस मदिरा का त्याग है। इस जाति का एक बालक कालिज में विद्याध्ययन कर रहा है। यदि जारी रहा तो आशा है कि यह समस्त जाति पुनः जैन धर्म की अनुयायी बनेगी।

परिषद् की ओर से दो प्रचारक और भी दौरा कर रहे हैं और छः सात ट्रैक्ट हिन्दी उर्दू गुजराती मरहटी कनड़ी बंगला में निकलने वाले हैं जिन में से एक ट्रैक्ट छपरहा है और अन्य ट्रैक्ट लिखाये जा रहे हैं। परन्तु परिषद् के पास धन का अभाव है धन की कमी के कारण धर्म प्रचार व इतिहास का तथा अन्यकार्य अधिक तेज़ी से नहीं चलाये जा सके। इस लिये समाज से प्रार्थना है कि शक्त्यनुसार परिषद् को धन से सहायता दें। और जो समाज सेवा के इच्छुक हैं वे आगे कार्य क्षेत्र में आवें। यह भी निवेदन है कि जिन २ महाशयों ने ट्रैक्ट प्रकाशित करने तथा

परिषद् के अन्य कार्यों के लिये दान देने का वचन दिया है वे शीघ्र रुपया परिषद् के कोषाध्यक्ष राय साहब साहू जुगमन्दर दास जी रईस नजीबाबाद नगीना-जिला बिजनौर या मेरे पास भेजदें।

जाति सेवक—

रतन लाल मंत्री

भा० दि० जैन परिषद्

रिपोर्ट दौरा पं० प्रेमचन्द पंचरत्न प्रचारक—भा० दि० जैन परिषद

२६ मार्च से ४ अप्रेल तक

--पवई (पन्ना स्टेट)—बीठी से चलकर १ अप्रैल को पवई आया केलदन के मेले के कारण सभा में मनुष्य केवल १० आये व्याख्यान प्रभावना पर हुआ-उन भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया और अश्लील गाने के बन्द करने की प्रतिज्ञा की। यहां एक जैन मन्दिर व १६ घर दिग० जैनियों के हैं। कई भाई सभासद परिषद् हुवे-यहां पर कलेदी का मन्दिर है वर्षा का मेला लगता है। बकरे की बलि नहीं होती किन्तु माथे पर तिलक लगा कर छोड़ देते हैं।

—पटेरा (स्टेट अजयगढ़)—४, अप्रेल को आया दो दिन ठहरा। तीन शास्त्र सभायें व एक जातीय सभा की। उपस्थिति ३० से ऊपर थी। व्याख्यान गृहस्थ धर्म पर हुआ। ४ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा आतिशबाजी व अश्लील गाने की प्रथा बंद की। मन्दिर जी २ हैं और जन संख्या ७७ है। मन्दिरों का प्रबंध ठीक है परिषद् के सभासद् हुये।

—गुनौर (स्टेट अजयगढ़)-मंदिर १ जन संख्या ७२ है। यहां विद्या का प्रभाव है। व्याख्यान विद्या विषय पर हुआ। ६ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया और आतिशबाजी व अश्लील गान बंद करने का वचन दिया।

--मुँदवारी (पन्ना स्टेट) ६-४-२५ को आया यहां मन्दिर १ जन संख्या २४ है मन्दिर का प्रबंध ठीक नहीं, सभा हुई, सात भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। विद्या का प्रचार नहीं है।

—खबरा (अजय गढ़) ११ अप्रेल को आया। मन्दिर एक, जन संख्या ५७ है मन्दिरमें मनुष्य जन्म की दुर्लभता पर व्याख्यान हुआ ३ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। एक साधारण सभा हुई व्याख्यान बलिहिंसा, कसाई को ढोर बेचना, तथा विदेशी चीनी के विरुद्ध हुआ। जनता ८० के लगभग थी कई भाइयों ने बलिदान तथा विदेशी चीनी त्यागी। यहां जैन मन्दिर में एक प्राचीन प्रतिबिम्ब सफेद पषाणकी सम्वत् १५ की है लेख पढ़ा नहीं जाता।

—सलेहा (अजय गढ़)-एक मंदिर तथा जन संख्या ४८ है १३ अप्रेल से १५ अप्रेल तक ठहरा-३ शास्त्र सभा तथा १ जातीय सभा हुई ७ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा औरों ने शास्त्र सभा में सम्मिलित होने तथा आतिशबाज़ी अश्लील गान तथा कन्या विक्रय बन्द करने के वचन दिये। कई परिषद्के सभासद हुये। शीला पर्वत सलेहासे ३ मील फासले पर है इसमें तीन सुन्दर गुफायें हैं जिन में प्राचीन काल की प्रतिमायें हैं। पर्वतके निकट एक तालाब है एक गुफा १ पत्थर से बनी है जो ८ हाथ लम्बा ४ हाथ चौड़ा है।

(प्रतिबिम्ब परिचय)

१ गुफा-१ पद्मासन वीरनाथ की इन्द्रसहित ऊंचाई १॥ फुट
" २ आदिनाथ की खड्गासन " १।॥ फुट
" ३ वीरनाथ की पद्मासन " पौन "
" ४ बड़ी वीरनाथ की इन्द्रसहित " ३॥ "
" ५ पारसनाथ की खड्गासन " ३ "
२ गुफा-१ वीरनाथ का पद्मासन इन्द्रसहित" ३॥ "
" २ पारसनाथ की पद्मासन " १ "
" ३ आदिनाथ की " " १ "
" ४ वीरनाथ की " " १ "
" ५ वीरनाथ की " " १ "
" ६ पारसनाथ की " " १ "
" ७ शान्तिनाथ की " " १ "
३ गुफा १ वीरनाथ की (फन, सिंह चिन्ह) खड्गासन ऊंचाई ३ फुट
" २ वीरनाथ की (फन, सिंह चिन्ह) खड्गासन ऊंचाई ३ फुट
" ३ पारसनाथ की खड्गासन इन्द्रसहित ऊंचाई ३ फुट

पहाड़ से उत्तर दिशामें नीचे अतिप्राचीन अजैन वैष्णव मन्दिर है जिसे चौमुखनाथ का मन्दिर कहते हैं, उसमें १ मूर्ति शङ्कर (रुद्र) की चारमुखवाली है उसी मन्दिर से दो फर्लाङ्ग की दूरी पर १ टीला है जिस में ३ प्रति खण्डित पड़ी हैं, वहां अनुमान से पहिले मन्दिर रहा है। तीर्थ क्षेत्र कमेटी को इस क्षेत्र पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। यह टीला पहाड़क्षेत्र रियासत अजयगढ़ में है और नागोद से इक्के की सवारी में जाना होता है। हमारे भाइयों को इस क्षेत्र का अवश्य दर्शन करना चाहिये। इस क्षेत्र में एक धर्मशाला है गुफाओं की मरम्मत व पहाड़ पर सीढ़ियों की परम आवश्यकता है।

साहित्य-समालोचना

नीतिवाक्यमाला—अनुवादक पं० नन्दनलाल जैन वैद्य। प्रकाशक श्री दिगम्बर जैन पुस्तकालय सूरत। पृष्ठ २०५ मूल्य १) ।

अंग्रेजी मूल से गुजराती में रूपान्तरित हो यह सुभाषित संग्रह हिन्दी में अनुवादित हुआ है। इसमें पश्चिम के विद्वानों और महापुरुषों के उपदेश वाक्य समाश्रित हैं जो सदाचार प्रचार में महत्वशाली हैं। पाठकों को पढ़ना चाहिये।

श्रावकाचार— प्रथम भाग—श्रीगुण भूषण स्वामी द्वारा विरचित का उक्त पंडित जी द्वारा अनुवाद। प्रकाशक श्री दि० जैन पुस्तकालय, सूरत। पृष्ठ १५५ मूल्य ॥)।

इसमें श्रावकोंके लिये निर्दिष्ट आचार का अच्छा वर्णन है। इसका मूल संस्कृत में है जो पुस्तक के साथ नहीं है। इससे यह नहीं जाना जा सका कि मूल का अनुसरण कहां तक किया गया है? साधारणतः यह एक स्वतन्त्र रचनासी ही प्रतीत होती है। जैन शास्त्रों के प्रकाशन में एक निर्णीत परिपाटी का निश्चय हो जाना वाञ्छनीय है जिससे प्रत्येक ग्रन्थ मूल और उसके अन्वयार्थ, अर्थ तथा विशेषार्थ सहित ही प्रकट हो। प्रकाशकों को ध्यान देना चाहिये। यह दोनों पुस्तकें "दिगंबर जैन" के उपहार ग्रंथ हैं।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	वीर स्तवन-पंचक-(कविता) ...	३४१	५	सम्पादकीय टिप्पणियां	३६१
२	श्री कुन्दकुन्दाचार्य	३४२	६	संसार दिग्दर्शन	३६३
३	भंवर में नैया-(कविता) ...	३५१	७	परिषद् समाचार	३६५
४	दिगम्बर जैन समाज में अनैक्य क्यों ?	३५२	८	साहित्य समालोचना	३६८

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांदी के फूल भाव १।) तोला — सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व बेसी जितने तौल चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*गंधकुटी(?)	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ५०००)	इन्द्र रथ	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चमर छत्र	७) से २५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से ३००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से ५०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े की साज	२०० से ९००)	*वेदी	४५) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००)
*कलश	५००) से १००)	समोसरन	१००) से ३०००)	* × भामण्डल	३०) से १००)
*मौड़ा	५०) से ७५)				
*स्वर्ण चुंडी	३०) से ५०)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका मांडला	१००) से ५००)	*कलशा	१०) से ५००)
जैन मन्दिर के उपकरण ।				तख्त चांदी के	२००) से १०००)
गंधकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीपकी रचनाका मांडला	५००) से २०००)	बारहदरी	२५००) से ४०००)
वेदी	८००) से ५०००)			*पूजन के बरतन	३००) से ५००)

यह काम वाजिब भाड़ा लेकर बना देते हैं मन्दिरों के काम में २) सैकड़ा का आढ़त लेते हैं। मजदूरी कारीगरों की बकाया काम का।।तोला और सादे काम का। तोला देते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं । * ये सिर्फ ताबे की बनाकर मान का मुलम्मा होता है ।

पता—(१) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी ।

Tel Address—"Singhai" Benares

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शाहजादा प्रिंस-ऑफ-वेल्स की सिफारिश से डॉ० लोमडेन साहब ने महारानी मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत आजाती है मुंह पर रंगत लाता मुंह से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज दाग पांव का फटना बगल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ कर चमड़े को नरम कर देती है। यह फूलों से बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदन से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) बयाना ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)।

पता:—मुहम्मद शफीक, एजेंट को आगरा ।

वीर का विशेषांक

श्री वीर जयन्ती के उपलक्ष्य में यह अङ्क प्रकाशित किया गया है। जो कि सब प्रकार सुन्दर व अवलोकनीय है इसमें रंगीन व सादे मिलाकर १० चित्र हैं। महात्मा गान्धी जी का तिरंगा चित्र विशेष दर्शनीय है। इस अंक में समाज के धुरन्धर लेखकों के सुन्दर व अत्यन्त उपयोगी लेख व कवितायें एकत्रित हैं। कतिपय लेखकों के नाम इस प्रकार है:—

श्री० चम्पतराय जी बैरिस्टर, बा० ऋषभदास जी B. A., श्री० हीरालाल जी M. A. L. L. B. श्रीयुत 'नवरत्न', श्री० आर० आर० खोपड़े वकील, श्रीयुत पूर्णचन्द्र नाहर M. A. R. S., श्रीमती मगनबाई जी, श्री० चन्दाबाईजी आदि। इसके अतिरिक्त विदेशों के प्रख्यात विद्वानों के कुछ लेख जो कि बड़े परिश्रम से प्राप्त किये गये हैं अंग्रेजी भाषा में भी हैं जैसे श्री० प्रोफेसर डा० हरमन जैकोबी (जरमनी) श्री० हर्बर्ट वारन (लण्डन) श्री० एच० वारनर आदि। अङ्क विशेष दर्शनीय है।

—प्रकाशक

इस वर्ष "वीर" के ग्राहकों को उपहार में

'महावीर भगवान और उनका उपदेश'

बिलकुल मुफ्त मिलेगा।

इस पचास पृष्ठों की सुन्दर पुस्तक में श्री वीर भगवान की जीवनी और उनके उपदेश के साथ साथ जैनधर्म की अतीव प्राचीनता, उत्कृष्टता और सर्वोपयोगिता को न केवल जैन ग्रन्थों के प्रामाणिक लेखों वरन् संसार के बड़े २ अजैन विद्वानों की साक्षी द्वारा सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध किया गया है। यह पुस्तक बड़ी उपयोगी और बहुमूल्य साबित होगी। इस उपहार के दातार श्रीमान् लाला शिवचरणलाल जी रईस जसवंतनगर के पूज्य पिताजी का सुन्दर चित्र भी इस पुस्तक के शुरू में अङ्कित है।

शीघ्र ही ग्राहकश्रेणी में नाम लिखाकर यह उपहार और 'वीर' का विशेषांक प्राप्त कर लेना चाहिये। अन्यथा पुस्तकें न रहने पर पछताना पड़ेगा।

प्रकाशक—"वीर" बिजनौर (यू० पी०)

आवश्यक सूचना।

पत्र व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये। इस से पत्र का उत्तर देने में सुभीता रहता है।

—प्रकाशक।

बाल रक्षा सप्तरत्न बक्स

बहुधा देखने सुनने में आता है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक रोग मसान, पसली श्वास, खांसी, लहुक, दस्त, सुकिया, ज्वर, नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फंसकर मरजाते हैं और ठग लोग उन के माता पिता को भूतादिक की बाधा झपटा नजर बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता। हमने इसके लिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शान्त होते हैं। जो ४० वर्ष से धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें मू० १।) डा० ख०।=) कुल १।=)

मिलने का पता—ज्योतिष रत्नभवन फर्रुखनगर (पञ्जाब)

लूट "दिल्ली में लूट" लीजिये

ये रुपये कमाने के विज्ञापन हैं।

मुफ्त "नवरत्न" मुफ्त

राम निशिपत्र, परोपकार महिमा, धर्म परिचय, अनाथरक्षा उचित सेवा, रतनज्योति, नेत्र महौषधि, समयाष्टक और यन्त्रशिक्षा मुफ्त खर्च के लिये ≈) का टिकट अवश्य भेजें।

पता—रतनालय अरब सराय न० ४ देहली।

क्या इस मूल्य में ये घड़ियां और ऐसा इनाम मिलते सुना है—

अल्प मूल्य आला मशीन।

मुफ्त "अव्वल घड़ियां" पर भी "डबल इनाम" मुफ्त

वो ३) रास्कोप ४) रेलवे ५) पेटेन्ट ६) जर्मनी ७) अमरीकन ८) साप्ताहिक ९) सर्विस १०) रिस्ट घुड़दौड़ ५।) मैंडेला ६।) चान्दी ७॥) वेस्ट ८॥) मोहन यन्त्र ९॥) घंटाघर १०।) प्रत्येक कारव्यांन, सैकिण्ड कांटा या बिजली शक्ति का ९) प्रति रुपया अधिक सब एक साथ लेने से क्लाक और दर्जन पर १ इनाम मे मुफ्त। खर्च अलग।

पता—व्रजराज वाच को० जङ्गपुरा देहली नं० ४।

मुफ्त 'रतन ज्योति' युक्त नेत्र महौषधि मुफ्त

मूल्य धर्मार्थ लगभग १० तोले औषधि का २) अनाथ निर्धनों को मुफ्त निराश रोगियों को रोग गये पीछे दूना मूल्य धर्मार्थ देने की प्रतिज्ञा पर धनी मुफ्त मंगाने वालों को ईश्वर सफर खर्च डाक के लगभग ।।।=) सब से लिये जायँगे।

पता—व्रज सेवाकाश्रम भोगल नं० ४ देहली।

"वीर" के नियम।

१-यह पत्र पाक्षिक है और प्रत्येक अंग्रेज़ी मास की १ ली व १५ वीं तारीख़ को प्रकाशित होता है।

२-वार्षिक मूल्य उपहार तथा विशेषांक सहित २॥) है।

३-वीर के चन्दे का वर्ष दीपमालिका (कार्तिक मास) अथवा महावीर जयन्ती (चैत्र मास) से शुरू होता है। दरमियान में बनने वाले ग्राहकों को पिछले प्रकाशित अङ्क जब से वह ग्राहक बनना चाहें वी० पी० का रुपया आने पर फ़ौरन भेज दिये जाते हैं।

४-इस पत्र में मुख्यतया धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्य सम्बन्धी विविध विषयों के लेख प्रकाशित होंगे। परस्पर विद्वेषोत्पादक लेखों को स्थान नहीं दिया जायगा।

५-किसी लेख के प्रकाश करने न करने तथा घटाने बढ़ाने का अधिकार सम्पादक को होगा। यदि लेखक चाहेंगे तो उनके अप्रकाशनीय लेख पोस्टेज मिलने पर वापिस कर दिये जायेंगे।

६-लेख और परिवर्तन के पत्र निम्न पते पर आने चाहियें:-

श्रीयुत् कामताप्रसाद जैन, उपसम्पादक 'वीर' जसवन्तनगर (इटावा)

७-पत्र का मूल्य तथा विज्ञापन और प्रबन्धकार्यसम्बन्धी पत्रव्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए-

श्रीयुत् राजेन्द्रकुमार जैन, प्रकाशक "वीर", बिजनौर (यू० पी०)

परिषद् सम्बन्धी पत्र व्यवहार इस पतेपर करें:—

श्रीयुत् रतनलाल जैन मन्त्री-(भा० दि० जैन परिषद्) बिजनौर।

ज़ियाबतीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज।

हारवर्ड यूनिवर्सिटी, अमरीका, के योग्य वैद्य ज़ियाबतीस जोस्लिन (Joslin) और एलन (Allen) साहबान के तरीक़े-इलाज जिस को तमाम विज्ञान जगत में प्रमाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुताबिक़ डा० बख्तावर सिंह जैन एम० डी (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मरीज़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१—मुझे इस तरीक़े-इलाज से कतई आराम होगया है। मैंने महाराज साहब श्री नैपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उससे इस तरीक़े के इलाज से बिल्कुल आराम हो गया है।

द० कर्नल विजय शमशेर जङ्ग बहादुर—Foreign Minister, Nepal देहली।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर-प्रमेह-रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकूर हूं।

शीतलप्रसाद राज वैद्य, चाँदनी चौक देहली।

३—५ साल से मुझे शकर-प्रमेह-रोग ने तङ्ग कर डाला था, लेकिन आपके तरीके इलाज से बिल्कुल ठीक होगया हूं।

जानकीप्रसाद जैन, मैनेजर फ्लोर मिल्स मेरठ।

४—मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफ़ीद साबित हुआ।

मित्रसेन जैन रईस कांधला।

सावधान! नई खुशखबरी!! सावधान!!!

चांदी के कारीगरों ने मंदी के कारण मजदूरी घटादी

॥) भरी मजदूरी नक्काशीदार फैंशी काम जैसे वेदी, पालकी, सिंहासन, चंवर, छत्र आदि

)॥। भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वगैरह २

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिर जी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर, सिंहासन, वेदी, पालकी, अष्टमंगलद्रव्य, अष्टप्रातीहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर कलश, कलशी अरहंतजी का सामान जैसे चंदोवा, परदा, अछाड़, बन्दनवार इत्यादिक।

सीताराम लहरीप्रसाद
मालिक—'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी

हमारे अन्य कार्य।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां साफे दुपट्टे, किनखाब पोत के थान, ईसकाफ, काशी सिल्क के थान, दुपट्टे, साफे, दावनी, धोटा, पट्टा, पुरबी साड़ी, टकुवा वगैरह।

जातिसेवक—
सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस

Gold and Silver Medalist

GUARD YOUR PROPERTY AND BUY ALIGARH LOCKS.

MANUFACTURED BY

The Jain Lock Factory Aligarh, U. P.

Satirfaction Guaranteed best and cheepest, For price-list apply to:—

Tbt Proprietor,

The Jain Lock Factory, Aligarh City, U. P.

NOte—Agents wanted every where.

अपने धन सम्पत्ति और माल की रक्षा के लिये—

जैन लाक फ़ैक्ट्री अलीगढ़

के बने हुए ताले खरीदो

सस्ते और मजबूत होने की गारएटी देते हैं। प्राइज़लिस्ट नीचे लिखे पते से मुफ्त मंगाइये।

रोशनलाल जैन प्रोपाइटर, जैन लाक फैक्टरी, अलीगढ़ सिटी यू०पी०

नोट—हर एक जगह एजेंटों की जरूरत है।

Regd. No. A. 1271.

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाक्षिकपत्रः

हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। काग़ज़, छपाई, सफ़ाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को
बिल्कुल मुफ़्त

'महावीर भगवान'

और उनका उपदेश

इस पुस्तक में वीर भगवान की जीवनी व उनका दिव्य उपदेश बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीन के बाद लिखा गया है। संसार के अन्यान्य विद्वानों की साक्षी के अतिरिक्त प्राचीन जैन अजैन ग्रन्थों व शिला लेखों के ठोस प्रमाण दिये गये हैं। इण्डियन प्रेस प्रयाग के छपे हुए ५० पृष्ठों के अतिरिक्त आरम्भ में एक सुन्दर चित्र भी दिया गया है।

इस वर्ष भी महावीर जयन्ती के
उपलक्ष में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरताके साथ निकाला गया है। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषयों से सुसज्जित किया गया है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रखता है।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा देना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक-राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

श्रोप्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा

वर्ष २] १५ मई सन् १९२५ [संख्या १४

श्री वर्द्धमानाय नमः

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

ऑन० सम्पादकः—
जै० ध० भू०, ध० दि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादकः—
श्रीयुत् कामताप्रसाद जी

हर्ष ! हर्ष !! हर्ष !!!

वीर के ग्राहकों को इस वर्ष दो उपहार

इस वर्ष के ग्राहकों को उपहार में सुन्दर और उपयोगी पुस्तक "महावीर भगवान और उनका उपदेश" बिना मूल्य भेजी जारही है। जिनके पास २० ता० तक यह उपहार न पहुंचे उनको शीघ्र "वीर" कार्य्यालय बिजनौर को अपना ग्राहक नं० व पता लिखकर प्राप्त कर लेनी चाहिये।

मुफ्त ! **दूसरा उपहार** मुफ्त !!

अंग्रेजी जानकार पाठकों को हमारे 'प्रथम वर्ष उपहार' के दाता अपूर्व सहायक "श्रीमान चम्पतराय जी जैन बैरिष्टर, हरदोई" ने अपनी प्रख्यात व अमूल्य रचना PRACTICAL PATH की कुछ प्रतियां वीर के उपहार में फ्री देने का वचन दिया है। अतः शीघ्र ही अंग्रेजी पढ़े ग्राहकों को ।=) के टिकट और अपना पता व नं० स्पष्ट अंग्रेजी में बैरिष्टर साहब को लिखकर यह अमूल्य उपहार प्राप्त कर लेना चाहिये।

—प्रकाशक

ऑन० प्रकाशक—
राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०)

सावधान ! नई खुशखबरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मंदी के कारण मजदूरी घटादी

=)| भरी मजदूरी नकाशीदार फैंशी काम जैसे वेदी, नालकी, सिंहासन चंवर, छत्र आदि

)||| भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वगैरह २

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिर जी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर, सिंहासन, वेदी, नालकी, अष्टमंगलद्रव्य, अष्टप्रातीहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर कलश, कलशी जरदोजी का सामान जैसे नरोवा, परदा, अछार, वन्दनवार इत्यादिक।

सीताराम लहरीप्रसाद

मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी

हमारे अन्य कार्य।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां साफे दुपट्टे, किनखाब पोत के थान, ईसकाफ, काशी सिल्क के थान, दुपट्टे, साफे, दाघनी, गोटा, पट्टा, पुरबी साड़ी, टकुवा वगैरह।

जातिसेवक—

सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस

जियाबतीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज।

हारवर्ड यूनिवर्सिटी, अमरीका, के योग्य वैद्य जियाबतीस ओगिलन और एलन साहबान के तरीके-इलाज जिस को तमाम विज्ञान जगत् में प्रमाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुताबिक डा० बख्तावर सिंह जैन एम० डी (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मरीज़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१—मुझे इस तरीके इलाज से कतई आराम हो गया है। मैंने महाराज साहब श्री नैपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिलकुल आराम होगया है।

—द० कर्नल विजय शमशेर जङ्गबहादुर:-Foreign Miniter, Nepals देहली।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर प्रमेह रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकूर हूं।

—शीतल प्रसाद राजवैद्य, चाँदनी चौक देहली।

३—४ साल से मुझे शकर प्रमेह-रोग ने तङ्ग कर डाला था, लेकिन आप के तरीके इलाज से बिल्कुल ठीक होगया हूं।

—जानकीप्रसाद

मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफ़ीद साबित हुआ।

—मित्रसेन जैन रईस, कांदला।

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ | बिजनौर, ज्येष्ठ कृष्णा ८ वीर सम्वत् २४५१ | अङ्क १४
१५ मई, सन १९२५

* विनय *

दयानिधि ! कैसे हो आह्वान ।
हैं पददलित, प्रभाविहीन, विस्मृत निजात्म सम्मान ॥
आत्मशक्ति वंचित, अघसंचित, सद्गुण अन्तर्ध्यान ।
लक्ष्यभ्रष्ट, सद्बुद्धि नष्ट, कर्तव्य ज्ञान अवसान ॥
बुझे हुए आशा प्रदीप, दृढ़ता का पतित निशान ।
बिछुड़े बन्धु, सहायक छूटे, साहस हुआ पयान ॥
व्यथित, प्रज्वलित, हृदय हाय दुष्प्राप्य शांति रसपान ।
किंकर्तव्य विमूढ़ धैर्य का टूट गया सोपान ॥
आओ सत्वर नाथ ! करो अब सम्यगनुष्ठान ।
पतित विलोक प्रभो ! पुन हियको दो नवजीवन दान ॥

"वसन्त"

जैन लॉ

(लेखक-श्रीयुत चम्पतराय जी जैन बार-एट-ला)

(क्रमागत)

"द्रव्य का अधिकार"

"पिता का अधिकार" (मुन्तकिलो की मनाही)

सर्व रत्न धन धान्य जाति का स्वामी मुख्य पिता है उसी की कृपा से संपूर्ण कुटुम्ब जंगम द्रव्य द्वारा वस्त्राभूषण इत्यादि धारण कर सुख भोगता है परन्तु सम्पूर्ण स्थावर धन का स्वामी पिता या पितामह या उनकी स्त्री कोई नहीं हो सका क्यों कि वह स्थावर वह किसी को दे देने का अधिकारी नहीं। (१)

जो बाप का बाप जीता होवे तो पिता को स्थावर वस्तु दे देने का अधिकार नहीं। इसी प्रकार पितामह की मृत्यु पश्चात् पुत्र उत्पन्न होय तो उस स्थावर वस्तु को पिता दूसरे को दे नहीं सका, भावार्थ नहीं बेच सका (२)।

बाबा के द्रव्य में से यदि वह (सपुत्र) भाणजे आदिकों को कुछ देना चाहे तो उसका पुत्र निषेध कर सका है (३)।

और जो कि पिता ने पुत्र के जन्मसे प्रथम भी स्थावर या जंगम द्रव्य स्वयं उपार्जन करा हो उस को भी वह पुत्रों के अतिरिक्त न किसी को देसक्ता है और न अन्य प्रकार प्रथक् कर सक्ता या बेच सक्ता है। (४)

जो पुत्र जात या अजात या बाल या गर्भ स्थित है अज्ञानी विधुन भी है परन्तु वह सम्पूर्ण कुटुम्बी वर्ग अपनी वृत्ति चाहते हैं तथा यात्रा धर्म कृत्य मित्र जन के वास्ते भी जंगम धन खर्च करना योग्य है परन्तु स्थावर विक्रय न करे। (५)

"बिक्री की आज्ञा"

यदि कोई पिता या पितामह स्थावर वस्तु को विक्रय या दान किसी आपत्ति काल में करे तब माता पिता ज्येष्ठ भ्राता और अन्य कुटुम्बी जो दायाद हों उनकी सम्मतिसे करे। क्योंकि स्थावर के स्वामी सम्पूर्ण दायाद हैं चाहे वह विभक्त हे या अविभक्त, उसके विक्रय करने का एक को अधिकार नहीं है (६)।

पुत्र समर्थ हो और खाने कमाने आनन्द पूर्वक स्वतन्त्र होवे। उन के माता पिता आवश्यक्ता के समय अपनी स्थावर वस्तु को बेचते और दान करते हुये रुक नहीं सक्ते (७)।

(व्यक्ति) सुत की आज्ञा के बिना ही विभाग की हुई अथवा अविभक्त द्रव्य का

१ देखो इ० नि० सं० ४, श्रा० नी० ६

(२) ,, श्रा० नी० ७

(३) ,, भ० व० ६१

(४) ,, इ० नि०सं०६, श्रा० नी० ८

(५) ,, ,, ७

(६) ,, ,, ८

(७) ,, श्रा० नी० ११

स्य । निशादि स त्वस्था आदि व आदिकों में यथो-
चित कर सक्ता है। (७ अ०)

"पितामह के द्रव्य में पिता और पोतों का साधारण अधिकार"

जो द्रव्य पितामहका कमाया हुआ है वह चाहे मकान हो चाहे खेत हो उस पर पिता पुत्र दोनों का साधारण अधिकार होगा (८)।

यदि पितामह की मृत्यु होजावे तथापि स्थावर धनको कोई नहीं लेसका (मुन्तकिल नहीं होसकती) क्यों कि उससे कुटुम्ब का भरण पोषण सम्भव है और इसी से साधारण धन वस्त्र इत्यादि में यथा योग्य भाग उचित है। (८ अ०)

"पुत्र का अधिकार"

ज्येष्ठ भाई पिता का सब धन स्वाधीन करे और शेष छोटे भाई पिता समान समझ उस की अनुकूल चलते रहें।

सम्पूर्ण द्रव्य का अधिकार व्यवहार करने मे पुत्र को है खर्च करने मे नहीं। यदि किसी कारण वश बिलकुल खर्च पुत्र के पास न रहा होवे अर्थात् खाली हाथ होय तो माता की आज्ञा से खर्च करने का भी अधिकार है। (१०)

माता पिता के जीवते मौरूसी कोई प्रकार के स्थावर जङ्गम धन को बेचदेने व गिरवी रखी कर देने का अधिकारी नहीं। (११)

(७ अ) देखो भ० सं० ६०
(८) ,, आ० नी० ६७
(८ अ) ,, इ० नि० गां ४५
(९) ,, आ० नी० २५
(१०) ,, भ० सं० ६२
(११) ,, व० ना ४७ आ०नी० ८४ ,भ० नी० १५

भाइयोंमें से बड़ा भाई पुत्र रहित हो तो अपने पिता पितामहके स्थावर धनको वा उस में से कुछ निज छोटे भ्राताओं की सम्मति बिना यदि सुपुत्र हैं तो पुत्र की भी सम्मति बिना किसी को नहीं दे-सकता। उनकी सम्मति लेकर देवे तो किसी प्रकार कलह न होय। (१२)

पुत्रकी सम्मति बिना पिता कुछ नहीं देसकता और पिता के मरने पर पुत्र देता हुआ किससे रुक सकता है। (१३)

बिना विभाग की हुई अवस्था में, सब भाईयों का एकसा व्यवहार माना गया है यदि एक भाई अलग हो जाय तो फिर उस समय सबका विभाग अलग अलग हो जायगा (१३ अ)।

जो पुत्र उत्पन्न नहीं हुआहै तथा उत्पन्न होकर भी अज्ञान अवस्था में है और जो उत्पन्न होकर मर गया है व सब अपनी अपनी जीविका के लिए उस धन के उत्तराधिकारी हैं मराहुआ लड़का उत्तराधिकारी है इसका अभिप्राय उसकी स्त्री व व पुत्र से है। (१३)

"कव पुत्र अधिकारी नहीं"

धर्म को छोड़कर द्यूतादि व्यसनों में यदि सम्पूर्ण भाई आसक्त होजावें तो उनको धन नहीं मिल सकता प्रत्युत दण्ड करने के योग्य हैं। (१४)

जो पुत्र सप्त कुव्यसनासक्त, विषयी, कुष्टी अन्य असाध्य रोग ग्रसित गुरु माता पिता से

(१२) देखो ,, ४३-५१ ,, ६६
(१३) ,, भ० सं० ६२
(१३ अ) ,, आ० नी० १११
(१३ व) ,, ,, १०
(१४) ,, ,, १२१-' भ०सं० १०८

विमुख उनकी आज्ञा से पराङ्मुख हो वह पिता के धनका अधिकारी कदापि न होगा। उस समय पिता के धन का अधिकारी ज्येष्ठ पुत्र होगा और उनको पितातुल्य कुटुम्ब का पालन करना चाहिये। (१५)

"ज्येष्ठ भाई और छोटे भाईयों के कर्तव्य"

ज्येष्ठ भाई को चाहिये कि अपने अविभक्त अर्थात् एकत्र रहने वाले (या जुदे हुये) भाइयों की पिता तुल्य पालना करें और उन भाइयों को भी उचित है कि ज्येष्ठ भाई को सदैव पिता समान (१६) जानें।

"माता का अधिकार"

विधवा स्त्री पतिव्रता व कुटुम्ब पालने लायक है तो पुत्र जब तक समर्थ न हो एवं पुत्र के अभाव में पति के सम्पूर्ण धन की स्वामिनी होगी। (१७)

माताको द्रव्य की यत्नपूर्वक रक्षा करनी उचित है और उसका ऐसा प्रबन्ध करे कि द्रव्य के ब्याज भाड़े में स्वामी के कुटुम्ब का पालन होता रहे (१८)।

पति भ्रष्ट हो जाय, मर जाय, बावला हो जावे दीक्षा लेकर त्यागी हो जाय उसके स्थावर जंगम सर्व प्रकार के धन की स्वामिनी उसकी स्त्री होगी (१९)।

अपने निर्वाह तथा धर्म कार्य दान कार्यों (Commercial purposes) के लिये विधवा स्त्री को विनयवान आज्ञाकारी औरस अथवा दत्तक पुत्र होते हुये भी पति का जंगम तथा स्थावर धन दान करने अथवा गिरवी या बेचने का अधिकार (२०) है।

"कुशीला और सुशीला का विधान"

जो स्त्रियां सुशीला हों जिनका आचरण अच्छा हो और जिनके कोई सन्तान न हो ऐसी स्त्रियोंका पालन पोषण करना चाहिये। और जो स्त्रियां व्यभिचारिणी हैं बुरे स्वभाव वाली अथवा प्रतिकूल हैं उन्हें निकाल देना (२१) चाहिये।

अपनी कुलाम्नाय के प्रतिकूल चलने वाली कुशीला पति के घर से पृथक् रहने वाली विधवा स्त्री के ज्येष्ठ देवर तथा पुत्र उसके भोजन वस्त्र का प्रबन्ध करके सर्व प्रकार का अधिकार उसका घर से उठा देवेंगे। (२२)

"उन्मत्त का विधान"

भूतादिक बाधा के कारण उक्त स्त्री विधवा, बावली, बौरी असाध्य रोग वाली हो वायु विकार से गूंगी अन्धी, स्पष्ट न बोलने वाली, मत्त वाली, स्मरणशक्ति रहित, अपने कुटुम्ब धन तथा शरीर की भी रक्षा न कर सके, उसके धनकी और उसकी क्रम पूर्वक भतीजों, देवर, सात पीढ़ी तक के वंशियों तथा चौदह पीढ़ी तक के वंशियों या दूरस्थ संबंधियोंको यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिये यदि इन सब का अभाव हो तो निकट निवासी रक्षा (२३) करें।

—(क्रमशः)

(१५) देखो इ० जि० सं० १२-१४ आनी० ८६-८०
(१६) „ भ० सं० १० आ० नी० २०
(१७) „ व० नी० १४. „ ५५
(१८) „ आ० नी० ५१
(१९) „ „ ५३
(२०) „ व० नी० २४
(२१) „ आ० नी० ७७
(२२) „ „ ७६
(२३) „ „ ७८-८०

साहित्य-सुमन-सञ्चय

"जैन दर्शन"

मथुरा में आर्यसमाजियों के गत शताब्दी महोत्सव पर उनकी ओर से जो सार्वधर्मपरिषद् हुआ था, उसमें जैनदर्शन पर भी निबन्ध मंगवाया गया था। तदनुसार शिवपुरी के श्वेताम्बराचार्य श्री विजयेन्द्र सूरिजी ने एक उपयोगी निबन्ध लिखकर किसी एक विद्वान् के द्वारा वहां उपस्थित कराया था। निबन्ध की उपयोगिता उसके पाठ से प्रकट हो सकती है। इसलिये तथा कतिपय पाठकों के अनुरोध अनुरूप हम उसे यहां विविधविचारमाला से उधृत करते हैं। मान्य लेखक ने ऊक्त विषय पर आते हुए लिखा था:—

जैनदर्शन—एक स्वतंत्र दर्शन है। इस जैन दर्शन में तत्वज्ञान, साहित्य और इतिहास समृद्ध संपूर्ण और जैनेतर समग्र साहित्य के अभ्यासियों को आकर्षण करे, इतना है। इस संबन्ध में जर्मन विद्वान् डा० जैकोबी कहते हैं कि:-

In conclusion let me assert my conviction that Jainism is an original system, quite distinct and independent from all others and that therefore it is of great importance for the study of Philosophical thought and religious life in ancient India. (lecture read in the congress of the History of religions)

एक समय था कि जब बड़े २ विद्वानों में भी जैनधर्म के विषय में अज्ञान प्रवृत्तमान था। कितने ही जैनधर्म को बौद्धधर्म अथवा ब्राह्मणधर्म की शाखा मानते थे। कितने ही महावीर स्वामी को उसका संस्थापक समझ बैठे थे। और कितने ही ऐसे भी थे जो जैनधर्म को नास्तिक बतलाते थे। आज भी ऐसी मिथ्या धारणाओं के कहनेवाले सर्वथा हो नहीं हैं यह तो नहीं, परन्तु अभ्यास और शोध-खोज के परिणामस्वरूप यह प्रगट है कि बौद्धधर्म के पहले भी जैनधर्म का प्रचार था। और महावीर स्वामी जैनधर्म के प्रचारकरूप ही चुके हैं। पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि पहिले पहिल ब्राह्मणधर्म और बौद्धधर्म पर पड़ी। उससे वे अपने अभ्यास में जैन धर्म को भूलगये। उपरांत महावीर और बुद्ध समकालीन थे। इसलिये दोनों के जीवन तथा उपदेश में किञ्चित् साम्य था। इन कारणोंवश किन्हीं विद्वानों ने बौद्ध और जैन धर्मों के एक ही मान लेने की भूल की थी: परन्तु ज्यों २ अभ्यास की शोध बढ़ती गई, त्यों २ जैनधर्म के सिद्धान्त और इतिहास कुछ और ही प्रकार के और महत्व के प्रमाणित हुए। परिणामतः आज डा० जैकोबी, डा० पेर्टोल्ड, डा० ग्वेरीनकोतो, डा० हेलमाथ वान ग्लेसेनेप्प, डा० हर्टल प्रभृति अनेक विद्वान् जैनतत्त्वज्ञान और उसके साहित्य का अभ्यास तथा प्रकाश यूरोपादि देशों में कररहे हैं। अतएव जैनधर्म सम्बन्धी अजैन विद्वानों में इतनी अज्ञानता होने और तज्जन्य आक्षेप उठाने का कारण मात्र यही प्रकट होता है कि उनमें मूल अभ्यास और संशोधन की त्रुटि एवं कमताई थी।

प्राचीनता—जैन धर्म प्राचीनता का दावा करता है। जगत् के धार्मिक इतिहास पर दृष्टि डालने से प्रगट होता है कि हज़रत मूसा ने यहूदी

धर्म चलाया। कन्फ्यूशियस चीन देश में प्राचीन धर्म सुधारक व प्रवर्तक होचुका, जिसने कन्फ्यूशस धर्म चलाया। म० ईसू ख्रीस्त ने ख्रीस्ती-ईसाई धर्म की प्रवृत्ति की। हजरत मुहम्मद ने इस्लाम धर्म का प्रारंभ किया और म० बुद्ध ने बौद्ध धर्म की नींव डाली। और ज़रथुस्त ने पारसी धर्म प्रचलित किया तो भी इन सब से पहिले आज से २४१' वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने प्राचीन काल से चले आते हुये जैन धर्म का पुनः प्रचारक रूप में प्रचार किया। जैनधर्म की दृष्टि से उपरोलिखित धर्म आधुनिक ही हैं। केवल ब्राह्मण या वैदिक धर्म और जैन धर्म ये दो धर्म ही प्राचीन धर्म गिने जा सकते हैं। अब इन दोनों धर्मों के सम्बन्ध में विचार करना शेष है बौद्धों के धर्म ग्रन्थों पिटक ग्रन्थों महावग्ग और महापरिनिब्बान सूत्र आदि जैन धर्म और महावीर स्वामी के सम्बन्ध में कितनीक यथार्थताओं को बतला रहे हैं। इसके उपरान्त महाभारत, रामायण और आदिपर्व में जैन धर्म सम्बन्धी उल्लेख मिलते हैं। सारांशतः हिन्दूधर्म शास्त्र और पुराण भी जैनधर्म के अस्तित्व का उल्लेख करते हैं। जैनधर्म के आदि तीर्थङ्कर ऋषभदेव का वर्णन श्रीमद्भागवत के पांचवेंस्कन्ध में है। यह ऋषभदेव भरत के पिता हैं कि जिनका नामाङ्कित यह देश भारतवर्ष कहलाता है। भागवत की कथा के अनुसार ऋषभदेव साक्षात् विष्णु के अवतार थे। इससे अगाड़ी देखिये तो वेदों में भी जैन तीर्थङ्करों के नाम आते हैं। यह नाम कोई मनगढ़न्त नहीं हैं। प्रत्युत २४ तीर्थङ्करों के नामों में से ही यह नाम है। इसकी पुष्टि विद्वान इतिहासवेत्ताओं की खोज के परिणाम से भी होती है। इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि वेदों में भी उन तीर्थङ्करों का नामोल्लेख है जिनको जैनी उपास्यदेव मानते हैं। अतएव यह कहना अत्युक्ति पूर्ण नहीं है कि "वेद रचना के काल से पहिले भी जैनधर्म अवश्य विद्यमान था।" Dr. Guerinot कहते हैं:—There can no longer be any doubt that Parsva was a Historical personage. According to Jain Tradition he must have lived a hundred years and died 250 years before Mahavira. His period of activity, therefore corresponds to the 8th. century B. C. The Parents of Mahavira were followers of the religion of Parsva . . . . The age we live in there have appeared 24 prophets of Jainism. They are ordinarily called Tirthankaras. with the 23 rd Parsvanath we enter into the region of History and reality (See Introduction to his essay on Jain Bibliography.)

इन प्रमाणों से सिद्ध है कि जैनधर्म अत्यन्त प्राचीन धर्म है। महावीर स्वामी उस धर्म के अन्तिम तीर्थङ्कर थे और वे बुद्धदेव के समकालीन थे। ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर थे, जिन का जन्म अत्यन्त प्राचीन है।

तत्त्वज्ञान—मुझे निष्पक्षपात रीति से कहना चाहिये कि जैनधर्म का तत्त्वज्ञान-उसका धर्म और नीति मीमांसा, उसका कर्तव्याकर्तव्य शास्त्र और चारित्र विवेचन अतीव उच्चश्रेणी का है। जैनदर्शन में अध्यात्ममोक्ष, आत्मा और परमात्मा, पदार्थ विज्ञान और न्याय विषय का स्पष्ट विवेचन,

और बुद्धिगम्य विवेचन देखने में आता है। जैन तत्वज्ञान इतना विशिष्ट महत्व का और तुलनात्मक दृष्टि से आलोचित है कि मध्यस्थ दृष्टि के वाचक और अभ्यासकर्ता को यह सर्वथा सपूर्ण ही दृष्टिगत होगा। इतना ही नहीं, प्रत्युत यह हृदय में एक प्रकार का आनन्द उत्पन्न करता है। जिन विद्वान् महाशयोंने जैन धर्म का तुलनात्मक रीत्या अभ्यास किया है वे उस की मुक्तकंठ से प्रशंसा किये बिना नहीं रहे हैं।

जगत् क्या वस्तु है ? वह केवल दो तत्व-जड़ और चेतनरूप मालूम पड़ता है-अखण्ड ब्रह्मांड के समग्र पदार्थ इन दो तत्त्वों में आजाते हैं। जिस में चैतन्य नहीं-ज्ञान नहीं, वह जड़ है, और उस के विपरीत चैतन्यस्वरूप आत्मा है वह जीव है। ज्ञानशक्ति आत्मा का मुख्यलक्षण है। चेतना-लक्षणो जीवः जैन तत्वज्ञान इस प्रकार अन्यों से आगाड़ी बढ़ता है कि वह पृथ्वी में, जल में अग्नि में, वायु में और वनस्पति में जीव मानता है। जीवोंके मुख्य त्रस और स्थावर भेद हैं। वर्तमान वैज्ञानिकों की भी मान्यता है कि समस्त लोक सूक्ष्म जीवों से भरा पड़ा है। उस प्रमाण उन्होंने सब से छोटा "थेकसमाग" नाम का प्राणी ढूंढा है जो एक सुई के अग्रभाग पर एकलाख बैठ जांय तो भी भिन्न भिन्न रह सकें। उधर प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता प्रो० जगदीशचन्द्र बोस ने वनस्पति पर प्रयोग करके यह प्रमाणित किया है कि वनस्पति संसार के वृक्षादि को क्रोध लोभ, रीस आदि संज्ञायें होती हैं तथा उनमें जीव होता है। यही बात जैन दर्शन में हजारों वर्ष पहिले ही बता दी गई है, जब यन्त्रादिका साधन भी नहीं था। परन्तु अपने ज्ञान द्वारा तीर्थंकरों ने वैसा बताया था। अब समय आने लगा है कि जब जैन दर्शन के अनेक सिद्धान्त जगत को स्वीकार करने पड़ेंगे। ऐसा अनुमान करने में बहुत से कारण हैं।

जीव और अजीव के उपरान्त पुण्य पाप (शुभ एवं अशुभ कर्म), आश्रव (आश्रीयते कर्म अनेन-आत्मा के साथ कर्मका सम्बन्ध होने का कारण), संवर (आते हुए कर्मों को रोकने की शक्ति), बन्ध (कर्मोंका बन्ध होना), निर्जरा (कर्मों का क्षय) और मोक्ष (मुक्ति) यह सात मिलकर कुल नौ तत्व जैन दर्शन में माने हैं। सम्पूर्ण जैन फिलासफी कर्म पर निर्भर है। आत्मा और कर्म इन दोनों का अनादि संबन्ध है। वास्तविक स्वरूप में आत्मा सच्चिदानन्दमय है। परन्तु कर्मों के आवरणवश उसका मूल स्वरूप आच्छादित है। जैसे २ कर्मों का नाश होता है वैसे २ उसका असली स्वरूप प्रकाशित होता है। और आत्मस्वरूप का साक्षात्कार मोक्ष का अक्षय सुख प्राप्त होता है। जैसे २ कर्म जीव करता है, वैसे २ फल उसे भोगने पड़ते हैं। और जबतक कर्मों का सर्वथा नाश नहीं होय तब तक जन्म मरण करना पड़ते हैं।

मोक्ष का साधन—जैन दर्शन में मोक्ष का साधन सम्यक्दर्शन (Right Belief) सम्यक्ज्ञान (Right knowledge) और सम्यक् चारित्र (Right conduct) का रत्नत्रय माना है। तत्वार्थसूत्र का सब से पहिला सूत्र यही है—सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः। यही मोक्ष का मार्ग है। फिर जैन दर्शन आत्मा को नित्य मानते हैं। कर्मों का क्षय करके अखंडानन्द मोक्ष सुख प्राप्त करने वाली आत्मायें फिर अवतार लेती नहीं। यह

जैन शास्त्र की मान्यता है। जो तीर्थङ्करों के जन्म से यह प्रमाणित होता है कि जब २ जगत में अनाचार और दुःख बढ़ते हैं तब २ महान् आत्मायें अवश्य जन्मती हैं और वे जगत को सन्मार्ग बताती हैं, परन्तु मुक्तात्मा, जिनको संसार में फिर आने का कोई कारण नहीं, वे फिर संसार में जन्म लेतीं नहीं। इस लिये जो महान् पुरुष जन्मते हैं वह मोक्ष में गई आत्मायें नहीं हैं। परन्तु चार गतियों में भ्रमण करनेवाली आत्मायें होती हैं।

श्री गीता जी का कर्मयोग यह जैन परिभाषा में पुरुषार्थ है। जैनदर्शन कर्मवादी होने के लिये नहीं, प्रत्युत आत्मा को किसी की सहायता के जीवनमुक्त (कैवल्य) अवस्था प्राप्त करने के पुरुषार्थ को करने का उपदेश देता है। आत्मा संपूर्ण आत्मज्ञान (कैवल्यज्ञान) के बढ़ने पर जगत के सर्व भावों को जान और देख सकती है और उस के पश्चात् वह मोक्ष पद को पाती है। मुक्त आत्माओं को निर्मल आत्मज्योति में से स्फुरनमान् स्वभाविक जो आनंद है वही आनन्द परमार्थ सुख है। ऐसी आत्माओं के शुद्ध, बुद्ध, सिद्ध, निरंजन, परमब्रह्म आदि नाम शास्त्रों में दिये हैं।

ईश्वर—के सम्बन्ध में जैनशास्त्र एक नवीन दिशा बतलाते हैं। इस विषय में जैनदर्शन प्रत्येक दर्शन से लगभग जुदा खड़ा होता है। यह इस दर्शन की खूबी है। परिक्षीण सकलकर्मा ईश्वरः। जिसके सकल कर्मों का निर्मूल क्षय हुआ है, ऐसी आत्मा परमात्मा बनती है। जो जीव आत्मस्वरूप के विकास के अभ्यास में अगाड़ी बढ़ कर परमात्म स्थिति में पहुंचे हैं, वे ईश्वर हैं। यह जैनशास्त्र का सिद्धान्त है। इस परमात्म स्थिति में पहुंचे सर्व सिद्ध परस्पर एकाकार एक समान गुण और शक्ति वाले होने से समष्टि रूप उन का "एक" शब्द से व्यवहार हो सकता है जैन धर्म का एक अन्य सिद्धान्त पुनः विचारशील विद्वानों का ध्यान आकर्षित करता है। वह है कि ईश्वर जगत् का कर्ता नहीं। वीतराग ईश्वर न तो किसी पर प्रसन्न होता है, न किसी पर नाखुश होता है। कारण है कि उस में रागद्वेष का सर्वथा अभाव है। संसारचक्र से निर्लेप परमकृतार्थ ईश्वर को जगतकर्ता होने को क्या कारण? प्रत्येक प्राणी के सुख दुःख उसकी कर्म सत्ता पर आधार रखते हैं सामान्य बुद्धि से ज्यों दुनियां में वस्तुयें किसी के बनाये बिना उत्पन्न नहीं होतीं त्यों ही जगत भी किसी का बनाया हुआ होना चाहिये, ऐसे कहा जाता है। परन्तु यह ख़्याल मात्र है। क्यों कि सर्वथा राग, द्वेष, इच्छा आदि से रहित परमात्मा ईश्वर को जगत बनाने का कोई भी कारण दीखता नहीं। इस लिये जगत् का ईश्वर कर्ता मानने में अनेक दोष आ सकते हैं। हां, एक रीति से ईश्वर जगत् कर्ता बनाया भी जा सकता हैः—

परमैश्वर्ययुक्तत्वाद् मत आत्मैव वेश्वरः,
स च कर्तेति निर्दोषः कर्तृवादो व्यवस्थितः॥
—हरिभद्र सूरि।

भावार्थ-परमैश्वर्ययुक्त होने से आत्मा ही ईश्वर माना जाता है और उसे कर्ता कहने में बाध नहीं, क्योंकि आत्मा में कर्तृवाद विद्यमान है केवल जैनी ही ईश्वर को जगत्कर्ता मानते नहीं यह बात नही है, प्रत्युत वैदिक मतों में अधिकांश ईश्वर को जगतकर्ता नहीं मानते। (देखो वाचस्पति

मिश्र रचित सांख्यतत्वकौमुदी ५७ कारिका)

स्याद्वाद—प्रमाणपूर्वक जैन शास्त्रों में एक सिद्धान्त ऐसा साबित करने में आता है कि जिस के सम्बन्ध में विद्वानों को आश्चर्य हुये बिना नहीं रहता। यह सिद्धान्त 'स्याद्वाद' है। एकस्मिन् वस्तुनि सापेक्षरीत्या विरुद्ध नानाधर्म स्वीकारो हि स्याद्वादः। एक वस्तु में अपेक्षा पूर्वक विरुद्ध जुदा २ धर्मों का स्वीकार करना इसका नाम स्याद्वाद है। जैसे मनुष्य कुछ बोलता है तैसे उसमें उसके सिवाय अन्य विषय सम्बन्धी सत्य अवश्य रहता है। उदाहरण रूप में यह हमारा भाई है, इस प्रकार जब मैं कहता हूं तब वह व्यक्ति मेरा भाई होते हुये भी किसी का पुत्र अवश्य है। तो किसी का काका भी है और मामा भी है। प्रत्येक वस्तु को अपेक्षा से नित्यानित्य रूप मानने से सर्व पदार्थ उत्पाद, विनाश और स्थिति स्वभाव वाले हैं; ऐसा ठहरता है। वस्तु मात्र में सामान्य धर्म और विशेष धर्म होते हैं। सारांशतः एक ही वस्तु में सापेक्षा से अनेक धर्मों की विद्यमानता स्वीकार करना उसी का नाम स्याद्वाद है। जरा विशाल दृष्टि से पैठ करके दर्शनशास्त्र देखा समझ सका है कि प्रत्येक दर्शनकारों को एक अथवा अन्य रीतिसे स्याद्वाद स्वीकार करना पड़ा है। समय के अभाव से मात्र संक्षेप में प्रत्येक विषय का रूप उपस्थित किया जाता है।

जैन साहित्य—अब जरा जैन साहित्य पर भी दृष्टिपात कीजिए। जैनसाहित्य विपुल विस्तीर्ण और समृद्ध है। ऐसा कोई विषय नहीं जिसके अनेक ग्रन्थ जैन साहित्य में न मिलें। इतना ही नहीं परन्तु इन विषयों की चर्चा बड़ी ही उत्तम रीति से उत्तमोत्तम और विद्वत्तापूर्ण दृष्टि से हुई है। जैन दर्शन में प्रधान ४५ शास्त्र हैं, जो सिद्धान्त अथवा आगम कहलाते हैं। ······(यह श्वेताम्बर ग्रन्थ हैं) दिगम्बरियों के अनुसार यथार्थ आगम ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं) प्राचीन समय में शास्त्र लिखने की प्रवृत्ति नहीं थी। शास्त्र शिष्यपरम्परा जिव्हा द्वारा याद रक्खे जाते थे। ज्यों २ समय व्यतीत हुआ, त्यों २ उनको पुस्तकारूढ़ करने की आवश्यका पड़ी। वे महावीर स्वामी के जीवन, कथन और उपदेश के सार हैं। यह संपूर्ण जैन साहित्य द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्म कथानुयोग और चरण करणानुयोग नामक चार विभागों में विस्तृत है। गणित सम्बन्धी चन्द्र प्रज्ञप्ति सूर्य प्रज्ञप्ति और लोक प्रकाशादि ग्रन्थ इतने अपूर्व हैं कि उनमें सूर्य, चन्द्र, तारा मंडल असंख्य द्वीप, स्वर्ग लोकादि का यथार्थ वर्णन मिलता है। हरि सौभाग्य. विजय प्रशस्ति धर्म शर्माभ्युदय, पार्श्वाभ्युदय, काव्य आदि काव्य, सम्मति तर्क. अनेकान्त जयपताका प्रभृति न्याय ग्रन्थ, योग बिन्दु आदि योग ग्रन्थ, ज्ञानसार, अध्यात्म कल्पद्रुम आदि अध्यात्म ग्रन्थ, सिद्ध हेम आदि व्याकरण ग्रन्थ आज भी प्रसिद्ध हैं। प्राकृत साहित्य का उच्च से उच्च साहित्य जैन साहित्य में है। जैन न्याय, जैन तत्त्वज्ञान, जैननीति और अन्यान्य विषयों के गद्य पद्य के अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ जैनसाहित्य में भर पड़े हैं। व्याकरण और कथा साहित्य तो जैन साहित्य में अद्वितीय है। जैन स्तोत्र, स्तुति प्राचीन गुजराती भाषा के रास आदि अनेक दिशाओं में जैन साहित्य विस्तृत है। जैन साहित्य के विषयमें प्रो० जोहन्स हर्टल लिखते हैं कि–They are the

creators of a very extensive popular literature प्राकृत, संस्कृत, गुजराती, हिन्दी और तामिल भाषा में भी जैन साहित्य खूब मिलता है ।...... पिछले २५-३० वर्षों से जैनसाहित्य विशेष प्रचार में आने लगा है। इंगलेन्ड, जर्मनी, फ्रान्स, इटली और चीन में भी जैन साहित्य का खूब प्रचार हो रहा है। आज स्वर्गस्थ जैनाचार्य श्री विजयधर्म सूरि जी के महान् प्रयास से अनेक विद्वान देश विदेश में जैन साहित्य का अभ्यास और प्रचार कर रहे हैं । मेरा दृढ़ विश्वास है कि ज्यों २ जैन साहित्य विशेष प्रमाण में पढ़ा जावेगा और उस का तुलनात्मक अध्ययन होवेगा त्यों २ उसमें से मधुर सुगंधि जगत् के रंगमंडप में फैलेगी, जिस से जगत् में वास्तविक अहिंसाधर्म का प्रचार होगा।

जैन इतिहासकला—जैन और अजैन वि नों का ध्यान जैन इतिहास की ओर अभी उतना आकर्षित नहीं हुआ है जितना होना चाहिये । गुजरात के इतिहास का मूल जैन इतिहासमें है । अनेक प्राचीन स्थानों में जैन इतिहास के स्मरण मिलते हैं । जैन राजा खारवेल की गुफायें, आबूपर्वत की आश्चर्यपूर्ण चित्रकारी, शत्रुंजयके मंदिर जैनों की शिल्पकला की श्रेष्ठताके कुछ नमूने हैं । जैन राजा और मंत्रीभी अनेक हो गुजरे हैं । सम्प्रति श्रेणिक, कुमारपाल आदि राजा तथा वस्तुपाल, तेजपाल भामाशाह आदि मन्त्री आज जैन इतिहास के चमकते रत्न हैं ।

अहिंसा—यह जैनधर्मका जगतको अद्भुत संदेश है। जगत्के सर्व धर्मों में अहिंसा का कुछ न कुछ उल्लेख अवश्य है । परन्तु जैन धर्म ने जो अहिंसा धर्म बनाया है वैसा अन्य धर्मोंमें नहीं है। कतिपय भारतीय विद्वानोंका आक्षेप है कि अहिंसा धर्मने भारतवर्ष की वीरताका नाश करा है। लोगों में इसके कारण शूरवीरता के स्थान पर कायरता और भीरुता आगई है। यह कथन सत्य नहीं है। अहिंसा धर्मपालकों ने युद्ध करे हैं, लड़ाइयां लड़ी हैं और राज्य चलाये है। अहिंसा में जो आत्मशक्ति, जो संयम जो विश्वप्रेम है वह अन्य कहीं नहीं है। अहिंसा सम्बन्ध में उपरोक्त आक्षेप वही लोग करते हैं जिन्होंने जैनदर्शन में प्रतिपादित साधुधर्म और गृहस्थधर्म को नहीं जाना है। इन धर्मों के भेद को समझने वाले कभी भी यह आक्षेप नहीं कर सकते । भारतगौरव लो० तिलक ने अपने व्याख्यान में एक स्थल पर कहा था कि "अहिंसापरमोधर्मः" इस उदार सिद्धान्त ने ब्राह्मणधर्म पर चिरस्मरणीय छाप मारी है। अर्थात् यज्ञ यागादि में पशुहिंसा होती थी वह आजकल नहीं होती-यह जैनधर्म ने एक भारी छाप ब्राह्मणधर्म पर मारी है । घोर हिंसा के पातक का ब्राह्मणधर्म से विदाई करने का श्रेय जैनधर्म को प्राप्त है । नार्वेजियन विद्वान् डा० स्टीनकोनो कहते हैं कि:—

"आज भी अहिंसा की शक्ति पूर्णरूप से जागृत है। जहां कहीं भारतीय विचारों अथवा भारतीय सभ्यता ने प्रवेश किया है वहां सदैव भारत का यही संदेश रहा है। यही संसार के प्रति भारत का गगनभेदी सन्देश है। मुझे आशा है, और मेरा यह विश्वास है कि पितृभूमि भारत के भावी भाग्य में चाहे कुछ हो, परंतु भारतवासियों का यह सिद्धांत सदैव अखण्ड रहेगा।"

उपरोक्त विद्वान् आचार्य ने उपसंहार में जैन

धर्म की विशेषता बतलाते हुए उसे सार्वभौमिक धर्म बतलाया है तथा भावना की है कि इसका प्रचार भी शीघ्र ही सार्वभौम में हो जिस से शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो। हमारी भी यही भावना है। वस्तुतः निबन्ध महत्वशाली है, और इस पर हम मान्य लेखक को धन्यवाद की सुमनाञ्जली समर्पित करते हैं। आवश्यकता है कि आज ऐसे ही सार्वधर्म परिषदों द्वारा जैनधर्म का प्रचार किया जावे। —उ० स०।

अबला-जीवन

(लेखक—श्रीयुत प० गौरी शङ्कर शर्मा)

बन्धुवर, क्यों न दुःख फिर पाएं।
धर्म कर्म का त्याग जहाँ हम, पक्षपात दिखलाएं॥
मरघट के समान बनने तक, बुढ़वा रंग जमाएं।
पैसे के बदले कन्याएं, बधू बना घर लाएं॥ १॥
अपने ही जीने जी कितने, करनी पर पछताएं।
अड्डा सा व्यभिचारी दल का गेह अनेक दिखाएं॥ २॥
यौवनमद में छकीं विचारीं, जब होतीं बेवाएं।
तब कुसंग पा पाकर कितनी, पातक-पुञ्ज कमाएं॥ ३॥
भेद न खुले, सोच कितनी ही विवश तीर्थ को जाएं।
अवसर पर लज्जा रखने हित, करें भ्रूण हत्याएं॥ ४॥
कितनी बहू बेटियां अपना, परदा दूर हटाएं।
गेह पींजड़े से उड़ जातीं, बन बैठें वेश्याएं॥ ५॥

रंग रंगीली छैल छबीली, फैशन अजब बनाएं ।
रूप जाल को बिछा युवकखग उसमें खूब फंसाएं ॥ ६ ॥
यह सब देख नयनों से, नेता नहीं लजाएं ।
हा ! अपनी समाज नैया को, गहरे गर्त डुबाएं ॥ ७ ॥

(परवार बन्धु)

महिलाओं की दशा

प्राचीन भारत में किस प्रकार महिलाओं का सम्मान और प्रतिष्ठा रही है वह विज्ञ पाठकों से छुपी हुई बात नहीं है। उनकी मानमर्यादा और जीवन सुख की ओर पुरुष समाज का पूर्ण ध्यान रहता था। यही कारण था कि उन्हें पूर्ण शिक्षित और ललित-कला-निपुण बनाया जाता था। तिस पर गाहस्थिक जीवन के सुखपूर्ण होने का ख्याल रखकर उन्हें स्वयं प्रौढ़ावस्था में विवाह करने की भी आज्ञा दी जाती थी। वणिक्पुत्री नन्दश्री ने स्वयं ही सम्राट् श्रेणिक के गुणों की परीक्षा करके उनको ही अपना भावी पति हृदय से बना लिया था। परन्तु समय ने पलटा खाया—भारतीयों के दिलों से भारतीयता और मनुष्यता जाती रही! व्यक्तिगत स्वार्थ का भूत उनके माथे पर सवार होगया। वे पापाश्रित हो मनमाने अत्याचार करने लगे। मुसलमानी ज़माने में महिलाओं की रक्षा की आवश्यकता थी। उन्होंने अपने प्रारम्भिक अधिकार भी पुरुषों के हवाले करदिये। उधर मुसलमानी विलासिता और कूटनीति ने पुरुषवर्ग को विलासी और दम्भी बना दिया। परिणाम यह हुआ कि महिलाओं के जीवन संकटापन्न होगये। वे वासनापूर्ति की मशीन ही समझी जाने लगीं। यह दुराचार यहां तक बढ़ा कि अपरिपक्व अवस्था में ही कन्याओं को गृहणी बनाया जाने लगा। अपरिपक्व शरीर को ले वे जीवन-संसार में आ बहुधा काल कवलित होने लगीं। परन्तु पुरुष की पाशविक वृत्ति का अन्त क्यों कर हो! एक के मरते ही दूसरी किशोरी को मोल ले आना आजकल रोजगारों का खेल करतब है। इस स्वाधीनता के बल आज ५०-६० वर्ष के बुड्ढे भी प्राकृतिक विधुर होते हुए भी विधुर नहीं हैं। परन्तु इन नरपिशाचों के पैशाचिक कृत्यों से २-३ वर्ष की अबोध बालिकाओं के जीवन नष्ट किये जाते हैं। जिन कन्याओं का सांसारिक ज्ञान भी पूर्ण न हो, फिर भला वे कन्यायें किस प्रकार वैधव्य के कठोरदंड की भागी होसकती हैं! इस अमानुषिक अत्याचार का दण्ड तो बुड्ढे बाबाओं को मिलना चाहिये। महिलाओं के प्रति किये अत्याचारों का अन्त यहीं नहीं हो जाता। वे विचारी एक सुशील भारतीय रमणी की भांति चुपचाप इस दण्ड को सहन करने के लिये उद्यत होती हैं। परन्तु नरपिशाच यहां भी उनके जीवन-मार्ग के कण्टक बन उन्हें नष्ट भ्रष्ट ही कर डालते हैं। एक हितैषी महाशय ने इस संबन्ध की कतिपय घटनाओं का उल्लेख 'परवारबन्धु' के गतांक में किया है। वह लिखते हैं कि पिछले वर्ष हमारे सागर जिले में तीन चार घटनायें ऐसी हुई हैं जिनको देख सुनकर विधवाओं के संबन्ध में कुछ

न कुछ नई व्यवस्था करने की आवश्यकता प्रतीत हुए बिना नहीं रहती। उन घटनाओं का संक्षेप यह है:—

"१—एक सज्जनने जो पिछले ही वर्ष सिंघई हुए हैं—अपनी सगी विधवा काकीका धर्मभ्रष्ट किया और जब गर्भ रह गया तब उसे जबर्दस्ती मुंह में कपड़े ठूंस कर और गाड़ी पर कसकर कहीं अन्यत्र भेजदिया। एक गरीब जैनी भाई को कुछ रुपयों का लोभ देकर उसके साथ कर दिया। छुट्टी हो गई। काकी की जायदाद के अब एक तरह से सिंघई जी ही अधिकारी हैं।"

"२—एक मोदी जी ने भी-जो पचीसेक हजार के धनी हैं-अपनी काकी को ही नष्ट किया और जब उसके गर्भ रह गया तब उसे ५०) और थोड़ा सा गहना देकर अन्यत्र कहीं भिजवा दिया। साथ ही अपना पाप छुपाने के लिये यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह गर्भ उसके एक देवर का था यद्यपि वह सर्वथा निरपराध है।"

"३—एक बडुकर जी-जिनकी स्त्री मौजूद है-अपनी भौजाई को जिसे विधवा हुए अभी दो ही तीन वर्ष हुए हैं बिगाड़ दिया। अब वह गर्भवती है। पंचायत होने वाली है। वह क्या फैसला देगी सो प्रायः सभी जानते हैं। विधवा सदा के लिये बिरादरी से खारिज करदी जायगी और बडुकर जी मन्दिर जी को कुछ नकद दण्ड देकर और पंच सरदारों का मुंह मीठा कराके फिर बिरादरी में शामिल होजावेंगे। सुना है, पिछले वर्ष एक दिन बडुकर जी का अपनी इसी भौजाई से झगड़ा हो गया था। उसने कहा कि क्या मेरा इस घर में कोई हक नहीं है जो तुम मुझे इस तरह दुःख देते हो? इसके उत्तर में बडुकर जी ने गरज कर कहा था कि तेरा हक क्या है सो मैं बतलाऊंगा। तुझे बिगाड़ कर इस घर से न निकाल दूं तो मेरा नाम ....। इत्यादि।

"४—एक साहु जी ने भी कुछ ही महीने पहिले अपनी विधवा भौजाई को बिगाडा। उसके गर्भ रह गया। गर्भपात करने की दवाई दी गई, परन्तु दुर्भाग्य से बच्चा पेट में ही मर गया। डाक्टर बुलाये गये। आपरेशन हुआ। आखिर बिधवा का प्राण मोक्ष हो गया! अभी अभी इस तरह की इसी जिले की ऐसी घटनाओं का और भी पता लगा है।"

कहिये पाठकगण इस अधमता का भी कहीं ठिकाना है। यह अमानुषिक अत्याचार हमें क्यों नहीं मिट्टी में मिला देंगे? परन्तु यदि कोई इस भयानक दशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करता है, तो उस दशा पर गंभीर विचार करने के स्थान पर उस कहने वाले को ही उल्टा सीधी सुनाई जाती हैं! परन्तु इस बात की परवा न करके समाजहितैषियों को अब इस दशा का बोध प्रत्येक नर नारी को करा देना चाहिये। तथा महिलाओं पर किये जाने वाले अत्याचारों का अन्त शीघ्र ही कर डालना चाहिये। इस ही में हमारा अस्तित्व है। वरन् महिलाओं के अपमानसे अबलाओं की आह से हम नष्ट हो जायंगे। आज दीन अबलाओं का कहीं ठिकाना नहीं है। उनकी प्राचीन महिमा कहीं दिखाई नहीं देती। चहुं ओर उनके लिये विपत्ति के गढ़े खुदे हुये हैं। बिचारी विधवाओं के जीवन तो नष्टता के पंजे में ही फसे हुये हैं। बाहरी गुण्डों बदमाशों के स्थान पर उन

के घर के लोग ही उनके धर्म और धन के दुश्मन बने हुये हैं। ये नर पिशाच उनका धर्म बिगाड़ जीवन नष्ट करते हैं और धन हड़प कर किसी ठौर का नहीं रखते ! इसमें बिचारी विधवाओं का कुछ भी कसूर नहीं है। वह अब भी अपनी महिमा पूर्ववत बनाये रखना चाहती है परन्तु पापी दुराचारी नरपिशाच रखने दें तब ना ! अधिकांश में पुरुषों की जबर्दस्ती से, फुसलाने से अथवा अन्य प्रकार से ही विधवायें पतित होती हैं। इस दशा को मेटने का उपाय यही है कि पुरुष जाति को कठोर दण्ड दिया जाय। जिस भांति स्त्रियों के प्रति कठोरता का व्यवहार किया जाता है, उसी तरह पुरुषों के प्रति भी होना चाहिये। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार अपराधी पुरुष के लिये प्रायश्चित्त की व्यवस्था है उसी प्रकार स्त्रियों के लिये भी उसकी व्यवस्था होनी चाहिये। यह संभव नहीं कि स्त्रियों के लिये प्रायश्चित्त की व्यवस्था हो ही नहीं। तथा पंचायती नियमों को दृढ़ करके वृद्ध विवाहादि वह कारण मेट देना चाहिये, जिससे विधवाओं की सृष्टि होती है। वर कन्या के शिक्षित होने पर प्रौढ़ावस्था में विवाह सम्बन्ध होना चाहिये। विद्वानों, धीमानों और सभाओं को इस ओर गम्भीरता के साथ ध्यान देना अत्यावश्यक है। उपेक्षा करने में जीवन के लाले हैं ! महिमाशाली तीर्थंकर प्रसवनी महिला को सताकर कोई जीवित नहीं रह सकता !

—एक समाजसेवक।

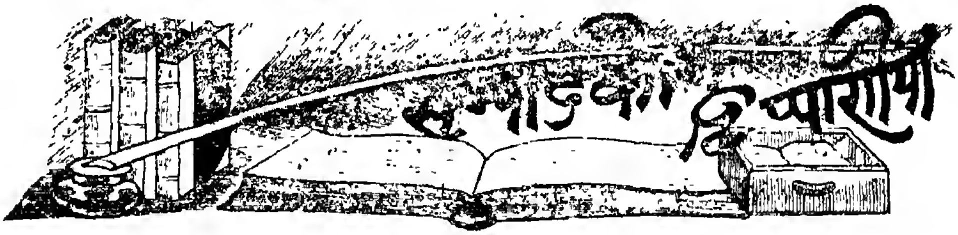

झगड़े की जड़ कहां है ?

इंगलैण्ड के प्रख्यात् विश्वविद्यालय आक्सफर्ड में जो भारतीय विद्यार्थी शिक्षार्थ निवास कर रहे हैं उन्होंने योजना करके भारतीयता के प्रचार हेतु वहां से हाल ही में 'भारत' नामक एक मासिक पत्र प्रकट करना प्रारम्भ किया है। इसके प्रथमांक में एक अंग्रेज विद्वान् ने किसी जाति की उन्नति के हेतु आवश्यक बतलाया है कि:—

"A community can be strong only when the many individuals who compose it have common interests to which they subordinate their personal desires and conveniences and private quarrels when they have a certain measure of trust in each other and their leaders and when maintain their will unweakened inspite of circums tences on the lapse of time."

भाव यह है कि कोई भी जाति तब ही शक्तिशाली हो सकती है जब उसके अनेक व्यक्तियों के उद्देश्य एकसे हों, जिनके समक्ष वह अपनी निजी

इच्छाओं, सुगमताओं और झगड़ों का अन्त करदें तथा उनमें आपस में किसी हद तक और नेताओं में भी विश्वास हो। साथ ही उनका यह विश्वास किसी भी अवस्था अथवा कालान्तर में शिथिल नहीं होना चाहिये। ऐसी अवस्थाओं में ही किसी जाति की उन्नति हो सकती है और वह शक्तिशाली हो सकती है परन्तु भारत के साथ जैनियों में भी इसके विपरीत अवस्था हो रही है। यहां उद्देश्य एक से होते हुए भी उनके समक्ष अपने व्यक्तिगत विचारों, आकांक्षाओं और विद्वेष को विलग नहीं किया जाता है। तिस पर भारतके विषय में अवश्य ही इस ओर कुछ आशान्वित चिन्ह दृष्टिगत होते हैं, परन्तु जैनसमाज में घोर अन्धकार ही चहुंओर दिखाई देता है। यहां प्रत्येक विचार और जाति के उद्देश्य एक ही हैं। सब यही चाहते हैं कि जैनधर्म का प्रचार हो और जैनसमाज की उन्नति हो। हां, यह अवश्य है कि इनकी सिद्धि के उपायों में मत भेद हो। कोई किसी रीति से उनकी सिद्धि समझता हो तो अन्य दूसरी प्रकार! परन्तु वह मतभेद हमारी सिद्धि में बाधक नहीं हो सकता यदि हम उक्त प्रकार अपनी इच्छाओं, सुगमताओं और झगड़ों को उसकी मार्ग का रोड़ा न बनाएं। परस्पर अविश्वास करने और नेताओंके प्रति असद्बुद्धि रखनेसे कभी भी किसी जाति की उन्नति नहीं हो सकती! आज इन निजी बातों को हम सर्वोपरि स्थान दिये हुए हैं। इसी कारण हम में परस्पर झगड़े चल रहे हैं। अविश्वास के कारण कोई भी कार्य जात्युन्नति का नहीं हो रहा है। शेडवाल से उत्पन्न हुए झगड़े को शान्त करने के लिये भी इन्हीं व्यक्तिगत बातों को अगाड़ी रक्खा जारहा है। तीर्थभक्त शिरोमणि ला० देवीसहाय जी ने कतिपय शर्तों को ही सर्व प्रथम स्वीकार करने को जोर दिया है। हम नहीं समझते कि सारे भारत के सर्व विचार और जातियों के मनुष्यों ने किस समय यह अधिकार लाला जी अथवा अन्य किसी व्यक्ति व मण्डली को दिया है कि वह अपनी ओर से ही समग्र भारत के जैनियों की प्रतिनिधिस्वरूप सभा पर एकाधिपत्य स्थापित करलें और अपने व्यक्तिगत मनोभावनाओं को सर्वोपरि स्थान दें? इस प्रकार कभी भी झगड़ा मिट नहीं सकता और शान्ति स्थापित नहीं हो सकती! शांति स्थापित तब ही हो सकती है जब व्यक्तिगत अहत्त्व को त्याग दिया जाय और असत्य एवं असभ्यता के बर्ताव से परहेज किया जाय। इस समय शान्ति स्थापित करने के लिये सर्व प्रकार के, सर्व जातियों के और सर्वविचारों के मनुष्यों प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन होना आवश्यक है तथा उसमें इन सब बातों का स्पष्ट निर्णय हो जाना चाहिये जिनसे परस्पर मनोमालिन्य बढ़ने की सम्भावना हो। झगड़े की जड़ व्यक्तिगत इच्छाओं, सुविधाओं और मनोमालिन्यों को सर्वोपरि स्थान देने में है। कमसे कम नेताओं में तो इनका अभाव होना चाहिये। लाला जी को यदि वस्तुतः शान्ति अभीष्ट है तो सर्व प्रकार के जैनियों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन एकत्रित करनेमें प्रयत्नशील होना चाहिये। वरन् कोरी बातों से कुछ नहीं बनता है। परिषद् की ओर से श्रीयुत चम्पतराय वकील को इस प्रकार ऐक्य-योजना के लिये नियत किया गया है। आशा है वह भी इस ओर ध्यान देंगे और झगड़े की जड़ अहंता और अविश्वास को मेटने में अग्रसर होंगे। कतिपय इसी

पंडितों को भी समाज की दशा पर दया लानी चाहिये। वस्तुतः उन्हीं की एकपक्षीय हठता का-मिथ्या विश्वास का परिणाम यह दुःखद कलह है। और यह मानी हुई बात है कि अविश्वास किसी स्वार्थ के भय के कारण ही उत्पन्न होता है। परंतु हम विश्वासतः कह सकते हैं कि जैनसमाज में पंडित और अन्य सर्व प्रकार और परिस्थिति के व्यक्तियों की उन्नति का ध्यान एक वास्तविक प्रतिनिधि सभा को अवश्य रहेगा। इसलिये किसी प्रकार के भयवश अविश्वास और मनोभावनाओं को सर्वोपरि स्थान देना आवश्यक है।

क्या लोक व्यवहार परिवर्तन-शील नहीं हैं ?

भगवान महावीर जीने जो कल्याण कारी उपदेश दिया, जिसको कि हमारे पूज्य आचार्यों ने हम तक अपनी सद्कृतियों द्वारा पहुंचाया है, वही आगम है। उसी आगम के पाठसे हमें ज्ञात होता है कि भगवान् ने वस्तुमें एकसे अधिक गुण बतलाये थे जिसही के कारण उनके दिव्य शासन की अनेकान्त प्रभुता सर्वत्र व्याप्त है। उन्हों ने वस्तु स्थिति रूपमें बतलाया था कि प्रत्येक वस्तु के मूल गुण अथवा उनके अस्तित्व का नाश नहीं होता, यद्यपि उसमें परिवर्तन अवश्य उपस्थित होते रहते हैं। इसी दृष्टि से उन्होंने प्रत्येक पदार्थके स्वभाव निर्णय का निश्चय रूप दिया था और उसके विपरीतको व्यवहार कहा था। यही कारण है कि हमें जैन शास्त्रों में सर्वथा इसही दृष्टि का कथन मिलता है। परन्तु दुःख है कि अब कतिपय पंडितगण अपने निजी मन्तव्यों और गूढ़ अर्थों की सिद्धि के लिये इस सिद्धान्त का भी अनर्थ करने को उतारु हुये हैं-सो भी धर्म और आगमकी दुहाई देकर। वह कहते हैं कि व्यवहार में परिवर्तन हो ही नहीं सक्ता। जैनियों को लकीर के फकीर बना रहना लाजमी है। यह एकान्तपक्ष किस प्रकार जैन आगम के अनुकूल हो सक्ता है यह पाठकगण स्वयं विचार सके हैं। जैन धर्म में एकान्तपक्ष मिथ्यात् माना गया है। ऐसी अवस्था में अपरिवर्तनवादी बनने की सम्मति देना किस प्रकार युक्ति युक्त और कार्य संगत हो सक्ता है ? श्रीमद् उमास्वामि जीने वस्तुको उत्पाद, ध्रौव्य व्यय युक्त व्यवहारमें बतलाया है ! फिर यह कैसे माननीय हो सक्ता है कि लोक व्यवहार में अन्तर ही न पड़े उसमें परिवर्तन ही न हो ! निजी मन्तव्यों के अर्थ धर्म वाक्य का भी अनर्थ करना भले ही कतिपय पंडितों को शोभता हो परन्तु हम उसमें उनकी हानिके साथ २ समाज का अहित और जैन धर्म की अप्रभावना को ही पाते हैं। लोक व्यवहार में प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति स्थिति और नाश होना अवश्यम्भावी है। इसलिये संसार का कोई कार्य जिसका सम्बन्ध व्यवहार से है-कभी भी एक रूप में नहीं रह सकता। उसमें परिवर्तन अवश्य उपस्थित होजायगा। यही कारण है कि हमें भिन्न भिन्न समय के आचार्यों के विवरणों में किन्हीं बातों का आपसी भेद मिलता है। एक आचार्य एक प्रकार श्रावक के अष्टमूल गुण बतलाते हैं तो दूसरे अन्य प्रकार हो। ऐसे ही और बातें समझी जा सकती हैं विशेषांकमें बाबू हीरालालजी ने अपने लेख में जैनाचार्यों की साहित्य प्रणालि किस प्रकार समयानुसार बदलती रही है यह प्रत्यक्ष दरशा दिया है। यदि जैनागम में अपरिवर्तनवाद को ही मुख्य

स्थान मिला होता तो जैनाचार्य कभी भी नवीन रीतियोंका अनुसरण न करते। परन्तु यह बात ऐसी नहीं है। यही कारण रहा है कि महासभा के प्रारंभिक ज़माने में पंडितों ने जैन जनता को नवीन बातों को अपनाने और लोक मूढ़ता छोड़ने के उपदेश दिये हैं। स्वयं प० गोपालदास जी के सम्पादकत्व में प्रगट हुए "जैनमित्र" का फायल इसकी साक्षी से भरपूर है। परन्तु आज उन्हीं के शिष्य कतिपय पंडितगण अपने निजी मन्तव्यों की सिद्धि हेतु यथार्थता के विपरीत कहने को तत्पर होगये हैं। यह भी इस परिवर्तनशीलता का प्रमाण है। जैन-काल-विभाग-सिद्धान्त ही स्वयं लोक-व्यवहार की परिवर्तनशीलता को सिद्ध करता है। भगवान महावीर ने इस ही लिये द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव के अनुसार वर्तन करना उपयुक्त बतलाया है। आज जो कतिपय पंडितों के यह एकान्ती विचार हुये हैं उस का कारण सामाजिक परिस्थिति है। पंडितदल कहता है कि आंख मींचे चुपचाप चले चलो-द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की ओर ध्यान ही मत दो। बाबू दल कहता है कि समाज की दशा शोचनीय प्रायःक्षय हो रहा है-उस की रक्षा के लिये द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव के अनुसार कतिपय रक्षा के उपायों को अपना लेना चाहिये। इस ही बात को लेकर कतिपय पंडित मुख्यतः अपने निजी अर्थों और मन्तव्यों को दृष्टिकोण करके अपरिवर्तनवाद का ढिंढोरा पीटते हैं! यह कितनी दुःखद और लज्जाजनक बात है! जैन समाज का सामाजिक व्यवहार भी सदैव एक सा नहीं रहा है यह प्रत्यक्षतः हमारे शास्त्रों से प्रगट है। भगवान महावीर जी के समय में विवाह सम्बन्ध यही गृहस्थ का मुख्य सामाजिक नियम है-सर्ववर्णों में होता था। एक क्षत्री कन्या वैश्य से विवाह करती थी और वैश्य कन्या क्षत्री वर से। इसी तरह अन्य वर्णों में समझिये। सम्राट श्रेणिक का विवाह वैश्य पुत्री से, वैश्यपुत्र अभयकुमार का विवाह क्षत्री पुत्री से और वैश्य पुत्री कुंवारी का विवाह ब्राह्मण सोमशर्मा से हुआ था, यह स्वाध्याय प्रेमियों से छिपे हुये दृष्टान्त नहीं हैं। फिर समन्तभद्राचार्य के उपलब्ध गृहस्थाचार ग्रंथों में प्राचीन रत्नकाण्ड श्रावकाचार में श्रावक की लोक व्यवहार की क्रियाओं का कुछ उल्लेख ही नहीं मिलता है विवाह-शादी का ज़िकर ही नहीं किया गया है। उपरान्त श्री जिनसेनाचार्य समयानुसार ब्राह्मणों के प्राबल्य के कारण प्राचीन विवाह नियम में संशोधन करते हैं और अनुलोम विवाह होना युक्ति युक्त ठहराते हैं। अगाड़ी चल कर मेधावी आदि आचार्य केवल ऊपर के तीन वर्णों में ही उसे सीमित कर देते हैं। फिर भारत में कैसा राज्यनैतिक विप्लव आया यह सर्व प्रकट है। उस काल में पारस्परिक मनोमालिन्य किस प्रकार बढ़ा यह इतिहास प्रेमियों से छिपी हुई बात नहीं है। इस मध्यकाल में-मुसलमानी ज़माने और उपरान्त के में आपसी मनोमालिन्य के बल नई २ जातियां बढ़ती गईं और यह मत भेद, देश भेद अथवा गोत्रभेद को मुख्यता देकर अलग २ ठी बैठी रहीं। जैन जाति में भट्टारक महोदयों की अध्यक्षता में यह प्रभेद अधिक हुये हैं। श्री० इन्द्रनन्दि आचार्य अपने 'नीतिसार' ग्रंथ में भट्टारकों का एक यह भी काम बतलाते हैं। परिणामतः वही

विवाह संबन्ध वर्ण में ही नहीं प्रत्युत उपजातियोंमें जो बहुधा एक वर्ण के वश ही है *सीमित हो गया। कहिये पाठकगण ! अब यह कहना कहां तक युक्तिसंगत है कि लोकव्यवहार में अन्तर उपस्थित नहीं किया जा सकता। वह सदैव उस ही रूपमें रहेगा। विवाह नियमको तो हम बिलकुल बदलते हुए देखते हैं। ऐसी अवस्था में बाबूदल का कतिपय आवश्यक सुधारों को समाज रक्षार्थ उपस्थित करना शास्त्रसम्मत है। उनका यह प्रयास शास्त्रों के नियमों को उलटने का नहीं है। एक आचार्य तो साफ कहते हैं कि जैनियों को वह सब लोक व्यवहार मान्य होंगे जिनसे सम्यक्त्व में बाधा नहीं आती हो। इसका उल्लेख पं० लालाराम जी ने सागारधर्मामृत में किया है। ऐसी अवस्था में पारस्परिक झगड़े की जड़ बाबुओं पर शास्त्रसिद्धांत बदलने का झूठा आक्षेप कभी नहीं होसकता। झगड़े की जड़ तो उक्त प्रकार ही है। जो किसी भी जाति व मनुष्य को शोभनीक नहीं है। न इसमें उस जाति की भलाई ही है।

—उ० स०।

दमन का दुष्परिणाम !

संसारमें कहीं भी कोई दमन द्वारा स्थाई सफलता को प्राप्त नहीं कर सका है। इतिहास इसका साक्षी है। दूर जाने की आवश्यकता नहीं। सन् १९२०-२१ का भारत ही इसका प्रमाण है। भारतीय सरकार की दमननीति ने असहयोगियों को अपने पथसे विचलित नहीं किया। प्रत्युत वे और अधिक वेग के साथ असहयोग-मार्ग का अवलंबन लेते गये। अकालियों का सत्याग्रह और बंगाल आर्डिनेन्स की दमन नीतिका परिणाम भी हमें यही दृष्टिगत होचुका है। ऐसी अवस्था में दमन नीति से इष्टसिद्धि की आशा करना दुराशामात्र है। उस का परिणाम कटुक ही निकलता है। जैनसमाजमें भी एक दल ने दमननीति को ही अपनी मनोरथ सिद्धि का अस्त्र करार दिया है। वह उस ही के बल अपनी सत्ता धाक और समाज की भलाई होते देखना चाहता है। परन्तु दमन का सदैव दुष्परिणाम ही होता है। आजकल सामाजिक अधोदशा को संभालनेके स्थानमें पारस्परिक कलुषता बढ़ाने के प्रयत्नों में ही शक्ति व्यय की जारही है। विधवाओंकी दशा सुधारने के स्थान पर जो उस ओर ध्यान आकर्षित करता है उस पर विधवा विवाह प्रचार का झूठा लांछन लगाया जाता है और उसे समाज की दृष्टिसे गिराने का प्रयत्न किया जाता है। परन्तु इसका परिणाम विषम होगा वह व्यक्ति जिसका हृदय शुद्ध है और जो वस्तुतः विधवाओं की हृदयविदारक दशासे दुःखित है कभी भी किसी की नजर से नहीं गिर सकता है। उल्टा फल यह होताहै कि उसके विधवाविवाह प्रचार न करने पर भी इस दलकी इस दमननीति और झूठे लांछन के कारण समाज में विधवाविवाहके कीटाणु प्लेग की भांति फैलना संभवित होजाते हैं, क्योंकि यह स्पष्ट है कि अधिकांश विधवाओं का जीवन ऐसे वातावरणमें है कि उनका पूर्ण शुद्ध जीवन व्यतीत करना अतिदुष्कर ही है इस ही कारण ऐसी विधवायें तथा आधुनिक इन दमनपोषकोंके विधवाविवाह प्रचार के झूठे लांछन से उल्टा ही भाव लगा लेते हैं इस

* इस व्याख्या की पुष्टि में मेरी प्रकट होनेवाली पुस्तक "जैनजाति संग्रह" देखना चाहिये।

ही प्रकार ब्र०शीतलप्रसाद जी के प्रति इन लोगों ने अपना अस्त्र-प्रहार किया ?, परन्तु इस दमन का भी उल्टा ही फल होगा। ब्रह्मचर्यावस्था में रहते हुए ब्र० जी ब्रह्मचारी ही रहेंगे और जैनमित्र के उपयोगी रहते हुए उसको सब ही अपनायेंगे। परिषद् ने ऐसे 'धर्मदिवाकर'को 'वीर' का मुख्य सम्पादक प्रारंभ से ही नियत कर रक्खा है यह उसके मेम्बरों की गुणग्राहकता का परिचायक है और हमें इसमें गर्व है। वस्तुतः ब्र० जी'धर्मदिवाकर' ही रहेंगे। इसके विपरीत दमन का फल कुछ हो ही नहीं सकता। परन्तु समाज में अशृङ्खलता अवश्य बढ़ती है। इस लिये यदि इस दल को समाज की भलाई का कुछ ध्यान है तो ऐसे इस दमन के अस्त्र का त्याग देना चाहिये और भगवान के दिव्य चरित्र का अनुकरण करके प्रेमपूर्वक हितमित वाणी से उन सब जीवों का कल्याण करना चाहिये जो सन्मार्ग से भटक रहे हैं। अविश्वास और निज अर्थों का भय करना केवल मिथ्या धारणा और कोरी कल्पना है। घृणित विधवाविवाह को यदि समाज में फैलने से रोकना है तो झूठे लांछन लगाना छोड़कर विधवाओं की दशा सुधारने के उपाय में लग जाइये—उन कारणों को मेट दीजिये जिनसे विधवाओं की संख्या बढ़ती है। वरन् याद रखिये इस दमन का दुष्परिणाम आपको और आपके समाज को चखना होगा। क्योंकि कूड़े को दबाने से दुर्गन्धि दूर नहीं होती। अब भी समय है चेत जाइये-संभल जाइये-[illegible] की रक्षा कीजिये।

—उ० सं०।

दि० जैन समाज की उपजातियों में सम्बन्ध

जो भाई जैन समाज की रक्षा के लिये उत्सुक हैं और गम्भीर विचार वाले हैं उनका यह मत दृढ़ हो रहा है कि भिन्न २ उपजातियां कायम रहते हुए भी उनमें उसी तरह सम्बंध हो सकते हैं जैसे भिन्न २ गोत्रों में होते हैं। योग्य गृह सम्बन्ध होवे के लिये व मेल बढ़ाने के लिये व छोटी २ जातियों की रक्षा के लिये इस प्रथा का चलाना बहुत ही जरूरी है। देहली में "जैन-सेवक-संघ" इस लिये स्थापित हुआ है, जिसकी बागडोर परमोपकारी बाबू अजितप्रसाद वकील ने हाथ में ली है और सब से पहले इसी कार्य के चलाने का बीड़ा उठाया है। अब उचित यह है कि जो २ भाई इस कार्य को करना ठीक समझते हैं उनको चाहिये कि वे अपना नाम व पता उक्त संघ के दफ्तर में भेज देवें। संघ को उचित है कि रजिस्टर में शीघ्र ही १००० ऐसे नाम नोट करले, फिर उन्हीं की सन्तानों का भिन्न २ उपजातियों में सम्बन्ध करावे। इस में सन्देह नहीं कुछ वर्षों तक जाति के पचायती मुखिया ऐसा करने वालों को जातिच्युत करेंगे। उस समय इन १००० भाइयों को परस्पर एक रहने का बल प्रगट करना होगा। इस महत बल के सामने यह जाति का बहिष्कार नीति का ढंग थोड़े दिनों में बन्द हो जायगा। जो समाज में वीर सन्तान चाहते हैं उन को अपने २ नाम शीघ्र लिखवाने चाहिये तथा संघ को उचित है कि दौरे पर परोपकारियों को भेजकर नाम नोट करे।

—सम्पादक।

परिषद् समाचार

जैन कलारों में पुनः जैनधर्म प्रचार।

रिपोर्ट प० प्रभा चन्द्र प्रचारक

मैं यहां पर १-४-२५ को आया था उसी दिन श्री० पण्डित सीताराम विश्वनाथ आगर कर से मिला पण्डित जी श्रीराम श्रम करने वाले उन व्यक्तियों में हैं जिनके हृदय में समाज की अवनत दशा की गहरी चोट है।

कई दिन तक पं० जी से तथा श्री मूलचन्द रूपचन्द जी परवार तथा सिंघई मुन्नालाल जी आदि से मतैक्य होने पर यह बात चलती रही कि कार्य किस प्रकार से प्रारम्भ किया जावे। अन्ततः यही तै हुआ कि पहिले उन्हीं का (जैन कलारों का) संगठन करना ठीक है।

सब से पहिले मैं उपर्युक्त सज्जनों के साथ वासुदेव राव के पास गया जो आजकल Medical College में पढ़ते हैं उन्होंने पूर्ण सम्मति एवं उत्साह प्रगट किया तथा सहायता देने का वचन दिया। फिर क्रमशः डालीकार, गोपाल साव, दरोगा जी, डोंढया जी पहलवान, सीताराम जी बाउम, यशवन्त राव, पुण्डलीक, तुलसीराम जी, क्षेत्रपाल, पांडुरंग यमधुरकर एवं नारायण साव तथा डाक्टर खंगार आदि से परिचय हुआ और यथास्थान बराबर धार्मिक बातों पर प्रत्येक स्थान में बहस हुई प्रायः सभी सज्जन इस कार्य से प्रसन्न हैं। उपर्युक्त सब महाशय शिक्षित तथा प्रभाव शाली हैं।

जैन कलारों में कई दल हैं।

(१) जो शंकराचार्य (शारदापीठ) के आदेश से अपने को हिन्दू कहते हैं। और कलार से पहिले जैन शब्द निकालना चाहते हैं।

(२) जो कहते हैं कि हम आपके मन्दिर में भी आवेंगे। मद्य मांस आदि भी छोड़ देंगे अपने को जैन कहेंगे व लिखेंगे परन्तु राम, कृष्ण, हनुमान शंकर, ब्रह्मा, विष्णु की पूजा भी करेंगे।

(३) जो जिनालय प्रवेश की आज्ञा जैनियों से पाकर सम्मिलित हो जाना चाहते हैं।

(४) जो न इधर के हैं न उधर के हैं जिनका कुछ भी निश्चय नहीं है।

एक ब्रह्मचारी जी मैसूर प्रांत से आये हैं उन का कहना है कि कुछ प्रभावशाली व्यक्ति परवार तथा इतर समाज के और कुछ जैन कलार जाति के लेकर आप घर घर जैन कलारों में जायें और धन संग्रह करिए इस कार्य में ६ मास भी लग जावें तो थोड़े हैं क्योंकि ऐसा किये बिना संगठन पुष्ट न हो सकेगा।

आज से ऐसा ही करने का विचार है। किन्तु स्थानीय प्रभावशाली व्यक्ति इस कार्य में योग नहीं देते केवल मूलचन्द रूपचन्द जी तथा सिं० मुन्नालाल जी का उत्साह प्रशंसनीय है।

यहां जैन कलार समाज के ३०० घर २००० संख्या है। यह केन्द्रस्थान है इनके जैनधर्म ग्रहण करने से समस्त जैन कलार जाति जो नागपुर के आस पास ग्रामों में कितने ही सहस्र संख्या में है जैन धर्म धारण करलेगी।

नोट—जैन धर्म प्रेमियों से निवेदन है कि परि-

वह को धन से पूरी सहायता दें ताकि वह जैन कलारों तथा अन्य ऐसी ही जातियों में जो जैन धर्म से विमुख हो गई हैं प्रचार का कार्य वेग से कर सकें।

रतनलाल मन्त्री, परिषद्।

रिपोर्ट दौरा पंचरत्न पण्डित प्रेमचंद जी प्रचारक

१६ अप्रेल से ३० अप्रेल तक

पड़रिया (अजयगढ़ स्टेट)—दि० जैनसंख्या १५० है, ३ शास्त्रसभा व एक जातीय सभा हुई। १२ पुरुषों ने स्वाध्याय ६ स्त्रियों ने दर्शन करना पूजन व शास्त्र श्रवण का नियम लिया। आतिशबाजी व अश्लील गाने की प्रथा बन्द करने व श्री मन्दिर जी में शुद्ध खादी के ही दुपट्टा धोती धरा रखने का वचन दिया। यहां एक जैन पाठशाला है, प्रबन्ध पाठशाला का उत्तम है।

बड़वारा (अजयगढ़ स्टेट)—१६ अप्रेल को पड़रिया के ३ छात्र सहित पहुंचे। मन्दिर में सभा हुई। ४ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा आतिशबाजी व अश्लील गाना बन्द करने का वचन दिया। यहां जैन संख्या २५ है, प्रक्षाल का प्रबन्ध ठीक नहीं है, सिंघई मनीयारेलाल जी को ध्यान देना चाहिये।

नागौद स्टेट—२० अप्रेल को पहुंचे। यहां की जैन जनता में धर्म का प्रेम कम है, बुलाने पर भी सभा में थोड़े पुरुष आये। सेठ गजाधर जी यहां के मुखिया हैं उन्हें विशेष ध्यान देना चाहिये। यहां त्यागी प्रचारकों को आना चाहिये।

सतना—२२ अप्रेल को पहुंचे। शास्त्र सभा हुई। यहां पर महावीर दिगम्बर जैन पाठशाला व महावीर दि० जैन औषधालय है पाठशाला में धार्मिक व लौकिक शिक्षा दी जाती है ५० छात्र पढ़ते हैं। औषधालय में भी प्रति दिन ३०-४० रोगी दवा लेते हैं दोनों संस्थायें ठीक हैं, यहां पर स्वाध्याय करने व शास्त्र श्रवण का प्रेम है औषधालय का १००) मासिक के लगभग व्यय है जिसको सिंघई धरमदास भगवतदास जी अपने पास से देते हैं।

रीवां स्टेट—२५ अप्रेल को पहुंचे श्रावक धर्म पर व्याख्यान हुआ यहां स्वाध्याय का प्रचार है शास्त्र सभा बन्द थी दुबारा चालू कराई। पचायत में आतिशबाजी व अश्लील गाना बन्द करने का वचन दिया। यहां दो मन्दिर और १ चैत्यालय है। एक मन्दिर में श्री शीतलनाथ की १० फीट ऊंची खड्गासन प्रतिबिम्ब है जो महाराजा रीवां की कृपा से मऊगंज (रीवां) पहाड़ से लाई गई है।

पन्ना स्टेट—२७ अप्रैल को पहुंचे। दो सभा हुईं, समाजसुधार पर व्याख्यान दिया, भाई बहिनों ने स्वाध्याय करने व सुनने का वचन दिया, पचायत में अश्लील गाना व कन्याविक्रय व आतिशबाजी बन्द करने का प्रस्ताव पास किया, सिंघई बलदेव प्रसाद ने अपने व्यय से एक जैन पाठशाला चला रक्खी है। परिषद् के कई सभासद हुए तथा परिषद् को ६≡) की सहायता प्राप्त हुई। बुन्देलखण्ड में शिक्षा की कमी है, सिंघई बलदेव-प्रसाद जी को शिक्षाप्रचार का विशेष प्रयत्न करना चाहिये पन्ना में हीरा की खान है, जैनी भाई अधिक तर हीरा का ही व्यापार करते हैं।

साहित्य समालोचना

(१) दुःखित पुकार मू० -) (२) जैनलावनीबहार मू० -) पृष्ठ १६ (३) जैन नारी मंगलाचार मू० -) पृष्ठ १६। इन पुस्तकों के रचयिता और प्रकटकर्त्ता बाबू पी० सी० जैन, मोतीकटरा आगरा हैं। इन सब में सामाजिक दशा को लक्ष्य कर विविधराग-रागनियों में उसी ढंग के शिक्षाप्रद भजन दिये हुये हैं जिस ढंग और लय में साधारण जनता अन्य गीतों को गाती है। समाज में इनका प्रचार खूब हो सक्ता है और उससे समाज सुधार के कार्य में सहायता मिल सक्ती है। इस हेतु प्रकटकर्ता धन्यवाद के पात्र हैं। प्रत्येक गृह में इनकी पहुंच होना चाहिये। उदाहरण में देखिये:—

"अचरज देखियोरी, बांधी ऊँट गलेमें बिल्ली। टेक॥
साठ बरष को बुढ्ढा बरना, सात बरष की लल्ली।
उ‍खड़े दांत गाल पिचकेसे, बड़ी पेट में तिल्ली॥ अ०॥
लड़की वाल देहकी सारी, मुख पर पड़ गई झिल्ली।
झाड़ो मूंछ कटाय बालरंग, बाबा बने छिलछिल्ली॥ अ०॥
मोटर धाय के चले गांव के, लोग उड़ावें खिल्ली।
"फूलचन्द" इस समयमें सूझा, इनको डंडा गिल्ली॥"

जैनशास्त्र में स्त्री के पुनर्विवाह की आज्ञा—शीर्षक छोटासा ट्रैक्ट उक्त महोदय से बिना मूल्य मिल सक्ता है। यह 'जाति प्रबोधक' से उद्धृत है। इसमें प्रकाशक ने सन् १९२१ में बालविधवाओं की संख्या इस प्रकार बतलाई है:—

५ वर्ष से कम आयु की	१५१६९
५ ,, १० वर्ष तक की	१०२२८३
१० ,, १५ ,, ,,	२७९१०४
१५ ,, २० ,, ,,	५१७८९८

सत्यार्थ दर्पण—लेखक श्री अजितकुमार शास्त्री। प्रकाशक लाला देवी सहाय जी फिरोज़पुर हैं। मूल्य ज्ञात नहीं। पृष्ठ २+१५३। छपाई सफाई उत्तम। परन्तु कहीं २ शीघ्रता के कारण छापे की कालिमा पर सफेदी भी चढ़ाई गई है। इस में सत्यार्थ प्रकाश के १२ वें समुल्लास का यथार्थ उत्तर विशेष विवेचन सहित दिया गया है। विद्वानों को पढ़ कर सत्यार्थ प्रकाश के पाठ से प्राप्त मिथ्या अज्ञान को दूर कर लेना चाहिये। तथा आर्यसमाजियों को पारिस्परिक प्रेम वृद्धि के हेतु सत्यार्थ प्रकाश में इस पुस्तक के अनुसार समुचित संशोधन कर लेना चाहिये। यह पुस्तक मथुरा की जन्म शताब्दी महोत्सव के समय वितरण करने को ही उक्त लाला जी ने अपनी ओर से प्रकट की थी। ज्ञात नहीं यह वहां वितरण की गई थी या नहीं।

संसार दिग्दर्शन

जैन-सेवक-सङ्घ

बा० अजितप्रसाद वकील, जैनेन्द्रकुमार और ला० जौहरीमल सर्राफ के आमन्त्रण पर ७-४-२५ को शुभ वीरजयन्तीके दिन देहलीमें एक Workers Conference (सेवक सम्मेलन) पूर्ण सफलता के साथ समाप्त हुई। आमन्त्रण के आशय के अनुसार 'सेवक-संघ' का भी संगठन कर लिया है। उसके उद्देश्य इस प्रकार हैं —

१-देश की प्रगति के साथ जैन समाज की उन्नति करना।

(अ) सामाजिक कुरीतियों का निवारण।

(आ) देश और समय की आवश्यकतानुसार उचित शिक्षा-प्रचार।

२-कम से कम १ घंटा समाज सेवा के लिये निकालने के लिये लोगों को तैयार करना।

प्रत्येक जैन स्त्री—पुरुष संघ के प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने से इसका 'सेवक' हो सकेगा जो १८ वर्ष या उससे अधिक वय का हो और जो कम से कम १०० घंटे प्रतिवर्ष समाज के हित के लिये देने को तैयार हो। संघ के इस वर्ष के प्रोग्राम में ३ बातें हैं-

१-तमाम जैन जाति में रोटी-व्यवहार।

२-वर्णान्तर्गत जातियोंमें पारस्परिक विवाह सम्बन्ध।

३-संघ का फंड जिसकी ३ शाखाएं हों-

अ. प्रवासफंड आ. पत्र-फंड, इ. सेवक फंड

इस वर्ष संघ के अधिकारी बा० अजितप्रसाद ही चुने गए हैं। संचालक ४ सदस्यों में महात्मा भगवानदीनजी और प० अर्जुनलालजी चुने गये हैं।

-मन्त्री 'सेवक संघ'

महात्मा के महावाक्य !

बम्बई के गऊ रक्षा सम्मेलन में जो उद्गार म० गांधी जी ने प्रकट किये हैं उन पर प्रत्येक भारतीय को ध्यान देना आवश्यक है आपने कहा था कि केवल कसाई की छुरी से बचाने में ही गऊ की रक्षा नहीं है। अधिकांश हिन्दू घरों में गउओं के प्रति बड़ी निर्दयता का व्यवहार होता है। गऊ रक्षा के प्रति यदि सच्चे भाव हैं तो गऊ की प्रत्येक अवस्था में रक्षा करना चाहिये। इस ही समय मौ० शौकतअली ने भी इसका समर्थन किया था। कहा था कि मैं यद्यपि मुसलमान हूं परन्तु गऊ को उस ही पूज्य दृष्टि से देखता हूं जिससे कि हिन्दू। मौलाना के इन वाक्यों से हिन्दू मुस्लिम ऐक्यता के बढ़ने की क्या हम

आशा करें ? हिन्दू और मुसलमानों को इन शब्द का पवित्रता की अनुभव हृदयङ्गम कर लेना चाहिये। मौ० साहब को भी इन वाक्यों को कार्य रूप में परिणित करके महत्व प्रकट करना अत्यन्त आवश्यक है। उपरान्तमः आज कल महात्मा जी बंगाल में पर्यटन कर रहे हैं। कलकत्ते में आपका अपूर्व स्वागत हुआ था। आपने वहां रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्ति पर जोर दिया। कहा चाहे जिस विचार के आप हों परन्तु आप से मेरी यही प्रार्थना है कि रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनाइये। पाठकों को महात्मा की भावना पूर्ति के लिए अवश्य ही स्वदेशी का नियम तथा चर्खा चलाने की प्रतिज्ञा स्वीकार करना चाहिये। म० जी ने परस्पर मेल वृद्धि के लिये अपने विचारों के प्रतिकूल स्वराज्यपार्टी के पक्ष में निर्णय दे दिया। जैनसमाज में धर्मवृद्धि हेतु इस त्यागभाव को अपनाना चाहिये।

—जैन संगठन सभा देहली का प्रथम वार्षिकोत्सव ५, ३ जून १६२५ को माननीय बा० प्यारे लाल वकील के सभापतित्व में देहली में होगा। बड़े २ माननीय विद्वान व नेता निमन्त्रित किये गये हैं। सभा हितैषियों को अवश्य पधारना चाहिये।

—जीवदया सभा आगरा का पांचवां वार्षिकोत्सव ता० ६–७ अप्रैल सन् २५ को "श्रीमहावीर तीर्थक्षेत्र पर रायबहादुर बा० नन्दमल जी के सभापतित्व में सफलता पूर्वक हो गया। ब्र० शीतलप्रसाद, बा० सूरजभदास, ला० फुलजारीलाल आदि २ माण्यपुरुष पधारे थे। ८ आवश्यक प्रस्ताव पास हुए। जवैया (पँडत) बलिहिंसा बन्द करने के लिये समाज के कई महामान्य पुरुषों का डेपुटेशन नियुक्त हुआ। लगभग १०००) चन्दा एकत्रित हुआ।

—हीराबाग धर्मशाला बम्बई में गत अप्रैल मास में ७२६ दिगम्बरी ८५ श्वेताम्बरी ४७० हिन्दु और पालक पन्नालाल औषधालय में १८६ दिगम्बरी ५० श्वेताम्बरी ५८१ हिंदु कुल ८१७ नये रोगी और ३२५४ पुराने रोगियों ने लाभ उठाया।

अहिंसाप्रेमी भाई ध्यान दें।

उर्दु भाषा के अहिंसा विषयक ट्रैक्ट सभा के कोष में करीब २ समाप्त होचुके हैं, क्या कोई दया प्रेमी भाई रहम के ऊपर अच्छा सा ट्रैक्ट उर्दु जबान में तैयार कर भेजने और उसको छपाकर वितरण करने का खर्च प्रदान करने की उदारता प्रगट करेंगे ?

मन्त्री—जीवदया सभा,
बेलनगंज, आगरा

विषय–सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	विनय (कविता)	३३३	५	सम्पादकीय टिप्पणियां	३४४
२	जैन स्त्री	३३४	६	परिषद् समाचार	३६०
३	साहित्य सुमन सञ्चय	३३७	७	साहित्य समालोचना	३६४
४	महिला महिमा	३४३	८	संसार दिग्दर्शन	३६५

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांदी के फूल भाव १) तोला   सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला।

(सिर्फ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद काम व वैसी जितने तौल चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

हीरा	५००) से २०००)	पराउत	२५०) से ३०००)	*बंधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ६०००)	इन्द्र एक	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना२५०,से१०००)	
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चवर एक	७) से २५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२०० से ५००)	*चौकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००)
*चलन	५००) से १००	समोसरन	१००) से ३०००)	* ×भामण्डल	२०) से १००)
*पौड़ा	५०) से ७५)				
*लगी डंडी	३०) से ५०)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका मांडला	१०)से ५००	*कलशा	५०) से ५००)
जैन मन्दिर के उपकरण ।				तख्त चांदी के	२००) से १०००)
गंधकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीपकी रचनाका मांडला	५००)से२०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
वेदी	८००) से ४०००)			*पूजन के बरतन	३००) से ५००)

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में २=) सैकड़ा का आढ़त लेते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं । * ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है ।

पता—(१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, सोनी कटरा, बनारस ।

(२) जैन समाज कार्यालय सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel Address—"Singhai" Benares

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शहज़ादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिस को सात दिन मलकर नहाने से गुलाबके फूल की सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग मुंह से फांड़ा फुन्सी, दाद, खाज हाथ पांव का फटना बगल में बदबूदार पसीनेका आना इत्यादि सब को साफ कर चमड़े को नरम कर देती है। यह फूलों से बनाया है इस को खुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) रुपया ३ शीशी खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ।।)।

पताः—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को आगरा ।

बालरक्षा सप्तरत्न बक्स ।

बहुधा देखने सुनने में आता है कि छोटी अवस्थाके अनेक बालक रोग मसान, पसली, श्वास, खांसी, लहक, दस्त, सुकिया, ज्वर, नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फसकर मरजाते हैं और ठग लोग उनके माता पिताको भूतादिक की बाधा झपटा नजर बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता। हमने इसके लिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शान्त होते हैं। जो ४० वर्षसे धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें मू० १।) डा०ख० ।=) कुल ।=)

मिलने का पता—ज्योतिष रत्नभवन फरुखनगर (पञ्जाब)

Regd. No. A. 1271.

केवल २॥) रुपये में

वीर

पाक्षिकपत्रः

हिन्दी में उच्चकोटि का सजीव सामाजिक पत्र सालभर तक मिलेगा। जिसमें सर्वोपयोगी हर प्रकार के धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य संबन्धी उच्चकोटि के लेख रहते हैं। तथा गल्प, कवितायें, अद्भुत व नवीन से नवीन संसार भर के समाचार और मनोरंजन का सामान भी खूब रहता है। काग़ज़, छपाई, सफ़ाई सब ही उत्तम रहती है। पत्र की नीति स्पष्ट, निडर और समाज के प्रश्नों पर निष्पक्ष रहती है।

इस वर्ष में उपहार

एक वर्ष का चन्दा भेजने वालों को
बिल्कुल मुफ़्त

'महावीर भगवान'
और उनका उपदेश

इस पुस्तक में वीर भगवान की जीवनी व उनका दिव्य उपदेश बड़ी ही रोचक भाषा में अत्यन्त छान बीन के बाद लिखा गया है। संसार के अन्यान्य विद्वानों की साक्षी के अतिरिक्त प्राचीन जैन अजैन ग्रन्थों व शिला लेखों के ठोस प्रमाण दिये गये हैं। इण्डियन प्रेस प्रयाग के छपे हुए ५० पृष्ठों के अतिरिक्त आरम्भ में एक सुन्दर चित्र भी दिया गया है।

इस वर्ष भी [illegible]र जयन्ती के
उपलक्ष्य में

वीर का विशेषाङ्क

बड़ी सजधज व सुन्दरताके साथ निकाला गया है। तरह २ के रङ्गीन व सादे बहुत से चित्रों के अतिरिक्त हिंदी व जैन संसार के आधुनिक लेखकों के लेख, कवितायें, गल्प आदि अन्यान्य विषयों से सुसज्जित किया गया है। यह अङ्क देखने ही से ताल्लुक रखता है।

शीघ्र ही २॥) भेजकर ग्राहकों में नाम लिखा लेना चाहिये।

विज्ञापनदाताओं के लिये भी

वीर अत्युत्तम पत्र साबित होगा

प्रकाशक—राजेन्द्रकुमार जैनी, बिजनौर (यू० पी०)

ओंजिय जगदीशरत्न ने दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा

श्री वर्द्धमानाय नमः-

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र

वर्ष २] १ जून सन् १९२५ [संख्या १५

हर्ष ! बिलकुल मुफ़्त !! हर्ष !!!

उपहारों की धूम

इस वर्ष "वीर" के ग्राहकों को निम्न उपहार केवल २॥) वीर का वार्षिक मूल्य व डाकखर्च प्राप्त होते ही सेवा में मुफ़्त भेजे जा रहे हैं।

(१) महावीर भगवान और उनका उपदेश—५० पृष्ठों की अति उपयोगी सुन्दर पुस्तक, जो बड़ी छान बीन और परिश्रम के साथ लिखी गई।

(२) वीर का विशेषाङ्क—लगभग १०० पृष्ठों का रङ्गबिरङ्गे चित्रों से सुशोभित, धुरन्धर विद्वानों के लेख व कविताओं से अलंकृत, अत्यंत उपयोगी अंक।

(३) PRACTICAL PATH—अंग्रेजी भाषा में बड़ी उच्च कोटि का धार्मिक ग्रंथ अंग्रेजी पढ़े हुए ग्राहकों को केवल ।=) के टिकट डाकखर्च के लिये, इस के लेखक व दाता "श्री० चम्पतराय जी जैन बैरिष्टर, हरदोई" को अलग भेजने पर प्राप्त हो सकता है।

शीघ्र ही ग्राहकश्रेणी में नाम लिखाइये अन्यथा पछताना पड़ेगा।

ऑन० सम्पादकः—
जै० ध० भू०, ध० दि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसंपादकः—
श्रीयुत् बाबु कामताप्रसाद जी

ऑन० प्रकाशक—
राजेन्द्रकुमार जैन रईस, बिजनौर (यू० पी०)

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	अन्तिम दृश्य (कविता)	३९७	६	उत्तर न देने का कारण	४१४
२	जैन धर्म और ज्योतिष	३९९	७	साहित्य समालोचना	४१५
३	ग्रन्थ मुद्रण से हानि	४०६	८	परिषद् समाचार ...	४१६
४	महिला महिमा	४०९	९	संसार दिग्दर्शन	४१७
५	सम्पादकीय टिप्पणियां	४१२			

ग्राहकों को सूचना

(१) वीर, अच्छी तरह जांच कर यहां से भेजा जाता है। यदि कोई अंक आगामी अंक की तिथि तक न मिले तो पहले अपने डाकखाने से पूछना चाहिये। यदि पता न लगे तो उस की सूचना हमारे पास भेजनी चाहिये।

(२) ग्राहकों का पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये अन्यथा पत्र का उत्तर न पहुंचने के उत्तरदाता हम नहीं होंगे।

वीर २-३-३ । अंक हमारे पास बिलकुल नहीं रहे हैं। कोई पाठक मंगाने का कष्ट न उठावें। फाइल न रखने वाले ग्राहक यदि चाहें तो वह अंक हमें दे सकते हैं। उस का मूल्य उन की इच्छानुसार दे दिया जायगा।

सावधान! नई खुशखबरी!! सावधान!!!

चांदी के कारीगरों ने मंदी के कारण मजदूरी घटादी

=) भरी मजदूरी नकाशीदार फैंशी काम जैसे वेदी, नालकी, सिंहासन चंवर, छत्र आदि

)॥ भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वगैरह २

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सच्चाई की परीक्षा कर देखिये

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिर जी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर, सिंहासन, वेदी, नालकी, अष्टमंगलद्रव्य, अष्टप्रातीहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान पञ्चमेरु, शिखर कलश, कलशी जरदोजी का सामान जैसे चन्दोवा, परदा, अछार, बन्दनवार इत्यादिक।

सीताराम लहरीप्रसाद

मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी

हमारे अन्य कार्य।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां, साफे दुपट्टे, किनखाब पोत के थान, ईसकाफ, काशी सिल्क के थान, दावनी, घोटा, पट्टा, पुरबी साड़ी, टकुवा वगैरह।

जातिसेवक—

सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ { बिजनौर, ज्येष्ठ शुक्ला ६ वीर सम्वत् २४५१
१ जून, सन १९२५ } अङ्क १५

* अंतिम दृश्य *

हरित कालिमायुक्त निशा का हुआ शीघ्र अंतिम अवसान।
प्रबल प्रताप पुञ्ज प्राची में था उदयित रवि तेज महान॥
ललित लालिमा स्वर्ण रश्मिमय फैला प्रचुर प्रभात प्रकाश।
मंजु प्रभा विलोकित रवि की स्फुरित होता ज्यों आनन्दविकाश॥
मन्द मन्द सुरभित मारुत नव प्रेम प्रमोद बहाता था।
निःस्वार्थ लोक सेवा का शुभ संदेश सुनाता था॥
कलरव करते पक्षीगण शुचि मधुर रागिनी गाते थे।
प्रेम, एकता का मनुजों का जागृत दृश्य दिखाते थे॥
सूर्य मित्र लखि पूर्ण मुदितमन उदित हुए थे पुष्प प्रसून।
सब प्राकृतिक मधुरता संयुत गुण गरिमा से थे परिपूर्ण॥
मृदुल मंजुल मारुत द्वारा वितरण करते नव शुभ सुगन्ध।
मन्द मन्द मुसका कर खिलकर बरसा देते थे आनन्द॥
रुचिर तड़ाग तरंग तरलयुत नाट्य मनोरम करता था।
हृदयहारि, अवलोक मात्र से मन बलात् ही हरता था॥
नित अपगत सहदि मारि में पंकज जल में विलग खिले।
वारिजरूप अहर्निशि वासी किंतु कदाचित नहीं मिले॥

चिर बिछुरे सन्मित्र प्राप्य मनुजों के ज्यों मन मुदित हुए।
सूर्यरश्मि संयोग मात्र से त्यों पङ्कज प्रफुल्लित हुए॥
आह! निठुर माली ने निष्ठुर हो पङ्कज को तोड़ लिया।
कलिका का सार्वस्व प्राणहर दुःसहनीय वियोग दिया॥

हैं आनन्द निमग्न रसिक अलि? हाय! नहीं था मृतक हुआ।
कठिन काष्ठ भेदी पङ्कज मधि मृत विलोक आश्चर्य हुआ॥
था विचार में मग्न असङ्गत कैसा! यह व्यवहार हुआ।
काष्ठभेद जर्जरित बनाता, वही मृदु दल मध्य मुआ॥

कहा हृदय ने जिस के द्वारा रावण का मद नष्ट हुआ।
उसी विषय पंकज-मधु-मदिरा से अलि जीवन पतन हुआ॥
इन्द्रिय विषय विलास मग्न मधु लोलुप भ्रमर विलिप्त हुआ।
लोभी मधु के रसास्वाद से किंचित् हृदय न तृप्त हुआ॥

विषयेच्छा प्रतिक्षण प्रदीप्त थी भविष्य पर कुछ दिया न ध्यान।
आत्मज्ञान विस्मृत हो हतु बुधि दे बैठा निज जीवन दान॥
संध्या समय विलोक मधुप यदि नीपामृत त्यकि उड़ जाता।
दग्धित पश्चाताप अनल में क्यों दारुण संकट पाता॥

मैंने सोचा एक विषय इन्द्रियवश यह दुर्दशा हुई।
हैं पंचेन्द्रिय विषय मग्न क्या होगी उनकी दशा दई॥
पतित, दुराचारी, व्यसनी मानव कितना दुःख पावेंगे।
क्या अलि सादृश! नहीं अकथ दुःसह दुख भार उठावेंगे॥

अतः—विषय वासना मग्न, बंधुवर कभी न होना।
दुष्प्राप्य मानव भव माणिक व्यर्थ न खोना॥
आत्मोद्धार व्रती, विजयी, संयमी ज्ञानरत।
रहना सतत-सचेत, रखो रक्षित धन चारित॥

दुरित विषय कर्दम सहित, भवसर अगम, अगाध है।
ज्ञान, चरित तरनी चढ़ो, यदि इच्छित आतम साध है॥

— "वत्सल"

जैनधर्म और ज्योतिष।

(ले०—आयुर्वेद मार्तंड ज्योतिष रत्न पंडित जैनी जीया लाल जी चौधरी राज वैद्य)

आज हम अपने प्यारे पाठक वृन्दों को जैन ज्योतिषके संबन्धमें कुछ कहेंगे, जो आज तक उन के देखने और सुनने में भी नहीं आया होगा। इसको देखकर सर्वसाधारण क्या बड़े २ विद्वान भी आश्चर्य्य करेंगे। परन्तु जो कुछ लिखा जाता है वह पुरातन और सनातन ही है, नवीन या मनोक्त इसमें एक अक्षर तक भी नहीं है।

ज्योतिष विद्या जो संसार में प्रचलित है, और जो भूत भविष्यत् वर्तमान तीन काल का पता देती है, यह तीर्थंकर भगवान की ग्यारह अङ्ग चौदह पूर्व के ग्यारहवें कल्याणवाद पूर्व (जिस में छब्बीस करोड़ पद हैं) कथितविद्या है, और यह आठ मत के आधार पर ही निर्भर और निमित्त के (१) स्वप्न (२) अन्तरिक्ष (३) पृथ्वी भौमि (४) अङ्ग (५) स्वर (६) व्यञ्जन (७) लक्षण (८) छिन्न इन आठ मतों कर के भी शोभित है। सनातनी लोग ज्योतिषको ब्रह्मा के वक्त कहते हैं। सो विचारना चाहिये कि यथार्थ में यह क्या वस्तु है, और इसमें तीन काल का ज्ञान प्रकट करने की शक्ति क्यों है?

विचार करने पर हमको अधिक दिनों की खोज और बड़े बड़े महात्माओं के सत्संग से जो कुछ प्राप्त हुआ उसको विद्वानों के सम्मीप रख निवेदन करते हैं कि इसको पक्षपात रूपी अज्ञान का चश्मा हटाकर निर्मल शुद्धभाव से अवलोकन कर हमारे परिश्रम पर ध्यान दीजियेगा।

सिद्धं ध्रौव्यव्ययोत्पाद लक्षणद्रव्य साधनं।

इस लक्षण का ध्यान रखते हुये हम कह सकते हैं कि कोई ऐसा भी समय था जब सर्व संसार में जैन धर्म का ही सूर्य्य प्रकाश करता था और अज्ञानरूपी अमावस्या की डरावनी रात्रि का सर्वथा अभाव ही था, कारण कल्प वृक्षों के उजाले में सूर्य चन्द्र तारागण कोई भी दृष्टि गोचर नहीं होते थे? आज हमारा यह कहना कि पुरातन और सनातन तो यह जैन धर्म ही है सो इस का सब कोई स्वीकार करें ऐसा बड़ा निश्चय है। जो हो, परन्तु

धर्मार्थ काम मोक्षाणाम।

धर्म १ अर्थ २ काम ३ मोक्ष ४ यह चार साधन मनुष्य मात्र को अपनी जीवन लीला के अन्त तक क्रमशः करने उचित हैं, सो प्रथम ही धर्म का लाभ मुख्य है, धर्म क्या वस्तु है? इस को ध्यान पूर्वक विचार करना चाहिये। संसारी जीव दान देना-दया पालना पवित्र रहना तपस्या करना इत्यादिक को ही धर्म समझते हैं, परन्तु यह उनकी बहुत बड़ी भूल है, क्योंकि दानादिक देना नियमादिक पालना यह धर्म्म की आज्ञा का पालन है, ऐसा करने वाला प्राणी दयावान धर्म्मात्मा सुशील तो कहला सकता है, परन्तु उसने धर्म शब्द के अर्थ को यथार्थ नहीं जाना।यह बल पूर्वक कहना ही पड़ता है, क्योंकि—

"वस्तुस्वभावोधर्म्मः"

भावार्थ जिस वस्तु का जो स्वभाव है

उसका धर्म है, संसार में जीव १ पुद्गल २ धर्म ३ अधर्म ४ आकाश ५ काल ६ यह षट द्रव्य सनातन हैं। इनमें केवल पुद्गल ही रूपी और दृष्टि गोचर होता है। शेष पांचों का जानना ज्ञान चक्षु के द्वारा ही निर्भर है।

अब हमको यहाँ पुद्गल द्रव्य की चर्चा करनी अभीष्ट है। इसलिये प्रथम उसका ही कथन करते हैं। यद्यपि पुद्गल द्रव्य के व्यतिरिक्त हमको काल द्रव्य का भी सहारा लेना होगा, परन्तु प्रथम पुद्गल का विषय लिख पुन काल द्रव्य की चर्चा करेंगे।

पुद्गल नाम उस वस्तु का है। जिसको हम संसार में रहते हुए अपने चर्म चक्षुओं से देख उसका निज इन्द्रियों द्वारा स्पर्श रस गन्धादिक उपयोग लते हैं, परन्तु इसका उपयोग जीवआत्मा शरीर में रहता हुआ ही ले सकता है, और पौद्गलिक शरीर का आत्मा से कर्मों के संयोग से सम्बन्ध है, और कर्म जड़ हैं, इनके छूटने पर जीव निर्मल सिद्ध स्वरूप होजाता है, इस से जड़ कर्मों का पौद्गलिक स्वभाव दिखलाना ही हमारे लेखका मुख्य विषय है।

पुद्गल को नानारूप रङ्गवाला देखते हुए भी यहाँ हम उसको आठ भागों में विभाजित करते हैं, भावार्थ पीत १ श्वेत २ रक्त ३ हरित ४ पाण्डु ५ धूसर ६ नीला ७ स्याम ८ यह उसके रङ्ग हैं, तथा पीत १ श्वेत २ रक्त ३ हरित ४ पांडु ५ धूसर ६ नीली ७ स्याम ८ यह उसकी मृतिका के भी रूप हुए हैं, जैसे पीली मृतिका गोपी चन्दन १ श्वेत खाटी खड़िया २ लाल मिट्टी गेरू ३ हरित जंगार ४ धसन्ता मृतिका मैनशिलः ५ स्वागा फिटकड़ी ६ नील ७ कोयला ८ तथा पुष्प सूर्य्यमुखी १ कुमोदिनी २ लाला ३ नागर ४ गेंदा ५ मोतिया ६ अलसी ७ धन्वन्तरी ८ तथा औषधि केशर १ कपूर २ कुसुम ३ तिलक ४ हारशृङ्गार ५ सिन्दूरिया ६ गुलगासुर्बा ७ शतपुष्पी ८ पुनः जाबित्री १ श्वेत चन्दन २ मजिष्टा ३ मयूर तुत्थ ४ आमलासार ५ गऊदन्ती ६ अगस्त ७ अमलतास ८ तथा रत्न माणिक १ मुक्ता २ लालचुन्नी ३ पन्ना ४ पुखराज ५ हीरा ६ नीलम ७ लहसनियां ८ धातु-स्वर्ण १ चाँदी २ ताम्र ३ नीलाथोथा ४ सार ५ पारा ६ सुरमा ७ लोहा ८ तथा उपधातु स्वर्णमाक्षी १ चन्द्रमाक्षी २ हिंगुल ३ तूतिया ४ हरिताल ५ अभ्रक ६ शिलाजीत ७ कीटी ८ तथा इसी प्रकार छः शास्त्र में गण भी आठ ही माने गये हैं, मगण १ भगण २ जगण ३ सगण ४ नगण ५ यगण ६ रगण ७ तगण ८ और इनके स्वामी क्रम से सूर्य्यादिक आठों ही हैं, तथा राग माला में छः राग तीस रागिनी उनमें भी एक एक के आठ आठ पुत्र आठ आठ भार्या हैं, इत्यादिक कहाँ तक लिखें। अष्ट प्रकार पुद्गल विभाग का सम्बन्ध आकाश में चलने फिरने विचरते ज्योतिषी देवों के विमानों (व्योमयानों) से इस प्रकार है। जैसे कागज का पतङ्ग (गुड्डी) बना आकाश में उड़ाने वाले के हाथ में उसकी डोरी रहती है। और सूर्य १ चन्द्र २ मङ्गल ३ बुध ४ वृहस्पति ५ शुक्र ६ शनिः ७ राहु ८ यह आठों ही क्रमसे अपनी अपनी पूर्वोक्त वस्तुओं से मिश्रित हैं, और यह तो मानी हुई बात है कि जीवात्मा चैतन्य और कर्म जड़ हैं, बस ज्ञानावरण कर्म का नाम सूर्य १ दर्शनावरण चन्द्रमा २ वेदनी मङ्गल ३ मोहनीयबुध ४ आयुः बृहस्पतिः ५

नाम शुक्र ६ गोत्र शनिश्चर ७ अन्तराय राहु ८ यह आठों ही हानि लाभ सुख दुःख के करने वाले जीवों की साथ अनादि काल से लगे हुए हैं, और छद्मस्थ शरीर में ज्ञान १ दिव्य दृष्टि २ रक्त ३ बुद्धि ४ प्राण ५ वीर्य ६ मृत्यु ७ रोग ८ तथा प्रकाश सूर्य १ मन चन्द्रमा २ शरीर मङ्गल ३ ज्ञान बुध ४ जीव बृहस्पति ५ वीर्य शुक्र ६ विनाश शनिः ७ कष्ट राहु ८ यह आठों ही प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हैं।

हमारा इतना विस्तार पूर्वक लिखने का तात्पर्य यह है कि जिस शरीर में प्रथम ज्ञाना वरणी की विशेषता होगी भावार्थ इस कर्म का अधिक सद्भाव पाया जायगा। उस शरीरमें सूर्यांश विशेष होगा। इसी प्रकार आठों कर्मों का आठों ही ज्योतिषी विमानों से सम्बन्ध है, इन विमानों में पृथ्वी तल के सम भाग से सात सौ नव्वे (७९०) योजन की दूरी पर आकाश में सब से नीचे तारा गण हैं, और उससे नौ सौ (९००) योजन की दूरी पर ज्योतिष पटल का अन्त हुआ है, यह ज्योतिष पटल एकसो दश (११०) योजन मोटा है और इसके चारों ओर (तर्फ) घनोदधि है। तारागण के पटल से दश (१०) योजन ऊंचाई पर सूर्य विमान है। उससे अस्सी (८०) योजन की उँचाई पर चन्द्रमा का विमान है, इससे चार योजन ऊंचाई पर नक्षत्र पटल है, इनसे चार योजन ऊंचा बुध का पटल है, बुध से तीन योजन ऊंचा शुक्र विमान है शुक्र से तीन योजन की ऊंचाई पर बृहस्पति और बृहस्पति से तीन योजन ऊंचा मङ्गल और मङ्गल से चार योजन ऊंचा शनिश्चर पटल है।

सूर्य चन्द्र मङ्गलादि जो जो नाम उक्त विमानों के स्वामी ज्योतिषी देवों के हैं, यह सब सूर्य १ चन्द्र २ नक्षत्र ३ तारा ४ ग्रह ५ ऐसे पांच प्रकार के हैं, इन में चन्द्र देवों की आयु एक लाख वर्ष अधिक एक पल्य की है, सूर्य देवों की एक सहस्त्र वर्ष अधिक एक पल्य की है, और शुक्र देवों की सौ वर्ष अधिक एक पल्य और बृहस्पति की पौण पल्य मङ्गल बुध, शनि, आधा पल्य, तारागण की पावपल्य उत्कृष्ट आयु है, सो यह देवों की जानना, विमान तो पुद्गलिक रत्न मई जड़ ही हैं, यह हम तुम सब प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि कमल वा सूर्य मुखी पुष्प सूर्य के उदय में प्रफुल्लित होते हैं, कुमुदिनी चन्द्रमा को देख कर खिलती है, अग स्तिया पुष्प अगस्त मुनि के उदय होने पर खिलता है। आगियाकाच (आईना शीशा) सूर्य को दिख-लाने से अग्नि उत्पन्न कर देता है, सूर्य कांति-मणि रत्न से जल टपकने लगता है, यह सब पुद्गल का ही स्वाभाविक सामान गुण है।

अब हम को यह दिखलाना है, कि जब पृथ्वी पर सूर्य चंद्र तारागण कल्प वृक्षों के सद्भाव में थे ही नहीं उस समय पद्गल का स्वभावरूप धर्म कहाँ लुप्त था. उसका उत्तर यही है कि यह ज्योति षियों के विमान उस समय कल्प वृक्षों के प्रकाश में दृष्टि तो नहीं चढ़ते थे परंतु इनका अभाव नहीं था। जैसे सूर्य के प्रकाशमें तारा गण नजर नहीं आते तो उनका अभाव नहीं माना जा सकता।

प्रत्येक वस्तु अपने स्वभाव को लिये हुए सदा सर्वदा उपस्थित रहती है काल चक्र के द्वारा इसमें उलट पलट का होना रहना वा स्थूलता सूक्ष्मता दृष्टि पड़ना यह उसके स्वाभाविक धर्म में बाधक

नहीं हो सका इस लिये अब हम काल द्रव्य का वर्णन करते हैं।

रूप रस गन्ध स्पर्श इन मूर्तिक गुणों से रहित 'अमूर्तीक'न भारी न हलका एवम् वर्तना लक्षण का धारक काल द्रव्य है, इस के निश्चय और व्यवहार ये दो भेद हैं, जिस प्रकार जीव और पुद्गलके गमन करने में धर्म द्रव्य ठहरने में अधर्म द्रव्य, और समस्त द्रव्यों को अवकाश देने में आकाश द्रव्य सहकारी कारण हैं, उसी प्रकार समस्त द्रव्यों के परिवर्तन में काल द्रव्य सहकारी कारण हैं, जिस प्रकार धर्म अधर्म और आकाश इन्द्रिय गोचर न होने पर भी आगम प्रमाण से माने गए हैं उसी प्रकार काल द्रव्य का भी आगम प्रमाण से सद्भाव मानना।

जीव और पुद्गलों का परिवर्तन सदा भिन्न भिन्न रूप से होता रहता है उसका कारण निश्चय काल द्रव्य है और घंटा मिंट सेकेंड घड़ी पल विपल आदि उसकी पर्याय हैं। समस्त द्रव्यों के परिणमन आदि व्यापार 'अंतरंग,बहिरंग दो कारणों से हुआ करते हैं, उनमें अंतरंग कारण वस्तुका स्वभाव (योगता) है और बहिरंग कारण निश्चय काल है, काल प्रमाणुओं को निश्चय काल द्रव्य कहते हैं, सो यह कालाणु एक दूसरे में प्रवेश न कर असंख्यात प्रदेशी इस लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश में स्थित हो समस्त लोकाकाश में व्याप्त हैं, द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षाकालाणु विकृत नहीं होते इस लिये ये उत्पाद और नाश से रहित होनेके कारण कथंचित् नित्य हैं, और सदा अपने स्व स्वभाव में ही स्थित रहते हैं। कालाणुओं में अगुरु लघुनाम का गुण रहता है, उससे प्रति समय इनकी पर्याय पलटती रहती हैं इस लिये पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा समस्त कालाणु कथंचित अनित्यभी है समयों का व्यापार भूत भविष्यत और वर्तमान इन तीन प्रकार से अनुभव में आता है इस लिये भूत भविष्यत और वर्तमान के भेद से व्यवहार काल के भी तीन भेद हो जाते हैं कालाणुएं अनंत समयों की उत्पादक हैं इस लिये वे अनंत शब्द से पुकारी जाती है, ये कालाणुएं समय की उत्पत्ति में कारण हैं। इसलिये इनसे समय उत्पन्न होते रहते हैं, क्यों कि बिना कारण के कार्य्य कभी नहीं होता। कोई कहे कारण के बिना स्वतः ही कार्य उत्पन्न हो जाते हैं, तो गर्दभ केशृंगभी होने चाहियें, क्योंकि वहाँ भी कारणों की आवश्यकता नहीं है।

समय आदि काल द्रव्य के कार्यों की यदि काल द्रव्य से भिन्न किसी अन्य कारण से उत्पत्ति माने सो ठीक नहीं, क्योंकि चावल के बीजसे मूंग उड़द उत्पन्न नहीं हो सकते हैं,। यदि कहीं पर कार्य की उत्पत्ति में अन्य कोई विजातीय कारण होभी जाय तो वह सहकारी कारण ही होता हैं, उपादान कारण नहीं। इस प्रकार व्यवस्थापूर्वक निश्चय काल का सद्भाव माना है।

समय आवली उच्छवास प्राण स्तोक और लव आदि व्यवहार काल है, उनमें आगमशील पुद्गल का शुद्धप्रमाणु मन्दगति से जितने काल में अपने १ प्रदेश से दूसरे प्रदेशमें जाय और जिसका दूसरा भाग न होसके उसको समय कहते हैं। असंख्यात समय की एक आवलि होती है संख्यात आवलियों का एक उच्छ्वास और निश्वास होता है, इन्हीं को प्राण कहते हे, सात प्राणों का एक स्तोक, सात स्तोकों का एक लव, सतहत्तर (७७) लवों का

एक मुहूर्त, तीस (३०) मुहूर्तों का एक अहोरात्र। भावार्थ—दिन रात, पन्द्रह (१५) दिन रात्रि का एक पक्ष दो पक्षों का एक महीना, दो मास का एक ऋतु, तीन ऋतुओं का एक अयन, दो अयनों का एक वर्ष, पांच वर्ष का एक युग बारह युग का एक साठ तथा दो युग के दश वर्ष इनको दश गुणा किया हुए सौ (१००) इनको सौ से गुणा किया हजार तथा हजार का सौ गुणा एक लक्ष, लक्ष को चौरासी से गुणा किया हुआ ८४०००००, चौरासी लाख इसने समय का एक पूर्वाङ्ग, और चौरासी लाख पूर्वाङ्ग का एक पूर्व होता है, इसी प्रकार गणित का विशेष विस्तार यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं काल के असंख्यात भेद हैं, आदि मध्य और अन्त हीन अविभागी, अतीन्द्रिय मूर्ति और एक प्रदेशी प्रमाण कहा गया है, इस प्रमाणु में एक समय में एक रस, एक वर्ण, एक गंध, और दो स्पर्श रहते हैं, और यह अभेद्य है अर्थात् दूसरों से भेदा नहीं जा सकता है, शब्द का कारण है किन्तु स्वयं शब्द का धारक नहीं है। इसके सूक्ष्म होने का एक यह साधारण दृष्टान्त है कि एक हजार (१०००) नागर पान ले एक दूसरे के ऊपर रख एक लोहे की सलाई से उन में एक ही प्रहार से छिद्र करे, तब यह निश्चय है और मानना पड़ेगा कि सलाई एक पान से दूसरे पान में होती हुई क्रमशः अन्त तक पहुंची. बस ख्याल करो एक पान से दूसरे तक पहुंचने का समय कितना सूक्ष्म है। संसार में पुद्गल का परिवर्तन जो प्रकट देखने में आता है उसके ही ध्यान पूर्वक विचारने से पाया जाता है कि कुदरत के खेल सनातन नियमानुसार चलते हैं. उनसे अनुमान करिये, जैसे पुरुष स्त्री के संयोग से सन्तान उत्पन्न होती है, परन्तु गर्भ स्त्री ही धारण करती है, पुरुष धारण नहीं कर सकता तथा प्रथम बतलाया गया वस्तु का स्वभाव वही उसका धर्म उसमें फेर बदल नहीं हो सकता ऊपर जो हमने काल विभाग में पुद्गल के एक समय आवलि आदि बतलाकर दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु अयन वर्ष का वर्णन किया, उसका कर्मों से क्या सम्बन्ध है सो दिखलाते हैं।

एक वर्ष के १२ मास २४ पक्ष ५२ सप्ताह ६ ऋतु २ अयन होते हैं, इनका नाम अपनी २ बोली में देश भेद से पृथक् २ है; जैसे हमारे क्षेत्र में चैत्र शुक्ल पक्ष से वर्षारम्भ करके चैत्र कृष्णा ३० तक पूरा करते हैं और दक्षिण देश में एक भिन्न भेद है, भावार्थ जिसको हम चैत्र शुक्ल पक्ष कहते हैं उसको तो वह चैत्र शुक्ल ही कहते हैं, परन्तु जिसको हम वैशाख कृष्णपक्ष कहते हैं, उसको वह चैत्र कृष्णपक्ष कहते, और इस रीति से हमारा उनका शुक्लपक्ष एक ही है परन्तु एक कृष्णपक्ष में एक मास का अन्तर रहता है। और सूर्य राशि से मेष वैशाख वृष ज्येष्ठ, मिथुन आषाढ़ कर्क श्रावण, सिंह भाद्रपद, कन्या आश्विन, तुला कार्त्तिक, वृश्चिक मार्गशीर्ष, धन पौष, मकर माघ, कुम्भ फाल्गुन, मीन चैत्र। यह बारह महीने विभाजित हैं, परन्तु यह दक्षिण वालों के हिसाब से ठीक होता है। भावार्थ-इसके लिये हमको चैत्र शुक्लपक्ष और वैशाख कृष्ण पक्ष मिलाकर मेष का सूर्य मानना होगा। और यह चन्द्र मास का स्थूल मत है, सूर्य संक्रान्ति के हिसाब से तो मेष से लेकर मीन पर्यन्त १२मास तथा वृष, मिथुन ग्रीष्म कर्क, सिंह-वर्षा, कन्या, तुला-शरद, वृश्चिक, धन-हेमन्त, मकर, कुंभ-शिशिर, मीन, मेष-वसन्त, यह ६ ऋतु हैं और कर्क, सिंह, कन्या:

तुल, वृश्चिक, धन इन छः राशियों में सूर्य दक्षिणको झुका हुआ उदय होकर दक्षिणायण कहलाता है, इन ६ महीनों में वर्षा, शरद, हेमन्त यह तीन ऋतु पूर्ण होती है, और मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष, मिथुन इन ६ राशियों में सूर्य उत्तर को झुका हुआ उदय होता है और उत्तरायण को कहलाता है. इन ६ महीनों में शिशिर वसन्त ग्रीष्म यह तीन ऋतु पूर्ण होती हैं सूर्य की चाल पर ३६५ दिन १५ घड़ी ३१ पल ३० विपल का एक वर्ष होता है, अंग्रेज लोग भी ३६५ दिन ६ घन्टे का एक वर्ष मानते हैं, और जो वर्ष चार पर पूरा बट जाय उसमें फर्वरी २९ दिन का होजाता है। इससे केवल ३१ पल ३० विपल का अंतर रहता है और १३ अप्रैल के निकट मेष का सूर्य होता है। अब देखिये एक वर्ष में मेष से लेकर मीन तक १२ सूर्य व्यतीत होते हैं, और यही बारह महीने सूर्यमास कहलाते हैं और चान्द्रमास के १२ महीने कभी ३५५ कभी ३५४ दिन के हुआ करते हैं और यह कमी तीसरे वर्ष अधिक मास होने से पूरी होजाती है परन्तु अधिक मास के लिये ३३ मास में एक मास बढ़े ३३ वर्ष में १ वर्ष बढ़े ऐसा नियम है। एक सप्ताह के रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर यह सात दिन होते हैं।

इन सात वारों को सात ग्रह मान कर ही सम्पूर्ण ज्योतिष चक्र को विचारा जाता है। यद्यपि ग्रह नव (९) माने जाते हैं, परन्तु उक्त सातों के व्यतिरिक्त एक "राहु" और है जो यथार्थ में इन का ही भेद है, जिस का वर्णन आगे चलकर करेंगे, और दूसरा 'केतु' यह थोड़े काल से कल्पित बनाया गया है, यथार्थ में तो यह "राहु" का ही साया मात्र भेद है ऊपर जो १२ राशि कही गई उन का विचार ऐसा है कि जैसे एक दिन रात्रिके २४ घंटे होते हैं, उन में मेष से लेकर मीन पर्यन्त १२ लग्न व्यतीत होते हैं, और इन १२ लग्नों का समय देशभेदानुसार जुदा जुदा है. भावार्थ जो मेषलग्न देहली में ३ घड़ी १३ पल का होता है, वही लंका में ४ घड़ी ३८ पल का होता है, और यह निश्चय है कि आजकल तारीख १३ अप्रैल के अगले दिन सम्पूर्ण स्थानों पर प्रातःकाल सूर्योदय के समय मेषलग्न होगा, जो एक दिन में एक अंश घटता घटता ३० अंश पूर्ण कर रात्रिमें चला जाता है, इसी प्रकार लग्न १२ यद्यपि एक दिन रात्रि में पूरे हो जाते हैं, परन्तु जिस लग्नमें सूर्य्य उदय होता है अगले दिन उस लग्न का एक अंश रात्रि में चला जाता है और ३० अंश पूरे होने पर सूर्य्य उदय दूसरे लग्न से प्रारम्भ हो जाता है, और जिस लग्न में सूर्य्य उदय होता है। उसीके पुद्गल स्वभावानुसार मौसम होता है।

अब और देखो, मेषराशिका स्वरूप मेषाकार माना गया है, उस का तात्पर्य्य यह है कि मेष राशि में सूर्य्योदय १३ अप्रैल से १३ मई तक रहता है इस राशि का स्वामी मंगल है। इस का वेदनी कर्म से सम्बन्ध है इस महीने में सब जीवों के वेदनी कर्म का उदय पाया जाता है इसी प्रकार वृषराशि का स्वरूप बैल के आकार स्वामी शुक्र (नाम कर्म से सम्बंध) मिथुन पुरुष स्त्री के जोड़े के आकार स्वामी बुध (मोहिनीकर्म) तुला कर्कराशि के केकड़े कीट के आकार स्वामी चन्द्रमा (दर्शना वर्णी कर्म) सिंह राशि सिंह के आकार स्वामी सूर्य्य (ज्ञानावर्णी) कन्या कन्या के आकार स्वामी बुध (मोहिनी कर्म) तुला तराजू के

आकार स्वामी शुक्र (नामकर्म) वृश्चिक बिच्छू के आकार स्वामी मंगल (वेदनी कर्म) धन का स्वरूप अगला मनुष्याकार हाथ में तीर कमान लिए हुए पिछला घोड़े का आकार स्वामी बृहस्पति (आयु कर्म) मकर का आकार मकर एक प्रकार का मच्छ, कुम्भ घड़े के आकार स्वामी दोनों का शनिश्चर (गोत्र कर्म) मीन छोटी मच्छी के आकार स्वामी बृहस्पति (आयु कर्म) ऐसे १२ राशियों किम्बा १२ महीनों के स्वामी यह ७ गृह सूर्य से शनिश्चर तक जानने केवल राहु को उपग्रह है. यह किसी राशि का स्वामी सवक नहीं है। यद्यपि एक राशि के आधीन सवा दो नक्षत्र होते हैं, और एक नक्षत्रके आश्रय चार अक्षर और उस के चार चरण होते हैं, ऐसे कुल २७ नक्षत्र हैं, जिन पर सूर्य एक वर्ष में चन्द्रमा २७ दिन में मङ्गल डेढ वर्ष में बुध शुक्र एक वर्षमें बृहस्पति १२ वर्ष में शनिश्चर ३० वर्ष में राहु १८ वर्ष में पुनः आते हैं, और नक्षत्र, योग, करणादिकके नाम स्वरूप स्वभाव, इत्यादिक पृथक पृथक हैं, जिन का वर्णन हम दूसरे भाग में लिखेंगे।

यह हम बतला चुके हैं कि २ मास को एक ऋतु और ६ ऋतु का एक वर्ष होता है, और ऋतुओं के नाम समयभी बतला दिये गये हैं। अब यहाँ यह और बतलाना चाहते हैं कि मुनिराज ग्रीष्म में पहाड़ के शिखर पर और वर्षा में वृक्ष के नीचे, शीतकाल में नदी सरोवर के तट क्यों ध्यान धरते हैं? और उस में कोई गूढ भेद पाया जाता है, क्या समय विपर्य होने पर वे भी इसी प्रकार से तप करते हैं? भावार्थ वर्षा ऋतु में वृष्टि न हो शीतकाल में शीत न पड़े, ग्रीष्म काल में उष्णता न हो, शीत पड़ने लगे तो वे क्या करें?

सो हमारे इस सम्पूर्ण लेख का सारांश इसी स्थान पर निकल आवेगा कि मुनिराज अपने कर्मों के नाश करने में उद्यमी होकर ही तप करते हैं, सो जिस समय जिस कर्मका उदय होता है उसी के नष्ट का उपाय मुख्य जान उसी रूप प्रवर्तते हैं।

हमने ऊपर बतलाया है कि गृह नाम कर्मोंका है, और कर्मों का सम्बन्ध सूर्यादिक ज्योतिष के देवों के विमानों के स्वभाव से है, उन विमानों में निवास करने वाले देवों से नहीं है, विमानों की चाल ही अपने स्वभाव से भला बुरा करने का उपादान हो जाती है, जिस सूर्यका प्रकाश ज्येष्ठ मास में कष्ट कारी होता है, वही प्रकाश माघ में अधिक प्यारा ज्ञात पड़ता है, इन विमानों का स्वभाव नियतानुसार दिन दिन भी प्रकट होता रहता है इन सात विमानों से जुदा एक 'राहु' का विमान है, यह सातों दिन भ्रमण करता है, जिसको दिकशूल कहते हैं. यह रविवार को पश्चिममें चन्द्रवार को पूर्व में, मङ्गल को उत्तर में, बुध को पाताल में. बृहस्पति को दक्षिण में, शुक्र को पश्चिम में, शनिश्चर को पूर्व में भ्रमता रहता है, और दूसरी चाल इस की, शनि को पूर्व में, शुक्र को अग्नि में, बृहस्पति को दक्षिण में, बुध को नैऋत्य में: मङ्गल को पश्चिम में सोमवार को वायव्य में रविवार को उत्तर ईशान में रहता है, इसको कालराहु कहते हैं. और योगिनी चन्द्र चाल इत्यादिक अनेक भेद हैं, उनको हम इस के दूसरे विभाग में विस्तार पूर्वक लिखेंगे, बस यह लेख यहीं पूर्ण होता है। अलम्. श्योमवस्तु सर्वेषाम्।

ग्रन्थमुद्रण से हानि

ख्यावर अधिवेशनके बाद से 'हिंदी जैन गजट' में ग्रन्थ मुद्रण की हानि दिख लाने पर बहुत ज़ोर दिया जा रहा है इसके ४ मई १९२५ के अङ्क ३० में एक महाशय लिखते हैं कि "जिस समय भारतवर्ष में चारों ओर जैन धर्म और उसके शास्त्रज्ञान का बड़े वेग से प्रसार था, उस समय कहीं भी छपे ग्रन्थों द्वारा मनुष्य स्वाध्याय, पठन पाठन नहीं करते थे।" मानो लेखक महाशय की दृष्टि से ग्रन्थ मुद्रण से ही जैन धर्म और उसके शास्त्रज्ञान का प्रसार रुक गया। यदि ग्रन्थ मुद्रण न होते तो भारतवर्ष में चारों तरफ जैनधर्म और उसके शास्त्रज्ञान का प्रसार पाया जाता। वाह, क्या बढ़िया दलील है! लेखक ने यह ख्याल नहीं किया कि चौथे काल या पांचवें काल के प्रारम्भ में जब कि जैनधर्म भारतवर्ष में चहुंओर फैला हुआ था उस समय में तो हस्तलिखित ग्रन्थ भी मौजूद नहीं थे। उस समय तो ज़ुबानी उपदेश ही से काम चलता था। तो क्या फिर ये कहना ठीक होगा कि ग्रन्थों के लिखे जाने से कोई लाभ नहीं हुआ? ग्रन्थों के लिखेजाने की कोई ज़रूरत नहीं थी, ग्रन्थों के लिखे जाने से जैन धर्म का प्रचार कम हो गया, ऐसा कहना कदापि ठीक नहीं होगा। जमाने की हालत, समय की आवश्यका के लिहाज से देखा जाय तो उस समय ग्रन्थ लिखे जाने की सख्त जरूरत थी। और ग्रन्थ लिखे जाने से बहुत फायदा हुआ है। यदि ग्रन्थ न लिखे जाते तो हरगिज़ शास्त्रज्ञान कायम नहीं रह सकता था। असलबात यह है कि जमाने की हालत, जमाने की ज़रूरत अलग अलग हुआ करती है। एक जमाना वह था कि मात्र ज़ुबानी उपदेश से ही जैन धर्मका खूब प्रचार होरहा था। ज़ुबानी उपदेश को ही शनैः शनैः लेकर बड़े २ विद्वान तैयार होजाते थे। परन्तु फिर जमाना ऐसा आया कि केवल ज़ुबानी उपदेश से काम न चल सका। शास्त्रों के लिखने की ज़रूरत मालूम हुई और वे पहिले पहिल ताड़ पत्र आदि पर लिखे हुये ग्रन्थ भी नाकाफी रहे तो फिर कागज़ पर लिखे जाने की परिपाटी प्रारंभ हुई। परन्तु अब जमाने की हालत ऐसी है कि केवल हाथ से लिखे हुये ग्रन्थों से काम बखूबी नहीं चल सकता छपे हुये ग्रन्थों की आवश्यका है। इस लिये कुछ ग्रन्थ छापे गये हैं। और मेरे ख्याल में तो छपे हुये ग्रन्थों से बहुत फायदा पहुंचा है। सैकड़ों व हजारों आदमियों को छपे हुये ग्रन्थों के द्वारा जैनधर्म की कुछ जानकारी हुई है। अब जितने आदमियों को जैनधर्म से जानकारी है मेरे ख्याल में तो यदि छपे हुये ग्रन्थ न होते तो इस से आधी संख्या के आदमी जरूर जैनधर्मसे अजानकार रहते। बहुतसे आदमी ऐसी जगह नौकर हैं या कुछ और पेशाकर रहे हैं कि जहां मन्दिर दूर है—न कोई और समागम धर्मोपदेश प्राप्त करने का है—और अधिक खर्च अथवा किसीओर दिक्कत की वजह से न उनको वहाँ लिखे

ग्रन्थ मिल सक्ते हैं। ऐसी जगह वे छपे ग्रन्थों से फायदा उठा सक्ते हैं। और उठा रहे हैं। अतएव इस कहने को कि ग्रन्थ छपनेसे जैन धर्मका प्रचार नहीं हुआ अथवा रुक गया, पहिले बहुत ज्यादह था कोई नहीं स्वीकार कर सक्ता।

अब रही यह बात कि पं० टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखदास जी आदि पहिले ज़माने के विद्वानों के मुकाबले के आजकल के विद्वान क्यों नहीं होते? लेखक महाशय की राय में तो उस का कारण भी छपे ग्रन्थों का पढ़ना ही है। संभव है उन की राय ठीक है। मैं ख्याल करता हूं कि मुझ को इस में मतभेद उपस्थित नहीं करना चाहिये, क्योंकि अपने मामले को मनुष्य स्वयं ही अच्छी तरह समझ सक्ता है। यदि अन्य पण्डितगण भी उनकी राय से सहमत हों तो मैं उनको यह सम्मति ज़रूर दूंगा कि अब तक जो उन्होंने छपे ग्रन्थ पढ़े हैं उसकी बाबत वे प्रायश्चित ले लें और आइन्दा छपे ग्रन्थों को बिलकुल न पढ़ें जिससे वे पं० टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखदास जी आदि पहिले ज़माने के पंडितों के समान हो जावें। इससे लेखक महाशय की राय की परीक्षा भी हो जायगी। और यदि ऐसा हो गया तो फिर लेखक महाशय की राय के सर्वमान्य होने में कोई संशय न रहेगी। मैं इस विषय में अपनी राय लिखना नहीं चाहता था। परन्तु मेरा हृदय मुझको उसके लिखने के लिये बाध्य करता है। इसलिये कुछ लिखता हूं। मेरी राय में तो पहिले ज़माने के विद्वानों की परमोत्कृष्ट विद्वत्ता का कारण छपे ग्रन्थों के बजाय हस्त लिखित ग्रन्थों का पढ़ना न था बल्कि उनका शास्त्र ज्ञान पर मनन करना था। जो कुछ वे पढ़ते थे उस पर मनन इस कदर ज्यादह करते थे कि उनका जीवन ही उस रूप हो जाता था। अनेकान्त व अहिंसा जैन धर्म के मुख्य सिद्धान्त हैं। इन पर मनन करते २ उनका जीवन ऐसा बन गया था कि वे कोई बात एकान्त पक्ष को लेकर नहीं कहते थे और इसलिये उनकी युक्ति के सामने सब को मस्तक नीचा करना पड़ता था। और वे अपने व्याख्यान से विभिन्न पक्ष वालों को शान्त कर देते थे। और अहिंसा उन के व्यक्तित्वमें ऐसा गहरा असर किये हुये होती थी कि वे किसी के साथ भी कलह व द्वेष करना पसन्द नहीं करते थे। प्राणी मात्र का कल्याण करने के लिये वे हर समय तयार रहते थे। अतएव मेरे विचार से तो व जैनधर्म के सिद्धान्तों पर मनन करने से ही उच्चकोटि के विद्वान व आचरणवान बने थे। लिखे छपे ग्रन्थों के पढ़ने का इस बात से कुछ सम्बन्ध न था।

लेखक महाशय ने यहां भी लिखा है कि "आज कल भी समाज में जो उच्चकोटि के दिगम्बर जैन विद्वान पं० गणेश प्रसाद जी, पं० माणिक्यचन्द्र जी आदि हैं, उन्होंने भी तो हस्तलिखित ग्रन्थों से प्रायः दिगम्बर जैन ग्रन्थों का पाण्डित्य प्राप्त किया है।" यह सम्भव है कि प्रारम्भिक काल में जब इन पंडित महाशयों ने पढ़ना प्रारंभ किया हो तो उस समय छपे ग्रन्थ न होने की वजह से उन्होंने हस्त लिखित ग्रन्थ पढ़े हों, परन्तु मेरे ख्याल में ऐसा तो नहीं है कि उन्होंने छपे ग्रन्थ बिल्कुल पढ़े नहीं। और न अब पढ़ते हों तथापि वे ग्रन्थ छपने के खिलाफ हों। यथा स्याद्वाद विद्यालय काशी

और सिद्धान्त विद्यालय मोरेना में छपे ग्रन्थों का व्यवहार नहीं होता रहा है और क्या अब नहीं होता है? क्या इन विद्यालयों का काम बिना छपे ग्रन्थों के बखूबी चल सका है ? मेरे ख्याल में तो स्व० पं० गोपाल दास जी की शिष्य मंडली ने शिक्षा ज्यादहतर छपे ग्रन्थों से ही प्राप्त की है। और वे लेखक की तरह छपे ग्रन्थों के खिलाफ नहीं रहे। और लेखक ने जो श्रद्धा और विनय पर ज्यादह जोर दिया है समझ में नहीं आता शिक्षा और विनय का संबंध छपे व लिखे ग्रन्थों से क्या हो सका है? हमारे ख्याल में तो जिस किसी के दिल पर भी जिनवाणी का सिक्का बैठ गया है, चाहे वह जिनवाणी हाथ से कागज पर लिखी हुई हो, चाहे ताड़ के पत्र पर लिखी हुई हो चाहे तांबे के पत्र अथवा पत्थर पर खुदी हुई हो, वह व्यक्ति तो उस में श्रद्धा और उसकी विनय अवश्य ही करेगा। उसकी श्रद्धा और विनय ऐसी कमजोर कदापि नहीं होगी कि मात्र लिखे व छपे के भेद से उस में फर्क पड़ जाय। जिस के हृदय में शास्त्र ज्ञान की सच्ची विनय है वह तो चाहे शास्त्र हाथ के लिखे हुये हों, चाहे छपे हुये हों—दोनों सूरतों में ही शास्त्रज्ञान की विनय करेगा।

—ऋषभदास जैन बी. ए.

नोट—हमको अपने पंडित महोदयों की मृषा युक्तियों और अनावश्यक विषयों का वृथा उठाने की बुद्धि पर तरस आता है। पाठक गण, उनके लिखने के यथार्थ और औचित्य का दर्शन उपर्युक्त लेख में भली प्रकार कर सके हैं। जिन विद्वान विद्वानों का नामोल्लेख हिन्दी जैन गजट के लेखक ने किया है, वे अवश्य ही शास्त्र-मुद्रण प्रणाली के विरुद्ध नहीं हो सकते। पूज्य ब्र० गणेश प्रसाद जी ने तो मुजफ्फरनगर के परिषद् अधिवेशन में स्वयं उस जैनधर्म सम्बन्धी पुस्तक के छपने का समर्थन किया था, जिसको परिषद् ने सर्व साधारण को जैन धर्म का परिचय कराने के लिये छपाना निश्चित किया था। ऐसी अवस्था में पंडितों का यह प्रथम कर्तव्य होना चाहिये कि जिस किसी विषय में वे अपनी लेखनी का प्रयोग करें उसमें यथार्थता और सत्य के विपरीत कदापि न जांय। परन्तु दुःख है कि सत्ता की लालसा में वे सत्य और यथार्थता को तिलाञ्जलि देते नहीं हिचकते जिससे समाज की हानि हो रही है। ग्रन्थ मुद्रण के विरुद्ध अब फिर जो आवाज उठाई गई है वह भी अपनी निजी उद्देश्यों और सत्ता की लालसा के वशीभूत हो उठाई गई है। छपे हुये ग्रन्थों के कारण समाज में शास्त्रज्ञान बढ़ रहा है और समाज वस्तु स्थिति को देखने में समर्थ हो रही है। हमारे पंडित महोदयों को शायद यह असह्य है। इसी कारण वे इस अनावश्यक विषय को उठा रहे हैं जो शोभनीक नहीं है।

—उ० सं०

एक विधवा युवती की पुकार

हाय ! मैं इस असार संसार में होते ही क्यों न मर गई जो हाथ भर ही कफन लगता, और इस वर्तमान जीवन की कड़ी २ कठिनाइयों से छुट्टी पाती, सासु सुहागन के सामने विधवा वधु न कहलाती, मेरी सुसराल में मेरी सास आज दिन सुहाग का शृङ्गार कर रही है, मांग काढ़, सेंदूर भर, कजरा सार तो ऊपर बिन्दा लगाय रही है। और मैं अनाथ बच्चा लेकर अपने कर्मों को ठोकती हुई घनघर २ कर रही हूं और सुबह से शाम तक दासी बेदाम की बनी हुई हूं। तिस पर चैन नहीं। हमेशा कुवचनों की बौछार मेरे ऊपर हुआ ही करती है। जब पीहर पहुंची तब क्या 'भट्टी में से निकल कर भाड़ में आगिरी' की कहावत होगई। वहां सुहागन माता जी भी मेरी सास से टीम टिमाक करने में कुछ कम नहीं हैं। वहां मेरे हाथ में चरखा कातने को पकड़ा दिया गया, यह मेरा सौभाग्य था।

हमारी सरकार गवर्नमेंट ने सती होने की खुदकशी (आत्मघात करने का एक भारी पाप) न होने का नियम बनाकर हमारी जिन्दगी को आजाद बनाने में तो दया प्रकट की, परन्तु शोक ! कि बाल विवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय (जिनको हमारी जैनसमाज ने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रचलित कर रक्खा है) के रोकने के नियम बनाने के वास्ते आंखों से पट्टी बांध ली ? अब हमारे बुजुर्ग भाई क्यों न इन बातों को रोकने का कड़ा नियम बनावें जिससे हमारा जीवन सुख पूर्वक व्यतीत हो ? इस समय हमारी हालत पर यदि आप लोग विचार और जरा अपने २ कलेजों पर हाथ रख कर, अपने दिलसे ही पूछें तो मृतक से भी गई बीती उसे पावें। जिस प्रकार आप किसी आदमी को (जो एक बड़े जबर्दस्त अजगर सर्प के मृत्युरूपी मुख में फँसा हुआ है) छुड़ाकर, बगैर किसी प्रबन्ध के सुनसान जंगल में ससक २ कर मरने को छोड़ दें और फिर आप यह दावा करें कि हम जीवदया पालते हैं। उसी प्रकार हमारे बड़े २ ढोंगधारियों और खुदगर्जों ने हमारी जिन्दगी तो बख्शी है। लेकिन ऐसी जानबख्शी से लाभ क्या है ? जब कि हमको जीवन भर सिवाय आहाजारी करने और आपको जलील व बदनाम करने के किसी प्रकार जीवनसफल करने

के प्रबन्ध की आशा ही नहीं है।

मेरे दिल में बार २ यह विचार उत्पन्न होता है कि मेरे माता पिता सास ससुर हमें सारी उमर विधवा बनकर सदाचारपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये प्रबंध क्यों नहीं करते ! आजकल वह समय नहीं है कि विधवा शहरों और घरों में रहकर सती ही बनी रहें, जब कि हम देखती हैं कि सधवा ही नहीं मानतीं ! फिर हम पुरुषों से ही प्रश्न करती हैं कि वह धर्म से शपथ खाकर कहदें कि किस २ के परस्त्रीसेवन करने का त्याग है ! इसलिये हमारे माता पिताओं को उचित है कि वह हमारे लिये आबादी से बाहर ऐसे स्थान में रहने का प्रबंध कर दें जहाँ शहर की हवा टक्कर कर भी हमारे शरीर का स्पर्श न करे और न किसी पुरुष की सूरत ही दिखाई पड़े और न माता पिता तथा सास श्वसुर के प्रेमालाप को देख २ कर हमारे चित्त में कोई विकार उत्पन्न हो ! वहां पर ही हम अपना जीवन भगवान् की भक्ति में व्यतीत कर देंगी ! हमारा कोई हक़ नहीं है कि हम बस्ती में रहकर अपने पड़ोस में गृहस्थाश्रम की चहल पहल और शानशौकत तथ नाना प्रकार की काम चेष्टा उत्पन्न करने वाली बातों को देख २ कर अपने दिलों को कमज़ोर बनावें ! क्या यह सम्भव नहीं कि दूसरी सधवा युवतियों की गोद में नन्हें २ बच्चे खेलते हुए देख कर हमारे दिल की हसरतें गुदगुदायें। हाय दैव को यह मंजूर न था कि हम भी बच्चों वाली होजातीं तो अपने दिलों को बच्चों ही से बहलाया करतीं। फिर तुर्रा हमारी विपत्ति का यह कि हमारे ऊपर जबांबंदी की ऐसी धारा ताज़ीरात हिन्द की लगा दी गई है कि हम जीवन भर अपने कष्ट निवारणार्थ अपनी इच्छाओं को भी प्रकट न करें। खेद ! जब कभी बीमारी की हालत व बेहोशी में हम से बेपरदगी होजाती है तो हमारे घर वाले और रिश्तेदार वगैरा हमको इन लानतानियों का शिकार बनाते हैं कि कमबख्त मरती नहीं, पति को भी खालिया और हया शर्म भी उठाकर रख दी। मोहल्ले वाले भी यही आवाज़ कसते हैं कि बड़ी बद किस्मत है। हमारे इधर उधर बैठने उठने पर भी हमको दोष लगाए जाते हैं और हरवक़्त हमारी बुराइयां ही रहती हैं बाज़ बेरहम आदमी अपनी कुवासनाओं में फंस कर हमारे पवित्र मन को चलायमान करने से भरसक कोशिश करते हैं और बहुत सी तरगीबें देते हैं परन्तु उन पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगाया जाता और हमको ही बावजूद अपनी पवित्र आत्मा को उनके पञ्जे से बचाते हुए, सरकश समझा जाता है। हाय ऐसा क्यों ? इसलिए कि हम विधवा हैं ? हमारा संसार में कोई नाथ नहीं रहा ! हे निर्दयी आकाश में रात्रि के समय सम्पूर्ण कलाओं सहित निकलने वाले चन्द्रमा तुझको भी हमारे ऊपर दया न आई ? इसी कारण तेरे ऊपर विधाता ने स्याही की कालिमा लगाई है, जिसका हृदय स्वयं उजला नहीं है वह दूसरे की प्रसन्नता का क्या उपाय कर सकता है ? इस प्रकार हमारे पञ्च भी जिनकी आत्मा स्वयं ही पवित्र नहीं है हमारी विपत्ति के दूर करने का क्या प्रबन्ध कर सकते हैं ? निर्दयी पुरुषों के प्रति कोई पञ्चायती प्रबन्ध नहीं !

पुरुषों की काम इच्छा स्त्री से आठवां हिस्सा होती है, तब उनको क्या हक़ है कि वह एक दो पत्नियों के मरने पर भी बुढ़ापे तक में कुमारी कन्याओं से शादी करें ? और उस नव युवती का

जीवन सर्वथा नष्ट करें ? हाय हम दुखियायें अपनी फरियाद किसके पास लेजायें, सब कानों में तेल डाल २ कर सोये हुए हैं सिवाय इसके कि हम खुआर होती फिरें। नक्कारे की आवाज में तूती की कौन सुनता है। हमारे प्यारे पिता भाइयों! हमारे कष्टों के ऊपर जरा विचार करके दो घोंसू तो कम से कम बहाओ और हम अबलाओं का जीवन सफल और धर्ममय पूर्ण करने के लिए प्रत्येक तीन जिलों में एक आदर्श विधवाश्रम खुलवाओ और वहां इन दुनियां की झंझटों से परे विदुषियों का सत्सं ति का लाभ लेने दो जिससे हमारा सुधार होवे! देखो चोरी करना नहीं सीखता है जिसके माता पिता उसको उसके दुष्परिणाम से आगाह नहीं करते। हजारहा युवतियां यही दुष्कर्म करती फिरती, गर्भ गिरातीं तथा मुसलमान इत्यादि नीच लोगों के साथ भाग जाती हैं, जिनको बुरी दृष्टि से देखा जाता है और उनके जीवनसुधार की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। समाज में चार पांच श्राविकाश्रम खुले हुए हैं। उनमें भी पर्याप्त संख्या में विधवायें नहीं पहुंचाई जातीं! उनको घर में ही दासी की भांति बन्द रक्खा जाता है और उनके जीवन नष्ट किये जाते हैं। हमें भोली भाली बातों में फसाकर पुरुष-पिशाच हमारा सर्वस्व अपहरण करते हैं और पापोपार्जन करने को मजबूर करते हैं। दुर्भाग्यवश यदि कलङ्क प्रगट हुआ तो हम किसी दूर भी नहीं रहतीं। नरपिशाच तो जाति में मिला लिया जाता है और हमें भटकने को छोड़ दिया जाता है। शोक है-शर्म है ऐसे पुरुषत्व पर! मेरी इस हृदय विदारक कहानी को सुनकर वह कौनसा कठोरहृदय है जो न पसीजा होगा? समाज हमारे कल्याणार्थ उचित प्रबन्ध करे यही प्रार्थना है। सारी बदनामियों से बचने का उपाय विधवा स्त्री को किसी योग्य विधवाश्रम में रहने देने में है। वहां वह आदर्श जीवन व्यतीत करना सीखेगी। और पांचों इन्द्रियों के विषयों से दूर रहेगी! वरन् समाज में सदाचार का जीवन व्यतीत करना मुश्किल होगा। बस अगर हम पर दया है तो हमारे आदर्श जीवन व्यतीत करने का प्रबन्ध कीजिये। और विधुर के साथ कुमारी कन्याओं का विवाह किसी अवस्था में भी न कीजिये। जैन धर्मधारी योग्य प्रौढ बलवान युवक युवतियों का ही विवाह कीजिये। जिससे अगाड़ी मुझ सी अभागिन देखने को न मिलें। अनिष्ट से बचना है तो यह प्रबन्ध शीघ्र कीजिए।

मेरी दूसरी प्रार्थना है कि हर एक हिन्दीपत्र के सम्पादक महाशय मेरे ऊपर कृपा करके मेरी इस पुकार को अपने २ पत्र में छापदें और हर एक के कानों तक पहुंचा दें। मैं देखती हूं कि मेरी आह में कुछ असर है या नहीं!

—सीताबाई।

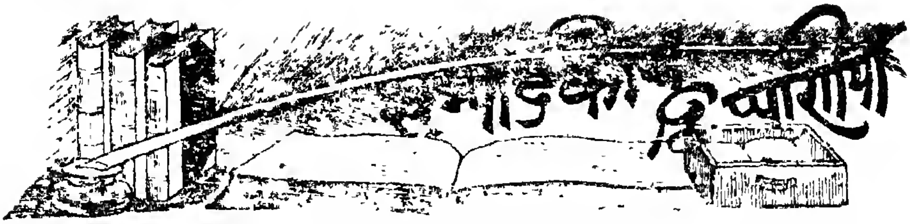

जैन शासन के पालक सर्व ही सैनी जीव हो सकते हैं ।

जैन शासन ने जिस धर्म का वर्णन किया है वह धर्म हरएक मन सहित प्राणी के द्वारा पाला जा सकता है चाहे वह मनुष्य हो, पशु हो देव हो या नारकी हो। वास्तव में जिन प्राणियों के तर्क वितर्क करके, कारण कार्य का विचार करके समझने वाला मन नहीं है वे धर्म के स्वरूप के जानने के लिये असमर्थ हैं परन्तु जिनके मन है उनके यह शक्ति अवश्य है । यदि उनको निमित्त मिले और मिथ्या तथा अनन्तानुबंधी कषाय का जोर कम हो तो उनको जैन धर्म के व्यवहार मात्र का तो श्रद्धान हो ही जाता है। इस अपूर्व शासन में दो ही बातों की मुख्यता है एक स्वात्मोन्नति दूसरे अहिंसातत्व के पालने की । ये ही दोनों धर्म तत्व हैं । हर एक आत्मा जब स्वभाव से परमात्मा के समान शुद्ध ज्ञान दर्शन मय अविनाशी तथा स्वभाव में रमणता रूप परिणमन को रखने वाला है तब इस संसार की अवस्था में जो प्रत्यक्ष हम सबको प्रगट है आत्मज्ञानी, रागद्वेष मोह रूप, क्षण में सुखी व क्षण में दुःखी होने रूप दशा हो रही है वह अवश्य किसी विघ्नकारक पदार्थ के निमित्त से है । उसी अन्तराय कारक को पौद्गलिक (जड़) पाप पुण्यमई बन्धन कहते हैं। यह कर्म बन्धन हर एक संसारी जीव द्वारा नित्य अपने शुभ तथा अशुभ भावों के निमित्त से किया जाता है। दूसरी तरफ पुराना कर्म बन्ध अपना फल प्रगट कर झगड़ रहा है । कर्मों के बन्धने व छूटने का प्रवाह उस समय तक नहीं टूट सकता जब तक कि आत्मज्ञान न हो । आत्मा मेरा सुप्रसिद्ध सज्ञान रागद्वेष रहित है यह है ध्यान तथा ऐसा ही ज्ञान भीतर से होना और आत्मा के भीतर जो अतिन्द्रिय स्वाधीन आनन्द भरा है उसके स्वाद लेने की रुचि होना यही आत्मज्ञान है, इस आत्मज्ञान का बार बार विचार कर स्वाद लेना यही आत्मोन्नति का बीज है। जिनको धान में छिलका व चावल अलग दीख जाता है उनको पांच सेर धान में कितना चावल निकलेगा ऐसा ज्ञान तुर्त हो जाता है, इसी तरह जिसको दृढ़ श्रद्धाज्ञान के अभ्यास के बल से भेद विज्ञान होजाता है उनको पुद्गल से मिले हुए आत्मा के भेद में भी आत्मा पुद्गल से भिन्न झलकता है, इस भेद विज्ञान के प्रताप से रागादि से भिन्न शुद्ध आत्मा की अनुभूति का अभ्यास करना ही आत्मोन्नति का बीज है। जितना ज्ञान व स्व स्वात्मानुभूति के लिये जरूर है उतना ज्ञान वैराग्य चारोंगति के हरएक सैनी जीव को प्राप्त हो

जाता है। नीच से नीच मानव भी इस धर्म के पालने का अधिकारी है, आत्मोन्नति के मार्ग में एक श्रेणी ऐसी आती है जहाँ श्रावक के व्रतों को पालने योग्य ज्ञान वैराग्य की जरूरत पड़ती है उस श्रेणी में भी सैनी पशु व सर्व मनुष्य आ सकते हैं। दूसरी श्रेणी साधुव्रत की है इसमें जितने ज्ञान वैराग्य की जरूरत पड़ती है उतने ज्ञान वैराग्य को लोक पूजित मनुष्य ही प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह यह जैनधर्म जिसका एक सर्वोच्च भाग आत्मोन्नति है अपनी २ पदवी के अनुसार सर्व ही मनवाले जीवों के द्वारा पाला जा सकता है। पूजन पाठ जप तप स्वाध्याय सब आत्म विचार के हेतु से किये हुए ही धर्म की संज्ञा में आते हैं।

दूसरा आवश्यक विभाग अहिंसा का पालन है यह तत्व इस सीधे साधे तत्व पर अवलम्बित है कि जो अपनी रक्षा चाहेगा उसे दूसरों की भी रक्षा करनी पड़ेगी। जब जगत में कोई भी प्राणी मरना व कष्ट पाना नहीं चाहता है तब विवेकी मानव का कर्तव्य है कि जितने अधिक प्राणियों की वह रक्षा कर सके उतना ही ठीक है। इसीलिये किसी भी मानव को निरर्थक पशु पक्षी आदि को न सताना चाहिये। मांस, अतिथि-सत्कार, शिकार, बलि आदि के निमित्त वृथा पशुओं पर निर्दयपना न करना चाहिये व्यवहार में यथाशक्ति परहित करते हुए जीवन बिताना। परोपकारार्थ अपना सर्वस्व अर्पण करना। यही अहिंसा का करने योग्य मार्ग है।

भा० दि० १ जैन परिषद् का कर्तव्य है कि वह स्वयं इस धर्म के दो अङ्गों को पाले और दूसरों से पलवावे।

हमें उचित है कि हम वर्तमान जैनियों को जैन धर्म में दृढ़ करें, भूले हुए जैनियों को मार्ग बतावें तथा अज्ञान में पड़े हुए मानवों को समझा कर जैन धर्म में बिना संकोच के दाखिल करें। इनके साथ भ्रातृपने का व्यवहार करें। अब समय काम करने का है। प्यारे नवयुवक वीरों! उठो! कुछ धर्म की सेवा करो! क्या तुम एक वर्ष में १ मास भी भ्रमण के लिये नहीं दे सकते हो! पहले स्वर्गी० डिप्टी चम्पतराय व सूरजभान वकील आदि आनरेरी रीति से दौरा करके जैन समाज को उठाते थे। अब कम से कम ३० दिन १ वर्ष के भीतर निकाल कर प्रचार का काम करो। एक प्राणी को ठीक मार्ग पर लगा देना जब महान प्रशंसा का काम है तब सैकड़ों को सुमार्ग पर लाना क्यों कर हितकर न होगा। काम करो! परिश्रम करो, और जैन धर्म का विस्तार करो।

परिषद् का प्रस्ताव नं० ६

श्रीयुत् रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शान्तिनिकेतन बलिपुर में विश्व भारतीय विभाग के भीतर जैन धर्म की शिक्षा दिलाना वहाँ के कार्यकर्ताओं ने स्वीकार किया है अतएव वहां एक जैन विद्वान के नियुक्त करने की अतीव आवश्यकता है। नीचे लिखे ५ महाशयों की एक कमेटी बनाई जाती है वह ६ माह के भीतर इसकी उचित व्यवस्था करे। ब्र० शीतलप्रसाद, सिंघाई पन्नालालजी अमरावती सेठ अम्बादास रामजी हमाजन आकोला, बाबू कस्तूरचन्द वकील जबलपुर, बा० रतनलाल बिजनौर।

प्यारे भाइयों ता० २८ जनवरी का यह प्रस्ताव

है जो ता० २७ जुलाई तक पूरा होना चाहिये। इसके लिये १००), १२५) मासिक की जरूरत है। दो भाइयों ने ५ वर्ष तक स्वीकार कर लिये हैं।

२०) लाला उमैदसिंह मुसद्दीलाल अमृतसर २०) सिंहई पन्नालाल अमरावती। अब ६०) या ७५) मासिक की और जरूरत है। कमेटी के मेम्बरों को चाहिये कि फ़ी मेम्बर २०) या २५) मासिक का प्रबन्ध शीघ्र कर दे। हमने सिंघई पन्नालाल जी को लिखा था कि वे दौरे पर चलें उन्होंने अपनी कन्या की बीमारी के कारण असमर्थता बताई।

जो भाई यह चाहते हैं कि हमारे जैन धर्म का पठन-पाठन व प्रभाव देश विदेश में हो उनको शीघ्र ही एक विद्वान नियत करा देना चाहिये। बालपुर में बड़े २ विद्वान एकत्र होकर धर्म की मीमांसा करते हैं।

प्यारे धनवानों धन को सफल करो और इस प्रभावना के कार्य को होने दो।

—सम्पादक।

उत्तर न देने का कारण

चिरकाल हुआ कि हिन्दी जैन गज़ट के खास अंक में एक लेख 'जाति पर वैज्ञानिक प्रकाश'' शीर्षक श्री पं० गोरीलाल जी शास्त्री की ओर से छपा था। उस पर मैंने कुछ प्रश्न किये थे जो 'वीर' में छपे थे। परन्तु पंडितजी ने उन प्रश्नों का उत्तर अभी तक नहीं दिया था। अब हिन्दी जैन गज़ट के अंक ३१ में जो पंडितजी ने जाति गोत्र और उन के वकीलों का वार्तालाप'' शीर्षक लेख दिया है उस में गोत्र और 'वकील के मुंह से यह कहलाया है, *गोत्र किसी जैनपत्र में पहिले प्रश्न किये गये हैं उन का उत्तर क्यों नहीं दिया गया!*

वकील-'उनका उत्तर देना उस ही समय अच्छा होगा जब जैनजनता बड़ी संख्या में उपस्थित होगी'

पंडितजी को मेरे प्रश्नों का उत्तर देने के लिये बड़ी संख्या में जैन जनता की उपस्थिति की ज़रूरत क्यों है? मेरी राय में दो ही जरूरत हो सकी हैं। एक तो यही कि पं० जी चाहते हैं कि जो कुछ वे उत्तर दें उस का ज्ञान अधिक संख्या वाली जैन जनता को हो। ज्यादा तादाद में लोग उससे लाभ उठावें। दूसरी जरूरत अधिक संख्या में जनता इकट्ठा करने की मान बड़ाई प्रख्याति प्राप्त करने की हो सकी है। परन्तु मैं नहीं ख्याल करता कि पंडितजी का ऐसा मन्शा हो। खैर कुछ भी हो। मेरे ख्याल में यह दोनों जरूरतें अखबारों में उत्तर देने से ज्यादा अच्छी तरह व सुगमता से पूरी हो सकी है। क्यों कि पहिले तो जैन जनता की बड़ी संख्या में उपस्थिति के लिये किसी पूजा प्रतिष्ठा का इन्तज़ार करना पड़ेगा और मुमकिन है उस मौके पर अन्यकार्य इस प्रकार अधिक हों कि उत्तर देने का अवकाश न मिल सके। और अधिक काल व्यतीत होजाने पर बात पुरानी पड़जानेसे वह दिलचस्पी भी नहीं रहती। दूसरे यदि किसी जलसे में उत्तर

दिया जाय तो उस में चार पाँचसौ या अधिक से अधिक हज़ार आदमी मौजूद होंगे। परन्तु यदि चार पाँच अखबारों में उत्तर छपवा दिये जांय तो इस से अधिक संख्या के लोग उन को पढ़ सकेंगे और इतमीनान के साथ स्थाई रूप से उनसे लाभ उठा सकेंगे। ज़बानी बात तो बहुत दफा एक कान में पड़ कर दूसरे कान से निकल जाती है। अतएव अधिक संख्या में जैन जनता की ज़रूरत अखबारों में उत्तर छपवाने से ज्यादा अच्छी तरह व आसानी से पूरी हो सकती है। और पं० जी ने जो वकील बनने का कष्ट उठा कर गोमट्टसार आदि ग्रंथों की जानकारी का आक्षेप मुझ पर किया है वह पं० जी की शान के खिलाफ है। मैंने गोमट्टसार आदि ग्रंथों की जानकारी का दावा न कभी पहिले किया न अब करता हूं। मैं तो अपने लिये शिक्षा की ज़रूरत समझता हूं और हर वक्त योग्य व हितकारी शिक्षा ग्रहण करने के लिये तैयार हूं।

—ऋषभदास जैन बी. ए. वकील-मेरठ

साहित्य-समालोचना

भगवान महावीर के जीवन की झलक-(उर्दू) रचयिता रायबहादुर ला० जुगमन्दरलाल एम. ए. एम. आर. ए. एस. आदि। प्रकाशक-जैन मित्रमंडल, दरीबांकला देहली। पृष्ठ ३० मूल्य)॥ मात्र। सफाई छपाई सुन्दर। यह हर्ष का विषय है कि अब भी महावीर जयन्ती के महत्व को समाज हृदयङ्गम करती जा रही है। उस ही शुभ अवसर के हर्षोपलक्ष में यह सुन्दर ट्रैक्ट उक्त मंडल ने उर्दू संसार के लिये प्रकट कर वास्तविक कार्य किया है। मान्य लेखक ने भगवान महावीर के पवित्र जीवन की झलक बड़ी ही खूबी से प्रगट की है। उत्तम हो यदि इन अन्तिम तीर्थङ्कर का एक वृहद् जीवन उर्दू भाषा में प्रकट किया जावे। प्रकाशकों को ध्यान देना चाहिये।

भगवान महावीर और उनकी तालीम-(उर्दू) यह ३० पृष्ठ का ट्रैक्ट जैन सभा रोहतक ने जयन्ती उत्सव पर प्रकट किया है। हम सभा के इस समयोपयोगी कार्य के लिये बधाई देंगे, परन्तु ट्रैक्ट के रद्दी कागज़, रद्दी छपाई और रद्दी सिलाई के प्रति अवश्य ही उस का ध्यान आकर्षित करेंगे। इस लापरवाई ने पुस्तक का महत्व बिलकुल घटा दिया है। सच पूछिये तो यह हृदय के उस आदर भाव के माप को प्रकट करती है जो हृदय में भगवान के प्रति है। ट्रैक्ट पठनीय और अपने विषय का अच्छा है। मूल्य -) है।

ओसवाल—समग्र ओसवाल जाति का एक मात्र मासिकपत्र है। संपादक हैं श्री ऋषभदासजी ओसवाल। वर्ष ७ का दूसरा अंक हमारे सम्मुख है। एक सामाजिक लेख व व्यङ्गचित्र, कवितायें सब ही उपयोगी हैं। सम्पादकीय टिप्पणियां भी उपयुक्त निर्भीकता और स्पष्टता को लिये हुये हैं। समाजहित को दृष्टिकोण करते हुए भी पत्र सर्व प्रिय होसकता है। वा० मू० २॥) ओसवाल कार्यालय, जौहरीबाजार, आगरा से प्राप्त।

सैतवाल जागृति-सं० श्री हिरासाव जिनदास चवड़े वर्धा। यह मराठी भाषा का मासिक पत्र अभी हाल ही में सैतवाल जाति के उन्नति निमित्त प्रकट होने लगा है। इस का ३ रा अंक हमारे समक्ष है। लेख व कवितायें सब मिलाकर छः हैं। सब ही सर्वोपयोगी शिक्षाप्रद हैं। संपादकीय लेखमें मराठी भाषा में प्रकट हुये रा० मोहनी के इतिहास में जैन धर्म संबंधी अयथार्थ बातोंका निराकरण उपयुक्त रीति से किया गया है। एक ब्राह्मण विद्वान् का भगवान महावीर के जीवन पर भी लेख उत्तम है। परन्तु समाजहित सबंधी लेखों का अभाव अवश्य खटकता है। वा० मू० १।) है। जैन सुधाकर प्रेस, वर्धा से प्राप्त।

परिषद् समाचार

उपदेशक की दौरा रिपोर्ट

३० । ४ । १९२५ से १५ । ५ । १९२५ तक

—अमरपाटन। पन्ना से चलकर २।५।२५ को अमरपाटन आए, मन्दिर जी में शास्त्र बांचा गया सभा की गई, उपस्थिति २० थी. धर्म पर व्याख्यान दिया, ४ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा कन्या विक्रय, अश्लील गाने और वेश्यानृत्य की प्रथा बन्द करने का वचन दिया। यहां ७ भाई सभासद् हुए तथा २ भाई वीर के ग्राहक हुए और १ भाई जैनमित्र का ग्राहक हुआ। यहां १५ घर दि० जैनियों के हैं, जनसंख्या ६० के क़रीब है यहाँ से ४ मई को चलकर मैहर गये।

—मैहर स्टेट। यहां मन्दिर जी में शास्त्र बांचा, यहां कुल ३ घर जैनियों के हैं। इसलिये व्याख्यान नहीं होपाया। शास्त्रचर्चा के बाद परिषद् के उद्देश्य समझाये और वेश्यानृत्य कन्याविक्रय, अश्लील गाने की प्रथा बन्द कराई तथा मन्दिर जी में धोती, दुपट्टा, छन्ना आदि शुद्ध खादी के रखने का प्रस्ताव पास कराया। यहां पूजन समय पर होता है, मन्दिर के ऊपर एक नई विपत्ति उपस्थित है, वह यह कि महाराजा मैहर की आज्ञा हुई है कि ज्येष्ठ के महीने भर में बाज़ार के सब मकान पक्के बन जाना चाहिये नहीं तो उस मनुष्य का मकान छीन लिया जावेगा जो नहीं बनवावेगा। तथा उस बाज़ार में जैन मन्दिर भी है उसे भी यही आज्ञा हुई है। लेकिन वहां मन्दिर में कुछ रुपया नहीं है और न वहां के जैनियों में इतनी शक्ति है जो उसको बनवा सकें। ऐसा हाल सुन कर एक दरख्वास्त 'तीर्थक्षेत्र कमेटी बम्बई' और 'परवार सभा जबलपुर' को दिलवाई है।

—रीठी ६ मई को पहुंचे। स्थानीय पाठशाला में बैठक थी, यहाँ सिंघई लक्ष्मणलाल तथा उनके मुनीम पुनऊराम लोधी के प्रयत्न से सर्वसुधार पाठशाला २ मास से स्थापित हुई है, जिसमें लोधी, धीमर आदि जातियों के ४५ लड़के (जो दिन भर अपना मजदूरी व काश्तकारी का काम करते हैं) पढ़ते हैं। उन्हें अक्षरज्ञान तथा मौखिक धार्मिक शिक्षा दीजाती है। पाठशाला का समय ७॥ से १०

बजे तक है। यहाँ से ८ मई को शाम की गाड़ी से रवाना हुए।

—सलेमाबाद (जबलपुर) में ६ मई प्रातःकाल को आये शाम को मन्दिर जी में शास्त्रवँचन के बाद सभा की गई, धर्मविषय पर व्याख्यान दिया। ११ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। शास्त्रसभा स्थापित की। बालविवाह, वृद्धविवाह की प्रथा बन्द की, यहाँ पूजन का प्रबन्ध ठीक नहीं है आपस में फूट है। कभी २ बारह बजे पर पूजन होता है। सभा में अनुमान १ बजे तक समझाते रहे किन्तु कुछ नहीं हुआ। सिंघई जादोलाल की राय पुजारी लगाने में खिलाफ है। यहां से १० मई को गोसाल-पुर आए। यहाँ ५ भाई सभासद् हुए, १ भाई वीर का ग्राहक हुआ।

—गोसालपुर (जबलपुर) १० मई का आये। मन्दिर जी में सभा की गई, १९ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा वेश्यानृत्य, कन्या-विक्रय, आतिशबाज़ी, अश्लील गाने, बाल-वृद्ध विवाह की प्रथा बन्द की। यहां पूजन समय पर होता है। यहां ६ भाई सभासद् हुए। यहां ११ घर दि० जैनों के हैं और जनसंख्या ५० के लगभग है।

—मँझौली (जबलपुर) १३ मई को आये और मोदी दामोदर वा० सिंघई दुलीचन्दजी से मिले और सभा के लिये कहा किन्तु उत्तर मिला कि पण्डित जी साहब यहां पर फूट है आपकी सभामें कोई भी नहीं आ सकता आप क्यों बार २ हमें समझाते हैं। यहां एक मन्दिर में, जिसमें परकोटा है किवाड़ों की आवश्यकता है। १४ मई को करकी आये।

जियाबातीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज।

हारवर्ड यूनिवर्सिटी, अमरीका, के योग्य वैद्य जियाबातीस जोस्लिन (Joslin) और एलन (Allen) साहबान के तरीके-इलाज जिस को तमाम विज्ञान जगत् में प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुताबिक डा० बख्तावर सिंह जैन एम० डी० (अमरीका) सदर बाज़ार, देहली को अपने मरीज़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१—मुझे इस तरीक इलाज से कतई आराम हो गया है। मैंने महाराज साहब श्री नेपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिल्कुल आराम होगया है।

—ह० कर्नल विजय शमशेर जङ्गबहादुरः—Foreign Minister, Nepal देहली।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर प्रमेह रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकूर हूं।

—शीतल प्रसाद राजवैद्य, चाँदनी चौक देहली।

३—४ साल से मुझे शकर-प्रमेह-रोग ने तङ्ग कर डाला था, लेकिन आप के तरीके इलाज से बिल्कुल ठीक होगया हूं।

—जानकीप्रसाद जैन मैनेजर, फोर मिल्स मेरठ।

मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफ़ीद साबित हुआ।

—मित्रसेन जैन रईस, कांधला।

समाचार दिग्दर्शन

समाज

बिजनौर के प्रसिद्ध (देशभक्त) परोपकारी

ला० बद्रीदास जी रईस का स्वर्गवास

ला० बद्रीदास जी की आत्मा ६८ वर्ष की आयु में इस संसार को छोड़ स्वर्ग को पहुंच गई।

बिजनौर के प्रसिद्ध जैन खानदान के आप बुज़ुर्ग थे। बिजनौर का केवल यही एक खानदान था जिसने असहयोग में पूरा भाग लिया था। श्रीयुत् रतनलाल असहयोगी वकील मन्त्री-'भा० दि० जैन परिषद्' व राजेन्द्रकुमार 'प्रकाशक-वीर' भी आप ही के भतीजे हैं।

आप बिजनौर के एक बड़े रईस थे और संस्कृत, अंग्रेज़ी व फारसी के भी विद्वान् थे आपका कितना ही समय शास्त्राध्ययन में लगता था, 'श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र कमेटी' के अन्त समय तक मन्त्री रहे। जैन समाजोत्थान के कार्यों में बड़ा भाग लेते रहे। जैन कालिज सम्बन्धी महासभा के डेपुटेशन के उत्साही मेम्बर थे।

अन्य रईसों की समान आपने अपना रुपया ऐश व सरकार की गुलामी में खर्च नहीं किया बल्कि धर्म व देश के उपकार में लगाया है। बिजनौर का विशाल जैन मन्दिर आप ही का बनवाया हुआ है। बिजनौर ज़िले के जैनियों में विद्याप्रचार के लिये आपके ही प्रयत्न से जैन बोर्डिङ्ग स्थापित हुआ था जो असहयोग के ज़माने से बन्द पड़ा है।

बिजनौर में आने वाले यात्रियों के ठहरने का कोई प्रबंध न देख आपने बिजनौर में जैनधर्मशाला बनवाई है, जिसमें आजकल हज़ारों हिन्दू यात्री ठहर कर आराम पाते हैं। आपकी मृत्यु से जैन समाज एक वृद्ध अनुभवी समाजसेवी विद्वान् से विहीन होगया!

श्री जिनदेव से प्रार्थना है कि आपकी आत्मा को शान्ति दें और आपके भाई ला० महावीरप्रसाद व ला० हीरालाल जी तथा कुटुम्बियों को धैर्य दें।

जीवदया सभा (आगरा) के महानकार्य

—स्टेट एका जिला मैनपुरी में नौ दुर्गा और दशहरा पर होने वाली प्रत्येक वर्ष की सैकड़ों पाड़ा बकरा आदि पशुओं की बलिहिंसा इसी चैत की नौ दुर्गा से राजाज्ञा से सदा के लिये बन्द करा दी है। राजा साहब की तरफ से भी बलि दी जाती थी। कुल बन्द कर दी गई।

देवास बैसाख के मेले पर मैं स्वयं निगरानी को गया था किसी तरह की हिंसा नहीं हुई।

—मौजा गुलावत (देवास) के संन्यासी सीताराम जी ने उपगामों के १५०० मनुष्यों से सही कराकर मांस भक्षण तथा शिकार खेलने का त्याग करवा दिया है।

—मौजा चौरसिया(फरुखाबाद) में तारीख २५ २६ अप्रेल को कछवाह क्षत्रिय महासभा का बड़ी धूम के साथ वार्षिक अधिवेशन था उस में सभा के प्रचारकों को भेज कर यह प्रस्ताव पास करा दिया है कि इस जाति में बलिहिंसा एक दम बन्द की गई। कोई आदमी किसी भी देवता पर किसी तरह की बलि करेगा तो २५) जुर्माना किया जायगा, न देने पर जातिसे खारिज।

सभा ने इस वर्ष सरक्षकी के पद पर श्रीमान् राजा सा० सूर्यमानसिंह जी अवागढ़ को चुना था, खुशी की बात है कि आप की स्वीकारता का पत्र आगया है।

—बाबूराम बजाज मन्त्री।

—भा०दि० जैन अनाथाश्रम देहली का वार्षिकोत्सव आश्रम के आधीनस्थ मिडिल स्कूल है जिसमें धार्मिक व लौकिक शिक्षा दी जाती है अनाथाश्रम के भवन में चैत्यालय बनाया गया है उसकी वेदी प्रतिष्ठा तथा अनाथाश्रम का वार्षिकोत्सव ११ जून से १३ जून २५ तक है। विद्वानों के व्याख्यान होंगे भाइयों को आना चाहिये।

—महावीर प्रसाद मैनेजर।

—भा० दि० जैन पद्मावती परिषद् की अन्तरंग कमेटी की बैठक ता० ६। ५। २५ को फीरोजाबाद में १३ मेम्बरों की उपस्थिति में हुई। जिस में १ यज्ञोपवीत संस्कार कराते २ लड़की के विवाह में स्थानीय पञ्चायत का औसत भार बन्द ३ नियमावली वर्धित तथा संशोधित करने के लिये सिलेक्ट कमेटी का चुनाव ४ जाति की ११ वर्ष की विवाहिता लड़की जबरन दूसरी जाति में ले जाने वालों को दण्ड तथा लड़की को जाति में रखने की आज्ञा ५ विवाह शास्त्र विधि से किस उम्र से किस उम्र तक होना चाहिये इसके निर्णयकी कमेटी का चुनाव ६ मृत्यु समय का नुक्ता बन्द करने को कमेटी का चुनाव आदि प्रस्ताव पास हुए थे।

परिषद् की सेवा के लिये जिन जिन भाइयों ने समय और द्रव्य प्रदान करने के वचन दिये हैं उन्हें पूरे करने चाहिये।

—बाबूराम बजाज महामन्त्री।

—जालंधर छावनी म्यूनिसिपेल्टी में एक जैन मेम्बर की नियुक्ति, हम सर्व जैन बन्धुओं को यह सूचना देते हुए हर्ष होता है कि पञ्जाब प्रान्त की जालंधर छावनी म्यूनिसिपेल्टीके तृतीय वार्षिक चुनाव में सात सभासदों में श्रीमान धर्म प्रेमी ला० मुकन्दलाल जी जैन, मंत्री, दिगम्बर जैन सभा भी बहु सम्मति से सभासद निर्वाचित हुए हैं। अन्य स्थान के जैन भाइयों को भी इस विषय में पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। हम उक्त सभासद महाशय को इस अवसर पर शुद्धान्तःकरण से बधाई देते हैं और उन का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वह अपने कर्तव्य का ध्यान रखना और निर्भीकता से पालन करें।

—मुरारीलाल जैन मंत्री

—जैनपाठशाला की स्थापना हर्षका विषय है कि आगरा में जैन बालकों को धार्मिक शिक्षा देने

के लिये बाबू निर्मलकुमारजी के प्रयत्न से १-५-२५ को एक रात्रि पाठशाला की स्थापना हुई है। यह शुभानुष्ठान "जैन धर्मभूषण" ब्रह्मचारी शीतल प्रसादजी के कर कमलों द्वारा हुआ है। उसी दिन, ब्रह्मचारी जी रायबहादुर बाबू सखीचन्दजी तथा बा० निर्मल कुमार जी के धार्मिक शिक्षा की उपयोगिता के विषय में व्याख्यान हुए। लगभग २५ बालकों को धर्मपाठ दिया गया। बालकों को मिठाइयां बांटने के बाद उस दिन का कार्य समाप्त हुआ। पाठशाला उत्तरोत्तर उन्नति कर रही है। प्रतिदिन ४० बालकों की उपस्थिति रहती है।

(पं० हरनाथ द्विवेदी समाचार दाता)

देश

—मद्रास के तूफान से मद्रास और साउथ मरहटा रेलवे को लगभग दो लाख की हानि हुई है।

—ग्वालियर महाराजा पेरिसमें बीमार हैं। लार्ड डासन चिकित्सा कर रहे हैं। महारानी और युवराज उनके पास रहने के लिये देश से रवाना होगये हैं।

—डेरा इस्माईलखां में मुसलमानों की ओर से इस आशय के बहुत से नोटिस शहर में लगा दिये गये हैं कि अगर जून महीने तक हिन्दू लोग मुसलमान न बन जायेंगे और मुसलमानों की शर्तें मञ्जूर न कर लेंगे तो फिर कोहाट की पुनरावृत्तियां होंगी।

—कलकत्ता १६ मई को हिंदू मुसलमानों में एक दंगा हो गया। एक बंगाली इञ्जीनियर की लाश उनके बगीचे में चिता पर रखकर जलाई जाने वाली थी। इस पर कुछ मुसलमान पास की एक मसजिद से ईंटे फेंकने लगे जिससे दंगा हो गया। एक कान्स्टेबिल भी घायल हुआ।

विदेश

—अंग्रेजों को अब भी बोलशेविज्म का हौआ सताया करता है। पिछले सप्ताह, कई दिशाओं से यह समाचार आये कि अंग्रेज समझते कि बोलशेविक अंग्रेजी राज्य की जड़ें उखाड़ फेंकना चाहते हैं, इसके लिए, वे जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं, कहीं काबुल, और ईरान को बहकाते और भारतवर्ष पर अपना जाल फेंकते हैं, और कहीं अंग्रेज मजदूर समितियों को भड़काते और अपनी तरफ़ तोड़ते हैं। पता नहीं, इन बातों में कहां तक सच्चाई है! यह भी सम्भव है कि ये बातें इस लिए फैलाई जाती हों कि इनकी आड़ में इङ्गलैंड के वर्तमान शासक पूरी कट्टरता के साथ शासन करने की सुविधा पावें।

—काबुल राज्य उदारता और कट्टरता का पुञ्ज भासित होता है। उदारता यहां तक कि २० एप्रिल को जलालाबाद में, बड़ी धूम धाम से सिक्खों का तीसरा वार्षिक दीवान मनाया गया, गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी निकली, और 'वाह गुरु की फतह' से आकाश गुञ्जाया गया, और कितने हो काबुली मुसलमान तक इस उत्सव में शामिल हुए। और कट्टरता यहां तक कि केवल कुछ मतभेद रखने के कारण, दो अहमदिया मुसलमान बड़ी क्रूरता के साथ, पत्थरों की मार से, मार डाले गये! यह अवस्था न संतोष-जनक है, और न सभ्यता सूचक ही!

—अमेरिका में घोषणा कीगई है कि राष्ट्रपति कूलिज एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता कर के लड़ाई में विषाक्त गैस के प्रयोग की सीमा निश्चित करने के पक्ष में हैं।

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

चांदी के कुल भाव १) तोला ☞ ☞ सोने के चढ़े फुल भाव २।) तोला

(सिर्फ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर प्रकार कम व बेसी जितने तौल चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत ।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से १०००)	*बंधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र धक	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चवर एक	७) से २५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२०० से ५००)	*चौकी	५५) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००
*बल्लम	५००) से १००	समोसरन	१००) से ३०००)	*×भामण्डल	२०) से १००)
*घोड़ा	१०) से ७५)				
*छतरी डंडी	२०) से ५०)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका मांडला	१०)से ५००,	*कलशा	५०) से ५००)
जैन मन्दिर के उपकरण ।				तखत चांदी के	२००) से १०००)
गंधकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीपकी रचनाका मांडला	५००)से२०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
वेदी	८००) से ४०००)			*पूजन के बरतन	३००) से ५००)

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिरजी के काम में १०) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं । * ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है ।

पता—(१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुन्नीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) जैन समाज कार्यालय सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel Address—"Singhai" Benares

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शाहजादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते मंगाई थी। जिस को सात दिन मलकर नहाने से गुलाबके फूल की सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग मुंह से फोड़ा फुन्सी, दाद, खाज हाथ पांव का फटना बगल में बदबूदार पसीनेका आना इत्यादि सब को साफ कर चमड़े को नरम कर देती है। यहफूलों से बनाया है इस की खुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी ?।) रुपया ३ शीशी खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ।)

पता:—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को आगरा।

बालरक्षा सप्तरत्न बक्स ।

बहुधा देखने सुनने में आता है कि छोटी अवस्थाके अनेक बालक रोग मसान, पसली, श्वास,खांसी, कफ, दस्त, सुकिया, ज्वर, नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फंसकर मरजाते हैं और ठग लोग उनके माता पिताको भूतादिक की बाधा झपटा नज़र बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता। हमने इसके लिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकों के सब रोग शान्त होते हैं। जो ४० वर्षसे धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एक बार परीक्षा अवश्य करें मू० ।।) डा०ख० ≠ कुल।≈)

मिलने का पता—ज्योतिष रत्नभवन फर्रुखनगर (पञ्जाब)

Regd. No. A. 1271.

क्या आप जानते हैं:--

कि भा० दि० जैन परिषद् के स्वाधीन सदप्रयत्नों द्वारा जिस प्रकार धर्म का प्रचार हो रहा है, यह सर्व विदित है। परिषद् किसी भी सामाजिक झगड़े में न पड़कर स्वाधीन रूप से अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर रहा है। परन्तु उसमें उसे पूर्ण सफलता तब ही मिल सक्ती है जब सर्व सज्जन उसे अपनायें और अपने भरसक उसकी सहायता करें। वस्तुतः देश विदेशों में यदि आप जैनधर्म का प्रचार होता देखना चाहते हैं तो उसकी सहायता कीजिये। उसके द्वारा 'विश्वभारती' महाविद्यालय में इसकी बात का प्रबन्ध किया जा रहा है। दूसरे समाज की दशा सुधारने के यदि आप सदेच्छु हैं और उसे धर्मनिष्ठ देखना चाहते हैं तो उसकी सहायता कीजिये। उसके 'वीर' पत्र तथा उपदेशकों तथा ट्रैक्टों द्वारा इस बात की पूर्ति की जा रही है। तीसरे यदि आप बिछुड़े भाइयों को पुनः जैन धर्म में दीक्षित देखना चाहते हैं तो इसकी सहायता कीजिये, इसका उपदेशक जैन कलालों को पुनः जैनधर्म में ला रहा है। इन धर्ममय कार्यों से यदि आप को प्रेम है-सहानुभूति है तो आज ही जितनी आर्थिक सहायता आप कर सकें कीजिये। यदि समय पर सहायता न मिली तो यह धार्मिक कार्य अधबर में ही रोकना पड़ेगा। लक्ष्मी साथ नहीं जायगी। उसकी शोभा दान में है। इसलिये सब से पहिले परिषद् की सहायता कीजिये।

सहायता भेजने का पता:--	प्रार्थी:--
राय सहाब साहू जुगमन्दरदास	रतनलाल B.Sc.LL.B
कोषाध्यक्ष भा० दि० जैन परिषद	मन्त्री--'भा० दि० जैन परिषद'
नजीबाबाद (बिजनौर यू.पी.)	बिजनौर (यू० पी०)

श्रीयुत अनन्तवीर्य के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

वर्ष २] १५ जून सन १९२५ ई० [संख्या १६

श्री वर्द्धमानाय नमः ।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र ।

ऑन० सम्पादक :
जै०ध०भू०,धर्मदि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादक—
श्री कामताप्रसाद जी

ऑन० प्रकाशक

सावधान ! [illegible] !!! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी।

=) भरी मजदूरी नकाशीदार फैशन काम जैसे वेदी, नालकी, सिंहासन, चंवर छत्र आदि
)॥ भरी मजदूरी सादा काम [illegible] जैसे थाली, लोटा गिलास वगैरह ।

[illegible]

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिर जी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर सिंहासन वेदी नालकी, अष्टमङ्गलद्रव्य अष्टप्रातिहार्य, मुकुट मेर भौमण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान पञ्चमेरु, शिखर कलश कलशी, जरदोजी का सामान जैसे चन्दोवा,परदा [illegible] वन्दनवार इत्यादि।

हमारे यहाँ बनारसी साड़ियाँ साफे दुपट्टे किमखाब थान के थान [illegible], काशी सिल्क के थान, दुपट्टे साफे, [illegible], गोटा पट्टा, पुरुषा साड़ी टकुवा वगैरह।

[illegible]

हारवर्ड यूनीवर्सिटी, अमरीका के योग्य वैद्य जिवगार्दास जोस्लिन Joslin और एलन Allen साहबान के तरीके-इलाज जिनको तमाम विज्ञान जगत में प्रमाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुताबिक डा० वख्तावरसिंह जैन एम० डी०, अमरीका सदर बाजार देहली को अपने मरीजों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१ मुझे इस तरीके-इलाज से काफी आराम होगया है। मैंने महाराज साहब श्री नेपाल नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर-प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिल्कुल आराम होगया है।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर-प्रमेह रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकूर हूं।

तीन चार साल से मुझे शकर-प्रमेह रोग ने तङ्ग कर डाला था, लेकिन आपके तरीके इलाज से बिल्कुल ठीक होगया हूं।

मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफीद साबित हुआ।

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ | बिजनौर, आषाढ़ कृष्णा ९ वीर सम्वत् २४५१ | अङ्क १६

१५ जून, सन १९२५

महा हैं वीर

(लेखक—श्री० विजयकुमार न्यायतीर्थ)

लखें जो शत्रु मित्र समान । सहें उपसर्ग अनेक महान ॥
महा ऋषि ध्यान धरें धरि धीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ १ ॥
सहें सत्याग्रह दुःख अपार । स्वदेशी हितैषि औ करें प्रचार ॥
बनें बन्दीस हरें पर पीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ २ ॥
महा मुनियों न धरें निति पास । सहें खल दुर्जन कहि हैं त्रास ॥
सहें तप रिद्धि प्रजालन धीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ३ ॥
जो अम्बर कम्बर सम्बर काज । तजें, जु दिगम्बर जीतहि लाज ॥
लहें वनवास तिरें भव नीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ४ ॥
महाबल बाहु नरोत्तम भूप । अपराजित प्रभु भये जिन रूप ॥
बिना अपराध हतें न शरीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ५ ॥
नमें देवेन्द्र नरेन्द्र महान । चलावहिं जंगम पोत महान ॥
महाव्रत धारि सहे भव पीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ६ ॥

करें गुरु ते जो दोष बखान । निःशल्य निशंक मुनीन्द्र महान ॥
लहैं अतिदण्ड तपैं तप धीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ७ ॥
जे गौरव त्यागि गये वन माँहि । स्व रत्नत्रय माँहि पाप पलाहिं ॥
तपोनल जारहिं कर्म शरीर । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ८ ॥
जे कामरु वाम वाम भये । स्वातम रस में लवलीन ठये ॥
समता रस रञ्जित निर्भर हार । न हैं वे भीरु महा हैं वीर ॥ ९ ॥

जैन-ला

(ले०-श्रीमान् चम्पतराय जैन बैरिस्टर)

(क्रमागत)

"विधवा वधू का अधिकार"

"पितामह के जीवनावस्था में यदि पुत्र मर गया हो तो" उसकी स्त्री का पितामह के *धन पर भर्ता के समान अधिकार नहीं हो सक्ता* किन्तु पतिव्रता भर्ता के शयन का रक्षण करती धर्म तत्पर विनय से मस्तक नीचा कर श्वश्रू से पुत्र की याचना करे । (१)

उस (पुत्र) के मरजाने पर उस की स्त्री को खर्च करने में कुछ अधिकार नहीं है केवल भोजन वस्त्र के वास्ते नियत मासिक के हिसाब से ले सकी है । (२)

अपने पति का द्रव्य भी जो ससुर और सासू के हस्तगत हो गया है नहीं ले सक्ती केवल पतिसे जो प्राप्त हुआ हो उसी की अधिकारिणी है । (३)

और पुत्र गोद लेना चाहे तो भी उन की ही आज्ञासे सर्व लक्षण सयुक्त पंगज बालक लेवे । (४)

उक्त विधवा सासू की इच्छानुकूल सौंपा हुआ घर का कार्य उस की प्रसन्नता योग्य करती रहे क्योंकि सासू माता के समान है । (५)

"जो पिता की मृत्यु पश्चात् पुत्र की मृत्यु हो"

पुत्र के मरजाने पर भर्ता के सम्पूर्ण द्रव्य की मालिक पुत्र की स्त्री अपनी सासू के साथ कुछ कालपर्यन्त मध्यस्थ भाव से रहे । (६)

खर्च करने का अधिकार सर्वथा पुत्र की वधू को ही है किन्तु जैन सिद्धान्त के अनुसार उसकी साधु को नहीं । (७)

---

(१) देखो भ० सं० ११३, ११४
(२) देखो भ० सं० ६१, व० नी० १५ भा० नी० १०६
(३) ,, ,, ११४ ५५ ,, ११२
(४) ,, व० नी० ३०, ५६
(५) ,, ,, १६, भा० नी० ११
(६) ,, भ० सं० ६३
(७) ,, ,, ७६

सासू की सेवा जिस प्रकार पति करता था उसी प्रकार करे। यदि सासू को धर्म कार्य की इच्छा हो तो धन देवे। (८)

पितामह के क्रमागत श्वसुर के द्रव्य में अपने निजी कार्य में खर्च करने का कुछ अधिकार नहीं है। जिनबिम्ब के उत्सव प्रतिष्ठादि जाति सम्बन्धी धर्म कर्मादि कुटुम्ब पालनादि कार्यों में व्यय कर सकती है दूसरे प्रकार में अधिकार नहीं है। (९)

परन्तु पति की उपार्जन करी हुई जंगम स्थावर स्थापित सामिग्री देव यात्रा प्रतिष्ठादिक धर्म कार्यों में लगाने खर्च करने का अधिकार वह विधवा रखती है जो सासू की सेवा करनेवाली प्रशंसापात्र सर्वप्रिय आदिक गुण वाली होवे। (१०)

यदि उक्त विधवा शीलवाली मिष्टभाषिणी सासू की आज्ञानुसार चलने वाली कुटुम्ब पालन में तत्पर स्वधर्मानुरागिनी कुटुम्ब जनोंके अनुकूल भर्ता की शय्या की सेवक सासू और नित्य पश्चोंसे विनय करता विनययुक्त मस्तक झुकाने वाली ऐसी शुभ स्त्री भी सासू की आज्ञा बिना अपने पति का द्रव्य खर्च नहीं कर सकती। (११)

"अपुत्रा"

जो पुत्र सन्तान बिना मरे वह द्रव्य उस की विधवा को मिले और उस विधवा बहू की मृत्यु होजाने तब उस का द्रव्य सासू लेवे। (१२)

"सपुत्रा"

ब्रह्मचर्य्यव्रत को धारण करती हुई तथा अपने धर्म मे तत्पर कुटुम्ब का पालन करती हुई अपने पुत्र को भर्ता के स्थान पर अर्थात् भर्ता के द्रव्यका अधिकारी नियुक्त करें। (१३)

पुत्र को भर्ता की जगह नियोजित करनेमें उस स्त्री को सास को रोकने का कुछ अधिकार नहीं है और उस के माता पितादिकों को भी कुछ अधिकार नहीं है। उत्तम पुरुष चारों प्रकार के दिये हुये द्रव्य को फिर ग्रहण नहीं करते। ऐसा करने से वे नरक के पात्र होते हैं। (१४)

स्वामी के भाग में आये पश्चात या मोल लिया हुआ धन स्त्री (उसकी जीवनावस्था में) अपनी इच्छानुसार धर्मादिक में व्यय करे परन्तु पति की मृत्यु पीछे खर्च नहीं कर सकेगी। (१५)

विधवा स्त्री पति के द्रव्य की आय केवल निर्वाह योग्य लेती रहे शेष सब द्रव्य का अधिकारी पुत्र ही है। (१६)

विधवा का पुत्र माता की सम्मति बिना खर्च नहीं कर सकता है और उसके मरने पर उसकी स्त्री भर्तार के धन की स्वामिनी होगी। (१७)

कभी बेची नहीं गई और परम्परा से चली आई ससुरे की समस्त स्थावर भूमि को पुत्र की

---

(८) देखो भ० सं० ९९

(९) ,, ,, ५८, ११७

(१०) ,, अ० नी० ११४, ११५

(११) ,, ,, १०५ १०७

(१२) ,, ,, ११३, भ० सं० ११०

(१३) देखो भ० सं० ६५

(१४) ,, ,, ६७-६८

(१५) ,, अ० नी० १०२

(१६) ,, ,, १०३

(१७) ,, ,, १०४

सम्मति बिना विधवा को अपने कार्य में खर्चने का अधिकार नहीं। (१८)

"व्यय का अधिकार"

जो धन बट गया है और अपने २ अधिकार में आ गया उसको खर्च करने का अपना २ सब को अधिकार है। (१९)

विधवा स्त्री कुटुम्ब से प्रथम से जुदी हो तो अपना द्रव्य निज इच्छानुसार व्यय कर सकती है किसी को रोकने का उस को अधिकार नहीं है। (२०)

अति आवश्यकता के समय पर कुटुम्बी जनों के शामिल रहने वाली विधवा भी अपने भाग की संपदा को दान तथा बिक्री पुत्र के अभाव में कर सकेगी। (२१)

"विवाहित पुत्री का अधिकार"

भाइयों के समक्ष विवाहित पुत्री का पिता की सम्पत्ति में कुछ भाग नहीं है विवाह काल में पिता ने जो दिया हो वही उसका है। (२२)

विवाहिता पुत्री अपने २ माता के धन की अधिकारिणी होगी। (२३)

पुत्री के मरने पर उसकी पुत्री उसके अभाव में पुत्री का पुत्र अधिकारी होगा। (२४)

(१८) देखो भा० नी० १०१

(१९) ,, ,, १०८

(२०) ,, ,, १२१

(२१) ,, ,, १२७

(२२) ,, त्रि० सं० १८, भा० नी० २१

(२३) , इ० नि० मा० १४

(२४) ,, ,, १५

"अविवाहित कन्या का अधिकार"

पिता के मर जाने पर भाइयों की सहोदरी एक अथवा बहुत सी कन्या हो तो सब भाइयों को अपने २ भाग में से चौथा २ भाग एकत्र कर के कन्याओं का विवाह कर देना चाहिये। (२५)

बड़े भाई को चाहिये कि अविवाहित भगिनी का विवाह विशेषदान देके कर दे। यदि किसी के दो पुत्र और एक पुत्री हो तो पिता के द्रव्य का तीनों सम भाग कर लें। (२६)

"सगाई पीछे जो कन्या मर जाय"

सगाई किये पीछे (विवाह से प्रथम) कन्या मर जाय तो खर्च काटकर उसका द्रव्य उसके पति को लौटा दे परन्तु जो कुछ कन्या के पास नाना नानी का दिया हुआ हो वह कन्या के भाइयों को दिया जायगा। (२७)

विवाहित कन्या के मरे पीछे उसकी सम्पति का अधिकार

निःसन्तान विवाहित कन्या के मरे पीछे द्रव्य का मालिक उसका पति होगा। (२८)

पति पत्नी दोनों के मरने पर पिता में भक्ति करने वाला गुणवान पुत्र अङ्गज हो अथवा दत्तक पिता माता के सम्पूर्ण धन का मालिक हो सकता है। दूसरे भाई बन्धुओं का उस में कुछ अधिकार नहीं है। (२९)

(२५) देखो भ० सं० १७, व० नी० ६, भा० नी० २५

(२६) ,, इ० नि० सं० २६

(२७) ,, भा० नी० ११६

(२८) ,, भ० स० १७, व० नी० ११ भा० नी० १५

(२९) ,, भ० सं० २८, ६७

जो द्रव्य पिता माता ने दिया हो या जो जमाई के कुल से कन्या को मिला हो उसको कन्या के माता पिता भ्रातादि ग्रहण न करें। (३०)

उसके धन का रक्षक कोई न हो तो उसके पितृ पक्ष वाले धर्म कार्य में लगा देवें। (३१)

जो कन्या माता पिता ने स्वयं न ब्याह दी हो और पुरुष हर ले जाकर गंधर्व विवाह द्वारा स्त्री बनाले ऐसी स्त्री का धन उसके माता पिता या भाई भी ग्रहण कर सकते हैं क्योंकि उसका कन्या दान नहीं हुआ है। (३२)

यदि उस अपनी पुत्री का कोई रक्षक न हो तो उस समय उस पुत्री की तथा उसके धन की रक्षा पिता करे और उसके मरने पर धन को धर्म कार्य में लगावे। (३३)

द्रव्य का प्रबन्धकर्ता नियत करने और उसके हटाने की विधि

सन्तान रहित अथवा सन्तान युक्त पुरुष व्याधि प्रमुख से दुखित होकर यदि अपने धन के प्रबन्धार्थ किसी प्राणी को प्रबन्धकर्ता बनाना चाहे तो लिखित लेख द्वारा पंचजनों की साक्षी तथा राजा की मुहर सहित ऐसे प्राणी को नियत कर सक्ता है जो लिखने वाले की स्त्री आदि जनों की आज्ञा पालने वाला हो। जिसके दोनों अर्थात मातृ पितृ पक्ष स्वच्छ हों और मालदार और सर्व प्रिय हो। (१)

"प्रबन्धकर्ता के प्रतिकूल होने पर कर्तव्य"

मृत पतिकी विधवा स्त्री अपने द्रव्य के अधिकारी को कोमल वचन से समझावे यदि नहीं माने तो राजा मन्त्री आदिक के समक्ष उस को समझावे। यदि फिर भी नहीं समझे तो मन्त्री की आज्ञा लेकर पुराना हो या नवीन हो उसे घर से निकाल देवे। (२)

प्रबन्धकर्ता के हटाने पर

अपने पति के समान उस कुली स्त्री को भी अपने द्रव्य का यत्न पूर्वक रक्षण करना चाहिये और कुल क्रम से आये हुये व्यवहारों को भी दूसरे योग्य पुरुषों द्वारा करावे। (३)

(३०) देखो भा० नी० ८२
(३१) „ „ „ विशेषार्थ
(३२) „ „ „ भनि विशेषार्थ
(३३) „ „ ८२

(१) देखो व० नी० १६, १७, भा० नी० ४६-४८
(२) „ म० सं० ७१, ७२, व० नी० २०-२३, भा० नी० ४६, ५०
(३) „ „ भा० नी० १०, ५०

दमन का दुष्परिणाम।

(ले०-श्रीयुत पन्नालाल जी सरसीवाला)

राजनैतिक क्षेत्र में भी सरकार समय २ पर दमन-नीति का उपयोग करती है लेकिन प्रजापक्ष के नेताओं तथा विद्वानों का एक स्वर से कहना यही है कि यह रोग की दवा नहीं है, बल्कि इस से रोग ज्यादा २ बढ़ता है। यदि यह बात सत्य है और उसके सत्य होने में सन्देह भी नहीं हो सकता है, कारण कि अनुभव से यही बात पाई जाती है तब तो यही कहना पड़ेगा कि सामाजिक रोग की भी दमन-नीति कदापि दवा नहीं है। यहां पर समाज का थोड़े गहरे विचार करने की आवश्यकता है।

यह तो हर विचारवान व्यक्ति स्वीकार करेगा कि विधवा के नाममात्र से न तो चौंकने की जरूरत है और न उसका अब समय ही है। जब से समाजों की व्युत्पत्ति है तभी से विधवायें हैं और तभी से उनके कारण होने वाली दसा, पचा, विनैकया, लहुरीसेन आदि उपजातियें हैं। पति सहित को सधवा इसी तरह पतिरहित को विधवा कहते हैं। विवाह का अर्थ वास्तव में उस खुशी की अवस्था से है जो स्त्री-पुरुष के जोड़े को सामाजिक नियमानुसार संबन्ध निश्चित होने पर स्वयमेव होती है। मनुष्यमात्र अनादि से समाजरूप में रहता आया है, कारण तभी उसकी यथोचित वृद्धि हो सकती है। अन्य प्राणियों में समाज की व्यवस्था नहीं है और इसीलिये उनके यहां नर-मादी का जोड़ा यों ही बनता मिटता रहता है, लेकिन यह अवस्था न तो मनुष्यों के लिये वाञ्छनीय है और न सम्भव ही है। इस तरह पर यह बात सहज ही समझ में आजाती है कि विवाहकार्य एक सामाजिक व्यवस्थामात्र है ताकि स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध न्यायानुमोदित रूप से होवे और स्वेच्छाचार की वृद्धि न होने पावे। प्रकृति की अनुल्लंघनीय योजना है कि स्त्री व पुरुष जोड़े रूप से रहें और जब २ जहां २ इसके विपरीत कार्य होता है वहां पर अनिष्ट बिना घटित हुए नहीं रहता, यही प्रकृति का दण्ड है जो चाहे रुचिकर हो चाहे अरुचिकर भोगना ही पड़ेगा।

विधवायें अनेक कारणों से होती हैं, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह तथा अनमेल विवाह प्रयत्नः रोके जा सकते हैं, लेकिन यह तो निर्विवाद है कि तब भी विधवायें होवेंगी, कारण जिस पुरुष के साथ उसका सम्बन्ध हुआ है यदि उसकी आयु का अन्त आगया है तब कौन उसे जीवित रखने को समर्थ है किसकी कितनी आयु है इसके जानने का कोई समुचित साधन नहीं है और अनुभव से प्रत्यक्ष है कि ज्योतिष उस काम को नहीं कर रहा है अभी तक उन प्रत्येक समाजों ने जिनके यहां विधवाओं की पुनर्लग्न नहीं होती है, उनके यहां विधवाओं के लिये यही श्रेष्ठमार्ग बतलाया है कि वे जीवन का उत्सर्ग करें। गृहस्थी में रहकर भी कमलवत

पापों से परे रहें और ऐसा जीवन व्यतीत करें कि परभव में उनको यह दुःख न भोगना पड़े, स्त्री पर्याय से छूट जावे आदि। जिनके चित्त की वृत्ति वास्तव में पलटा खाती है, उनके लिये अन्य श्रेष्ठ मार्ग हो ही नहीं सकता लेकिन समाज में हर तरह के पुरुष, इसी तरह हर प्रकार की स्त्रियें होती हैं व इतने दिनों के अनुभव से समाजों को भली भांति विदित ही है कि उनकी अधिकांश विधवा बाईयें श्रेष्ठ मार्ग के पालने में असमर्थ हैं तब स्वतः प्रश्न होता है कि क्या समाज को इसके लिये श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है और नहीं तो क्या? क्यों समाज का यही ध्येय है कि जो स्वतः श्रेष्ठमार्ग को न पालें वह उन से अलग होजावें—उनके ऐसे कलङ्कों की जरूरत नहीं, लेकिन इस दमन-नीति का क्या यही परिणाम देखने में जगह २ नहीं आरहा है कि जो श्रेष्ठ मार्ग पर नहीं चल रहे हैं वे अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये नाना उपाय करते हैं जिनमें भ्रूण हत्यादि घोरतर पाप के काम शामिल हैं और इस तरह जाति को कलङ्कित करके तब कहीं जाति से अलग होते हैं जातिप्रेम स्वाभाविक है और कौन बिना प्रयत्न के उसे योंही छोड़ देने को राजी होगा। यदि समाज अपनी चाल ढाल बदल देवे, इन अभागिनियों के लिये भी श्रेष्ट मार्ग पर चलने की व्यवस्था करे तब क्या उसका यह परिणाम नहीं होगा कि जीवन वास्तव में ज्यादा शुद्ध बनेगा। हाल के अनाचार बन्द होजावेंगे धर्म भाव ज्यादा बढ़ेगा और जातियों की सच्ची कीर्ति प्राप्त होगी हाल में वैराग्य ही वैराग्य है और तब आगार व संसार की वृद्धि के साधन जुटेंगे। हाल की व्यवस्था विधवाओं के लिये वास्तव में देखा जावे तो सामाजिक दृष्टि से व्यवस्था है ही नहीं। जिस कन्या के संबन्ध के लिये हम सब लोग थोड़े दिन पहिले इतने चिन्तित न रहते हैं कि कोई रोटा नहीं पचती उसी से थोड़े दिन बाद विधि की कटाक्षता से विधवा होजाने पर समाज यही कहती है कि तुम्हारे भाग्य की परीक्षा होचुकी अब आगे को जन्म भर दुःख भोगो। कर्मों को रोओ! कुछ भी करो। तुम्हारी व्यवस्था नहीं। परन्तु इस तरह से काम नहीं चलेगा, जड़ को हाथ लगाइये तब रोग की जड़ टूटेगा। मुख्य रोग समाज को विधवा की अव्यवस्था का है। आज तक आपने कुछ नहीं किया है और तभी तो पापस्वरूप आप मिटे जा रहे हैं। स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम है ही कि जिस के कारण बहुत से कुंआरे रह जाते हैं, विवाहित स्त्रियों में करीब २ एक तृतीयांश विधवा हैं। इनसे उत्पादन का कार्य रुक जाता है। सामाजिक व्यवस्था उनके लिये कुछ नहीं है। श्रेष्ठ मार्ग पर चलने का प्रबन्ध नहीं है। बस बहुतेरे कुंआरे व विधवा प्रति वर्ष कलङ्कित होते हैं। और बहुत ही बुरी तरह से जाति को छोड़ने को बाध्य होते हैं, इनमें जितने दसा बिनेकया आदि होजाते हैं वे फिर भी जैनियों की गिनती में रहते हैं लेकिन जो और ज्यादा बिगड़ते हैं वे जाति और धर्म दोनों ही की संख्या को न्यून करते हैं और इस तरह पर प्रकृति अपना दण्ड समाज से वसूल करती है। जाति के पत्र अनेक हैं लेकिन सामाजिक समाचार प्रकाश पाते ही नहीं हैं कारण वही झूठी प्रतिष्ठा, जो अपनी जांघ उघा... व आप ही लाजन मरे, लेकिन ऐसा कौन स्था... है जहां कतिपय विधवाओं का अपवाद न हो और

जिनके कारण गृहस्थ के ये भाव न होते हों कि इस बदनामी से तो कहीं अच्छा था कि जाति इन के लिये कोई व्यवस्था करती ताकि ये ज्यादा शुद्ध जीवन व्यतीत करने को समर्थ होती और अपना आत्मकल्याण कर सकती। विधवाओं को गृहस्थों से अलग आश्रमों में रखना श्रेष्ठ मार्ग है। और प्रौढ़ अवस्था एवं परस्पर सब जातियों में विवाह करना संख्या की कमी को रोकने का उपाय है। अतः समाज का प्रथम कर्त्तव्य है कि सच्ची परिस्थिति क्या है इसका ज्ञान बहुत शीघ्र प्राप्त करें और यदि संसार में बने रहना चाहते हैं तो इस प्रश्न का उचित रीति से हल करें।

संक्षेप में व्यवस्था का यह रूप हो सकता है कि समाज का नियम हो कि जिस स्त्री का सौभाग्य कर्मोदय से अस्त होगया है वह अपने स्वरूप का विचार करे, संसार को अनित्य जानकर धर्माचरण में प्रवृत्ति करे और एक साल से लगाकर तीन साल तक ऐसा जीवन व्यतीत करे कि चित्त की वृत्ति पलट जाने और आगे को पथभ्रष्ट होने की संभावना न रहे, यदि इसी समय में उसे मालूम पड़े कि उसका चित्त स्थिर नहीं होता है तो किसी विदुषी के साथ रहने का प्रबन्ध करे-आश्रम में रहे। हां पतित विधवाओं के प्रति समाज कुछ दया का बर्ताव करे। उनके लिये भी प्रायश्चित का नियम रक्खें। इस व्यवस्था से विधवायें शुद्ध जीवन व्यतीत करने का सच्चा प्रयत्न करेंगी कारण उन को आशा रहेगी कि यदि समर्थ न हुई तो समाज उनके लिये व्यवस्था करेगा। सभाओं में व्यवस्था कीजिये। खाली ढोंग से काम नहीं चलेगा।

श्रुत पञ्चमी

(१)

जेष्ठ के दिन थे। गर्मी तड़ाके की पड़ रही थी। दिनकर महाराज का रथ ज्यों २ अगाड़ी बढ़ता था त्यों २ उसका उग्र ताप सब को सब ठौर तापित और श्रान्ति कर रहा था। रेल गाड़ियां इस तप्त ताप में दौड़ती खासी भट्टी सरीखी हो रही थीं। इस समय कलकत्ता एक्सप्रेस में लाला धर्मप्रकाश जी सफर कर रहे थे। वह अभी हाल ही में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं। उत्तीर्णता के हर्ष में वह कलकत्ता की ओर सैर करने को चले गये थे। आज वह अपने घर लौट रहे हैं। करीब ११ बजे गाड़ी विक्रमपुर स्टेशन पर खड़ी होगई। लाला साहब उतर पड़े। ज्यों त्यों जल्दी में अपना सामान उतारा। घर पर पहुंचे। सबको उनके आगमन से खुशी हुई। मां, बहिन और भाई सभी ने उन को आ घेरा। बातें करते कराते शौचादि से वह निवृत्त हुए। मां समझी बेटा अब मन्दिर जी दर्शन जावेगा। अंग्रेजी पढ़ कर सब धर्मभ्रष्ट हो जाते हैं परन्तु जब अपने 'धर्म' को उसने मन्दिर जी को दर्शन करने जाते देखा तो वह अवाक् रह गई। उसे विश्वास न होगया कि अंग्रेजी पढ़ने से कोई धर्मभ्रष्ट

नहीं होता। बात यह थी बनारस में जैन विद्यार्थियों ने अपनी एक सभा बना रक्खी थी और उस में जैन धर्म के ज्ञाता विद्वान विद्यार्थियों को धर्म शास्त्र भी बताते थे। बस धर्म साधन के होने से अंग्रेजी पढ़ते हुए भी विद्यार्थियों के आचरण बुरे नहीं हो पाते थे। धर्म साधन के अभाव में भले ही ऐसा कहीं होता हो, परन्तु धर्म ज्ञान का प्रबन्ध होते हुए अंग्रेजी पढ़ने से कोई धर्म भ्रष्ट नहीं हो सकता। धर्म से जानकारी मिल चुकी थी। मिश्री का स्वाद आगया था फिर भला उसे कैसे भुलाया जाता। धर्मप्रकाश शीघ्र ही मंदिरजी में पहुंचे और बड़ी भक्ति से भगवान का स्तवन वंदन किया। परन्तु उसदिन मंदिरजी में नव भी अपूर्व समारोह देख वह चकित अवश्य थे। जब वह श्री जिनवाणी के दर्शन करने पहुंचे तो वहां उन्होंने सब शास्त्रों को बाकायदा अलमारियों के बाहर चौकियों पर विराजमान देखा। कोई उनके वेष्टन बदल रहा था तो कोई उनको धूप दे रहा था। गर्ज़ यह कि शास्त्रों का उद्धार हो रहा था। धर्मप्रकाश को याद सुध आगई कि आज श्रुत-पंचमी है। आज ही के दिन पूर्वाचार्य ने परम सिद्धान्त षट् खण्डागम की रचना कर उसे लिपिबद्ध किया था। पहिले के ऋषिगण उन्हें कण्ठाग्र रखते थे। परन्तु अगाड़ी यह संभव नहीं। इसीलिये आचार्य श्री ने उपकार कर उन की ग्रंथरूप रचना की थी। धर्म प्रकाश ने बड़ी विनय से जिनवाणी की वन्दना की। उपस्थित पुरुषों ने आपके इस प्रेम को देखकर बड़ा हर्ष प्रकट किया। एक वृद्ध सज्जन ने कहा—"भाई धर्म! हमारे नेताओं ने आज का पर्व खूब समारोह के साथ मनाने को कहा है। सो हम लोगोंने अपनी प्रथा के अनुसार जिनवाणी की विशेष-अर्चन की है। परन्तु हम चाहते हैं कि आप सर्व साधारण को इस पर्व का महत्व समझायें।" धर्म ने कहा—"आपकी आज्ञा शिरोधार्य है परन्तु किसी योग्य विद्वान को आप बुलाते तो अच्छा था।"

(२)

तीसरे पहर चार बजे से श्री मन्दिर जी में स्त्री-पुरुष आने लगे। सब यह जानने को उत्सुक थे कि श्रुत-पंचमी है क्या? और अंग्रेजी पढ़ा धर्म उसके बारे में क्या कहेगा? देखते २ मन्दिर जी खचाखच भर गया। एक दो भजन हुए। मंगलाचरण हुआ। लाला जिनेशदास सभापति हुये। उनके कहने पर बाबू धर्मप्रकाश जी ने एक सारगर्भित व्याख्यान दिया, जिसको सुनकर लोगों की आंखें खुल गईं। उन्होंने बड़ा हर्ष प्रकट किया अपने अहाभाग्ये समझे। किन्हीं ने तो यह निश्चय कर लिया कि हम भी अपने लड़के को एक जैन बोर्डिङ्ग में रखकर अंग्रेजी पढ़ायेंगे। बहुतेरों ने उनके भाषण से छापे और गैर छापे के भ्रम को खो दिया। उन्होंने जान लिया कि धर्मशास्त्र चाहे हाथ के लिखे हों और चाहे प्रेस के छपे हों—हैं वही श्री जिन भगवान के यथार्थ वचन। उनकी विनय हमें समानरीति से करनी चाहिये, धर्मप्रकाश जी ने उपस्थित सज्जनों का ध्यान वास्तविक प्रभावना की ओर आकर्षित किया। बतलाया यद्यपि हम भक्तिवश श्री जिनवाणी की पूजन-अर्चन से विनय करते हैं परन्तु यहीं विनय का अन्त नहीं होजाता और इतने करने से ही धर्म की वास्तविक प्रभावना नहीं होता। वास्तविक धर्म प्रभावना के

लिये ज़रूरत है कि उच्च कोटि के धर्मात्मा विद्वान उत्पन्न किये जांय। वे अंग्रेज़ी भाषा के साथ २ धर्म के भी पंडित हों। ऐसे ही विद्वान अग्रगण्य हो सकते हैं और उन्हीं के द्वारा इन बहुत शास्त्रों का अर्थ आपको और संसार को मालूम हो सकता है। जिससे यथार्थ धर्म का सितारा फिर से दुनियां में चमक सकता है। ऐसे विद्वानों की सृष्टि के लिए एक जैन कालिज को शीघ्र स्थापित करना चाहिये। साथ ही सच्ची श्रुत विनय इस ही में है कि हम धर्म शास्त्रों का महत्व समझें। उन्हें पढ़ें और औरों को उन्हें सुनावें। प्रत्येक शास्त्रभंडार की सूची तैयार करावें। और जो ग्रंथ जीर्ण हों उनका उद्धार करावें। तथापि एक केन्द्रस्थान पर बृहद् जैन पुस्तकालय स्थापित कराकर उसमें उपलब्ध शास्त्रों की नकल करवाकर विराजमान करें। एवं एक ऐसा शुद्ध जैन प्रेस स्थापित करावें जिससे अल्प मूल्य में विशेष देखरेख के साथ ग्रन्थ मुद्रित कराकर प्रकाशित किए जांय। इन बातों का जब हम प्रबन्ध करेंगे तब ही हमारा श्रुत पंचमी मनाना होगा। वरन् सामान्यरूप से सदैव ही श्रुतपंचमी मनाई जाती है। परन्तु इस सामान्य लीक पीटने से हम अपने आचार्यों के उपकार ऋण से उऋण नहीं हो सकते। शास्त्रोद्धार के लिये अमलीकार्य करने में ही सच्ची विनय है। उपस्थित सज्जनों पर इन बातों का विशेष असर पड़ा। उन्होंने प्रस्तावरूप में निश्चय किया कि भा० दि० जैन परिषद् को यह कार्य सौंपा जाय। उसकी पूर्ति के लिये उन्होंने फण्ड करके मन्त्री को भेजना निश्चय कर लिया। और आशा की कि अन्य स्थान के भाई भी ऐसा करें। अन्त में जिनवाणी की जय बोल कर सभा विसर्जन हुई।

--श्रुतसेवी।

बम्बई में म० गांधी जी का व्याख्यान।

मेरे लिये तो मुक्ति का दरवाज़ा अहिंसाधर्म का पालना है।
मैंने जैनशास्त्रों का अभ्यास किया है और उन पर मेरी श्रद्धा है।

बम्बई में जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स के समय महात्माजी ने एक सारगर्भित व्याख्यान दिया। आपने कहा:—'मुझ पर जैन भाईयों की इस कदर कृपा दृष्टि है कि मुझ को उनकी लेना देनी है। भारतवर्ष में एक सगे भाई के समान भाई बन्दी के साथ रहने का दावा जैन ही कर सके हैं। मेरे परममित्र डाक्टर प्राणजीवन जैन हैं जिनके चरित्र का मुझको सम्मान है। रायचंद भाई मेरे मित्र थे। और शहर बंबई में मेरे रहने का जो स्थान है वह भी एक रेवाशंकर जैन भाई का है। फिर आज इस कान्फ्रेन्स के सभापति साहब से मेरा पूरा परिचय है। सफ़र के मध्य मुझे बहुत से जैनभाईयों से अक्सर वास्ता पड़ा है। और बहुत से उस समय मुझ से पूछते हैं कि क्या आप जैन हैं? इस प्रश्न के उत्तर में मैं यदि नहीं कहूं तो उनको दुःख अनुभव करते देखता हूं। इसका मतलब इसके सिवा और कुछ नहीं कि यदि मैं जैन होता तो ठीक इससे उनका प्रेम मेरी ओर होता, ऐसा मैं ख्याल करता हूं। क्योंकि जिस बात को वह मानते हैं उस पर मैं अमल करता हूं।

मानं सम्पादक- ब्र॰ शीतलप्रसाद जी, कामताप्रसाद जैन एम॰

अहिंसा की बाबत जितनी दृढ़ता से मैं उसे पालन करता हूं उतनी शायद वह जैनी न करते हों। मैं जब श्री पालीताने गया। उस समय मुझे श्री शत्रुञ्जय जाना हो था। और वह केवल सैर के वास्ते नहीं बल्कि भक्ति से जाना था। उसके दर्शन कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। प० लालन आदि मेरे साथ थे। मै पांव की रक्षा के लिये लकड़ी की खड़ाऊँ पहनता हूं। और उनकी आवश्यकता रहती है। पहाड़ पर चढ़ते हुए खड़ाऊं उतरवाने को उनको मुश्किल मालूम हुई। परन्तु मैं समझ गया और उनके बिना ही ऊपर चढ़गया। सभापति जी ने मुझसे यह प्रश्न किया है कि भारत की सेवा में जैन भाई किस तरह भाग ले सकते हैं? सो पहिले तो अपने २ माने हुए धर्म पर स्थिर रहना यह पूरा सिद्धान्त है। इस मामूली बात के बाद धर्म के दो भाग होजाते हैं। प्रथम सारे जगत् के जीवों को जो बात आम तौर पर मन्जूर हो वह सामान्यधर्म है। दूसरे धर्म के असली और मामूली सिद्धांतों को अमल में लाने की कार्रवाई करना यह विशेष धर्म है। इस समय मैं विशेष धर्म की बाबत जिक्र करूंगा। जो सिद्धान्त सर्व धर्म मानते हैं उनका तो पूर्णरूप से पालन करना चाहिये। इससे ज़ाहिरा धर्म की उन्नति होती है। परन्तु विशेष धर्म में इतनी ज़िद न करनी चाहिये कि जिससे कर्म बांधने का मौका मिले। क्योंकि धर्म में बंधन नहीं होते। इसलिये ऐसे समय में यह समझना चाहिये कि शास्त्र का अर्थ समझे बिना अन्धों की तरह दौड़ते हुए सब ओर मैं देखता हूं कि भारत में धर्म के नाम पर झगड़ा होता है। जैनियों के पास धन बहुत है परन्तु उसका व्यवहार अकसर गैरवाजबी तौर पर होता देखता हूं। सन् १९१५ में श्वेताम्बर-दिगम्बरों के झगड़े का फैसला करने के लिये मुझको बीच में डालने की बात हुई थी, क्योंकि मैं वकील हूं और मैंने जैनशास्त्रों का किसी क़दर अभ्यास भी किया है और श्रद्धा भी है। तौ भी अब तक कोई फैसला लेने नहीं आया। अपने झगड़े के लिये अभी प्रिवी कौन्सिल की मुहब्बत [illegible]। मैं पूछता हूं 'क्या प्रिवीकौंसिल न्याय कर सकेगी?' (आवाज़-'हरगिज़ नहीं') और यदि न्याय हो भी तो क्या अपने में कोई नहीं कर सकता? और यदि इसमें अन्याय भी होवे तो 'क्या वहां (प्रिवी कौन्सिल में) ऐसा अन्याय नहीं होता? आदमी से गलती होती भी है। और इसी तरह अदालत में भी ज्यादातर जान या अजानकारी में अन्याय होने का मौका अधिक मिलता है। क्योंकि वहां सत्य और प्रमाण के बिना मेरा 'पक्का' ठीक और सही है यह दोनों फरीकों का हवाला होता है। जिस समय प्रिवी कौंसिल नहीं थी उस समय क्या होता था? ज़रा इसका तो ख्याल करो। पहले मैं तुमको कहता हूं मैदान साफ करो, मेरे साथ में अहिंसा धर्म का पालन करो। यह एक सत्य है कि जीवदया अर्थात् कीड़े, खटमल आदि जीवों को न सताना। बात ठीक है। परन्तु यह धर्म तो तमाम जगत पालता है। जैनियों की तरह दूसरे भी जीवों को न मारने वाले बहुत हैं। हिन्दू जाति में गऊ रक्षा की शक्ति होने पर भी अज्ञान के कारण रक्षा नहीं की जाती। इसी तरह इन जीवों

की आदत भी है। खटमल आदि यह हमारी परीक्षा लेने वाले हैं। यदि तुम सफाई रक्खो तो खटमल ही न हों। अतएव यदि खटमल न हों यह अच्छा है अथवा खटमल पैदा करके मारने से बचाना यह अच्छा है। इसका आप खुद ख्याल करें जो आदमी छोटे से छोटे प्राणी की दया के लिये तैयार होता है उस को प्राणीमात्र पर दया रखनी ही चाहिये। और सीधी तरह यदि समझा जावे तो हरएक मनुष्य पर दया रखना चाहिये। मै हिन्दुस्तान में जो कार्रवाई चला रहा हूं वह जीवदया ही की है। धर्म का सिखलाना व्याख्यान देकर नहीं होता बल्कि अमल करके बतलाने से होता है। मेरे लिये तो मुक्ति का दरवाजा जीवदया का पालना ही है। मैंने इसी से हिन्दू मुसल्मानों को एक बनाना सीखा। ऊंच नीच के फरक से दूसरों का दिल दुखा कर काम करने से जीव दया नहीं होती। नीच कौन है? यह मैंने इसी से सिखाया। उनको खिलाकर खाना और उनको सुला कर सोना ही मैं धर्म समझता हूं। यदि तुम को स्वराज्य की जरूरत है तो उनको अपना ही समझना पड़ेगा। यह तो व्यापार की बात हुई अब धर्म की बात करता हूं। तुम पगड़ी पहनकर अपने आपको अच्छे मालूम कराते हो और बहिनें साड़ी पहिन कर अच्छी मालूम कराती हैं। मगर वह चूं कि दूसरे देश की हैं इस लिए अच्छी मालूम नहीं देती। यह न ख्याल करो कि गान्धी धोखा देता है। अपने कर्म के वश होकर जिस देश में उत्पन्न हुए हैं उस देश का कर्ज देना ही चाहिये। कई भाई यह विचार करते हैं कि दूसरे देश का नुकसान करने से अपना भला नहीं होता। परन्तु इसमें उनकी गल्ती है। जीवदया का सिद्धान्त दूसरों की खातिर अपने को छोड़ देना नहीं बतलाता। अपने लड़के को छोड़ कर दूसरे के लड़के को दूध पिलानेवाली मां अपने लड़के के लिये गैर होगी। और गैर तो गैर ही रहेगा। यदि अपना पालन न करें और विलायत, जापान आदि का फायदा करने का ख्याल सोचते रहें तो वह दलाल डुबाने वाली होगी। और यह जानते हुये इसको छोड़ना चाहिये, ऐसा मैं समझता हूं। तुम्हारे आगे मैंने मोटी बातें रक्खी हैं। बारीक बातें नहीं रक्खीं। यह खाना और यह नहीं। इसका बारीक ख्याल मैंने किया है। और इसका पालन भी करता हूं। तुम भी खास २ सब्जियों का त्याग करते होंगे। जो आदमी जितना संयम अर्थात् त्याग पाले उतना ही कम है। परन्तु इतने में ही नहीं पड़े रहना चाहिये। स्वराज्य के लिये बहुत कुछ करना है। मैं यह समझता हूं कि इस समय ज्यादा खींचने से कुछ नहीं बनेगा। इसी लिये और बातों को छोड़ कर तीन बातें कर रहा हूं। हिन्दू मुसलमानों के इत्तफाक में मैं तुम से कुछ हिस्सा नहीं मांगता। क्योंकि तुम उसमें पक्के हो। अछूतपनमें वैदिक धर्मवाले शास्त्र पेश करते हैं। तुमलोग शास्त्रोंका हवाला नहीं देते-सिर्फ रिवाज कहते हो। परन्तु मैं तो इसके वास्ते इतना ही समझूंगा कि झूठ में शान्ति की जगह नहीं। इस लिये हमको सत्य और अहिंसा ही स्वीकार है। तीसरी बात यह है कि अपने भाइयों के प्रेम के लिये भारत की रुई से भारत में ही सूत काता जावे। और कपड़ा बनाया जावे। सभापति जी अब

मिल के मालिक हैं इस लिये वह कहेंगे कि हम तो यह कारवाई करते ही हैं। परन्तु मैं पूछता हूं कि दो सौ रुपये दो सौ भाइयों के जेब में डालो वह अच्छा है, या अकेला अपने खीसे में ही रक्खो यह अच्छा है, हिन्द के जीवन का नाश करके मिलें चलें यह तो मैं हरगिज़ नहीं चाहता हूं। यद्यपि किसी हद तक मिलें अपनी गर्ज़ पूरी कर सकेंगी परन्तु मैं तो चाहता हूं कि हाथ से कातना और हाथ से बुनना खुद मिल के मालिकों को करना चाहिये। इसी में उनका और भारत का भला है। मुझे एक जैन भाई ने पुरानी दस्तावेज़ बतलाई। इस भारत में विदेशी व्यापारियों ने किस तरह फायदा उठाया यह दर्ज है। इससे मालूम होता है कि व्यापारियों की मारफत ही भारत गया और इसी तरह व्यापारियों के खुदगर्ज़ी का त्याग करने से ही हम फिर भारत को हरा भरा कर सकेंगे। सारांश यह कि व्यापारियों के हाथों में ही प्यारे देश के स्वतन्त्र होने की चाबी है। जैनियों का व्यापार अधिक है इसलिये इस बात की ओर मैं उनका ध्यान खींचता हूं।

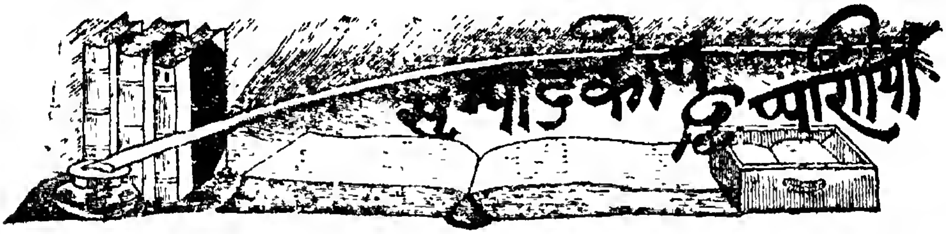

भारत दि० जैन परिषद्

परिषद् को स्थापित हुये आज क़रीब तीन वर्ष के होने आते हैं। इस अल्पकाल में परिषद् ने जो मौलिक कार्य जैनधर्म के प्रचार और समाजोन्नति के किये हैं, वह छिपे हुये नहीं हैं। वस्तुतः समाज ऐसे एक परिषद् की आवश्यकता का अनुभव कर रही थी। यही कारण है कि उसने परिषद् को विशेष दिलचस्पी से अपनाया है। परन्तु दुःख है कि शेडवाल सम्मेलन से जो द्वन्द्वयुद्ध समाज के शिक्षितों के दरमियान चालू हुआ है, उसके कारण जहाँ अन्य मिथ्या बातों को सिरजा जा रहा उसी तरह परिषद् के संबंध में भी लोग ग़लतफ़हमी ज़ाहिर कर रहे हैं। 'परवार बन्धु' के गताङ्क में सिवनी के एक महाशयने समाज के नाम एक शिक्षाप्रद खुली चिट्ठी प्रकट की है। हम उस के उद्देश्य से पूर्णतया सहमत हैं। हमारा यह मत प्रारंभ से रहा है कि एक भारत व्यापक प्रतिनिधि जैन सभा में प्रत्येक जाति और विचार के मनुष्य सम्मिलित रहना चाहिये। अब भी समाज की भलाई इस ही में है कि सर्व प्रकार के जैनियों का एक सम्मेलन एकत्रित किया जाय और वह इस संस्था को एक वास्तविक रूप दें। परन्तु उक्त लेखक ने उस चिट्ठीमें एकाध स्थान पर किञ्चित भ्रम को जन्म दिया है। परिषद् के

संबंध में यह कहना कि वह केवल बाबुओंकी ही संस्था है, इसलिये वह उस में मनमानी कर सकेंगे बिलकुल गलत बात है। परिषद् की स्थापना केवल इस बात को लक्ष्य कर की गई थी कि महासभा द्वारा वास्तविक कार्य नहीं होता। इस लिये वास्तविक कार्य करने के लिए एक अलग निष्पक्ष सभा कायम की जाय। उसी के मुताबिक परिषद् का जन्म हुआ और उस में बाबू, पंडित और सेठ सब ही सम्मिलित हुये। यद्यपि यह अवश्य है कि कार्य कर्त्ताओं में मुख्यता बाबुओं की है। परन्तु इसके अर्थ यह नहीं हैं कि परिषद् के स्थान और सदस्यपन किसी खास पार्टी के लिये निर्णित हों। इसकी साक्षीमें उसका कार्यक्रम मौजूद है। परिषद् द्वारा अबतक जो कार्य हुये हैं उन से जैन धर्म की अप्रभावना किसी तरह भी नहीं हुई है। प्रत्युत उस के मुखपत्र द्वारा देश और विदेशों के विद्वानों में यथार्थ जैन धर्म के विषय में ज्ञान फैलाया गया है। दुःखका विषय है कि आधुनिक (Standard) विद्वान् दिगंबर जैन धर्मके विषय में बिलकुल ही कम ज्ञान रखते हैं। उन में वास्तविक धर्मके ज्ञान प्रचार हेतु परिषद्ने बोलपुरके 'शान्ति निकेतन विश्वभारती विश्वविद्यालय' में एक जैनाचार्य को नियुक्त कराने की योजना की है। मात्र दातार महाशयों की अनुदारता के कारण ही अभी तक वहां जैन-पंडित की नियुक्ति नहीं हो पाई है। परन्तु हमको विश्वास है कि हमारे जिनवाणी भक्त सेठगण उसकी पूर्ति शीघ्र ही करादेंगे। इसके अतिरिक्त आवश्यक और उपयोगी ट्रेक्टों को विविध भाषाओं में प्रकट कराकर और अजैन जनता में वितरण करके धर्म प्रचार का कार्य किया जा रहा है। साथ ही जैन धर्म के विषय में आवश्यक ज्ञान कराने के लिये एक ऐसी पुस्तक तैयार हो चुकी है जो किसी भी विद्वान के हाथ में दी जा सकती है। फण्ड के मिलते ही वह प्रत्येक भाषा में प्रकट की जायगी। जैन इतिहास सम्बन्ध में भी उसकी ओर से प्रयत्न हो रहे हैं। प्रसिद्ध जैन इतिहासज्ञ बाबू हीरालाल जी एम० ए० इस ओर विशेष कर्तव्य परायण हैं। उनके एवं अन्य ऐतिहासिक लेखों ने, जो 'वीर' में प्रकट हो चुके हैं, विद्वानों का ध्यान जैनधर्म की ओर आकर्षित किया है। इसके अतिरिक्त दो तीन जैन-पंडित गण परिषद् की ओर से सर्वसाधारण में जैनधर्म का प्रचार कर रहे हैं। नागपुर के आस पास बसे हुये हजारों प्राचीन जैनी अपने धर्म को भूले हुये हैं। उन जैनकलारों को पुनः जैन धर्म में दीक्षित किया जा रहा है। परिषद् के उपदेशक उनके मध्य घूम रहे हैं। निस पर सब से बड़ा धर्म प्रचार का कार्य स्वयं धर्म का प्रकाश अपने आचरण द्वारा करने में है। परिषद् के सभापति श्रीमान् बैरिस्टर चम्पत राय जी श्रावकों के लिये एक सच्चे आदर्श हैं। 'वीर' के संपादक पूज्य ब्र० शीतल प्रसाद जी जिस प्रकार अपने सदाचरण द्वारा धर्म का प्रकाश कर रहे हैं यह सर्वविदित है। और इसके मान्य मन्त्री एवं अन्य सदस्यगण अपने आचरणों द्वारा धर्म प्रकाश करने में सदैव तत्पर रहते हैं। उधर समाजोन्नति के कार्यों में भी अबतक जो सफलता मिली है वह सर्व प्रकार के मनुष्यों के परस्पर सहयोग का ही फल है। परिषद् ने जो एक सामाजिक नियमों के लिये प्रारम्भिक दस्तूर

कल्प-आवक बनाया था, उसकी असली पूर्ति उपदेशकों द्वारा कराई जा रही है। समाज की मरणासन्न दशा की रक्षा के लिये कमेटी नियुक्त की गई है उस में न्या० पंडित व० मणिकप्रसाद जी सदृश विद्वान् सम्मिलित हैं। वह कमेटी अपनी रिपोर्ट तैय्यार कर रही है। दिगम्बर और श्वेताम्बरों के मध्य परस्पर एकता कराने के लिये भी प्रयत्न किये जा रहे हैं। शेडवाल से जो अशांति उत्पन्न हुई उसको शांति पूर्वक मेटने के लिये ही परिषद् ने प्रयत्न किये और उसमें सफलता क्यों नहीं प्राप्त हुई यह श्रीमान् सेठ नेमिचन्द जी अजमेरी के पत्र से प्रकट है जो उन्होंने सेठ नवलचन्द जी को लिखा था एवं जिस को सेठ जी ने, "जैन मित्र" में प्रकट किया है। जिसपर अब भी परिषद् के प्रयत्न इस ही ओर अग्रसर हैं कि समाज में पारस्परिक साम्य शीघ्र ही स्थापित हो। परन्तु जहां केवल पारस्परिक घृणा की ही प्रधानता प्राप्त हो वहां सहसा सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। इस सब के होते हुये भी परिषद् ने जो अंग्रेजी भाषा का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में धर्म ज्ञान के प्रचार की योजना की है उससे अगामी बाबू दल में धार्मिकता बढ़ेगी, जिससे वह उच्छृङ्खलता दिखाई ही नहीं पड़ेगी जो अब तक कभी कभी दिखाई पड़ जाती है। प्रो० लक्ष्मीचन्द जी द्वारा जैन विद्यार्थियों में धर्मज्ञान के प्रचार का प्रबन्ध हो रहा है। फिर भी परिषद् का यही लक्ष्य है कि शीघ्र ही एक जैन कालिज स्थापित होजाय, जिससे आधुनिक ढंग के धर्मविज्ञ विद्वान उत्पन्न हो सकें। आज कोरे अंग्रेजी पढ़े हुये अथवा मात्र संस्कृत जानने वाले धर्म की वास्तविक प्रभावना नहीं कर सके। सारांशतः परिषद् ने जो कुछ अभी तक किया है उससे धर्म की प्रभावना और समाज को लाभ ही हुआ है। उसके इन कार्यों में बाबू, पंडित और सेठ सब ही सम्मिलित थे। वह किसी खास पार्टी की सभा होने का दावा नहीं करता—यदि दावा करता है तो वास्तविक कार्य करने वालों की सभा होने का। इस लिये बन्धुओं! यदि आप सच्चे दिल से जैनधर्म का प्रचार और समाज की उन्नति करना चाहते हैं तो परिषद् को अपनाइये। उस के द्वारा समाज में ऐक्य स्थापित कीजिये। धर्म का झंडा पुनः विश्वभर में व्याप्त कर दीजिये। परिषद् के अधिकांश कार्य अभी तक सर्वथा पूर्ण नहीं हुये हैं उस का कारण समाज के उत्साह की कमी है। सेठ गण, यदि परिषद् के कोष को प्रचुर धन से परिपूर्ण करदें तो एक दफा फिर जैन धर्म का सिक्का संसार पर जम सका है। सच्चे कार्य कर्ता परिषद् द्वारा समाज की बहुत कुछ सेवा कर सके हैं। बस आवश्यक्ता है धन की और काम करने वालों की! क्या भगवान महावीर का कोई भी सच्चा भक्त असलियत को देखकर धर्मप्रभावना के लिये परिषद् की सहायता करने अगाड़ी आयगा? कार्य करने वाले मौजूद हैं उनसे यदि कार्य लेना है तो परिषद् की सहायता कीजिये।

भारतीय सम्वादपत्रों की दशा

भारतीय सम्वादपत्रों का इतिहास यद्यपि बहुत प्राचीन नहीं है तो भी वह विशेषतया अज्ञात ही है। परन्तु इतना तो अवश्य ही है कि गत कुछ वर्षों में उनकी उन्नति विशेष हुई है। प्रत्येक भाषा में आज

साप्ताहिक, मासिक, पाक्षिक, दैनिक आदि सामयिक पत्रों का अस्तित्व पाया जाता है। परन्तु यदि यह बाढ़ सुशृङ्खलित होती तो इस साहित्य की विशेष उन्नति होने की संभावना थी। उस दशा में ग्राहकों की मांग हरदम बढ़ुआकर हिन्दीपत्रों के समक्ष न रहती। यदि वह नवीन प्रणाली को लक्ष्य कर लकीर के फकीर बना रहना छोड़ कर और नकल करने की आदत को सुधार कर अब भी अपनी दशा को सभालें तो बहुत कुछ समुन्नत बना सकते हैं। हाल में जो भारतीय सम्वाद पत्रों का सम्मेलन हुआ था। उसमें 'स्टेट्समैन' के संपादक महोदय ने कतिपय बातों की ओर भारतीय पत्र संचालकों का ध्यान आकर्षित किया है। आपने कहा था कि भारतीय पत्रों में बहुधा व्यक्तिगत आक्षेपों की भरमार रहती है। उनका कागज, छपाई आदि इतनी भद्दी होती है कि पाठकों और विज्ञापनदाताओं दोनों को ही अरुचिकर होती है। तीसरे उनमें विलायती पत्रोंकी नकल करके विदेशी खबरों के तार ही तार भर देते हैं। भारतीय पत्र जातीय समाचारों को जितना चाहिये उतना स्थान नहीं दिया जाता। वस्तुतः सम्पादक महोदय के लांछन सर्वथा उपयुक्त हैं, परन्तु व्यक्तिगत आक्षेपों के विषय में हमारे बहुत से सम्पादकगण सहमत नहीं हैं इधर हिन्दी, उर्दू एवं जैनपत्रों की प्रगति की ओर जरा ध्यान देने से सम्पादक महोदय का उपर्युक्त लांछन सर्वथा ठीक प्रमाणित होता है। जैन पत्रों का तो यह कुछ उद्देश ही अधिकांश में हो रहा है कि वे एक दूसरे को गाली गलौज दें। यहां तक व्यक्तियों का अपमान इस जाति के मुखपत्र होने का दम भरने वाले पत्र द्वारा होता है कि हठात् उन्हें कोर्ट की शरण लेनी पड़ती है। हिन्दी पत्रों में भी परस्पर खींचा तानी हुआ करती है। उर्दू के पत्र भी इस दोष से मुक्त नहीं हैं। शेष छपाई सफाई और नकल करने की आदत भी सर्व विदित है। अतएव इन कमताइयों को दूर करने के लिये आवश्यकता है कि भारतीय पत्र संसार का एक समुचित संगठन किया जाय जो उसकी उन्नति के उपाय ढूंढ निकाले। तिस पर व्यक्तिगत आक्षेपों और विलायती खबरों की भरमार अवश्य ही भारतीय पत्रों के लिये कलङ्करूप है। इस कलङ्क को शीघ्रतम धो डालना आवश्यक है।

—उ० सं०

साहित्य समालोचना

श्री पार्श्वनाथ देवस्थान संस्था आर्वी और श्री कौंडण्यपुर देवस्थान की आय-व्ययरिपोर्ट इस में उपरोक्त दोनों तीर्थों का हिसाब क्रमसे १४ और १७ साल का इकट्ठा प्रकट किया गया है। अब दोनों क्षेत्रों का प्रबन्ध एक कमेटी के आधीन है। रिपोर्ट में सब बात का खुलासा है। तीर्थों का प्रबन्ध किस प्रकार होता है और कैसे होता था तथा कितने मंदिर, कितने शास्त्र, कितनी मूर्तियां और कितने उपकरण-जायदाद हैं यह सब बातें इस रिपोर्ट से जानी जा सकती है। प्रत्येक तीर्थ क

ऐसा ही प्रबंध हो इस बात की आवश्यकता है। श्री कंपिला जी क्षेत्र के प्रबंधकों को इससे शिक्षा लेना चाहिये। हिसाब व तीर्थ परिचय प्रगट होने से तीर्थ का महत्व और प्रबंधकों की निःस्वार्थता का पता साधारण जनता को लगता है। इस में हानि कुछ नहीं है।

परवारबन्धु--अखिल दि० जैन परवार सभा का यह सचित्र मासिक मुखपत्र श्रीयुत् साहित्य रत्न पं०दरबारीलाल जी न्यायतीर्थ के सपादकत्व में तीन वर्ष से निकल रहा है। तीसरे वर्ष की १-२ संख्यायें समालोचनार्थ प्राप्त हैं। प्रत्येक में सादे चित्रों के अतिरिक्त एक कार्टून भी है। लेख परवार बन्धुओं के लिये तो लाभ प्रद हैं ही परन्तु साधारण जनता भी इससे लाभ उठा सकी है। जैन मासिक पत्रों में यही जातीय पत्र होते हुये भी सर्वतोभद्र प्रतिभासित होता है। उत्तम हो यदि इसमें मूल्यमय स्थाई साहित्य भी प्रकट किये जाने की व्यवस्था हो जाय। वा० मू० ३)। प्रकाशक-मास्टर छोटेलाल जैन, परवार बन्धु आफिस, जबलपुर।

जैन समाज सुधार माला के प्रथम वर्ष का १ रा अंक समालोचनार्थ हमारे होथों में है। इस का सम्पादन ओजस्विनी भाषा में मुनि प्रेमानन्द जैन सुचारू रीति से करते हैं। समाज सुधार हेतु नवयुवकों को जोश देना और कुरीतियों की आलोचना करना इसका मुख्य उद्देश्य है। वा० मू०२)। प्रकाशक-श्री विजयराज महता,सेन्ट थॉमसमाउन्ट मद्रास।

उत्कर्ष-श्री अखिल दि० जैन लम्वेचू सभा का मुखपत्र है इस का स्वागत करते हम को परम हर्ष है। प्रथमदर्शन से रूप-राशि और भाव भूषा में उत्तमता ही प्रकट होती है। आशा है सुयोग्य सपादक द्वय (श्रीयुत पं० कुंअरलालजी न्यायतीर्थ व श्री पं० भम्मनलाल तर्कतीर्थ) के हाथोंमें इस की विशेष उन्नति होगी। और यह लम्वेचूओं में जीवनता लाने के सद् प्रयत्न करेगा। वा० मू० २॥)। प्र० श्रीताराचंद रपरिया बेलनगंज, आगरा।

हिन्दी पुष्कर–सचित्र मासिक पत्र पुनः बरेली से श्रीयुत् गंगासहाय पाराशरी के संपादकत्व में प्रकट होने लगा है। लेख उपयोगी और शिक्षाप्रद हैं। सम्पादकीय विचार भी मार्मिक हैं। हम हृदय से सहयोगी की उन्नति चाहते हैं। वा० मू० २॥)। संपादक को सुन्दर निकेतन बरेली के पते से प्राप्त।

मैनपुरी के नवयुवक ध्यान दें

हमारे हर्ष का पारावार न था जब हमने सुना कि मैनपुरी के बुढ़ेले नवयुवकों ने एक धर्म कार्य पर सत्याग्रह का अनुसरण किया है। जसवन्तनगर के हाल में हुये विवाह समय जो दान वरपक्ष ने किया था उसमें श्री तीर्थक्षेत्र कम्पिल जी के लिये भी कुछ रकम थी। जसवन्तनगर की पंचायत इस रकम को मैनपुरी के कम्पिल व्यवस्थापकों को नहीं देती थी इसी बात को लक्ष्यकर

सत्याग्रह किया गया था। बात तो ठीक थी और ऐसे धर्मकार्य के लिये सत्याग्रह करना भी उचित था, परन्तु अनुसन्धान ने कुछ और ही हकीकत जाहिर की। मालूम हुआ कि जसवन्तनगर एवं कतिपय अन्य स्थानों की पंचायतें कम्पिल जी की रकम उसके वर्तमान प्रबन्धकों को इस ही लिये नहीं देते हैं कि आजतक इस क्षेत्र का हिसाब प्रकट नहीं किया गया है। वस्तुतः ऐसी दशा में मैंनपुरी के नवयुवकों का 'सत्याग्रह' सत्याग्रह न होकर दुराग्रह था। यदि वास्तव में वे सच्चे हृदय से कम्पिल क्षेत्र की भलाई पर तुले हुए थे अथवा हैं तो उन्हें सब से पहिले कम्पिल क्षेत्र का प्रबन्ध ठीक कराना आवश्यक है। उसका हिसाब बाकायदा प्रगट कराने के लिये यदि वे सत्याग्रह करते तो उनका उक्त सत्याग्रह दुराग्रह न कहा जाता। बल्कि इस सत्याग्रह की जरूरत ही न पड़ती। हिसाब मिलते रहने पर सब लोग स्वयं सहायता करते और इतनी प्रचुर सहायता मिलती कि कम्पिल के मन्दिर के पुराने धर्म शाला के जीर्ण होने की नौबत ही न आती, बल्कि इतनी रकम बच रहती जिससे अधूरा नया धर्म शाला सहज में पूरा हो जाता। अतएव प्यारे नवयुवकों! यदि आप के हृदयों में सच्चा तीर्थ प्रेम है तो उक्त मार्ग का अवलम्बन कीजिए जिस से आपके उत्साह को कोई लाञ्छन न लगा सके और आपके साथ कपटाचार का व्यवहार न कर सके! जब तक आप तीर्थ क्षेत्र का प्रबन्ध बाकायदा नहीं करालेंगे तबतक आप किसी तरह भी क्षेत्र की भलाई नहीं कर सकेंगे। प्रत्येक देवस्थान का प्रबन्ध नियमित होना चाहिये और उसका हिसाब प्रति वर्ष प्रकट होना लाज़मी है। तब ही उस देवस्थान की उन्नति होना संभव है। हमको विश्वास है कि मैंनपुरी के नवयुवक इस ओर ध्यान देंगे और क्षेत्र की उन्नति करने में अग्रसर होंगे। सर्व प्रथम सचाई और परस्पर प्रेम एवं विश्वास को अपनाना परमावश्यक है। नवयुवकों को समाज में इसकी सृष्टि करने के लिये सब कुछ सहन करना चाहिये। इन्हीं बातों के लिये सत्याग्रह शोभता है। आपसी ऐक्य बढ़ाने में और जाति की दशा सुधारने में सत्याग्रह की शरण लेना सर्वथा सराहनीय है। बरात के स्थान पर यदि सगायभगत की उस सजातीय विधवा की रक्षा के लिये हमारे नवयुवक सत्याग्रह करते तो सर्वथा अभिवंदनीय थे जो एक मुसलमान के पंजे में मय अपने दो कुमारी कन्याओं के पड़कर धर्म को तिलाञ्जलि दे रही है। क्या इस घटना से समाज की आँखें विधवाओं के प्रति किये जाने वाले अत्याचारों के लिये खुलेंगी? क्या इस दारुण घटना से समाज की नाक बची ही रही कही जा सकी है? समाज आंखें खोल और विधवाओं की दशा सुधारने का प्रबन्ध कर उनको सत्सगति में रखने और श्राविकाश्रमों में भेजने का प्रबंध कर सजातीय नवयुवकों, सत्याग्रह करो इस लज्जाजनक दशा को मेटने के लिये-सत्याग्रह करो समाज में से अज्ञान को हटाने के लिये। मिथ्या अभिमान का नाश करने के लिये, अन्यथा सत्याग्रह को कलंकित मत करो!

—उ० सं०

हिसाब आय-व्यय जैन हाईस्कूल पानीपत

१ अप्रैल १९२४ से ३१ मार्च १९२५ तक

तफ़सील आमदनी

१ चन्दा माहवार	२३२८)
२ प्रोविडेन्ट फंड	३९७॥।) ॥
३ प्रोविन्शियल ग्रान्ट	५३६९)
४ म्युनिसिपलिटि ग्रान्ट	६२२॥)
५ ग्रांट राजा खेड़ी ब्रांच	१५)
६ स्कूल और बोर्डिङ्ग की फीस	४९६८॥~)।
७ दान एक रुपया फंड	५३५॥)
८ लायब्रेरी के वास्ते	१००)
९ मकान ठेका	१५००)
१० पुराना सामान बच्चा	१४)
११ संदुकचों से निकला	५२३)
१२ विवाह के समय	२१२)
१३ जन्म के समय	३५)
१४ मृत्यु के समय	३००)
१५ मुतफर्रिक तौर से आया	२९६॥।=)
१६ किराया ज़मीन	१~)
१७ संस्कृत विभाग	१५७२॥)
१८ रोकड़ जो १-३-१९२४ को खजांची के पास मौजूद था	२३=॥~)॥

मीज़ान आमदनी १९७५३॥।)॥

तफ़सील खर्च

१ प्रोविडेंट फण्ड	४३५=।≠)
२ कर्ज़ा दिया गया	१६५९॥)
३ तनख्वाह स्कूल सामान बोर्डिङ्ग हाउस आदि	९२९३१॥।)।
४ बोर्डिङ्गहाउस के लिये ज़मीन खरीदी	६००)
५ खर्च राजा खेड़ी ब्रांच	२८६॥≠)॥
६ खर्च स्काउट (Scouts)	४६)
७ छपवाई रिपोर्ट	३४॥)
८ छपवाई अपील	३४॥)
९ खर्च नाइट स्कूल (Night Sahool)	२६।≠)
१० सफ़र खर्च चन्दा इकट्ठा करने का	१५।≥)॥
११ मैनेजिङ्ग कमेटी के दफ्तर का खर्च	९९~)॥
१२ संस्कृत विभाग	६५८≥)॥
१३ रोकड़ जो ३१-३-२५ को खजाञ्ची के पास है	१३०४॥≥)॥

मीज़ान खर्च १९७५४॥।)॥

हिसाब आय-व्यय "संस्कृत-विभाग" निम्नप्रकार है-

तफ़सील आमदनी

१ रोकड़ जो १-३-२४ को खजांची के पास मौजूद थी	१९२॥~)

तफ़सील खर्च

१ छात्रवृत्ति (Step hands)	५१०≥)॥
२ छपवाई रिपोर्ट	१७।≠)

२ चन्दा लाला राधालाल नेमदास जी पानीपत		१५०)
३ " रायबहादुर ला० लक्ष्मीचन्द जी पानीपत		२८०)
४ " ला० बिरञ्जीलाल जी पानीपत		२८०)
५ " पं० कनूलसिंह व पं० रामजीलाल पानीपत		६०)
६ " ला० परमानन्द, सुन्दरलाल व अर्हद्दास जी पानीपत		६०)
७ " ला० हरसिंह जी पानीपत		८४)
८ " ला० अर्हद्दास जी पानीपत		६०)
९ " ला० ज्योतिप्रसाद टीचर पानीपत		१४)
१० " बाबू शोभीचन्द जी बी. ए. इन्जीनियर पानीपत		६०)
११ " सेठ जैकुमारसिंह व सेठ परमानंद जी इन्कम टैक्स अफसर		१०)
१२ " जैन पंचायत पानीपत, दश लाक्षन में दान किया		२५१)
१३ " जैन पंचायत इटावा दस लाक्षन में दान किया		२०)
१४ " विवाह आदि में आया		५८।-)
१५ " छात्रवृत्ति वापिस आई		
	मीज़ान	१६८४॥-)

३ " अपील		१७।≠)
४ छपाई इत्यादि		६)

पण्डितों, हिंदी और अंग्रेजी के तमाम टीचरों की तनख्वाह और सब खर्च हाई स्कूल के फण्ड से दिया गया है।

मीज़ान खर्च	६५८≠)॥
रोकड़ जो ३१ मार्च १९२४ को खजांची के पास जमा है।	१०२६॥-)।
टोटल	१६७०॥-)

नोट—१) लाला किशोरीलाल बसन्तलाल जी, शामली। १॥) लाला नत्थूलाल जी ठेकेदार झज्जर। ५) जैन पंचायत कटक। ५) जैन पंचायत बनारस। इन सज्जनों ने इस विभाग को दान किये, अतएव इन सबों को धन्यवाद देते हैं।

जयकुमारसिंह जैन, मैनेजर।

परिषद् समाचार

रिपोर्ट दौरा ता० १६ मई से २८ मई तक

—(फरंगी) ता० १५-५-२५ को साम के फरंगी (जबलपुर) आये और ता० १६, ५, २५ को धर्मशाला में सभा हुई और जाति संगठन पर भाषण दिया तथा-आतिशबाजी, वेश्यानृत्य, अश्लीलगाने, बाल और वृद्धविवाह की प्रथा रोकना व मन्दिर जी में धोती दुपट्टा छन्ना शुद्धखादी के रखना आदि बातें प्रस्तावरूप में रक्खी गई जो सर्व सम्मति से पास हुई-यहां १ भाई वीर के ग्राहक हुये। यहां जैन मंदिर ३ और जन संख्या अनुमान २०० के है।

—(बोरिया) फरंगी से ता० १६ ५ २५ को बोरिया (जबलपुर) आये यहां २ शास्त्र सभा और जाति सभा हुई ६ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। तथा आतिशबाजी वेश्यानृत्य कन्या विक्रय बालविवाह वृद्ध विवाह आदि कुरीतियों के बन्द करने का वचन दिया। और मन्दिर जी मे सब वस्त्र खादी के रखने का वचन दिया। यहाँ मन्दिर १ जन संख्या ६० है। यहां १ सभासद और एक भाई वीर के ग्राहक हुए।

—(बरगी) ता० १८-५-२५ को बरगी (जबलपुर) आए। यहां ता० १६ को मन्दिर जी में सभा हुई जाति संगठन पर व्याख्यान दिया। किन्तु यहां के भाईयों में ऐसी फूट है कि परिषद् के प्रस्तावकों को किसी ने भी नहीं माना और आपस में लड़ने लगे। केवल चौधरी मूलचन्द जी ने कहा कि हम १० घर वाले तो परिषद् के प्रस्ताव स्वीकार हैं। और को हम नहीं जानते। यहां १ भाई सभासद हुए और १ भाई वीर के ग्राहक हुए।

—गोर झामर में लुहरी सेन सभा का अधिवेशन। ता० २०-५-२५ को बरगी से पिंडरई (मंडला) को रवाना हुए किन्तु पिंडरई स्टेशन में लहुरीसेन सभा के मन्त्री श्री० कपूरचन्द जी मिल गये और अधिवेशन के लिए गोर झामर ले गये। अधिवेशन में २५० लहुरीसेन भाई एकत्र थे सब काम बड़े महत्व से हुए और उपयोगी प्रस्ताव पास हुए ३ दिन हमारा जाति उद्धार वा धर्म विषय पर व्याख्यान हुआ वा सागर के प० मौरेश्वर राव का ब्रह्मचर्य पर उपयोगी व्याख्यान हुआ अन्त में ५) सहायता चौधरी नन्हाई लाल जी सभापति ने प्रदान किये। यहां से ता० २५ को चल कर गोठी आगये।

हु० पं० प्रेमचन्द्र पञ्चरत्न प्रचारक
भा० दि० जैन परिषद्।

ग्राहकों को सूचना

(१) वीर, अच्छी तरह जांच कर यहां से भेजा जाता है। यदि कोई अंक आगामी अंक की तिथि तक न मिले तो पहले अपने डाकखाने से पूछना चाहिये। यदि पता न लगे तो उस की सूचना हमारे पास भेजनी चाहिये। (२) ग्राहकों को पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये अन्यथा पत्र का उत्तर न पहुंचने के उत्तरदाता हम नहीं होंगे।

संसार दिग्दर्शन

समाज

इटावे की जैनी औरतें डूब गईं—गत दशहरा स्नान के समय शैव की समाज की तीन स्त्रियां जमुना स्नान के लिये गईं थीं। दुःख है कि अभाग्यवश तीनों ही जल प्रवाह के थपेड़े में आ गईं और पानी के साथ बहा चलीं गईं। जाल आदि डाले गये लेकिन पता न चला। मिथ्यात्वसेवन का दारुण फल मिला। स्त्रियों को श्री जिनदेव के सिवा स्नानादि में पुण्य प्राप्ति नहीं समझना चाहिये।

—जैन हाईस्कूल पानीपतकी दूसरी शाखा २६-५-२५ को पानीपत से ४ मील दक्षिण जाटैल ग्राममें मैंने उक्त हाईस्कूल की दूसरी ब्रांचका मुहूर्त पं० फुलजारीलाल जी शास्त्री तथा पं० भीष्मचन्द्र जी के द्वारा विधिपूर्वक मन्त्रों सहितहोम व पूजन के साथ कराया। तत्पश्चात् वहां पढ़ाने के लिये १ अध्यापक नियुक्त किया और उस समय पहले दर्जे में २२ लड़के और दूसरे दर्जे में २ लड़के दाखिल हुये। शाम के समय वहां के लाला कालूराम जैन आदि ५ मेम्बरों की जैन हाईस्कूल के अधिकृत सहायक कमेटी स्थापित कराई। जो कि ब्रांच की कार्यवाही जैन हाई स्कूल पानीपत को भेजा करे।

इस साल जैन हाईस्कूल इन्ट्रेन्स (Martic) के इमतिहान में ४२ छात्र भेजे गये थे जिनमें से २५ पास हुए हैं। नतीजा जिले करनाल के सारे स्कूलों में अच्छा रहा है।

जयकुमार सिंह मैनेजर।

—इटावा में प्राचीन प्रतिमायें विशेषांक में जिस समाधिस्थान का चित्र प्रकट हुआ है उस ही के कुयें की खुदाई में दो पाषाण मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। एक खड्गासन मूर्ति खंडित है। उसका केवल अग्रभाग प्राप्त है। दूसरी पार्श्वनाथ जी का पट पूज्य अवस्था में है, यद्यपि पानी के कारण उसका पाषाण जर्जरित हो गया है। लेख किसी पर भी नहीं है। यह मूर्ति १ फुट की होगी। यह मालूम होता है कि बीच की मठी में सामने दीवाल की छोटी वेदी में मूर्तियां विराजमान थीं। इटावा के निकट जमुना तट पर श्री निर्ग्रन्थ मुनि विनय सागर जी का समाधिस्थान है गत वसु-मास में पूज्य ब्र० शीतलप्रसाद जी की खोज से उसका पुनः उद्धार होना प्रारम्भ हो गया है। वहीं निकट के कुए की खुदाई हो रही थी। खुदाई में ही दो मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं। एक तो खड्गासन मूर्ति का केवल सिर और धड़ है नीचे का भाग नहीं है। दूसरी प्रतिमा तीन प्रतिमाओं का

पट है। बीच में भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन मूर्तियां हैं। फिर धर्मचक्र समान इधर उधर चक्र हैं। ऊपर भी महरावसी है। पाषाण कुछ काला भूरा है। कुएँ में पड़ी रहने से बहुत से अवयव घिस गये हैं। एक घुटने में कुछ दाग भी टूटा हुआ है। इटावा के पसारी टोला के मन्दिर जी में यह विराजमान हैं। भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति पूजन योग्य प्रतीत होती है। इटावा पचायत को किसी धर्मात्मा भाई द्वारा उनका अभिषेक कराना चाहिये। मूर्तियों पर लेख कुछ नहीं हैं। नसियां जी पर मरम्मत का कार्य चालू है, परन्तु अब यहां रुपये की जरूरत है। जीर्णोद्धार में प्रत्येक को सहायक होना चाहिये। कामताप्रसाद जैन।

—धूलियागंज जैन पाठशाला का ता० १५-५-२५ को बड़ी धूमधाम से वार्षिकोत्सव हो गया। जिसमें मन्त्री हजारीलाल जी ने धार्मिक रिपोर्ट पढ़ी व परीक्षाफल और निरीक्षण सम्मतियां भी सुनाईं। इस विद्यालय का फल और स्थानीय विद्यालयों से उत्तम रहा। यहां करीब ५० विद्यार्थी हैं जिसमें जैन अजैन सभी को धार्मिक शिक्षा अनिवार्य है। -मन्त्री।

—प्रयाग में जैन रथयात्रा प्रयाग में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी रथयात्रा उत्सव दि० जैन समिति इलाहाबाद की ओर से २४ मई को हुआ। जलूस गत वर्ष की अपेक्षा अधिक धूमधाम से निकला। प्रत्येक जैन पंचायती मन्दिर की प्रबन्ध कारिणी कमेटी ही श्रीरथयात्रा जी निकला करती थी। किन्तु इस वर्ष उसने न मालूम क्यों न निकाली, तब दिगम्बर जैन समिति ने उसके निकालने का सब प्रबन्ध किया। फिर भी एक बड़ी भारी अड़चन असबाबकी आ पड़ी। प्रयाग में रथयात्रा सम्बन्धी समस्त पंचायती असबाब श्री मन्दिर जी में मौजूद रहते हुए भी पंचायती फूट के कारण बनारस, प्रतापगढ़ तथा स्थानीय अन्य समाजों से रथयात्रा संबन्धी समस्त असबाब मंगाना पड़ा।

नोट—समाज की ऐसी दशामें आपसी विद्वेष का होना बड़ा ही हानिकर और दुःखदाई है। क्या हमारे प्रयागी भाई इस पर ध्यान देंगे। -प्रकाशक।

—जैन संगठन सभा का प्रथम वार्षिकोत्सव देहली में ता० २ और ३ जून को बड़े समारोह के साथ हुआ। इस अवसर पर जैनधर्म के सभी विद्वान् संघटित हुए थे और प्रेमपूर्वक सभी ने अपने स्वतंत्र विचार प्रगट किये थे। श्रीमान् बाबू प्यारेलाल जी वकील एम, एल, ए, दिगम्बर जैन ने सभापति का पदग्रहण किया पश्चात सभा की वार्षिक रिपोर्ट सुनाई गई अधिवेशन में विशेषता यह हुई कि पूज्य बाबा भागीरथ जी वर्जीने मगलाचरण किया तो श्री मदनमुनि महाराज(स्थानकवासी) ने मनुष्यधर्म पर सार गर्भित व्याख्यान दिया।

—रींगस (जयपुर) भैरों जी के हम कदीमी पंडा हैं इस देवता पर यहां पर चैत की असौजकी नौदुर्गा जेठ के दशहरा के अलावा भादों के मेला और हरएक इतवार को भारी हिंसा होती थी। सो हम जेठ के दशहरा पर पं० बाबूराम जी मंत्री जीवदया आगरा दो साधुओं के साथ पधारे थे। हमने कुल भैंसा बकरों की बली बन्द करदी है। आशा है आगे से कतई बन्द होजायगी।

मंगल पंडा, भूधर पंडा, भगतलाल पंडा, भैरों जी रींगस।

देश

—ग्वालियर नरेश का देहान्त—५ जून को पेरिस में महाराज का देहान्त होगया। दो बार आपका अपरेशन हुआ था, आशा थी आप अच्छे होजायंगे। आप देशी नरेशों में ऊंचा स्थान रखते थे। प्रजा के अन्यतम हितैषी थे। परमात्मा आप की आत्मा को शान्ति दे। बड़ी महारानी साहबा ने राज्य में राजकुमार जयाजीराव को जिनकी अवस्था अभी केवल ९ वर्ष की है ग्वालियर का नरेश घोषित कर दिया।

—झांसी म्युनिसिपल बोर्ड के मुसलमान सदस्यों ने बोर्ड में अपनी संख्या कम होने के कारण इस्तीफा देदिया है। नगर के मुसलमानों की ओर से बोर्ड में अब कोई प्रतिनिधि नहीं है।

—नासिक हिन्दुओं का पुण्यक्षेत्र है उसमें अभी तक कोई म्युनिसिपल कसाई खाना नहीं था, परन्तु हाल में म्युनिसिपैलिटी ने एक कसाईखाना और एक बीफमार्केट खोलने का निश्चय किया है जिससे हिन्दुओं में बड़ा असंतोष फैला है।

—लार्ड रीडिंग आगामी २७ जुलाई को विलायत से भारत को रवाना होंगे और ७ अगस्त को बम्बई पहुंच जायंगे। भारत सचिव लार्ड बरकनहेड से उनकी जो बात चीत हुई है उस संबंध में कोई घोषणा तब तक न की जायगी जब तक वे भारत आ न जायंगे।

—महात्मा गान्धी पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ २९ मई को कलकत्ते से शान्ति निकेतन बोलपुर पहुंचे। कविवर रवीन्द्रनाथ, महामना मि० ऐंडरूज, श्रीयुत रामानन्द चट्टोपाध्याय तथा पं० विधुशेखर शास्त्री आदि ने उनका स्वागत किया। तपस्वी द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर से जो साधारणतः 'बड़े दादा' कहलाते हैं मिलने के बाद महात्मा जी ने कविवर रवीन्द्रनाथ से भेंट की। करीब तीन घंटे तक दोनों में बात चीत होती रही। वर्णाश्रम धर्म के सम्बन्ध में बड़ी देर तक आलोचना होती रही। महात्मा जी ने उसका समर्थन किया, परंतु रवींद्रनाथ ने उसको देश के लिये हानिकर बतलाया। महात्मा जी ने आश्रमवासियों को चरखा चलाने का उपदेश दिया और उसके भिन्न २ कार्य विभागों का निरीक्षण किया। ३ जून को वे कलकत्ता होते हुए दार्जिलिङ्ग पहुंच गये। वहां वे एक सप्ताह भर श्रीयुत दास के साथ रहेंगे।

विदेश

—चीन के शंघाई नामक स्थान में विद्यार्थियों के झुण्ड पर पुलिस ने बड़ी निर्दयता से गोली चलाई। इसका नतीजा यह हुआ कि कई विद्यार्थी मरे और अनेक आदमी घायल हुए। पुलिस के इस पैशाचिककांड का प्रारम्भ क्यों हुआ, इस बात का अभी तक ठीक २ उत्तर नहीं मिला।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	सहा हैं वीर (कविता)	४२१	७	साहित्य समालोचना	४३६
२	जैन लॉ	४२२	८	मैनपुरी के नवयुवक ध्यान दें	४३७
३	दमन का दुष्परिणाम	४२६	९	हिसाब आय-व्यय जैन हाईस्कूल पानीपत	४३८
४	श्रुत-पञ्चमी	४२८	१०	परिषद् समाचार	४४१
५	बम्बई में म० गान्धी का व्याख्यान	४३०	११	संसार दिग्दर्शन	४४२
६	सम्पादकीय टिप्पणियां	४३३			

हर्ष ! बिलकुल मुफ्त !! हर्ष !!!

उपहारों की धूम

इस वर्ष "वीर" के ग्राहकों को निम्न उपहार केवल २॥) वीर का वार्षिक मूल्य व डाकखर्च प्राप्त होते ही सेवा में मुफ्त भेजे जा रहे हैं।

(१) महावीर भगवान और उनका उपदेश—५० पृष्ठों की अति उपयोगी सुन्दर पुस्तक, जो बड़ी छान बीन और परिश्रम के साथ लिखी गई।

(२) वीर का विशेषाङ्क—लगभग १०० पृष्ठों का रङ्गबिरङ्ग चित्रों से सुशोभित, धुरन्धर विद्वानों के लेख व कविताओं से अलंकृत, अत्यंत उपयोगी अंक।

(३) PRACTICAL PATH—अंग्रेजी भाषा में बड़ी उत्तम कोटि का धार्मिक ग्रंथ अंग्रेजी पढ़े हुए ग्राहकों को केवल /) के टिकट डाकखर्च के लिये, इस के लेखक व दाता "श्री० चम्पतराय जी जैन बैरिस्टर, हरदोई" को अलग भेजने पर प्राप्त हो सकता है।

शीघ्र ही ग्राहकश्रेणी में नाम लिखाइये अन्यथा पछताना पड़ेगा।

हर जगह एजेन्ट चाहिये नमूना मुफ्त।

[illegible]

प्रभावती वटी

[illegible]

शीशी ॥) दर्जन ४॥) डाक महसूल माफ।

बिना तकलीफ के दाद को जड़ से मिटाने के लिये

दद्रुहर मरहम

ही योग्य है। शीशी /) दर्जन २॥) डा० म० माफ। कोई भी दवा १ दर्जन मंगाने से एजेन्ट हो सकता है। सर्व शास्त्रीय औषधियां बिक्री के लिये तैयार रहती हैं। एजेन्ट, वैद्य और धर्मादय वालों को विशेष सुविधा। बीमारी का हाल लिख भेजने पर उचित सलाह मुफ्त। विशेष हाल के लिये पत्र लिखिये सूचीपत्र मुफ्त।

पता—आयुर्वेदाचार्य [illegible] शिवराम [illegible]

श्री गणेश चिकित्सा भवन, नं० ६ [illegible]

'वीर' पर सम्मतियां ।

प्रेमी सज्जनों ! 'वीर' के विषय में जो समाचार पत्रों व मुख्य २ व्यक्तियों ने अपनी सम्मतियां प्रकट की हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी नीचे दी जाती हैं जिनसे आपको 'वीर' की समाज सेवा, उपयोगिता और लोक प्रियता का ज्ञान हो सकेगा । अधिक लिखना व्यर्थ है ।

मि० हरिसत्य भट्टाचार्य M. A. B. L. उप० सं० 'जिनवाणी' लिखते हैं:—

मैं "वीर" को बहुत उच्च दृष्टि से देखता हूं ···· लेख बहुत लाभदायक और रोचक हैं । 'वीर' का सञ्चालन बहुत उत्तमता व सुन्दरता के साथ किया जा रहा है ।

नारद, ता० २६ मई सन् २४ में लिखता है:—

'प्रत्येक अङ्क में त्रुटि के बदले नयी उन्नति के लक्षण दीख पड़ते हैं । ··· ···लेख और कवितायें सुपाठ्य और सुसम्पादित हैं । जो धर्म जिज्ञासु हैं और तत्सम्बन्धी बातों की छानबीन किया करते हैं । उनके लिए भी यह लाभदायक हो सकता है ।"

श्रीमान् चम्पतराय जी जैन सभापति परिषद लिखते हैं:—

"वीर की पूर्ण उन्नति होना अवश्यम्भावी है । मैं उसकी पूर्ण उन्नति देखना चाहता हूं ।"

'जैन महिलादर्श' लिखता है:—

"वीर के दो अङ्क प्राप्त हुए । लेख सुपाठ्य और शिक्षाप्रद हैं । महिला महिमा में स्त्रियों के लाभार्थ अच्छे अच्छे लेख रहते हैं । बहिनों को भी ग्राहिका होना चाहिए ।"

मराठी भाषा का सुप्रख्यात पत्र 'वन्देजिनवरम् आणि राजहंस' लिखता है:—

"विश्वविद्यालय की उच्च पदवियों से विभूषित विद्वान लेखक 'वीर' की सहाय्य करते हैं । अब तक के लेख महत्व पूर्ण व पठनीय हैं ।"

पं० पन्नालाल जैन श्री महावीर दि० जैन पाठशाला अकलतरा से लिखते हैं:—

"वीर पत्र वास्तव में एक आदर्श पत्र है इसके लेख ठोस और बड़े शिक्षाप्रद होते हैं ।"

ला० कन्नोमल जैन M. A. जज, धौलपुर से लिखते हैं:—

'वीर अपने विषय का नितान्त उपयोगी सुलिखित पत्र है । इसमें मेरा लेख छपना मेरे लिए गौरव का विषय है ।"

ला० शिवचरणलाल जी जैन रईस जसवन्तनगर लिखते हैं:—

"लेख व कवितायें सभी पठनीय हैं । हर महिने की दूसरी व १६ वीं ता० को 'वीर' के दर्शन हो जाते हैं । दूसरी के बाद १६ व १६ के बाद दूसरी तारीख की प्रतीक्षा रहती है ।"

प्रेमियों ! यदि वास्तव में आपको 'वीर' से प्रेम है और उसे एक आदर्श पत्र के रूप में आप देखना चाहते हैं तो उसकी हर तरह से सहायता कीजिए । स्वयं ग्राहक बनिये व अन्यों को बनाइये **यथाशक्य आर्थिक सहायता भी कीजिये** । बस यदि महावीर के उपदेश से और परमात्मा जिनवीर से आपको प्रेम है तो 'वीर' को एक दम उन्नत बनाकर मुर्दा कौम में जान डालिए ।

राजेन्द्रकुमार जैनी,

प्रकाशक 'वीर', बिजनौर (यू० पी०)

क्या आप जानते हैं:--

कि भा० दि० जैन परिषद् के स्वाधीन सद्प्रयत्नों द्वारा जिस प्रकार धर्मका प्रचार हो रहा है, यह सर्व विदित है। परिषद् किसी भी सामाजिक झगड़े में न पड़कर स्वाधीन रूप से अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर रहा है। परन्तु उस में उसे पूर्ण सफलता तब ही मिल सकती है जब सर्व सज्जन उसे अपनायें और अपने भरसक प्रयत्न से उसकी सहायता करें। वस्तुतः देश विदेश में यदि आप जैन धर्म का प्रचार होता देखना चाहते हैं तो उस की सहायता कीजिये। उस के द्वारा 'विश्वभारती महाविद्यालय' में इसी बात का प्रबन्ध किया जा रहा है। दूसरे समाज की दशा सुधारने के यदि आप सदेच्छु हैं और उसे धर्मनिष्ठ देखना चाहते हैं तो उसकी सहायता कीजिये। उसके 'वीर' पत्र तथा उपदेशकों तथा ट्रैक्टों द्वारा इस बात की पूर्ति की जारही है। तीसरे यदि आप बिछुड़े भाईयों को पुनः जैन धर्म में दीक्षित देखना चाहते हैं तो इसकी सहायता कीजिये। इस का उपदेशक जैन कलालों को पुनः जैन धर्म में ला रहा है। इन धर्ममय कार्यों से यदि आप को प्रेम है-सहानुभूति है तो आज ही जितनी आर्थिक सहायता आप कर सकें कीजिये। यदि समय पर सहायता न मिली तो यह धार्मिक कार्य अधमर में ही रोकना पड़ेगा। लक्ष्मी साथ नहीं जायगी। उस की शोभा दान में है। इस लिये सब से पहिले परिषद् की सहायता कीजिये।

सहायता भेजने का पताः--

रायसाहब साहू जुगमन्दरदास

कोषाध्यक्ष-भा० दि० जैन परिषद्

नजीबाबाद (बिजनौर यू० पी०)

प्रार्थीः—

रतनलाल

मन्त्री-'भा० दि० जैन परिषद्'

बिजनौर (यू० पी०)

आवश्यक्ता

२॥ फिटी और ३ फिटी आटा पीसने की चक्की (सेकिंड हैंड या नई) आइल इञ्जन से चलने वाली चाहिये। मूल्य सहित चक्की का विवरण इस पते पर लिखिये।

नं० १०८ 'वीर' कार्य्यालय, बिजनौर।

दरभंगे की मशहूर आम और गुलाबी लीचियों की कलम और पौध

आम और लीचियों की पांच वर्ष की पुरानी कलम ३०) दर्जन, तीन वर्ष की २५) रु०, । २ वर्ष की २०) रु०, १ वर्ष की १३) रु० दर्जन रेलवे महसूल और पैकिङ्ग वगैरह अलग आर्डर के साथ कीमत पेशगी आनी चाहिये।

नोट—एक आने का टिकट भेज कर अंग्रेजी सूचीपत्र मंगालें।

सुपरिन्टेन्डेन्ट नं० ४ "बिहार गार्डेन" दरभंगा सिटी

बिलकुल मुफ्त ! विराट ग्रन्थ बिलकुल मुफ्त !!

लगभग ५५० पृष्ठों का सुन्दर अमूल्य ग्रन्थ

"असहमत सङ्गम"

जिसमें जैनमत, वेदमत, यहूदियों का दीन, वेदान्त, सांख्य, वैशेषिक, योग, बौद्धमत, ईसाई, इस्लाम, शाक्त, राधास्वामी, कबीरपन्थ, दादूपन्थ, थियोसफी, चार्वाकमत आदि २ सब ही संसार भर में प्रचलित धर्मों के भेद और विरुद्धता के मूल कारण बड़ी सरल व सुन्दर भाषा में बताये हैं। इसके मूल लेखक व दातार हैं बाबू चम्पतराय जी जैन बैरिष्टर हरदोई। पुस्तक के बारे में कुछ भी लिखना व्यर्थ है। सब ही बैरिष्टर साहब की ठोस रचनाओं से परिचित हैं और प्रथम वर्ष में 'वीर' के ग्राहकों को उपहार में भी दिया जा चुका है। मूल्य १) रु०, परन्तु

'वीर' के ग्राहकों को बिलकुल मुफ्त

जो कि शीघ्र ही 'वीर' के दो दो ग्राहक बनाकर और निम्न फार्म भरकर इस पते पर भेज देंगे।

वीर कार्यालय बिजनौर

तारीख । ।१९२ ,

प्रकाशक 'वीर' बिजनौर !

जय जिनेन्द्र। मैंने वीर के निम्न दो ग्राहक बनाये हैं। उनका ५) वार्षिक मूल्य बजरिये मनीआर्डर भेजता हूं। इसके उपलक्ष में "असहमत सङ्गम" नामक विराट ग्रंथ कृपया पहुंचते ही मेरे पते पर बिना मूल्य भेज दीजिये *। और कृपया दोनों ग्राहकों को इस वर्ष का 'महावीर जयंती अंक' तथा 'महावीर भगवान और उनका उपदेश' नामक उपहार की पुस्तक शीघ्र भेजिये और सालभर तक बराबर 'वीर' पाक्षिक पत्र भेजते रहिये। दोनों पते निम्न प्रकार हैं-

१—नाम...

पता व पोस्ट...

२—नाम...

पता व पोस्ट...

* यदि असहमत संगम रजिस्ट्री द्वारा मंगाना हो तो ।=) डाकखर्च के लिये ज्यादह भेजने चाहिये अर्थात ५।=) का मनीआर्डर आना चाहिये। अन्यथा आपकी जिम्मेदारी पर सादी बुकपोस्ट द्वारा भेज दिया जायगा।

मेरा ग्राहक नं०..........पता...

श्रोत्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

चांदी के फूल भाव १।) तोला

सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व बेसी जितने तोल चांदी में तैयार होसकता है उसकी बिगत।

हौदा	500) से 2000)	रंगावत	250) से 3000)	*वंधनवार	100) से 500)
अम्बारी	1000) से 3000)	इन्द्र ध्व.	50) से 1100)	तोरण नकीरचना	250 से 1000)
पालकी	1000) से 1500	*सिंहासन	100) से 2000)	पाण्डुमेरु	30) से 200)
टेबुल	300) से 500)	*चवर एक	5) से 25)	*अष्टमङ्गलद्रव्य	100) से 200)
हाथीका साज	500) से 1000)	*मुकुट	10) से 20)	*अष्टप्रातिहार्य	150) से 250)
घोड़ेका साज	200 से 500)	*चौकी	25) से 300)	*सोलहस्वप्न	100) से 500)
*बल्लम	500) से 1000)	समोसरन	100) से 3000)	*सोमसमण्डल	30) से 100)
*सोंटा	50) से 75)			*कलश	50) से 500)
*छुनरी डंडा	30) से 50)	अढाई द्वीप की रचनाका मांडला	10) से 500)	तख्त चांदी के	200) से 1000)
जैन मन्दिर के उपकरण।				बारहदरी	2500) से 5000)
गन्धकुटी	2500) से 8000)	तेरह द्वीप की रचनाका मांडला	500 से 2000)	*पूजन के बरतन	200 से 500)
वेदी	200) से 8000)				

यह काम बाजिब आड़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिर जी के काम में ३=) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। । इस चिह्न का माल तैयार भी रहता है। * ये चांदी ताव का बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

Tel. Address—"SINGHAI" BENARES

शहजादा प्रिंस-आफ-वेल्स की सिफारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत आजाती है मुँह पर स्याह दाग, मुँह से फोड़ा फुन्सी,दाद,खाज,हाथ,पाँव का फटना, बगल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ करके चमड़े को नरम करदेती है। यह फूलोंसे बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) रुपया ३ शीशी खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)

बहुधा देखने सुननेमें आता है कि छोटी अवस्थाके अनेक बालक रोग मसान,पसली,श्वास,खांसी, लहक, दस्त, सूकिया, ज्वर, नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फँसकर मरजाते हैं और ठग लोग उनके माता पिताको भूतादिक की बाधा झपटा नजर बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता। हमने इनके लिये एक बिजली का बकस बनाया है जिससे बालकोंके सब रोग शान्त होते हैं। जो ४०वर्षसे धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एकबार परीक्षा अवश्य करें। मू० १।) डा०व०।=)कुल१॥=)

—को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ता है।

—हरएक जैन स्कूल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।

—धार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्चदृष्टि से देखा जाता है।

—उच्चकोटि का पाक्षिकपत्र होने से फाइल में रक्खा जाता है और बार २ पढ़ा जाता है।

—एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

—विज्ञापनदाताओं के लिये अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा।

शीघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट मालूम कीजिये और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पछताना पड़ेगा।

कवर टाइटिल पेज पं० [illegible] ने अपने सरस्वती प्रेस, मुरादाबाद में छापा।

वर्ष २] १ जौलाई सन १९२५ ई० [संख्या २७

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

वीर

श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र ।

ऑन० सम्पादक :—
जै०ध०भू०,ध०दि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादक —
श्री कामताप्रसाद जी

ऑन० प्रकाशक—
[illegible]

सावधान ! नई खुशखबरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी ।

६) सैकड़ा मजदूरी नकाशीदार फैन्सी काम जैसे वेदी पालकी, सिंहासन, चंवर, छत्र आदि

३) सैकड़ा मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली लोटा, गिलास वगैरह ।

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये ।

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है ।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तयार भी रहते हैं । चंवर, सिंहासन, वेदी, पालकी, अष्टमङ्गलद्रव्य, अष्टप्रातिहार्य, मुकुट, छत्र, भामण्डल आदि । तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु शिखर कलश, कलशी, जरदोजी का सामान जैसे चन्दोवा, पर्दा, झालर, बन्दनवार इत्यादि

सीताराम लहरीप्रसाद,

मालिक- उपकरण कार्यालय चौक, काशी

हमारे अन्य कार्य ।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां, साफे, दुपट्टे, कमख्वाब, पोत के थान, ईसकाफ, काशी सिल्क के थान, दुपट्टे, साफे, दावनी, गोटा पट्टा पुरानी साड़ी टकुना वगैरह ।

जाति सेवक—

सीताराम लहरीप्रसाद, सराफ, बनारस

जियाबीतस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज ।

हारवर्ड युनीवर्सिटी, अमरीका व योरप देश जियाबीतस जोस्लिन Joslin और एलन Allen साहबान के तरीके-इलाज (जिनको तमाम विज्ञान-जगतमें प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है) के मुताबिक डा० बख्तावरसिंह जैन एम० डी० (अमरीका), सदर बाज़ार देहली को अपने मरीज़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई ।

१—मुझे इस तरीके इलाज से बहुत आराम होगया है । मैंने महाराज साहब श्री नेपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर-प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिलकुल आराम होगया है ।

ह० कर्नल विजय शमशेरजङ्ग बहादुर, Foreign Minister, Nepal देहली ।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर-प्रमेह रोग को बिलकुल अच्छा कर दिया । मैं बड़ा मशकूर हूं ।

शीतलप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली ।

३—तीन चार साल से मुझे शकर-प्रमेह रोग ने तङ्ग कर डाला था लेकिन आपके तरीके इलाज से बिलकुल ठीक होगया हूं ।

जानकीप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली ।

४—मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफीद साबित हुआ ।

मित्रसेन जैन रईस, कांधला ।

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ | बिजनौर, आषाढ़ शुक्ला १० वीर सम्वत् २४५१ | अङ्क १७
१ जौलाई, सन १९२५

उद्धार

सूचना

१६ वें अङ्क में "जैन हाईस्कूल पानीपत" का हिसाब प्रकाशित हुआ था, परन्तु प्रेस की असावधानी से उसकी रकम में कुछ गलतियां रह गई हैं। स्थानाभाव से इस अङ्क में भी भूल संशोधन न कर सके, इसलिये आगामी अङ्क में प्रकाशित करेंगे। आशा है हिसाब के प्रकाशक तथा पाठक क्षमा करेंगे।

—प्रकाशक 'वीर'

अनाचार हमने अपनाया, सदाचार को दूर भगाया।
सत्य अहिंसा पद बिसराया, हाः हुआ अविचार ॥ प्रभो० ॥
पद पद पर ठोकर खाते हैं, पावक में झोंके जाते हैं।
तब भी स्वत्व नहीं पाते हैं, कैसा यह व्यवहार? ॥ प्रभो० ॥
हे करुणेश! सर्व हितकारी, बनें सभी हम दृढ़ व्रतधारी।
मोक्ष मार्ग में होयें विहारी, देहु कृपा विस्तार ॥ प्रभो० ॥

—(परवार-बन्धु)

राजा मिलिन्द अथवा मनेन्द्र ।

जैन साहित्य की खोज इतनी अपूर्ण अब तक पड़ी हुई है कि सहसा यह नहीं कहा जा सका कि इसमें अमुक विषयके अमुक २ ग्रन्थ हैं। इसही कारण इसके मर्य्यादा पुरुषोत्तमों के दिव्य चरित्र अज्ञात हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से हमें जैन राजाओं और अन्य महापुरुषों का विवरण कुछ भी ज्ञात नहीं है। हां यह अवश्य है कि भगवान महावीर के पूर्व के महान् पुरुषों का विवरण अवश्य ही पुराणग्रन्थों में मिलता है; परन्तु उपरान्तका विवरण यूंही यत्रतत्र बिखरा पड़ा है। कोई भी जैन इतिहास उपलब्ध नहीं है। इसही कारण लोग यह ख्याल कर लेते है कि जैनधर्म के पालक केवल वैश्य वर्ण के मनुष्य रहे हैं। यद्यपि वास्तव में बात यूं नहीं है। भारत के प्राचीन राजा जैनी थे। सम्राट श्रेणिक विम्बसार सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्प्रति मौर्य, सम्राट खार वेल महामेघवाहन, कुमारपाल अमोघवर्ष इत्यादि प्रख्यात राजागण जैन धर्मावलम्बी ही थे। यही नहीं विदेशों में भी जैनधर्म का प्रचार सम्राट सिकन्दर के समय से होगया था। मुनि कल्याण कीर्ति (काल्नोनस) सिकन्दर की सेना के साथ यूनान की ओर जैनधर्म का प्रचार अपने ज्ञान और चरित्र से करते गए थे। उसका ही यह फल था कि विदेशियों में भी जैनधर्म के प्रति उत्कण्ठा उत्पन्न होगई थी। पैरहो नामक यूनानी फिलासफर ने दिगम्बर मुनियों के निकट से दार्शनिक शिक्षा ग्रहण की थी। सारांश यह कि विदेशों में भी जैनधर्म की गति अवश्य हो गई थी। ऐसा कोई कारण नहीं दीखता जिसके कारण वह भारत में ही सिमित रहा कहा जासके। परन्तु दुःख है कि जैनियों ने अपनी प्राचीन गरिमाको प्रकट प्रकाश में लाने के प्रयत्न ही नहीं किए हैं जिससे उसके पूर्व इतिहास के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त हो सके। पाठकों को आज हम एक ग्रीक राजा का परिचय करायेंगे जो जैनधर्मकाभक्त प्रतीत होता है।

सिकन्दर आज़म की मृत्यु उपरान्त उस का राज्य तीन विभागों में विभक्त होगया था। उसके सेनापति ही स्वाधीन शासक बन बैठे थे। सीरिया प्रदेश के ग्रीक (यूनानी) राजा सेल्यूकस ने पुनः भारत पर चढ़ाई की थी परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य के समक्ष उसे हार मननी पड़ी थी और अपनी कन्या उसे देनी पड़ी थी। परन्तु यूनानी इस पराजय से हताश नहीं हुये थे। अन्ततः ई० सं० से १८० वर्ष पूर्व बल्खके शासक यूथेडिमसके पुत्र डिमिट्रियसने भारत पर अक्रमण किया था। यह काबुल विजेता सीरिया के राजा एण्टिओकस महान का दामाद था। इस ने अपने श्वसुर से भी आगे बढ़ कर काबुल पंजाब, और सिन्ध पर अधिकार कर लिया। और ग्रीक लोगों का भारत के इन प्रदेशों में अधिकार जम गया। इन्हीं राजाओं के मध्य एक राजा मिलिन्द अथवा मिनेण्डर (मनेन्द्र) विशेष प्रख्यात् था। 'ई० स० पूर्व १६० (वि०स०पू० १०३) से ई०

स० पूर्व १४० तक यह काबुल का शासक था और ई० स० से १५५ वर्ष पूर्वके निकट इसने भारत पर चढ़ाई की थी। मि० स्मिथ ने इस घटना का समय ई० स० से १७१ वर्ष पूर्व माना है। इन्होंने लिखा है कि इसने पटल (सिन्ध में) सुराष्ट्र और सगर डिस सागरद्वीप) तक अधिकार कर लिया था। इस के सिक्कों के भड़ौंच तक चलने का और इसकी सेना का राजपूताना तक पहुंचने का पता चलता है।" *अगाड़ी इन्होंने लिखा है कि यह सतलज पार कर जमुना तक पहुंचा था। उधर जस्टिन ने इनका उल्लेख भारतीय राजा के रूप में किया है। गर्ज यह कि राजा मलिन्द भारतीय राजाथा। कहा जाता है कि इस का जन्म सिन्धु नदी के द्वीप अल संद (= अलेकजण्ड्रिया) में हुआ था। पंजाब में साकल नगर में इसने अपनी राजधानी बनाई थी। उस समय यह नगर बड़ा समृद्धि पर था। बौद्ध ग्रन्थ 'मिलीन्दपन्हो' में इस का और राजा का विशेष विवरण लिखाहै। इसमें बौद्ध श्रमण नागसेन और राजा मिलिन्द से जो संवाद हुआ था वह अंकित है। इस के अन्त में कहा है कि राजा मिलिन्द अन्त में बौद्धानुयायी हो गया था। अतएव जानना चाहिये इस के पहिले वह किस धर्म का अनुयायी था ? Historical Gleanings नामक पुस्तक के पृष्ठ ७८ पर विवरण है कि करीब ईसा से पहिले की दूसरी शताब्दि में जब यूनानी लोगों ने अधिकांश पश्चिमीय भारत पर आधिपत्य जमा लिया था तब जैनधर्म का प्रचार उन के मध्य हो गया था और इस धर्म के नायक की मान्यता भी उनके मध्य अधिक थी। जैसे कि बौद्धग्रंथ 'मिलिन्दपन्हो'के एक कथानक से विदित है। उस कथानक में कहा गयाहै कि ५०० योद्धाओं अर्थात् यूनानियों ने राजा मिलिन्द (मेनेन्डर) से निरग्रन्थ नातपुत्त (महावीर) के पास चलने को कहा और अपने मन्तव्यों को उन के निकट प्रकट करने के लिए एवं अपनी शङ्काओं को निवृत्त करने को कहा।" इससे प्रकट है कि अन्य यूनानियोंके साथ सम्भवतः राजा मिलिन्द भी जैनधर्म के श्रद्धानी थे। इस विषयमें अधिक लिखने के पहिले हम यह देखना आवश्यक समझते हैं कि इस समय अन्य प्रान्तों में कौन राजा सत्ताधीश थे? मौर्यवंश के अन्त होने पर शुङ्गवंशी पुष्पमित्र राज्याधिकारी बना था। इस के करीब ७० वर्ष पहिले सम्प्रति द्वारा जैन धर्म का विशेष प्रचार देश विदेश में हो चुका था। जैनियोंके लिये यह कान्सटैन्टाइन ही था। तब ही से जैन धर्म की प्रधानता चली आ रही थी जिस पर फिर ईसा के १७० वर्ष पूर्व जैन राजा खारवेल ने पुष्पमित्र को हरा कर अपने राज्य को विशेष विस्तृत किया था। खारवेल कट्टर जैन धर्मानुयायी था। उसने सर्वत्र जैनधर्म प्रचार के प्रयत्न किए थे। जैनमुनियों को उस समय धर्म प्रचार का विशेषसुभीता अवश्य प्राप्त होगा। इस लिए जैन धर्म का प्रचार वे दूर २ तक कर सके होंगे। जैन धर्म की प्रधानता उस समय अवश्य रही होगी। यही कारण प्रतीत होता है कि उक्त बौद्ध ग्रन्थ में कहा गया है कि इस समय बौद्धधर्म संकट में है। (पृष्ठ १४) अतएव जैनधर्म का प्रचार राजा मिलिन्द की राजधानी सागल में तो कोई आश्चर्य नहीं है। स्वयं उक्त बौद्धग्रन्थमें लिखाहै कि- "They (streets of sagal) resound with cries

* देखो भारत के प्राचीन राजवंश भाग २

of welcome to the teachers of every creed and the city is the resort of the leading men of each of the differing sects (पृष्ठ ३) अर्थात् सागल की गलियों में विविधपथों के गुरुओं को सहर्ष आमन्त्रण दिया जाता था और वहां प्रत्येक मत के नेता मिलते थे। इसके अगाड़ीपृष्ठ १० पर वहीं लिखा हुआ है कि जब बौद्धगुरु नागसेन वहां पहुंचे उसके १२वर्ष पहिलेसे न ब्राह्मण और न श्रमण बौद्ध साधु वहां दिखाई पड़ते थे। तो स्पष्ट है कि उस समय वहाँ जैनधर्म की गति विशेष होगी, जैसे कि अन्य विद्वान डॉ० विमलचरण लॉ-एम० ए० पी. एच० डी० ने अपनी पुस्तक (Historical Gleanings) में प्रकट किया है जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं। ऐसी अवस्था में प्रजा में जैन धर्म की गति अधिक थी और समकालीन प्रख्यात् राजा खारवेल भी जैनधर्मानुयायी था तब राजा मिलिन्द का जैन धर्म का श्रद्धानी होना कोई कठिन बात नहीं है। राजा मिलिन्द जैन धर्मका श्रद्धानी है। इस ही बात को लक्षकर बौद्ध गुरु ने अपने शिष्य नागसेन से कहा था–I will not forgive you until you go and defeat king Milinda, who troubles the monks by asking questions from the heretics point of view." कि जबतक राजा मिलिन्द को परास्त नहीं कर दोगे तबतक मैं तुम्हें क्षमा नहीं करूंगा, क्योंकि राजा मिलिन्द नास्तिकों की भांति प्रश्न करके श्रमणों को तंग करता है।" तिस पर 'मिलिन्द-पन्हो' में जितने प्रश्न किये गये हैं वह विशेषकर जैन सिद्धान्तों के खंडनरूप में लिये गए हैं।

राजा मिलिन्द जैनधर्म के सिद्धान्तों को लेकर प्रश्न करता है। मुख्यत: आत्माके अस्तित्व, निर्वाण आदिके सम्बन्ध में प्रश्न किये गये हैं। आत्मा को अस्तित्व राजा मिलिन्द स्वीकार करता है। नागसेन उसका खण्डन एक स्थान पर पांच इन्द्रियों के दृष्टान्त से करता है। पंचेन्द्रियां जैन सिद्धान्त में स्वीकार की गई हैं। ब्राह्मण शास्त्रों में वह इस तरह स्वीकृत नहीं हैं। वहां कर्मेन्द्रियां और ज्ञानेन्द्रियां स्वीकार की गई हैं। अतएव यहां पर आत्मा के अस्तित्व का निराकरण जैनधर्म को लक्ष्य कर किया गया है। निर्वाण के विषय में राजा मिलिन्द प्रश्न करता है और उसे इस जीवन के बाद एक नियत स्थान पर शाश्वत सुख भोगने रूप जैन सिद्धान्तानुसार मानता है। नागसेन इसका खंडन करता है। वह कहता है कि निर्वाण इसी जीवन में भोग पदार्थ है-उसके लिये कोई अलग स्थान नहीं है। (See Milinda. iv. 8.85.) ब्राह्मणधर्म की भी निर्वाण के विषय में उक्त प्रकार मान्यता नहीं है। उनके यहां भी कोई खास स्थान निर्वाण का नहीं माना है। अतः यह प्रश्न जैनमान्यता को ही लक्ष्य कर किया गया है। इस ही तरह कर्मसिद्धान्त का खंडन है। जैन सिद्धान्त कहता है कि सब प्रकार के सुख दुःख केवल कर्म के कारण होते हैं, परन्तु नागसेन इसे स्वीकार नहीं करता। वह कर्मों के अतिरिक्त अन्य कारण भी उसके मानता है और जैनियों पर आक्रमण करता है क्योंकि वही सुख दुःख का कारण केवल कर्म को मानते हैं। बौद्ध नागसेन कहता है-And Herein whosoever maintain that it is karma that injures beings, and besides it there is no other reason for pain, his proposition is false इसके अतिरिक्त जल में

भी जीवकार्य मानकर राजा मिलिन्द प्रश्न करता है। यह भी जैन मान्यता का लक्ष्य कर लिखा गया है। नागसेन इसे अस्वीकार करता है। इस प्रकार साधारण रूप में जिन मुख्य सिद्धान्तों का संवाद उक्त बौद्ध ग्रंथ में लिखा हुआ है वह जैन मान्यता के अनुसार हैं। इसलिये इस तरह भी राजा मिलिन्द का बौद्धधर्मानुयायी होने के पहिले जैनधर्मी होना प्रमाणित होता है। अतएव हम दृढ़ताके साथ कहसक्ते हैं कि राजा मिलिन्द-मिनेण्डर अथवा मनेन्द्र भी किसी समय में अनेक यूनानियों समेत भगवान महावीर के भक्त रहे थे। परन्तु काल की गति अतिविचित्र होती है। यह यूनानी किसी समय हम पर शासन करते थे वही आज हम में मिल गए हैं और हम बतलाने में असमर्थ हैं कि वह कौन हैं?

राजा मिलिन्द के विषय में एक प्रश्न और शेष है कि कहीं इनका उल्लेख जैन शास्त्रों में भी है? इस प्रश्न का उत्तर जब तक संपूर्ण जैन साहित्य उपलब्ध न हो तब तक नहीं दिया जा सकता। उपलब्ध जैन साहित्य में खोज करने से संभव है कि कुछ प्रकाश प्राप्त हो सके। वास्तव में यदि समग्र जैन साहित्य विद्वत्समाज को उपलब्ध हो तो अनेकों नई बातें ज्ञात हों। परन्तु दुःख है, इस आवश्यकता की उपेक्षा करके समाज के नेतृत्व का दम भरने वाले महोदय आपस में लड़ २ कर ही शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं। जैन साहित्य के महत्व में प्रो० जैकोबी के निम्न शब्द ही पर्याप्त हैं:—

The jain records are unfortunately as yet known only in fragments. It is the greatest desideratum for the history of this period that they should be made accessible in full. The philosophical and religious speculations contained in them may not have the originality or intrinsic value, either of the vedanta or of Buddhism. But they are none the less historically important, because they give evidence of a stage less cultured, more animistic, that is to say earlier. And incidentally they will undoubtedly be found......to contain a large number of important refrences to the ancient geography, the political divisions, the social and economic conditions of India at a period hitherto very ineperfeclty undrestood...... the linguistic and epigraphic evidence so for available confirms in many respects both the genial reliability of the traditions current among the jains" भावरूप में प्रो० साहब ने जैन साहित्य के उपलब्ध न होने पर खेद प्रकट किया है और जैनग्रन्थों को ब्राह्मणों और बौद्धों की मान्यताओं से विभिन्न, उनसे प्राचीन समय के विवरण से परिपूर्ण विश्वसनीय बतलाया है। जैनियों को ध्यान देना चाहिये।

विनीत-उपसंपादक

बहुमत

(ले० श्रीयुत ऋषभदास जैन बी० ए०)

उपर्युक्त शीर्षक का एक लेख हिन्दीजैन गज़ट अंक ३२ में छपा है। उस में जो लेखक ने बहु-मत' की व्याख्या की है वह तो ठीक ही है और "बहुमत" से जो व्यवहार में मतलब लिया जाता है उस को सब लोग समझते ही हैं। परन्तु "बहु-मत' के महत्व को जो लेखक ने घटाने की कोशिश की है उस में वे सफल नहीं हुए। प्रथम उदाहरण जो उन्हों ने रोगी का लिया है उस में तो स्वयं उन को "बहुमत" मानना ही पड़ा है क्यों कि उन्होंने दो वैद्यों की सम्मति से औषधि दिए जाने पर रोगी को आराम होना लिखा है। और रही यह बात कि जिस विषय के जो लोग जान-कार हैं उन की ही राय उस पर लेनी चाहिये दूसरों की नहीं। इस को सर्वसाधारण जानते हैं। और इस पर अमल करते हैं। इस पर ज्यादा ज़ोर देने की जरूरत ही न थी। परन्तु आखिर में तो लेखक महाशय ने यह परिणाम निकाला है कि धर्म या शास्त्रीय विषय बहुमत का नहीं है। बहु मत उस पर लागू नहीं हो सका। यह बात एका-न्त पक्ष को लेकर कदापि नहीं मानी जा सकी। क्योंकि धर्मशास्त्र के ज्ञाताओं में भी धर्म विषय पर मत भेद हो जाता है, उस समय सिवाय बहु मत की शरण लेने के और क्या किया जा सका है। वहां ज़रूर "बहुमत" पर ही काम करना पड़ता है। "आगम के समक्ष बहुमत कुछ मूल्य नहीं रखता।" लेखक जी का यह सिद्धान्त था यदि कोई सभा सोसाइटी यह प्रस्ताव पास करे तो यह प्रस्ताव एकान्तरूप से हरगिज़ ठीक नहीं कहा जा सका। क्योंकि जिस समय किसी आगम विषय पर विद्वानों में मतभेद होता है उस वक्त "बहुमत" ही बहु मूल्यवान हो जाता है। उस वक्त आप सिवाय "बहुमत" के मानने के और क्या कर सक्ते हैं? हाँ, यदि किसी मान्य आगम या ग्रन्थ में किसी विषय पर विधि निषेध मौजूद है अर्थात् किसी विषय को साफ तौर से शास्त्र जाइज़ अथवा नाजाइज़ करार देता है। साफ तौर से उसको मना करता है या इजाज़त देता है, ऐसी दशा में अवश्य "बहुमत" की कोई ज़रूरत नहीं है। परन्तु जहां आगम या शास्त्र में ऐसा नहीं है और विद्वान् लोग शास्त्रों से अपनी २ युक्ति निकाल कर किसी बात को सिद्ध करना चाहते हैं वहां धर्म शास्त्रीय विषयमें भी "बहुमत" को मानना पड़ेगा। जैसे परस्त्रीगमन अच्छा है या बुरा—इस विषय को ते करने के लिये अवश्य "बहुमत" की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि शास्त्रों में साफ तौर से इसका निषेध है। दूसरा उदाहरण लीजिए कि ग्रन्थ मुद्रण अच्छा है या बुरा! इसको बाबत आगम में कोई विधि-निषेध नहीं पाया जाता। इसलिए इसके निर्णय के लिये बेशक "बहुमत" की पाबन्दी करनी पड़ेगी। अतएव उन सूरतों को छोड़कर कि जहां आगम या शास्त्रों में साफ तौर से विधि निषेध मौजूद है शेष सर्व धर्म

व शास्त्रीय विषयों में 'बहुमत" को मानना पड़ेगा। इसलिये एकान्तरूप से यह कह देना कि धर्म व शास्त्रीय विषय पर "बहुमत" लागू नहीं हो सका हरगिज ठीक नहीं है।

लेखक महाशय के लेख में वैद्य, वकील, ज्योतिषी गायनाचार्य आदि के दृष्टान्त देने से उन का कुछ ऐसा भाव झलकता है कि धर्म व शास्त्रीय विषय सिर्फ पंडितों की राय से तै होने चाहिये। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि जो व्यक्ति जिन विषय की जानकारी रखते हों उस विषय पर उन ही की राय लेनी चाहिये,दूसरों की नहीं-वहां तक मैं लेखक की राय से सहमत हूं। परन्तु मुझ को इस बात के मानने में बहुत ज्यादा असंतोष है कि जैन जनता सामान्य तौर से भी धर्मसे बिलकुल ऐसी नावाकिफ है कि वह धर्म के किसी विषय पर राय देने की योग्यता नहीं रखती! न मैं धर्म को वैद्यक, वकालत, ज्योतिष, गायन विद्या आदि से कि जो आजीविका प्राप्ति के सांसारिक उपाय हैं-समानता देना-धर्म को इन सांसारिक विषयों के बराबर समझना पसन्द करता हूं। धर्म कोई आजीविकोपार्जन का उपाय नहीं है। धर्म कोई ऐसी वस्तु नहीं है कि जिसको केवल खास खास आदमी अथवा समाज का कोई खास गिरोह ही जाने। धर्म सब को जानना चाहिये। सबको धर्म का जानकार होना चाहिये। जिस कौम या जिस समाज को अपना अस्तित्व कायम रखना है अथवा अपनी हालत अच्छी रखनी है उसको ध्यान रखना चाहिये कि उस का प्रत्येक व्यक्ति धर्म का जानकार हो। जिस किसी कौम में धर्म खास गिरोह पर सीमित रहा है वहां अन्याय, लड़ाई झगड़े, खराबी व तबाही देखने में आई है। यूरोप के पोप व भारतवर्ष के ब्राह्मण इसके उदाहरण मौजूद हैं। अतएव समाज का कर्तव्य है कि वह खास २ आदमियों को ही धर्म का वाकिफकार व धर्म विषय पर राय देने का अधिकारी न रक्खे बल्कि अपने प्रत्येक व्यक्ति को धर्म से वाकिफकार व धर्मविषय पर राय देने का अधिकारी बनावें। बेशक अंग्रेज़ी पढ़े लिखे विशेषतया धर्मसे अजान कार हैं; परन्तु ऐसा कदापि नहीं है कि सबके सब धर्म से बिल्कुल कोरे हों। बहुत से धर्म में अच्छी खासी योग्यता रखते हैं। कतिपय ने जैनधर्म की एक निहायत काबिलकदरदर्जे तक प्रभावना की है। और यह लोग अधिकतर जो धर्मसे नावाकिफ हैं वह कसूर भी समाज का ही है। समाज ने ऐसा प्रबन्ध नहीं किया कि जिस से उन को लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी मिल जाती। यह तो आजकल असंभव है कि जैनसमाज अंग्रेजी शिक्षा से बची रहे। और न ऐसा करना बुद्धिमत्ता ही है। परन्तु इस का इलाज यह ही है कि समाज ऐसा प्रबन्ध रक्खे कि जिस से पाश्चिमात्य अथवा अंग्रेज़ी अथवा लौकिक शिक्षा प्राप्त करने वाले धर्म से भी जानकारी प्राप्त कर सकें ताकि धर्म विषय व खास २ पेशों (वैद्यक, वकालत आदि) को छोड़ कर शेष सब बातों में हर व्यक्ति राय दे सके। ऐसी हालत हो जाने से ही समाज की दशा दृढ़ कही जासकती है वरन् कहना पड़ेगा कि जैन समाज कमज़ोर है।

मैं यह बात मानने के लिये तैयार हूं कि दूसरी विद्या, कला कौशल की तरह धर्म विद्या में भी Specialists स्पेशियलिस्टस हो सके हैं और

होते हैं। Specialist से मतलब ऐसे व्यक्तियों से होती है कि जिन्हों ने अपना तमाम उपयोग व जीवन किसी खास विद्या एवं कलाकौशल के सीखने में व्यतीत किया हो और जो उस विद्या व कलाकौशल में खासतौर से उच्च कोटी की योग्यता रखते हों। अतएव वह साहिबान कि जिन्हों ने अपना तमाम उपयोग व जीवन धर्मविद्या के प्राप्त करने में लगाया है और उस का ही मनन करते रहते हैं और उन में उच्चकोटी की योग्यता रखते हैं। ऐसे महाशय धर्म के Specialist अथवा पंडित कहलासक्ते हैं। और धर्म विषय भी दो तरह के होते हैं। एक अतिगूढ़ विषय जैसे गुण स्थानों व कर्म प्रकृतियों के उदय आदि की चरचा ऐसे गूढ़ विषयों में बेशक धर्म के Specialist या पंडितों की ही राय लेनी चाहिये। परन्तु इन गूढ़ विषयों पर भी विद्वानों में मतभेद होजाता है। मतभेद होने की हालत में यहां भी "बहुमत" ही मानना पड़ेगा। "बहुमत" का महत्व यहां भी नहीं घटेगा। दूसरे धर्मविषय धर्म के सामान्य विषय या शिक्षा पद्धति अथवा व्यवहारिक रीति नीति से सम्बन्धित होते हैं। उनका निर्णय केवल पंडितों की राय पर ही नहीं छोड़ा जाना चाहिये [illegible] किस्म के योग्य पुरुषों की राय लेकर [illegible] होनी चाहिये।

और लेखक महाशय ने जो अपने लेखमें विधवाविवाह, जाति पांतिके लोप का जिकर किया है मैं तो इसको बिल्कुल फिजूल व बेबुनियाद समझता हूं न दिगम्बर जैन समाज में कोई विधवा विवाह जारी करने की कोशिश कर रहा है न कोई जाति-पांति को उड़ाना चाहता है। हां, कुछ लोग वैश्यवर्ण की उपजातियों में परस्पर विवाह सम्बन्ध की तजवीज पेश करते हैं। इस पर कतिपय पंडितगण ऐसे भड़क उठे हैं कि दूसरों पर विधवा विवाह जारी करने-जाति पांति को लोप करने का इलजाम लगाए चले जाते हैं। इसको धर्म भ्रष्ट धर्मशून्य कहे चले जाते हैं। नहीं मालूम ऐसी क्या घबराहट और परेशानी है। क्या किसी दो चार व्यक्तियों के कोई तजवीज पेश करने से वह तजवीज समाज में आज ही जारी हो जायगी? नहीं मालूम दूसरों पर इलज़ाम लगाकर-सभ्यता विरुद्ध शब्द व वमन नीति का प्रयोग करके समाज में अशान्ति व हलचल क्यों फैलाई जाती है? यदि दिगम्बर जैन ग्रन्थों में इस तजवीज की बाबत साफ तौर से विधि-निषेध मौजूद है, तो शान्ति से बैठ कर उसके मुताबिक तय कर लो। और यदि शास्त्रों में साफ तौर से इसकी बाबत कोई विधि-निषेध नहीं है, तो अपने पुराण पुरुषों के इतिहास से जो युक्ति निकलती हो उसके मुताबिक "बहुमत" से तै कर लो। लेखक ने अपने लेख में विलायत यात्रा का भी नाम लिख दिया है, यद्यपि इस समय सारी समाज में इसका कोई विशेष आन्दोलन नहीं है इस को भी इसी तरह से तै कर सक्ते हो। यदि मान्य जैन ग्रन्थों में इस की बाबत विधि निषेध मौजूद है तो उसके मुताबिक वरन् योग्य युक्तियों के बल "बहुमत" द्वारा। इस प्रकार "बहुमत" किसी दशा में भी उपेक्षणीय नहीं है।

मुसलमानी राज्य में गोरक्षा

ऐतिहासिक प्रमाण

(मूल लेखक—डा० सैय्यद महम्मद पी० एच० डी०)

मुसलमान तथा हिन्दू खासकर इस बात से अनभिज्ञ हैं कि मुसलमान बादशाहोंने गोवध की तरफ घृणा भाव किस प्रकार कायम रक्खा और कहाँ तक हिन्दुओं के इन अनिवार्य मनस्सताप पर अपने हार्दिक पूज्य भाव कायम रक्खे। मैं इस घृणित प्रश्न पर कुछ प्रकाश डालना चाहताहूं और ऐतिहासिक प्रमाणसे सिद्ध करना चाहताहूं कि मुसलमान बादशाह और उनके बापदादे इस कार्य में कितनी उदारता रख सके हैं, वे कहां तक हिन्दू मजहबके तत्वोंको सम्मानित कर सके, जब कि व यहां इस पृथ्वी के पूर्णाधिकारी थे।

यह विषय उस समय इतने अंशतक जटिल न था कारण कि हमारा सघन पक्षपात उस समय इतना कठिन तथा जिसे हम आज इतना उलझा हुआ देखते हैं। उस समय इस देशके शासक मुसलमान थे। अगर वे इसे धार्मिक समझ अपनी महत्वाकांक्षा दिखाते अथवा हिंदुओंको नीचा दिखाने के अभिप्रायसे धार्मिक रुकावटें डालते तो उनका कोई हाथ न पकड़ सकता था पर ऐसा समझनेके बदले उन्होंने हिन्दुओंको प्रजा अथवा गुलाम न समझा, बल्कि उनका अपने देशी भाईयोंके समान आदर करते तथा उनके साथ बराबरीका बर्ताव काममें लातेथे। मेरे हिन्दुभाई यह भलि भांति सत्य मानें कि मुसलमान बादशाहोंने हिन्दुओंके मजहबी और धार्मिक तत्वोंको सम्मानित किया और अपने एकदेशी राज प्रबन्धमें अपने साथ हकदार समझा। यह जान लेना बड़े महत्वका प्रश्न है कि मुसलमान शासकोंने अपने शासनमें हिन्दुओंके साथ कैसा बर्ताव रक्खा और कहां तक जिम्मेदार राज्यप्रबन्ध में हकके साथ भाग लेने दिया.

गोवध पर सरकारी कर

इस निबन्ध के लिखने का यही हेतु है कि लोग समझ जांय—मालूम करलें, कि मुसलमान गोवध के विषयमें हिन्दुओंकी मजहबी-जातीय भावनाओं को कितने सम्मानसे देखते थे। बिलकुल शुरुमें जब कि वे मुसलमान) पहिले पहिल बादशाह हुए हिन्दुओंकी गहरी भावनाएं भली भांति समझ गये क्यों कि उनकी राजनैतिक धारणाही इसी एक तत्व पर अवलम्बित थी जिसे वे पूरी तरह सम्मान देते रहे, वह गोवधही हिन्दू जातीय दुःख था। जिस समय से मुसलमानी बादशाहत शुरु हुई कसाइयों पर एक प्रकारका कर लगाया गया,जिसकी हद १२ जैताल गाय पीछे थी। फीरोजशाहके राज्यकालमें कसाइयोंने इसके रोकनेकी प्रर्थना की इसलिये बादशाह ने उसे रोक दिया। इसका विवरण कोई ऐतिहासिक पुस्तक में नहीं,पर यह केवल गोवध रोकनेहीं का मतलब था। इसीलिये यह कर सैकड़ों वर्षों तक याने जब से मुसलमानी राज्य हिन्दुस्तान में स्थापित हुआ तबसे इसका ठीक पता फीरोजशाह तुगलकके समय तक लगता है।

कोई खास आज्ञा निकालनेके बजाय (अपेक्षा) मुसलमान बादशाहोंने गोवध बंद करनेके अर्थ एक यही तरीका निकाला था। वह "जाजीरा" कर कहा जाता था। महम्मद तुगलक के शाही रसोईमें गोमांस नहीं पकाया गया, क्यों कि वह उसे छूनेसे घृणा करता था। अनेकों लेखकों ने शाही रसोईके विषयमें बहुत कुछ लिखा है पर गोवधके विषयमें कहीं कुछ नहीं लिखा। फरहतुलमुल्क गुजरातका शासक नियुक्त हुआ और महम्मद गयासुद्दीन तुगलक जब बादशाह हुआ, तबभी वह इसी पद पर नियत रहा।

इतिहास प्रेमी इस विषयको अच्छी तरह कहते हैं कि फरहतुलमुल्क ने हिन्दुओंको अनेकों सुभीते दिये और गोवध बंद होनेकी आज्ञा की। सुलतान नासीरुद्दीन के राज्य में तो हिन्दुओं ने अधिक से अधिक प्रभाव हथिया लिया था। बादशाहने अपने राज्य में गोवध बिलकुल रोक दिया,यद्यपि इसपर ऐसा भी मालूम होता है कि जो जाजीरी कर फिरोज शाह तुगलक ने रोका था उसके शासनकाल के पश्चात् उसने यह फिर से जारी करा दिया। क्यों कि इसका इतिहास की पुस्तकों में पता है। फिर अकबरशाह ने यह सुनकर कानून से दबा दिया, क्योंकि उसने गो वध कायदे से रोक दिया था (फिर यह कर कहां तक उचित समझा जा सकता है) उसे सम्भवतः इसी बेकाम समझ रोक दिया होगा।

एक अंग्रेज पथिक का प्रमाण

एक पथिक अंग्रेज जो सत्रहवीं शताब्दि में हिन्दुस्तान में आया था लिखता है, हिन्दुस्तानी गाय को बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखते हैं उस का वध एक बड़ा अन्याई पाप है जो एक मनुष्य-हत्याके बराबर माना जाता है, इस से यह स्पष्ट हुआ कि मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओंकी मनोगत भावनाएं दबाने की चेष्टा न की प्रत्युत उन की धार्मिक योग्यता कहां तक सम्मानित की यह प्रगट है। हिन्दुओं के ऐसे सच्चे भाव जानने को एक साधारण पथिकको भी किसी प्रकार तकलीफ न उठानी पड़ी। उस समय हिन्दू गोवध के विरुद्ध में उपदेश देने को न रोके जाते थे, जिस से यह भाव निकलता है कि शासनाधिकारी इन बातोंपर अपना प्रभुत्व न जमाता था।

बाबरशाह का अपने बेटे को उपदेश

जब मुगल बादशाहत हिन्दुस्तान में स्थापित हुई और बाबरशाह सिंहासनपर बैठा तब उसे अपने अल्प राज्यशासन में केवल हिन्दुओं के गूढ़ मनोभावएं ही न जान लेनी पड़ी बल्कि उसे एक खास गुप्त वशीयतनामा अपने बेटे हुमायूं को लिखना पड़ा। उसमें इसने हिन्दू धार्मिकताको भी अच्छी तरह दिखाया और गोवध रोकने की आज्ञा दी। यह असल एक रियासत भोपाल के पुस्तकालय में अभी तक सुरक्षित विद्यमान है जिसका उपयोगी (Photo) आलोक चित्र प्रतिबिम्ब मुझे नवाब करनल हमीदउल्ला खां साहिब के पास से मिला है। जिस का अनुवाद यहां दिया जाता है।

ऐ मेरे बेटे,हिन्दुस्तान में अनेको धर्मावलम्बी रहते हैं। यह उस महाराज-शक्तिशाली ईश्वर की दया है कि उसने इस देश की जिम्मेदारी तेरे हाथ

में दी, वह इस लिये तुम्हें योग्य है कि,

(१) कभी अपने धार्मिक झगड़े में सिर ऊँचा उठाने की कोशिश न होने देना। पक्षपातरहित न्याय करना, धार्मिक भावों को समझ जाति विभाग प्रजाका मजहबी रिवाजों का ख्याल करते शासन करना।

(२) खास तौर पर गोवध न करना क्यों कि इसी से तुम हिंदु प्रजाके हृदयग्राही बन जाओगे। इस मार्ग से तुम इस पृथ्वी की प्रजा को कृतज्ञता के बंधन से बांध लोगे।

(३) किसी जाति विभाग के पूज्य स्थानों को बरबाद न करना। तथा न्यायप्रिय रहना। इसलिये कि राजा और प्रजा के बीच हार्दिक संबंध सुदृढ़ हो, सम्पूर्ण पृथ्वी पर संतोष और शांतता फैले।

(४) इस्लाम धर्म का फैलाव अत्याचारी तलवार की अपेक्षा प्रेम की तलवार और कृतज्ञता से कई गुना अच्छा है।

(५) सदा सिया और सुन्नियों की परस्पर की फूटफाट भुलाते रहना, नहीं तो वे इस्लामी धर्म को दुर्बल बनाने को प्रस्तुत हो जायंगे।

(६) प्रजा की अनेकों मुख्यताएँ इस प्रकार मनना जैसे वर्ष की ऋतुएँ। इस कारण राजनैतिक स्थूल शरीर सभी प्रकार के रोगों से दूर रहे।

पीछे के बादशाह

बाबर इस देश का निवासी न था, पर वह इस देश का विजयी होकर आया था। और उस की यह इच्छा थी कि मेरा शासन हिन्दुओं में उन्नतिशील और परस्पर सम्मिलित प्रेमका प्रशंसनीय हो। जब कि एक परदेशवाला विजयी-मुसलमान हिन्दुओं के भावों की इस प्रकार खबरदारी-चौकसी से, खासकर गोवध के विषय में हिन्दुओं के साथ संबंध कायम रखना चाहता है तो यह कठिन न होगा कि जो यहाँ के रहने वाले हैं तथा जिन्होंने यहां अपना निवास स्थान बना लिया है, जो यहीं पैदा हो उन्नतिशील हुए, जिन की नसों में हिन्दूपन का रक्त बहा उन्हीं पीछे के मुसलमान बादशाहों ने कितना गहरा विचार हिन्दुओं के धार्मिक योग्यता में किया होगा।

अकबर शाह

अकबरशाह ने तो एकदम गोवध बंद करने के लिये अपने सारे राज्य में आज्ञा दी थी।

आईने-अकबरी और दूसरी पुस्तकोंमें इस बात का पूरा प्रमाण है यह आज्ञा उसके उत्तराधिकारीने रद्द न की पर बराबर पाली गई। यद्यपि यह हो सकता था कि पीछेके बादशाह ने इसको कठोरता से काम में न लाया। जहांगीरने उस आज्ञा को शिथिल न किया पर इससे बढ़चढ़कर रविवार, जिस दिन अकबर पैदा हुआ था, गुरुवार, जिस दिन वह स्वयं सिंहासनारूढ़ हुआ कोई जीव चाहे वह किसी किस्मका हो न मारा जाय और उन दिनोंमें शिकार भी न खेली जाय- इस तरह का नियम पाला।

अन्तिम--उपसंहार

उपरोक्त विवरण से प्रकट है कि मुसलमान बादशाहोंने इस तरह इस देशमें गोवध रोकनेका प्रयत्न किया था। उस समय के इतिहासको पढो तब आपको यह जान लेना मुश्किल नहीं कि वे हिन्दूधर्म

पर कितने विचारशील और वात्सल्य भावों को रखते थे। बहुत से हिंदुओं की यह तकरीर है कि मुसलमीन बादशाहों ने तो हम पर अत्याचार किया। पर पक्षपात रहित दृष्टि से अगर वे इतिहास को देखते तो उन्हें विश्वास हो जायगा कि यह स्थिति—दशा वह न थी। केवल गोवध के विषय में ही नहीं पर मुसलमान बादशाह हिन्दुओं के सुख दुख में तथा महोत्सवों में भाग लेते थे। दिवाली में पूजादार दरबार होता था और ब्राह्मण शाही बागोंमें गौवें लाते थे और बादशाहकी ओरसे इनाम—उपहार लेते थे। दशहरा उत्सव भी मनाया जाता था। शिवरात्रि में शाही महलों में योगी बुलाये जाते थे और उन्हें भोजन दिया जाता था। श्रावणीमें बादशाह स्वयं कलाई—हाथमें राखी बंधवाते थे। मुसलमान बादशाह आमतौर पर हिंदु साधुओं से मिलते थे और मित्राचारीके साथ सम्मानसे बोलते थे सरथामसरो जो कि प्रथम जेम्सकी तरफसे जहांगीर के दरबार में एलची बनकर आयाथा, लिखता है कि जहांगीर बादशाह हिन्दू साधुओं से अनेकों बार मिलाकरता था और एक बार तो उसने स्वयं एक योगीको फटे कपड़ोंमें राजाके पास आमतौरपर बैठा हुआ देखा। बादशाह बड़ी मिन्नतसे उसे पिताकह सम्बोधित करता था। इसतरह मुसलमानी ज़माने में हिन्दुओं और मुसलमानों का परस्प प्रेम प्रगट है।

नोट—हम 'बम्बई जीवदयाप्रचारकमंडल' के आभारी हैं, जिसने यह लेख हम को प्रकाशनार्थ भेजा है। इस लेख से हिन्दू-मुसलमानों को शिक्षा लेना चाहिये, जो इस समय एक दूसरे के प्रति अप्रियभाव रख रहे हैं। वस्तुतः दोनों जातियों की भलाई परस्पर प्रीतिपूर्वक रहने में ही है क्योंकि पड़ोसियों से वैर रखकर कोई भी सुखी नहीं रह सकता है। कल परसों ही मुसलमानों का बड़ा त्यौहार बकराईद तमाम हिन्दुस्तान में मनाया जायगा। इस में आपसी विश्वास और प्रेम के लिहाज से मुसलमानों को गऊकशी आदि कोई कार्य ऐसा नहीं करना ही लाज़मी है जिससे उनके पड़ोसी हिन्दुओं का दिल दुखे। उनके मान्यग्रंथ कुरानशरीफमें स्वयं पशुबलिदान को बुरा कहा है। मिर्जा अब्दुलफजी ने उसी आयत का अनुवाद इस प्रकार किया है:—"By no means will their meat reach to God nor their blood but the piety from you alone will reach to Him; thus has He pressed them into service for you, that ye magnifty God for that He has guided you, and give glad tilings to those who do good". (Korrn tr. pt. II p.895. Surat. LVIII.) इस दशा में उन्हें अपने मान्य ग्रंथ को मान दे अपने पड़ोसियों का दिल किसी हालत में नहीं दुखाना चाहिए। हिन्दू भाइयों को भी शांति और सफाई के साथ व्यवहार करना आवश्यक है। भावना है यह ईद सानन्द सर्वत्र पूर्ण हो।

—उ० सं०

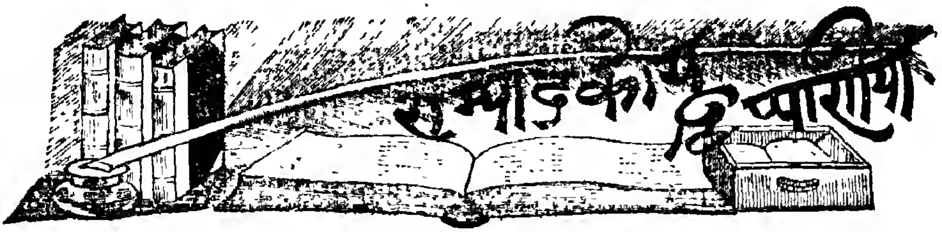

जैनियों का शिक्षा प्रचार।

आज बीस से कहीं अधिक वर्ष होने आए कि जैनियों में शिक्षा प्रचार के प्रयत्न होते चले आ रहे हैं, परन्तु दुःख का विषय है कि अभी तक उतना प्रचार नहीं हो पाया है जितना कि होना चाहिये। सारे भारतवर्ष में मुश्किल से पांच हाई स्कूल होंगे, कठिनता से एक दर्जन बोर्डिङ्ग हाउसेज़ होंगे और कालिज का तो नामनिशान ही नहीं! इस में शायद कमी का कारण यह हो कि समाज के अधिकांश महोदयों की दृष्टि धार्मिक विद्या प्रचार की ओर रही है! परन्तु इस ओर भी कुछ अधिक सफलता नहीं मिली है। अब भी पाठशालाओं के लिये योग्य अध्यापक नहीं मिलते और धुरंधर विद्वानों की तो बात ही न्यारी है। तिस पर खूबी यह है कि सारे समाज में आजतक इन धार्मिक विद्यालयों का प्रचार नहीं हो पाया है। योग्य घराने के लड़के इन में शिक्षा ग्रहण करने आते ही नहीं! आते हैं तो साधारण स्थिति के युवक जिनका उद्देश्य धार्मिक न होकर अपनी आजीविका पूर्ति की ओर है। इससे इन विद्यालयों से उद्देश्य पूर्ति होती ही नहीं और समाज में समुचित रीति से शिक्षा प्रचार होता ही नहीं। गताङ्कों में हम इसकी वास्तविक पूर्ति के लिये उपाय बतला चुके हैं। आवश्यक है कि जो विद्यार्थी समाज के आश्रय से विद्याध्ययन करें उन से अवश्य ही कुछ वर्ष आनरेरी कार्य-शिक्षा प्रचार का कार्य लिया जाय। और विद्यालयों में आवश्यक सुधार कर दिये जांय जिससे समयानुसार उनके द्वारा धार्मिक और लौकिक विद्या का प्रचार हो सके। इसका समुचित प्रबन्ध एक "जैन विश्वविद्यालय" की स्थापना से हो सका है, जिसके आधीन सब विद्यालय रहें और उनका शिक्षा क्रम भी वही नियत करे। साथ ही यह विद्यालय मिशन स्कूलों की भांति प्रत्येक जाति के बालकों के लिये खुले रहना चाहिये। स्थानीय अजैन प्रभावशाली व्यक्तियों का हृदय विद्यालय की ओर रंजायमान करने के लिये उनको भी अपनी समिति में सम्मिलित करना चाहिये। इस ही नीति पर कार्य करके शिवपुरी के वीर तत्त्व मंडल ने दो वर्ष में ही वह उन्नति और प्रख्याति प्राप्त की है जो मोरेना के सिद्धान्त विद्यालय ने अब तक प्राप्त नहीं कर पाई है। राज्य के उच्च-पदाधिकारी उसकी समिति में हैं और आज इस संस्था के प्रति ग्वालियर राज्य की सहानुभूति अधिक है। इतना ही नहीं, प्रत्युत वहां के विद्वान् अध्यापकों के प्रयत्न से इस संस्था के दर्शन

विदेशों के विद्वान् डा० स्टीन कोनों सदृश करते आते रहते हैं और जैनधर्म के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। श्वेताम्बर भाइयों की इस कार्यपरायणता से हमको शिक्षा लेना चाहिये और समुचित रीति में एक व्यवस्थित ढंग से शिक्षा प्रणाली में संशोधन करके मिशनरी ढंग से समाज में धार्मिक और लौकिक विद्या का प्रचार करने में अग्रसर होना चाहिये। इन्हीं कमताइयों के कारण हम लोग आजपर्यन्त शिक्षा प्रचार में सफल नहीं हो सके हैं। तब दूसरी ओर आर्यसमाजी इस ही समय में हम से बाजी मार ले गए हैं। लाहौर की आर्यसभाकी रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि भारत में उनके १६ तो कालिज हैं, ६० हाई स्कूल हैं और ३७५ साधारण संस्थायें हैं। भारत में ही नहीं, प्रत्युत भारत के बाहर भी उनकी अनेक संस्थायें हैं! जैनियों को जो अपने को बड़े गर्व की दृष्टि से देखते हैं और दावा रखते हैं कि आधी से अधिक भारतीय-व्यापारिक-सम्पत्ति उन के हाथ में है। अपनी शोचनीय शिक्षा प्रचार दशा पर लज्जित होना चाहिये। धर्म के प्रति यदि वास्तविक अभिमान है और उसकी प्रभावना इष्ट है तो शीघ्र ही संगठन करके एक विश्वविद्यालय की स्थापना कीजिए और उसके द्वारा धार्मिक तथा लौकिक उच्चकोटि की शिक्षा का प्रबन्ध सब के लिए कीजिए। ग्राम २ और नगर २ में शिक्षा-संस्थायें स्थापित कराइये। यह मत खयाल कीजिए कि आधुनिक ढंग पर उनकी नियोजना करने से तथा अंग्रेजी, शिल्प आदि विद्याओं का प्रबन्ध करने से पुण्य की प्राप्ति नहीं होगी धर्म का प्रचार नहीं होगा। आज आधुनिक रीति पर धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध न होने से हजारों युवक धर्मज्ञान से अज्ञानकार रह कर अपनी आत्माओं का कल्याण नहीं कर सके हैं। बाज दफे तो उनका श्रद्धान् उस ओर से शिथिल हो जाता है। इस शिथिलता को दूर इस ही प्रकार किया जा सक्ता है और धर्म का उद्योत सर्व साधारण में किया जा सका है। क्या यह आपको अभीष्ट नहीं है? क्या अंग्रेजी आदि लौकिक विद्या के पढ़ने वालों को जो संस्कृतज्ञों से संख्या में अधिक हैं- आप धर्मविज्ञ नहीं बनाना चाहते? यदि बनाना चाहते हो तो आधुनिक ढंग पर धार्मिक और लौकिक विद्या देने का प्रबन्ध कीजिए। कोरी बातें बनाने में कुछ भी लाभ नहीं है। हृदय कलुषता की पूर्ति उससे अवश्य हो सक्ती है। अंग्रेजों की शिक्षाप्रणाली की नकल करने की आवश्यकता नहीं, आवश्यक्ता है संस्थाओं को समयानुसार आदर्श रूप बनाने की, जैसे गुजरात राष्ट्रीय महाविद्यालय है।

२ एक जर्मन अहिंसा—प्रेमी?

'करेन्टथॉट' नामक अंग्रेजी पत्रमें मि० एन्डूज् एक जर्मन अहिंसा प्रेमी मि० आल्बर्ट श्वेटजर (Schweityer) के विषयमें लिखते हुये एक घटना का निम्न प्रकार उल्लेख करते हैं:—

"प्रातः समय जब हम दोनों स्टेशन को जाने लगे तब मैंने उनके अहिंसा पालन के संबंधमें एक साक्षात् घटना देखी। हम दोनों एक छड़ीमें लटकायें उनका पुलन्दा लिये आरहे थे जो तनिक भारी था। हम दोनों छड़ी का एक २ सिरा पकड़े हुये थे। कुहरके गिरने के कारण रास्ता जरा किम्

लने जैसा हो गया था। अकस्मात् उन्होंने अपने आप को संभालते हुये जल्दी ही एक अंगड़ाई ली, जिसकी वजह से छड़ी भी मुड़ गई और मैं करीब २ गिर ही पड़ा इसपर उन्होंने विनम्र हो क्षमा याचना की और जमीनपर से एक कीड़े को उठा-लिया, जो ठंड के मारे अधमरा हो रहा था और उसे एक झाड़ी के निकट बड़ी होशियारी से रख दिया। उन्होंने बड़े ही करुण स्वरमें फिर मुझसे कहा कि यहां यह खूब सुरक्षित रहेगा। यहां रास्ते में तो यह मरही जाता?' इस कार्य के सौन्दर्य का वर्णन करना वचन अगोचर है, परन्तु यह मेरी स्मृति में प्रत्येक जीवित प्राणी के प्रति दयाभाव रखने के उद्देश्य में अटल रहेगा।"

जैनियों को यहां पर तरस लाना चाहिये और अपने दैनिक जीवन की ओर दृष्टिपात करना चाहिये, जिसमें अनेक अनर्थ अनायास ही किये जाते हैं। शायद हमारे उन महानुभावों के लिये अहिंसा धर्म के प्राकृतिक प्रचार के यह समाचार असह्य हों जो विदेशोंमे उसका पहुंचना अधर्म कर्म समझते हैं।

—उ० सं०

श्री केशरिया जी के मंदिर जी सबन्धी शिलालेखों की नकल

१. श्री मन्दिरजी में प्रवेश करते ही डावी बाजू शिलालेख की नकलः—

"……यत लोका आ…………पद्म का प्रोप्ताद्य धित कंच रामो स्यामाःयस् आदिनाथ प्रणमामि नित्य विक्रमादित्य सम्वत १५७२ वर्षे वैशाख सुदी ५ वारसोमे भट्टारक श्री जशकीर्ति राज श्री कला भार्या सौनबाई विजयी राज दर्शा धूलेव ग्राम प्रति श्री ऋषभनाथ प्रणम्य कड़िया कोईयाभार्या भरमी तस्य पुत्र हिसा भार्या हिंसदेवी तस्य पुत्र कान्हा देव दारगोंड भ्रातयण दास भार्या लाछी भ्रातशाद भार्या बीचि सत् नाथा जरपाल श्री काष्ठासंघे वाजा ग्यात काश्यपगोत्र रार्काड़या हिसा मंडप नव चूकीय ॐ तजो बड़ पूर्तला सहनरं किसी ट. ठ ई ठे ई कथ्ज श्री ऋषभदेव जी ॐ. न. ॐ…… प्रणम्य श्री नाभिराज वीर व पाश्व वजीतिर्दे…… ………………………श्री काष्ठासंघे…… प्रतिष्ठित ये।"

२. नकल जिन मन्दिर जी में डावी बाजू की तरफ शिला लेख की:—

"लोका श्री स्वस्ति श्री कंचना पद्म ……मोक्ष मागुलमादिनाथं प्रणमामि विक्रमादित्य सम्वत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदी अक्षय तिथौ बुधदिने गुरु वारे, वाणिज्य परि सरोवर लोकाति खण्डवाला पगना राज ॐ विजयराज पालयति सनि उदय-

राज शैल श्रीमज्जिनेन्द्राराधन तत्परपर्यन्तु बागड़ प्रतिपाश्रो श्री साग भट्टारक श्री धर्मकीर्ति गुरुपदेशी नाना यूं संघवी सुत हरदास भार्या माहमद पत्यो सुपूंजा की तस्या श्री कमेश्वर प्रासादस्य जिनोद्धार श्री नाभिराजवंश कृतावतारे कल्पद्रुम महोत्सवेन सुधारिमन सुरङ्गगणाङ्कित कगानो संयुगादि जिनेश्वरो शुभमस्तु ······ ··· ···········काष्ठासंघे श्री विमल नाथ बिम्बकाजिन प्रतिष्ठित'।"

३. गहने की ओर (कमरा) की तरफ बड़ा मंदिर में प्रवेश करते डावी बाजू के शिला लेख की नकलः—

"स्वस्ति श्री सम्वत् १७१८ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्त्तमाने सर्जोत नाम संघ सर्व मासोत्तम मासे कृष्ण पक्षे १३ तिथौ शुक्र वासरे श्री काष्ठासंघे माड़ बागड़ कच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्रीप्रताप कीर्ति बार्याये श्रीकाष्ठा संघे नंदी तट गच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेना रामसेन न्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री श्रीभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री इन्द्रभूषण तत्पट्टे कमल मधुरामान भट्टारक श्रीसुरेन्द्र कीर्ति विराजमाने प्रतिष्ठितं बघेरवाल ज्ञाति गोवाल गोत्र संघवीश्री अल्हाभार्या कुराई तयो पुत्र भोज सा भार्या अम्बाई सिंघवोभी भीमा द्वितिये भार्या पद्मादेवी योजी हर्षाई देवी तयो संघपति बापू भार्या जग बाई द्वितीय पुत्र विट्ठल पतलादे. ततगच्छे बापूजी परिवार सहपति भोजे द्वितीये अंगाबरजी नत्कच्छे संघ की भोज भार्या पद्मादेवी यो पुत्र चत्वारि प्रथम भीमाख्य भार्या गंगा द्वितीय पुत्र चन्द्र भार्या गुमाई तृतीय पुत्र अर्जुन भार्या शकाई तयो तयोपुत्र संघवी तत्वासं भार्या द्वितीय प्रथम मरुदेवी श्री गोबादेवी तीजी देग पतन प्रथं प्रव सिंघवी बाई द्वितीय पुत्र संघवी भीमा भार्याद्वितीय प्रथम मलाई पुत्र सात लाहे तीभभार्या देवकुमारी समस्त कुटुम्ब कर्ता संयुक्त थी ऋषभदेव श्रीशः सादवी पुतिना प्रतिष्ठा महोत्सवं कृत श्री ऋषभ देवस्य नित्य प्रणमति श्री रस्तु शुभं भूयात् श्री' ·· ······· ···श्री धर्म भूषण त शिष्य लिखित बाली कल्याण।"

४—माता मरुदेवी जी व नाभिराजा का हस्ती भगवान के सन्मुख है, बगलमें दो पादुकाके शिला लेखों की नकल है (डावीतरफी कीः–)

'स्वस्ति श्री संवत् १८३२ शाके १६९७ प्रवर्तमाने शुभकारक कल्याणमासे कृष्णपक्षे ३ तृतीया शुभस्थ तिथि शुक्रवासरे श्री खड्गदेशे धूलेवग्रामे श्री ऋषभदेव चैत्यालये श्रीमूलसंघेसरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुन्द कुन्दाचार्याम्नाय भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तदनुक्रमेण भट्टारक श्री क्षेमकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्रीनरेन्द्र कीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री विजय कीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्रीनेमिचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री श्री१०८ श्री चन्द्र कीर्ति प्रतिष्ठिते या हम श्री शिष्यणीबाई जी श्री सजूबाई के सतुल विंशति जिन पादुका स्थापितं। शुभं।"

नोट-दूसरी पादुका का लेख भी उपर्युक्त ही है।

५-भट्टारक जी महाराज के बैठने की गादी पीछे बावन जिनालयमें के शिलालेख की नकलः–

सम्वत् १७५४ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे पं० सप्मा बुध श्री काष्ठा संघे नंदीतट गच्छे विद्या·

गण भट्टारक श्रीरामसेनान्वयेस्तदनुक्रमणे भट्टारक श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन तत्पट्टे भट्टारक श्री इन्द्रभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्युपदेशान्व दस्साहुमड़ ज्ञातीय वृद्ध शाखायां विश्वेश्वर गोत्रे साह अलहावंश सेठमयन भार्या रिल्याईबी तयो सुत सेठ कानजी भार्या कसनबाई द्वितीय भार्या हरबाई सुत सेठ सवलसिंह भार्या सरीबाई द्वितीय भार्या श्यानबहू इत्यादि सपरिवार सहसंघनां पाहुर तन लघु प्रासादकारितंना शुभं भवतु-भानेन सेठ जीवा सुत उदा करण श्री मेवाड़ा बा"-

६-आवड़ी म मन्दिरजी के चारों तरफ कोट के शिलालेख की नकल (जो कि कोट के अन्दर उत्तर की तरफ है):-

श्री आदीश्वर जी जा पायी छे:-

सकल जिनेश्वर पदनमि:
प्रणमि सरस्वतीमाय।
श्रीगुरु नापदनुसरि,
कहूं बुद्धि उपाय ॥१॥
श्री आदि जिनेन्द्र मान्दिदिश,
तिपे दुर्ग उतंग।
चन्द्र कीर्ति सूरि ब तिह,
किधों मनु तन रंग ॥२॥
देढारग देश मेवाड़ में,
उदयापुर सुजान।
राज करे तिह राजवी,
भामसिंह राजान् ॥३॥
हिन्दुपति बादशाह भलो,
छे मेवाड़ अर्कप्रताप।
गुण गम्भीर साव समो,
कल्पतरु समशाख ॥४॥
सम्वत् १८६३ में,
अषाड़ सुदी ३ तीज।
गुरुवारे मूहूर्त ज कल्यो,
भली तरे पूजा कीध ॥५॥
मूलसंघ गच्छ सारस्वती,
बलात्कारगण भर युद्धो।
कुन्द कुन्द सोनेर भलों,
कसरठ कीर्ति गच्छ ॥६॥
ते पाटे गुरु शोभतो,
भुवन कीर्ति नमू पाय।
ज्ञानभूषण ते पाटे प्रगट,
विजयकीर्ति सूरि हुश ॥७॥
शुभ चन्द्र सूरिवर सदा,
सुमति कीर्ति गुण कीर्ति गुरु।
गुणाति लुवादि भूषण तस पाट,
रामकीर्ति पाट शोभती ॥८॥
राख्यो धर्म न ठाठ,
पद्मनंदि पाटे सुजस।
देवेन्द्र कीर्ति गुणधार,
क्षेमे कीर्ति पर उज्वलो ॥९॥
नरेन्द्रकीर्ति मनुहार,
विजयकीर्ति पट्टे गुरु।
नेमिचन्द्र अवतार,
चन्द्रकीर्ति चन्द्र समो ॥१०॥
रामकीर्ति सुखकार,
यशः कीर्ति सुरावर सिंह।
उदयो पुन्य अंकुर,
करि प्रतिष्ठा दुर्गतणी ॥११॥
जस व्याप्यो भरपूर,

बागड़देश सुहावनों।
सागलपुर वर ग्राम,
संघपति साहर लिया ॥१२॥
मणि सुन्दर सुनो नाम,
गांधी धननी कजनी।
किसनजी सुतज्ञान,
कमलेश्वर गोत्रजतणुं ॥१३॥
वंश बघारनधाम,
भार्या आनंद कुंवर जे।
सुतमाणक चंद्र जे,
भार्या कानबाई निर्मली ॥१४॥
माण देवी जी तहे,
हे सुत विजयचन्द्र जानिये।
पुण्यवंत गुण वन्त,
धालमदे जी भार्या भली ॥१५॥
शीलवन्ती सुसन्त।
सुत नवल चद्र जनमियो,
पुत्री हर्खा जान,
पुण्यवंत प्रताप घणों ॥१६॥
गुण कलानिधान,
चन्द्रकीर्ति उज्वला।
करयो दुर्ग उतंङ्ग,
यशः कीर्ति गुरु निर्मलो ॥१७॥
करि प्रतिष्ठा मनरंग,
गांधी वजे चंद ग्री वली।
गुरु आज्ञा प्रतिपाल,
यश लियो अतिउज्वलो।
जश कीर्ति तण प्रताप ॥१८॥'

७—पावनजिनराज के रथणाधिन्द के लेख की नकलः—

"भट्टारक जी श्री नयरत्न जी सूरीश्वर जी वाहन जी धर्मचद्रजी पडितजी किफानजी पंडित मोतीचंद्र जी रावत जी जोधसिंह जी भंडारी कुंवर [श्री हुमड़ज्ञातीय वृद्ध शाखायां वजे चन्द्रजी सुत-नवल चद्र श्री चिरजीवि जाति भारग चन्द्रेण लिखि [कृतं धूलये नगरे श्री रस्तु कल्याणमस्तु शुभंभवतु साणेची ज्योतषी दौलतरामजी भट्ट उमाशंकरजी।"

८—मरुदेवी जी के पालखेमें लेखकी नकलः—

सम्वत्१७११वर्षे वैशाखसुदी ३ सोमे श्री मूल संघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे शीद्धः"

९—मरुदेवी के उत्तर की तरफ बावन जिन चर्जो के लेखः—

अ—"सम्वत् १७४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ सोमे श्री मूलसंघे श्री सरस्वती गच्छे बलात्कारगण श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वयेच्छे भट्टारक श्री सकलकीर्ति सुलादि भट्टारक श्री पद्मनन्दी तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्र कीर्तिसुलादि भट्टारक श्री राम कीर्ति।"

आ-लेख नं० 'अ' के अनुसार ही है।

इ "सम्वत् १७९५ वर्षे माघमासे कृष्ण पक्षे ५ मी तिथि सोमेवासरे भट्टारक श्री विजयरत्न मंणलेश्वर तपागच्छे सुश्रावक पुण्य प्रभाविक श्री देवगुरु भक्ति कारका कच्छिशाखायां महता-गोत्रो महता जी श्री रामचन्द्र श्री तस्य-भार्या बाई सूर्यदेवीजी तस्यात्मज महता श्री सौभागचन्द जी महता जी श्री सातु श्री भाई महता जी हर जी श्री पार्श्वनाथस्य जिन बिम्बस्थापितत।"

ई- 'सम्वत् १७६८···············।"

क-"सम्वत् १७१४ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे भृगुवासरे श्री मूल काष्ठासंघे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदाम्नाये श्री भट्टाकर श्री विम्ब भूषण भट्टारकः यशः कीर्ति भट्टारक श्री भुवन कीर्ति ·················।"

ख-"सम्वत् १७६५ ज्येष्ठ सुदी ५········ ············।"

ग-"सम्वत् १७७३ फाल्गुन सुदी २ बीज धुलेवग्रामे काष्ठासंघे नादत गाछी भट्टारक श्रीरामसेन कीर्ति·········· ।"

घ-"सम्वत् १५६० वष वैशाख····· धूलेवग्रामे काष्टासंघे नादत्तगाछी भट्टारक श्री रामसेन कीर्ति·············।"

च-"सम्वत १७६५ वर्षे वैशाख सुदी ५ रविवार काष्टासंघे नादत्त गच्छ भट्टारक श्री रामसेन कीर्ति ·············।"

छ—"संवत् १७१४ वर्षे माघ शुक्लपक्षे तिथौषष्टी भृगुवासरे श्री मूलसंघे नदी तटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेन व गोपालसेन भट्टारक श्री विष्णुभूषण भट्टारक श्री रत्नकीर्ति श्री श्री श्री भुवन कीर्ति तस्य भट्टारक श्री मच्छरी भीमसेन ॐ श्री शीपालसेन श्री ऋषभजिनबिम्ब प्रतिष्ठितं............................. .... ।"

ज—"संवत् १७३४ वर्षे माघसुदी ५ शुक्रवार श्री मूलसघे नन्दी तटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनः.............. ।"

१०—सूरज कुण्ड का लेख।—

'जो के गाम रिखबदेव में मन्दिर श्री ऋषभ नाथ जी महाराज का के बहुत पुण्यात्मा आये और पूजा की सनदें हिन्दु लोगों की जाहर और बाहर है और बहुत से लोग गुजरात वगैरह हर तरफ के वास्ते जात्रा श्री रिखबदेव जी को आते हैं। और अक्सर अमन्दर पुज साहबान बहादुर वा राहगीर मुसाफिरां हर कौम की व सवाय ब० स० फँवर जाने गाम मजकूर होकर जारी रहे लिहे वस्त के उस जगे कुण्ड पर डेरा साहिबान बहादुर का पड़ा होता है सो नावाकफियत के सबब से बाजे लोग कुण्ड मजकूर से मछली पकड़ने का इरादा कर पकड़ते हैं सो यह बात हिन्दु लोगों के नजदीक बुरी दीखती है प्रथम तो मेवाड़ भर में मोर वा कबूतर मारने की साफ मनाई है व खुशासन ऐसी तीर्थ की जगह में तो पकड़ना मछली का तो कुंड से वा मारने मोर कबूतर का सब को जरूर लिहाज रखना चाहिये। इस वास्ते सब को खबर दी जाती है कि जो कोई गाम मजकूरमें कुंड ऊपर डेरा करे तो मारे कबूतर तथा दूसरा जानवर गिरन्द का वा गाम मजकूर के न मारे और कुंड से मछली न ले।

ता० २२ मई १८५४ इस्वी ज्येष्ठ कृ० ११
सम्वत् १९१० (दस्तखत)

११—पगलिया जी का लेखः—

स्वस्ति श्री सम्वत् १८७३ वर्षे शाके १७३८ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारि ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ गुरु वासरे धुलेवनगर स्थित यथार्तिसार वासीका संघ श्राव प पुण्यप्रभावान् श्री देव गुरु भक्ति कारक श्री जिन आज्ञा

प्रतिपाल का साह श्री शम्भुदास तत्पुत्र सोचा एक कुलदीपक सेतुलाल अनन्तविदास तत्पुत्र दौलतराम ऋषभदास श्री उदेपुर बारास्तवरा श्री आदिनाथ पादुका कारापितं, अति हिनारीत पाग देस्त कुल भगद शिगेजणी भट्टारक श्री विजय जिनेन्द्र सूरिभिः उपदेशात् शमोहन रिजयेन श्री धूलेवरे तंमारि दलितं दआ रगं शुभम्।

नोटः—उक्त शिलालेखों से सर्वथा प्रमाणित है कि श्री केशरिया जी का द्रग, मन्दिर आदि दिगम्बराम्नाय के पुरुषों द्वारा निर्मित हुए थे। सर्व प्राचीन लेख सं० १४३१ और १५७२ के हैं और इनसे पूर्णतः उक्त व्याख्यान प्रमाणित है। काष्टा संघ, मूल संघ, धर्मकीर्ति आदि नाम दिगम्बराम्नायके विविध मुनिवंशोंके ही हैं। ऐसी दशामें इस तीर्थ पर दिगम्बरी पूजादि धर्म कार्य करने का अधिकार न रखते हों यह किसी तरह भी न्यायसंगत नहीं है। संभवहै उक्त लेखों में नं० '२' और नं ११ के लेखों से वहां श्वेताम्बरभाइयों का अस्तित्व प्रमाणित किया जाय क्यों कि सामान्यतः यह श्वेताम्बर शिलालेख से मालूम होते हैं। परन्तु नं०'३' सं० १७६५ का एक प्रतिमालेख है जिससे यह प्रगट नहीं होता कि इस प्रतिमा से और धुलेव केशरिया जी से कुछ संबन्ध है। संभव है कि नं०११ को अर्वाचीन सं०१८७२के लेखमें उल्लिखित श्वेताम्बर संघने उसे वहां स्थापित किया हो क्योंकि उसटी समय के अन्य प्रतिमा लेख वहां दिगम्बर अस्तित्व प्रमाणित करते हैं। जिस पर यह मूर्ति दिगम्बर पूनीत होती है। ऐसीदशा में उसपर का लेख श्वे० आम्नाय का नहीं हो सकता और नं ११ का लेख तीर्थ पर श्वे० का अधिकार प्रमाणित नहीं करता और वह बहुत अर्वाचीन है। इस हेतु इस तीर्थ पर पूर्णतः दिगम्बरों का अधिकार प्रमाणित होता है। और उन्हें मन्दिर जी पर ध्वजारोहण करना परमावश्यक न्याय सगत है। उदयपुर राज्य को पक्षपात रहित होकर दिगम्बरों के न्यायोचित स्वत्वों की रक्षा करना चाहिये। श्वेताम्बर भाईयों को भी कम से कम सचाई के लिए इस तीर्थ पर दिगंबरियों की कारगुजारी में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। उत्तम हो भारत के संपूर्ण तीर्थों के सबंध से वे पंचबद्द कर म० गांधी की अध्यक्षता में झगड़ा तय करलें। भगवान् महावीर के भक्तों का आपस में लड़ना शोभता नहीं। श्वे० एसोसियन को ध्यान देना चाहिये।

—प्र० सं०

परिषद् समाचार

इतिहास संशोधन—पंजाब के स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले अंग्रेजी इतिहास High Roads of Indian History में से वह अंश सरकार ने निकलवा दिये हैं जो जैन मान्यता के विरुद्ध हैं प्रकाशक नवीन संस्करण में आवश्यक सुधार करने को रजामन्द है केवल विषय पुष्ट में प्रमाण मांग रहे हैं जिनको श्रीयुत् चम्पतराय सभापति परिषद् आत्मानन्द जैन सोसायटीके द्वारा भेज रहेहैं।

जैन कलारों में आन्दोलन

जैन कलारों (नागपुर) में प० प्रभाचन्द्र प्रचारक परिषद् जैनधर्म का प्रचार कर रहे हैं। श्रीयुत् चम्पतराय जी सभापति परिषद् ने 'असहमत संगम' व 'कर्म के पर्दे में से झांकी' दो पुस्तकों को जैन कलारों में बिना मूल्य वितरण करने के लिये भेजा है।

रिपोर्ट द्वारा पं० प्रेमचन्द्र प्रचारक परिषद्

रीठी—२८ मई से दूसरी जून तक रहा यहां श्रुतपञ्चमी का उत्सव मनाया गया। शास्त्रों को सम्भाला गया व पूजन की गयी। व्याख्यान मन्दिर जी में शुद्ध खादी के वेष्टनादि प्रयोग में लाने का दिया, यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ।

उमरिया—(रींवा स्टेट) में ३ घर दि० जैनियों के हैं जन संख्या २५ है व्याख्यान वेश्या-नृत्य अश्लीलगाने, कन्याविक्रय बाल, वृद्ध-विवाह बन्द करने का दिया। भाइयोंने उक्त कुप्रथायें बन्द करने का तथा तीन भाइयों ने स्वाध्याय का वचन दिया।

सहडोल—(रींवा स्टेट) ४-५ जून को रहा, दोशास्त्र सभा व एक जातीय सभा की। उपस्थिति ४० थी व्याख्यान से २० भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा वेश्यानृत्य अश्लील गान की प्रथा बन्द की तथा मन्दिर जी में शुद्ध खादी के प्रयोग का वचन दिया। ७ घर दि० जैनियों के हैं।

बुढ़ार—(रींवा स्टेट) ६ जून को शास्त्र सभा की तथा वैराग्य पर भाषण दिया। १५ भाइयों ने स्वाध्याय का तथा मन्दिर जी में धोती दुपट्टा शुद्ध खादी के रखने का तथा वेश्यानृत्य कन्याविक्रय बन्द करने तथा स्वाध्याय का वचन दिया। गृहसंख्या ३५ तथा जन संख्या दोसौ है यहां का प्रचार अच्छा है और शास्त्रसभा होती है।

जैथारी—(रींवा स्टेट) ८-६ जून को दो शास्त्रसभायें और एक जातीय सभा की। ११ भाईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया शास्त्र-सभा पुनः चालू कराई तथा भाइयों ने कन्या-विक्रय आदि कुप्रथा बन्द करने तथा मन्दिर जी में शुद्ध खादी के वस्त्र का वचन दिया। जैन गृह १३ जन संख्या ६८ हैं। ४।) रु० उपदेशक फंड को प्राप्त हुये।

गोरेला—(बिलासपुर) २ घर जैनियों के हैं मुखिया सिंघई मेघराज से मिला। उन्होंने मन्दिर में शुद्ध खादी के वस्त्र काम में लाने तथा कन्या विक्रय आदि कुप्रथाओं को बन्द करने का वचन दिया मन्दिर जीर्णावस्था में है। सिंघई जी दूसरा मन्दिर निर्माण कराना चाहते हैं।

पिएडरा रोड—(बिलासपुर) १० जून को २ शास्त्र सभा एक जाति सभा की। जनसंख्या ३५ है। भाइयों ने मन्दिर जी में शुद्ध खादी प्रयोग में लाने तथा कन्या विक्रय बालविवाह आदि बन्द करने का तथा चार भाइयों ने स्वाध्याय का वचन दिया। चौधरी बुद्धि लाल जी सज्जन धर्मप्रेमी पुरुष हैं खादी प्रयोग में लाते हैं। उपदेशकफंड को ८) रु० सहायता प्राप्त हुई।

अकलतरा—(बिलासपुर) १२ से १५ जून तक २ शास्त्र व एक जातीय सभा हुई। भाइयों

ने कन्याविक्रय बालविवाह आदि प्रथा बन्द कर दी तथा ८ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया यहां शास्त्रों के सब वेष्टन पहिले ही से खादी के हैं यहां एक महावीर दि० जैन विद्यालय है २१ बाल बालिकाएं हैं पठन पाठन सन्तोष जनक है ५॥) रु० उपदेशकफंड को सहायतार्थ प्राप्त हुए जन संख्या १०८ है।

रिपोर्ट दौरा पं० भंवर लाल राजपूताना प्रान्त

ऋषभदेव—मैं ज्येष्ठवदी १३ को पहुंचा जैन गृहसंख्या १०० है ४ शास्त्र सभाएं व एक व्याख्यान सभा हुई। व्याख्यान गृहस्थ धर्म पर हुआ। अच्छा प्रभाव पड़ा। ऋषभनाथ की प्रतिमा अत्यन्त मनोज्ञ है। प्रबन्ध स्टेट की तरफ से एक कमेटी द्वारा होता है चढ़ावे पर दिगम्बर श्वे० में मुकद्दमेंबाजी है। केशरिया जी के जैन विद्यालय का निरीक्षण किया अवस्था अच्छी नहीं मालूम होती। यहां दो दि० साधु हैं परन्तु वे वास्तव में साधु नहीं है केवल भेशधारण किए हैं यहां की जनता उनको साधु नहीं समझती

इलियामपुर जेष्ठ सुदी १ को आया यहां जन संख्या ५ है। सभा में केवल २० ही सज्जन आए। एक पाठशाला खोलने की व्यवस्था की ५) रु० उपदेशक फंड को प्राप्त हुए हैं।

वीर के विषय में विद्वानों के मत।

प्रसिद्ध बङ्गाली विद्वान मि० चिन्ताहरण चक्रवर्ती काव्यतीर्थ बी०ए० लिखते हैः—मैं जैन समाज के विविध भाषाओं में प्रकट होने वाले पत्रों को हमेशा पढ़ता रहता हूं इसलिए कह सका हूं कि 'वीर' सामाजिक झगड़ों से बरी हैं और इसमें ऐसे उत्तम लेख प्रगट होते हैं कि जिनको जैनधर्म के सब प्रकार के पाठी बड़ी दिलस्पी से पढ़ सक्ते हैं। इस पत्र से मुझे 'जैन हितैषी' का स्मरण हो आता है जो एक उपयोगी जैन पत्र था। तिस पर इसके गत 'महावीर जयंती अंक' में जो लेख प्रगट हुए है उनसे केवल जैनी ही लाभ उठाएँ यह बात नहीं प्रत्युत वे सब विद्वान इससे लाभ उठा सके है जो प्राचीन भारतीय इतिहास और सभ्यता के खोजी हैं।" इससे पहले 'नवांणाङ्क' के विषय में आपने लिखा था—"यदि इसी प्रकार उपयोगी खोजपूर्ण लेख 'वीर' में नियमित रूप से प्रकट होते रहे तो 'वीर' जैनपत्रों में सर्वोत्तम प्रमाणित होगा, जैसे कि वह अब हो रहा है।"

मध्य प्रान्त के विद्वान् श्रीयुत् मनोहर बापू जी महाजन बी० ए० एल० एल० बी० सम्पादक 'वन्दे-जिनवरम् आणि राजहंस' लिखते हैंः—

"मुझे यह कहने में हर्ष है कि 'वीर' के लेख उपयोगी और मनोरंजक हैं और प्रकाशक के सराहनीय उत्साह से वाह्याकृति भी चित्ताकर्षक हैं।"

"जैन महिलादर्श" लिखता है—

"यहपत्र... जनता की अच्छी सेवाकर रहा है। इसमें ऐतिहासिक दृष्टि से जैन धर्म का स्वरूप दिखाया जाता है,जिसका प्रभाव अजैन जनता पर अच्छा पड़ता है। इस ८६ पृष्ठ के विशेषांक में उत्तम लेख और कविताओं का संग्रह किया गया है। चित्र भी बड़े सुन्दर छपे हैं। लोगों को ग्राहक होना चाहिये। वा० मू० २॥)।"

संसार दिग्दर्शन

समाज

—बिजनौर—में ब्रह्मचारी शीतलप्रशाद जी पधारे थे। ला०रतनलालजी के प्रयत्न से ब्रह्मचारी जी का पबलिक व्याख्यान धर्म की वास्तविकता पर २३ जून को दो घंटे तक हुआ—पांच सौ छःसौ शिक्षित अजैन उपस्थित थे। सिविलसर्जन मुन्सिफ् और कितने ही वकील सम्मिलित थे-व्याख्यान का बहुत ही उत्तम प्रभाव जनता पर पड़ा।

—जीवदया सभा आगरा के प्रयत्न से रांगस में भैरों जी पर प्रतिवर्ष होने वाली बलिहिंसा इसी जेठ में दशहरासे सदाके लिये बंद करा दी गई है।

—जीवदया का डेपुटेशन—प्रतिबिम्ब महावीर स्वामी (जखैय्या) पर होती हिंसा बंद करने तथा प्रतिबिम्ब को अपने अधिकार में लेने को १ डेपुटेशन साहब कलक्टर मैनपुरी की सेवामें ४ जून को गया था। जिसमें जैनधर्मभूषण ब्र० सीतल प्रसाद जी आदि कई व्यक्ति सम्मिलित थे। साहब कलक्टर ने कहा कि यदि उन लोगों से मिलकर प्रतिबिम्ब हासिल करें और हत्या बन्द कर दें तो सरकार को कुछ आपत्ति नहीं होगी या अदालत दीवानी से हक प्राप्त करें तो कलक्टरी आपको फौरन प्रतिमा दिला देगी ब्रह्मचारी पं० बाबूराम जी को साथ लेकर पैदल गए थे और प्रतिबिम्ब के सन्मुख बड़ी भक्ति से स्तोत्र पढ़ा था। जैनियों से यह कहा कि प्रतिमा बहुत प्राचीन अखण्डित सर्वथा पूजनीय है अतएव आप लोग नित्य प्रक्षाल कर अर्घ चढ़ाया कीजिए, उन्होंने ऐसा करना मन्जूर कर लिया है।

—चावली (आगरा) ऐलक पन्नालाल जी के प्रयत्न से आपस का मनोमालिन्य दूर हो गया तथा नवीन मंदिर बनाने के लिये चन्दा एकत्रित हुआ और उसकी पूजा का उचित प्रबन्ध कर दिया गया।

—आदर्श जैन नाम का साप्ताहिक पत्र समाज से कुरीति दूर करने तथा स्वतंत्र विचारों को प्रकाश करने के हेतु वाराणसी निकलनेवाला है जैनियों को ग्राहक बनना चाहिये पता। वा० मू० २)

—वास्तव (जयपुर) चार मंदिर हैं पूजा का प्रबन्ध ठीक नहीं है। भाईयोंको ध्यान देना चाहिये।

—देहली। की जैन संगठन सभा व जैन सेवक संघ भिन्न २ संस्था है और भिन्न ही कार्य कर्त्ता है।

—श्री देवगढ़ जी क्षेत्र की धर्मशाला, यहां पर ठहरने के लिए कोई धर्मशाला नहीं है और

न मीठे पानी का कुंआ ही है। यात्रीगण बिलकुल मैदान में ही ठहरते हैं। इसलिए हमारे जाखलौनवाले महानुभावों ने धर्मशाला का कार्य प्रारम्भ करदिया है, बहुतसा काम तो उसका हो गया है अब कुछ काम धर्मशाला का बाकी रह गया है उसमें द्रव्य की अतीव आवश्यकता है। अतएव सब उदारचेता, धर्मात्मा भाइयोंसे अपील है कि आप लोग अपनी गाढ़ी कमाई का थोड़ासा अंश इस कार्य में प्रदान कर दीजिए।

समाजसेवक—नाथूराम सिंघई

—दिल्ली विश्वविद्यालय से निम्न लिखित जैनी नवयुवक वकालत (LL B Previous) में पास हुए हैं:—बाबूराम जैन, कुन्दन लाल जैन, दिलीप सिंह जैन, जिनेश्वर दास जैन मोती लाल जैन, और ऋषभदास जैन तथा (Final) में भीमसेन जैन पास हुए हैं, इन महाशयों ने अपने नाम के पीछे "जैन" शब्द का प्रयोग कर अपना जैनत्व भाव प्रकट किया है। शेष छात्रों को शिक्षालेनी चाहिए। प्रो० लक्ष्मीचन्द्र जैन, मन्त्री शिक्षाविभाग को इन नवयुवकों का ध्यान जैनधर्म की शिक्षा की ओर आकर्षित करना चाहिए, तथा दातारों को अंग्रेजी की जैनधर्म की पुस्तकें इनको प्रदान करना चाहिए।

—डा० हर्मन जैकोबी जैनदर्शन दिवाकर की ७५ वां वर्ष गांठ जर्मनी में आपके मित्रों ने गत ११ फरवरी को ७५ वी वर्ष गांठ मनायी। आप वहां विश्वविद्यालय के रिटायर्ड भारतीय दर्शन के प्रोफेसर थे आपने ही अनुसंधान करके यह सिद्ध किया था कि जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है बौद्ध की शाखा नहीं है। आपने यह भी सिद्ध किया है कि श्री पार्श्वनाथ व श्री महावीर भगवान वास्तव में ऐतिहासिक पुरुष हुये हैं। आप को सन् १९१४ में जैनियों की ओर से 'जैनदर्शन दिवाकर' का पद दिया गया था।

मौजा नगला सरुप जिला आगरा में पद्मावती परिषद् की कोशिश से १ स्थानीय जैन शाला खोली गई है जिसमें जैन अजैन सब को धार्मिक व व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है।

मन्त्री

देश

—भारत के रत्न दास जी का परलोक गमन।

मर गया है वह जो जीता है अपने लिये।
जीते हैं, वह जो मर गये औरों के लिये॥

हाय! देशबन्धु

भारत के लाडले पुत्र, गरीबों के रक्षक, निधनों के पालक, अत्याचारियों के शत्रु, स्वतंत्रता के पुजारी, कांग्रेस के नाविक, चित्तरञ्जन दास आज भारत को बिलखता छोड़ परमधाम को प्राप्त हुए।

दास महोदय संसार की उन महान् आत्माओं में से थे जो अपने लिये नहीं प्रत्युतः संसार के लिये जन्म मरण के बन्धन में पड़ते हैं। ६ लाख रु० सालाना की बैरिस्टरी से आमदनी होते भी आप सदैव निर्धन बने रहते थे। बंगाल की प्रायः सब ही सार्वजनिक संस्थाओं को आपसे परिपूर्ण सहायता मिलती थी। आपकी बहिन अमलादासी ने पुरुलिया में एक अनाथालय स्थापित किया था, उसको आप दो हजार रुपया मासिक सहायता देते थे। नदिया के अनाथालय, नित्यानन्द

आश्रम को दो लाख रुपया दान दिया। बङ्गाल के निर्धन विद्यार्थी और निराश्रया विधवाओं के लिये आपका द्वार हर समय खुला रहता था। जहाँ आप कानून के अद्वितीय विद्वान् थे, साथ ही आप प्रतिभा संपन्न कवि भी थे। बङ्गसाहित्य के विद्वानों का मत है, आप की कविता पूज्य रविन्द्रनाथ ठाकुर के टक्कर की होती थीं। साहित्य सेवी और देशभक्तों की विपुल धन से सदैव सहायता करते थे।

यूं तो अलिपुर बमके समयसे आप राजनैतिक मामलात में भाग लेते रहे परन्तु पञ्जाब के अत्याचारों के बाद अपनी वकालत तक छोड़ रात दिन स्वतन्त्रता देवी की ही उपासना में मग्न रहते थे। जिसके फलस्वरूप सरकार ने छः मास के लिए जेल भेजा। जेल से आने के कुछ दिन पीछे स्वतन्त्रता देवी के चरणों में अपना मकान तक बेचकर सर्वस्व अर्पण कर दिया। इस समय किसी सम्बन्धि के मकान में रहते थे तथा २५०, रु० मासिक में ही गुजर करते थे। जेल में स्वास्थ्य बिगड़ जाने से डाक्टरोंने बारम्बार विलायत आबहवा बदलने के लिये जाने की सम्मति दी। परन्तु आजादी के मतवाले ने एक बार भी उस ओर कान तक न दिया और नश्वर शरीर को बलिवेदी पर अर्पण कर ३३ करोड़ भारतवासियों को बिलखता छोड़ १६ जून को स्वर्ग सिधार गये।

भारत के भाग्य में तो रोना ही बदा है पर राजनैतिक विचार विभिन्नता रखते भी शत्रु मित्र यहां तक की युरोपियन तक आपके लिये रो रहे हैं। चार लाख अंग्रेज हिन्दुस्तानी पारसी आदि अर्थी के साथ थे।

सभी ओर से प्रशंसा और सहानुभूति

देशबंधुदास की असामयिक मृत्यु पर, महात्मा गान्धी, ला० लाजपतराय, प० मोतीलाल नहरू, प० मालवीय, मौ० मुहम्मदअली, श्रीयुत जिन्ना, चिन्तामणि आदि देश के प्रत्येक दल के नेताओं ने तथा लार्ड बर्किनहेड भारत सचिव, लार्ड रीडिङ्ग वायसराय, गवर्नर आदि बृटिश उच्च कर्मचारियों ने शोक तथा देशबन्धुदास की योग्यता, देशभक्ति दान की प्रशंसा की है। बृटिश साम्यवाद दल तथा इङ्गलैण्ड मजदूर दल युरोपियन असोसियेशन, डेली हेरल्ड, लण्डन टाइम्स, स्टेट्समैन आदि विदेशी संस्थाओं और पत्रों ने शोक और सहानुभूति प्रकट की है। भारत का तो बच्चा २ इस दुःख को भूल ही नहीं सकता। उनकी आत्मा शान्ति को प्राप्त हो, हमारी यही हार्दिक अभिलाषा है।

—देशबन्धुस्मारक कोष महात्मा गांधी जी देशबन्धु दास की यादगारीमें १० लाख का स्मारक कोष करना चाहते हैं जिसमें तीन लाख के वायदे हो चुके हैं और ४½ लाख के लग भग वसूल भी हो चुका है।

—अदालतों की मानहानि बिल के प्रति भारतीय पत्र सम्पादक अपना असंतोष प्रगट कर रहे हैं। वास्तव में अदालतों के फैसलों पर उचित रीति से टीका टिप्पणी करने का अधिकार उस बिल के पास हो जानेसे जाता रहेगा, जो कि न्याय की दृष्टि से सर्वथा उपयुक्त नहीं है।

—भारत में औद्योगिक प्रगति गत कतिपय वर्षों से देश में औद्योगिक कार्य की ओर प्रवृत्ति हुई है, परन्तु वह अब घटती पर है, यह निम्न अङ्कों से प्रमाणित होता है भारतियों को विचारना चाहिये-

सन् १९१९-२० में ९४८ औद्योगिक कम्पनियाँ खुलीं जिनका मूल धन २८२ करोड़ रुपये थे।						
,, १९२०-२१ ,, १०३९	,,	,,	,,	१४८	,,	,,
,, १९२१-२२ ,, ७२०	,,	,,	,,	८०	,,	,,
,, १९२२-२३ ,, ४८९	,,	,,	,,	३०	,,	,,
,, १९२३-२४ ,, ४३०	,,	,,	,,	२५	,,	,,
,, १९२४-२५ ,, ४११	,,	,,	,,	२१	,,	,,

विदेश

—आत्मवाद की खोजें विदेशों में ज़ोरों पर हो रही हैं। सर ओलीवर लॉज और सर आर्थर डॉयल की खोजों से भारतीय आत्मिक सिद्धान्तों की पुष्टि हुई है। सर ओलीवर लॉज ने सिद्ध किया है कि परलोक में ऐसी आत्माएं भी हैं जो आत्मोन्नति में तल्लीन पुरुषों के जीवन कार्यों में सहायक हो सकती हैं। उन भारतीयों को शिक्षा लेना चाहिए जो अपने प्राचीन ऋषियों की मान्यताओं में विश्वास नहीं रखते।

—चीन में सिंघाई कैन्टन आदि नगरों में विदेशियों के विरुद्ध विशेषकर अंग्रेजों के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन हो रहा है। सिंघाई व कैन्टन में अंग्रेज व यूनानी पत्नियाँ हांगकांग आ गई हैं। इन स्थानों पर बृटिश की ओर से गोली चली थी जिसमें कितने ही चीनी मारे गये थे तथा कई अंग्रेज व जापानी मारे गये हैं। चीनी विद्यार्थी व जनता अपनी सरकार से कह रही हैं कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई आरम्भ कर दो। देखें क्या होता है।

—कहा जाता है कि लार्ड रीडिंग और लार्ड बर्केनहेड का परामर्श समाप्त हो गया। उसमें निर्णय हुआ कि १९२९ के पहले कोई भी घटना होने पर सुधारों में संशोधन न किया जाय। सुधार जांच कमेटी का रिपोर्ट के अनुसार सुधारों की सफलता के लिये यत्न किया जाय। बङ्गाल और मध्यप्रान्त की स्थिति उत्पन्न न होने दी जाय। सुधारों के १९२९ के बाद भविष्य के सम्बन्ध की योजनाओं पर गवर्नमेन्ट विचार करे। क्रान्तिकारियों को रोकने के लिये वायसराय और कार्यकारिणी कौंसिल की पूरी सहायता की जाय। ली कमीशन की सिफ़ारिशें मानी जांय। सेना का भारतीय करण अब रोक दिया जाय।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०
१	उद्गार (कविता)	५४५
२	राजा मिलिन्द अथवा मनेन्द्र ...	५४६
३	बहुमत	५५०
४	मुसलमानी राज्य में गोरक्षा ...	५५२
५	सम्पादकीय टिप्पणियां	५५७
६	केशरिया जी के मन्दिर की सम्बन्धी शिलालेखों की नकल	५५९
७	परिषद् समाचार	५६५
८	वीर के विषय में विद्वानों के मत	५६६
९	संसार दिग्दर्शन	५६७

आचिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

☞ चाँदी के फूल भाव १।) तोला— सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला ☜

(सिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व बेश जितने तोल चाँदी में तैयार होसकता है उसकी विगत।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*वंदनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र एक	३६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चंवर एक	७) से २५)	*अष्टमङ्गलद्रव्य	१००) से २००)
हाथीकासाज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रतिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़ेकासाज	२००) से ५००)	*चौकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वप्न	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १०००)	समोसरन	१००) से ३०००)	*भामण्डल	३०) से १००)
*सोंटा	५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीप की रचनाकामांडला	१०) से ५००)	*कलश	५०) से ५००)
*छत्री डंडी	३०) से ५०)	तेरह द्वीप की रचनाकामांडला	५००) से २०००)	तख्त चांदी के	२००) से १०००)
जैन-मन्दिर के उपकरण।				बारहदरी	२५००) से ५०००)
गन्धकुटी	२५००) से ४०००)			*पूजन के बरतन	२००) से ५००)
वेदी	८००) से ४०००)				

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिर जी के काम में ३=) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। *इस चिह्न की चीज तैयार भी रहती है। *ये चीजें तो वे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता - (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस।

(२) जैनसमाज कार्यालय सिंघई फूलचन्द जैन, कार्यालय, चौखम्भा बनारस सिटी।

Tel. Address—"SINGHAI, BENARES"

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शहजादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूलकी सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग, मुँह से फोड़ा फुन्सी दाद,खाज,हाथ,पांव का फटना बगल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सबको साफ़ करके चमड़े को नरम करदेती है। यह फलोंसे बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदनसे नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) रुपया ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)

पता:—मुहम्मद शफ़ीक एण्ड को० आगरा।

बालरक्षा ग्रामरत बक्स।

बहुधा देखने सुननेमें आता है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक रोग मसान,पसली श्वास,खांसी लहक, दस्त, सूकिया, ज्वर,नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फँसकर मरजाते है और ठग लोग उनके माता पिताको भूतादिक की बाधा झपटा, नजर, बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता।हमने इसकेलिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकोंके सब रोग शान्त होते हैं। जो ४०वर्ष से धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफ़िकेट,मौजूद हैं एकबार परीक्षा अवश्य करें। मू०१) डा०ख०।=) कुल१॥=)

मिलने का पता—ज्योतिष रत्नभवन फ़र्रुखनगर (पञ्जाब)

यदि आप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं
तो वीर में अपना विज्ञापन अवश्य छपवाइये

वीर—को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ता है।

वीर—हरएक जैन स्कूल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।

वीर—धार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है।

वीर—उच्चकोटि का पाक्षिकपत्र होनेसे फाइल में रक्खा जाता है और बार बार पढ़ा जाता है।

वीर—एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

वीर—विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा।

शीघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट मालूम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पछताना पड़ेगा।

पता:—'वीर' कार्यालय, बिजनौर (U.P.)

केवल टाइटिल पेज पं० जीवाराम उपाध्याय ने अपने सरस्वती प्रेस मुरादाबाद में छापा।

वर्ष २] १५ जौलाई सन् १९२५ ई० [संख्या १८

श्रीवर्द्धमानाय नमः।

श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र।

आन० सम्पादक :—
जै० ध० भू० ध० दि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

आन० उपसम्पादक :—
श्री कामताप्रसाद जी

आन० प्रकाशक—

सावधान ! नई ख़ुशख़बरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मज़दूरी घटादी ।

६) भरी मज़दूरी नकाशीदार फ़ेन्सी काम जैसे वेदी, नालकी, सिंहासन, चंवर, छत्र आदि

४॥) भरी मज़दूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वगैरह ।

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये ।

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है ।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं । चंवर, सिंहासन, वेदी, नालकी अष्टमङ्गलद्रव्य, अष्टप्रातिहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि । तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर, कलश, कलशी, ज़रदोज़ी का सामान जैसे सन्दोवा, परदा, अछार, बन्दनवार इत्यादि ।

सीताराम लहरीप्रसाद,
मालिक— उपकरण कार्यालय चौक, काशी ।

हमारे अन्य कार्य ।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां, साफे, दुपट्टे, कमख्वाब, पोत के थान, टेसकाफ काशी सिल्क के थान, दुपट्टे साफे डाबका गोटा, पट्टा, पुरानी साड़ी खरीदा वगैरह ।

जाति सेवक—
सीताराम लहरीप्रसाद, सराफ़, बनारस

ज़ियाबीतस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज ।

हारवर्ड यूनीवर्सिटी अमरीका के योग्य वैद्य ज़ियाबीतस जाक्लिन Joslin और एलन Allen साहबान के तरीके-इलाज जिसको तमाम विज्ञान-जगतमें प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है के मुताबिक डा० बख्तावरसिंह जन एम० डी० (अमरीका) सदर बाज़ार देहली को अपने मरीज़ों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई ।

१—मुझे इस तरीके इलाज से कतई आराम होगया है । मैंने महाराज साहब श्री नेपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिल्कुल आराम होगया है ।

—ह० जनरल विजय शमशेरजङ्ग बहादुर: Foreign Minister, Nepal देहली ।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर-प्रमेह रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया । मैं बड़ा मशकूर हूँ ।

शीतलप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली ।

३—तीन चार साल से मुझे शकर-प्रमेह रोग ने तङ्ग कर डाला था लेकिन आपके तरीके इलाज से बिल्कुल ठीक होगया है ।

जानकीप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली ।

४—मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफ़ीद साबित हुआ ।

चित्रसेन जैन रईस, कांदला ।

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ | बिजनौर, श्रावण कृष्णा १० वीर सम्वत् २४५१
१५ जौलाई, सन् १९२५ | अङ्क १८

वीर-विनय

जय जयो विभु वीर सुधीर हो !
मग विकाशक शासक वीर हो !
अनल हो विभु कर्म करीर को ।
जलद हो जगताप समीर को ॥
सुमति सागर ज्ञान अगार हो !
शुभ दिभाकर हो, जगतार हो !
हरत दुःख अपार सभीरु को ।
भटकते फिरते अति दीन को ॥
अलभ वैद सही भव नाश हो !
जय जयो विभु वीर सुखाश हो !
तम अज्ञान चहूँ गत छा रहा ।
सुपथ औ सत् ज्ञान न हा ! रहा !
किधर जा लखते निज रूप हो ?
यदि न बैन-गिरा तव नाथ हो !

विश्व तुही अनमोल हितेच्छु है ।
तु विन हेतु दयालु शुभेच्छु है ॥
त्रिजग पालक हे शरणे गहो !
जय जयो विश्व वीर सुधीर हो !

—'वीर'

प्राचीन जैन साहित्य के नमूने

जैन साहित्य वर्तमान में भी कितना विशद और अन्यों की अपेक्षा अतुल है, यह आज सर्वमाननीय बात है। परन्तु दुःख है कि धार्मिक विद्रोहियों और विदेशी आक्रमणकों के हाथों से बचा खुचा यह अतुल साहित्य भी आज हमारी मूर्खता और उदासीनता के कारण चूहों और दीमकों का, भोज्यपदार्थ बन नष्ट हो रहा है। हज़ारों स्थानों के जैन भण्डारों में कितने अमूल्य साहित्यरत्न छिपे पड़े हैं यह सर्वज्ञ ही जानें। परन्तु जब कभी कहीं के भण्डार की खोज कोई साहित्य प्रेमी कर बैठता है तो वहाँ किसी न किसी अद्भुत रत्नको पालेता है। ग्वालियर, आगरा, इटावा आदि ज़िलों के जैनभण्डारों में भी प्राचीन कीर्तियां अवश्य ही छिपी पड़ी हैं क्योंकि इस प्रान्त में भट्टारकों की गद्दियां रह चुकी हैं, जिन्होंने साहित्योद्धार और मंत्र-यंत्र की कुशलता में भरसक प्रयत्न किये थे, अभी हाल ही में जसवंतनगर के प्राचीन गुटकों में जो अपूर्व छोटे २ चमत्कारपूर्ण साहित्य के नमूने हमें मिले हैं वह हम पाठकों की समक्ष रखते हैं।

निम्न का स्तोत्र किस प्रकार व्याकरण शास्त्र की निपुणता और कवि के शब्द भंडार की प्रचुरता का दिग्दर्शन कराता है, वह सहज में ही उसके पाठ से अन्दाज़ा जासकता है। आज इसका अर्थ लगाना भी शायद मुश्किल होगाः—

स्तोत्र १

वाराणं वरणं रणं रण रणं वारा रणं वीरणं ।
कंकालं कललं कल कल कलं कीलं कलं कोकिलं ॥
तंता नंत ननं तनं तन तनं संतान वीतानकं ।
विद्योतं विदित द्रुमं द्विलकुल विद्याविनोदं विदुः॥१॥
वेतालं विरलं रलं रल रल विस्तार तारं तरं ।
चाणूरं चरणं चरं चूण चूणं चीकारणं कारागृहं ॥
मायामोह मयं मयामय मयां वात्सल्य वंशोद्भवं ।
वृन्दं चामर मारमेर मरणं मोरारि मारोत्तवं ॥२॥
लक्ष्मी लक्षण लक्ष्य लक्षण गुणं काल्याण वाणवूण ।
वशोद्धार वर वरं वर वरं सेना समूह क्षणं ॥
उद्यानं सदनं घनं धन धनं धानं धनं धं धन ।
केलीकोल कलंक चन्दनवनं सल्लीक्षन चोक्षनं ॥३॥
प्रज्ञा पूर पराग राग रजकं राणा रणं वारणं ।

सर्गोत्सर्गं कुमार्ग मार्ग मरण मारमि भूतं मणं ॥
व्यासायाम विकाश काश रसनं मासानसे सानसं ।
काया पाय विनाय माय मस्रनं मायासमं मोनसं ४

२ वर्द्धमान स्तोत्र

उपरोक्त के साथ ही यह स्तोत्र कितना मनोहर और लालित्यपूर्ण है यह उसको पढ़ते ही अनुभवित होता है:—

'जन्म जलधि सेतु, दुःख विध्वंस हेतु ।
निर्हित मकर केतु, धीरितानिष्ट हेतुः ॥
यम जनितः समतुं, निष्ठनिःशेष धातु ।
जयति जगति चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥१॥
समय सदन कर्त्ता, सार संसार हर्त्ता ।
सकलभुवन भर्त्ता, भूरि कल्याण धर्त्ता ॥
परमसुख समर्त्ता, शब्द सन्देह हर्त्ता ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥ २॥
कुगति प्रथ विभेता, मोक्ष मार्गस्य नेता ।
प्रकृति गहन हन्ता, तत्त्व संघात मन्ता ॥
गगन गमन गन्ता, मुक्ति रामाभिरन्ता ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥३॥
प्रवर बल सुसालो मुक्तिकान्ता रसालो ।
विमल गुण मरालो, नीति कल्लोल मालो ॥
विगत सरण लीलो, धीरिता नन्त सीलो ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥ ४॥
सजल जलद नादो, निर्जता सेस वादो ।
पतिपतिनुतपादो, वस्तसत्तत्व गादो ॥
जयति भुविक पादो, नेक कोपाग्नि कंदो ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥५॥
मदनमद विदारी, चारु चारित्रधारी ।
नरकगति निवारी, स्वर्ग मार्गाधिनारी ॥
मृदुर नयनहारी, केवल ज्ञान धारी ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥
विषय विस विनाशो, भूरि भाषा निवासो ।
गत भव भय पासः, कीर्तिवल्ली निवासो ॥
करण सुख निवासो, वर्ण संपूर्ण भासो ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥ ७ ॥
वचन रचन धीरः, पाप धूली समीरः ।
कनक निकर गौरः, क्रूर कुमारि सौरः ॥
कुशल दहन नीरः, पालितानन्त वीरो ।
जयति जगत चन्द्रो, वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥ ८ ॥
यस्त्रिसंध्य मुनवद्यमुद्यनस्तोत्र मन्त्रसमतात्पठन्पदः ।
पंडितो न सुविशालकीर्तिना स्याद्विमेति शिवमदिरंनर

यहां पर यह उस ही रूपमें उद्धृत किया गया है जिस रूप में यह लिपिबद्ध है। लिपिकर्ता ने अपना परिचय निम्नशब्दों मे दिया है:—

"संवत् १६३६ वर्षे मगसिर शुदि १ शुक्रे ज्येष्ठा नक्षत्रे वागड़ देसे... घाड़ा नगरे श्री संभवनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्द कुन्दाचार्या न्वये। भ० श्रीपद्मनंदि देवा तत् पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति देवा तत् पट्टे भुवनकीर्ति देवा तत शिष्याचार्य श्री ज्ञानकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्री रत्नकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीयशकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्री गुणचंद्रेणेदं पुस्तकं षड़ावश्यकस्य ... शिष्य ब्र० हुगरा पठनार्थं दत्तं । शुभंभवतु! कल्याणमस्तु॥"

इसमें षटावश्यक के साथ २ अन्य स्तोत्र आदि भी दिये हैं। उक्त स्तोत्र के अतिरिक्त निम्नका श्री शांतिनाथ जी का स्तवन भी पठनीय है:—

(३) स्तोत्र

"नाना विचित्रं भव दुःख राशि ।
नाना प्रकारं मोहाग्नि पाशि ॥
पापानि दोषानि हरंति देव ।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथः ॥ १

संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता ।
मिथ्यात्वमध्ये कर्म्माणि बन्धः ॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेव ।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथः ॥ २ ॥
कामश्च क्रोधश्च मायां विलोभ्य ।
चतुः कषाये इह जीव बंधः ॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेव ।
इह जन्म शरणं तव शाँतिनाथ ॥ ३॥
जातस्य मरणं जुधस्य यवनं ।
वैशांति जीव बहु जन्म दुःखं ॥
ते दुःख छेदंति देवाधिदेव ।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ ॥ ४ ॥
चारित्र हीने नरजन्म मध्ये ।
सम्यक रत्न प्रतिपालयंति ॥
ते जीव सिद्धयन्ति देवाधिदेव ।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथः ॥ ५ ॥
सद्वाक्यहीने कठिनस्य चित्ते ।
पर जीव निंदे मनसी च बंधः ॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेव ।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथः ॥ ६ ॥
पर द्रव्य चोरी परदार सेवा ।
हिंसादिकांक्षा अकृतानि बंधः ॥
ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवः ।
इह जन्म शरणं तव शांतिनाथः ॥ ७ ॥
पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि बंधः ।
बहु बंध मध्ये इह जीव बंधः ॥
ते बंध छेदंति देवाधिदेव ।
इह जन्म शरणं तव शांति नाथः॥ ८ ॥

भावों की विशुद्धता के लिये इस में किस प्रकार ध्यान रक्खा गया है, यह दर्शनीय है। दूसरी एक हिन्दी भाषा की कविता इस ही गुटके में लिखी हुई है उस को हम यहां पर उद्धृत अवश्य करेंगे। इस से पाठक देखेंगे कि जैन कवियों ने केवल वैराग्य और शांति रसों में ही अपनी लेखनी सीमित नहीं रक्खी थी:--

(४) रागमलार ।

आसाढ़ आगम पीय समागम सुण्यों हे सखि आज ।
मोहि दहत अङ्ग अनग रंग तरंग चंग .समाज ॥
दस दिसा बादल सजल सारे, ऊमए जलसाज ।
मुदित दादुर मोर कोकिल करत मेघ अवाज ॥
ए मन मोहन ! कवण सयाण पकरत अवधिसय ।
अजहु न आए जी ॥ १ ॥
सखी सहेली करत केली कीये सब सिङ्गार ।
सु रसाल बाणी अधिक सुन्दरि गलै मोतिन हार ॥
मंजु मंजुल कुंज भीतरि कीयो हिंदोला साज ।
झुलती सब कामिनी गावती मेघ मलार ॥
ए मन मोहन ॥ २ ॥
भादौं भयानक । रजनी सजनी नैक रहौं न जाइ ।
पापी पपीहा रटत पीव पीव । पलक सास नमाइ ॥
घर छाड़ि कै परदेस बाहरो घसे घगीला छाइ ।
कवण सुन्दरि भोली प्यारे तहाँ रहे भीरमाइ ॥
ए मन मोहन ॥ ३ ॥
कोउ चलतु पैंडै पथिक,नाही । कहै ज्यों सन्देस ।
तब कहि चौमास बसंत चाले रहे गहौ परदेस ॥
अब आइ बरीसा विरहै बैरी दहत जोबन वेस ।
कठिन काम कसाण जगि सब गए सुध अन्देस ॥
ए मन मोहन ॥ ४ ॥
जैहूं जाणत तब ही लालन करति ऐसी क्रूर ।
छोड़ी के निज चित्र साली आणा देती न दूर ॥
कहा कहो सखी कवण पठऊं नदी जल भरि पूर ।

दल साजी के जलदाल आये। लख्यौ जात न सूर॥
ए मन मोहन ॥ ५ ॥
मोहि अन्न पाणि सुहात नाहीं, हृदय आवत लाल।
मोही कीच देषत मीच आवत मोहना के साल॥
जब मेह गाजत नेह बाढत भुरनी अरसाल।
दामीनी डरपाइ मारत विरहणी बेहाल॥
ए मन मोहन ॥ ६ ॥
कवन कुदीन कुवारवाले फीरे नहीं पीव केम।
आजी पीछै सीष मेरी सुणो हे सषि एम॥
बसंत बरीषा सषिर रितो थौ चढ़त मन सित प्रेम।
परदेश पीव कौं, चलन देवा नारि को हं नेम॥
ए मन मोहन ॥ ७ ॥
ते कहुं जदुराज आवत कुशल सौं एक बेर।
तौ सपो सब मीली घेरि राषों रषी कोई एक फेर॥
कहत मुनि कल्याणकीरति करहु जिणि अब देर।
सुप दुष दाखूं टरत नाही अटल ज्यौं गिरि मेर॥
ए मन मोहन ॥ ८ ॥

ठीक इसही रूप में यह कविता गुटके में लिपिबद्ध है। इससे हिन्दी के शब्दों में जिन अक्षरों की अब फेरफार हुई वह दृष्टव्य है। इधर जहां ह्रस्व मात्रा की आवश्यकता है वहां दीर्घ दी हुई है। इससे पढ़ने में भी दिक्कत मालूम होती है। परन्तु कहा नहीं जासकता कि यह लिपिकर्त्ता की ही त्रुटि का फल है अथवा उस समय लिखने में इन बातों की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता था, क्योंकि उनके लिखे हुए शब्दों की आकृति से हम सहसा उन्हें भाषा ज्ञान से रहित नहीं कह सके। जो हो शब्दों के रूप को ठीक समझकर और मात्राओं को सुधार कर पढ़ने से कविता सरस प्रतीत होगी। मानों मुनि जी ने जैन स्त्रियों की कमताई को मेटने के लिये ही इस प्रकार की रचना रची हो! मालूम होता है कि मुनि जी ने सावन में स्त्रियों को अन्य विरह गीतों को गाते सुना होगा। उन्हीं को लक्ष्य कर उनको संबोधनार्थ यह कविता श्री राजुलजी के श्री नेमनाथ भगवान के विरह में रची होगी। हमें यह ज्ञान नहीं कि यह मुनि महाराज किस संघ के और किस प्रांत के थे।

इन कतिपय उदाहरणों से ही पाठक हमारे प्रारम्भिक वक्तव्य के महत्व को समझ गये होंगे। वस्तुतः आज प्रत्येक स्थान के जैन भंडारों की विशिष्ट रीति से छान बीन करने की आवश्यका है। और इस खोज द्वारा प्राप्त अलभ्य साहित्य रत्नों को प्रकाश में लाने की आवश्यका उस से एक कदम अगाड़ी खड़ी मिलती है। क्या हमारे वह श्रीमान् जो वेदी प्रतिष्ठा और रथ यात्राओं में हजारों रुपया स्वाहा कर देते हैं, इस महत् पुण्यशाली कार्य की ओर भी ध्यान देंगे? प्राचीन आचार्यों ने किस श्रम से यह अद्भुत रत्न हमारे सुपुर्द किये थे। क्या आप उन्हें इस प्रकार आंखों देखते नष्ट हो जाने देंगे? उन के उद्धारार्थ सब कुछ लगा दीजिए। तब ही आप अपने कर्तव्य से उऋण होंगे!

—उ० सं०

जैन दीक्षान्वय कमेटी पर विचार

(लेखक—सुधारक)

'वीर' के गत विशेषाङ्क में जैनधर्म भूषण ब्र० शीतल प्रसाद जी ने एक जैन दीक्षान्वय कमेटी" (Jain Convers on Committee.) स्थापित करने की आवश्यकता बतलाई थी। ब्र० जीने इस कमेटी का कार्य भी बतला दिया है कि इसके द्वारा पहले अजैनी जैनधर्म में दिक्षित किए जांय और फिर उनके जीवन-व्यवहार को देखकर उनका वर्ण नियत किया जाय, जिससे उनके साथ उस वर्ण के जैनी रोटी बेटी व्यवहार बिना किसी भेद भाव के कर सकें। कहा जाता है कि हमारे आचार्यों का मत भी इसही प्रकार है। वास्तव में जैनसमाज की अपेक्षा जैनियों के लिये यह विषय अत्यन्त आवश्यक और विचारणीय है। परन्तु मेरी समझ में इस समय हमें उतनी फिकर अजैनों को जैनी बनाने की नहीं है जितनी कि स्वयं उन जैनियों को पुनः जैन-धर्म में लाने की है जो काल के प्रभाववश जैनधर्म को भुला चुके हैं। भारतवर्ष में यह विषय अतीव दुष्कर है क्योंकि यहां रोटी और बेटी का व्यवहार ही मनुष्यों के धार्मिक और सामाजिक जीवनमें मुख्य स्थान लिये हुये हैं। हमारे चारों ओर यही विश्वास फैला हुआ है कि किसी भी धर्म में पूर्णतः किसी को दीक्षित करने के लिये रोटी और बेटी का व्यवहार परमावश्यक है। भारत के बाहर अन्य देशों में विशेषतया यह बात नहीं है। वहां धर्म का सम्बन्ध आत्मिक विश्वास से है।

इस प्रश्न के हल करने में यही एक खासी कठिनाई है। अतएव इसविषय में बिल्कुल स्पष्ट विचार मालूम करलेना आवश्यक है,। ब्र० जी ने जो कुछ लिखा है, उसको जानते हुएभी कहना पड़ता है कि उन्होंने इस विषय में कोई स्पष्ट विवेचन नहीं किया है। हमारे मध्यप्रान्त में जैन कलार हैं—इन्हें साधारण कलाल ही समझना चाहिये जैसे कि कभी २ लोग समझलेते हैं यह उनसे भिन्न हैं। इनके अतिरिक्त कोष्टी (Koshti)जाति और कसार (Kasars) भी है। परन्तु मुख्य कठिनाई यह है कि यह मनुष्य जैसे निमंत्रण पर भोजन स्वीकार करते हैं वैसे अपने धर्म को ग्रहण नहीं करते हैं। यह कार्य लगातार विचार करने से किया जाना चाहिये। साथही जहां तक जातीय मनुष्यों का सम्पर्क है वहां तक किसी बाहिरी व्यवस्था का प्रयोग भी इस कार्य की पूर्ति के लिये करना आवश्यक है।

वस्तुतः उनके ईश्वर कर्तृत्व सिद्धान्त के अथवा वेदों को ईश्वरकृत मानने के अभाव में ज़ाहिरा कोई भी हलचल मचाने वाला परिवर्तन नहीं होगा। इसलिये दीक्षित करने का काम नितान्त आवश्यक है। क्या कोई ऐसे सज्जन जो शास्त्रों के विशेष ज्ञाता हों इस विषय में शास्त्रीय विधान विशेषरूप से प्रकट करेंगे? दूसरे यह भी विचारणीय है कि इस समय यह कार्य कितना असभव सा प्रतीत हो रहा है जब कि हम देखते हैं कि उप-

जातियों में परस्पर रोटी-बेटी व्यवहार पर ही खेंचातानी पड़ रही है ! इसके अतिरिक्त यह भी तो बताइये कि मनुष्य किस प्रकार किस ढंग से जैन धर्म में दीक्षित किये जायंगे, इस कार्य के लिये कार्य प्रणाली किस रूप की होगी और फिर वह कौनसा उपाय होगा कि जिससे नवदीक्षितों को यह अनुभव न हो कि उनके साथ केवल दिखावटी सहानुभूति का ही बर्ताव किया जारहा है? अन्ततः उनके लिये इस धर्म के ग्रहण करने में क्या अच्छाई होगी ? इसका उत्तर शायद यह दिया जाय कि इस धर्म को धारण करने में आत्मिक सुख का सम्बन्ध है। लौकिक आर्थिक सुगमता आदि का विचार इसमें नहीं किया जा सकता। परन्तु इसमें हमें यह ध्यान में रखना होगा कि आखिर हमको मनुष्यों से ही काम पड़ता है और उनकी मानुषिक कमजोरियों की पूर्ति का उपाय कुछ ढूँढना ही होगा। भूतकाल में सामाजिक परिस्थिति एवं सामाजिक सुख ही इन मनुष्यों को दीक्षित करने के कारण रहे हैं। अतएव इन बातों में हमें सावधान रहना चाहिये कि कहीं इन से हानि न खड़ी हो जाय !

इस प्रश्न पर लगातार विचार करने से यह प्रत्यक्ष प्रगट होगा कि हमारी समाज में सब सामाजिक प्रयत्न आर्थिक (Economical) और सामाजिक जीवन के परस्पर खुले सहयोग की मज़बूत भित्ति पर अवलम्बित रहना चाहिये। साधारण जनता धर्म को शास्त्रीय समाधानों से कदापि ग्रहण नहीं करती और वे अपने धर्म को आभ्यन्तरिक जागृति पर भी सहसा साधारण समय में नहीं छोड़ते। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके एक सुसंगठित स्कीम प्रगट करना आवश्यक है।

नोट—धर्म और जाति हितैषी विद्वानों को इस विषय पर अपनी सम्मति प्रकट करके इस विषय को कार्य में परिणत करने योग्य बना देना चाहिये। समाज की परिस्थिति का ध्यान रखकर इस ओर विचार प्रकट करना आवश्यक है। क्योंकि मध्य-प्रान्त की ओर इस विषय की चरचा ज़ोरों पर है।

—उ० सं०।

जैन विधवाएं और हमारा कर्तव्य

आजकल हर भाषा और हर समुदाय के अखबारों के कालमों से मालूम होता है कि हिन्दुओं की औरतों की क्या दुर्दशा हो रही है। जगह जगह भिन्न भिन्न स्थानों से खबर आती है कि अमुक स्थान पर अमुक स्त्री को मुसलमान भगा कर ले गए; अमुक हिन्दू विधवा किसी दूसरे के घर जाकर बैठ गई; अमुक हिन्दू-स्त्री को गुण्डे बहका कर ले गए, और अमुक जगह जाकर बेच दिया; अमुक विधवा अपने किसी नौकर के साथ चल दी, अमुक अपने श्वसुर से मिली हुई और फलानी अपने जेठ देवर या आस पास के किसी पड़ोसी से, अमुक जगह एक विधवा ने अपना नव-जात बच्चा पतनाले में बहा दिया; और अमुक जगह एक विधवा ने नवजात शिशु को गढ़वा दिया या कूड़े करकट के ढेर पर फिकवा दिया, अमुक जगह विधवाएं शिकायत

करती हैं। कि बनिये ब्राह्मण की निकम्मी ज़ात है जिसमें हम विचारियों पर यह जुल्म प्रचलित कर रक्खा है कि रंडवे भाई तो चाहे ४ चार शादियां करलें लेकिन अबला और छोटी उम्र की विधवाओं को दोबारा शादी करवाने की एक दफ़ा भी इजाज़त नहीं; फुलानी जगह अमुक विधवा ने गर्भ हत्या कराई; और उस स्थान पर लाज के कारण एक विधवा अपने कपड़ों में आग लगा कर भस्म हो गई।

जब कि विधवाओं की यह असंतोष प्रद अवस्था है तो समाज का कर्तव्य है कि उनकी रक्षा का प्रबन्ध करे। उनके आराम और सुविधा के साथ रहने, सहने, उनकी रंडापन के दुःख को ज्ञान, शील और संयम के साथ काटने और उन को नीचता और बेकसी की ज़िन्दगी के गर्त में पड़ने से बचावें। यदि जैनियों में कुछ भी धर्म का अंश शेष है तो इससे अधिक और किस अवस्था में प्रगट हो सकता है कि विधवाओं पर वह करुणा की दृष्टि डालें और उनके दुःखों को निवारण करने की कोशिश करें। भौतिक दुनियां में गत महा समर के समय में जब विधवाओं की अधिकता देखी गई तो जगह जगह War Baby Houses (समर-जात शिशु आश्रम) स्थापित कर दिये गए जहां कि विधवाएं जायं और अपने बच्चे सुविधा और सरलता के साथ जनवावें और बच्चों को कौम के लिये छोड़ जावें। जैन समाज के लिये यह उदाहरण केवल यही नहीं कि अनुकरणीय नहीं है वरन् घृणित है। उसे तो अपने शील, संयम, ज्ञान आदि रूप आदर्श के अनुकूल विधवाओं के जीवन व्यतीत करने के साधनरूप आश्रम स्थापित करने चाहिये। यह देख कर प्रसन्नता होती है कि ऐसी २ संस्थाओं का जैनसमाज में बिलकुल अभाव नहीं है। बम्बई, इन्दौर आरा, दिल्ली शहरों में यह इस प्रकार के आश्रम पाये जाते हैं जहां कि विधवाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। और अपना जीवन धर्म और ज्ञान के साथ व्यतीत कर सकें। देहलीमें भी श्रीमती रामदेवी के पुरुषार्थ से महिलाश्रम कुछ अर्से से कायम है। इसमें वर्तमान में लगभग २० महिलाएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

अब तनिक यहां दिल्ली के जैन महिलाश्रम के कार्यों पर दृष्टिपात करना चाहिये कि कितनी महिलाओं का जीवन इस आश्रम के द्वारा सफल और उपयोगी बना है। उदाहरण के तौर पर चन्द मिसालें दी जाती हैं।

१ राजमती देवी—फ़िरोज़ाबाद ज़िला आगरा की रहनेवाली छोटी उम्र की विधवा, सासश्वसुरों ने घर से निकाली हुई बिचारी दुःखके मारे जीविका के लिये लाचार अपने दिन काट रही थी। फिर आश्रम में दाखिल हुई पांच श्रेणियां पास करने के बाद नार्मल जूनियर की परीक्षा पास की और सुख से जीवन व्यतीत करने लगी। संभव था कि समाज के लिये लाभदायक सिद्ध होती किन्तु जीवन ने साथ न दिया और स्वर्गवास होगया।

२ गुलाब देवी, सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर की रहने वाली, रोटियों को मोहताज, कुटुम्बके आदमी होते हुए भी दुःख के साथ जीवन व्यतीत कर रही, फिर आश्रम में दाखिल हुई; ८ वीं जमात मिडिल की पास की, फिर आश्रम में अध्यापिका का काम किया; पश्चात् फ़िरोज पुर और गोहाने

की पाठशालाओं को चलाया और आजकल महिलाश्रम देहली में अध्यापिका का काम करती हैं और खुशी से जीवन व्यतीत करती हैं।

३ जड़ावदेवी—भाड़सा जिला गुड़गावां की रहनेवाली; पति पाखण्डी और सुलफई साधु बन गया और छोटी अवस्था में छोड़ कर चल दिया, साथ ही देवर जेठों ने भी घर से निकाल दिया; यहां तक की रोटी के लाले पड़ गए आश्रम में दाखिल हुई नार्मल का इम्तहान पास किया और आज वह राधने की पाठशाला को चला रही है। इनकी ढाई साल की लड़की थी जिसको आश्रम ने अपने खर्च से प्रवेश किया और अब वह आश्रम में पांचवी क्लास में पढ़ रही है।

४. केसरदेवी-गोहाना (रोहतक) की रहने वाली, फेरों की गुनहगार बेवा, पांचवी क्लास आश्रम से पास की, गोहाने की पाठशाला में काम किया अब झज्झर की पाठशाला चला रही है।

५. प्रभावती—१५ साल की उम्र की विधवा अपने भाई के साथ मुसीबत से जिन्दगी काट रही थी। आश्रम में प्रविष्ट हुई नार्मल इम्तहान पास किया, आज कल देहली की कन्या पाठशाला में काम कर रही है।

६. तारादेवी—छतारी जिला बुलन्दशहर की ५ वर्ष की विधवा; कठिनता से अपनी जिंदगी बिता रही थी कि ७ वर्ष की अवस्था में आश्रम में दाखिल हुई; मिडिल की परीक्षा दी और इस समय आश्रम में ही पढ़ने के साथ पढ़ाने में मदद देती है।

७ मिश्रीदेवी—कामा जिला भरतपुर निवासी बाल विधवा जिंदगी के दिन दुःख से पूरे कर रही थी आश्रम में दूसरे क्लास में दाखिल हुई ८वीं मिडिल और सीनियर नार्मल पास किया आश्रम में काम किया कुछ दिन बैतूल (सी० पी०) की कन्या पाठशाला संभाली समाज को उससे बहुत कुछ आशा थी किन्तु अकाल ही काल कवलित होगई।

८ किशनदेवी—गोहाने की रहने वाली; सास श्वसुर से सताये जाकर आश्रम में प्रविष्ट हुई, सरकारी पांचवी परीक्षा पास की और अब आनंद से महिलाश्रम में ही अध्यापिका का कार्य्य कर जीवन-निर्वाह कर रही है।

९ सुभद्रादेवी—आश्रम द्वारा मिडिल पास किया और धर्मपुरा कन्या पाठशाला में मुख्य अध्यापिका का कार्य सुयोग्यता से चला रही है।

१० सौभाग्यवती—माता रामदेवीजी की कन्या तीसरी कक्षा में अपने खर्च से आश्रम में प्रविष्ट होकर दो वर्ष में मिडिल परीक्षा पास की, और अब अपने कुटुम्ब, और गृहस्थ के सुसंचालन के साथ अपने गांव में शिक्षण कार्य में विशेष भाग ले रही हैं।

११ जैनदेवी—चकरौता पहाड़ की रहने वाली अत्यन्त हीन अवस्था में आश्रम में दाखिल हुई अपनी कन्या के साथ, मिडिल परीक्षा पास की, जूनियर ट्रेनिंग भी पास किया, आश्रम में कुछ समय कार्य्य करने के बाद अब अम्बाले कन्या पाठशाला में मुख्याध्यापिकी के पद पर कार्य कर रही हैं और और आनन्द तथा सुविधा के साथ जीवन व्यतीत कर रही है।

इससे पाठकों को मालूम हो जायगा कि इस आश्रमने जो सिर्फ सन् १९१८ में स्थापित हुआ था, अभी ७ साल के थोड़े समय के भीतर ही कितनी ही दुःखी और त्रस्त विधवाओं और महिलाओं के

जीवन को सुधारा और समाज के लिये उपयोगी बना दिया। फिर भी खेद है कि समाज में कतिपय व्यक्ति ऐसे हैं जो कि आश्रम के चलाने और उस में रुपये के खर्च को व्यर्थ समझते हैं और कहते हैं कि इसको चलाना समाज का रुपया बर्बाद करना है। ऐसी संस्थाओं को व्यावहारिक बनिये की भावना (Calculating Spirit) से नहीं देखना चाहिये। यदि समाज की एक भी दुःखित विधवा इस आश्रम से उच्च विचार लेकर निकली और अपने लिये तथा समाज के लिये उपयोगी सिद्ध हुई तो इस आश्रम का अस्तित्व सुफल होगा। समाज को ऐसे आश्रम की कद्र करनी चाहिये, क्योंकि इन आश्रमों के ज़रिये ही समाज की कद्र होगी। दिल्ली आश्रम की भांति ही अन्य आश्रमों द्वारा भी विधवाओं के जीवन पुण्य मय बनाए गए हैं। समाजको हृदय से इन आश्रमों को अपनाना चाहिये। प्रत्येक जैन विधवा को आश्रम में भेज कर सत्संगति में रहने दीजिए। विधवाओं के प्रति समाज का यही मुख्य कर्त्तव्य है।

डा० बख्तावरसिंह जैन
M. D., L. R. C. P. & S.

आशा और निराशा

रम्य प्रभात अपने सलोने दृश्यको लिये फूले अंग नहीं समाता था। उधर रसिक समुद्र भी उस के आल्हाद में अविरल शब्द गुंजार कर रहा था। ऐसे सुन्दर समय में उसके रेतीले चमकीले तटपर वह अपनी धुन में पगी अगाड़ी बढ़ी चली जारही थी। उधर सूर्य अपने पूर्ण प्रकाश को लिये नद प्राची दिशा में निकल बैठे। सुंदरी ने उसकी ओर एक आशाभरी दृष्टि से देखा! देखा कहीं उस में आशा की आभा हो? परन्तु नहीं, वहां कुछ भी नहीं था! मानो निराशा का पहाड़ उस पर टूट पड़ा! उसने गहरी सांस खीच अपनी रास्ता ली!

* * *

सॉयकाल ने नीलाकाश को सुनहरी चद्दर ही बना दिया! और लो वह अपनी अस्पष्ट मुस्कान छोड़ता—इठलाता आने लगा। सुन्दरी के पग भी भारी पड़गये, वह थक गई, और चलने की सामर्थ्य उसमें न रही। वह वहीं बैठ गई। इस का शिथिल शरीर क्षण भर में ही पृथ्वी माता की गोद में लोट गया। मधुर-शीतल पवनने सांत्वना का कार्य किया और न मालूम उसे कब नींद ने आ घेरा।

उसने अपने स्वप्न-संसार में अपने समक्ष एक अजान पुरुष को यह पूछते देखा कि किस कारण वह ऐसे निर्जन स्थान में आ भटकी है। उसके मुख से यही निकला कि 'निराशा मुझे यहां ले आई है।' उसने पूछा :-"क्या आशा की आभा बिलकुल नहीं है?"-बिल्कुल नही! संसार ने मेरा सर्वनाश मेरे

बचपन से ही किया है !"–"बचपन से !"–"हां बचपन से ही; तब से जब से मेरी माता मुझे अकेली छोड़ स्वर्ग सिधारीं ! मेरा रक्षक कोई न रहा ! एक पड़ोसी ने दया से-या भगवान जाने लालच से मुझे अपने यहां रखलिया-लाड़ चाव से मेरा पालन पोषण किया। जब मैं बाल्यावस्था को लांघ आई तो वह मेरे विवाह की फिकर करने लगा-शीघ्र ही मेरा पाणिग्रहण एक वृद्ध पुरुष से कर दिया गया। मैं एक नवीन घर में पहुंची, परन्तु सुख मेरे भाग्य में नहीं बदा था। हाय, थोड़े ही दिनों बाद मेरे भाग्य फूटगये ! मैं निस्सहाय अबला युवती संसार के प्रलोभनों से मुखमोड़ अपने दिन ज्यों त्यों काटरही थी कि फिर दूसरे पड़ोसीने मेरा सर्वनाश किया। मैं उसकी भोली बातों में आ शील-भ्रष्ट हुई। परन्तु उसने मुझे धोखा दिया। मैं उस कलङ्क से अपने सौतेले पुत्रों को बचाने के हेतु घर से निकल पड़ी और तब से धक्के खाती भटक रही हूं। हाय·········

सुन्दरी की आंख खुल गई। ऊपर जो उसने दृष्टि फेरी तो देखा कि सचमुच एक अज्ञात पुरुष उस की दशा पर आंसू बहारहा है। वह सहम गई। लज्जा के उद्वेग में वह ज्यों त्यों जल्दी सम्भल गई। कुछ क्षणके लिये पूर्ण शांति छागई। आखिर पुरुषने पुनः अपना पहिला प्रश्न दुहराया। सुन्दरी उत्तर में कुछ भी न कह सकी। सहसा अज्ञात पुरुष के नाम पूछने पर सुन्दरी के मुखसे अनायास 'जयवन्ती' निकल गया !

* * * *

सुन्दरी घबड़ा गई। साहस कर उसने मूर्छित पुरुष के मुखपर पवन संचार करनेका प्रयत्न किया। पवनके शीतल आवेग से पुरुष ने अपने नेत्र खोल दिये। वह घूरके सुन्दरी की ओर देखने लगा। देखतेही उसे कुछ याद आई। उसने अपनी जेबमें से एक पत्र निकाला। यह पत्र उसकी प्राणप्यारी का पत्र था। यह उसे जब मिला था जब वह लड़ाई पर था। उसने पढ़के देखा उसमें उसकी धर्मपत्नी उसकी नवजात कन्या का नाम 'जयवती' ही लिखा था। पिता को अपनी संतान की यह दुर्गति असह्य थी। उसकी आत्मा छटपटा उठी ! उसने शत मुख से समाज प्रचलित हानिकारक कुरीतियों की तीव्र आलोचना की ! परन्तु उसके वह शब्द समुद्र के शोर में वहीं लुप्त होगये ! समाज मजेमें उन्हीं अनर्थ कारी अथवा सर्वस्वहारी रीतियों को अपनाये हुवे हैं। "जयवन्ती" आशा और निराशा के थपेड़ों को मानो अपने पिता के गले लग गई।

---

*'Heustrated Sisir" की एक गल्प का हिन्दी रूपान्तर।

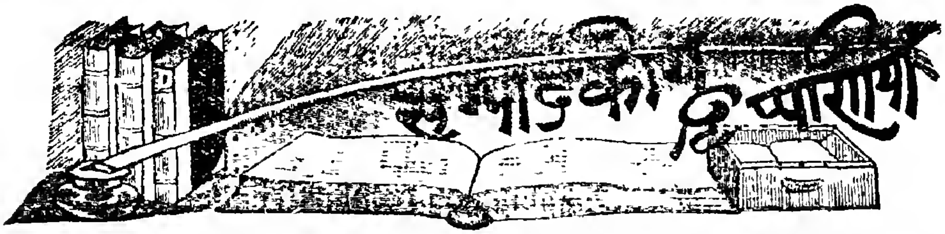

दानवीरों को दान वीरता का स्वर्णावसर।

आज १५ जुलाई १९३१ हो चुकी! सिर्फ एक हफ्ते से कुछ अधिक दिन उस प्रस्ताव की पूर्ति की अवधि में शेष रहे हैं, जिसको समाजने वार्षिक अधिवेशन में स्वीकार किया था। प्रस्ताव था श्रीमान् डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विश्वव्यापी "विश्वभारती" विश्व विद्यालय में जैन धर्म की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए! जैनधर्म की शिक्षा साधारण छात्रों के लिये नहीं। प्रत्युत संसार के दिग्गज विद्वानों को जैन धर्म की जानकारी प्राप्त करने के लिये। क्या जैन समाज के दानवीर यह नहीं चाहते कि पवित्र जिनधर्म का सच्चा ज्ञान संसार के दिग्गज विद्वानों को सहज में हो सके? यदि चाहते हैं तो फिर विलम्ब क्यों? केवल १२ रोज बाकी हैं! और सिर्फ १५०) २००) मासिक के प्रबन्ध की आवश्यकता है। इसमें करीब ७५) मासिक के वचन मिल चुके हैं। शेष की पूर्ति होना आवश्यक है। यदि सर सेठ हुकुमचन्द जी चाहें अथवा दानवीर कल्याणमल जी, रा० ब० सेठ टीकमचन्द जी, या शा० भू० सेठ लालचन्द जी इच्छा करें तो सहज में यह महत् पुण्यकार्य चालित हो सकता है। उत्तर भारत के श्रीमान् दानवीरों को ला० निर्मलकुमार जी साहब, रा० सा० साहु जुगमन्दर दास जी, ती० शि० ला० देवी सहाय जी प्रभृत को भी इस परमावश्यक कार्य की ओर ध्यान देना चाहिये। विदेशों के विद्वान् भी बोलपुर विद्यालय में निमन्त्रित किए जाते हैं। वे वहां सुगमता से जैन धर्म का अध्ययन कर सकेंगे। इसलिए निज आचार्यों के ऋण से किञ्चित उऋण होने के लिए यह स्वर्णावसर हाथ से न जाने दीजिए। २७ जुलाई याद रखिये और पुण्यकार्य का प्रबन्ध कीजिये।

—उ० स०

जैनियों! क्या यही जीवन है?

आज हम अपने घर में परस्पर लड़ने में अपनी बड़ी मान बड़ाई समझते हैं। अपनी टेक रखने के लिये अर्थ–अनर्थ सब कुछ करने के लिये तैयार रहते हैं। प्रपंच रचते हैं। सत्यता की डींग मारते हैं और अपने को धर्म और समाज का रक्षक ख्याल करते हैं! परिणाम इसका यह हो रहा है कि जहां गऊ-वत्स का प्रेम कभी दिखाई पड़ता था–वहां आज गौ और कसाई का पैशाचिक सम्बन्ध दिखाई पड़ता है! जहां वात्सल्य के पालन में गर्व रक्खा जाता था और आठ प्रकार के मदों को हमेशा बचाया

जाता था वहां अब सम्यक्त्व केवल लीक पीटने में ख़याल किया जाता है और जातिमद, कुलमद आदि आठ मदों के मद में मदमाते हम एक दूसरे के शत्रु बन रहे हैं। यह कैसा भयानक दृश्य है! क्या यही हमारा पवित्र जीवन है? हम तेरहतीन हैं—धर्ममार्ग से विचलित हैं—फिर क्या कोई जैनी अपने को सच्चा जिनभक्त कहने का सहसा साहस कर सकता है? यदि आज जैनसमाज के व्यक्तियों में परस्पर सिर फुटौव्वल की नौबत न होती यदि आज जैनसमाज की जातियों में परस्पर अहङ्कार भाव और सङ्कीर्णता न होती एवं आज की जैनसमाज के नेता और धर्म-रक्षक दृढ़तापूर्वक सचाई से निःस्वार्थरूप में समाज और धर्म की सेवा करते होते तो किसी की हिम्मत न पड़ती कि जैनियों और उनके धर्म के प्रति झूठे लांछन लगाते! उनके धर्मायतनों को नष्ट भ्रष्ट करे, उनकी रथयात्राओं को रोके! उस अवस्था में जैन युवक सङ्गठन के महत्व को समझे हुए प्रेम-रज्जु में बंधे होते और निर्भीकतापूर्वक पुरानी लकीर की फकीर शिथिल पञ्चायतों को सामयिक परिस्थिति को देखने के लिये मजबूर करते और समाज में वह दिव्य जीवन ला रखते कि उसकी मान्यता सिक्खों और पारसियों की भांति सर्वत्र सर्वथा होती! परन्तु अभाग्यवश जैनी आज ठीक इसके विपरीत कार्य कर रहे हैं। व्यक्तियों में मनोमालिन्य, जातियों में विद्वेष और सम्प्रदायों में मुकदमे बाज़ी चल रही है। यह है उन वीरों का दिव्य जीवन जो गऊ वत्स वत् प्रेम के लिये विख्यात थे। घर में जब ऐक्य नहीं तो बाहर भी कदर नहीं क्योंकि अनैक्यता में आदर्श जीवन—जैन जीवन बिताना बिलकुल कठिन बात है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि हमारे पड़ोसी भाई हमको बुरी निगाह से देखते हैं और हमारा अपमान करते नहीं हिचकते? "समालोचक" साप्ताहिकपत्र के निम्न वाक्य जैनियों के महत्व को भली भांति प्रकट करते हैं:—

> "बेतार के तार से ख़बर मिली है कि सागर में एक बड़ी भारी लम्बीचौड़ी कम्पनी खुलनेवाली है। उसमें ऐसे शेअर होल्डर और दलालों की ज़रूरत है जो १२ वर्ष की लड़कियां ६० साल के बुड्ढों को बेच सकें। मगर शेअर होल्डर और दलाल जैन जाति के होना चाहिये, कमीशन भरपूर दिया जावेगा।"

कितना भर्त्सना पूर्ण आक्षेप है! मानो सिवाय जैनियों के और किसीधर्म के मानने वालों में यह घृणित व्यापार प्रचलित ही नहीं है! परन्तु आपसी पँचातानी के कारण हम सगठन से परे हैं और सचाई के साथ कार्य करना नहीं जानते। फलतः समाज की प्रतिनिधिसभा होने की दम भरनेवाली महासभादि की कुरीतियों के प्रति रिआयती दृष्टि का फल आज जैनियों को हरतरह अपमानित होने में मिल रहा है। बाहर वे बुरी निगाह से देखी जाती हैं। घर में उनके अभाड़ी नाश का भूत मुंह बाए खड़ा है! ऐसी अवस्था में जीवन नष्ट प्राय हो चुका है। वृद्धविवाह और अनमेल विवाह सामाजिक जीवन को भयानक बना रहे हैं। हजारों कुंआरे बढ़ते हैं और विधवाओं की सृष्टि होती है। फलतः संतानोत्पत्ति कम होने से संख्या में कमी होती है और समाज में व्यभिचार की मात्रा भी अधिक बढ़ती है। विधवाओं की कुछ संभाल की नहीं जाती। उन्हें सत्सङ्गति में रक्खा नहीं जाता।

घरों में वे सहसा अपनी चञ्चल मनोवृत्तियों पर काबू नहीं रख सकतीं। परिणामतः अड़ौसी पड़ौसी अथवा स्वयं किसी निजी सम्बन्धी द्वारा शील रत्न को त्यागने के लिए मजबूर की जाती हैं। फिर और भी अधिक पाप भ्रूण हत्यादि करने को तैयार की जाती हैं। अन्यथा पाप के प्रकट होते ही समाज से पतित कर दी जाती हैं। नरपिशाच पुरुष तो फिर भी दण्ड ले मिला लिया जाता है, परन्तु बिचारी विधवा का कहीं ठिकाना नहीं! शुरू से अन्त तक पुरुषों के ही इशारे पर चलने का फल उस अबला स्त्री को ही सहन करना पड़ता है! इस अन्याय का घोर पाप का परिणाम क्या हमें मेट नहीं देगा? अवश्य ही? यह तो प्रत्यक्ष प्रकट ही है। अतएव यदि जैनी भाइयों! आप को जैन-जीवन में कुछ अभिमान है, उसका मूल्य कुछ आपकी नजरों में है तो मिथ्या जाति आदि अभिमानों को त्यागिये। और परस्पर प्रेमभाव फैलाकर समग्र जैन समाज में परस्पर रोटी बेटीका व्यवहार जारी होने दीजिए। इससे अनमेल विवाहों का अन्त होगा। योग्य वर कन्याओं के विवाह होंगे जिससे संतान वृद्धि होगी। तब बाल्य और वृद्धविवाह भी स्वतः घटेंगे और उनके प्रति कड़ी निगाह रखने से शीघ्र ही उनका अन्त हो जायगा। और जब विधवाओं की सृष्टि के मूल कारण यह नहीं रहेंगे तब वह पापमय जीवन ही नहीं रहेगा, जिससे हमारा कोई अपमान कर सके! इसलिए सब से पहिले जैन जाति हितैषियों और युवकों का कर्तव्य है कि वे स्थानीय पञ्चायतों का वास्तविक संगठन करें और उन्हें इस परिस्थिति का ज्ञान कराकर कुरीतियों का काला मुंह करावें एवं परस्पर विवाह सम्बन्ध को पुनः जन्म दें। इस ही में भलाई है और इस ही द्वारा हमारा जीवन बच सकता है। वरन् अपमानित हो मिटना पड़ेगा।

—उ० सं०

बांधिये पानी पहिले पाल!

हिन्दी जैनगजट अंक ३५ में "बांधिये पानी पहिले पाल" हेडिंग पर एक कविता छपी है। और उसके नीचे लेखक का नोट है कि यह तुकबन्दी उनलोगों का भ्रम दूर करने के लिये की गई है जो यह कहते हैं कि जब समाज में विधवा-विवाह की प्रथा ही नहीं है तो उसका खंडन क्यों किया जाता है। हमारे खयाल में भी खंडन जरूर करना चाहिये और पानी से पहिले पाल जरूर बांधना चाहिये। इस दूरंदेशी से कौन इन्कार करता है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि जो पाल आप बांध रहे हैं वह पानी को रोकने के लिये काफी भी है? अब जो विधवाविवाह रूपी पानी को रोकने के लिये पाल बांधी जारही है वह मात्र शब्दों की है। काम कुछ नहीं किया जारहा। और वह पाल इस

तरह से बाँधी जा रही है कि जहाँ कोई व्यक्ति जैन समाजकी संख्या कमी के कारण बालविवाह-वृद्ध-विवाह-अनमेलविवाह-कन्याविक्री-विधवाओं की संख्या की अधिकता आदि को बतलाता है फौरन उसपर विधवाविवाह चाहने का दोष मढ़ा जाताहै और उसको धर्म भ्रष्ट, धर्मशून्य आदि गालियां दी जाती हैं। क्या ऐसे शब्दों का व्यवहार करने से विधवाविवाह रूपी पानी रुक सक्ता है? यदि कोई व्यक्ति दूर से पानी की बाढ़ आते देखकर उन लोगों को कि जो पानी आने के कारण बतलारहे हैं गाली देने लगे तो क्या वह पानी की बाढ़ रुक जायगी? हरगिज़ नही रुकेगी। बल्कि बहुत मुमकिन है कि गाली देने से बाहम लड़ाई झगड़ा होने लगे और असली उद्देश्य लुप्त हो जाय! पानीतो जब हाथ पैर हिलाकर पानी आने के कारणों को रोका जायगा तबही रुकेगा। इसी तरह विधवाविवाहरूपी पानी को रोकने के लिये यह ही मज़बूत पाल हो सक्ती है कि ऐसे तरीके (नियम) स्वीकार किये जायँ कि जिससे विधवाओं की संख्या न बढ़े और वे तरीके यह ही हैं कि बाल विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या विक्री आदि को कतई बन्द किया जावे। अतएव यदि हमको विधवा विवाह रूपी पानी को वास्तव में रोकना है तो मात्र शब्दों का पाल बाँधने से-दूसरों पर विधवाविवाह चाहने का दोष लगाने से-दूसरों की निन्दा करने से हरगिज़ काम नही चलेगा! हम को तो जी तोड़ कर बालविवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, कन्या विक्री बन्द करने की कोशिश करनी चाहिये। और इन कुरीतियों को भी ऐसा ही बुरा समझना चाहिये जैसा कि हम विधवाविवाह को समझते हैं। परन्तु जब कि हम इन कुरीतियों की चश्मपोशी करते हैं-इन में शरीक होते हैं-तो किस तरह कहा जा सक्ता है कि हम विधवाविवाह को रोकने के लिये पानी से पहले पाल बांध रहे हैं! हमको तो चाहिये कि जहां कहीं बाल-विवाह, वृद्धविवाह आदि होते हुए सुने फौरन कोशिश जिस तरह होसके उसको बन्द करायें। यदि हम उन कुरीतियों को दूर करने में कामयाब होगये तो विधवाविवाह रूपी पानी हरगिज़ नही आयगा। वास्तव में इन कुरीतियों को बंद करना ही इस पानीको रोकने के लिए मज़बूत व कारआमद बांध बांधना है। अतएव विधवा विवाह रूपी पानी को रोकने के लिए 'तुकबन्दी' की पाल कुछ काम नही देगी। इसके लिए तो कुरीतियों की बन्दी की ज़रूरत है। इस उत्तर प्रान्त में कुछ हालत ठीक भी है परन्तु सुना जाता है कि जयपुर आदि में तो बाल विवाह वृद्धविवाह आदि का बड़ा ज़ोर है। लेखक को इन कुरीतियों को जड़ से उखाड़ने की कोशिश करके पानी से पहिले पाल बांधने का सबूत देना चाहिए।

—ऋषभदास जैन, बी० ए०।

विद्वानों से प्रश्न

(१) हिन्दी जैन गजट में जो "समझदार कहीं भड़काने से भड़कते हैं" शीर्षक लेख छप रहा है उसमें कुछ ऐसा भाव दर्शाया जारहा है कि शास्त्रों की टीका करके छपवाना छपे शास्त्र पढ़ना आदिमें चारित्रमोहनीय कर्मका उदय है। दृष्टांत यह दिए जा रहे हैं कि जैसे मन्दिरजीमें बहुत से भाई जमा होते हैं, वहां वीतरागता का खूब ज़ोर शोर से से चर्चा होता है। शरीर से ममत्व त्यागो, स्त्री, पुत्र आदि से मोह छोड़ो इत्यादि बातें ही कही जाती हैं, परन्तु मन्दिर जी से बाहिर आकर फिर सब वैसे के वैसे ही हो जाते हैं। या भगवान की वीतराग मुद्रा के सामने बड़े भाव से स्तुति करते हैं। वीतरागता आदि भगवान के गुणों का चिन्तवन व गान करते हैं, परन्तु प्रतिमा जी के सामने से हटकर हम वैसे के वैसे ही हो जाते हैं। खुद वीत राग रूप नहीं होते। गोया जिस तरह इन दृष्टान्तों में कारण चारित्र मोहनीय कर्म का उदय उसी तरह शास्त्रों की टीका कर के छपवाने, छपे शास्त्रों को पढ़ने आदि मे भी चारित्र मोहनीय कर्म का उदय ही कारण है। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि यदि मै किसी छपे शास्त्र को पढ़ने बैठा हूं, मेरे परिणाम शास्त्रज्ञान हासिल करने के हो रहे हैं और मैं शास्त्रज्ञान प्राप्त कर रहा हूं। तो ऐसी हालत में किस तरह कहा जा सकता है कि मेरे उस समय चारित्र मोहनीय कर्म का उदय हो रहा है? और किसतरह शास्त्रज्ञान हासिल करने के परिणामों का कारण चारित्र मोहनीय कर्म के उदय को माना जा सकता है? मै जैन धर्म प्रचार के लिए कोई छपा हुआ शास्त्र किसी अजैन को देता हूं, क्या जैनधर्म प्रचार के परिणामों का कारण चारित्र मोहनीय कर्म का उदय हो सकता है? जैनगज़ट में यह लेख 'एक जयपुर निवासी" की तरफ़ से छपा है। नाम दियाहुआ नहीं, नही मालूम किस पण्डित साहब की राय है! इसलिए धुरन्धर पण्डित साहिबानसे मेरी यह प्रार्थना है कि वे कृपा करके अपनी२ राय प्रकट करें कि व "जयपुर निवासी" कीइस राय से सहमत हैं क्या? यदि हैं तो प्रमाण भी दें।

(२) "जैनमित्र" में श्रीयुत् पं० लाला राम जी शास्त्री का एक पहला लेख छपा है कि जो उन्होंने किसी पं० साहब के ग्रन्थ मुद्रण के खण्डनरूप लेख के उत्तर में लिखा था और उन्होंने ग्रन्थमुद्रण के खिलाफ़ अविनय आदिक जितनी भी दलीलें थी उन सबका जवाब बड़े ज़ोरसे दिया हुआ है। अब श्री पं० लाला राम जी खुद कृपया इस विषय पर प्रकाश डालें कि आया वे अपने पहिले लिखे हुए उस लेख को गलत समझते और उसको रद्द करते हैं। और क्या वे यह भी समझते हैं कि जिस समय उन्होंने यह लेख लिखा था उस समय उनके चारित्र मोहनीय कर्म का तीव्र उदय था? अर्थात् क्या वे उस लेख को लिखने का कारण चारित्र मोहनीय कर्म के उदय को समझते हैं?

(३) अकसर यह लिखा हुआ दृष्टि पड़ता है कि हिंदी जैन गजटमें आर्ष वाक्य नही छपते, क्या

हिंदी जैन गजट में आर्ष वाक्य का अर्थ व मतलब और आर्षवाक्य के अनुसार उपदेश भी नहीं छपता यदि छपता है तो आर्ष वाक्य और आर्ष वाक्य के अर्थ व मतलब और उसके अनुसार उपदेशमें क्या भेद है? क्या आर्ष वाक्य का अर्थ व मतलब व उसके अनुसार उपदेश विनय के योग्य नहीं है?

उत्तराभिलाषीः—
ऋषभदास जैन, बी. ए. वकील, मेरठ

हाय देशबन्धु !

बालगङ्गाधर तिलक को तो अभी रोते ही थे।
आपके मरनेका ग़म अहा! हम अभी भूले न थे॥
आज फिर यह और क्या आफ़त अचानक आगई
चोट तेरे हाय भारत! और गहरी लग गई॥
देशबन्धु दास प्यारे हाय! हम से छिन गये।
छोड़कर हम निस्सहायोंको! किनारा कर गये॥
देशके कल्याण हित तुम! एक सच्चे भक्त थे।
दीन-दुखियोंके सहायक और एक आधार थे॥
रोतेहुए इस दिलको अब क्योंकर भला हम थामलें
क्या सहारा देख 'गोवल' आंसुओं को पोंछ लें।

—गनेशीलाल जे० "गोवल" जोधपुर।

शङ्का-समाधान

महावीर भगवान् और उनका उपदेश—

नामक पुस्तक जो उपहार में दीगई है उसके उन शब्दों की ओर हमारा ध्यान जोवट के श्रीयुत मिश्रीलाल जी जैन ने आकर्षित किया है जो म० बुद्ध को लक्ष्य कर एक वचन में लिख गए हैं। लेखक को म० बुद्ध का एक वचन में सम्बोधन करना खटका है। वे उसे पक्षपात अथवा उपेक्षा की दृष्टि से लिखा हुआ खयाल करते हैं। परन्तु उनको विश्वास रहे कि म० बुद्ध का निरादर करने का भाव यहां तनिक भी नहीं है। लेखक के हृदय में उनके प्रति उतना ही आदर है जितना कि व्यवहारिक दृष्टि से हो सकता है। तिसपर एक वचन में केवल उनका ही संबोधन नहीं किया गया है। इसी पुस्तक में जैन मुनियोंका भी उल्लेख एकस्थान पर इसी रूपमें किया गया है। ऐसी दशा में अनादर का सन्देह करना वृथा है। हां एक बात इन जैन महाशय की बड़े मार्के की है। आप म० बुद्ध को सर्वज्ञ अर्हन्त-तुल्य मानते हैं। परन्तु यह बात बौद्धग्रन्थ "मिलिन्द पन्हो" (IV.I.19.) के एक कथानकसे बाधित है। सर्वज्ञ को किसी बात की अजानकारी नहीं रहनी चाहिये। उसको सब बातें सर्वकाल ही प्रत्यक्ष दर्पणवत् हर समय झलकना चाहिये। परन्तु उक्त बौद्धग्रंथ के कर्ता बौद्धाचार्य नागसेन म० बुद्ध के ज्ञान को इस प्रकार का नहीं बतलाते। वह उसे विचार पर अवलम्बित बतलाते है। वह कहते हैं "... The insight of knowledge was not always and continually (consciosly) present with him. The omniscience of Blessed one was dependent on reflection." ऐसी दशा में एक जैन म० बुद्ध की सर्वज्ञता को कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। कई अवसरों पर म० बुद्ध ने प्रश्नों का उत्तर देने में झुंझलाहट का अनुभव किया। और आत्मा एवं निर्वाणके संबन्धमें कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया! इस से भी उनकी सर्वज्ञता बाधित है। जैनदृष्टि से उक्त बौद्ध कथन के बल हम कह सक्ते हैं कि म० बुद्ध को 'बोधि-वृक्ष' के तले 'कुअवधिज्ञान' की प्राप्ति हुई थी। आशा है, इस नोट से मिश्रीलाल जी का सन्तुष्टि होगी।

—उ० सं०

परिषद् समाचार

पुस्तक तैय्यार

मुजफ्फरनगर में परिषद् के स्वीकृत तीसरे प्रस्ताव के अनुसार सर्वसाधारण को जैनधर्म की प्राचीनता और सिद्धान्तों को संक्षेप में दर्शाने वाली पुस्तक जैनधर्मभूषण शीतलप्रसाद जी ने तैय्यार करली है और अब वह पुस्तक संशोधनार्थ अन्य विद्वानों के पास गई हुई है संशोधन के पश्चात् प्रकाशित की जावेगी।

ट्रैक्ट तय्यार—श्रीयुत् चम्पतराय बैरिस्टर सभापति परिषद् द्वारा लिखित ट्रैक्ट 'सच्चा सुख' परिषद् की ओर से छपकर तय्यार है। बिना मूल्य मुफ्त "श्रीयुत् रतनलाल मन्त्री परिषद् बिजनौर" से प्राप्त हो सकता है जो भाई उसको देखना चाहे या जनता में बांटना चाहें पोस्टेज भेजकर मंगा सकते हैं।

सम्मेदशिखिर पूजाकेस—सम्मेदशिखिर पूजा केस की प्रवी कौंसिल में पैरवी के लिये श्रीयुत् चम्पतराय सभापति परिषद् सितम्बर १६२५ के अन्त में इङ्गलैण्ड जा रहे हैं।

सूचना—पं० भंवरलाल जैन विशारद ने परिषद् की उपदेशकी का कार्य ८ जौलाई १६२५ से छोड़ दिया है।

जैन कलारों में प्रचार का कार्य बराबर जारी है। पं० प्रभाचन्द्रजी प्रचारक परिषद् नागपुर में रह कर कार्य कर रहे हैं। जैन कलारों को पुनः धर्म में लगाने के हेतु जैन धर्मावलम्बियों को पूरी सहायता पं० प्रभाचन्द्र को देनी चाहिये। धर्म से भूले हुए भाईयों को पुनः धर्म पर आरूढ़ करना समाज का स्थितिकरण अंग है।

रिपोर्ट दौरा पं० प्रेमचंद्र पंचरत्न

मध्यप्रदेश

१६ से ३० जून, १६२५

भाटापारा—(रायपुर) १६ जून को आये। दो सभायें हुईं। श्रावकधर्म पर भाषण हुआ। ८ भाईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा यहां की पंचायत ने बाल-वृद्धविवाह तथा वेश्यानृत्य बन्द करने तथा मन्दिर जी में खादी का वस्त्र रखने का वचन दिया। यहां की जैन संख्या ४० है। ५) रु० उपदेशक फंड को प्राप्त हुए।

नेवरा (रायपुर)-१७ जून। मिथ्यात्व खण्डन पर व्याख्यान हुआ व वेश्यानृत्य, आतिशबाजी, कन्याविक्रय, बाल वृद्धविवाह की प्रथा बन्द कराई। मन्दिर जी में खादी का वस्त्र प्रयोग में लाने तथा ११ भाईयों ने स्वाध्याय का वचन लिया। १०) रु० उपदेशक फण्ड को प्राप्त। जैन संख्या २७।

नयापारा (रायपुर) १८ से २० जून। समाज सुधार पर व्याख्यान व शास्त्र सभा हुई। जैन जनसंख्या ८०। एक नवीन शिखरबन्द मन्दिर तय्यार हुआ है। उसकी प्रतिष्ठा अगहन में होगी। यहां के भाइयों ने वेश्यानृत्य, आतिशबाजी कन्याविक्रय बाल-वृद्धविवाह की प्रथा बन्द करने तथा मन्दिर जी में खादी के वस्त्र रखने का वचन दिया। ४, रु० उपदेशक फण्ड को प्राप्त।

रायपुर-२१ जून। शास्त्र सभा हुई, ६ भाइयों ने स्वाध्याय तथा मन्दिरजी में खादी के वस्त्र रखने का वचन दिया। यहां एक मन्दिर और एक चैत्यालय है। मन्दिर जी में ३ प्रतिमा स्फटिक मणि की

हैं। रायपुर से ३० मील आरङ्ग स्थान पर प्राचीन जीर्ण मन्दिर है। रायपुर के भाइयों को प्रतिमायें मंगानी चाहिये। उपदेशक फण्ड को ५)रु० प्राप्त।

दुर्ग—२२ जून। जुकाम होने के कारण स्वयं शास्त्र न पढ़ सका। सेठ बद्रीप्रसाद जी ने शास्त्र बाँचा तथा यहाँ के भाईयों को परिषद् का परिचय कराया। सेठी मोहनलाल जी ने मन्दिर जी में खद्दर के वस्त्र रखने का वचन दिया।

स्टेट नांदगांव—२४ जून। "बरसात में जैनियों का कर्तव्य" इस पर व्याख्यान दिया। यहां पर स्वाध्याय का प्रचार अच्छा है।

डूंगरगढ़—(स्टेट) २५ जून। जैन जनसंख्या ४०। दो शास्त्र सभा और एक उपदेश सभा हुई "सुख का कारण धर्म है" इस पर व्याख्यान दिया यहां के भाइयों ने वेश्यानृत्य, आतिशबाजी अश्लील गाने, कन्याविक्रय आदि प्रथा बन्द करने तथा मन्दिर जी में शुद्ध खादी रखने का वचन दिया तथा ५ भाइयों ने स्वाध्याय का वचन दिया ४॥) उपदेशक फण्ड को प्राप्त हुए।

गोंदिया—(भण्डारा) भाइयों के एक बारात में जाने के कारण कार्य न हो सका।

नैनपुर—(मांडला) २८ जून। दो शास्त्रसभा और एक उपदेशक सभा हुई। बा० गयाप्रसाद कायस्थ ने मांस मदिरा त्यागने व झूठ न बोलने की प्रतिज्ञा की यहां के भाइयों ने वेश्यानृत्य व कन्याविक्रय आदि प्रथा बन्द करने व चार भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया २०) उपदेशक फण्ड को प्राप्त हुए।

उपदेशक रिपोर्ट पं० भंवरलाल

डूंगरपुर स्टेट—ज्येष्ठ सुदी ६ से आषाढ़ बदी ५। यहां पर ३५० घर दिग० व श्वेताम्बर जैनियों के हैं। परस्पर मेल है यहां पर दो व्याख्यान गृहस्थ धर्म व समाज की वर्तमान दशा पर हुए। जिनका बहुत अच्छा प्रभाव जनता पर पड़ा। यहां पर एक जैन पाठशाला है। जिसका कार्य, पठनक्रम बहुत अच्छा है। यहां पर एक दिगम्बर जैन धर्मशाला बन रही है। और एक पब्लिक लायब्रेरी भी है।

उदयपुर—२५० घर दि० व ६०० घर श्वे० जैनियों के हैं। यहां पर १६ व २० पन्थी आम्नाय में आपस में फूट है। जिनका मेल का प्रयत्न किया परन्तु निष्फल हुआ। सेठ माणिक चन्द्र जी की ओर से एक जैन पाठशाला चल रही है। पाठशाला में एक व्याख्यान विद्यार्थियों के कर्तव्य पर हुआ। जिससे बालसभा का सङ्गठन हुआ। यहां पर चार शास्त्र और एक व्याख्यानसभा हुईं। अग्रवाल मन्दिर के प्रबन्धकों ने शुद्ध खादी के वस्त्र मन्दिर जी में रखने का वचन दिया। प्रयत्न करने पर एक कन्यापाठशाला स्थापित हुई।

देवबन्द—आषाढ़ सुदी ९। शास्त्रसभा हुई और व्याख्यान हुए, यहां एक पाठशाला है।

मुजफ्फरनगर—शास्त्र सभा में गृहस्थधर्म पर विवेचन किया।

सहारनपुर—आषाढ़सुदी १। दो सभायें हुईं। बाल वृद्ध विवाह कन्याविक्रय आदि पर व्याख्यान हुए।

खिवाड़ी—दो व्याख्यान सभायें हुईं। यहां पर जैनमित्रमण्डल, जैन पाठशाला व कन्याशाला उपयोगी संस्थायें चल रही हैं तथा एक स्थानीय दिगम्बर जैन परिषद् स्थापित होने वाली है। जैन जन संख्या ३५० है।

संसार दिग्दर्शन

समाज

—आवश्यक्तायें (१) चार योग्य कन्याओं के लिये वरों की जो जातीय संकीर्णता से परे हों, आत्म-निर्भर हों-और नवीन विचारों के हों। (२) तथा विवाह योग्य कन्याओं की जो योग्य हों, गृहकार्य में निपुण हों और शिक्षा प्राप्त हों। केवल वे ही माता पिता या सज्जन पत्र व्यवहार करें जो जैन समाज में अंतर्जातीय विवाह संबंध से असम्मत न हों।

—जैनेन्द्रकुमार जैन, मन्त्री
जैन सेवक संघ, पहाड़ी धीरज, दिल्ली।

—अनाथालय बड़नगर में अनाथ बच्चे रहते हैं जिसका भार समाज पर है सहायता दीजिये।

—दि० जैन मालवा प्रां० सभाश्रित शुद्ध औषधालय बड़नगर-अपनी २०० शाखाओंके द्वारा भारत तथा विदेशों में लाखों रोगियों की सेवा "विनामूल्य" पवित्र औषधियों से हैजा प्लेग इन्फ्लुएंजा आदि रोगों की कर रहा है यहां का कार्य आप उदार महानुभावों की सहायता पर निर्भर है सब को सहायता करनी चाहिये।

—खतौली में आषाढ़ सुदी १ को जैन धर्म के सिद्धान्त विकास के अर्थ एक संस्कृत विद्यालय का मुहूर्त श्रीमान् न्यायाचार्य पंडित गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा होगा सब भाइयों को पधारना चाहिये।

—दृ० गेंदन लाल।

—पानीपत, ता० २४ जून २५ को जैनहाईस्कूल के एक कमरे की फाउन्डेशन (नीव) अम्बाला निवासी श्रीयुत् लाला बख्तावर लाल जी रईस के द्वारा रक्खी गई। नीव रखते समय एक साल पहिले दिए वचन के अनुसार आपने १०००) एक हजार रुपया भी नकद दिया।

इस स्कूल को एक बड़े बोर्डिङ्गहाऊस (छात्रालय) की आवश्यकता है। जिसमें २०० विद्यार्थी रह सकें। दानी महानुभावोंसे प्रार्थना है कि शक्ति अनुसार आर्थिक सहायता दें।

—मैनेजर

भा० दि० जैन पद्मावती परिषद्

समाचार

—ता० २६ जून को मौज़ा आरम्बी में ६ युवक तथा लड़कों का पूज्य ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी के कर कमलों से योग्य विधि पूर्वक समारोह के साथ यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। ला० छेदालाल जी

रईस के सभापतित्व में वृहत् सभा हुई जिस में सभापति के हाथ से सभा में ब्रह्मचारी जी को सेवा में अभिनन्दन पत्र, अर्पण किया गया।

पद्मावती परिषद् द्वारा एक मुकदमें में एक जातीय झगड़े का निर्णय किया गया।

—मंत्री

—जीवदया सभा की तरफ से पैंड़त की बलि हिंसा बंद करने का पूर्ण उद्योग हो रहा है। ता० ५ जुलाई को सरदार श्याम सिंह जी के पास डेपुटेशन जा रहा है। हिंसा बंद होने की पूरी उम्मेद है पहिले कलक्टर साहब से मिला था। रक्षा बंधन के अवसर पर मूक पशुओं की हिंसा बन्द करने के हेतु जीवदया प्रचारिणी सभा की सहायता करनी चाहिये। नाम देने की ज़रूरत नहीं है।

बाबू राम मंत्री

जीवदया आगरा

—एक पद्मावती पुरवाल के विवाह में वेश्या नृत्य समाचार को लिखते हुए हृदय फटा जाता है, कि मौजा गिसाल का ग्राम, जिला आगरा के जगन सिंह के भतीजे राम प्रसाद विद्यार्थी जिस ने अभी बनारस स्याद्वाद पाठशालामें काव्यतीर्थ की परीक्षा पास कर वहां अध्ययन कर रहा है बरात आरम्भी गई थी। इस बारातमें वर के बड़े भाई प० भीषम चंद जी धर्माध्यापक जैन हाई स्कूल पानीपत, और कई विद्वान् सम्मिलित थे। इस के विवाह में नाच के लिये दो वेश्याएं बुलाई गई थीं। पञ्चायत और कुछ धर्मात्माओं के विरोध करने पर भी जिस समय शास्त्र व्याख्यान का बुलावा दिया जा रहा था उसी समय इन्हों ने रंडी का नाच कराया, ग़रीब बनकर समाज के द्रव्य का दुरुपयोग करने वाले इस घराने की तरफ कि जिस के ३-४ विद्यार्थी अब भी मुफ्त का भोजन वस्त्र आदि पाकर शिक्षा पारहे हैं, क्या समाज और विद्यालय इन से अपना खर्चा वसूल कर आगे बिना खर्च दाखिल न करने की योजना करेंगे?

—एक बराती

—अनुभवी १ वैद्य १ मुनीम १ पुजारी और १ अध्यापक, जिनमहानुभावों को आवश्यकता हो निम्न पते पर बात चीत करें।

दुःखित पुकार की हमारे पास केवल सौ प्रतियां शेष हैं, हम दूसरा एडीशन करा रहे हैं अगर धर्मार्थ बांटने के लिए कोई धर्मात्मा हजार पांचसो प्रतियां लेना चाहें तो हमको लिखें हम एक हजार कापी का केवल २०) रुपये लेंगे कम से कम आधा रुपया पेशगी आना चाहिये।

पी० सी० जैन
मोती कटरा आगरा

—नवीन स्वतंत्र पत्र जैन जगत का जन्म सर्व दिगम्बर जैन मतावलम्बियों को यह जान कर हर्ष होगा कि दिगम्बर जैन समाज के विभिन्न विचार शील विद्वानों में परस्पर सहानुभूति पैदा कर उन्हें ऐक्यता के सूत्र में संगठित करने, समाज में शिक्षा व सदाचार का प्रचार कर कुरीतियों व रूढ़ियों को हटाने, व जैन व अजैन समाज में दिगम्बर जैन धर्म के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराने के हेतु, एक स्वतंत्र पत्र जारी करने की योजना की जा रही है प्रत्येक व्यक्ति को, जिसे अपने आपको दिगम्बर जैन कहलाने का अभिमान है, इस पत्र द्वारा अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर प्राप्त होगा। पत्र की नीति बिलकुल निष्पक्ष रहेगी।

प्रत्येक विषय के पक्ष में तथा विपक्ष में दोनों ओर के लेखों को यदि वे शान्त व शिष्ट भाषा में लिखे हुए हों। बराबर स्थान दिया जावेगा।

मूल्य केवल २) रु० वार्षिक हागा यह अभी पाक्षिक रूप में अजमेर से रक्षा बन्धन पर प्रकाशित होगा। इसका प्रथम प्रयत्न किया जा रहा है।

सभी महाशयों से पत्र का ग्राहक स्वयम् बनने व अपने इष्ट मित्रों को बनाने तथा अपने २ विचारों को प्रकट करने के अर्थ लेख व कविता आदि भेजने के लिये प्रार्थना है।

फतह चंद सेठी
सरावगी मुहल्ला, अजमेर

वरों की आवश्यक्ता

(१) अग्रवाल जैन जाति उच्च घराने की चार सुयोग्य पढ़ी लिखी कन्याओं के लिये योग्य वरोंकी आवश्यक्ता है। कन्याओं की आयु १३ से १५ वर्ष तक की है। दो कन्यायें गोयल गोत्री व दो गर्ग गोत्री हैं। लड़के तनदुरुस्त पढ़े लिखे कारोबारी हों।

—नं० १०१ "वीर" कार्यालय बिजनौर

देश

--कलकत्ते के बैरिस्टर श्रीयुत जे०एम०सेन गुप्त को स्वर्गीय देशबन्धु चित्तरञ्जनदास के स्थान पर बंगाल के स्वराज्यदल व कांग्रेस का नेता चुना गया है। श्रीयुक्त सेन गुप्त ने असहयोग के आरम्भ में बैरिस्टरी छोड़ दी थी। परन्तु आर्थिक कठिनाई के कारण वे पुनः बैरिस्टरी कर रहे हैं। ईस्टर्न बंगाल रेलवे की हड़ताल में कुलियों का नेतृत्व ग्रहण कर वे तीन महीनों के लिये जेल भी गये थे। बंगाल व्यवस्थापिका सभा में देशबन्धु की अनुपस्थिति में पार्टी का नेतृत्व भी वे ही करते थे।

तथा कलकत्ता कार्पोरेशन के मेयर पद पर नियुक्त करने का विचार हो रहा है।

२६ जून--को महावीर पुस्तकालय में कलकत्ते के दि० जैन समाज की ओर से सभा हुई, त्यागी श्रीयुत् चित्तरञ्जन दास की मृत्यु पर शोक तथा उनके कुटम्ब के साथ समवेदना प्रकट की गई।

बकरईद—अब के बकरीद सब स्थानों पर शान्ति के साथ व्यतीत हो गई केवल कलकत्ता के कुछ हिंदु मुसलमान कुलियोंमें झगड़ा हो गया था जो शांत हो गया।

नाभानरेश—बड़े ही आर्थिक संकट में बताये जाते हैं। और उनके लिये फंड एकत्र करने के वास्ते गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी से निवेदन किया है।

देशबन्धु, स्मारकफंड में दान देने की अवधि ३१ जुलाई तक बढ़ा दी गई है। अबतक ३॥ लाख के लगभग रुपया एकत्र हो गया है।

पण्डित मोतीलाल नेहरू आगामी २० जुलाई तक कलकत्ते पहुंचने वाले थे। अब समाचार मिला है कि उनकी अवस्था शोचनीय है सम्भवतः इस मास तक कलकत्ता न आ सकेंगे।

—३ जुलाई को देहली की हालत और पहाड़ी धीरज का दर्दनाक दृश्य तमाम शहर कुब्रिस्तान बना हुआ है, हिन्दुओं ने तो अपनी तमाम दुकानें २८ जून से ही बंद कर रक्खी थी जब कि चौधरी लोटनसिंह और उसकी पार्टी के आदमी गिरफ्तार होगए थे, और हिन्दु-

मुस्लिम समझौते की कोई सूरत आपसमें नहीं निकलती मालूम दी। लेकिन मुसलमानों ने ईद की वजह से ३ जुलाई से अपनी दुकानें बन्द करदीं।

ठीक ८ बजे सुबह के एक गाय निकली। उसके साथ २ कसाई थे और खुद डिप्टी कमिश्नर। एक कसाई आगे हाथ में रस्सा पकड़े हुए था। और गाय भी ऐसी मालूम देती थी, कि खुद उनके साथ कदम बढ़ाये अपने आप को कुर्बान करने जा रही है। १५ मिनट बाद एक और गाय दारा हिन्दुरान की तरफ से आई इस के साथ भी २ ही कसाई थे। दोनों लम्बी २ मूंछों वाले ईदकी खुशी में नए कपड़े पहने हुए, जल्दी २ कदम बढ़ाते हुए इस सम्राट के राज्य में गाय को रस्सों से पकड़े हुए जारहे हैं चेहरे पर उदासी छाई हुई

१५ मिनट बाद तीसरी गाय निकाली गई। इस तरह आध घण्टे के अन्दर २ यह दर्दनाक तमाशा खतम होगया। गोरे सिपाहियों का पहरा हटा लिया गया, लेकिन उसी तरह चुप और सन्नाटे का राज रहा।

९ बजे रास्ता खुल गया। पहाड़ी धीरज के रास्ते, जहां से ७० साल से कोई गौ नहीं निकली थी, सरकार की मदद से निकल गई। सरकार का सिक्का लोगों के दिलों पर जम गया कि सरकार महाशक्ति शाली है हर कौम की कमर, चाहे हिंदू हो या मुसलमान, जब चाहे तोड़ सकती है।

यह शोकप्रद दृश्य हिंदुओं को बतला रहा है कि तमाम सनातनी हिंदुओं और जैनियों को संगठन और शुद्धि पर जान लड़ाकर कोशिश करनी चाहिए ताकि गौ भक्षकों को गौ रक्षक बनासकें।

विदेश

—लार्ड बर्कन हेड का एलान-भारत के मंत्री लार्ड बर्कन हेड कई मास से लार्ड रीडिंग भारत के वाइस राय के साथ भारत की अवस्था व उसकी शासनयंत्र उन्नति पर सलाह कर रहे थे अन्त में उसका फैसला होगया। १९२९ से पहिले कोई रायल कमीशन (Royal Commission) भारत के सुधार सम्बन्धी नहीं मुकर्रिर होगा। मुड्डी मैन की जो बहुमत की रिपोर्ट है उसको प्रयोग में लाने का प्रयत्न किया जायगा और जो रिपोर्ट लघुमत (भारतियों) की है उसके अनुसार कुछ न होगा। भारतियों को सहयोग करना चाहिये। असहयोग को छोड़के अब तक भारत के सब नेता सहयोग न करेंगे तब तक कोई विचार न होगा।

ठीक है जैसे आन्दोलन गिरता जा रहा है वैसे ही अंग्रेज अफसर सख्त होते जाते हैं। स्वराज्य मांगने से नहीं मिलता!

—चीन की स्थितिके सम्बन्धमें एक नयी बात यह भी हुई कि चीन सरकार ने स्पष्ट रूप से इस बातकी घोषणा करदी कि चीन की वर्तमान स्थिति में बोल्शेविकों का जरा भी हाथ नहीं है। चीन के हृदय गत भाव की यह स्थिति एक स्वतंत्र फल है।

—मोरक्को में स्वतन्त्रता का युद्ध-मोरक्को बड़ी वीरता के साथ अपनी स्वतन्त्रता के लिये फ्रांस से लड़ रहा है उसके नेता श्री अब्दुलकरीम के पास डेढ़ लाख के लगभग सेना है अबतक युद्ध में फ्रांस को हानि उठानी पड़ी है। आशा है कि मोरक्को को अपने उद्देश्य में बहुत कुछ सफलता होगी।

स्वर्णपदक या नक़द !

सर्वोत्तम चित्र पर !

'वीर" के मुख पृष्ठ पर हमारा विचार एक भावपूर्ण तिरंगा चित्र प्रकट करने का है। अतएव हम सर्व चित्रकारों को इस पत्र की रीति नीति का ध्यान रखकर भाव पूर्ण चित्र भेजने को सादर आमंत्रित करते हैं। चित्र ता० २० अगस्त १९२५ तक हमारे पास आ जाना चाहिये। सर्वोत्तम चित्र के चित्रकार को एक उत्तम स्वर्णपदक अथवा उसका नक़द मूल्य सादर प्रदान किया जायगा। चित्र का भाव या तो भगवान महावीर के जीवन से संबंधित हो अथवा "वीर" के अनुकूल कोई मौलिक चित्र हो। विश्वास है कि हमारे प्रिय चित्रकार हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

हम उन महाशयों के भी आभारी होंगे जो इस विषय में अपने विचार प्रकट करेंगे। चित्रों का उचित मूल्य यदि वे चाहेंगे तो दे दिया जायगा। शीघ्रता कीजिए।

—प्रकाशक 'वीर" बिजनौर।

एजेन्ट चाहियें, नमूना मुफ्त

दाद को जड़ से खोनेवाली दवा

दद्रुहर मरहम

अगर फायदा न हो तो दाम वापिस। एकबार लगाकर देखिये। विशेष हाल के लिये कैटलाग मुफ्त। शीशी ।) दर्जन २॥) रु०। डाक महसूल माफ।

पता—श्रीगणेश चिकित्साभवन, नं० ५ दमोह (सी पी०)

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	वीर-विनय (कविता)	४७१	८	विद्वानों से प्रश्न	४८६
२	प्राचीन जैन साहित्य के नमूने ...	४७२	९	हाय ! देशबन्धु दास !	४८७
३	जैन दायलान्वय कमेटी पर विचार ...	४७६	१०	शङ्का समाधान	४८७
४	जैन विधवाएं और हमारा कर्त्तव्य ...	४७७	११	परिषद् समाचार	४८८
५	आशा और निराशा	४८०	१२	संसार दिग्दर्शन	४९०
६	सम्पादकीय टिप्पणियां	४८२	१३	स्वर्ण पदक या नक़द	४९४
७	बांधिये पहिले पानी पाल ! ...	४८४			

श्रीप्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी ।

☞ चाँदी के फूल भाव १।) तोला— सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला ☜

(सिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व वेश जितने तोले चाँदी में तैयार होसकता है उसकी विगत ।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*वंधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र एक	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चॅवर एक	७) से २५)	*अष्टमङ्गलद्रव्य	१००) से २००)
हाथीकासाज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़ेकासाज	२००) से ५००)	*चौकी	४१) से ३००)	*सोलहस्वप्न	१००) से ५००)
*[illegible]	५००) से १०००)	समोसरन	७००) से ३०००)	*भामण्डल	३०) से १००)
*मोंढा	५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीप की रचनाकामांडला	१०) से ५००)	*कलश	५०) से ५००)
*छतरी डंडा	३०) से ५०)			तखत चाँदी के	२००) से १०००)
जैन-मन्दिर के उपकरण ।		तेरह द्वीप की रचनाकामांडला	५००) से २०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
गन्धकुटी	२५००) से ४०००)			पूजन के वरतन	३००) से ५००)
वेदी	२००) से ४०००)				

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिर जी के काम में ३=) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं । इस चिह्न का माल तैयार भी रहता है । *ये चाँदी नीचे का बनाकर सोने का मुलम्मा होता है ।

पता (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस ।

(२) जैनसमाज कार्यालय सिंघई फूलचन्द जैन, कार्यालय, चौखम्भा बनारस सिटी।

Tel. Address—SINGHAI, BENARES

गोरे और खूबसूरत होने की दवा ।

शहजादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराजा मैसूर के वास्ते बनाई थी । जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूलकी सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग, मुंह से कीला फुन्सी दाद खाज हाथ पाँव का फटना, बगल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सबको साफ़ करके चमड़े को नरम करदेती है। यह फ्रांस से बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदनमें से नहीं निकलती । कीमत १ शीशी २।) रुपया ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त । डाकव्यय ।।)

पता: —मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को० आगरा ।

बालरक्षा यन्त्ररत्न बक्स ।

बहुधा देखने सुननेमें आता है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक रोग मसान,पसली, श्वास खांसी लहक दस्त, सूकिया, ज्वर,नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फँसकर मरजाते हैं और इस लोग उनके माता पिताको भूतादिक की बाधा भपटा, नजर बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता। हमने इसकेलिये एक बिजली का बक्स बनाया है जिससे बालकोंके सब रोग शान्त होते हैं। जो ५०वर्ष से प्रचलित बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एकबार परीक्षा अवश्य करें। मू०१) डाकव्य० ।=) कुल १।।=)

मिलने का पता — ज्योतिष रत्नभवन फ़० मुज़फ़्फ़रनगर (पञ्जाब)

यदि आप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं
तो 'वीर' में अपना विज्ञापन अवश्य छपवाइये

"वीर"—को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ता है।

"वीर"— हरएक जैन स्कूल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।

"वीर"—धार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है।

"वीर"— उच्चकोटि का पाक्षिकपत्र होनेसे फ़ाइल में रक्खा जाता है और बार बार पढ़ा जाता है।

"वीर" एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

"वीर" विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा।

शीघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट मालूम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पछताना पड़ेगा।

पता:—'वीर' कार्यालय, बिजनौर U.P.

केवल टाइटिल पेज प० जीयाराम उपाध्याय ने अपने सरस्वती प्रेस मुरादाबाद में छापा।

वर्ष २] १ अगस्त सन् १९२५ ई० [संख्या १६

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

वीर

श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र ।

ऑन० सम्पादक :—
जै०ध०भू०,ध०दि०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादक —
श्री कामताप्रसाद जी

ऑन० प्रकाशक—
[illegible]

सावधान ! नई खुशखबरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी।

८) भरी मजदूरी नक्काशीदार फेन्सी काम जैसे वेदी, नालकी, सिंहासन, चवर, छत्र आदि

।॥) भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली लोटा, गिलास वगैरह।

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये।

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर, सिंहासन, वेदी, नालकी, अष्टमङ्गलद्रव्य, अष्टप्रतीहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर कलश, कलशी, जरदोजी का सामान जैसे चन्दोवा, परदा, अङ्गार, वन्दनवार इत्यादि।

सीताराम लहरीप्रसाद,
मालिक—'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी।

हमारे अन्य कार्य।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां, साफे, दुपट्टे कमख्वाब, गोटे के थान, ईसकाफ, काशी सिल्क के थान दुपट्टे साफे दावनी गोटा पट्टा पुरबी साड़ी रकुमा वगैरह।

जाति सेवक—
सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस

जियाबतीस (शकर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज।

हारवर्ड यूनीवर्सिटी अमरीका के योग्य वैद्य जियाबतीस जॉस्लिन Joslin और एलन Allen साहबान के तरीके-इलाज जिसको तमाम विज्ञान ज्ञानमें प्रामाणिक और पूर्ण माना हुआ है, के मुताबिक डा० बख्तावरसिंह जैन एम० डी० (अमरीका), सदर बाजार देहली को अपने मरीजों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१—मुझे इस तरीके इलाज से कतई आराम होगया है। मैंने महाराज साहब श्री नेपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शकर-प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उसमें इस तरीके के इलाज से बिलकुल आराम होगया है।

—ह० कर्नल विजय शमशेरजङ्ग बहादुर Foreign Minister, Nepal देहली।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शकर-प्रमेह रोग को बिलकुल अच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकूर हूं।

शीतलप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली।

३—तीन चार साल से मुझे शकर-प्रमेह रोग ने तङ्ग कर डाला था लेकिन आपके तरीके इलाज से बिलकुल ठीक होगया हूं।

जानकीप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली।

४—मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफीद साबित हुआ।

—मित्रसेन जैन रईस, कांधला।

श्री महावीराय नमः

वर्ष २ | बिजनौर, श्रावण शुक्ला १० वीर सम्वत् २४५१
१ अगस्त, सन् १९२५ | अङ्क १९

माता का रक्षा बंधन

पूर्व प्रभा, अवशिष्ट कीर्ति हत हीन हुई हूं ।
बिगत मान, प्रतिभा विहीन हा ! दीन हुई हूं ॥
दावानल मय तुच्छ वारि की मीन हुई हूं ।
कुटिल काल के किंवा मैं आधीन हुई हूं ॥
हाय शोक ! दुर्भाग्य ! हा !! कैसा विधि का चक्र है ।
शीघ्र पधारो नाथ क्यों ? दृष्टि दयानिधि ! वक्र है ॥ १ ॥

स्वार्थत्यागि ऋषियों ने जीवन दान दिया था ।
गार्हस्थों ने वचन सुधारस पान किया था ॥
विद्वानों ने धर्म प्रचार पर्याप्त किया था ।
धन पुत्रों द्वारा यश विश्व व्याप्त हुआ था ॥
उनकी संतति आज हा ! व्यसन विषय मद लिप्त है ।
हृदय सरोवर शुष्क है, ज्ञान वारि से रिक्त है ॥ २ ॥

हा ! विलोक दुर्दशा निहत होता अन्तस्तल ।
धनी, समर्थ सुतों के संमुख भी न मुझे कल ॥
जीर्ण शीर्ण तन मम वस्त्र भी नहीं प्राप्त है ।
घोर निराशा आपत्तियों से हृदय व्याप्त है ॥
दीमक, मूषक मोह युत भोजन पात्र बना रहे ।
कारागृह में व्यस्त हूं प्राण हरे ! अकुला रहे ॥ ३ ॥

प्यारे पुत्रो उठो बुद्धि से तनक काम लो ।
निःसहाय, दुखिता माता का हाथ लो ॥
विद्वानों, गार्हस्थ, धनी, पंडित औ त्यागी ।
महावीर के उपासको ! शिक्षा अनुरागी ॥
अबला, पतिता 'मातु का रक्षा बंधन' लीजिये ।
कवलित काल कराल से सत्वर रक्षा कीजिये ॥ ४ ॥

—"वत्सल"

प्रथमानुयोग की साक्षी

जैन समाज में आजकल कतिपय सामाजिक बातों को लक्ष्य कर परस्पर विरोध की अग्नि सुलग रही है। एक से अधिक व्यक्तियों में एक विषय पर ही विभिन्नमत होना स्वाभाविक है। परन्तु उसके यह माने नहीं हैं कि अपने से विरोधी मत को रखने वाले को दुश्मन समझना आवश्यक हो। विलायत में तो ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं जिनमें स्वयं पिता-पुत्र और पति-पत्नी में मत-भेद है परन्तु उन के पारस्परिक प्रेम में तनिक भी अन्तर नहीं है। और प्राकृतिक रूप में चाहिये भी यही। जिनेन्द्र भगवान का भी आदेश यही है कि विपक्षी से भी द्वेष न रक्खा जावे। उसे हित मित वचनों द्वारा उचित दलीलों से कायल कर देना चाहिये। महाराज श्रेणिक का उदाहरण भी इस ही बात की पुष्टि करता है। महाराणी चेलनी महाराज श्रेणिक के बौद्ध गुरुओं की विनय न कर निर्ग्रन्थ गुरु की विनय करने का आग्रह करती हैं। महाराज समझाते हैं। महाराणी उसका निराकरण

उचित शब्दों में करती हैं। महाराज श्रेणिक उन्हें उनकी रुचि अनुसार जिनेन्द्र भगवान का पूजन करने देते हैं। इस मत विरोध से वह उनके द्वेषी नहीं बन गए। परन्तु आजकल उल्टी गंगा बह रही हैं। बुद्धिमत्ता इस ही में समझी जाती है कि जिससे मतभेद है उससे द्वेष रक्खा जावे। उसे अपमानित किया जावे। तरह २ के झूठे तोहमत लगाये जावें। अपनी मान पुष्टि में शास्त्रों के अर्थ का अनर्थ किया जावे। वास्तव में यह पांडित्य नहीं है। धर्म का सच्चा पंडित और जानकार तो वही है जो उनके अनुसार वर्तन करे, अतएव धर्मके पांडित्य का दावा करने वालों को कम से कम धर्म प्रभावना के लिए धर्मानुकूल आचरण करना आवश्यक है।

साम्प्रत जैन समाज में जातिभेद--विधवा विवाह और स्पृशास्पृश्य पर मुख्यतः मतभेद का ताण्डवनृत्य हो रहा है। जातिभेद का लोप होता इस तजवीज़ से समझा जारहा है कि जैन जाति की उपजातियोंमें परस्पर विवाह संबंध होने लगे। जैन शास्त्रों में इसमें विरोध नहीं मिलता। आचार ग्रन्थों में परस्पर वर्णों में विवाह संबंध करने का विधान मिलता है। इस कर्मयुग के आदि में मनुष्यों को श्री ऋषभदेव ने वर्णों में ही विभाजित किया था। कोई खंडेलवाल आदि उपजातियाँ किसी भी तीर्थंकर ने नियत नहीं की थी। यह जातियां तो विविध वंशों के रूपान्तर हैं जो मतभेद व देशभेद आदि के कारण अलग अस्तित्व में आगई। इस के शास्त्रीय और शिलालेखीय प्रमाण उपलब्ध हैं। ऐसी दशा में इन जातिरूपी वंशों के मनुष्यों में परस्पर विवाह न होकर दूसरे जातिरूपी वंश में होना चाहिये, अर्थात् खंडेलवाल का विवाह खंडेलवालों में न होकर अन्य अग्रवालादि में होना चाहिये। यही बात शास्त्रोंमें जो 'जाति' और 'कुल' की व्याख्या दी है उससे प्रकट है। मूलाचार में साफ लिखा है कि माताका पक्ष संतानकी 'जाति' है और पिता का पक्ष 'कुल' है। इसलिए एक ही जाति या कुलमें विवाह करना युक्तियुक्त नहीं है। अतएव जैन समाज की उपजातियों में परस्पर विवाह होने से जाति का लोप कदापि नहीं हो सकता। तिस पर पुराण ग्रन्थों से हमें उदाहरण मिलते हैं कि परस्पर उच्च—नीच वर्णों में भी विवाह होते थे। ऐसी दशा में समग्र जैन समाज में विवाह संबंध से जाति और वर्ण भेद का लोप नहीं होगा। दूसरे विधवा विवाह की आवाज मिथ्या है। जैन समाज में कोई भी विधवा विवाह का प्रचारक नहीं है, यह तो उन लोगों को बदनाम करनेका एक उपाय है जो पंडितों से सहमत नहीं। हां विधवाओं की दशा सुधारने के लिए जोर दिया जाता है। उनकी सृष्टि के कारण वृद्ध विवाह, बालविवाह और अनमेल विवाह को जोरोंके साथ रोकने की आवाज उठाई जाती है। जिनके प्रति पंडितों की मुलायमियत की निगाह है क्योंकि इनसे खास कर धनी सेठों को काम पड़ता है। उन्हीं की बदौलत यह कुरीतियां प्रचलित है। और इन सेठों से पंडितगण अपनी बिगाड़ना नहीं चाहते। सेठों से उनका अनेक रूप में स्वार्थ सधता है। इसलिये इस विषय में कुछ भी यथार्थता नहीं है। विधवाओं की दशा सुधारने की आवाज उठाना सर्वथा उपयुक्त है। उनके साथ सचाई का व्यवहार करना आवश्यक है। श्राविकाश्रमों में भेजना लाज़मी है। पतित बहिनों को उसी तरह आत्मोद्धार का अव-

बर देना चाहिए जिस तरह विषय लम्पटी पापी पुरुषों को दिया जाता है। तीसरे स्पर्शास्पर्श्य का सवाल है। इसके विषय में भी अयथार्थता फैलाई जा रही है। कोई भी जैनी नहीं कहता कि अस्पृश्यों के साथ खान पान आदि का व्यवहार करो। कतिपय राष्ट्रवादी सुधारकों का कहना है कि इनके साथ मनुष्योचित व्यवहार करो। उनके साथ कठोरता का बर्ताव मत करो। उन्हें भी अपने आत्मकल्याण करने देने का मौका दो। इस में कोई हानि नहीं है और न कोई शास्त्र विरोध है! अतएव वृथा परस्पर द्वेष वश वैर भाव से पाप बन्ध करना हितकर नहीं है। न विद्वानों को शोभनीक है। इन ही तीनों बातों पर हम देखेंगे हमारे पूर्व पुरुषों का क्या व्यवहार था। इन पूर्व पुरुषों के चरित्र जैनियों के पुराण और कथा ग्रन्थों में वर्णित हैं। वहीं से हम इन विषयों पर उन आदर्श पुरुषों की सामाजिक रीतियों का दिग्दर्शन करेंगे, जो सर्वथा हमारे लिए अनुकरणीय हैं। आज हम प्रथमानुयोग के श्री आराधना कथा कोष को लेंगे। यह तीन भागों में "जैनमित्र कार्यालय बम्बई से, श्रीयुत पं० उदयलाल काशलीवाल" द्वारा अनुवादित व सम्पादित होकर प्रकाशित हुआ है। इसके द्वितीय और तृतीय भागों का स्वाध्याय करने का अवसर हमें प्राप्त हुआ है। उन में जो उक्त विषयों के दृष्टान्त दृष्टिगत हुए वह हम पाठकों के अवलोकनार्थ यहां बतलाते हैं।

'आराधना कथाकोष' के द्वितीय भाग में २५ वीं कथा मृगसेन धीवर की है। यह धीवर मछलियाँ मारा करता था। यशोधर मुनिराज ने इस महा हिंसक पर दया करके नवकार मन्त्र और एक प्रकार से अहिंसा व्रत ग्रहण करा दिया। धीवर ने इनका पालन यथोचित रीतिसे किया वह णमोकार मन्त्र का जाप करते प्राण त्याग कर विशाला के गुणपाल सेठ की पत्नी धनश्री के गर्भ से प्रभावान पुत्र हुआ। उसके विषय में एक अवधिज्ञानी मुनि ने पहिले ही कह दिया था कि "होगा तो वह वैश्य वंशमें पर उसका ब्याह इन्हीं विश्वम्भर राजा की पुत्री के साथ होगा।" तदनुसार इस वैश्य पुत्र धनकीर्ति का विवाह राजवंशी कन्या से हुआ था अन्त में उसने दीक्षा ग्रहण कर स्वर्गसुख लाभ किया था। इस कथा से परस्पर वर्णों में विवाह संबन्ध होना प्रमाणित होता है तथा महा हिंसक शूद्रसे घृणा न करके उसके साथ एक मनुष्य जैसा व्यवहार करके धर्म धारण करने का अवसर दिये जाने का उल्लेख है। यह भी ध्यान रहे कि उच्च वर्ण क्षत्री कन्या का विवाह वैश्यपुत्र से होता था। अर्थात् आजकल के सुधारकों की उपर्युल्लिखित पहिली व तीसरी बात का शास्त्रोचित होना प्रमाणित होता है।

अगाड़ी २८ वीं नीली की कथा से हम सुधारकों के मत की भी पुष्टि होती है जो अजैनों को जैनधर्म में दीक्षित करके उनसे और उनके सजाति उन जैनियों से रोटी बेटी व्यवहार होना जैन समाज संख्या वृद्धि के लिये आवश्यक समझते हैं। भृगुकच्छ नगर में जैनी जिनदत्त सेठ की पुत्री नीली था। यहीं एक अजैन समुद्रदत्त सेठ का पुत्र सागर दत्त था। सागर दत्त नीली पर आसक्त हो गया, परन्तु अजैनों के साथ जिनदत्त विवाह करने को राजी नथा। इस लिये समुद्रदत्त ने मय घरबार के जैनधर्म धारण कर लिया। जब जिनदत्त ने उन्हें

जैन धर्मरत देखा तब नीली का विवाह उसके पुत्र के साथ कर दिया। इस तरह उक्त व्याख्या की पुष्टि होती है।

फिर सैंतीसवीं सात्यकि और रुद्र की कथा है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि पतित स्त्री को भी प्रायश्चित्त दे संघ में लेना शास्त्र सम्मत है जिस प्रकार पुरुषों के लिये रिवाज है। कथा यूं है कि गांधार देश के राजा सात्यकि से सम्राट् चेटक की कन्या ज्येष्ठा की मंगनी हुई थी। कारण पा ज्येष्ठा आर्यिका हो गई। महाराज सात्यकि भी यह समाचार सुन मुनि हो गए। एक समय एक गुहा में तीव्र पापकर्मके उदय से उनका अनुचित सम्बन्ध हो गया। गर्भवती ज्येष्ठा राजा श्रेणिकके यहां रही। नौ मास बाद ज्येष्ठा के पुत्र हुआ पर श्रेणिक ने उसे चेलिनी का पुत्र प्रकट किया। ज्येष्ठा पुनः प्रायश्चित्त ले आर्यिका संघ में सम्मिलित हो गई। इस पुत्र का नाम रुद्र था। कारण पा इसने भी मुनि सात्यकी से दीक्षा ग्रहण कर ली थी। अतएव इससे भी यह स्पष्ट है कि व्यभिचार जात को भी महाव्रतरूप धर्म पालन का द्वार नहीं बन्द था। ऐसी दशामें पतित बहिनोंके प्रति दया करना किस प्रकार अनुचित कहा जा सकता है?

४३ वीं वसिष्ठ तापस की कथा में वसिष्ठ को मछलियां खानेवाला धीवर सदृश तापस बतलाया गया है। परन्तु वीर भद्राचार्य दिगम्बर मुनि ने इस से घृणा न करके इसका श्रद्धान जैनधर्म पर कराकर इसे मुनिपद में दीक्षित किया। फिर भला विधर्मियों से द्वेष करना अथवा घृणा करना कहां कायमी है? जब विधर्मियों के लिये यह बात है तब साधर्मियों के प्रति कैसे व्यवहार का विधान होगा, यह सहज अनुभव गम्य है। अतएव जैनियों का परस्पर में लड़ना झगड़ना धर्मकार्य नहीं है।

उपर्युल्लिखित तीसरे विषय को नीच से नीच से भी घृणा करना ठीक नहीं। उसके साथ मनुष्योचित व्यवहार करके आत्मोन्नति करने का अवसर देना चाहिये—की पुष्टि ५५ वीं मृगध्वज की कथा से भी होता है। इस कथा में मृगध्वज राजपुत्र और उसके साथी मन्त्री तथा सेठपुत्र मांसभक्षी थे। एकरोज उन्होंने राज्यके भैंसे का पैर काटकर उसका भोजन किया। राज्य दण्ड से बचने को मुनि से सब दीक्षा ले गये। "इन में मृगध्वज महामुनि बड़े तपस्वी हुये। उन्होंने कठिन तपस्या कर ध्यानाग्नि द्वारा कर्मों का नाश किया। और केवल ज्ञान प्राप्तकर संसार द्वारा वे पूज्य हुए। सच है जैनधर्म का प्रभाव ही कुछ ऐसा अचिन्त्य है जो महापापी से पापीभी उसे धारण कर त्रिलोकपूज्य हो जाता है" यह शास्त्र वाक्य हैं अतएव पापी से भी घृणा नहीं करना चाहिये।

इस प्रकार द्वितीय खण्ड में हम उक्त बातों की पुष्टि में कथायें पाते हैं। इनसे जैन समाज की उपजातियों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होना प्रमाणित है। तथा पतित बहिनों को प्रायश्चित्त दे आत्मोन्नति का अवसर देना चाहिये और अस्पृश्यों को भी यथोचित रीति में धर्मलाभ का मौका देना चाहिये ये भी प्रगट है। तृतीय भाग का उल्लेख हम आगामी करेंगे। इस ही तरह स्वाध्याय प्रेमियों को पुरातन पुरुषोंके चरितसे शिक्षा ग्रहण करना चाहिये।

—उ० स०।

जाति-संबोधन !

(ले० कुञ्जीलाल जैन काशी)

उत्कर्ष जीवी बान्धवों, संबोधकों, नेता गणों।
संगठन प्रेमी, जाती रक्षक, सुपथ दर्शक प्रियजनों ॥ १ ॥
निज जाति के दुख से दुखी परमार्थ प्रेमी परिजनों।
श्रीमान धीमानों सुबुधिवानों अरज मेरी सुनों ॥ २ ॥
जिस दुर्व्यथा के रोग से जर जरित जाति अत्यंत है।
इस रुग्ण शैय्या धारिणी के रोग का किमी अंत है ॥ ३ ॥
निज जाति हो दूषण रहित अरु संगठन बलवान हो।
आओ विचारें-आज मिली यह किस तरह कल्याण हो ॥४॥
खोटी प्रथाओं के दमन से हो रही दूषित समाज।
यम नियम हू के तोड़ने में है, न उस को शर्म लाज ॥ ५ ॥
बहु सोचते हैं कि यहाँ नेता प्रणेता क्या करें।
फ़ह देत हैं करते नहीं यह प्रश्न अब कहँ पर धरें ॥ ६ ॥
नित सैकड़ों प्रस्ताव के अनुकूल होते कार्य हैं।
सब अनुकरण इस का करें तो सहज ही उद्धार हैं ॥ ७ ॥
अब सोचिये कैसे अविद्या के बड़े विस्तार हैं।
जो तोड़ता है नियम उस के साथ को तैयार हैं ॥ ८ ॥
यह भी न देखें कार्य मेरा सुपंग है या घात की।
अब देखिये दुर्दैव ने क्या मति बिगाड़ी जात की ॥ ९ ॥
सब जातियां उन्नति शिखर पर चढ़ रहीं कर के सभा।
इस ही अभागी जाति की नित मंद होती है प्रभा ॥ १० ॥
यदि आप सोचेंगे कि ये तो वो हठीली राशि है।
जिसमें न कोई नियम है ना संगठन की आश है ॥ ११ ॥
यदि है कठिन यह कार्य तो क्या छोड़ देना चाहिये।
क्या साँप के भय लाठियों को तोड़ देना चाहिये ॥ १२ ॥

शिक्षित सपूतों जाति के जातीय दोष मिटावने-
का भार है मित्र आपके अब प्रश्न है यह सामने ॥ १३ ॥
सब पृथक २ सुभाव के सब जाति में होते सदा।
कई तमोगुण कई सतोगुण कोई रजो गुण सर्वदा ॥ १४ ॥
ज्ञानी सभी होजाय तो बस आज ही झगड़ा खतम।
पर सब नहीं होते सुशिक्षित ये है सृष्टि का नियम ॥ १५ ॥
जिस मर्ज को जब तक दवा सच्ची न मिलने पायगी।
चाहे दवा होती रहे तकलीफ बढ़ती जायगी ॥ १६ ॥
हे अग्रजों निज जाति के तुम भी इधर कुछ ध्यान दो।
जो व्यक्ति तोड़े नियम को उनको सुशिक्षित ज्ञान दो ॥१७॥
तुम साथ मत उनका करो मत यह समझ कर तोड़दो।
बस हो चुका अब संगठन ठलुआई सब छोड़दो ॥ १८ ॥
जो एक हम होकर रहें तजि के दुराचारी कुसंग।
तो हमें मिलते रहें हरबार सिद्धि के प्रसंग ॥ १९ ॥
संगठन के खौफ से शत्रु भी रहते हैं अपंग।
संगठन कर चींटियों ने मार डाले हैं भुजंग ॥ २० ॥
तिनके २ जोड़ कर होता बड़ा रस्सा तयार।
झेल लेता है जकड़ कर मस्त हाथी के प्रहार ॥ २१ ॥
तिनके में है ताकत ही क्या, क्या जोर उस समाज को।
संगठन की ही बदौलत कस लिया गजराज को ॥ २२ ॥
बंधुओं के एक रहने में है वो ताकत कमाल।
बूंद बूंदो से घटुर कर बनगया भोपाल ताल ॥ २३ ॥
जो बन्धु नियम विरुद्ध हों उनको सप्रेम सिखाईये।
मानें न वे शिक्षा तो उन पर क्रोध मत दिखलाईये ॥२४॥
कहीं एक दो के तोड़ने से रस्म मिटजाती नहीं।
चिलुओं के डरसे गोदड़ी फेंकी नहीं जाती कहीं ॥ २५ ॥
हमको तो अपने लक्ष पर दृढ़ चित्त रहना चाहिये।
जो कह दिया सो कर दिया करके यही बतलाइये ॥२६॥

जो आज उन पर दंड की मात्रा बढ़ावेंगे यहां।
तो और ही परकार के परिणाम निकलेंगे वहां ॥ २७॥
जिस पर बंधु कुछ दंड की सत्ता अगर बैठायँगे।
वे दंड मानेंगे नहीं उद्धता दिखलायगे ॥ २८ ॥
हितकारिणी अपनी सभा का हुक्म ना चित लायँगे।
लेकिन सभा के तोड़ने को उद्यमी बन जायगे ॥ २६ ॥
यदि दंड के हित जब किसी के दोष हम बतलायगे।
वे दूसरों में दोष उस से चौगुने ठहरायगे ॥ ३० ॥
यदि जातिच्युत करते किसी को उसके दस व्यवहार हैं।
परिवार नाते दार उसके साथ को तयेयार हैं ॥ ३१ ॥
वे हित अहित देखें नहीं देखें न वे शुद्धी अशुद्ध।
निज थोक बाँधे गे अलग होकर हमारे ही विरुद्ध ॥ ३२ ॥
जो थोक ही न्यारे हुए मसले वही सच हो गए।
चौबे छबे बनने चले थे पर दुबे ही रह गए ॥ ३३ ॥
जो आज उनकी गलतियों पर ध्यान हम नहिं लायगे।
कुछ समय में अपने किये पर आपही पछतायँगे ॥ ३४ ॥
यदि दण्ड से दावेंगे तो वे ऐंठ में भर जायगे।
रस्सा चहे जल जायगी ऐंठन न उसके जायगे ॥ ३५ ॥
जब संगठन का लक्ष्य है सब एक होना चाहिये।
ऐसी दशामें दण्ड विधि हमको न रखना चाहिये ॥३६॥
अब गौर कर देखो स्वयं ही दंड उन पर होगया।
वह कीर्तिकारक बीज ही अपकीर्तिका तरु होगया ॥ ३७ ॥
यश के लिये करनी करी नियमहु तमा धन हू दिया।
उसका नतीजा यह हुआ नक्कू बने अपयश लिया ॥३८॥

उंगली उठीं सब देश की हमने सभा बरबाद की।
सब देशभर घर घर में चरचा मचगई अपवाद की ॥ ३६ ॥
जो व्यक्ति पंचों के नियम को तोड़कर ही शांत है।
वह यश नहीं पाता कभी यह न्याय का सिद्धान्त है ॥४०॥

दश बीस पंचों की सलाह से काम होता है जहां ।
कुछ मान मर्यादा सुभूषित कीर्ति होती है तहां ॥ ४१ ॥
यह धारणा मन धारिके बहु शांति से काम लो ।
सब दण्ड बंधन छोड़ कर अब प्रेम बन्धन बांध लो ॥४२॥
जब ऐक्यता के शिखर पर सेना बहुत चढ़ जायगी ।
तब शेष सेना पर सुबुधि की दिग्विजय होजायगी ॥४३॥
यह ऐक्यता बढ़ने के साधन शान्ति अरु नेम है ।
अजय विजयी शस्त्र जग में एक सच्चा प्रेम है ॥ ४४ ॥

हाय ! मेरी राखी !

जहाँ से कालिन्दी अपने कलकल नाद का मृदु शब्द गुंजार करती अविरल धारा से बह रही और जहां के गहन बनों अथवा बीहड़ मैदानों में ...सता और भयानकता अपना आधिपत्य जमाए ... नजर आता है, वहीं पास में एक छोटा सा ग्राम । ग्राम का नाम 'आगस्त्य खेट' है । इसके आस पास के भग्नावशेष चिन्ह इस नाम में कुछ प्राचीन रहस्य लुका हुआ बतलाते हैं । परन्तु किसी को नहीं मालूम कि यहां क्या था ? हां कोई पुरातत्वविद् भले ही कुछ प्रकाश डाल दें । इस ग्राम में ४-५ घर जैनियों के भी हैं । कहते हैं कि यहां पहिले उनकी बस्ती इस संख्या से कहीं अधिक थी । परन्तु दैवी प्रकोप ने वह प्रायः नष्ट भ्रष्ट करदी । लाला हरिस्वरूप यहां एक अच्छे खानदानी जैनी थे । इनके दो लड़के थे और उनके विवाह १२-१३ वर्ष की उम्र में होगए । बिचारों की गृहस्थी आनन्द से चल रही थी । ...पंचायत में भी वह बढ़ चढ़ कर बात किया करते थे । अपने पक्ष की ही लीक हमेशा ऊँची रखने के प्रयत्न में रहते थे । इसलिए ज़ाहिरा तो कोई नहीं परन्तु दिलों में सब खार खाये हुये थे ।

संसार में सदा किसी के दिन एकसे नहीं रहते तिस पर जो सत्यता और भलमनसाहत को छोड़ कर जीवन व्यतीत करता है उसको अवश्य ही दुःख सहन करना पड़ता है । भले ही अपने मन में कोई थोड़ी देर के लिये अत्याचार करके फूल ले, परन्तु दूसरे क्षण से उसे उसका कटु फल जरूर भुगतना पड़ता है । एक तो वैसे ही समाज में अन्धेर फैल रहा था । दूध पीते बच्चों के विवाह कर विधवाएँ सिरज दीं जाती थीं अथवा बुड्ढे बाबाओं के गले में बकरियों के समान कन्यायें बांध इन अभागिनों की और भी संख्या बढ़ाई जाती थी । इन अत्याचारों की जड़ तब ही जम चुकी थी जो अब समाज के जीवन को खोखला बना रही हैं । तिस पर लाला जी का पाशविक

अत्याचार अपने जाति भाइयों पर और आसामियों पर सदैव बना ही रहता था। इन पापाचारों का घड़ा भरना ही था। इधर इन कुरीतियों के फल-रूप समाज की दशा मरणासन्न हो गई है तो उधर लाला जी को अपने कृत्यों का फल जीते जी मिल गया! हैजे का प्रकोप हुआ और उसमें बिचारों का बड़ा लड़का एक अनाथ विधवा को बिलखते छोड़ गया! लालजी दाँत पीसते ही रह गये। कराल काल पर उनका कुछ वश न चला। आखिर क्रोध तो शमन करना ही ठहरा, अभागी बिलखती पुत्रवधु पर दृष्टि जा गिरी। उसही को भली बुरी सुनाकर अपना कलेजा ठण्डा किया! वह दुखिया अधमरी तो होही चुकी थी। इन वाग्बाणों से ऐसी मर्माहत हुई कि न मालूम उसके प्राण निकलते २ कहाँ अटक गए! वह सिसकते सिसकते मरने लगी। परंतु उस पर किसी को दया नहीं! दुःखपूर्ण अभिनय का अन्त यहीं नहीं होगया! इसके कुछ दिनों ही बाद उनका दूसरा लड़का भी बीमार पड़ा। लाला जी के होश ठिकाने न रहे। सहसा पुत्र की उस रोगमय दशा में ही इनका दिल धड़कना बन्द हो गया! घर में हाहाकार मचगया। दो अबला कुल वधुओं का ढाढस बंधाने वाला कोई नहीं रहा! जो था सो खाट के सहारे हो रहा था। एक वैद्यसाहब रोगी को शाम सबेरे देख जाते थे परन्तु अच्छाई के कुछ चिह्न नजर नहीं आते थे। हठतः उन अबलाओं पर मानों रहे सहे दुख का पहाड़ टूट पड़ा। वह भी अपने पिता और भ्राता का साथी बना दोनों अभागी अबलायें अपने माथे को धुनती रह गईं। दैव से वश ही किसका चलता है! उनके जीवन निस्सार हो गये, वे घर के अन्दर ही बैठे दिन बिताने लगीं। कोई देख न पाये ऐसे तड़के श्री जी के दर्शन कर आतीं और फिर घर में ही रहतीं! हाँ, इतनी कृपा दैव की अवश्य थी कि दो नन्हीं कन्याओं के सहारे वे अपने मन बहला लेती थीं।

(२)

ज़माने की रफ्तार साफ कह रही है कि मेरे यहाँ निर्बलों का निर्वाह नहीं—असहाय रोगियों की गुजर नहीं। जिस की लाठी उसही की भैंस है—इसमें शक नहीं। जो इस ऐलान के खिलाफ कदम रक्खेगा वह जरूर अपने जीवनसे हाथ धो बैठेगा। अथवा लाचार हो दुःख की जिन्दगी बितायगा। ला० हरि-स्वरूप की विधवा बहुओं ने चार पांच वर्ष तो अपने घर के धन बल पर बिना किसी कठिनाई को सहन किये बिता दिये। परन्तु अब उनके लिये जरा कठिनाई का वक्त आया। घर के फाजिल बरतन भांडों पर नजर पहुंची। वह भी पेट-देव की भेंट चढ़ गए परन्तु अब भी कहीं जीवन का अन्त नहीं, तिस पर उन छोटी कन्याओं का दरद उनके दिलों को और भी हिला देता था। उधर घर में नजर डालें तो कुछ रहा नहीं और बाहिर निगाह दौड़ायें तो कोई सहायक दिखाई नहीं पड़े। पञ्चलोग इन बिचारियों की यह दशा देख एक तरह से मन ही मन खुश हुए। चाहे कि कहीं से ला० हरिस्वरूप आकर अपनी बहुओं की इस दशा को देख जाते! उन के दुःख में साथी होना इन लोगों को सहज न था। बिचारियों ने कोई चारा न देख इन्हीं लोगों के घरोंसे गेहूं का पीसना शुरू किया। टहल चाकरी से अपनी उदर पूर्ति करने लगीं। जिनसे कोई आधी बात कहते डरता था उन्हीं को आज लोग मनचाही झिड़कियां दे रहे हैं। वे अभागिनें अपने

भाग्य को कोसती कातरता से दिन गुज़ार रही हैं वे न जीती हैं और न मरती हैं। हृदय यूं ही सिसकती हैं।

भरे खलियान में आग लग रही हो और उसमें आठ-दश कलशे पानी कोई लाकर डाल दे तो उस से कहीं आग बुझ थोड़े ही जायगी ! इन बेचारियों के दुःखों में भी कहीं पुण्योदय से सुख की एक किरण उग आई। अड़ोसी-पड़ोसी के दिलों में भी आखिर मनुष्यता आ गई। एक विधवा सहायक फंड से इनको सदाव्रत मिलने लगा। इनके दिन कुछ अच्छाई के साथ फिर कटने लगे। पेट के लिए अधिक फिकर नहीं करनी पड़ी। परन्तु पञ्चों का मुंह ही देखना पड़ता था। उन के रोष को कभी भड़कने न देती थीं। आप अपनी नन्हीं कन्याओं समेत उनके घरों की टहल किया करती। बड़ी बहू उन कन्याओं के कोमल शरीरों पर यम त्रास पड़ते देख बड़ी दुःखित होती ! उन के सिरों पर मट्टी और कूड़े के तसले भरे देखकर उसका हृदय थर्रा जाता। और तो कुछ न बन पड़ता था परन्तु हृदय से "हा नाथ ! रक्षा कर" अवश्य निकल जाता था। छोटी बहू अपने रोष को रोक न सकती थी। कभी २ मुंहचावर उससे और पड़ोसियों से हो जाया करती थी। भला, अबला और असहाय दुखियाओं को सुख कहां ! इस ही दुःख दशा में बड़ी बहू तो भाग्यवशात् और अधिक क्रूरता देखने के लिए जीवित नहीं रही ! अभागी छोटी बहू पर ही दैव का सारा रोष आ धमका, स्वभाव चिड़चिड़ा और रोष भरा था और उधर पञ्चलोग खार खायें थे ही ! इस से किस प्रकार टहल करते भी ताना़ज़नियां सही जातीं। उमर भी तीस वर्ष के भीतर थी। बस पंचों की बन आई। इधर एक रोज़ कहना सुनना ख़तम हुआ, उधर फंड से सहायता भाना रुकवा दी गई। रोष खाई काली नागिन की तरह वह उन पर टूट पड़ी। परन्तु अबला कर ही क्या सकती थी ? उलटा इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि वह विजातीय घरों में टहल मज़दूरी ढूंढने लगी। लोग कहने लगे उसका किसी से अनुचित सम्बन्ध हो गया। फिर क्या था वह चट जाति बहिष्कृत कर दी गई। किसी ने इस बात की परवाह नहीं की कि मामला सच भी है या नहीं। वह बिचारी झूठे लाञ्छन के प्रतिवाद स्वरूप इधर उधर अपने हितू जान लोगों में भटकी भी। परन्तु उसके कर्कशा स्वभाव ने कुछ भी सुनवाई न होने दी।

३

एक नन्हीं बालिका दौड़ कर घर में आ अपनी मां से पूछने लगी—"अम्मां ! आज तो सलूने हैं। देख मैं यह राखी मांग लाई। अब बता मैं किस के बांधूं ? मेरा भइया कहां है ?"

माता भोली बच्ची की इस करुणोत्पादक वाणी को सुन कर नेत्रों में आंसू भरलाई कुछ कह न सकी ! बच्ची को छाती से लगा लिया। बोली "बेटी, तेरा कोई भइया नहीं ! ला, तू मेरे बांध दे। मैं तुझे पैसे दूंगी। और ओढ़ने को ओढ़नी दूंगी।" बच्ची मुसकराती मां के पास से चली गई। यह मां अनादित छोटी बहू ही है। बच्ची के चले जाने पर उसने एक गरम निःश्वास छोड़ा और उस हा के साथ उसका हृदय उमड़ पड़ा। वह कहने लगी कि 'आज सलूने हैं। आज

राखी का दिन है। लोग कहते हैं कि आज महिलायें अपनी रक्षा के लिए भाइयों के राखी बांधती हैं। परन्तु मेरी राखी हाय! कौन स्वीकार करेगा। न मैं घर की हूं न घाट की। न सजातीय हूं और न विजातीय! दूसरे की टहल करती थी और अपना पेट भरती थी। पर मेरे बैरी यह काहे को देख सके। उन्हें तो मुझे रुलाना था। मेरी अनाथ बच्चियों को दर २ भटकाना था। अब क्या करूं? इधर अपने पुरखाओं के रीति रिवाज और वेष भूषा का मोह नहीं छूटता और सहसा पतिदेव के वियोग में उन से विश्वासघात भी नहीं किया जाता! उधर उस विजातीय नवयुवक के आश्वासन और प्रेम भरे ढाढस अपनी ओर खींच रहे हैं! हाय! क्या मैं इन अबोध कन्याओं को लेकर वंश का रहा सहा नाम मिट्टी में मिला दूं। परन्तु करूं भी क्या? सुनती आई हूं कि आज के दिन इस 'रक्षा बन्धन' के पवित्र दिन श्री विष्णु कुमार महामुनि ने श्री अकंपनादि मुनि गणों के प्राणों की रक्षा की थी। आज का दिन अभयदान के लिए प्रसिद्ध है। परन्तु स्वार्थी संसार में आज यह त्यौहार की लीक पीटने के रूप में ही मनाया जाता है। वरन् क्या कोई भी विष्णु कुमार मुनि राज का सच्चा भक्त हम अबलाओं की रक्षा करने न आता! हम अबलायें दुःखित, दलित और पतित की जा रही हैं। हम पर अत्याचारों की भरमार की जा रही है। हमारे जीवन जबरदस्ती नष्ट किए जा रहे हैं। हठात् हमारी आत्माओं को मिथ्यात्व के वशीभूत किया जा रहा है। हमारे इहलोक और परलोक दोनों जबरदस्ती बिगाड़े जा रहे हैं। और मेरा जीवन नष्ट होगा। होने दीजिए। परन्तु मुनि विष्णु कुमार के नाम पर यदि अभिमान है किसी को तो उससे मैं इस दशा को सुधारने के लिये प्रार्थना करती हूं! अत्याचारी पंचायतें समाज को नष्ट कर रही हैं। उनका सुधार करो और महिलाओं का उद्धार करो! भाई! यही मेरी राखी है। न घर की और न घाट की बहिन की राखी है स्वीकार करो, चाहे मत करो! हा! यह राखी!

— 'प्रेमी'

समाज की परीक्षा का समय!

तीन अबलाओं के जीवन संकट में!

जैनी हो तो अभयदान दीजिए—स्थितिकरण अङ्ग का पालन कीजिए।

'सहमी फिरती है शफा उसके दिले बीमार से!
ऐ मसीहा तू बचा ले उसको इस आजार से!
ताक में बैठी है बिजली उसके खिरमन के लिये!
दुश्मनी ठाने बहारें हैं उसके गुलजार से!

बिचारी विधवाओं की दशा आज कितनी संकटापन्न हो रही है यह 'वीर' के पाठकों से छिपी हुई नहीं है। कोई भी बिचारी अबला-की रक्षा करने वाला नहीं है! समाज की पंचायत

स्वार्थी पुरुषों के अड्डे बन गए हैं ! तो फिर निरप-राध दुखियाओं की सुनवाई हो तो कहां हो ! समाज हितैषी भाइयों ने—नहीं मुख्य कर बहिनों ने श्राविकाश्रम स्थापित कर रक्खे हैं परन्तु उनका पता तक बहुधा सब बहिनों को नहीं है ! इसी कारण अभागी बहिनें तरह २ के दुःख उठाती हैं। 'वीर' के १६ वें अंक में सराय अगहत (जिला-एटा) की एक जैन विधवा का उल्लेख किया गया था ! तदुपरान्त प्रयत्न करने पर आगरा से जीव-दयासभा के मंत्री पं० बाबूराम जी, हम (उ० सं०) और अलीगंज के कतिपय पंच उसकी रक्षा की व्यवस्था के लिए वहां गये थे। वह दुःखिया यहां तक त्रसित की गई थी कि उसे विश्वास ही नहीं होता था कि हमारे दुःखमें भी कोई साथी हो सका है ? उसके पास जो पहुंचा वह अपने स्वार्थ के लिये ! उसकी ५ और ८ वर्ष की कन्याओं को छीनने के लिये ! सराय के पंचों ने इस अनर्थ को रोका और प्रारम्भ में उसकी सहायता का प्रबन्ध वीरद-पाल सभा तथा फीरोजपुर के किसी दानवीर के द्वारा कराया ! उस समय तक वह विधवा अपने धर्म—कर्म का पालन करती दिन बिताती रही ! परन्तु जब उसकी सहायता बाहिर से बन्द होगई और वह बाहिर से मजूरी पर पेट भरने पर उद्यत हुई तब गीदड़ों की बन आई। नरपिशाचों ने बला-त्कार करना प्रारम्भ किये, परन्तु कोई भी उसकी रक्षाको नहीं आया ! वह ज्यों त्यों कर अपने शील बचाने की हामी भरती है। इस अवस्था में उसकी रक्षा का भार लेकर मुसलमान आया और वह उसका सब प्रबन्ध अपने निजी मन्सूबों के लिये करने लगा। उसके पास कुछ औरतें भेजने लगा।

सारांश यह कि वह अब तक इसही प्रयत्न में है कि इन तीनों अबलाओं को अपने धर्म में ले आये अथवा कन्याओं को बेचकर रकम खड़ी करे ! स्था-नीय पचों पर उस विधवा का विश्वास शेष नहीं है ! और दीन हीनता में अपनी भलाई देखनेको वह लाचार है ! एक तो ग्रामीण-फिर कुसंगति के प्रभाव में ! ऐसी दशामें समाज हितैषियों को उसकी रक्षा के लिये अगाड़ी आना चाहिये और रक्षा के उपायों को बतलाना चाहिये ! उसकी बातें विश्वास होता है कि वह पतित अथवा विधर्मी से बचाई जासकती है ! और अबोध कन्यायों जीवन दुःखपूर्ण होने से बच सकते हैं। इसे सह १-२ रोज में हम पर विश्वास होना कठिन है ! उ ने पं० बाबूराम जी को अपना निश्चित विचार कि १०-१५ रोज में लिखने को कहा है ! यद्यपि अपने घर पर किसी की भी देखभाल में रहने तैयार हो। वस्तुतः उसका भविष्य सामने विचार में आता है तो दिल धड़कने लगता है ! सुधर जायगी। जब एक विधर्मी दुष्ट उसे अ ओर खींच रहा है तब क्या उसके सहधर्मी के खून से पैदा हुये भाइयों में इतनी दृढ़ता न नहीं है कि वह इधर मुख मोड़ सकें ? सारी स का अपमान उसके विधर्मी होने में है ! स हितैषी ! अब तो चेतो। अपनी भूल को पहचान और आगामी विधवाओं की रक्षा का पूर्ण प्रय करो ! तुम्हारा अङ्ग कट रहा है, क्या अब चेत नहीं होगा ? विधवा के सजातीय अलीगढ़ मैनपुरी, जसवन्तनगर आदि के बुढ़ेले भाइयों को आपसी द्वेष को छोड़कर अबलाओं की रक्षा क के लिये तैयार होना चाहिये। समाज ! यह ले

परीक्षा का समय है ? बतला तुझ में कुछ जीवन शेष है या बिल्कुल मर चुकी । परिश्रम करने से तीन जीव बच सकते हैं वरन् मांस भक्षक होंगे। इस तरह तीन का नहीं अनेक जीवों की रक्षा का श्रेय इसकी रक्षा से होगा ! पतित बहिनका उद्धार कीजिये । उसकी रक्षा के लिये सराय अगत पहुंचिये । वहाँ के पञ्चगण सर्व प्रकार की सहायता देंगे। यह स्थान मोटा स्टेशन (E. I. Ry via Shikohabad) से ४ मील है । पं० बाबूराम जी से अथवा हम से इस विषय में विशेष पूछिये । परन्तु सचेत हो कमर कस लीजिये वरन् धीरे २ सारे शरीर को कटने दीजिये । याद रखिये:-

मनायें हम खुशी या ग़म, मगर यह काम करना है।
सफ़ीना एक ही है और हम सब को उतरना है॥

—उ० सं०

जैनियों प्रेम करना सीखो !

आज नहीं तो कल त्याग भावका महान् दिन है । अभयदान का पावन पावसकाल है । गृह-गृह और द्वार द्वार पर दानशीलता का परिचय प्राप्त है ! महान् पुरुष के त्याग दान का परिणाम ही यह होता है । उस आदर्श का अनुकरण सारा संसार करने लगता है । सहस्रों मुनिगण एक मिथ्या बुद्धि के शैतानी कार्य से अकाल ही प्राण-विसर्जन करने को बाधित हो रहे थे । अत्याचारी अमालु राजाने उग्रमुनि महाराजों को जीवित ही अग्नि समर्पित करने का पैशाचिक काण्ड रच दिया था ! धीर वीर मेरु सम अचल मुनिराज अपने ध्यान में अटल थे । इस दारुण दुःखने उन के एक रोम को भी चलायमान नहीं किया था । वे स्वध्यान अवस्था में लवलीन समताभाव से इस महान् उपसर्ग को सहन कर रहे थे । परम ध्यानी मुनि विष्णु कुमार ने अन्यत्र अपने दिव्य-ज्ञान नेत्रों से इस दारुण दृश्य को देखा ! उन की आत्मा थर्रा गई । उन्हें अपने गहन तप बल की सुध बुध न रही । ध्यान रहा तो केवल उन मुनि-महाराजों के उद्धार करने का, जिनके शरीर अग्नि की भीषण ज्वालाओं से तप्तायमान हो रहे थे । मनस्वी दान वीर दानशीलता में आगा पीछा नहीं सोचते । वात्सल्य भाव के प्रेरे मुनिराज ने शीघ्र हस्तिनापुर में पहुंच कर मुनिमहाराजों के उपसर्ग का अन्त कर दिया और दुरात्मा वहाँ के राजा को एक खासा सबक पढ़ा दिया । जनता को इस आदर्श से बड़ा लाभ हुआ । वह उस का अनुकरण करने लगी उसी समय-श्रावण शुक्ला १५ को सर्वमुनियों को लोगों ने आहार दिया और जिन्हों के, वहाँ

मुनिराज नहीं पहुंचे उन्होंने अन्य उदासीन श्रावकों आदि को बुला आहार कराया। बहुतेरों ने मुनिराज के चित्रलेख को ही आहार कराकर आहार ग्रहण किया। सारांश यह कि प्रत्येक नर-नारी ने उस स्वर्णावसर पर दान और त्याग भाव का महत्व हृदयङ्गम किया। उसी के अनुरूप में आज सारा संसार उस के महत्व से वाकिफ है। आज का दिन अपनी रक्षा के लिये प्रसिद्ध है। सबलों को रक्षा का भार अवश्य ग्रहण करना चाहिये। जैन धर्म इस समय संकट में है। उसके प्रति लोगों के कुत्सित विचार हैं और वह भारत में ही सीमित होरहा है। उसकी रक्षाके लिये आज समाज के व्यक्ति २ को तैयार हो जाना चाहिये। प्रत्येक जैनी को अपने आचरण से जैन तत्त्वों का प्रसार करना चाहिये। जिनवाणी के उद्धार के लिये समाजके दान वीरों को यह पावनराखी स्वीकार करना चाहिये। दानवीरों यह स्वर्णावसर है। इसको हाथ से न जाने दीजिए। परिषद् की सहायता प्रचुर धनसे कीजिए जिससे उस के द्वारा जिनवाणी का नियमित उद्धार और जैन धर्म का प्रचार होसके। विश्वके विद्वानोंमें दिगम्बर धर्मकी मान्यता फैलानेके लिये बोलपुर शांति निकेतन के "विश्व भारती" विश्व विद्यालयमें जैन आचार्य की नियुक्ति होने दीजिये। अपने पूर्वजोंके ऋण से उऋण होइए साथ ही धर्म के साथ समाज को स्वयं अपनी रक्षा करनी है। प्रत्येक व्यक्ति को यह राखी बांधनी चाहिये। दिगम्बरी ढोंग से और मानमत्सर के आवेश में समाज मर रहा है। सब अपनी २ डफली और अपना राग अलाप रहे हैं। सारा संसार जिस महात्मा गांधी के वाक्यों को आदर देता है वह आज जैनियोंके दर पर आकर तीर्थों के झगड़े को आपस में निपटाने के लिये कहता है और कहता है जोर के साथ "क्या विदेश न्यायालय में कुछ अधिक मिल जायगा यह फैसला क्या बाहर नहीं होसकता।" परन्तु कुछ सुनवाई नहीं। दिगंबरी और श्वेताम्बरी आपस में लड़ रहे हैं। देशद्रोही बन रहे हैं। देश के प्राण सरीखे महात्मा के वाक्यों का निरादर कर रहे हैं। इस निरादर का फल कटुक है। इस लिए आज परम वात्सल्यभावके दिन दिगम्बर-श्वेतांबर गले २ मिल जाइये। श्वेताम्बर नेताओ, मिथ्या अभिमान छोड़िये। इस से वृथा ही आत्मपतन के साथ २ देश का पतन क्या कर रहे हो! दिगम्बर भाइयों को भी परस्पर प्रेम से रहने का महत्व समझना चाहिये। मुनि-विष्णुकुमार के आदर्श से शिक्षा ग्रहण कीजिए। जैनी मात्र को अपना भाई समझिए। उस से अप्रेम मत कीजिये। बल्कि प्रेम बढ़ाने के लिए परस्पर रोटी बेटी व्यवहार स्थापित कीजिए। युवक कुमारोंको यह राखी स्वीकार कीजिए और बाल एवं वृद्ध विवाह को त्यागिए। दीन अबला बहिनों पर भी दया कीजिए। उन्हें अभयदान दीजिये वह जीवित मृतप्रायः हो रही हैं। उन्हें ज्ञान-दान दीजिए और कठोरताका व्यवहार न कीजिए। महिलाओं पर दया कर के बाल वृद्ध विवाह आदि अनर्थ रोकने के लिए आवश्यक है कि पँचायतों की व्यवस्था ठीक की जाय। एक आदर्श पंचायत का नमूना बनकर किसी प्रमुख स्थान को अगाड़ी आना चाहिये। वास्तविक रीत्या

...बन का पालन तो इस प्रकार ही हो सक्ता अतएव भाइयों और बहिनों ध्यान दीजिए। ...त महोदय यदि चाहें तो समाज में वात्सल्य ...व को शीघ्र फैला सकते हैं, परन्तु दुःख है वे ...वं द्वेष के वशीभूत हो रहे हैं। आज इस पवित्र ...न तो भगवान विष्णु कुमार के नाम पर मिथ्या अभिमान को त्याग दीजिए। सचाई को ग्रहण कर धर्म मार्ग पर आदर्श बन आजाइये। आपस में ही सब झगड़ों का अन्त कर दीजिए। वरन् जैनत्व का अभिमान त्याग दीजिये। विशेषकिम्।

—उ० सं०

“हरमनी” का मिथ्या भाषण !

हैदराबाद सिंध से 'हारमनी" (Harmony) नामक अंग्रेजी सिंधी का एक पत्र प्रकट होता है। उसके ता० ३० मार्च १९२५ के अंक में सम्पादक ने "Jain Priests" शीर्षक में जैन धर्म के सम्बन्ध में मिथ्या भाषण किया है। जैन अहिंसा की खिल्ली सी उड़ाई है। हम नहीं समझते इस बदलते हुए जमाने में भी सिंध के-जहां पर जैन धर्म का प्रचार खूब रह चुका है-यह संपादक महोदय अपने प्राचीन ऋषियों के वाक्यों का महत्व समझने में असमर्थ हो रहे हैं। विदेशी-जिन्हें हम असभ्यों की सन्तान बतलाते हैं-वह भारत वर्ष के मूल तत्व आत्मवाद अहिंसा धर्म की महत्ता स्वीकार कर रहे हैं, परन्तु हम उन्हीं ऋषियों की सन्तान यथार्थता को देखने में लाचार हैं। शोक कि ...ीर विचार स्वतंत्रता और सहनशीलता का अभाव होने से किसी बात का वास्तविक निर्णय करना आज भारत में कठिन साध्य हो रहा है। जैन मुनियों के पास पहुंचना कठिन नहीं है। उनका आचार सब के प्रति समान होता है। किसी अवस्था में भी कोई भी उनसे धर्म लाभ उठा सक्ता है। उन्हें प्रत्येक जीवित प्राणी की भलाई का ध्यान रहता है। वह यथार्थता में इतने तन्मय होते हैं कि अपने शरीर की रक्षा का ध्यान ही नहीं रखते! सांसारिक बातों और वस्तुओं से कतई ताल्लुक न रखना-उनसे बिलकुल निस्पृह रहना ही सच्चे सुख को पाने का द्वार है। यूनानी तत्ववेत्ताओं ने भी इन्हीं बातों पर जोर दिया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि Know Thyself और फिर Fewer things a man wants is nearer to god. आकांक्षायें कम-परमात्मपद नजदीक! ऐसी दशा में इन परमावश्यक विषयों की उपेक्षा कर इनका उपहास करना हितकर नहीं है। हां! ढूंढिया पंथी साधु मुंह पर पट्टी बांधे रहते हैं, परन्तु यह मूल जैनत्व के विरुद्ध है। दिगम्बर साधुओं के अतिरिक्त साधुगण बिछौने आदि वस्त्र रखते हैं परन्तु जैन दृष्टि से वह शिथिलाचार में प्रवृत्त हैं। यहाँ तक तो खैर थी, परन्तु अगाड़ी संपादक ने गजब ढा दिया है। हम नहीं समझते कि कोई भी ऐसा जैनी होगा जो खिचड़ी को शक्कर डालने के लिये अपने पड़ोसियों के सिर फोड़ दे! ऐसी घटना शायद ही कहीं मिलेगी। तिस पर व्यापार और व्याज की दर में केवल जैनियों पर ही आक्षेप नहीं किया जा सक्ता प्रत्युत हमारे हिन्दू भाई भी उससे मुक्त नहीं हैं। अतएव ऐसी मिथ्या क्षोभोत्पादक बातों को फैलाने से हम नहीं समझते जनता का क्या हित होता है। भारत में वैसे ही आपसी विरोध

धर्म सीमा पर है! तिस पर 'दुश्मनों' को अपने नाम का ध्यान रख कर तो कम से कम मेल बढ़ाने वाली बातें प्रकट करना लाज़मी है।

—उ० सं०

"मनोरमा" का अनोखा परिज्ञान !

उपरोक्त की भांति हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'मनोरमा' में भी पुनः जैन धर्म के विषय में अयथार्थ विवरण छपा है। उसकी मई मास की संख्या में पृष्ठ १७६ पर निम्न वाक्य लिखे हुए हैं:-

"यद्यपि बौद्ध और जैन धर्म दोनों का साथ ही साथ भारत में श्री गणेश हुआ और यद्यपि दोनों धर्मों के प्रवृतकों की शिक्षाओं में उतना अधिक अन्तर भी नहीं पाया जाता जितना कि अन्य दो धर्मों के बीच में देखा जाता है तथापि यह महान आश्चर्य की बात है कि वह धर्म जो एक समय गंगा पर्वत से कन्या कुमारी तक और अटक से लेकर कटक तक प्रचलित था, वही आज भारत वर्ष से सहस्रों कोसों की दूरी पर चीन और जापान को गौरान्वित कर रहा है। इसके विपरीत जैनधर्म जिसका संगठन बौद्ध धर्म का शतांश नहीं था और जिसे राजा महाराजाओं से यथेष्ट सहायता भी नहीं मिली थी, अच्छी हालत में न होने पर भी अपना अस्तित्व अब तक रखता है बौद्धधर्म की तरह उसका नामनिशान सदा के लिये यहां से चला नहीं गया है!"

बलिहारी है परिज्ञान की! किस इतिहासकार ने न मालूम, इस तरह की ऐतिहासिकता का परिचय बिचारी 'मनोरमा' को कराया है! उसकी जाति का ज्ञान शोचनीय दशा का हो रहा है। इस लिये उसके इस साहसपूर्ण भाषण पर हमें तर्स आता है। जैनियों की मान्यता जाने दीजिये महाशया! परन्तु पुरातत्वविदों के कथन को—नई रोशनी के विद्वानों के अन्वेषणों को तो यालाये ताक न रखिये! सारा विद्वत्समाज आज इस बात को जानता और मानता है कि जैनधर्म की स्थापना बौद्धधर्म के साथ २ भगवान महावीर ने नहीं की, बल्कि म० बुद्ध से ढाई शताब्दि पहिले हुये पार्श्वनाथ जी ने ही बहुत करके इसकी स्थापना की थी, यद्यपि जैनी जैनधर्म की इस युगकालीन स्थापना का श्रेय भगवान ऋषभ को देते हैं, जिनका उल्लेख संभवतः हिंदुओं की मान्य पुस्तकों में है। ऐसी अवस्था में बौद्ध धर्म के साथ २ जैनधर्म का जन्म हुआ बतलाना बिल्कुल मिथ्या है। जैन धर्म का संगठन बौद्धधर्म का शतांश नहीं था—इसका निर्णय तत्कालीन परिस्थिति ही करसकी है। अतएव उससे इस व्याख्या का प्रमाणित किया जाना आवश्यक है, वरन् यह भी मनोरमा जी का मनचला आलाप है। जैन शास्त्रों का अध्ययन ठीक इसके विपरीत परिचय करायगा। ऐसी ही कोरी कल्पना राजा महाराजाओं से सहायता न मिलने में बांधी गई है। म० बुद्ध के पहिले से ही भारतीय राजागण जैन धर्म के उपासक थे। भगवान पार्श्वनाथ के तीर्थ के सम्राट् ब्रह्मदत्त चेटक नृप आदि जैन थे। भगवान महावीर की माता नृप चेटक की ही पुत्री थीं। भगवान महावीर भक्त सुप्रसिद्ध सम्राट् श्रेणिक बिंबसार, शतानीक, कुणिक अजातशत्रु, चण्डप्रद्योत, हस्तिमल्ल प्रभृति म० बुद्ध के समकालीन थे। उपरान्त नन्द वंश और लिच्छवि वंश में भी जैनधर्म की मान्यता चली आई थी। पश्चात् सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य जैन थे। सम्प्रति और अशोक मौर्य भी जैनधर्म को माथा नवा चुके हैं। यही नहीं विदेशियों के हृदयों को भी जैन धर्म ने मोह लिया था। सिकन्दर आज़म अपने साथ

जैन मुनियों को लेगया था। पश्चात् इन्डो-ग्रीक राजा मिलिन्द् अथवा मिनेन्डर भी कभी जैन धर्म प्रेमी था। कलिंग के जितशत्रु खारवेल महामेघवाहन प्रभृति राजा कट्टर जैनी थे। दक्षिण गङ्ग, पांड्य, राष्ट्रकूट, कलचूरि प्रभृत वंशों में भी जैनधर्म की गति थी गुजरात के कुमारपाल सिद्धराज प्रभृति राजा जैन थे। मेवाड़ के शिशोदिया वंशज महाराणागण आज तक जैन गुरुओं की विनय करते हैं। मैसूर के महाराजा भी अपने पूर्व पुरुषों के समान ही जैनधर्म का आदर करते हैं। मुसलमानी राज्य में जो सुख किंचित भारतीय जनताको मिला वह जैनसाधुओंके बदौलत था। महम्मद तुगलक, फीरोज़शाह, अलाउद्दीन और औरंगजेब के समान क्रूरहृदयी व निष्ठुर मुसलमान बादशाहों पर भी जिनसिंह सूरि, जिन देव सूरि और रत्नशेखरसूरि के समान जैनाचार्योंने कितने ही अंशोंमें प्रभाव डालकर धर्म तथा साहित्य की सेवा की थी! सम्राट् अकबर का रामराज्य होने में हरि विजय सूरि जैनाचार्य ही मुख्य कारण थे। गर्ज यह कि हर समय जैनधर्म की प्रधानता शासक वंश के निकट अवश्य रही है। उसे यथेष्ट सहायता उनसे मिली है। हां, यह बेशक है, कि 'मनोरमा' के परिज्ञान में शायद इन नामों की वक़्त न न हो। वह अपना ही सेर 'सवासेर' समझती हो, परन्तु अब ज़माना पलट गया है! इसे ज़माने के विरुद्ध मुंह नहीं खोलना चाहिये! इस प्रकार पराये लोगों पर कटाक्ष करना उचित नहीं है! उससे हमको ऐसी आशा भी नहीं थी। साथ ही जैनियों को भी इन घटनाओं से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये। इस उन्नतशील जमाने में ऐक्यता का महत्व हरएक को हृदयङ्गम कर लेना आवश्यक है! —क॰ सं॰

ग्रह-नक्षत्र-पटलों में जीवित प्राणी!

जैन सिद्धान्त प्राचीन काल से बतलाता आया है कि ग्रह-नक्षत्र-पटलों में ज्योतिषि जाति सम्बन्धी देवगति के जीव रहते हैं। चमकते हुए सूर्य चन्द्रमा, तारे आदि दिखाई पड़ते हैं यह उन देवों के रहने के विमान हैं। इन्हीं पर सुन्दर भवनों में वे देवगण रहते हैं। आधुनिक संसार को सहसा इस बात पर विश्वास नहीं होता था, परन्तु अब कैलेफ़ोरनिया विश्वविद्यालयके सभापति और लिक ज्योतिषालय (Oteserotry) के व्यवस्थापक प्रो॰ विलियम कैम्पबल इस ही बात को प्रमाणित करने अगाड़ी आये हैं उनका कहना है कि जिस प्रकार मनुष्यादि थलचर जीवों से विभिन्न प्रकार के जीवों का रहना जल में संभव है उसी प्रकार किसी न किसी रूप में सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि पटलों में जीवों का रहना असंभव नहीं है। इन स्थानों में भी किसी न किसी रूप में जीवों का अस्तित्व होना लाज़मी है, क्योंकि जीवित पदार्थ प्रत्येक स्थान पर अपनी परिस्थिति के अनुसार रहता है। (It is a fact that "bife is evry where evolved in conformity with its environment") इस ही प्रकार जैन मान्यताके अनुसार कुछ काल पहिले एक अन्य प्रो॰ ने पृथ्वी को चपटी और स्थिर बतलाया था। सारांशतः आज विद्वत्समाज की मौलिक खोजें यथार्थता को पाती जा रही हैं जैसे जैनधर्म बतलाता है। इसलिये परमावश्यक है कि जैन शास्त्रों को अंग्रेज़ी भाषा में प्रकट किया जाय तथा जैन विद्यार्थियों को उच्चकोटि की लौकिक शिक्षा दी जाय, जिससे जैनसिद्धान्तों की सिद्धि वैज्ञानिक

ढंग से की जाकर धर्म प्रभावना हो। धर्मप्रेमी! परिस्थिति को देखिये और प्रबन्ध कीजिये।

—उ० सं०।

हमारा धर्म क्या हो?

"यो धरति उत्तमे सुखे सः धर्मः" जो उत्तम सुख में धारण करे सो धर्म है। सुख हरएक प्राणी को चाहिये। वह सुख जो असल में सुख है, जिस में कोई बाधा या पराधीनता नहीं है जिससे प्राप्त हो वही धर्म है। क्योंकि आत्मामें ज्ञान गुण के साथ साथ अनेक गुण हैं और उनमें सुख गुण मुख्य है। इसलिये आत्माके श्रद्धान, ज्ञान व अनुभवके प्रताप से वह सुख जो आत्मा में ही है स्वयं प्राप्त होने लगता है। इसलिये आत्माका जैसा स्वरूप है वैसा श्रद्धान करना और वैसा ही जानना तथा वैसा ही ध्यान करना सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्ररूपधर्म है। यही धर्म परम आनन्दका दाता है यही निरन्तर सेवने योग्य व धारण करने योग्य हैं।

जिस धर्म से सुख मिल सके वह धर्म आत्मा में ही है आत्मा का स्वभाव है। इसलिये आत्मा का स्वरूप यथार्थ समझना चाहिये।

आत्मा का स्वभाव अनेक रूप है, इसमें पूर्णज्ञान दर्शन वीतरागता, आनन्द वीर्य परमात्मा के समान भरा हुआ है। यह सदा बना रहता है इस से नित्य है व इसमें अवस्थायें सदा हुआ करती हैं इससे यह अनित्य है। यह अनेक गुणोंमें व्यापक है इसलिये यह अनेकरूप है, तौभी यह अनेक गुणों का अखण्ड अमिट पिंड है इससे एकरूप हैं।

आत्मा अपने स्वभाव की अपेक्षा भावरूप है इसमें अन्य आत्मा व सर्व अनात्मा का स्वभाव नहीं है इसलिये उनकी अपेक्षा से अभावरूप है।

यह संसार अवस्था में विभावरूप व मुक्त अवस्था में स्वभावरूप परिणमन करता है इससे यह स्वभाव विभावरूप है। यह अनित्यही है, यह नित्य ही है यह एक रूपी है यह अनेक रूप ही है, यह स्वभाव रूप ही है, यह विभाव रूप ही है इत्यादि एकांत हठको छोड़कर जो आत्माका स्वरूप जानना सो आत्मा द्रव्य का यथार्थज्ञान है। मैं ऐसा ही हूं, कर्म कलंक से मलीन हूं परन्तु स्वभाव से कर्ममल रहित शुद्ध हूं साक्षात् परब्रह्म परमात्मरूप हूं। ऐसा श्रद्धान सम्यग्दर्शन है, ऐसा ही ज्ञान सम्यग्ज्ञान है व इसी ही भाव में चर्या करना व जमजाना सम्यग्चारित्र है। इसी को एक शब्द में आत्मध्यान कहते हैं। यह आत्मध्यान ही धर्म है यही सुख का तुर्त देनेवाला है। यह जैन धर्म है, बस जो आनन्द प्राप्त करना चाहें वे आत्मध्यान का अभ्यास करें।

क्योंकि ध्यान चित्त लगाने को कहते हैं इस लिये जिस तरह आत्माके गुणोंके स्वभाव में चित्त लग सके वह सब आत्म ध्यान में गर्भित है।

इस पवित्र भाद्रपद मास में जो प्रेम वाला है हमारे गृहस्थ भाई व बहिनोंको इस आत्मध्यान के साधनके लिये नीचे लिखे कार्यों का दिल लगा कर अभ्यास करना चाहिये।

(१) नित्य श्री जिनेन्द्र देव का पूजन या कम से कम भावसहित दर्शनकर स्तुतिपढ़ना चाहिए।

(२) एकांत में बैठ प्रातः और सायंकाल सामायिक द्वारा ध्यान का अभ्यास करना चाहिये।

(३) आध्यात्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय मन लगाकर करना चाहिये जैसे परमात्मप्रकाश, समाधिशतक इष्टोपदेश, पञ्चास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, ज्ञानार्णव।

(४) मन इन्द्रियवश करनेको नित्य संयमका नियम १७ नियमों के द्वारा करलेना चाहिये। जैसे आज भजन इत्यादिक करेंगे, आज अमुक रसन खायेंगे, आज ब्रह्मचर्य पालेंगे, इत्यादि।

(५) विशेषज्ञानी धर्मात्माओं की संगति में बैठकर अध्यात्म चर्चा करनी व उपदेश सुनना।

(६) दान व परोपकार करना, जिससे लोभ व मान कषाय घटें जो आत्मध्यान में बाधा देने वाले हैं।

लक्ष्मीको चञ्चल समझ कर पहिले उनकार्यों में पूरी मदद देनी चाहिये जो जैनधर्म व जैन जाति की सेवा के लिए इस जैन जाति में कार्य प्रचलित हैं व जिनका आलम्बन सर्व जैन समाज पर है।

(१) भारत दिगम्बर जैन परिषद्‌ के उपदेशक खाते व वीर पत्र खाते मदद देना, वीर में ग्राहक कम हैं करीब १२००) रु० वर्ष का घाटा है उसमें हाथ बटाना तथा ग्राहकों की संख्या भी बढ़ानी।

(२) स्याद्वाद महाविद्यालय काशी, गोपाल सिद्धान्त विद्यालय मोरेना, महासभा महाविद्यालय ब्यावर, सतर्क सुधातरङ्गिणी पाठशाला सागर, ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम जयपुर, देशबन्धु ब्रह्मचर्याश्रम कुंथलगिरि, अनाथाश्रम देहली, अनाथाश्रम बड़नगर तथा औषधालय बड़नगर, संस्कृत विभाग जैन हाईस्कूल पानीपत, श्राविकाश्रम बम्बई, जैनबाला विश्राम आरा, महिलाश्रम देहली आदि जो थोड़ी बहुत संस्थायें जैन समाज के भीतर विद्या प्रचार कर रही हैं उनको मदद पहुंचाना, इसके लिये यथावश्यक पाठशालाओं व कन्याशालाओं को खोलना चाहिये। दान व परोपकार बहुत ही हितकारी है। जो आचरण में सदा इसको रखते हैं वे सदा पुण्य कमाते हैं।

सामायिक पाठ व नियम पोथी सूरत, दफ्तर जैनमित्रसे मंगाकर उनका उपयोग करना चाहिये।

—संपादक

साहित्य समालोचना

जैन सिद्धान्त (Jain Conceptions) इस में श्रीमान् चंपतराय जी के दो ट्रेक्टों-अमर जीवन व सुख का संदेश एवं कर्म सिद्धान्त-को मूल (अंग्रेज़ी) में धर्म प्रचारार्थ श्री दि० जैन ग्रादर्श असोसियेशन, बेलनगंज आगरा ने प्रकाशित किया है। छपाई सफाई सुंदर। बधाई!

टंडन का इंगलिश टीचर—लेखक श्रीयुत रामनारायण जी टण्डन प्रकाशक कार्यालय टंडन ग्रादर्श, आगरा शहर। पृ० २५६। मूल्य १) छपाई उत्तम। हिन्दीविज्ञ कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक की सहायता से अच्छा काम चलाऊ अंग्रेज़ी सीख सकता है। साधारणतया इसी प्रकार की अन्य पुस्तकों से यह सस्ती और अच्छी है।

दिव्य मन्दिर अर्थात् वीर्य रक्षा—लेखक "श्री कृष्ण"-प्रकाशक बलवन्त आत्माराम पिंजरकर, प्रेमभुवन, वर्धा। पृष्ठ ४४ मू० ।=)॥। सफाई

छपाई साधारणतः अच्छी है। इस में आजकल युवकों में इस विषय की अजानकारी के कारण जो यथार्थ दशा फैल रही है उस का दिग्दर्शन कराया है। तथा ब्रह्मचर्य्य का महत्व बताते हुये कतिपय अजमूदा बातें एवं खानपान की व्यवस्था बतलाई हैं। 'वीर' के ग्राहकों को अग्रिम मूल्य भेजने से पौनी कीमत में मिलेगी। पुस्तक पढ़नी चाहिये।

संक्षिप्त जैन रामायण—स्व० कवि मनरंग लाल कृत- प० चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा रायल साइज पृष्ठ ६२ मूल्य ॥) छपाई सफाई अच्छी। कविवर ने जैन दृष्टि से मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का चरित्र अच्छे ढंग से छंद बद्ध किया है। जैन कवियों में आप को भी उच्चस्थान प्राप्त है। वस्तुतः जैन कवियों की रचनाओं को प्रकट करने की अत्यन्त आवश्यका है। इस लिये प्रकाशकका यह कार्य सराहनीय है। प्रत्येक जैन घर में यह रामायण होना चाहिये।

भारतीय-भोजन—लेखक पं० हरिनारायण शर्मा आयुर्वेदाचार्य्य। पृष्ठ ७६ मूल्य ॥।) छपाई सफाई चित्ताकर्षक उत्तम है पुस्तकमें लेखक ने प्राकृतिक या सात्विक आहार, मांस भोजन का जिह्वाका विवेचन, भोजनका समय, अजीर्ण, भोजन विधि, स्वाद, स्त्री के साथ भोजन, भोजन में जल पीने की व्यवस्था, खाने की कुछ चीजें, भोजन परीक्षा, उपवास आदि विषय विस्तार सचित्र वर्णित बतलाये हैं और इन सबको सुगम भाषा में अच्छी तरह समझाया है। पुस्तक का पाठ उत्तम स्वास्थ्य के लिये प्रत्येक हिन्दी पढ़े लिखे को करना चाहिये।

रसायन संहिता—इसका संपादन स्वामी प्रबोधानन्दजी ने किया है। मूलग्रंथ उनको हिमालय प्रवास में एक स्थान से जीर्णशीर्ण प्राप्त हुआ उस ही का हिन्दी अनुवाद करके यह प्रकट किया गया है। वैद्यों के काम की चीज़ है। मूल्य ॥≈) पृष्ठ ८८।

नाड़ी सिद्धान्त—ले० पं० भागीरथ स्वामी रसायन शास्त्री। नाड़ी की चालका प्रस्तुत पुस्तक में खासा विवेचन आधुनिक एवं प्राचीन दोनों सिद्धान्तों को ध्यान में रख कर किया गया है! चित्र देकर विविध दशाओंमें उसकी गति समझाई गई है। वैद्यगण खासकर और जन साधारण सामान्य रीति से उसके द्वारा लाभ उठा सक्ते हैं। मू० ।≈) उक्त तीनों पुस्तकें-वैद्य भास्कर पं० बांके लाल गुप्त, धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़) से प्राप्त हो सकी हैं। यहीं से इन्हींके संपादकत्व में 'धन्वन्तरि' नामक वैद्यक संबंधी उपयोगी मासिक पत्र प्रकट होता है। वा० मू० उपहार सहित २)।

श्री वीरतत्त्व प्रकाशक मंडल की संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट—इस संस्थाने थोड़े ही समय में खासी उन्नति की है। इस के द्वारा चालित विद्यालय में इस समय २७ विद्यार्थी लौकिक एवं धार्मिक शिक्षा पाते हैं। कार्य प्रशंसनीय है।

—उ० सं०

संसार दिग्दर्शन

समाज

लेजिस्लेटिव कौन्सिलें और जैनी—भारतीय सरकार ने यद्यपि जैनियोंको एक खास अल्पसंख्यक जाति (Inportai t'Minor ty) करार दी है, परन्तु उस ही के अनुसार उन को भारतीय व्यवस्था में स्थान नहीं दिया है। जैनियों ने कभी २ इस उपेक्षा के प्रति आवाज़ उठाई भी, परन्तु वह इतने धीमे ढंग से कि उस का उठाना न उठाना बराबर ही रहा ! बेशक भारतीय सरकार की यह उपेक्षा उचित नहीं कही जा सकती, परन्तु जब स्वयं हम ही समुचित रीति से अपने स्वत्वों की परवा नहीं करते तब दूसरों को क्या पड़ी है कि हमारी संभाल करें ! मद्रास प्रान्त के जैनियों ने अपने स्वत्वों के लिए लगातार कोशिश की, परिणाम यह हुआ कि मद्रास प्रान्तीय सरकार को एक जैन-प्रतिनिधि भी प्रान्तीय कौन्सिलमें नियुक्त करना पड़ा ! इस ही तरह यदि अन्य प्रान्तके जैनी अपने स्वत्वों की परवा करें और लगातार इस के प्रति आन्दोलन चलाए रक्खें तो प्रत्येक कौन्सिल में जैन-प्रतिनिधियों की नियोजना होजाये ! मुर्दा बनने से काम नहीं चलेगा ! अपने स्वत्वों के लिये लगातार प्रयत्न करते रहना हमारे लिये लाज़मी है। कोई भी प्रान्त, कोई भी सभा और कोई भी ग्राम इस प्रयत्न में पीछे नहीं रहना चाहिये। जब तक हमारा प्रतिनिधि राज्यकीय व्यवस्था में हमारा मत प्रकट करने को मौजूद नहीं होगा, तब तक हमारे स्वत्वोंकी रक्षा नहीं होगी। इस संबंध में एक संगठित आन्दोलन शुरू कर देना चाहिये। अपने स्वत्वों की रक्षाके लिये दिगंबरी, श्वेताम्बर स्थानकवासी, पण्डित, बाबू सब को मिलकर मैदान में आ जमना चाहिये ! राष्ट्रीयता के बिना आज जीवन निभाना कठिन है।

हर्ष और बधाई—मद्रास प्रांतीय कौन्सिल में पहले से मि० बल्लाल जो जैन प्रतिनिधि थे ही परन्तु अभी हाल में धर्मस्तल के मि० मनजय्य हेगड़े की नियुक्ति वहां की पब्लिक की ओर से हुई है। हमें हर्ष है कि जन साधारण को आप में इतना विश्वास है कि आपको आप के प्रतिपक्षी से एक हज़ार वोट अधिक मिले। इस शानदार नियुक्ति पर हम आप को हृदय से बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि आप धर्मस्तल के प्राणियों का उत्तरदायित्व समुचित रीति से निभायेंगे और जैन समाज की भलाई का भी ध्यान रक्खेंगे। उत्तम हो यदि सर्वभारतीय जैन जो प्रान्तीय कौन्सिलों अथवा असेम्बली में हों वे संगठन करके

जैन स्वत्वों की रक्षा का आन्दोलन उठावें ।

—उ० सं० ।

—आवश्यक्ता है । जैन पाठशाला देवबंद के लिये एक ऐसे जैन अध्यापक की जो धार्मिक शिक्षा के साथ हिसाब भी पढ़ा सकें यदि उर्दू जानते हो और भी अच्छा है वेतन योग्यतानुसार ।

आशाराम जैन मुख्तार, मंत्री-जैन पाठशाला देवबन्द (सहारनपुर)

—(रोहतक) में एक आश्रम "ज्ञानवनिता जैनाश्रम" नाम से पिछले सालसे खोला है सो जो छात्राएं आश्रम में रहकर विद्याभ्यास करना चाहे वह सहर्ष आकर विद्या अभ्यास कर सकती हैं जो छात्राएं आश्रम के खर्च से न रहना चाहें उ . को केवल ३) रु० मासिक भोजन खर्च का देना होगा सो आप कृपाकर के जो छात्राएं आना चाहें कोशिश करके भिजवावें ।

—ला० हुकुमचंद जगाधरमल, दिल्ली ।

—जसवन्तनगर में जैं० ध० भू०, धर्म दि० ब्र० शीतलप्रसाद जी का शुभागमन बड़ीत जाते हुआ था । एक आम व्याख्यान द्वारा धर्मोपदेश का विशेष प्रचार हुआ । फलतः एक रात्रिशाला प्रारम्भ होगई है तथा श्रीयुत शिवचरणलाल जी की माता ने स्याद्वाद विद्यालय को छात्रवृत्ति ६०) रु० वार्षिक की प्रदान की ।

—अंग्रेजी जैनगजट का विशेषाङ्क प्रगट होगया है । जो सर्वथा दर्शनीय है । गत गोम्मट स्वामी के महामस्तकाभिषेक अवसर के कुल २२ नवीन चित्र मनमोहक हैं । उनसे उस समय के समारोह का परोक्ष दर्शन होता है । लेखों में उस समय के सर्व व्याख्यान हैं तथा अन्य कई एक उत्तमलेख हैं । श्री चम्पतराय जी के लेख से बाइबिल में जैन धर्म के अनुसार आत्मा व पुद्गलका एकीकरण प्रमाणित है । प्रो० चक्रवर्ती एवं बाबू हेमचन्द्र रायके लेख भी पठनीय हैं । अंग्रेजी पढ़े भाईयों को जैनियों के इस एक मात्र अंग्रेजी मासिक पत्र के ग्राहक होना चाहिये । पता—मैनेजर जैनगजट, जार्ज टाउन, मद्रास । वा० मू० ३)

—पूज्य श्री १०५ ऐलक पन्नालाल जी महाराज का चतुर्मास इस साल रामपुर स्टेटमें व्यतीत होगा रामपुर समाजका अहोभाग्य है जो ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ है । शास्त्र स्वाध्याय धर्मोपदेश आदि का अच्छा लाभ होगा । आस पास के ग्रामीणजनों को तथा सर्व समाज को दर्शन आदि लाभ प्राप्त करने का बहुत अच्छा अवसर है । श्रीजिनदेव से प्रार्थना है कि महाराज का चतुर्मास निर्विघ्न पूर्ण हो श्री ऐलक जी महाराज जी सम्बन्धी पत्रव्यवहार इस पते पर करें ।

—लक्ष्मी प्रसाद मन्त्री

जैन सेवक समिति रामपुर स्टेट

देश

—कासगंज (जिला एटा) में हिन्दू-मुसलमान भाई प्रारम्भ से प्रेम पूर्वक रहते चले आए हैं । जिस समय खां बहादुर साहबने इस नगर की नींव डाली थी उस समय उन्होंने हिन्दुओं और जैनियों को खासा आश्वासन दे यहां बुलाया था । उसी के मुताबिक हिन्दू और मुसलमान जनता बड़े प्रेम से यहां रह रही थी । मुसलमान जमीनदार हिन्दुओं के धार्मिक कार्यों में सहायक होते थे और हिंदू मुसलमानों की मुहर्रम में दिल खोल शरीक होते थे । परन्तु भारत की राष्ट्रीय परिस्थिति ने

यहां भी अपना प्रभाव डाल दिया है। द्वेष की अग्नि तथा सुलगने लगा है हिन्दू लोग सड़क के किनारे पर स्थित महादेव जी की मूर्ति पर एक छोटी सी मढ़ी बनवाने लगे। यद्यपि जमीन हिन्दुओं की है और यहां पास पड़ोस में कोई मसजिद भी नहीं है तो भी हमारे मुसलमान भाइयों ने उस पर एतराज खड़ा कर दिया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने पञ्च मुकर्रर किए पर वह भी किसी निर्णय पर न पहुंचे आखिर सरकारी हुकुम से मढ़िया बनना बन्द किया जा चुका है। हिन्दुओं ने जिलाधीश की सेवा में प्रार्थना भी की परन्तु उसका भी फल कुछ नहीं हुआ। सबूत देने के लिये जिलाधीश ने हिन्दुओं से कहा है, हिन्दुओंने शायद अपना धार्मिक स्वत्वअपहरण होने खयाल करके बाजार बन्द करदिया था।

—अकालियों की विजय—बाईस महीने के कठिन परिश्रम और आंदोलन के बाद अन्त में अकालियों की विजय हुई और गंगसर गुरुद्वारे से अखण्ड पाठ सम्बन्धी सारी बाधाएं कल से दूर हो गयी। कल ढाई बजे दिन में बाजेगाजे और जुलूस के साथ शहीदी जत्था निर्विघ्न गंगसर गुरुद्वारे में पहुंचा। न तो सरकार की ओर से कोई शर्त ही लगायी गयी न बाधा ही दी गयी। कलसे तीन अखण्ड पाठ आरम्भ हुए हैं। जत्थेदार ने कल शाम को ईश्वर प्रार्थना की। तीर्थ यात्रियों के लिये कोई रुकावट नहीं है। सिर्फ जैतो मंडी में लोग बगैर इजाजत नहीं आने पाते।

विदेश

—फरासीसियों की शंका जर्मनी के इस समय राष्ट्रसंघ की सदस्यता को इतना महत्व देने से फरासीसी राजनीतिज्ञों को शंका हो रही है। 'टाइम्स' के पेरिस के संवाददाता का कहना है कि फरासीसियों की धारणा है कि राष्ट्रसंघ की कठोर टीका करनेवाला जर्मनी एकाएक उस को पसन्द करने लगा है तो अवश्य ही उसे संघ के द्वारा अपना काम निकलने की कोई राह दिखायी दी होगी। राष्ट्रसंघ के प्रति जर्मनी के इस उत्साह का यहां यही अर्थ लगाया जा रहा है कि जर्मन सरकार ने संघ के द्वारा दो कार्य सिद्ध कार्य कराने का निश्चय किया है-मध्य यूरोपमें फ्रांस के सैनिक हस्तक्षेप का क्षेत्र घटाना और सन्धिपत्र का परिवर्तन।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	माता का रक्षा बन्धन (कविता) ...	४६५	६	सम्पादकीय टिप्पणियां	४८२
२	प्रथमानुयोग की साक्षी ...	४७२	७	साहित्य-समालोचना !	४८४
३	जाति-सम्बोधन ! (कविता) ...	४७६	८	संसार दिग्दर्शन	४६०
४	हाय ! मेरी रानी !	४७७	९	हिसाब आय व्यय जैन हाईस्कूल पानीपत	५१६
५	समाज की परीक्षा का समय ...	४८०			

श्रीप्रिय जगदीशदत्त के दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छपा।

संशोधित संस्करण

हिसाब आय-व्यय जैन हाईस्कूल पानीपत

१ अप्रेल १९२४ से ३१ मार्च १९२५ तक

तफसील आमदनी

१ चन्दा माहवार	२३२८)
२ प्रोविडेन्ट फंड	३९३।।।≡)७
३ प्राविन्शियल ग्रान्ट	५३६९)
४ म्युनिसिपलिटी ग्रान्ट	६२२।)
५ ग्रान्ट राजा खेड़ी ब्रांच	१५)
६ स्कूल और बोर्डिङ्ग की फीस	६२९८।।।-)३
७ दान एक रुपया फंड	५३५।।)
८ लायब्रेरी के वास्ते	१००)
९ मकान बेचा	१५००)
१० पुराना सामान बेचा	१४)
११ संदूकची से निकला	५२≡)
१२ विवाह के समय	२६२)
१३ जन्म के समय	१५)
१४ मृत्यु के समय	३००)
१५ मुतफर्रिक तौर से आया	२१६।।।≈)
१६ किराया जमीन	१-)
१७ संस्कृत विभाग	१५१२।)
१८ रोकड़ा जो १-३-१९२४ को खजांचीके पास मौजूद था	२३८।।।-)१०
मीजान आमदनी	१९७७४।।।)८

तफसील खर्च

१ प्रोविडेंट फण्ड	१३५२'≈)
२ कर्जा दिया गया	१३४९≡)
३ तनख्वाह स्कूल सामान बोर्डिङ्ग हाउस आदि	१२९३१।।≡)२
४ बोर्डिङ्गहाउस के लिये जमीन खरीदी	६००)
५ खर्च राजा खेड़ी ब्रॉंच	२८१।।।≈)११
६ खर्च स्काउट (Scouts)	२६)
७ छपवाई रिपोर्ट	३४।।।)
८ छपवाई अपील	३४।'≡)
९ खर्च नाइटस्कूल (Night School)	२६।≈)
१० सफ़र खर्च चन्दा इकट्ठा करने का	१५≡)।।।
११ मैनेजिङ्ग कमेटीके दफतरका खर्च	९९-)।।
१२ संस्कृत विभाग	६४८≡)।।।
१३ रोकड़ जो ३१-३-२५ को खजाञ्ची के पास है	२३७४ ।।≡)७
मीजान खर्च	१९७७४।।।)८

हिसाब आय–व्यय "संस्कृत-विभाग" निम्न प्रकार है:—

तफ़सील आमदनी

१ रोकड़ जो १-३-२४ को खजांची के पास मौजूद थी — १६२॥)११
२ चन्दा लाला राधालाल नेमदास पानीपत — १५०)
३ ,, रा. ब. ला. लक्ष्मीचंद जी — २८०)
४ ,, ला० चिरंजीलाल जी पानीपत — २८०)
५ ,, पं. क़बूलसिंह, पं: रामजीलाल — ६०)
६ ,, ला० परमानन्द सुन्दरलाल व अर्हदास जी — ६०)
७ ,, ला० इतरसिंह जी पानीपत — ८४)
८ ,, ला० अर्हदास जी पानीपत — ३०)
९ ,, ला० ज्यातिप्रसाद टीचर पानी० — १४)
१० ,, बाबू शोकीचन्द जी बी० ए० इञ्जीनियर पानीपत — ६०)
११ ,, सेठ जैकुमारसिंह व सेठपरमानंद जी इन्कम टैक्स अफ़सर — ६०)
१२ ,, जैन पंचायत पानीपत, दश लाक्षन में दान किया — २४१)
१३ ,, जैन पंचायत इटावा दस लाक्षन में दान दिया — २०)
१४ ,, विवाह आदि में आया — ४८।)
१५ ,, छात्रवृत्ति वापिस आई — ५)

मीजान १६७४॥।)११

तफ़सील ख़र्च

१ छात्रवृत्ति (Step hands) — ६१०।≡)॥।
२ छपवाई रिपोर्ट — १७।=)
३ ,, अपील — १४।=)
४ छप्पर डलवाया — ६)

पण्डितों, हिन्दी और अंग्रेजी के टीचरों की तनख्वाह और सब खर्च हाईस्कूल के फण्ड से दिया गया है।

मीजान खर्च ६४८≡)॥।

रोकड़ जो ३१ मार्च १९२५ को ख़ज़ांची के पास जमा है १०२६॥-)२

टोटल १६७४॥।)११

नोट—७) लाला किशोरीलाल बसंतलाल जी, शामली। १६।) लाला नत्थूलाल जी ठेकेदार झज्जर। ५) जैन पंचायत कटक। ५) जैन पंचायत बनारस। इन सज्जनों ने इस विभाग को दान दिये, अतएव इन सबों को धन्यवाद देते हैं। **जयकुमारसिंह जैन, मैनेजर।**

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

☞ चाँदी के फूल भाव १।) तोला- - सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला ☜

(सिर्फ़ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व बेश जितने तोल चाँदी में तैयार होसकता है उसकी बिगत।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*बँधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र एक	३६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०)से१०००)
पालकी	१००० से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	।पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चँवर एक	५) से २५)	*अष्टमङ्गलद्रव्य	१००) से २००)
हाथीकासाज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रतिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़ेकासाज	२००) से ५००)	*चौकी	२५) से ३००)	*सोलहस्वप्न	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १०००)	समोसरन	१००) से ३०००)	*।सीमसमण्डल	३०) से १००)
*सोंटा	५०) से ७५)	अढाई द्वीप की रचनाकामाँडला।	१०,से ५००)	*कलशा	५०) से ५००)
छतरी डंडा	३०) से ५०)			बरतन चाँदी के	२००) से १०००)
जैन-मन्दिर के उपकरण।					
गन्धकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीप की रचनाकामाँडला।	५००।से२०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
वेदी	२००) से ४०००)			पूजन के बरतन	३००) से ५००)

यह काम वाजिब आढ़त लेकर बनवा देते हैं मन्दिर आदि काम में ३=) सैकड़ा का आढ़त लेते हैं। ।इस चिह्न की चीज तैयार भी रहती है। *ये चीजें चाँदी की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस।

(२) जैनसमाज कार्यालय सिघई फूलचन्द जैन, कार्यालय, चौखम्भा बनारस सिटी।

Tel Address— SINGHAL, BENARES

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शहजादा प्रिंस-आफ-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराजा मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूलकी सी रङ्गत आजाती है मुँह पर स्याह दाग मुँह से फोड़ा फुन्सी,दाद खाज हाथ,पाँव का फटना बगलमें बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सबको साफ़ करके चमड़े को नरम करदेती है। यह इत्रोंसे बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदनपै से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी २।) रुपया ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)

पता:—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को० आगरा।

बालरक्षा ग्रहरत्न कवच।

बहुधा देखने सुननेमें आता है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक रोग मसान,पसली,श्वास,खाँसी ललक, दस्त, सकिया, ज्वर,नेत्रपीड़ा, गलगण्ड आदि में फँसकर मरजाते हैं और ठग लोग उनके माता पिताको भूतादिक की बाधा झपटा, नजर बताकर लूटते हैं परन्तु आराम नहीं होता।हमने इसकेलिये एक बिजली का कवच बनाया है जिससे बालकोंके सब रोग शान्त होते हैं। जो ४०वर्ष से धड़ाधड़ बिक रहे हैं जिसके अनेक सार्टीफिकेट मौजूद हैं एकबार परीक्षा अवश्य करें। मू०१।) डा०व्य०।= ,कुल१॥=।

मिलने का पता—ज्योतिष रत्नभवन फ़र्रुखनगर (पञ्जाब)

यदि आप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं
तो 'वीर' में अपना विज्ञापन अवश्य छपवाइये

वीर— को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ता है।

वीर— हरएक जैन स्कूल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।

वीर— धार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है।

वीर— उच्चकोटि का पाक्षिकपत्र होनेसे फ़ाइल में रक्खा जाता है और बार बार पढ़ा जाता है।

वीर— एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

वीर— विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा।

शीघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर विज्ञापन रेट मालूम कीजिए और स्थान रिज़र्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पछताना पड़ेगा।

पता:—'वीर' कार्य्यालय, बिजनौर (U.P.)

केवल टाइटिल पेज पं० जीवाराम उपाध्याय ने अपने सारस्वती प्रेस मुरादाबाद में छापा।

वर्ष २]　　१५ अगस्त सन् १९२५ ई०　　[संख्या २०

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

वीर

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र ।

ऑन० सम्पादकः—
जै० ध० भू०, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादकः—
श्री कामताप्रसाद जी

आप हमारे पवित्र उद्देश्यों को कुचलेंगे

यदि आपने इस समय वीर की सहायता निम्न लिखित सरल उपायों से भी न की:—

(१) स्वयं ग्राहक बनकर, यदि अब तक नहीं हैं।

(२) अन्य मित्रों को ग्राहक बना कर ।

(३) सार्वजनिक स्थानों पर वीर का प्रचार करके।

(४) शुभ अवसरों पर वीर की धन से सहायता करके ।

हम अपने पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि यदि आपने वीर की समाज सेवा उपयोगिता और सस्ते पन को ध्यान रखकर इस समय सहायता करदी तो अवश्य ही वीर की जड़ जमजायगी और श्री वीर शासन का प्रचार करने में व समाज सेवा में वीर शीघ्र ही सफल होगा।

राजेन्द्रकुमार जैन रईस बिजनौर (यू० पी०)

हर्ष !   हर्ष !!   हर्ष !!!

आगामी वर्ष में वीर के ग्राहकों को

उपहार में

श्रीमान् ला० फुलझारी लाल जी रईस करहल निवासी की द्रव्य सहायता से बा० कामता प्रसाद जी उप सं० 'वीर' लिखित अत्यन्त उपयोगी सुन्दर लगभग ३०० पृष्ठों का बहु मूल्य ग्रन्थ

"सत्य मार्ग" मुफ्त मिलेगा

दीपमालिका तक जितने वीर के ग्राहक हो जावेंगे उतनी ही संख्या में यह ग्रन्थ छपेगा। शीघ्र ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा लीजिये। अन्यथा पछताना पड़ेगा।

प्रकाशक "वीर" बिजनौर

स्वर्णपदक या नक़द !

सर्वोत्तम चित्र पर !

'वीर" के मुख पृष्ठ पर हमारा विचार एक भावपूर्ण तिरंगा चित्र प्रकट करने का है। अतएव हम सर्व चित्रकारों को इस पत्र की रीति नीति का ध्यान रखकर भावपूर्ण चित्र भेजने को सादर आमंत्रित करते हैं। चित्र ता० २० अगस्त १९२५ तक हमारे पास आजाना चाहिये। सर्वोत्तम चित्र के चित्रकार को एक उत्तम स्वर्णपदक अथवा उसका नक़द मूल्य सादर प्रदान किया जायगा। चित्र का भाव या तो भगवान महावीर के जीवन से संबंधित हो अथवा 'वीर" के अनुकूल कोई मौलिक चित्र हो। विश्वास है कि हमारे प्रिय चित्रकार हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

हम उन महाशयों के भी आभारी होंगे जो इस विषय में अपने विचार प्रकट करेंगे। चित्रों का उचित मूल्य यदि वे चाहेंगे तो दे दिया जायगा। शीघ्रता कीजिए।

--प्रकाशक 'वीर" बिजनौर।

श्री वर्द्धमानाय नमः ।

वर्ष २ | बिजनौर, भाद्रपद कृष्णा ११ वीर सम्वत् २४५१
१५ अगस्त, सन् १९२५ | अङ्क २०

दुर्लभ पर्याय

मित्र क्यों रहे मनुज भवहार ।

अति दुर्लभता से पाया है जिन रूप तुमने यार ।

मोहादिक के वशीभूत हो नाहक रहे विसार ॥मित्र०॥

इस अमूल्य तन से तुम करते भाई पर उपकार ।

सम्यक् लहि निजगुण से परिचित हो तरते संसार ॥मित्र०॥

अबभी समय चेति लगि जाओ निज कर्तव्य मंझार ।

अन्यथा पुनः डूबि जाउगे अरे भ्रात मँझधार ॥मित्र०॥

—मनभावनलाल जैन

प्रथमानुयोग की साक्षी

उपरोक्त शीर्षक के गत लेख में श्री आराधना कोष द्वितीय भाग से उन कतिपय सामाजिक विषयों पर प्रकाश डाला गया था, जिन पर समाज में आजकल मतभेद फैल रहा है। आज हम उसी शास्त्र के तृतीय भाग से उन विषयों पर प्रकाश डालेंगे। देखेंगे कि हमारे पुराणवर्णित पुरातन पुरुषों का सामाजिक जीवन किस प्रकार हमारे लिए आदर्शरूप है। पाठकों को उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण करना चाहिये।

इस शास्त्र में ६५ वीं कथा वृषभसेन की है। इसमें उज्जैन के राजा चन्द्रप्रद्योतन के विषय में लिखा है कि एक रोज़ उसका हाथी उसे लेभागा और एक घने जंगल में जा पटका। वहां एक जिनपाल नामक व्यक्ति के यहां यह राजा रहे। कथा में यह नहीं बताया गया है कि यह जिनपाल कौन था? परन्तु नाम और विवरण से वह सेठ-वणिक पुत्र ही प्रगट होता है। इस ही जिनपाल की पुत्री जिनदत्ता के साथ राजा प्रद्योतन ने विवाह किया और इनके वृषभसेन नामक पुत्र हुआ। राजा प्रद्योतन के दीक्षा ग्रहण करते समय पुत्र ने भी दीक्षा ग्रहण की थी और वे मुक्ति को प्राप्त हुए थे। इस प्रकार इस कथा से जब क्षत्री और वैश्य में विवाह संबंध होना धर्मानुकूल है, क्योंकि इस संबंध से उत्पन्न पुत्र मोक्षतक का अधिकारी हुआ, तब आज कल जैन समाज की उपजातिरूप वंशों खंडेलवाल अग्रवाल आदि में परस्पर विवाह संबन्ध होने में कोई हानि नहीं है। वह तो सर्वथा शास्त्र सम्मत है।

इसके अगाड़ी ६६वीं कथा कार्तिकेय मुनि की है। इस में कहा गया है कि कार्तिकपुर के राजा अग्निदत्त की पुत्रि कृत्तिका थी। वह युवावस्थाको प्राप्त हो रही थी। उसकी रूपराशि पर स्वयं उसके पिता अग्निदत्त का नियत खराब हो गई। जैन मुनिने इस अनर्थसे उसे रोका भी, परन्तु वह न माना। अपनी पुत्री से ही भ्रष्ट ने अनुचित संबंध कर लिया। इस संबंध से कार्तिकेय नामक पुत्र का जन्म हुआ। युवा होने पर और अपना जन्म संबंध जानने पर वह दीक्षा ग्रहण कर मुनि होगए और उपसर्ग सहन कर स्वर्गधाम सिधारे। जब इस प्रकार व्यभिचार जात संतान मुनि धर्म पालन करने की अधिकारी है तब आजकल के प्राचीन दस्सों के विषय में विद्वानों और श्रीमानों को विचार करना चाहिये। तथा पतित बहिनों के प्रति भी दयाभाव प्रकट कर उन्हें आत्मोन्नति के मार्ग पर लगाने की व्यवस्था करना चाहिये। ७८ वीं सुदृष्टि सुनार की कथा से भी इस बात की पुष्टि होती है। उसमें जार पुत्र के दीक्षा ग्रहण कर मुक्ति लाभ करने का उल्लेख है।

७०वीं कथा में राजगृह के राजा उपश्रेणिक के पुत्र चिलात पुत्र की कथा है। एक दिन महाराज उपश्रेणिक को चपल घोड़े ने घने जंगल में जा पटका। "उस वनका मालिक एक यमदण्ड नाम का एक भील था। इसके लड़की थी। उस

का नाम तिलकवती था।" इस ही से उपश्रेणिक ने इस शर्त पर शादी करली कि इस के पुत्र को ही राज्याधिकारी बनाएंगे। तिलकवती से चिलात-पुत्र नामक पुत्र हुआ। यह राज्याधिकारी हुआ। और अनर्थ करने लगा। प्रजा ने गद्दी से उतार दिया। कारण वश वह मुनि होगया और अन्त में उपसर्ग सहनकर सर्वार्थ सिद्धि को प्राप्त हुआ। श्रेणिक चरित्र में एक अन्य प्रकार यह कथा दी हुई है। परन्तु इस से पाठकों को देखना चाहिये कि जब पहिले क्षत्री और शूद्र में विवाह संबन्ध होता था तब आज समय की आवश्यकतानुसार वैश्य वर्ण के विविध अंशों में-उपजातियोंमें परस्पर विवाह-सम्बन्ध होना जराभी शास्त्रों के प्रतिकूल नहीं है। हम पहले लिख चुके हैं कि आचार्यों ने 'जाति' मां की परिवार पक्ष को और 'कुल' पिता का पक्ष बतलाया है। ऐसी दशा में आजकल की तरह एक ही उपजाति में ही परस्पर विवाह सबंध शास्त्र सम्मत नहीं है प्रत्युत अन्य उपजातियोंसे विवाह सबंध करना शास्त्र सम्मत है। इस कथा से उस विषय की भी पुष्टि होती है कि नीच जातियों के प्रति मनुष्योचित व्यवहार करना चाहिये।

नं० ८४ की कथा में आत्मनिन्दा करने वाली चितेरे की पुत्री बुद्धिमती की कथा है। यह बनारस के राजा विशालदत्त पर मोहित थी और अपनी बुद्धिमत्ता से उनको भी अपने में अनुरक्त कर लिया। फलतः राजा और इस चितेरे-चित्रकार की कन्या से विवाह हो गया। वह पट्टरानी बन गई। रानियां इस नीचकुल की कन्या से घृणा करती थीं। फलतः उसने अपनी आत्मनिन्दा करना प्रारम्भ की थी। इस कथा से भी जैनसमाज में परस्पर विवाह संबंधी खोलने की पुष्टि होती है।

नं० ८६ की विनयी पुरुष की कथा से यह सिद्ध होता है कि जिस तरह आजकल अग्रवालों में वैष्णवों से विवाह संबंध करने का रिवाज है उसी तरह पहिले भी था। कौशाम्बी के राजा धनसेन वैष्णव थे और रानी धनश्री जैनी थी। इस कथा के अनुसार वर्तमान समाज की परिस्थिति को ख्याल कर यदि विधर्मी सवर्णी कन्याओं को जैन धर्मी बना ग्रहण किया जाय तो कोई हानि प्रतीत नहीं होती। विद्वानों को अपना अभिमत प्रगट करना चाहिये।

नं० १०६ की कथा सम्यक्त्वको न छोड़नेवाली जिनमती की है। यह जिनमती जैनी जिनदत्त सेठ की पुत्री थी। वहीं नागदत्त नामक विधर्मी सेठ अपने पुत्र रुद्रदत्त का विवाह इससे करना चाहता था। परन्तु जिनदत्त अपनी कन्या विधर्मी को नहीं देना चाहता था। फलतः नागदत्त ने युक्ति चली। वह समाधिगुप्त मुनिके निकट जैनी होगया और व्रतोंका पालन करने लगा। जब जिनदत्त को इसके जैनधर्म के श्रद्धान का विश्वास होगया तब उन्हों ने जिनमती का विवाह उनके साथ कर दिया। इससे प्रमाणित होता है कि जब कोई व्यक्ति जैन धर्म में दीक्षित हो उसका पालन करने लगे तब उसके सवर्णी जैनी भाइयों को उसके साथ रोटी बेटी व्यवहार खोल लेना चाहिये। इस समय जैन धर्म प्रचार की ओर अन्यपुरुषों को उसमें दीक्षित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। अतएव इस शास्त्र-सम्मत विषय की ओर समाज मुखियाओं को ध्यान देना चाहिये।

नं० १०७ की कथा में सम्राट् श्रेणिक की कथा

है। इसमें वर्णन है कि काम्बी के सोमशर्मा ब्राह्मण की पुत्री अभयमती थी। उसने श्रेणिक की परीक्षा ले उसके गुणों पर मोहित हो अपना पति स्वीकार किया था। इस प्रकार ब्राह्मण पुत्री और क्षत्री कुमार में विवाह हो गया। इससे आजकल जैनियों की उपजातियों को परस्पर विवाह संबंध करने की पुष्टि होती है, क्यों कि वह तो एक ही वर्ण के हैं। और पहिले तो सर्व वर्णों में भी परस्पर विवाह होते थे।

नं० १०८ की कथा में धनमित्र सेठ के पुत्र प्रीतिकर की कथा है। यह सेठ पुत्र जब विदेशों से खूब धनादि लेकर लौटा और इसकी प्रसिद्धि बहु और हुई तब वहां के राजा जयसेन ने अपनी कुमारी पृथिवी सुन्दरी और एक दूसरे देश से आई हुई वसुन्धरा तथा और भी कई सुन्दर राजकुमारियों का विवाह इनके साथ कर दिया। अन्त में सांसारिक भोग भोग कर वह मुनि हो गए। मुनिपद में कर्मों का नाश कर लोगों को उपदेश दे आप शिवधाम को सिधारे। इस कथा से भी परस्पर विवाह संबंध करने की पुष्टि होती है।

नं० ११० की औषधदान कथा में धनपति सेठ की वृषभसेना पुत्री का विवाह क्षत्री राजा उग्रसेन से हुआ लिखा है। इससे भी यही व्याख्या पुष्टि होती है।

नं० ११३ कर्णकुण्डल की कथा भी इसही बात की द्योतक है। उसमें विधर्मी धनश्री का व्याह जिनधर्मी वसुमित्र से होना लिखा है। आजकल संख्याह्रास को दृष्टि कर विधर्मी कन्याओं के लेने की बड़ी आवश्यकता है। समाज को ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार इस तृतीय खंड की उक्त कथाओं से भी उन बातों की पुष्टि होती है जिनको लेकर आज वृथा ही परस्पर में लड़ाई झगड़ा हो जाता है। आज समाज मर रही है-दूसरे उसपर खुला आक्रमण कर रहे हैं उसकी परवा न करके अपनी मान पुष्टि के लिए वितंडावाद करना हित कर नहीं।

—उ० सं०

स्वदेश प्रेम

(१)

चल जाय कितनी ही हवा, फिर भी अचल चलते नहीं।
प्रणधीर करके प्रण किसी भी भीति से टलते नहीं॥
रणवीर को रणभूमि में निज मृत्यु भय होता नहीं।
निज देश के दुख से जला, सुख नींद से सोता नहीं॥

(२)

हो चूर चूर न लाल क्यों, वह लालिमा जाती नहीं।
जलकर अनल में भी कनक में कालिमा आती नहीं॥
सुरभित सुमन मिल मृत्तिका में निज सुरभि खोता नहीं।
निज देश के दुख से जला, सुख नींद से सोता नहीं॥

—(आनन्द)

१—दश लाक्षणी पर्व में स्त्रियों का कर्त्तव्य ।

भाद्रपद आगया, चारों ओर पूजन पाठ स्वाध्याय व धर्मचर्चा जीवित सी हो गई, यह महीना जैनियों को चतुर्थ काल का स्मरण दिला देता है, जो युवक कभी मन्दिर नहीं जाते हैं उनको भी धूप दशमी व अनन्तचौदश को श्रीजी की हाजरी बजानी ही पड़ती है, और जो बहू बेटियां वर्ष भर घूंघट में घोटी जाती हैं वे भी इस महीने में श्री जी का दर्शन कराने के लिये बाहर निकाला जाती हैं।

फिर जो भक्त जन हैं उनका तो कहना ही क्या है, ये लोग नाना प्रकार का तपश्चरण करके महान पुण्योपार्जन करते हैं।

और इसी पुण्य की कमाई से आगे के ग्यारह महीनों को काटते हैं। इस तपस्या में हमारी महिलायें भी पीछे नहीं हैं।, पुरुष एक दिन व्रत करते होंगे तो स्त्रियां बेला और तेला कई बार करती हैं। परन्तु इन व्रतों से जितना लाभ होना चाहिये उतना लाभ शायद ही किसी बहिन को होता होगा, क्योंकि दौलतराम जी ने कहा है—

"कोटि जन्म तप तपे, ज्ञान बिन कर्म झड़ैं जे"
ज्ञानी के क्षणमाहिं, त्रिगुप्ति से सहज टरैं ते ॥

अर्थात्-अज्ञानी करोड़ों जन्म में तप करके जिन कर्मों का नाश करता है उन कर्मों को सम्यग्ज्ञानी मन, वचन, काय, की गुप्ति पूर्वक एक क्षण में नष्ट कर देता है।

इस समय महिला समाज में ज्ञान की अत्यन्त कमी होगई है इसीसे हमारा तपश्चरण कार्यकारी नहीं होता।

सब से प्रथम महिला समाज को विद्या पढ़कर सम्यग्दर्शन प्राप्त करना चाहिये, तभी कल्याण होगा, अन्यथा कभी माता पूजन कभी शीतला की पूजना और कभी मियां मुल्लाओं की मस्जिद झांकना यह मिथ्यात्व संसार सागर में डुबो देगा। आज आपने दशों दिन व्रत करके शोर गुल मचा डाला और कल लड़का बीमार हुआ तब मिथ्यात्व का सेवन करने लगीं। इस प्रकार के आचरण से धर्म-लाभ नहीं होसकता, हमारी बहिनों को चाहिये कि इस मिथ्यात्व को सर्वदा त्याग दें इसके फंद

में आप अनेक कष्ट उठाती हैं ढोंगी स्याने भोपे आपका धन हरण करते हैं व नाना प्रकार के नाच नचाते हैं इसलिये यहां भी दुःख होता है और इस मिथ्यात्व दर्शन से अनन्त संस्कार का बन्ध भी होता है। जिसका फल अनेक बार कुयोनियों में भोगना पड़ता है।

गृहीत-मिथ्या दर्शन का विस्तार स्त्रियों में अधिक क्यों है? इस पर विचार करने से यही ज्ञात होता है कि हम में विद्या का प्रचार नहीं है। हमारे ज्ञान चक्षु खुले नहीं हैं, हम वस्त्राभूषणों के प्रलोभनों में ही ठगा दी गई हैं। हमने अपनो उपयोग अपने हित अहित के विचार करने में कभी नहीं लगाया है इसी का यह फल है। अब हमको चाहिये कि मातृभाषा और संस्कृत भाषा का ज्ञान जिस तरह हो सके प्राप्त करलें और उस विद्या के बल से श्री उमास्वामी श्री कुन्दकुन्द स्वामी आदि आचार्यों के बनाए ग्रन्थों का स्वाध्याय करें, जिस से ज्ञान चक्षु खुलें व आत्मबल जागृत हो और अपने हित का बोध हो, यह पर्याय क्षण भंगुर है यदि अज्ञान में ही समाप्त हो गई या मिथ्यात्व में ही मरण होगया तो बड़ा भारी हानि हो जायगी, फिर यह घाटा हजारों जन्मों में पूरा होना कठिन होगा।

इसलिये इस भादों के महापर्व में महिलाओं को ऐसे नियम व्रत करने चाहियें जिन से जीवन सुधरता चला जाय और यह नश्वर पर्याय सफल हो जाय, इसके लिये समस्त बहिनों को स्वध्याय करने का व अपनी पुत्रियों और पुत्र वधुओं को धार्मिक विद्या पढ़ाने का नियम करना चाहिये। जबतक ये लोग शिक्षिता न होंगी शुद्ध रसोई करके कौन देगा? कषायों और झगड़ोंसे कभी पिंड न छूटेगा। इसलिये मान मर्यादा का मिथ्या भ्रम छोड़ कर वास्तविक गौरव की ओर बढ़ना चाहिये अपनी पदवीके योग्य पुत्रियों को पढ़ाने का प्रयत्न प्रत्येक मां और सास को करना परमावश्यक है। और जब ये शिक्षिता हो जांय तब इन्हें धर्म का स्वरूप समझना चाहिये।

दशलाक्षणि धर्म इस समय दशों दिन माना जारहा है व जिस की पूजा वन्दना की जाती है यदि वही धर्म हमारे हृदय में विराजमान होजाय तो मोक्ष सुख सहज में मिल सकता है। केवल पारलौकिक सुख ही नहीं वरन् इस संसार में भी सर्वत्र आनन्द की छटा उठने लगेगी।

१ उत्तमक्षमा-अर्थात् क्रोध न करना-यह जितने अंशों में धारण किया जायगा उतना ही शान्ति सुख का लाभ होगा। इससे सब कलह विसम्वाद मिट जायंगे। इसी प्रकार—

२ उत्तम मार्दव-मान न करना। इस धर्म के पालन से घमण्ड का नाश होजायगा।

३ उत्तम आर्जव-कपट न करना-इस से तो स्त्री पर्यायही सफल हो जायगा-न वे छलकपट करेंगी न दुःख उठायंगी।

४ उत्तम सत्य-कभी झूंट न बोलना-इस धर्म के धारण करने से हम सच्ची और, सीधी होकर सबकी विश्वास पात्र हो जांयगी-और क्रमशः कैवल्य प्राप्त करने की अधिकारिणी हो जायँगी।

५ शौच-अर्थात् लोभ न करना—इस धर्म का पालन करने से सन्तोष धन की प्राप्ति होगी।

६ संयम-इन्द्रियों को और मनको वश में रख

कर सब जीवों की रक्षा करना, हिंसा न करना, दयाभाव रखना, इसी धर्म के सम्पूर्ण परिपालन करने से मुनिगण मुक्ति प्राप्त करते हैं, जबतक ऐसे भाग्य हम लोगोंके न हों तब तक यथाशक्ति अपनी वासनाओं को रोकना व दया अहिंसा का प्रतिपालन करना चाहिये।

७ तप-अर्थात शास्त्रोक्त बारह प्रकार का तप करना। यह भी गृहस्थ से नाम मात्र को ही हो सकता है। इस पर्व में महिलाएं उपवास करेंगी यह अनसन नाम का तप है, परन्तु स्मरण रखना चाहिये। कि उपवास के दिन घर का आरम्भ छोड़कर और क्रोधादि कषायों से बचकर धर्म ध्यान करना चाहिये। जबतक चित्त पवित्र न होगा तब तक तपका फल भी न होगा।

८ त्याग-दान देना अर्थात् कषाय भावों को छोड़ना और चार प्रकार दान करना। यदि गृहस्थ के तरनेका कोई मार्ग है तो दान और भक्ति ही है। उत्तम पात्र को दिया हुआ दान मानो मनुष्य को हाथ पकड़ कर भवसिन्धु के किनारे पार लगा देता है।

इस समय त्यागी महात्माओं को शुद्ध रसोई बनाकर आहार देकर कितनी बहिनें महत् पुण्य उपार्जन कर रही होंगी। दानका बड़ा भारी हिस्सा महिलाओं के हाथ में ही है। हम चाहें तो अपनी गृहस्थी में चतुराई से चलकर: द्रव्य को बचा सकती हैं और उससे विद्यादान, अहारदान, औषधिदान कर सकती हैं।

९ आकिञ्चिन्य-अर्थात् समस्त परिग्रह का त्याग करना-यह भी मुनिराजों से ही हो सकता है तो भी लालच का घटाना और परिग्रह का परिमाण कर घटाते जाना ही हमारा अकिञ्चिन्य धर्म है। इसके अभ्यास से हम को एक दिन परम सुख मिल सकता है।

१० ब्रह्मचर्य-शील पालना यह दशवां धर्म सब व्रतों का भूषण है। मानव जीवन का सार है, जो मनुष्य निर्दोष शील को पालन करता है वह बड़भागी है। इस व्रतको स्थिर रखना कायरों व पामरों का काम नहीं है। भारतीय महिलाएं इस व्रत का आदर विशेष रूप से करती हैं इसी लिये उनकी प्रशंसा समस्त संसार में हो रही है। हमारी बहिनों को उचित है कि इस लोक में अक्षय कीर्ति को देने वाला व परलोक में स्वर्ग के ६ सुख को देने वाला व परम्परा मोक्ष देने वाला जो परम पवित्र ब्रह्मचर्य व्रत है उसको भले प्रकार पालन करें। अपनी स्थिरता बढ़ाती रहें।

भाद्रपद व दशलाक्षणि पर्वके महत्व को समझ कर दशों धर्मों को प्राप्त करने का यथाशक्ति प्रयत्न करें। तथा कम से कम निम्न लिखित नियमों को अवश्य करलें।

१ नित्यस्वाध्याय करना, बहु बेटियों से करवाना, न पढ़ी हों तो उन को पढ़वाना।

२ मिथ्यात्व पूजन छोड़ना, और सच्ची श्रद्धा बढ़ाना।

३ व्रत उपवास के दिन कषायभाव न करना।

४ नित्य प्रति कुछ न कुछ दान करना, और उस द्रव्य में से जैन संस्थाओं को भेज देना।

हितैषिणी—

चन्दाबाई

२--हिंदू विधवा और महात्मा गांधी

स्वनाम धन्य स्वर्गीय देशबन्धु दास की विधवा धर्म पत्नी श्रीमती वासन्ती देवी की मानसिक अवस्था का वर्णन करते हुए महात्मा गांधी हिन्दी नवजीवन के इस अंक में हिंदू विधवाओं के सम्बन्ध में बड़े मर्मस्पर्शी शब्दों में लिखते हैं कि-

हिन्दू विधवा दुःखकी प्रतिमा है। उसने संसार के दुख का भार अपने सिर लेलिया है। उसने दुख को सुख बना डाला है। दुख को धर्म बना डाला है! ....

कितनी ही बहिनों से मैं प्रार्थना करता रहता हूं कि अपना शृङ्गार कम कर दीजिये। बहुतेरी बहनों से कहता हूं कि व्यसनों को छोड़ दीजिये विरली ही छोड़ती हैं। परन्तु विधवा! जिस समय हिंदू स्त्री विधवा होती है उसीसमय उसके व्यसन और शृङ्गार सांप की कांचली की तरह छूट जाते हैं। उसे न तो किसी के प्रोत्साहन की आवश्यकता है न किसी की सहायता की। रिवाज! तुम क्या नहीं कर सकते!.........................

परन्तु हिंदू शास्त्र किस वैधव्य की स्तुति और स्वागत करता है? पन्द्रह वर्ष की मुग्धा के वैधव्य का नहीं जो कि विवाह का अर्थ भी नहीं जानती। उसके लिये तो यह अत्याचार ही है बाल विधवाओं की वृद्धि में मुझे हिंदू धर्म की अवनति दिखाई देती है। वैधव्य उस स्त्री के लिये धर्म है जो उसकी रक्षा करती है।

जिस धर्म को आज वासन्ती देवी सह रही हैं जिस मन से वे अपने विलास को हटा सकती हैं वे बातें जबतक पुरुष न करेंगे तब तक हिंदू धर्म अधूरा है। एक को गुड़ और दूसरे को धूहर यह उलटा न्याय ईश्वर के दरबार में नहीं हो सकता। परन्तु आज हिंदू पुरुषों ने इस ईश्वरी कानून को उलट दिया है। स्त्री के लिए वैधव्य कायम रखा है और अपने लिए स्मशान भूमि में ही दूसरे विवाह की योजना का अधिकार!

नोट—म० गांधी जी को भारत की स्थिति का जितना परिचय है उतना शायदही हममें से किसी को है। उन्होंने भारतीय विधवाओं के दुःखों को हटाने का जो उपाय बतलाया है, उसपर प्रत्येक को ध्यान देना आवश्यक है। बाल और विधुर विवाह कतई बन्द होना चाहिए।

—उ० सं०

एक वयोवृद्ध महानुभाव का विचारणीय पत्र।

महाशयजी आप की सेवा में निवेदन है कि जो वीर पत्र अंक १५ से महिला महिमा तथा सोनाबाई विधवा पुकारके विषयमें लेख निकला है उस के पढने से सारे शरीर के रोमांच थरथरा कर अश्रुधारा के वेग से चक्षुओं में चकाचौंध होगया। हाय! २ बड़े अफसोस की बात है जो ऐसे जैनकुल पाकर दयाधर्म को त्याग कर पृथ्वी जनमाथ,दर्शनी हुन्डी बनारखे हैं! मेरी १२ साल से पत्रों का अवलोकन करते २ आज ५५ साल की उम्र होचुकी और हर एक पत्रों में मृतक प्रायः पुरुष को कन्या

से कन्यायें उससे लेली गईं और उसको भी समझाया गया, परन्तु कोई फल न हुआ। कन्याओंके जीवन संकटापन्न होनेसे बचा लिए गए। कन्याओं का मामा उन को लेकर बाई जी के साथ दिल्ली चला गया। इस प्रकार श्रीमती रामदेवी बाईजी के अदम्य उत्साह और अपूर्व साहस से दो प्राणियों का धर्म बच सका है। बाई जी का यह शुभकृत्य स्वर्णाक्षरोंमें लिखने योग्य है। जैन समाजको ऐसी ही निर्भीक कर्तव्यपरायण माताओं की जरूरत है। जैन समाज सहसा उन के आभार से उऋण नहीं हो सकता! उनके इस धर्मकृत्य में यदि हमें अभिमान है तो दिल्ली आश्रम की हर तरह सहायता करनी चाहिये। आश्रम के कार्यकर्ताओं को इस धर्म कार्योपलक्ष में अब आश्रम के पूर्ण सहायक बनजाना चाहिये!

कन्याओं का तो उद्धार होगया, परन्तु अभाग्यवश उस बिचारी विधवा का जीवन खराबी में रह गया! सुना गया है कि वह अब सराय से कहीं चली गई है। इसका अनुसन्धान किया जा रहा है। उस का अपने भाईयों से इस प्रकार विमुख होने में मुख्य कारण समाज की उपेक्षा दृष्टि थी! उसकी चिट्ठी काटदी गई! यह कार्य उसके लिए हलाहल का काम कर गया! जाति-अपमान के समान और दारुण दुःख क्या हो सकता है? उसने स्पष्ट कहा भी था कि समाज में अब मुझ को स्थान कहीं मिलने का नहीं-सब मुझे दुरदुरायेंगे। उसे विश्वास दिलाया कि ऐसा न होगा! परन्तु परिस्थिति को देखते हुए उस को यकीन नहीं आया। वस्तुतः समाज में पतित बहिनों के लिए-अनाथ बहिनों के लिए कोई प्रबन्ध नहीं है। उनको दूध की मक्खी की तरह अलग निकाल फेंक दिया जाता है। परन्तु अब समय पलट गया है-ऐसे फेंकने से लोकहास्य हो रहा है। इस दशा का सुधार अवश्य होना चाहिए। पतित बहिनोंके प्रति दया दिखाइए। समाज के कर्णाधार चेतिए। जो मुनासिब समझिए वह प्रयोग में लाइए। अनाथ विधवाओं के दिल रोकर कह रहे हैं-उन पर तरस लाइए:-

मत सता तू ऐ फलक, बस बेवफाई हो चुकी।
इन्तहा हद तक सितमगर दिल दुखाई हो चुकी॥
इन्तजारी के फफोले फूटकर बहने लगे।
आस्मां तक सब्ज़ आहों की रसाई हो चुकी॥

--उ० सं०।

स्वदेश-द्वेषी।

कहा केंचुए ने मिट्टी से-छिः छिः तेरा कैसा वेश!
कविने कड़क कहा—रे पापी, रही न तुझमें लज्जा लेश॥
जिस मिट्टी से जन्म लिया औ खाकर जिसको बड़ा हुआ।
उसी जन्म-दायिनी भू को दुष्ट कोसने खड़ा हुआ॥

—(विश्वमित्र)

परिषद् समाचार

रिपोर्ट दौरा पं० प्रेमचन्द पञ्चरत्न

२६ जून से १७ जौलाई तक-मध्य प्रदेश

केवलारी—(सिवनी) २६ जून को आये, किन्तु खंडेलवाल बिरादरी का एक बारात में शरीक होने के कारण सभा न हो सकी।

लामटा (बालाघाट)—१ जौलाई, आत्मधर्म पर भाषण दिया। चार भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा यहां के भाइयों ने वेश्यानृत्य, आतिशबाजी, कन्या विक्रय बन्द करने की प्रतिज्ञा ली और श्री मन्दिरजी में धोती दुपट्टा आदि वस्त्र शुद्ध खादी रखने का निश्चय किया और २।) उपदेशक फंड को प्राप्त हुए। जैन जन संख्या २६ है।

बालाघाट- ३ जुलाई, सिंघई कपूर चन्द आदि से मिला परन्तु सभा नहीं जुट सकी।

बारा सिवनी—(बालघाट) ५ जुलाई, सभा में समाज सुधार पर व्याख्यान हुआ, यहां पर स्वाध्याय का प्रचार अच्छा है और जैन संख्या २०० है। ७॥) रु० उपदेशक जी को प्राप्त हुए।

गोंदिया—(भंडारा) १० जुलाई, शास्त्र बाँचने के पश्चात् सभा हुई, भाइयों ने कन्याविक्रय बाल विवाह, तथा वेश्या नृत्य की प्रथा बन्द करने की प्रतिज्ञा की तथा आठ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। उपदेशक फंड को ३) रु० प्राप्त हुए।

तुमसर—१२ जौलाई, समाज संगठन पर भाषण दिया तथा भाइयों ने कन्याविक्रय, बालविवाह तथा वेश्यानृत्य आदि प्रथा बन्द कराई यहां स्वाध्याय का प्रचार अच्छा है और जैनियों की संख्या ४० है। और भाई फूलचंदजी गोलालारे उत्साही हैं।

कामटी—(नागपुर) १३ जौलाई, जैन जन संख्या ४० है। सभा में ७ भाइयों ने स्वाध्याय का नियम तथा पंचायत ने आतिशबाजी, अश्लील गान कन्या विक्रय, वेश्या नृत्य, बाल-वृद्ध-विवाह प्रथायें बन्द कीं।

रामटेक—१४ जौलाई, यह मनोहर अतिशय-क्षेत्र है, यहां अति प्राचीन चतुर्थकाल प्रतिमा श्री० शान्तिनाथ जी की १५ फुट ऊँची विराजमान है सब सम्पूर्ण १० मन्दिर एक ही स्थान पर परकोटे के अन्दर हैं क्षेत्र का हिसाब भी ठीक पाया।

मुक्तागिर—१५ जौलाई, अमरावती से कुन्थलगिरि के प्रचारक भाई देवेन्द्र कुमार जी साथ हो गए यह क्षेत्र रमणीक है। यहां दो मौर हैं यहां से साढ़े तीन करोड़ मुनि मुक्ति पधारे हैं। यहां के मन्दिर जीर्ण अवस्था में हैं। जीर्णोद्धार होना आवश्यक है।

परतवाड़ा—(अमरावती) १७ जौलाई, यहां पर १२ घर खण्डेलवाल भाइयों के हैं। सिंघई सूरज मल जी ने सभा के लिये बुलावा दिया केवल दो भाई आए पूछने पर ज्ञात हुआ कि वहां के भाई परिषद् के विरुद्ध हैं।

सूचना

खुशखबरी—श्रीयुत चम्पतराय बैरिस्टर सभापति परिषद् श्री सम्मेद शिखरके पूजा केस

(मुकद्मा) की प्रिवि कौंसिल में पैरवी करने के लिये इङ्गलैंड १५ सितम्बर के लग भग जानेवाले हैं। आपने जनता के हितार्थ यह निश्चय किया है कि अपनी नीचे लिखी हुई पुस्तकों को कम मूल्य में दे दी जावें। पुस्तकें कम मूल्य में १५ सितम्बर तक ही दी जावेंगी। मँगाने वालों को कीमत व डाक खर्च पहिले भेजना चाहिये। वी० पी० नहीं भेजी जायेगी।

	कीमत	डाकखर्च
१ Key of Knowledge अंग्रेजी में (अर्थात् ज्ञान की कुञ्जी)	६)	१)
२ House holders Dharma अंग्रेजी में (रत्नकरंड श्रावकाचार)	।≠)	≠)
३ Practical Path अंग्रेजी में (तत्वमाला)	१॥)	।≠)
४ Sience of Thought अंग्रेजी में (अर्थात् विचार क्या है ?)	मुफ्त	≈)

हर जगह एजेन्ट चाहिये नमूना मुफ्त

शीशी ॥) दर्जन ५॥)

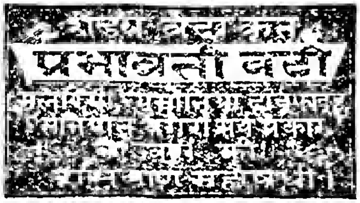

डाक महसूल अलग

बिना तकलीफ के दाद को जड़ से मिटाने के लिए

दद्रुहर मरहम

ही योग्य है। शीशी ।≈) दर्जन २॥) डा० म० माफ। कोई भी दवा १ दर्जन मगाने से एजेन्ट हो सकता है। सर्व शास्त्रीय औषधियां बिक्री के लिये तयार रहती हैं। एजेन्ट, वैद्य और धर्मार्थ वालों को विशेष सुविधा। बीमारी का हाल लिख भेजने पर उचित सलाह मुफ्त। विशेष हाल के लिये पत्र लिखिये, सूचीपत्र मुफ्त।

पता—आयुर्वेदाचार्य पाण्डुरंग शिवराम शेंडये वैद्य, श्रीगणेश चिकित्साभवन, नं० ५ दमोह सी० पी०

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शहज़ादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामर्टन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत आजाती है मुँह पर स्याह दाग, मुँह से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, पाँव का फटना, बगल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सबको साफ़ करके चमड़े को नर्म कर देती है। यह फूलों से बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) रुपया ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)

पताः—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड कं० आगरा।

संसार दिग्दर्शन

समाज

परमहर्ष !

"हमारे सभापति जी 'विद्या-वारिधि' हुए !"

हम को यह प्रकट करते परम हर्ष का अनुभव हो रहा है कि 'हिन्दू-सनातन भारत धर्म महा-मण्डल'ने परिषद्के स्थायी सभापति स्वनाम धन्य श्रीमान् बाबू चम्पतरायजी बैरिष्टर-एट-लॉ, हरदोई को 'विद्या-वारिधि' की वास्तविक पदवीसे सम्मानित किया है। वस्तुतः यह उपाधि बैरिष्टर साहब के तुलनात्मक धर्म के अगाध पाण्डित्य को और उनके जैन समाज के नेतृत्व को लक्ष्य कर ही महा-मंडल ने पुरस्कृत की है। अतएव हम को और भी हर्ष है कि भारत में आज धार्मिक-पक्षपात का अंत होकर पारस्परिक प्रेम का स्रोत बह निकला है। यह सम्मान इस ही बात का एक प्रमाण है। स्वयं बैरिष्टर महोदय लिखते हैं कि "इस सम्मान को पारस्परिक मित्रता की बुनियाद समझना चाहिए संभवतः जैन समाज भी इसी रूपसे उसको देखेगा और हिन्दूधर्म महामंडल का आभारी होगा।" यह शब्द स्वय यथार्थताको लिए हुए हैं जैनसमाज अपने हिन्दू-पड़ोसियों पर सदैव विश्वास रखती आई है और सकर्मा हिन्दूभाई अपने इस कृत्य द्वारा उसे और भी दृढकर रहे हैं। हमें विश्वास है कि अब हिन्दू भाईयों द्वारा शायद ही कोई कहीं ऐसा कार्य होगा, जहां हम जैनियों के दिल दुख सकें! इस आश्वासन के लिए सारी जैन समाज "हिन्दु धर्म महामंडल" की आभारी है और बैरिष्टर साहिब को इस सम्मान पर हार्दिक बधाई देती है। --उ० सं०

शुद्ध केसर

सर्व जैनी भाईयों को विदित हो कि हमारे यहां पन्द्रह वर्ष से केसर की कृषि होती है। जिस के सम्बन्ध में हमने एक किताब बोने आदि की विधि केसर के पौदे के चित्र सहित प्रकाशित की है। इस ओर हमारी केसर शुद्ध व पवित्र होने के कारण अधिकता से लोग सेवन करते हैं। मूल्य ३॥) फी तोला है।

थोक खरीदार को कुछ रियायत हो सकती है। जवाब के लिए टिकट आना चाहिये !

पता—मथधविहारीलाल मैनेजर औषधालय, साहू कुन्जबिहारीलाल जमींदार कुन्दरकी (मुरादाबाद)

—श्री जैनकुमार सभा की ओर से श्री राजकुमार जी आगरे की पाठशालाओं के इन्सपेक्टर नियत हुए हैं। आप दिलचस्पी के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्नति होने की आशा है।

अगरे की म्युनिस्पलटी ने उक्त सभा को १२) रु० मासिक देना स्वीकार किया है।

सभा में जैन धर्म शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों की बड़ी कमी है। आशा है उदार महानुभाव शास्त्र स्वाध्याय के लिये पुस्तकों का दान करेंगे।

हजारी लाल जैन बी० ए० मन्त्री।

—पार्श्वनाथ दि० जैन पाठशाला अहिच्छत्र के समीपवर्ती राम नगर ग्राम में जैन धर्म का भूले हुये भाइयों में पुनः जैन धर्म प्रचार करने के हेतु खोली गई है। जिसका विज्ञापन अलग भी बांटा गया है। पाठशाला का कार्य्य बहुत अच्छा चल रहा है २१ विद्यार्थी धर्म शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मन्दिर जी में पूजन भी करते हैं। पाठशाला में दो अध्यापक हैं। ७ विद्यार्थियों को भोजन व्यय भी दिया जाता है पाठशाला का व्यय १२१) मासिक है, भाइयों को सहायता देनी चाहिये।

शोक—श्रीमान गांधी जैचन्द दोहद का स्वर्ग वास होगया। भगवान से प्रर्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले मृत्यु समय उनके पुत्र गांधी सूरजमल जैचन्द जी ने २) वीर को प्रदान किये।

महासभा—सम्बन्धी मुकद्दमे की तारीख १० है। पुराने महामन्त्री जी ने सब कागजात शेड्याल के कोर्ट में दाखिल कर दिए हैं। अब देखिये क्या होता है? कोठारी जी ने एक और मानहानि का मुकद्दमा हिन्दी जैन गजट पर दायर किया है। वृथा परिणामों को संक्लेशित करने का ऐसा ही कटु परिणाम होता है! खैर!

—दान वीरों का दान और जीर्णोद्धार कलकत्ता निवासी धर्मात्मा परम सज्जन श्रीमान सेठ हजारीमल जी जमनादास जी ए० श्रीमान् सेठ सेढ़ूमल जी दयाचन्द्र जी साहब की तरफ से श्री दि० जैन मन्दिर जी देवलदान का जीर्णोद्धार प्राचीन श्रावकोद्धारिणी सभा द्वारा हो गया है। यह मन्दिर करीब २००० वर्ष प्राचीन बहुत विशाल है। जीर्णोद्धार में करीब १०००) एक हजार रुपया खर्च हुआ है। हम उक्त दानी महाशयों को कोटिशः धन्यवाद देते हैं और श्री जिनेन्द्र देव से प्रार्थना करते हैं कि आपकी निर्मल बुद्धि सदैव इसी प्रकार धर्म कार्यों में लगी रहे। जिससे जैन धर्म और जैन समाज का उद्धार हो।

सुदर्शन जैन-देवलदान
पो० पालकुम (आमभूमि)

आवश्यकता

एक अग्रवाल डाक्टर साहब की शादी के लिये एक कन्या की ज़रूरत है! जो जैन मत की हो, वा वैष्णव मत की हो! डाक्टर साहब का गोत्र बंसल हम, आमदनी तन्दुरुस्ती, बहुत ही अच्छी है! उम्र १३ साल से कम न हो।

पता—राममोहनलाल बी० ए० 'रज्जा मेडिकल' मुरादाबाद।

—अहार राजपूताने के उदयपुर राज्य का विध्वस्त नगर है। यह उदयपुर नगर से ३ मील पूर्व पड़ता है। कहते हैं आशादित्य ने पुरातन राजधानी तम्बा नगरी के स्थान में इसे प्रतिष्ठित किया था। उज्जैन हाथ आने से पहिले विक्रमादित्य के तुवार पूर्व पुरुष तम्बानगरी में ही निवास करते रहे, जिसका नाम बिगड़ कर पहले आनन्दपुर और पीछे अहार हुआ। इस स्थान के पूर्व ओर कितने ही पुराने के निशान मिलते हैं जिन्हें 'धलकोट' कहते हैं। धलकोट में पत्थर की तराशी हुई चीजें मट्टी के बरतन और सिक्के हाथ लग जाते हैं। कुछ बहुत पुराने जैनमन्दिरों का आज भी पता चलता है। जिनका मसाला इससे अधिक पुराने गिरे मन्दिरों से लिया गया है। भूमि चैत्यों और मन्दिरों के टूटे पत्थर से भरी, जो रानाओं की छतरी बनाने में लगा है। —हिन्दी विश्वकोष

सं० नोट:—उदयपुर अथवा निकट के किसी विद्वान पाठक को इस स्थान पर जाकर खोज करना चाहिए। तथा अपनी रिपोर्ट हमें भेजना चाहिए। यदि सिक्के मिल सकें तो वह भी भेजना चाहिए। इससे इतिहास पर प्रकाश पड़ेगा।

—उ० सं०

सावधान! नई खुशखबरी!! सावधान!!!

चांदी के कारीगरों ने मंदी के कारण मजदूरी घटादी

=) भरी मजदूरी नक्काशीदार फैंशी काम जैसे वेदी, नालकी, सिंहासन चंवर, छत्र आदि

)॥। भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वगैरह २

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सच्चाई की परीक्षा कर देखिये

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिर जी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर, सिंहासन, वेदी, नालकी, अष्टमंगलद्रव्य, अष्टप्रातिहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढे हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर कलश, कलशी जरदोजी का सामान जैसे चंदोवा, परदा, अछार, वन्दनवार इत्यादि।

सीताराम लहरीप्रसाद

मालिक—'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी

हमारे अन्य कार्य।

हमारे यहां बनारसी साड़ियां, साफे दुपट्टे, किनखाब, पोत के थान, ईसकाफ, काशीसिल्क के थान, दावनी, गोटा, पट्टा, पुरबी साड़ी, टकुवा वगैरह।

जातिसेवक—

सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस

—सराय (जि० मैनपुरी) वाली जैन विधवा जो मुसलमान होगई है और जिसके समाचार वीर के गत अंकोंमें प्रकाशित होचुके हैं वहीं पर है। उस को वहाँ से १०) भी मिलगये। खूब ताजिये मनाये। उसकी दोनों लड़कियों को उनका मामा मैनपुरी लेगया है। रामदेवी बाई जी ने उनको लेने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु मैनपुरी पञ्चायत ने उनको नहीं जाने दिया। अब सुना जाता है कि वह उन मासूम कन्याओं के विवाह जल्दी ही करके उनके जीवन नष्ट कर डालेंगे। घोर अन्याय है!

देश

—अलीगँज ज़िला एटा में मुहर्रम सानंद हो गई, यद्यपि मुसलमान भाइयों ने वृथा हिन्दुओं के दिल दुखाने के प्रयत्न किए! नई बनती हुई मठिया पर गोश्त आदि मलिन पदार्थ फेंके गए! इन नीच बातों के करने में हम नहीं समझते दीन और दुनियां की क्या भलाई समझी जाती है? इसी तरह मुहर्रम के रोज पहले अलम निकालते हुए जैन मन्दिर के सामने अधिक देर तक हद दर्जे का मातम किया गया। हमारे एक दो मुसल-मान भाई बेहोश हो गए! जैनियों को इस में आपत्ति एक तरह से न भी हो क्योंकि वह अपने शांत स्वभाव वश इस प्रतिस्पर्द्धक कार्य में भी यही समझ लेते हैं कि जैनायतन में प्रत्येक प्राणी को फरियाद करने का अवसर प्राप्त है, परन्तु लोकल अधिकारीवर्ग को अवश्य ही इस अनोखे कृत्य पर ध्यान देना चाहिए। मुसलमान भाइयों को अपने हिन्दू पड़ोसियों के साथ कम से कम शरियत के निम्न शब्दों को ध्यान में रखकर बर्ताव करना चाहिए पैगम्बर साहब कहते हैं:-

पवित्र भादों मास में मूल्य घटा दिया

चातुर्मास के अमूल्य धर्म करने के समय में स्वाध्याय व ज्ञान प्रभावना कीजिये

(१) श्रावकधर्मदर्पण पृष्ठ ४५०, मूल्य सजिल्द ॥-) १२ का ६।)
(२) जैन धर्म के विषयमें अजैन विद्वानों की सम्मतियां पृष्ठ ६४, मूल्य -) २५ का १॥)
(३) नित्य नियम नित्य समदल पृष्ठ ३२, मूल्य)॥। २५ का १)
(४) जैन दर्शन जैन धर्म पृष्ठ १६ मूल्य)॥ २५ का ॥-)
(५) कर्त्तव्य कौमुदी पृष्ठ ५५० मूल्य सजिल्द १॥।)
(६) उपदेश रत्न कोष पृष्ठ ५० मूल्य =)॥ १५ का २)
(७) जम्बु स्वामी चरित्र पृष्ठ ६० मूल्य ।≤)॥ १ का ४)
(८) सुदर्शन सेठ चरित्र पृष्ठ ४० मूल्य ≤) ६ का १)
(९) जैन प्रश्नोत्तर कुसुमावली पृष्ठ १२० मू० ।≈) ५ का २)
(१०) श्राविका धर्म दर्पण पृष्ठ ६४ मूल्य -)॥ २५ का २)
(११) मूल्यवान मोती (विधवा सती का उत्कृष्ट चरित्र) मूल्य ≥)॥ २० का ३॥।)

जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, ब्यावर (राजपूताना)

"यह मत कहो कि लोग हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी उनके साथ करेंगे और यदि वह हमें सतायेंगे तो हम भी सतायेंगे; बल्कि यह अक़ीदा कर लो कि अगर लोग हमारे साथ भलाई करेंगे तो हम भी उनके साथ भलाई करेंगे अगर वह हमें सतायेंगे तो हम छोड़कर उनको नहीं सतायेंगे" (The Prophet. L. 147 Inoted in the Ethics of koran Page 129)

—व्यापार समाचार.गत सप्ताह में विलायत से सोना २०६००० गिनी का आने वाला था और चांदी १२००० पौंड (गिनी की) आधा सकर १४०००० बोरे आने वाली थी।

—हिंदू मुसलिम आपसी अनैक्य फैलाने के अपराध में लाहौर के 'गुरुघंटाल' के सम्पादक को ६ मास की सज़ा और १००) जुर्माना हुए हैं। हैदराबाद सिंध के "मुसलमान" के एडीटर को भी इसी अपराध में १००) जुर्माना किए गए हैं।

विदेश

—केलाग के एक पादड़ी ने अपने दो गलों को मरने पर ब्रिटिश मेडीकल एसोसियेशन को २५०० गिनी में बेच दिया है।

—एक साथ चार बच्चे 'डेली हेरल्ड' का कथन है कि वरलिङ्गटन स्ट्रीट मेरी डाक्स की मिसेज़ हिगिन्स ने एक साथ चार बच्चों को जना है। सब सकुशल हैं। बलिहारी!

छपगया! श्री पद्मपुराण व हरिवंश पुराण नाटक (ड्रामा) छपगया!!

श्री पद्मपुराण का नाटक पांच परिच्छेदों में प्रथम स्वयम्बरादर्श, वनावास मार्ग, सीता हरण, लंका-गमन, चक्री दमन, रसीली सुरीली तर्ज नसर नज़्म,२६४ पृष्ठ बड़ा साइज़ पांचों की एक जिल्द। मूल्य १॥)७० हरिवंश, पाण्डव पुराण दोनों शास्त्रों का सारांश लेकर प्रथम गोकुलभवन परिच्छेद मूल्य केवल ॥) शील कथा नाटक मूल्य ।≈) विक्रेताओं को कमीशन भी दिया जायगा।

पता:—सेवक जैन ड्रामा मु० महल का पा० लावड़ जिला मेरठ

आवश्यकता

श्री लुहरीसेन दि०जैन सभा के लिये एक उपदेशक की आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार। अपनी योग्यता व किस वेतन पर यह कार्य करेंगे इत्यादि विस्तार पूर्वक पत्र लिखने पर ही उत्तर दिया जावेगा।

पता—कपूरचन्द मंत्री श्री०लु०दि०जैन सभा पोस्ट-केवलारी जिला-सिवनी B. N. R.

सूचना-पृष्ठ ५२७ से ५३४ के स्थान पर भूल से ५५७ से ५६४ लग गये हैं, परन्तु विषय सिलसिले से है।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	दुर्लभ पर्याय (कविता)	५१९	६	सम्पादकीय टिप्पणियां	५२८
२	प्रथमानुयोग की साक्षी	५२०	७	दो प्राणियों की रक्षा होगई ...	५३४
३	स्वदेश प्रेम (कविता) ...	५२२	८	स्वदेश द्वेषी	५३५
४	महिला महिमा	५२३	९	परिषद् समाचार	५३६
५	एक वयोवृद्ध महानुभाव का विचारणीय पत्र	५२६	१०	संसार दिग्दर्शन	५३८

देना वा बालक को युवा पुत्री देने के विषय यह पद के परलोक जाने की तय्यारी हो रही है, मगर इसका प्रचार न मिटा, वरना दिनों दिन दूनी बढ़ती हो रही है। इस विषय में मेरी राय ये है कि जो विधवा आश्रम कई जगह स्थापित किये गये हैं, ऐसी विधवा के वास्ते नहीं हैं क्यों कि इस से तो ऐसा होगा कि (बे सरम की नाक कटी एक बीता रोज़ बढ़ी) सो विधवा आश्रमके सहारे से निर्लज्ज पुरुषों ने और भी वीरता धारण की है कि आज हमारी हुन्डी भँजती है सो भँजा लेवें। अगर बेटी विधवा हो जायगी तो कोई हर्ज नहीं विधवा आश्रम भेज दी जावेगी। इसी उम्मेद से अपना नोट भँजा लेते हैं (मेरी घानी उतर जाय तेली के बैल का बघरा खाय) यही मसल है। जो विधवा आश्रम खोले गये हैं उनमें उन विधवाओं को भेजना उचित है जो युवा पुत्री वा पुत्र दोनों की उमर देख सनातन शादी की गई हो और उनकी जोड़ी फूटने से कर्मों के अनुसार वह अनिष्ट समझा जाता है। ऐसी अवस्था में विधवा आश्रम कामयाब होता है कि पुत्री अपने व्रत संयम के साथ कर्मों की निरजरा करेगी और खुद अपने दिल में समझेगी कि इसमें न तो मेरे माता पिता का दोष और न मेरे सासु ससुरका दोष यह मेरी क़िस्मत का ही दोष है !

और जो मृतक पुरुष की शादी की जाती है तथा बालक के साथ तथा पल्टा से वा दो सौत बनना (ऐसी मुसीबत पुत्री को समझ) जानबूझ कर ब्याही जावे तो पुत्री अगर कोई अनीत काम कर गुजरे तो उस का दोष न समझना चाहिये। वरना वह पुत्री अपने माता पिता वा सास ससुर के मकानके सामने मकान लेकर रहे और दोतोला कोलतार लेकर डामर तेल के साथ घोटे और अपने माता पिता तथा साससुर के चेहरे पर पोते और उन का चेहरा चमकीला चमकदार बनावे जैसे चोर चोरी रात को करने के कारण कि कोई मुझे पहिचान न सके मगर इन साहबों को दिनमान में पहचान करनेका यत्न शुभ है (२) इस के सिवा उन साहबों को जो अनमेल विवाह करें करावें बिरादर वो मंदिर से दूर करने की कोशिश हो, क्योंकि ये पुरुष इतने पापों के भागी होते हैं सो लिखते हैं:—प्रथम बेटी बेचना, दूसरे बेटी को व्यभिचार सिखाना तीसरे बालघात कराना, चौथे देव धर्म तथा बिरादरी को उस के हाथ भोजन पान कराना. पांचमें पुत्री का धर्म खडित होना, छटे में जैन कुल की वृद्धि का नाश, सातवें जैन जाति की निन्दा, आठवें जो उस पुत्री से संतान हुई तो वह भी वैसी होगी कि "जैसे उदई तैसे भान उन के चुटै न उन के कान" यह मसल है और फिर वह सन्तान होश्यार होने पर जैनी के पुत्र बनेंगे और जन ज्योनार से अपने साथ भोजन करेंगे। सो हे जैन धर्म के धारी पुरुषों, कितने शोक की बात है जरा इसपर गौर कीजिये। मैं बड़ा सत्यवादी हूं मगर मेरे साथ जो पुरुष बेई-मानी करेगा तो उसके साथ मुझे भी करनी पड़ेगी। क्योंकि ऐसा न करने से काम नहीं चलता इस से जो पुत्री अनीत कार्य कर गुजरेगी तो वह सिखा-यन माता पिता वा सासुससुरका ही कहा जायगा, क्योंकि पुत्री का तो उन्होंने मांस, हड्डी, चमड़ा और लाज शरम दीन ईमान सर्वस्व बिक्री कर अपना खज़ाना भर लिया-इससे पुत्री का कोई

दोष नहीं-अगर ऐसी पुत्री नीच कौम से बिगड़ी और सन्तान पैदा हुई तो बकरा मुर्गी काटने वाले जैन उदर से पैदा होकर दीनमुहम्मद नामसे पुकारे जावेंगे और उनकी जाति की वृद्धि होगी जैन कुल की समाप्ति होगी। उन लोगों को धिक्कार है! ऐसे पिशाच पुरुष किसी भी जातिमें शामिल नहीं हो सक्ते। यह कन्याविक्रेता इतने नीच हैं कि न हिन्दू न मुसलमीन न ईसाई, इत्यादि किसी भी कौम से नहीं मिल सके। 　　कन्हैया लाल

छोटेलाल जैन

अगदलपुर स्टेट, बस्तर

नोट—हमारे वयोवृद्ध महोदय का लिखना सर्वथा उपयुक्त है। पत्रोंमें लेख रहने और प्रस्तावों के पास करने से आजतक महा अनर्थों के कारण वृद्धविवाह, बालविवाह, कन्याविक्रय अनमेल विवाह नष्ट नहीं हुए हैं: क्योंकि समाज ने उनके प्रति मुलायमियत की दृष्टि रक्खी है। इन को मेटने के लिए सहज उपाय यही है, जैसे कि पत्र में बताया गया है, कि ऐसे नीच लोगों का जातीय बहिष्कार किया जाय। परन्तु इस में सावधानी रखना पड़ेगी कि कहीं दोधड़े न होजांय अथवा इस का परिणाम कहीं उल्टा न निकले। इस लिए उत्तम यह है कि ऐसे लोगों को राज्य की ओर से दण्ड दिलाये जावें, जिससे जजरित सामाजिक अवस्था में अनिष्ट खड़ा न हो! और यह कुरीतियां नष्ट होजावें। साथ ही पतित बहिनों को आश्रम में ही स्थान मिलना चाहिये क्योंकि बहुधा इन विचारियों को बाहर कहीं आश्रय मिलना कठिन है। 　　—उ० सं०

१—वीरों! उठो कमर कसो, फैलादो जैन धर्म जगत् में।

अज्ञान तिमिर व्याप्ति मपाकृत्य यथा यथम्।
जिन शासन माहात्म्य प्रकाशः स्यात्प्रभावना॥

भावार्थ—श्री समन्त भद्राचार्य द्वितीय शताब्दी के परम गम्भीर योगी और तार्किक यह उपदेश करते हैं कि श्रावकों व श्राविकाओं का यह कर्तव्य है कि यदि उनमें जैन धर्म के तत्वों पर श्रद्धा है तो वे इस जैन धर्म के माहात्म्य को जगत् व्यापी करें और जिस तरह बने उस तरह जगत् में फैले हुए अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करें।

प्यारे वीरो! ऐसी उदार शिक्षा जैनाचार्यों की होते हुए भी आजकल जैन लोग जैनधर्म को अपनी मौरूसी सम्पत्ति समझे हुए हैं न तो आप पालते न दूसरों को जैनी बनाकर उनके साथ भाईपने का या एकपनेका व्यवहार करते हैं, कुलाभिमान व व्यर्थ के अहंकार से ग्रसित हो जो जैन नहीं है उनको

घृणा की दृष्टि से देखते हैं, उन पर वह दया नहीं करते हैं कि इनको भी हम संसार सागर से डूबते हुए बचाकर उद्धार करें। एक जीव का मिथ्यात्व छुड़ाना परम धर्म है इसलिये परमधिकारी मनोवेग विद्याधर ने पवन वेग को हर तरह समझा कर व बहुत परिश्रम करके जैनी बनाया था। यह कथा श्री अमिति गति कृत धर्म परीक्षा में अच्छी तरह बताई गई है। यह अवसर बहुत अनुकूल है। यदि जैन लोग उदारता के साथ चलने लगें और धड़ाधड़ अजैनों को जैनी बनाने लगें तो इस पवित्र जैनधर्म के सिद्धान्त से कोटानुकोट जीवों का कल्याण हो। श्री जिनसेनाचार्य ने साफ तौर से अपने महा-पुराणमें दिखला दिया है कि कोई भी अजैन जो जैन हो वह यदि श्रावक के व्रतों को पालने लगे व कम से कम मूल गुण धारण करलें, दर्शन पूजन स्वाध्याय सामायिक जाप का अभ्यासी होजावे तो उसको वर्णलाभ देकर अपने वर्ण के समान करलो, जैसी वो आजीविका करता हो व जैसा उसका व्यवहार हो उसके अनुकूल उसका वर्ण स्थापित करदो, यदि कोई व्यापार कार्य्य व लेखन विद्या करता है तो वैश्य वर्ण में शामिल करो, यदि क्षत्रि-यत्व का काम करता हो तो क्षत्री वर्ण में, यदि ब्राह्मणत्व हो तो ब्राह्मण वर्ण में, यदि शिल्पादि व अन्य दासकर्म से आजिविका हो तो उसे शूद्र वर्ण में शामिल करो।

जब उसका वर्ण नियत कर लिया गया तब फिर एक वर्ण के पुराने जैनी उस नए वर्ण वाले जैन के साथ खान पान करनेमें व बेटी लेने देने में कभी भी इनकार न करो।

यदि हे वीरो! तुम इस आज्ञाके अनुसार चलो और दस बीस वीर अजैनों को जैनी बनाने की प्रतिज्ञा करके निकल खड़े हो तो बहुतसी भारत की क्षत्री, वैश्य व ब्राह्मण जातियां व अनेक शूद्र जातियां व विदेश की जनता जिन में कोई नियत वर्ण नहीं हैं सब जैन वर्ण से दीक्षित हो सकती हैं और आपकी संख्या को बढ़ाकर आपका महत्व जगत में स्थापित कर सकती हैं।

इस समय इंगलेंड में केवल आठ ही अंग्रेज हैं जो जैन धर्म पालते हैं। यह भाई जगमन्दर लाल जैन इन्दौर व पण्डित लालन बाबई की चेष्टा का फल है। इनके सिवाय किन्हीं भी जैनियों ने इंग-लैंडमें जाकर उद्यम नहीं किया—यदि वीर भगवान के सच्चे भक्त कमर कसें और धर्मप्रचार का आंदो-लन उठावें तो क्या सैकड़ों व हजारों अंग्रेज जैन धर्मी नहीं होसकते हैं। वास्तव में हम ऐसे कृपण हैं कि हम इस पवित्र स्याद्वादरूप अनेकान्तिक धर्म को जो सच्चे खोजी को परम संतोष देने वाला है व जिसको विद्वान हर्मन जैकोबी ने षट् मतों को अपूर्ण कहते हुए पूर्ण सिद्ध किया था जगत्में प्रचार करने की कुछ भी चेष्टा नहीं करते हैं।

प्यारे वीरो! यदि आप को श्री वीर भगवान का सच्चा अनुयायीपना प्रगट करना है तो आप कमर कसो और सर्व प्रकार के स्वार्थों का त्याग कर अपना जीवन परम प्रसिद्ध धर्म रक्षक स्वामी अकलङ्क निकलङ्क की भांति अर्पण कर दो। कष्ट सहो परन्तु लाखों मानवों को मिथ्यात्व की कीचड़ से निकाल कर उनका उद्धार करो।

धर्मोद्धारक वीरों को जैन सिद्धान्त के साथ वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश करने की कली स्वदेशी तथा परदेशी भाषा में आना चाहिये। जैसा द्रव्य,

क्षेत्र, काल भाव हो वैसा ढंग बिना धारण किये उस काल के जन समूह ध्यान नहीं देते हैं। वीरों की सृष्टि के साथ २ लाखों पुस्तकों का प्रकाशन स्वदेशी व परदेशी अनेक भाषाओं में होना चाहिये जो उदारता के साथ वीर व्याख्यान दाताओं के द्वारा अपने भाषण के पीछे वितरण की जा सकें।

वीर के अनुयायियों का यह भी कर्तव्य है कि वे भारतवर्ष के उन जिलों में जहां जंगली लोग रहते हैं अनाथालय,विद्यालय स्थापित करें। दीन दुःखी जंगली लोगोंके बालक व बालिकाओं को शिक्षा सिखावें, जैन धर्म बतावें व जैन धर्म का आचरण करा कर उनको जैनी बनालें। जिस ढंग से ईसाई लोग लाखों भारत वासियों को ईसाई बनाते हैं उसी ढंग से हम जैनियों को धर्म का प्रचार करना चाहिये।

आवश्यकता है जीवन अर्पण करने वाले धर्म प्रचारक वीरों की और धन से अच्छी तरह मदद देने वाले धन पात्रों की, जो अपनी लाखों की सम्पत्ति इस पवित्र धर्म प्रभावना के लिये अर्पण करदें इस सच्ची व अज्ञान नाशिनी प्रभावना में धन लगाना, करोड़ों बिम्ब प्रतिष्ठा व मन्दिर प्रतिष्ठा से अधिक लाभकारी है।

क्या इस पवित्र भाद्र मास के पवित्र दिनों में हमारे भाई इस प्रभावना की अमली सूरत की नींव डालने की तैयारी करेंगे।

२-परम पवित्र दशलाक्षणी धर्म कार्य में लाओ-करके दिखाओ

प्यारे वीरों! धर्म आत्मा का स्वभाव है और वह मात्र अनुभव गोचर है वचनों से कहा नहीं जा सकता, यदि कहने का प्रयास करें तो कह सकते हैं कि सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्रमयी आत्मा का अनुभव करना धर्म है अन्यथा आत्मा को सर्व अनात्माओंसे:सर्व परकृत रागादि विभावों से तथा अन्य आत्माओं की सत्ता से भिन्न पूर्ण-ज्ञान, दर्शन, वीर्य, आनन्द, बिना रागादि से भरा हुआ शुद्ध निर्मल स्फटिक के समान जान कर श्रद्धान करना और इसी श्रद्धा पूर्ण ज्ञान के ध्यान में तन्मय हो जाना धर्म है। इसी धर्म को और भी विस्तार से करने का उद्यम करेंगे तो कह सकते हैं कि यह धर्म दशलक्षणमयी है, जिसका भाव यह है कि जहां आत्मा मे क्रोध का अभाव है वहां प्रथम उत्तम क्षमा धर्म है, जहां मान का अभाव है वहां उत्तम मार्दव धर्म है, जहां मायाका अभाव है वहां उत्तम आर्जव धर्म है, जहां लोभ का अभाव है वहां उत्तम शौच धर्म है। जहां असत्य नहीं है यथार्थ वस्तु स्वरूप का भान है वहां उत्तम सत्य धर्म है। जहां इन्द्रियों का विषय व्यापार नहीं है तथा त्रस स्थावर प्राणियोंके प्राणों के कष्ट देने का रंच मात्र भाव नहीं है वहां उत्तम संयम है। जहां आत्मा सर्व पर पदार्थों से राग छोड़ कर आप आप में तप रहा है वहां उत्तम तप है। जहां आत्मा आप को आप ही अनुभव से उत्पन्न अमृत रस का दान कर रहा है और सर्व परविकारों का त्यागी है वहां उत्तम त्याग है। जहां आत्मा ने अपने ज्ञानानन्द धन को सम्हाल कर पर धन से ममता हटाली है वहां उत्तम आकिञ्चन्य है,जहां यह ब्रह्म स्वरूप आत्मा सर्व जगत् की काम वास-नाओं को जो ब्रह्मभाव की जागृति में घातक है त्याग कर अपने ही ब्रह्मभाव में रमण करता है वहां

उत्तम ब्रह्मचर्य है। इन दश लाक्षणी धर्म को पूर्णपने साधु गण साधते हैं, तो भी एक देश श्रावकों को साधना चाहिये। इन दिनों में इस धर्म का पूजन बड़े भाव से करना चाहिये और अपने व्यवहार में इन दस भावों को लाकर अपने चारित्र में इन दस रत्नों को जड़कर अपनी शोभा बनानी चाहिये।

क्रोध न करके शांति रखिये। किसी से दोषों के हो जाने पर भी उस पर क्षमा कीजिये। धर्म स्थानों में कषाय अग्नि को बिलकुल जलने न दीजिये। मान न करके विनय भाव रखिये बड़े छोटों का सब का यथायोग्य आदर कीजिये। कपट को छोड़कर सत्य के साथ व्यवहार कीजिये, लोभ त्याग कर १० दिन व्यापार बन्द रख धर्म चिन्ता में समय बिताइये। अप्रशस्त,असभ्य,असत्य कठोर, कर्कश वचनों का त्याग कीजिये, मिष्ठ हितकारी वचन बोलिये, मन इन्द्रियों को वश रख शुद्ध भोजन पान कीजिये। जीव दया के साथ वर्तन कीजिये। धर्म कार्य निमित्त चलिये, शेष आना जाना त्याग दीजिये, नियम व प्रतिज्ञा में रह कर बिताइये, उपवास, बेला, तेला, एकासन यथायोग्य करके तप व ध्यान की शक्ति बढ़ाइये। सामायिक में अधिक समय बिताइये। तीनों काल सामायिक कीजिये। लोभ त्याग सुन्दर द्रव्यों से श्री जिनेन्द्र का पूजन कीजिये, पूजन करके निर्माल्य द्रव्य को देने लेने का व लोभ साधन का निमित्त न बना कर अग्नि में भस्म कर दीजिये तथा खूब द्रव्य को चार प्रकार दान में रख्खा कीजिये।

भारतवर्षीय दि० जैन परिषद् धर्म जागृति को बहुत प्रयत्न करना विचार रही है। परन्तु द्रव्य के बिना कुछ नहीं कर सक्ती है इसलिये इसको अच्छी तरह मदद भेजिये जिसमें वीर पत्र में घाटा न रहे, उपदेशकों का भ्रमण जारी रहे। धर्म प्रचारक का कार्य हो। तथा अन्य जो काशी, मोरना जैपुर, ब्यावर, बड़नगर, उदयपुर, भिंड, सागर, देहली, कुंथलगिरि आदि में विद्यालय ब्रह्मचर्याश्रम अनाथालय व औषधालय आदि हैं व श्राविकाश्रम आदि हैं उनमें सहायता भेजिये। अपने यहां पाठशाला कन्याशाला स्थापित कीजिये। शुद्ध औषधि के लिये औषधालय खोलिये। मोह ममता घटा कर रहिये और सर्वप्रकार की सेवन त्याग कर ब्रह्मचर्य पालिये। अन्त में विचारिये कि जैनी क्यों मर रहे हैं। जिन २ कुरीतियों के कारण, अधिक व्यय के कारण जैन जाति की क्षति हो रही है उन कारणों को मिटाइये। जिन २ योग्य उपायों से जैन संख्या बढ़े और जैन धर्म के अधिक पालने वाले हों उन उन साधनों को जारी कीजिये।

वीरों! कुछ असली काम करके अपनी रिपोर्ट वीर में प्रकाशनार्थ भेजिये, वीर वाणी के प्रचारार्थ स्वाध्याय का नियम कराइये और वीर के व परिषद् के ग्राहक व सभासद् बढ़ाइये अमल बिना बातें बनाना निष्फल है। —सम्पादक

१—धर्म कहां है?

श्री उपदेश सिद्धान्त रत्न माला में बतलाया गया है कि:—

लोयपवाहे सकुल कम्मंमि महोइ मूढ धम्मुत्ति।
तामिच्छाणविधम्मोधकाई अहगा परिवाडी॥ ६॥

अर्थात्—'हे मूढ़! जो लोक प्रवाह-भेडा-चाल-लीक

चीटने अर्थात् अज्ञानी जीवों कर माने हुए आचरण में तथा अपने कुल क्रम में ही धर्म होय तो म्लेच्छों के कुल में चली आई हिंसा भी धर्म कहलावे। तब फिर अधर्म की परिपाटी कौनसी होगी ! इसलिये लोकप्रवाह तथा कुल क्रम में धर्म नहीं है। धर्म तो जिनभाषित वीतराग भावरूप है। सो यदि अपने कुल में सच्चा जैन धर्म भी चला आया हो और उसको कुल क्रम जान कर सेवन करें तो भी विशेष फल का दाता नहीं है। अतएव जिनवाणी के अनुसार परीक्षा पूर्वक निर्णय करके धर्म को धारण करना चाहिये।'

आज इस शास्त्रवाक्य का पालन कितने जैनी करते हैं, यह बतलाना कठिन है। जहांतक हमारी दृष्टि जाती है,हम देखते हैं कि आजकल हमारे भाई उसही बात को धर्म समझ रहे हैं जो उनको जिस तिस रूप में अपने पुरखाओंसे मिलीहै। दूसरे शब्दों में कुल क्रम ही धर्म समझा जाने लगा है। परन्तु ज़रा विचारिये तो सही कि मुसलमानी आततायियों के ज़माने से समाज में कुसम्प का बीज कैसा बोया गया है कि आजतक हम तेरातीन बने हुए हैं। आजतक हमने अन्य जातियों के समान उन्नति नहीं करपाई है ! तिसपर हमारे पूर्वजों पर कितने विकट संकट राज्य-पलटन के समय में हो गुज़रे हैं यह छिपी हुई बात नहीं है ! उस हलचलके ज़माने में यह मुश्किल था कि वास्तविक धर्म ज्ञान का परिचय वह आप स्वयं एवं अपनी सन्तान को प्राप्त करा सके जब हम जानते हैं कि तब साधारण शिक्षा का भी प्रबन्ध समुचित न था। ऐसी दशा में जो धर्म आज तब से प्रवृत्ति रूप में चला आरहा है वह कैसे वास्तविक धर्म कहा जा सकता है ? यही कारण है कि आचार्य प्रकृति मार्ग को धर्म स्वीकार नहीं करते। अतएव आजकल हमको वास्तविक धर्म लाभ के लिए स्वयं धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय करना आवश्यक है। धर्म का पालन तब ही होगा जब हम धार्मिक क्रियाओं की असलियत से वाकिफ होंगे। आजकल भाद्र मास के पवित्र दिन हैं। इन को आकुलता रहित हो बिताइए। शान्ति से धर्म ग्रंथों का स्वाध्याय कीजिए और उसकी तुलना अपने दैनिक जीवन से कीजिए ! मिलाइए कि वह उस ही के मुताबिक है या नहीं ! आज सामाजिक परिस्थिति कितनी भयानक हो रही है। उस को सुधारने की दृष्टि से आदर्श-पुरुषों के चरित्रों को पढ़िए। आप देखेंगे कि जैन जाति का प्रत्येक व्यक्ति अपनी पुत्र-पुत्री को पहिले धर्म और लौकिक शिक्षा देता था। और उनके युवान् होने पर उनकी किसी भी योग्य जैनी वरके साथ विवाह करता था फिर वे समुचित रीति से गृहस्थ धर्म पालन करके वैराग्य वृत्तिको धारण कर स्वपर कल्याणकर्ता बनते थे। आजभी ज़रूरत है कि हम पुत्र-पुत्रियों का विवाह युवा होने पर करें ! कन्या को १४ वर्ष तक किसी भी योग्य अध्यापिका द्वारा उच्च धार्मिक एवं लौकिक शिक्षा दिलवावें। उसी तरह पुत्रों को भी १९ वर्ष तक खूब विद्या अध्ययन करने दो। जब दोनों पूर्ण युवान् एवं संसार ज्ञान से विज्ञ-खासे हृष्ट पुष्ट हो जावें तब उनकी शादी हो। वर कन्या का जोड़ा समग्र जैनियों में ढूंढकर अच्छा मिलाइये। जाति के बाहर ढूंढने में कोई शास्त्र विरोध नहीं है। ऐसे ही दम्पति वास्तविक जैन गृहस्थ बन सकेंगे और उनसे आदर्श वीर संतान उत्पन्न होगी। जाति नेताओं को इसपर ध्यान देना आवश्यक है। साथ ही उन वृद्ध महानुभावों को जिनके संतान

मौजूद है और जो उनका कारभार संभाल रही है यह लाजमी है कि प्राचीन पद्धति के अनुसार उदासीनता वृत्ति को धारण कर आत्मकल्याण के साथ २ समाजोद्धारका कार्य करें। इन सब बातों का प्रचार तब ही हो जब अन्वेषक बनकर शास्त्रों का स्वाध्याय किया जाय! अतएव प्यारे पाठकों! इन पवित्र दिनों में शास्त्रों का स्वाध्याय अवश्य कीजिए। इस ही से आप को वास्तविक धर्म की प्राप्ति होगी। निष्पक्ष वक्ता गुरु आजकल विरले ही हैं। स्वयं आचार्य कहते हैं कि:-

गुरुणो भट्टा जायासद्दे थुणि ऊणलिंतिदाणाइं।
दुण्णिवि अमुणिअसारा दूसमसमयम्मिबुड्ढ ति॥३१॥

अर्थात्-"पंचमकाल विषै गुरु तो भाट हो गये जो दाताओं की स्तुति करदान लेते है। ऐसे दाता और दान लेने वाले दोनों ही जिनमत के रहस्य से अनभिज्ञ है संसार समुद्रमें डूबते हैं।" अतएव स्वाध्याय का नियम ले धर्म का वास्तविक स्वरूप समझिए। और आत्मकल्याण कीजिए।

२-कानपुरके जैनियोंके लिए स्वर्णावसर।

अब की साल राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का अधिवेशन कानपुर में दिसम्बरके अन्त में होगा। देशके कोने २ से देशप्रेमी सज्जन उपस्थित होंगे। इस विशद समुदाय में जैनियों की संख्या भी कम नहीं होगी! सब ही जातियों के प्रतिनिधि वहां उपस्थित होंगे और सबकी सभाएं भी अलग २ होंगी! उस समय यदि कोई जैन-कान्फरेन्स नहीं हुई तो जैनियों के अस्तित्व का पता भी किसी को नहीं होगा और जो जैनी वहां आयंगे वह अपने जैनत्वपने से उपेक्षा करेंगे। इस लिए कानपुर के भाइयों के लिए यह स्वर्ण अवसर है कि वह उस समय जैन-कान्फ्रेन्स करने का प्रबन्ध अभी से करलें! यह स्वर्ण अवसर चूकने लायक नहीं है। उत्तम हो यदि भा० दि० जैनपरिषद् का अधिवेशन उस समय किया जावे! लाला रूपचन्द जी एवं अन्य सज्जनों को ध्यान देना चाहिए।

३-वर्तमान परिस्थिति का सुधार आवश्यक है!

देश की वर्तमान परिस्थिति पर दृष्टि डालते ही हमें सर्वत्र अपना-अपना राग और अपनी डफ-लिया दिखलाई पड़ रही है। उधर प्राकृतिक कोप कि देशनेता बंधुवर दास विदा हो चुके हैं। उनके प्रति सच्चा मान तो यही था कि सब ही दलों के नेता कान्फ्रेंस में एकत्रित होकर देशोद्धार का कार्य करते! परन्तु दुःख है कि भारतसचिव की हुंकार को भी जब्त करके इस आवश्यकीय बात की ओर किसी भी नेता की रुचि नहीं चलती है। भारतोद्धार के लिए स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन के साथ २ अभ्यन्तर शुद्धि की भी आवश्यक्ता है। इसके लिए महात्मा जी का बताया हुआ प्रोग्राम ठीक है। चर्खा चलाने और खद्दर धारण करने से भारतीय हृदयोंमें स्वालम्बन और दृढ़ताका संचार एवं भीरु हिंसकभावों का संहार होता है। साथ ही पड़ोसियों में आपसी प्रेमका होना उन्नति के लिए परमावश्यक है। पड़ोसी को पड़ोसी की सहायता पड़ती ही है। हिंदू-मुसलमानोंको यहां साथ २ रहना है। इस लिए इस तरह मिलजुल कर रहना ही लाभप्रद है कि जिससे किसी को भी दिल न दुखे। आपसी विरोध का कारण कुछ भी नहीं है।

सिर्फ मिथ्या अभिमान है। कहीं मुसलमान भाई ऍंठ जाते हैं, तो कहीं हिन्दुओं की भी बन आती है। अभी अलीगढ़ में एक हिन्दू मंदिर बनने पर ख्वामख्वाह मुसलमान भाईयों ने रोड़ा अटकाया वहां पर जाहिरा किसी तरह की हानि हमारे मुसलमान भाइयों की नहीं है, परन्तु एक जिद ही तो ठहरी! आपस में मिल बैठ फैसला कर लेना पाप है! यही हालत करीब करीब सर्वत्र हो रही है। इन सबका सुगम उपाय यही है कि नेतागण मिल कर एक प्रोग्राम कार्य सिद्धि का बनालें, जिस में महात्मा जी का उपयोगी कार्य में आने काबिल भरा शामिल हो, और पुनः समग्र भारत में आम व्याख्यान द्वारा उसका प्रचार किया जाय! साधारण जनता जब देश संबंधी कुछ वार्ता नहीं सुनती है तो वह इस ओर से उदासीन होजाती है। अतएव नेताओं को मिलकर सर्वप्रथम वर्तमान परिस्थिति का सुधार करलेना चाहिए, जिससे महात्मा जी को कांग्रेस न छोड़ना पड़े और देश का पूर्ण नेतृत्व कांग्रेस को ही प्राप्त रहे। —उ० सं०

दो प्राणियों की रक्षा हो गई।

श्रीमती रामदेवी जी का अदम्य उत्साह।

'भवितव्यं यथा येन न तद्भवति चान्यथा।
नीयते तेन मार्गेण स्वयं वा तत्र गच्छति॥'

आचार्यों के महत वाक्य अन्यथा नहीं होसकते। जिसके भवितव्यमें जो होना होता है वह होकर ही रहता है। गताङ्क से पाठक जान चुके हैं कि सराय अगहत (एटा) की एक जैन विधवा मय अपनी दो अबोध कन्याओं के सामाजिक अत्याचारों के कारण धर्म से विचलित हो रही है। स्थिति करण अङ्ग के नाते उसकी रक्षा के प्रयत्न किए गये। दिल्ली महिलाश्रम की संचालिका श्रीमती रामदेवीजी ने उसके पास रहकर उसे बहुत समझाया। पंचों की ज्यादितियों का प्रतिकार कराने का भी उसे आश्वासन दिया! "परन्तु जिन दशा जिम होई–तिन मति तब राखी सोई।" बाई जी के अविरल प्रयत्नोंका कुछ भी असर न हुआ। लज्जा अवशेष जो रही थी-वह भी जाती दिखाई दी! यह निश्चय होगया कि मुसलमान इसको शीघ्र ही गायब कर देंगे। और इस की भ्रम बुद्धि के कारण कन्याओं के जीवन भी वृथा नष्ट हो जावेंगे। जिन बातों को उसने मंजूर किया था वह उनके खिलाफ चलने लगी। हठतः बाई जी को उसके पाससे प्रस्थान करना पड़ा! बाई जी मैनपुरी गईं और वहां से उसके भाई और ला० धर्मदास जी साहब रईस को लेकर अलीगढ़ जाती को गईं। जसवन्त नगर के ला० उल्फतराय जी प्रारम्भ से उनके साथ कर दिये गये थे। वहां से अनेकों कष्ट सहन कर जजसाहब से कन्याओं को लेने के लिए हुकुम लेकर एटा मुन्सफी से सरकारी सहायता ले और सब लोग सराय अगहत पहुंचे। एटा में ला० शोभाराम जी, बाबू खुशीराम जी जैन मुख्तार और बाबू देवीसहाय जी (अजैन) वकील प्रभृति सज्जनों ने विशेष सहायता प्रदान की, जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। सराय

जगत् प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चांदी के फूल भाव १) तोला सोने के चढ़े फूल भाव २) तोला

(सिर्फ चांदी या चांदी पर सोने का मुलम्मा करवा के बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व वेशी जितने तोले चांदी में तैयार हो सकता है उसकी विगत।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*दीपनवार	१००) से ४००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र ध्वज	७६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	×पञ्चमेरु	३०) से २००)
हैदुल	३००) से ४००)	*चँवर युग	७) से २५)	*अष्टमंगलद्रव्य	१००) से [illegible]००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रातिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२०० से ५००)	*चौकी	४१) से ३००)	*सोलहस्वपने	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १०००)	समोसरन	१००) से ३०००)	*×भामण्डल	२०) से १००)
सोंटा	५०) से ७५)				
*छतरी डंडी	३०) से ५०)	अढ़ाई द्वीपकी रचनाका नक्शा	१०) से ५००)	*कलश	५०) से ५००)
				तख्त चांदी के	२००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण।					
गन्धकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीपकी रचनाका मांडला	५००) से २०००)	बारहदरी	२५००) से ५०००)
वेदी	८००) से ४०००)			*पूजन के बरतन	२००) से ५००)

यह काम वाजिब पाइस लेकर बना देते हैं। मन्दिरों के काम में १०) सैकड़ा की पाइस लेते हैं। × इस चिन्ह की चीजें तैयार भी रहती हैं। * ये चीजें तांबे की जगह पर सोने का मुलम्मा होता है।

पता—(१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, सोनी कटरा, बनारस।

(२) जैन समाज कार्यालय सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel Address—"Singhai" Benares

जियबायटीस (शक्कर-प्रमेह) का वैज्ञानिक और पूर्ण इलाज।

हारवर्ड यूनीवर्सिटी, अमरीका के प्रसिद्ध वैद्य जियबायटीस जोस्लिन Joslen और एलन Allen साहबान के तरीके-इलाज (जिसको तमाम विज्ञान-जगत में प्रामाणिक और पूर्ण माना है) के मुताबिक डा० बलवन्तसिंह जैन एम० डी० (अमरीका) सदर बाजार देहली को अपने मरीजों पर बहुत कामयाबी हासिल हुई।

१—मुझे इस तरीके इलाज से कतई आराम होगया है। मैंने महाराज साहब श्री नैपाल-नरेश को लिख दिया है कि दो साल से जो मुझे शक्कर-प्रमेह की बीमारी लगी हुई थी उससे इस तरीके के इलाज से बिल्कुल आराम होगया है।

—ह० कर्नल विजय शमशेरजङ्ग बहादुर:—Foreign Minister, Nepal देहली।

२—आपने इस तरीके इलाज से मेरे शक्कर-प्रमेह रोग को बिल्कुल अच्छा कर दिया। मैं बड़ा मशकूर हूं। —शीतलप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली।

३—तीन चार साल से मुझे शक्कर-प्रमेह रोग ने तङ्ग कर डाला था लेकिन आपके तरीके इलाज से बिल्कुल ठीक होगया हूं। —ज्ञानचन्दप्रसाद राजवैद्य, चांदनी चौक, देहली।

४—मुझे यह तरीका-इलाज बहुत मुफीद साबित हुआ। —मित्रसेन जैन रईस, बादली।

Regd. No. A 1271.

श्री भा० दि० जैन परिषद् का

सर्वोपयोगी, हर प्रकार के धार्मिक सामाजिक, ऐतिहासिक एवं साहित्य सम्बन्धी उच्चकोटि के लेखों से विभूषित उच्चकोटि का सजीव सामाजिक २४ पृष्ठ का सुन्दर

पाक्षिक पत्र वीर

को इन पवित्र दिनों में अवश्य पढ़िए। यदि ग्राहक नहीं तो २॥) भेज आज ही ग्राहक बन जाइये क्योंकि:—

इसके पाठ से धार्मिक सिद्धान्तों का परिशीलन मार्मिक ढंग से होता है। इसके प्रत्येक लेख से धार्मिक भाव बढ़ने और परस्पर प्रेम का व्यवहार होने में सहायता मिलती है। कोई झगड़ा इसमें स्थान नहीं पाता! कोई पक्षपात इसमें छू नहीं जाता। निष्पक्षभाव से समाज की दशा और उसके उत्थान के उपायोंका दिग्दर्शन निर्भीकता पूर्वक कराया जाता है इसके अतिरिक्त गल्प और संसार भर के ताजे समाचार प्रतिपक्ष पढ़ने को मिलते हैं। नमूना मुफ्त मंगा देखिये। इस पर भी खूबी यह कि

उपहार में एक सुन्दर उपयोगी पुस्तक और दो सचित्र "विशेषांक"

जिसमें दुनियां भर के विशेष विद्वानों के लेख और मनमोहक चित्र रहते हैं प्रतिवर्ष मिलती हैं। सारांश यह कि जैन समाज में यह अपनी सानी का एक पत्र है अतएव यदि आप को जैन धर्म से प्रेम है तो 'वीर' के ग्राहक बनिए।

देश विदेश के बड़े २ विद्वानों, व पत्रों ने मुक्त कंठ से वीर की प्रशंसा की है

बोर्ड कार्यालय बिजनौर

दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छापकर प्रकाशित किया।

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

वर्ष २] १५ अगस्त सन् १९२५ ई० [संख्या २१

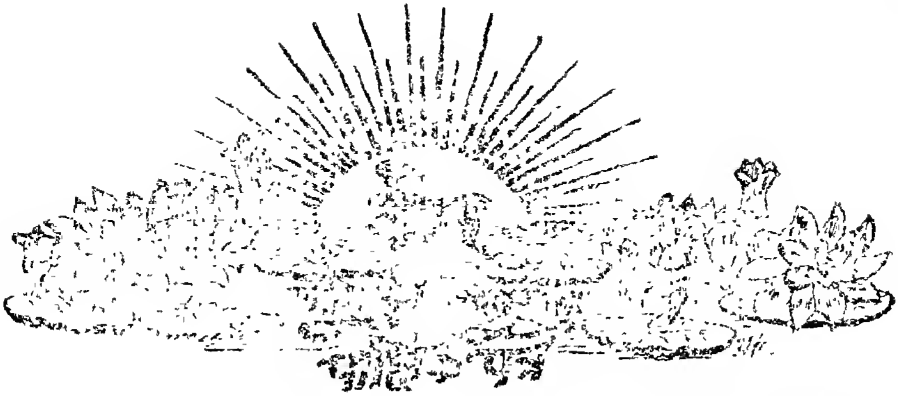

ऑन० सम्पादकः— जै०ध०भू०,श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादकः— श्री कामताप्रसाद जी

प्राप्ति स्वीकार

नवम्बर १९२४ से अगस्त १९२५ तक

भा० व० दिगम्बर जैन परिषद्

१०१) श्रीमान [illegible] इटावा	५१) श्रीयुत रूपचन्द जैन इटावा
१०१) " चिरञ्जीलाल वर्मा	५१) " मुन्नालाल ...
१५१) " फूलजारीलाल जी इटावा	५०) " चम्पतराय बैरिस्टर हरदोई
१५०) " जम्बूप्रसाद जी नकौडा	२०२) फुटकर ५०) से कम
१५१) " जयकुमार देवीदास चवरे वकील अकोला	१००) ट्रैक्ट विभाग
	४०) सेठ मूलचन्द किशनदास कापडिया सूरत
१००) " ला० जुगमन्दरदास नजीबाबाद	
५१) " लक्ष्मणदास इटावा	५०) सेठ चन्नूलाल ...चन्द व गोपालचन्द ... आर्वी
५१) " चन्द्रसैन वैद्य "	

समाज से प्रार्थना है कि परिषद् को यथा शक्ति तन मन धन से सहायता करें जिससे वह धर्म प्रचार व समाजोत्थान का कार्य अधिक वेग से कर सके ।

—रतनलाल, मन्त्री परिषद् ।

ऑन० प्रकाशक—

राजेन्द्रकुमार जैन, बिजनौर (यू० पी०)

जैन हाईस्कूल, जैन संस्कृत धर्म-विद्यालय पानीपत (पंजाब)

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।

जैन समाज भी प्रत्येक प्रान्त में जैन धर्म के उत्थानार्थ पाठशाला, विद्यालय आदि विद्या संस्थाओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ा रहा है। पानीपत की जैन जनता ने पंजाब प्रान्त में सबसे पहले यह "जैन हाईस्कूल पानीपत" नाम की संस्था को जन्म सन् १९०९ में दिया था। जैन धर्म की शिक्षा के साथ २ अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, महाजनी आदि की लौकिक शिक्षा का बराबर प्रचार कर रहा है इस समय संस्था में लगभग ४०० जैन और अजैन छात्र विद्यालाभ कर रहे हैं इसके साथ में ही बोर्डिङ्ग हाउस भी है। जिसमें परदेशी छात्र १०० के अनुमान निवास करते हैं। और जिसके लिये अपनी खास बिल्डिङ्ग की बहुत आवश्यकता है। इस संस्था का १४००) रु० मासिक खर्च है। रुपये की कमी से स्कूल की बिल्डिङ्ग भी अभी तक अधूरी पड़ी है। इस पर उदार दानी भाईयों को विशेष ध्यान देकर बिल्डिङ्ग को पूरा बनवा देना चाहिये।

श्रीमान् पूज्य जैन धर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी की प्रेरणा से और पानीपत की जैन जनता के उत्साह से ४ नवम्बर १९२३ को जैन संस्कृत धर्म विद्यालय भी स्थापित हो गया है। प्रवेशिका परीक्षा के ग्रन्थों के साथ-साथ लौकिक शिक्षा भी दी जाती है। परदेशी छात्रों को १०) रु० और स्थानीय छात्रों को ५) रु० मासिक छात्र वृत्ति दी जाती है। धर्मोत्साही उदार महानुभावों से सविनय निवेदन है कि द्रव्यदान के अवसर काशी, मोरेना आदि की धार्मिक संस्थाओं की तरह उक्त दोनों संस्थाओं का भी विवाहादि शुभ कार्यों में यथाशक्य द्रव्य की सहायता भेजकर इन संस्थाओं की दृढ़ नींव जमावें क्योंकि विद्यादान ही सर्व दानों में श्रेष्ठ है। जैसा कि कहा है—

"अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिर्यावज्जीवन्तु विद्यया॥"

प्रार्थी—जयकुमार सिंह जैन।

मैनेजर—जैन हाईस्कूल और संस्कृत धर्म विद्यालय, पानीपत।

श्री महावीराय नमः ।

वर्ष २ | बिजनौर, भाद्रपद शुक्ला १५ वीर सम्वत् २४५१ | अङ्क ४१
१ सितम्बर, सन् १९२५

अनुताप ।

पाकर मानव जन्म व्यर्थ हा ! सभी गमाया ।
अन्त समय संताप हृदय में तब अति छाया ॥
काम क्रोध, मद लोभ, मोह में रहा फंसा था ।
स्वार्थ मयी जंजीर कठिन से रहा कसा था ॥१॥
बाल काल सब खेल कूद में मैंने खोया ।
सुनकर विद्या नाम हृदय में भागी रोया ॥
बैठ बाठ कर दुःशाला में समय बिताते ।
दिन दिन उन से दुराचार हैं आते जाते ॥२॥
जब तक पैसा रहा पास में मित्र हमारे ।
बाल—काल में देख चुके थे ऐसे सारे ॥
हुआ न लेकिन कुछ विचार भी किसी बात का ।
आता है उपदेश याद अब पूज्य तात का ॥३॥
इसी तरह बरबाद किया धन हमने सारा ।

रोने तब परिवार लगा प्राणों से प्यारा ॥
नहीं मित्र है एक आज जो ऋण भी देवे।
आकर मेरे गेह कभी जो सुध भी लेवे ॥४॥
रही न पूंजी पास कोई व्यवसाय न होगा।
जैसा मैंने किया कर्म वैसा ही भोगा ॥
इस विचार से छोड़ देश बाहर को जावें।
पावें लेकिन चैन नहीं वहाँ भी पछतावें ॥५॥

- श्री गुणभद्र सिंघई।

जैन मुनियों का प्राचीन भेष ।

जैन मुनियों का प्राचीन भेष क्या होगा ? इसमें तर्क उठाने की गुंजाइश श्रद्धालु समाज के लिए नहीं रहती है। वह अपनी मान्यता के अनुसार उनका रूप स्वीकार करती है और उसके विपरीत को अयथार्थ समझती है। जैनमुनियों के विषय में दिग०संप्रदाय का कथन है कि वे नग्न रहते थे श्वेता० संप्रदाय उन्हें वस्त्रधारी बतलाता है। यद्यपि श्री ऋषभदेव और महावीर जी के तीर्थ को अचेलक स्वीकार करता है। (देखो कल्पसूत्र १ I. 11.) इस विषय में दोनों संप्रदायों के प्रामाणिक ग्रंथों को अध्ययन करके हम बेशक एक तथ्यमय निर्णय पर पहुंच सके हैं। पर तो भी इन दोनों के अलावा एक तीसरे की साक्षा विशेष प्रमाणीक मानी जायगी, क्योंकि यह बिलकुल संभव है प्राकृतिक है कि दोनों संप्रदाय वाले अपने २ पक्षकी पुष्टि में यथार्थ सत्य पर सफेदी फेरने के कार्य्य मे व्यस्त रहे हों। अत- एव भारतीय उपलब्ध साहित्य में सर्वप्राचीन वेदों और उनके उपरान्त बौद्ध शास्त्रों से हम इस जटिल प्रश्न पर स्वतंत्र प्रकाश डालेंगे।

वेदोंमें, जैन तीर्थंकरों के जो नाम हैं, उनमें से कतिपय मिलते हैं। इसीलिए विद्वानों का मत है कि जब वेदों में उल्लिखित ऋषियों के नाम जैन तीर्थंकरों से कतिपय के समान ही हैं, जैसे ऋषभदेव, सुपार्श्व, अरिष्टनेमि महावीर, तो यह निस्संशय मानना पड़ता है कि वेद प्रणेता ऋषिगणों ने जैन तीर्थंकरों की उपेक्षा नहीं की थी प्रत्युत उनका स्मरण आदर के साथ किया था। ऋग्वेद में भी इनका उल्लेख है, परन्तु वहां उनके भेषके विषय में कुछ नहीं कहा गया है। इसलिए उनसे हमको कुछ मतलब नहीं है। यजुर्वेद के उल्लेखों में निग्रन्थ के दो मंत्रों में उनके भेष के विषय में उल्लेख है और वह इस प्रकार है:—

१. "ॐ नमो अर्हतो ऋषभो: ॐ ऋषभः पवित्रं पुरहूत मध्वरं यज्ञेषु नग्नं परमं माह संस्तुतं वर शत्रुं जयंतं पशुरिंद्रमाहुरिति स्वाहा। ॐ त्रातार मिंद्रं ऋषभं वदंति अमृतारमिंद्रं हवे सुगतं सुपार्श्व मिंद्रमाहुरिति स्वाहा। ॐ नग्नं सुधीरं दिग्वाससं ब्रह्म गर्भं सनातनं उपैमि वीरं पुरुषमर्हतमादित्य वर्णं तमसः परस्तात् स्वाहा।"

—यजुर्वेद अ० २५ श्रुति १९।

२ 'आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहु। रूपा सुपासदामेत त्रिस्रो रात्रीः सुरासुता॥"

—यजु० अ० १९ मंत्र १४।

इन उद्धरणों में भगवान ऋषभनाथ जी और महावीर स्वामी का स्मरण किया गया है एवं उनको नग्न लिखा है। वेदों के अतिरिक्त हिंदुओं के पुराण और भाष्य आदि में भी जैन मुनियों को अचेलक, दिग्वासा, वातवसना इत्यादि रूप से नग्न बताया गया है। (देखो 'वीर' अङ्क ११-१२ वर्ष ५.) अतएव यहां से तो हमको जैन मुनियों का भेष नग्न ही मिलता है। अब आइए पाठकगण, बौद्धों के शास्त्रों का भी निदर्शन करलें।

उपलब्ध भारतीय साहित्य में बौद्धों के ग्रंथों की लिपि प्रति सर्व प्राचीन है। यह बहुधाकार बुद्ध देव के देहावसान के उपरान्त सौ-दोसौ वर्ष के भीतर २ लिपिबद्ध कर लिए गए थे अर्थात वे आज से करीब सवा दो हजार वर्ष पहिले लिखे गए थे अत एव उनमें जो उल्लेख जैन धर्म के विषय में होगा वह विशेष महत्व का होगा। और वास्तव में उनमें के जैन धर्म संबंधी उल्लेख यथार्थता को लिए हुए हैं। डा० जार्ल चारपेन्टियर का भी कथन है कि बौद्धों को अपने प्रारंभकाल में अपने विरोधी निर्ग्रन्थों अथवा जैनों के चरित्र तथा संस्थाओं का अधिक सुचारु ज्ञान था। (See Indian Antiquary Vol 43) इसलिए उनमें जो विवेचन जैनमुनियों के भेष संबंध में मिलेगा, वह बड़ा मनोरंजक और ठीक होगा। हमें मालूम है कि बौद्धों के धर्मशास्त्र 'त्रिपिटक' कहलाते हैं। यह विनियपिटक सुत्तपिटक और अभिधम्म पिटक के रूप में तीन प्रकार हैं। इन सब में ही किसी न किसी रूप में जैनियों के संबंध में कुछ न कुछ उल्लेख अवश्य मिलता है। हमको इन के सम्पूर्ण विनयपिटक एव सुत्तपिटक के कतिपय अंशके पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस अध्ययन में हमें इन ग्रंथों में जैन मुनियों का-निग्गन्थ समणों का भेष नग्न ही मिला है। यथा, दिव्यावदान् नामक ग्रन्थ में जैन मुनियों के नग्न भेष के कारण कटाक्ष किया गया है:—

'कथम् स बुद्धिमान् भवति पुरुषो व्यञ्जनो बिना:'
लोकस्यं पश्यतो योऽयम् ग्रामे चरति नग्नकः॥
यस्यायम् ईदृषो धर्मः पुरुषना लम्बते दशा।
तस्य वै श्रवणो राजा क्षुरप्रेनाव कृन्ततु॥"

ऐसे ही बुद्ध की जातक कथाओं में 'घटकथा' नामक विवरण में स्पष्ट लिखा है कि मद्य पीने से मनुष्य निग्रन्थों के समान हो यत्र तत्र राजमार्ग पर फिरता है।" यथा:—

"Even the bashful lose shamo by drinking it and will have done with the trouble and restraint of dress, unclofhed like Nirgranthas they will walk boldly on the high ways crowded with people. etc" (The Jatakamala, by Arya Sura. S. B. B. Vol. 1. Page 145.)

इसके अतिरिक्त 'विसोखावत्थु' धम्मपदत्थ-कथा' (P. T. S.) Vol. I. Pt. II P. 384. foll. में अनेक स्थलों पर जैन मुनियों को नग्न लिखा है। "Dialogues of the Buddha" Pt. III.Page. 14. पर भी इसी तरह का उल्लेख है। वहां जैन मुनि 'कंडार-मासुक' को नग्न लिखा है। 'महावग्ग' में अनेक स्थलों पर अस्पष्टरूप में जैन मुनियों को नग्न भेषधारी बतलाया गया है। 'महावग्ग' के ये मुनिगण श्री पार्श्वनाथ जी की शिष्य परम्परा के थे, यह बात हम किसी अन्य लेख में प्रमाणित करेंगे। यद्यपि 'महावग्ग' के इन उल्लेखों पर अन्यत्र के ऐसे ही उल्लेखों के विषय में पूर्वोल्लिखित डॉ० चारपेन्टीयर साहब यह लिखते हैं कि 'बौद्ध ग्रन्थों में अनेक बार नग्न यतियों का उल्लेख हुआ देखने में आता है और इसी रीति से वे आजीवक समझे जाते हैं। उदाहरण रूप में महावग्ग ८, १५, ३; १, ३८, ११; ७०, २; चुल्लवग्ग ८, २८, ३; निस्स० ६, २, संयुक्त निकाय २, ३, १०, ७, आदि उदाहरणों में के कितने ही नग्न भिक्षुगण मात्र 'नित्थय' (तीर्थिक) कहे गए हैं और इस लिये वे भगवान महावीर के शिष्य समझे जा सकते है।" (Ind. Ant. Vol. 43) परन्तु हम इसको भगवान पार्श्वनाथ के तीर्थ के मुनिगण समझते हैं, यह हम आगामी प्रकट करेंगे। इस समय हम यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि पाश्चात्य पुरातत्वविद् किस तरह वाज़ दफे धोखा खाते हैं। जिस प्रकार उक्त उदाहरणों में के यतियों को आजीविक होना समझा गया है उसी तरह Dialogues of the Buddha नामक ग्रन्थ के 'कस्सप सहिनाद सुत्त में' जो एक प्रकार के 'समणों की दैनिक क्रियाओं की सूची दी है उसको उस के मान्य अनुवादक स्व० मि० हीस डेविड्स ने आजीविकों की बतलाई है; परन्तु वास्तव में वह जैन मुनियों की क्रियाओं का ही प्रतिलेख है। वह सूची इस प्रकार उक्त बौद्ध-'सुत्त' में दी हुई है:-

"और गौतम! ऐसे ही निम्न की मुनि क्रियायें किन्हीं समणों और ब्राह्मणों द्वारा समण धर्म और ब्राह्मण-पन मानी गई हैं:--

१—'वह नग्न विचरता है।'

२—'वह ढीली आदतों का है (शारीरिक कार्य और भोजन वह खड़े २ करता है' भले मानसों की भांति झुक कर या बैठकर नहीं करता)

३—'वह अपने हाथ चाट कर साफ़ करलेता है, (खाने के पश्चात् धोने के बजाय)

४—(जब वह अपने आहार के लिये आता है यदि सभ्यता पूर्वक नज़दीक आने को या ठहरने को कहा जाय कि जिससे भोजन उनके पात्रमें रख दिया जाय तो) वह तेज़ीसे चला जाता है (शायद कहीं वह दूसरे मनुष्य के वचनों का अनुकरण कर दोष का भागी न हो)।

५—'वह उस भोजन को नहीं लेता है (जो उसके निकट आहार के लिये निकलने के पहिले लाया गया हो)

६—'वह (उस भोजन को भी) नहीं लेता है (यदि बता दिया जाय कि वह) खासकर उसके लिए (बनाया गया है)

७—'वह कोई निमन्त्रण स्वीकार नहीं करता (कि आहार निमित्त किसी खास घर पर अथवा किसी खास रास्ता होकर या किसी खास जगह पर आऊँगा)

८—'वह नहीं लेगा (भोजन जो उस बर्तन में

से निकाला गया होगा, जिसमें वह राँधा गया हो (जिससे कि शायद वह बर्तन चमचे से रगड़े आदि उसके कारण जायें)

६—'(वह भोजन) नहीं (लेगा) आँगन में से (कि शायद वह वहां खासकर उसके ही लिए रक्खा गया हो)'

१०—'(वह भोजन) नहीं (लेगा जो) लकड़ियों के दरमियान (रक्खा गया हो, कि शायद वह वहां खासकर उसके लिये ही रक्खा गया हो)

११—'(वह भोजन) नहीं (लेगा जो) सिल बट्टे Pestler के दरमियान (रक्खा गया हो, कि शायद वह वहां उसके लिये ही रक्खा गया हो)'

१२—'जब दो व्यक्ति साथ २ भोजन करते हैं तो वह नहीं लेगा (वह भोजन जो वह पा रहे हैं यदि उन दो में से केवल एक ही देगा)।

१३—'वह दूध पिलाती हुई स्त्री से भोजन नहीं लेगा (कि शायद दूध कम होजावे)

१४—'वह पुरुष के संग रमण करती हुई स्त्रीसे भोजन नहीं स्वीकार करेगा (कि शायद उनके रमण में बाधा पड़े)'

१५—'वह नहीं लेगा भोजन (जो अकाल के समय श्रावक द्वारा) एकत्रित किया गया हो।'

१६—'वह वहाँ भोजन स्वीकार नहीं करेगा जहाँ पास में कुत्ता खड़ा हो (कि शायद कुत्ते को भोजन न मिले)

१७—'वह वहाँ भोजन नहीं लेगा जहां मक्खियों का ढेर लगा हो (कि शायद मक्खियों को कष्ट हो)

१८—'वह (भोजन में) मच्छी, मांस, मद्य, आसव, सौवा ग्रहण नहीं करेगा।'

१९—'वह "एक घर जानेवाला" होता है (झट ही अपनी आहार चर्या से लौट आता है कि जहां किसी एक घर से आहार ग्रहण किया), एक "एक-ग्रास भोजन-करने-वाला होता है—

'या वह "दो घर जाने वाला "—दो—ग्रास—भोजन-करने वाला" है—

'या वह "सात घर जाने वाला" एक "सात—ग्रास—भोजन करने वाला है:-

'वह एक आहार निमित्त-दो निमित्त-या ऐसे ही सात तक जाने का नियमी होता है।

२०—वह भोजन दिन में एक बार करता है, अथवा दो दिन में एक बार अथवा ऐसे ही सात दिन में एक बार करता है। इस प्रकार वह नियमानुसार नियमित अन्तराल में अर्धमास तक भोजन ग्रहण करता हुआ रहता है।'

इस प्रकार यह क्रियाओं की सूची है। इस से यह स्पष्ट है कि जिन यतियों के लिए यह हैं वह मांस, मद्य, मच्छी आदि पदार्थ नहीं खाते थे और बड़े संयम से भोजन करते थे। आजीवक गण नंगे अवश्य रहते थे, परन्तु उनको मच्छी, मांस आदि खाने का परहेज नहीं था और उन का आचरण भी असंयमित था, यह जैन एवं बौद्ध दोनों के शास्त्रों से प्रमाणित है। बौद्धों के लोम हस जातक' में आजीविकों के बावत स्पष्ट लिखा है कि "वे नग्न और मिट्टी से ढके, एकाकी अकेले, मनुष्य के मुख से हिरण की तरह भगने वाले की तरह रहते हैं। उनका भोजन छोटी मच्छी, गोबर एवं अन्य कूड़ा था।" (Jataka, I p. 390) अतएव यह निस्संशय कहा जा सकता है कि उक्त की क्रियायें एक आजीवक —भिक्षु की नहीं हैं प्रत्युत वे एक जैन मुनि की ही हैं। जैसे कि जैन

शास्त्रों के निम्न उद्धरणों से प्रमाणित होगा:—

उक्त सूची में प्रथम किया नग्नपने को है दिगम्बर जैन ग्रन्थ श्री मूलाचार जी में, जो ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों का ग्रंथ है इस नग्नपने को जैन मुनि के अट्ठाईस मूल गुणों में गिनाया है, जिसका स्वरूप ऐसा बताया है:-

'वत्था जिण वक्कलेण अहवा पत्ताइणा असंवरण।
णिब्भूसण णिग्गंथ अच्चेलक्कं जगदि पूज्जं ॥३०॥

भावार्थ-जहां कम्बलादि वस्त्र मृगछाला आदि चर्म, वृक्षों की छाल वक्कल व वृक्षों के पत्ते आदि का कोई प्रकार का ढकना शरीर पर न हो, आभूषण न हो, तथा बाहरी स्त्री पुत्र धन धान्यादि व अन्तरङ्ग मिथ्यात्व आदि २४ परिग्रह से रहित हो वही जगत में पूज्य अचेलकपना या वस्त्रादिरहितपना परमहंसस्वरूप नग्नपना होता है। इसके अतिरिक्त श्री समन्तभद्राचार्य ने अपने वृहत्स्वयम्भूस्तोत्र की श्री नमिनाथ की स्तुति में एवं श्री विद्यानंद स्वामी ने पात्रकेशरी स्तोत्र में इस ही नग्नपने की श्रेष्ठता बतलाते हुए उल्लेख किया है। ईसा की प्रथम शताब्दि में हुए श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने अपने प्रवचनसार परमागम में भी नग्नपने को परमावश्यक बतलाया है। ऐसे ही कुल भद्राचार्य ने 'सार समुच्चय' के १३६ वें श्लोक में एवं पं० आशाधर जी ने 'अनागार धर्मामृत' अ० ६ श्लोक ६४ में इस का विधान किया है। गर्ज़ यह कि दिगम्बर शास्त्रों में प्राचीन से प्राचीन काल से इस नग्नपने को स्वीकार किया गया है।

श्वेताम्बर संप्रदायके ग्रंथों में भी इसके महत्वको भुलाया नहीं गया है। बल्कि स्पष्ट शब्दों में इसके महत्व को स्वीकार किया है। उनके प्रवचनसारोद्धार के प्रकरण रत्नाकर भाग तीसरा (मुद्रित भीमसिंह माणिक जी सं० १९३४) पृष्ठ १३४ में "पाउरण वज्जियाण विसुद्धजिण कप्पियाणं तु" अर्थात जे प्रावण एटले कपड़ा वर्जित छे ते स्वल्पोपाधि पण करी विशुद्ध जिनकल्पिक कहेवाय छे 'भाव यह है कि जो वस्त्र रहित होते हैं वे विशुद्ध जिनकल्पी कहलाते हैं। उनके आचारांग सूत्र (छपा १९०६ राजकोट प्रेसप्रो० रावजीभाई देवराज द्वारा) में अध्याय आठवें में नग्न साधु की महिमा है:—

जे भिक्खू अचेले परिवुसिते तस्स णं एवं भवति चाएमि अह तण फासं अहियासित्तए, सीयफासं अहियासित्तए तेउफासं अहियासित्तए दंसमसगफासं अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरुवरूवे फासे अहियासित्तए।"

—४३३ गाथा पृ० १२६

भावार्थ-"जो साधु वस्त्ररहित हो उसको यह होगा कि मैं घासका स्पर्श सह सकता हूं, शीत ताप सह सकता हूं, दंशमसक का उपद्रव सह सकता हूं। इसी सूत्रमें यह भी कथन है कि महावीर स्वामी ने नग्न दीक्षाली थी तथा बहुत वर्ष नग्न तप किया। (अ० ९ पृष्ठ १३५-१४१)"* और नग्नपना का विधान ३६० और ३६८ गाथाओं में भी है। तिसपर राजा उद्रायन की कथा में श्वेताम्बराचार्य करते हैं:—

"तउ से उद्दायणे अणगारे बहुणि वासाणि सामण्ण परियागम् पौणित्ता मत्थियम् भत्ताइम अणसणाए चीत्ता जस्स अट्ठाए कीरै नग्ग-भावे मुण्ड भावे तम् अत्थम् पत्ते जाव दुःख पहिणे-त्ति।

* इन उद्धरणों के लिए हम जैन धर्मभूषण ब्र० शीतल प्रसाद जी के आभारी हैं। —स० सं०

(Jacobi's Selected Stories No. III p. 34.)

अर्थात्—तब उस उदायन ने गृहत्यागी यति के गृह त्याग विचरण व्रत का पालन कई वर्षों यथाचित कर लेने पर और अपने उपवासों में साठ आहारों का त्याग कर लेने पर वह उस ध्येय को पहुंच गया, जिसके लिए एक मनुष्य नग्न है और मुण्डा बनता वह दुःखों से छूटता है। इस प्रकार यहां तक के विवरणों से यह स्पष्ट है कि हिन्दू, बौद्ध एवं दिगम्बर और श्वेताम्बरों के शास्त्र जैन मुनियों का प्राचीन भेष नग्न ही बतलाते हैं। दिगम्बराम्नाय में जैनमुनि का वह भेष अब भी प्रचलित है; परन्तु श्वेताम्बराम्नाय को वह मान्य होने पर भी समय की कठिन परिस्थिति के कारण व्यवहार में प्रचलित नहीं हैं। इस प्रकार यद्यपि जैन मुनियों के प्राचीन भेष के विषय में हम एक स्वतंत्र निर्णय पर पहुंच जाते हैं और एक तरह से हमारे लेख का उद्देश्य भी सध जाता है, परन्तु ऊपर जो हम क्रियाओं को जैन शास्त्रों से सिद्ध करने को कह आए हैं सो उनको सिद्ध करना शेष रहता है। इस लिए उनको सिद्ध करते हुए हम देखेंगे कि बौद्ध लोग किस प्रकार जैन मुनियों एवं श्रावकों के स्वरूप का परिचय प्राप्त था।

—उ० सं०

दश लक्षण धर्म और उसका पालन

(लेखक—श्री० ऋषभदास जैन बी० ए०)

धर्म वस्तु स्वभाव को कहते है। यहां धर्म से मतलब आत्मा के स्वभाव से है। आत्मा के असली स्वभाव के दसलक्षण अर्थात् दस चिन्ह हैं कि जिनसे वह आत्मा का असली स्वभाव जाना या पहिचाना जाता है। वह दसलक्षण यह हैं: १) क्षमा (२) मार्दव (३) आर्जव (४) सत्य (५) शौच (६) संयम (७) तप (८) त्याग (९) आकिञ्चन्य (१०) ब्रह्मचर्य। जैन समाज में दसलक्षण धर्म की बड़ी मान्यता है। भादों सुदी के दस दिन इस दसलक्षण धर्म से विशेषित किए गए हैं, जिस से कि लोग इन दिनों में दसलक्षण धर्म का खूब पालन करें। परन्तु खेद के साथ देखा जाता है कि हम जैन लोग इन दिनोंमें भी दसलक्षण धर्म का पालन नहीं करते! यद्यपि मन्दिरों की खूब सजावट करते हैं जलयात्रा व रथयात्रा भी निकालते हैं परन्तु दसलक्षण धर्म का वास्तविक पालन नहीं करते।

क्रोध पर विजय प्राप्त करने क्रोध को अपने आधीन करने का नाम क्षमा है। और मान के अभाव को मार्दव कहते हैं। क्षमा व मार्दव से अहिंसा व दया के पालनमें वृद्धि होती है। आपस में प्रेम व मित्रता बढ़ती है। परन्तु खेद है, जैन समाज इनका पालन नहीं कररही है। वैसे तो जैन समाज में हमेशा ही लड़ाई-झगड़े रहते हैं। दिगम्बर व श्वेताम्बर आम्नाय के झगड़ों को कौन नहीं जानता! तेरह और बीस पंथ के विरोध से भी सब वाकिफ हैं। और पंडित व बाबू पार्टी की ना इत्तफ़ाकी तो आजकल खूब ही जोर पकड़ रही

है। इस समाज में धड़ेबन्दी व फिर्केबन्दी की कोई हद नहीं है। ज़रा २ सी बातोंपर फ़ौरन धड़े क़ायम होजाते है। कुल, जाति, धन, बल, विद्या आदि के मान में आकर एक दूसरे को नीची दृष्टि से देखता, उसकी निन्दा करता व उसके साथ दमन नीतिका बर्ताव करता है। ख़ैर यह झगड़े तो हमेशा चले आते है लेकिन ज्यादा अफ़सोस इस बात का है कि दसलाक्षणी के दिनोंमें भी हम क्षमा का पालन नहीं कर सके! इन दिनोंमें भी अक्सर मन्दिरों के हिसाबात व प्रबन्धादि पर तकरार व फ़िसाद होता रहता है। भाइयों! इन पवित्र दिनों को तो वृथा न जाने दीजिए।

छल, कपट व मायाचारी को त्याग कर सरल परिणाम गृहण करने को आर्जव कहते हैं। झूट को त्याग कर जैसी बात हो उसको उस ही तरह कहना सत्य कहलाता है। लोभके त्याग को शौच कहते हैं छल, कपट, मायाचारी व झूट बोलने में यही प्रवृत्ति यह जीव लोभ के वश होकर ही करता है। इस लिए आर्जव व सत्य व शौच का आपस में गहरा सम्बन्ध है। जो व्यक्ति लोभ कषाय को वश कर लेगा वह छल, कपट, व मायाचारी भी नहीं करेगा और न झूठ बोलेगा! इस लिए आर्जव सत्य धर्म का विकास उस में ज़रूर होगा। अब सवाल यह है कि क्या जैन समाज लोभकषाय पर हावी है।? तजुरबा व अनुभव बतलाता है किजैन समाज में लोभ कषाय की मात्रा ज्यादा बढ़ी हुई है। मैं यह हरगिज़ नहीं कहता कि इस समाज के तमाम व्यक्ति इस कषाय के दास हैं। बाज़ इस कषाय से उदासीन भी पाए जाते है। लेकिन ज्यादातर इस कषायमेंफंसे हुए भी देखे जाते हैं। यदि ऐसा न होता तो इस समाज मे बदनी व सट्टे का व्यवहार कसरत से न पाया जाता। और न इस ज्यादती के साथ मुक़द्दमे बाज़ी देखी जाती कि जिसमें झूठी गवाही खुद देने व दूसरों से दिलाने व बही-खाते वग़ैरह बनाने से परहेज़ नहीं किया जाता-न लड़की वाले से ज्यादह दहेज़ व माल लेने के लालच में आकर अनमेल विवाह किए जाते-न कन्या विक्रो जैसे महापापके कामको किया जाता! ऐसी २ बातों से ही ज़ाहिर होता है कि जैन समाज में लोभ कषाय की मात्रा बहुत ज्यादह बढ़ी हुई है और जैनसमाज आर्जव, सत्य, शौच धर्मका पालन यथार्थ रीति से नहीं कर सकी!

इन्द्रियों को उन के विषयसे रोकने या छै काय के जीवों की रक्षा करने व मन की दौड़ को अपने आधीन करने का नाम 'संयम' है। इच्छाके निरोध अर्थात् वाञ्छाओं के रोकने व दूर करने को तप कहते हैं। वास्तव में तप उस कार्य क्रम का नाम है कि जिस से आत्मा व पुद्गलसे बनी हुई पर्याय को तपाने से पौद्गलिक मैल आत्मा से दूर होकर शुद्ध आत्मा निकल आता है। सांसारिक परिग्रह-धन-सम्पत्ति आदि के त्यागने को त्याग कहते है। दान अर्थात् परोपकार व धर्म कार्य में द्रव्य खर्च करना भी इस में शामिल है। पर पदार्थों से मोह न रखने का नाम आकिन्चिन्य है। इन में से संयम, तप व त्याग की पाबन्दी जैन समाज किन ही अंशों में ज़रूर कर रही है। हरी, रस आदि का त्याग करती व व्रत व उपवास रखती है। लेकिन यह सब कुछ बतौर रस्म व रिवाज के बिला मतलब व उद्देश्य के समझे करती है कि जिस से कषायें कमज़ोर नहीं हो पातीं। कषाय

खूब ज़ोरों पर बनी रहती हैं। इन्द्रियों के विषय कम नहीं होते। आराइश व नुमाइश व फैशन का शौक खूब चढ़ता रहता है। रेशम व मिलों के हिंसामयी व अशुद्ध कपड़े मन्दिरों तक में काम में लाए जाते हैं। छोटी २ लड़कियों से उपवास कराये जाते हैं कि जो उपवास का कुछ मतलब तो समझती नहीं केवल काय क्लेश करती हैं कि जिससे उनके दिल को दुःख और उनकी तन्दुरुस्ती खराब होता है। हालांकि जैन धर्म में यह साफ़ कहा गया है कि केवल भूखे मरना उपवास नहीं है। सामायिक व ध्यान गृहस्थी लोग बहुत कम करते हैं। और चूं कि संयम, तप, त्याग व आकिञ्चन्य इन चारों में इच्छा, कषाय व पर पदार्थ से रुचि हटानी पड़ती है। लेकिन जैन समाज में जैसे कि ऊपर लिखा गया है कि लोभ की मात्रा ज्यादा बढ़ी हुई है और जबतक लोभ न घटे, इच्छा कषाय पर पदार्थ से रुचि किस तरह कम हो सकती है ? इस ही कारण से जैन समाज संयम, त्याग व आकिञ्चन्य का पालन ठीक तौर से नहीं कर सकता। दान में रुपए ज़रूर बहुत खर्च करती है लेकिन ज्यादातर उन कामों में कि जिनकी आजकल ज्यादा ज़रूरत नहीं है। या विवाह आदि में फ़िज़ूल रुपये बहुत खर्च करती है कि जिससे कुछ लाभ नहीं होता। विद्या व धर्म प्रचार में कि जिसकी आजकल बहुत ज़रूरत है बहुत कम खर्च करती है।

कामवासना से परहेज़ करने, अपने वीर्य की रक्षा करने, स्त्री संयोग को बिलकुल त्यागने, या विवाहित होने की हालत में अपनी स्त्री से संतोष रख कर दुनियां की और सब स्त्रियों को मां-बहिन बेटी के बराबर समझने का नाम ब्रह्मचर्य है इसका पालन जैन समाज बहुत ही कम कर रही है। सब से बड़ा ज़रूरी विद्यार्थी अवस्था का ब्रह्मचर्य है। लेकिन जैन समाज इसकी तरफ़ कुछ ध्यान नहीं दे रही है। बाल विवाह करके अपनी संतान का सत्यानाश कर रही है। और न संतान की बखूबी हिफाज़त व निगरानी करके उसको दुस्संगति व दुस्संस्कार से बचाती है। और वृद्ध विवाह करके काम वासना की ज़्यादती का पूरा सबूत दे रही है। जब कि समाज में बाल विवाह-वृद्ध विवाह-अनमेल विवाह, कन्या विक्रय इस क़दर ज्यादती के साथ होते हैं तो किस तरह कहा जा सकता है कि यह समाज ब्रह्मचर्य का पालन कर रही है। और इन्हीं बद रसूमात की वजह से विधवाओं की संख्या में वृद्धि होती है कि जिससे समाज में और ज़्यादह बदचलनी फैलती है। फिर नहीं मालूम इन बद रसूमात को क्यों नहीं बन्द किया जाता ? इसकी वजह यही मालूम होती है कि समाज के दिल में ब्रह्मचर्य का महत्व घर किए हुए नहीं है। पहले तो जब कि अपनी स्त्री में संतोष करके जगत् की सब स्त्रियों को मां, बहिन, बेटी के बराबर समझा जाता है कि जिसका नाम गृहस्थावस्था व ब्रह्मचर्य या शीलव्रत है। लेकिन स्त्री के मरने पर फिर दूसरा तीसरा चौथा विवाह कराया जाता है। समझ में नहीं आता कि यह किस किस्म का शीलव्रत था और अपनी स्त्री के अतिरिक्त जगत् की सब स्त्रियों को मां, बहिन, बेटी समझना किसी तरह कायम रहा। असल में ब्रह्मचर्य या शीलव्रत का पालन करना तो उस ही दशा में कहा जा सकता है जब कि मनुष्य एक मरतबा ही शादी कराए। दूसरी शादी से परहेज़ करे। और यह तो

रही कुछ ऊंचे दरजे की बात लेकिन ऐसे लोग भी कम मिलेंगे कि जो अपनी स्त्री मौजूद होने की दशा में अन्य स्त्री की ओर तबियत न दौड़ायें। क्या अच्छा हो कि समाज ब्रह्मचर्य के महत्व को समझ कर बाल विवाह-वृद्ध विवाह-अनमेल विवाह व कन्या विक्रय को बन्द करे! और क्या ही अच्छा हो कि हम दशलाक्षणी धर्म की सिर्फ जबानी स्तुति व पूजा ही नहीं बल्कि अपनी असली जिन्दगी को उसरूप बनायें कि जिस से समाज में सुख शान्ति फैले।

श्री अकलंक वस्ती का उद्धार कीजिये।

साढ़े बारह सौ वर्ष के प्राचीन दर्शनीय मन्दिर की रक्षा कीजिये

दक्षिण भारत में कन्जीवरम् से दक्षिण-पश्चिम की ओर १२ मील पर तिरुप्परम्बूर और करन्थई नामक दो प्राचीन जैन ग्राम हैं। पहिले यह दोनों एक थे। तिरुप्परम्बूर का संस्कृत वाची शब्द मुनिगिरि है। यहां जैन मुनि रहते थे इस कारण यह नाम है। पुनः श्री अकलंक स्वामी के वहाँ तपश्चरण करने से दूसरा नाम अकलङ्क वस्ती पड़ा है। यहीं हिम शीतल की राज्य सभा में स्वामी ने बौद्धों को परास्त किया था। इसके मध्य में एक "अर्हमण्डप" नामक मंडप में अकलंकदेव के चरण हैं। यहीं पर उन्होंने अन्तिम सल्लेखना व्रत ग्रहण किया था। प्रत्येक ग्राम में एक मन्दिर है। करन्थई का मन्दिर बड़ा और प्राचीन है। मन्दिर के हाते में ५ अलग वस्ती हैं और दो मंडप हैं। हाते की पूर्वी दीवार पर एक पोथी रखने की चौकी, एक कमंडल और एक पिच्छी बनी हुई है जो अकलङ्क देव की स्मृति में हैं। सब से बड़ा मन्दिर मध्य में कुन्थुनाथ जी का है। दूसरा मन्दिर जो 'येरवत्सल' कहलाता है और जो उक्त मन्दिर से दक्षिण की ओर है श्री महावीर स्वामी का है। तीसरे में श्री धर्मदेवी की मूर्ति और चौथा अधबना है पांचवें (छोटासा मन्दिर) श्री वृषभनाथ का है। इन सब में दूसरा भगवान महावीर का मन्दिर बड़ी जीर्ण अवस्था में है। आस पास के जैनी उसकी अकेले मरम्मत नहीं करा सकते हैं। इसलिये दातारों को सहायता करनी चाहिये। सहायता "श्रीयुत सी०एस० मल्लिनाथ, सम्पादक जैन गजट जार्ज टाउन मद्रास" के द्वारा भेजना चाहिये। यह मन्दिर अपूर्व कारीगरी का है। इसकी छत में श्री नेमनाथ और कृष्ण की लीला चित्रित है। जो बिगड़ रही है। चित्रों की मनोहरता दर्शनीय है। भीतर वेदी में मनुष्य कद से ऊंची अर्ध पद्मासन प्रतिमा श्री भगवान महावीर की अति मनोज्ञ है। तीन छत्र और भामंडल भी हैं। प्रतिमा के पीछे दो देव चमर ढारते हुए खड़े हैं। आसपास भी दो देव नागफन समेत चमर ढारते खड़े हैं इन्हीं के पास एक दम्पति पुष्प हाथों में लिये खड़े हैं। लोग इन्हें श्रेणिक-चेलिनी बतलाते हैं। यह सर्व मूर्तियां बड़ी चित्ताकर्षक हैं। मि० मल्लिनाथ जी ने उक्त स्थान के दर्शन करके यह अपील प्रकट की

है। यह कहते हैं कि यहीं अकलंक देव ने श्री तत्वार्थ राजवार्तिक जी लिखी थी। ऐसे प्राचीन पूज्यनीय, दर्शनीय और अद्भुत स्थान का उद्धार अवश्य होना चाहिये। —उ० सं०

सामाजिक परिस्थिति का नमूना

इधर देखूं तो कूंआ है, उधर देखूं तो खाई है
हुआ बेकल निगरमेरा, न कल आज इसने पाई है

बाराबंकी के · · अग्रवाल जैन एक धनाढ्य पुरुष हैं। आप साठ वर्ष से अधिक आयु होने पर भी धार्मिक संस्थाओं में अबतक असहयोग रखते हुए एक दस ग्यारह वर्ष की निर्दोष बालिका से लग्न करने की प्रबल इच्छा की पूर्ति करते हैं। ला० जी की तीसरी पत्नी से दो कन्यायें मौजूद हैं।

ता० २७ जून सन् २४ ई० को सवेरे दस बजे के समय "बाराबंकी" ही में नहीं आस पास के दस २ बीस २ कोस के ग्रामों में भी कीर्ति रूपी पुष्पों की गंध फैल गई कि लाला जी के मुसाहब सिपहसालार जी एक कन्या गाजियाबाद जिले मेरठ से मय उस कन्या के पिता, पिता के भाई दो लड़के, एक बूढ़ी स्त्री एक प्यारेलाल ब्राह्मण और एक पन्ना नाई आठों को लाकर ८-१० दिन से ठहराये थे। लाला जी का तिलक चढ़ जाने के बाद जैन पञ्च न ने 'जै श्रीराम आदि की' कोशिश से गाजियाबाद चार महाशय जांच के लिये भेजे गये और यहाँ विवाह सम्बन्धी रसूमात हो गईं। जांच करने वालों ने साबित कर दिया कि लड़की बिरादरी की नहीं है और फिर पिता, नाई और प्रोहित से पूछने पर पता लगा कि धन के लोभ में गैर जाति की लड़की ले आए हैं लड़की से पूछने पर उसने कहा मैं एक मंगता (भिखारिन) धीमर (कहार) की लड़की हूं इस पर सब के सब आठों कोतवाली भेजे गए और फिर कोतवाली में क्या हुआ ज्ञात नहीं।

२६ जून को सवेरे ८ बजे मालूम हुआ कि एक दस वर्ष की कन्या और आज लाला जी के वरमाला डालने आ पहुंची है।

इस कन्या के साथ न तिलक चढ़ा था और न विवाह सम्बन्धी कोई रसूमात अदा हुईं और न लाला जी के भाई तक शरीक हुए चुपचाप दो दिन के भीतर ही भीतर लाला जी ने इस दस ग्यारह वर्ष की कन्या के भाग्य का अन्त कर दिया।

लाला जी और लाला जी के दो एक साथियों की सद्बुद्धि पर स्वार्थवश अविवेकरूपी आवर्ण पड़ गया कि गाजियाबाद यहां से तीनसौ मील से अधिक है। क्या वहां या उसके निकटवर्ति ग्रामों में लाला जी से सुकुमार लावण्य वाला कोई युवक इस कन्या का वर नहीं मिल सकता था जो इतनी

दूर लड़की का पिता लाला जी के रडुवेपन को उतारने चला आया।

जिन जातियों में बारात जाने की प्रथा और विवाह सम्बन्धी सर्व क्रियाएं पंचबिरादरी की शाखी से वर और कन्या पक्ष के सम्बंधियों द्वारा होने का नियम है उस जाति में यदि कोई व्यक्ति स्वयं वर के घर आकर अपनी कन्या विवाहने को तयार होजाय तो उसमें अवश्य कोई न कोई भेद का कारण हो सकता है।

संसार में स्वार्थ, सत्ता, अधिकार, हुकूमत ऐसी वस्तुयें हैं जो धर्म न्याय, विवेक और इन्साफ को दबा देतीं हैं मनुष्य की इस स्वार्थ लिप्तता ने अबला कन्याओंका जीवन भी अत्यंत भार रूप बना दिया है। वह निर्जीव सम्पति या गाय भैंस, घोड़ा आदि क्रय विक्रय करने योग्य पशु तुल्य समझी जाने लगीं।

जहां पर पिता से अधिक वयस वाले बाबा की धन रूपी वेदी पर एक निर्दोष पवित्रहृदया कन्या का बलिदान दिया जाता है और फिर वहां अहिंसाधर्म प्रति पालक होने का अभिमान किया जाता है।

भरी है आज क्या मिल करके
रुई सब ने कानों में।
कफ़न के खौफ ने क्या
ठोंक दी कीलें ज़बानों में॥
लगा कर डाट बैठे हो तुम
सब अपने दहानों में।
रिफार्मर हो या सब
मिट्टी के पुतले हो दुकानों में॥

सज्जनों! विवाह का अर्थ वास्तव में उस खुशी की अवस्था से है जो स्त्री पुरुष के जोड़े को समाजिक नियमानुसार सम्बन्ध निश्चित होने पर स्वयमेव होती है। मनुष्य मात्र अनादि से समाज रूप रहता आया है, कारण तभी उसकी यथोचित वृद्धि हो सकती है अन्य प्राणियों में समाज की व्यवस्था नहीं है और इसीलिये उनके यहां नर मादी का जोड़ा यों ही बनता मिलता रहता है। विवाह कार्य एक समाजिक व्यवस्था मात्र है ताकि स्त्री पुरुष का सम्बन्ध न्यायानुमोदित रूप से हो जावे और स्वेच्छाचार की वृद्धि न होने पावे कोई-मानी से २—४ पैसे की हानि पहुंचाना तो पाप समझा जाता है और जहां जान बूझ कर किसी के सारे जीवन को खराब किया जाता है वहां कितना बड़ा पाप होगा और इस के बाद जो कुफल फलते हैं या जो ग्लानि या विवशता के कारण इन निरपराधियों से हो जाते हैं उनका शाप किन की गर्दन पर है?

कहना तथा करना परस्पर एक सा जिनका नहीं।
उनके कथन का भी भला कुछ मूल्य होता है कहीं॥

समाज सेवक—
जुगमन्दरदास जैन

नोट—समाजिक परिस्थिति कितनी भयंकर रूप धारण कर रही है इसपर निष्पक्ष हो विचार करना चाहिये। पंचायतों को दृढ़ता के साथ इसके सुधार का उपाय काम में लाना चाहिये।

—उ० सं०

१—भ्रूणहत्या पर मजिस्ट्रेट का फैसला ।

गत आषाढ़ शुक्ला १० वृहस्पतिवार के 'खुलना' नामक एक बँगला पत्र में हिन्दू समाज की कलङ्क-कथा प्रकाशित हुई है। इस सम्बन्ध में अदालत ने विचार करके सुविज्ञ और सहृदय मजिस्ट्रेट ने अपनी सम्मति में जिस निर्भीकता और सत्य-निष्ठा का परिचय दिया है वह अन्ध और स्वार्थी समाज के लक्ष्य करने योग्य हैः—

कुमारी एक विधवा रमणी है। यह समाज के भय से भ्रूणहत्या करके और बालक की मृत देह को फेंकने के कारण कचहरी में अभियुक्ता होकर आई थी। उसके विरुद्ध ताजीरात हिन्द की ३१८ धारा का चार्ज होने पर भी हतभागिनी ने अपना सब अपराध स्वीकार कर लिया। पाठकगण जानते ही हैं कि आइन की यह धारा उन्हीं पर लगाई जाती है जो भ्रूणहत्या करते हैं और छिपाकर मृत देह को फेंक देते हैं। इस धारा का अपराध प्रमाणित होने पर दो वर्ष का कारावास होता है।

वादी के पक्ष से गवाहों द्वारा यह प्रमाणित हुआ था कि इस घटना के पहिले उस रमणी को लोग सच्चरित्र समझते थे। उसके विरुद्ध कभी भी किसी प्रकार के दोषारोपण की बातें नहीं सुनी गईं।

प्रमाणों से मालूम होता है कि किसी लम्पट के जाल में फंसने के कारण हतभागिनी पथ भ्रष्ट हो गई है। प्रलोभन से हाथ न खींच सकने के कारण उसका सर्वनाश हो गया है।

विवेक की मार से विधवा ने सरलता से अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। सुविवेचक, सहृदय, मजिस्ट्रेट मनुष्य की दुर्बलता और अक्षमता को अच्छी तरह से जानते हैं। उन्हें मालूम हो गया कि जाल में फँसकर, बातों में आकर हतभागनी यह निन्दनीय कर्म कर बैठी है। यही कारण है कि उसने अपनी सम्मति में जो विचार प्रगट किये हैं वे समाज के विचार करने योग्य हैं। मजिस्ट्रेट ने फैसले में कहा हैः—

"किसी लम्पट पुरुष ने इस रमणी का अमूल्य सतीत्व धन नष्ट करके इसका सर्वनाश कर दिया है। यह रमणी उसके द्वारा प्रलोभित होकर, सामयिक उत्तेजना के वश होने पर, इस दुर्दशा पर पहुंची है। उस पुरुष ने इसका सर्वनाश ही

नहीं किया वरन, उसने उसे इस फौजदारी मुकदमें में भी फँसा दिया है। हिन्दू अथवा इस्लामी आइन के अनुसार इस तरह की घटना होने पर बहुत सम्भव था कि दुःख देकर उस पुरुष का वध कर दिया जाता। परन्तु वर्तमान (अंग्रेजी) आइन के अनुसार उसके विधान को मानकर वह पुरुष आज मुक्त है, और यह असहाया रमणी समाज के सामने, अपनी लज्जा ढांकने के लिए, वह निन्द्य कार्य करके आज अभियुक्ता है" आगे मजिस्ट्रेट लिखते हैं:—"ताजीरात हिन्द के कानून बनाने वाले को यदि भारतीय समाज के सम्बन्ध में रञ्चमात्र भी ज्ञान होता तो वह दण्ड विधि में ३१८ की दफा कभी न बनाता। यदि किसी अँग्रेज़ महिला के साथ ऐसा अत्याचार होता तो वे अपराधी पुरुष को दँड दिलाकर अपने को निर्दोष प्रमाणित किये बिना न छोड़तीं, परन्तु समाज उसे जातिच्युत कर देगा-इस भय से भारत-रमणी इस प्रकार के अत्याचार से छाती फट जाने पर भी मुँह खोल कर बात तक नहीं करती।"

मजिस्ट्रेट की सम्मति बहुत बड़ी है। वह यहाँ उद्धृत नहीं की जा सकती, परन्तु अन्त में हतभागनी के प्रति द्रवित होकर उनने अपनी सहृदयता का परिचय दिया है। उनने उसे जब तक अदालत न उठे तब तक कैद और पन्द्रह रुपये दण्ड किया है।

—परवार बन्धु

नोट-वस्तुतः इस देश में महा अन्धेर व्याप्त है। पुरुष हर हालत में क्षम्य है। विचारी अबलायें ज़रा २ सी बात के लिए समाज और राज्य दोनों ओर से दंडित हैं। रमणी हितैषी किसी काउन्सिल मेम्बर को इस ३१८ वीं धारा का यथोचित सुधार करवाना चाहिए।

—उ० सं०

२—बढ़ेले और स्त्री शिक्षा!

जिला मैनपुरी—एटा और इटावा प्रभृति में क़रीब सात सौ संख्या की यह बढ़ेलवाल जाति बसती है। इस ही जाति की सराय अगत वाली विधवा की बाबत समाचार पाठकगण गतांक में पढ़ चुके हैं। वैसे यह जाति अन्य छोटी-मोटी आस पास की जातियों से धन व प्रथा पालन में बड़ी चढ़ी है। व्यापार प्रधान जाति होने के कारण साधारण हिन्दी शिक्षा की बाहुल्यता रखती है, यद्यपि धर्मशास्त्रज्ञ और अंग्रेजी पढ़े लिखे व्यक्ति भी इसमें मिलते हैं। स्त्रियोंमें भी एक दो योग्य शास्त्रज्ञ हैं परन्तु इस सबके होते हुए भी द्वेष, विषाद और अंध विश्वास की माया इस जाति में अधिक बढ़ी हुई है। हम जानते हैं, यह दशा जैन समाज की अधिकांश जातियों में है। परन्तु यहां इसका तांडव नृत्य हमें खासा देखनेको मिलता है, परिणाम इसका यह है कि जाति में मत भेद ज़ोरों पर बढ़ रहा है। साधारण जनता समय की आवश्यक्ताओंको ज़ोरों से महसूस कर रही है। अन्य जातियों से विवाह सम्बन्ध करने व विधवाओं की दशा सुधारने को सब उत्सुक हो रहे हैं। परन्तु हाय शासन सत्ता का मद! इसने सब ठौर दारुण क्रन्दननाद फैला रक्खा है। यहां भी जाति के कतिपय पंच और चौधरी महाशय इसके आवेश में अपने प्रभाव से इस धार्मिक समयानुकूल परिस्थिति को कुचलने का प्रयत्न कर रहे हैं। यही दारुण दुःख है। हमें

किसी व्यक्ति विशेष अथवा पंचायत विशेष से न द्वेष है और न उपेक्षा है। हम प्रत्येक बढ़ेले का प्रत्येक जैनी को, धर्म, धन, बल विद्यामें बढ़ी देखना चाहते हैं और इसही भावना से उसका संगठन करना भी अवश्यक समझा था! परन्तु दुःख कि अन्धविश्वास आज सर्वथा सर्व और रोमांचकारी अनर्थ कर रहा है! पाठकगण यह जान कर अतीव दुःखित होंगे कि इस जाति की एक मुख्य पंचायत मैनपुरी है! सरायवाली विधवा का भाई यही का है! वह विधवा उसकी कन्याओं के जीवन सुधारने के लिए उन्हें आश्रममें भेजना चाहता था। परन्तु वह ऐसा करने से रोका गया है। यह कितना अनर्थ है? यही नहीं हमको विश्वस्तसूत्र से पता चला है कि मैनपुरी एवं अन्य स्थानों की कतिपय विधवा बहिनें आश्रमों में शिक्षा प्राप्त करने को उत्सुक हैं परन्तु पंचायती भय से लाचार हैं। सरायवाली विधवा की लड़कियों को आश्रम में भेजने से रोक कर महिलासुधार और शिक्षा प्रचार का मार्ग रोका गया है। परन्तु हमको विश्वास है कि निष्पक्ष जाति हितैषी इस दशा पर सच्चे दिल से विचार करके अपना मत प्रकट करेंगे। और फिर अबोध कन्याओं को बाल वृद्ध विवाह की वेदी पर बलि चढ़ने से बचायें! आश्रम में सर्व उप-जातियों की विधवायें रहती हैं-यह ठीक है। परन्तु इस में कुछ हानि नहीं है क्योंकि इस में न कुछ शास्त्र विरोध है और न प्रवृति विरोध! मेधावी प्रभृति आचार्योंने शास्त्रोंमें यह स्पष्ट लिखा हुआ है कि शुद्ध कुलाचार ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य इन तीन वर्णों में पंक्ति भोज ही नहीं बल्कि परस्पर विवाह सम्बंध करना सर्वथा उचित है। और प्रवृति को लीजिए तो आज इस जाति में अनेकों ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जिन्हों ने अग्रवालादि जैनियों के हाथ का नहीं बल्कि अजैनी ब्राह्मणों के हाथों का खाना खाया है और वह बराबर समाज में मान्य दृष्टि से देखे जाते हैं। ऐसी दशा में यह कारण कन्याओं और विधवाओं को आश्रमों में भेजने के लिए बाधक नहीं है। तिस पर यह ख़याल करना कि आश्रम में भेजकर हमारी जाति का अपमान होगा-बिल्कुल लचर दलील है। बड़े २ घरों की महिलायें भी आश्रमों में आज मौजूद हैं। इस कारण आश्रम में कन्याओं को जाने देने में कुछ भी जाति-अपमान नहीं है। जाति-अपमान तो उस अवस्थामें था जब लड़कियां और विधवा निराश्रित व दीन होरही थीं! और सब कोई कानों में तेल डाले बैठे थे। इन प्राणियों की रक्षा करने के लिये आखिर को विजातीय व्यक्ति ही अगाड़ी आए थे। इसलिए भाईयों, स्वार्थ और अंधविश्वासमें अपने आश्रित प्राणियों के मनुष्य जन्म निष्फल न जाने दीजिए। कोटि जन्म में यह मनुष्य भव हमको मिला है। इसमें आत्म ज्ञान प्राप्त करके अपना कल्याण करने दीजिए। बहिनों पर वैसे ही अत्याचार हो रहे हैं। उन्हें और अधिक न सताइए। उनको ज्ञान प्राप्ति में-शिक्षिता बनने में बाधा न डालिए। आश्रमों में जाने से रोक कर उनके ज्ञान लाभ में अंतराय डाल कर ज्ञानावर्णीय अशुभ कर्म का वृथा बन्ध न बांधिए! दया कीजिए--दयालु होनेका यदि दम भरते हो तबेचुओं में से आप आवश्यक सुधार-कन्याविक्रय वृद्ध विवाह का विरोध करके अलग हुए थे! आज स्वयं आप वही कर्म करने को उतारू हैं। यह न कीजिए। पुरुषाओं की मर्यादा का ख़याल कीजिए। निष्पक्ष भाइयों, तुम क्यों चुपचाप बैठे हो। शिक्षा का मार्ग खोलिए। आश्रमों में अपनी बहिनें जाने दीजिए। —उ० सं०

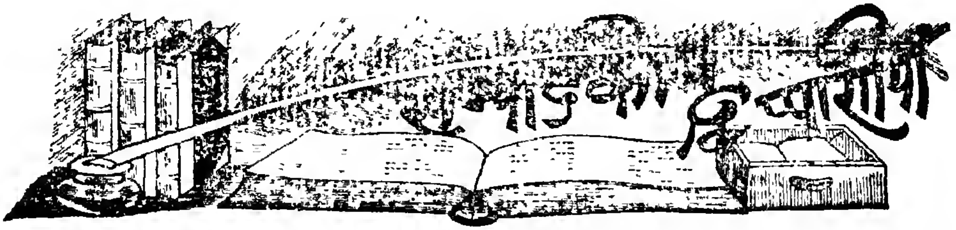

जैन जाति की नैया मंझधार में खेवटिया रत्नत्रय धर्म है।

यह बात अच्छी तरह पाठकों को विदित है कि यह जैन समाज अनैक्य, कुरीति, व्यर्थ व्यय, अज्ञान तथा मिथ्यात्व के महा गम्भीर समुद्र में पड़ी हुई गोते खा रही है, इसका पार कराने वाला रत्नत्रय-मयी जहाज है, क्या नर नारी गण ! इस अद्भुत शिव द्वीप पहुंचाने वाले जहाजका आश्रय न लेंगे। यह जहाज शिव द्वीप को जाते हुए मार्ग में अनेक सुखदाई स्थानों पर ही विश्राम करता है। यह कभी दुःखदायी स्थानों पर नहीं जाता है। जो अपना हित चाहते हैं उन्हें विवेक सरदार के साथ इस जहाज पर आना चाहिए।

विवेक द्वारा सत्य असत्य का निर्णय करके असत्य का त्याग और सत्यका ग्रहण करना उचित है। जो सत्याग्रही हैं, वृथा लोक दिखावे व लोगों की प्रशंसा या निंदा की परवाह नहीं करनेवाले हैं वे ही इस जहाज पर सुख से आसन जमा सकते हैं विवेक कहता है कि सत्यदेव, धर्म, गुरुकी श्रद्धा रखके उन ही की भक्ति किसी चाह को न रख केवल निजपना व अपना स्वरूप साधन के हेतु से कहे अपने साध्य को पहुंचने वाले महात्माओं के मुख्य मोक्ष साधक आदर्शरूप मूर्त्तियों के द्वारा नित्य भक्ति करो, तथा उनके गुण अपने आत्मा में विकाश को पावें ऐसी चेष्टा करो, श्रीजिनेन्द्र शांत, सुखी और ज्ञानी हैं आप भी शान्त सुखी और ज्ञानी बनने की चेष्टा करो। आत्म द्रव्य के आलम्बन को लेकर आत्मीक गुणों की भावना करो, एकान्त में बैठ कर शान्त चित्त हो राग द्वेष त्याग सामायिक या आत्मध्यान का अभ्यास करो, शुद्ध भोजन करके हिंसा, प्रमाद और रोगों से बचो अपने भावों में आकुलता न आजाने इसलिये न्याय से कमाए हुए द्रव्य के अनुसार खर्च करो। मिथ्या जाति व कुल का अभिमान त्यागो और कभी भी अपनी शक्ति से अधिक कर्ज लेकर विवाह शादी आदि में खर्च न करो। आमदनी से कुछ बचाते हुए खर्च करोगे तो सदा सुखी रहोगे। पुत्र पुत्री को अपने आधीन समझ उनको विद्या, धर्म, बल, व कला सम्पन्न बनाओ और प्रौढ वय में योग्य सम्बन्धों में उनका विवाह करो।

शास्त्र स्वाध्याय नित्य करके अपने ज्ञान को बढ़ाओ तथा संसार में जैन धर्म के तत्व ज्ञान का विस्तार करो जो जैन धर्म पर आसक्त हैं व इसकी प्रभावना के इच्छुक हैं उनको स्वामी समन्त भद्र और स्वामी अकलङ्क की तरह अपनी हानि करके भी जैन धर्म का प्रभाव फैलाना चाहिये। विद्वान परोपकारियों को इस धर्म की ध्वनि भारत के

कोने २ में पहुंचाने के लिये थोगी वैरागी त्यागी हो जाना चाहिये। कम से कम सातवीं प्रतिमा तक ब्रह्मचारियों के व्रत पालना योग्य है। जैसे महाराजा अशोक ने हजारों विद्वान् धर्म प्रचारकों को देश विदेश भेजकर धर्म का विस्तार कराया था वैसे ही अनेक विद्वान् त्यागियों को देश विदेश जाकर जैन धर्म का तत्त्वज्ञान फैलाना चाहिये. और बिना रोक टोक के जो जैन तत्त्व पर श्रद्धा लावें व मांस मदिरा त्यागें उसे ही जैनी बना लेना चाहिये। जो जैन बन्धु ग्रामों में रहते हैं और उपदेश नहीं पाते हैं उनको धर्मोपदेश का लाभ देना चाहिये। जिससे वे इस पवित्र जैन धर्म में बने रहें-जैन समाज की संख्या दिन पर दिन घट रही है इस प्रश्न को ध्यान में लेकर जिन कारणों से यह घटी हो रही है उन कारणों को बल पूर्वक रोकना चाहिये। योग्य वीर संतान पैदा हो इस लिये योग्य स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध होने की जरूरत है, अतएव जो भाई श्री जिनेन्द्र के चरणों के दास हैं उन सब से रोटी बेटी व्यवहार करना चाहिए। जातियों के बने रहते हुए भी उसी तरह परस्पर सम्बन्ध हो सकते हैं जैसे पहिले इक्ष्वाकु वंश और कुरु वंश आदि में होते थे।

स्त्रियों को पर्दे के भीतर से निकाल कर उनको शुद्ध नारी हवा देनी चाहिये व उनको स्वयं संसार का अनुभव लेकर आत्मोन्नति, धर्मोन्नति व देशोन्नति में भाग लेना चाहिये।

प्यारे नवयुवको! आप दृढ़ श्रद्धावान होकर ज्ञानी बनो और सत्य मार्ग पर चलो यही रत्नत्रय धर्म की नौका पर आरोहण है, और निर्भय होकर अनेक कष्ट सहकर भी इस नौका में संसार पथिकों को बुलाकर चढ़ाओ, जगत् में सुख शान्ति का विस्तार करो।

वीर पत्र

के घाटे के लिए अवश्य इस भादों मास में कुछ रकम बिजनौर भेजो जिससे यह आपकी सेवा सदा करता रहे।

—सम्पादक

१—पवित्र-पर्व और हम !

जैन धर्म का परम पवित्र पर्व दशलाक्षणी पर्व है। जैन नामका धारी अपने आप को विसारी चाहे वर्ष के सारे दिन उससे विमुख हुआ फिरता रहे परन्तु इन दिनों में वह तो श्री वीतराग भगवान के विशुद्धसन्मुख कार्य स्वाध्यायादि में बैठने को लाचार होता है! कुल संस्कार से ही वह वहां पहुंच ही जाता है और जान लेता है कि यह मनुष्य भव बड़ा दुर्लभ है। बड़े पुण्योदय से मिला है। आत्मोन्नति में संसार के प्राणियों से बड़े चढ़े होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसे सफल बनाना चाहिए। सन्मुख के नम्र शब्द उसके कर्णगोचर तो हो जाते हैं, परन्तु अपने साढ़ीयों के प्रत्यक्षादिचारुदी आचरण को देखकर वह उनको हृदयङ्गम नहीं कर सकता है। वह जान लेता है कि:—

"जैसे पुरुष कोउ धन कारण,
हीड़त दीप दीप चढ़ि यान।
आवत हाथ रतन चिन्तामणि,
डारत जलधि जानि पाषान ॥
तैसे भ्रमत भ्रमत भवसागर,
पावत नरशरीर परधान।
धर्मयत्न नहिं करत 'बनारसि',
खोवत वादि जनम अज्ञान ॥"

परन्तु जब अपने इर्द गिर्द दृष्टि दौड़ाता है तो असलियत को नहीं पाता है। बड़ी भक्ति से पूजा पाठ और शांत शास्त्र सभा और उपदेशी भजन होते भी वह देखता है और कुछ प्रभावित होता है; परन्तु योंही अपने साथियों को मन्दिर के बाहर दस-धर्म के विपरीत मान मद में सना देखता है—वृथा कुछ अभिमान या धन अथवा जन के गर्व में चूर देखता है तो समझ लेता है कि यह धर्म की बातें सब सुनने के लिए और सिर्फ उसही समय तक के लिए हैं जब तक वह कही और सुनी जायें! अभाग्यवश शांत-चन्दन-वाटिका में आकर भी वह अपने संतप्त हृदय को शांत नहीं कर पाता है! यही नहीं जिन श्रद्धालु जैनियों के आचरण को देखकर वह धर्म के मर्म को समझने में असमर्थ रहता है वह स्वयं परम शांति और सुख से वञ्चित रहते हैं। आज जैन समाज में चहुं ओर हाहाकार मच रहा है। पण्डित गण अपने पाण्डित्य में चूर हैं-बाबू साहब अपनी शान की आन में व्यस्त हैं! सेठ गण पैसे की धुन में इन सबसे अगाड़ी बढ़े मस्त हैं! फिर भला भोली ज्ञान के भान से रहित जनता किस तरह आदर्श चरित्र बना सकती है? फिर भला क्यों न दुःखों के पहाड़ हम पर पड़ते रहें? कुमारों और विधवाओं के क्रन्दन नाद हमारे शान्त जीवन को नष्ट करते रहें? समाज में व्यभिचारादि हिंसाकर्म क्यों न दिन दूने बढ़ते रहें? भाइयो, यह नरजन्म अमूल्य है। फिर मिलना कठिन है! आप ज्ञानवान हैं। इसे सफल बनाइए। दशलाक्षणी के पवित्र दिनों में अपना सारा समय धर्म के विचार में बिताइए। इन दिनों सांसारिक बातों से मुंह मोड़ आत्म सुध लीजिए। लोभ कषाय को हनने के लिए कारबार बन्द रखिये और मंदिर जी में भी वृथा की गपशप या आपसी खैंचा तानी में समय नष्ट न कीजिए। दश दिनों में आत्मोन्नति के साधन जुटाइये! धर्म रस से अपने आपको तथा अपनी संतान को साहसी, धीर और पराक्रमी बनाइए! स्वाध्याय और सामायिक के अभ्यास से अपने भ्रम को नष्ट कर डालिए। फिर अनन्त चतुर्दशी—कलह चतुर्दशी न बनाकर परम शांत चतुर्दशी बनाइए। उस रोज़ अपने कृत पापों की आलोचना वर्ष भर में एक दफे तो कर लीजिए। उत्तम हो कि सब भाई मिलकर पतितपावन वीतराग प्रभु के समक्ष आलोचना-पाठ को ज़ोर से पढ़ कर अपने सब दोषों की आलोचना कर लें। फिर प्रतिपदा के रोज सब को अपने सच्चे दिल से वैर भाव को भुला देना चाहिये परस्पर प्रेम बढ़ाने के लिए उस रोज सबको प्रेम-भोज में इकट्ठे होकर भोजन करना चाहिए। गऊ-वत्स-वत् प्रेम का नज़ारा इस एक रोज़ तो दिखा देना चाहिए! इस ही क्रम से हम इन पवित्र दिनों को सार्थक कर सकते हैं।

२—क्षमा वाणी

वर्ष भर में प्रतिपदा का यह वह सुनहरा दिन है जो संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाना चाहिये। संसार में यह सम्भव नहीं है कि प्राणी से किसी न किसी रूप से अन्य प्राणियों को मन, वचन, काय द्वारा पीड़ा न पहुंचे। मनुष्य स्वभाव से ही असद् व्यवहार की ओर शीघ्र लपकता है। और कषायों के आधीन हो प्राणियों को दुःख पहुंचाता है। वर्षभर में यदि कोई समय भी उसके इस निरंकुश व्यवहार पर अंकुश-रूप आकर न पड़े तो संसार में अनर्थ और अनैक्य, अधर्म और

अत्याचार दुःख और प्रतिहिंसा का साम्राज्य फैल जावे। आज इस उपेक्षा से चहुंओर यही परिस्थिति दिखाई पड़ रही है। जैनाचार्यों ने पहिले ही वस्तु स्वभाव के अनुसार मनुष्यों के लिये वर्ष भर में एक मास-भाद्रपद-पवित्र बना दिया। उस में उन्हें आत्म साधन के उपायों की ओर रुजु किया। जब आत्मा अस्खलित के मर्म को जान गई तो फिर प्रतिज्ञा रूप में आगामी परस्पर प्रेम रखने की सनद रूप नकशा उसके हृदय पर हो जाय इसलिये विश्व व्यापी 'क्षमावाणी' का दिन(Universal forgiveness Day) नियत किया। इस दुनियां से वैर का प्रतिहिंसा का अन्त हो जाना चाहिये। प्रेम धारायें बह निकलना चाहिये यह इस दिवस की शिक्षा थी-उद्देश्य था। अभाग्यवश स्वयं जैनियों ने ही इसके महत्व को घटा दिया। यह भी कोरी रस्म रह गया। कहां तो आचार्यों का वह उच्च आदर्श और कहां इनका यह नीच आचरण! चाहिये तो यह था कि जहां भारतियों ने इस को भुलाया है वहां अपने चारित्र से उनके निकट पहुंच कर प्रेम दर्शा कर इस का पुनः प्रचार संसार में कर देते! पुनः संसार में यह पुण्य भावना फैला देते, लोगों के मुख से यह कहलवा देते:—

"खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणवि।"

'सब जीव मुझे क्षमा करो-मेरे उनको प्रति क्षमा भाव है-सर्व प्राणियों में मैत्री का साम्राज्य हो, वैर कहीं भी दिखाई न पड़े।' यही सच्चे दिल से आज प्रत्येक जैनी को पालन करना आवश्यक है। रिवाज तो होता ही है-सब कुछ होता है-परन्तु उससे कुछ नतीजा नहीं! सफाई और सचाई बड़ी चीज है। उन ही का अवलम्बन लीजिए। इस पवित्र 'क्षमावाणी' के दिन मैत्री-प्रमोद कारुण्य की छटा फैलने दीजिये। 'वीर-संघ' द्वारा-हमारे द्वारा जिस किसी महानुभाव के परिणामों को ज्ञान अथवा अज्ञातावस्था में, कर्तव्य पालन अथवा कर्तव्यावहेलना में गत समय में जो पीड़ा पहुंची हो उसके लिये आज के पवित्र दिन यह 'वीर-संघ' और हम विनम्र हृदय से बड़े अनुरोध से उसकी क्षमायाचना करते हैं। सन्मुखः—

"प्यारे! आज नवीन भाव से मेल हुआ मेरा तेरा।

* * *

तेरे अटल प्रेम बन्धन में मुझे कुछ भी चाह नहीं।
एक अपाङ्ग दृष्टि हो तेरी फिर कुछ भी परवाह नहीं॥

—उ० सं०

आवश्यकता

श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम, जयपुर के लिये एक योग्य ग्रेजुयेट या अण्डर ग्रेजुयेट की आवश्यकता है जो कि अङ्गरेज़ी व गणित विषय में दक्ष हो। वेतन योग्यतानुसार। प्रार्थनापत्र मय प्रमाणपत्र आदि सहित—"श्रीयुत रा०ब० बा० नांदमल जी अजमेर, मंत्री आश्रम, गवर्नमेन्ट पेंशनर, अजमेर" के पास ता-१५सितम्बर के पहिले२ पहुंच जाने चाहिये। जैनियों के प्रार्थना पत्र पर सबसे पहिले ध्यान दिया जावेगा। केशरलाल अजमेरा जैन, मंत्री-परीक्षा बोर्ड जयपुर.

Reg. No. A. 1271.

आप हमारे पवित्र उद्देश्यों को कुचलेंगे

यदि आपने इस समय वीर की सहायता न की, क्योंकि वीर को जैसी आवश्यकता इस समय आपकी सहायता की है वैसी कभी नहीं होगी। निम्न प्रकार आप सहायता कर सकते हैं:---

(१) स्वयं ग्राहक बनकर, यदि अब तक नहीं हैं।

(२) अन्य मित्रों को ग्राहक बना कर।

(३) सार्वजनिक स्थानों पर वीर का प्रचार करके।

(४) शुभ अवसरों पर वीर की धन से सहायता करके।

हम अपने पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि यदि आपने वीर की समाज सेवा उपयोगिता और सस्ते पन को ध्यान रखकर इस समय सहायता करदी तो अवश्य ही वीर की जड़ जमजायगी और श्री वीर शासन का प्रचार करने में व समाज सेवा में वीर शीघ्र ही सफल होगा। ---प्रकाशक।

परम हर्ष !!!

"वीर" के ग्राहकों को विराट् उपहार !

"वीर" के आगामी (तृतीय) वर्ष के ग्राहकों को "सत्यमार्ग" नामक एक परमोपयोगी वृहद् पुस्तक उपहार में बिल्कुल मुफ्त दी जायगी। यह पुस्तक करीब ४०० पृष्ठ की होगी और करहल निवासी श्रीमान ला० फूलजारी लाल जी साहब जैन रईस व ऑ० मजिस्ट्रेट की ओर से प्रगट होगी। लाला जी इस पुस्तक को बहुत दिन से लिखवाने की कोशिश कर रहे थे। इस में गृहस्थ के प्रारंभिक कर्तव्यों का विवेचन तुलनात्मक ढंग से किया गया है सब धर्मों से यह सिद्ध कर दिया गया कि पंचाणुव्रतों का पालन करना और एक सर्वज्ञ वीतराग प्रभु की उपासना करनी लाजमी है। बड़े गहन परिश्रम और अनेकों ग्रंथों के मन्थन करने के उपरान्त यह पुस्तक पूर्ण होगी। और अपने ढंग की एक ही रचना होगी। इसकी उतनी ही प्रतियाँ छपवाई जायँगी जितने "वीर" के ग्राहक होंगे। इस लिए यदि आप ग्राहक नहीं हैं तो फौरन होजाइए।

सोती जगदीशप्रसाद ने दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छापा।

वर्ष २ | १५ सितम्बर सन् १९२५ ई० | संख्या २२

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

वीर

श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र ।

ऑन० सम्पादक :—
जैनधर्मभूषण, धर्मदिवाकर, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

ऑन० उपसम्पादक :—
श्री कामताप्रसाद जी

हर्ष ! हर्ष !! हर्ष !!!

वीर के ग्राहकों को विराट उपहार

वीर के आगामी (तृतीय) वर्ष के ग्राहकों को एक परमोपयोगी वृहत् ४०० पृष्ठों की पुस्तक

सत्य-मार्ग [illegible] बिल्कुल मुफ्त मिलेगी।

इसमें गृहस्थ के प्रारम्भिक कर्त्तव्यों का विवेचन तुलनात्मक ढङ्ग से किया गया है। बड़े गहन परिश्रम और अनेक ग्रन्थों का मथन करने के उपरान्त यह पुस्तक पूर्ण हुई है और अपने ढङ्ग की निराली और अमूल्य रचना है।

आगामी वर्ष [illegible] विशेषाङ्क भी मिलेगा।

नवीन ग्राहकों को शीघ्र ही अपने नाम २॥) वार्षिक मूल्य भेजकर दर्ज रजिस्टर करा लेने चाहियें। क्योंकि पुस्तक कीमती होने के कारण केवल परिमित संख्या में ही छपवाई जायगी अन्यथा पछताना पड़ेगा।

प्रकाशक।

ऑन० प्रकाशक
राजेन्द्रकुमार जैन, बिजनौर यू० पी०

हर्ष !   हर्ष !!   हर्ष !!!

दिवाली पर 'वीर' का विशेषाङ्क ।

इस वर्ष भी हमने दीपमालिका के उपलक्ष्य में बहुत सुन्दर और उपयोगी सचित्र वीर का विशेषाङ्क निकालने का निश्चय किया है। अभी से इस के लिये तय्यारियां होरहीं हैं । इस में अन्य चित्रों के अतिरिक्त एक अत्यंत मनोहर तिरंगा चित्र श्रीपावापुरिजी का भी होगा जिसको कि बड़े परिश्रम और व्यय करके कलकत्ते में छपवाया गया है। जिन ग्राहकों का चन्दा निर्वाण अङ्क पर समाप्त होता है (ग्रा०नं०६०१ से लेकर६३७ तक) उनको चाहिये कि आगामी वर्ष का २॥) मूल्य मनी-आर्डर द्वारा भेजदें। अन्यथा वी० पी० भेजने पर यह अंक देर से मिलने के अतिरिक्त व्यय भी अधिक पड़ेगा और हम को दिक्कत पड़ेगी। अन्य सज्जन जो ग्राहक होना चाहें उनको भी शीघ्र अपना नाम २॥) भेजकर दर्ज रजिस्टर करा लेना चाहिये। क्योंकि परिमित संख्या में ही यह अंक और उपहार ग्रंथ छपेगा। गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी हमको इस अंक की तय्यारी के कारण २४वां अंक बन्द रखना पड़ेगा । आगामी वर्ष का उपहार भी आशा है इसी अंक के साथ हम ग्राहकों को भेंट कर सकेंगे।

गजेन्द्रकुमार जैनी.
प्रकाशक 'वीर'
बिजनौर ।

श्री महावीराय नमः ।

वर्ष २ } बिजनौर, आश्विन कृष्णा १३ वीर सम्वत् २४५१ १५ सितम्बर, सन् १९२५ { अङ्क २२

* वीर जिनेश *

जयतु जय श्रीमत् वीर जिनेश ।
स्याद्वाद नय कञ्ज विकाशक, प्रबल-प्रचण्ड दिनेश ।
केवल ज्ञान लक्ष्मी भूषित, शिव कामिन प्राणेश ॥

अजय वीर मकरध्वज, विजयी महावीर अखिलेश ।
मिथ्यावादी नष्ट किए, दे अमृतमय उपदेश ॥

भक्तियुक्त, पद पद्म, अहर्निश यजत नरेश सुरेश ।
कृपासिंधु ! आओ ! हृदयों में सत्वर करहु प्रवेश ॥

—"हरसख"

बाल्य विवाह की पुष्टि ।

"जैन मित्र" के किसी अंक में श्रीयुत ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी ने बाल्यविवाह के निषेध रूप में 'वाग्भट्ट' का कोई श्लोक लिखा था कि जिसका मतलब यह था कि १६ वर्ष की स्त्री व २० वर्ष के पुरुष के संगम से बलवान संतान उत्पन्न होती है। इस पर हिन्दी 'जैन गज़ट' अंक ४३ में श्रीयुत पं० श्रीलालजी ने 'बाबूजी का प्रलाप' शीर्षक लेख में लिखा है कि इस श्लोक में न कहीं विवाह का शब्द है न कन्या का लफ्ज़ है-इस लिए यह श्लोक इस बात को नहीं बतलाता कि विवाह १६ वर्ष की कन्या व २० वर्ष के वर का होना चाहिए। इसमें केवल बली संतान होने का जोड़ा बतलाया है। लेकिन पंडितजी की यह दलील एक महज़ लफ्ज़ी बहस है। केवल विवाह और कन्या का शब्द न होने से नहीं कहा जा सका कि इस श्लोकसे बाल्य विवाहका निषेध नहीं होता। बल्कि यह मात्र बली संतान् होने का जोड़ा बतलाया है; क्योंकि बली संतान होने का जोड़ा तो १८-२२ साल या २० व २५ साल का भी हो सका था। अतएव इस श्लोकका मतलब इसमें विवाह व कन्या का शब्द न होते हुए भी यह जरूर निकल सका है कि विवाह १६ व २० वर्ष के लड़की-लड़के का होना चाहिए। फिर पंडित जी लिखते हैं कि "वाग्भट" ने फलां फलां श्लोकमें मांस मदिरा, मधु की सराहना की है। यह दिगम्बर जैन आचार्य किस तरह हो सके हैं ! सो यदि वाग्भट ने इन पदार्थों की सराहना की है तो बिलाशक वह जैनाचार्य न होंगे ! ब्रह्मचारी शीतलप्रशाद जी ने ग़लती खाई होगी ! * फिर पं० जी लिखते हैं कि "आप यहाँ कहेंगे कि यह ग्रन्थ वैद्यक का है। इस में तो जो गुण जिस पदार्थ का होगा वैसा उसका गुण-अवगुण लिखा जायगा। इस में धर्म से सम्बन्ध ही क्या ? तो इस बात को हम भी मानेंगे कि यह धर्म शास्त्र नहीं है और न धर्म से सम्बन्ध रखने वाली बातों का इसमें कथन है !" लेकिन मैं तो यही कहूंगा कि पड़ा यह वैद्यक ग्रंथ हो, अगर 'वाग्भट' जैनाचार्य थे तो उन को मांस, मदिरा, मधु की सराहना इस में नहीं लिखनी चाहिए थी। और अगर उनके ग्रन्थमें इन पदार्थोंकी सराहना लिखी हुई है तो मालूम होता है कि वह जैनाचार्य नहीं थे। हाँ,,अगर द्वादशांग में वैद्यक का प्रकरण है और उस में भी इन पदार्थों के गुण दिए हुए हैं। मुझ को इस की बाबत कुछ मालूमनहीं। तो जैसा कि पंडितजीने लिखा है, बिलाशक यह कहा जासका है कि चूंकि यह वैद्यक ग्रंथ है इसलिए इसके कर्त्ता के लिए जैनाचार्य होते हुए भी इन पदार्थों के गुण

---

* वाग्भट का हस्तिलिखित ग्रंथ अजैन व्यक्तियों द्वारा ही प्रकट हुआ है-इस लिए संभव है कि इसमें यह श्लोक टीकाकार या किसी अन्य व्यक्ति ने रख दिए हों। जैन भंडार की किसी प्रति से इस का मिलान कर के निर्णय होना आवश्यक है।

—स० सं०

लिखना ना मुनासिब नहीं है। बल्कि ब जाहिर तो किसी जैनाचार्य का अपने वैद्यक ग्रंथ में भी इन पदार्थों के गुण में प्रगट करना बेजा ही मालूम होता है।

आगे चलकर पं० जीने कुछ बालविवाहकी पुष्टि में लिखा है। जैन विवाह पद्धति, त्रिवर्णाचार, भद्र बाहु संहिता का हवाला देकर यह लिखा है कि कन्या का विवाह रजस्वला होने से पहले १२ वर्ष की उमर में कर देना चाहिए। जो माता पिता रजस्वला कन्या को अपने घर रखते हैं वे पापी हैं। सो इसके लिए अव्वल तो बाल विवाहकी उत्पत्ति का कुछ हाल दे देना मुनासिब मालूम होता है। अब भारतवर्ष में सब को यह बात मान्य है कि बाल विवाह मुसलमानों के अहद सलतनतसे शुरू हुआ है उस जमानेमें मुसलमान हिन्दुओं की लड़कियों को जबर दस्ती छीन कर अपनी शादी उन से करने लगे थे। लेकिन वे विवाहिता स्त्रीको नहीं लेते थे। उस वक्त बुद्धिमान् और दूरदर्शी हिन्दू पंडितों ने हिन्दु लड़कियों को मुसलमानों के हाथों से बचानेके लिए यह उपदेश दिया कि लड़की की शादी रजस्वला होने से पहले कर देनी चाहिए। माता पिता का रजस्वला कन्या को अपने घर में रखना पाप है। और इस ही आशय के श्लोक धर्म पुस्तकों में लिख दिए। और इस बुद्धिमत्ता और दूर दर्शिता को जैन भट्टारकों व पंडितों ने भी हाथ से नहीं दिया। चुनांचे इसही आशय के श्लोक उन्होने भी अपनी रची हुई धर्म पुस्तकोंमें लिख दिए। और इस अच्छी तरकीबने उस वक्त बहुत अच्छा काम किया लोग अपनी लड़कियों की शादी रजस्वला होनेसे पहले ही करने लगे कि जिससे वे गैर मज़हब वालों के हाथों से बच गईं। उस वक्त से ही यह रिवाज बालविवाह का जारी हो गया। पं० जी लाल जीने जो जैन विवाह पद्धति आदिका हवाला दिया है, यह सब तीनसौ-चारसौ वर्ष के भीतर की रची हुई हैं। 'भद्र बाहु संहिता' की बाबत एकबार पं० युगलकिशोर जी सरसावा निवासी ने उस के श्लोकों की रचना आदिक से ही यह बात साबित की थी कि यह ग्रंथ भद्रबाहु स्वामी का रचा हुआ नहीं होसकता, बल्कि किसी और व्यक्ति ने उन के नाम से यह ग्रंथ रच दिया है। और आज तक किसी ने पं० युगलकिशोर जी उन दलीलों का निराकरण नहीं किया है। अतएव 'भद्रबाहुसंहिता' भी संभवतः मुसलमानों के उस ही जमाने का जब कि वे हिन्दू लड़कियों को जबरदस्ती छीनकर शादी कर लेते थे बना हुआ है। और पं० जी जो त्रिवर्णाचार' का प्रमाण देते हैं अव्वल तो वह भी प्रमाण रूप में तीन सौ साल का बना हुआ है। दूसरे सुना जाता है कि उस में बहुत सी मिथ्यात्व पोषक व गन्दी व अश्लील बातें लिखी हुई हैं। क्या पं० जी ऐसे ग्रंथ को प्रमाणीक मानते हैं? अगर कहा जावे कि उसमें बहुत सी अच्छी बातें भी तो लिखी हुई हैं सो अगर ऐसा है तो पंडित महोदयों का कर्तव्य है कि वे मिथ्यात्व पोषक-गन्दी व अश्लील बातें इस ग्रंथ में से निकाल कर उसको शुद्ध करें ताकि यह जैन धर्म की हंसी व अप्रभावना का कारण न रहे।

कतिपय महाशय कह देते हैं कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चार पुरुषार्थ हैं सो इस ग्रंथ में काम पुरुषार्थ की विधि भी बतलाई गई है, इस में हर्ज ही क्या है। सो मेरी राय में यह दलील ठीक नहीं

अव्वल तो यह संसारी जीव विषय वासनाओं में ऐसा सख्त फँसा हुआ है कि उसको काम पुरुषार्थ की विधि का उपदेश देने की जरूरत ही नहीं है। काम पुरुषार्थ के लिए तो यह खुद भी खूब होशियार और उत्साही पाया जाता है। दूसरे अगर काम पुरुषार्थ की विधि बतलाने की ज़रूरत भी थी तो उसको धर्म शास्त्र में नहीं लिखना चाहिए था। इसके लिए एक अलग ग्रन्थ कि जिसका धर्म से कुछ सम्बन्ध न पाया जाता बना देते।

और यह तो एक दरमियानी बात थी। अब इन विवाह पद्धति आदिक पुस्तकोंमें जो यह लिखा है कि रजस्वला कन्या को घर में रखना पाप है; सो बिलाशक जिस ज़माने में यह पुस्तकें लिखी गई थीं उस ज़मानेमें ऐसा लिखना गलत नहीं था, बिल्कुल ठीक था। वस्तुतः उस ज़मानेमें रजस्वला कन्या को घर में रखना पाप ही था, क्यों कि ऐसा करने से उस वक्त के मुसलमानों को अत्याचार व पाप करने का मौक़ा मिलता था। वास्तव में इन पुस्तकों के रचने वाले बड़े विद्वान व दूरदर्शी थे उस वक्त की ज़रूरत को देख कर उन्होंने ऐसा नियम क़ायम किया यह उनकी धर्मज्ञता व बुद्धि मानी ज़ाहिर करता है। लेकिन इस के यह मानी नहीं हैं कि हम को लकीर का फकीर बना रहना चाहिए। हम को अब इस ज़मानेकी ज़रूरत देखनी चाहिए। हम को यह देखना चाहिए कि आया अब इस नियम की पाबन्दी करने से पाप की बढ़वारी होती है या कमी—आया अब इस नियम पर अमल करने से हमारी सन्तान की शारीरिक व मानसिक उन्नति को नुकसान पहुंचता है या फायदा।

एक और बात है कि जिस ज़माने में यह विवाह पद्धति आदिक पुस्तकें लिखी गई हैं संभव है उस ज़माने में कन्यायें १३ साल की उम्र में रजस्वला होती हों क्योंकि इन पुस्तकों में जैसा कि प०जी लिखते हैं यह लिखा है कि कन्या का विवाह रजस्वला होने से पहले १२ साल की उम्र में कर देना चाहिए। लेकिन आप जानते हैं कि आजकल ज्यादातर कन्यायें ११साल या उससे पहले रजस्वला हो जाती हैं जिसके यह मानी होते हैं कि अब कन्या का विवाह १०साल से कम उम्र में होना चाहिए। फिर बतलाइए यह बाल विवाह नहीं हुआ तो क्या हुआ? बाल विवाह की ज़रूरत जाती रहने के बाद में भी इस भारतवर्ष में बाल विवाह होता रहा उसका ही यह फल है कि रजस्वला का काल १३साल की उम्र से ११व१०साल की उम्र आ गया और अगर अब भी यह रसम जारी रही तो रजस्वला काल और नीचे को उतर आयेगा। रजस्वला कन्या को घर में रखना पाप है, इस नियम की ज़रूरत रफा हो जाने के बाद भी पाबन्दी करने का ही यह नतीजा है कि आज इस भारतवर्ष में दो दो-चार चार-पांच पांच साल की विधवायें मौजूद हैं। लोग रजस्वला होने से पहले जिस क़दर जल्दी हो सके कन्या का विवाह कर देने को धर्म समझने लगे इसी लिए आठ आठ-नौ नौ सालकी कन्याओं के विवाह खूब हुए और होते हैं। और लड़के भी ज़्यादातर कन्याओं की उम्र के बराबर या छोटे या ज्यादा से ज्यादा वर्ष महिने बड़े पसन्द किए जाते हैं। उस का ही यह असर हुआ कि लड़कों में वीर्य की उत्पत्ति १२ या १३ साल की उम्र में होने लगी और उनकी कामवासनायें छोटी उम्रमें ही जागने लगीं। क्यों इस ज़माने

में अक्सर लड़कियें प्रसूति रोगों में जकड़ी पाई जाती हैं? कमज़ोर हो जाती हैं? कमर झुकाकर लंगड़ाती चलती हैं! क्यों उनके अक्सर तो संतान पैदा नहीं होती और जो होती है तो अक्सर जिगर पसली व सूखे आदि रोगों के वशीभूत हो मर जाती हैं? क्यों लड़कियें इस तरह दो चार बच्चे पैदा होने के बाद खुद मरजाती हैं? और मर्दों को दूसरे-तीसरे विवाह की ज़रूरत पड़ती है? या क्यों लड़कों की तन्दुरस्ती खराब होकर लड़के कमज़ोर हो जाते हैं? व जल्द मरजाते हैं और अपनी बालविधवायें घर में बिठला जाते हैं! क्यों आज कल जवान मर्द-औरतों को दिक़ का मर्ज़ ज्यादा होता है? क्यों इस ज़माने में शरीर कमज़ोर नज़र आते हैं?व उमरें कम होती हैं? अक्सर ४०—४५ साल की उम्र में ही मौत आ जाती है। इन सब खराबियों का कारण, रजस्वला को घर में रखना पाप है, यही नियम है। बाज़ आदमी कह देते हैं कि आजकल जीव ही ऐसे पुण्यहीन आकर जन्म लेते हैं कि जिन के जिस्म कमज़ोर और उमरें कम होती हैं। लेकिन मैं तो यह कहूंगा कि अगर आप यहां जन्म लेने वाले जीवों के लिये ताक़तवर वीर्य व रज का स्थान तैयार रक्खें तो ताक़तवर व ज्यादह उमर वाले जीव ही यहां आकर जन्म लें। बात यह है कि जब जीव मरते वक्त एक शरीर को छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करताहै तो वह ऐसे ही स्थान की ओर खिंचता है कि जहां वह अपने बांधे हुए कर्मों का फल अच्छी तरह भोग सकें। बस अगर हम अपनी सन्तान की शादी ऐसी उमर्में कि जब उनके रज व वीर्य पुख्ता हो जायें करनी शुरू करदें तो (किसी खास हालत को छोड़ कर) ज़रूरी बात है कि उनके संयोग से सन्तान ताक़त वर व अच्छी उम्रवाली पैदा हो अर्थात् उनके संयोग करने पर उनके यहाँ ऐसे ही जीव खिंचकर आयेंगे जिन्होंने ताकतवर व अच्छी उम्रवाले होने के कर्म बांधे हैं। अब जो बारसौ पाँचसौ साल से बाल-विवाह होता चला आरहा है—इससे नसल बहुत कमज़ोर हो गई है और वीर्य व रज नाकिस होकर ऐसी कमज़ोर होगई है कि न लड़के अपनी काम-वासनाओं को काबू में रख सकते हैं जिसकी वजह से वे अक्सर बहुत जल्द बुरी सोहबत में पड़कर बुरी आदात के शिकार हो जाते हैं। और न बूढ़े आदमी ही अपनी इन्द्रियजनित विषयवासना को दबा सकते हैं कि जिससे बालविधवाओं की संख्या दिन व दिन बढ़ती जाती है। जिनकी खराब दुर्दशा देखकर बाज़ सज्जन विधवाविवाह जैसी न करने काबिल रस्म को भी ज़बान पर लानेकी हिम्मत करने लगते हैं। मैं विधवाविवाह के सख्त खिलाफ हूं। एक बार मैंने उसके खंडनमें एक छोटा सा उर्दू में ट्रैक्ट भी लिखा था। विधवा विवाह से जो शील का उच्च आदर्श है वह नीचे गिर जायगा। औरतों के दिलसे शील और सच्चरित्रता के खयालात जाते रहेंगे, पति प्रेम व पतिसेवा की गंध उनके हृदयमें नहीं रहेगी। जहाँ किसी औरत को अपने पतिसे कुछ नाराजगी हुई वह उस के मारने की फिकर किया करेगी। सारांश कि विधवा विवाहसे बहुत बड़ी खराबियां पैदा हो जायँगी। मैं जानता हूं-विधवाओं की दशा बड़ी खराब है। कतिपय बदचलन भी होजाती हैं। गर्भ गिराती हैं। और इनकी संख्या दिन व दिन बढ़ती जाती है। परन्तु इसका इलाज विधवाओं की बखूबी हिफ़ाज़त व निगरानी करना-उन के

लिए खाने पीने के खर्च की काफी सहूलियत रखना उनको धर्म में लगाना, उनको आविकाश्रमों में रखना और बाल विवाह, वृद्धविवाह अनमेल विवाह व कन्या विक्री को बन्द करना है, न कि विधवा विवाह जारी करना। मगर अफसोस के साथ देखा जाता है कि हम लोग बाल विवाह, वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, कन्या विक्री की चश्मपोसी करते हैं। उनकी ओर मुलायमियत की दृष्टि रखते हैं, बल्कि बाज़ औक़ात उन की पुष्टि करने लगते हैं। और जो लोग इन बद रसूमात के नुकसानात बयान करते हुए विधवाओं की ज्यादती व उनकी ख़राब हालत का ज़िक्र करते हैं उनपर फौरन विधवा विवाह चाहने का इलज़ाम लगा देते हैं। मेरे ख़याल में दूसरों पर विधवा विवाह का इलज़ाम लगाने, दूसरों की निन्दा करने, दूसरों पर आक्षेप करने और उनको गालीगलोज से याद करने से कुछ फ़ायदा नहीं है वह तरीका विधवा विवाह रोकने में कुछ कारगर नहीं होगा। बल्कि जिन कारणों से विधवा विवाह जारी होने की संभावना है उन कारणों को दूर करना चाहिए अगर हमको यह मन्ज़ुर है कि हमारे दिगम्बर जैन समाज में विधवा विवाह जैसी पापमयी व धर्मविरुद्ध रस्म जारी न हो तो हमको चाहिये कि बाल विवाह—वृद्धविवाह—अनमेल विवाह—कन्याविक्री को भी विधवा विवाह की तरह पापमयी व धर्म विरुद्ध समझें। क्योंकि यह बद रसूमात विधवाओं की उत्पत्ति के कारण हैं इन कारणों के दूर होने से न विधवाओं की अधिक उत्पत्ति होगी—न कोई विधवाविवाह का ज़िक्र करेगा। और अगर हमारे पंडित साहबान इस बात का ऐलान करदें कि बालविवाह, वृद्धविवाह अनमेल विवाह विधुर विवाह, कन्या विक्री भी विधवा विवाह की तरह ही पाप के काम धर्म विरुद्ध हैं तो ना मुमकिन है कि यह बद रसूमात समाज दूर न हो जायँ।

पं० श्रीलाल जी ने अपने लेखमें ऐसा भी लिखा है कि कुछ कन्या-वर का संयोग विवाह के बादही तो हो नहीं जाता। द्विरागमन की रस्म भी तो पहले से जारी है। लेकिन क्या आपको मालूम नहीं कि विवाह होने पर वर-कन्याके ख्यालात ही कुछ ऐसे बदल जाते हैं कि जिससे वे शिक्षा ही अच्छी तरह प्राप्त कर सके हैं और न विषयवासनाओंको ही दबा सके हैं। बल्कि अकसर विवाह का तज़करा सुनकर विवाह कराने का शौक ही उनके ख्यालात को बिगाड़ देता है और जमाने की हालत के लिहाज से द्विरागमन की रस्म को तो अब सब बुद्धिमान आदमी नापसन्द करते हैं। फिर फिज़ूल ख़र्चों दूर करने के लिहाज से भी इस का बन्द करना ज़रूरी मालूम होता है। पंडित जी को ऐसी पोच और लचर दलील देकर बालविवाह की पुष्टि नहीं करनी चाहिए थी।

विनीत—
ऋषभदास जैन० बी० ए०
वकील, मेरठ

अनोखे-ज्ञानी।

पर गांठ काटिवे को पैने छुरी समान, पर द्रव्य हरिवे को बढ़ुवा बनाए हैं।
करें मायाचारी, दगाबाज़ी हू में मन राखें, मीठी २ बातें कर जग को ठगाए हैं॥
पर की धरोहर हरें, विश्वासघात करें, सांची लें झूंठी दें बहुत हर्षाए हैं॥
कहें धन्नालाल धिक्कार ऐसे नरन को, निर्विवेकी विधाता ने नाहक उपजाए हैं॥
लोक के रिझायवे को बजार की मिठाई तजें, दूध दही कहें हम सब ही छुटाए हैं।
पर घर जाय तहां हँस २ खाये कहें, तेलके बरूला पूरन कैसे नहीं खाये हैं॥
तेलतो अभक्ष्य कहो ग्रंथन में लेख ऐसो, तुम पंडित ज्ञानी कहो कैसे यह खाओ है॥
कहें पन्नालाल नर धर्म मांहि ठगई करें, तीनों पन मांहि उन खाक को फुकायों है॥

—पन्नालाल जैन, अलीगंज

एक महाभ्रष्ट।

(गल्प)

कार्तिक का महीना था, दीवाली की अंधेरी रात थी, आधीरात का वक्त था, जबकि लखनऊ को जाने वाली मुसाफ़र गाड़ी अपने मुसाफ़िरों को लिये हुए बेधड़क फक फक करती जा रही थी, चलते २ रेल एक स्टेशन पर ठहरी, एक गरीब मुसाफ़िर, अपनी स्त्री को साथ लिये रेल में सवार होने के लिये बड़ी घबराहट के साथ सबही डब्बों को झांकता फिर रहा था और चढ़ने की कोशिश करता था लेकिन मुसाफ़िर दर्वाज़ा नहीं खोलने देते थे और धमकाकर आगे ही हंका देते थे। वह बहुत ही ज्यादा गिड़गिड़ाता था और हाथ जोड़ २ कर कहता कि महाराज हमारा बेटा बहुत बीमार है, तार से खबर आई है, नहीं मालूम अभ तक जीता भी है या मर गया, हमको चढ़जाने दो जिससे हम जाकर अन्तिम बार उसका मुंह तो देखलें, आपका भला होगा, बड़ा भारी पुन्य होगा, हम खड़े २ ही चले जावेंगे और किसी को भी कुछ दुःख न पहुंचावेंगे। इस तरह की बहुत ही कुछ बातें बनाते थे लेकिन किसी का भी मन नही पसीजता था, आगे जाओ, यहाँ जगह नही है, यह ही जवाब मिलता था। आखिर जब गाड़ी चलने को हो गई और कहीं भी जगह न मिली तो एक मुसाफ़िर ने उनको आवाज़ देकर कहा कि जल्दीसे यहां हमारे डिब्बे में चढ़ जाओ।

दूसरा मुसाफ़िर-(कर्कश शब्दों में) यहां कहाँ जगह है जो तुम बे मतलब ही दो आदमियों को

घुसाकर और ज्यादा भीड़ करना चाहते हो।

पहला मुसाफिर-अजी रामनाथ जी आप क्यों घबराते हैं,मैं खड़ा होजाऊंगा और अपनी जगह उन को बिठादूंगा. आप मजे से लेटे रहैं, आपको कोई नहीं उठावेगा यह कहकर उसने उन दोनों नये मुसाफिरों का हाथ पकड़ कर जल्दी से अपनी जगह बिठा दिया और आप खड़ा होगया।

नये मुसाफिर-अजी महाराज राम तुम्हारा भला करै, हम तो गरीब चमार हैं, अलग खड़े हो जावेंगे, इतनी सुनते ही रामनाथ भड़भड़ा कर उठ बैठा और गुस्से में भरकर कहने लगा कि खबरदार जो हमारे तख्ते की तरफ आये, हट जाओ इधर से, जमनादास जी मना करते २ तुमने इन नीचों को गाड़ी में घुसाया और खुद हाथ पकड़ कर बिठाया, अब बोलो तुम से ही कौन छूवेगा, गया तुम्हारा भी धर्म कि नहीं, अब कल को जब तक न्हा धो न लो और सारे कपड़े न धोलो तब तक भ्रष्ट हुवे अलग बैठे रहो।

जमनादास यह तो मैं सब सहलूंगा पर जो यह गाड़ी में न चढ़ते तो मुझे बड़ा कष्ट होता।

रामनाथ-जमनादासजी तुम बुरा मानोगे, पर आजकल तो धर्म कर्म सब उठता ही जाता है तब ही तो चमार के छूलने से तुम को कुछ कष्ट नहीं हो रहा है।

जमनादास-और जो यह लोग चढ़ने से रह जाते तो इनको कितना कष्ट होता, बेचारे अपने बेटे का आखरी मुख देखने जारहे हैं, इनकी सहायता करना क्या धर्म नहीं है?

रामनाथ-भली सहायता, बाबू जी यह धर्म बार बार नहीं मिलता है, नहीं मालूम पिछले जन्म में क्या क्या पुण्य किये थे जो यह उत्तम कुल मिल गया है, जिसको आजकल आप लोगोंने इस तरह भ्रष्ट करना शुरू कर दिया है।

जमनादास-तो जब पुन्य करने से ही उत्तम कुल मिलता है, अब भी पुन्य करना चाहिये जिस से आगे को भी इस ही तरह उत्तम कुल मिले. यह ही सोच कर तो मैंने इन दुखियाओं को गाड़ी में बिठा लिया है।

रामनाथ-वाह! तुम भी कैसी उलटी बातें करते हो; दान करो मंदिर बनवाओ, तीर्थ यात्रा कर आओ, और भी जो धर्म के काम हैं सो करो तब पुन्य होगा कि इन नीचों को पास बिठाने से पुन्य होगा, इस से तो जन्म जन्म का संचय किया हुवा पुन्य भी नष्ट होजायगा, इतने में दूसरा स्टेशन आगया और रामनाथ ने रेल के एक सिपाही को बुलाकर और उसके हाथपर दो रुपये रखकर कहा कि जमादार साहब इस गाड़ी में यह दो नीचाआ घुसे हैं इनको निकाल कर हमारा धर्म बचाओ।

जमनादास-जमादार देखो अगर तुमने किसी के कहने से इन गरीबों पर कोई जबरदस्ती की तो अच्छा नहीं होगा।

रामनाथ-यह लोग तुम्हारे क्या लगते हैं जो तुम इतनी तरफदारी कर रहे हो।

जमना-यह मेरे भाई हैं।

रामनाथ-तो क्या तुम भी चमार हो।

जमनादास-चमार तो नहीं हूं हां चमारों का भाई जरूर हूं।

रामनाथ-देखो जमादार यह भी इन चमारोंसे मिल गये हैं और दूसरों का भी धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं, इसका बन्दोबस्त जरूर होना चाहिये।

चमार-(जमादारसे हाथ जोड़कर) मेरे राजा हमारा बेटा मरने हाल होरहा है, उस ही का मुँह देखने जा रहे हैं, हमको मत उतारो नहीं तो हम मर जावेंगे।

रामनाथ-मरो सालो, मरते ही तो नहीं हो तब ही तो दूसरों का धर्म भ्रष्ट करते फिर रहे हो, इतने में जमनादास ने स्टेशन मास्टर को बुला कर कुल माजरा सुना दिया, जमादार तो टलकर चला गया और साहब ने रामनाथ के असबाब की तरफ देख कर पूछा कि यह सब असबाब किसका है।

रामनाथ-हजूर मेरा ही है।

साहब-तुमने इस का महसूल दिया।

रामनाथ-हजूर यह तो ज्यादा नहीं है, वैसे ही फूला हुआ मालूम होता है।

साहब-अच्छा तो यह तुलैगा इस को नीचे उतारो।

रामनाथ-साहब के हाथपर पांच रुपये रख कर हजूर नीचे उतारने में तो मेरा सब असबाब इन चमारों से भिड़ जायगा।

साहब-रुपया न लेकर,नहीं पैसा नहीं हो सक्ता, असबाब जरूर तुलैगा।

लाचार असबाब उतारा गया और तोलने पर ढाई मन हुआ, रामनाथ अबतक कुलियों को दो दो चार चार आने ज्यादा दे दे कर असबाब रेल में रखवाता हुआ, रेल की चोरी करता हुआ चला आ रहा था, पर यहाँ उसको २५) महसूल का देना पड़ा। इतने में किसी आदमी ने रामनाथ के पास आकर कान में कहा कि तुम्हारे असबाब में अफ़्यून भरी हुई है इस वास्ते मुझे माकूल रकम दिलवाओ नहीं तो पुलिस को कहकर अभी तुम्हारे असबाब की तलाशी कराता हूं। रामनाथ ने इस को भी पांच रुपये देने चाहे पर वह नहीं माना आखिर बढ़ते २ दो सौ रुपये देकर उससे पिंड छुड़ाया। फिर आप भी उसी गाड़ी में आकर बैठ जहाँ वह नीच बैठे थे। आते ही उसने उन चमारों की तरफ़ घृणा की दृष्टि से देखकर गाड़ी के अन्द मुसाफिरों से कहा कि गाड़ी में इन नीचों के घुस आने से ही यह आफ़त आई, नहीं तो हमको तो रोज़ ही सफर रहता है और इससे भी दुगना तिगुना असबाब हुआ है पर कभी भी महसूल नहीं दिया है, रुपया धेली खर्च करके ही काम निकलता रहा है आज धर्मभ्रष्ट होने से ही यह पाप उदय हुआ है।

जमनादास-सरकारी महसूल की चोरी करना क्या पाप नहीं है, यों क्यों नहीं कहते हो कि यह ही सब पाप इकट्ठा होते २ आज उदय होगया है।

रामनाथ—तुम पाप पुन्य को क्या जानो, जानते तो इन चमारों से ही क्यों भिड़ते, सच कहा है 'एक पापी नाव में बैठ जाय तो सब ही को डूबना पड़ता है" भाई साहब तुमने ही इन चमारों से भिड़कर आज पाप का बीज बोया है।

जमनादास—हमने पाप किया होता तो हम पर आफ़त आती, पर हमको तो ज़रा भी आंच नहीं आई है।

रामनाथ-आज के पापे आज ही नहीं जलते हैं, कुछ दिनों में देखना इस पाप का क्या फल भोगना पड़ेगा।

जमनादास—पर हमारे आज के पापों ने तुम को किस तरह झुलस दिया, यह तो बताओ?

रामनाथ—कलिकाल है भाई साहब, तुम्हें क्

समझाये तुम तो सिवाय हुज्जत करने के और कुछ जानते ही नहीं, हम पर ऐसी २ आफतें आई हैं कि अब फंसे, अब फंसे। तुम जानो चार पैसे कमाने के वास्ते सब तरह के झूठ फरेब चोरी और दगा-बाज़ी करनी पड़ती है, तब कहीं इस बुरे ज़माने में आबरू के साथ गुज़ारा होता है, पर हमको तो सदा हमारे धर्म कर्म ने ही बचा लिया है, ज़रा भी आंच नहीं आने दी है, पर आज इन नीचों के संसर्ग के कारण ही नीचा देखना पड़ा है, अब तुम देखो कि तीन दिन से सफ़र करता आ रहा हूं, पर रेल में कैसे खा सकता हूं, इस कारण तीन दिन से अन्न का दाना तक मुँह में नहीं गया है, दो दिन का और सफ़र है, पर दो नहीं चाहे दस दिन का सफर हो बिना खाये ही रहना पड़ेगा, फल फूल जो मिलता है उस ही पर गुजर होती रहेगी सो भाई साहब धर्म ही कोई चीज है, जिसने अपना धर्म भ्रष्ट किया उसने तो अपना जन्म ही अकारथ खोया।

जमनादास—सफ़र तो हम भी करते हैं, पर तुम्हारी तरह भूखों नहीं मरते हैं, कचौरी, पूरी, दूध मिठाई जो अपने खाने योग्य वस्तु हैं वह ले लेकर खाते चले जाते हैं, जो खाने योग्य नहीं हैं वह नहीं खाते हैं।

रामनाथ—अजी तुम तो महाभ्रष्ट हो तुम्हारा क्या ज़िक्र।

इतने में एक और स्टेशन आया, उस डिब्बे के और सब ही मुसाफिर उतर गये, वह दोनों चमार चमारी बस उनकी जगह जा बैठे और ऊपर के तख्ते पर एक गठरी सी पड़ी देखकर कहने लगे कि देखो जी वह लोग अपनी एक गठरी छोड़ गये इतने में रेल चल पड़ी थी, रामनाथ झपट कर चमारों की तरफ गया और गठरी उनके हाथ से छीन कर कहने लगा कि देखूं मेरी तो नहीं है, यह कह कर उसने गठरी को खोला, देखा तो उसमें कपड़ों के बीचमें रुपयों की एक थैली भी बंधी है, तुरन्त बोल पड़ा कि हां यह मेरी तो है ही, फिर चमारों की तरफ़ आंख लाल पीली करके बोला कि हरामजादे बेईमानो तुमने क्यों इसको हाथ लगाया।

जमनादास-रामनाथ जी! पराये माल को अपना मत बनाओ मेरे होते यह हज़म न हो सकेगी,

रामनाथ-मेरी नहीं तो क्या तुम्हारी है?

जमनादास-न मेरी न तुम्हारी, यह तो दूसरे ही मुसाफ़िरों की है।

रामनाथ-सबूत इस बात का।

जमनादास-सबूत देने की नौबत आवेगी तो सबूत भी देदिया जावेगा, पर यह समझ लो कि तुमको बहुत दुःख उठाना पड़ेगा।

रामनाथ-तुम तो भाई नहीं मालूम कहां से आज जमदूत की तरह आ चिलचे हो लो अपना ही कहना रक्खो और जो कुछ इसमें है आधा २ बांट लो, और दो चार रुपये इन ग़रीब चमारों को भी दे दो।

जमनादास-इस तरह नियत मत बिगाड़ो पकड़े जाओगे।

रामनाथ-पकड़े क्यों जावेंगे, कपड़े लत्ते तो सब बाहर फेंक दो और यह जो रुपये हैं इन को बांट खाओ। यह कहते ही उसने रुपयों की थैली निकाल कर बाक़ी सारी गठरी रेल से बाहर फेंक दी और थैली में से दस रुपये निकाल कर चमारों से कहा कि आज तुम्हारी भी क़िस्मत जाग गई, लो यह तुम भी लो।

धमार चमारी-महाराज हम तो पराया माल नहीं लेते भगवान हमारे बेटे को जीता रक्खे बस हमारे वास्ते तो यही सब कुछ है।

रामनाथ-अच्छा तो जमनादास जी तुम तो आओ और बांट लाओ, भगवान ने आप से आप कृपा करके लक्ष्मी दी है तो इसे क्यों छोड़ते हो।

जमनादास–नहीं भगवान ऐसे नहीं हैं जो अन्याय के द्वारा प्राप्त करावें, यदि शुभ उदय है तो न्याय द्वारा ही लक्ष्मी मिलेगी, तुमने बहुत बुरा किया जो पराई गठरी बाहर फेंक दी और हाँ इस को तो चमार ने हाथ लगा दिया था फिर तुमने क्यों हाथ लगा दिया, यह पाप क्या तुम को डुबायेगा नहीं?

रामनाथ—अजी भ्रष्ट तो सब ही हो रहे हैं; अबतो रेलमें बैठे हैं एक चढ़ता है और एक उतरता है, अब कौन जानता है इनमें कोई चमार है, चूड़ा है या कौन है सब ही से भिड़ना पड़ता है, अब तो घर जाकर ही नहा धोकर शुद्ध होना होगा।

इतने में स्टेशन आया और वह दोनों चमार चमारी उतर गये।

रामनाथ-अब जान में जान आई मेरी, तो, अब तक यह चमार बैठे रहे मुझे तो बहुत ही घृणा आती रही, मालूम नहीं तुम्हें धर्म भ्रष्ट होते क्यों घृणा नहीं आती है, मैं तो अपने धर्म की रक्षा के वास्ते जान तक देने को तयार हूं पर अपना धर्मभ्रष्ट नहीं होने दे सक्ता हूं।

जमनादास-बहुत अच्छा तुमको तुम्हारा धर्म मुबारिक हो और मुझको मेरा।

रामनाथ—अच्छा लो यह दोनों दुष्ट भी टल गये अब तो इन रुपयों को बांट लो।

जमनादास–नहीं पराया माल मेरे धर्म के विरुद्ध है, मुझे इसमें बड़ी भारी ग्लानि आती है, मैं तो जहां तक हो सकेगा इस माल को असिल मालिक तक पहुंच जाने की ही कोशिश करूँगा।

रामनाथ-क्या कोशिश करोगे?

जमनादास-किसी बड़े स्टेशन के आने पर यह हाल पुलिसवालों को बताऊँगा वे कपड़ों की गठरी को भी ढूँढ निकालेंगे और सब माल को उसके मालिकों तक भी पहुंचा देंगे।

रामनाथ—तुम तो बड़े ही जबरदस्त आदमी मालूम होते हो, अच्छा भाई लो यह सब माल तुम ही लेलो हम ही सब्र करके बैठ जायेंगे।

जमनादास-नहीं मैं इसमें से एक कौड़ी भी नहीं ले सकता हूं और न किसीको लेने दे सकता हूं।

रामनाथ-तुम तो भाई बाहर से ही भ्रष्ट नहीं हो किन्तु तुम्हारा तो हृदय भी भ्रष्ट होगया मालूम होता है, तब ही तो बे मतलब दूसरों को फँसाने की कोशिश करते हो पर मुझे नहीं जानते हो मैंने तुम्हारे जैसे सैकड़ों को जहन्नुम पहुंचा दिया है, झगड़ा उठा कर देखो जो उल्टे तुम ही न फंसो तो मेरा नाम बदल देना।

इतने में बारिश मूसलाधार बरसने लगी, कई स्टेशन आये और गये लेकिन वर्षा न थमी बल्कि ज्यादा बढ़ती गई, मानो तूफान ही आने वाला है, इतने में रेल एक जगह खस से नीचे बैठगई। ज्यादा वर्षा होने की वजह से रेल की पटरी के नीचे से मिट्टी निकल गई थी और रात अन्धेरी होने की वजह से कुछ भी मालूम न होसका था चारों तरफ पानी भरा हुआ था जो रेल के अन्दर भी भर गया और सारी रेल में हाहाकार मच गया, सब ही

जान के लाले पड़ गये और अपने २ इष्टदेव को याद् करने लग गये, पानी पल २ में बढ़ता आता था और अब डूबे अब डूबे यही हाल हो रहा था। ऐसे समय में रामनाथ भी बड़े ज़ोर से अपने भगवान को सहायता के लिये पुकार रहा था और जीता बच गया तो तुम्हारा मन्दिर बनवाऊँगा, उत्सव कराऊँगा, ऐसे लालच दिखा रहा था और मन ही मन यह भी विचार रहा था कि पास के डिब्बे में सब स्त्रियां ही स्त्रियां भर रही हैं और कोई कोई तो उनमें बहुत ही बढ़िया २ जेवरों से लद रहीं हैं, चलें उनका जेवर ही झटक लावें, मरने को बैठे ही हैं राम ने बचा दिया तो खूब माल घर लेआवेंगे और बाल बच्चोंको खिलावेंगे। लड़कीका ब्याह करना है। भगवान ने इस आफत से बचादिये तो खूब ठस्सेसे विवाह करेंगे और नेकनामी लेंगे यह सोचकर वह उठा और जमनादास से बहाना बना कर कहने लगा कि पास के डब्बे में हमारी जनानी सवारी बैठी हैं उनकी तो खबर ले आवें मरती हैं या जीती हैं। यह कह कर वह किवाड़ खोल कर बाहर निकला ही था कि धप से पानी में डूबगया, यह देख जमनादास भी उसको बचाने के लिये कूद पड़ा, पानी बरफ़के मानिन्द ठंडा था, अंधेरा घुप होरहा था, बारिश मूसलाधार बरस रही थी, तो भी जमनादास ने मर भरकर उस को टटोल कर पानी में पकड़ ही लिया और ऊपर को उठाकर तैरता हुआ रेलकी तरफ आने लगा, लेकिन उलटी तरफ हो लिया, इस वास्ते मील भर तैर कर आने परभी रेल की सड़क न आई बल्कि ऊंची ज़मीन आगई वहाँ सर्दी और थकानके सबब दोनों बेहोश होकर गिर पड़े और दो घंटे तक पड़े रहे, इतने में सुबह होने वाली थी, ज़रा होश आने पर रामनाथके मुंह से निकला कि भगवान तुम्हारा गुण किस मुंहसे गाऊँ, तुमने मनुष्यका अवतार धारण करके आज मेरी जान बचाई. नहीं तो मेरे मरने में तो कोई भी कसर नहीं रही थी. यह कहकर वह जमनादास के पैरों में सिर रखकर और गिड़गिड़ा कहनेलगा कि भगवान तुम सचमुच ही अपने भक्तों के रक्षक हो. रात एक महाभ्रष्ट की संगति होगई थी, इसही पाप के परिणामस्वरूप मुझ पर यह मुसीबत आई कि मौत ही आने को आगई परन्तु हे दयावत्सल ! दीनदयाल ! तुमने ही अपने भक्त को उस मौत से बचाया अब मैं कभी आप को न भूलूंगा, इस पर जमनादास ने उसका सिर अपने पैरों परसे उठाकर कहा कि भाई मैंने तो वही महाभ्रष्ट जमनादास हूं और क्षमा मांगता हूं कि मैंने इस पानी में तुम्हारा शरीर छूकर तुम को भी भ्रष्ट किया।

रामनाथ—हैं! क्या तुम ही मेरे बचाने के वास्ते जान जोखम में पड़े हो. धन्य हो भाई तुम को धन्य हो. तुमने तो भाई मुझे जीवनदान देकर अपना गुलाम बना लिया।

जमनादास—मैंने तुम पर कुछ अहसान नहीं किया किन्तु अपना धर्म पालन किया है।

यह कह कर जमनादास उसके पास से चला गया और रेल के मुसाफिरों की जान बचाने के फ़िकर में लग गया।

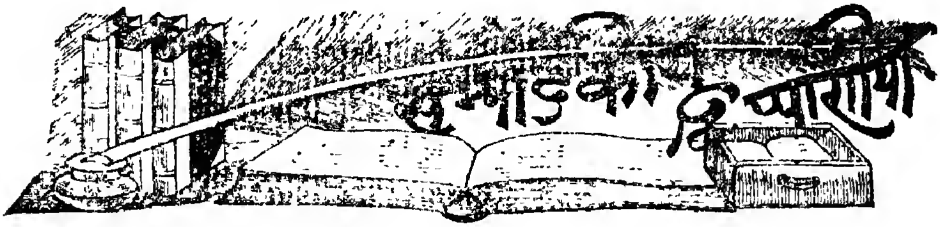

जैन धर्म के प्रचार का स्वर्णावसर

वर्तमान में परिवर्तन अपना खासा रंग दिखला रहा है। संसार अबतक की सभ्यता-अबतक की शिक्षा से मुंह मोड़ रहा है। वह आत्मावाद की ओर आकर्षित होरहा है। वह जान रहा है कि जीवात्मा स्वाधीन है। स्वतंत्र है पराश्रित नहीं है। वह अपने परिश्रम द्वारा परमोत्कृष्ट उच्चावस्था को प्राप्त होसक्ता है। परमुखापेक्षी होना पाप है। किसी एक महान् आत्मा का अपने कर्मों पर आधिपत्य ख़याल करना भूल भरा है। यह सच्ची बात आज ज़ोरों के साथ सर्वत्र सुनाई दे रही है। अमेरिका में इस सिद्धान्त पर ज़ोरों का मार्मिक विचार हो रहा है। एक शिक्षक महाशय ने निर्भीकता पूर्वक इस सत्य सिद्धान्त के सदृश ही एक पाठ अपने शिष्यों को पढ़ाया! 'बाबावाक्यम् प्रमाणम्'के मतानुयायी जज महोदयोंको इसमें अमौलिकता दिखाई दी। बाइबिल विरोध की गंध सूंघ पड़ी। झट उस शिक्षक महाशय पर मामला चला दिया! मामला चल गया। अच्छा हुआ। सत्यासत्यका निर्णय होनाही चाहिये। यही हालत यूरोप, जापान आदि देशों में है। सब ओर वर्तमान को सुखमय बनानेके प्रयत्न हो रहे हैं। विद्वान् और धीमान् पूर्वी विद्याओं और धर्मों का अध्ययनभी शौक़ से कर रहे हैं। जर-मनी और जापान में विशेष रीति से संस्कृत विद्या का प्रचार होरहा है! स्वयं भारतवर्ष में भी इस बात के चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं। अजैन भारतीय विद्वान् जैसे महामहोपाध्याय डा० गंगानाथ झा, साहित्याचार्य श्री कण्ठोमल जज प्रभृति बड़ी दिलचस्पी से जैन दर्शन का पाठ कर रहे हैं। डा० रवीन्द्रनाथ टागोरने अपने विश्वभारती विद्यालय द्वारा पूर्वीय धर्म के प्रचार का मार्ग सिरज दिया है। ऐसी अनुकूल हवा में भी दुःख है कि जैन धर्म को एक सीमा के अंदर, एक कोठरी के भीतर ताले में बन्द रक्खा जारहा है! आचार्योंके वचनोंकी उपेक्षा की जारही है। आज जैन समाज में अनेकों ऐसे भाई मौजूद हैं जिन को आचार्य और लोहाचार्य सदृश आचार्यों ने मिथ्यात्व के गहरे गढ़ेमें से उबार कर सच्चे मार्ग पर लगाया था। भगवान महावीर के शासन में उनको दीक्षित किया था। उनके ज्ञान नेत्रों को वास्तविक तत्वों के प्रकाश से खोल दिया था! पुरातन जैनियों ने उन्हें गले लगाया था। गऊ वत्सवत् प्रेम दर्शाया था। परन्तु हतभाग्यवश आज उल्टी गंगा बह रही है। आचार्यों नहीं सर्वज्ञ वाक्यों की अवहेलना और उपेक्षा करने में ही धर्म समझा जा रहा है। सच्चे वीर भक्तों! यह मूर्खता है। यह पूरा मिथ्यात्व है। आँख मीचकर चलना

गहरे गड्ढे में गिरना है। इस लिए विवेक बुद्धि से काम लीजिए। जैन धर्मकी अनेकान्त प्रभुता प्रकट होने दीजिए। अजैनों को जैनधर्म प्रचारके लिए उन्हें जैनी बनाने के लिए लाखों का चन्दा एकत्रित कर लीजिए। लक्ष्मीधारी वीर पुत्रों, यह स्वर्णावसर चूकने के योग्य नहीं है। भारत में जैन धर्म प्रचार का मार्ग निरखिए। इस ही पवित्र भूमि से उन का पुनः प्रचार होने दीजिए। बोलपुर 'विश्वभारती' विद्यालय में जैन शिक्षक की नियुक्ति कीजिए जो संसार भरके विद्वानों को जैन धर्म का ज्ञान करा सके। सचमुच विद्वान चातक जैनधर्म रूपी स्वाति बूंद के लिए मुख बाए बैठे हैं। परन्तु उन की इस लालसा पूर्ति में हम आज से जैनी ही बाधक बने रहे हैं। यह महापाप है। श्री समन्तभद्र स्वामीज्ञान प्रचार से यथार्थ प्रभावना का होना बतला गए हैं। आज इस प्रभावना धर्म का नारा बुलन्द करने का सब से अच्छा मौका है। जर्मनी के अनेकों विद्वानों से पत्र व्यवहार द्वारा मालूम हुआ है कि वे किस उत्सुकता से पवित्र कल्याणकारी जैन ग्रंथों का अध्ययन करनेके लिए तैयार हैं। यथाशक्ति उनको ग्रंथ भेजे भी गए हैं; परन्तु क्या यह कार्य व्यक्ति-गत रूप में पूर्ति को प्राप्त हो सकता है? हरगिज़ नहीं। इसके लिए तो प्रत्येक जैनी को तैयार हो जाना चाहिए और सुव्यवस्थित ढंग से परिषद् के द्वारा इसका प्रचार होने दीजिए। पवित्र जैन धर्म को सीमित करके एक तरह से हम लोगों ने संसार में पापाचार बढ़ा रक्खा है। उस ही के परिणाम स्वरूप हम मिटरहे हैं। तेरा तीन होरहे हैं। जीवन के संकट में पड़ रहे हैं। बस अब भी चेत जाइए। कृतपाप का प्रायश्चित्त कर डालिए। धर्म का प्रचार सब ओर और सब ठौर कीजिए। विदेशों में क्या दशा है यह निम्न के पत्र से भली भांति प्रकट है।

—उ० सं०

विदेशों में जैन धर्मप्रचार की अनुकूलता

हाल ही में जैनसमाज से कतिपय धनी धीमान् विदेशों को गए हैं। उनमें से प्रो० बनारसीदास जैन एम० ए० ने जो पत्र "जैन प्रदीप" को लिखा था, उस से भी स्पष्ट है कि वहां परम पवित्र अहिंसा धर्म की रुचि बढ़ रही है। ऐसी दशा में अहिंसा प्रधान जैन धर्म का वहां खासा स्वागत हो सकता है। मात्र आवश्यक्ता कार्य की है-विदेशी भाषाओं में जैन ग्रंथों को प्रकट करने की है। विदेशों में यह कमी जैन धर्म की अप्रभावना की कारण बन रही है। यही बात हमारे मान्य भूतपूर्व सभापति श्रीमान् तज्ज्ञारुलमुल्क रायबहादुर सेठ माणिक्यचन्द्र जी सेठी के निम्न पत्रांश से प्रमाणित है। आप अपने यूरोप के यात्रा अनुभव का उल्लेख करते हुए लन्दन से लिखते हैं कि "मैंने यह बात यहां पर अच्छी तरह देख ली है कि उत्साही जैन बन्धु इन देशोंके व्यापारमें भाग लेने,से किस प्रकार लाभ उठा सक्ते हैं। यह भी देखने में आया है कि जिस प्रकार पूर्व की अन्य मुख्य धर्मों में लोग दिलचस्पी लेते हैं उसी प्रकार किसी हद तक जैन धर्म में भी वे दिल चस्पी रख रहे हैं। परन्तु यूरोप में लोग अपनी इस दिलचस्पी में इस कारण से हताश से हो जाते हैं कि किसी भी पाश्चिमीय भाषा में जैन ग्रन्थ करीबर नहीं के बराबर ही मिलते हैं। जैनत्व को लक्ष्य कर मुझको यह जानकर खेद है यहां विद्वानों के निकट हिन्दू और बौद्ध धर्म की

विशेष मान्यता है। बेशक एक सच्चे जैनी के लिए यह स्थिति असह्य होना ही चाहिए। परन्तु इस में दोष हमारा ही है। यदि हम जैनियों को अपने धर्म में अभिमान है-जैन धर्म की सत्यता में-प्राणियोपकारिता में विश्वास है तो सब से पहला फ़र्ज़ यह होना चाहिए कि विदेशों में जैन धर्म प्रचार के लिए—अंग्रेजी भाषा में जैन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए लाखों रुपए का फण्ड एकत्रित कर लें। क्या ही अच्छा हो, यदि हमारे उक्त सेठ साहब द्वारा ही इस परमावश्यकीय फण्ड का श्री गणेश हो! दानवीरो, चंचल लक्ष्मी को सफल बनाए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिकोत्सव !

भारत में आज हिन्दी को जो गौरव प्राप्त है उसपर प्रत्येक भारतीय और जैनी को गर्व होना चाहिए। हिन्दी को इस समुन्नत शिखर पर पहुंचाने में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के शुभ-प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। इस ही की नियमित परीक्षाओं और प्रचार कार्यों द्वारा हिन्दी की मान्यता सारे भारत में घर कर गई है। इस ही की बदौलत हिन्दी को आज राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त है। हर्ष का विषय है अब की इसका वार्षिकोत्सव इस ही मास में श्रीकृष्ण के लीलाधाम वृन्दावन में होवेगा। हम चाहते हैं कि इस अवसर पर इस रसमयी लीला स्थली से हिन्दी की वास्तविक स्मृति का कोई मधुर-गुंजार सब ओर फैल जावे! साम्प्रत हिन्दी-प्रगति को देखते हुए कुछ ऐसा भास होता है कि हिन्दी-महारथी मातृसेवा को किञ्चित गौण करके आपसी मनोमालिन्य को प्रधानता दे रहे हैं। उत्तम हो कि इस अवसर पर एक सगठित सुव्यवस्था हमारे हिन्दी कार्यक्षेत्र की हो जावे। साथ ही हम देखते हैं कि यद्यपि जैनियों का हिन्दी निर्माण कार्य प्रारंभ से ही विशेषरूप में रहा है और आज भी जैनी एक अच्छी हद तक हिन्दी सेवा में भाग ले रहे हैं परन्तु तोभी उनके साहित्यसे और उनके तत्सम्बन्धी कार्यों से उपेक्षा की जा रही है। जैन नवयुवकों को शायद ही हिन्दी सेवा में किसी संस्था से उत्साहित किया जाता है। ऐसी दशा में सम्मेलन इस स्थिति को सुधारने को कोई व्यवस्था कार्यक्रम में लावे. ऐसी योजना होना आवश्यक है। इधर हिंदीप्रेमी जैनियों को भी सम्मेलन के कार्यों में सहायक हो अपने साहित्य-अनुराग का परिचय देना लाजमी है।

—उ० सं०

साहित्य-समालोचना।

श्री प्रवचनसार टीका—दूसरा खण्ड (ज्ञेयतत्व दीपिका) टीकाकार जै० ध० भू० ध० दि० ब्र० शीतलप्रसादजी प्रकाशक जैनमित्र कार्यालय, सूरत पृष्ठ २६६। मू० १॥) छपाई-सफ़ाई सुन्दर। जैन सिद्धान्त का यह अद्भुतग्रंथ नवीन हिन्दी टीकासहित 'जैनमित्र' के ग्राहकों को ला० चिरंजीलाल जी की ओर से भेंट किया गया है। टीकाके विषय में कुछ कहना ही वृथा है। जिस गवेषणा और विशे-

पता से न्न० जी मूल का भाव व्यक्त करते हैं, यह किसीसे छिपा नहीं है। प्रत्येक आत्मधर्मी को इसका स्वाध्याय करके पुण्य-लाभ लेना चाहिये।

—A comparative study of the sience shought from the Jaina slondpoint. (जैन दृष्टि से न्याय का विवेचन) लेखक श्रीमान्हरिसत्य भट्टाचार्य एम०ए०प्रकाशक श्रीयुत मल्लिनाथ जी व्यवस्थापक "श्री देवेन्द्र प्रिन्टिङ्ग एन्ड पब्लिशिङ्ग कम्पनी लिमिटेड आर्न टाउन मद्रास" पृष्ठ ८७। मू० १) मोटा चिकना कागज सुन्दर छपाई। अनन्य साहित्यसेवी धर्मवीर स्व० कुमार देवेन्द्र प्रसाद जी की पवित्र स्मृति में जो उक्त कंपनी स्थापित हुई थी उसके द्वारा ग्रंथ प्रकाशित होते देखकर हमको परम हर्ष है। कुमार देवेन्द्र प्रसाद की अपूर्व सेवाओं से समाज तभी उऋण होगी जब वह इस कम्पनी के सब (शेयर) हिस्से खरीद लेगी और पवित्र जैन सिद्धान्त का प्रचार उसही प्रकार करानें लगेगी जिस प्रकार कुमार जी कर रहे थे। प्रत्येक जैनी को यह शेयर खरीदना चाहिये। इसही आशाद्रयली 'देवेन्द्र कंपनी' से यह न्यायवाद की प्रस्तुत पुस्तक बड़ी गवेषणा के साथ प्रकट हुई है। इसमें न्याय के प्रत्येक अंग का दिग्दर्शन तुलनात्मक रीति से कराया है जो विशेष लाभप्रद है। न्याय के विद्यार्थी के लिये यह पुस्तक बड़े महत्व की है। अंग्रेजी पढ़े लिखे जैनियों को मंगाना चाहिए।

—Dinvnity in Jainism–लेखक और प्रकाशक उक्त महोदय। पृष्ठ ४३ छपाई सफाई अति चित्ताकर्षक। प्रस्तुत पुस्तक उक्त कंपनी का दूसरा फल है। और इस में अंग्रेजी भाषा में बड़े अच्छे ढंग से जैनधर्म में स्वीकृत परमात्मवाद को सिद्ध किया गया है। भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के मतोंसे तुलना करते हुए जैनदृष्टि को प्रमाणित किया गया है। गवेषणामय विवेचनके बाद लेखक लिखते हैं:—

"A littee reflections of the Jaina theory of god world show that the Jaina philosophy is one of the ancient systems in India. It is assuredly not post-Buddhistic in origin, there is difficulty in considering it as contemporaneous with Baddha. It Seems to us that the Jaina philosophy preached a new doctrine of god in a new way in that misty, forguther age in which various other theories of Divinity wer being porpounded in ancient in ancient India."

भावयही है कि परमात्मवाद की जैन मान्यता पर तनिक गहन विचार करने से स्पष्ट विदित हो जायगा कि जैन सिद्धान्त भारत के प्राचीन दर्शनों में से एक है। वह बौद्धधर्म के उपरान्त नहीं जन्मा था और न वह बुद्ध का समकालीन ही है। हमें यह मालूम होता है कि जैनसिद्धान्त ने उस अज्ञात और अंधकारमय काल में नए ढंग से परमात्मा संबन्धी नया सिद्धान्त प्रचलित किया था जिसमें खुद परमात्मवाद के अन्य सिद्धान्त प्रचार में लाए जा रहे थे। पुस्तक महत्वपूर्ण है। प्रत्येक अंग्रेजी विज्ञ इसको पढ़ कर लाभ उठा सकता है।

—श्री खंड गिरि उदयगिरि पूजन रचयिता मुनीम मुन्नालाल सुन्दरलाल जैनी। साधारण कविता में खंड गिरि उदयगिरि का विवरण सहित पूजन है और सौ० श्रीमती चतुरबाई जी द्वारा जैन मित्र के ग्राहकों को उपहार में दीगई है।

स्त्री शिक्षा और प्रयाग विश्व विद्यालय

प्रयाग विश्व विद्यालय के ऊंचे दर्जों में कई कन्यायें भी शिक्षा पा रही हैं। इन के बैठने के लिये कोई अलग दर्जे न थे। वे पुरुष छात्रों के साथ ही बैठकर शिक्षा अध्ययन करती थीं। नहीं जानते, स्त्री छात्रियों के इस प्रकार पुरुष छात्रों के बीच में बैठने पर किस ने आपत्ति की। हाल ही में उक्त विश्वविद्यालय की कार्य्यकारणी समिति ने यह नियम कर दिया है कि स्त्री छात्रियों के बैठने का स्थान अलग रहेगा। और उनके पढ़ाने वालों का भी विशेष प्रबन्ध होगा। इस नियम के बन जाने से स्त्री समाज में बड़ी हलचल उपस्थित हुई है। हाल में इसी विषय को लेकर प्रयाग में शिक्षित महिलाओं की दो सभायें हुईं थीं। एक में तो इस नियम का घोर विरोध किया गया तथा दूसरी में सम्पूर्ण समर्थन। जिस सभा में नियम का विरोध किया गया, उसकी अध्यक्षा बाबू दुर्गाचरण बनर्जी की श्रीमती थीं। तथा समर्थन करने वाली सभा की श्रीमती सुशीला देवी। विरोधी पक्ष का कहना है कि पुरुष छात्रों के बीच में स्त्री छात्रियों के पढ़ने को मना कर के विश्वविद्यालय ने एक नवीन और अवनतिशील प्रणाली का अवलम्बन किया है। इससे विश्वविद्यालयको हानि पहुंचेगी। और स्त्री पुरुषों में हानिकर संघर्ष उपस्थित होगा। स्त्री छात्रियों को पुरुष छात्रों के बीच न बैठने के लिये बाध्य करना नितान्त अनुचित। तथा जो स्त्रियां डेढ़ वर्ष से सम्मिलित दर्जों में शिक्षा पाती रही हैं। उन को अब यकायक निषेधाज्ञा के बल पर अध्यन में न भाग लेने देना अन्याय है। उधर नियम का समर्थन करने वाली सभा का कहना है कि स्त्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध अलग रहना ही ठीक है। इस समय समाज की जैसी कुछ अवस्था है इसके देखते यही श्रेयस्कर है कि स्त्री और पुरुष छात्र एक साथ बैठकर शिक्षा न पावें। समाज की यह आवश्यकता पूरी करने के लिये विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने स्त्रियों के लिये जो अलग प्रबन्ध कर दिया सो अच्छा ही किया। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस प्रकार प्रयाग की महिलाओं में और

मतभेद उपस्थित हो गया है। हमें इस बात का हर्ष है कि हमारे समाज शिक्षित महिलाओं की ऐसी संस्था मौजूद है, जो इन प्रश्नों पर स्वतन्त्रता पूर्वक गम्भीरता के साथ विचार करती हैं। हम स्त्री पुरुषों के समान स्वत्वों की बात भी जानते हैं। हम यह भी मानते हैं कि किसी को कोई काम करने के लिये बाध्य करना उसे बहुत ही बुरा लगता है। हम से यह बात भी छिपी नहीं है कि बाध्य कर सकने की सामर्थ्य के बिना नियम का कोई महत्व भी नहीं होता। इन सब बातों पर विचार करने के बाद हमारी राय है कि स्त्री छात्रियों की शिक्षा का प्रबन्ध अलग रहे तो कोई हर्ज नहीं, पर जो कन्यायें पुरुष छात्रों के बीच बैठ कर पढ़ना चाहें और उनके माता पिता भी वैसी आज्ञा दें तो उन्हें उसी प्रकार पढ़ने दिया जाय। हां स्त्री छात्रियों के लिये जो प्रबन्ध किया जाय, वह इतना आकर्षक और उत्तम हो कि कन्यायें आप से वहीं पढ़ने को लालायित हों और उन्हें यह कहने का अवसर न मिले कि पुरुष छात्रों वाले दर्जे में पढ़ाई का प्रबन्ध विशेष अच्छा है।

–(माधुरी)

परिषद् समाचार

पूज्य श्री सम्मेद शिखर सम्बन्धी पूजाकेश का अपील प्रिवी कौन्सिल (इङ्गलैंड) में पेश होने वाला है उसकी पैरवी के लिये परिषद् के सभापती श्री चम्पतरायजी इङ्गलैंड जाने वाले हैं उन का प्रोग्राम निम्न लिखित होगा।

अपील के बाद विलायत में जैन धर्म प्रचार भी करेंगे प्रचार के नियम अंग्रेजी में छपवा बाटेंगे।

पुस्तक वितरण के लिये धन की आवश्यकता होगी।

प्रोग्राम

हरदोई से गमन	२१	सितम्बर
देहली	२२—२४	सितम्बर
ललितपुर	२५	"
बम्बई	२७—३०	सितम्बर
इङ्गलैंड गमन	१	अक्तूबर

रिपोर्ट द्वारा पं० प्रेमचंद पंचरत्न

१८ जुलाई से ६ अगस्त मध्यप्रदेश बुन्देलखंड

—अमरावती १८ से २० जुलाई तक रहा सात सभा की। यहां के भाइयों ने वेश्या नृत्यादि बन्द करनेका वचन दिया। यहां पर पांच दि० जैन मंदिर और १०० सौ घर दि०जैनियों के हैं। दरबारी मन्दिर के १८ प्रतिमा स्फटिक मणि, एक हीरे की, एक मूंगे व दो प्रतिमा चांदी की हैं यहां पर पूजन व स्वाध्याय का कार्य ठीक है और यहां पर एक रात्रि पाठशाला है। सिंघई पन्नालालजी बड़े ही सज्जन और परोपकारी हैं ५) रुपये उपदेशक फंड को प्राप्त हुये।

—बदनेरा (अमरावती)-२१ जुलाई को रहा यहां केवल तीन घर दि० जैनियों के हैं इस लिये कोई सभा न हो सकी। सिंघई हीरालालजी आदि से धर्म सम्बधी बातें हुईं।

—मारवी (वर्धा)-२२ जुलाई को यहां आकर सभा की । यहां के भाई पहिले से ही परिषद् के सभासद् हैं।

—कंवलारी (सिवनी)-२४ जुलाई को आया यहां पर तीन मन्दिर व सौ घर दि० जैनियों के हैं। यहां के भाइयों का उत्साह सभा आदि में नहीं है इस लिये सभा नहीं जुट सकी । चौधरी मिट्ठनलाल भी भाषा के कवि हैं आपने पूजन भजन आदि की रचनायें की है। सिंघई कपूरचन्द जी लहुरी जैन सभा के मंत्री हैं और उस सभा के कार्य को उत्तमता के साथ करते हैं १) उपदेशक फंड को प्राप्त हुए ।

—पिंडरई (मण्डला) २६-२९ जुलाई तक रहे-२८ जुलाई को एक बड़ी सभा हुई जिस में जन संख्या १०० सौ के लगभग थी। समाज सुधार पर व्याख्यान दिया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा यहां के भाइयों ने बालवृद्ध-विवाह वेश्या नृत्यादि की प्रथा बन्द करने का वचन दिया। कितने ही भाई सभासद् परिषद् हुये। यहां पर जैन जन संख्या ४०० है।

—बांदा पिंडरई से रीठी ३० जुलाई को आया वहां से २ अगस्त को बांदा पहुंचा। यहां के मन्दिर में शास्त्र बांचा सभा की। व्याख्यान समाज सगठन पर हुआ जिसका प्रभाव जैन समाज पर अच्छा पड़ा। कई भाई सभासद् हुये। और उपदेशक फंड को ३) सहायता प्राप्त हुई।

—मड़ावरा ५ अगस्त। भाई चुन्नीलाल शंकरलाल सर्राफ से मिला, आप बड़े देश भक्त हैं। और असहयोग में जेल में भी हो आये हैं। आपको जैन साहित्य से बड़ा प्रेम है

—छत्रपुर (स्टेट बुन्देलखण्ड) ६—७ अगस्त यहां पर दो सभायें हुई। व्याख्यान कुरीति निवारण और शिक्षा विषय पर दिया यहां के भाइयों ने वेश्या नृत्य आतिशबाज़ी, कन्या विक्रय आदि कुरीति बन्द करने का वचन दिया, तथा सात भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया। कई भाई सभासद् हुए, और ५) उपदेशक फंड को प्राप्त हुये। यहां के महाराजा अहिंसा धर्म के पालक हैं शिकार आदि नहीं करते छानकर पानी पीते हैं और रात्रि भोजन के त्यागी हैं।

—नया गांव (छावनी) ६ अगस्त चौ० दुलीचंद जमनाप्रसाद जी से मिला। तथा अन्य भाइयों से धर्म पर भाषण हुआ तीन भाइयों ने स्वाध्याय का नियम लिया २) उपदेशक फंड को प्राप्त हुये।

विरले ।

मान, यश, वैभव, की जिनको नहीं है चाह
करते निःस्वार्थ जो समाज का सुधार हैं।
देते आजीवन सहयोग दीन दुखियों को
रखते हृदय में जो न किञ्चित विकार हैं॥
हटते "बालेन्दु" इष्ट पथ से कदापि नहीं
करते सर्वस्व सत्य हेतु जो निसार हैं।
ऐसे नर रत्न कहीं विरले ही दीख पड़ें
वैसे तो रंगे सियार देखिये हज़ार हैं

बालेन्दु

संसार दिग्दर्शन

—श्वेताम्बर भाइयों को अपूर्व लाभ भा० दि० जैन परिषद् के मान्य सभापति विद्यावारिधि श्रीमान् बाबू चम्पतराय जी ने अपनी अमूल्य पुस्तक "असहमत संगम" की ४०० प्रतियां श्वेताम्बर भाइयों में बिना मूल्य वितरण करने के लिए प्रकट की हैं। श्वेताम्बर भाइयों को ज्ञान लाभ लेना चाहिये। परिषद् बाबू जी के इस धार्मिक कार्य के लिए परम आभारी है।

—बैरिस्टर साहब की हिन्दी पुस्तकोंका कापी राइट। हर्ष का विषय है कि श्रीमान् चम्पतरायजी ने स्वरचित हिन्दी पुस्तकों को प्रकट करने का (Copy Right) सर्वाधिकार भा० दि० जैन परिषद् को दे दिया है। इसके लिए भी परिषद् उनका विशेष आभारी है।

—गुहाना (रोहतक) मे ज्ञान वनिता जैनाश्रम खोला है। जिसमें विधवा बहनें आश्रम के खर्च से रहकर विद्या अध्ययन कर सकती हैं। यदि कोई साहब आश्रम के खर्च से भेजना मंजूर न करें तो उनसे भोजन खर्च केवल ६) रु० मासिक लिया जा सकता है। विशेष नियम नियमावली मंगाकर देखें। —महबूब सिंह।

मौक्तिक फर्म ला० हुकुमचन्द जगाधरमल देहली।

—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम का पर्यूषण पर्व इन निमित्त दस दिनों के अन्दर आश्रमके अध्यापक महोदयों एवं ब्रह्मचारी महानुभावों ने अपनी २ शक्तियों को पूर्ण रीत्या व्यक्त कर धर्म के उद्देश्यों को पूर्ण पालते हुए आश्रम के नियमों के पालन करने में भी किसी प्रकार की कमी नहीं की है। सभी ब्रह्मचारीगण ब्राह्ममुहूर्त में उठ कर प्रत्यूष की क्रियाओं से निवट कर श्री जिनालय में जाकर श्री देवाधिदेव की बड़ी भक्ति के साथ पूजन करते थे। उस समय की छटा अद्भुत प्रतीत होती थी। तदनंतर आश्रम के धर्माध्यापक श्रीयुक्त पं० शिवसुन्दराम जी सरस्वती देवी की पूजन के अनंतर श्री संस्कृत-सर्वार्थ सिद्धि व दशलाक्षणिक धर्मजय माल इन दोनों शास्त्रों को विराजमान कर क्रियानुसार एक २ अध्याय व एक २ धर्म के ऊपर विवेचन करते थे। एवं रात्रि के समय भी श्री रत्नकाण्ड श्रावक चार जी तथा श्री पद्मपुराण जी इन दोनों शास्त्रों को भलीभांति बांचते थे। जिससे कि दोनों समय अच्छा आनन्द रहता था। प्रायः सभी छोटे बड़े ब्रह्मचारियों ने अपनी शक्ति के अनुसार व्रत उपवासादि किये थे।

—आज वीर सभा की ओर से श्रीयुत् ला०

शोभाराम जी के सभापतित्व में सभा हुई। इस में पूज्यवर माता जी श्रीमती रामदेवी जी संचालिका महिलाश्रम देहली और बा० जैनेन्द्र कुमार जी पधारे थे। माता जी ने अपने मनोज्ञ भाषण से जनता को कृतार्थ किया। आपने स्त्री समाज की स्थिति बतलाते हुए विधवा बहिनों की स्थिति सुधारने का अनुरोध किया। तदुपरान्त मन्त्री जी का व्याख्यान हुआ जिसमें बालविवाह और वृद्ध विवाह के दुष्परिणाम पर प्रकाश डाला गया। यहां से ३ विधवायें आश्रम में पढ़ने के लिए भेजी गई हैं और १४६॥) रु० पट्टी की ओर से चन्दा भी दिया गया है।

—शिवनरायन जैन जातीय मन्त्री।

—आवश्यकीय सूचना—जैन सेवक संघ और जैन संगठन सभा भिन्न२ हैं तथा नियम और कार्यकर्ता भी पृथक् २ हैं कितने ही पत्र जैन सेवक संघ सम्बन्धी हमारे पास आ जाते हैं। कारण नाम मिला हुआ सा है और दोनों का दफ़्तर भी धरिज पहाड़ी पर है अतएव बहुत से सज्जन जो कि सेवक संघ के कार्यों से सन्तुष्ट नहीं हैं हमको भी उसी चक्कर में समझ लेते हैं कहीं विशेष ग़लत फ़हमी न फैल जाय इसीलिये यह सूचना निकाली है संगठन सभा किसी भी जैन फ़िरके से द्वेष नहीं करती है अतएव इस में हर एक जैन सम्मलित हो सकता है और अपने स्वतन्त्र विचार प्रगट कर सकता है तथा संगठन सभा की हर एक बात पूछ सकता है उद्देश्य तथा नियम इस प्रकार हैं- तथा हमारा पता सिर्फ़ "जैन संगठन, सभा देहली" है।

सहायक मन्त्री—अयोध्याप्रसाद गोयलीय।

श्री वहाड़-मध्य प्रांतीय सैतवाल जैन नवयुवक मंडल का नैमित्तिक अधिवेशन वर्धा (मध्य प्रांत) में रथोत्सव के समय मिती भाद्रपद ४ व ५ और ६ तदनुसार तारीख ६ व ७ और ८माह सितंबर को जैन बोर्डिङ्ग के हाउस में होगा। सब सैतवाल नवयुक भाई वर्धा में अवश्य पधारने की कृपा करें।

—हीराचन्द्र जयचंद्र श्रावणे

सेक्रेटरी व० म० प्रां० सै० जै० न० मं०।

श्रीजैन कुमार सभा आगरा का वार्षिकोत्सव तारीख ३०-८-२५ को पं० गुलाबचन्दजी के सभापतित्व में सानन्द समाप्त हो गया श्रीयुत महेन्द्रजी का जैनधर्म की राजनीति और अहिंसा 'पर महत्व पूर्ण व्याख्यान हुआ। श्री० बा० हजारीलाल जी बी० ए० और बाबूलालजी गोयल का "क्या जैन धर्म की अहिंसा भारतवर्ष के पतन का कारण

गोरे और ख़ूबसूरत होने की दवा।

शाहज़ादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग़, मुंह से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, पांव का फटना, बग़ल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ़ करके चमड़े को नरम कर देती है। यह फूलों से बनाया है इसकी ख़ुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। क़ीमत १ शीशी १।) रुपया ३ शीशी के ख़रीदार को १ शीशी मुफ़्त। डाकव्यय ॥)

पता:—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को० आगरा।

है !" पर बाद विवाद हुआ ।

—कपूरचन्द जैन, प्रधान मन्त्री ।

—देहरादून में इस साल दशलाक्षणी पर्व के अवसर पर आगरे की जीव दया प्रचारिणी सभा के मंत्री पं० बाबूराम जी तथा काशी के पं० फूलचन्द जी पधारे थे। जिनके व्याख्यानों से जैन तथा अजैन जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा और ३५ मनुष्य जीवदया प्रचारिणी सभा के सभासद बने। नवयुवकों में विशेष उत्साह रहा। इन के प्रयत्न से पंचायत के सामने यहाँ पर जैन कुमार सभा के स्थापित करनेका प्रस्ताव रक्खा गया और आशा है कि सभा शीघ्र ही स्थापित हो जावेगी। पं०जीके उपदेशसे स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा की।

देश ।

—भारत सरकारने निश्चय किया है कि भविष्यमें अण्डमन द्वीपमें अपराधी कैदी नहीं भेजे जायेंगे और वह स्वतन्त्र उपनिवेशके रूपमें ढाला जायगा। आजन्म कारावासकी सजा पानेवाले कैदी यह समाचार सुनकर अवश्य ही फूले नहीं समायेंगे क्योंकि घोर नर्क यातनासे उनका पिण्ड छूट गया। परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिये कि भारत सरकार ने उन्हींके उद्धारके लिये इस महान कार्यका बीड़ा उठाया है। बल्कि उसे कुछ दिनोंसे एंग्लो इण्डियनों के भविष्यकी चिन्ता थी कारण कि भारत तो कालों का देश है। यहां दाल में नमक के बराबर रहकर वे अपनी सफेदी कब तक कायम रख सकेंगे। अतएव एण्डमन द्वीप पुञ्जको एंग्लो इण्डियनोंका द्वीप-शुद्ध श्वेताङ्ग द्वीप बनाने की युक्ति सूझ पड़ी। मोपला आदि कुछ कैदी भी बाल बच्चे सहित वहां बसनेके लिये भेजे जा रहे हैं जिसमें नाजुक एंग्लो इण्डियनोंको जङ्गल आदि काटकर आबाद करनेमें अधिक कष्ट न उठाना पड़े। इसके अलावे खानसामाका काम करनेके लिये कुछ काले भी तो चाहिये! अस्तु भारतियोंको एंग्लो इण्डियनों के वहां बस जानेमें प्रसन्नता ही है यदि वह अलस्टर न बने।

—४ महीने तक बंगाल प्रान्तका दौरा करके म० गांधी १ सितम्बर को कलकत्ते से बम्बई के लिए रवाना हो गये। महात्मा जी अपने आश्रम

हर जगह एजेन्ट चाहिये नमूना मुफ्त

शीशी ॥) दर्जन ५॥)

शेंडये वैद्यकृत
प्रभावती वटी
मलेरिया, न्युमोनिया, टाइफाईड, सन्निपात वगैरा सब प्रकार के ज्वरों की रामबाण महौषधी।

फ्री सेम्पल अलग

बिना तकलीफ के दादको जड़से मिटाने के लिए

दद्रुहर मरहम

ही योग्य है। शीशी ।~) दर्जन २॥) डा० म० माफ। कोई भी दवा १ दर्जन मगाने से एजेन्ट हो सकता है। सर्व शास्त्रीय औषधियां बिक्री के लिये तयार रहती हैं। एजेन्ट, वैद्य और धर्मादय वालों को विशेष सुविधा। बीमारी का हाल लिख भेजने पर उचित सलाह मुफ्त। विशेष हालके लिये पत्र लिखिये, सूचीपत्र मुफ्त।

—पता आयुर्वेदाचार्य पाण्डुरंग शिवराम शेंडये वैद्य, श्रीगणेश चिकित्साभवन, नं० ५ दमोह सी० पी०

में १५ दिन ठहर कर बिहार और उड़ीसा प्रान्तका दौरा करेंगे। बंगाल में महात्मा जी प्रायः सब ज़िलों में गये। किन्तु आसाम का दौरा स्थगित कर देना पड़ा।

—'तेज' को मालूम हुआ है कि लाहौरमें मुसलमानों की एक गुप्त संस्था बनी है। जो हिन्दू पत्रों के विरुद्ध प्रचार-कार्य कर रही है। उसके दो पोस्टर निकल भी चुके हैं।

—पालनपुर (जूनागढ़) में एक शिवभक्तने भक्ति के आवेश में आकर श्रावण महीने के एक सोमवार को अपना सर काटकर शिव जी को भेंट कर दिया। वह एक कागज़ पर लिख गया है कि मैं सर किसी अन्य कारण से नहीं भक्ति से ही काट रहा हूं।

—पानीपत के ज़िला मजिस्ट्रेट ने सूचना निकाली है कि मोहर्रम के दिनों में मुसलमानों के धार्मिक भावों को चोट पहुंचाने के जुर्म में ३० हिन्दुओं पर मुक़द्दमा चलाया जायगा।

—बंगाल देश बन्धु-स्मारक फंडमें ३ सितम्बर तक ७१८३०२=)॥ इकट्ठा हो चुके।

—भारतीय कम्युनिस्ट कान्फरेन्स की स्वागत समिति का निर्माण करनेके लिए २० सितम्बर को 'इंडियन कम्युनिस्ट पार्टी' का एक अधिवेशन पटकापुर कानपुर में पार्टी के कार्यालय में होगा।

—कलकत्ता के राष्ट्रीय मुसलिम संघ की एक बैठक में मदीना की गोलाबारी पर रोष प्रगट किया गया, न्यूमार्केट के पीर की क़ब्र को उखाड़ देने का विरोध किया गया और यह भी कहा गया कि इम्पीरियल बैंकके सहायकोंमें योग्य मुसलमानों को स्थान दिया जाय।

—विगत रविवार को मिल्लावाँ (लखनऊ) में हिन्दू मुसलमानोंमें दंगा होगया। कुछ हिन्दू गया करने जारहे थे। एक जलूस उन्हें स्टेशन पर छोड़ने आया। रास्ता में मुसलमानों ने बाजा बजाने को लिए मना किया। हिन्दुओंके न मानने पर मुसलमानों ने यात्रियों पर आक्रमण किया। लड़ाई हुई। ६ आदमी घायल हुए। बाराबंकीमें भी इसी प्रकार एक दंगा होगया जिस में कई आदमी घायल हुए। खाम गाँव (बरार) से भी एक ऐसी ही सूचना मिली है। यहाँ पर मुसलमानों के हमला करनेपर हिन्दुओं ने जलूस लौटा लिया और फिर पुलिस की संरक्षकता में उसे ले गये।

—असहयोग का स्थगित करना और स्वराज्य दल को आत्मसमर्पण कर देना बहुत से देश भक्तों को अच्छा नहीं लगा। कितने ही लोग हृदय थाम कर चुपचाप बैठ रहे और महात्मा जी के प्रति प्रगाढ़ प्रेम के कारण कुछ कह न सके। परन्तु कुछ लोग मौनावलम्बन की नीति को भी घातक मानते हैं और अब समाचार आया है कि सत्याग्रह का श्री गणेश करने के लिये बरीसाल में पुनः पिकेटिंग शुरू कर दी गयी है। हम तो यही चाहते हैं कि बरीसाल का यह उद्योग सफल हो और इस देश की परमुखापेक्षी प्रवृति समूल नष्ट हो जाय। परन्तु लोकमत को देखते हुए यह आशा नहीं होती कि वह आन्दोलन सफल होगा।

—विदेशियों द्वारा निर्मित कानून और व्यवस्था जब तक भारत में प्रचलित है, तब तक शासक चाहे कोई भी हो, उनसे रत्ती भर भी लाभ नहीं उठाया जा सकता। कलकत्ता कारपोरेशन ने

देशबन्धुदास का स्मारक बनवाने का निश्चय किया था परन्तु खबर है कि सरकारी एडवोकेट जनरल ने उसे सूचना दी है कि वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि कानूनी में ऐसा करने का उसे अधिकार नहीं है। आश्चर्य है कि लार्ड गवर्नरों का स्टेचो खड़ा करने का उसे अधिकार था परन्तु अपने मेयर और देश के हृदय सम्राट् का स्टेचो खड़ा करने का अधिकार नहीं है।

—बाम्बे 'क्रानिकल को मालूम हुआ है कि एक विदेशी सिण्डीकेट बम्बई की बीस मिलें खरीद रहा है।

—पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने महात्मा जी से प्रार्थना की है कि वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक पटने के बजाय दिल्ली में करें। कमेटी ने इस बात पर दुःख प्रकट किया है कि साधारणतः अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक पंजाब से बहुत दूरी पर हुआ करती है।

विदेश।

—बोल्शेविकों के उस हवाई जहाज के लिए जो हाल में जापान के शिमोनेस्की नामक टापू में उतरा है, जापानी युद्ध सचिव ने आज्ञा दी है कि जहाज तोड़कर टापू से हटा दिया जाय क्यों कि उस के उतरने से जापान के राष्ट्रीय नियम का भंग हुआ है।

—बेलजियमके सम्राट और सम्राज्ञी भारत के लिये रवाना हो चुके। वे भारत में एक मास तक ठहरेंगे।

—वहाबियों द्वारा मक्का और मदीना की मसजिदों पर गोलाबारी होने के सबब से सारे भारत के मुसलमानों में एक विशेष उत्तेजना फैल गयी है, खिलाफत कमेटी की ढीली ढाली नीति से भी वे असन्तुष्ट हैं। बम्बई में मुसलमानों ने एक बड़ी सभा में खिलाफत कमेटी के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव पास किया है।

टाइपराइटर बिकाऊ

एक कमर्शियल टाइपराइटर बिलकुल नया फुलिस्केप साईज नं० १० विज़िबिल मज़बूत और सस्ता बिकाऊ है इसके चालने में बिलकुल रमिङ्गटन नं० १० के मुताबिक है क़ीमत सिर्फ़ १६०) है। पुर्जे एक दूसरे के तबदील हो सकते हैं।

पता—बाबू अनन्तलाल इञ्जिनियर मारफत 'वीर' कार्यालय बिजनौर।

विषय-सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	वीर जिनेरा (कविता)	५५५	७	महिला महिमा	५७३
२	बाल्य विवाह की पुष्टि	५५६	८	सम्पादकीय टिप्पणियां	५६४
३	अनोखे ज्ञानी (कविता)	५६१	९	परिषद् समाचार	५७५
४	एक महाभ्रष्ट	५६१	१०	बिरले (कविता)	५७६
५	सम्पादकीय टिप्पणियां	५६७	११	संसार दिग्दर्शन	५७५
६	साहित्य समालोचना	५६१			

श्रीप्रिय जगदीशदत्त ने अजन्त दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छापा।

जगतप्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चाँदी के फूल भाव १।) तोला ☞ ☜ सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला

(सिर्फ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व वेशी जितने तोल चाँदी में तैयार होसकता है उसकी विगत।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*वंदनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र ध्वज	६६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०)से१०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	*पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चंवर दंड	७) से २५)	*अष्टमङ्गलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रतिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२००) से ५००)	चौकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वप्ने	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १०००)	समोसरन	१००) से ३०००)	*भामण्डल	३०) से १००)
*सोंटा	५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीप की रचनाका मांडला	१०)से५००)	कलशा	५०) से ५००)
*छतरी डंडा	३०) से ५०)			तख्त चाँदी के	२००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण।				बारहदरी	२५००) से ५०००)
गन्धकुटी	२५००) से ४०००)	तेरह द्वीप का रचनाकामांडला	५००)से२०००)	*पूजन के बरतन	३००) से ५००)
वेदी	८००) से ४०००)				

यह काम वाजिब दाम पर बनवा देते हैं मन्दिर जी के काम में ३=) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। * इस चिह्न की चीज भी तैयार रहता है। * यह चीज तार का बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, सोनी कटरा, बनारस।

(२) जैन-समाज-कार्यालय सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चांदी विभाग बनारस सिटी।

Tel. Address SINGHAI BENARES

सावधान ! नई खुशखबरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी।

(१) भरी मजदूरी नक्काशीदार फेन्सी काम जैसे वेदी, पालकी सिंहासन चंवर छत्र आदि

(२) भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाला लोटा गिलास वगैरह ।

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये।

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहां हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चंवर सिंहासन, वेदी, पालकी, अष्टमङ्गलद्रव्य, अष्टप्रतिहार्य, मुकुट मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर कलश, कलशी तथा झांझी का सामान जैसे चन्दोवा परदा, ओढ़ार, वन्दनवार इत्यादि।

सीताराम लहरीप्रसाद,

मालिक-'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी।

हमारे अन्य कार्य

हमारे यहां बनारसी साड़ियां, साफे, दुपट्टे, कमख्वाब, पोत के थान, ईसकाफ, काशी सिल्क के थान, दुपट्टे साफे, दावनी गोटा, पट्टा, पुरबी साड़ी टकुवा वगैरह।

जाति सेवक

सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस।

Book No 1271

यदि आप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं 'वीर' में विज्ञापन छपवाइये।

वीर—को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ता है।

वीर—हरएक जैन स्कूल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है।

वीर—धार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है।

वीर—उच्चकोटि का पाक्षिकपत्र होनेसे फ़ाइल में रक्खा जाता है और बार बार पढ़ा जाता है।

वीर—एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है।

वीर—विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा।

शीघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर रेट मालूम कीजिए और स्थान रिज़र्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पछताना पड़ेगा।

'वीर' आफ़िस, बिजनौर।

केवल टाईटिल पेज पं० जीवारामोपाध्याय ने अपने सरस्वती प्रेस मुरादाबाद में छापा।

वर्ष २] १ अक्टूबर सन् १९२५ ई० [संख्या २३

श्रीवर्द्धमानायनमः !

वीर

श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् का

पाक्षिक पत्र ।

आनरेरी सम्पादक :—

जैनधर्मभूषण, धर्मदिवाकर, श्री ब्र० शीतलप्रसाद जी

आनरेरी उपसम्पादक :—

श्री कामताप्रसाद जी

हर्ष ! हर्ष !! हर्ष !!!

वीर के ग्राहकों को विराट उपहार

वीर के आगामी (तृतीय) वर्ष के ग्राहकों को एक परमोपयोगी वृहत ४०० पृष्ठों की पुस्तक--

" सत्य-मार्ग " बिल्कुल मुफ्त मिलेगी ।

इसमें गृहस्थ के प्रारम्भिक कर्त्तव्यों का विवेचन तुलनात्मक ढङ्ग से किया गया है। बड़े गहन परिश्रम और अनेक ग्रन्थों का मथन करने के उपरान्त यह पुस्तक पूर्ण हुई है और अपने ढङ्ग की निराली और अमूल्य रचना है।

आगामी वर्ष में दो विशेषाङ्क भी मिलेंगे ।

नवीन ग्राहकों को शीघ्र ही अपने नाम २॥) वार्षिक मूल्य भेजकर दर्ज रजिस्टर करा लेने चाहियें। क्योंकि पुस्तक कीमती होने के कारण केवल परिमित संख्या में ही छपवाई जायगी अन्यथा पछताना पड़ेगा।

प्रकाशक.

आनरेरी प्रकाशक-

राजेन्द्रकुमार जैन बिजनौर (यू० पी०)

हर्ष !   हर्ष !!   हर्ष !!!

दिवाली पर 'वीर' का विशेषाङ्क ।

इस वर्ष भी हमने दीपमालिका के उपलक्ष्य में बहुत सुन्दर और उपयोगी सचित्र वीर का विशेषाङ्क निकालने का निश्चय किया है। अभी से इस के लिये तय्यारियां होरहीं हैं । इस में अन्य चित्रों के अतिरिक्त एक अत्यंत मनोहर तिरंगा चित्र श्रीपावापुरिजी का भी होगा जिसको कि बड़े परिश्रम और व्यय करके कलकत्ते में छपवाया गया है। जिन ग्राहकों का चन्दा निर्वाण अङ्क पर समाप्त होता है (ग्रा०न०६०१ से लेकर६३७ तक) उनको चाहिये कि आगामी वर्ष का २॥) मूल्य मनी-आर्डर द्वारा भेजदें। अन्यथा वी० पी० भेजने पर यह अंक देर से मिलने के अतिरिक्त व्यय भी अधिक पड़ेगा और हम को दिक्कत पड़ेगी। अन्य सज्जन जो ग्राहक होना चाहें उनको भी शीघ्र अपना नाम २॥) भेजकर दर्ज रजिस्टर करा लेना चाहिये। क्योंकि परिमित संख्या में ही यह अंक और उपहार ग्रंथ छपेगा। गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी हमको इस अंक की तय्यारी के कारण २४वां अंक बन्द रखना पड़ेगा । आगामी वर्ष का उपहार भी आशा है इसी अंक के साथ हम ग्राहकों को भेंट कर सकेंगे।

राजेन्द्रकुमार जैनी,
प्रकाशक 'वीर'
बिजनौर ।

श्री महावीराय नमः ।

वर्ष २ | बिजनौर, आश्विन शुक्ला १४ वीर सम्वत् २४५१
१ अक्टूबर, सन् १९२५ | अङ्क २३

नवयुवकों से निवेदन ।

१

यदि करना है कार्य तुम्हें, तो कर्म क्षेत्र में आओ ।
धर्म, जाति, उत्थान हेतु, प्रिय ! अपना हाथ बटाओ ॥
किंतु वितंडावाद बढ़ा निज व्यर्थ न समय गमाओ ।
केवल प्रस्तावक बन कोरा ज्ञान न अब दिखलाओ ॥

२

आपस में मत भेद बढ़ा मत द्वेषानल फैलाओ ।
पतित जातिको साहस संयुत ऊपर बंधु उठाओ ॥
घोर विरोध करो अनीति कर किंचित् भय मत लाओ ।
"सत्यमेव जयतीय" ध्वजा सभ अंतर्गत फैलाओ ॥

....

हे नवयुवकों ! क्यों सोते हो ? उठो ! शर्म कुछ खाओ ।
नवजीवन संयुत नव युग का नव्य संदेश सुनाओ ॥

—"वत्सल"

जैन मुनियों का प्राचीन भेष ।

उपरोक्त शीर्षक के गत लेख में हम देख आए हैं कि हिन्दुओं के वेद, बौद्धों के पिटक एवं दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों के शास्त्र यहां प्रकट करते हैं कि जैन मुनियों का प्राचीन भेष नग्न है। वही वास्तविक जिन कल्पी-जैन मुनि हैं। परन्तु उस ही लेख में हम बौद्धों के 'कस्सप-सिंह नाद' सूत्र से कतिपय क्रियाओं की सूची दे आए हैं, जो बौद्ध पुस्तक में किसी एक श्रमण की बताई गई हैं। हमने उनको जैन मुनियोंकी क्रियायें बतलाई हैं। उनमें से प्रथम क्रिया नग्न-विचरणकी है। उसके विषयमें हम देख ही चुके कि यह विशेषण अथवा क्रिया जैन मुनियों को लागू है।

दूसरी क्रिया बौद्ध पुस्तक में यह बतलाई गई है कि 'वह ढीली आदतों का है। शारीरिक कार्य और भोजन वह खड़े २ करता है, भले मानसों की भांति झुककर या बैठकर नहीं करता।' यहां पर बौद्धाचार्य का भाव भोजन संबंधी चर्या से है। बेशक जैन मुनि सर्वसाधारण की भांति न कुल्ला दतौन करता है और नहाता धोता है। वह शारीरीक महत्व से एक दम विलग हो चुका है। शरीर का पोषण मात्र आत्मघात के भय एवं धर्मसाधन के निमित्त करता है। इस लिए जब वह शरीर-स्थिति के उद्देश्य से भोजन के लिए जाता है तो वहीं श्रावकादि भक्त जन उसको पड़गाकर प्रासुक जल से खड़े ही खड़े उनका पाद प्रक्षालन करते हैं। वह इस लिए क्रिया के लिए झुकते नहीं हैं अथवा पादादि उठाते नहीं हैं। पुरुषार्थ सिध्यु-पाय में यह विधि नौ प्रकार लिखी है यथा:—

"संग्रह मुच्च स्थानं पादोदकमर्चनं प्रणामं च।
वाक्कायमनः शुद्धिरेषण शुद्धिश्च विधिमाहुः॥१३८॥"

इसका भावार्थ श्री 'गृहस्थधर्म' में इस प्रकार बतलाया गया है कि '१-प्रथम श्री मुनिराज को पडगाहना याने शुद्ध वस्त्र पहने हुए और प्रासुक शुद्ध जलका कलश लिए हुए अपने द्वार पर णमोकार मंत्र जपता पात्र की राह खड़ा रहे। उस समय घर में अपनी रसोई तय्यार हो गई हो। जैसे चक्की से पीसाजाना, उखली में कूटा जाना बुहारी का दिया जाना, सचित्त पानी का भरा जाना व फेंका जाना, आग का जलना या जलाया जाना व आग पर किसी चीज का पकाया जाना। क्योंकि सचित्तका आरम्भ होते देख कर मुनि लौट जायंगे। रसोई तैयार करके चूल्हा ठंडा कर दिया जावे और सब सामान शुद्ध स्थान में बना रक्खा रहे। राह देखते हुए जब मुनि नजर पड़ें और उस घर के पास आवें तब वह नमोस्तु कहते झुकता हुआ "आहार पानी शुद्धअत्र तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठ ' इसका प्रयोजन इस बात के दिखाने का है कि हमारे यहां आहार व पानी सब शुद्ध दोष रहित है-आप कृपा कर के यहां पधारें-पधारें पधारें। तीन बार कहने का प्रयोजन यह है कि हमारी अत्यन्त भक्ति है आप अवश्य कृपा करें—इसका नाम संग्रह है (२) उच्च-स्थान—घर के भीतर लेजा कर किसी ऊंचे स्थान

पर (जैसे ऊँचा पटरा व काष्ठ की चौकी आदि) विराजमान करे और विनय सहित खड़ा करे। (३) पादोदक--शुद्ध अचित्त जल से पादों को धोवे (४) अर्चनं—अष्ट द्रव्यों से भाव सहित पूजन करे, अर्घ चढ़ावे पूजन में बहुत समय न लगावे, नहीं तो आहार का समय निकल जावेगा। ५ व ७ मिनट में पूजन करले और मुनि का दर्शन कर अपने को कृतार्थ माने। (५) प्रणाम-भावसहित नमस्कार करे। (६)वाक् शुद्धि-जिस समय से मुनि को पड़गाहा जाय उस समय से लेकर जब-तक श्री मुनि घर से विदा न हों तबतक आप भी वचन धर्म व न्याययुक्त मतलब के बहुत मिष्टता व शांतता से कहे और घर के अन्यजन भी जो वचन अति जरूरी हों सो कहें-नहीं तो मौन रहें। (७) काय-शुद्धि—दान देने वाले का शरीर शुद्ध होना चाहिए ·····(८)मनःशुद्धि—दातार का मन धर्म प्रेम से वासित हो।···(९)एषण शुद्धि—भोजन की शुद्धि हो।" (१६१-१६२)-इस क्रिया से स्पष्ट है कि मुनिजन स्वयं पदादि धोने की इच्छा नहीं करते और न वह उनके लिए कोई अवयव हिलाते डुलाते हैं। सारांश यह कि जैन मुनियों के जो २८ मूल गुण बताए हैं उन में २५ वें अस्नान-स्नान न करना, २६ वें अदन्त घर्षण-दांत न धोना और २७ वें स्थित भोजन-खड़े २ भोजन करने का समावेश बौद्ध पुस्तक के इस दूसरे नियम में किया गया है। मुनि के यह तीनों गुण क्रमवार निम्न श्लोकों द्वारा मूलाचार में प्रकट किए गए हैं:-

ण्हाणादिवज्जणेणय विलित्तजल्लमलसेदसव्वंगं।
अण्हाणं घोरगुणं संजमदुगपालयं मुणिणो ॥३१॥
अंगुलिणहावलेहणिकलीहिं पासाणछल्लियादीहिं।
दंतमलासोहणयं संजमगुत्ती अदंतमणं ॥ ३३ ॥
अंजलि पुडेण ठिच्चा कुड्डादिविवज्जणेण समपायं।
पडिसुद्धे भूमितिए असणं ठिदिभोयणं णाम ॥३४॥"

इस ही प्रकार श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने अपने प्रवचनसार परमागम में मुनिके २८ गुणों में इन तीनों की भी गणना की, है यथाः—

'वदसमिदिंदियरोधो लोचावस्सकमचे(१)लमण्हाणं
खिदिसय(२)णमदंतवणं ठिदि(३)भोयणमेयभत्तं च
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
तेसु पमत्तो समणो छेदो वट्टावगो होदि ॥९॥'

इस प्रकार दूसरी क्रियाको भी हम जैनमुनियों के आचरण से लागू पाते हैं। अब बौद्ध पुस्तक की बताई हुई तीसरी क्रिया यह है कि वह अपने हाथ चाट कर साफ कर लेता है।" इसमें कुछ गलती मालूम होती है। बौद्ध पुस्तक में केवल पूर्व प्रकाशित क्रियायें ही नहीं दी हैं, प्रत्युत कई एक सूचियां क्रियाओं की दी हैं, जिन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बौद्धाचार्य उस समय के विविध धर्म यतियों के आचरणों का उल्लेख कर रहे हैं। इन सूचियों में पूर्व प्रकाशित क्रियायें हमारी समझ में जैन मुनियों को लक्ष्य कर लिखी गई हैं। अस्तुः उनमें यह तीसरी क्रिया किसी के दृष्टि दोष अथवा अन्य प्रकार से आगई है। इस सूची के उपरान्त जो दूसरी सूची अन्य क्रियाओं की दी है उसमें तीसरी क्रिया "बाल नोचने और दाढ़ी उखाड़ने की है।" जो यहाँ असंगत मालूम होती है। यहां अन्य लघर क्रियाओं के साथ यह कठिन क्रिया ठीक नहीं है। इस लिए यह क्रिया इस सूची में होना चाहिए जिसको हम जैन मुनियों के लिए बतला रहे हैं। क्योंकि जैन मुनियों के लिए यह क्रिया आवश्यक

है इसको लोच क्रिया कहा गया है और यह २८ मूलगुणोंमें ४ था मूलगुण है। जैसे कि उपरोक्तश्लोक से प्रगट है इस शब्द की व्याख्या इस तरह है:—

"लोचः बालोत्पाटनं हस्तेन मस्तक केश श्मश्रुणामपनयनं सम्मूर्छनादि परिहारार्थं रागादिनिराकारणार्थं स्ववीर्य प्रकटनार्थं सर्वोत्कृष्ट तपश्चरणार्थं लिंगादिगुणज्ञापनार्थं चेति।"

भावार्थ-"हाथसे बालोंको उखाड़ना लोच है। मस्तक के केश व डाढ़ी मूछके केशोंको दूर करना चाहिए जिस के लिए ५ हेतु हैं: (१) सम्मूर्छन विकलत्रय आदि जीवों की उत्पत्ति बचाने के लिए (२) रागादिभावों को दूर करने के लिए (३) आत्मबल के प्रकाश के लिए (४) सर्व से उत्कृष्ट तपस्या करने के लिए (५) मुनिपने के लिंग को प्रगट करने के लिए।"इस प्रकारका लोच करना मुनि के लिए आवश्यक है। मूलाचार जी में स्पष्ट कहा है:—

"वियतियच उक्कमासेलोचो उक्कस्समज्झिमजहण्णो।
सपडिक्कमणे दिवसे उववासे णेवकायव्वो॥२६॥"

भावार्थ-केशों का लोच दो मास में करना उत्कृष्ट है, तीन मासमें करना मध्यम है, चार मास में करना जघन्य है। प्रतिक्रमण सहित लोच करना चाहिए और उस दिन उपवास अवश्य करना चाहिए।', अथवा यह भी संभव है कि जैन मुनि को हाथों में भोजन करते देख कर बौद्धाचार्य ने ऐसा लिखा हो, क्यों कि दि० मुनि भोजन पात्र नहीं रखते। वह हाथों की अंजुलि में भोजन ले भोजन करते हैं। इस तरह बौद्ध-पुस्तक की यह तीसरी क्रिया भी जैन मुनि के आवश्यक कर्तव्यों में मिलती हैं। अब चौथी क्रिया बौद्ध पुस्तक की इस प्रकार की है:—

'(जब वह अपने आहार के लिए जाता है, यदि सभ्यता पूर्वक नज़दीक आने को या ठहरने को कहा जाय कि जिससे भोजन उन के पात्र में रख दिया जाय* तो) वह तेज़ी से चला जाता है (शायद कहीं वह दूसरे मनुष्यके वचनोंका अनुकरण कर दोष का भागी न हो)'

इस का भाव यही है कि मुनि आहार निमित्त ठहरेंगे, नहीं, जैसे कि हम 'गृहस्थ-धर्म' के पूर्व कथन में देख आए हैं कि सब चीज़ तैयार रहना चाहिए। ठहराने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। मुनिगण इस वजह से नहीं ठहरेंगे कि उस समय भोजन संबन्धी जो कार्य किया जायगा वह उसके निमित्त किया जायगा और फिर दूसरे पुरुष भी आकर कुछ कहने लगें। इसलिए नहीं ठहर सकते। ऐषण समिति की टीका में वसुनन्दि श्रमण यही व्यक्त करते हैं कि 'आहार निमित्त निकल कर मुनिगण मध्यम चाल से विचरते हुए चले जायगे उन्हें चाहे कोई पड़गाले जिसके आहारादि बातें शास्त्रानुसार हों। यथा:—

"भिक्षावेलायां ज्ञात्वा प्रशान्ते धूम मुशलादि शब्दे गोचरं प्रविशेन्मुनिः। तत्र गच्छन्नाति द्रुतं, न मन्दं, न विलम्बितं गच्छेत॥१२१॥

ऐषणासमिति मुनि के लिए आवश्यक है और वह इस प्रकार बतलाई गई हैं:—

"छादालदोस सुद्धं कारणजुत्तं विसुद्धणवकोडी। सीदादी समभुत्ती परिसुद्धा एषण समिदी॥१३॥ मूलाचार"

*मूल पुस्तक के यह शब्द नहीं हैं। भाव स्पष्ट करने के लिए टीकाकार ने लिखे हैं। इस लिए यह पात्र हाथ ही समझना चाहिए। —उ० सं०

भावार्थ-"भूख आदि कारण सहित छयालीस दोष रहित, मन, वचन काय, कृत, कारित, अनुमोदना के ९ प्रकार के दोषों से शुद्ध शीत उष्ण आदि में समता भाव रखकर भोजन करना सो निर्मल एषण समिति है। इसमें बताए हुए४६ दोष इस भांति हैं:—

१६-उद्गमदोष-जो दाता के आधीन हैं।

१६-उत्पादन दोष-जोपात्र के आधीन हैं।

१०-भोजन सम्बन्धी शकित दोष हैं —इन्हें अशन दोष भी कहते हैं।

१- अङ्गार दोष, १ धूम दोष, १संयोजन दोष, १ प्रमाण दोष।

इनमें जो उद्गम दोष हैं उनमें दूसरा अध्यधि दोष या साधिक दोष इस प्रकार हैं। "संयमी को आते देखकर अपने बनते हुए भोजन में साधु के निमित्तऔर तंदुल आदि मिला देना अथवा संयमी पड़गाह कर उस समय तक रोक रखना जब तक भोजन तय्यार न हो।" (प्रवचनसार परमागम भाग ३ पृष्ठ ५२)

इस से बौद्ध पुस्तक की उक्त क्रिया जैन मुनि के लिए प्रमाणित हो जाती है अब उसमें बताई हुई पांचवी क्रिया इस प्रकार है—

'वह (उस) भोजन को नहीं लेता है (जो उस के निकट आहार के लिए निकलने के पहिले लाया गया हो)'

यह बिल्कुल स्पष्ट ही है जैसे कि हम पहिले देख चुके हैं कि मुनि आहार के समय जब उसके निमित्त निकलेंगे तब ही जो उनको पड़गा लेना उस के यहां भोजन करेंगे। आहार निमित्त निकलने के पहिले वह भोजन ग्रहण नहीं करेंगे। क्योंकि वह उनकी चर्या के खिलाफ है और उसमें उनके निमित्त बना जानकर ग्रहण करने से कारित अथवा अनुमोदना दोष आता है। इस प्रकार यह क्रिया भी जैन मुनि के व्यवहार के अनुसार है। उसकी छठी क्रियायें है।

'वह (उस भोजन को भी) नहीं लेता है (यदि बता दिया जाय कि वह) खास कर उसके लिए बनाया गया हो,'

जैन मुनि को यदि यह मालूम हो जाय कि उनके लिए ही यह भोजन बनाया गया है तो वह नहीं लेते हैं क्यों कि उसमें कारित अथवा अनुमोदना दोष लगता है, जैसा के ऊपर के ऐषणा समिति के श्लोक में बतलाया गया है। इस तरह यह भी क्रिया जैन मुनि से लागू होती है। बौद्ध पुस्तकमें बताई हुई सातवीं क्रिया इस तरह हैः—

'वह कोई निमंत्रण स्वीकार नहीं करता (कि आहार निमित्त किसी खास घर पर अथवा किसी खास रास्ता होकर या किसी खास जगह पर जाऊंगा,'

इसमें भी उक्त दोष आता है। अधःकर्म अर्थात भोजन आदि सामग्री बनाने का दोष मुनिगण अपने चारित्र में नहीं लगने देते। और इस प्रकार निमंत्रण ग्रहण करने से कारित अथवा अनुमोदना द्वारा अधःकर्म के दोष का भागी होता है। इस लिए वह निमंत्रण स्वीकार नहीं करते। अतएव यह क्रिया भी जैन मुनि के चरित्र को लक्ष्य कर लिखी गई है। आठवीं क्रिया इस प्रकार बताई हैः—

वह नहीं लेगा (भोजन जो उस बर्तन में से निकाला गया होगा) जिसमें वह रांधा गया हो (जिससे कि शायद वह बर्तन चमचे से रगड़ आदि

उस के कारण जंय) इसमें बौद्धाचार्य का भाव 'स्थापित दोष' या 'न्यस्तदोष' को व्यक्त करने का है, यद्यपि उसको यहां पर उसने पूर्ण स्पष्ट नहीं किया है। यह दोष जैनग्रंथों में इसप्रकार बतलाया गया है। "जो भोजन जिस बरतन में बना हो वहां से निकाल कर दूसरे बरतन में रखकरके अपने घर में व दूसरे के घरमें साधुके लिए पहिले से रखलिया जाय वह स्थापित दोष है। वास्तव में चाहिये यही कि कुटुम्बार्थ भोजन बना हुआ अपने अपने पात्रमें ही रक्खा रहे। कदाचित साधु आ जाय तो उसका भाग दान में देवे-पहले से उद्देश न करे। (प्रवचनसार परमागम भाग ३ पृष्ठ ५२) बौद्ध टीकाकार ने बरतन से निकला हुआ भोजन न लेने में जो अनुमान से लिखा ठीक नहीं है। भाव उक्त प्रकार है। इस तरह यह क्रिया भी जैन साधु को लक्ष्यकर बौद्ध पुस्तकमें लिखी गई है। नौवीं और दसवीं क्रियायें उस में इस प्रकार हैं:—

'(वह भोजन) नहीं (लेगा) आँगन में से (कि शायद वह वहाँ खासकर उस के ही लिये रक्खा हो)' (वहभोजन) नहीं (लेगा) जो लकड़ियों के दरमियान (रक्खा गया हो कि वह वहां खासकर उस के लिये ही रक्खा गया हो)!

इन क्रियाओं में 'प्रादुष्कार दोष' को लक्ष्य किया गया है। यह दोष यूँ है:—साधु महाराज के घर में आजाने पर भोजन व भाजन आदि को एक स्थान से दूसरे स्थानमें लेजाना यह संक्रमण प्रादुष्कार दोष है। तथा साधु महाराज के घर में होते हुये बरतनों की भस्ममें मांजना व पानी से धोना व दीपक जलाना यह प्रकाशक प्रादुष्कार दोष है। इस में साधु के उद्देश्य से आरंभका दोष है।' आंगन में भोजन पाक स्थानसे लाकर ही रक्खा जावेगा। यहां पर भी बौद्ध टीकाकार यद्यपि ठीक मतलब को पहुंचा है, परन्तु उसने मुनि की उपस्थिति को स्पष्ट नहीं किया है। ऐसे ही लकड़ियों में स्पष्टतः इसका भाव यदि जलती का लिया जाय तो वह आरंभ (रंधना) मुनि के निमित्त से हुआ समझा जायगा, इस लिए मुनि आहार नहीं लेंगे,यह ऐषणा समिति में ऊपर बतला चुके हैं। ग्यारहवीं क्रिया इस प्रकार है:-

(वह भोजन) नहीं (लेगा जो) सिल बट्टे के दरमियान (रक्खा गया हो, कि शायद वह वहां खासकर उसके लिए ही रक्खा गया हो)'

यह शायद उन्मिश्र अशन दोष को लक्ष्यकर लिखा गया है। सिलबट्टे के दरमियान रखी हुई वस्तु दाल आदि पदार्थ होंगे जो पीसकर द्विदल रूपमें दिए जांय तो फिर मुनि गृहण नहीं करते हैं। और यदि यह भाव हो कि कोई वस्तु सिल बट्टे में मुनिके लिए रक्खी गई है तो मुनिराज आरंभ दोष के कारण उसे नहीं लेंगे। इस तरह यह भी क्रिया जैनमुनि की चर्या में मिलती है। बारवीं क्रिया यूं बतलाई गई है:—

जब दो व्यक्ति साथ २ भोजन करते हैं तो वह नहीं लेगा (वह भोजन जो वह खाते हैं यदि उन दो में से केवल एक ही देगा)'

यह अनीश्वर व्यक्ताव्यक्त अनीशार्थ दोष का रूपान्तर है, जिसको (प्रवचनसार परमागम में पृष्ठ ५५) भिन्नरूप कोई देना चाहे व कोई निषेधकर रूप में बतलाया है। मूलाचारटीका में इसको और भी स्पष्टकर दिया है। इसके लिये मूलाचार में अनिसिट्ठ उद्गमदोष की व्याख्या देखना चाहिए। तेर-

१३वीं और चौदहवीं क्रियायें निम्न प्रकार बतलाई गई हैः—

वह दूध पिलाती हुई स्त्री से भोजन नहीं लेगा (कि शायद दूध कम हो जावे)

वह पुरुष के संग रमण करती हुई स्त्री से भोजन नहीं स्वीकार करेगा (कि शायद उनके रमणमें बाधा पड़े ।'

यहां पर बौद्धचार्य दायक अशन दोष को ही बतला रहे हैं । इस दोष में ३५ (किंवा अधिक) प्रकार व्यक्तियों के हाथ से मुनिको भोजन लेना मना है । इनमें उक्त दोनों प्रकार के व्यक्तियों का समावेश है । मूलाचार में यह सब विशद् रूपसे दिए हुए हैं । अब पन्द्रहवीं क्रिया बौद्धाचार्य इस प्रकार बतलाते हैंः—

'वह नहीं लेगा भोजन (जो अकाल के समय श्रावक द्वारा) एकत्रित किया गया हो ।'

यह भी जैन मुनि के आचरण के अनुकूल है । बहुत सी दशाओं में मुनि का आहार ग्रहण करना वर्जित है जिनका विवेचन मूलाचार अ०६श्लो० ५६ से६३में दिया हुआ है । तिसपर इसमें अभिघट या अभिहृत उद्गम दोष का भी समावेश दीखता है । क्योंकि यह दोष इसमें बतलाया गया है कि अपने पड़ोस के घरों में से, ग्राम से, देश से और विदेश से भोजन लाकर मुनि को देना । ऐसा भोजन मुनि ग्रहण नहीं करेंगे । अकाल के समय शायद यह क्रिया बौद्धाचार्य को देखने को मिली होगी-तब ही उन्हों ने वैसा उल्लेख किया है ।सारांशतः यह क्रिया भी जैन मुनि के लिए है अगाड़ी १६वीं और १७ वीं क्रियायें इस प्रकार हैंः—

'वह वहां भोजन स्वीकार नहीं करेगा जहां पासमें कुत्ता खड़ा हो (कि शायद कुत्ते को भोजन न मिले) ।'

'वह वहां भोजन नहीं लेगा जहाँ मक्खियों का ढेर लगा हो (कि शायद मक्खियों को कष्ट हो) ।'

यहां अन्तराय दोषको लक्ष्यकर ही यह क्रियायें हैं पहिली क्रिया में पादांतर जीव सम्पात अथवा 'दंशक' अन्तराय का समावेश हो सका है । पादांतर जीव सम्पात अन्तराय तभी होगा जब कुत्ता आदि पशु आहार लेते मुनि के पैरों के बीच में होकर निकल जावे और दंशक तब होगा जब कुत्ता काट खावे । अन्तिम ही संभव है क्योंकि कुत्ते को भोजन न मिलने का भय टीकाकार ने दिखाया है । इसका मतलब यही है कि भोजन न मिलने से कहीं काट न खावे । इसलिए इस अवस्था में भोजन नहीं लेते । दूसरी 'पाणिजंतुवध' अन्तराय का समावेश है । मक्खियां जहां अधिक होंगी वहां उनके भोजन करते हुए हाथमें उनका आकर गिर पड़ने एवं मर जाने की विशेष संभावना रहती है । ऐसी दशा में मुनि भोजन नहीं करते । बौद्ध लोगों ने मक्खियों के झुण्ड से भरपूर स्थानसे अन्तराय होते बिना आहार लौटते मुनियों को देखा होगा । इस लिए उक्त प्रकार लिखा है । १८ वीं क्रिया यूं बताई हैः—

'वह (भोजन में) मच्छी, मांस, मद्य, आसव, सोरवा ग्रहण नहीं करेगा ।'

जैन मुनिगण इन एवं ऐसी ही अन्य चीजों को ग्रहण नहीं कर सक्ते हैं-यदि वह आहार के समय इनको देख भी लें तो आहार छोड़ दें ! मूलाचार में यह इस प्रकार बतलाई हैः—

खीर दहिसप्पिलेत गुडलवणाणंच जं परिच्चयणं।
तित्त कडुकसाय विलमधररसाणंच जं चयणं ।।१५५।।

चत्तारि महाविगइ़ी य होंति णवणीद् मज्जमांसमधू।
कंखापसंग दप्पा सयमकारीओ एदा ओ ॥१५६॥"

इसमें क्षीर, दधि, तैल गुड़, सचित्त नमक, नवनीत, मद्य, मांस मधु आदि जैनमुनि के लिए वर्जित बतलाए हैं। इस प्रकार यह क्रिया भी जैन मुनि की चर्या के अनुसार है। उसमें १९वीं क्रिया इस प्रकार बताई है:-

'वह "एक घर जाने वाला" होता है (अर्थात् ही अपनी आहार चर्या से लौट आता है कि जहां किसी एक घरसे आहार ग्रहण किया), एक ग्रास भोजन करने वाला होता है।"

'या वह "दो घर जाने वाला"-दो ग्रास भोजन करने वाला है।"

'या वह "सात घर जाने वाला"-सात ग्रास भोजन करने वाला है।"

'वह एक आहार निमित्त-दो निमित्त या ऐसे ही साततक जाने का नियमी होता है।"

यहां जैनमुनिकी 'वृत्तिपरिसंख्यान्', क्रिया का उल्लेख है। मूलाचारमें यह इस प्रकार बताई है:—

"गोयरपमाण दायगभायण णाणा विधाणं जं गहणं। तह एसणस्स गहणं विविधस्स य वुत्ति परि संख्या॥१५८॥"

'गोयरपमाण' का भाव गृहप्रमाण से ही है। वृत्ति परिसंख्या के अनुसार जैनमुनि एक या अधिक गृह जाने और अमुक रीति के भोजन करने आदि का प्रमाण कर लेता है। बौद्धाचार्य ने उक्त प्रकार यही क्रिया दर्शाई है। अन्तिम क्रिया इस तरह बतलाई है:—

'वह भोजन दिन में एक बार करता है, अथवा दो दिनमें एक बार अथवा ऐसे ही सातदिन में एक बार करता है। इस प्रकार वह नियमानुसार निय-मित अन्तराल में-अर्धमासतक में-भोजन ग्रहण करता रहता है।

यह 'साकांक्षानशन' नामक व्रत ही है। यह व्रत मूलाचार में इस तरह बतलाया गया है:—
छट्ठट्ठमदसमदुवादसेहिं मासद्धमास खमणाणि।
कणगेगावलिआदी तवो विहाणाणि णाहारे ॥१५१॥

यहां अवधि एक मास एवं उससे अधिक बढ़ा दी गई है परन्तु भाव वही है। श्वेताम्बरियों के यहां भी यह मान्य है। नृपउदायन की पूर्वोल्लिखित कथा में लिखा है कि:—

"तओ महया विभूए अभिसित्ते सिवियारूढे भगवओ समिवे गन्तूण पव्वइ जाव बहुणि चोत्था छट्ठ अट्ठम-दसम दुवालसमास अद्धमास पेणि तवो कम्माणि कुव्वमाये विहरै।" (Jacobis Selected Stories. No. III.

भाव यही है कि तब वह बड़ी शान से पालकी में बैठ कर आचार्य के पास गया और वहां संघ में दाखिल हुआ और विविध तपश्चरण करता रहा, उपवास ४-६-८-१०-१२ मास के एवं अर्धमास के और इसी तरह के करता रहा। इसके अतिरिक्त स्वयं भगवान महावीर ने भी १२ वर्ष का घोर उप-वास एवं प्रथम दो २ रोज का उपवास किया था। इस प्रकार यह क्रिया भी जैनमुनि की चर्या में मिलती है। इस तरह हमें जैनमुनि की क्रियायें जैसे दिगम्बर जैन शास्त्रों में बताई गई हैं वैसी ही बौद्ध काल के जैनमुनियों की मिलती हैं। इस विवे-चन से सिद्ध होता है क्योंकि बौद्ध पुस्तक जिसमें उक्त क्रियायें जैनमुनियों के लिए दी हुई हैं आजसे करीब सवादोहजार वर्ष पहिले लिपिबद्ध कीगई

थी-इसलिए प्रमाणीक है और उससे दिगम्बर शास्त्रों का सामञ्जस्य बैठ जाता है कि:—

(१) दिगम्बर जैन शास्त्रों में जो क्रियायें जैन मुनियों की बताई गई हैं वे वही क्रियायें हैं जो म० बुद्ध के समय में अर्थात् करीब २५०० वर्ष पहले जैन मुनियों के लिये नियत थीं। और (२) दिगम्बर जैन शास्त्रों का कथन यथार्थता को लिए हुए है, यह प्रत्यक्ष प्रगट है।

परन्तु इस लेख को पूर्ण करनेके पहले हम यह भी बता देना चाहते हैं कि बौद्ध शास्त्रों में उदासीन व्रती और उत्कृष्ट श्रावकों का भी उल्लेख उस ही प्रकार है, जिस प्रकार आजकल दिगम्बर शास्त्रों में मिलता है। वहां उत्कृष्ट श्रावक का उल्लेख 'एक वस्त्र वाला निर्ग्रन्थ' के रूप में आया है। (See India Antiquay vol. 43.) दिगम्बर शास्त्र भी उत्कृष्ट श्रावक को-क्षुल्लक-एहिलक को एक वस्त्र धारण करने की आज्ञा देते हैं, और कुली श्रावकों को श्वेत वस्त्र धारण करने की। इस प्रकार जिन भगवान के चतुर्निकाय संघ के मुनि और श्रावकों की क्रियायें वास्तव में दिगंबर शास्त्र के अनुरूप थीं यह प्रमाणित होता है। और जैन मुनियों का प्राचीन भेष उन्हीं के अनुरूप में नग्न सिद्ध होता है। इति शम्। —उ० सं०

जैन कौम की माध्यमिक शिक्षा संबंधी स्थिति
और
नेताओं का कर्तव्य

(ले०-नन्हेंलाल चौधरी)

इस लेखके लिये हम मिस्टर नरोत्तम बी, शाह, मुंबई,के बहुत कृतज्ञ हैं जिन्होंने इतना प्रयास करके हम लोगोंको अपने शिक्षणकी असली हालत का पूरा पूरा पता दिया है, मि० शाह ने गुजराती में एक पेम्फलेट "जैनी अने माध्यमिक शिक्षण" नाम का निकाला है, उसमें यह अच्छी तरह बतलाया गया है कि हम लोग माध्यमिक और उच्च शिक्षा में जितने गिरे और पीछे पड़े हुये हैं हमारी गिरी हुई हालतका कारण क्या है तथा अब उसके सुधार का उपाय क्या है, हमारी हिन्दी जानने वाली समाज भी इतनी भारी खोज से प्राप्त की हुई रिपोर्ट को पढ़कर, मनन कर, तथा कार्याक्षेत्र में आकर लाभ लेवे; इस लिये उस के लेख का सारांश उनके तैयार किये हुए नकशे के साथ नीचे दिया जाता है।

आत्मा का संबंध अमीरी और गरीबी से कुछ भी नहीं है शिक्षा और अशिक्षा ही उस के उत्थान तथा पतनका कारण होती हैं। जिस समाज में लड़के और लड़कियों के शिक्षण के पूर्ण साधन नहीं है उस समाज के नेताओं को तथा उसके हर एक व्यक्ति को शर्म आना चाहिये, हम लोगों में शिक्षण अभी तक मजबूत और दिमागी होने के बजाय थोथी बहुत है, हम लोगों में से बहुत से अधूरा पढ़ना छोड़कर व्यापार धन्धों में फंस जाते हैं और

और सच्ची शिक्षा और सुधारसे अनभिज्ञ रह जाते हैं हमारी अवनति का दूसरा बड़ा कारण यह बताया गया है कि हमारे यहां कोई अच्छी तरह संगठित शिक्षा मंदिर नहीं है बल्कि उस की जगह कई नये, छोटे २, एक दूसरेसे कोई संबंध न रखने वाले, अव्यवस्थित, योग्य शिक्षकों से रहित, बहुत शिक्षागृह का होना है। संसारमें विज्ञान और आविष्कार का तूफान इतने जोरों के साथ उठ रहा है (और जिससे हमारी समाज अभी तक बिलकुल ही अनभिज्ञ है) कि यदि हम शीघ्र ही तैयार होकर इसके साथ चलने की कोशिश न करेंगे तो हमारी समाज का कायम रहना कठिन मालूम देता है आशा है हम सब दिगम्बर और श्वेताम्बर मिलकर आगे आवेंगे और इस जटिल प्रश्न को हल करेंगे लेख का सारांश यह है:—

जैन जाति के सामने अभी तक उसकी शिक्षा का दिग्दर्शन कराने का सामने न आने से अंधेरे में गोता खा रही थी, इस लिये बहुत प्रयास करके यह लेख तैयार किया गया है यह सब करने का कारण हमारे नेताओं का माध्यमिक और उच्च शिक्षा की जरूरत पूरी करनेकी तरफ ध्यान खींचने का है और आशा है कि जैनियों के हित में इस लेखको पढ़कर मनन करेंगे,यद्यपि मैं शिक्षा विषय का कोई खास अभ्यासी नहीं हूं और इसमें जराभी अनुभव रखने पर मुझे जैन कौम की बड़ी से बड़ी जरूरतों का पता लग गयाहै (१)आरोग्यता पालन करने के नियमों की गैरहाजिरी के सबब से घटती हुई संख्या (२) माध्यमिक और उच्च शिक्षा का अभाव, प्राथमिक शिक्षा देने के बाद हम लोग माध्यमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये कितनी बेदरकारी बताते हैं कि जिसे देख कर आश्चर्य होता है यह नकशे पर बराबर मालूम दे सका है।

शिक्षा लेने के प्रसंग में साधन के अभाव से कभी २ मुश्किल उत्पन्न हो जाती है और अगर उस समय कोई उत्साह और मदद करने वाला नहीं मिले तो बहुत से विद्यार्थी अभ्यास छोड़ देते हैं और अपना भविष्य बिगाड़ लेते हैं। जब कि दूसरे कौमों में बहुत से ठिकाने चाहे जितनी तकलीफ सहन करके अभ्यास चालू रखने के लिये, फालतू समय में चाहे नौकरी करके अपना शिक्षण आगे बढ़ाते हैं जैन कौम के विद्यार्थी चाहे जितने गरीब होवें तो भी पूर्ण साधन हुए बिना ज्यादा संख्या में अपना अभ्यास चालू नहीं रखते हैं।

कुछ समय हुआ, माध्यमिक शिक्षा की उत्तेजनार्थ एक गृहस्थ की तरफ से ७० स्कालरशिप के वास्ते रु ३५०००) की रकम निकाल कर शिक्षा प्रचार के लिये दान की गई थी पर अफसोस की बात है कि साधन बिना अटक जाने वाले विद्यार्थियों ने उस का लाभ नहीं किया।

कई ठिकाने शिक्षा प्रचारार्थ उस के प्रयत्नों में बिलकुल बेपरवाई दिखाई जाती है-और ऐसा कहा जाता है कि शिक्षित विद्यार्थी अपनी आधी जिन्दगी गमाकर (बरबाद करके) फिर नौकरी में ६०)७०) शुरूमें कमाते हैं व्यापारी तरीके इतना कमाना कोई बड़ी बात नहीं है, इस तरह महती शिक्षा और विनश्वर पैसे की असंगत तुलना की जाती है, और भाग्य से शिक्षा से बेनशीब रहे मनुष्य की मंत तरीके नजर आते हैं उस से शिक्षा की कम कद्री करने में बड़ी भूल की जाती है, शिक्षा प्राप्त

मनुष्य सहलाई से धीरे २ आगे बढ़ सका है और शिक्षा लेने की शक्तियां जो बराबर मिलें तो कोई समय महान पुरुषों की गणना में आ सका है देश की उन्नति में भाग लेने वाले महात्मा गांधी, गोखले, फीरोजशाह, रानडे, तिलक, दास वगैरहा शिक्षित ही थे जिन्हों ने देश के खातिर अपना जीवन अर्पण कर दिया परंतु अशिक्षितों के लिये यह सौभाग्य कभी नहीं मिल सका, इसलिये शिक्षा की तरफ तिरस्कार कभी भी नहीं बताना चाहिये, आर्थिक दृष्टि से शिक्षा का बदला जितना चाहिये उतना न मिलने पर आचार विचार रहन, सहन सुधारने के लिये शिक्षा की बहुत ही ज्यादा जरूरत है।

कोई २ ठिकाने मां बाप खुद अपने बच्चों की तरफ से इतने ज्यादा असावधान रहते हैं कि उन्हें शिक्षा न देने में उनके भविष्य का विचार नहीं करते "मेरा बेटा कब पैसा कमावेगा" इस ख्याल से कोई से धन्धे में जोत देते हैं, इतना ही नहीं बल्कि छोटी उमर में शादी कर देने में भी नहीं चूकते (शायद इस डर से कि कहीं बेटे को आगे पढ़ने की धुन सवार न हो जावे) मां बाप का जितना फरज बच्चों की शादी करने का है उस से कहीं ज्यादा उन्हें उचित शिक्षा देने का भी है, पर वे यह भूल जाते हैं और इसीलिये हमारी समाज में अज्ञानता के कारण बहुत से हठी, कमजोर कुटुम्बको क्लेशित करने वाले और मूर्ख बच्चे देखने में आते हैं। पैसा पास हो और शिक्षा न हो तो मानसिक शक्तिओंपर काबू न होने से पैसा का दुरुपयोग करने के बहुत संयोग आते हैं और दुःखमय पाप पूरित जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

कभीर बालवय में शिक्षा से फायदा और उस का खरा रहस्य क्या है। यह समझाने वाला नहीं मिलने से बहुत बालक अशिक्षित रह जाते हैं इस लिये ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिस से बचपन से ही शिक्षा का संस्कार उत्पन्न हो जाय।

इस के बाद शिक्षा के पीनलकोड में बहुत से जैनविद्यार्थी आगे विद्याभ्यास करने से अटक जाते हैं। जिसके लिये कड़वी फरियाद करने की जरूरत पड़ी है वह यह है कि उनके मनकी शिक्षा के साथ तन की शिक्षा गैर हाजिर है यह वे बिलकुल भूल जाते हैं अगर वर्त्तमान जैन विद्यार्थीओं की तनदुरस्ती के लिये डाक्टरी न पास की जावे तो विश्वास हो जायगा कि यदि शारीरिक उन्नति के लिये कसरत या व्यायाम शालाओं का उपयोग किया जावे तो दवा खानों का लाभ लेने की बिलकुल थोड़ी जरूरत रह जावे।

सिर्फ प्राथमिक शिक्षा से और वह भी कोई बिना उद्देश्यके होने से (याने सिर्फ अक्षर ज्ञान से) कोई संगीन और व्यवहारी शक्ति पैदा नहीं हो सकती, जिस मनुष्य के अंदर कुछ बीमारी हो और दिन पर दिन बढ़ती जाती हो उसे आप उतनी अच्छी तरह आराम से रक्खें और ऊपरी इलाज करें पर वह बुद्धिपने से रहित है जैन कौम का फर्ज है कि दर्द को समझ के उसके मूल कारण का नाश करना चाहिये और बाद में ऊपर दिखने वाले चिन्हों को मिटाने की कोशिश करना चाहिये। भीतर का इलाज करने का दूसरा कोई उपाय नहीं सिर्फ कौम की सामान्य वर्ग की आर्थिक स्थिति, दूसरे शब्दों में वर्त्तमान और भविष्य जैन प्रजा की कमाने की शक्ति बढ़ाने और

मिलने रूपी अन्तर का इलाज करने में है और उसके लिये जरूरी उपाय कार्य रूप में लाने की जरूरत है।

कोई भी समझदार जैन यह कबूल करे बिना नहीं रहेगा कि माध्यमिक शिक्षा का ठेका दिये बिना उच्च शिक्षा में जैन आगे बढ़ें, यह हवा में किला बांधने के समान हैं एक जैन कालेज खोलने के लिये सैकड़ों मिडल और हाई स्कूलों की जरूरत मैं देखता हूं, खेद की बात ये है कि अभी तक जैन शिक्षित वर्ग और श्रीमान् जैनों का लक्ष इस ओर खिंचा नहीं, है, इसलिये समाज की स्थिति छिन्न भिन्न होगई है और जिस के पीछे हां में हां मिलाने वाले होवें और जिसके कामों का ढोल पीटने वाले हों, अथवा जो भाग्य देवी के प्रभाव से अचानक रीति से प्रतिष्ठा और द्रव्य के जोर से हृष्ट पुष्ट होवें उन्हीं को समाज में स्थान मिलता है जैन श्रीमंतो अभी भी अपने दान का झिरना पुरानी दिशा में ही बहाने में अपना कर्तव्य समझते हैं इस बाबत वर्तमान समय में कहां पर दान करना, कितना करना कारे के लिये और किस तरह करना यह समझाने का कार्य पूज्य त्यागी तथा ब्रह्मचारी वर्ग और कौम के शिक्षित वर्ग का है।

आज कौम के अंदर एक बड़ा भाग, सिर्फ धंधा में फंसे हुए, कमजोर प्रजा का उत्पन्न हुआ है जो कौम के लिये एक कीमती जायदाद होने के बदले बिना जरूरी (फजूल) वर्ग हो रहा है वह न तो खुद अपने लिये उपयोगी हो सका है न दूसरे को।

जैनियों की माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनिक प्रश्न को हल करने के लिये हर एक जैन बंधु सहारा देवे तथा जितना कुछ बन सका हो अपना फर्ज बजाने में कसर न रक्खे इतना निवेदन कर जैन कौम के हित का प्रश्न जैन कौम के आगे बांचने विचारने और मनन करने को रख कर समाप्त करता हूं।

निम्न कोष्टक को देखकर विचार में लाना चाहिये कि राजपूताना और ट्रावनकोर को छोड़कर शेष रजवाड़ों में स्त्रियोंकी संख्या पुरुषों की अपेक्षा कम होने का क्या कारण है, कुल जैन पुरुषों से जैन स्त्रियों की संख्या ५२७५६ कम हैं विधवाओं की संख्या करीब १ लाख है, अविवाहित पुरुषों की संख्या औसद दो तिहाई भाग और अविवाहित स्त्रियों की संख्या एक तिहाई भाग है, समाज के लिये इस कमी का इन्तज़ाम करना बड़ा भरी प्रश्न उठ खड़ा हुआ है।

(१) राजपूताना में और (२) त्रावन कोर में स्त्रियों की संख्या ज्यादा क्यों है कारण (१) बहुत से पुरुष व्यापार निमित्त बाहर रहते हैं तथा उनकी स्त्रियां घर ही में रहती हैं (२) ट्रावनकोर की स्त्रियों की संख्या गलती मालुम देती है ३० पुरुष होना चाहिये ३ स्त्रियां।

सन् १९२१ वीं मर्दुमशुमारी मुजब हिन्दुस्तान के हरेक प्रान्त वार जैनियों की शिक्षा सम्बन्धी स्थिति ।

नम्बर	हिन्दुस्तान के जुदे २ प्रान्त और देशी राज्य	जैन बस्ती			शिक्षित जैनों की संख्या		अङ्ग्रेजी शिक्षित जैनों की संख्या	
		कुल जैन बस्ती	जैन पुरुषों की संख्या	जैन स्त्रियों की संख्या	शि० जैन पुरुष की संख्या	शि० जैन स्त्रियों की संख्या	पुरुष	स्त्रियां
	हिन्दुस्तान--	११७८५९६	६१०५७५	५६३८२१	३१५४१६	४२४६३	२९११५७	८८३
१	अजमेर-मारवाड़	१८४२२	९८४०	८५८२	७०५१	४६०	३१३	६
२	अंदमान							
३	आसाम	३४०३	२६७८	८२५	१७२४	७४	९१	४
४	बलूचिस्तान	१७	१३	४	९	१	१	
५	बंगाल	१३३७६	९५३५	३८४१	७३१४	६६२	९३२	१०६
६	बिहार और उड़ीसा	४६१०	२६१८	१९९२	१५४८	२११	१३४	१०
७	मुम्बई	४८१६५०	२५१०९६	२३०५५४	१२९६७७	२१९२४	१२९२६	४६२
८	बर्म्मा	११३५	८६६	२६९	४३६	७४	१११	६
९	सें. प्री. और बरार	६९७९४	३६१५९	३३९३५	१६६५३	२२८९	१२८९	४४
१०	कुर्ग	२०२	१०५	९७	११	२		
११	दिल्ली	४६९८	२६१८	२०८०	१९४१	२९३	३२५	१६
१२	मद्रास	२५४९३	१ ५७९	११९१४	६९९७	८७७	३५९	४२
१३	नार्थवेस्ट प्राविन्सिस	३	३		३		३	
१४	बरोदा स्टेट	४३२२३	२१७	२१४३४	१६०४२	३९०७	९७६	२५
१५	सेन्ट्रल इण्डिया	४४४३१	२३२२३	२१२०८	११४५७	१२३१	५३६	१७
१६	कोचीन स्टेट	१०१	५८	४३	३३	३	३	१
१७	ग्वालियर स्टेट	३८९०६	२०८७७	१८०२९	८२९३	८००	२०८	३
१८	पंजाब	४१३२१	२२२२०	१९१०१	९८६३	७६९	१०६३	२४
१९	युनाईटेड प्राविन्सिस	६८१११	३६९३०	३११८१	१८६९३	२१०३	१४१७	६२
२०	हैदराबाद स्टेट	१८५८४	९८५२	८७३२	३५४६	२६९	२३२	३३
२१	काश्मीर स्टेट	५२९	२९५	२३४	१६१	२४	२७	१
२२	राजपुताना एजेन्सी	२७९७२२	१३४९६२	१४४७६०	६७०५०	२९३७	१३१०	४
२३	मैसूर स्टेट	२०७३२	११३५९	९३७३	४९०१	५४९	३०१	७
२५	त्रावनकोर स्टेट	३३	३	३०	३	३		

जैन दीक्षा समिति

'अङ्गरेज़ी जैन गजट' जुलाई मास के अङ्क में इस ऊपर का समिति की बहुत बड़ी आवश्यकता बताई गई है। यदि हम जैन धर्म की सत्ता बनाए रखना चाहते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि हम वर्त्तमान जैनियों की घटी के कारणों को बहुत शीघ्र मिटावें। तथा नए भाई और बहनों को जैन धर्म में दीक्षित करें।

यदि ऐसा हम नहीं करेंगे तो हमारे वर्त्तमान जैनी जो सन् १९२१ में ११७८५९६ थे सो प्रति दिन १९ के हिसाब से घटते हुए ६२०३१ दिनों में अर्थात् २०६८ मासों में अर्थात् १७९ वर्षों में सब समाप्त होजायँगे। पाठकों को मालूम होना चाहिये कि सन् १९११ में जैनी १२४८१८२ थे सो १९२१ में केवल १७७८५९६ ही रह गए, ६९५८६ घट गए।

प्राणों की रक्षा सब से आवश्यक है। यदि जैनी नहीं रहेंगे तो जैन धर्म भी नहीं रहेगा। तब हमारे आचार्यों के जैनग्रन्थ निर्माण का सब परिश्रम वृथा होजायगा। हम जिन भूलों से घट रहे हैं वे सबको प्रत्यक्ष प्रगट हैं। यदि हम इन भूलोंको नहीं त्यागेंगे तो हम एक जैनी नहीं साढ़े ग्यारह लाख जैन समाज के घातक महापापी समझे जायंगे। क्या इससे बढ़कर भी कोई पाप हो सकता है?

इस से प्यारे भाइयों! जब आप अनन्त एकेन्द्रियों के घात के भय से अल्प फल बहुविघात के दोष से कन्द मूलादि की हिंसा नहीं करते हैं तो आपको सैनी पंचेन्द्रिय सर्वदा के अनुयायियों को दया नहीं आयगी क्या? हम समझते हैं अवश्य दया आयगी और आप नीचे लिखे कार्यों को न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेंगे।

(१) बालक बालिकाओं को अशिक्षित न रखना: उनको जवानी प्राप्त होने तक शरीर दृढ़ रखना व्यायाम करने, वीर्य रक्षा करने, साहित्य व्याकरणादि आवश्यक विद्या पढ़ने, नीति को जान कर नीति के अनुसार चलने, अनात्मा को पहचान कर आत्मा की उन्नति करने की शिक्षा से विभूषित करें।

(२) बीस वर्ष से पहले पुत्र को व १४ व १६ वर्ष से कम पुत्री को न विवाहें। विवाह के ७ दिन पीछे ही वे गर्भाधान क्रिया के योग्य हों संतान जन्म दे सकें तब ही उनका विवाह करना योग्य है।

(३) कुमारों के रहते हुए कभी भी विधुरों को कन्या न विवाहें।

(४) कन्याविक्रय भूल कर भी न करें। कन्या के योग्य वर को ढूंढकर एक नारियल और रुपया मात्र भेंट देकर लड़की विवाह दें, परन्तु बिरादरी के खर्च के जाल से परेशान हो कन्या को बेच कर बिरादरी को न जिमावें, न विवाह की बाढ़ २ कर

के कन्या का घात करें।

(५) सन्तान होते हुए कभी भी दूसरा विवाह न करें।

(६) जो बाल, वृद्ध व अनमेल विवाह करें उनके यहां शामिल न हों।

(७) शादी आदि के खर्च इतने कम रक्खे जावें कि कभी कर्ज न लेना पड़े।

(८) मरण का भोजन विलकुल बंद कर डालें।

(९) खानपान में कसर कर निर्बल न बनें। बाज़ार का घी दूध महा अशुद्ध है उसे त्याग कर घर में गाय भैंस रखकर जो थोड़ा या बहुत घी दूध शुद्ध मिले उसी से ही कुटुम्ब का पालन करें।

(१०) कभी भी कर्जदार बनकर फिक्र से खून सुखाकर अकालमरण न करें।

नए दीक्षितों को दीक्षित करने के लिए हम को पहले उपजातियों की तरफ ध्यान देना चाहिये, जिनका पेशा क्षत्री, वैश्य तथा ब्राह्मण के समान हैं वे कौमें चाहे जिस देश की हों जैनी बन कर व जैनी गृहस्थ का साधारण आचार पालन कर सकें जैनीपने की दीक्षा से दीक्षित होकर हमारे उच्च तीन वर्णों की जैन जाति के साथ खान पान रोटी व्यवहार का सर्व सम्बन्ध कर सकते हैं।

श्री आदिपुराण में श्री जिनसेनाचार्य के दीक्षान्वय क्रिया के भीतर यही भाव झलकाया है। अजैन को दीक्षा देने को नीचे लिखी क्रियाएं हैं:-

(१) अवतार क्रिया—किसी जैनाचार्य के पास जाकर धर्म सुन श्रद्धावान हो।

(२) व्रतलाभ क्रिया—पांच अणुव्रत स्थूल पने धार व मदिरा मांस मधु तीन मकार का त्याग कर आठ मूल गुण का धारी हो।

(३) स्थानलाभ क्रिया—किसी दिन मन्दिर जी में दीक्षा देने वाला भगवान का पूजन करे। शिष्य पहले दिन उपवास करके मन्दिर जी में आवे और णमोकार मन्त्र देकर यह कहे "पूतोऽसि दीक्षया" तू इस दीक्षा से पवित्र होगया।

(४) गणग्रह क्रिया—वह शिष्य जिन देवों की स्थापना करके पहले पूजन करता था उनको घर से अलग कर कहीं पधरा देवे।

(५) पूजाराध्य क्रिया—शिष्य स्वयं भगवान का पूजन करके जिनवाणी को सुने।

(६) पुण्ययज्ञ क्रिया—अन्य पुराने जैनियों के साथ शास्त्र सुने।

(७) दृढ़चर्या क्रिया—शास्त्र ज्ञान में दृढ़ हो जावे।

(८) उपयोगिता क्रिया—कुछ काल अष्टमी चौदस को उपवास करके धर्माध्ययन करे।

(९) उपनीत क्रिया—यज्ञोपवीत लेवे, तब उसका दूसरा नाम, गोत्र, जाति आदि नियत की जावे।

(१०) ब्रह्मचर्य क्रिया—वह शिष्य श्रावकाचार अच्छी तरह सीखे तब तक ब्रह्मचारी रहे।

(११) व्रतावरण क्रिया—विद्या पढ़ कर गृहस्थ योग्य भेष करे।

(१२) विवाह क्रिया—पहली विवाहिता स्त्री हो तो उसे श्राविका बनावे।

(१३) वर्णलाभ क्रिया—सब समाज इस शिष्य की क्रिया देख कर इसका वर्ण निश्चय कर के उसकी बराबर का समझें और इसके साथ सम्बन्ध करना निश्चय करलें। लिखा है:-

"वर्णलाभस्ततोऽस्य स्यात्सम्बन्धं संविधित्सतः।

समानाजीविभिर्लब्ध वर्णैरन्यैरुपासकैः ॥ ६१ ॥
इत्युक्त्वैनं समाश्वास्य वर्णलाभेन इज्युते।
विधिवत्सोपि लब्ध्वा याति सम्यग्दीक्षिताम्॥७१॥"

तब इसके समान आजीविका करनेवालों-अन्य श्रावकों के साथ वर्णलाभ हो-अन्य श्रावक इसको सन्तोषित करके वर्णलाभ देकर सम्मान करे। यहां फिर अविवाहित हो तो उसका विवाह हो सकता है। जो शूद्र का काम करते हैं और वे ही काम करते हुए जैनी होना चाहें तो वे भी जैनी होकर पिछले शूद्र जैनियों से बराबरी का सम्बन्ध रख सकते हैं।

इस तरह से जैन दीक्षा का विधान है। अब उचित है कि इस कार्य्य के लिये एक जैन दीक्षा समिति बनाई जावे जो अजैनों को दीक्षा देकर उन के साथ वर्णानुसार खानपान बेटी व्यवहार करने में कोई संकोच न रक्खे। इस समिति को जगह २ घूमकर वर्तमान उन जैनियों की सूची तैयार करनी चाहिये जो ऐसा करने तैयार हों। जब एक, दो हजार भाई भी पक्के होजावें तब अजैनों के किसी विशेष उच्च सम्प्रदाय को जैनी बनाया जावे और उन्हें बराबरी का करके उनके साथ भाईपने का व्यवहार किया जावे। जैसा उदार बर्ताव करने का उपदेश जैनागम देता है इस ही उपाय से हजारों लाखों भाई बहन जैन मत की दीक्षा से संस्कृत हो आत्मा का हित कर सकेंगे। हमें इस दीक्षा विधान को भारत और विदेश दोनों में बड़े जोर के साथ चलाना चाहिये, सोने का समय नहीं है।

—सम्पादक।

जैन दीक्षान्वय कमेटी।

"वीर" के विशेषांकमें पूज्य ब्र० शीतल प्रसाद जी ने उक्त कमेटी की आवश्यका दर्शाई थी। उस पर मध्य प्रान्तके एक महोदयने अपने विचार प्रकट किये थे। आपने उसकी आवश्यकताको स्वीकार करते हुए इस में बहुतसी अड़चने दिखाई थीं। उपरान्त कुछ भी सुनाई न दिया! बेशक यह कार्य सुगम नहीं है-अनेकों कष्ट हैं हजारों अड़चनें हैं, लाखों विरोध हैं! परन्तु कार्य सतत आर्य मार्ग पर लानेवाला है। पूर्वाचार्यों के चरण चिन्हों का अनुसरण कराने वाला है। इस लिए कर्म वीर जैनियों के लिए इस विषय की ओर से मन मसोस कर नहीं रह जाना चाहिए! जैन समाज में प्रचार कार्य वर्षों से हो रहा है! उप जातियों की अनार्यता और अनावश्यका बतलाते मुद्दत होगई! अब भी वही कार्य चालू है! किन्तु इस सब के साथ अमली कार्य की जरूरत है! 'जैन सेवक संघ' दिल्ली इस कार्य के लिए अगाड़ी आया जरूर है, परन्तु उस को सफलता तब ही मिल सकी है जब कर्म वीर नवयुवक उस के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वर्ष में कम से कम एक मास उसको भेंटकरें और उस मास में संघ के मंत्री अथवा अन्य सदस्यों के साथ अपने परिचित स्थानमें अमली प्रचार कार्य करें। बिना इस प्रकार की कार्रवाई किए कुछ भी नहीं होगा! जिन के हृदयों में जाति प्रेम और धर्मानुराग जरा भी शेष है उन्हें इन मरती हुई उपजातियों की रक्षा के लिए कर्म क्षेत्र में आजाना चाहिए। कर्मवीर विरोध और अड़चनों का परवा नहीं करते! जैन समाज लकीरकी फकीर है। वह

पहले अच्छे से अच्छे काम का भी विरोध करेगी, किन्तु जहां वही काम अमल में आगया तो विरोध बगलें झांकने लगता है। छापे का विरोध-स्त्री शिक्षा की मुखालिफ़त इसी तरह के नमूने हैं! बस धर्म के लिए सत्यमार्ग को गृहण कर के असली कार्यवाही के लिए कर्म क्षेत्र में आ डटिए। उद्देश पवित्र और निर्मल है कोई बाधा टिक नहीं सकी! इस तरह घरेलू अड़चन हमारे जैन दीक्षान्वयप्रचार में दूर होसकी है, जिसको मध्य प्रान्त के सुधारक महोदय ने दिखाई थी! अब अजैनों में जैन धर्म के प्रचार और उनका दीक्षान्वय प्रोग्राम विचारणीय है। इस विषय में अंग्रेजी जैन गजट के विचार माननीय हैं। वह गजट में लिखता है कि:—

"इस प्रकार की एक संस्था, जिस का सुथरा नाम जैन मिशनरी सोसाइटी" (Jaina Missionary Society) होसक्ता है, विशेष रीति से वाञ्छनीय है। इस कार्य में सामाजिक बाधायें अनेक हैं किन्तु हम उस दिन तक की प्रतीक्षा अब नहीं कर सके जिस दिन यह बाधायें हमारे मार्ग में से दूर हो जायें। यह स्पष्ट है कि सामाजिक संगठन के सब प्रयत्न असफल रहे हैं। ज़माने के साथ ही कई जातियां नष्ट होती जाती हैं तो कतिपय नई उप न खड़ी होती हैं परंतु साथही समग्र जैन समुदाय का क्या होगा वह नाश के गर्त्त की कोर पर है। सेन्सस रिपोर्ट उसकी कमी प्रकट कर रही है। सन् १८९१ से १९०१ तक जैनसंख्या ५-८ प्रतिशत घटी १९०१ से १९११तक६.४ सैकडा कमती हुई और १९११ से १९२१ तक ६.४ प्रतिशत घट गई। सन् १९११ में कुल जैनी १२४८१८२ थे। सन् १९२१ में वह घट कर केवल ११७८५९६ रह गये! इस तरह गत दश वर्ष में हम ६९५८६ कम हो गये हैं। यदि इस ओर कुछ उपाय न हुए और दशा यूं ही चलने दी जैसे वह हो रही है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि दो सौ वर्ष के भीतर जैनियों का अन्त हो जावे! हा शोक!

हा दुःख १९ जैनी प्रति दिवस घट जाते हैं,

सदा के लिए इस समाज को कम कर जाते हैं! इस तरह बिना धर्मात्माओं के कोई टिक नहीं सका! प्रत्येक जैनी जानता है कि जैन धर्म सत्य है और प्रत्येक तीर्थंकरने समग्र प्राणी मात्र के लिए उसका प्रचार किया था। वह किसी की बपौती नहीं है। उस पर सारी दुनियां का समान हक़ है। इस लिए प्रत्येक जैनी का यह धार्मिक फ़र्ज़ है कि वह अन्यों को अपने धर्म के तत्वों का महत्व बताए उन्हें हृदयङ्गम करायें। बस जैन सिद्धान्तों के विस्तार के लिए, मानव संसार में विश्व प्रेम का साम्राज्य लाने के लिए, मनुष्यों के हाथों से निरपराध मूक पशु पक्षियों को बचाने के लिए और जैन धर्म धारियों की संख्या बढ़ाने के लिए एक 'जैनमिशनरी सोसाइटी" दृढ़ता के साथ शीघ्र स्थापित कर डालना चाहिए। समग्र भारत व्यापी इस का क्षेत्र हो। गांव-गांव जाकर इस के लिए फंड एकत्रित किया जाय। दक्ष और उत्साही प्रचारक प्रान्तवार नियुक्त किये जांय और उन को काफी सहायता कीजाय जिससे वह सर्वत्र जाकर प्रचार कार्य कर सकें। सोसाइटी का पहला उद्देश्य

अहिंसा और जीवन-पवित्रताका प्रचार करना होना चाहिए। जनता को जीवन की विशुद्धताका पाठ पढ़ा देना चाहिए। कसाईखानों को बंद होने दीजिए। शिकार रफूचक्कर हो जाय और पशु पक्षियोंके प्रति दयामय व्यवहार होने लगे-ऐसे प्रयत्न पहले होना चाहिए। जहां इतना हुआ वहां मानो जैनधर्म का आधा धर्म प्रचार हो गया। फिर अहिंसाके श्रद्धानी और पालक के लिए जैन धर्म में सत्य को पाने में कुछ देर नहीं लगेगी और वह उस का अनुयायी हो जायगा।"

बात सोलह आना ठीक है। परन्तु कार्य करने वाले कैसे मिलें? यह संभव नहीं कि गृहस्थी में रहते कुछ कार्य हो सके! इस के लिए स्वाधीन कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। स्वाधीन कार्य कर्त्ता या तो गृहत्यागी महानुभाव मिल सकते हैं अथवा सवैतनिक समाज दर्द की चोट खाए हुए व्यक्ति। हमारा कार्य अन्तिम प्रकार के नौजवानों से ही चल सकेगा। इस लिए सब से पहला कार्य इस ओर प्रत्येक जैनी से एक रुपया वसूल करना है। जिस रोज सारे जैनियों से एक रुपया फी आदमी वसूल हो जायगा उस रोज सहज में यह कार्य चालू हो जायगा। अतएव धर्मात्माओं और नेताओं को शीघ्र ही इस सोसाइटी की स्थापना करके रुपया वसूल करने का कार्य हाथ में लेकर प्रचारकार्य प्रारंभ कर देना चाहिए। कतिपय निःस्वार्थ त्यागियों को अगाड़ी आना लाज़मी है।

जैनी और शिक्षा !

वस्तुतः हमारी सामाजिक दशा उसदिन सुधरेगी जिस दिन प्रत्येक जैनी समुचित धार्मिक और लौकिक शिक्षा से विभूषित होगा। आज हमारे शिक्षा प्रचार की कितनी शोचनीय दशा है यह अन्यत्र प्रकट लेख से प्रकट है। दिगम्बर समाज में जैनविद्यालयों में जितना रुपया खर्च होता है, उससे उतना लाभ नहीं होता! एक तरह से यह विद्यालय खास प्रकार के लोगों के लिए रिजर्व हो गए हैं। तिसपर यहां लौकिक विद्या का अभाव १९ वीं शताब्दि के विद्वान् उत्पन्न कर रहा है जिससे उल्टी हानि हो रही है। सारे जैनियोंमें शिक्षा प्रचार करने के लिए 'मिशन स्कूलों' की तरह 'जैन स्कूल' खोले जाना चाहिये। और जैन सिद्धान्त की उच्च कोटि की शिक्षाके लिए एक महाविद्यालय पर्याप्त होगा, क्योंकि सामान्य धर्म शिक्षा "जैन स्कूलों" में मिलना लाज़मी होगी। विद्यालय-संचालकों को ध्यान देना चाहिये।

पृथा-पालन !

वर्षान्त में प्रथापालन लाज़मी है! इस अंक के साथही 'वीर' का द्वितीयवर्ष सानन्द समाप्त होता है। इस वर्ष में उसको जो कुछ सफलता प्राप्त हुई है वह उसके हितैषी शुभचिन्तकों, मान्यलेखकों और सुहृद पाठकों की कृपा का फल है। उन्हीं का आसा भरोसा 'वीर' का आधारस्तंभ है। वीर संघ तो केवल अपने कर्तव्य पालन का उत्तरदायी है। उस में भी उससे अथवा हम से त्रुटि रह गई हो, तो कोई आश्चर्य नहीं! अपने जान 'वीर-संघ' ने भरसक कोशिश 'वीर' की सेवा करने में की है। तो भी अपनी कमियों के लिए हम अपने उदार प्रेमियों के निकट क्षमा प्रार्थी हैं। किन्तु साथ ही उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि यदि वे हमारी त्रुटियों को बतलाने की अनुकम्पा दर्शायेंगे तो उनको सुधा-

रने के प्रथम-प्रयत्न किये जायंगे और वीर को सर्वथा आदर्श जैनपत्र बनाने में कुछ उठा न रक्खा जावेगा। आगामी 'वीर'में गवेषणापूर्ण साहित्यिक ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक और सामाजिक लेख तो रहेंगे ही पर साथ ही 'गल्प' एवं मनोहारी कविताओं' का भी समावेश करीब २ प्रत्येक अंक में रहेगा। और यदि पाठकों ने उसे विशेष अपनाया तो मनोरंजक शिक्षाप्रद कार्टून देने का भी प्रबन्ध किया जायगा। उपहार सदैव की भांति मूल्यमय रहेगा। जिस पर आगामी "निर्वाणाङ्क" में पावापुरी का दर्शनीय तिरंगा चित्र और उत्तमोत्तम लेख हमारे उक्त वक्तव्य के प्रत्यक्ष दर्शन करायेंगे। अतएव पाठकों से हमारा सादर अनुरोध है कि वे स्वयं 'वीर' के ग्राहक रह कर अपने मित्रों को इस का ग्राहक बनायें। यदि हमारे इस कथन पर उन्होंने ध्यान दिया और कम से कम एक एक ग्राहक भी बढ़ा दिया तो हम को विश्वास है कि मान्य प्रकाशक बाबू राजेन्द्र कुमार जी इस को सर्वाङ्ग सुंदर बनाने में कुछ उठा न रक्खेंगे। इस वर्ष ही करीब एक हज़ार रुपये का नुकसान उठा कर 'वीर' आपकी सेवा करता रहा है। आगामी वह विशेष चाहना से आप की सहायता पाकर सेवा करता रहे, यही भावना है-यही प्रभु वीर से प्रार्थना है। हमें 'वीर' हितैषियों के अनुग्रह पर पूरा विश्वास है और उन के हम विशेष आभारी हैं। जय बोलो प्रभु वीर की जय!

परिषद्-समाचार।

रिपोर्ट दौरा पं० प्रेमचन्द पंचरत्न—१० अगस्त से ३१ अगस्त तक

मऊरानीपुर—(बुंदेल खंड)-१० अगस्त को आया-सभा हुई। भाईयोंने बालविवाहादि कुरीतियां बन्द करने का वचन दिया। यहाँ के सिंघई लालचंदजी ने २१ वर्ष से हिसाब नहीं दिया यहांके भाई हिसाब मांगते हैं परवार सभाको ध्यान देकर हिसाब लेना चाहिये ५।) उपदेशक फंड को प्राप्त हुवे।

टेहरका—(टीकमगढ़स्टेट)-१३ अगस्त। मन्दिर जी में सभा हुई सात भाईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया यहां के भाईयों ने मन्दिर जी में शुद्ध खादी रखने, वेश्यानृत्य, अश्लील गान कन्या विक्रय, बाल विवाह की कुप्रथा रोकने का वचन दिया व ३) उपदेशक फंड को प्राप्त हुवे।

झाँसी-१४ अगस्त। सभा का बुलावा दिया परन्तु अधिक संख्या में मनुष्य नहीं आये यहां पर ६ जैन मन्दिर, जैन जन संख्या २५० है परन्तु उत्साह कम दिखाई देता है यहां एक पाठशाला की भी आवश्यकता है।

गोट-(झाँसी बुन्देलखण्ड),१७ अगस्त। शास्त्र बाँचने के बाद सभा हुई चार भाईयों ने स्वाध्याय का नियम लिया तथा मन्दिरजी में खादी के वस्त्र रखने कन्या विक्रय बाल विवाह आदि प्रथा को दूर करने का वचन दिया यहाँ से दो मील पर कुमेड़ा खेड़ा है वहां के ठा० कुँवर बलैश सिंहजी ने शिका

खेलना मांस खाना त्यागा किया है यहां पर ४) उपदेशक फंड को प्राप्त हुवे।

विरगांव—(झांसी) १८ अगस्त। शास्त्र बांचने के पश्चात सभा हुई व्याख्यान समाज सुधार पर हुआ चार भाईयोंने स्वाध्यायका नियम लिया ६) रुपये उपदेशक फंड को प्राप्त यहां पर आपस में फूट है दो पार्टी हैं फूट मेटने का प्रयत्न किया परन्तु निष्फल हुआ यहाँ तीन मन्दिर हैं जैन जन संख्या ६० है।

बनौना—(झांसी) १६ अगस्त शास्त्र बांचने के पश्चात व्याख्यान हुआ कुरीतिनिवारण पर भाषण हुआ। यहां के भाईयोंने वेश्यानृत्य अश्लील गाना बाल-वृद्ध विवाह कन्या विक्रय की प्रथा बन्द करने तथा मन्दिर जी में खादी प्रयोग में लाने का वचन दिया। उपदेशक फंड को४॥=) प्राप्त हुए। यहांपर उदासीन पं० गिरधर दासजी भी ठहरे हुए हैं आप बड़े ही शान्त और भाषा के कवि हैं आप के बनाये हुए १० ग्रंथ हैं जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं।

रायपुर-(झांसी) २१ अगस्त। यहां पर मुखिया भाइयों के न होने से सभा न हो सकी।

अगोरा—(झांसी बुन्देलखण्ड) २१ अगस्त शास्त्र बांचने के पश्चात व्याख्यान "जाति की वर्तमान दशा शोचनीय है" पर हुआ।

उपस्थिति १५० थी। व्याख्यान के अन्त में लोग उठकर चले गये। बाद को मालूम हुआ कि यहां के लोग चन्दे से बहुत डरते हैं और इसी ख्याल से चले गये। यहां पर पहिले कुछ पंडित लोगों ने पाठशाला के लिये चन्दा कराया था परन्तु वह चंदा इकट्ठा नहीं हुआ। यहां जैनियों को समझना चाहिये कि दान देना गृहस्थों का धर्म है और परिषद् का उपदेशक चंदा आम तौर से नहीं करता।

रेहरका-२२ अगस्त से ३१ अगस्त तक और दशलाक्षणी पर्व में रहा। यहाँ पर नित्य ही हारमोनियम पर पूजन होता था यहां के बालक गायन कला में बड़े निपुण हैं। प्रति दिन शास्त्र सभा होती थी और हमारा व्याख्यान प्रति दिन धर्म के किसी विषय पर होता था। बड़े आनंद के साथ दश लाक्षणी व्यतीत हुई ४) उपदेशक फंड को प्राप्त हुवे।

धर्म-धुरन्धरों की धूल।

नृत्य देखो नटवरों का लूट लो मनभर मजा।
ढोल ढोंगोंका बजा है, स्वांग स्वारथका सजा॥
धर्म की आँधी चली है, आम पेड़ों के पके।
गिर रहे हैं लूट लो, अब किसकी तकते होरजा॥
सत्य-सत्ता भ्रष्ट होकर मृत्यु शय्या पर पड़ा।
आने दो अब आगई है, वस अभागी की कजा॥
भूसुरों की भस्म ताकत हो गयी कलिकाल में।
गड़ गया झण्डा है उनका धर्मके उद्धार में॥
लाओ पैसे लाओ पैसे की मची ध्वनि आवजा।
व्यर्थ देरी मत करो, परिपूर्ण कर दो तोंदको॥
देखलो फिर कैसे उड़ती है यहां धर्मध्वजा।

—मतवाला से

संसार दिग्दर्शन

समाज

सर सेठ हुकमचंदजी साहब उत्तर दें

हिंदी जैन गज़ट अंक ४८ के साथ क्रोडपत्र के रूप में इन्दौर की पंचायत का दस लाक्षणी संबन्धी विवरण प्रकट हुआ है। प्रकट कर्ता हैं— श्री कुंवरलाल बापूलाल जी जैन हैं। उसमें हमारी जाति के प्रमुख सर सेठजी का भाषण छपा है। उनके इन शब्दों में कि "भाइयो! मैंने बाबूपार्टी के कार्यों की तरफ से जो विचार किया है तो उस का रास्ता जो कि उन्होंने जैनजाति की उन्नति की आड़ लेकर पकड़ा है वह बिलकुल ग़लत रास्ता है। वह जिस रास्ते से समाज को ले जाना चाहते हैं वह मार्ग जैन समाज की उन्नति का नहीं होगा। यानी (जैन समाज में जो ये लोग विधवा विवाह चलाने जाति पांति को तोड़ कर सब का एका करके, मान मर्यादा नष्ट करने······में लगे हुए हैं) पर किञ्चित विचार करना है। भा० दि० जैन परिषद् में यद्यपि पंडित, बाबू और सेठ सब ही लोग सम्मिलित हैं, परन्तु तो भी इसके कार्यकर्ता अधिकांश अंग्रेज़ी पढ़े लिखे होने की वजह से व महासभा से विरोध करके निकलने से समाज के बहुत से लोग इसको बाबूपार्टी की ही सभा ख़याल करते हैं। ऐसी अवस्था में सर सेठ जी के उक्त उद्गार परिषद् से लागू किए जाकर, उसके कार्य में बाधा पहुंचाने के प्रयत्न किए जांय, यह

हर जगह एजेन्ट चाहिये नमूना मुफ्त

शीशी ॥) दर्जन ५॥)

शेंडये वैद्यकृत

प्रभावती वटी

मलेरिया, न्युमोनिया, टाइफाइड सन्निपात तथा सर्व प्रकार के ज्वरों की रामबाण महौषधी।

डाक महसूल माफ

बिना तक़लीफ के दाद की जड़ से मिटाने के लिए

दद्रुहर मरहम

ही योग्य है। शीशी ।~) दर्जन ३॥) डा० म० माफ। कोई भी दवा १ दर्जन मंगाने से एजेन्ट हो सकता है। सर्व शास्त्रीय औषधियां बिक्री के लिये तयार रहती हैं। एजेन्ट, वैद्य और धर्मार्थ वालों को विशेष सुविधा। बीमारी का हाल लिख भेजने पर उचित सलाह मुफ्त। विशेष हाल के लिये पत्र लिखिये, सूचीपत्र मुफ्त।

पता—आयुर्वेदाचार्य पाण्डुरंग शिवराम शेंडये वैद्य, श्री गणेश चिकित्साभवन, नं० ५ दमोह सी० पी०

बिल्कुल संभव है। यदि परिषद् का अबतक का कार्य जाति को रसातल में पहुंचाने वाला हो, तो बेशक हम को कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु हम देखते हैं कि आजतक परिषद् ने कहीं भी विधवा विवाहका पक्ष नहीं लिया है, प्रत्युत उसको समाज को हानिकारक और घृणित ही उसके मुखपत्र द्वारा प्रकट किया गया है। जाति-पांति लोपक भी कोई मन्तव्य उसके द्वारा प्रकट नहीं हुआ। हां जैन जातियों में परस्पर विवाह संबन्ध खोलने का प्रस्ताव अवश्य इटावा अधिवेशन में स्वीकृत हुआ है। सो उसके प्रस्तावक श्रीमान् पं० झम्मनलाल जी तर्कतीर्थ ही हैं। यदि वह अधर्ममय कार्य था, तो एक पंडित महोदय ने उसे पेश क्यों किया? तिसपर उसका अधर्ममय सिद्ध करना भी शेष है। आचार्यों ने असवर्ण विवाह भी जायज किये हैं इसी लिए परिषद् से यह दोष भी लागू नहीं है। और छुआछूत मेटने का भी प्रयास कोई हुआ नहीं। ऐसी अवस्था में सर सेठ जी के उद्गार किन महोदयों अथवा संस्थाओं के प्रति हैं, इसका उत्तर सेठ जी साहब को अवश्य देना चाहिए। जाति के प्रमुख पुरुष के उद्गार स्पष्ट होना लाज़मी है! आशा है सेठ जी उत्तर देने का कष्ट उठायेंगे। और अन्तर्जातीय विवाह को शास्त्र विरुद्ध करेंगे। --उ० सं०

समझौते का प्रयास विफल गया!

भा० दि० जैन परिषद् के [illegible] अधिवेशन में श्रीमान् जयकुमार देवीदास चवरे, वकील को इस झगड़े को निबटाने का पूर्ण आधिपत्य दिया गया था, जो शेतवाल से उत्पन्न हुआ है। चवरे जी ने इस विषय में अनवरत प्रयास किए। परन्तु जो पंडित इस शान में हैं कि धर्म सेवा हम ही कर सके हैं-हमारे सिवाय किसी को उस के योग्य योग्यता प्राप्त नहीं और जो दूसरों को लाञ्छित करने के आदी हो रहे हैं, वह भला किस तरह इन प्रयासों को सफल होने देते! झगड़ा नई और पुरानी महासभा के अस्तित्व का है। इस लिए लाज़मी यही है कि दोनों के कार्य कर्ताओं में से व्यक्ति चुने जांय और एक निष्पक्ष सभापति की अध्यक्षता में एक निर्णय किया जाय; जिस से विशेष कलह की शांति हो। किन्तु पं० महोदय इस बात को मंजूर नहीं करते। इस के उत्तर में वह बात अगाड़ी लाते हैं जो ब्यावर अधिवेशन के समय ना मंजूर की थी अर्थात् समाज के गण्य-मान्य पुरुषों में से चुनाव हो। और जब यह होने लगेगा तब चुनाव संबंध में बखेड़ा खड़ाकर देंगे। सारांश यह कि इनकी सब कारगुजारी से स्पष्ट है कि झगड़े के शान्त करने के स्थान पर बढ़ानेवाले

गुहाना (रोहतक) में ज्ञानवनिता जैनाश्रम

खोला है जिसमें विधवा बहनें आश्रम के खर्च से रहकर विद्याध्ययन कर सकती हैं यदि कोई साहब आश्रम के खर्च से भेजना मंजूर न करें तो उनसे भोजन खर्च केवल ६) रु० मासिक लिया जा सकता है, विशेष नियम नियमावलि मंगाकर मालूम हो सक्ते हैं।

महबूब सिंह, मालिक फर्म ला० हुकमचंद जगाधर मल, देहली

यदि कोई हैं तो हमारे यह पण्डितगण ! हमाराभाव इस से उन पर कटाक्ष करने या दोषारोपण करने का नहीं है। जो उनकी स्थिति बतला रही है, वही लिखा जा रहा है। परन्तु हम समाज को सचेत कर देना चाहते हैं कि वह अब आंखें खोल कर देखे कि धर्म रक्षा की आड़ में कैसा ताण्डवनृत्य किया जा रहा है। धर्म अजर-अमर है। उस की रक्षा कोई क्या करेगा-वह स्वयं दूसरों को स्वरक्षित रखता है। ऐसी अवस्था में पंडित महाशयों को अपने विवेकसे काम लेना आवश्यक है। उनकी और समाज की इसी में भलाई है।

—उ० सं०

—श्रीमान पंडित चम्पतराय जी विद्या वारिधि की सेवा में लखनऊ दिगम्बर जैन समाज ने तारीख १८ सितम्बर मिती कुवार बदी १५ को जैन बाग में एक सम्मान पत्र श्रीमान बाबू फतेहचन्द जी के सभा पतित्व में किया जिसको श्रीयुत अजीत प्रसाद जी ने पढ़ कर सुनाया लखनऊ दिगम्बर जैनसमाज के समस्त सदस्य उपस्थित थे। समाज सेवक

बगातीलाल जैन मंत्री जैन सभा

—अगतिया-सराय अगत (एटा) में एक प्राचीन प्रतिमा जमीन से निकली है।

महाशोक !

२१ सि० सन्२५ को मेरठ में बाबू सुलतानसिंह वकील का देहान्त होगया। आप करीब २५ दिन से बीमार थे। टांग में फोड़ा निकला था। आप जैन प्रचारकके सम्पादक थे और जैन गजट के भी एडीटर रह चुके थे इस दुःख में हम आप के कुटम्बियों के प्रति सम्वेदना प्रकट करते हैं।

आवश्यकता—अग्रवाल गोयल गोत्री १४ वर्षीय शिक्षित कन्या के लिये १७ से २१ वर्ष तक के अग्रवाल जैन वर की आवश्यकता है।

पताः—सोहनलाल जैन।

मारफत"वीर" कार्यालय बिजनौर

देश

हिन्दू मुसलमानों का झगड़ा !

अलीगढ़ में दंगा होगया समाचार, जैसा कि ऐसे अवसरों पर हुआ करता है, एक एक पक्षके हैं। अन्य अनेक स्थानों से उत्तेजना के समाचार आ रहे हैं। प्रयाग की दशा भी सोचनीय है। मालूम नहीं इन झगड़ों का अन्त कहां होगा। अबतक केवल बकरीद ही इन झगड़ों के लिये प्रसिद्ध थी। अब राम लीला उसको भी मात करना चाहती है। पहले केवल गोवध ही झगड़े का कारण हुआ

गोरे और खूबसूरत होने की दवा।

शाहज़ादा प्रिंस-आफ़-वेल्स की सिफ़ारिश से डा० लामडेन साहब ने महाराज मैसूर के वास्ते बनाई थी। जिसको सात दिन मलकर नहाने से गुलाब के फूल की सी रङ्गत आजाती है मुंह पर स्याह दाग़, मुंह से फोड़ा, फुन्सी, दाद, खाज, पाँव का फटना, बगल में बदबूदार पसीने का आना इत्यादि सब को साफ़ करके चमड़े को नरम कर देती है। यह फूलों से बनाया है इसकी खुशबू अर्से तक बदन में से नहीं निकलती। कीमत १ शीशी १।) रुपया ३ शीशी के खरीदार को १ शीशी मुफ्त। डाकव्यय ॥)

पताः—मुहम्मद शफ़ीक़ एण्ड को० आगरा

करता था अब बाज़ा भी हो गया है। हिंदू मुसलमानों के मन एक दूसरे के सम्बन्ध में इतने कलुषित हो रहे हैं कि नये नये कारण उत्पन्न होते ही जायेंगे। जब झगड़े ही को ठान ली तब कारणों का क्या अभाव है? यह झगड़ा बढ़ेगा। किसी के रोके रुक नहीं सकता। महात्मा जी ने जो कहा वही ठीक है। केवल महात्मा जी की ही नहीं, विवेक की बात भी कोई न सुनेगा। भारत के बुरे दिन अभी समाप्त नहीं हुए हैं।

—बार बार खबरें उड़ाई जाती हैं कि भारत सचिव सी० पी० कौंसिल को तोड़ने वाले हैं। अब फिर ऐसी ही खबर गर्म है। हमारी समझ में तो सी० पी० कौंसिल को ही क्यों यदि सभी कौंसिलोंका खात्मा कर दिया जाय, तो द्वैधशासन का भ्रम ही मिट जाय।

—पिछली बड़ी कौंसिल में कई मजेदार घटनायें हो गईं। मि० जमुनादास मेहता-ने मुडिमैन रिपोर्ट को कीचड़ से सनी हुई बताया तो मी० मुडिमैन खिसयाने से हो गये। मि० पी० एन० शर्मा ने नहरू जी के खद्दर के अचकन और पाय-जामे की ओर संकेत कर कहा कि देखिये यह है, असली स्वराज्य का नमूना। इसपर स्वराजिस्ट मेम्बरों ने जब लाल पीली आंखें दिखलाई तो मि० शर्मा ने कहा, इस शुष्क राजनीति के साथ भाइयो, कुछ मनोरञ्जन भी करना होगा।

विदेश

—मोसलसे तुर्कों द्वारा ईसाई निकाले जा रहे हैं एक समाचार पत्रमें बताया गया है कि अभी तक चालीस हजार के करीब ईसाई निकाल दिये गये हैं।

—मोरक्कोमें बड़े जोरों से लड़ाई हो रही है स्पेन और फ्रान्स की सेना मोरक्को में पहुंच गयी है। सिपाही गावोंमें जाकर लोगोंको बड़ा तंग करते और मारते हैं।

टाइपराइटर बिकाऊ

एक कमर्शियल टाइपराइटर बिलकुल नया फुलिस्केप साइज नं० १० विज़िबिल मज़बूत और सस्ता बिकाऊ है देखने भालने में बिलकुल रमिङ्गटन नं० १० के मुताबिक है क़ीमत सिर्फ १६०) है। पुर्जे एक दूसरे के तबदील हो सकते हैं।

पता—बाबू अनन्तलाल इञ्जिनियर मारफत वीर'कार्य्यालय बिजनौर।

विषय—सूची

नं०	विषय	पृ० सं०	नं०	विषय	पृ० सं०
१	नवयुवकों से निवेदन (कविता) ...	५७६	४	सम्पादकीय टिप्पणियां	५६२
२	जैन मुनियों का प्राचीन भेष ...	५८०	५	परिषद् समाचार	५७५
३	जैन जाति की माध्यमिक शिक्षा सम्बन्धी विपत्ति और नेताओं का कर्तव्य ...	५८७	६	धर्म धुरन्धरों की भूल (कविता) ...	५६६
			७	संसार दिग्दर्शन	५७७

जगत्प्रसिद्ध बनारसी दस्तकारी।

चाँदी के फूल भाव १।) तोला — **सोने के चढ़े फूल भाव २।) तोला**

(सिर्फ चाँदी या चाँदी पर सोने का मुलम्मा करवाके बनाने वाले सामान की सूची)

हर अदद कम व बेशी जितने तौल चाँदी में तैयार होसकता है उसकी विगत।

हौदा	५००) से २०००)	ऐरावत	२५०) से ३०००)	*बंधनवार	१००) से ५००)
अम्बारी	१०००) से ३०००)	इन्द्र धुक	९६) से १५००)	समोसरनकीरचना	२५०) से १०००)
पालकी	१०००) से १५००)	*सिंहासन	१००) से २०००)	पञ्चमेरु	३०) से २००)
टेबुल	३००) से ५००)	*चँवर प्रत्येक	७) से २५)	*अष्टमङ्गलद्रव्य	१००) से २००)
हाथी का साज	५००) से १०००)	*मुकुट	१०) से २०)	*अष्टप्रतिहार्य	१५०) से २५०)
घोड़े का साज	२००) से ५००)	*चौकी	४५) से ३००)	*सोलहस्वप्ने	१००) से ५००)
*बल्लम	५००) से १०००)	समोसरन	१००) से २०००)	*भामण्डल	३०) से १००)
*सोटा	५०) से ७५)	अढ़ाई द्वीप की रचनाका मांडला	१०) से ५००)	*कलशा	५०) से ५००)
*छतरी डंडी	३०) से ५०)	तेरह द्वीप की रचनाका मांडला	५००) से २०००)	तख्त चांदी के	२००) से १०००)
जैन मन्दिर के उपकरण।				बारहदरी	२५००) से ५०००)
गन्धकुटी	२५००) से ४०००)			*पूजन के बरतन	३००) से ५००)
वेदी	८००) से ४०००)				

यह काम आर्डर पाकर बनवा देते हैं मन्दिर जी के काम में ३=) सैकड़ा की आढ़त लेते हैं। और हर किस्म की चीजें भी तैयार रहती हैं। * ये चीजें तांबे की बनाकर सोने का मुलम्मा होता है।

पता - (१) प्रधान कार्यालय (कोठी) मोतीचन्द कुञ्जीलाल, मोती कटरा, बनारस।

(२) जैन-समाज-कार्यालय सिंघई फूलचंद जैन, कार्यालय, चौकी दिवाग बनारस सिटी।

Tel. Address—"SINGHAI" BENARES

सावधान ! नई खुशखबरी !! सावधान !!!

चांदी के कारीगरों ने मन्दी के कारण मजदूरी घटादी।

=) भरी मजदूरी नकाशीदार फेन्सी काम जैसे वेदी, पालकी, सिंहासन चंवर, छत्र आदि

।।। भरी मजदूरी सादा काम (प्लेन) जैसे थाली, लोटा, गिलास वगैरह ?।

शीघ्र ही कुछ आर्डर भेजकर हमारी सचाई की परीक्षा कर देखिये।

हमारा उद्देश्य जाति व समाज सेवा है।

श्रीमन्दिरजी के हर किस्म के उपकरण हमारे यहाँ हमेशा बना करते हैं और तैयार भी रहते हैं। चँवर, सिंहासन, वेदी, पालकी, अष्टमङ्गलद्रव्य, अष्टप्रतीहार्य, मुकुट, मेरु, भामण्डल आदि। तांबे के ऊपर सोने का वरक चढ़े हुए सामान, पञ्चमेरु, शिखर, कलश, कलशी, जरदोजी का सामान जैसे चंदोवा, परदा, भालर, बन्दनवार इत्यादि।

सीताराम लहरीप्रसाद,

मालिक—'उपकरण कार्यालय' चौक, काशी।

हमारे अन्य कार्य

हमारे यहाँ बनारसी साड़ियाँ, साफे, दुपट्टे, कमख्वाब, पोत के थान, हैमकाफ, काशी सिल्क के थान, दुपट्टे साफे, दावनी, गोटा, पट्टा, पुन्गी साड़ी टकुआ वगैरह।

जाति सेवक—

सीताराम लहरीप्रसाद, सराफा, बनारस।

Regd. No 1271.

यदि आप व्यापार बढ़ाना चाहते हैं वीर में विज्ञापन छपवाइये ।

वीर—को जैन समाज का प्रत्येक स्त्री पुरुष बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ पढ़ता है ।

वीर—हरएक जैन स्कूल, लाइब्रेरी, पाठशाला, आश्रम वगैरह में नियमित रूप से पढ़ा जाता है ।

वीर—धार्मिक पत्र होने के कारण ग्राहकों में उच्च दृष्टि से देखा जाता है ।

वीर—उच्चकोटि का पाक्षिकपत्र होनेसे फ़ाइल में रक्खा जाता है और बार बार पढ़ा जाता है ।

वीर—एकमात्र सामाजिकपत्र होने से दिनोंदिन तरक्की कर रहा है ।

वीर—विज्ञापनदाताओं के लिए अत्युत्तम पत्र साबित होवेगा ।

शीघ्र पत्र लिखकर अपना विज्ञापन भेजकर रेट मालूम कीजिए और स्थान रिजर्व कराइये अन्यथा रेट बढ़ जाने पर पछताना पड़ेगा ।

'वीर' कार्य्यालय, बिजनौर ।

केवल टाइटिल पेज प० जीयारामोपाध्याय ने अपने सरस्वती प्रेस मुरादाबाद में छापा ।